प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रथम संस्करण
वि० सं० २०१४, शकाब्द १८७९, सन् १९५७ ई०

मूल्य सजिल्द

मुद्रक
एच० एम० कामथ
नेशनल हेराल्ड प्रेस,
लखनऊ

समर्पण

परगत डा० काशीप्रसाद जायसवालको

जिनकी स्मृति अठारह वर्षोंके अनन्त वियोगके वाद भी

मेरे जीवन की प्रिय निधि है

वक्तव्य

इस पुस्तक के प्रथम खण्ड के 'वक्तव्य' मे यह निवेदन किया जा चुका है कि परिषद् ने इसका प्रकाशन किस परिस्थिति में क्यो स्वीकृत किया था और इसकी मुद्रणशैली में परिषद् की नियम-परम्परा से कुछ भिन्नता होने का कारण क्या है ,

प्रस्तुत खड की छपाई १९५४ ई० में ही शुरू हो गई थी। पहला खड इसके बाद छपने लगा और इससे एक वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो गया। इस खड के प्रकाशन में अनिवार्य कारणो से विलम्ब तो हुआ, पर कठिनाइयो को देखते हुए विलम्ब स्वाभाविक जान पडता है। विज्ञ पाठक इस बात का अनुमान कर सकते हैं।

पहले खण्ड से इस खण्ड का आकार डेवढा है। दोनो खण्ड मिलकर यह इतिहास एक हजार पृष्ठो से अधिक का हुआ है। इसकी विशालता के अनुसार लेखक की श्रमशीलता का अनुमान भी पाठक अनायास कर सकते हैं।

श्री राहुल जी की साहित्यसेवा पर विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होने साहित्य के विभिन्न विषयो पर जितना अधिक लिखा है, उतना दूसरा कोई एक साहित्यसेवी अबतक नही लिख सका है। उन्हें केवल उद्भट लेखक न मानकर एक सुप्रतिष्ठित साहित्यिक सस्था ही मानना उपयुक्त होगा। उनकी नई खोज और नई प्रतिभा की न देखी हुई हिन्दी-साहित्य की समृद्धि सादर उल्लेखनीय है।

वर्तमान युग की अन्तरराष्ट्रीय राजनीति मे एसिया का महत्त्व दिन-दिन बढ रहा है। उसमे भी मध्य एसिया के साथ भारत के ऐतिहासिक सम्पर्क की प्राचीनता पर ध्यान देने मे इस इतिहास की उपायेयता और भी बढ जाती है। इसकी प्रामाणिकता का अनुभव स्वय पाठक ही कर सकते हैं, क्योकि श्री राहुलजी के बहुवर्षव्यापी मौलिक अनुसन्धान के परिणाम-स्वरूप यह इतिहास तैयार हुआ है। अत आशा है कि इससे हिन्दी के चिरकालानुभूत अभाव की पूर्त्ति होगी।

कार्त्तिक-पूर्णिमा, शकाब्द १८७९
नवम्बर १९५८ ई०

शिवपूजन सहाय
(सचालक)

प्रस्तावना

पुस्तकके अतिम खडको पाठकोके हाथ मे जाते देखकर, मालूम होता है, एक वडा भार सिर से उतर गया। इस सारे समयमे कई वार आशा और निराशाके वीचमें भटकना पडा था। वाधाये कभी प्रकाशकका ओरसे और कभी प्रेसकी ओरस आ जाती थी। एक प्रेसमें प्रथम खडके आठ-दस फार्म कपोज हो जानेके वाद काम रुक गया, और अतमे प्रकाशक वदलने पर ही गाडी आगे चली। द्वितीय खडको मैंने स्वय कागज दे कर अपनी जिम्मेवारीपर प्रेसमें दे दिया, पर प्रेसकी गडवडी इतनी हो गई, कि आशा नही थी, नैया पार होगी। खैर, "कुफ्र टूटा खुदा-खुदा करके"। ऐसी वाधायें उपस्थित न हुई होती, तो ग्रथ तीन साल पहले ही प्रकाशित हो गया होता।

मध्य-एसियाके इतिहासपर किसी भी भाषामे कोई विस्तृत ग्रथ नही है। जो एकाध है भी, वह वहुत सक्षिप्त तथा कालमें वहुत दूरतक हमें नही ले जाते, और न वह आधुनिकतम सामग्रीपर आधारित है। मध्य-एसियाके इतिहासकी सामग्रीकी गवेषणा सोवियत रूसमे वहुत हुई है। किसी-किसी कालपर ग्रथ भी लिखे गये, पर सपूर्ण कालके ऊपर लिखनेको आगेके लिये छोड दिया गया। इन वातो से लेखककी कठिनाई मालूम होगी। इस ग्रथमे अनेक त्रुटिया होनी विल्कुल सभव है। १९४७ के वाद की उपलब्ध सामग्रीका वहुत कम उपयोग मैंने कर पाया है। भारत में सोवियतमे प्रकाशित ग्रथ और अनुसधान-पत्रिकायें सुलभ नही है।

मध्य-एसियामे चीनी मध्य-एसिया भी शामिल है। जिसके किसी-किसी कालपर इस ग्रथमें काफी विवेचन हुआ है, पर पूरी तौरसे लिखना वाकी है। मेरी इच्छा तिब्वत को लेते चीनके इतिहासपर एक विस्तृत ग्रथ लिखनेकी है। यदि उसके लिखनेमें सफल हुआ, तो यह कमी पूरी हो जायगी। पर, इसमें आयु और भौतिक वाधायें ही रास्ता रोके नही है, वल्कि हमारे स्वतत्र देशकी नौकरशाही भी पूरी तौरसे रोडा अटकाने के लिये तैयार है। अग्रेजी शासनमे सिर्फ पहली वार मुझे छिपकर तिव्वत जानेकी जरूरत पडी थी। मेरे राजनीतिक विचार उस वक्त भी वही थे, जो आज है। पर, अग्रेजी सरकार और अग्रेज नौकरशाहोने सास्कृतिक कार्यके महत्वको समझते वाधा नही दी।

१९३४ ई० में मै दूसरी वार तिव्वत जानेके लिये ब्रिटिश पोलेटिकल एजेंटके पास गतोकमें आज्ञापत्र लेने गया। नाम मालूम होते ही वह वडे हर्षके साथ मिले। और आज्ञापत्र ही नही दिया, वल्कि अधिक आत्मीयता दिखलाने के लिये तिब्वतमें अपने लिये हुए फोटो दिखलाये, कितनी ही वातें पूछी। उसीके स्थानपर १९५० मे जो भारतीय सज्जन थे, वह मिलनेपर विलकुल दूसरे ही सावित हुए। उन्हे तिव्वतके वारेमें कोई जिज्ञासा नही थी, और शिष्टाचारके नाते ही एक-दो मिनटके लिये मिले। नौकरशाही ने एक वार पासपोर्ट देनेसे इन्कार किया, खैर, दूसरी वार कोशिश करने पर वह मिल गया। उसके लिये वडी उत्सुकता इसी कारण है, कि तिव्वतमें भारतीय सस्कृत-ग्रथोकी नई तालप्रतियोके मिलनेकी सभावना है।

ग्रंथके प्रकाशित होनेका सबसे अधिक श्रेय श्रीजगदीशचंद्र माथुर (तत्कालीन शिक्षा-सचिव, बिहार) और श्री शिवपूजन सहाय को है। शिवपूजन बाबू तो ग्रंथको प्रकाशित देखनेके लिये मुझसे भी अधिक उतावले थे।

मसूरी,

२०-१-५६

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

अध्याय	पृष्ठ

भाग ३

उत्तरापथ (१५९-१८०१ ई०)

अध्याय	पृष्ठ

मध्य एसिया का इतिहास

खण्ड २

भाग १

उत्तरापथ (१२००–१५५० ई०)

अध्याय १

चीनमें मंगोल-वंश

(१२००-१३६८ ई०)

१ छिङ-गिस् (१२०६-२७ ई०)

मध्य-एसियामें मगोलोका राज्य कोई अलग-थलग नही था, बल्कि कितने ही समय तक चीनपर शासन करनेवाले मगोल हगान (खाकान, खआन, खान) को ही सभी मगोलखान अपना अधिराज मानते थे। १३ वी सदीमे कोरियासे पोलद और साइवेरियासे पजाव तक मगोलोका साम्राज्य फैला हुआ था। छिङ-गिस्ने अपने विशाल साम्राज्यको अपने जीवन हीमे चारो पुत्रोमे बाट दिया था, लेकिन साथ ही यह व्यवस्था की थी, कि सभी खान अपनेमेंसे एकको अपने ऊपर मानते हुये साम्राज्यमें एक तरहकी एकता कायम रक्खे। घुमन्तू जातियोमे एक तरहकी जनतत्रता स्वाभाविक है। घुमन्तू राजा घुमन्तुओकी अपनी जिस सेनाके वलपर देश-विजय करते है, उसे अपने पक्षमें रखनेके लिये सैनिक जनतत्रता कायम रखना जरूरी है। अपने पूर्वज घुमन्तू-राज्योकी भाति छिङ-गिस्के साम्राज्यमे भी सैनिक जनतत्रता थी। कोई वडे सवालका हल, या खानका निर्वाचिन कूरिल्ताईमें होता था, जो सभी राजकुमारो, सैनिक सरदारो और जन-नायकोसे मिलकर वनी थी।

मध्य-एसियामे मगोलोके शासनके इतिहासके समझनेके लिये जरूरी है, कि हम चीनके मगोल-राजवशके इतिहासको भी समझें, साथ ही सुवर्ण-ओर्दू, और ईरानके खुलागू-वशको भी हम नही छोड सकते। इन सवका मैत्री या शत्रुताके रूपमे बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। तगुत नगरके विजयके वक्त छिङ-गिस् आहत हुआ था, जिससे ही अपने चलते-फिरते प्रासाद या महा-गाडीपर ही वह १८ अगस्त १२२७ ई० को मर गया। दुनियामे और राजाओको भी अपने पुत्रोमें राजका वटवारा करते हम देखते है, लेकिन उसका एकमात्र परिणाम उनका जल्दी ही छिन्न-भिन्न हो नष्ट होनेके सिवा और कुछ नही होता। छिङ-गिस् युद्ध और शासनकी व्यवस्थामे अद्भुत् प्रतिभा रखता था, इसलिये उसके वटवारेने कोई उस तरहका दुष्परिणाम तुरत नही दिखलाया और करीव-करीव १२९४ ई० तक खुविलेके शासनके अन्त तक मगोल-साम्राज्य वहुत शक्तिशाली और एकतावद्ध रहा, जिसमे छिङ-गिस्की दूरदर्शिताका हाथ भी था, इसमे सदेह नही। छिङ-गिस्के मरनेके वादही मगोल-विजययात्रा मन्द नही हुई। १२७९ ई० से सम्पूर्ण चीन, हिन्द-चीन और बर्मापर खुविले (कुविलेइ) का शासन स्थापित हुआ। पश्चिम-दक्षिणमें कितना राज्य-विस्तार हुआ, उसके वारेमें हम आगे कहेगे। छिङ-गिस्के मरनेके एक साल वाद (१२२८ ई० मे) मगोल-सेना ईरानमें अस्पहान तक पहुची थी।

छिङ-गिस्की मृत्युके वाद तुरत ही नये हगान (खान) का चुनाव नही हुआ। दो साल (१२२९-ई०) तक छिङ-गिस्-पुत्र तू-लुइ और उसकी रानीकी देख-रेखमें शासन होता रहा और इस सारे समयमे मगोलोकी शक्ति घटनेकी जगह वढती ही रही, यह छिङ-गीसी व्यवस्थाका चमत्कार था।

चीनमें निम्न मगोल खाकान हुये—

१	छिङ-गिस् (चिङ-गीस, ताइ-चुङ)	१२०६-२७ ई०
२	उगेताइ (ताइ-चुङ छिङ-गिस्)-पुत्र	१२२९-४६ "
३	गू-युग (गोदन, उगेताइ-पुत्र चिङ-चुङ)	१२४६-५१ "
४	मुङ-खे (मङ-गू थोलोइ-पुत्र स्यान्-चुङ)	१२५१-५९ "
५	कुविलइ (ह्वो-विलइ तू-लोइ-पुत्र, छिङ गिस्-पौत्र शिचुङ)	१२६०-९४ "

६ थु-नू-थेमुर (ह्वी-बिलइ-पौत्र छिङ-थेन्-पुत्र चेङ-चुङ) १२९४-१३०७ "
७ वू-त्सुग (धर्मपाल-पुत्र वू-चुङ) १३०७-११ „
८ बोयन्-थू (धर्मपाल-पुत्र जेन्-चुङ) १३११-२० „
९ गे-गेन् (शुद्धफल, बोयन्-थू-पुत्र यिङ-चुङ) १३२०-२३ ई०
१० यि-सुन्-थेमुर, (ताङ-चिङ-ती कमल-पुत्र) १३२३-२८ „
११ रिन्-छेन्-फल् (यिसुन्-पुत्र यू-चू) १३२८ „
१२ कुसल, (मिङ-चुङ वू-त्सुग-पुत्र) १३२८-२९ „
१३ थुग्-थेमुर, (वेङ-चुङ बोयन्-थू-पुत्र) १३२९-३२ „
१४ रिन्-छेन्-पल् (कुसल-पुत्र मिङ-चुङ) १३३२-३३ „
१५ थोगन्-थेमुर, (शुङ-न थुग्-थेमुर-पुत्र) १३३३-६८ „

वह राज्यपाल रह चुका था। येल्युका जन्म ११९० ई० मे हुआ था, इस प्रकार राज्य-शासकके इस सर्वोच्च पदपर वह ३९ वर्षके उमरमे पहुच गया। कूरिल्ताईने जू-छि-पुत्र सुन्ताइको बातूके साथ यूरोप-विजयके लिये भेजा। मध्य-एसियाकी मगोल-सेनाने आगे बढकर मेसोपोतामिया, दियारबेकर, और आसपासकी भूमिका सर्वसहार किया। चीनमें अपने बचे-खुचे राज्यके लिये खैरियत मनाते किन्-सम्राट्ने मगोलोसे सुलह करनी चाही, लेकिन मगोल एक समय दो सम्राट् माननेके खिलाफ थे। किनोने जानपर खेलकर मुकाबिला किया और मगोलोको १२३० ई० मे दो बार करारी हार दी। किन्-खतरा इतना बढ गया, कि उगेताइ और उसके भाई तू-लुइने स्वय सेनाकी बागडोर अपने हाथमे ली। इस समय शेन्सी सारा मगोलोके हाथमे था और किन् (सुवर्ण) केवल होनान्के शासक रह गये थे। मगोल कोरियापर भी हाथ साफ करना चाहते थे, इसलिये वहाके राजाने मगोल-राजदूतको मार डाला। इसपर मगोल-सेनाने आक्रमण करके १२३२ ई० मे कोरियापर अधिकार कर लिया। १२३२ ई० मे सफल अभियानके बाद दोनो भाई मगोलिया लौट आये, वही अक्तूबरमे तू-लुइका देहात हो गया। अब छिङ-गिस्-पुत्रोमे जगतइ और चीन-सम्राट् उगेतइ बच रहे थे।

छिङ-गिस् (चगेज) के जीवनमे ही एक बार मगोल-सेना रूसके भीतर तक विजय-यात्रा कर आई थी। लेकिन वह बहुत कुछ लूट-मारका अभियान था। अब वह विजय करके वहा अपना दृढ शासन स्थापित करनेके लिये बढी थी। सुन्ताइने वोलगाके किनारे अवस्थित बोल्गारोकी राजधानी बोल्गार नगरको जीतना चाहा। बोल्गारोमे पश्चिममे रहनेवाले रूसी खतरेको समझ गये थे बोल्गार-ध्वसके बाद मगोल हमपर पडेंगे। इसीलिये कियेफ और स्मोलेन्स्कके रावलो (राजुलो) ने बोल्गारोकी मदद की, जिससे उनकी राजधानी बच गई।

१२३४ ई० के मई महीनेमे चीनमे ११८ वर्ष शासन करनेके बाद किन्-राजवश समाप्त हुआ। अब दक्षिणी चीनमे सुङ-वश बच रहा था, जो काफी शक्तिशाली था, इसलिये मगोल उससे जल्दी छेड-खानी करनेके लिये तैयार नही थे। किनोपर आक्रमण करते समय उन्होने वचन दिया था, कि इस विजय के बाद हम सुङ-वश के लिये होनान खाली कर देंगे, लेकिन उन्होने वैसा नही किया। अदूरदर्शी दरबारियो ने मगोल-शक्तिका ठीक अदाजा नही लगा सुङ-सम्राट्को भडकाया। छङ-अन् (सि-यन-फू, शेन्सीमे), लोयाङ (होनान्) और पेन-किङ (नानकिङ) यह तीन सुङ-वशकी राजधानिया थी। सुङ-सेनापति-ने आक्रमण करके लोयाङ और पेन-किङको मगोलोके हाथसे मुक्त करा लिया। यह "आ बैल मुझे मार" वाली कहावत थी। मगोलोको अब सुङ-वशकी ओर ध्यान देना जरूरी था। इतने बडे निर्णयको हगान स्वय नही कर सकता था, इसके लिये उसने १२३५ ई० में महा-कूरिल्ताई बुलाई। जिसने सुङ-वशको खतम करनेका निश्चय किया। दक्षिणी चीनके विरुद्ध तीन सेनाये भेजी गई, जिनमें एकको सेनापति ओगोताइ-द्वितीय-पुत्र कू-तन तथा जेनरल तेगरीके नेतृत्वमे सूचाउकी ओर बढना था। दूसरी सेना तुमूताइ और चाङ-जूके अधीन हू-कुङके ऊपर चढी, ओगोताइका तृतीय पुत्र कू-चू, राजकुमार खुन-बुका और जेनरल चागनके नेतृत्वमे तीसरी सेना क्याङ-नान्की ओर बढी। इसी समय जू-छीके पुत्र बा-तूको पश्चिम-दिग्विजयका काम सौंपा गया।

मार्च, १२३६ ई० में कू-चूने सुङ-राज्यकी प्रधान नगरी सियाङ-याङपर अधिकार कर लिया। मगोल-साम्राज्यकी सीमा दक्षिणमे अब याङ-ची तक पहुच गई।

खु-बिले (कुबिलेइ) के पहले मगोल-साम्राज्यकी राजधानी मगोलियामें ओरखोन् और तुला नदियोके बीच कराकोरम थी। राजधानी कहनेसे यह न समझना चाहिये, कि वहा कोई नगर बसा हुआ था। राजधानीका मतलब इतना ही था, खान सरदारोके साथ मीलोतक लगे नम्दे और दूसरे प्रकारके तम्बुओमें अपने घोडो और पशुओके साथ रहता था। ओगोताइने पहलेपहल वहा एक विशाल प्रासाद बनवाया, जिसका उद्घाटन १२३६ ई० में हुआ। इस प्रासादके बनानेमे बहुत परिश्रम किया गया था। चीनी कलाकारो ने मूर्तियो और चित्रोसे उसे अलकृत किया था। इसके चारो तरफ बगीचे लगे थे, और चारो दिशाओमे चार बडे-बडे दरवाजे थे, जिनमेंसे एक हगान (सम्राट्) के लिये, दूसरा राज-कुमारो, तीसरा अन्त पुरिकाओ के लिये था, चौथे दरवाजेसे साधारण जनता जा सकती थी। महलके चारो ओर बडे-बडे सरदारोके अपने महल थे, जिनके बाद बडा नगर था, जिसको ओर्दू-बालिक या

कराकोरम कहते थे। नगरके चारों ओर ऊँची प्राकार थी। कराकोरममें सम्राट्के निजी पारि-
वारिक खर्चेके लिये प्रतिदिन पाचसौ गाड़ी भोजन-सामग्री आती थी। इसमेंसे कुछ वह अपने परिवारके
लिये खर्च करता, बाकी दूसरोंमें वितरित करता। इसी समयसे मगोल घुमन्तुओंका सादा जीवन
खतम होने लगा और वह हर बातमें दुनियाकी सभ्य जातियोंकी नकल करने लगे।

ईरान और काकेशसकी ओर अब मगोल अपना हाथ-पैर बड़ी दृढ़तासे बढ़ा रहे थे। १२२७ ई०
में अरास और कुरा नदी तक आर्मेनियापर उनका अधिकार हो गया। उसी साल उन्होंने जार्जिया
(गुर्जी) को विजय करते आर्मेनियाकी राजधानी अनीका सहार किया। इसी साल २१ दिसम्बरको
साइबेरियाके कीमती समूरोंके सबसे बड़े बाजार बोल्गारपर बा-तूने आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया,
सो भी ऐसा कि जिसके देखनेके लिये नगरमें एक भी आख नहीं बच रही। पाच वर्ष पहले आत्म-
रक्षा करके बोल्गार नगरीने जो गुस्ताखी दिखलाई थी, मगोलोंने उसका इस तरह बदला लिया। सिर-
दरिया और अराल के उत्तर दूर तक फैली किपचक भूमिके हूणवशधर घुमन्तू लड़नेमें मगोलोंसे कम नहीं
थे, इसलिये उनपर अधिकार करना मगोलोंके लिये टेढ़ी खीर था। १२३८ ई० में तू-लुइ (थो-लोइ)
के पुत्र मुङ्-के (मङ्-गू) ने अपने भाई बुद्-जेकके साथ कास्पियनके किपचकोंपर आक्रमण कर उन्हें
जीत लिया। किपचक-राजा पनचीमन और असेत (ओसेत)-राजा कचर ओगोला मारे गये। कोलोम्ना
नगर भी मगोलोंके हाथमें चला गया और उसका राजा रोमन इंगरपुत्र वीरगतिको प्राप्त हुआ। १५
फर्वरीको मास्को लेते उन्होंने ब्लादिमिर नगरपर अधिकार कर, पुरोहितोंको छोड़कर मगोलोंने
किसीको प्राणदान देना पसद नहीं किया। वह वस्तुत किसी देशमें भी युद्धको केवल राजनीतिक युद्ध
रखना चाहते थे और उसे धार्मिक युद्धका रूप न लेने देनेके लिये हर तरहकी कोशिश करते थे।

ओगोताइको राज्य करते ११ साल हो गये थे, जब कि दिसम्बर १२४० ई० में बा-तूकी सेनाने
कियेफ नगरका सर्वसहार किया, वहा की सारी कलाकृतिया और इमारते अग्निसात् कर दी। तबसे
[illegible] वीं सदी तकके लिये कियेफ नगर उजाड़ हो गया। इसी साल अर्मनीका राजा आवक अपनी
बहिन तमता के साथ ओगोताइके दरबारमें सम्मान प्रकट करनेके लिये गया। उसी साल किपचक-
राज ओतिसर हङ्गारियाकी ओर भागा।

१२४१ ई० में मगोल-सेना लुबलिन नगरमें दाखिल हुई और उसने विस्तुला तकके प्रदेशको लूटा
और जलाया। [illegible] मगोल [illegible] नगरमें थे, फिर लूटते-मारते आग लगाते सैलिसियाकी ओर बढ़े।
ओडर नदीको रतिबरमें पार कर वह ब्रेसलाके सामने पहुंचे। आगे भी योजना बना वह लूटने-पाटते
लिग्निज नगरकी ओर बढ़े, जहापर बीस हजार सेनाके साथ ड्यूक हेनरी द्वितीय मुकाबिलेके लिये
तैयार था। [illegible] बतलाई जाती है, जिसमें सदेह है। काटड नदीके तटपर अवस्थित
इस मैदानमें—जहा पीछे वाल्स्टाट (युद्धक्षेत्र) गाव बसा—९ अप्रैल १२४१ ई० को वह युद्ध हुआ,
जिसने [illegible] फैसला किया। मगोल विजय नहीं प्राप्त कर सके, और गिरियाये हुये वहासे
[illegible] लिग्निज नगरको जलाते पीछे हटे। इस युद्धमें मरे लोगोंके कान ९ बोरे हुये थे।

[illegible] १२ मार्चको बा-तूने सेनासे साढ़े तीन दिनके रास्तेपर हूगरोंको हराया था। लिग्-
निजके [illegible] दल्मातियासे होते अद्रियातिक समुद्रके तटपर बोगियन (यूगोस्लाविया)
[illegible]।

हुई थी। १२५१ ई० मे मगोलोने लाहौरको लूटा और जलाया, इस समय दिल्लीके तख्तपर नासिर खुसरू था।

४. मुङ-खे, मङ-गू, स्यान्-चुङ (१२५१-५९ ई०)

मुङ-खे थो (तो) लोइका पुत्र तथा खु-वि-लेई (कुबिलेइ) का अग्रज था। अवसे एक तरह सिहासन थो-लोइकी सतानमे चला गया। इन्ही दोनो भाइयोका छोटा भाई खु-ला-कू (हुलाकू) था, जिसने ईरान और मेसोपोतामियापर भी अपनी सतानो के लिये विजय प्राप्त की। १२५१ ई० मे ही, जिस साल कि लाहौर का सर्वसहार हुआ, मगोल-सेनाये मेसोपोतामियामे प्रविष्ट हुई, जहा उन्होने दियारबेकर और मेयाफरकिनका सर्वसहार किया। इसी समय उत्तराधिकारके लिये झगडेका परिणाम मगोल-राज-कुमारोमे वैमनस्यके रूपमे दिखलाई पडा, जिसके लिये १२५२ ई० मे कूरिल्ताई बुलाई गई। इसी कूरिल्ताईने जहा राजकुमारोके मुकदमोका फैसला किया, वहा जागीरो और अधिकारोका वटवारा भी किया। तुङ-कुङ-चुङ-फू (शेन्सी), होनान् कुबिलेइ (हूबिलेइ) को जागीरमे मिले। उसे सुङ-वशके खिलाफ दक्षिण-चीन मे अभियान करनेवाली सेनाका सेनापति भी नियुक्त किया गया। खाकानके दूसरे भाई खुलाकू (हुलाकू) को ईरानकी ओर बढनेका काम सौपा गया, जिसकी सहायताके लिये किटू-बुकाको नियुक्त किया गया। लेकिन अभी खुलाकूकी दिग्विजय मध्य-एसियाके पहाडो ही तक सीमित थी।

सबसे कडा सघर्ष दक्षिणी चीनमे सुङ-वशके साथ होनेवाला था, जिसके लिये कुबिलेने वडी तैयारी (१२५३ ई०) की। शेन्सीमे उसने एक वडी सेना जमा की, लेकिन दक्षिणकी ओर बढनेमे जल्दी नही की—मगोल-सेनाये पूरी तैयारी और योजनाके साथ अपना अभियान किया करती थी। १२५३ ई० में ही मगोल-सेनाओने पूर्वी तिव्वत ले लिया, और उसी साल मुल्तान भी उनके हाथमे चला गया। इसी साल ईसाई मिस्नरी रुवरिक मुङ-खेके दरवारमे कराकोरम पहुचा। उसने अपने यात्रा-विवरणमें मगोल-साम्राज्य, उसके राजपथो और राजधानीका वहुत अच्छा वर्णन किया है। उसके लिखनेसे मालूम होता है, कि राजपरिवारके लोग ईसाई, वौद्ध और मुसलमान सभीकी पूजाओमे शामिल हुआ करते थे। मार्को पोलोकी महान् यात्रा मुङ-खेके भाई कुबिलेके समय हुई, लेकिन रुवरिकका यात्रा-विवरण भी कम महत्त्व नही रखता।

फर्वरी १२५४ ई० मे खुलाकूने अपनी विजय-यात्रा आरम्भ की। भारी सेनाके साथ वह ईरानकी ओर वढा। ससारमें चारो तरफ मगोलोकी धाक जमी हुई थी। "एक वार खूनके कीचड और खोपडि-योके वडे-वडे मीनार खडा कर गावो और नगरोको ऐसा ध्वस्त कर दो, कि वहा कोई रोनेवाला न रहे, फिर कोई मगोलोके खिलाफ उठनेकी हिम्मत नही करेगा"—उनकी यह नीति सफल हो रही थी। १२५६ ई० में लालो, पूर्व-दक्षिणी तिव्वत और आवा (वर्मा) के राजाओने अधीनता स्वीकार की। कोरियाका राजा अधीनता और सम्मान-प्रदर्शन करने के लिये स्वय हगान (खाकान) के दरवारमें पहुचा। अगले साल (१२५७ ई० मे) तोङ-किन् (अनाम) और था नदी तककी भूमिने मगोलोको अपना स्वामी स्वीकार किया। सुङ-राज पूरी तौरसे खतम नही हो पाया था, लेकिन कुबिलेइके प्रहारोसे अब वह कुछ ही दिनोका मेहमान था। कुबिलेइकी इस सफलतापर मुङ-खेको ईर्ष्या होने लगी। दरवारियोने उसे भडकाया, कि कुबिलेइ स्वय खाकान वनना चाहता है। कुबिलेइको जब यह खबर लगी, तो वह जल्दी-जल्दी अपने भाईके दरवारमे पहुचा। उसके सौहार्द और अधीनता-प्रदर्शनसे मुङ-खे वहुत प्रसन्न हुआ और कुबिलेइके साथ स्वय सुङ-राज्यपर आक्रमण करने चला। इसी साल हगानने अपने भाई खुलाकूको वक्षुके दक्षिणका सेनापति नियुक्त किया।

१८ फर्वरी (१२५९ ई०) को मुङ-खे चुङ-कुये (सू-चाउ) मे मर गया। इस समय तक सारा मगोल-साम्राज्य एक था, और भिन्न-भिन्न खानोने अपनी स्वतत्रता घोषित नही की थी।

५ कुबिलेइ, ह्वोबिलेइ, स-छेन्, शि-चू, (१२६०-९४ ई०)

ह्वोबिलेइ कुबिलेइ खानके नामसे अधिक प्रसिद्ध है। भाईके मरनेके वाद इसने कूरिल्ताईके निर्वाचन-की प्रतीक्षा न कर तुरन्त अपनेको हगान घोषित किया, लेकिन कूरिल्ताईकी रसमको वह हटाना नही

मण करनेके लिये भारी तैयारी करनी शुरु की। द्वीप होनेके कारण जापानपर नौसेनासे ही आक्रमण किया जा सकता था, जिसके लिये हजारो जगी जहाज बनाये जाने लगे।

चीनी भाषाके लिखनेके लिये वर्णमाला नही शब्द-सकेतका उपयोग होता है, जिसमे अकोकी तरह कुछ सुभीते भी है, लेकिन उसमे उच्चारण-सकेतके लिये कोई स्थान नही है। मगोल-भाषा उइगुर (सिरियावाली) लिपिमे लिखी जाती थी, जिसमे डेढ दर्जन भी अक्षर न होनेसे उच्चारण ठीक-ठीक रखना सम्भव नही था। कुविलेइके कहनेपर भारतीय और उससे निकली तिब्बती लिपिसे सुपरिचित होनेके कारण फग्पाने १२६९ ई० मे मगोल-भाषाके लिये एक विशेष लिपि बनाई। इसी साल उसे कुविलेइने ता-पाउ-फा-वड्की उपाधि प्रदान की। १२७१ ई० मे कुविलेइने अपने वशका नया नाम यु-अन रखा, जिस नामसे वह वश आज भी चीनमे प्रसिद्ध है। इसी साल वर्मा (मी-यन) के राजासे अधीनता मनवानेके लिये मगोल-सेना भेजी गई। १२७४ ई० मे जहा सियाङ-याङके विजयमे सम्राट्को बडी प्रसन्नता हुई, वहा यह खबर सुनकर बहुत खेद भी हुआ, कि मगोल नौसेना चु-सिमाकी खाडी में जापानियो द्वारा घोर रूपसे पराजित हुई, सारा सैनिक वेडा नष्ट हो गया। इसमें शक नही उस समय जापानियोमे भी भारी शत्रु सामुद्रिक तूफान हुआ।

अज्ञात समुद्रके बीचमे हुई चु-सीमाकी हार कुविलेइके विशाल साम्राज्य मे उसकी धाकके कम होनेका कारण नही हो सकती थी। हा, जापानियोमे यह भाव जरूर पैदा हो गया, कि हमारा देश अजेय है। सचमुच ही आगेकी ६ शताब्दियो तक जापान बाहरी शत्रुओसे बचा रहा, जब तक कि अमरीकी नौसेनाने १९ वी शताब्दीके मध्यमें बुरी तरहसे हराकर जापानियोकी आखे नही खोल दी। अगले साल १२७५ ई० मे सेनापति बायनने चिङ-चाउ नगरपर आक्रमण किया। नगर-निवासियोको प्रतिरोध करनेका यही फल मिला, कि सेनापतिके हुक्मसे लोगोकी निर्मम हत्या की गई। इसी साल लिङ-अन् राजधानी-पर भी मगोलोने अधिकार कर लिया। तरुण सम्राट्की अभिभाविका सम्राज्ञीने अधीनता-स्वीकृतिके प्रतीकके रूपमे राजसिंहासनको भेजा, लेकिन सेनापति बायनको यह अधिकार नही था, कि वह सुङ-वशका अवशेष भी रहने दे। उसने नगर-प्रबधके लिये चीनियो और मगोलोकी एक परिषद् नियुक्त की। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि उत्तरी चीन आधी शताब्दी पहिले हीसे मगोलोके हाथमे था, इसलिये मगोल-भक्त चीनियोकी कमी नही थी। चार मगोल-अफसर राजधानीकी चीजोके सग्रह करनेके लिये नियुक्त हुये। उन्होने भिन्न-भिन्न राज्यविभागो की मुद्रायें जमा की। अभिलेखा-गारमे उन्हें बहुत-सी किताबें, वही-खाते, ऐतिहासिक स्मृतिचिन्ह, भूगोल और ज्योतिष-सम्बन्धी रेखाचित्र आदि मिले। लिङ-अन् (हङ-चाउ) चीनकी सबसे बडी नगरी थी। उसका घेरा सौ मील (२४ फरसक) था। नदीको आर-पार करने तथा दूसरे कामोके लिये नगरमे बारह हजार पुल थे। नगर बारह विभागोमे विभक्त था, जिनमेंसे हरएकमे बारह हजार घर तथा प्रत्येक घरमे बारह, बीस, चालीस तक व्यक्ति रहते थे। नगरके घर अधिकतर लकडीके थे। राजप्रासादमे बीस बडे-बडे हाल थे। सबमे बडी राजशाला खूब सजी हुई थी। उसकी दीवारोपर ऐतिहासिक दृश्य सोनेसे चित्रित थे। सब मिलाकर नगरमें सोलह लाख आदमी रहते थे—बत्तीस हजार तोसिर्फ रगरेजोके घर थे। सात सौ मदिर थे। सेनापति बायनने राजमाता, रानी, सम्राट् ली-चुङ और उसके अनुचरोको खानके पास भेज दिया। महल छोडनेसे पहले राजमाता और सम्राट्को खाकान (उत्तर) की ओर मुह करके सात बार दडवत् करनी पडी। कुविलेइकी प्रधान खातून (रानी) ने राजमाता और रानीके साथ अच्छा बर्ताव किया। राजधानीसे लाये सोने-चादी और दूसरे खजानेको देखकर खातून रो पडी। वह इस प्राचीन राजवशके ध्वसमे मगोल-राजवशके उच्छेदकी छाया देख रही थी, सोच रही थी, "उस समय मेरे बच्चो की भी यही हालत होगी, जो कि आज (१२७७ ई०) इनकी हो रही है। मेरे वशकी राजमाता, रानी और सम्राट्को भी एक दिन इसी तरह वेइज्जत हो बदी बनना पडेगा।" लेकिन, मगोल-वशका अत सुङकी तरह नही हुआ, क्योकि मगोलिया इस वशको शरण देनेके लिये मौजूद थी।

कुविलेइका राज्यकाल केवल राजसी तडक-भडक और दिग्विजयोके लिये ही प्रसिद्ध नही था, बल्कि कला और विज्ञानके भारी विकासका भी यही समय था। उसके गणितज्ञ तू-चीने १२८० ई० मे राजाज्ञा पाकर ह्वाङ-हो (पीत नदी) के उद्गमका पता लगानेका काम चार मासमें खतम किया।

१२८७ ई० में तोङ-किङ (हिन्द-चीन) ने अधीनता स्वीकार की। १२९० ई० में १०३ जिल्दोंमें आज भी मौजूद कंजूर (तिब्बती त्रिपिटक) को कुबिलेइने सुवर्णाक्षरोंमें लिखवाया। जापानमें नौसैनिक अभियानमें असफल होनेपर भी कुबिलेइने समुद्र-विजयके निश्चयको छोड़ा नहीं। मृत्युसे एक साल पहिले १२९३ ई० में उसने तीस हजार सेनाके साथ एक हजार जंगी जहाज जावा आदिकी विजयके लिये भेजे। कुछ संघर्षके बाद जावाने अधीनता स्वीकार की।

जिस साल सुङ राजधानीका पतन हुआ, उसी साल मंगोल-सेनापति नासिरुद्दीनने बर्मा और बंगालपर आक्रमण किया। बर्माकी राजधानीपर वह अधिकार नहीं कर सका, लेकिन दोनों देशोंने मंगोलोंकी आंशिक अधीनता जरूर स्वीकार कर ली। १२८८ ई० में बर्मापर पूरी तौरसे भी अधिकार हो गया। इसी समय कोचीन-चीनपर भी मंगोलोंने आक्रमण किया। इसी साल कुबिलेइ का दूत बुद्धकी दन्त-धातुकी पूजाके लिये लंका पहुंचा। १२८७ ई० में तोङ-किङ (कोचीन-चीन) ने मंगोल-अधीनता स्वीकार कर ली।

पैंतीस साल राज्य करनेके बाद १२८८ ई० में अस्सी वर्षकी उमरमें कुबिलेइ खानका देहान्त हुआ। "इतने बड़े साम्राज्य पर कुबिलेइसे पहले किसी एक व्यक्तिने शासन नहीं किया था। उसके राज्यमें सारा चीन, कोरिया, तोङ-किङ (कोचीन-चीन), गंगासे परे और पंजाबकी बहुत-सी भारतीय भूमि, साइबेरियासे तुर्की तकके देश, और पोलैंड और हंगरी तककी भूमि सम्मिलित थी।"

(१) मार्को-पोलो—कुबिलेइके शासन और कालके ऊपर वेनिस-निवासी प्रसिद्ध पर्यटक मार्को पोलोकी यात्रा-पुस्तक द्वारा बहुत प्रकाश पड़ता है। १३ वीं शताब्दीमें वेनिस नगर युरोपका सबसे बड़ा व्यापार-केंद्र था। वेनिसी व्यापारियोंने सभी देशोंमें अपनी कोठियोंके जाल बिछा रखे थे। इन्हीं व्यापारियोंमेंसे दो जौहरी-भाई मफियो और पोलो १२५५ ई० में व्यापार करने कान्स्तन्तिनोपोल आये। दोनों भाइयोंने वहां अपने रत्नोंका बहुत अच्छा दाम पाया। उससे उत्साहित होकर वह पासके क्षुद्र-एसियाके मंगोल-शासित प्रदेशमें सौदा करनेकी गरजसे प्रविष्ट हुये। यह भूमि हुलाकू-वंशके अधीन थी। वहां उन्हें कुबिलेइ खानका दूत मिला, जिसने पोलोंसे साथ पेकिङ चलनेका प्रस्ताव किया। मंगोल-साम्राज्यमें जितना सुरक्षित यातायातका प्रबंध था, उतना उससे पहले और बादकी भी कई शताब्दियों तक नहीं देखा गया। मंगोलों का इतना आतंक था, कि कोई चोरी-बटमारी करनेकी हिम्मत नहीं करता था। युरोपसे चीनकी पूर्वी छोर तक लोग निश्चिन्त हो स्थल-यात्रा करते थे। सामुद्रिक यात्राका भी अच्छा प्रबंध था। दोनों वेनिसी व्यापारी मंगोल-दूतके साथ कुछ समय बाद कुबिलेइके दरबारमें पहुंचे। खानने उनका बड़ा सम्मान किया। उस समय पश्चिमी युरोपमें रोमके पोपका जबर्दस्त प्रभाव था। वह धार्मिक महन्त ही नहीं, बल्कि राजाओंका भी राजा था—किसी को गद्दीपर बैठाना या उतारना उसके बायें हाथका खेल था। कुबिलेइने पूरबके स्वामीके तौरपर पश्चिमी देशोंके प्रमुख पोप ग्रेगरीको एक पत्र लिखकर पोलोंके हाथ भेजा। पोपने इस अवसरसे लाभ उठाना चाहा। हमें मालूम ही है, उससे पहले ही रुब्रुक्स मुङ-खेके दरबारमें कराकोरम पहुंचा था। पोपने अपने सन्देशको सुरक्षित पहुंचानेके लिये फिर निकोलो पोलोको चीन जानेकेलिये मजबूर किया। अबकी बार निकोलोने अपने भाई मफियोको ही नहीं बल्कि सत्रह सालके पुत्र मार्कोको भी साथ लिया। ईरान, मध्य-एसिया, पामीर, पूर्वी-तुर्किस्तान होते तीनों पोलो चीन पहुंचे। खानने उनका बड़ा सम्मान किया। मार्को पोलोकी प्रतिभा और योग्यतासे प्रभावित हो कुबिलेइने उसपर अधिक अनुकम्पा दिखलाई। उसे साम्राज्यके भिन्न-भिन्न भागोंमें भौगोलिक तथा दूसरी खोजें करनेके लिये भेजा। अन्तमें बढ़ते-बढ़ते मार्कोको यङ्-चाउ जैसे एक बड़े समृद्ध नगरका राज्यपाल बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। पोलो बाप-बेटे सत्रह साल चीनमें रहे। गणतंत्री वेनिस नगरके नागरिक होनेके कारण वह केवल बनिया ही नहीं बल्कि सैनिक और दूसरी विद्याओंका भी काफी ज्ञान रखते थे। उन्होंने अपने पश्चिमी दुनियाके ज्ञान-द्वारा मंगोल-शासनको बहुत लाभ पहुंचाया। यद्यपि बारूदकी प्रारम्भिक तोपों, और पाषाणक्षेपक यंत्र (कटापुल) का उपयोग चिङ्-गिस खानने भी किया था, लेकिन उसमें अब बहुत-से सुधार और विकास

१ देखो मेरी "बौद्ध-संस्कृति" पृष्ठ ११५-१६

किये गये, जिसमे पोलोका भी हाथ था। इनके सुझावके अनुसार बनाये हुये हथियारोका इस्तेमाल १२७३ ई० मे सियाङ-याङ नगरके मुहासिरेमे किया गया। उस अजेय नगरीको नतमस्तक करनेमे इन यत्रोका बहुत हाथ था, इसमे सदेह नही।

पोलो बडे सम्मान और आनन्दके साथ चीन मे रह रहे थे, लेकिन उधर मातृनगरी वेनिस इतना अपनी ओर खीच रही थी, कि उनकी नजरोमे यह सारा सुख और आनन्द फीका था। उनकी प्रार्थनापर कुबिलेइ खानने प्रसन्नतापूर्वक बिदाई दी। इसी समय एक मगोल-राजकुमारी ईरानके मगोल-राजकुमार के साथ ब्याह करनेके लिये भेजी जा रही थी। पोलो बाप-बेटो को भी उसी वधू-यात्रामे सम्मिलित कर दिया गया। अबके उनकी यात्रा समुद्र-मार्गसे हुई। वह अठारह महीने बाद पारसकी खाडी मे पहुचे। बन्दरगाहसे राजकुमारीको स्वागत कर ससुरालवाले ले गये और पोलो बाप-बेटोने वेनिसका रास्ता लिया, जहा कान्स्तंतिनोपोल होते १२९५ ई० मे पहुचे। तब तक कुबिलेइको मरे एक साल हो गया था। हित-मित्र पोलोकी यात्राओको सुनते नही थकते थे, लेकिन साथ ही वह इस बातका विश्वास करनेके लिये तैयार नही थे, कि हगानका राजस्व प्रतिवर्ष एकसे डेढ करोड सुवर्ण दुकात है, तथा उसके अधीन मिलियनो (करोडो) मानव है। इस सख्यापर विश्वास न कर उन्होने मार्कोको 'मिलियनी' (करोडी) नाम दे दिया था। उस युगमे युरोपमे पडोसी देशोके झगडे आम थे। वेनिस गणराज्यका झगडा गेनवावालोसे था। इसी लडाईमे मार्को पोलो भी भाग लेने गया और युद्धबदी बना। अपने बदी-जीवनमे ही मार्को पोलोने अपनी यात्रा-कथा मध्यकालीन लेखक रुस्तिसियन-दे-पीसाको सुनाई, जिसने उसके आधारपर "मार्को पोलोकी यात्राये" नामक प्रसिद्ध पुस्तक तैयार की। मार्को पोलोकी यह यात्रा दुनियाकी यात्रा-पुस्तको मे सिरमौर मानी जाती है, जिसमे उसने अपने देखे हुये स्थानो, व्यक्तियो, रीति-रवाजो और दूसरी चीजोका बडा सुदर विवरण दिया है। वह कहता है—"सम्राट्के दूत काम्-बालू (खान-बालिग, पेकिङ) से यात्रा करते समय हर पचीस मीलपर टिकान पाते है, जिसे वह लोग घोडाचौकी कहते है। प्रत्येक मजिलपर एक बडी और सुदर इमारत उनके ठहरनेके लिये बनी है। इमारतके सभी कमरे बढिया कालीनो और कीमती रेशमी वस्त्रो से सजाये गये है। अगर कोई राजा भी इन मकानोमें आ जाये, तो वह बडे आरामसे ठहर सकता है। इन चौकियोमेंसे कितनोमें चार सौ और किन्ही-किन्हीमें दो सौ घोडे तैयार रहते है। चाहे दूतको ऐसी बे-रास्तेकी भूमिमें भी जाना पड रहा हो, जहापर टिकानकी आशा नही हो सकती, वहा भी कुछ फासलेपर ऐसा विश्राम-स्थान मिल जायेगा, जहा सभी आवश्यक चीजोका प्रबध होगा। इसीलिये सम्राटके दूत चाहे जिस देशसे भी आयें, उनके लिये वहा सभी चीजें तैयार मिलती है।

"जो सम्पत्ति और समृद्धि खाकानके यहा देखी जाती है, उसे कभी किसी सम्राट्, राजा या राजुलके पास नही देखा गया। इन सभी विश्रामस्थानोमे दो लाख घोडे तैयार रहते है, और इमारते दस हजारसे ज्यादा है। सामान इतने बडे पैमानेपर और अद्भुत ढगके है, कि उनका वर्णन करना मुश्किल है।

"इस प्रबधसे खाकान दस दिनकी दूरीके स्थानोंके समाचार एक दिन-रातमें पा लेता है। कितनी ही बार सबेरेके वक्त काम्बालू (पेकिङ) से फल रवाना किया जाता है, और दूसरे दिन शामको वह खाकानके पास चेन्-दू (सन्दा) में पहुच जाता है। आदमी एक दिनमें दो-ढाई सौ मील चले जाते है, और उतनी ही यात्रा वह रातको करते हैं। इन दूतोके शरीरपर एक चौडी पट्टी बधी रहती है, जिसके चारो ओर घटिया लगी रहती हैं। घटिया दूरसे ही सुनाई देती है, जिसके कारण चौकीपर पहुचनेके समय दूसरा दूत वहा तैयार मिलता है, जो उसी तरह पहले दूतकी लाई चीजको लेकर घोडा दौडाने लगता है। चौकीका लेखक चीजकी प्राप्तिकी चिट आये हुये दूतको दे देनेके लिये हर वक्त तैयार रहता है। हर चौकीका लेखक दूतके आगमन और प्रस्थानका समय लिख लेता है। हर चौकीपर लगाम-चारजामा लगे तैयार ताजे घोडे मौजूद रहते है। बस उसपर चढो और पूरी चालसे दौडाओ। फिर दूसरी चौकीपर जब दूरसे घटीकी आवाज सुनाई देती है, तो दूसरा घोडा और सवार तैयार हो जाता है। जिस वेगसे वह दौडते है, वह बडा अद्भुत है। रातको भी वह उतना ही तेज चलते है, जितना दिनको, क्योकि उनके साथ मशालची सवार होते है।

"ये घोडसवार-दूत बहुत अच्छा वेतन पाते हैं। वह इतने मुश्किल कामको बिना अपने पेट, सिर और छातीको मजबूत पट्टीसे बांधे नहीं कर सकते। वह अपने साथ एक अंकित पट्टिका ले चलते हैं, जो इस बातको प्रकट करती है, कि वह बहुत जरूरी कामके लिये जा रहे हैं। इसीलिये यदि संयोगसे कहीं घोडेके अंग-भंग होने या गिर जाने से दूत सडकपर पड जाये, तो वह दूसरा घोडा ले सकता है। कोई उसकी मांगसे इन्कार नहीं कर सकता।"

मार्को पोलोने बतलाया है, कि उस समय प्रत्येक बडे शहरमे एक दारोगा रहता था, जिसका काम था रास्तेकी देख-भाल करना।

(२) जाति-व्यवस्था—चाहे भारतकी तरहकी कडी जाति-व्यवस्था न हो, किन्तु सभी सामन्ती शासनोंमें जातिभेदका होना आवश्यक देखा जाता है। ६ठी-७वी शताब्दीमे ईरानमें जातिभेद करीब-करीब उसी तरहका था, जैसा भारतमें। मंगोलोंसे पहले चीनमें भी जातिभेद था। मंगोलोंने भी अपनी प्रजाको चार वर्गोमें बांटा था, जिनमें प्रथममें उनके अपने मंगोल आते थे, द्वितीय वर्गमे से-मू (तुर्क मुसलमान), तूफान (तिब्बती), तुगुत, मध्य-एसिया तथा पश्चिमी एसिया के दूसरे वह लोग थे, जो मंगोलोंके साथ नसली या सांस्कृतिक समीपता रखते थे। तीसरे वर्गमें उत्तरी चीनवाले थे, जो कि किन्-शासनके बाद मंगोल-शासन में आये थे। चौथे वर्ग में सुङ-साम्राज्यमें रहनेवाले दक्षिणी चीनी थे, जिन्होंने मंगोलोंका जबर्दस्त प्रतिरोध किया था, इसीलिये उन्हे सबसे निचले वर्गमे रखा गया था। पहले इन्हें किसी राजकीय सेवामें भरती होनेका अधिकार भी नहीं था। चीनमे पहलेसे चली आती अधिकारियोंकी परीक्षाओंमे यद्यपि चीनियोंके सम्मिलित होनेमे कोई रुकावट नहीं थी, लेकिन चाहे चीनी परीक्षामें उच्चसे उच्च स्थान पाये, तब भी बाईं ओरकी सूचीमे उसका नाम लिखा जाता था, जब कि मंगोल और से-मू दक्षिणी सूचीमे स्थान पाते थे। नौकरीमें ले लेनेपर भी चीनियोंको मंगोल-भाषा सीखने और मंगोलोंके धर्मके प्रति सम्मान दिखानेके लिये मजबूर होना पडता। दंड देनेमें भी भेद-भाव रक्खा जाता। यदि कोई चीनी चोरी करता, तो पहले अपराधके लिये उसकी बाईं बांहमे गोदना गोद दिया जाता, दूसरी बार अपराध करनेपर दाहिनी बांहमें, तीसरी बार गर्दनपर, जिसे देखकर कोई भी आदमी अपराधीको पहिचान सकता था। लेकिन, उसी अपराधके लिये मंगोलोंको इस तरहका दंड नही दे मामूली जुर्माना लेकर छोड दिया जाता था। अगर कोई चीनी किसी मंगोल या से-मू को मार डालता, तो उसे मृत्यु-दंड मिलता और हत्यारेके परिवारसे धन वसूल करके मृत व्यक्तिकी अन्त्येष्टि आदिका खर्च दिलवाया जाता। अगर हत्यारा मंगोल होता, तो उसे शराब के नशे, या झगडेके पागलपनको कारण बतलाकर जुर्माना या निर्वासनका दंड भर करके छोड दिया जाता था। १२७९ ई० की एक मंगोल-राजाज्ञाके अनुसार चीनियोंको हथियार रखनेका अधिकार नहीं था। धनुष-बाण भी न रख पानेके कारण वह शिकार नहीं कर सकते थे। भारतके अंग्रेज शासकोंकी तरह चीनमे मंगोल-शासकोंने भी जगह-जगह मंगोल-छावनियां कायम की थी।

और भी विस्तृत वर्गीकरण करते हुये मंगोलोंने अपनी प्रजाको निम्न दस श्रेणियों मे बांटा था—

(१) उच्च दरबारी, (२) अधीनस्थ या स्थानीय अफसर, (३) लामा (साधु), (४) ताउ-साधु, (५) वैद्य, (६) कारीगर और मजूर, (७) शिकारी, (८) पेशावर लोग, (९) कन्फूसी पुरोहित और (१०) भिखमंगे। मंगोल कन्फूसी आचार्योको बहुत नीची दृष्टिसे देखते थे, जब कि पुराने चीनी शासनमें कन्फूसी विद्वानो का स्थान राजवंशके बाद ही आता था। इसमे शक नहीं, चीनी विद्या और संस्कृतिके निधिरक्षकोंको उनके अनुरूप स्थान न दे मंगोलोंने बुरा किया था, लेकिन वह यह भी जानते थे, कि चीनी संस्कृति और सामन्तवादके इन अंधे पुजारियोंसे अपने लिये, हम कोई भलाईकी आशा नहीं रख सकते थे। कन्फूसी यदि केवल चीनी संस्कृति और कलाके ही नेता होते, तो समझौता हो जाता अथवा यदि मंगोल पूरी तौरसे चीनी बननेके लिये तैयार होते, तब भी कन्फूसी विद्वानोंको भिखारियोंके पास बैठनेकी जरूरत नहीं पडती। कन्फूसी शिक्षा और विद्वानोंके प्रभावको चीनके सभी सामन्ती शासक अपने लाभके लिये इस्तेमाल करते रहे। अभी हालमे चाङ-काइ-शकने भी इस हथियारका पूरी तौरसे उपयोग करना चाहा। शासकके प्रति आंख मूंदकर सद्भावना और आज्ञाकारिता प्रदर्शित करना कन्फूसी शिक्षाका एक मुख्य अंग है, इसीलिये शासकोंकी उनपर विशेष अनुकम्पा होनी स्वा-

भाविक है। लेकिन कन्फूसी साहित्य और शिक्षामे एकमात्र दास-मनोवृत्ति सिखलाना ही नही है, उसमे कितनेही और भी उच्च सास्कृतिक तत्त्व है, जिनको छोडा नही जा सकता, लेकिन इसका नीर-क्षीर-विवेक करते उपयोग करना नवीन चीनमे ही सम्भव हो सकता है।

मगोल खाकान गैर-मगोल जातियोके लिये स्वेच्छारी और कितनी ही बार अतिनिष्ठुर शासक थे, लेकिन उस निष्ठुरताका प्रयोग वह हर वक्त नही करते थे। यद्यपि मगोलोके साथ उनका खास पक्षपात था, लेकिन अधीनस्थ जातियोको भी वह अधिकारोसे सर्वथा वचित नही रखते थे। प्राय सभी विजित देशोमे उन्होने पुराने राजाओ और सुल्तानोको अपने अधीन शासक बनाकर रख छोडा, सिवाय उन देशोके जहाके लोगोने उनका जबर्दस्त प्रतिरोध किया था। कुबिलेइने यद्यपि खानवालिग (पेकिड) को अपनी राजधानी बना उसे भव्य प्रासादोवाली समृद्ध नगरीमे परिणत कर दिया था, लेकिन उसका भी अधिक समय तम्बुओके भीतर बीतता था। मगोल अपने घुमतू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय समझते थे, इसीलिये चीन या दूसरे देशो पर शासन करनेवाले सभी मगोल-खाकानोकी राजधानिया चिडिया-रैनबसेरा जैसी ही थी। मगोल-भाषामे राजधानी और प्रासादो को सराय कहते है। उसका अर्थ मुसाफिरोकी सरायका हर्गिज नही था। मार्को पोलोके अनुसार राजपथोके हर मजिलपर "सराय" (प्रासाद) थी, शायद उसीके कारण मुसाफिरोकी टिकानको भी सराय कहा जाने लगा। राजकुमारो और बडे-बडे सैनिक अफसरोको राज्यके भीतर अपने-अपने भूखण्ड मिले हुये थे, जिनपर वह अपनी मर्जीके मुताबिक शासन करते थे। यद्यपि छिड-गिस्ने मध्य-एसियाके मुसलमानोके साथ बडी क्रूरताका बर्ताव किया था, बलख, मेर्व, तूस जैसे कितने ही समृद्ध नगरोकी वस्तुत उसने ईंटसे ईंट बजा दी थी, जिसके कारण वह फिर नही उठ सके, लेकिन, पीछे मगोलोका बर्ताव मुस्लिम जातियोसे अधिक सहानुभूति-पूर्ण था, यह इसीसे पता लगता है, कि इन जातियोको उन्होने चारो वर्गोमेंसे द्वितीय वर्गमें रक्खा था। कुबिले खानकी बर्मा और बगालपर आक्रमण करनेवाली सेना का सेनापति नासिरुद्दीन भी इसका स्पष्ट उदाहरण है—मगोल ऊचे सैनिक पद को भी मुसलमानोको देनेके लिये तैयार थे। इसका एक और भी कारण था—चाहे मध्य-एसियाके तुर्क मुसलमान हो गये हो, लेकिन जातित वह मगोलोके भाई-बन्द थे। रूसियो और पश्चिमी जातियोके खिलाफ अभियान करते समय मगोलोने किपचक तुर्कोसे भाईचारा लगाकर उन्हे अपनी ओर कर लिया था, जिससे उन्हे एक लडाकू जाति सहायक मिल गई।

मगोल-भाषाके प्रति मगोल-शासकोका अधिक पक्षपात स्वाभाविक था। उनके आज्ञापत्र उइगुर लिपिमे लिखी मगोल-भाषामे हुआ करते थे। १३वी शताब्दीके आरम्भमे चली हुई यह परिपाटी १५वी शताब्दीके आरम्भ तक तेमूरलग और उसके पुत्रोके समय तक जारी रही। कट्टर मुसलमान होते भी यह लोग छिड-गिस् की विरासतको छोडनेके लिये तैयार नही थे। लेकिन, मगोल-भाषाका विकास जितना होना चाहिये था, उतना नही हो सका। "मगोल-उन्निगुचा" (तोपचिया), "युवान-चाउ-बि-शी" जैसे कुछ इतिहास या दूसरे विषयोके ग्रथ उस समय मगोल-भाषामे लिखे गये। पीछेके मगोल-शासकोके लिये ग्रथ अधिकतर चीनी या पारसीमे लिखे गये, जो प्राय इतिहाससे सबध रखते थे। चीनमे मगोल-भाषामे जो ग्रथ लिखे गये, उनके अनुवाद चीनीमे भी हुये थे, पीछे मूल (मगोल) ग्रथ लुप्त हो गये और उनके चीनी अनुवाद भर बच रहे। कुबिलेइ खानने अपना ही नही अपने वशका भी धर्म बौद्ध-धर्मको घोषित किया और अपने गुरु फग्पा लामाको तिब्बतका राज्य प्रदान किया, किन्तु उसने बौद्ध-ग्रथोके मगोल-अनुवादका काम बहुत आगे नही बढाया। १५ महाभारतोके बराबर भारतीय ग्रथोके अनुवाद कन्जुर (बुद्ध-वचनानुवाद) और तन्जुर (शास्त्रानुवाद) के नामसे तिब्बती भाषामे मौजूद थे। उनमे (तिब्बती) कन्जुरको कुबिलेइ खानने स्वय सोनेके अक्षरो मे लिखवाया था, लेकिन उनका मगोल-अनुवाद उस समय हुआ, जब चीनसे मगोल-शासन खतम हो गया। मगोल शायद सस्कृतकी तरह तिब्बती भाषामे ही धर्म-ग्रथो का पढना ज्यादा पुण्यदायक समझते थे। आज भी मगोलियामें कन्जुर और तन्जुरके मगोल-भाषामे हो जानेपर भी उन्हे तिब्बती भाषामे पढना ज्यादा पुण्यकार्य समझा जाता है। शायद यह भी कारण रहा हो, लेकिन उस समय आजकी तरह मगोलोमे तिब्बती भाषाका प्रचार नही था, इसलिये अधिकाश लोग तिब्बती ग्रथोको बिना समझे ही पढ सकते थे।

मंगोलोंके समयसे पहले ही चीनी कलाका सुवर्ण-युग थाङ-काल (६१८-८६९ ई०) बीत चुका था, तो भी मंगोलोंने कलाका संरक्षण-संवर्धन किया। नाट्य-कला के विकासमें तो उनका विशेष हाथ रहा। चीनमें संगीत, अभिनय और नृत्यका प्रयोग बड़ी साजसज्जाके साथ बहुत पहलेसे चला आता था, लेकिन तीनों चीजोंका पहले वैसा सुंदर सम्मिश्रण नहीं हुआ था, जैसा कि मंगोल-शासकोंके संरक्षणमें। मंगोल-वंशने नाट्य-कला की बड़ी अभिवृद्धि की, बड़े सुंदर-सुंदर रंगमंच बनवाये। दरबारके समय खानके साथ भिन्न-भिन्न देशोंके राजदूत भी नाटकका अभिनय देखते थे। उस समय नाट्यके लिये जो नियम और व्यवस्था कायम की गई, उससे चीनी रंगमंचको बहुत प्रेरणा मिली, जिसका प्रभाव आज भी देखा जाता है। चित्र-कलामें भी वस्तु-निर्वाचन, उसके चित्रण तथा प्रभावमें विशेष कार्य हुआ। मंगोलोंका गतिमय शक्तिशाली जीवन चित्रोंकी रेखाओंमें अंकित होने लगा, पुराने कालसे चले आये शान्त-रसकी प्रधानताका स्थान अब वीर और रौद्ररसोंने लिया। अब भी शान्त प्राकृतिक दृश्य अंकित होते थे, लेकिन घुड़सवारी, शिकार और बाजके दृश्य अधिक प्रिय थे। अब बलसम्पन्न गतिको प्राप्तकर चीनी चित्रकलाको आगे बढ़नेको एक नया रास्ता मिला।

६ थुवु थेमूर, उल्द-शे-तू, चेङ-चुङ (१२९४-१३०७ ई०)

कुबिलेइने कुरिल्ताईकी शक्तिको कमजोर कर दिया था, जिससे खानोंके निर्वाचनमें पहले-जैसी स्वतंत्रता नहीं बरती जा सकती थी। इसीलिये अब सारे मंगोल-खानजादोंमेंसे किसी एकको चुननेकी जगह महाखानकी संतानको ही उत्तराधिकारी समझा जाने लगा। कुबिलेइका पुत्र छिङ-गेन् बापके समय ही मर गया था, इसलिये उसके पुत्र थुवु-थेमुरको गद्दी मिली। अब छिङ-गिस्की पाँचवीं पीढ़ी चल रही थी। एक शताब्दी के विजयोंके बाद भी अभी मंगोलोंकी शक्तिका उतना ह्रास नहीं हुआ था। १३०० ई० में बर्माके सिंहासन-वंचित राजपुत्रने मंगोल-दरबारमें पुकार की, और मंगोल-सेनाने बर्मामें पहुँचकर उसे गद्दीपर बैठाया। कुबिलेइके प्रतिद्वंद्वी अरिग्बुकाके साथ प्रतिद्वंद्विता खतम नहीं हुई थी। कैदू खानने अब भी अपने उत्तराधिकारके दावेको नहीं छोड़ा था। १३०१ ई० में उसने थुवु-थेमुरके ऊपर जबर्दस्त आक्रमण किया, जिसमें चगताइ खान्दान भी उसका सहायक था। कराकोरमके पास लड़ाई हुई। ओगोताइ-वंशी और चगताइ-वंशी दोनों खानोंको हार खानी पड़ी, कैदू मारा भी गया। उसकी जगहपर उसका पुत्र चापर ओगोताइ खान बना, जिसने थुवु-थेमुरकी अधीनता स्वीकार कर ली। १३०३ ई० में पिङयाङ और ताइ-युआनमें, फिर १३०४ ई० में पिङ-याङमें भूकम्प हुये, जिनको लेकर तरह-तरहकी भविष्यद्वाणियाँ की जाने लगीं। सौ वर्ष पहले १२०६ ई० में छिङ-गिस् खाकान घोषित हुआ था, इसलिये विरोधी यह भी अफवा उड़ा रहे थे, कि अब मंगोल-वंशका सितारा डूबनेवाला है। १३०६ ई० में कैदूका समर्थक चगताइ दावाखान मर गया, जिससे अगले साल थुवु-थेमुर भी काल कवलित हुआ।

७ खू-लुग, कू-लुक, से-सन्, वू-चुङ् (१३०७-११ ई०)

थुवु-थेमुरके मरनेके बाद उसके भाई धर्मपालका पुत्र खु-लुग कुरिल्ताई द्वारा खाकान घोषित किया गया। भूकम्पके बाद अब १३०८ में अकाल और महामारीकी बारी आई, लेकिन वह सारे साम्राज्यमें नहीं फैल सकती थी। प्रजाको प्राणोंसे मोल चुकाना पड़ रहा था, लेकिन खाकानके दरबार पर उसका क्या प्रभाव हो सकता था? इसी साल चापर खान तथा दूसरे दरबार में आये, जिनकी बड़ी आवभगत हुई। चगताइ और ओगोताइ-परिवारोंके साथ होता संघर्ष अब दब गया था, इसलिये खू-लुग घरेलू-युद्धसे निश्चिन्त था, तो भी १३०९ ई० में युन्नानमें भारी विद्रोह हुआ। युन्नन भारतीयतासे प्रभावित पूर्व-गंधार देशके नामसे प्रसिद्ध था। यहाँके लोग संस्कृतिमें ही आगे बढ़े हुये नहीं थे, बल्कि अच्छे योद्धा भी थे। अपनी स्वतंत्रताके लिये उन्होंने कुबिलेइका जबर्दस्त मुकाबिला किया था और जब कोई दूसरा रास्ता नहीं रह गया, तो उनमें से बहुत-से लोग भागकर थाई (स्याम), शान (बर्मा) और अहोम (आसाम) में चले गये, जहाँ उन्होंने नये राजवंशोंकी स्थापना की। १३०९ ई० में उन्हीं गवारोंने अपने देश युन्नानमें जबर्दस्त विद्रोह किया, जिससे युन्नानमें मंगोलोंको भारी मुश्किलका सामना करना पड़ा।

यद्यपि कुविलेइके समय ही फग्पा (फग्स्-पा=आर्य) लामाने मगोल-बादशाहके लिये नये अक्षर बना दिये थे, लेकिन इस अक्षरमे अकित पहलेपहल तावेके सिक्के खु-लुगने १३१० ई० मे ढलवाये। इसी साल मगोल-राजकुमार तू-ला (कोकोचू-पुत्र) ने असफल विद्रोह किया। थुवु-थेमुरके समय तक अभी वाहरके मगोल-राजवशोके साथ चीनके खाकानका घनिष्ठ सवध था, उसे अधिपति माना जाता था, लेकिन अब वह सबध शिथिल होने लगा। फर्वरी १३११ ई० मे खु-लुग मर गया और उसकी जगह उसका भाई बोयन्-थू गद्दीपर वैठा।

८ बोयन्-थू, आयुरपरवल, आयुर्बलीभद्र, वूयन्-तू, जुन्-चुङ (१३११-२०ई०)

खु-लुगकी मृत्युके साल ही उसके भाईको गद्दी मिली। ईरानका मगोल-वश कुविलेइके छोटे भाई खुलाकू-खानका था, इसलिये जिस वक्त जू-छी, चगताइ और ओगोताइ खानोका चीनके हगानसे (खकान) से मतभेद या झगडा भी रहता, उस समय भी ईरानके मगोल-वशका हगानके साथ वहुत सौहार्द रहता। १३१२ ई० की फर्वरीमे वोयन्-थू ने अपना दूत ईरानी खान उल-जैं-तूके पास भेजा। पुराने कालमे चीनमे हिजडे वनाकर उन्हें अन्त पुरमें ही वडे-वडे स्थान नही दिये जाते थे, वल्कि राज्यके ऊचे-ऊचे पदो पर भी वह पाये जाते थे। १३१४ ई० मे वोयन्-थूने सरकारी नौकरियोमे हिजडोका प्रवेश निषिद्ध कर दिया, लेकिन इसका यह अर्थ नही, कि हिजडे अब बाट के भिखारी वन गये। उसके लिये तो अभी १९११ ई० तक प्रतीक्षा करनी थी। अगले ही साल (१३१४ ई०) एक प्रमुख हिजडेने एक सुदर मन्दिर वनवाया। पिताकी गद्दी न पानेके कारण खुलुग-पुत्र कुसलने १३१६ ई० में चचाके विरुद्ध असफल विद्रोह किया। यह हम पहले देख चुके है, कि व्यापार और कृषि-उद्योगको धनका प्रधान स्रोत समझकर मगोल-शासक उनकी उन्नतिकी ओर विशेष ध्यान देते थे। डेढ हजार वर्षोसे अधिक समयसे रेशमकी जन्मभूमि चीन अपने सुदर रेशमी कपडोके लिये सारी दुनियामें प्रसिद्ध था। रेशम देशकी आमदनीका एक वडा भाग था। वोयन्-थूके शासन-कालमे १३१८ ई० में सरकारने तूतके वृक्ष लगाने तथा रेशमके कीडे पालनेकी विधिके ऊपर एक पुस्तिका प्रकाशित की। शायद सरकारोकी ओरसे इस तरहकी छपनेवाली पुस्तकोमे यह सवसे पहिली थी।

फर्वरी १३२० ई० में वोयन्-थू मर गया और उसकी जगहपर उसका पुत्र गेगेन् गद्दी पर वैठा।

९ गेगेन्, शु-तु-फल (शुद्धफल), यिङ-चुङ (१३२०-२३ ई०)

मगोल खान-वशमे धर्मपाल, आयुर्वलीभद्र या शुद्धफल जैसे शुद्ध भारतीय नामोका होना कोई आश्चर्यकी वात नही है, क्योकि अब मगोल-राजवश ही नही साधारण जनतामे भी वौद्ध-धर्म जातीय धर्म समझा जाने लगा था। गेगेन् (ग्यु-गेन्) १८ वर्षका था, जब कि वह गद्दीपर वैठा और २१ सालकी आयुमे मर गया। उसके वाद छठे खान थुवु-थेमुरके भाई कमलका पुत्र यिसु-थेमुर गद्दीपर वैठा।

१० यिसु-थेमुर, यिस्सुन-तइमुर, ताइ-चिङ-ति (१३२३-२८ ई०)

अब खानोके शासनमें कोई विशेष वात नही थी। १३२३ ई० में "ताइ-युवान-तोङ-शी" (महा-मगोल-विधान) प्रकाशित हुआ। अगस्त १३२८ ई० मे खान मर गया और उसकी जगह उसका भतीजा रिन्छेन् गद्दी पर वैठा।

११ रिन्-छेन्-फग्, यू-चू (१३२८ ई०)

वहुत कम समय शासन करनेके कारण कितनी ही वशावलियोमें इसका नाम नही मिलता। रिन्-छेन्-फग् तिब्वती शब्द है, जिसका अर्थ है रत्न-आर्य। उसके वाद उसका भाई तथा खु-लुगका पुत्र कुसल गद्दीपर वैठा।

१२ कुसलङ, कोसल, मिङ-तिङ (१३२८-२९ ई०)

अब वशकी निर्वलताके सूचक चद दिनोंके खान होते रहे।

१३ थुग्-थेमुर, उलजे-थू जीया-शा-तू, वेन्-चुङ (१३२९-३२ ई०)

यह वोयन्-थू खाकानका पुत्र तथा गेगेन्का भाई था। इसके शासन-कालमें १३३० ई० मे फिर युन्नन्में विद्रोह हुआ, जो १३३१ ई० में भी जारी रहा। इसी समय चीन मे अवर्षणके कारण अकाल पडा। उसी सालकी एक घटना बतलाती है, कि पहलेसे चले आये नियमोंका अबभी कितनी कडाईके साथ पालन किया जाता था। खाकानने साम्राजी वर्षपत्रको देखना चाहा, लेकिन अधिकारीने इन्कार कर दिया। यह परिपाटी इसलिये चली आती थी, जिसमें खाकान दरबारी इतिहास-लेखकसे मनमाना न लिखवा सके, इसीलिये दैनदिनीको उसे दिखलाया नही जाता था। थुग्-थेमुरने अपनेको अपवाद बनाना चाहा, लेकिन दैनदिनी लेखकने उसे दिखलानेसे इन्कार कर दिया।

१४ रिन्-छेन्-पल्, निङ-चुङ (१३३२-३३ ई०)

रिन्-छेन्-पल् भी तिब्बती शब्द है, जिसका अर्थ है रत्नश्री। यह कुसलका पुत्र था और केवल दो मास राज्य करके मर गया। इसके बाद अन्तिम खाकानका दीर्घकालीन राज्य शुरु हुआ।

१५ थेगन्-थेमुर, तोगोन्-तिमुर, शुङ-ति (१३३३-६८ ई०)

यह थुग्-थेमुरका पुत्र था। इसने ३५ वर्ष तक शासन किया। जान पडता है, राजवशकी समाप्तिके लिये हर वशमें वाजिदअली शाहके पैदा होनेकी अवश्यकता होती है। थेगन्-थेमुर चरम विलासी था। लामा लोगोंका प्रभाव भी राजवशपर अब चरम सीमा को पहुचा हुआ था। तिब्बतका धर्म, तान्त्रिक बौद्ध-धर्म है, जिसे लामा-धर्म कहकर कितने ही लोग उसकी सारी जिम्मेवारी तिब्बतके ऊपर मढना चाहते है। लेकिन, तान्त्रिक बौद्ध-धर्म तिब्बतकी उपज नही है। वह भारतमें पैदा हुआ और यहीं चरम सीमापर पहुचकर भारतके नाश करनेका एक कारण बना। प्रभावशाली लामोंका खाकानके ऊपर बहुत प्रभाव था। उसका तत्र-मत्रपर बहुत विश्वास था। पच मकार—उन्मुक्त व्यभिचार भी जिसका एक प्रधान अग था—का खुलकर प्रयोग खानके यहा होता था। बहुत निम्न श्रेणीके यौन-दुराचार साधनके अग माने जाते थे। मत्र-तत्र-सिद्धि तथा भैरवी चक्र के लिये एक मकान बनाया गया था, जिसका नाम रखा गया था "निर्दोष-भवन"। वहा पर यौन-अतिचारकी हद की जाती थी। अन्त पुरिकाओंको "दिव्य नृत्य" के नामसे बहुत-सी अश्लील चेष्टाओंके प्रदर्शन करनेके लिये मजबूर किया जाता था। चारो तरफ विलासिता और व्यभिचारका बाजार गर्म था। यह वही समय था, जब चीन मे १३२६, १३२७, १३३४, १३३६, १३४२ और १३४६ में जबर्दस्त अकाल पडे थे। खान, उसके दरबारी और अधिकारी भैरवी चक्रमें मग्न थे, जब कि लोग भयकर कष्टमें गुजर रहे थे। भूखा और अकालके समय किसानोंकी कोई खोज-खबर लेनेवाला नही था। यही नही, अब भी उन्हें दरबारके लिये भारी करोंको देना पडता था। मगोल-वंश भी निरिछन्न विदेशी शासक थे, जिनके साथ चीनियोंका कोई सौहार्द नही था। इस क्रूरता-पूर्ण विलासमय जीवनसे तो चीनी जनताके नाकों दम हो गया। वह और अधिक दिनों तक इस दु शासनको बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। राजधानीसे दूर दक्षिणमें याङ-चि-उपत्यकामे विद्रोहियोंने सिर उठाया। जगलकी आगकी तरह विद्रोह जल्दी ही सारे देश मे फैल गया। विद्रोहियो का नेता चू-युवान्-चाङ एक किसानका लडका था। उसने भूख और कष्टके दिन देखे थे, इसलिये वह किसानोंको विद्रोह-में शामिल करनेमें सफल हुआ। मगोल-सेनाने विद्रोहको पहले कहीं-कहीं दबाया, लेकिन थोडे ही समयमे सारी याङ-चि-उपत्यका चू-युवान्-चाङ के हाथमें चली गई। १३६८ ई० मे उसने अपनेको स्वतत्र सम्राट् घोषित करके नान्-किङ् में मिङ (प्रकाश)-वशकी नीव रक्खी। इसी साल उसकी सेना पेकिङके ऊपर चढी। थेगन्-थेमुरके लिये मगोलिया अभी सुरक्षित जगह थी, इसलिये वह वहा भाग गया। इस प्रकार चीनमें मगोल-राज्यका अन्त हुआ। थेगन्-थेमुरके वशज आगे मगोलियापर शासन करते रहे, उस समय चीनसे-चीनमे उनके अनेक राज्य हो गये, जिनका प्रभाव मध्य-एसियाके इतिहासपर पीछे किस तरह पड़ा, जब कि १८ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्धमें मालूम होता था, मध्य-एसिया में फिर एक विशाल मगोल-साम्राज्य कायम होने जा रहा है, लेकिन पलासीकी लडाई १७५७ ई० के समय उसका नाश चीन और रूसके प्रहारोंसे हो गया।

चीनके मगोल खाकानोके समय पहले घनिष्ठतापूर्वक किंतु पीछे शिथिलताके साथ चगताइ, जू-छि, हुलाकू आदिके राजवंशोका सबध रहा, इसका वर्णन आगे हम करेगे । तू-लुइ-वश के वर्णन के बाद अब हम जू-छि-वंशको लेते हैं जिसके शासनमे उत्तरी मध्य-एसिया और रूस बहुत समय तक रहे ।
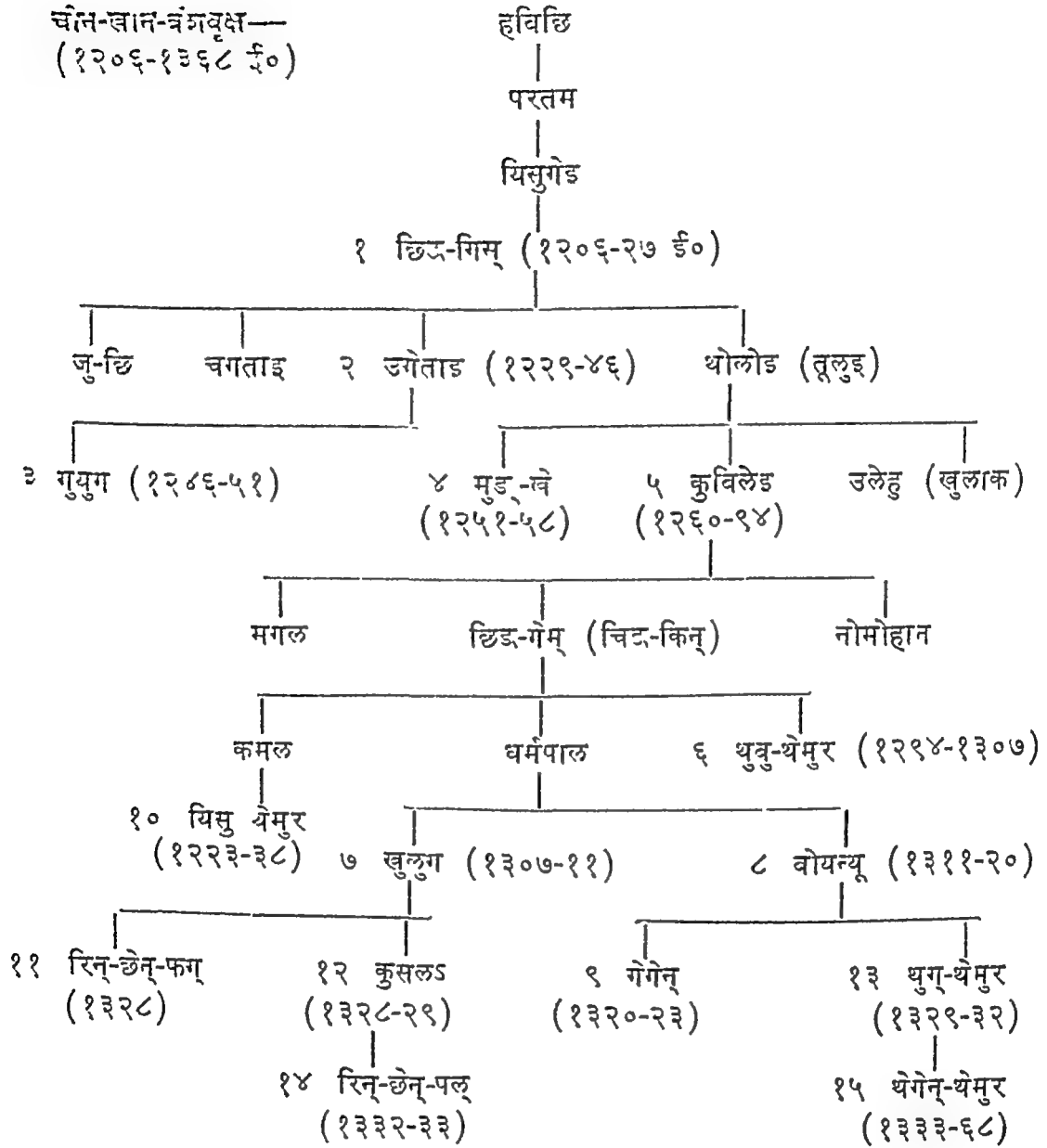
अध्याय २

सुवर्ण-ओर्दू

(१२२४-१४०० ई०)

छिङ-गिसके ज्येष्ठ पुत्र जू-छिके ओर्दूको "सुवर्ण-ओर्दू" के नामसे पुकारा जाता है, यद्यपि मुसलमान इतिहासकार इसे अधिकतर कोक-ओर्दू (नील-ओर्दू) के नामसे याद करते हैं, और जू-छिके ज्येष्ठ पुत्र ओर्दाके उलुसको अक-ओर्दू (श्वेत-ओर्दू) कहते हैं। रूसी प्रजा इन्हें जोल्तोय (सुवर्ण-ओर्दू) के नामसे जानती है।

१ जू-छि, तू-शि (म० १२२४ ई०)

छिङ-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छि या तू-शिकी मृत्यु बापसे छ महीने पहले हुई थी, यह हम कह आये हैं। जू-छिके बारेमें एक मुसलमान गुमनाम लेखककी कृति "शज्रतुल्-अतराक" (तुर्कवंश-वृक्ष) में कितनी ही बातें कही गई हैं। मगोलियासे दूर चले गये मगोल तुर्क-समुद्रमें चद बूदोंकी तरह थे, और वह उनके भीतर हजम भी हो गये। इसीलिये इस लेखकने मगोल-वंशवृक्षको तुर्क-वंशवृक्ष कहा। इस तथा दूसरे ग्रंथोंके अनुसार भी छिङ-गिस्को अनुपस्थित देखकर उनके प्रतिद्वंद्वी मरकितोंने छिङ-गिसी उलुसको मार भगाया और वह उनकी ज्येष्ठ पत्नी बुर्ते-फूजिन्को और बहुतसे आदमियोंके साथ पकड ले गये। बुर्ते-फूजिन् कुकुरत कबीलेके सरदार दाई-नोयन्की पुत्री थी। यही छिङ-गिस्के चार प्रधान पुत्रों और पाच पुत्रियोंकी मा थी। बुर्ते-फूजिन्के पकडे जानेके समय जू-छि माके पेटमें ६ मासके गर्भके रूपमें था। केरइत खान ओङ-खान छिङ-गिस्का बडा समर्थक था। वह छिङ-गिस्को अपना पुत्र मानता था। जब इस घटनाका पता लगा, तो उसने मरकितोंपर आक्रमण कर बुर्ते-फूजिन् तथा उसके आदमियोंको छुडा लिया, और अपनी धर्म-वधूको फिर छिङ-गिस्के पास भेज दिया। इसी समय रास्ते में जू-छि पैदा हुआ। पथमें पैदा होनेके कारण ही उसका नाम जू-छि (पथक) पडा। पीछे चगताइ खानोंका जू-छि-वंशके कोक-ओर्दू और अक-ओर्दूसे सदा झगडा होता रहा। इसीलिये चगताइ विद्वानोंके इतिहास-ग्रंथोंमें जू-छिको कलकित करते हुये यह साबित करनेकी कोशिश की गई, कि जू-छि छिङ-गिस्का पुत्र ही नहीं था। समर्थक इस बातके साबित करनेका प्रयत्न करते हैं, कि जू-छिकी मा केवल चार महीने छिङ्-गिस्से दूर रही, जब कि रास्तेमें जू-छि पैदा हुआ। "तुर्कवंश-वृक्ष" का लेखक यह भी कहता है—"चाहे पुत्र कितना ही अच्छा हो, असली और नकलीके प्रति पिताके प्रेममें जमीन-आसमानका अन्तर होता है। साइन् (छिङ्-गिस्) जू-छि खानके ऊपर हदसे ज्यादा प्रेम और स्नेह रखता था।" जू-छि खानके मृत्युकी खबर जब उलुसमें पहुची, तो उसे बापतक पहुचानेकी किसीको हिम्मत न हुई। यह काम दरबारी कवि उलुग-तुर्जाके सिरपर रखा गया। कविने हिम्मत करके पद्यमें उपमाके रूपमें यह खबर सुनाई, जिसे सुनकर छिङ-गिस् बहुत दुखी हुआ। कवि और छिङ-गिस्के दुखोंको तुर्की भाषाके पद्यमें प्रकट किया गया है, यद्यपि यह निश्चय है, कि छिङ-गिस् तुर्की नहीं बोलता था, इसलिये यह पद्य पीछे बनाये गये हैं। तो भी इसमें सदेह नहीं, कि छिङ-गिस्को अपने ज्येष्ठ पुत्रकी सरकसीके बाद भी उसके साथ असाधारण प्रेम था, इसीलिये उसे बहुत दुख हुआ।

ख्वारेज्म-विजयके समय छिङ-गिस्ने जू-छिको पूर्वमें कयाल्किसे पश्चिममें सकसीनतकी दश्ते-किपचक (वर्तमान कजाकस्तान), बोल्गारों, आलानों, बश्किरों, उरूसों और चेरकासोंके देशोंके साथ वह भूमि भी प्रदान की, जहा कि तातारों (मगोलों) के घोडोंकी टापें पडें। जू-छिका ओर्दू यद्यपि ज्येष्ठ पुत्र ओर्दा और द्वितीय पुत्र बा-तूके अधीन पहले हीसे दो उलुसोंमें बट गया था, लेकिन श्वेत-ओर्दूके सस्थापक ओर्दाने जिस तरह अपने छोटे भाई बा-तूको अपना अधिपति स्वीकार किया, वैसे ही इसका श्वेत-ओर्दू भी अपनेको बा-तूके सुवर्ण-ओर्दूके अधीन मानता रहा। जू-छि ओर्दूका पूर्वी

भाग (किपचक़-भूमि) श्वेत-ओर्दूकी माना जाता था। सुवर्ण-ओर्दूके ३९ शासक हुये—

१	जू-छि, तू-गि छिङ-गिस्-पुत्र	१२२४ ई०
२	बा-तू जू-छि-पुत्र	१२२४-५५ ,,
३	सेर-तक बा-तू-पुत्र	१२५५ ,,
४	उलकची बा-तू-पुत्र	१२५५ ,,
५	बेरेके, बरका, जू-छि-पुत्र	१२५५-६५ ,,
६	मुङ-खे थे-मुर, मग्-थेमुर तोगोन-पुत्र	१२६५-८० ,,
७	तू-दा-मगू तोगन-पुत्र	१२८०-८९ ,,
८	तोग्-ताङ, तोक्-तोगू, मगू-थेमुर-पुत्र	१२८९-१३१३,,
९	उज्बेक तोक्-तोगूका भतीजा	१३१३-४२ ,,
१०	तिनी (दिनी) बेग उज्बेक-पुत्र	१३४२ ,,
११	जानी-बेग उज्बेक-पुत्र	१३४२-५७ ,,
१२	बेर्दी-बेग जानी-पुत्र	१३५७-५९ ,,
१३	कुलदी (कुल्पा) बेग, जानी-पुत्र	१३५९ ,,
१४	नौरोज (नूरुस) बेग जानी-पुत्र	१३५९-६० ,,
१५	चेरकेस-बेग जानी-पुत्र	१३६० ,,
१६	ओरदा शेख	
१७	खिजिर	
१८	कुलफा	
१९	तेमूर खोजा	
२०	मुरीद	
२१	अजीज, बाजारची	
२२	हाजी एरजन-पुत्र	
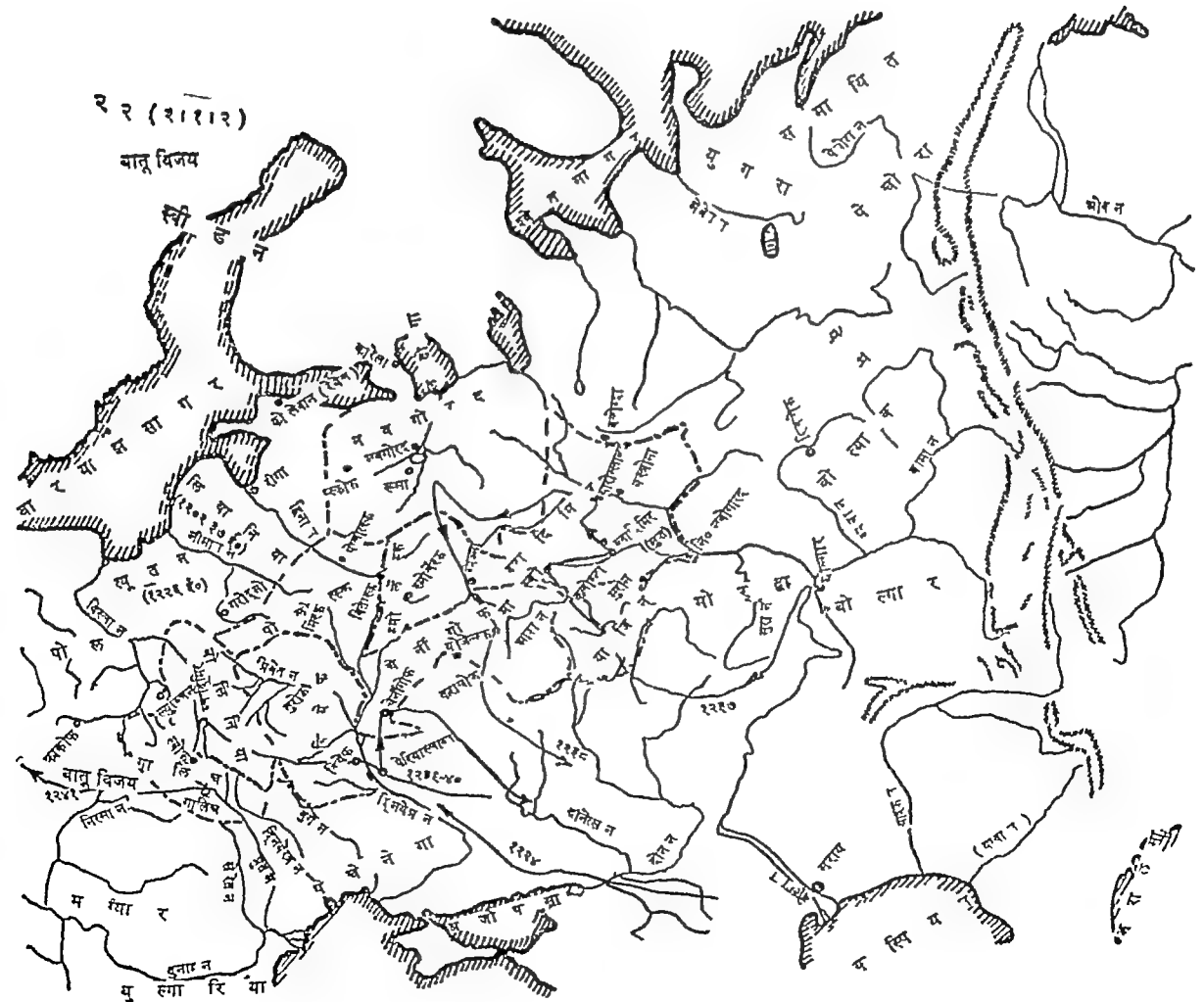
२ बा-तू खान, सायन खान जू-छि-पुत्र (१२२४-५५ ई०)

छिङ्-गिस्के पोतोंमें बा-तू पहला था, जिसने चारों उलुसोंमेंसे एकके खानपद को दादाके जीवनमें ही प्राप्त किया। इसकी मा यू-जिन खातून कुङ्रत-कबीलेके सरदार अची नोयनकी लड़की थी। यद्यपि बातूसे बड़ा एक और भी भाई उर्दा (ओर्दा) था, लेकिन दादाने इसे ही अधिक योग्य समझा। छिङ्-गिस् पश्चिम दिशाके महत्त्वको समझता था, इसलिये द्वितीय पुत्र होनेपर भी समझ समझ बा-तू को बापका स्थान दिया। बड़े भाई ओर्दाने भी दादाके निर्णय को दिलसे स्वीकार किया, तथा उसके उलुसने भी बातूके उत्तराधिकारियों को अपना प्रधान माना। यद्यपि रूसियोंमें बा-तूका ओर्दू सुवर्ण-ओर्दूके नामसे प्रसिद्ध है, किन्तु पूर्वी इतिहासकार उसे कोक-ओर्दू (नील-ओर्दू)के नामसे ज्यादा जानते हैं—ओर्दाका उलुस अक्-ओर्दू (श्वेत-ओर्दू) के नामसे प्रसिद्ध था। जू-छि ओर्दू, हम जानते हैं, लड़ाकू कुमन्तुओंका समूह था, जो जू-छिके मरनेपर बा-तू और ओर्दामें आधा-आधा बट गया। ओर्दाके उलुसको वाम-दल और बा-तू को दक्षिण-दल भी कहा जाता था। वाम-दलमें वैसे बा-तूके भाई ओर्दा, तुकातेमुर, सिङ्-कुर और सिङ्-कुद भी शामिल थे। समकालीन इतिहासकार मिनहाजुद्दीन जुज्जानी (११९३-१२२६) ने दिल्लीमें रहते अपने संरक्षक नासिरुद्दीन महम्मदशाह (१२४६-६५ई०) के नामसे प्रसिद्ध "तबाकाते-नासिरी" में लिखा है, कि जू-छिके मरनेपर छिङ्-गिसने बा-तूको जू-छिका स्थानापन्न बनाते हुये उसे किपचकों, कंगलियों, ऐमकों, इलबारों, अलानों, असियों, रूसियों, चेर्कासोंकी भूमि प्रदान की, और वह सभी भूमि भी, जहांपर मंगोल घोड़सवारोंकी टापें पड़ी। यह हम देखेंगे, कि आगे खजार-दर्बन्द—जिसे मंगोल थिमुर-कबल्गा (लौहद्वार) कहते हैं—भी बा-तूके हाथमें था। इस प्रकार काकेशसमें उसके और उसके चचेरे भाई ईरानके खान हु-ला-गूकी सीमा मिलती थी। जुज्जानीके अनुसार बा-तू मुसलमानोंका मित्र था। उसने छावनियों और डेरोंमें मस्जिदें बनवा इमाम और मुअज्जिन नियुक्त किये थे। उसकी मुसलमानी प्रजामें सर्वत्र शांति और समृद्धि देखी जाती थी। इसका अर्थ यही है, कि बा-तू धर्मके बारेमें अपने दादाकी नीतिका अनुगमन करता था। लेकिन ख्वारेज्म, किपचक और काकेशसमें ही उसकी मुसलमान प्रजा रहती थी। बलगिर ईसाई थे। यही बात रूसी तथा दूसरे लोगोंकी थी। ऐसी हालतमें बा-तू यदि स्वयं ईसाई हो, तो कोई विचित्र बात नहीं थी। बहुसंख्यक जनताको अधिक अनुकूल बनानेके लिये यह अच्छा ढंग था। अभी उस समय तक मंगोल-राजवंशने बौद्ध-धर्मको जातीय धर्म नहीं बनाया था। एक तरह संसारके बड़े-बड़े धर्मोंकी वह परीक्षा कर रहा था। खुबिलेइ (कुबिले) कजानने बौद्ध-धर्म स्वीकार कर यद्यपि वह कदम उठाया, जिससे बौद्ध-धर्म मंगोलोंका राष्ट्रीय धर्म बन गया, किन्तु खुबिलेइके निर्णयको उन्हीं जगहोंमें मंगोलोंने माना, जहां बौद्ध-धर्मकी प्रधानता थी, अथवा जहां कोई गैर-कबीली देशी धर्म प्रचलित नहीं था। बा-तूके उत्तराधिकारी तथा अनुज बरकाने अपने आपको खुल्लमखुल्ला मुसलमान घोषित किया, जिससे उसके अपने मंगोलोंपर बुरा प्रभाव पड़ा, जो ही पीछे पूर्वी और पश्चिमी मंगोल-साम्राज्यमें मतभेदका एक कारण भी हो पड़ा। सुवर्ण-ओर्दू ऐसी स्थितिमें था, कि यदि उसने ईसाई धर्म को स्वीकार किया होता, तो शायद आगे चलकर रूसियोंको उसके विरुद्ध धर्मयुद्धका ख्याल न आता। चगताइ और हुलागू-वंशकी साधारण प्रजा सारी मुसलमान थी, जिसके कारण राजनीतिक लाभके ख्यालसे उन्हें इस्लामको स्वीकार करना पड़ा। चगताइ खान तर्मशेरिट—जो कि मुहम्मद तुगलकका समकालीन था—का नाम बौद्ध था, लेकिन पीछे वह कट्टर मुसलमान हो गया। इसके कारण भारतके तुगलक सुल्तान तथा चगताइ खानमें बड़ी घनिष्ठता स्थापित हो गई। ईलखानी खान ग़ज़न (१२९५-१३०४) ने पहले अपनी राजधानीमें एक सुन्दर बौद्ध विहार बनवाया, लेकिन अंतमें राजनीतिक-लाभके लिये उसे इस्लाम स्वीकार करना पड़ा। धर्म किस तरह राजनीतिक चालके लिये इस्तेमाल किया है [illegible] यह स्पष्ट उदाहरण है। [illegible] न ने सुवर्ण-ओर्दूके खानाने इस्लामको क्यों स्वीकार किया, [illegible] कारण था—मुसलमान तुर्क-[illegible] खानको मजबूर करनेका ख्याल। [illegible] नामसे पुकारा जाता था। बौगार जाति इस उपत्यकामें रहनेके कारण

पीछे इसी नदीका वोल्गा नाम पडा। वोल्गाके वाये तटपर अस्त्राखानसे उत्तर वा-तूने अपनी राजधानी वनवाई, जिसका नाम सराय, वा-तू-सराय (या वरका-सराय भी) पड गया। गू-युक कआनके मरने के समय (१२५१ ई०) मगोलोने वा-तूको अपना कआन वनाना चाहा, लेकिन तवतक उसके घोडोकी टापे जर्मनीकी सीमातक पहुच चुकी थी, इसलिये पश्चिम-विजेताने पूर्व जाना पसद नही किया और उनके समर्थनपर छिड-गिन्-पुत्र तू-लुइके पुत्र मुड-खे (मड-गू) को कआन वनाया गया।

दिग्विजय।—१२२४ ई० मे वापकी जगह वैठनेके वाद वा-तू ख्वारेज्म और उसके पश्चिमकी भूमि का शासक वना। मगोलो की प्रथम पश्चिमी विजय स्थायी नही थी, इसलिये वा-तूको फिर लडकर अपनी स्थितिको मजवूत करना पडा। ख्वारेज्म और किपचकके वहुत से भागोने वा-तूके शासनको जल्दी स्वीकार कर लिया, किन्तु सुवर्ण-ओर्दूके आगेके विस्तारके लिये उसे वहुत सघर्ष करना पडा। इसके लिये शायद वा-तू राजी न होता, यदि १२३५ ई० की अपनी दूसरी कुरिल्ताइ (महासमद) मे उगेताइने प्रोत्साहन न दिया होता। इसी कुरिल्ताइमे दक्षिणी चीन तथा और भी दक्षिणके देशोके विजयका निश्चय हुआ था, और वा-तूको वोल्गारो, असो और रूसियोपर अधिकार करनेका काम सौंपा गया था। उसकी मददके लिये उगेताइने अपने पुत्रो गू-युक और कदगन, तु-लुइके पुत्र मुड-खे (मड-गू) और मोकू, एव जू-छिके पुत्रो ओर्दा, और तड-गुनको सहायतार्थ दिया। इनके अतिरिक्त कुछ और खान-जादो (राजकुमारो) के साथ प्रसिद्ध सेनापति सु-वो-ताइ वहादुर भी साथ था।

वा-तूकी सेना केलरोको विजय करके वाश्किरोपर पडी। वाश्किरोके वारेमे १२३६ ई० में साधु जुलियनने लिखा था—"पूर्वी मगयार (हुगेरियन) या वाश्किर काफिर है। उन्हे न सच्चे ईश्वर-का ज्ञान है और न वह दूसरे देवताओको पूजते है। वह जगली जानवरोकी तरह रहते है, खेती नही करते, घोडो और भेडोका मास खाते, दूध, दूधकी शराव (कूमिस) और खून पीते है। उनके पास घोडे और हथियार प्रचुर परिमाणमे है और वह वडे लडाकू है। उनमे एक कथा मशहूर है, कि मगयार हमारे देशसे गये, किंतु कहा गये, यह नही जानते।" लेकिन जहातक वाश्किर सरदारो और सामन्तोका सवध था, वह अधिकतर ईसाई थे, यह पूर्वी इतिहासकारो के लेखोसे भी मालूम होता है।

(क) वाश्किर-विजय—महाकुरिल्ताइके निर्णयके वाद जो महाअभियान शुरू हुआ, उसके अनुसार १२३८ ई० मे यायिक (ऊराल) नदीके तटपर वा-तूकी साढे चार लाख सेना एकत्रित हुई। इसमे ककली (कगली), नैमन, कराक्खिताई आदि कवीलोके सैनिक अधिक थे। सेनाको तीन भागो में वाटा गया—(१) मुड-खे और वे-चुकके अधीन एक सेना सकसिन (निम्न वोल्गा उपत्यका) के सरदार पचिमान (राजधानी सुमरकद) के विरुद्ध भेजी गई, (२) दूसरी सेना सुवोताइके अधीन वोल्गारोके विरुद्ध। (३) स्वय वा-तूने दुश्मनकी सख्या और शक्तिका पता लगानेके लिये अपने भाई सेवानको दस हजार सैनिकोके साथ आगे भेजा। सेवानने हफ्तेके भीतर लौटकर दुश्मनकी जवर्दस्त शक्ति का पता दिया। दोनो ओरकी सेनाये एक नदीके किनारे आमने-सामने खडी हुई। इतिहासकार जुवैनी (१२२६-८३ ई०) के अनुसार वाश्किर सेनाको देख वा-तू अपने शिविरमे चला गया और किसीसे एक शब्द भी न कह वस भगवान्से प्रार्थना करते खूव रोता रहा। उसने सभी मुसलमानोको भी एकत्रित करके दुआ मागनेके लिये कहा। दूसरे दिन युद्ध करनेका निश्चय हुआ। मगोल सेना रात-को ही नदी पार करनेमे सफल हुई और उसके प्रहारसे केलरोके पैर उखड गये। वा-तूकी जवर्दस्त विजय हुई, दुश्मन भारी सख्यामे काम आये, उनकी वहुत-सी सपत्ति हाथ आई। उसी जाडेमें वा-तूके सेनापति सुवोताइने खवान उपत्यकापर अधिकार किया।

(ख) वोल्गार-विजय—१२३८ ई० में सुवोताइ (सुड-ताइ) ने वोल्गा-उपत्यकाके तटपर अवस्थित वोल्गारोकी राजधानीपर आक्रमण किया। वोल्गारोने व्लादिमिरके महारावल द्वितीय जार्ज व्सेवोलद-पुत्रसे सहायता मागी। उसका भाई नवोग्रादका शासक तथा अभी-अभी कियेफके सिंहासनपर वैठनेवाला था, जिसके वाद नवोग्रादका शासक प्रसिद्ध रूसी वीर तथा कियेफ-रावलका पुत्र अलेक्सी नेव्स्की हुआ। इस प्रकार कियेफ, नवोग्राद और व्लादिमिर तीनो राज्य एक ही परिवारके हाथमे थे। रूसियो और वोल्गारोकी सम्मिलित सेनाने मगोलोका जवर्दस्त मुकाविला किया।

मुकाविला नही कर पाया। मगोल रूसी राजुलोको भगाते कियेफ पहुचे। ६३७ हिजरी (१२४० ई०) की शरद्मे कआन * ओगोताइ का वुलावा आनेसे गो-युक और मुङ-खे किपचक-भूमिके रास्ते मगोलिया लौट गये, लेकिन वा-तूकी विजय-यात्राका सवसे वडा कदम अव उठनेवाला था।

वा-तू अपने भाइयो कदन, वूरी और वू-चेकके साथ रूसियो और कालीटोपियो (स्याहकुलाह) की ओर वढा। इसी समय दिसवरमे नौ दिनो के मुहासिरेके वाद उसने महानगर मनकेरकानको ले लिया। मनकेरकान रूसका सवसे पुराना और वैभवशाली नगर कियेफका ही नाम था, मगोलोने नगरकी होली जला दी, जिसमे शताव्दियोसे जमा होती कलाकी वस्तुये तथा भव्य इमारते नष्ट हो गई। तवमे १५वी शताव्दी तक कियेफ उजाड रहा।

१२४१ ई० (६३८ हि०) मे ओगोताइ मरा, वसतमे वाकी खानजादे भी वाश्किरोकी भूमि होते मगोलिया लौट गये। इसी साल वा-तूने वाश्किर-राजाको नष्ट किया।

(च) युरोप-विजय—१२३८ ई० मे १२४० ई० के वसततककी वा-तूकी विजय-यात्रा अभूतपूर्व है। इसी समय उसने वोलगाके कवीलोको परास्त किया, रूसी नगरोको जीता, काला सागरके मैदानोको अपने हाथमे किया, कियेफको ध्वस्त किया, और फिर अपने सैनिक दलोको दक्षिणी पोलैंड (रुथेनिया) की ओर भेजा। उस समय रूसकी तरह पोलैंद भी वहुत-से छोटेछोटे राज्योमे वटा हुआ था। मार्च १२४१ ई० मे जव जाडोकी वर्फ पिघली, तो मगोलोके सैनिक शिविर कारपेथीय पर्वतमालाके ऊपर लेम्वरमें थे।

जनवरी १२४१ ई० मे मगोल गोलेनियामे लूट-मार मचाते पोलैंदकी राजधानी क्राकोके पास पहुचे। १८ मार्चको पोलोको पराजित कर २४ मार्चको मगोल-सेनापति वैदरने क्राकोको जलाया। मगोल फिर सिलेसिया और रतिवरमे ओडर नदीको पार कर दव्रेस्जव नगरके सामने पहुचे। ९ अप्रैलको मगोलोने पोलो और त्युतानिक सरदारो (राजुल हेनरी आदि) की सेनाओको लिग्‌नित्जके पास वालस्टाट (युद्धक्षेत्र) नामक स्थानमे हराया। लिग्‌नित्ज, ओत्‌माखन, वोलातीजको लूटते-जलाते मईमे वह मोरावियामे पहुचे। वहा त्रोपनके इलाके तथा दूसरे स्थानोका उन्होने सहार किया। फ्रासके राजा लुईके पास पत्र लिखते हुये इस ध्वस-लीलाका वर्णन एक ईसाई पादरीने इस प्रकार किया है— "जर्मनीके सभी राजुल, राजा तथा पुरोहित एव हगरीके भी लोगोने हाथमें सलीव लेकर तातारोके खिलाफ अभियान किया। हमारे भाइयोने जो वतलाया है, यदि वह ठीक है, और भगवान्‌की इच्छासे वह पराजित हो गये, तो तुम्हारे देश (फ्रास) तक कोई ऐसा नही है, जो तातारोके मुकाविलेमें खडा हो सके।"

वा-तूके दुश्मनको मग्यार-राजा वेलाने शरण दी थी। मगोलोके लिये यह भी एक वहाना मिला। चालीस हजार वदी वा-तूकी सेनाके लिये रास्ता वनाते थे। वा-तूकी एक सेना मोलदाविया, कुमासिया, त्रान्सिल्वानियाको नष्ट करते ओरसोवा पहुची, उसने नगरको मलियामेट करदिया। वेलाकी सेनाको १२ मार्चको रुथेनियन डाडेके पास हार खानी पडी थी। सरविया होते वोल्गारिया मे दाखिल हो २५ दिसवरको मगोलोने वहाके ग्रामो-नगरोका सर्वसहार किया। प्लातेन झीलसे होते मगोल क्रोसियाकी ओर वढकर स्पाल्त्रो समुद्रतट पर पहुचे और कतारोको ध्वस करते अलवानियामें जा दाखिल हुये। वहासे मईमे कदनकी सेना वोल्गारिया होते लौटकर वा-तूके पास पहुची। उनकी गति कितनी तेज थी, यह इसीसे मालूम होगा, कि वह तीन दिनमें सत्तर मीलकी यात्रा करके पेस्त (वुदापेस्त) नगर पहुच गये।

सुवोदाइ और वा-तू तीन सेनाओके साथ कारपेथीय पर्वतमालाके भीतरसे दुश्मनके दक्षिणी पक्षकी ओर वढे थे। गलीसियासे हुगरीमे घुसकर सुवोदाइकी सेना मलदावियाकी ओर लौट पडी। रास्तेमे जो भी प्रतिरोधी सैनिक-टुकडिया मिली, उनका सफाया करते उसकी सेना पेस्तमें प्रधान सेनासे अप्रैलके आरभमें—लिग्‌नित्जके युद्धके जरा-सा ही पहले—आ मिली। इस सेनाको यह पता नही था, कि उत्तरमे क्या हो रहा है। उसने ओडेरके तटपर अवस्थित मगोल-सेनप कैदू और उसके भाइयोके साथ सवध

* कआन=कगान=खाकान=खान खान=राजाधिराज (सम्राट्)

स्थापित करनेके लिये एक सेना भेजी। उगोलिनके बिशपकी छोटी सेना हारी, और बिशप अपने तीन साथियोंके साथ जान बचाकर किसी तरह निकल भागा। मगोलोंका अभियान प्रलयकी ध्वंस-लीला जैसा था, जिससे सारे युरोपमें उनका आतंक मचा हुआ था। सभी मुकाबिला करनेकी तैयारी कर रहे थे। सुदूर-फ्रांस भी सैनिक सहायतायें भेज रहा था। हुंगरीके राजा बेला चतुर्थने एक लाखकी सेना तैयार की थी, जिसमें मग्यार (हुंगेरियन), क्रोत, जर्मन तथा फ्रेंच सैनिक भी शामिल थे। मगोलोंकी सैनिक चाल वही थी, जो कि उनके पूर्वज हूणोंकी, और उससे वे अक्सर सफल होते रहे, शत्रु-सेना-के सामने मगोल पीछे हटने लगते। जब शत्रु इसे पराजय समझकर बेखटके खदेड़ना शुरू करते, तो मगोल चारों तरफसे उन्हें घेर लेते। निर्णायक युद्ध-स्थल के एक तरफ सायो नदी थी, दूसरी तरफ द्राक्षालताओंसे ढका तोकय पर्वत, तीसरी तरफ लोमनिट्जके घने जंगलों में ढके बड़े पहाड़। सूर्योदयके समय बा-तूकी सेना पुलकी ओर आगे बढ़ी और उसने वहांकी रक्षक सेना पर एकाएक आक्रमण करके उसे नष्ट कर दिया। अब मगोलोंकी प्रधान सेना पुलके पार दौड़ी। शत्रु-सेनामें भगदड़ मच गई। युद्ध बड़े जोरका हुआ और दोपहरके करीब ही उसकी समाप्ति हो सकी। इसी समय सुबोताई बेलाकी सेनाके पीछे पहुंचा। हुंगेरियन जान लेकर भगे और मगोल उनका पीछा करने लगे। दो दिनके रास्तेतक सड़कों-पर युरोपियनोंकी लाशें पटी हुई थीं—चालीस हजार आदमी मारे गये थे। बेलाका भाग्य था, जो कि अपने तेज दौड़नेवाले घोड़ेकी सहायतासे वह बच निकला। वह दुनाइ (दन्यूब) के किनारे-किनारे छिपता भागता रहा और मगोल उसकी तलाशमें फिरते रहे। अन्तमें बेला कारपेथीय पर्वतमालामें पहुंचा। मगोलोंने मग्यार राजधानी पेस्तमें आग लगा दी। वह बढ़ते हुये आस्ट्रियासे न्यूस्टाट तक पहुंचे। मोराविया जर्मनी और बोहेमिया (चेको) को एक ओर छोड़ते वह दक्षिणकी ओर मुड़ अद्रियातिक समुद्रतटपर पहुंचे और केवल रगूसा को छोड़कर समुद्रतटके सभी नगरोंको उन्होंने लूटा-जलाया। दो महीनेके भीतर मगोल घोड़ोंने युरोपको एल्बा नदीके उद्‌गमसे अद्रियातिकके समुद्रतटतक रौंद डाला। उन्होंने तीन महासेनाओं, एक दर्जन छोटी सेनाओंको हराया और ओलमुत्ज छोड़कर इस भूभागके सारे नगरोंको पराजित किया। स्टर्नबर्गके यारोस्लावने अपने बारह हजार सैनिकोंके साथ ओलमुत्जकी बड़ी बहादुरीसे रक्षा की थी। युरोपके तत्कालीन राजा हुंगरीका बेला और फ्रांसका संत लुई दोनोंही योग्य थे, लेकिन सुबोताइ, मङ्‌-गू, कै-दू और बा-तू जैसे महान् सेनापतियोंके सामने उनकी एक भी न चली।

जिस वक्त मगोल दावानलकी तरह युरोपकी ओर बढ़ रहे थे, उसी वक्त कैसर फ्रेडरिक द्वितीय और पोप ग्रेगरी नवम का द्वंद्व चल रहा था। दोनोंने तुरन्त अपने संघर्षको बंद कर दिया। धर्मयुद्धका प्रचार होने लगा। कैसर नेपल्स और सिसिलीका स्वामी था। वह अल्प्स पर्वतमालाके पारके सभी देशोंपर अधिकार जमाना चाहता था। पोप इसके लिये तैयार नहीं था। अगस्त १२४० ई० से अप्रैल १२४१ तक—जब कि मगोल युरोपको रौंद रहे थे—फ्रेडरिकने महंतराज (पोप) के नगर फायनकाको घेर रक्खा था, जिसे अन्तमें उसने अपने हाथमें कर लिया। दूसरी ओर पोपने २० मार्च १२३९ ई० को फ्रेड्रिकको धर्म-बहिष्कृत कर दिया। साल भर बाद फ्रेड्रिकके विरुद्ध पोपने धर्मयुद्धकी घोषणा की और जर्मन राजुलोंके एक समुदायको फ्रेड्रिकके खिलाफ लड़नेके लिये तैयार किया। युरोपकी यह कमजोरी बतला रही थी कि बा-तूके सफर करनेकी देर थी, फिर इंग्लिश-चैनेल तक कोई भी शक्ति उसकी सेनाको रोक नहीं सकती थी।

मगोल-हथियार—साधु कार्पीनी दूत बनाकर जिस वक्त मगोलिया भेजा गया, उससे थोड़ा ही पहले मगोलोंकी १२३८-४२ ई० वाली विजय-यात्रा हुई थी। कारकोरमके दरबारमें इसीलिये भेजा गया था, कि जाकर ईसाइयोंकी निर्मम हत्या बंद करनेके लिये प्रार्थना करे। कार्पीनीने अपने यात्रा-विवरणमें मगोलोंकी अजेय शक्तिके बारेमें लिखा है—

"कोई भी अकेला राज्य या देश तातार (मगोलों) का मुकाबिला नहीं कर सकता। तातारोंकी लड़ाई देश बलकी नहीं, बल्कि दाव-पेंचकी होती है। युरोपवालोंकी अपेक्षा तातारोंकी संख्या कम है और शारीरिक डीलडौल और पराक्रम भी वह छोटे हैं। हमारी सेनाओंको भी तातारोंके तरीके अनुसार शिक्षित करने, और उन्हींके युद्ध-नियमोंको कड़ाईके साथ पालनेकी जरूरत है।

जहा तक सभव हो युद्धक्षेत्र ऐसा चुनना चाहिये, जहा चारो ओरकी चीजे दिखलाई पडती हो। सेनाको एक निकायमे नही लाकर खडा करना चाहिये, बल्कि उसे कई विभागोमे विभक्त करके रखना चाहिये। पता लगानेके लिये चारो तरफ चर भेजने चाहिये। हमारे सेनापतियोको रात-दिन अपनी सेनाओको सजग, सदा हथियारबद तथा युद्धके लिये तैयार रखना चाहिये। तारतार शैतानकी तरह सजग रहते है।

"अगर ईसाई दुनियाके राजा और शासक मगोलोके बढावको रोकना चाहते है, तो उन्हे एक सयुक्त परिषद् बनाकर एक उद्देश्यके साथ प्रतिरोध करना चाहिये। ईसाई-राजाओको चाहिये, कि वह अपने सिपाहियोको मजबूत धनुषो, लबी कमानो और तोपो से हथियारबद करे। यही हथियार है, जिनसे तारतार लडते है। इनके अतिरिक्त सैनिकोको अच्छे लोहेकी गदाओ अथवा लबे बेटवाले गडासोको रखना चाहिये। बाणके फौलादी फलोको तारतारोके ढगसे खूब लाल रहते नमक-मिले पानीमे डुबाकर तैयार करना चाहिये। इस तरह वह कवचके भीतरतक घुस सकते है। हमारे आदमियोके पास अच्छे शिरस्त्राण तथा कवच होने चाहिये, जिसमे उनकी रक्षा हो सके। घोडोके लिये भी यही बात है। जो इतने हथियारबद नही है, उन्हे पीछेकी पाती मे रखना चाहिये।"

आस्ट्रियामे न्यूस्टाटपर पहुचकर मगोलसेना अपनी जन्मभूमि (मगोलिया) से ६ हजार मील दूर पहुची थी, और यहापर भी अजेय साबित हुई।

साधु सेवलरीने मगोलोके हथियारोके बारे मे लिखा था—

"उनके कवच भैसके चमडोके बने होते है, जिनके ऊपर जजीरे खिची रहती है। वह अभेद्य होते है जिसके कारण सैनिकका अग सुरक्षित रहता है। वह अपने सिरपर लोहे या चमडेके शिरस्त्राण पहनते है। टेढी तलवार, धनुष-बाण उनके हथियार है। उनके बाणोके फल चार अगुल चौडे—हमारे फलोसे अधिक लबे और लोहे, हड्डी या सीगके बने होते है। उनके दात इतने छोटे होते है, कि वह धनुषकी प्रत्यचाओके ऊपर नही लग सकते। उनकी ध्वजायें छोटी तथा चमरीके काले या सफेद पूछोकी होती है, जिनके सिरेपर ऊनका गुच्छा रहता है। उनके घोडे छोटे, सुडौल और मेहनती तथा सभी तरहकी कठिनाइयो को सहनेके लिये तैयार होते है। वह बिना रिकाबके सवार हो उन्हे चट्टानो या दीवारोपर हरिनकी तरह कुदा सकते है।"

यह सभी स्वीकार करते है, कि तत्कालीन जगत्मे सेना-सबधी इजिनियरी-निपुणता जितनी मगोलोके पास थी, वैसी उस समय युरोपमे कही नही थी। उनके पाषाण-क्षेपक (कतापुल्त) और बारूदकी तोपे गजब ढाती थी।

जर्मन सीमात नगर लिग्नित्जसे लेकर बोल्गाके किनारे तक शायद ही कोई नगर हो, जो बा-तूकी ध्वस-लीलासे बचा हो। नगर मगोलोकी आखोमें काटेकी तरह चुभते थे। यही नही, कि वहा उनके लिये प्रतिरोधकी सभावना थी, बल्कि स्थिर वासी लोग जिस भूमिको जोतते-बोते थे, वह मगोल सैनिकोको अपने घोडो और पशुओके चरनेके लिये आवश्यक थी। इसीलिये वह नगरो और बस्तियोको उजाड उन्हे घासका मैदान बना देना चाहते थे। बा-तूका युद्ध मगोलो और युरोपियोका ही नही बल्कि घुमन्तू-पशुपालो और स्थिर बस्तीवाले किसानोका भी युद्ध था। यदि इसी समय ओगोताइ न मर गया होता और मगोल-सेनापतियोको लौटनेका बुलावा न आता, तो इसमें कोई शक नही, कि युरोपकी चप्पा-चप्पा भूमिको मगोल-सवारोने रौद डाला होता, सारे नगरोको जला दिया होता। उनकी सफलताका कारण बतलाते हुये एक इतिहासकारने लिखा है—"घुमन्तू जातिया यद्यपि अनियमित सेना है, किंतु उन्हे बहुत आसानीसे गतिशील किया जा सकता है। वह सजग हो तैयार खडी रहती है। जो कुछ उनके पास है, उसे बूढो, स्त्रियो और बच्चोकी रक्षामे छोडकर वह हर समय कूच करनेके लिये तैयार रहते है। ऐसी जातिके लिये युद्ध कोई विशेष घटना नही है। घुमन्तुओंके लिये लबी यात्रायें थोडेसे परिवर्तनके सिवा और कुछ नही है। उनके घोडे और रसद सब साथ-साथ होती है।"

मगोल आखिरतक घुमतू रहे। जहा यह उनकी शक्तिका एक बहुत भारी कारण था, वहा यही उनकी कमजोरीका भी मुख्य कारण था। रूसी इतिहासकार करमाजिन (१७६५–१८२६ ई०) के अनुसार—"अगर वे कृषिजीवी बन गये होते, तो शायद रूस अभी भी मगोलोंके अधीन होता।"

वा-तूने विजय-यात्राने लौटकर मास्कोके महाराजुल यारोस्लाव व्सेवोलद-पुत्रको सारे रूसी राजुलोका सरदार बना दिया। इसी समयसे मास्कोकी प्रधानता शुरू हुई। दो साल बाद गु-युक कआनके राज्याभिषेकके समय यारोस्लावको मगोलिया भेजा गया, जहासे वह लौट नही सका। इसी महोत्सवमें फ्रानिस्कन साधु जान प्लानो कार्पीनी (११८२-१२४६ ई०) भी शामिल हुआ था, जो पोप इन्नोसेत-द्वारा मगोल-सम्राट्को ईसाई बनानेके लिये भी भेजा गया था। वह १६ अप्रैल १२८४ ई० को ल्योन्ससे चला और जर्मनी, बोहीमिया, ब्रेस्लो, क्राको, वोल्दमीर (वोल्हूनिया), कियेफ (४ फर्वरी १२४६ ई०), तारतार-राज्य कानियेफ, ओरेन्जा (दूनियेपर दक्षिणतट), दोन, वोल्गा (वातूमराय), यायिक (उराल-नदी), कोमानियाकी पूर्वी सीमा, कग-ली, तुश, यानीकेन्त (सिरतट), तलस (तरस), इमिल, ओगोताइ-शिविर, नेमन (२८ जून) होते राजधानी कराकोरममे पहुचा। कारपीनीने अपनी यात्राका जो वर्णन किया है, उससे उनके रास्तेके देशोका अच्छा परिचय मिलता है। वा-तूके दरबारमे उसने पत्नियोसहित खानको तख्तपर बैठे देखा। खानजादे (राजकुमार) बेंचोपर बैठे थे, जिनमे पुरुष तख्तकी दाहिनी ओर और स्त्रिया बाई ओर थी। उसके वर्णनसे यह भी मालूम होता है, कि मुङ-खेके कआन चुने जानेमे वा-तूका खास हाथ था। उस समय छिङ-गिस्-वशका वही सबसे बडा और सम्मानित राजकुमार था, इसलिये उसकी बातको कोई नही काटता था। मुङ-खेने पश्चिमकी दिग्विजय मे वा-तूकी बडी सहायता भी की थी। मगोल वा-तूको कितने सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे, यह उसके सायन (भले राजा) के नामसे सिद्ध है।

१२५५ ई० में मुङ-खेके राज्याभिषेकके समय वा-तू स्वय नही जा सका। उसने अपनी जगह अपने पुत्र सरतकको भेजा था। इसी समय (१२५५ ई०) इतिल (वोल्गा) के तटपर वा-तूका देहान्त हो गया।

३ सरतक वा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

वा-तूने अपने ज्येष्ठ पुत्र सरतकको मुङ-खे कआनके सिंहासन-महोत्सवमे भेजा था। वही वा-तूके मरनेकी खबर पा मुङ-खे कआनने उसे सुवर्ण-ओर्दूके खानकी यारलिक (शासनपत्र) प्रदान करके भेजा। लेकिन वह अधिक दिनोतक नही जिया। समकालीन मगोल इतिहास-लेखक रशीदुद्दीन (१२४७-१३१७ ई०) के इतिहास 'जामेउत्-तवारीख' के अनुसार वा-तूके मुख्य पुत्र चार थे—सरतक, तुकान, अबगान और उलकची। सरतक निस्सतान मरा और उसकी जगहपर उसके भाई उलकचीको गद्दी मिली।

४. उलकची वा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

कआनके यारलिकके अनुसार वा-तूकी जेठी रानी बोरकचिन खातूनने उलकचीको गद्दीपर बैठाया, लेकिन वह भी जल्दी ही मर गया। अब वा-तूके मनस्वी भाई वेरेकके लिये रास्ता साफ था।

५ वेरेक (वरका) जू-छि-पुत्र (१२५५-६५ ई०)

वेरेक अपने भाईके समान ही दृढ योद्धा और शासक था। वह भाईके मरनेके साल ही पश्चिममे फैले विशाल मगोल-राज्यका खान बना। वेरेकने भाईके समयमें (१२३८ ई०) ही किपचकोकी भूमिमें विजय प्राप्त कर अपनी योग्यताका परिचय दिया था। कुछ इतिहासकारोंके अनुसार वेरेक प्रथम मगोल राजकुमार था, जिसने इस्लाम-धर्म कबूल किया, यद्यपि उसका यह अर्थ नही, कि उसके समय हीसे सुवर्ण-ओर्दूके खानोंमे इस्लामकी परम्परा चल गई। इसके लिये अभी आठवें उत्तराधिकारी उज्वेक (१३१२-४० ई०) के आनेकी प्रतीक्षा थी, जो कि वा-तूकी पाचवी पीढीमें पैदा हुआ था। 'शजरतुल्-अतराक' के अनुसार वरका जन्मसे मुसल्मान था। कुछ इतिहासोंमे लिखा है, कि वह मुसलमान-मासे पैदा हुआ था। दूसरी जगह लिखा है—पैदा होनेपर बहुत चाहा, कि वरकाको माका दूध उसे दें, लेकिन उसने तबतक दूध नहीं पिया, जबतक कि एक मुसल्मान औरतको उसे दूध पिलानेके लिये रख नहीं दिया गया। बड़ा होनेपर वह अपने भाईके हुकुमके अनुसार जब चारों ओर घूमता सैर कर रहा था, उसी समय सयोगसे वह इस्लामके पुण्यतीर्थ बुखारामे पहुचा, जहा उसे एक मुस्लिम मतसे शिक्षा प्राप्त करनेका सौभाग्य

मिला, कहते है, "वह महान् सत (शेख) बुजुरगवार हजरत शेख सैफुद्दीन बाखरजी थे, जोकि महान् हजरत शेख नजमुद्दीन कुबराके उत्तराधिकारी थे . । महान् शेखके हुकुमसे वह दश्ते-किपचकमे हाजी तुरकानकी ओर गया, जहा ईतल नदीके तटपर खुलाकू खान (तूलिखान-पुत्र) की विशाल सेनाके साथ भारी युद्ध हुआ । दरवेशोंके पुण्य-प्रतापसे खुलाकूको हार खानी पडी ।*

दूसरी कहावत—जिसमे सच्चाईका अश ज्यादा मालूम होता है—जुजजानी द्वारा उद्धृत है, जिसके अनुसार बेरेकके पैदा होनेपर उसके बाप जू-छिने—"इस लडकेको मै मुसलमान बनाऊगा" यह निश्चय कर उसके लिये मुसलमान धाय रक्खी, खोजदमे उसे इमामो और मौलवियोसे कुरान पढवाया। बा-तूका बेरेकके ऊपर विशेष प्रेम था । भाईके युद्धोमे उसके तीस हजार मुसलमान सवार घोडोकी पीठपर नमाजकी आसनी (जायनमाज) बाधे हुये चलते थे । वहा शरीयतकी सख्त पाबन्दी होती-थी । मुसलमानो में कोई शराब नही पीता था । जुजजानी यद्यपि मूलत ईरानका रहनेवाला था, लेकिन वह गुलामोके शासनके अतमे नासिरुद्दीन मोहम्मदशाहके समय (१२४०-६५ ई०) दिल्ली आकर रहने लगा था । उसने अपने इतिहासमे बेरेकके सबधमे तत्कालीन कथाका उल्लेख करते हुये लिखा है—"६५७ हि० (१२५८ ई०) में समरकदसे नूरुद्दीन सूफीके महन्त जलालुद्दीन सूफीके पुत्र अशरफउद्दीन दिल्लीमें व्यापारके लिये आये । वह अपने साथ इस्लामके बादशाह नासिरुद्दीनके लिये बेरेककी भेट भी लाये थे । वह बेरेकके पक्के मुसलमान बादशाह होनेके बारेमे बाते करते थे, जिनमेसे दोको जुजजानीने अपने ग्रथ "तबकाते-नासिरी" मे उद्धृत किया है—(१) समरकदमे किसी ईसाईका बेटा मुसलमान हो गया। बापने हाकिमोंके दरबारमें फरियाद की, कि मेरे बेटेको बहकाकर मुसलमान बनाया गया है । स्थानीय हाकिमने भी उसका पक्ष लिया। जब इसका पता बेरेकको लगा, तो उसने मुल्लोके पक्षमे निर्णय दिया । यह याद ही है, कि मगोल-शासक धर्मके बारेमे बिलकुल तटस्थ रहते थे, जिसका बहुत कुछ पालन उनके अधीन मुसलमान अफसरोको भी करना पडता था । गद्दीपर बैठनेके तीसरे सालकी यह बात बेरेकके कट्टर मुसलमान होनेका पता देती है । हो सकता है, इसीलिये उसने हिंदुस्तानके इस्लामी बादशाहके साथ सबध स्थापित करना चाहा। (२) दूसरी बात—बा-तूके बाद सरतक गद्दीपर बैठा । वह अपने मुसलमान चाचा (बेरेक) को उसके अनुरूप सम्मान नही प्रदान करता था । इसके बारेमे कहनेपर सरतकने जवाब दिया—"तू मुसलमान है, और मैं ईसाई-धर्मका माननेवाला हू । मेरे लिये मुसलमानका मुह देखना भी ठीक नही है।" बेरेकने इस अपमानसे दु खित हो रोते-रोते रातभर अल्लाहसे प्रार्थना की और अल्लाहने दुआ सुनकर सरतकको मार दिया । जुजजानीके अनुसार बेरेकका राज्य किपचको, सकसिनो, बोल्गारो शकलाओ, रूसियोकी भूमि तथा रूमके उत्तर-पूरवतक फैला हुआ था—जेन्द और ख्वारेज्म उसके राज्यमे थे ।

बेरेकके गद्दीपर बैठनेके समय नवोग्राद (० गोरद) गणराज्यके महाराजुल अलक्सान्द्र नेव्स्की तथा उसके भाई सुज्दलके राजुल आन्द्रेइने बधाई और भेट भेजी थी । बा-तूकी पश्चिमकी विजय-यात्राको फिरसे जारी करनेका बेरेकको ख्याल आया, लेकिन पीछे खुलाकू (ईरान) खानके साथ झगडा हो जानेसे वह वही उलझा रहा और पश्चिमी युरोपको मगोल-खतरेसे मुक्ति मिली । तो भी १२५९ ई० मे बेरेकने अपने सेनापतियो बुरुन्दे, नोगाई और तुतूबुगाको दिग्विजयके लिये भेजा था । वह लुब्लिन होते विस्तुला नदी पार कर २ फर्वरी १२५९ ई० को सेन्दोमीर पहुचे । और जगहोमे लूट-मार और अधीनता स्वीकार करानेमे कोई दिक्कत नही हुई, लेकिन सेन्दोमीरवालोने प्रतिरोध किया, जिसपर मगोलोने वहाके लोगोका कत्ले-आम कर दिया। पोलेंदकी तत्कालीन राजधानी क्राको फिर नष्ट हुई । मगोल-सेना ओप्पेलनतक पहुची, जहासे लूटके साथ भारी सख्यामे ईसाई दासोको लिये लौट गई। बेरेककी दो राजधानिया थी—बा-तूसराय और बुलगारी, जिनमें बुल्गारी बुल्गारो (बोल्गारो) की पुरानी राजधानी वर्तमान कजानके आसपास बोल्गा और कामा नदियोके सगमपर अवस्थित थी ।

खुलाकूसे संघर्ष—"तारीख-शेखेउवेस" (१३५६–७८ ई०) के अनुसार: "उस समयके रवाजके अनुसार बेरेकके कितने ही अमीर, खानजादे (राजकुमार) और सैनिक गर्मियोको आजुर-बाइजानमें

---

* "स्वोनिक मतेरियलोफ अ्रतनोश्चेरव्स्या क इस्तोरी जोल्तोइ ओर्दी" पृष्ठ—२६४–६५ ।

बिताया करते थे। इलखान (खुलाकू) भी जाडोंमे चगातू और गर्मियोंमे अलदकमें रहता था। सराय-बेरेकसे मुहम्मदाबाद (अर्रान) होते गुश्तास्क तक वह अराबो (गाडियों) पर आते।" आजुर-बाइजान आजकी तरह उस समय भी दो राज्यों में बटा था—उत्तरी भाग सुवर्ण-ओर्दूके हाथमे था और दक्षिणी भाग इलखान (खुलाकू-वंश) के हाथमे। मगोल ओर्दू अपने-अपने पशुओंके साथ चरवाहीके लिये सारी भूमिमें विचरण करना, उनका जाडा और गर्मी बितानेका अर्थ केवल एक जगहपर रहकर मनोविनोद करना नही था। झगडेके लिये वहा कोई भी कारण पैदा होना आसान था। बेरेकके भाई बुआल (मोवाल) के पुत्र तुतार (ततार) ने कुछ गुस्ताखी की, जिसके लिये उसे खुलाकूके पास लाया गया। खुलाकूने उसे उसके चचा—बेरेक (बरका) के पास भेज दिया। बेरेकने फिर उसे खुलाकूके पास कान मलनेके लिये भेजा। उसे यह ख्याल नही था, कि भतीजेको खुलाकू मौतका दण्ड देगा, लेकिन खुलाकूसे सबंध कुछ पहले ही खराब हो चुका था। सुवर्ण-ओर्दूके अमीरोने कुछ छेड-छाड की, और खुलाकूको उन्हे दड देनेके लिये सेना भेजनी पडी थी। अमीर हारे। उनमें से अमीर निकुदेरके अधीन कुछ मगोल-सेना खुरासानके रास्ते भागी। उसने गजनी और विनिकके पहाडोको लेते मुलतान और लाहौरतक अपना अधिकार जमाया। कुमार ततारके मारे जानेके बाद अब दोनों वंशोमे शत्रुताकी आग जोरसे भडक उठी। बेरेक इस्लामका बादशाह था और खुबिले खानका भाई खुलाकू काफिर। बेरेकने उसके ऊपर इल्जाम लगाया—[1] "उस (हुलाकू) ने मुसलमान नगरोको नष्ट किया, इस्लामी वंशोको खत्म किया, अकारण ही खिलाफतका जड-मूलसे उच्छेद किया।" भतीजेका बदला लेनेके लिये बेरेकने ततारके पुत्र नोगाइको तीन तुमान[2] (तीस हजार) सेना देकर बापके खूनका बदला लेनेके लिये भेजा। वह शिरवान पहुचा। खबर पाकर खुलाकूने सारे ईरानसे सेना जमा कर तीन तुमान सेना शिरामून नोयन, अबताइ नोयन और समगरके नेतृत्वमें भेजी। २० अगस्त १२६२ ई० को स्वय खुलाकूने भी अलतगासे प्रस्थान किया। अक्तूबर-नवम्बर १२६२ ई० (जुल्हिजा ६६० हि०) में दोनो ओरकी भारी लडाई हुई। अबताइ नोयनने शिरवानसे एक फरसख (कोस) पर सुलतानचुका नदीके किनारे नोगाइको बुरी तरहसे हराया। नोगाइ जान लेकर भागा। इलखानकी सेनाने २० नवम्बर १२६२ ई० (६ मुहर्रम ६६० हि०) आगे प्रस्थान किया। दरबन्दके घाटेमें—जहा काकेशस पहाड तथा कास्पियन समुद्र एक दूसरेके बिलकुल नजदीक आ जाते है—फिर जमकर जबर्दस्त लडाई हुई। बेरेककी सेना फिर हारी। खुलाकूकी सेनाने दरबन्द पार हो किपचक भूमिको लूटा-बरबाद किया। तो भी सुवर्ण-ओर्दूके खानकी शक्ति अभी क्षीण नही हुई थी। वह सेना एकत्रित करते अवसर ढूढता रहा। इलखानकी सेना लौटते हुये तेरक नदीके तटपर पहुची। जाडोंके कारण नदीका पानी जम गया था। १३ जनवरी १२६३ ई० को सवेरेसे शाम-तक इलखानी सेना उसपरसे पार होती रही। यकायक नदीकी जमी बर्फ टूट गई, जिससे बहुत-से लोग पानीमें डूब मरे। खुलाकूकी सेना सुवर्ण-ओर्दू सैनिकोंकी मार खाती पीछे हटी। इसी समय २२ अप्रैल १२६३ को खुलाकू युद्धमें घायल हो गया, जिससे ८ फर्वरी १२६४ ई० को वह सराग-जगातमें मर गया। लेकिन अब बापके कामको उसके योग्य बेटे अबका खान (आरिक बूगाखान) ने अपने हाथमे ले लिया।

१३ जुलाई १२६५ ई० में अबकाखानने राजकुमार यशमूतके नेतृत्वमे एक बडी सेना शिरवानकी ओर भेजी। खान स्वय जाडामे माजन्दरानमे रहा। उधर उत्तरसे राजकुमार नोगाइ भी सेना ले शिरवान-की ओर चलकर अकसू नदीके तटपर पहुचा। यशमूत कुरा नदी पार हो गया। १४ नवम्बर १२६५ ई० को दोनों सेनाओंमें लडाई हुई, जिसमें तुगाचारका बाप कायर बूगा मारा गया। सेनापति नोगाइ भी इसमें आहत हुआ। सुवर्ण-ओर्दूकी सेना तितर-बितर हो शिरवानकी ओर लौटी। अब बेरेक स्वय तीस तुमान[2] (तीन लाख) सेनाके साथ आया और दक्षिणसे अबकाखान भी मुकाबिलेके लिये चला। दोनो सेनायें कुरा नदीके दोनो तटोंपर आमने-सामने पक्तिबद्ध हुईं। १४ दिनतक यही हालत रही। बेरेक नदी पार होनेका कोई अवसर न देख ऊपर पहाडमें कही पार होनेके ख्यालसे नदीके किनारे-किनारे तिफ्लिसकी ओर चला, लेकिन असफल-मनोरथ हो रास्तेमें ही उदरशूल (कुलज) की बीमारीसे मर

[1] "जामे-उत्-तवारीख" (रशीदुद्दीन) [2] १ तुमान=१० हजार।

गया। दोनो प्रतिद्वंद्वी बेरेक और खुलाकू मर गये, लेकिन उनकी दुश्मनी खतम नही हुई। बेरेककी लाशको सदूकमे बदकर बा-तूसरायमे ले जा भाईके पास ही दफन कर दिया गया।

बेरेककी सेना खुलाकूसे उलझनेके पहले इस्ताम्बूल (कन्स्तन्तिनोपोल) तककी भी विजय-यात्रा कर चुकी थी, जबकि वहाके राजाने क्रिम नगरको सुवर्ण-ओर्दूके खाकानको प्रदान किया था।

बेरेककी मृत्युके बाद फिर बा-तूकी सतानोमे गद्दी चली गई और तोगोन-पुत्र मङ-गू तेमूर खान बना।

६. मङ-गू तेमूर, मुङ-खे तेमूर (१२६५-८० ई०)

खुबिले खाकानने बेरेकके बाद मुङ-खे तेमूरको खानपदकी यारलिक भेजी। यद्यपि उस समय मङ-गू तेमूर खुबिलेका कृपापात्र था, लेकिन पीछे उसके विरोधी ओगोताइ-वशी कैदू खानका समर्थक बन गया, जिससे खुबिले उसका विरोधी हो गया। रूसके राजुल मङ-गू तेमूरके आज्ञाकारी सामत थे। सुवर्ण-ओर्दू की राजधानी सराय (सराय चिक) मे युरोपीय राजा और राजकुमार भी भेट लेकर कोर्निस बजानेके लिये आते थे। अब मगोल-वश सभ्यता और सस्कृतिका प्रतीक समझा जाता था। रूसके राजुल और महाराजुल मगोल पोशाक और दरबारी रीति-रवाजोको अपने लिये आदर्श मानते थे। इस आदर्श का अनुगमन १८वी सदीके आरभतक किया जाता रहा, जब कि प्रथम पीतरने इन पुराने तरीकोको तुच्छ समझ रूसका युरोपीकरण शुरू किया। मङ-गू तेमूरके १५ सालके शासनमे सुवर्ण-ओर्दूकी शक्ति और राज्यविस्तारमे कमी नही हुई। हा, खुलाकू-पुत्र अबकाखानके साथ चलते झगडेके कारण वह कोई नया काम नही कर सका। मङ-गू तेमूर अपने न्याय और बुद्धिमानीके लिये प्रसिद्ध था, जिसके लिये ही उसे लोगोने केलेकखानका नाम दे रक्खा था।

७ तुदा-मङगू तोगनपुत्र (१२८०-८४ ?)

तुदा-मङगू तुकूकान (तोगोन) का तृतीय पुत्र तथा मङ-गू तेमूरका भाई था। इसकी रानी तुरे कुतुलुक और दादी बा-तूकी प्रभावशाली रानी बोरकचीन दोनो—अलची तातार कबीलेकी थी। तुदा-मङ-गू निर्बल शासक था। जिससे लाभ उठाकर मङ-गू तेमूरके पुत्रो—अलगू और तुगरल एव तोगनके ज्येष्ठ पुत्र तरबू (दरतू) के पुत्रो कुनचोग और तुला बुकाने मिलकर खानको पागल कहकर उसे गद्दीसे उतार पाच सालतक सम्मिलित राज्य किया।

यस्सू-मङगू (. –१२८९ ई०)—"शजरतुल-अतराक" ने यस्सू-मङ-गूको तुदा-मङ-गूका उत्तराधिकारी कहते—"यस्सू मुङ-गू-खान बिन-तोगान बिन-बातू-खान बिन-जोजी-खान बिन-चगिस-खान"—पाचवा खान लिखा है। सुवर्ण-ओर्दूके ये पाच साल ऐसे गृह-कलहके थे, जिसमे जहा-तहा अनेक खान बने हो, यह सभव है। इस अव्यवस्थाका अत तोकतोगूके खान बननेके साथ हुआ।

८ तोगताइ, तोकतोगू, मंगूतेमुर-पुत्र (१२८९-१३१३)

सेनापति नोगाइ अपने ओर्दूकी इस दुरवस्थाको चुपचाप देख नही सकता था। अतमे उसकी नजर मङ-गू तेमूरके पुत्र तोकतोगूके ऊपर पडी। तोकतोगूकी मा उलजइ खातून केलमिश अकाखातूनकी पोती या नतिनी थी। अराजकताके समय राजकुमारोकी हत्या आम बात थी, जिसके डरके मारे तोकतोगू भाग गया। बेरेकचरके पुत्र बिलिकचीने उसकी सहायता की। उसने बा-तू और बेरेकके समयके प्रसिद्ध सेनापति नोगाइको बुलवाया। अका (ज्येष्ठ) कहकर तोगताइने बहुत लल्लो-चप्पो करके उसे अपनी ओर कर लिया। नोगाइका ओर्दू उजी (द्नियेपर) की उपत्यकामें रहता था। वही सेना और सेनपोको एकत्रित कर नोगाइने समझाते हुये कहा, कि मुझे सायन (बा-तू) खानने आज्ञा दी थी, कि उलुस (ओर्दू) को छिन्न-भिन्न होनेसे बचाना। नोगाइको अपने विरुद्ध होते देख तरबू और मङ-गू-तेमूर के पुत्र पितामह नोगाइके साथ हो गये। नोगाइने कहा—अपने झगडेका फैसला उलुसको छिन्न-भिन्न करके नही, बल्कि कूरिल्ताई (महाससद) के निश्चयके अनुसार करो। तोगताइने इसी बीच सेना जमा कर इतिल (बोल्गा) उपत्यका में पहुच राजधानीको ले लिया। लेकिन नोगाइ तोगाताइके हाथमें खेलना

नही चाहता था। तोगताइने उसे बहुत सी भेट-पूजा देकर अपनी ओर मिलानेका असफल प्रयत्न किया, तो भी अभी दोनोका सबंध बहुत बिगडा नही था। इसी बीच धर्मको लेकर दोनोमे भयानक अनबन हो गई।

नोगाइके साथ संघर्ष—तोगताइका ससुर सलजीदइ बुरगान प्रसिद्ध ककुरत कबीलेका पुराना अमीर था। उसकी बीबी केलमिश अकाखातूनकी पुत्री अलजई खातून तोगताइकी प्रभावशाली रानी थी। केलमिश अकाने अपने पुत्र याइलगका व्याह नोगाइकी पुत्री कबकसे करना चाहा। नोगाइने इसे स्वीकार किया और दोनोका व्याह हो गया। व्याहके थोडे ही समय बाद कबक खातून मुसलमान बन गई। उसका पति तथा ससुर-परिवार बौद्ध (उइगुर) था, इसलिये कबकके साथ याइलग और उसके माता-पिता घृणा करने लगे। लडकीने अपने मा-बाप और भाईको इसके बारेमे कहा। नोगाइ बेटीका अपमान नही देख सका और उसने तोगताइसे माग की—यदि मेरे और अपने बीच पिता-पुत्रका सबंध कायम रखना चाहता है, तो सलजीदइ करजूको मेरे हाथमें दे दे। तोगताइ अपने ससुरके साथ ऐसा बर्ताव कैसे कर सकता था? उसने समझानेकी कोशिश की—"वह मेरा पिता और सरक्षक रहा है। पुराना अमीर है। कैसे उसे शत्रुके हाथमे दे दू?" नोगाइकी बीबी चबी बडी चतुर स्त्री थी। उसके तीनो पुत्र—जूके, तेके और तूरी—सरकारी सेनाके कुछ हजार आदमियोको बहका कर इतिल (वोलगा) पार भाग गये। तोगताइने नोगाइसे हजारी सेनाको लौटा देनेके लिये कहा, लेकिन उसने तबतक वैसा करनेसे इन्कार कर दिया, जबतक कि सलजीदइ या उसका पुत्र याइलग उसके पास नही भेज दिया जाता। अब सीधे संघर्ष होना निश्चित हो गया।

तोगताइ नोगाइकी शक्तिको जानता था। उसने उससे भिडनेके लिये अक्तूबर-नवम्बर १२८९ ई० (६९८ हि०) में उजी (द्नियेपर) के तटपर तीस तुमान (तीन लाख) सेना जमा की। उस साल जाडोमें द्नियेपरकी धार नही जमी, इसलिये सेनाको पार ले जाना सभव नही हो सका। नोगाइ अपनी जगह बैठा रहा। सन् १३०० ई० के बसतमे तोगताइके ओर्दूने तान नदीके तटपर गर्मी बिताई। सीधी लडाई करनेकी जगह खुर्राट सेनापति कल-बल-छलसे काम लेना चाहता था। ऊपरसे उसने खानको कहला भेजा—मै चाहता हू, कूरिल्ताई बुलाकर फैसला किया जाय। लेकिन, दूसरी ओर धोखा देकर वह तोगताइके ऊपर आक्रमण करना चाहता था। खानको यह पता लगते देर न हुई। उसने जल्दी-जल्दी सेना जमाकर तान-उपत्यकाके बखतियारी (नजीमारी) स्थानपर लडाई की। तोगताइको हारकर सरायकी ओर भागना पडा। इसी समय अमीर माजी, मुतान (मुबान) और सगुर तीन अमीर नोगाइका साथ छोड अपने खानके पास चले गये। तोगताइ फिर तैयारी करने लगा। उसने बहुत कालसे दरबदके घट्टपाल रहने आये बलग-पुत्र तमातोकतूको बुला भेजा और उसके नेतृत्वमे एक बडी सेना नोगाइके विरुद्ध भेजी। नोगाइको लडनेकी हिम्मत नही हुई। वह उजी (द्नियेपर) नदीकी ओर लौट गया। क्रिम नगरमे पहुचकर उसने बहुतसे लोगोको दासके रूपमे बेंचनेके लिये बदी बनाया। लोगोने तोगताइके पास सदेश भेजा—"हम इलखान (तोगताइ खान) के सेवक और अनुचर है। यदि स्वामीकी आज्ञा हो, तो हम नोगाइको पकडकर भेज दे।" नोगाइके पुत्रोको इसकी भनक लग गई और उन्होने एक हजार सेना उनके ऊपर भेजी। हजारी सेनापतिने नोगाइके दूसरे पुत्र तेकेको खान बनानेका लोभ देकर धोखा रचा। इसपर तेकेने आक्रमण कर हजारी सेनाको हराया और उसके अमीरका सिर कटवा लिया। नोगाइ दलके भीतरके झगडोकी खबर तोगताइको बराबर मिल रही थी। वह साठ तुमान (६ लाख) सेनाके साथ उजी पार हो तरकू (बरकू?) नदीके तटपर पहुचा, जहापर कि पहले नोगाइका ओर्दू रहा करता था। नोगाइके पास तीस तुमान थे, लेकिन वह स्वय बीमार था। उसने आदमी-द्वारा तोगताइके पास सदेश भेजा—"तेरे सेवक (मै) ने नही जाना, कि स्वय स्वामी पधारा है। उसकी सरदारी तथा सेना तेरी (इलखानकी) है। सेवक बूढा निर्बल आदमी है। उसने सारे जीवन तेरे पिताकी सेवा की।" ऊपरसे इस तरहकी बाते करते भी नोगाइने अपने पुत्र जूकेको एक बडी सेना ले तरकू नदी पार हो तोगताइपर आक्रमण करनेके लिये कहा। यह मालूम होनेपर तोगताइने भी प्रहार करनेका हुकुम दिया। युद्धमे नोगाइ और उसके पुत्रोकी पूरी तौरसे हार हुई। हजार सवारोके साथ

नोगाइके पुत्र भागकर केलारो और बाश्किरोमे चले गये। घायल नोगाइ सत्तर सवारोके साथ भागा जा रहा था, जब कि तोगताइके रूसी सैनिकोने उसे रास्तेमे पकड लिया। नोगाइने कह दिया—"मै नोगाइ हू, मुझे तोगताइ खानके पास ले चलो।" रूसी सैनिक उसे ले चले, लेकिन नोगाइ रास्तेमे ही मर गया।

विजयके बाद तोगताइ बा-तूसराय लौटा। नोगाइ-पुत्रोको कही त्राण नही दिखाई पडा। यह हालत देखकर उसकी मा चवी और तूरीकी मा बाइलकने सलाह दी, कि खानके शरणमे चले चलो। इससे नाराज होकर पुत्रोने उनको मार डाला।

नोगाइ केवल एक सफल महासेनापति ही नही था, बल्कि वह कुटिल नीतिका पक्का खिलाडी था। शायद धर्मकी बात बीचमे न आ गई होती, तो बात यहातक न पहुचती। १३वी सदीके अत होते-होते मगोल-सरदार और सैनिक बौद्ध धर्मको पूरी तौर से अपना चुके थे और इस्लामके प्रति उनका रुख सहानुभूतिका नही था, यद्यपि राजकाजमे अब भी वह तटस्थताका व्यवहार करते थे। वह नही चाहते थे, कि राजवश और सामतवर्गमे अरबोका धर्म फैले। यद्यपि सुवर्ण-ओर्दू और खुलाकूके वशमें घोर शत्रुता थी, लेकिन खुलाकूका इस्लामके ऊपर अत्याचार और खलीफा-वशका उच्छेद करना मगोलोमे अभिमानकी बात समझी जाती थी। वह क्यो पसद करते, कि उनके घरमे ही विभीषण पैदा हो।

नोगाइने जब तोगताइ खानसे झगडा मोल लिया, तो उसने अपने पुराने शत्रु तथा बापके घातक खुलाकू-वशसे भी सहायता लेनेकी कोशिश की। उसने खुलाकूके पुत्र अबका खानके पास अपने पुत्र तुरी तथा पत्नी चूबी (चवी) के साथ अपनी एक लडकीको भी ब्याहके लिये भेज दिया। अबकाने भी तुरीको अपनी कन्या प्रदान की। वह कुछ समयतक ईरानमे रहकर नोगाइके पास लौट आये। झगडा और बढनेपर नोगाइने ईरानके खान गजन (१२९५-१३०४ ई०) से मदद मागी, लेकिन गजन इसके लिये तैयार नही था। उसने मदद देने हीसे नही इन्कार कर दिया, बल्कि तोगताइको सदेह न हो, इसके लिये जाडा अर्रान (दक्षिणी काकेशस) मे न बिता बगदादमे बिताया। वह बराबर नोगाइको तोगताइसे मिलकर रहनेके लिये कहता रहा।

तोगताइने तुलाबुगाका पक्ष लेनेके अपराधमे अपने भाई तुगरलको मरवा दिया था। फिर भाईकी विधवाको अपनी रानी बना तुगरलके बेटे उज्बेकको खतरनाक चेरकासोके देशमे भेज दिया। चौबीस वर्षके सघर्षमय जीवनके बाद उसके हृदयमे पश्चात्ताप होने लगा था। उसने यह बात अपनी रानीको बतला दी और दो बेगोको राजकुमार उज्बेकको बुलानेके लिये भेजा। अभी उज्बेक नही आया था, इसी बीच (९ जुलाई १३१२ ई० *) इतिल (वोल्गा) नदीमे नौका-विहार करते तोगताइ डूबकर मर गया। तोगताई-पुत्र तुगल जानता था, कि उज्बेक अपनी माके प्रभावसे गद्दीका मालिक बन जायगा, इसलिये उसने उसके मारनेका षड्यत्र रचा। उज्बेकको यह बात मालूम हो गई। सरायमे आनेके बाद उसने महलमें घुसकर तुगलको मार डाला।

९. उज्बेक खान तुगरल-पुत्र (१३१३-४० ई०)

उज्बेकका शासन इसलिये भी महत्त्वपूर्ण है, कि इसके समयसे सुवर्ण-ओर्दू पूरीतौरसे मुसलमान बनने लगा।

(१) आपसी सघर्ष—उज्बेकके शासनारभके समय जो षड्यत्र हुआ था, उसके बारे मे "तारीख-हैदरी" (हैदर राज़ी १६११–१८ ई०) के अनुसार तोगताइके बाद अमीरो और नोयनोने बादशाह चुननेके बारेमे एक सभा की, जिसमें वह उज्बेकको गिरफ्तार कर उससे पूछनेवाले थे, कि क्यो तुमने छिङ-गिस्के यस्सकको छोडकर अरबोके धर्मको अपनाया। इसी समय एक अमीरने आखसे इशारा किया, और उज्बेक पेशाब-पाखानेका बहाना करके सभासे निकलकर भाग गया। फिर सेना जमाकर लडकर उसने बीस राजकुमारो और तोगताइके दो पुत्रोका कतल कर १३२२ ई० (७२२ हि०) में अपने राज्यको निष्कटक किया। तबसे जू-छि खानाका उलुस "उज्बेक-उलुस" कहा जाने लगा। आरभिक सहायताओके लिये उज्बेकने कुतुलुक तेमूरको खुरासान बख्श दिया।

---

* "जेल-जामे-उत्-तवारीख"—अबूसईद

खानके अपने परिवार तथा अमीरोंके परिवारोंमे अब धर्मको लेकर झगडा और भी ज्यादा बढ़ चला। नोगाइकी लडकीका मुसलमान होना एक अलग-थलग घटना नही थी। हमे मालूम है, सुवर्ण-ओर्दू और दूसरे मगोल खानोकी सेनाओमे भी मगोल-सैनिक दालमें नमकके बराबर थे। सारे मध्य-एसिया और उसके उत्तरके घुमतू तुर्क एक बार अवश्य मगोलोके खिलाफ खूब लडे, किंतु परास्त होनेके बाद वह लुढकती बर्फकी गेंदकी तरह मगोल ओर्दूका अग बनते गये। विजयोमे उनका पहले हीसे बहुत हाथ था, और उनकी लूटको वह अपना उचित हक समझते थे। तब भी मगोल और अ-मगोलमें अतर रक्खा जाता था, यह हम चीनके बारेमे लिखते वक्त बतला चुके है। यद्यपि मगोल खान दूसरोकी लडकिया लेनेमें एतराज नही करते थे, उनके हरम देश-देशकी सुन्दरियोसे भरे थे, लेकिन वहा भी प्रधानता मगोल रानियोकी ही थी—बापकी ओरसे छिड्-गिस्का रक्त और माकी ओरसे शुद्ध मगोल सामतका रक्त होना आवश्यक समझा जाता था। शक्तिशाली खानो के समय चाहे बहुसख्यक तुर्क सैनिक इस भेदभावको बर्दाश्त करते हो, लेकिन अब परिवर्तित अवस्थामे वह बराबरीका दावा करने लगे थे। समरकद हो या तबरेज, सराय-बातू हो या काश्गर, सभी जगह मगोलोकी अलग सत्ता बनाये रखनेकी बराबर कोशिश की गई, किंतु आखिर वह बूद बनकर तुर्कसमुद्रमे मिल गये और उनके शासनके अत होनेके कुछ ही समय बाद यह जानना भी मुश्किल हो गया, कि कौन मगोल है। और तो और, स्वय "शजरतुल-अतराक" जैसे इतिहासकारने भी तुर्क और मगोलका भेद भुलाकर मगोल-वश-वृक्षको तुर्क-वश-वृक्ष लिखा।

अपने बौद्ध पक्षपाती सेनापतियोको हराकर उज्बेकने यह दिखला दिया, कि अब मगोलो की नही, बल्कि तुर्कोंकी तूती बोलेगी। १३१५ ई० में सुवर्ण-ओर्दूके विद्रोही सेनापति बाबाने अपने ओर्दूके साथ ईरानमे जा उल्जैतू खान (१३०४–१७ ई०) के पास शरण ली। अभी ईरानी इलखान मुसलमान नही हुए थे, इसलिये उलजैतू बाबाकी मददके लिये तैयार था। बाबाने ईरानसे ख्वारेज्मके ऊपर आक्रमण किया और उज्बेकके कृपापात्र कुतुलुक तेमूरको मार भगाया। चगताइ खान इस्सन "जेल-जामे-उत्तवारीख" के अनुसार बाबा ओगुलकी घटना सितबर १३१५ ई० (जमादी II अतिम ७१५ हि०) को हुई, जब कि वह अपने तुमान (दस हजार सेना) के साथ उज्बेकसे नाराज होकर खुलाकू-वशी खान उलजैतू के पास चला गया। फिर वहासे डेढ हजार सवारोको लेकर उज्बेकके सामत कुतुलुकके ऊपर प्रहार करने ख्वारेज्म गया। कुतुलुककी हार हुई और उसकी सारी सेना बाबा ओगुलकी ओर हो गई। ख्वारेज्मके शहरो—जमशबर, शरबीन, हज़ारास्प, हज़ारज़मीन, कात, केरमारोन, शावकान आदिको लूटकर उसने उजाड दिया, लोगोपर बडे जुल्म किये। बाबा ओगुलके सैनिकोने पतियोंके सामने उनकी बीबियोंके साथ व्यभिचार करनेमे भी आनाकानी नही की। ७०० के करीब इमाम और अशरफ (कुलीन लोग) जान बचानेके लिये मीनारपर चढगये थे। बाबाने लकडी जमाकर आग लगानेका हुकुम दिया। सासतसे मरनेकी जगह बापोने अपने बेटोको मीनारसे नीचे गिरा दिया। बाबाके हाथमे पचास हजार कैदी और लूटकी अपार सपत्ति आई। जब इसकी खबर चगताइ खान एसेनबुगाको खोजन्दमें मिली, तो उस (इस्सन बुगा या यस्साबुग १३०९–१८ ई०)ने अपने पडोसमें बाबाकी सफलता देखना पसद नहीं किया। वह बीस हजार सवारोंके साथ एक महीनेके रास्तेको हफ्तेमें पूरा करके ख्वारेज्म पहुचा। बाबा ओगुलसे जबर्दस्त लडाई हुई, जिसमें उसके बहुतसे आदमी मारे गये। बाबाने बदियोको छोड दिया। लूटकी सपत्तिसे भी उसे हाथ धोना पडा और वह कुछ सवारोंके साथ जान बचाकर मेर्वकी ओर भागते चद शाहजादोंके साथ उलजैतूके पास पहुचा। चगताइ और बा-तूके वशोमें अब दोस्ती हो गई थी।

अपने ख्वारेज्मके उज्बेकका बहुत नाराज होना स्वाभाविक था। उसने इसमें उलजैतूका हाथ समझा। फिर दोनो ओरसे दूतोका आना-जाना होने लगा। यह खबर जब चगताइ खान इस्सनबुगा ने सुनी, तो उसने उज्बेकको अपनी ओर खीचनेका प्रयत्न करते हुये सदेश भेजा—"तेमूर कआन (चीन) कहता है, कि उज्बेक क्या बादशाह है? मै उसकी बादशाही दूसरे उलुस (ओर्दू) को दे दूगा।" इस पर उज्बेक भी कआनसे बिगड उठा।

सघर्षकी खबरसे पहले ही सितबर १३१५ ई० (जमादी अतिम ७१५ हि०) को चीनसे कआनका महादूत सियान-वशी अकनुका ईरानकी राजधानी तबरेजमे पहुचा। अमीर हुसेन गूरगान ईरानी-खानका

प्रसिद्ध अमीर था। वह उस समय उज्वेकके सीमातके प्रदेश अर्रानसे तवरेजमे आया हुआ था। उसने महादूतकी जियाफत की और खानेके समय प्यालेको वैठे-वैठे अकवुकाके हाथमे देना चाहा। अकवुका इसपर नाराज हो दुत्कारते हुये वोला—"तू सामत और दुर्गपाल होते मेरे सामने वैठा चाहता है, कि मै तेरे हाथमे प्याला ले लू। तू छिड-गिसी यास्सा और पुराने शिष्टाचारको भूल गया?" अमीर हुसेनने भी उसका सीधा जवाव दिया—"अमीर इस समय दूत होकर आया है, न कि छिड-गिसी यास्साका शिक्षक वनकर।" महादूत चुप हो गया।

कआनके दूत ने सुल्तानियोमे जा उलजैतू खानसे कआन का सदेश कहा—"यदि वावा ओगुल स्वय ख्वारेज्मपर आक्रमण करने गया, तो उसे मेरे पास भेज दो।" खानने कहा—"मुझे खवर नही, मै ऐसे वुरे कामकी हरगिज इजाजत नही दे सकता था।" उलजैतू नही चाहता था, कि वौद्ध धर्मके पक्षपाती वावाका समर्थन कर उज्वेक खानको जहाद घोषित करनेका मौका दे। आखिर वह स्वय इस्लामके केंद्र (ईरान, इराक, शाम) का शासक था, जहादकी हवा उसके देशमे भी घातक सावित होती। उसने उज्वेकके दूतके सामने वावाको मरवा डाला और भारी भेटके साथ स्नेहपूर्ण सदेश देकर महादूतको लौटा दिया।

१३१७ ई० (७१८ हि०) मे उलजैतू मरा। उस समय अभी उसका उत्तराधिकारी अबू-सईद छोटी उमरका था। यह खवर जव दश्ते-किपचक गई, तो उज्वेकके मुहमे पानी भर आया। वेशुमार सेनाके साथ वह दरवदके रास्ते ईरानकी ओर वढा। खान अवू-सईद (१३१७-३४ ई०) भी अपने अमीरोके साथ करावागकी ओर चला। अमीर चोवान एक वडी सेना ले गुर्जिस्तान (जार्जिया) के रास्ते उज्वेकके मुकाविलेके लिये वढा। अमीर ईमन कुतुलुक भी एक वडी सेना ले तवरेजसे अर्रान (शिरवान) की ओर रवाना हुआ। दरवदसे खवर आई, कि उज्वेक दश्तेखिजिर (खजारोका मैदान) पार हो आगे वढ दरवद पहुच गया है। शिरवानको लूटते-पाटते उज्वेक कुरा नदीके तटपर पहुचा। कुरा नदी जहा चीनके व्यापारके लिये कास्पियन समुद्रतटसे कालासागरके पास तक व्यापार-धाराका काम देती थी, वहा वह खुलाकू और वा-तू-वशोके सघर्षका मुख्य स्थान रही। अमीर चोवानने उज्वेकके ऊपर इतने कौशलसे आक्रमण किया, कि उसे हार खानी पडी।

अमीर चोवान हुसेनका सितारा अव वहुत ओजपर चढा। अवू-सईदकी नावालिगीका लाभ उठाकर उसने सारे राज्यको अपने हाथमे ले लिया। उसका मन वहुत वढ गया, और वह उज्वेकको और भी कडा सवक सिखानेकी तैयारी करने लगा। भारी सेना जमाकर फिर वह शिरवान पहुचा। सेनाके एक भागको दरवद पार तेरक नदीकी ओर भेजा और स्वय अपने पुत्रोके साथ पहलेके परिचित गुर्जिस्तानके रास्ते आगे वढा। लेकिन अवके उज्वेकके सामने उसकी नही चली और उसे खाली हाथ लौटना पडा। चीनमे कआन [वोयन्-थू—१३११—२० ई० या गेगेन १३२०—२३ ई०] को खुलाकू-वश और वा-तू-वशके खानोमे इस पारस्परिक खूनी सघर्षोसे वहुत चिंता हो रही थी। उसने अपना एलची (जनदूत, महादूत) भेजा, जो पहले उज्वेकके पास गया। फिर उसके एलचीको भी साथ लेते वगदादमे अवूसईदके पास पहुचा। अमीर चोवानने उनका वडा सत्कार-सम्मान किया और चीनी राजदूतको हमदानके रास्ते विदा किया और उसके करावाग पहुचनेसे पहले ही जाकर आरामका सव तरहसे प्रवध किया। कआनके एलचीपर इसका वहुत प्रभाव पडा और उसने अपने मालिकसे जाकर अमीर चोवान हुसेनकी वडी तारीफ की। कआनने खुश होकर अमीर चोवानको चारो उलुसो (वातू, खुलाकू, चगताइ और चीन) का अमीर बनाते हुये उसके नाम चार यारलिक (शासन-पत्र) भेजे। अमीर चोवानका जिस समय इस तरह सम्मान और शक्तिवर्धन हुआ, उसी समय उसके अपने पुत्र हसन और तालिश वापसे नाराज हो ख्वारेज्म भाग गये, जहासे वह उज्वेक खानके पास पहुचे। उज्वेकने उनका वडा सम्मान किया और अच्छे-अच्छे दर्जे दिये। पीछे हसन चेरकासो द्वारा युद्धमें मारा गया और तालिश अपनी मौत मरा।

अक्तूवर १३३० ई० (७३१ हि०=१५ अक्तूवर १३३०—३ अक्तूवर १३३१ ई०) को अमीर हुसेन (चोवान) के पुत्र अमीर शेख अलीकी पुत्री अनुशिरवान खातूनका व्याह उज्वेकके पुत्र तथा उत्तराधिकारी दिनीवेकके साथ हुआ।

(२) **युरोपपर अभियान (१३२३-२४)**—ईरानमें फमनेसे पहले उज्बेक युरोपकी खबर लेना चाहता था। ईरानके साथ बरावर अनिर्णीत युद्ध होते रहनेसे बहुत लाभ नही था, जब कि युरोपके समृद्ध नगर लाभके खास साधन थे। १३२३ ई० मे उज्बेककी सेनाने लिथुवानियापर आक्रमण किया। कन्स्तन्तिनोपोलके विजतीन "सम्राटो" के लिये भी यह बहुत सकट का समय था। मगोलोंको प्रसन्न रखनेके लिये कन्स्तन्तिनोपोलके सम्राटो और उनके सरदारोने अपनी सुन्दर कन्याये भेंट की, तो भी वह जान नही बचा पाये। १३२४ ई० मे मगोल अद्रियानोपोलपर एक लाख वीस हजार सेनाके साथ चढ आये। उन्होने थ्रेम प्रदेश (युरोपीय तुर्की और बुल्गारिया) को चालीस दिनोतक लूटा, बहुत-सी सपत्ति और दासोकी तरह वेचने के लिये भारी सख्यामे वदी उनके हाथ आये। जब थ्रेसवालो ने चोरोकी तरह आकर हमला करनेकी निंदा की, तो मगोल-सेनापति तासवुगा (ताशवेग) ने जवाव दिया—"हम ऐसे शासक के अधीन है, जिसकी आज्ञा जब होती है, उसी वक्त हम आगे वढते, पीछे हटते अथवा उसी जगहपर जमे रहते है।"

(३) **मास्को राजुल**—रूसी राजुलोंके अब भी अलग-अलग राज्य थे। मगोलोने शासनके सुभीतेके लिये मास्कोके महाराजुलको सवका मुखिया बना दिया था, किंतु वह यह नही चाहते थे कि, सारा रूस एक राजनीतिक इकाई बन जाये। सुवर्ण-ओर्दूकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी। इस्लामने शक्तिशाली बनानेकी जगह आपसी झगडे पैदा करके मगोलोंको निर्बल करना शुरू कर दिया, जिससे रूसी फायदा उठा सकते थे और मास्कोके महाराजुल जार्जने फायदा उठाया भी। उसने अपने चचा त्वेर्के महाराजुल मिखाईलके खिलाफ खानका कान भरा और उसे २२ नवम्बर १३१९ ई० को अपने प्राणोंसे हाथ धोना पडा। उज्बेक बौद्धोका शत्रु था और इस्लामका कट्टर पक्षपाती, लेकिन ईसाई पादरियोके साथ उसका वर्ताव अच्छा था। मास्कोके ऊपर उसकी विशेष कृपा थी। मास्कोके राजुलने र्याजनके राजुलको अपने अधीन बनाया। चचेरे भाई दिमित्र (त्वेर) ने इसीमें अच्छा समझा, कि दो हजार रूबल* वार्षिक पर अपने महाराजुल पदसे इस्तीफा दे दे, लेकिन वह बापके हत्यारेको क्षमा नही कर सकता था, इसलिये २१ नवम्बर १३२५ ई० में उसने मास्को-राजुलके पेटमें तलवार घुसेडकर उसका बदला लिया। इवान खलीता (१३२५-४१ ई०) अब मास्कोका राजुल बना। वह उज्बेकका और भी कृपापात्र था। उसके बाप यूरीकी हत्याको उज्बेकने एक राजभक्तका बलिदान माना। लेकिन इवान केवल राजभक्त नही रहना चाहता था, वह घृणास्पद मगोलोंके जुयेको हटाकर सारे रूसको एकतावद्ध करना चाहता था। इसीके शासनकालसे मास्को सारे रूसकी राजधानी बनने लगा, और इसीके समय तातारो (मगोलो) को निकाल बाहर करनेके लिये रूसमे सगठन होने लगा। लेकिन साथ ही, इसी वक्त दक्षिणी और उत्तरी रूसमें भेदकी खाई ज्यादा हो चली। इवानने व्लादिमिरको केवल कुछ समयके लिये ही राजधानी माना, तब भी वह अक्सर मास्कोमे रहता था। थोडे ही समय बाद उसने राजधानीको बिल्कुल मास्कोमें बदल दिया। यही नही उसने रूसी ईसाई सम्प्रदाय (ग्रीक चर्च) के महासघराज (मेत्रोपोलितन) को भी अपना केंद्र व्लादिमिरसे हटाकर मास्को लानेके लिये तैयार किया, और ४ अगस्त १३२६ ई०को मेत्रोपोलितन मास्को चला आया। इवानने मास्कोमे पत्थरका पहला गिर्जा बनवाया। उसने खानके दरबारकी कई यात्रायें कीं। १३३३ ई० में उज्बेकने उसे बहुतसे सम्मान प्रदान किये। अगले साल १३३४ ई० में वह फिर खानके ओर्दूमें था। इवानका प्रतिद्वंद्वी राजुल अलेक्सान्द्र (त्वेर) जगह-जगह धक्के खाता उकता गया। उसने सोचा—"ओह, अगर मैं इसी तरह निर्वासित रहूंगा, तो मेरे बच्चे उत्तराधिकारविहीन रह जायेंगे।" अन्तमें उसने उज्बेकको यह कहकर आत्म-समर्पण किया—"महान् खान, मैं तुम्हारे क्रोधका पात्र हूं। मैं अपने भाग्यको तुम्हारे हाथोंमे देता हूं। भगवान् और तुम्हारा हृदय जो चाहता हो, वही मेरे साथ करो। तुम्हें मुझे क्षमा करने या दड देनेका अधिकार है। क्षमा करनेपर मैं तुम्हारी दया-के लिये भगवान्से प्रार्थना करूंगा और दड देना है, तो उसके लिये मैं अपने सिरको अर्पण करता हूं।" उज्बेकने उसे क्षमा कर दिया और त्वेर (आधुनिक कलिनिन) का राज्य देकर सम्मानित किया।

---

* उस समय रूबल तीन-चार इंच लवा एक अगुल चोडा चादीका टुकडा होता था।

लेकिन चालाक इवान इतनेसे हार माननेवाला नही था। उसने तरह-तरहकी चुगलिया खाई। अलेक्सान्द्रको फिर बुलाया गया और २८ अक्तूवर १३३९ ई० को पुत्र-सहित उसे मार डाला गया। उज्बेकद्वारा कत्ल किये गये रूसी राजुलोमे ये दोनो छठे और सातवे थे।

एक तरफ इवान खानकी चापलूसी करनेमे सभी दरवारियोका कान काटता था, दूसरी तरफ वह नही चाहता था, कि उसकी जाति मगोलोके सामने इस तरह सिज्दा करते नाक रगडती रहे। उसने यह अच्छी तरह समझ लिया था, कि जवतक अनेको राजुलोमें वटी रूसी जातिको एक नही किया जाता, तवतक मगोलोका जुआ हटाना सभव नही। अलेक्सान्द्रको खतम करवानेसे पहले १३३३ ई० मे मुज्दलके राजुलके निस्सतान मरनेपर उसके राज्यको उसने अपने राज्यमें मिला लिया। वह दृढ शासक था। उसने अपने राज्यमे व्यवस्था स्थापित की, और सबको आज्ञा पालन करनेके लिये मजवूर किया। रूसियोने देखा महाराजुल और दूसरे राजुलोके राज्यो में कितना अतर है। उसने पहलेसे मौजूद दुर्ग (क्रेमल, क्रेमलिन) को फिरसे वनवाया, मास्कोको लकडीके प्राकारमे घिरवाया। क्रेमलिनके अतिरिक्त उसने कई गिर्जे वनवाये, जिनमें सत मिखाइल राजदेवदूत भी एक है, जिसमे आगे रूसी राजुल दफन किये जाने लगे। शाति और सुव्यवस्थाके कारण मास्कोका व्यापार भी वढ चला। उत्तरके देशोके माल हान्स-सघके व्यापारी लाते और दक्षिणके मालको अजोफ समुद्रके रास्ते गेनोवाके व्यापारी। उसने मोलोगा नदीके मुहानेपर खोलोपगोरोदकमें पहला व्यापारी मेला लगवाया, लोगोंके ठहरनेके लिये सत्रह यात्रिगृह वनवाये। इस मेलेमे साढे तीन हजार चादीका रूवल इवानको मिला। देश और महाराजुल दोनोकी सपत्ति और समृद्धि वढ रही थी। इवानने अपने रुपयेसे नवगोरोद, व्लादिमिर, कोस्त्रोमा और रोस्तोफमे मिल्कियत खरीदी। खानके लिये अपनी प्रजासे कर उगाहना आसान काम नही था। कर उगाहनेवाले अधिकारी ही वीचमे वहुत-सा पैसा खा जाते थे। इवान तुरत कर वेवाक करनेके लिये तैयार था, फिर खानको और क्या चाहिये? १८ वी सदीमें भारतमे प्रचलित नीतिको दुहराते उसने कर उगाहनेका अधिकार इवानको दे दिया। रूसी जनताको भी यह पसद आया, क्योकि तातारोंके नामसे रूसियोमें आतक छा जाता था। खानके कर उगाहनेवाले जब हथियारवद मगोलोके साथ करके लिये घूमते, तो लोगोका प्राण निकलने लगता। इवान अव इस कामको वडी चतुरतासे करने लगा, जिसके कारण रुसियोके एकतावद्ध होनेमें वडी सहायता मिली। उसने क्रेमलिनसे घोषणा की, कि अवसे हमारे परिवार तथा प्रजाके भीतरके झगडोको हमारे वायर (अमीर) निपटाया करेंगे। अपने प्रतिद्वन्द्वियोंके ऊपर वह जरा भी दया दिखानेके लिये तैयार नही था। एक ओर रूसमें वह यह चाल चलते अपनेको मजवूत करनेके लिये साम और दाम दोनो तरीकोको अख्तियार कर रहा था, दूसरी ओर वह जानता था, कि उज्बेकको भी अपने हाथमें रखनेकी आवश्यकता है। वह वीच-वीचमें दौडकर खानके दरवारमें पहुचता और उसे वडी-वडी भेंटो और चापलूसियोसे मुग्ध किये रहता। महाराजुल और खानमें कभी वैमनस्य नही हुआ, तथा दोनो एक ही साल (१३४० ई०) मरे।

इसमें शक नही, उज्वेक अपने ओर्दूको मुसलमान वनानेमें ही वडा सहायक नही हुआ, वल्कि चाहे अनिच्छासे ही सही सारे रूसपर मास्कोके एकाधिकारको कायम करानेमें भी उसका वडा हाथ था। उज्वेककी इस कार्रवाईसे मास्कोके महाराजुलकी ही शक्ति नही वढी, वल्कि रूसी चर्चने भी उससे लाभ उठाया। रूसियोके ऊपर अव चर्चका एकच्छत्र प्रभाव था। चर्चकी सपत्ति विशाल हो गई, उज्वेकके दिये हुये गावोने चर्चकी भू-सपत्तिको और वढा दिया। जैसे मास्को-महाराजुलके हाथमें शक्तिका केंद्रीकरण हुआ, उसी तरह चर्चके महासघराजने पादरियोपर अपना एकाधिपत्य जमाया, जिसके लिये कि रोमन कैथलिक चर्चने पहले हीसे उदाहरण स्थापित कर दिया था।

महाराजुल और महासघराजके लिये उज्वेकने छूट कर दी थी। व्यापार और लोगोंके परिश्रमसे समृद्ध रूसकी सपत्ति उसे चाहिये थी, जो विना तरद्दुदके खानके पास पहुच रही थी। पर जहातक रूसी जनसाधारणका सवध है, उसकी अवस्था पशुओसे भी वदतर थी। मगोल सैनिको और अफसरोके सामने पहले हीसे जहा उन्हे दात निकालना और पूछ हिलाना पडता था, वहा अव वह महा-

गजुल्के बायरोंके भी शिकार थे। रूसी इतिहासकार करमाजिनके अनुसार—"क्रिमिया और कूबानके यहूदी सारी जातिके जीवन-रक्तको जोंकोंकी तरह पी रहे थे।

१३३४ ई० में ईरानपर फिर आक्रमण करनेके लिये उज्बेकने अभियान किया। अबू-सईद मुकाबिलाके लिये आनेवाला था, लेकिन इसी बीचमें वह मर गया। उसके उत्तराधिकारी अरपा खानने आगे बढ़कर सामना करना चाहा, लेकिन दोनों ही पक्ष अपने ऊपर पूरा भरोसा नहीं रखते थे, इसलिये उन्होंने बिना लड़े ही लौट जाना पसंद किया।

उज्बेकका शासन-काल किपचक (सुवर्ण-ओर्दू) के इतिहासमें समृद्धिकी चरम सीमाका है। उज्बेकने अपने राज्यमें शांति और व्यवस्थाको इतनी अच्छी तरहसे कायम किया था, कि पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण चारों तरफसे व्यापारियोंका ताना लगा रहता था। उसकी सेना भी बड़ी जबर्दस्त थी। लेकिन उससे भी अधिक वह अपनी कूटनीति और भेदनीतिसे काम लेता था। ईरानके हुलाकू-वंशसे झगड़ा चलते रहनेके कारण युरोपके देश उसकी चोटसे बहुत कुछ बचे रहे। छिङ-गिस् खानके समयसे ही मंगोल अंतर्राष्ट्रीय व्यापारको प्रोत्साहन देते आये थे। काला सागरके तटपर जहां कभी ग्रीक और रोमक व्यापारियोंके बड़े-बड़े दुर्गबद्ध केंद्र थे, अब वहां वेनिस, गेनोआ और दूसरे स्थानोंके युरोपीय व्यापारी उसी कामको कर रहे थे। अगस्त १३३५ ई० में उज्बेकके प्रतिनिधि कुतुलुक बेगने वेनिसके वाणिज्य-दूतके साथ संधि की और अस्पताली गिर्जेके पीछे बाजारके लिये वेनिसके व्यापारियोंको जगह दी। बिक्रीके ऊपर ३ सैकड़ा कर सरकारको मिलना निश्चित हुआ था।

तीस साल राज्य करनेके बाद १३४२ ई० में उज्बेक मरा। उज्बेकके सिक्कोंपर उसका नाम निम्न रूपमें लिखा मिलता है—"गयासुद्दीन उज्बक खान", "महम्मद उज्बक खान", "उज्बक खान आदिल"।

(४) इस्लामसे सहानुभूति—"शजरतुल् अतराक" के अनुसार उज्बेक खानने मुसलमान होनेसे पहले आठ साल राज्य किया और मुसलमान होनेके बाद तीस सालतक। लेकिन इस बातमें संदेह है, जैसा कि पहलेके वर्णनसे मालूम है। उज्बेक खानको आठ सालतक काफिर रखनेसे इस लेखकका मतलब यही मालूम होता है, कि कुतुबुद्-दुनिया (जगत्-ध्रुव) महात्मा जंगी अताके उत्तराधिकारी महात्मा सैयद अताकी महिमाको बढ़ाया जाय। वह यह भी लिखता है, * कि उज्बेक अपने सारे उलुसके साथ सैयद अताके हाथ मुसल्मान हुआ। तबसे किसीके पूछनेपर उसके उलुसके लोग अपने सरदार (बादशाह)के उसका नाम लेते हैं, इसीसे उलुसका नाम उज्बेक-उलुस पड़ गया।

१३१४ ई० में ही उज्बेकने वेमुल्कके राजा और कठपुतली खलीफा नासिरके पास मिस्रमें भेंटके साथ पत्र भेजा था, जिसमें उसने लिखा था—"मेरे राज्यमें अब सिर्फ मुसलमान हैं। गद्दीपर बैठते ही मैंने इतरों कबीलोंसे कह दिया, कि या तो इस्लाम स्वीकार करो या लड़ाई लो। जिन्होंने स्वीकार नहीं किया, उन्हें मैंने लड़कर अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया ...।" लेकिन उज्बेकके राज्यमें रूसी भी थे, जो मुसलमान नहीं हुये, इसलिये उज्बेकके अपने राज्यमें सिर्फ मुसलमानोंके होनेके दावेका यही अर्थ है, कि अब सुदूर उत्तरके थोड़े-से बाशिंदोंके सिवाय उसकी सारी एसियाई प्रजा इस्लामको स्वीकार कर चुकी थी।

उज्बेकने इस्लामिक शासकोंके साथ घनिष्ठता स्थापित करनेकी बड़ी कोशिश की। उसने अपनी एक लड़कीका ब्याह मिस्रके शासक मलिक नासिरसे किया था। मुस्लिम इतिहासकारोंका कहना—"वह बड़ा बहादुर और दयालु था", जो उज्बेकके अपने कार्योंसे गलत साबित होता है। उसका राज्य ६०० फर्सख (योजन) लंबा था, यह ख्वारेज्मसे पोलैन्डकी सीमाकी दूरीसे मालूम है।

(५) इब्न-बतूता—मशहूर पर्यटक इब्न-बतूता १३३३ ई० में क्रिमिया होते दश्ते-किपचक (सुवर्ण-ओर्दू भूमि) पहुंचा। वह उस देशके बारेमें लिखता है—"वृक्ष-वनस्पतिहीन मैदान है, जहां न पहाड़ है न

* "हर गाहे कि अज ईशां मीपुर्सन्द कि ई आयन्दा कीस्त। नाम सरदार व पादशाह खुदरा कि उज्बक बूद, मी-गुफ्तन्द, बदां सबब अजआंजमा मर्दुम् आमद मीनुम ब-उज्बक शुदन्द।"
—शजरतुल्-अतराक ज० ओ० पृष्ठ २६६।

जगल। लोग कडेको ईधनके तौरपर एस्तेमाल करते है। खानकी राजधानी (सराय) एक चलती-फिरती नगरी है, जिसमे सडके है, मस्जिदे है, भोजनगृह है, जिनका धूआ उनके चलते-फिरते समय ऊपर उठता रहता है। उज्बेक दुनियाके सात बडे राजाओमें है--कुस्तुन्तिनोपोलका तकफीर (सम्राट्), मिस्रका सुलतान, उभय-ईराकका राजा (इलखान), तुर्किस्तान-अतर्वेदका शासक, भारतका महाराजा और चीनका फगफूर (भगपुत्र, देवपुत्र)।" बतूताने खानके बारेमें लिखा है--"प्रत्येक शुक्रवारको नमाजके बाद खान एक सुनहले चँदवेके नीचे सोने-चादी और कीमती जवाहिरोसे जडे सिंहासनपर बैठता है। उसकी बगलमे उसकी एक-एक तरफ दो-दो चारो बीबिया बैठती है। सिंहासनके सामने उसके दो पुत्र खडे होते है-- एक दाहिने और एक बाये। खानके सामने उसकी लडकिया बैठ गई। जब कोई रानी आई तो खानने खडा हो उसका हाथ पकडकर बैठनेका स्थान बतलाया। वह कभी परदा नही करती। इसके बाद बडे अमीर आये, जो कि सिंहासनके दाहिने और बाये कुर्सियोपर बैठते है। उनके बाद खानके भतीजे तथा दूसरे राजवशी शाहजादे खडे हुये। उसके बाद बडे अमीरोके पुत्रोने अपने दर्जेके अनुसार स्थान ग्रहण किया। जब सब बैठ गये, तो दूसरे लोग भीतर आकर खानको सलाम करके अपने दर्जेके अनुसार अपनी जगहोपर जा बैठे। शामकी नमाजके बाद पटरानी लौट चली। उसके पीछे सुदर-सुदर दासिया और परिचारिकाये चल रही थी। वह गाडियोपर बैठी थी। आगे-आगे सवार और पीछे-पीछे सुदर ममलूक (राजदास) रथका अनुगमन कर रहे थे। सुलतान (खान) की बीबियोका बहुत भारी सम्मान किया जाता है। उनमेसे प्रत्येकका अलग महल होता था, जिनमे उनके अपने अनुचर और सेवक रहते है। ओर्दूमे आकर हरएक भेंट करनेवालेसे आशा की जाती है, कि वह खानकी हर एक रानीके सामने जाकर सम्मान प्रदर्शित करेगा।

बुल्गार नगरी (कजान) सुवर्ण-ओर्दूकी दूसरी राजधानी होनेके कारण अपने पुराने वैभवसे वचित नही हुई। उसकी प्रसिद्धि सुनकर इब्न-बतूता खानके शिविरसे दस दिनके रास्तेको तीन दिनमें पारकर वहा पहुचा। उसने लिखा है--"यहा रात इतनी छोटी होती थी, कि रात्रिकी नमाज आरम्भ करनेसे पहले बहुत थोडा समय मुझे शामकी नमाज पढनेके लिये मिला। मध्य-रात्रिके बाद जल्दी ही सुबहकी लाली छा गई। अधेरेकी भूमि यहासे चालीस दिनके रास्तेपर और उत्तरमें है, जहा कुत्तोवाली बेपहियेकी गाडियोपर यात्रा की जाती है। सारा रास्ता बर्फसे ढका रहता है, जिसपर आदमी या जानवरका पैर नही टिकता। कुत्तेका नाखून बर्फमे चुभकर उसे फिसलनेसे रोकता है। इस अधकार-भूमिमे व्यापारी छोड कोई दूसरा आदमी नही जाता। व्यापारी सैकडो बेपहियेकी गाडियोमे रसद, पानी, ईंधन आदि लेकर जाते है। वहा न वृक्ष है न पत्थर न घोडे। उनका पथ-प्रदर्शक एक अनुभवी कुत्ता होता है, जिसके लिये हजार दीनार देना पडता है। नेता-कुत्तेके खडा होते ही सारे कुत्ते खडे हो जाते है। नेता-कुत्तेका मालिक भी उसे कभी दड नही देता। खानेके समय कुत्तोको पहले खाना दिया जाता है। वहा व्यापार बदलेन द्वारा होता है। व्यापारी अपने मालको निश्चित स्थान-पर रखकर हट जाते है। दूसरे दिन जानेपर अपने मालकी जगह उन्हे सेबल, एरमिनके मृग-छाले और सिंजाबके समूर मिलते है। वह यदि सतुष्ट हुये, तो ले आते है, नही तो छोडकर हट आते है, फिर और माल बढ़ाकर रक्खा जाता है। न पसद आनेपर व्यापारीका माल छोड देते है। व्यापारियोको भी यह मालूम नही है, कि यह देनेवाले कौन है--आदमजाद या राक्षस।"

लम्बे दिनोका वर्णन तेमूरलगकी विजय-यात्रामे भी आता है। कजान ५६ उत्तरी अक्षाशके पास होनेसे वहा दिन और रातका बहुत अधिक बडा होना स्वाभाविक है। यह उस समयके सभ्य जगत्का सीमात नगर था, जिसके बाद साइबेरियाकी जन-जातियोका देश शुरू होता था, जिनके वशज कोमी और खान्ती आदि अब भी वही रहते है, लेकिन अब वह बतूता और दूसरोके देवदानव नही, बल्कि सभ्य और शिक्षित आदमजाद है।

उज्बेकने ग्रीक राजा अन्द्रोनिकसकी लडकी (बेइलुन खातून) से व्याह किया था। इस व्याहको रूसके महासघराज थेओगोनोसने कन्स्तन्तिनोपोल जाकर स्वय करवाया था। इसी रानीके साथ बतूता उसके बापके घर भी गया था। बतूता बातूसरायसे ख्वारेज्म और अफगानिस्तान होते भारतकी ओर

आया। उसने लिखा है, कि किपचक-तुर्कोंका सबसे बडा नगर ख्वारेज्म है, जिसपर उज्वेकका शासन है, जिसका अमीर खानके उपराजके तौरपर वहा रहता था। बतूताने ख्वारेज्मकी वडी प्रशसा की है—"ख्वारेज्मियो जैसे सस्कृत और उदार आदमी मैने कही नही पाये और न उनके-जैसे परदेशीके साथ स्नेह रखनेवाले। अगर कोई मस्जिदमे नमाजके समय अनुपस्थित होता, तो मस्जिदके सामने ही इमाम उसे पीटता। इस कामके लिये हरएक मस्जिदमें एक कोडा रहता है।" उज्वेकके इस्लामिक धर्मराज्यका यह अच्छा नमूना है—लोगोसे जबर्दस्ती अल्लाहकी वदगी करवाई जाती थी। यद्यपि पुराने मुसलमानोंके साथ इस तरहकी कडाई थी और-अपनी प्रजाको उज्वेकने जवर्दस्ती मुसलमान बनाया, लेकिन जहातक ईसाई प्रजाका सम्बन्ध था, वह उनके साथ धर्मान्धता नही दिखलाता था।

१०. दिनीवेग, तिनीवेग, उज्वेक-पुत्र (१३४२ ई०)

उज्वेकके बाद उसका पुत्र दिनीवेग गद्दीपर बैठा। उसके दो और भाई जानीवेग तथा खिजिर-वेग थे। जानीवेगने भाईके खिलाफ विद्रोह किया। लडाईमें दिनीवेगकी हार हुई। जानीवेगने उसे पकडकर मार डाला और खुद गद्दीपर बैठ गया। अपने दूसरे भाई खिजिरवेगसे भी खतरा देखकर उसे भी उसने मरवा दिया।

११ जानीवेग, उज्वेक-पुत्र (१३४२—५७ ई०)

जानीवेगने सोलह साल राज्य किया। वातू-वशका यह अन्तिम शक्तिशाली खान था। नियम और व्यवस्थाका वह अपने वापकी तरह ही बहुत पावन्द था। इसीके समय खुलाकू वशके पतनसे ईरान-में अशाति और अव्यवस्था मची हुई थी, जिसके कारण बहुत से धनी-मानी तबरेज सराह, अर्दवील, बेलगान, नखचवान आदि शहरोको छोड-छोडकर इधर आ बसे। अभी भी सुवर्ण-ओर्दू केवल एसिया हीतक सीमित नही था। १३४३ ई०में खानकी सेनाने पोलैंदपर आक्रमण किया—उसी साल पोलैंद टिड्डियोका शिकार हो चुका था। लूट-पाट करते हुये किपचकोने लुबलिन नगरको जा घेरा, लेकिन वह उसे सर नही कर सके।

१३४६ ई०में मास्कोका महाराजुल सिमओन (१३४२—५३ ई०) जानीवेगके दरबारमें पहुचा। उसने भारी भेंट खान और उसके परिवारके सामने पेश की। जानीवेगने भी प्रसन्न होकर महाराजुलको बहुत उपहार और खिलअत दी। लियुवानिया अब भी ईसाई नही हुआ था। अब भी वहा कुछ पुराने वेदोंकेसे देवताओंकी पूजा होती थी। वहाका राजा ओल्गर्द मास्को-महाराजुलका भारी प्रतिद्वद्वी था। ओल्गर्दपर जर्मनोंने आक्रमण शुरू कर दिया। उसने अपने भाई कोरिअदको खानके पास मदद मागनेके लिये भेजा। सिमओनने चुगली खाई, जिसपर खानने लियुवानी कुमारको उसके हाथमें दे दिया। उधर महाराजुलका दूसरा प्रतिद्वद्वी पोलैंदका राजा कसिमिर था, जिसने १३३९ ई०मे गलि-सियाको लेने पडोसके वोल्हुनिया प्रदेशको भी अपने हाथमें कर लिया था। रूसी महाराजुल इसे कैसे पसद करता? वह सनातनी ईसाई सम्प्रदाय (अर्थोदक्स चर्च) का अनुयायी था और कसिमिर कट्टर रोमन कथलिक। कसिमिर स्लाव ईसाई पादरियोको अपने धार्मिक रीति-रवाजोको छुड़ाकर जवर्दस्ती कैथलिक बनाता था। इसके कारण लोग उससे बिगडकर लियुवानियोंके पक्षपाती हो गये और उन्होने रूसी महा-महाराजको भी प्रेरित किया, कि महाराजुल सिमओनको कहकर लियुवानी कुमार कोरिअदको मुक्त करा दें। इसके लिये उन्होने मुक्ति-धन भी दिया। महाराजुलने अपने वशकी राजकुमारी उलियानाको लियुवानियाके काफिर राजा ओल्गर्दसे इस शर्तके साथ व्याह दिया, कि उसकी सतान ईसाई बनाई जाये। ओल्गर्दने इस प्रकार असि-सवार तरुके पोलोको वोल्हुनियासे मार भगाया। १५ फर्वरी १३४७ ई०में जानीवेगने वेनिसियोंके साथ सधि की और उन्हें तानासे बाजारके लिये एक जगह प्रदान की।

(१) प्लेग महामारी—१३४५ ई०मे एसिया और युरोपके देशोमे भयकर काले प्लेगकी महामारी फैली थी। इसका आरम्भ चीनमें हुआ था, जहा इससे एक करोड तीन लाख आदमी मर गये। कास्पियन समुद्रके दोनो तरफके प्रदेश इस प्लेगके मारे उजाड हो गये। तुर्किस्तान, ख्वारेज्म, सराय—सबमें हाहा-

कार मच गया। आरमेनिया, अबखाजिया, चिरकासके लोग, क्रिमियामे वसे यहूदी, गेनोवा और वेनिस-वाले भी तवाह हो गये। आगे वह ग्रीस, सिरिया (शाम) और मिस्रमे भी फैली। गेनोवावाले व्यापारियो-के जहाज उसे अपने साथ इताली, फ्रास, इगलैड और जर्मनीमे ले गये। लदनमे इसके प्रकोपसे एक कब्रिस्तानमे पचास हजार मुर्दे गाडे गये। पेरिसके आतकित लोग गुस्सेके मारे यहूदियोका सहार करने-के लिये तैयार हो गये। वह समझते थे, प्लेग लानेवाले यही यहूदी है। १३४९ ई० में वह स्कदनेवियामे पहुची, फिर प्स्कोफ और नवोग्रादके रूसी नगरोमे भी। प्स्कोफके एक-तिहाई आदमी मर गये, शहरका शहर वीमार हो गया था। पैसा खर्च करनेपर भी धनियोको नर्से नही मिलती थी। भयके मारे वीमार मा-वापको छोड वच्चे भाग जाते थे। लोग वहुत अधिक धार्मिकता दिखलाने लगे थे और धनी लोग धार्मिक कार्योमे वडी उदारतासे खर्च करते थे। उस सालके जाडोमे प्लेग तो वद हुई, लेकिन उसके वाद पेचिश (हैजा) तथा खूनके कैकी वीमारी शुरु हुई, जिसमे आदमी मुश्किलसे दो-तीन दिन जी पाता। घुमन्तुओपर प्लेगका प्रभाव और भी भयकर हुआ था।

१३५१ ई०मे भारी अकालसे पीडित व्रातिस्लावापर मगोलोने आक्रमण किया। वहाके राजुलने हुगरीके राजा लुईसे मदद मागी और उसकी सहायतासे वह मगोलोको भगानेमे सफल हुआ—पोल राजा कसिमिरने भी इस समय उसकी सहायता की थी। द्नियेपर नदी अभी भी कुछ समयके लिये मगोलोके हाथमे थी, लेकिन गेलेसिया पोलोके हाथमे चली गई थी। लघुरूस (आधुनिक उक्रइन) लिथुवानियाके हाथ मे तवसे १६वी सदी तक रहा। इस प्रकार लघु-रूसी छिन्न-भिन्न होकर शक्तिहीन हो रहे थे। पडोसी युरोपीय राजाओ तथा मगोलोके अत्याचारोसे पीडित पूर्वी स्लावोकी सहानुभूति अव और अधिक मास्कोकी ओर होती जा रही थी। इसके दो परिणाम हुये—(१) कितने ही लोगो ने द्नियेपर और दोनके तटपर जा घुमन्तू राज्यके रूपमे वहा अपने जापोरोशियान और दोन कसाकके दो गणराज्य स्थापित किये, और (२) दूसरे लोगोने हुगरीके रोमन कैथलिकोके अत्याचारसे भागकर पहिले मगोलोकी भूमिमे, फिर वहा भी पीडित होनेके वाद मोल्दाविया और वलाचियामें जाकर अपनी रियासते कायम की।

मास्कोके महाराजुल सिमओनने अव पहली वार "सर्वरूसमहाराजुल" की उपाधि धारण की। १३५३ ई० में उसके मरनेके वाद उसके भाई इवानको जानीवेगने उसका उत्तराधिकारी वनाया।

१३५५ ई०में ईरानके इलखान-वशका नाश हो चुका था। इससे फायदा उठाकर सेनापति चोवान तेमूरताशके पुत्र मलिक अशरफने आजुरवाईजानपर अधिकार कर लिया। मलिक अशरफके अत्या-चारोसे लोग परेशान हो देश छोडकर भागने लगे। ख्वाजा शेख कही (कुजी) शीराजकी ओर भागा और वहासे फिर शामको। दूसरे प्रसिद्ध सत ख्वाजा सदरुद्दीन अर्दवेली ने गेलानका रास्ता लिया। काजी मोहीउद्दीन वुरदइ सरायवरका भागा और वहा अपने उपदेशोके लिये मशहूर हुआ। उसके उपदेशोमे जानीवेग भी शामिल होता था। उस वक्तकी मलिक अशरफ गरदी (राक्षसी) का वडा साफ चित्र शेखशादीने खीचा था, जिसे "तारीख शेख-उवेस" (ज० ओ० पृष्ठ २३०) के लेखकने उद्धृत किया है—"ईरानसे चगताइ देशमे जा उसने उस देशको अपने अधीन किया। कुछ समय अपनी जगह रही। फिर कहते हैं, तीन रोजसे अधिक कही नही वैठी और तरक नदी पार हो दरवन्द आई। वहासे शिरवान पहुँची। उसने अपना एलची मलिक अशरफके पास भेजकर कहलवाया कि मै खुलाकूके उलुमको जव्त करनेके लिये आ रही हूँ, तू चोवानका पुत्र है, जिसका नाम चारो उलुसोमें तथा यारलिकमें था। अब तीन उलुस मेरे हुकूममें है। मै चाहती हू, कि जूजी (तूती) के उलुसका अमीर तुझे वनाऊ, इसलिये खडा हो जा और मेरा स्वागत कर।' मलिक अशरफने जवाव दिया—'हे उलुस-वरकाके वादशाह, मेरा सम्वन्ध अवका (हलाकू-पुत्र) के उलुससे नही है। यहाका वादशाह गजन है, जिसके अमीरका पद मेरे पास है।"

(२) **ईरानपर आक्रमण**—मोहीउद्दीनन एक दिन अपने उपदेशके वीचमे तवरेज और मलिक अशरफ-के अत्याचारोका ऐसे शब्दोमे चित्रण किया, कि श्रोता रोने लगे, जानीवेग स्वय रो पडा। मोहीउद्दीनने यह भी कहा, कि वादशाहको हस्तावलम्व देना चाहिये, जिसमें प्रजाके ऊपर होते इन अत्याचारोका

अन्त हो। अगर बादशाह ऐसा नहीं करता, तो कयामतके दिन अल्लाह उससे जवाब तलब करेगा। जानीबेगके मनमें बापके ममानेके लिये मोहीउद्दीनके उपदेशसे भी ज्यादा ईरानके समृद्ध राज्यका लोभ था।

जानीबेगने एक महीनेमें सौ तुमान (दस लाख) सेना तैयार कर ली और वह सन् ७५८ हिजरीमें (२५ दिसम्बर १३५६ ई०–१३ दिसम्बर १३५७ ई०) तबरेजकी ओर रवाना हुआ। कुरा नदी पार करनेकी खबर मलिक अशरफके पास पहुची, तो पहले उसने इसपर विश्वास नही किया, फिर अपने सैनिकोको जमा किया। लेकिन उसके अत्याचारोंके कारण लोग अब उसकी आगमें कूदनेके लिये तैयार नही थे। वह शम्बेगाजानी पहुचा। इससे पहले उसने अपनी खातूनो (रानियो), लडकियो, खजाने, सोना-चादी और जवाहर तथा दूसरी चीजोको आलिजकके किलेमे भेज दिया था, जिन्हे उसने चार सौ ऊटो और हजार खजानेके ऊटोपर लदवाकर मगवा लिया। शम्बेगाजानीमे बहुतसे लोग जमा हुये थे, जिनमे एक बडी सेना तैयार करके उसने कूजानकी ओर भेजा। फिर खबर मिली, कि बादशाह जानीबेग अर्दबील पहुच गया। लोग कह रहे थे—बादशाहके फौजकी रिकाब लकडीकी है, उसके घोडोकी लगामे रस्सियोकी है।

जानीबेगके बारेमें पहुचती इन खबरोको सुनकर मलिक अशरफ बहुत डर गया। उसने ख्वाजा लूलू माजलू और ख्वाजा जकर खाजिन (कोषाध्यक्ष) को बुलाकर कहा—"खातूनो (रानियो) और खजानोको लेकर ख्वाजा रशीदके चश्मेपर पहुचाओ और वहा मेरा इन्तजार करो। मैं उजान जा रहा हू। अगर मनोरथ सफल हुआ, तो तबरेज आना। अगर बात उल्टी हुई, तो खुईकी ओर जाना, मैं वहा आकर मिल जाऊगा।" उन्हे भेजकर वह खुद उजानकी ओर रवाना हुआ। पहले दिन मेहरानरूद नदीके तटपर सुमताबादमें डेरा डाल उसने दो दिन विश्राम किया। कितने ही अमीर, जो मावाकी ओर चले गये थे, यहा मलिक अशरफके पास आ गये। उसने उन्हे सोना, घोडा, हथियार आदि देकर रवाना किया। अखीजूक सेनप भी उनमेंसे था, जो अगले दिन कूच करके सईदाबाद (अवदाबाद) गया। उसने वहा लोगोंसे सैनिकोंके लिये अपने घरोको खाली कर देनेके लिये कहा। उसके नौकरोमें दो हजार मर्द थे। वह खाने-पीने-रहनेकी तैयारी कर रहे थे, तभी जबर्दस्त आधी-पानी आई।

उजानमें अशरफके भेजे हुये सैनिक एकत्रित हो गये थे, इसी समय जानीबेग सराहकी ओरसे आ पहुचा। विरोधी सेनाको देखकर उसने हुकुम दिया, कि छिड-गिस्के शिकार खेलकी तरह इन्हे चारो ओरसे घेर लो। अशरफके अमीरोने जब यह हालत देखी, तो वह अपनी जान लेकर भाग निकले। मलिक अशरफ अब भी सईदाबादके पुलपर खडा था। इसी समय शेख जलकी (बालखजी) ने उसके कानमें कुछ कहा। उसने समझ लिया, कि लडनेमे कोई फायदा नही और वह तबरेजकी ओर भाग चला। उस रात वह शम्बेगाजानीमे ठहरा, फिर सबेरे अपनी खातूनोंके साथ खजानेको लिये रवाना हुआ। लेकिन खजानेपर उसके रखवाले ही हाथ साफ करने लगे। खातूने भी इधर-उधर बिखर गई। मलिक अशरफ यह हालत देखकर खुईकी ओर चला। महम्मद बालखजीका घर इसी इलाकेमें था। उसने एक ओर मलिक अशरफका स्वागत करते हुये अपने घरमे उसे ले जाकर ठहराया और दूसरी ओर जानीबेगके पास इसकी खबर भेज दी। जानीबेगने अमीर बयामको इस कामके लिये भेजा, लेकिन घरको घेरकर ढूढनेपर अशरफ वहा नही मिला। इसपर अमीर बयाम और उसके साथी ख्वाजा महमूदने लोगोकी सभी चीजें जब्त कर ली। फिर अमीर बयाम मलिक अशरफको पकडनेके लिये तबरेज गया। सडकसे गुजरते वक्त लोगोंने उसके ऊपर गन्द फेंककर बडी बेइज्जती की, और उसे ख्वाजा शेख कुजीकी सा मोवैयदबेके घर ले गये। अमीर काऊस शिरवानी वहा मौजूद था। मौलाना मोहीउद्दीन बेरदईके हाथको चूमकर अशरफ रोने लगा। काऊसने उसे ढारस दिया। इसके बाद उसे बादशाह जानीबेगके पास ले गये। बादशाहने पूछा—"इस देशको तूने क्यो बरबाद किया?" उसने जवाब दिया—"नौकरोने बरबाद किया, उन्होंने मेरी बात नही मानी।"

बादशाह जानीबेग उजानसे हस्तरूद (अष्टनद) की ओर रवाना हो क्यक् (कूकी) के नजदीक पहुच वहासे लौट पडा। उस साल लोगोंने खेती बहुत की थी। जब यह बडी सेना उधरसे गुजरी, तो

खेतोमे एक वाल भी न रह गई। कविके कथनानुसार "जालिम गया और उसका जुल्मका कायदा रह गया। आदिल गया और उसके नेक नामकी याद रह गई।"

जानीवेगने चाहा, कि मलिक अशरफको मृत्यु-दड न दे अपने साथ अपने देश ले जाये, लेकिन काऊस और काजी मोहीउद्दीनने वतलाया—"अगर वह जिंदा रहेगा, तो इस मुल्कके लोग कभी चैनसे नही रह सकेगे।" जानीवेगको उनकी सलाह माननी पडी। मलिक अशरफको घोडेसे नीचे उतारते समय उसकी दोनो तरफ तलवारे खडी कर दी गई, जो उसकी वगलो मे घुस गई। उसके शिरको काटकर तवरेज ले जा मस्जिद-मरागियानके दरवाजे पर टाग दिया गया। तवरेज-निवासी खुशी मनाते दान-पुण्य करने लगे। जानीवेग दस हजार सवारोके साथ वहा दौलतखाना मे उतरा। एक रात रहकर सवेरेकी नमाज उसने मस्जिद ख्वाजा अलीशाहमे पढी। उसके साथ आये हुये सैनिक सडको और नदियोके किनारे ठहरे थे। इनमेंसे कोई किसी मुसलमानके घरमे नही घुसा।

अशरफकी लोलुपतापर एक पद्य मशहूर है—

"देखो कैसे अशरफ गदहा अपने भाग्यको उघाड रहा है।

अपने लिये मृत्यु और जानीवेगके लिये अपना सोना वटोरता॥"

इस प्रकार १३ सालमें अशरफने जुल्म और अत्याचार करके जो खजाना जमा किया था, उसे जानीवेग ले गया।

ईरानमें इस प्रकार व्यवस्था कायम कर जानीवेग अपने वडे वेटे वरदीवेगको पचास हजार सेना देकर वहाका शासक नियुक्त कर अली अशरफकी लडकी सुलतानवख्त और उसके पुत्र तेमूर-ताशको साथ ले किपचकभूमि लौटा। महमूद दीवानने वडा महोत्सव मनाते वरदीवेगको तव्रेज्रके तख्तपर वैठाया। अमीर जारुकके पुत्र सराय तेमूरको वजीर वना महमूद भी जानीवेगके पीछे-पीछे रवाना हो गया।

जानीवेग लौटकर वीमार पड गया। मरणासन्न देखकर उसके खैरखाहोने वरदीवेगके पास इसकी खवर भेजी। वरदीवेग जानता था, कि तव्रेजका तख्त किसी समय भी हमारे हाथसे छिन जायेगा, इसलिये तथा सवसे वडा पुत्र होनेके ख्यालसे भी वह तव्रेजसे जल्दी-जल्दी दरवन्दकी ओर रवाना हुआ और दस सेवकोंके साथ आधी रातको चुपचाप तुगलुवाईके घरपर पहुचा। सयोग ऐसा हुआ, कि जानीवेग वीमारी से अच्छा हो गया और उसे खवर मिली, कि वरदीवेग आ गया है। उसने तोगाय तुवलु खातूनसे इसके वारेमे पूछा। खातूनने वेटेकी मुहव्वतसे झूठ वोल दिया। जानीवेगने तुवलुवाईको एकान्तमें वुलाकर चाहा कि उससे भेद लें। तुवलुवाई झूठ वोल वाहर आ वरदीकी सलाहसे उसी समय लोगोको लेकर भीतर घुसा, और एक फर्राश द्वारा जानीवेग खानको २१ जुलाई १३५७ ई० को उसके विस्तरेपर मरवा डाला।

रूसी उसे "भला" जानीवेग कहते थे, जिससे मालूम होता है, कि रूसियोके साथ उसका वर्ताव अच्छा रहा। इसका यह भी अर्थ है, कि मास्कोके महाराजुलोको अपनी शक्ति वढाने और सारी रूसी जातिको एकतावद्ध करनेके मनसूवेमें जानीवेगकी ओरसे कोई वाधा नही हुई। जानीवेगके सिक्के १३४० से १३५७ ई० तकके मिलते हैं, जो सराय गुलिस्ता, नई सराय, नयागुलिस्ता, नया ओर्दू, ख्वारेज्म, मोक्सी, वरचिन और तव्रेजकी टकसालोमें ढाले गये थे।

जानीवेगके इस्लामप्रेमको मुस्लिम इतिहासकारोने स्वीकार किया है। उज्वेकके मरनेके चद ही महीने वाद गद्दी सभालते उसने अपने वापके कामको आगे वढाया और सारे उज्वेक-उलुसको मुसलमान वनाया, तमाम बौद्ध मदिरो (वुत-खानो) को धराशायी कराया, वहुत-सी मस्जिदो और मदरसो को वनवा मुसलमानोके फायदेके लिये सभी तरहकी वाते की। चारो तरफसे मौलवी और विद्वान् उसके यहा आते थे। दश्ते-किपचकके अमीरोके पुत्र इस समय वहुत विद्याव्यसनी हो गये थे। अनुनीम अस-कन्दरके अनुसार "उनकी महिमा आज भी मजलिसो और महफिलोमें गाई जाती है, और उस मुल्कका हरएक रस्म-रवाज इस्लामी देशोके वाशिन्दो जैसा है।"

१२ बरदीबेग जानी-पुत्र (१३५७–५९ ई०)

बरदीने अपने बापको ही मरवाकर सतोष नही किया, बल्कि जिस विस्तरेपर वह मारा गया था, उसीपर उसने बापके घातक फरगिको बैठा आज्ञा माननेसे इन्कारियोको मरवाने का इरादा किया। तुगलुबाईने उसकी बातको पसन्द किया और आज्ञा स्वीकार करानेके बहाने वह सारे ही बारह शाहजादोको वहा जमा करवा मरवाने लगा। बरदीका आठ महीनेका एक सहोदर भाई था। तायदोलू खातूनने उसे गोदमे लिये आकर बहुत मिन्नत की, कि इस मासूम बच्चेको क्षमा कर दे। बेरदीबेगने उसे हाथमे छीन जमीनपर पटककर वही मार दिया। उसने तीन साल तक दृढतापूर्वक शासन किया।

जहातक रूसी राजुलोका सम्बन्ध है, महाराजुल इवान (मास्को), राजुल वासिली (त्वेर), उसके भतीजे वृसेवोलोद (खोल्म) के पदोके लिये बरदीबेगने अपनी स्वीकृति दी।

१३५६ ई० में मास्कोका महाराजुल इवान मर गया, इसी साल किलदीबेग (कुलफा) ने बरदीबेगको कत्ल कर दिया।

१३ किलदीबेग, कुलफा (१३५९ ई०.)

किलदीबेगने बरदीबेगके कत्लके साथ उसके शुरू किये वशोच्छेदके कामको पूरा कर दिया। अब कोक (सुवर्ण)-ओर्दू राजवशका एक भी नामलेवा नही रह गया। सारे ओर्दू मे गडबडी मच गई। अमीरोने अधिकारको अपने हाथमे रखनेके लिये बेरदीबेगके हत्यारेको जानीबेगका पुत्र कहकर गद्दीपर बैठाया। हर अमीर अपनी शक्तिको बढानेके लिये पीठ पीछे षड्यत्र रच रहा था। इसी षड्यत्रमे अमीर यगलिबुगा, अमीर अहमद और अमीर नाङ-गू-दाई निर्वासित हुये। इसी समय सरकारके एक बडे अधिकारी नग्लसबाई (?) ने किलदीबेगको मार एक दूसरे आदमीको गद्दीपर बैठाया, जो कि तीन रोज बाद मारा गया।

१४ नौरोजबेग, १५ चेरकेसबेग (१३७४ ई०)

ये दोनो भी इसी तरह कुछ दिनोके लिये सिहासनपर बैठे। फिर कोक (सुवर्ण) ओर्दूके अमीरोने श्वेतओर्दूके खान चिमताईके पास जा गद्दी सभालनेके लिये बहुत निमत्रण और आवेदन किया, लेकिन उसने उसे न स्वीकार कर अपने भाई ओर्दाशेखको भेजा।

१६. ओर्दाशेख

श्वेत-ओर्दूका यह राजकुमार बातूके सिहासनपर बहुत दिनोतक नही टिक सका। किसीने "कैसे कोक-ओर्दूके सिहासनपर अक-ओर्दूका आदमी बैठेगा" कह एक रात तलवारसे ओर्दाशेखका काम तमाम कर दिया। इसपर अमीरोने कुछ बेगुनाह आदमियोके ऊपर अपराध लगाकर मरवाया।

१७. खिजिर ससीबूगा-पुत्र

अब ओर्दाशेखके भाई खिजिर ओगलानको गद्दीपर बैठाया गया, जो भी नौ महीना राज्य करनेके बाद खतम हुआ।

आगे तनिहासकार अनुनाम अस्कन्दरने निम्न खानोका होना बतलाया है—

१८ कुलफा, ससीबूगा-पुत्र

खिजिरके एक साल भी बादशाही न करके मर जानेके बाद उसके भाई कुलफाको गद्दीपर बैठाकर नौ महीने बाद इसे भी कत्ल कर दिया गया।

१९ तेमूरखोजा, ओर्दाशेख-पुत्र

फिर तेमूरखोजा अमीरोका खिलौना बना। वह बडा ही व्यभिचारी निकला। लोग दो साल तक उसे बर्दाश्त करते रहे। एक रात किसी स्त्री के साथ बलात्कार करनेके लिये घरमे घुसा देख, पतिने अनजाने ही उसे तलवारके घाट उतार दिया।

२०. मुरीद ओर्दाशेख-पुत्र

इसने तीन सालतक राज्य किया, लेकिन अब इन खानोमे बदचलनी विशेषकर अप्राकृतिक व्यभिचारका मर्ज बहुत फैल गया था। अपने अमीरुल्-उमरा (अमीरोके अमीर) मोगलबक-पुत्र इलियासके सुदर लडकेपर मुग्ध हो मुरीदने चाहा, कि बापको मारकर उसका स्थान बेटेको दे दे। यह भेद मुरीद-खानकी खातूनको मालूम हो गया। उसने इर्ष्या या बेवकूफीसे यह खबर इलियासके पास भेज दी। उसने अवसर न दे खानको ही मार डाला।

२१. अजीज तेमूरखोजा-पुत्र

इसकी आदत भी अपने पूर्वगामियो जैसी थी और इसने प्रसिद्ध सत सैयद अताके वशवाले एक लडकेको भ्रष्ट किया। भेद खुलनेपर पश्चात्ताप करके उस लडकेसे इसने अपनी लडकी ब्याह दी, लेकिन तीन साल बाद फिर वही चाल चलने लगा, जिसके कारण उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा।

२२ हाजी खा एर्जन-पुत्र

श्वेत-ओर्दूके खान एर्जन (१३१९-४४ ई०) के पुत्रको अब बलिका बकरा बनानेके लिये लाया गया। वह कुछ दिनो तक अच्छा रहा, फिर खानदानी बदचलनी का भूत इसके सिरपर भी सवार हुआ। एक बार तोबा की, लेकिन फिर वही रफ्तारे-बेढगी। अन्तमे वह आधी रातको अपने सोनेके वस्त्रोमें ही मार डाला गया।

अनुनीम अस्कन्दरके अनुसार हिजरी सन् ७५१* से ७६५ के बारह सालोमे आठ बादशाह हुये। इसके बाद श्वेत-ओर्दूके खान उरुसखानने श्वेत-ओर्दू और कोक-ओर्दूको इकट्ठा करके शासन करना शुरू किया, जिसका परिणाम तोकतामिशके रूपमे एक बार जू-छिके वशका चरम उत्कर्ष तथा तेमूर-लगके प्रहारके कारण उसका सत्यानाश हुआ।

सुवर्ण (कोक)-ओर्दूके रूपमे मगोल-शक्ति आधे युरोपतक छा गई। रूसके तो सभी शासक उसके अधीन दाससे थे। यद्यपि मगोलोने अपने इन अधीन लोगोपर बहुत अत्याचार किये, लेकिन तब्रेज और दूसरी जगहोके निर्मम हत्याकाडोके सामने वह कुछ नही थे। मगोलोके शासनके साथ ही वाणिज्य और शिल्पकी बडी वृद्धि हुई थी, जिसके कारण जहा मगोल शासकोको बहुत लाभ हुआ, वहा मास्कोको आगे बढनेका मौका मिला और धीरे-धीरे पुरानी बुल्गार नगरीका स्थान मास्कोने ले लिया। व्यापार द्वारा प्राप्त प्रचुर धन-राशिके बलपर मास्कोके महाराजुलोने सुवर्ण-ओर्दूके खानोको अपने वशमे कर अपनी शक्ति बढाई, रूसका एकीकरण करना शुरू किया और अन्तमे रूसकी शक्तिके उत्कर्ष तथा जू-छि-वशके आतरिक कलहके कारण सुवर्ण-ओर्दूका अस्तित्व खतम हो गया। इसी कालमें मास्कोके महाराजुलोने खानकी ओरसे कर उगाहनेका अधिकार पा अपनी ओरसे इस कामपर अपने अधीनस्थ बायरोको लगाया—रूसी प्रजा अब बायर, महाराजुल और खान तीनोके उत्पीडन तथा शोषणके नीचे दबकर कराहने लगी। उसका स्वतत्रता-प्रेम और जनतात्रिकताकी भावना लुप्त हो चली, और अत्याचारके मारे कितने ही रूसी भाग-भागकर दूसरी जगहोमे जाकर बसने लगे।

---

* ७५१ हि० (११मार्च १३५०–२७फर्वरी १३५१ ई०), ७६५ हि० (१०अक्तूबर–२७ सितंबर १३६३ ई०)

सुवर्ण-ओर्दू-खान-वंशवृक्ष
(१२२४–१३७४ ई०)

अध्याय ३
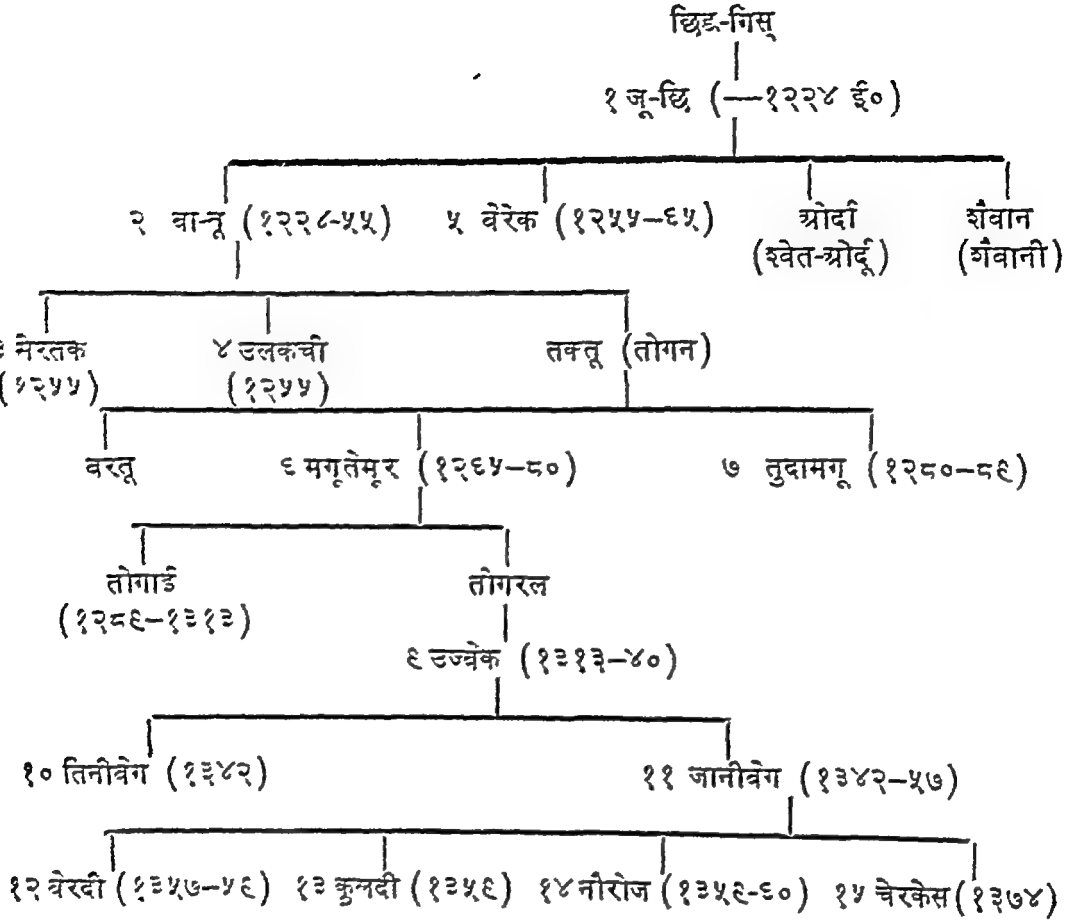
श्वेत-ओर्दू

(१२२४-१४२५ ई०)

१ जू-छि (तू-शी) खान

छिङ-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छिके बारेमें हम पहले बतला चुके है। उसके मरनेके बाद उसका सिंहासन ज्येष्ठ पुत्र ओरदाको न मिलकर वा-तूको मिला। ओरदाको बापके राज्यका पूर्वी भाग मिला, लेकिन उसने अपने वंशको वा-तूके सिंहासनके अधीन माना। ओरदाका उलुस श्वेत-ओर्दू (अक-ओर्दू) नामसे प्रसिद्ध हुआ, जिसके खान निम्न प्रकार थे :—

		काल
१	जू-छि, छिङ-गिस्-पुत्र	–१२२४ ई०
२	ओरदा जू-छि-पुत्र	१२२४ ,,
३	कोनिचि ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र	–१३०१ ,,
४	वायन कोनिचि-पुत्र	१३०१ ,,
५	ससीवूगा वायन-पुत्र	१३११ ,,
६	एर्जन ससीवूगा-पुत्र	१३११–४४ ,,
७	मुवारक खोजा एर्जन-पुत्र	१३४४ ,,
८.	चिमतई एर्जन-पुत्र	१३४४–१३६१ ,,
९	उरुस चिमतई-पुत्र	१३६१–७० ,,
१०.	तोकताकिया उरुस-पुत्र	१३७० ,,
११	तेमूरवेग उरुस-पुत्र	१३७०–७५ ,,
१२.	तोकतामिश तुलि-पुत्र	१३७५–९७ ,,
१३	नूजी ओगलान	१३९५
१४	तेमूरकुतुलुक, तेमूरवेग-पुत्र	१३९५–१४०० ,,
१५	शादीवेग, तेमूरवेग-पुत्र	१४००–८ ,,
१६	पूलाद तेमूरवेग-पुत्र	१४०८–१० ,,
१७	तेमूर कुतुलुक-पुत्र	–१४११ ,,
१८	जलालुद्दीन तोकतामिश-पुत्र	१४११–१२ ,,
१९	करीमवरदी तोकतामिश-पुत्र	१४१२–
२०	कपक, किवेक	.
२१.	चिङ-गिज	१४१७ ,,
२२	जव्वारवरदी तोकतामिश-पुत्र	,,
२३	मुहम्मद	१४२२–३८ ,,
२४	वोराक, वुराक, वुर्राक	१४२५–२८ ,,
२५.	सैयत अहमद	...
२६	दरवीस	...
२७	क्विवेक	–१४२२
२८	उलुग मोहम्मद	१४३७

२ ओरदा, एसन, एछन जू-छि-पुत्र (१२२४–)

ओरदाके राज्यके भीतर सिगनाक, तरम, उतरार जैसे प्रसिद्ध वाणिज्य-नगर थे। इसके ओर्दूके दक्षिण और दक्षिण-पूर्वमें चगताई, पूर्वमे ओगोताई तथा पश्चिममें वा-तूका ओर्दू था, जिसका कि यह अंग माना जाता था। उत्तरमें वह साइबेरियाके भीतरतक घुसा हुआ था। ओरदाका ओर्दू (पशुपाल सैनिक परिवार-समूह) गर्मिया बलकाश समुद्रके पासकी चरागाहोमे विताता और जाडोमें सिर नदीपर चला आता था। ओरदाका पुत्र कूली खुलाकूके ईरान-विजयमें शामिल होनेके लिये ख्वारेज्मसे दहिस्तान और माजदरान गया था।

३ कोनिचि, कोची ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र (–१३०१ ई०)

मगोल इतिहासकर रशीदुद्दीन*(१२४७–१३१७ ई०) के अनुसार यह ओरदा (श्वेत) उलुसका बहुत समयतक शासक रहा। अरगून खान (१२८४–९२ ई०) और गजनखान (१२९५–१३०४ ई०) के साथ इसका बहुत अच्छा सम्बन्ध था और उनसे सौगातो और दूतोका आदाना-प्रदान होता था। कोनिचि असाधारण मोटा था, कोई घोडा उसे ढो नही सकता था, इसलिये वह गाडी पर एक जगहसे दूसरी जगह जाता था। इसके पुत्रोमें मुख्य चार थे–बायन, बचकरतड, चगुनवुका, मकुदई। मारको पोलोने इसके बारेमे लिखा है —

"सुदूर उत्तरमें एक खान है, जिसका नाम कोनिचि है। वह तातार (मगोल) है और उसके सारे लोग तातार है, जो नियमपूर्वक तातार धर्मको मानते है। यह बडा ही पाशविक धर्म है, लेकिन वह उसका उसी तरह पालन करते है, जैसे कि छिड-गिस् और दूसरे मुख्य तातार। खान किसीके अधीन नही है, यद्यपि वह छिड-गिस् खानके शाही वंशका तथा महान् कआन (कुबिले खान) का नजदीकी सबधी है। इस खानके पास न नगर है न महल। वह और उसके लोग सदा या तो खुले मैदानोमें रहते है या बडे पहाडों और उपत्यकाओमे। वह अपने जानवरोंके दूध और मासपर गुजारा करते है। उनके पास अनाज नही होता। खानके पास बहुसख्यक लोग है, लेकिन वह किसीके साथ युद्ध नही करता। उसकी प्रजा बडी शातिसे रहती है। उनके पास भारी सख्या में पशु—ऊट, घोडे, बैल, गाय, भेडें आदि है।

"उनके देशमे तुम्हे बीस मुट्ठीसे अधिक लम्बे तथा बिल्कुल सफेद विशालकाय भालू मिलेगे। वहा बडी-बडी काली लोमडिया, जगली गदहे और भारी सख्यामें सेवल होते है। यही सेवल वह जन्तु है, जिनके चमडेकी बहुमूल्य पोशाक बनती है, एक-एकका दाम हजार बेजन (सिक्के) होते है। वहापर बेयर (चमडी जन्तु) भी बहुतायतसे होते है और फरऊनी चूहे भी। इन्हींके शिकारपर लोग सारी गर्मिया जीते है। वस्तुत वहा सब तरहके जगली जानवर बहुतायतसे होते है, क्योंकि उनका देश बहुत दुर्गम और वन्य है।

"इस खानका देश ऐसा है, जहा घोडे नही जा सकते, क्योंकि वहापर बहुतायतसे झीलें और चश्मे है, साथ ही बहुत बर्फ, कीचड और दलदल भी है, जिसपर घोडे नही चल सकते। यह कठिन मुल्क तेरह दिनोंके रास्तेतक फैला हुआ है। हर दिनकी यात्राके बाद एक टिकान है, जहापर कि सब तरहका इन्तिजाम है। प्रत्येक टिकानपर घर बने हुये है, जिनमें चालीस कुत्ते तैयार रहते है। यह कुत्ते आकारमे गदहोंसे कम नही होते। यही कुत्ते एक टिकानसे दूसरी टिकानतक सवारी-गाडियोंको खीचते है। इनकी गाडिया बिना पहियेकी होती है। गाडीके ऊपर भालूका चमडा रखकर सवार बैठ जाता है। हरेक गाडीको ६ कुत्ते खीचते है। कुत्तोका कोई कोचवान नही होता।. अगली टिकानपर नये कुत्ते और गाडी तैयार मिलती है।..

---

* "जाम-उत्-तवारीख" ज० ओ० पृष्ठ ८२

"तेरह दिनकी यात्राके अन्तपर आसपासके पहाडो और उपत्यकाओ के रहनेवाले लोग बडे शिकारी होते है। वह उन बहुमूल्य छोटे-छोटे जन्तुओको पकडते है, जिनसे कि उनको भारी लाभ होता है। यह जन्तु है—सेबल, एरमिन, वेयर, एरकुलिन, काली लोमडी तथा और बहुत-से प्राणी। इन्हीके चमडोका बहुमूल्य समूर बनाया जाता है। शिकारी जाल इस्तेमाल करते है . .। उस प्रदेशमे सर्दी इतनी अधिक है, कि लोगोके सारे निवास धरतीके भीतर होते है, वह सदा भूधरे हीमे रहते है।"[1]

मार्को पोलोने यहा जिस देशका वर्णन किया है, वह साइबेरिया है, इसमे सन्देह नही। उसे यह खबर कुबिलेके दरबारमे गये कोनिचिके दूतमडलसे मिली होगी।

इतिहासकार अबुल्-फेदाके अनुसार कोनिचि बामियान और गजनी तथा कुछ काबुलके पासवाले प्रदेशोका भी शासक था। खुलाकूके ईरान-विजयके समय उसकी मददके लिये आये अक-ओर्दूवालोने यह स्थान अपने हाथमे कर लिये थे, इस प्रकार अक-ओर्दूका यह दक्षिणी भाग उत्तरी भागसे बिलकुल अलग-थलग था, बीचमे चगताई-वशकी भूमि थी। ओरदा-पुत्र कुलीने खुलाकूकी मदद करते समय अफगानिस्तानके उत्तर-पश्चिमवाले इस प्रदेशपर अपना शासन स्थापित करके भी उसे श्वेत-ओर्दूके अधीन ही रखा। खुलाकूको पीछे कुलीसे इतना भय लगा, कि उसने उसे जहर दिलवा दिया।

१२९३ ई० मे कोनिचि (कुबी) का दूतमडल इलखान (ईरानी शासक) जयखातूके दरबारमे आया था। कोनिचि हिजरी सन् ७०१ (१३०१-१३०२ ई०) में मरा।

४ बायन कोनिचि-पुत्र (१३०१-९०)

बायनको पिताका राज्य कुछ सघर्षके बाद मिला। शायद इसे उत्तरवाला भाग ही मिला, बामियान-गजनाको उसके भाई कुबलुक (क्यूलुक) ने ले लिया। बायनके हाथमे यह दक्षिणी भाग न जाने पाये, इसके लिये चगताई खान दावा और ओगोताइखान कैदूने भी कुबलुककी मदद की थी। बायनका दूसरा भाई मङ-ताई था। इसकी बीबी नुकुलुन खातून प्रभावशाली ककुरत कबीलेकी थी। पिताके मरनेपर मगोल प्रथाके अनुसार तीन सौतेली मायें तरकुजिन, जिकथुन् और अलताचू भी इसकी बीबिया बनी। इन चारोके अतिरिक्त उसकी तीन और बीबियोका भी पता लगता है। श्वेत-ओर्दूका दूसरा खानजादा-कुतुकू-पौत्र, तेमूरबूका-पुत्र कुबुलुक (कोबलेक, क्यूलुक)से बायनका जबर्दस्त सघर्ष रहा। १३०९ ई० में कुबुलुकने दक्षिणी राज्य (बामियान-गजना) छीना था। थोडे दिनो बाद बायनने फिर उसपर अधिकार कर लिया। कैदू और दावा कुबलुककी पीठपर थे और बायनका राज्यकेंद्र चगताई राज्यके पार दूर पडता था, तो भी ख्वारेज्मसे इलखानके इलाकामें होते श्वेत-ओर्दूकी सेनायें गजनी पहुच सकती थी। सुवर्ण-ओर्दूके साथ बायनका बहुत अच्छा सबध था, लेकिन तोगताइ खान नोगाइकी लडाइयोमे फसे होनेसे कोई बडी मदद करनेमे असमर्थ था। बायनने इलखान गजनको मदद देनेके लिये लिखा, और उसने मदद भी दी। समकालीन इतिहासकार रशीदुद्दीन लिखता है—"हमारे काल में अठारह बार बायनने कुबुलुकसे लडाई की।" कुबुलुकके साथ हो कैदू और दावाकी भी सेनायें लडती रही। कैदूके मरनेके बाद जब उसका पुत्र चापर ओगोदाइ-उलुसका खान बना, तो तोगताईने उसे कई बार लिखा, कि दावा खानको कुबुलुककी मदद करनेसे रोको, लेकिन बापकी तरह वह भी कुबुलुककी पीठपर था। उसने जवाब दिया—"गजनसे लडते समय कुबुलुकने हमारी सहायता की, इसलिये हम उसकी मदद करते है।" हिजरी सन् ७०२[2] में बायनने अपने बापके समयके अमीर केलस तथा तुकतेमूरके नेतृत्वमे एक बडी भेंट भेज, गजनको कहलवाया कि हम चापर और दावाके विरुद्ध लडने जा रहे है, तोगताई खान हमारा सहायक है। उसने दो तुमान (बीस हजार) सेना हमारे पास भेजी। सेना आगे बढी, लेकिन कैदू और चगताईके उलुसोने बीच मे पडकर कआनकी सेनासे उसे

---

१ यूल-सम्पादित मार्को पोलो २ ४१०-१२। २ २६ अगस्त १३०२—१४ जुलाई १३०३ ई०।

मिलने नहीं दिया। कुवुलुकने उनकी सहायतासे हमारा कुछ इलाका छीन लिया। ओरदा-उलुसका अधिक भाग हमारे साथ है, आदमियोंकी हमें कमी नहीं है। हा, पैसेकी जरूरत है। इसपर गजनने वायन और उसके खातूनोंके लिये बहुत-से बहुमूल्य उपहार तथा काफी सोना भेजा।

१३०९ ई० मे कुवुलुक शक्तिशाली था। उसने उसी समय गजना और वामियानको छीन लिया था। उसके वाद उसका पुत्र कसतिमूर वहा का शासक वना। श्वेत-ओर्दूके लोग वायनके भाई मुङ-ताईकी ओर थे।

५ ससीवूगा वायन-पुत्र (१३१९ ई०)

वायनके वाद उसका पुत्र ससीवूगा सिरपारवाले राज्यका स्वामी वना और गजना-वामियान अव कोनिचि-पुत्र मुङ-ताईके हाथमे चला गया। ससीवूगाकी मा कुतुलुन (नुकुलुन) खातून थी। काजी अहमद गफ्फारी (मृत्यु १५७७-७८ ई०) ने अपने ग्रथ "नस्खजहानारा" मे ससीको नौकाका पुत्र बतलाया है और कहा है, कि वह अपने भाईके वाद गद्दीपर वैठा, लेकिन रशीदुद्दीन जैसे समसामयिक तथा मगोल-वशके एक प्रामाणिक इतिहासकारके सामने गफ्फारीकी वातका मूल्य नहीं है।

६. एर्जन, एविजन, ससीवूगा-पुत्र (१३१९-४४)

एर्जनका पचीस सालका शासन श्वेत-ओर्दूकी शक्ति और समृद्धिकी चरमसीमाका था। अपनी योग्यताके कारण वह उज्वेक खानका बहुत ही कृपापात्र था। राज-काजमे चतुर होते हुये, वह बडा विद्याप्रेमी था। उसने उतरार, सावरान, जद, वारजकद नगरोंमें बहुतसे मदरसे, खानकाहे (मठ) और मस्जिदें वनवाई। मार्को पोलो द्वारा वर्णित, कोनिचिकी वर्वर प्रजाके समयसे अव अक-ओर्दू कहासे कहा चला गया था? छिड्-गिस्के तारतारो के पुराने धर्म छोडकर अव वह कट्टर मुसलमान हो चुके थे। इतिहासकार अनुनीम अस्कन्दरके[1] अनुसार "एर्जनने सारे तुर्किस्तान (अक-ओर्दू) को स्वर्गोपम (खुल्दवरी) वना दिया"। श्वेत-ओर्दूको ऐसी समृद्धि फिर स्वप्नमें भी नही मिली। उज्वेकके खानने एर्जनको गद्दीपर वैठाया था। पीछे इसके लडके खिजिर ओगलान और खुलफा उज्वेकके सिहासनपर वैठे, यह हम पहले वतला चुके है।

पचीस साल राज्य करनेके वाद ७४५ हि०[2] में एर्जन मरा और सिगनाक नगरमे इसकी कब्र बनाई गई।

७. मुवारक खोजा एर्जन-पुत्र (१३४४ई०-)

यह भले वापका नालायक लडका निकला। अपने लोभ और वदमागीके कारण ६ महीने मुश्किलसे राज्य कर पाया। इसके वाद दो सालतक अलताईके पहाडो और किरगिजो की भूमिमें मारा-मारा फिरता रहा। मरनेके वाद इसे भी सिगनाकमें दफनाया गया।

८ चिमताई एर्जन-पुत्र (१३४४-६२ ई०)

जानीवेगने इस भलेमानुस खान को गद्दीपर विठाया। सुवर्ण-ओर्दूके सिहासनके खाली होनेपर वहाके अमीरोंने बहुत चाहा, कि चिमताई वातूके सिहासनपर वैठे, लेकिन उसने कवूल नहीं किया। इसीके समय वर्दीवेग, जानीवेग और किलदीवेगके दुराचार और अन्यायपूर्ण शासन हुये थे। सुवर्ण-ओर्दूके अमीरो (शासको) के चरम पतनको देखते हुये उसने अपने सिहासनपर ही सतुष्ट रहना पसन्द किया। बहुत जोर देनेपर उसने अपने भाई ओरदा शेखको वहा भेज दिया।

९. उरुस खान चिमताई-पुत्र (१३६१-७० ई०)

यह बडा ही मनस्वी खान था। सुवर्ण-ओर्दूकी नैयाके डगमगानेके समय इसने अपने वापपर बहुत जोर दिया, कि कोक-ओर्दूको भी अक-ओर्दूमें मिला लिया जाय, लेकिन चिमताईने नही माना। अव

---

[1] ज० ग्रो० पृष्ठ २७०। [2] १५ मई १३४४-३ मई १३४५ ई०।

गद्दीपर बैठनेके बाद इसने सकल्प किया, कि सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दूको मिलाकर छिङ्-गिस्के पुत्र जुछि और पौत्र बा-तूके समयके वैभवको पुन. स्थापित किया जाय। इसने गद्दीके महोत्सवके समय ही जल्से मे अपने इन विचारोको प्रकट किया। अमीरोने उसे पसद किया। उन्हे बडे-बडे इनाम दिये गये। लेकिन उसके अपने वशके तुका-तेमूर परिवारवाले तुईख्वाजा (तुलीख्वाजा)ने इसका विरोध किया, जिसके लिये उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा—तुइख्वाजा मनकिशलकका शासक था। पिताकी इस हत्याका वदला लेनेकी भावनाने उसके पुत्र तोकतामिशको उत्तेजित किया। लेकिन, अभी वह कम उमरका था, इसलिये क्या कर सकता था? तोकतामिश एक वार ओर्दूसे भाग गया, लेकिन लौटके आनेपर उसकी उमरका ख्याल करके क्षमा कर दिया गया। जब उरुस खान कोक-ओर्दूका भी स्वामी बन गया, तो तोकतामिश फिर भागकर विश्वविजेता तेमूरलग (१३०७—१४०४ ई०)के पास गया। उस समय तेमूरलग चगताई ओर्दूके दक्षिणी राज्यको अपने हाथमे करके उत्तरी राज्य (मुगोलिस्तानपर) पाचवा आक्रमण करना चाहता था। तेमूरने अपने सेनापति तेमूर उज्वेकको खानजादा तोकतामिशका स्वागत करनेके लिये भेजा। समरकन्द पहुचनेपर तेमूर उज्वेकने खानजादेको तेमूरके सामने पेश किया। तेमूरने तोकतामिशका राजसी स्वागत करते हुये सोना, जवाहरात, हथियार, वहुमूल्य पोशाक, घोडे, ऊट, तम्बू-ध्वजा-पताका, नगाडे तथा दास-दासी प्रदान किये और विदा करते वक्त उसे "पुत्र" कहकर सम्बोधित किया। तेमूरने उसे सावरान, उतरार, सिगनक, सैरान, सेराय तथा किपचकके दूसरे नगरोका स्वामी (शासक) वनाते यायिक (उराल) और सिर नदीके बीचके प्रदेशका राज्य प्रदान किया। यह भूभाग उरुस खानके अधीन था, इसलिये यह मान-प्रदान केवल मौखिक ही हो सकता था। उरुस खान चुप नही रह सकता था। उसने अपने पुत्र कुतुलुकवूगाको तोकतामिशका मुकाविला करनेके लिये भेजा। कुतुलुकवूगा लडाईमे घायल होकर दूसरे दिन मर गया, तो भी तोकतामिशकी हार हुई और उसे फिर भागकर तेमूर लग की शरण लेनी पडी। लगडे तेमूरने फिर उसका पहले ही जैसा सम्मान करके फिर नई सेना दी। उरुस खानके ज्येष्ठ पुत्र तेगूताकियाने फिर तोकतामिशको हराया। तोकतामिश वडी मुश्किलसे सिर नदी तैरकर पार हुआ। उसका पीछा करते हुये कजनजी वहादुरने तीरसे उसके हाथको घायल कर दिया था। घासमें पडे तोकतामिशको अकस्मात् तेमूर लग द्वारा दिये मत्री इतिगू बेरलसने देखा। फिर वह उसे लेकर वुखारामें तेमूरके पास पहुचा। तेमूरने फिर उसे और भी बडे साजोसामान तथा सेनाके साथ भेजा। इस समय यदकू (मङ्गुत या तिमिर कुतुलुकका पुत्र) तोकतामिशका समर्थक वनकर वुखारा चला आया था। उसने खबर दी, कि उरुस खान वडी सेना लेकर लडनेके लिये आ रहा है। केपेक मङगुत और तुलजियानने तेमूरके दरवारमे जाकर उरुस खानके सदेशको कहा—"तोकतामिश मेरे पुत्रको मारकर तुम्हारी शरणमें चला आया है। तुम मेरे शत्रुको मेरे हाथमे अर्पण कर दो, यदि इन्कारी हो तो मै युद्ध घोषित करता हू। हमें अव युद्धक्षेत्र चुनना होगा।"

तेमूर लगने उत्तर दिया—"तोकतामिशने अपनेको मेरी शरणमें दे दिया है। मै उसकी रक्षा करूगा। जाकर उरुस खानसे कह दो, कि उसकी ललकारको ही स्वीकार नही करता, वल्कि मै और मेरे सिपाही सिहकी तरह—जो कि जगलमे नही वल्कि युद्धक्षेत्रमे वास करते है—लडनेके लिये तैयार है।"

तेमूर लगने अमीर यदकूकोइको समरकन्दका शासक नियुक्त कर १३७६ ई०के अन्तमे प्रस्थान कर उतरारके मैदानमे डेरा डाला। उरुस खान अपनी सेनाके साथ वहासे चौवीस फरसक दूर सिगनाकमें था। एक जवर्दस्त आधी-पानी आया, जिसके वाद भयकर सर्दी हो गई। इसकी वजह से तीन महीनेतक कोई सैनिक कार्रवाई नही हो सकी। फिर तेमूरने कताई वहादुर और मोहम्मद सुलतानशाहको रातमें आक्रमण करनेका हुक्म दिया। जवर्दस्त सघर्ष हुआ। उरुस खान-पुत्र तेमूर मलिक ओगलानने तीन हजार सेनाके साथ मुकाविला किया। कताई वहादुर और एरेक तेमूर मारे गये, तेमूर मलिक भी आहत हुआ। तेमूर लगकी विजय हुई। उसने अवू-मोहम्मद सुलतानशाह और अमीर मर्वशेरको भी पता लगानेके लिये भेजा।

लडाई आगे नही हो सकी। उरुस खान दश्तेकिपचक लौट गया और तेमूर लग केश (शहरसब्ज) की ओर। नौ साल राज्य करनेके वाद १३७० ई० मे उरुस खान स्वाभाविक मृत्युसे मर गया।

अनुकूल समय देखकर तेमूर फिर दश्तेकिपचककी ओर रवाना हुआ। उसके सेनाग्रका सेनापति तोकतामिश था, जो बडी तेजीसे बढते हुये पद्रह दिनमे सैरामकामिश (हरिनोके नरकट) में पहुच गया और एकाएक आक्रमण करके उसने शहरको लूट लिया। वहासे उसे बहुतसे घोडे, ऊट और भेडे हाथ लगी।

१० तोग्ताकिया, उरुस-पुत्र (१३७०--)

पिताकी जगहपर यह गद्दीपर बैठा, लेकिन दो ही महीने बाद मर गया। इसके बाद इसके भाई तेमूरबेग (तेमूर मलिक) को गद्दी मिली।

११ तेमूरबेग, तेमूरमलिक उरुस-पुत्र, मोहम्मदखान-पुत्र (१३७०-७५ ई०)

यद्यपि सिंहासनके लिये उसका प्रतिद्वद्वी तेमूर लग जैसे विख्यात विजेता की सहायता-प्राप्त तोकतामिश था, लेकिन तेमूरबेगको इसकी परवाह नही थी। वह हद दर्जेका ऐशपसद था, रात-दिन शराबमे मस्त रहता। उसके अत्याचारोंसे लोग परेशान थे। तो भी तोकतामिशने इसके ऊपर आक्रमण करके फिर एक बार हार खाई। लेकिन तेमूरबेकके अत्याचारोंसे उसके बडे-बडे अमीर भी परेशान थे। उनको विश्वास होने लगा था, कि इसके रहते श्वेत-ओर्दूको अच्छे दिनोकी आशा नही हो सकती। एक प्रसिद्ध अमीर ओरग तेमूरने तेमूर लगके पास भागकर उसे और उभाडा। तेमूरने अबके गयासुद्दीन, तरखन, तोमन तिमूरके बख्शी खोजाके साथ भेजा। जागीर मागनेपर न देनेसे नाराज होकर एक और अमीर उज्बेक तेमूर भी तेमूर लगके पास भाग आया, जिसने उससे कहा—"तेमूर मलिक दिन-रात शराबमे मस्त पडा रहता है। पहर भर दिनतक सोता रहता है, जो कि भोजनका समय है। किसीकी हिम्मत नही, कि उसे जगाये। लोग अब उससे उकता गये है, और चाहते है, कि तोकतामिश आवे।" उस समय तोकतामिश सिगनक्मे था। तेमूरने तोकतामिशको खबर दी। तेमूरबेकने जाडो (१३७७ ई०) को करातागमें बिताया। १३७७ ई० में तेमूर लगने तोकतामिशको हमला करनेके लिये हुक्म दिया। इसी जाडेमे तेमूरबेकका एक बडा भारी दरबारी कापबहादुर भी उसका साथ छोडकर तोकतामिशके पास चला आया। तोकतामिशने आक्रमण करके तेमूरबेकको पूरी तौरसे हरा दिया और उरुसखोजा द्वारा विजयका समाचार तेमूरलगके पास भेजा। तेमूरने भारी खुशी मनाई, उरुसखोजाको खलअत और सुनहला कमरबन्द दिया, लौटनेके समय धन और घोडे प्रदान किये।

जाडोंमे फिर तोकतामिश सिगनकमें रहा तेमूरबेकका पीछा करते पश्चिमी किपचकके मेमक स्थानकी ओर बढा।

इसपर भी तेमूरबेगको होश नही आया। वह ७८५ हिजरी (६ मार्च १३८३—२३ फर्वरी १३८४) मे निर्णायक लडाई लडनेके लिये करातालकी ओर बढने लगा। तेमूरबेकने गद्दीपर बैठते समय बेवकूफीसे अक-ओर्दूके एक तुमान (सेराय मोलकुल) को अपने चचेरे भाई मोहम्मद ओगलानको दे दिया था। अब उसने मोहम्मदको तोकतामिशके विरुद्ध लडनेके लिये कहा। मोहम्मद जानता था, कि ओरदा-इनुस तोकतामिशके पक्षमे है। उसने तेमूरबेकको मना किया, जिसपर तेमूरबेकने उसे तोकतामिशका पक्षपाती कहकर भरी सभामे मरवा डाला और वही उसने सौगद खाई, कि जो भी मेरी इच्छाके विरुद्ध जायेगा, उसकी यही हालत होगी।

तोकतामिश और तेमूरबेकमे करातालके पास ससाडमे लडाई हुई। तेमूरबेकने हारके साथ प्राण भी गवाये। इसी लडाईमे एक स्वामिभक्त अमीर बलिजक पकडकर विजेता तोकतामिशके पास लाया गया। तोकतामिश बलिजककी ईमानदारीपर पूरा विश्वास रखता था। उसने उससे कहा—"अगर तू मुझे अपना बादशाह मान ले, तो मैं तेरे सम्मान और अधिकारको जरा भी कमी नही करूगा, बल्कि राज्यकी बागडोर तेरे हाथमे सुपुर्द कर दूगा।" बलिजकने जवाब दिया—"मैंने अपने जीवनका सबसे अच्छा भाग तेमूरबेककी सेवामें बिताया। मैं इसे सहन नहीं कर सकूगा, कि उसके सिंहासनपर कोई दूसरा बैठे। जो मुझे तेमूरबेककी गद्दीपर बैठा देखना चाहे, उसकी आखें फूट जाय। अगर तू मेरे ऊपर

कृपा करना चाहता हूँ, तो मेरा सिर काटकर तेमूरके सिरके नीचे रख दे, और उसकी लाशको मेरी लाशपर लिटा दे, जिसमे उसका कोमल शरीर धूलमे न लिपटे।" तोकतामिशने उसकी इच्छा पूरी की।

१२ तोक्तामिश तूलि-पुत्र (१३७५–९७ ई०)

तोकतामिश बापकी हत्याका बदला ले सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दूके सम्मिलित सिंहासनपर बैठा। उसकी मा कुतन कुनचेक प्रसिद्ध ककुरत कबीलेकी अमीरजादी तथा मनस्विनी स्त्री थी। इतिहासकार अनुनीम असकदर के अनुसार तोकतामिश बहुत ही मुस्तैद, प्रतापी, सुदर तथा स्वभावसे भी सुदर बादशाह था। वह अपने न्याय और सदाचारके लिये प्रसिद्ध था। अस्कन्दरके अनुसार उसमें दोष यही था, कि उसने अपने उपकारक तेमूरलगसे कृतघ्नता की। तेमूरबेकपर विजयप्राप्त करते ही तोकतामिशने अपने सारे उलुसको सुव्यवस्थित किया।

तोकतामिशने बेरेकसरायको अपनी राजधानी बनाया। बा-तूने अस्त्राखानके पास वर्तमान सेली-त्रेन्नोय गावकी जगह अपनी राजधानी—बातू-सराय बनाई थी। उसके भाई बेरक (१२५५–६६ ई०) ने वोल्गाकी शाखा अखतूबे नदीके तटपर आधुनिक स्तालिनग्रादके समीप सराय-बेरेकके नामसे नई नगरी बसाई, लेकिन बातू सरायसे हटाकर बेरेक सरायमें राजधानी ले जाना उज्बेक खानका काम था। तोकतामिशके समय सुवर्ण-ओर्दू राज्य एक बार फिर ख्वारेज्मसे पश्चिममे रूसी राजुलोके भीतर, तथा क्रिमिया, काकेशसके दरबन्द तथा बाकूतक फैल गया। पश्चिममे राज्यसीमा द्नियेस्तर नदी, और पूरबमे तबोल-इरतिश-सगम एव मध्य सिर-दरिया थी। तोकतामिशने सत्रह साल (१३९२ ई०) तक अच्छी तरह शासन किया, फिर इतिहासकारोके अनुसार उसे शरारत सूझी और वह तेमूरलगसे छेड़खानी कर बैठा।

१३८० ई० मे तोकतामिशके क्रिमिया-शासक रमजनने वेनिसगणके प्रतिनिधि अन्द्रेय वेनेरिसके साथ व्यापारिक समझौता किया।

मास्को-ध्वंस (१३८२ ई०)—तोकतामिश जू-छिके पुत्र ओरदाके वशका नही था, बल्कि उसका पूर्वज छिङ-गिस्‌वशी राजकुमार तुका-तिमुर था। ममाइ (करातालके पास) की विजयके बाद वह पूर्वी और पश्चिमी दोनो किपचको—सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दू—का स्वामी बना। विजयकी खबर सुनते ही रूसी राजुल जल्दी-जल्दी अपनी भेंट और तलवार चढानेके लिये उसके दरबारमे पहुचे। मास्को-महाराजुल दिमित्रिके दो कवचधार कुतुलुकबुगा और मोकस दूसरे खड्गधारियोके साथ भिन्न-भिन्न राजुलोकी राजधानियोमे खानकी सुनहली मोहरलगी यारलिकके साथ गये। लेकिन तोकतामिश इतनेसे सतुष्ट नही होनेवाला था। वह कर लेते हुए खानोकी प्रभुताको पूर्ववत् स्थापित करना चाहता था, जिसे उठा फेकनेकी रूसी राजुलोने इधर कोशिश की थी। उसने खानजादा अकखोजाको सात सौ सिपाहियोके साथ यह कहला भेजा, कि रूसी राजुल भेट और तलवार ही नही भेजें, बल्कि खुद बेरेक-सरायमे हाजिरी देनेके लिये आयें। अकखोजाने स्वय निज्नीनवोगोरद (निचला नवीन नगर) मे ठहर दूसरे दूतको सदेशके साथ मास्को भेजा। हालहीमे दोनके तटपर महाराजुल दिमित्रिको जो विजय प्राप्त हुई थी, उससे गर्व करते उसने जानेमे आनाकानी की। सालभरकी तैयारीके बाद उसे एकाएक खबर मिली कि सेना पार करनेके लिये तारतारोने बुल्गारोकी नावें पकड ली है, र्याजनका राजुल पथप्रदर्शक बन उन्हे ओका नदी पार करानेके लिये रास्ता दिखला रहा है। इस खबरको सुनकर बहुतसे राजुलोने हिम्मत हार दी। महाराजुलके धर्मपिता निज्नीनवोगोरदके राजुल दिमित्रिने अपने दो पुत्रोको खानके दरबारमे भेज भी दिया। उस समय खानका शिविर सिरनागमे था, जहा वह तोकतामिशसे मिले।

मास्को-महाराजुल दिमित्रि राजधानीको बायरोके हाथमे छोड सेना-सग्रहके लिये कोस्त्रोमाकी ओर गया। ओका नदीपर अवस्थित सेपूकोफ नगरको लेकर तोकतामिश मास्कोपर चढा। गिर्जोके घटे बजाकर नागरिकोको इकट्ठा कर एक बडी सभा की गई, पुराने रूसी रवाजके मुताबिक प्रति-

रक्षाके लिये बहुमतके अनुसार फैसला लेना था। तबतक कितने ही लोग शहर छोडकर भाग चुके थे, जिनमे महासेनानायक कुक्रियान भी था, जो त्वेर चला गया था—कुक्रियान रूसी नही था, इसलिये उसकी कायरताको लोगोंने विशेष तौरसे बुरा माना। शहरमे खलबली मची हुई थी। इसी समय एक तरुण लिथुवानी राजकुमार ओसतेइको दिमित्रिने मास्को भेजा—ओसतेइ प्रसिद्ध लिथुवानी राजा ओलगर्दका पौत्र था। उसके कामोको देखकर लोगोंके दिल कुछ मजबूत हुये। पासके गावोके किसान भी अपने सामान और परिवारोंके साथ मास्कोमे शरण लेने चले आये थे। उन्होने भी ओसतेइकी पुकारको सुना। नगरकी रक्षाके लिये साधुओंने भी हथियार मागे। इस प्रकार अप्रशिक्षित किन्तु बहादुर नागरिकोकी कई पल्टने प्राकारकी रक्षाके लिये तैयार हो गईं। बहुत समय नही बीता, कि जलते गावोके धुयेंने तार-तारोंके आनेकी सूचना दी। २३ अगस्त १३८२ई० को तारतार उपनगरमें पहुच गये। आक्रमणकारियो में कितने ही रूसी भाषा जानते थे। उन्होने महाराजुलके बारेमे पूछा। जवाब मिला—वह मास्कोमे नहीं है। नगरको घेरकर तारतारोने बाणोकी वर्षा करते बहुतसे नगर-निवासियोको मार डाला, लेकिन रूसियोने भी जो भी हाथ आया उसीसे तारतारोका मुकाबिला किया—उन्होने उनपर उबलते पानीको फेका, बडे-बडे पत्थर गिराकर तारतारोंको चकनाचूर किया। तीन दिनतक जबर्दस्त आक्रमण होता रहा—खैरियत यही थी, कि किपचकोंके पास तोपखाना नही था। इस तरह काम न चलते देख तोकता-मिशने छलसे काम लेना चाहा। उसने अपने कुछ सरदारो तथा निजनीनवोगोरदके दोनो राजुलपुत्रोको भेजकर कहलाया खान लोगोको अपनी आज्ञाकारी प्रजा समझता है। उनके प्रति उसका कोई दुर्भाव नहीं है। वह केवल अपने शत्रु महाराजुलको चाहता है। वह तुरत नगरको छोड जानेके लिये तैयार है, यदि उसके पास भेट भेजी जाये और भीतर आकर नगरको देख लेनेका मौका दिया जाय। ओसतेइने साधुओ, बायरो और लोगोंसे सलाह ली। उन्होने निज्नीनवोगोरदके राजुलके दोनो पुत्रो वासिली और सिमेओनकी इस बातपर विश्वास किया, कि खान अपने वचनको नही तोडेगा। नगरके फाटक खोल दिये गये। मूल्यवान् भेटे लिये ओसतेइ आगे-आगे, उसके पीछे सलीब लिये हुये साधु, फिर बायर और साधारण जनता चली। ओसतेइको सीधे खानके तम्बूमें ले जाकर मार डाला गया। फिर सकेत पाते ही हजारो तारतारोने नगी तलवारें ले लोगो को जबह करना शुरू किया। फिर वह नगरमें घुस पडे। बिना नेताके सिपाहियोंमे भगदड मचनी ही थी। वह औरतोकी तरह रोते-कादते सडकोंपर इधर-उधर भागने लगे। तारतारोने बूटो, बच्चो, स्त्रियो और साधुओमे कोई भेद न कर सबको तलवारके घाट उतारा। गिर्जोके दरवाजोको खोलनेपर वहा रक्खी हुई गावके लोगोकी सम्पत्ति मिली, जिसे तारतारोने लूट लिया। वहा चादी-सोनेकी मूर्तिया, बहुमूल्य भाड तथा दूसरी चीजें बडे भारी परिमाण मे मिलीं। महाराजुलका खजाना, बायरो (सामन्तो) और धनी व्यापारियोकी चिरकालसे जमा होती सम्पत्ति तारतारोंके हाथ लगी। इसके साथ सबसे बडी हानि जो हुई, वह थी पुरानी पुस्तकों और हस्तलेखोकी तारतारो द्वारा होली जलाना। सम्पत्ति लूटनेके बाद उन्होने घरोमे आग लगा दी, फिर बन्दी रूसियोंके झुडको आगे-आगे हाकते पासके खेतोमे जाकर उन्होने भोज किया।

तोकतामिशकी सेना सारे रूसमे फैल गई। व्लादिमिर, ज्वेनीगोरद, यूरियेफ, मोजाइस्क, दिमि-त्रियेफ आदि रूसी नगरोकी भी वही गति हुई, जो मास्कोकी। पेरेइस्लाव (यारोस्लाव्ल) नगर आगकी भेट हुआ, लेकिन लोग नावसे भाग निकलनेमें सफल हुये। कलोम्नापर भी अधिकार करके तोकतामिश लौट गया। ओका पार हो अपने पथप्रदर्शक जातिद्रोही र्याजन-राजुलके राज्यको उसने बडी निर्दयताके साथ लूटा और नष्ट-भ्रष्ट किया।

रूसकी स्वतन्त्रताका जो काम इतने दिनोंमे हो रहा था, उसपर भारी चोट पहुची। इवान और सेमि-योनने तातारोंकी चापलूसी करके देशमे जो समृद्धि पैदा की थी, उसका सर्वनाश हो गया। लोग कहने लगे—"तारतारोपर न विजयी होनेवाले 'हमारे पुरखा' भी हमारे जैसे अभागे नहीं थे।"

यद्यपि तोकतामिशने महाराजुल और उसकी राजधानी मास्कोका सर्वनाश कर दिया, लेकिन उसने देखा, कि बिना महाराजुलकी सहायताके पहलेकी तरह रूसियोंसे कर उगाहने और अपनी आज्ञा मनवानेमें सफलता नहीं प्राप्त कर सकता, इसलिये उसने फिर अपने पूर्वगामियोका रास्ता स्वीकार

किया। अपने एक मुरजा (मिर्जा) के द्वारा उसने दिमित्रिके पास सहृदयता दिखलाते हुये सदेश भेजा—अब भी तुम मेरी अधीनता स्वीकार कर पहलेकी तरह काम करो। दिमित्रिने अपने पुत्र वासिलीको भेजा। मास्कोके नष्ट हो जानेपर मूल्यवान् भेंट कहासे भेजी जा सकती थी ? तो भी तोकतामिशने वासिलीके साथ अच्छा वरताव किया। उसने महाराजुलकुमारको दरवारमें जामिनके तौरपर रक्खा और मास्कोके ऊपर नये कर लगाये।

खानोकी शक्तिको क्षीण हो जानेपर रूसका प्रतिद्वन्द्वी लिथुवानियाका राजा समझा जाता था। अवतक लिथुवानी ईसाई धर्मको न स्वीकार कर वैदिक देवताओके भाईवन्दोको ही अपना इष्टदेव मान रहे थे। उनकी वीरताके कारण ईसाई समुद्र इन काफिरोके द्वीपको अपने भीतर वर्दाश्त कर रहा था। एक इतिहासकार लिखता है—"वहुतसे लोग शायद यह नही जानते, कि १४ वी सदीके अततक मध्य-युरोपके इतना नजदीक विलेनुस नगरीमे काफिरोका धर्म राजधर्म था।" *लिथुवानी राजा लादिस्लाउस (ह्लादश्रवा) ने पोल-राज्यकी उत्तराधिकारिणी कुमारी हेदविगके साथ ईसाई धर्म स्वीकार करते हुये व्याह किया। इसी समय राजाके साथ उसके साथियोने भी वपतिस्मा लिया। युरोपके धर्मपरिवर्तनवाली कहानी लिथुवानियामे भी दुहराई गई और विलनामे काफिरोकी जितनी मूर्तिया और पवित्र वृक्षस्थल थे, सवको एक ओरसे ईसाई पादरियोने नष्ट कर दिया। पुराने पुरोहितोको उनकी मृगछालाकी पोशाकके वदलेमें सफेद पोशाक वाटी गई। लिथुवानियाके राजाको इसकी जरूरत क्यो पडी ? अपने पडोसियो को देखते हुये ग्रीक और रोमन सस्कृतिसे लिथुवानियाके सरदार भी प्रभावित हुये विना नही रहे। भीतर ही भीतर सस्कृतिके साथ धर्मका भी प्रभाव उनमेंसे कितनो हीपर पडता जा रहा था, जिससे आगे चलकर काफिर और ईसाईका सवाल सिंहासनके लिये खतरेका कारण हो सकता था। उधर लादिस्लाउसने देखा, कि ईसाई धर्म स्वीकार करनेपर मैं पोल राजकुमारीके साथ पाणिग्रहण कर पोलन्दका भी स्वामी वन जाऊगा, इसलिये हजारो वर्षोसे चली आई लिथुवानी सभ्यता और धर्मके वहुतसे चिह्नोको मिटा देनेमे उसने हाथ वटाया। महराजुल दिमित्रिका तोकतामिशके साथ फिर अच्छा सवध स्थापित हो गया, इसलिये लिथुवानियन राजाके आक्रमण करनेपर उसे तोकतामिशका एक भारी सहारा मिल गया। १३८९ ई० मे दिमित्रिके मरनेपर उसका पुत्र वासिली महाराजुल वना।

पश्चिमकी दिग्विजयके वाद तोकतामिशने अपने राज्यके पूर्वी भागकी व्यवस्थामे हाथ लगाया। उसने विरोधियोको वडी निष्ठुरतासे पीस डाला, जिसमे उसकी अपनी वीवी तावलुइने भी अपने प्राण खोये। तेमूर लगसे झगड पडना अकारण नही था। जू-छिके समयसे ही ख्वारेज्म उसके उलुसका था, जिसे तेमूरने जवर्दस्ती छीन लिया था। उरुस खानके समय, जो राज्यमे गडवडी मची थी, उससे फायदा उठाकर हुसेन सूफी यङ-हदाई-पुत्र (ककुरत) ने ख्वारेज्मके कात और खीवा जिले हडप लिये। तेमूरने देखा, कि हुसेनकी पीठपर कोई नही है, इसलिये 'ख्वारेज्म जगताई-उलुसका है' कहकर उसे मागा। तेमूर यद्यपि एक वडी सल्तनतका स्वतत्र शासक था, लेकिन उसने जगताई वशके खानको समरकदकी गद्दीसे नही उतारा और अपने लिये केवल अमीरकी साधारणसी पदवी स्वीकार की थी। इस प्रकार उसने जगताई खानकी ओरसे ख्वारेज्मपर दावा किया। हुसेन सूफीने उसका जवाव दिया—"तलवारसे जीता तलवारसे ही लौटाया जा सकता है।" तेमूर दौड पडा। कातमें कुछ थोडेसे प्रतिरोध के वाद शहरपर तेमूर लगका अधिकार हो गया। निर्मम हत्या हुई, स्त्री-वच्चो सहित वहुतसे लोग दास वनकर विकने के लिये वदी वनाये गये। हरे-भरे ख्वारेज्मको तेमूरकी आगमें जलना पडा। कातसे हुसेन सूफी भाग गया, और थोडे दिनो वाद मर गया। तेमूर लगने दया दिखाते हुये हुसेन सूफीके पुत्र युसुफ सूफीको इस शर्तपर वहाका शासक वनाया, कि वह अपनी चचेरी वहिन तथा सुन्दरताके लिये सर्वत्र प्रसिद्ध सेविनवेईको तेमूर-पुत्र जहागीरके साथ व्याह दे। युसुफने पहले तो वात मान ली, लेकिन जल्दी ही उसने शर्तको तोटकर कातको लूटना और लोगोको भगाना शुरू कर दिया। दड देनेके लिये १३७२ ई० मे तेमूर फिर

---

*ज० ओ० पृ० ३३७

आया। युसुफने आत्मसमर्पण किया। सेविनवेड (खानजादी) का व्याह जहांगीरके साथ हुआ और युसुफको क्षमा मिली। दो साल वाद १३७४ ई० मे फिर तेमूरको कातके रास्ते ख्वारेज्मकी ओर वढना पडा, लेकिन अपने किसी अमीरकी ओरसे समरकंदपर खतरा होनेकी खवर सुनकर वह लौट गया। इसी साल उसने तोकतामिशको किपचकोंका खान स्वीकृत किया था।

जिस समय तेमूर-लंग उतरारमें उरुस खानसे लडनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, इसी समय युसुफ सूफीने वुखारा जिलेपर आक्रमण करके लूट-मार मचानी शुरू की। तेमूरने उसे हिदायत करनेके लिये दूत भेजा, जिसे युसुफने जेलमें डाल दिया। इसके वाद एक दूसरे दरवारी दूतको तेमूरने रेशमपर ताजी कस्तूरीसे लिखा शासनपत्र देकर भेजा। युसुफने इस दूतकी भी वही गति की। वुखाराके पास उसने कुछ तुर्कमानोंके ऊंट लूट लिये। १३७८ ई० के वसंतमें राजधानीके सामने पहुंचकर युसुफने कहा—"इतने मुसलमानोंको मरवानेकी जगह यही अच्छा है, कि आओ हम दोनो द्वंद्व-युद्ध करके हार-जीत का फैसला कर लें।" तेमूरने इसे स्वीकार किया। मित्रोंके वर्जित करनेपर भी शाही कवच और शिरस्त्राण पहनकर तेमूरने द्वंद्व-युद्धके लिये नगरद्वारसे वाहर जा युसुफको ललकारा, लेकिन वह लडनेके लिये सामने नही आया। उसी समय तेरमिजसे कुछ ताजे खरवूजे (मरदे) आये, जिनमे से कुछको सोनेकी थालमें रखकर, तेमूरने अपने दुश्मनके पास भेजा, लेकिन युसुफने उन्हें मोरीमे फेंक दिया और लानेवालेको थाल वख्श दिया। फिर दोनोंमें घमासान लडाई शुरू हुई। नगरका मुहासिरा करके युसुफने उस समयके पुराने ढगके तोप-खानेसे प्राकारको तोडनेकी कोशिश की। मुहासिरा तीन महीने छ दिन रहा। युसुफ सूफी इसी वीचमे असफल होकर मर गया। तेमूरके हाथ भारी हीरा-मोतीका खजाना आया। उसने सभी शरीफों, हकीमों और विद्वानोंको स्त्रियों-वच्चोंके एक वडे समूहके साथ ख्वारेज्मसे पकडकर केश (शहरसब्ज) भेज दिया। इस प्रकार १३७९ ई० में ख्वारेज्मपर तेमूर-लंगका अधिकार हुआ।

पूरव और पश्चिमकी सफलताओंके कारण तोकतामिशको अपनी शक्तिपर विश्वास हो गया था। इधर युसुफ सूफीकी लडाइयोंसे वह यह भी समझता था, कि तेमूर-लंग अजेय नही है। जू-छिके सिंहासनका मालिक और छिंद-गिसी शाहजादा होकर वह कैसे वर्दाश्त कर सकता था, कि ख्वारेज्म एक मामूली तुर्क सरदारके हाथमें चला जाय। वह जानता था, कि चगताई खान केवल गुडिया वनाकर समरकंदके सिंहासनपर रखा गया है। तोकतामिशने ख्वारेज्म मांगा, लेकिन मुहसे वैसा न कहकर भी तेमूर-लंगका जवाव भी हुसैन सूफी जैसा ही था—"तलवारसे जीता तलवारसे ही लौटाया जा सकता है।" तोकतामिश तेमूरके विरुद्ध सिर-दरिया पार हो सीधे समरकंदकी ओर वढ सकता था, अथवा ख्वारेज्मपर आक्रमण कर सकता था, लेकिन उसे तेमूर-लंगका निर्वलस्थान वहा नहीं मालूम हुआ। उसने खुलाकूकी राजधानी तवरेज—जोकि अव तेमूर-लंगके हाथमें थी—को लक्ष्य कर काकेशीय दरवन्दके रास्ते अभियान किया। उसके साथ वेक वुलाद, ऐसावेक, यागलीवेक, राजनशी आदि वारह ओगलान (राजकुमार) थे, जिनका मुखिया पुलादवेक था। तोकतामिशकी सेनाने सिरवान होते हुये आजुरवाइजानके भीतर घुसकर तवरेजको घेर लिया। लोगोंको जव यह खवर मिली, तो वे अपने कूचों और मुहल्लोंमें दरवाजे डाल मोर्चावंदी कर हथियारवंद हो अपने-अपने मुहल्लोंकी हिफाजत करने लगे। आक्रमणकारियोंने नागरिकोंके प्रतिरोधको वहुत मजवूत देखा। वह शम्बेगाजानीमें उतरे और कमजोर स्थान ढूंढनेके लिये आठ दिनतक नगरका चक्कर लगाते रहे। जव कोई वैसा स्थान या अवसर नहीं मिला, तो उन्होंने आदमी भेजकर अमीर वलीको सुलह करनेके लिये वुलाया। अन्तमें तै हुआ, कि अमीर वली शहरसे ढाई सौ पचास तुमान सोना दिलवा दें, जो कि तोकतामिशकी सेनाके घोडोंकी नालों का दामभर ही था। वृहस्पतिवार १३८५-८६ ई० (७८७ हि०) को शहरके मालिकों और ख्वाजाओंको इसका निश्चय किया गया कि हर मालिक एक तुमान नकद दे। ढाई सौ तुमान भेज देनेके वाद लोग निश्चिन्त हो गये। उन्होंने तैयारी ढीली कर दी और वहुतोंने हथियार भी उतार दिये। उसी समय तोक-तामिशकी सेना शहरके ऊपर टूट पडी और कत्ल तथा लूटका वाजार गरम हो गया। प्रतिरोधकी शक्तियां छिन्न-भिन्न हो गई थीं। तोकतामिशकी सेनाने तेमूर-लंगके तवरेजको आठ दिनतक लूटा और

कतल किया, जिसमे करीब एक लाख आदमी बडी निर्दयतासे मारे गये। किपचकोने किसीपर दया नही दिखलाई। उन्होने लोगोको नगा मादरजाद करके सडको, कूचो, मुहल्लोमे बर्फपर बैठा दिया। स्त्रियो, लडकियो और छोकरोमे जिन्हे सुन्दर देखा, उन्हे लिया, बहुतसे आदमियोको भी बदी बनाया, फिर घरोमे आग लगा दी। तोकतामिशने मास्कोमे जो किया था, उसीकी आवृत्ति उसकी सेनाने तबरीजमें की, और यही बात पीछे तेमूर-लगने दिल्लीमे दुहराई। एक इतिहासकार ने लिखा है—"काफिरोने लोगोपर वह जुल्म किया, कि लिखनेवाला यदि एक सालतक लिखता रहे, तो नही पूरा कर सकता। इस शहर और इन मुसलमानोपर क्या-क्या नही बीती ?"

अमीर वली सुलतानियासे जा चुका है, यह सुनकर उनको उसपर विश्वासघाती होनेका सदेह हुआ। तोकतामिशी सेनाने सुलतानिया और दूसरी जगहोको भी उसी तरह लूटा-पाटा। इसके बादभी तबरीजके लोगोमे कुछ सुगबुगाहट देख फिर दो दिन दो रात उसे कतल और लूटका शिकार बनाया। फिर कितने ही किपचक नखजवानकी ओर अर्रानके प्रदेशमे जा लूट-मार करने लगे, कुछ इसी कामके लिये कराबाग चले गये। जाडा खतम होने से पहले ही दो लाख बदी बना तोकतामिश आये रास्ते लौट गया। तेमूर इस समय ईरानके झगडोमे फसा था, इसलिये आजुरबाइजानके सर्वसहारकी बातको सुनकर भी दिल मसोसकर रह गया। तोकतामिश अपने साथ प्रसिद्ध कवि कमालको लेता गया था, जिसने चार सालतक राजधानी बेरेकसारायमे रहकर उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

तेमूरके साथ लडाइया

प्रथम युद्ध—ईरानके झगडेसे छुट्टी पाकर १३८७-८८ ई० (७८९ हि०) के बसतमे तेमूर-लग उरुस नदीके तटपर था, जबकि उसने सुना कि तोकतामिश दूसरी बार दरबदकी ओरसे आकर आक्रमण करना चाहता है। तोकतामिशके अमीरोने मना किया, कि तेमूर अब भीतरी झगडोसे छुट्टी पाकर मुकाबिलेके लिये तैयार है, इसलिये लडनेके लिये नही जाना चाहिये। लेकिन, तोकतामिशने उनकी बात नही मानी। खुलाकू-वशियो और बातू-वशियोके पुराने युद्धोकी तरह फिर उत्तरसे तोकतामिशी सेना कुरा नदीके तटपर पहुची और दक्षिणसे तेमूर भी बेरदआ होते वहा पहुचा। उसने नदीपार की खबर जाननेके लिये गुप्तचर भेजे, जिन्होने लडाई करके भारी क्षति उठाई। फिर कुमकके लिये आई तेमूरी सेनाने तोकतामिशकी विजयिनी सेनापर आक्रमण करके उसे बुरी तरह हराकर दरबदतक उसका पीछा करके बहुतसे बदी बनाये। तेमूरने कृतघ्नताके लिये बहुत फटकारकर तोकतामिशके बदी अमीरो-को खलअत और धन देकर घर भेज दिया।

इस विजयके बाद तेमूरने सरकश तुर्कमान सरदार करामोहम्मदसे लोहा लिया और फिर फारस-पर आक्रमण कर उसे अपने राज्यमे मिला लिया। इसी समय डाकियाने आकर खबर दी, कि तोक-तामिश अतर्वेद (मावरा-उन्नह्र) की ओर बढ़ रहा है। तोकतामिशने सिगनकसे प्रस्थान कर साबरानपर आक्रमण किया, लेकिन तेमूरी सेनापतिके जबर्दस्त प्रतिरोधके कारण उसे मुहासिरा उठा लेना पडा। इसके बाद तोकतामिश दूसरे इलाकोको तबाह करने लगा। प्रतिरोध करनेके लिये तेमूर-पुत्र शाहजादा उमरशेख मिर्जाने एक बडी सेना ले सिर-दरिया पार हो आगे बढते उतरारसे पाच फरसक पूरब युकलिक स्थानमे तोकतामिशकी सेनापर आक्रमण किया, लेकिन उसे हार खानी पडी। अदिजानमें पहुचकर उसने अपनी बिखरी सेनाको फिरसे एकत्रित किया। इसी समय पता लगा, कि मुगोलिस्तानके शासक अका-तूराने भी विश्वासघात करके चढाई कर दी है और वह सैराम तथा ताश्कदके नजदीक पहुच गया है। उमरशेखने अकातूराको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। तोकतामिशके किपचक समृद्ध सोग्द-देशको लूटनेके लिये आगे बढ रहे थे, जिनका एक दल बुखाराके सामने पहुच गया था, जिसने वहाके सुन्दर प्रासाद जेंदगिर-सरायको जला दिया। तेमूर उनकी ओर लपका। नजदीक आनेपर शत्रुकी सेना-मेंसे कुछ दश्तेकिपचक (कजाकस्तान) की ओर कुछ ख्वारेज्मकी ओर भागे। तेमूरने अपने अफसरो—बेरातखोजा और कुकिलताशको युकलिककी पराजयके लिये दड दिया—"कुकिलताशको दाढी-मूछ मुडवा चेहरेको काले-लाल रगसे रगा, सिरको स्त्रीकी तरह सजा शहरमे नगे पैर दौडाया गया।"

युसुफके मरनेके बाद ख्वारेज्म उसके भाई सुलेमान सूफी तथा बहनोई इलिकमिस ओगलान (किपचक राजकुमार) के हाथमें था। यह दोनों तोक्तामिशको अपना प्रभु मानने लगे, इसपर तेमूरने उनके विरुद्ध चढ़ाई की। तेमूरी सेनाके हरावलके सचालक शरणागत श्वेत-ओर्दू राजकुमार तेमूर कुतुलुक ओगलान और कुजी ओगलान थे। बगदादके और शेदरिस नदीके पार होनेके बाद पता लगा, कि दोनों राजकुमार तोक्तामिशके पास भाग गये। शाहजादा मीरांशाह (तेमूर-पुत्र)ने पीछा करके उनको पकड़ लिया। तेमूर ख्वारेज्मकी राजधानी उरगज पहुचा। उसे नगर और निवासियोंपर इतना गुस्सा आया था कि उसने नगरको गिरवाकर वहा जौ बुवा दिया और निवासियों को समरकद भेज दिया। फिर तीन साल बाद ही नगरके पुन स्थापनाके लिये हुकुम दे इस कामपर उसने मुसिकी यदकि कुचीन-पुत्रको नियुक्त किया। मुसिकीने नगरको फिरसे बनवाकर लोगोको बसाया, उरगज, कात और खीवाके चारो ओर नगर-प्राकार बनवाये।

तोक्तामिशने देख लिया, कि अब तेमूर-लगके साथ मामूली छेड़खानीसे काम नहीं चलेगा। उसने १३८८ ई० (७९० हि०) में अपने महाअभियान शुरू करनेके पहले बहुत भारी सेना जमा की। इस सेनामें चिरकासी, बुल्गार, किपचक, क्रिमियावासी, कफा, अलानिया, अजक, बाश्किर और रूसी सभी जातियोंके सैनिक थे। पता लगनेपर तेमूर भी भारी सेना ले समरकदसे ६ फरसख पर अक्सियन सगर्ज स्थानमें मुकाम किया। वहासे उसने अपने सारे राज्यमें सेना जमा करनेके लिये तवाची भेजे। उस साल जाड़ा बहुत सख्त रहा। चारो ओर जमीन बर्फसे ढकी हुई थी। पता लगा, कि किपचक हरावल इलिकमिश ओगलानके नेतृत्वमें सिर-दरियापार हो ओतरार (उतरार)के पास अजक-जैरतुकमें डेरा डाले हुये है। तेमूरने तुरत हमला करना चाहा, लेकिन उसके अमीरोंने घुटने टेककर प्रार्थना की, कि और सेनाके आनेतक प्रतीक्षा की जाय। तेमूरने नहीं माना। बर्फ कहीं-कहीं घोड़ोंकि छातीतक थी। उसीमें स्थानीय सेना ले वह रात-दिन कूच करने लगा। रास्तेमें उमरशेख मिर्जा अपनी सेना ले आ मिला। पीछेसे रास्ता काटनेके लिये सेना भेजकर दूसरे दिन तैलम्वार पहाड पार करनेपर दुश्मन सामने दिखाई पडा। भयकर युद्ध हुआ। तोकतामिशकी बुरी तरह हार हुई। सिर-दरिया पार करके उसने जो गलती की थी, उसके कारण बहुतसे सैनिक डूब गये और अधिक सख्याको तेमूरने घेरकर मार डाला। तोक्तामिशका राज्य-सचिव ऐरदीबरदी बदी बनाकर तेमूरके पास लाया गया। तेमूरने उसका बहुत सम्मान कर बहुतसे उपहार दे लौटा दिया। तेमूरने स्वय लौटकर फर्वरी ७९१ हि० (३१ दिसम्बर १३८८–२१ नवबर १३८९ ई०) मे समरकदके पास अकारमें डेरा डाला।

बसत (१३८९) शुरू होते-होते खुरासान, बलख, कुन्दुज, बतलान, बदख्शा, खुत्तलान, हिसार, शादुमान आदि नाना देशोंसे सेनाये आ पहुची। खोजन्दके सामने दूसरी भी और कितनी ही जगहोंमें सिर-दरियाके ऊपर नावोंके पुल बनाये गये। १३८९ ई० (७९१ हि०) के प्रारभमें अभियान शुरू हुआ। आरिस (आर्च) नदीके किनारे दुश्मनके हरावलपर तेमूरी सेनाने एकाएक आक्रमण कर दिया। तोक्तामिशकी सेनाने सावरानपर अचानक आक्रमण किया और उसे यस्सी (तुर्किस्तान) की ओर हटनेके लिये मजबूर होना पडा। यहां खुली जगहमें तोकतामिशकी सारी सेना पडी हुई थी। तेमूरको सामने आता देखकर तोक्तामिशकी सेना भाग चली। तेमूरने पीछा किया और कुछको पकड़ लिया। अब तेमूर-लगने अलकुसुनामें जाकर डेरा डाला। तेमूरके सामने इस वक्त दो शत्रु थे, एक तोकतामिश और दूसरा चगताईकी उसरी शाखा मुगोलिस्तान (राजधानी अलमालिक) का खान। दोनोंमें मुगोलिस्तानका खान कम बलिष्ठ मालूम हुआ, इसलिये उसीको पहले खतम करनेके ख्यालसे तोक्तामिशके पीछे न पड़कर तेमूर समरकद लौट आया।

प्रथम महाभियान (१३९० ई०)

तेमूरने अच्छी तरह समझ लिया, कि दश्तेकिपचक (तोक्तामिशके राज्य) का अभियान खेल नहीं है, इसलिये उसने बड़ी तैयारी की—तुर्कों और ताजिकोंकी भारी सेना जमा की, सालभरके लिये

रसद इकट्ठा की। हर एक आदमीको हुकुम दिया कि वह एक धनुष, तीस बाण, एक प्रत्यचा और एक कमरबद जमा करे। सारी सेना घोडसवार थी। हरएक घोडसवारको एक घोडा फाजिल अपने साथ रखना था। दस आदमियोके ऊपर एक तबू, दो बेल्चे, एक फरसा, एक हसिया, एक आरा, एक कुल्हाडा, एक रुखानी, सौ सुइया, सवा चार सेर रस्सी, एक बैलका चमडा और एक मजबूत तवा दिया गया। सेनाको सरकारी घोडोके साथ शिरस्त्राण, कवच और नकद पैसा भी दिया गया था। ताश्कद छोडनेके बाद तेमूरने हुकुम दिया, कि महीनेमें प्रतिव्यक्ति साढे आठ सेर आटा मिलेगा। रोटी, कुल्चा (बिस्कुट) आदि शिविरमें किसीको नही मिलेगा। खानेके लिये जल्दी-जल्दी आटेकी लपसी बना लेनी होगी। तेमूरने वृश्चिक राशिमे समरकद छोड जाडेको समरकद जिलेमें ही बिताया। आगेके लिये प्रस्थानसे पहले खोजन्दमे उसने वहाके प्रतापी सत शेख मस्लहतके मकबरेका दर्शन करके उसपर दस हजार दीनार चढाये। ताश्कदमें तेमूर चालीस दिनतक सख्त बीमार पडा रहा। उसकी सेनाके पथप्रदर्शक तमूर कुतुलुक ओगलान, तेमूर मलिकखान, गूनेजी ओगलान, इदिकू उज्बेक थे, जिनमेंसे पहले तीन किपचक राजकुमार थे। १९ जनवरी १३९१ ई० को अपनी प्रियतमा भार्या तथा मुगोलिस्तानके हाजीबेक इरखानकी पुत्री चुलपान मलिक आगाके साथ तेमूरने प्रस्थान किया।

कुछ दिनोतक सेना कारासमनमें ठहरी। यहा तोकतामिशके दूत तेमूरके दरबारमे आये। उन्होने शाहबाज और नौ घोडे भेटकर दडवत् पड धरतीपर ललाट रगडकर सम्मान प्रकट करते अपने मालिककी प्रार्थना दुहराते हुये कहा—"बुरी सलाहमें पडकर तोकतामिशने विद्रोह किया, अब वह क्षमा मागता है।" तेमूरने बाजको अपने हाथपर बैठाकर कहा—"सारी दुनिया जानती है, कि मैंने तोकतामिशकी रक्षा की, कितनी कुर्बानिया करके उसे तख्तपर बैठाया, लेकिन मुझे अनुपस्थित देख उसने तबरीजपर आक्रमण कर दिया। मै अफसोस प्रकट करनेपर क्षमादानके लिये तैयार था, फिर भी उसने दुष्ट काफिरोको साथ ले मेरे सीमातपर आक्रमण किया। काफिरोने दूर-दूरतक लूट-मार की। जब मै अपनी प्रजाकी सहायताके लिये पहुचा, तो वह नीचता दिखलाते हुये हट गया। अब वह फिर मुझे झूठे वचनोद्वारा धोखा दना चाहता है। उसने बहुत बार विश्वासघात कर लिया है, अब वह मुझे फिर धोखा नही दे सकता। मै उसे दड देनेके मसूबेसे आया हू, और उसे बिना पूरा किये नही छोडूगा। तो भी अगर वह ईमानदारीसे अपनी सदिच्छा दिखलाना चाहता है, तो अपने प्रथम-मत्री अलीबेकको मेरे पास भेज दे। मै राज्यका हित देखते बुद्धिके अनुसार कार्रवाई करूगा।"

तेमूरने दूतोके लिये भारी दावत दी। उन्हें कमखावके कफतान (जामे) भेट किये, साथ ही खास स्थानमे टिकाकर निगाह रखनेके लिये ताकीद भी कर दी।

२१ फर्वरी १३९१ ई० को युद्ध-महापरिषद् बैठी। युद्धके पक्षमें निर्णय करके ज्योतिषियोसे शुभमुहूर्त ठीक करवाया गया। तोकतामिशके दूत लौटा दिये गये। तेमूरी सेनाने कूच किया। उसकी सेना यस्सी (आधुनिक तुर्किस्तानशहर), कराचुक (तुर्किस्तानसे पाच फरसखपर सिर नदीमे गिरनेवाली नदीके ऊपर), और साबरानके रास्ते आगे बढते उत्तरकी ओर मुडकर ६ सप्ताह वृक्ष-वनस्पतिहीन मैदानमें चली। बहुतसे घोडे रास्तेमें चारे बिना मर गये। ६ अप्रैल १३९१ ई० को तेमूरी सेना नीले पानीवाली नदी (सरूक उजेन, सरीसू) के तटपर पहुची। नदी बढी हुई थी, इसलिये थके हुये घोडोको कुछ दिनो विश्राम दिया गया। २६ अप्रैलको प्रसिद्ध मैदान (कुनचुकताग=लघुपर्वत) पर पहुची। दो दिन और चलनेपर इस प्रदेशका सबसे बडा पहाड उलुगताग (महापर्वत) आया—पहिले इन पर्वतोका नाम ओरताग (उच्च पर्वत) और करताग (गदा पर्वत) था। आगूज तुर्कोंके खान अपनी गर्मिया यहीं बिताते थे। इन पहाडोसे बहुत-सी नदिया निकलती हैं। तेमर-लग उलुगतागके ऊपर चढा और वहापर उसने २८ अप्रैल १३९१ ई० को शिला-लेख खुदवाकर एक पाषाणस्तभ स्थापित करवाया।

यह शिलालेख आजकल लेनिनग्रादके एरमिताज-सग्रहालयमें है। अभिलेखमे ऊपर तीन पक्तिया अरबीमे, फिर आठ पक्तिया उइगुर-लिपि तथा तुर्की भाषामें है। उइगुर लिपिके कायदेके

अनुसार इस लेखकी पक्तिया ऊपरसे नीचे न हो वायेंसे दाहिने तथा अरबी पक्तियोंके समानान्तर हैं। तुर्की भाषामें मूल लेख निम्न प्रकार है —

१ तरिक येती यूज़ तोकसन उचन्दा कोइ

२ यिल याज़निग अरा ए तूरान निग सुल्तान इ

३ तेमूर बेग इकी युज़ मिंग सेरगि विलए इसमी उचुन तोकतामिश कान निग

४ कनिगा योडरिदी वू येरगे येतिप बेलगू बोलसुन तेप

५ वू ओवा-नी कोपरदी

६ तङ-री निसफत बेरगेई इन्शल्ला

७ तङ-री इन किशीगे रहमत किलगे विज-नी दुआ विलाये

८ याद किलगे ।

["७९३ हि० सन् (१३९१ ई०) के वसत के मध्यमे तूरान-सुल्तान तेमूरबेग दो लाख सेनाके साथ तोकतामिश-खानसे लडनेके लिये आया ।. यहा पहुचकर (उसने) इस स्तभ (चिह्न) को स्थापित किया। यदि भगवान् चाहे, तो वह लोगोको सौहार्द देवे और हमें आशीर्वादपूर्वक याद कराये ।"]

आगे प्रस्थान करते सेना दूसरे दिन इलान्चुक (सर्प-सदृश) नदीपर पहुची। आठ दिन और चलनेके वाद अताकरागुई (अनाकरागुई, करातुरगई) नदीपर पहुची। अवतक ताश्कद छोडे चार मास हो चुके थे। रसद कम होने लगी थी। एक भेडका दाम सौ कुबेक (दीनार) हो गया था, अन्न भी उसी तरह महगा था। तेमूरी सेना जंगली चिडियोके अडे, सभी तरहके जानवरोंके मास, यहातक कि घास भी खानेके लिये मजबूर हुई। उसके लिये तोकतामिशसे भी अधिक निष्ठुर उसके देशकी प्रकृति साबित हुई। रसदमे सिर्फ आटा, बाजरा और घास मिला हुआ सूप (रस) मिलता था। सिपाहियोका ही खाना अफसर भी खाते थे। इन बयावानमे शिकारोंकी कमी नही थी। छिङ-गिस्के महाशिकारकी प्रणाली लोगोको भूली नही थी। ६ मई १३९१ ई० को उसी शिकारको रचा गया। आदमियोने दूर तककी भूमि घेर ली। घिरावेमें पडे हरिन तथा दूसरे जानवर वडी सख्यामे मारे गये। वह इतने अधिक फसे थे, कि उनमेंसे सिर्फ मोटे-मोटे जानवरोको ही मारा गया। तेमूरकी भारी सेनाके लिये कितने ही दिनोंके वास्ते मास मिल गया। आगे वढती हुई वह तोवोल नदीके उद्गमके पास पहुची। वही तेमूरने अपनी सेनाकी परेड देखी—भालो, तलवारो, खाडो, गदाओ, चर्मकी ढालोंसे सज्जित बाघका चमडा डाले घोडोपर सवार सैनिक अफसर उसके साथ थे। तेमूरने स्वय अपने सिरपर पद्मराग-जटित एक मुकुट पहिना था। उसके हाथमें गदा थी, जिसके सिरे पर वैलका चेहरा था। तेमूरने अपनी सेनामे इनाम बाटा। सेना "सुरिम" (धावो) का नारा बुलन्द करते बाजेकी आवाज-पर अपने वादशाहके सामनेसे सलामी देती निकली।

फिर ज्योतिषियोंने शुभमुहूर्त देखा और १२ मईको मिर्जा मुहम्मद सुल्तान वहादुर (तेमूर-पौत्र) की अधीनतामें हरावल सेना आगे वढी। दो दिन जानेपर दुश्मनका पता उसके छोडे डेरोंसे लगा, जिनमें अब भी आग मौजूद थी। अन्तमें वह तोवोल (छोटा वृक्ष)—जो कजाकोकी तोबुल और रूसियोकी ताबूला नदी है—के तटपर पहुचे। पार होनेके वाद पता लगानेवाली टुकडीने लौटकर बतलाया, कि कतर जगहोंमें आग मिली, किन्तु दुश्मनका कही पता नही। यह सुनकर तेमूर भी जल्दी-जल्दी तोवोलतट-पर पहुचा। उसके तुर्कमान सरदार शेख दाऊदके दलने लगातार जल्दी-जल्दी दो दिन-रातके कूचके वाद कुछ लोपदोंको देखा। वह प्रतीक्षा करने लगे। जब उनमेंसे एक सवार निकला, तो उसे पकड-कर तेमूरके पास ले आये। पूछनेपर बदीने कहा—"मैंने एक महीने पहले तोकतामिशके देशको छोडा। कुछ दिन हुये दस कवचधारी सैनिक मैंने पासके जगलमें छिपे देखे।" तेमूरने उनके पीछे सिपाही भेजे, जो कुछको मार बाकीको बदी बनाकर ले आये। उनसे निश्चित खबर पा फिर सेनाने जल्दी-जल्दी कूच करना शुरू किया। २६ मईको तेमूर यायिक (उराल) नदीके तटपर था। नदीके ऊपरकी ओर पार

कर ६ दिन चलनेके वाद सेमुर नदीके तटपर जाकर सेनाने डेरा डाला। वहा पता लगा, कि तोकतामिश-की सेना हाल हीमे यहासे हटी है। तेमूरने हुकुम दिया—"चुपचाप आगे वढो और रातको आग मत जलाओ।"

४ जून १३९१ ई० को तेमूर इक (शकमाराकी शाखा) के तटपर था। तोकतामिश उस समय केर्क अथवा कोरुक (सूखा)-गुल नामक झीलके ऊपर डेरा डाले वुलगार (कजान) और अजक क्रिमिया के ओर्दूके आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, साथ ही उसने यायिक (उराल) के घाटोपर छापामार तैनात कर रक्खे थे। अव भूमि दलदलवाली थी, जिसमे चलना तेमूरके सवारोके लिये वहुत मुश्किल था। जल्दी ही खवर आई, कि शत्रुकी तीन पल्टने आगे पडी है। तेमूरने युद्धव्यूह रचनेका हुकुम दिया और ढाल, तूणीर और पैसे वाटे। एक वदीसे—जिसे पीछे मार डाला गया—पता लगा, कि तोकतामिश गहरी चाल चलकर अपने शत्रुओको फसाना चाहता है। सैनिक अफसर मुवश्शिर वहादुरद्वारा पकडे चालीस वदियोको भी वडी निष्ठुरतापूर्वक मारा गया—शायद साथमे वदी लेकर आगे वढना तेमूर पसद नही करता था। इन वदियोने कहा, कि हम केर्कगुलमे तोकतामिशके पास जा रहे थे, लेकिन उसे नही पा सके। अतमे शत्रुकी एक सेनाका पता लगा। ऐकू तिमूर वरलस अपने दलको लेकर आगे पता लगानेके लिये वढा। शत्रुकी वडी सेना देखकर सात-आठ आदमियोके साथ स्वय पृष्ठरक्षा करता वह पीछे लौटा। देखते ही शत्रु उसकी ओर दौडे। एक तीरसे वरलसका घोडा घायल हो गया और दूसरे तीरसे वह स्वय भी आहत हुआ, लेकिन वह खवर देनेके लिये वेतहाशा घोडेको दौडाता रहा। घोडा गिर गया, तो उसने दूसरे घोडेको लिया। उस घोडेको भी शत्रुओने तीरसे घायल किया और वे घेरकर मुवश्शिरका सिर काटकर साथ ले लौट गये, कुछ साथी भी उनके हाथ लगे। इसी समय एक दूसरी तेमूरी सेना आ गई, जिसके कारण शत्रुओने पीछा करना छोड दिया।

तेमूरके यहा अमीर-पुत्रोको तरखनकी उपाधि थी, जिन्हे शाही तवूमे किसी वक्त भी आनेकी इजाजत थी। छिङ्गिस्के समय भी तरखनकी पदवी प्रचलित थी। तेमूरने तरखनो और उनके वशजोके नौ कसूर माफ कर रक्खे थे।

चलते-चलते तेमूरी सेना ५४° अक्षाशमे पहुची, जहा गर्मियोमे असली रात नही होती और गोधूली-के वाद ही उषा चली आती है। इसके कारण यह सवाल पैदा हो गया, कि रातके अभावमे चौवीस घटेमें पाच वार नमाज पढनेकी व्यवस्था कैसे की जाये। इमामने फतवा देकर रातकी नमाजसे लोगोको छुट्टी दे दी। तोकतामिशकी यही नीति थी, कि पीछे हटते-हटते शत्रुको उसके मुख्य स्थानसे दूर खीचते ऐसी जगह लाओ, जहा रसद-पानी दुर्लभ हो जाय। तेमूरने युद्ध-परिषद् वुलाई और सेनापतियोसे सलाह करके वीस हजार सेनाके साथ उमरशेख मिर्जाको आगे शत्रुके ऊपर भेजा। इसी समय ५-६ दिन वर्फ पडती रही, जिसके कारण सर्दी वहुत वढ गई। सोमवार १८ जून (१३९१ ई०) को आसमान साफ हुआ। अव वुल्गारोके देशमें कन्दुर्च स्थानमें पहुचकर तेमूरने अपनी सेनाको व्यवस्थित करते हुये कुरानके फातेहा सूरा (अध्याय) की सात आयतो (पक्तियो) के अनुसार उसे सात डिवीजनोमे वाटा। थकी होनेपर भी सेनाका उत्साह मद नही था। तेमूरने रिश्वत देकर काम लेना चाहा और तोकतामिशके झडावरदारसे ठहरा लिया, कि युद्धके समय वह झडेको गिरा देगा। जव अमीर अकतागको वामपक्षका सेनापति वन युद्ध छेडनेको कहा, तो उसने तोकतामिशसे माग की, कि हमारे सवधीके हत्यारे अमीरको इसी वक्त मेरे हवाले किया जाय। तोकतामिशने युद्धके वाद देनेका वचन दिया, लेकिन वह इससे सतुष्ट नही हुआ और अपने सारे अकताग (श्वेत-पर्वत) कवीले तथा कितने ही दूसरे आदमियोके साथ चला गया। तेमूरके क्षुद्र-एसियापर आक्रमण करते समय यह अकताग कवीला दोवरूजामें रहता था। हालमें वह दन्यूवपार अद्रियानोपोलमें वस गया था।

युद्ध आरभ करनेसे पहले तेमूरने घोडेसे उतरकर दो रकूअ (नमस्कार) नमाज पढी। सेनाने "अल्लाह अकवर" और "सुरून" का नारा लगाया। ढोल और लोहेके झाझ वजे। इसी समय अलीके वशज तथा शरीफोके मुखिया सैयद वरकाने विजयकी भविष्यद्वाणी करते सिर नगा करके हाथ उठा दुआ की। शेखुल्-इस्लाम (इस्लामके महागुरु) अहमदजानके वशज इमाम ख्वाजा जियाउद्दीन युसुफ

और शेख इस्माईल कुरानकी आयत पढ रहे थे—"ओ मुसलमानो, अल्लाहके आशीर्वादको याद रखो। वही है, जो कि तुम्हारे ऊपर हथियार चलानेवाले शत्रुओंके हथियारोको रोक देता है। अल्लाहसे डरो। विश्वासियोको उसपर विश्वास करना चाहिये।" मुट्ठीभर ककडिया लेकर दुश्मनकी ओर फेंकते हुये इमामने चिल्लाकर कहा—"उनके चेहरे काले हो जायें।" फिर तेमूरकी ओर मुह करके इमाम बोला—"जहा चाहे जा, अल्लाह तेरी रक्षा करेगा।"

चतुर्थ सेनाके कमाडर अमीर सैफुद्दीनने सबसे पहले आक्रमण किया और शत्रुके वाम-पक्षको तोड दिया। तोकतामिशके आदमियोने चारो ओर फैलकर उसे घेरना चाहा, लेकिन उन्हे रोककर पीछे ढकेल दिया गया। वामपक्ष कुछ नष्ट हो गया और कुछ पीछे हटनेके लिये मजबूर हुआ। इसके बाद दूसरे सेनापति अपनी सेना लेकर आगे बढे। भयकर हत्याकाड होने लगा। तोकतामिशने तेमूरके केंद्र—दक्षिणपक्षके प्रहारको रोकना असम्भव समझकर उसके वाम-पक्षपर प्रचड प्रहार किया। वामपक्ष टूट गया और मुख्य भागसे उसके कितने ही अश अलग हो गये। तोख्तामिशने वस्तुत बीचसे चीरकर पीछा जा धरा। बडी भयकर अवस्था थी। तेमूरने आदमियोंको विश्वास पैदा करनेके लिये अपने पोते अबूबकरको हुकुम दिया। उसने गारदके दस हजार सवारोको ले वहा जा घोडेसे उतरकर कहा—"तबू गाडो, आग जलाओ, खाना तैयार करो।" इसका प्रभाव तोकतामिशके ऊपर पडा और जब तेमूरकी रिश्वतके कारण उसके झडाबरदारने झडेको नीचा कर दिया, तो उसकी रही-सही हिम्मत भी टूट गई। वह पीछे हटकर गुरजी या लियुवा-नियाके राजा वितुत (वियोल्द) के पास भागा। युद्ध तीन दिनतक होता रहा, जिसमे एक लाख किपचक मारे गये। तेमूरको भारी परिमाणमें रसद और दूसरी चीजें मिली।

युद्ध-क्षेत्रमे ही डेरा डलवा विजयके लिये अल्लाहको धन्यवाद देते तेमूरने सेनामे इनाम बाटे और हर दस आदमीमेंसे सातको शत्रुका पीछा करनेका हुकुम दिया। वह वोल्गातक गये, जिसमें कतलसे बच गये शत्रुओमेंसे कितने ही डूब गये और थोडेसे ही प्राण बचाकर निकल पाये; जिनके भी बीबी-बच्चे, गुलाम और धन-सम्पत्ति तेमूरी सेनाके हाथ लगे। तोकतामिशका रनिवास भी पकडा गया। तेमूरी-सेनाने अजक (क्रिमिया), सेराय, सेरायचुक, हाजीतरखन (अस्त्राखान) तक लूट-मार और ध्वसलीला मचाई। सुवर्ण ओर्दूके लिये यह इतना जबर्दस्त प्रहार था, कि उसके बाद वह फिर अपनी पुरानी स्थिति में नहीं पहुच सका। उसकी जनसख्या बहुत कम हो गई, वोल्गातट उजाड हो गया और शताब्दियोंके परिश्रमसे बनी वहाकी समृद्धि खतम हो गई। तेमूरने उरतुपा (स्तावरोपोल) जिलेके कदुरताके तटपर अपना शिविर गाडा। योद्धाओने यहा विश्राम किया। उनके साथ घोडो, ऊटो, ढोरो, भेडो और तरुण दास-दासियोंकी भारी सख्या थी। रूप-रगमें अत्यत सुन्दर पाच हजार तरुण-तरुणिया तेमूरकी सेवामें गई। लूटका माल इतना मिला कि सारी सेना सतुष्ट हो गई। उरतुपामें छब्बीस दिन रहकर तेमूरने विजयोत्सव मनाया। यहीपर लघुविजय (फतेहनामा-कुचुक) लिखा गया।

इसके बाद तेमूर समरकदकी ओर लौटा। अक्तूबरमे वह सावरानमे था, फिर उतरार होते राजधानी समरकद पहुचा।

यारलीक्त लिये उइगुर अक्षर तथा मगोल भाषा मे २० मई १३९३ ई० की लिखी हुई तोकतामिश-की यारलिग (शासनपत्र) मास्कोमे अब भी मौजूद है, जिससे मालूम होता है, कि १३९१ ई० की भारी पराजयके बाद फिर वह अपनेको सभालने लगा था और तीन-चार वर्षोमें इतना सभल गया, कि तेमूरको फिर उसकी तरफ ध्यान देना पडा।

द्वितीय अभियान (१३९५ ई०)—२८ फर्वरी १३९५ ई० को फिर तेमूरने तोकतामिशके विरुद्ध प्रस्थान किया। उसने अपने पुत्रकी कुछ रानिया सुल्तानिया (ईरान) भेज दी गई और कुछ समरकदमें रखी गई। रास्तेहीन असमानियोंसे दूत भेज तेमूरने तोकतामिशको समझाने-बुझानेकी कोशिश की, लेकिन उसका उत्तर बडा उद्दडतापूर्ण था। दूत लौटकर काकेशसके सानुओंपर काम्पियन

समुद्रसे पाच फरसख (लीग) दूर अपने स्वामीसे आकर मिला। उस वक्त वाम-पक्ष समुद्र-तटसे पहाडके ऊपरतक बिखरा पडा था। अबकी तेमूरी सेनाने काकेशसके चरणोमे कास्पियनके पश्चिमी किनारेका रास्ता लिया था। सेनाको दरबदके दुर्गम घाटीको पार करनेमे दिक्कत नही हुई। तोकतामिशकी प्रजा काइतकने छेडखानी की, जिन्हे तेमूरने भयकर हत्या करके खतम कर दिया, उनके गावोको नष्ट कर दिया। सेना आगे बढती चली। तोकतामिश तेरेक नदीके किनारे मुकाबिलेकी प्रतीक्षामे बैठा हुआ था, लेकिन तेमूरी सेनाको देखते ही वहासे भाग चला। पहिले कुरापर और तेरेकपर तेमूर तथा तोकतामिश एकत्रित हुये थे। २२ अप्रैल १३९५ ई० को दोनोमे युद्ध हुआ। शत्रुके सेनापतियोके आगे बढनेकी खबर पाकर तेमूरने अपनी सत्ताईस सेनाओके साथ आक्रमण कर शत्रुको पीछे हटा दिया। पीछा करते हुये उसके आदमी अधिक दूरतक चले गये, जिसके कारण तोकतामिशकी सेनाने मुडकर जब हमला किया, तो उन्हे तितर-बितर होकर पीछे भागना पडा। यह खबर सुनकर शत्रुने और भी पीछा किया। तेमूर उनपर बाणोकी वर्षा करने लगा। उसका तरकश खाली हो गया। तलवार और भाला भी टूट गये। इसी समय तोकतामिशके सैनिकोने उसे घेर लिया। इस समय शेख नूरुद्दीन और उसके पचास बहादुरोने घोडेसे उतरकर बाणवर्षा करके तेमूरको आड दिया। दूसरे अमीर भी दुश्मनकी तीन गाडियोको पकडनेमें सफल हुये, जिनकी मददसे उन्होने मोर्चा-बदी कर दी। सेना आसपास जमा होने लगी, बाजे बजने लगे। शत्रुने समझ लिया, कि उसका प्रधान शिकार कहा है, किन्तु वह इस मोर्चाबन्दीको नही तोड सका। इसी सम य शत्रुकेदक्षिणपक्षको तेमूरी सेनाने ध्वस्त कर दिया। तो भी तेंमूरके वामपक्षकी स्थिति अच्छी नही थी। शत्रुने उसे तोडकर चारो ओरसे घेर लिया था। अपने कमाडरके हुकुमपर सैनिक घोडेसे उतर अपनी-अपनी ढालोके नीचे घुटने समेटकर बैठ गये। चारो ओरसे वर्षाकी बूदोकी तरह हथियारोके प्रहार होने लगे। इसी समय जहानशाह बहादुर अपने घोडसवारोको लेकर दौडा, और प्रहार करनेवाली शत्रुसेनाके दोनो पक्षोपर टूट पडा। पलडा पलट गया। वह और उसके साथी दूसरे सेनापतिने मिलकर शत्रुके वामपक्षको मार भगाया। फिर केंद्रके साथ सघर्ष आरभ हुआ। किपचक सेनापति यागलिबीने तेमूरी सेनापति उसमान बहादुरको द्वद्वयुद्धके लिये ललकारा। दोनो मैदानमे उतरे। उनके अनुयायियोने भी अपने सेनापतियोका अनुकरण किया। यागलि ी शायद पोलराजा यागेलोन था। सघर्ष भयकर हुआ, किंतु अतमे किपचक सेनाको हारना पडा। तोकतामिश ओगलानो (राजकुमारो) और नोयनो (अमीरो) के साथ भागा। तेमूरी सेनाने उसका पीछा करके भारी सख्यामें किपचकोको तलवारके घाट उतारा। जो बदी हाथमे आये, उन्हें भी पीछे प्राणोसे हाथ धोना पडा। इस विजयसे प्रसन्न हो तेमूरने सिर नगा करके घुटने टेक अल्लाहके सामने दुआ पढी। अमीरोने तेमूरके ऊपर रत्नोकी बरसा की। तेमूरने लूटके माल और अपने पासके धनमेंसे भी सैनिकोमें खूब उदारतापूर्वक इनाम बाटा।

तोकतामिशका पीछा करते हुये वोल्गाके किनारे-किनारे तेमूर उकाकतक गया और वोल्गाके तूरानू घाटपर थोडी देर ठहरा। उसने उरुस खानके पुत्र तथा अपने शरणागत कोइरिअक ओगलान को सुनहली खलअत और कीमती कमरबद प्रदान करके उज्बेक रिसालेके साथ किपचकोका खान बनाया। तोकतामिश वोल्गारोके जगलोमें भागा। पहले ही अभियानवाले घाटसे वोल्गा-पार हो तेमूर सोने, चादी, समूर और दूसरे बहुमूल्य मृगछालो, रत्न-मणि, मोतीकी अपार राशि तथा भारी सख्यामे सुन्दर लडके-लडकियोको लिये दनियेपरकी ओर चला। उसके किनारे मङकिरमान स्थानमे जाकर बरकियारोक ओगलानके डेरेपर जा पडा और उसे बिल्कुल नष्ट कर दिया। बरकियारोक मुश्किलसे जान बचाकर भागा। पीछा करते तेमूरी सेनाने दोनके तटपर उसके रनिवासको जा पकडा, लेकिन बरकियारोक भाग निकला। तेमूरने ओगलानके रनिवासके साथ अच्छा बर्ताव किया, और घोड तथा दूसरी भेंटे दे उसे बरकियारोकके पास भेज दिया। मीराशाह अपनी सेना लेकर दूसरी ओर गया हुआ था। उसने एलात्ज किलेको सर किया। मास्कोका तरुण महाराजुल बासिली अपने चचा ब्लादिमिरको राजधानी सौप ओका नदीके पीछे कलोम्नाकी ओर भाग गया। वहासे उसने महासवराजको लिखा, कि कुमारी (मरियम) देवीकी प्राचीन मूर्तिको मास्को ले जाओ, जिसमे देवीके प्रतापसे नगरकी रक्षा हो।

भक्तोंकी दो पातियोंके बीचमे मूर्ति लाई गई। लोग चिल्ला रहे थे—"भगवान्‌की मा, रूसको बचाओ।" मास्कोके एसम्प्सन गिर्जेमें कुमारीका बड़ा स्वागत किया गया। तेमूर दोनसे कुछ दूर आगे बढ़कर लौट गया। भगवान्‌की माने मास्कोको बचा लिया, नहीं तो तेमूरने उसकी वही दशा की होती, जो कि उसने चार वर्ष बाद १३९८-९९ ई० मे दिल्लीकी की। तेमूरने कुमारीके प्रतापसे नही, बल्कि शरद् और हेमन्तके कठोर जाड़ेके भयसे वहा और रहना पसद नही किया। वह दक्षिणमे चलकर अजक (क्रिमिया) पहुचा। लोगोकी सारी प्रार्थना व्यर्थ गई। उसने मुसलमानोको अलग करके बाकी लोगोको एक ओरसे कटवा दिया और शहरमें आग लगवा दी। फिर कूबान और जार्जियामें सत्यानाश मचाने आगे बढ़ा। काकेशसके युद्धको उसने धर्मयुद्ध (जहाद) घोषित किया था। भारतकी भाति ही उसने इस देशको भी काफिरोको मिटाकर शुद्ध करना चाहा। उनकी बस्तियोको तेमूरी सेनाने जला दिया, उनके गिर्जों और मूर्त्तियोको नष्ट कर दिया। हाजीतरखन (अस्त्राखान) नगरमे विश्वासघातकी खबर पा जाड़ोमे तेमूर वहा पहुचा। लोगोने वोल्गाके पानीकी बर्फ जमाकर शहरके चारो ओर प्राकार बना दरवाजे काट रक्खे थे, लेकिन तेमूरके सामने बर्फका मोटा दुर्ग नही ठहर सका। भीतर घुस मनुष्यो, पशुओ और सपत्तिको हटानेका हुकुम दे उसने नगरमे आग लगा दी। वहा से तेमूर किपचकोकी राजधानी सराय-बेरेकमें पहुचा। वहा भी नागरिकोको भेड़ोकी तरह जबह करके शहरमे आग लगा दी।

इस प्रकार किपचक देशको पूरी तौरसे बरबाद करके तेमूर दरबद और आजुरबाइजानके रास्ते लौटा। वह अपने साथ बहुतसे किपचकोको भी ले आया था, जिनमें बोलगारीके पासवाले बोलगातटके निवासी कराकल्पक (काली टोपी) भी थे, जिनकी सताने आज अराल-समुद्रके पास कराकल्पकियो के स्वायत्त-गणराज्यमें बसी हुई है।

इसके बाद तेमूर बहुत नहीं जिया, और १३९९ ई० मे मर गया। इसका वर्णन हम यथास्थान करेंगे।

तेमूरके लौट जानेपर तोकतामिश फिर १३९८ ई० में सरायबेरेक पहुचा, लेकिन तेमूर कुतुलुकने तबतक उसे सभाल लिया था। कुतुलुकने तोकतामिशको मार भगाया। वहासे अपनी बीबी, दो पुत्रो, खजाने और बहुतसे अनुयायियोंके साथ भागकर वह कियेफ गया। सुवर्ण-ओर्दूका वह अंतिम महान् शासक था। जिस तरह उसके वैभवका सितारा चमका, उसी तरह वह अस्त भी हो गया।

१३ कोइरिजक ओगलान नूजी, ओगलान, उरुस-पुत्र (१३९६ ?)

नूजी ओगलान उस समय तेमूर-लगके दरबारमें रहता था, जबकि तेमूरने किपचकोपर द्वितीय अभियान किया। एक इतिहासकारके अनुसार तोकतामिशकी पराजयके बाद तेमूरने इसे जू-छिका उलुस ७७७ हि० (७ जून १३७५–२० मई १३७६ ई०) में दे दिया, लेकिन इस सनमे गलती मालूम होती है, क्योंकि तेमूरका दूसरा अभियान १३९५ ई०मे और पहला अभियान १३९० ई० मे हुआ था।

१४ तेमूर कुतुलुक, तेमूरबेक-पुत्र (१३९५–१४०० ई०)

तेमूर-खाके सबसे पहले आक्रमणके समय ७८९ हि०, (१० जून १३७७ ई०–२९ जून १३७८ ई०) यह तेमूर-खाके साथ था और तोकतामिशकी प्रथम पराजय होनेके बाद ७९२ हि० (६ दिसम्बर १३८९ ई०–२८ नवम्बर) में तेमूरने इसे उसके उलुसका खान बनाया। द्वितीय अभियानमें तेमूरके किपचकसे हटते ही तोकतामिशसे इसका सघर्ष हुआ। नोगाई सरदार इदिकू कुतुलुकके पक्षमें था। यह तोकतामिशको तो मार भगानेमें सफल हुआ, लेकिन उसके पूर्वी भागपर कोइरिजक उरुस-पुत्रका अधिकार बना रहा। १३९७ ई०में लिथुवानी राजा वितूतने तेमूर कुतुलुकके ऊपर आक्रमण किया और कई हजार तातारोंको उनके स्त्री-बच्चोंके साथ पकड़ ले गया। ये तातार पीछे वास्तव और कोरी बीचने बन गये। ईसाइयोंके बीचमें इस्लामको कायम रखना उनके लिये मुश्किल था, इसलिये वह दूसरी पीढ़ीमें जातियोंमें मिश्रित होकर ईसाई बन गये, और केवल तातार उनका नामभर रह गया। तेमूर कुतुलुकने बड़ी जल्दी फिर अपनी शक्तिको इतनी मजबूत कर ली, कि उसने वितूतसे

माग की, कि अपने राज्यके कियेफ नगरमे भागे तोकतामिशको मेरे पास भेज दो। वितूतके इन्कार करनेपर उसने आक्रमण कर दिया और ५ अगस्त १३९९ ई० को लिथुवानी और किपचक सेनाओ मे भारी लडाई हुई। वितूतको अपने बारूदी हथियारोपर बहुत भरोसा था, जिनका आविष्कार मगोलोके बारूदी हथियारोके सहारे हालमे ही युरोपमे किया गया था। लेकिन उस समयकी तोपे अभी बहुत आरभिक अवस्थामे थी, दागनेसे पैदा हुई गर्मीको उनकी धातु बर्दाश्त नही कर सकती थी। कुतुलुककी सेनाने पीछे जाकर लिथुवानी पक्तिको तोड दिया। लेकिन, तोकतामिश वहासे निकल चुका था, वितूतको भी जान लेकर भागना पडा। लिथुवानी सेना नष्ट हो गई। किपचकोने भगोडोका पीछा कर कितनो हीको मारा और कितनोको बदी बनाया। तारतारोने लुत्स्कतक लिथुवानी राज्यको लूटा। उन्होने कियेफ नगरपर भारी जुरमाना लगाया। इसके बाद सात सालतक और तोकतामिश इधर-उधर भटकता फिरा। अन्तमे वह पश्चिमी साइबेरियाके तुमान-जिलेमे शादीबेकके हुकुमसे इदिकूके हाथो मारा गया।

कुतुलुक ८०२ हि० (३ सितबर १३९९ ई०–१२ अगस्त १४०० ई०) मे वोल्गाके किनारे कजान नगरमें मरा।

१५. शादीबेक, तेमूरबेक-पुत्र (१४००-१४०८ ई०)

किपचकोका पूर्वी भाग अब भी कोइरिअकके हाथमें था। उसके पश्चिमी भागपर शादीबेक शासन करने लगा। बीचमे हुई गडबडीके कारण शोख होकर मास्कोके महाराजुल वासिलीने कई सालोसे कर नही भेजा था। १४०५ ई० मे कर उगाहनेके लिये खानका दूत मास्को पहुचा। तेमूर कुतुलुकने लिथुवानी राजाको पाठ पढाकर अपनी काफी धाक जमा ली थी, इसलिये महाराजुलने दूतकी भी भेट-पूजा की और कर भी बेबाक कर दिया। ८०८ हि० (२३ दिसबर १४०५–२१ जनवरी १४०६ ई०) मे शादीबेकका अमीर इदिकू ख्वारेज्मको तेमूरियोसे छीन अमीर अकाको वहाका राज्यपाल बना लौट गया। शायद इसी साल ईद-रमजानके दिन इराकियोकी एक बडी जमात तेमूरी मिर्जा खलील सुल्तानसे नाराज हो गई और समरकद छोडकर ख्वारेज्म चली गई। तुगा तेमूरखानके पौत्र दुकमान बादशाहके पुत्र पीरबादशाह तेमूरी सुल्तान अबूसईदके डरसे भागकर माजन्दरान (ईरान) में भाग गया था। वह वहासे ख्वारेज्ममे आ गया, जब उसने देखा कि वह तेमूरियोके हाथसे निकल गया है। इपीर बादशाहको इराकियोने ख्वारेज्मका बादशाह बनाया और मिर्जा खलीलके दिये हुये धनको उसे भेट दे वह माजन्दरान चले गये। ख्वारेज्मका हाकिम अब भी अका था।

शादीबेक ८११ हि० (२७ मई १४०८–१५ मई १४०९ ई०) मे मर गया।

१६ पूलाद खान, तेमूरबेक-पुत्र (१४०८–१४१० ई०)

भाईकी जगहपर पूलाद गद्दीपर बैठा और अमीर इदिकू सारी सल्तनतका वजीर-आजम बना। उसने अकाको लौटा उसकी जगह बगजलेको ख्वारेज्मका राज्यपाल बनाया।

पश्चिमी राजा कही खानोकी शक्तिको कमजोर न समझ ले, इसलिये १४०९ ई०की शरद्में तारतारोने दक्षिणसे द्नियेपरकी ओर बढते लिथुवानियापर आक्रमण किया। मास्कोके महाराजुलने कर बाकी रखखा था और ऊपरसे तोकतामिशके पुत्रको भी शरण दी थी। पूलादने इस अपराधके लिये दड देनेके वास्ते एक बडी सेना मास्कोके विरुद्ध भेजी। महाराजुल वासिली केवल तोपो और जाडेपर भरोसा कर सकता था, इसलिये रानीको लेकर वह कस्त्रोमा भाग गया। दिसबर १४१० को तारतार सेना मास्कोके सामने पहुची। तीस हजार सेना महाराजुलके पीछे पडी, और उसने पेरियेस्लाव्ल, ज्ञालेस्की, रोस्तोफ, दिमित्रोफ, सेरपूकोफ, निजनी-नवोग्राद और गोरदेत्स नगरोको लूटकर जला दिया। एक बार फिर रूसियोको बा-तू और तोकतामिशके दिन याद आने लगे। रूसी इतिहासकार करमाजिनके अनुसार– "अभागे रूसी प्रतिरोध करनेकी जगह भेडोके झुडकी तहर भेडियोद्वारा पीछा किये जा रहे थे।" उनमेंसे कुछ कतल किये गये, कुछ तारतार धनुर्धारियोके बाणोंसे बिंधे। तरुण दास बनाने-बेंचने के लिये पकड

लिये गये, सयान कपडे छीनकर नगे करके जाडेमे मरने के लिये छोड दिये गये। आदमियोको एक दूसरेके साथ जजीरोमे वाध दिया गया और एक तारतार चालीससे अधिक आदमियोको कावूमे रख सकता था। लेकिन, मास्कोका मुहासिरा सफल नही रहा। दूसरा चारा न देखकर इदिकू तीन हजार रूवल जुरमाना लेकर लौट गया। लौटते वक्त उसने र्याजन नगरको लूटा। इदिकूने इसी समय महाराजुलको पत्रमे लिखा था —

"इदिकू, राजुल-पुत्रो और राजकुमारोसे सलाह लेनेके वाद वासिलीको अभिनदन भेजता है। यह मालूम करके, कि तुमने तोकतामिशके पुत्रोको शरण दी है, महान् खानने मुझे आज्ञा दी, कि तुम्हारे विरुद्ध चढाई करू। तुम हमारे व्यापारियोके साथ ही दुर्व्यवहार नही करते, वल्कि तुमने हमारे दूतोका भी वडा अपमान किया है। अपने वूढे आदमियोंमे पूछो, कि क्या पहले कभी ऐसा होता था। उस समय रूस अपनी राजभक्तिके लिये मशहूर था। वह खानका पवित्र सम्मान करता था और नियमपूर्वक कर अदा करता था। हमारे व्यापारियो और दूसरोके प्रति सम्मान प्रदर्शित करता था। इसकी जगह तुमने क्या किया ? जव तेमूर कुतुलुक सिंहासनपर वैठा, तो क्या तुम स्वय आये या तुमने अपने राजकुमारो या अपने एक वायरको भी भेजा ? तेमूरके मरनेके वाद शादीवेकके आठ वर्षोके शासनकाल में क्या तुमने एक वार भी आज्ञाकारिताका कोई भी काम किया ? और अतमें पूलाद खानके तीन वर्षोंके सिंहासनपर वैठनेके कालमे क्या तुम या जेठे रूसी राजपुत्रोमेंसे कोई अपने कर्त्तव्यको पालन करनेके लिये ओर्दूमें गया ? तुम्हारे सारे काम अपराधपूर्ण हुये। जव फेदोर कोसका जीता था, तो सारे रूसी उसकी सलाह मानकर अच्छा वर्ताव करते थे, लेकिन तुम अव उसके पुत्र जानकी वात नही मानते, जो कि तुम्हारा कोषाध्यक्ष और मित्र है। तुम वडोकी सलाह माननेसे इन्कार करते हो, जिसका परिणाम देख ही रहे हो, तुम्हारे देशकी वरवादी हो रही है। अगर तुम इससे वचना चाहते हो, तो अपने सवसे वुद्धिमान् वायरो—इलिया, पीतर, जान निकितिच आदिकी वात मानो और अपने किसी वडे अमीरके साथ वह भेट भेजो, जिसे रूस जानीवेकके पास भेजा करता था। रूसी लोगोकी गरीवीकी वाते वताकर तुमने जो खानको वहलाना चाहा है, वह सव झूठ है। हम तुम्हारे देशके कोने-कोनेको देख चुके है। हम जानते है कि हर दो हलके ऊपर तुम्हें एक रूवल कर मिलता है। यह पैसा कहा जाता है ? हम तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार नही करना चाहते। तुम क्यो एक अभागे भगोडेकी तरह काम कर रहे हो ? सोचो और अकलकी वात मानो।"

लेकिन महाराजुलके ऊपर इदिकूके उपदेशका कोई असर नही हुआ, क्योकि वह किपचककी भीतरी हालतको अच्छी तरह जानता था।

८१३ हि० (६ मई १४१०–२४ अप्रैल १४११ ई०) मे पूलाद खानको तेमूर खानने मार भगाया।

१७. तेमूर खान, तेमूर कुतुलुक-पुत्र (१४१०-१४११ ई०)

इतिहासकार अब्दुर्रजाक समरकदी (१४२२ ई०) के अनुसार * यह तेमूर कुतुलुक खानका पुत्र था, लेकिन शरफुद्दीनने इसे शादीवेकका पुत्र कहा है। शायद यह तेमूर कुतुलुकका ही पुत्र था। पूलाद खानके वक्त राज्यका हर्ता-कर्ता अमीर इदिकू था, इसलिये उसको दवाये विना तेमूर अपनेको सुरक्षित नहीं समझता था। इदिकू भागकर ख्वारेज्म जा तैयारी करने लगा। तेमूरने अजक वहादुर और गजनके नेतृत्वमे सेना भेजी। ख्वारेज्म-शहर (उरगज) से दस दिनके रास्तेपर साम नामक स्थानमें लडाई हुई। ख्वारेज्मका राज्यपाल वगजले मारा गया और इदिकू हारकर ख्वारेज्म भाग गया—यह शायद ८१४ हि० (२५ अप्रैल १४११—अप्रैल १४१२ ई०) के आरभकी वात है। तेमूरके सेनापति दनिला और गजन भी पीछा करते हुये ख्वारेज्म पहुचे। उन्होंने ६ महीना इदिकूको मुहासिरेमे रक्खा। इसी समय पता लगा, कि तोकतामिश-पुत्र जलालुद्दीनने तेमूरको हराकर गद्दी छीन ली।

---

* 'मतल-उस्-सादैन-व-मज्म-उल्-वहरैन्"

१८. जलालुद्दीन, जलाबेर्दी, सेलेनी, तोकतामिशका ज्येष्ठ पुत्र (१४१४ ई०)

जलालुद्दीनने गद्दी सभालते ही ख्वारेज्ममें लडते किपचक सेनापतिके पास पैगाम भेजा, कि इदिकू हमारा दुश्मन है, उसे पकड लाओ। फिर उसने दूसरा सदेश भेजा, कि अगर इदिकू अपने पुत्र सुल्तान महमूद तथा उसकी पत्नी (जो कि जलालकी वहन भी थी) को मेरे पास भेज दे और सिक्का तथा खुतवा मेरे नामसे जारी करे, तो उससे लडाई मत करो। अमीर गजन भी जलालुद्दीनका वहनोई था। उसने सुलह करनी चाही। उधर दकिना तेमूर खानका वहनोई था, इसलिये उसने दूसरे सदेशकी ओर ध्यान नही दिया। इसी समय तेमूरखानके फिर लौट आनेकी खवर मिली। गजनने दकिनाको शराव पिला मतवाला कर अपने नौकर जान ख्वाजाको भेज तेमूरको मरवा दिया। यह खवर सुनकर जलालुद्दीनने अमीर गजनको वहुत-वहुत धन्यवाद देते हुये सदेश भेजा, कि गजन खा मेरा अमीर है, उसका हुकुम मानो। अमीर दकिनाने तेमूरके लिये लोगोको वहकाया। लेकिन ख्वारेज्मका मुहासिरा और जोरका हुआ। अमीर खिजिर ओगलान राजकुमार होनेसे दर्जेमे सवसे वडा था। उसके वाद दकिना फिर गजनका दर्जा था। किपचक सेनापतियोने अमीर इदिकूसे सुलह कर लेना ही अच्छा समझा, क्योकि जलालुद्दीन खानकी वैसी ही आज्ञा थी। अमीर इदिकू सुलह करनेके वाद शहरसे वाहर निकल आया। खूव एक दूसरेकी जियाफतें होने लगी। सेनापति मुहासिरा हटाकर किपचक भूमिकी ओर लौटे जा रहे थे। इसी समय वलूकिया गावमें उनकी कजुलई वहादुरसे मुलाकत हुई। उसने विना सर किये ही लौटनेकी वात लेकर ताना मारा—"ख्वारेज्मको दखल किये विना कैसे लौटे जा रहे हो ?" अमीरोने कहा—"हमने सात महीना मुहासिरा करके युद्ध किया, लेकिन शहर सर नही कर सके, तेरे पास तो चार हजारसे वेशी मर्द भी नही है। लौटनेकी सलाह हुई। हमने सुलह कर ली। इदिकू अपने पुत्रको खानके पास (जामिन) भेजेगा।"

कजुलईने उत्तर दिया—"मै अकेला ही इदिकूके लिये काफी हू" और वह गर्वके साथ ख्वारेज्मकी ओर चल पडा। अमीर इदिकूको भी खवर लग गई। सेना कम होनेसे वह चालसे काम लेना चाहता था। वह दिनमें छिपा रहता और केवल रातको सफर करता। नजदीक आनेपर इदिकूने अपनी सेनाको दो भागोमें वाटकर एक भागसे कहा, कि तुम थोडा लड करके पीछे हटो और रास्तेमें पुराने नम्दोके वधे वोगचोको फेंकते आओ। युक्ति काम कर गई। कजुलईकी सेना वोगचोको वटोरनेके लिये विखर गई, इसी समय इदिकू टूट पडा। कजुलई मारा गया। इदिकूने उसके सिरको झडे-पताके आदिके साथ ख्वारेज्म भेजा। कजुलईके भगे हुये आदमियोने जव अपने सेनापतिके झडेको चलते देखा, तो समझा कि वह विजय-यात्रा करते हुये ख्वारेज्म जा रहा है, तो वह छिपी जगहोंसे आकर वहा पहुचे और इदिकूके जालमें हजारो आदमी फस गये।

इतिहासकार गफ्फारी (मृत्यु १५७६ ई०) के अनुसार * "जलालुद्दीन और करीमवरदी कपक जव्वारवर्दी, मोहम्मदखान और दूसरे राजकुमारो जैसोने कुछ समयतक हकूमत की।" इस तरह अव किपचककी राजावली जल्दी-जल्दी वदलते खानोके कारण गडवडीमे पड गई। कुछको छोड-कर यह कहना मुश्किल है, कि कौन खान किसके वाद गद्दीपर वैठा।

१९. करीमबर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१४ ई०)

करीमबर्दी कुछ दिनोतक गद्दीपर रहा। शायद इसे जव्वारवर्दीने मार डाला, जिसका भी शासन थोडे ही दिनोतक रहा।

२०. चिङ-गिज ओगलान (१४१४ ई०)

समरकदीके अनुसार चिङ-गिज ओगलानको जव्वारवर्दीने हराकर स्वय गद्दी संभाली।

---

* "नस्ख-जहानारा"।

२१. जब्बारवर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१७ ई०)

इसीके समय ८१५ हि० (१३ अप्रैल १४१२–२ अप्रैल १४१५ ई०) में तेमूर-लगके पुत्र शाहरुख ने ख्वारेज्मके ऊपर सेना भेजी, जिसमें खुरासानके अमीर अली, और अमीर इलियासखोजा दोनो सेनापति थे। अन्तर्वेदसे भी पाच हजारकी सवार सेना ले सेनापति मूसा आया। दोनो सेनाये ख्वारेज्म-मे आकर मिल गई। इस समय इदिकूका पुत्र मुवारकशाह ख्वारेज्मका राज्यपाल था, जिसने सेनाकी खवर पाकर डरके मारे वापके पास भाग जाना पसन्द किया। मुल्लाओ और नगरके वडे-वडे लोगोने नगरको शाहरुखकी सेनाके हाथमें समर्पण कर दिया। दूसरे सेनापति लौट गये, अमीर शाह-मुल्क कुछ समयतक देशके सुप्रवन्धके लिये ठहरकर ८१४ हि० (३ अप्रैल १४१३—२२ मार्च १४१४ ई०) को राजधानी हिरात चला गया।

२२ दर्विस खान

शायद यह उरुसखान-वशज था। इसने थोटे ही दिनो राज किया।

२३ चकरा खान (१४१६ ई०)

यह उरुस खानका वशज था। यह कुछ समयतक तेमूर-पुत्र मीराशाह और पौत्र अवूवकरके दरवारमें रहा था। अमीर इदिकूने इसे किपचक वुलाया। अवूवकरने ६ हजार सवार साथ कर दिये, जिनके साथ सिल्ट वरगर नामक एक युरोपीय सैनिक भी था। गुरजी, शेरवान, दरवद, अस्त्राखान होते यह सेना सेतजुल्तेत सराय (?) पहुची। वहा कितने ही ईसाई रहते थे, जिनका एक विशप भी था। सिल्ट वरगर ने लिखा है, कि वहाके पादरी लैटिन जानते थे, लेकिन प्रार्थना और गीत तारतार भाषामें करते थे। इदिकूके साथ चकरे और सिल्ट वरगर भी इपविस (सिविर) की ओर गये—यही साइवेरिया नाम का सवसे पुराना उल्लेख मिलता है। सिल्ट वरगरका कहना था, कि साइवेरियामें तीस दिन लवा एक पहाट है (शायद उसका अभिप्राय उराल पर्वतसे है)। उसके आगे निर्जन भूमि पृथिवीके छोरतक चली गई है। इस पहाटके निवासी जगली तथा दूसरोसे भिन्न है। केवल उनके हाथ और चेहरोपर केश नही होते, नही तो सारा शरीर केशोसे ढका होता है। वह पहाडोमे जानवरोका शिकार करते है और पत्ता तथा घास जो भी मिलता है, उसीपर गुजारा करते है। इलाकेके शासकने इस जगली जातिकी एक स्त्री, एक पुरुप एव गदहेसे-वडे-नही एक जगली घोडे तथा दूसरे जानवर इदिकूके पास भेजे थे। मार्कोपोलोकी तरह सिल्ट वरगरने लिखा है, कि वहा कुत्ते हैं, जो गाडी खीचते हैं। इन गाडियोमें समूरी छाले भरे रहते है। ये कुत्ते गदहोके वरावर होते है और जगली लोग इन्हे खाते भी हैं। निवासियोको उगिने (उगरी) कहा जाता है। जव उनमें कोई अविवाहित तरुण मर जाता है, तो उसे वढिया कपडा पहनाते हैं, भोज करते है, फिर लाशको अर्थीपर रखकर ऊपर सुन्दर चदवा टागकर जलूस निकालते है। आगे-आगे तरुण-जन सुन्दर पोशाक पहने चलते है, पीछे-पीछे मा-वाप और दूसरे सवधी रोते हुये अनुगमन करते हैं। खाने-पीनेकी चीजोको कब्र पर ले जा वही श्राद्ध-भोज करते है। चारो ओर वैठे तरुण खाते-पीते हैं, और सवधी रोते रहते है। उस भूमिके आदमी रोटी नही खाते, मटर छोडकर वहा कोई अनाज नही होता।

चकरा नौ मास ही गद्दीपर रहा, फिर उलुक मोहम्मदने आक्रमण करके उसे भगा इदिकूको भी वदी वना लिया।

२४ किवेक, कपक, तोकतामिश-पुत्र (१४२२ ई०)

उलुग मोहम्मद स्वय गद्दीपर न वैठकर दूसरोको राजा वनाता रहा, इसीसे किवेकको भी पश्चिमी किपचककी गद्दीपर वैठनेका मौका मिला। इसी समय अपने पिता कोइरियकके मरनेपर वोरक पूर्वी किपचक-सिहासनपर वैठा। १४२२ ई० में उसने किवेकको हराया, लेकिन दूसरे साल नई सेना एकत्रित कर किवेक फिर लडनेके लिये लौटा।

२५ उलुक मोहम्मद खान

यह तूका-तेमूर-परिवारका और उरुसखानियोका विरोधी था । इसीने बोरकखानको हराया ।

२६. सैयद अहमद खान

शायद यह उलुक मोहम्मदके बाद गद्दीपर बैठा। बच्चा ही था, जबकि अमीरोने इसे खान बनाया, जिस पदपर वह सिर्फ पैतालीस दिन रहा ।

१७ मार्च १४१६ ई० को मुगीसुद्दीन उलुगबेक (शाहरुख-पुत्र) का डेरा खोजन्द नदी (सिरदरिया) के तटपर शाहरुखिया नगरके सामने था। इसी समय ख्वारेज्मसे खबर मिली, कि जब्बारबर्दीने चिङ-गिज ओगलानको भगा उज्बेक—उलुसको अपने हाथमे कर लिया है। मिर्जा उलुगबेक सिर-दरिया (सेहून) पर पुल बनवा सफर महीने (३१ मार्च—२८ अप्रैल १४१६ ई०) के अन्तमें समरकद पहुच गया । उज्बेक-देश (दश्तेकिपचक) से भागकर आये ख्वाजा लाकके पुत्रोने प्रार्थना की, कि उज्बेक-देश बरबाद हो रहा है, उसे बचाये ।

२७. मोहम्मद खान तोकतामिश-पुत्र (१४२२-१४२५ ई०)

शायद ८२२ हि० (२८ जनवरी १४१६—१६ जनवरी १४२० ई०)मे (छिङ-गिस् ओगलानका सबधी) बोराक ओगलानने उज्बेक (किपचक) राज्यसे भागकर मिर्जा उलुगबेक गूरगानके पास आ "हस्तचुम्बन" का सौभाग्य प्राप्त किया। उलुगबेकने उसपर बहुत कृपा दरसाई। कुछ समय वह समरकदमें उसके पास रहकर फिर अपने देश लौट गया । मिर्जा उलुगबेक भी ताशकदसे आगे कूच करके बुरलकके पास पहुचा। वहा उसे उज्बेकोकी ओरसे भागकर आये बलखू नामक आदमी ने उज्बेक-राज्यकी बरबादीकी खबर दी, जिसका समर्थन वहासे आये व्यापारियोने भी किया। इससे मालूम होगा, जू-छि-उलुस या दश्तेकिपचक अब उज्बेक देश कहा जाने लगा था।

अब्दुर्रजाक समरकदी शाहरुखके समय "वकाया-निगार" (घटना-लेखक) था । उसने ८२४ हि० (६ जनवरी—२५ दिसबर १४२१ ई०) के "वकाया" (घटनाओ) को लिखते हुये बतलाया है—"सुलतान केशजीने कराबाग (ईरान) से दश्तेकिपचकमे जा मुहम्मदखानकी अधीनता स्वीकार की। खानने उसके साथ बडा अच्छा बरताव किया और शाहरुखकी सल्तनतके प्रति अपना सद्भाव प्रकट किया । सुल्तान केशजी वहासे जीकदा महीने (२८ अक्तूबर—२६ नवम्बर) को लौटा। यद्यपि उत्तरी घुमन्तुओ-में आपसमें खूनी गृह-कलह छिडा हुआ था, लेकिन उसके कारण दक्षिणके ग्रामो-नगरोके निवासी निश्चिन्त नही रह सकते थे।" गृह-युद्धोके कारण भी उत्तरके घुमन्तुओका टिड्डीदल दक्षिणकी ओर प्रस्थान कर सकता था। समरकदीने ८८५ हि० (२६ दिसबर १४२१—१४ दिसबर १४२२ ई०) के "वकाया" में फिर लिखा है—"दश्तेकिपचकसे उज्बेक विलायतके बादशाह मुहम्मदखानके पाससे आलमशेख ओगलान और पूलाद अपने साथ शिकारी बाज, घोडे आदि उपहार लेकर आये। शाहरुखने प्रति-उपहार रूपमें उन्हें सोना, घोडे, कुलाह, कमरबद आदि खानके लिये तथा एलचियोके लिये भी उचित इनाम दिये।" इससे मालूम होता है, कि मुहम्मदखान और शाहरुख दोनो आपसम अच्छा सबध बनाये रखनेकी कोशिश कर रहे थे। ८२६ हि० (२ नवम्बर १४२६—२१ अक्तूबर १४२७ ई०) के "वकाया" में लिखा है—शाहरुख कुछ दिनो ग्रीष्म-निवासके वास्ते बदगिस इलाकेमे गया था, इसी बीचमे शाहरुखका नौकर ख्वारेज्म-राज्यपाल (अमीर) ने ख्वारेज्मसे आकर निवेदन किया, कि बोरक ओगलानने मुहम्मदखानके ओर्दूको अपने हाथमे कर लिया, उज्बेक उलुसका अधिकाश बोरककी ओर हो गया । लेकिन जान पडता है, १४२५ ई० मे भी अभी मुहम्मदखानके शासनका बिल्कुल अत नही हुआ था, क्योकि ८३० हि० (२ नवम्बर १४२६—२१ अक्तूबर १४२७ ई०) के "वकाया" में लिखा है, कि ८२८ हि० (२३ नवम्बर १४२४—१२ नवम्बर १४२५ ई०) मे बोरक ओगलानने मुहम्मदखानके ओर्दूपर अधिकार कर लिया। सारा उलुस उसके अधीन हो गया।

खानोके इस परिवर्तनसे मालूम होगा, कि अब तोकतामिशके पुत्रो और पौत्रोका आपसमें संघर्ष चल रहा था। एकबार फिर उरुसके पौत्र बोरकने सिंहासनपर अधिकार जमाया।

बोरक खान, बुर्राक, कुइजी-पुत्र (१४२५–२८ ई०)—बोरकको यह सफलता दक्षिणमे मिली थी। तोकतामिशके बाद उसकी सतानो और तेमूरकी सतानोमे आपसमे पैतृक वैमनस्य चलता रहा। दक्षिणने उरुसखानकी सतानोका पक्ष लिया और मिर्जा उलुगबेककी सहायतासे बोरकको सफलता मिली। लेकिन सफल घुमन्तू सरदार कभी कृतज्ञता माननेके लिये तैयार नही होते, यह बात किसीसे छिपी नही है। राजगद्दी सभालनेके बाद ही ८२६ हि० में वह मिर्जा उलुगबेककी सीमापर अवस्थित सिगनाक नगरमे आया। इससे पहले ८२३ हि० (१७ जनवरी १४२०—५ जनवरी १४२१ ई०) मे वह उलुगबेकके पास शरणार्थीके तौरपर आया था और उलुगने उसे शिक्षा और सहायता देकर विलायत-उज्बेक भेजा था।

तोकतामिशकी तरह बोरक खानने दक्षिणकी ओर मुह फेरनेसे पहले रूसकी ओर विजय-यात्रा की थी। १४२६ ई० मे तारतारोंने र्याजन नगरको लूटा। तीन साल बाद कजानके तारतारोने गालिच, कोस्त्रोमा आदि नगरोको बरबाद किया। १४३० ई० में तारतार राजकुमार हैदर लिथुवानिया के भीतर घुस गया और उसने तीन सप्ताह मुहासिरा करनेके बाद मत्सेन्स्कको सर किया। रूसी अब कर रोकनेकी हिम्मत नही कर सकते थे। १४३७ ई० मे कुचुक (छोटे) मुहम्मदने उलुक मोहम्मद खानको मार भगाया। उलुकने रूसमे जाकर शरण ली, लेकिन कुचुकने उसे वहासे निकलनेके लिये मजबूर किया। उलुक बुलगारोकी भूमिमे चला गया, वहा कजान नगरको उसने फिरसे बसाया और कजानके खान-वंशकी स्थापना की। इससे मालूम होगा कि अभी किपचकोकी शक्ति बिल्कुल खतम नही हुई थी।

बोरक खानने सिगनाकमे आकर मिर्जा उलुगके पास यह कहकर एलची भेजा—"आपकी सहायता और शिक्षासे मुझे सिंहासन मिला, इसके लिये मैं बहुत-बहुत कृतज्ञ हू, लेकिन सिगनाक हमारे श्वेत-ओर्दू वशकी राजधानी है, उसे हमे दे दिया जाय।" इधर वह उलुगखानसे चिकनी-चुपडी बाते कर रहा था और उधर उसके आदमी सिगनाक इलाकेपर हाथ सफा करनेमे लगे थे। वहाके तेमूरी हाकिम अमीर अरसलन ख्वाजा तरखनने उलुगबेगके पास खबर भेजी, कि ओगलानके नौकर (अफसर) इलाकेको बरबाद कर रहे है, अपनेको पूरा हाकिम समझकर सरकारका मजाक उडा रहे है। उलुगबेकने भारी सेना जमा करके उधर कूच करनेका निश्चय किया, लेकिन उसके बाप शाहरुखने युद्धकी बरबादीको बतलाते हुये उसे सेना करने से रोकते हुये भी राजकुमार (मिर्जा) मुहम्मदकी अधीनतामें सेना दे अतर्वेदकी ओर भेजा। दोनोंने १७ फर्वरी १४२७ ई० को समरकदकी ओर प्रस्थान किया और वहा जाकर बडे भाईकी सेनासे मिल गया। संयुक्त-सेनाने आगेकी ओर कूच किया। इतनी भारी सेनाको देखकर बोरक एक बार डर गया, लेकिन वह अपने पूर्वजो की भूमि लेने आया था, क्या मुह लेकर पीछे लौटता? किपचक-सेना एकाएक शत्रुके ऊपर टूट पडी। मिर्जा उलुगबेगको अपनी सख्याका अभिमान था, लेकिन किपचकोंने उसके छक्के छुडा दिये। पासा पलटने लगा। सैनिक उलुगबेकके घोडेकी बाग पकडकर उसे मैदानसे बाहर लाये। सारी सेना हारकर समरकदकी ओर भागी। उज्बेकोके हाथमे भारी सपत्ति आई। इतनी घबराहट मच गई, कि लोग समरकद नगरके दरवाजोको बद करने लगे। उन्हें बहुत समझा-बुझाकर रोका गया। बोरककी सेनाने तुर्किस्तान और अतर्वेदके सारे इलाकोको लूटा और बरबाद किया। यह खबर खुरासानमें शाहरुखके पास पहुची।

इस घटनाने साबित कर दिया, कि तख्त-बद्ध सामन्तशाही चुस्त घुमन्तुओंके सामने निर्बल साबित होती है। शाहरुखको अब होश आया, जब खतरा सामने दिखाई पडा। लेकिन, उज्बेकोंको तेमूर-वशका स्थान लेनेमे अभी पौन सदीकी देर थी, जबकि तेमूरी शाहजादा बाबरको मध्य एसियाई अतर्वेद छोडकर भारतीय अतर्वेदका रास्ता नापना था। शाहरुखको एक बडी सेना लेकर समरकद आया देख

वोरकको वहासे हटना पडा। शाहरुख इस अभियानसे ६ अक्तूबर १४२७ ई०को खुरासान लौटा। दक्षिणमे इस तरह सफल हो वोरक अपने पूर्वी पडोसी चगताईवशकी उत्तरी शाखाके राज्य मुगोलिस्तान-पर जा पडा। ८३२ हि० (११ अक्तूबर १४२८—२६ सितवर १४२६ ई०) में उलुगवेकने अपने वाप शाहरुखके पास हिरात खवर भेजी, कि वोरक और मुगोलिस्तानके सुल्तान महमूदमे भारी युद्ध हुआ, जिसमे सुल्तान महमूदने वोरकको कतल कर दिया।

२८ मुहम्मद सुल्तान, तेमूरखान-पुत्र, तुगलक-तेमूर-पौत्र (१४२५-३८ ई०)

वोरकके वाद मुहम्मद सुल्तान गद्दीपर वैठा। ख्वारेज्मका तेमूरियोके हाथमें जाना किपचकोको वहुत खटकता था, आखिर जू-छिके राज्यका आरभ ख्वारेज्मको लेकर हुआ था। मुहम्मदने ८३४ हि० (१६ सितवर १४३०–८ सितवर १४३१ ई०) के अतमे अपनी सेना ख्वारेज्मपर भेजकर वहा वहुत लूट-पाट मचाई, लेकिन वह उसे ले नही सका। मुहम्मद सुल्तानने अपनी राजधानी क्रिममें वनाई थी।

२९ दौलत बर्दी

वोरक जिस वक्त अपने पूरवके पडोसियोंसे लडने गया था, उसी समय मुहम्मद पश्चिमी किपचकका खान वन वैठा, लेकिन जल्दी ही दौलत वरदी तोकतामिश-पुत्रने उसे हटा दिया। वह तीन दिन ही शासन करने पाया था, कि वोरक खान फिर आ गया।

३०. कादिर बर्दी

शायद यह तोकतामिशका पुत्र था, जिसे इदिकूने मारा। इदिकू भी लडाईमे या सिर-दरियामें डूवकर मरा।

३१ शादीबेक

गयासुद्दीन शादीवेकने भी थोडे ही समय शासन किया। मुहम्मद सुल्तान तेमूर-खान-पुत्रके समयसे ही किपचककी राजनीतिक अवस्था इतनी अस्त-व्यस्त रही, कि राजावलीका ठीकसे पता नही लगता।

३२ सैयद खान, सैदक खान

इसने कुछ दिनोतक शासन किया, फिर जानीवेकका पोता और सैयद खानका पुत्र कासिम खान गद्दीपर वैठा।

३३. कासिम खान, सैदक खान-पुत्र (१५०९—१५२३ ई०)

दश्ते-किपचकका खान होते ही कासिम खानको सैवक खानसे मुकाविला करना पडा। ६१५ हि० (२१ अप्रैल १५०६—६ अप्रैल १५१० ई०) में सैबक खानने चढाई करके कासिमको हराया। ६३० हि० (१० नवम्वर १५२३—२८ अक्तूबर १५२४ ई०) मे कासिम खान मरा।

३४ अकनजर, हकनजर खान, कासिम-पुत्र (१५२३)

वापके वात अकनजरको गद्दी मिली। अव श्वेत-ओर्दूके दो टुकडे हो गये थे, जिनमें एकका शासक अकनजर था, और दूसरेके जू-छि-पुत्र शैवानके वशज।

श्वेत-ओर्दू-खान-वंशवृक्ष

(—१२२४–१४१० ई०)

छिङ-गिस्
|
१ जू-छि (–१२२४ ई०)
|
- वा-तू
- बेरक
- २ ओर्दा (१२२४—. . .)
  - ३ कोनिचि (१३०१)
  - ४ वायन (१३०१–. .)
  - ५ ससीवूगा (–१३३९)
    - ६ एर्जन (१३३९–४४)
      - ८ चिमतइ (१३४४-६१)
        - ९ उरुस (१३६१-७०)
          - १० तोक्ताकिया (१३७०)
          - ११ तेमूरबेक (१३७०–७५)
            - १८ तेमूर कुतुलुक (१३९५-१४००)
            - शादीबेग (१४००-८)
            - पूलाद(१४०८-१०)
    - ७ मुबारक खोजा (१३४४)

अध्याय ४
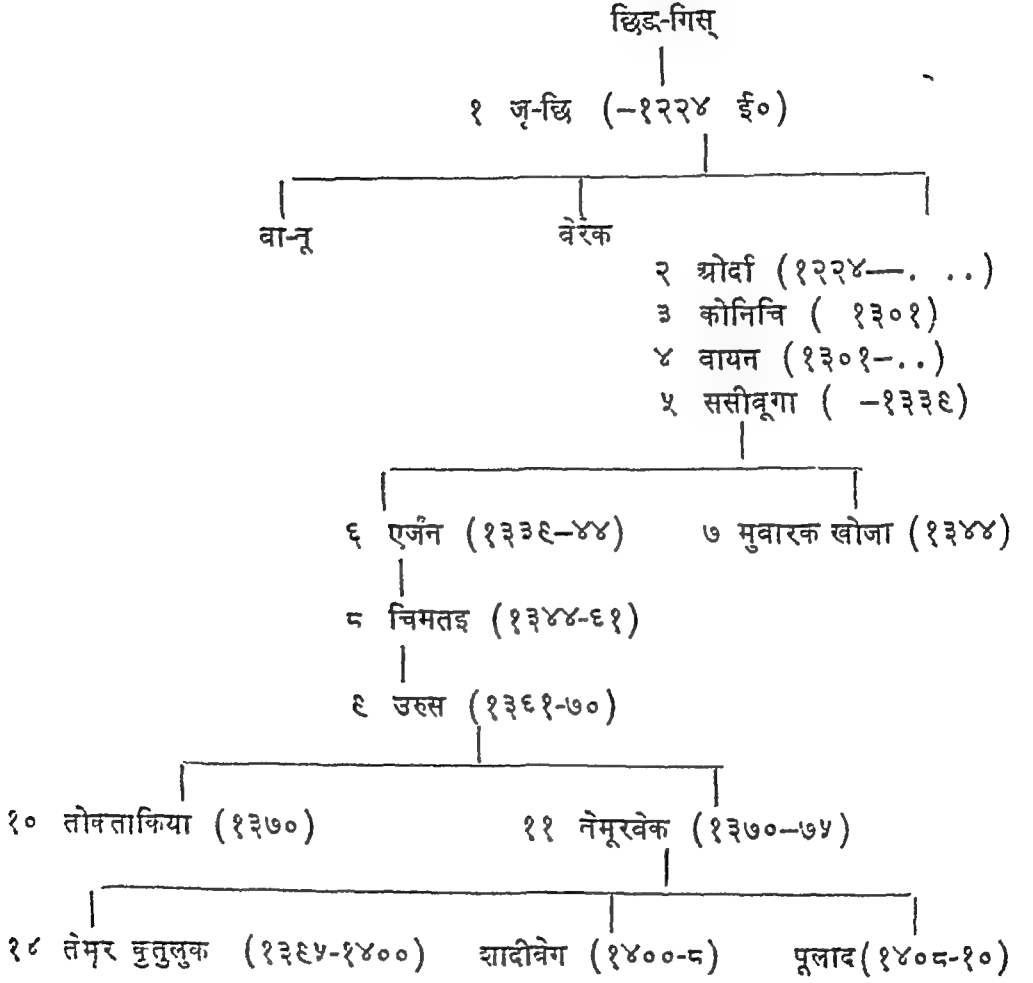
रूस (रूरिक-वंश)

(९११–१५९४ ई०)

अवतरणिका

मध्य-एसियाके इतिहासको स्पष्ट करनेके लिये चीन और ईरानके तत्कालीन इतिहासके साथ रूसके इतिहासका भी कुछ परिचय आवश्यक है, क्योंकि शताब्दियोतक वह एक दूसरेको प्रभावित करते रहे हैं। ईरान जहा अपनी भाषा और सस्कृतिसे मध्य-एसियाके साथ समीपता स्थापित करता है, वहा चीन काफी समयतक उसके ऊपर सीधे राजनीतिक प्रभाव रखता रहा। रूसका प्रभाव यद्यपि आरभमें अधीन-जातिके सिवा और रूपमें नही देखा जाता, किन्तु आगे वह वढते-वढते सवसे अधिक प्रभावशाली हो जाता है। हालकी दो शताब्दियोमें तो मध्य-एसियामे वहुतसे परिवर्तन लाते रूस आज एक नये ससार-का निर्माण कर रहा है। ऐसी स्थितिमे रूसी इनिहासपर सिहावलोकन किये विना हम मध्य-एसिया की कितनी ही वातोको समझ नही पायेंगे।

(क) शक-सरमात

शकोके विशाल देश (शकद्वीप)के वारेमें हम पहले कह आये है और यह भी वतला आये है, कि शक और सिथ एक ही थे। इन्हीकी कालासागर और कास्पियन समुद्रके उत्तरमें रहनेवाली शाखा सरमात कही जाती थी। आगे यह नाम भूलसा जाता है, और ईसाकी प्रथम शताव्दीमे वेनिद (वेन्द) और अत दो नये लोग हमारे सामने आते है, जो शक-सरमात-वशके ही है।

वेन्द—वेन्दका शव्दार्थ है जलनिवासी या नदीनिवासी। यह विस्तुला नदीसे द्नियेपर और द्नियेस्तर नदियोके ऊपरी भागोमें रहते थे, यही पश्चिमी स्लावो (पोल, चेक, स्लावक) के पूर्वज थे।

अन्त—अन्तका शव्दार्थ है सीमातवासी। ईसाकी प्रथम शताब्दीमे यह द्नियेस्तरसे दोनतककी भूमिमे रहते थे।

पूर्वी और पश्चिमी स्लावोके अलावा शक-सरमातोकी एक दक्षिणी शाखा भी थी, जिससे दक्षिणी स्लाव (युगोस्लाव) खोरवात, सर्व (मकदूनी) और वोल्गारी स्लाव जातिया निकली। रूसी विद्वान् अ० अ० शाह्मातोफके अनुसार सारी रूसी जातिया—रूसी, उक्रइनी और वेलोरुसी—अतोकी सतान है, लेकिन अकदमिक म० स० ग्रुसेव्स्की अतोको केवल उक्रइनोका पूर्वज मानते है।

यह स्मरण रखनेकी वात है, कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें चीनसे पश्चिमी देशोका जो व्यापार-मार्ग खुला था, वह भारत और ईरानतक ही सीमित नही था, वल्कि ई० पू० द्वितीय शताव्दीमें ही दक्षिणी रूस भी इस व्यापारिक क्षेत्रके भीतर था—ख्वारेज्मसे रूसका वहुत घनिष्ठ व्यापारिक सवध था। उस समय वोल्गा नदीका नाम फिन भाषामें रा था, जिसे तुर्कोने इतिल वनाया और फिर तटपर वुल्गारोके रहनेके कारण वोल्गा नाम पडा। हूणोकी वाढके आनेसे पहले ईसाकी प्रथम शताव्दीमें उरालके पास तुर्क जातिया रहती थी—चुवाश, याकुत (साइवेरिया) और आधुनिक तुर्क एक ही जाति-के हैं।

रूसियोंका सबसे अतोंसे है। यह अत ईसाकी चौथी सदीमें द्नियेस्तरसे दोनके आगेतक फैले हुये थे। इनके पश्चिमी पडोसी गाथ क्रिमियामें तथा द्नियेस्तरके पश्चिममें रहते थे। अतोंका सबसे पुराना उल्लेख हमें केर्चमें प्राप्त एक अभिलेखमें मिलता है। चौथी सदीमें हूणोंकी बाढ आकर अतोंको उत्तरकी ओर ढकेलती गाथोंके ऊपर आ पडी। ३७६ ई० में हूण-राजा बलम्बरने गाथ-राजा वीनीतरको लड़ाईमें मार उसकी खोपड़ीका प्याला बनाया। हूणोंद्वारा भगाये गये गाथ अपने पडोसी अतोंके ऊपर पडे। इस संघर्षमें अत-राजा बोग अपने पुत्रों और सत्तर सामतोंके साथ मारा गया।
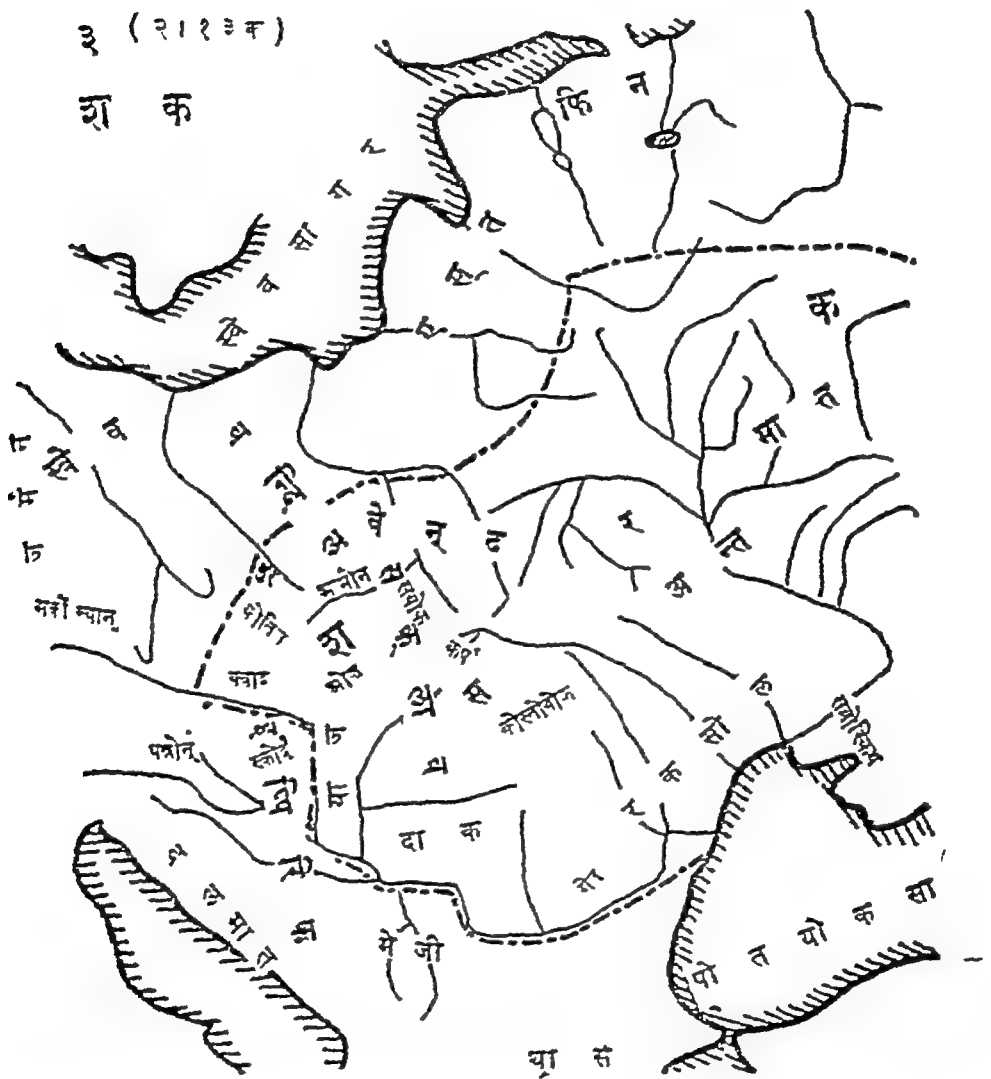
हूणोंने कुछ समयतक दन्यूब और तिसिया नदीके बीचमें अपना राज्य कायम किया। पांचवीं सदीके पूर्वार्धमें उनके राजा अत्तिला (मृत्यु ४५३ ई०) के प्रतापसे सारा पूर्वी युरोप कांपता था।

हूणोंके बाद पांचवीं सदीमें आवारोंकी बाढ पूरबसे पश्चिमकी ओर चली। तुर्कोंके प्रहारके मारे उनके पहलेके स्वामी अब जान बचानेके लिये पश्चिमकी ओर भागे। इसीपर तुर्कोंके राजा सिलजीबुलने कहा था—"वह (आवार) चिडिया नही है, जो कि हवामें उड जायेंगे। तुर्कोंकी तलवारोंसे भागकर, मछली नहीं है, कि गहरे पानीमें चले जायेंगे। जायेंगे पृथ्वीपर ही। जब मैं हेफतालोंसे लडाई खतम कर लूंगा, तब आवारों पर पडूंगा, तब वह मेरे हाथसे नहीं निकल सकेंगे।" आवारोंने दक्षिणी रूससे पहुंचकर कान्स्तन्तिनोपोलमें रोमके सम्राट्के पास अपना दूत भेजकर शरण मांगी। ५६२ ई० के आसपास सम्राट् योस्तीनियनने उन्हें बसनेके लिये भूमि दी। काला सागरके पश्चिमी

किनारेपर पुरानी स्किफिया (शक)-भूमिमे पहुचकर इस्त्रा (दन्यूब) के तटपर जा उन्होने विश्राम किया ।

आवारोकी बाढ आनेपर फिर हूणोकी तरह अपने लिये खतरा देखकर अतोने सुलह करनेके लिये उनके पास अपने राजा मेजमिर इदरी-पुत्र तथा केलायस्त आदि सरदारोको समझौता करनेके लिये भेजा, लेकिन आवारोने उन्हे मार डाला। रोमने आवारोको शरण दी थी, क्योकि उसके लिये इस टिड्डीदलसे बचनेका कोई दूसरा रास्ता नही था। आवार रोमन-साम्राज्यके भीतर लूट-मार करना अपना हक समझते थे। पूर्वी-रोमन (विजन्तीन) सम्राट् मावरिक (५८२-६०२ ई०) के समय अत विजन्तीनकी सैनिक सेवा करते थे। उस समय स्लावोका यह सबसे शक्तिशाली कबीला था। सम्राट् फोक (६०२-६१० ई०) और हेराकिल (६१०-६४१ ई०) के समय भी अत शक्तिशाली बने रहे, यद्यपि अब विजन्तीन सम्राटोके ध्यान को इधरसे हटाकर सासानियो (ईरानियो) और अरबोके सघर्षोने अपनी ओर खीच लिया था। ७वी सदीमें इस प्रकार हम अतोको विजन्तीनके घनिष्ठ सबधमे देखते हैं। निश्चय ही अतोका ऊपरी वर्ग (सैनिक और शासकीय प्रधान) ग्रीसकी पिछली सस्कृतिसे बहुत प्रभावित थे। १०वी-११वी शताब्दीके कियेफके रूसी लोग अतोके खूनके ही नही, बल्कि उनकी सस्कृतिके भी उत्तराधिकारी थे। अत कृषि जानते थे, लेकिन अधिक उत्तरवाले उनके लोग पशुपालनपर ज्यादा ध्यान देते थे। दासता भी उनमे प्रचलित थी। अकदमिक न० स० देर्झाविनके अनुसार[1]—"१०वी सदीके कियेफ रूस (और कियेफ राजुल) उसी भाषाको बोलते थे, जिसे कि छठी सदीके अत लोग, उसी पेरुनको पूजते और उसी पुराने पथपर चलते थे, जिसपर छठी सदीके अत।"—उनके देवताओमें स्वारोग, सरोग-पुत्र स्वारोजिक (स्वारोचिष), दाजबोग (सूर्य, यह भी स्वारोग-पुत्र) मुख्य थे। देवियोमे लादा (ह्लादा), वेस्ना (वसता), देवा और जीवा प्रधान थी।

१०वी सदीके अरब लेखक मसऊदीके अनुसार—"उनमें कुछ ईसाई भी है, कुछ काफिर, जो सूर्यकी पूजा करते है।" इसके दो शताब्दी बाद प्राय १२०० ई०मे इब्राहिम वेसिफ शाह-पुत्र लिखता है—"इनमें कुछ ईसाई और दूसरे सूर्य या नभकी पूजा करते है।" ९४९ ई०में लिखते हुये कान्स्तन्तिन बगरया नरोद्नी उनके अग्निपूजक होनेकी भी बात करता है। १२वी शताब्दीमे लिखते हुये किरि-लिता तुरेव्स्कीने उन्हें वृक्ष, नदी, पर्वत और जल की पूजा करनेवाला बतलाया है।

१० वी शताब्दीके पूर्वार्धमें रूसके पडोसी खाजार, महा-बोल्गार और विजन्तीन थे, जिनके साथ वह व्यापार करते थे। अरब लेखक इब्न-हौकल (९७६-९७७ ई०) भी खाजारो और बोल्गारोके साथ रूसोके व्यापारकी बात कहता है।

(ख) रूसोके पडोसी मगोलायित

बोल्गार—हूणोके आनेसे पहले ही उरालके पास मगोलायित जातिके लोग बसते थे, शायद बोल्गार उन्हींमेंसे थे। चौथी सदीमें हूणोके बोल्गासे पश्चिम पहुचनेके तुरत ही बाद बोल्गार, कास्पियन समुद्रके पश्चिमोत्तरीय मैदानोमे देखे गये, लेकिन वहा वह ज्यादा दिनोतक नही ठहर सके, क्योकि दूसरे घुमतू उनकी जानके गाहक बन गये। इन्ही बोल्गारोमेंसे कुछ भागकर पश्चिममें दन्यूबो-के किनारे पहुचे, जहा स्थानीय स्लावोमे वह घुल-मिलकर अपनी रूपरेखा और भाषाको भी खोकर अब बुल्गारिया-निवासियोके नामपर ही अपना चिह्न छोड गये। दूसरा भाग वहासे बोल्गातटपर गया, जहा उसने बोल्गार-राज्यको स्थापित किया और 'रा' और इतिल नामसे मशहूर नदीको बोल्गा नाम दिया। यह बोल्गार निम्न और मध्य-बोल्गाकी उपत्यकाओमें पहले निरे घुमक्कड पशुपाल रहे, फिर एक अरब-लेखकके अनुसार वह जौ-गेहूकी खेती भी करते थे। इनकी राजधानी कामा और बोल्गाके सगमसे कुछ नीचे बडी ही समृद्ध व्यापारिक नगरी थी, जहा हर साल रूस, काकेशस, विजन्तीन और मध्य-एसियाके व्यापारी आते थे। बोल्गार अपनेसे उत्तरवाले देशको "अधकार भूमि"

---

[1] "स्लावियाने व्-द्रेव्नोस्ती" पृ० १८।

रहते थे। वहांसे वह अपनी चीजोंसे बदलकर समूर लाते थे। मुसलमान व्यापारियोंके सपर्कमें आनेसे इनमें मुस्लिम संस्कृति और धर्म फैला और १० वीं सदीतक बोल्गार शासक और सरदार मुसलमान बनकर अरबोंकी नकल करना अभिमानकी बात समझने लगे। इस समयतक वह अपना सिक्का भी ढालने लगे थे।

१०वीं सदीके आरम्भमें इब्न-फज्लान एक अरब दूत-मंडलका सदस्य बनकर बोल्गारोंकी भूमिमें गया था। उसने अपनी यात्राका एक बड़ा ही सुन्दर वर्णन छोड़ा है। बोल्गार राजधानीसे नातिदूर दूत-मंडलका स्वागत करते हुये उसे एक विशाल तथा अच्छी तरह सुसज्जित तंबूमें ले जाया गया, जिसमें आर्मनी गलीचे बिछे हुये थे। रूमी कमख्वाबसे ढंके सिंहासनपर खान बैठा था। उसके दाहिनी ओर सरदार बैठे थे। मांसके टुकड़ों और मधुकी शराबसे मेहमानोंकी जियाफत की गई। इब्न-फज्लानने वहां रूसी व्यापारी भी देखे। वह बड़े ही लंबे-तगड़े तथा हर वक्त कटार, छुरी और तलवार लटकाये फिरते थे।

यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि बोल्गार और खजार राज्योंके स्थापित होनेके बाद बोल्गातट युरोप और एसियाके व्यापार-मार्गका महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया। बोल्गाका ऊपरी भाग पश्चिमी द्विना नदीके पास पहुंच जाता है, जो कि बाल्तिक समुद्रमें गिरती है। इसी तरह फिनलन्दकी खाड़ीके लिये भी जलपथ थोड़ी ही दूरपर मिल जाता है। इन नदियोंके बीचके स्थल-मार्ग दुर्गम पहाड़ोंके नहीं थे, इसीलिये व्यापारी इन स्थल-मार्गपर अपनी नावोंको ढकेल कर ले जाते थे। ८ वीं-१० वीं शताब्दियोंमें व्यापारके लिये यहां भारी संख्या में अरब व्यापारी आते थे, जो माल खरीदनेके बदले भी अपने छोटे-छोटे चांदीके सिक्के देते थे। ये अरब सिक्के उस समय पूर्वी युरोप, बाल्तिक-राज्यों, स्कंदिनेविया और जर्मनीतकमें प्रचलित थे।

खजार—६ठी–८वीं सदी में मंगोलियासे अराल और कास्पियन समुद्रतक जो घुमन्तू तुर्क रहते थे, इन्हींमें खजार भी थे। ६ठी सदीमें बोल्गारोंकी तरह खजार भी काकेशसके उत्तरमें चरवाही करते थे। ८ वीं सदीमें इन्होंने निम्न बोल्गा-उपत्यकामें अपना राज्य स्थापित किया। अब वह अर्ध-घुमन्तू हो गये—जाड़ोंमें नगरोंमें रहते और गर्मियोंमें अपने ऊंटों, घोड़ों, भेड़ोंको लिये मैदानोंमें चरवाही करते। पशुपालन ही उनकी मुख्य जीविका थी, इसके अतिरिक्त थोड़ी-सी खेती और अंगूरकी बागवानी भी कर लेते थे। इनका शासक एक खाकान होता था, जो राजकाजमें सीधे भाग न लेकर देवतासा माना जाता था। उसके सहायक और सरदार शासनका काम देखते थे। पहले इनकी राजधानी बलाजर (दक्खिनी दागिस्तान) थी, लेकिन ७२२-२३ ई०में अरबोंने आक्रमण करके इनकी राजधानीको जब ध्वस्त कर दिया, तब इन्होंने बोल्गा और सागरके संगमपर बोल्गाके डेल्टामें इतिलको अपनी राजधानी बनाया। व्यापारकी भी भारी सुविधा होनेके कारण इतिल एक बड़ी नगरी बन गई। खाकानका ईंटका महल एक द्वीपमें था, जिसको नावोंके पुलद्वारा किनारेसे मिला दिया गया था। नगर-प्राकारके बाहर लकड़ीके घर तथा घुमन्तुओंके तंबू रहते थे। इन्हींमें ख्वारेज्मी, अरब, ग्रीक, यहूदी, भारतीय आदि व्यापारी आकर रहते थे। इतिलकी बाजारोंमें सारी दुनियाका माल भरा रहता था। ख्वारेज्मके पास होनेके कारण वहांवालोंका यहांके व्यापारमें विशेष हाथ था। उस समय खजार-खाकान और उसके सरदार मुसलमान नहीं यहूदी थे। दोनके तटपर खजारोंका एक और भी बड़ा व्यापारिक नगर सरकेल था। इस नगरके निर्माणमें बिजन्तीन (रोम) इंजीनियरोंने सहायता की थी। उत्तर और पूरबके घुमन्तुओंसे रक्षा करनेके लिये नगर दृढ़ प्राकारोंसे घिरा था। दक्षिणमें वर्तमान मखचकलासे नातिदूर समन्दर नामका एक और भी मशहूर शहर था, जिसके पास अंगूरोंके बहुतसे बाग थे। ९वीं शताब्दीमें खजार अपने उत्कर्षकी चरम सीमापर पहुंचे थे। अजोफ-समुद्रके तटतक तथा क्रिमियाका भी कुछ भाग खजारोंके शासनमें था। दनिपेर और ओकाकी उपत्यकाओंमें रहनेवाली स्लाव जातियां इन्हें कर देती थीं। उत्तरमें इनकी सीमा मध्य-बोल्गामें बोल्गारोंसे मिलती थी। कास्पियन समुद्रका नाम खजार समुद्र (बहीरा खजार) इन्हींके कारण पड़ा, जिसे पीछे मुसलमानोंने हजरत खिजिरके नामसे जोड़कर खिजिर-समुद्र बना दिया।

पेचेनेग—खाजारोके पडोसी पेचेनेग भी तुर्की जातिके थे, जो ९वी शताब्दीके पूर्वार्धमे यायिक (उराल) और इतिल (वोल्गा) नदियोके बीचमे घुमक्कडी करते थे। ९वी शताब्दीके उत्तरार्धमे दूसरे घुमतुओके साथ सघर्ष होनेके कारण यह पश्चिममे जा दोन और द्नियेपरके बीचकी भूमिमें घूमने लगे। इनकी सख्या काफी थी। मगोलियाके हूणोके समयसे ही हम देखते है, कि घुमतुओके ऊपरी वर्गमे सस्कृतिका अभाव होना आवश्यक नही है—पेचेनेगके सोने-चादी के वर्तन, कमरवद आदि पुरातत्त्वकी सामग्रिया जो खुदाइयोमे मिली है, उनसे यह वात सिद्ध होती है। पेचेनेग अपने पडोसी स्लावोको सवसे ज्यादा हानि पहुचाते थे।

(ग) कियेफके राजुल

पुराने अतोके वशज ८वी-९वी शताब्दीमे छिन्न-भिन्न हो गये। बेटा होनेपर उसके हाथमे वह तलवार पकडाते थे, किंतु विखरी हुई तलवारे शक्तिहीन सावित हो रही थी। ९वी शताब्दी-के उत्तरार्धमें एक वडी निराशाजनक स्थितिमे रूस लोग रह रहे थे, यद्यपि उनकी वीरतामे जरा भी कमी नही आई थी। विखरी हुई तलवारे इकट्ठा करनेवाले व्यक्तिकी प्रतीक्षा हो रही थी। ऐसे व्यक्तिके आनेके लिये रास्ता भी साफ था। रूसके भीतरसे कई वणिक्पथ पूरवमे चीन, दक्षिणमे विजन्तीन और ईरान, पश्चिममें युरोपकी ओर जाते थे। स्कैडेनेवियाके व्यापारी वहुमूल्य रेशम, समूरी छाल, अवर तथा दूसरी चीजोका व्यापार करने आते थे। वाल्तिक समुद्रसे पश्चिमी द्विना होकर वोल्गा नदीसे मिलनेवाले रास्तेकी वात हम कर चुके है। स्कैंडेनेवियावाले फिनलद खाडीसे नेवा नदीको पकड उसके उद्गम इल्मन झीलमें पहुच लोवात नदीद्वारा ऊपरकी ओर चलते। वहासे उन्हे पश्चिमी द्विना नदी पर पहुचनेमें थोडी दूरतक नावको स्थलमार्गपर घसीटना पडता। इल्मनसे दूसरी नदी द्वारा वह थोडा स्थलमार्ग पारकर वोल्गा नदीके वणिक्पथपर पहुच जाते। इसी तरह द्नियेपर पहुचनेका भी जल-स्थल-मार्ग था। इन वणिक्पथोपर जहा व्यापारियोके सार्थ चलते थे, वहा कुछ लोग व्यापारके साथ लूट-पाट भी भारी लाभका साधन मान उससे वाज नही आते थे। पश्चिमी युरोपमें स्कैडेनेवियाके निवासी नार्समेन उस समयके वडे साहसी यात्री थे, जो व्यापारके साथ लूट-मारको भी अपना पेशा वनाये हुये थे। वह सशस्त्र सगठित दलोमें हो रूसमे व्यापार करनेके लिये आया करते। उन्होने ९वी शताब्दीमें रूसके भीतरसे जानेवाले मार्गोको अपना क्रीडाक्षेत्र वनाया। नार्समेन वरगीके नामसे अधिक प्रसिद्ध थे। अपने कोनुग (राजकुमारो) के नेतृत्वमें लूट-मारके लिये उन्होने अपने सैनिक दल सगठित किये थे। वह स्लावो और दूसरे लोगोके ऊपर आक्रमण करके उनकी मूल्यवान् चीजोको जहा लूट लेतें, वहा स्त्री-पुरुषोको पकड ले जाकर कन्स्तन्तिनोपोलके वाजारोमें अथवा वोल्गारो और खाजारोकी राजधानियोमे वेंच देते।

१ रूरिक

इन्ही वरगियोमेंसे कुछने ग्रीक जानेवाले मार्गमें अपनी गढिया बना ली, वह स्थानीय स्लावोपर शासन करते हुये उनसे कर उगाहने लगे। कितनी ही वार स्लाव विगडकर वरगी कोनुगोको मार डालते, फिर कोई स्थानीय स्लाव राजुल राज करने लगता। परपरा कहती है, कि ९वी शताब्दीके मध्यमें रूरिक (रोयरिक, रोरिक) नामक एक साहसी वरगीने नवोगोरदमें अपना अड्डा जमाया। नवोगोरद कालासागर और द्नियेपर नदीसे उत्तर जानेवाले रास्तेपर एक वडा महत्त्वपूर्ण स्थान था। रूरिकका भाई सिनेउस व्येलोओजेरो (श्वेत सरोवर) पर जम गया। फिनलदकी खाडीसे वोल्गा और उरालवाला वणिकपथ वहीसे होकर जाता था। तीसरा भाई त्रुवोर इज्वोरस्क नगरपर डट गया, जो कि वाल्तिकसे आनेवाले रास्तेका केंद्रीय नगर था। इन तीनो भाइयोके अतिरिक्त दो और वरगी कोनुग अस्कोल्द और दिरने कियेफ नगरको अपने हाथमे किया। ग्रीसके पथपर कियेफ वहुत महत्त्वपूर्ण नगर था। इसी तरह वाल्तिकसे पश्चिमी द्विनाके मार्गपर भी वरगियोने अपनी गढिया वना रक्खी थी। वरगी आकर स्लावोकी भूमिमें अधिकतर लूट-मार करते, फिर धनको लेकर अपने देश लौट जाते। उनमेंसे कितने ही रूस-राजुलोके अनुचर अथवा स्वतत्र सरदार वनकर भी वस गये। वरगियोंसे

स्लावोंका नाकोंमें दम था, पर वह संख्यामें पीछेके मंगोलोंकी तरह वहुत थोड़े थे। वरंगी सरदार स्लावो-मेंसे भी अपने अनुचर भर्ती करते थे। रूसमें स्थायी तौरसे वसनेवाले ये वरंगी स्लाव-समुद्रमें वहुत जल्दी ही अपने नामोंको मिटा रूस वन गये, रूसी भाषा वोलने तथा पेरुन और स्वारोगकी पूजा करने लगे। रुरिक, उसके भाइयों-तथा साथियोंकी भी यही हालत थी।

रुरिक-वंशावली—रुरिकके वंशमें निम्न राजा हुये —

		काल
	क कियेफ	
१	रुरिक	९०० ई०
२	ओलेग, रुरिक-पुत्र	–९११ "
३	ईगर, रोरिक-पुत्र	९११-४५ "
४	ओल्गा, ईगर-पत्नी	९४५-५७ "
५	स्व्यातोस्लाव I ईगर-पुत्र	९५७-७३ "
६	व्लादिमिर I स्व्यातोस्लाव-पुत्र	९७८-१०१५ "
७	स्व्यातोपोल्क I व्लादिमिर-पुत्र	१०१५-१९ "
८	यारोस्लाव I व्लादिमिर-पुत्र	१०१९-५४ "
९	इज्यास्लाव I यारोस्लाव-पुत्र	१०५४-७३ "
	स्व्यातोस्लाव II यारोस्लाव-पुत्र	१०७६ "
	इज्यास्लाव I (पुन)	१०७३ "
१०	स्व्यातोपोल्क II इज्यास्लाव-पुत्र	१०७३-१११३ "
११	व्लादिमिर II मनोमाख	१११३-२५ "
	ख रोस्तोफ-सुज्दल	
१२	यूरी I दीर्घबाहु, व्लादिमिर मनोमाख-पुत्र	–११५७ "
१३.	अन्द्रेयी, वगोल्यूवोव्स्की यूरी-पुत्र	११५७-७४ "
१४	व्सेवोलोद I यूरी-पुत्र	११७६-१२१२ "
१५	यूरी II व्सेवोलोद-पुत्र	१२१२-१२३८ "
१६	यारोस्लाव II व्सेवोलोद-पुत्र	१२३८-४६ "
	स्व्यातोस्लाव III व्सेवोलोद-पुत्र	१२४७-४८ "
	अन्द्रेयी II यारोस्लाव-पुत्र	१२४९-५२ "
१७	अलेक्सान्द्र नेव्स्की यारोस्लाव-पुत्र	–१२६३ "
	ग मास्को जार	
१८	दानियल	१२६३-१३०३ "
१९	यूरी III दानियल-पुत्र	१३०३-२५ "
२०	इवान I कलिता, दानियल-पुत्र	१३२५-४१ "
२१	सेमेओन, इवान-पुत्र	१३४१-५३ "
२२	इवान II इवान-पुत्र	१३५३-५९ "
२३	दिमित्रि इवान II-पुत्र	१३५९-८९ "
२४	वासिली I अव, दिमित्रि-पुत्र	१३८९-१४२५ "
२५	वासिली II अन्धा, वासिली-पुत्र	१४२५-६२ "
२६	इवान III वासिली II-पुत्र	१४६२-१५०५ "
२७	वासिली III इवान III-पुत्र	१५०५-३३ "
२८	एलेना, वासिली III-पत्नी	१५३३-३८ "
२९	जार इवान, वासिली III-पुत्र	१५३८-८४ "
३०	फ्योदोर, इवान IV-पुत्र	१५८४-९८ "

२ ओलेग रूरिक-पुत्र (९११ ?)

१० वी शताब्दीके आरभमे रुरिक-पुत्र ओलेग द्नियेपर-उपत्यकाके कुछ भागोका स्वामी था। पुराने इतिहासकार लिखते है, कि ओलेग पहले नवोगोरदके स्लावोपर शासन करता था, किन्तु पीछे वह द्नियेपर-उपत्यकामे चला गया और स्मोलेन्स्क क्रिविचीको जीतकर नीचेकी ओर वढते अपने दोनो देशभाइयो अस्कोल्द और दिरको मारकर उसने कियेफपर अधिकार कर लिया, जहासे पडोसके द्रेव्ल्यान लोगोको अपने अधीन करते हुये खाजारोके अधीनस्थ सेवेरियान और रादिमिची स्लावोको अपने अधीन किया। इस प्रकार ओलेग नवोगोरद और कियेफ दोनोका स्वामी वन जानेके वाद द्नियेपर वणिक्पथका भी स्वामी हो गया। धीरे-धीरे और कितने ही छोटे-छोटे राजुलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजवूर कर वह "रूसका महाराजुल" वनकर दूसरे राजुलोपर शासन करने लगा। कियेफके महाराजुलके अधीन हो अव द्नियेपर-उपत्यका और इल्मन-सरोवरके स्लाव एकतावद्ध हो गये। इस एकतावद्ध राज्यको रूस कहा जाने लगा। यह कहना मुश्किल है, कि रूस किस भाषाका शब्द है। जो भी हो १०वी शताब्दीके आरभमे वहुत-से स्लाव कवीलोको, जो कियेफके शासकके अधीन एकतावद्ध हुये थे, उनको यही नाम दिया गया, और इतिहासमे उन्हे "कियेफ रूस" कहा जाने लगा।

यद्यपि कियेफ राजुलोकी अधिकाश प्रजा स्लाव थी, लेकिन उनमे कुछ मेरिया, वेसी और चुद जैसी अरूसी कवीले भी थे। अभी ये जातिया आर्थिक तौरसे अधिक विकसित नही थी। पशुपालन, शिकार, कुछ कृषि और मामूली दस्तकारी उनकी जीविका थी। अभी वह एक दूसरेके ऊपर आर्थिक तौरसे इतने निर्भर नही थे, कि उनका एक घनिष्ठ सघ वन जाता। ये पूर्वी स्लाव कृषि-समूहो (वेर्व) मे जीवन विताते अभी भी जनयुगके रीति-रवाजोको पकडे हुये थे। उनकी भूमि साझेमे हुआ करती थी, लेकिन रूरिकोके अधीन एकतावद्ध होनेपर व्यापारका सुभीता और भी वढा, जिससे उनके भीतर धनी-गरीब होने लगे। गरीब अपने धनी वधुओके कमकर वनने लगे। भूमिपर भी वैयक्तिक अधिकार माना जाने लगा। इस प्रकार उनके भीतर सामती सवध कायम हो गया।

आगे कियेफ-राज्यने पूर्वी युरोपमें विशेष महत्त्वका स्थान प्राप्त किया। विजन्तीन (पूर्वी रोम) का प्रभुत्व सारे कालासागर और उसकी तटवर्ती भूमिपर था। अल्प-विकसित जातिया कभी अपने लूट-मारसे उसको चिढाती थी और कभी विजन्तीनके शासक स्वय लूट-मार करनेपर उतारु हो जाते। ऐसे ही किसी आक्रमणके वदलेमें ८६० ई० मे स्लावोने वज (ओक) वृक्षोको खोखला करके अद्नोदेरेव्की (एकदारुक) नावोका वेडा तैयार किया और कान्स्तन्तिनोपोल वदरगाहके छोर (सुवर्ण-शृग) पर पहुचकर राजधानीके लिये खतरा पैदा कर दिया। तूफानने स्लावोकी एकदारुक नावोको तितर-वितर कर दिया, नही तो इसमें सदेह नही, कान्स्तन्तिनोपोल उनकी दयाका भिखारी होता। ९११ ई० में फिर उन्होने अपनी प्रभुता दिखलाकर अपने अनुकूल सधि करवाई।

९१३-९१४ ई० मे स्लावो (रूसो) ने अव कास्पियनके किनारोपर भी आक्रमण शुरु कर दिया। इसके लिये वह अपनी नावोको अजोफ सागर होते दोन नदीमें ले जाते और उसी जगहपर अपनी नावोको कधोपर उठाकर वोल्गामे पहुचाते, जहा दोनो नदिया एक दूसरेके वहुत समीप पहुच गई है और जहा १९५२ ई० के वसतमे यातायातके लिये वडी नहर चालू हो गई। रूसलोग वोल्गासे नीचे कास्पियन समुद्रमे जा काकेशसकी वस्तियोमें लूट-मार करते। कितनी ही वार खाजार भी उनको अछूता नही छोडते, और रूसोको भारी हानि उठानी पडती।

ओलेगका शासन काफी लवा था, सभवत १०वी शताब्दीके उत्तरार्धके आरभतक। अपने चालीस सालके राज्यमे उसने रूसको एक-राज्य वनानेका ऐतिहासिक काम पूरा किया। उसके कामका कितना महत्त्व है, यह इसीसे मालूम होगा, कि कार्ल मार्क्सने "१८वी सदीमें गुप्त कूटनीति" (अध्याय ५) में उसका उल्लेख करते हुये कहा है —

"रूसके प्राचीन नक्शे हमारे सामने उससे कही अधिक विशाल युरोपीय क्षेत्रको प्रदर्शित करते है जिसका कि वह आज गर्व कर सकता है। ९वी शताब्दीसे ११वी शताब्दीतक उसका लगातार वढाव इसी-

की ओर सकेत करता है। हम ओलेगको अट्ठासी हजार आदमियोके साथ विजन्तीनपर आक्रमण करते, उसे कान्स्तन्तिनोपोल राजधानीके फाटकपर विजय-चिह्नके तौरपर अपनी ढाल स्थापित करते, और निम्न (पूर्वी रोम) साम्राज्यको सम्मानहीन सधि करनेको मजबूर करते देखते है। ईगर आगे उसे (विजन्तीनको) अपना करद बनाता है। स्व्यातोस्लाव इस बातको गौरवके साथ कहता है—'ग्रीक मुझे सोना, मूल्यवान् वस्तुए, चावल, फल और शराब भेजते है, हुगरी ढोर और घोडे देती है, रूससे मधु, मोम, समूरी छाल और मनुष्य मिलते है।' ब्लादिमिर क्रिमिया और लिवानिया (बाल्तिक प्रदेश) को जीतता है, और ग्रीक सम्राट्की कन्याको उसी तरह छीनता है, जैसा कि नेपोलियनने जर्मन सम्राट् से किया।"

मार्क्सके इस उद्धरणसे मालूम होगा, कि रूस १० वी शताब्दीमे कहासे कहा पहुच गया।

३ ईगर रूरिक-पुत्र (९११–४५ ई०)

१०वी शताब्दीके द्वितीय पादमें ओलेगके स्थानमे उसका भाई ईगर कियेफका महाराजुल बना। उसने अपने भाईकी सफलताओको आगे बढाकर और भी कितने ही राजुलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया, दक्षिणी बुग नदीकी उपत्यकाको जीता और कियेफके शासनके खिलाफ विद्रोह करने-वाले द्रेव्ल्यानोको कर देनेके लिये मजबूर किया। ९४१ ई०मे ईगरने विजन्तीनके विरुद्ध एक भारी सामुद्रिक अभियान किया। रूसोने कान्स्तन्तिनोपोलकी बहुत-सी बस्तियोको ध्वस्त किया, लेकिन अतमें ग्रीक बेडेने उन्हे अपने बदरगाहसे कालासागरकी ओर खदेड दिया। वहासे जाकर रूसोने क्षुद्र-एसियाके तटको लूटा–बरबाद किया। बडी मुश्किलसे ग्रीक-सरकार एक भारी स्थल-सेना भेजकर वहासे उसे हटानेमे सफल हुई। ईगरके पोत और हथियार अभी बिल्कुल आरभिक अवस्थामे थे, जबकि "ग्रीक
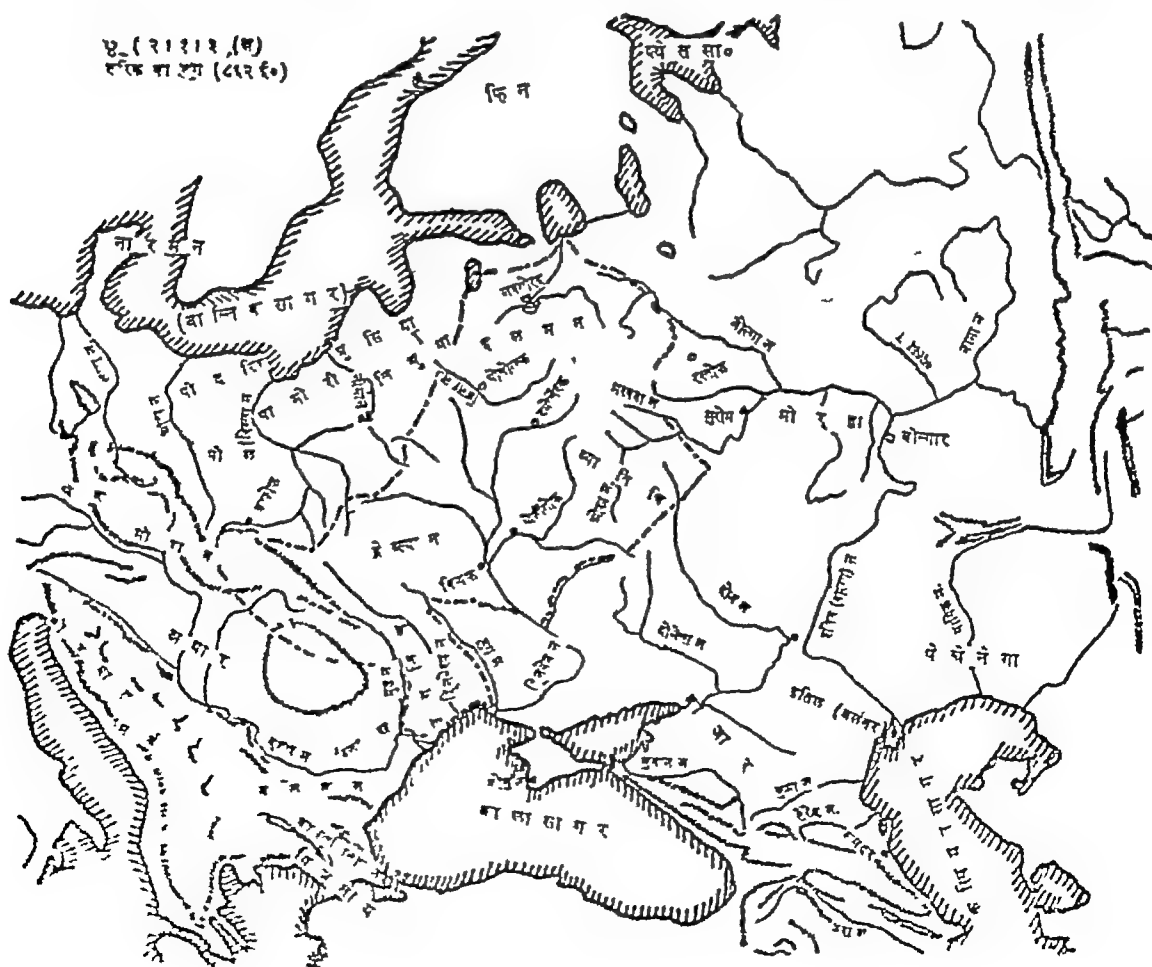
अग्नि" के नामसे प्रसिद्ध एक तरहका भभकनेवाला तरल पदार्थ ग्रीक अपने शत्रुओंपर फेकते थे। "ग्रीक अग्नि" के सामने ईगरके सैनिक बेडेको बहुत बुरी तरहसे हारना पडा। आगसे बचनेके लिये बहुतसे रूस * पानीमे कूदकर डूब मरे। बचे-खुचे पोत अपने देशकी ओर लौटे। यद्यपि ग्रीकोने उस समय रूसोको हरा दिया, लेकिन इन अर्ध-घुमतू लडाकू जातियोके लिये एक बारकी हार कोई महत्त्व नही रखती। इसलिये ग्रीक सरकारने ९४५ ई०मे ईगरके साथ एक नई सधि की, जिसमे व्यापारिक सबध स्थापित करनेके साथ उभय पक्षके शत्रुओके विरुद्ध सैनिक मित्रताकी शर्त्ते भी स्वीकृत की गई थी।

३३२ हिजरीके आरभ (४ सितबर ९४४ ई०)मे रूसोने कास्पियन तट-भूमिको अपना लक्ष्य बनाया था। कास्पियन तटको लूटते हुये वह कुरा नदीके भीतर घुस गये और ऊपरकी ओर बढते उन्होने बरदआ नगरीको ले लिया। यहासे वह आसपासके इलाकोमे लूट-मार करने लगे। लेकिन यहाका जलवायु अनुकूल न होनेसे बीमारीके कारण बहुतमे रूस मर गये, उनकी सख्या कम हो गई। इसी समय अरब फौजोने उन्हे एक किलेमे घेर लिया। बडी मुश्किलसे रातके अधेरेमे वह नावोमे पहुच अपने प्राणो और लूटे धनको बचाकर भागनेमे सफल हुये ।

कियेफ रूसके राजुलोने दूसरोके धनको लूटना और पुरुष-स्त्रियोको पकडकर दास बनाना अपने वैध शासनका एक अग मान लिया था। वह पिछले सालकी जमा की हुई लूट और बदियोको नावोपर चढाकर द्नियेपर नदीसे कालासागरकी ओर भेजते। द्नियेपरके जलप्रपात रास्तेमे पडते, जिनपर नावे टूटकर चकनाचूर हो जाती, इसलिये ऐसी जगहोपर उन्हे बल्लोके सहारे कधेपर उठाकर आदमी ले जाते। लूटके मालके लिये यहा पडोसी लुटेरे पेचेनेगोके आक्रमणका भारी डर रहता और कितनी ही बार उनकी अन्यायोपार्जित सपत्ति पेचेनेगा (तुर्की) घुमन्तुओके हाथमे चली जाती। द्नियेपरके मुहानेमें पहुचकर यात्री आरामकी सास लेते और भगवान्से कृतज्ञता प्रकट करते। वहा एक छोटे द्वीपपर अवस्थित बज (ओक) वृक्ष-देवताको भेट-पूजा चढाते। फिर कालासागरके पश्चिमी किनारेसे होते वह कान्स्तन्तिमोपोल जारग्राद (राजनगरी) जाते। वहा वह अपने दासो, समूरी छालो और दूसरी चीजोको बेचकर बदलेमे कपडा, शराब, फल तथा शौकीनीकी दूसरी चीजे खरीद लेते ।

अपनी प्रजासे कर उगाहनेमे इन राजुलोका व्यवहार बहुत कठोर होता था। इसके लिये लडाकू द्रेव्ल्यान (दीहाती) अक्सर विद्रोह कर उठते थे —"अगर भेडियेको भेडोके गल्लोमे आनेका चस्का लग गया, और वह न मारा गया, तो वह सारी भेडोको निगल जायेगा"—कहते हुये ३१ अगस्त ९४५ ई० को उन्होने अनुचरोसहित ईगरको मार डाला।

अभी रूस ईसाई नही हुए थे। इसी समय ईगरके शासनकालमें ही ९२२ ई० में मुसलमान पर्यटक इब्न फज्लानने वोल्गाके किनारेके नगरोकी यात्रा की थी। उसने रूसोके बारेमे लिखा है— "मैने रूसोको उस समय देखा, जबकि वह अपने पण्य द्रव्योको लेकर इतिल (वोल्गा) के किनारे आये थे। मैने उनके जैसे सर्वांगपूर्ण आदमी कही नही देखे। वह खजूरके वृक्षकी तरह (सीधे तथा) लालवर्णके होते है। वह न कुर्ता पहनते है, न कफतान (जामा), बल्कि उनमेंसे पुरुष एक तरहका चोगा जैसा कपडा पहनते हैं, जिसे एक बगलसे डालकर अपनी एक (दाहिनी) बाह खुली रखते है। हरएक आदमी अपनी तलवार, छुरे और कटारको नही छोडता। इनकी तलवारें लम्बी तथा लहरदार होती है। पैरसे कधेतक उनके शरीरपर हरे वृक्षो, मूर्त्तियो और दूसरी चीजोंके चित्र बने होते है। उनकी प्रत्येक स्त्रीके नितम्बके पास पतिकी सपत्तिके अनुसार लोहे, ताबे, चादी, सोनेकी डिबिया लटकती रहती है। हरएक डिबियामें एक छल्ला होता है, जिससे बधी छुरी नितम्बपर लटकती है। वह अपने कठमे सोने और चादीकी मालाये पहनती है। हरएक पुरुष जब दस हजार दिरहमका सौदा कर लेता है, तो अपनी स्त्रीके लिये एक माला और बीस हजार दिरहमका सौदा करनेपर दो माला खरीद देता है। हर दस हजार दिरहम सौदेकी वृद्धिके साथ मालाकी सख्या भी बढती रहती है, जिससे स्त्रीके पास बहुत-सी मालायें हो जाती है। उनके यहा मिट्टीकी बनी हुई हरी गुरियाको सबसे अच्छा अलकार समझा

---

* आजके रूसी नामसे भिन्न कियेफके इन पुराने लोगोको "रूस" कहा जाता था।

जाता है। यह मिट्टी जहाजोंपर होती है, जिसको वह बहुत दाम देकर खरीदते हैं—एक गुरियाका दाम एक दिरहम। अल्लाहके सृष्टि करनेके समयसे ही ये गदे हैं, पाखाना-पेशावके समय सफाई नही करते, बिल्कुल जगली गदहो जैसे। वह अपने नगरमे आकर इतिल (वोल्गा) के घाटपर उतरते हैं—इतिल बडी नदी है। नदी-तटपर बहुतसे लकडीके घर बने हैं, जिनमें वह ठहरते हैं। एक-एक घरमे दस-बारह आदमी या कम-वेसी जमा हो जाते हैं। प्रत्येकके पास मोढा होता है, जिसके ऊपर वह बैठता है। हरएकके पास अपनी सुन्दरी दासी होती है, जो उसके सामान को देखती है। कभी-कभी वह एक दूसरेके खिलाफ लडनेके लिये जमा हो जाते हैं और कभी व्यापारके लिये निकलते हैं। प्रतिदिन सवेरे दासी बडी डोलमे पानी भरकर ला अपने स्वामीके पास रख देती है। स्वामी उसमें अपना मुह, हाथ, बाल और सिर धोता है। उसीमें पोटा-खखार फेंकता है। जब वह अपना काम कर लेता ह, तो दासी डोलको उठा ले जाती है और उसीमे अपने स्वामीकी तरह मुह धोती-धाती है। इसी तरह उसी बाल्टीके पानी को घरमे रहनेवाले सब इस्तेमाल करते है। अपने मुह-बालको धोते है।

"नावमे आनेपर उनमेंसे हरएक अपनी रोटी, मास, दूध और पानकी चीजे लेकर बडे जगलमे चला जाता है, और पृथ्वीपर बने मनुष्य जैसे चेहरेके सामने भेंट-पूजा रखकर कहता है—"स्वामी, वग (भगवान्), अपने सामान और दास-दासीके साथ, सबोलके समूरी छालोके साथ मैं दूरसे आया हू।" इस प्रकार अपने सभी सौदोका नाम गिनाकर फिर कहता है "—मैं तेरे पास यह भेंट ले आया हू।" फिर वह भेटको देवताके सामने रखते कहता है—"मै चाहता हू, कि तू मेरे व्यापारमें सोना-चादीके पैसो-को देनेमे सहायता करे।" व्यापार अच्छा होनेके बाद फिर वह प्रार्थना करता है—"मेरे स्वामीने मेरी इच्छा पूरी की, मुझे जरूर उसकी भेंट-पूजा करनी चाहिये।" फिर वह कितने ही बैलो और भेडोको ले जाकर बलि चढा कुछ मास उसी बडे वृक्षके नीचे छोड देता है, बैलो और भेडोंके गलेको उसी वृक्षके नीचे काट-कर जमीनपर रख आता है। जब रात आती है, तो कुत्ते आ उन्हे खा जाते हैं। तब वह फिर कहता है—"मेरा वग (भगवान्) मेरे ऊपर प्रसन्न है, उसने मेरी सारी बलि खा ली।" उनमेंसे जब कोई बीमार पडता है, तो उसके लिये एक ओर झोपडी बनाकर वहा उसे रख देते हैं। बीमारके लिये थोडी-सी रोटी और पानी रखनेके सिवा न कोई वहा जाता है और न उससे बातचीत करता या मिलता-जुलता है। अगर वह अच्छा हो जाता है, तो साथमे जाता है, अगर मर जाता है, तो उसे जला देते है। यदि वह दास होता है, तो उसे धरतीपर छोड देते है, जहा उसे कुत्ते और गिद्ध खा जाते हैं। . .

मुझे बतलाया गया, कि वह मरनेके बाद अपने सरदारोकी बहुत धूमधामसे अत्येष्टि-क्रिया करते है। मैंने उसे देखना चाहा। मुझे उनके एक बड़े आदमीके मरनेकी खबर मिली। मैं उसे देखने गया। उन्होंने अर्थीपर ढाककर मुर्देको दस दिनोतक रक्खा। इसी बीच मुर्देके कफन सीने और दूसरे काम होते रहे। अत्येष्टि यही है, कि गरीब आदमीके लिये वह छोटी-सी चिता बना उसपर लाशको रखकर जला देते है। धनी आदमी होनेपर उसकी सम्पत्तिको इकट्ठा करके उसके तीन भाग करते है, जिसमेंसे एक भाग परिवारको मिलता है, दूसरे भागसे वह कपडा-लत्ता खरीदते है और तीसरे भागसे श्राद्धके दिनके खान-पानकी चीजें लाते है। अपने स्वामीके मरनेके बाद उसकी दासी साथ जलती है। वह उसे रात-दिन शराब पिलाकर मस्त रखते है, जिससे कोई-कोई हाथमें प्याला लिये ही मर जाती है। जब कोई सरदार मर जाता है, तो उसका परिवार मृतपुरुषके दास-दासीसे पूछता है—"तुममेंसे कौन स्वामीके साथ मरेगा?" उनमेंसे कोई कह उठता है—"मैं"। जब एक बार 'मैं' कह दिया, तो उसके लिये मरना अनिवार्य हो गया, वह अपनी बातसे मुकर नही सकता। अधिकतर साथ जलनेका काम दासिया करती है। जब वह आदमी मरा, जिसके बारेमें मुझे बतलाया गया था, तो उसकी दासियोंसे पूछा गया—"कौन उसके साथ मरेगा?" उनमेंसे एक दासीने कहा—'मैं'। उन्होने उसी समय उसके ऊपर दो दासिया नियुक्त कर दी, जिसमे वह उसकी रखवाली करें। मृतकके लिये वह दूसरे काम करने लगे। उन्होने कफन तैयार किया और जो दूसरी आवश्यक चीजे थी, उन्हें भी तैयार किया। दासी रोज खूब आनन्दसे खाती-पीती। जब दाहका दिन आया, तो मैं भी नदीपर गया, जहा चिता तैयार थी। चिताके ऊपर बहुत-सी लकडिया रक्खी थी। उसीके ऊपर लाकर अरथीको रख दिया गया। फिर वह मेरी समझमें न आनेवाली

भाषामें कुछ कहते हुये एकके-पीछे एक चलने लगे। लाश अब भी अर्थीमें पड़ी थी। फिर उन्होंने मोढा ला चितापर रख उसे ग्रीक रेशमी कपडे, तकिये आदिसे ढाक दिया। फिर एक बूढ़ी स्त्री आई, जिसे कि वह लोग मृत्युका देवता (यमदूता) कहते हैं। वह मोढे पर बैठ गई। उसीके कहनेके अनुसार सिलाई तथा दूसरे काम होते हैं। वही दासीको मारती है। उन्होंने उसे चितापर बैठा दिया, फिर मरनवालेके पहने हुए कपडेको वहां रक्खा। उसीके सामने उन्होंने मद्य, फल और वाद्ययंत्र (बलालैका) रक्खा। सफेद चेहरा हो जानेके सिवा मुर्देमें कोई परिवर्तन नही दीख पडता था। उन्होंने उसके ऊपर रेशमी कुर्ता, जामा, मदली, जरीदार जूता आदि रक्खा, सिरके ऊपर रेशमकी बडी टोपी रक्खी। फिर चितापर उसके कपडोको बिछाकर तकिया रक्खी। फिर पान (मद्य), फल रख दिया। कुत्तोने आ चिताको गिरा-पड़ा दिया। फिर मृत पुरुषके सारे हथियारोको उन्होंने क्रमसे उसके पास सजा दिया। फिर उसके दो घोडोको लाकर उन्होंने वही तलवारसे मारकर उनके मासको चितापर रख दिया। फिर वह दो बैल लाये। उन्हे भी उसी तरह मारकर चितापर फेंक दिया। फिर मुर्गी-मुर्गा लाये, उन्हे भी मारकर वही डाल दिया। फिर मरनेके लिये तैयार दासी लाई गई, जिससे हरएकने कहा—"अपने स्वामीसे कहना, कि हमने केवल उसके प्रेमसे यह सब किया।" दासीने अपना पैर चितापर रख अपनी भाषामें कुछ कहा। उसे हटा दिया गया। फिर उसने वही किया, जो कि पहली बार किया था। फिर उसे तीसरी बार हटाया गया। उसने फिर वही किया। फिर उसे उन्होंने मुर्गी दी जिसे उसने सिर मरोडकर फेक दिया। उन्होंने मुर्गीको उठाकर उसी चितामें डाल दिया। मैंने दुभाषियेसे पूछा, कि उस दासीने क्या कहा? उसने जवाब दिया—'उसने पहली बार कहा—'हा, मै अपने बाप और अपनी माको देखती हू।' दूसरी बार उसने कहा—'हा, मै देखती हू अपने मरे हुये बधुओको, मानो वह (यहा) बैठे हुये है।' फिर उसने तीसरी बार कहा—'हा, मै देखती हू अपने स्वामीको, जैसे वह बडे सुन्दर हरे-भरे राइ (स्वर्ग) में बैठे है, उनके साथ पुरुष और बच्चे भी हैं। वह मुझे बुला रहे हैं। मुझे उनके पास ले चलो।' पीछे उसे चितापर ले गये, और चीजे निकालकर उस यमदूता बुढियाको दे दी, जो दासीको मारने जा रही थी। फिर बुढियाने पैरोके कडोको निकालकर, उनमेंसे दोको दासीको दे दिया। फिर उसे चिताके पासकी झोपडी मे ले गये, जहा पुरुषोंने उसे प्यालेमें शराब लाकर दिया। उसने उसे पिया। दुभाषियेने मुझसे कहा, 'वह अपनी सहेलियोंके साथ प्रार्थना कर रही है।' फिर उसे दूसरा प्याला दिया गया। उसने उसे ले पीते हुये एक लम्बी गीत गाई। लेकिन बुढिया प्याला पीनेसे रोककर उसे वहा ले गई, जहा उसका स्वामी लेटा हुआ था। मै देख रहा था, कैसे वह छटपटा रही थी। उसने अपने सिरको चौतरे और चिताके बीचमें किया, और बुढियाने गलेसे पकडकर उसे चौतरेपर पहुचाया। फिर पुरुषोंने लकडियोको पीटना शुरू किया, जिसमे कि (दासी का) रोना-चिल्लाना सुनाई न दे, और आगे दूसरी दासिया डरकर अपने स्वामीके साथ मरनेसे इन्कार कर दे। फिर मरनेवाली दासीको लाकर उसके स्वामीकी बगलमें रख दिया—दो ने उसके पैरोको पकड रखा था, दोने उसके हाथोको, यमदूता बुढियाने उसे गलेसे पकडा था। पुरुषोने उसे तान रक्खा था। बुढियाके सामने बडा खाडा रक्खा था, जिसे उसने दासीकी पसलियोके बीचमे घुसेड दिया। दो पुरुषोंने भी उसपर प्रहार किया। अभी भी वह मरी नही थी। फिर मृत पुरुषके बहुत नजदीकके सबधीने आकर एक जलती लकडी उठा उससे चितामें आग लगा दी। फिर दासीको उसके स्वामीके पास ले आकर रख दिया गया। इसके बाद लकडीके टुकडोको लिये लोग आये और उन्हें चिताके काठपर फेंक दिया। आग पहले घासमे लगी, फिर चितामे, फिर लाशमें। आग जलने लगी। इसी समय जोरकी हवा चली, जिससे आगकी लपटे धाय-धाय करके बलने लगी। मेरे पास एक रूस पुरुष खडा था। उसने मुझसे कुछ कहा। मैंने दुभाषिये से पूछा—'उसने क्या कहा।' दुभाषियेने जवाब दिया—'वह कहता है, अरबके लोग (मुसलमान) मूर्ख है। वह जिस आदमीसे प्रेम करते है, उसे ले जाकर जमीनमें गाड देते है, जहा उसे कीडे-मकोडे खा जाते हैं। हम (रूस) तो उसको आगमें जला देते है और वह तुरन्त राइ (स्वर्ग) मे चले जाते हैं।' फिर उसने मुस्कराते हुये लम्बी हसी हसते कहा-'देखो, इसीसे खुश होकर भगवान्‌ने हवाको भेजा है। फिर नदीके तटपर सजाई चिताकी जगहपर श्वेत सफेदा-वृक्षके टुकडेपर उस पुरुष और रूसोके राजाका नाम लिखकर रख दिया गया।'

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि भारतमें सतीप्रथा शकोंके साथ ईसवी-सन्‌के आरंभमें आई। हमारे शक तथा रूसी एक ही वंशके थे, यह हम बतला चुके हैं। इसीलिये दोनोंकी सतीक्रियामें कितनी ही समानता देखकर आश्चर्य करनेकी आवश्यकता नहीं है।

४ ओलगा, ईगर-पत्नी (९४५-५७ ई०)

ईगरका उत्तराधिकारी उसका पुत्र स्व्यातोस्लाव छोटा बच्चा था, इसलिये राज्यका शासन उसकी मा ओलगाने संभाला। ओलगा स्लाव थी, इसलिये रूरिककी तीसरी पीढीमें स्व्यातोस्लाव भाषा और आकृति सबमें स्लाव था।

५ स्व्यातोस्लाव I, ईगर-पुत्र (९५७-७३ ई०)

स्व्यातोस्लावने अपने बाप-दादोंके विजय और वीरतापूर्ण कामोंको और आगे बढाया। उसका सारा जीवन अभियानोंमें बीता। वह कभी अपनी यात्राओंमें रसदकी गाडियां नहीं ले जाता, अपने घोडेकी जीनका तकिया बनाकर धरतीके ऊपर सो जाता और आधे पके हुये घोडेके मासको खाता। स्व्यातोस्लावने कभी धोखा देकर शत्रुपर आक्रमण नहीं किया। जब किसीके विरुद्ध चढाई करता, तो पहलेसे दूतद्वारा संदेश भेज देता—'मैं तुम्हारे विरुद्ध कूच करना चाहता हूं।'

स्व्यातोस्लावसे पहले ही द्नियेपर-उपत्यका और इल्मन सरोवरका प्रदेश कियेफ राज्यमें सम्मिलित था। स्व्यातोस्लावने पहले द्नियेपरसे पूरबमें रहनेवाली स्लाव-जातियोंकी ओर ध्यान दिया और ओका-उपत्यकाके व्यातिची लोगोंको जीतनेके बाद दूसरोंके ऊपर आक्रमण किया। १० वीं शताब्दीके साठवें सालके आसपास उसने वोल्गाके किनारेके बुल्गारों और खाजारोंको हराया, फिर उत्तरी काकेशसपर आक्रमण कर वहांके कसोग्री (चिरकाम) और यासी (ओसेती) जातियोंकी भी वही हालत की। ९६७ ई० में उसने दन्यूबतटवासी बुल्गारोंके ऊपर चढाई की, जो अब नामके ही बुल्गार थे, नहीं तो भाषा, आकृति आदिमें उसी स्लाव जातिके थे, जिसका कि उनका विजेता। इस आक्रमणका यही कारण था, कि बुल्गार अपने पडोसी ग्रीक (पूर्वी रोम) सम्राट्‌पर बराबर आक्रमण करते उन्हें जबर्दस्त हारपर हार दे रहे थे। ग्रीक रोकनेमें असमर्थ थे, इसलिये उन्होंने स्व्यातोस्लावको मददके लिये बुलाया। उसने बुल्गारोंको पूरी तौरसे हराकर दन्यूबतटपर अवस्थित बुल्गारियाकी राजधानी पेरेया (स्लावेत्स) में स्थायी तौरसे अपनी छावनी स्थापित करनेकी योजना बनाई। स्व्यातोस्लावने कहा—'यहां यह मेरे देशका केंद्र है। यहां सभी अच्छी चीजें—सोना, कीमती कपडे, शराब और फल ग्रीकोंकी ओरसे प्रवाहित होते रहते हैं, चेकों तथा मगयारोंके देशोंसे चांदी और घोडे एवं रूसोंके देशसे समूरी छाल, मधु, मोम और दास-दासियां आती हैं।"

स्व्यातोस्लावके रूपरंगके बारेमें ग्रीक ऐतिहासिकोंने लिखा है—"वह कदमें मझोला—न बहुत बडा न बहुत छोटा था, उसकी भौंहें घनी, आंखें नीली, नाक छोटी, दाढी मुडी और सिर घुटा था। केवल खोपडीके ऊपरी भागमें लंबे बाल थे। उच्च कुलका परिचायक बालोंका एक गुच्छा (शिखा) उसके सिरमें एक ओर था। उसकी गर्दन मोटी, कंधा चौडा, सारा शरीर सुन्दर सुडौल था। उसके एक कानमें सोनेका मणिजटित कुंडल था। उसकी पोशाक एक सफेद स्वच्छ कुर्तेके सिवा और कुछ नहीं थी।"

रूरिक-संतानोंके शासनके समय रूसके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें निम्न राजकुल थे—नवोगोरद, रस्तोफ-सुज्दल, मुरमो-र्याजन, स्मोलेन्स्क, कियेफ, चेर्नीगोफ, सेवेर, पेरेयास्लाव्ल, वोलिन्स्क, गालित्स, पोलोत्स, तूरोफ-पिन्स्क, जिनके नीचे कितने ही छोटे-छोटे ठाकुर होते थे। कालासागरके पासवाला मैदान उस समय तुर्कोंके हाथमें था, जो पेचेनेग, तुर्की, बेरेन्दे, चेर्नीक्लोबुक (कराकल्पक) जैसे भिन्न-भिन्न कबीलोंमें बटे थे—पेचेनेगोंका देश कियेफकी भूमिसे एक दिनके रास्तेपर पडता था।

६ व्लादिमिर, स्व्यातोस्लाव-पुत्र (९७३--१०१५ ई०)

स्व्यातोस्लावको अपने अभियानोसे फुर्सत नही थी। अपनी अनुपस्थितिमें राज्यका भार उसने अपने तीन पुत्रोपर छोड रक्खा था। ज्येष्ठ पुत्र यारोपोल्क पोलेयानोकी भूमि—जिसमें कियेफ नगर भी था—का शासन करता था। ओलेगके अधीन द्रेव्ल्यानोकी भूमि थी, और नवोगोरद व्लादिमिरको मिला था। बापके मरते ही तीनो भाइयोमे झगडा शुरू हुआ। यारोपोल्क और ओलेग युद्धमें काम आये, और पूर्वी स्लावोकी भूमि व्लादिमिरके शासनमे एकताबद्ध हो गई। इसके बाद व्लादिमिरने गालिच (हालिज) के प्रदेशको अपने राज्यमे मिलाया और विरोध करनेवाले पोलोके ऊपर आक्रमण किया। व्लादिमिरने अपने पडोसी लिथुवानियोपर भी आक्रमण किये, लेकिन उसका ध्यान सबसे अधिक पेचेनेगोकी ओर था, जो कि उसकी दक्षिणी सीमापर आक्रमण करते रहते थे। उसने इन घुमतुओंसे प्रतिरक्षाके लिये जगह-जगह गढिया बनवाई और वहा अपने लडाकू लोगोको लाकर बसा दिया।

ईसाई-धर्म स्वीकार—अभी तक कियेफ रूस अपने पूर्वजोके धर्मपर ही आरूढ थे। यद्यपि उनका व्यापारिक और सैनिक तौरसे भी ग्रीसके साथ घनिष्ठ संबंध था, जिसके कारण ईसाई पुरोहित भी अपने व्यापारियोके साथ उनके यहा आया करते थे। ईगरके समय भी कियेफमे ईसाइयोके कुछ गिर्जे थे। पहले ही निकोलाइ ख्रिसोवेर्द (९७९–९९१ ई०) ईसाई-प्रचारक बनाकर स्लावोमें भेजा गया था। इसमें संदेह नही कि आभिजात्य वर्गमे कितने ही ईसाई-धर्मको स्वीकार कर चुके थे, तो भी अभी अपने जनयुगके (कबीलाशाही) पूर्वजोके धर्मको रूस छोडना नही चाहते थे। जनयुगका धर्म अपने-अपने कबीलो देवताओ और रीति-रवाजोके साथ घनिष्ठतापूर्वक सम्बद्ध रहता है। जब राज्योकी सीमा कबीलोको तोडकर आगे बढती है, तो राज्य की एकतामे कबीलाशाही धर्म बाधक होता है, फिर किसी सामन्ती धर्म को स्वीकर करनेकी जरूरत पडती है, ता कि वह राजा और भिन्न-भिन्न कबीलोवाली प्रजाके भीतर पहिले के रक्तसंबंधके टूटनेपर अपने (धर्म) द्वारा एक नये संबंधको स्थापित करे। स्लावोंसे बाहर भी राज्यविस्तार होनेके कारण अब व्लादिमिरको एक व्यापक धर्मकी अवश्यकता पडी। इसके लिये उसका ध्यान यहूदी धर्मकी ओर भी गया था—हमे मालूम है, कि खाजार खगान यहूदी धर्मके माननेवाले थे। पुरानी ऐतिहासिक परंपरासे मालूम होता है, कि ९८६ ई० में व्लादिमिरने यहूदी धर्म स्वीकार करना इन्कार कर दिया। रूसोके सगे भाई बुल्गारियावाले ईसाईधर्मको स्वीकार कर चुके थे। काला समुद्रके उत्तरी और पूर्व-उत्तरी तटपर क्रिम, खोरसुन आदि नगरोमें धनी ईसाई ग्रीक व्यापारी रहते थे, जिन्होने वहा अच्छे-अच्छे गिर्जे बना रक्खे थे। व्लादिमिरने रोम-दरबार की तडक-भडक, उसके कला-कौशल और विचार-धारा को भी देखने-सुननेका मौका पाया था। अपने पास-पडोसकी गौरांग जातियोंमें इस्लामको न फैला देखकर उसकी ओर उसका आकर्षण नही हो सकता था। इन सामान्ती धर्मोंके मुकाबिलेमें स्लावो-का पुराना धर्म ओझा-सयाना-पुरोहितोका धर्म था, इसमें पुराने जनयुगीन ठाकुरोकी प्रतिष्ठा अधिक थी, जो नवजात उच्चवर्ग के लोगोको सम्मान नही देना चाहते थे, जो कि उनके लिये प्राचीन कालसे सुरक्षित था। इन्ही नये अ-कुलीन ठाकुरोने प‍्हिले ईसाईधर्मकी ओर हाथ बढाया। कहा जाता है, ईगरकी विधवा ओलगाने भी ईसाई-धर्म स्वीकार किया था, जो असंदिग्ध नही है। ९८७ ई० मे विजन्तीन साम्राज्यके भीतर एक बडा विद्रोह उठ खडा हुआ था। इसी समय उत्तरसे दन्यूबके बुल्गारोने भी हमला करना चाहा, जिसपर विजन्तीन सरकारने व्लादिमिरको सहायताके लिये बुलाया और ९८८ ई० मे व्लादि-मिरके साथ संधि की। व्लादिमिरने ग्रीक-सम्राट्की बहिन अन्नासे व्याह करनेकी इच्छा प्रकट की। सम्राट्ने इस शर्तपर व्याह करना स्वीकार किया, कि व्लादिमिर ईसाई-धर्मको स्वीकार करे। उस समय कान्स्तन्तिनोपोलमें दो सम्राट् राज्य कर रहे थे, अन्ना दोनो हीकी बहिन थी। विद्रोह-दमन करनेके उपहारस्वरूप अन्ना मिलनेवाली थी, लेकिन जब काम निकल गया, तो सम्राटोने अपने वचनको पूरा करनेमे ढिलाई दिखानी शुरू की। इसपर व्लादिमिरने आक्रमण करके क्रिमिया प्रायद्वीपके खेर्सोनेस (खोरसोन) नगरको घेर लिया, और विजन्तीनको अपना वचन पालनेके लिये मजबूर किया। उसी समय व्लादिमिरने ग्रीक-चर्चकी पद्धतिके अनुसार बपतिस्मा ले राजकुमारी अन्नासे व्याह किया। ९८८ ई० में खोरसोनसे रानी अन्नाके साथ कियेफ लौटने पर उसने कियेफके सारे लोगोको जबर्दस्ती द्नियेपर नदीमें

डुबकी लगवा ग्रीक-पादरियोंद्वारा उन्हे बपतिस्मा दिलवाया। धर्मान्धताके पागलपनमे पुराने स्लाव-देवताओंकी मूर्तियां—जो अधिकतर काठकी होती थी—जला दी गई। महादेवता पेरुनकी एक मूर्ति द्नियेपरमें फेंक दी गई। इसी तरह जबर्दस्ती बपतिस्मा दिलवा थोडे ही दिनोमें प्राय सारे नागरिक रूस ईसाई बना दिये गये, लेकिन गावोमे पेरुन-पूजकोकी समाप्ति इतनी जल्दी नही हो पाई।

७ स्व्यातोपोल्क I, व्लादिमिर-पुत्र (१०१५-१९ ई०)

व्लादिमिरके मरते ही उसके पुत्रोमे गद्दीके लिये जो भयकर सघर्ष शुरु हुआ, उसमें स्व्यातोपोल्कने अपने भाइयो—बोरिस, ग्लेब और स्व्यातोस्लाव—को मारकर कियेफकी गद्दी ले ली। इसपर पिताके समयसे ही नवोगोरदका शासक व्लादिमिर-पुत्र यारोस्लावने नवोगोरदवालोकी मददसे स्व्यातोपोल्कपर आक्रमण किया। स्व्यातोपोल्क हारकर अपने ससुर पोलन्दके राजुलके पास भाग गया। दामादकी मदद करनेके लिये पोलन्द राजुल बोलेस्लाउसने रूसपर आक्रमण किया और पश्चिमी बुगके किनारे यारोस्लावको हरा कियेफमे दाखिल हो अपने दामादको गद्दीपर बिठाया। पोलोने इतने हीसे सतोष न कर देशमे लूट-पाट मचानी शुरु की, जिसका प्रतिरोध रूसोने भी बहुत जोरसे किया। जब लूट-पाटकर नगरो और गावोमे जाडा बितानेके लिये पोल इकट्ठा हुये, तो लोगोने विद्रोह करके उन्हे मार डाला। बची-खुची सेनाके साथ बोलेस्लाउस् पोलन्द भागा। पोलोकी सहायतासे वचित स्व्यातोपोल्कको यारोस्लाव और उसके नवग्रादियोंके हाथ हार खानी पडी और भागते समय वह मारा गया।

८. यारोस्लाव I, व्लादिमिर-पुत्र (१०१९–५४ ई०)

यारोस्लाव अब कियेफ और नवोगोरदका महाराजुल बना, लेकिन अभी भी एक प्रतिद्वद्वी उसका भाई म्स्तिस्लाव मौजूद था, जोकि काकेशसके समीप तमन प्रायद्वीपमे तमूतरकानका शासक था। उसने आक्रमण करके यारोस्लावसे सेवेर्स्क भूमि तथा चेरनीगोफ नगरको छीन लिया। द्नियेपर नदी दोनो भाइयोकी सीमा बनी। १०३६ ई० में भाईके मर जानेपर सेवेर्स्क प्रदेशको फिर यारोस्लावने कियेफ-राज्यमे मिला लिया। यारोस्लावके समय ईसाई-धर्मने कियेफ-रूसोपर पूर्ण विजय प्राप्त की, ईसाई-चर्च (धर्मसघ) का सगठन हुआ, और कान्स्तन्तिनोपोलके महासघराजने रूसोंके लिये एक सघराज नियुक्त किया। कियेफके पास पेचेर्स्क-मठ इसी समय बना, जिसने शासकवर्गमें शिक्षा फैलानेमे बडा काम किया।

कियेफ-राज्य अब युरोपके महत्त्वपूर्ण राज्योंमेंसे था। ग्रीक-सबधके कारण उसका सास्कृतिक तल भी ऊचा हो गया था। यारोस्लाव-परिवारका सबध अब पश्चिमी युरोपके राजघरानोमे होने लगा था। यारोस्लावकी बहिन पोल-राजासे व्याही थी। उसके दामादोमें फ्रास, नार्वे और हुगरी (मगयार) के राजा थे। यद्यपि यारोस्लावने पोलन्दकी सहायतासे सिहासन पाया था, लेकिन अब वह इतना शक्तिशाली था, कि पोलन्दके भीतरी मामलोमे दखल देता था। बोलेस्लाउस्के मरनेके बाद पिताके राज्यसे छीने गये गालिच प्रदेशको उसने फिर ले लिया। १०४३ ई० में उसने अपने पुत्र व्लादिमिरके नेतृत्वमें एक असफल अभियान कान्स्तन्तिनोपोलके विरुद्ध भेजा। पश्चिमकी ओर बाल्तिक प्रदेशपर जर्मन आक्रमण करने लगे थे। यारोस्लावने प्रतिरक्षाके लिये यूरियेफ (एस्तोनियामें तरतू) नगरको बसाया, और बाल्तिक लोगोको अपने अधीन कर लिया। उसने वोल्गाके किनारे अपने नामसे यारोस्लाव्ल नगर बनाया। दक्षिणमें पचेनेगोंसे उसका सघर्ष बराबर जारी रहा।

यारोस्लावके समयमें ही पहला कानून-ग्रथ (विधान-सहिता) "यारोस्लाव्स्की-प्राव्दा" के नामसे सपादित हुआ, जिसपर ईसाई बिजन्तीन कानूनोका प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पडता है। इसी प्राव्दा (सत्य) द्वारा जनयुगसे चले आते खूनका बदला लेना सारी जातिके लिये आवश्यक होनेकी जगह परिवारके सदस्यातक ही सीमित रूप्द हुये रह गया—"अगर कोई आदमी दूसरेको मार डाले तो भाई का बदला भाई ले, बापका बदला पुत्र, पुत्रका बदला भाई-भतीजा-भाजा भी। अगर कोई बदला

लेनेवाला न रह जाय, तो मरे हुये आदमी के लिये चालीस ग्रिवना (दो सौ ग्रामकी चांदीकी सिल्ली) देना होगा।" यारोस्लावके पुत्रके शासनकालमें बदला लेनेके विधानको ही उठा दिया गया, और इस प्रकार जनयुगकी एक पुरानी प्रथाको सामंतयुगने समाप्त कर दिया।

सुव्यवस्थित रूसी चर्चके स्थापित हो जानेपर अब बाकायदा पुस्तकें भी लिखी जाने लगीं, बाइबल तथा दूसरे धार्मिक ग्रंथोंके साथ-साथ ग्रीक इतिहास-ग्रंथोंका अनुवाद करते, रूसी लिखित साहित्यका आरंभ किया गया। यारोस्लावके समयमें ही रूसका इतिहास लिखनेका प्रथम प्रयत्न किया गया, जिसे कि उसके मरनेके बाद पेचेर्स्क-मठने संपादित किया। इसको "आरंभिक-इतिहास" (नचल्नया लेतोपिस्) कहते हैं। इसमें राजुलोंकी जीवनियां, और बहुत-सी कहानियां जमा की गई हैं। मूल पुस्तक अपने १११६ और १११८ के संशोधित संस्करणोंके रूपमें "पुराने वर्षोंका इतिहास" के नामसे अब भी मौजूद है। यारोस्लावके समयमें ही कियेफमें ग्रीक वास्तु-शास्त्रियोंकी देख-रेखमें सोफिया-गिर्जे का निर्माण हुआ। बिजन्तीन ढांचेको लेते हुये भी इसमें रूसी वास्तुकलाका सम्मिश्रण किया गया। ११ वीं शताब्दी-की रूसी कलाकी यह सर्वोत्कृष्ट इमारत है। गिर्जेके भीतरकी दीवारोंपर सुन्दर भित्ति-चित्र और फर्श-पर बढ़िया पच्चीकारीका काम है। उस समयके विदेशी यात्री कियेफके वैभवको देखकर उसे "कान्स्तन्तिनोपोलका प्रतिद्वंद्वी" कहते थे। कियेफके नमूनेको लेकर यारोस्लावके पुत्र व्लादिमिरने नवो-गोरदमें भी उसी तरहका सोफिया-गिर्जा बनवाया।

आर्थिक ढांचा—यह कह चुके हैं, कि ९वीं शताब्दीसे पहले रूस कृषिजीवी थे, यद्यपि नगरों और द्नियेपर-उपत्यकासे दूरके जंगलोंमें रहनेवाले अब भी पशुपालनपर अधिक निर्भर करते थे। अभी भी उनका राजनीतिक ढांचा बहुत-कुछ जनयुगीन था, और राजुलोंको अपने लोगोंकी रायका बहुत ख्याल रखना पड़ता था। न पसंद आनेपर लोग साफ जवाब देते थे—"राजुल, हम तो नहीं जाते, तू अपनी लड़ाई जाके लड़।" लेकिन ११ वीं शताब्दीमें पहुंचते-पहुंचते जनयुगीन ढांचेके स्थानपर सामंती ढांचा कायम हो गया था, जिससे जहां सामंतोंकी शक्ति बढ़ी, वहां साधारण जनतामें सांपत्तिक विषमता भी बढ़ी। कुछ लोगोंके पास भूमि और संपत्ति अधिक आ गई, और इस प्रकार बहुत खेतोंवाले धनी जमींदारोंका एक वर्ग पैदा हो गया, जिन्हें **बायर** कहा जाता था। ये राजुलोंके बड़े सहायक थे। इनके अतिरिक्त मठोंके पास भी बहुत धन-धरती हो गई। उनके महंत भी बायरोंकी तरह राजुलोंके समर्थक थे। अबतक धरतीपर जो वैयक्तिक नहीं बल्कि पंचायती अधिकार चला आता था, वह खतम होने लगा। बड़े-बड़े शहरोंके आसपास राजुलों, बायरों और मठोंके गांव बस गये थे। दास अभी तक लूटकर बेचनेके ही काममें आते थे। खेतोंमें काम करनेके लिये गरीब किसान और मजदूर ज्यादा लाभदायक समझे जाते थे, जिन्हें कि कर्ज खिला या दूसरी तरहसे जमींदार अपना बंधुवा बना लेते थे। लेकिन अभी ११वीं शताब्दीमें भी अधिकांश किसान समूहबद्ध होकर रहते राजुलोंको केवल कर दे दिया करते थे। ११ वीं शताब्दीके अन्ततक यह स्वतंत्र किसान-समूह बहुत-कुछ अपने अधिकार खो चुके थे। बहुत दबानेमें जातीय स्वतंत्रताकी भावना जब कभी जाग उठती, तो वह राजुलों और बायरोंके खिलाफ विद्रोह कर उठते, या अन्यत्र भाग जाते। भागा हुआ किसान पकड़नेपर दास बना दिया जाता।

"रुस्कया प्राव्दा"—यारोस्लावके समय निर्मित विधान (प्राव्दा) के आधारपर ही उसके पुत्रों और पौत्रोंके समय "रुस्कया प्राव्दा" (रूसी विधान) के नामसे एक विधान-संहिता बनी, जिसमें उन विधानोंको खासतौरसे स्थान दिया गया, जिनके द्वारा जनसाधारणको जमींदारों (बायरों) और सामंतों की संपत्तिपर हाथ बढ़ानेसे रोका जाता था—खेतकी मेंड़ तोड़ने और पशुओंके चुराने आदिके अपराधमें जुर्मानोंका विधान किया गया। बायरका अपने दास और अर्धदास रियायापर क्या अधिकार हैं, इसे भी उसमें बतलाया गया। जनयुगसे खूनके बदलेमें खूनीसे सारे कबीलेको बदला लेनेका जो अधिकार चला आता था, और जिसे यारोस्लाव-प्राव्दाने केवल परिवारके व्यक्तियोंतक ही सीमित कर दिया था, उसकी जगह अब "रुस्कया प्राव्दा" ने "विरा" (अर्थदंड) का विधान करने उसका परिमाण चालीस ग्रिवना निश्चित कर दिया—बायरको मारनेपर यह जुर्माना दूना (अस्सी ग्रिवना) देना पड़ता, लेकिन

दामके मारनेपर विरा न दे केवल दाम-स्वामीको पचास ग्रिवना दे देना पर्याप्त समझा जाता था। "रुस्कया प्राव्दा"मे यह भी कहा गया है--"अगर किसी आदमीपर तलवारसे प्रहार किया गया हो लेकिन वह मरा न हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना, और घावकी चिकित्साके लिये आहत आदमीको एक ग्रिवना पानेका अधिकार होगा। अगर एक दांत तोडदिया गया हो और मुहसे खून निकला हो, तो जुर्माना वारह ग्रिवना और दांतके लिये एक ग्रिवना देना होगा।" मधु अब भी आयका एक अच्छा साधन समझी जाती थी और चीनी-गुडके अभावमे रूसोंके लिये वही एकमात्र मिठाईकी चीज थी। शराब बनानेमे भी उसका बहुत व्यवहार होता था, इसीलिये "रुस्कया प्राव्दा" ने विधान किया था--"अगर कोई आदमी ऐसे वृक्षको काटे, जिसमें जगली मधु-मक्खिया रहती हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना और आधा ग्रिवना वृक्षका (दाम) देना होगा।"

पहले चीजोके विनिमयका माध्यम जगलके इलाकोमे पशु-चर्म और खेतवाले इलाकोमे पशु था। इसीलिये पुराने समयमें पैसेको "स्कोत" (पशु) या "कुनी" (चर्म) कहते थे। रूसोंके पास अपना सिक्का नहीं था। अरवो, ग्रीको या पश्चिमी युरोपवालोके सिक्के उस समय रूसोमें भी चला करते थे। ११ वी शताब्दीके आरभमे ग्रीक सिक्कोकी नकल करते कियेफ रूसोने भी थोडेसे अपने-अपने सिक्के ढाले, जिनके ऊपर राजुलका चेहरा बना रहता—सिक्कोका रवाज अधिकतर नगरोमें था।

९ इज्यास्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०५४--७३ ई०)

यारोस्लावके मरनेके थोडे ही दिनो वाद रूसोकी एकता भग होने लगी और यारोस्लावके पुत्र स्वतन्त्र रूपसे अपने-अपने प्रदेशोपर शासन करने लगे। सबसे बडा लडका इज्यास्लाव कियेफ और नवोगोरदका स्वामी बना। द्नियेपरके वणिक्पथपर ये दोनो बहुत महत्त्वपूर्ण नगर थे, इसलिये इज्यास्लावका स्थान बहुत महत्त्व रखता था। दूसरे पुत्र स्व्यातोस्लावको चेर्नीगोफका इलाका मिला और व्सेवोलदको पेरेयास्लाव्ल और रोस्तोफ-सुज्दल। दूसरे इलाके दूसरे राजकुमारोंके हाथोमे चले गये। पहले तीनो बडे लडके आपसमें मेलसे रहते, मिलकर शत्रुओंसे देशकी प्रतिरक्षा करते थे, कभी-कभी इकट्ठा होकर राजकाजकी बातोमे सलाह भी करते थे। १०६८ ई० मे जब कियेफके कारीगरो और किसानोने विद्रोह किया, तो उन्होंने इकट्ठा होकर अपने वापकी "प्राव्दा" का सशोधन और परिवर्धन किया। यारोस्लावके पुत्रोंके सबसे भयकर शत्रु थे तुर्कजातीय पोलोव्त्सी--अपनी भाषामें इनका नाम दूसरा ही होगा, लेकिन रूसी उन्हे इसी नामसे पुकारते थे। यारोस्लावके शासनके खतम होनेके समय ११ वी शताब्दीके मध्यमें ही पूरबसे आकर पोलोवत्सियोने आक्रमण करके कालासागरके उत्तरवाली मैदानी भूमिपर अधिकार कर लिया और वहा रहने पेचेनेगोको पश्चिममें दन्यूबकी ओर भगा दिया। पोलोवत्सी घुमतू पशुपाल थे। उनके बहुतसे छोटे-छोटे कबीले थे, जिनके अपने-अपने खान (राजा) हुआ करते थे। पशुओंपर निर्भर होनेके कारण वह एक जगहसे दूसरी जगह घूमा करते और समय-समयपर रूसोकी भूमिपर चढाई कर उनके पशुओं और पुरुष-स्त्रियोको पकडकर लौट जाते। उनका आक्रमण बडा ही भयकर और अचानक होता। ग्रीक लेखक उनके बारेमे कहते है--"पोलोवत्सी पलक मारते-मारते प्रकट होकर लुप्त हो जाते है। आक्रमण खतम होते ही लूटके मालसे लदे अपने घोडोको कोडोंसे मारते वह आधीकी तरह निकल जाते है, मानो वह उडती हुई चिडियाको पकडना चाहते है। तुम्हारे आख उठाकर देखनेसे पहले ही वह निकल चुके रहते है।" १०६८ ई० मे इज्यास्लाव अपने दोनो भाइयो स्व्यातोस्लाव और व्सेवोलदके साथ पोलोवत्सियोको दबानेके लिये गया, लेकिन बुरी तरहसे हारकर उन्हे युद्ध-क्षेत्रसे भागना पडा। इज्यास्लाव कियेफ पहुचा। पोलोवत्सियोंके आक्रमणो और लूटमार से त्रस्त किसानोने इकट्ठे हो इज्यास्लावसे माग की, कि हमें हथियार दो और साथ चलकर शत्रुओंसे लडो। इज्यास्लावको भय लगने लगा, कि कही वह हथियार मेरे ही विरुद्ध न उठाये जाय। उसके इन्कार करनेपर लोगोने राजुलके महलको लूट और वरबाद कर, उसकी जगह उसकेद्वारा जेलखानेमे बद पोलोत्स्कके राजुल व्सेस्लावको मुक्त कर कियेफका राजुल घोषित किया। इज्यास्लाव भागकर पोलद पहुचा, जहाके पोल राजा बोलेस्लाव्की सहायता से कियेफ लौटा। व्सेस्लाव विश्वासघात करके

चुपचाप रातको पोलोत्स्क भाग गया। इज्यास्लावने लोगोसे भारी खूनी बदला लिया। पोल सैनिक कियेफ राज्यके नगरोमें जगह-जगह छावनी डालकर रहने लगे। उन्होंने अपने अत्याचारोसे इतना तंग किया, कि लोगोंने जानपर खेलकर उनकी हत्या कर डाली।

पोलोवत्सी जैसे जबर्दस्त शत्रु सिरपर थे, तो भी यारोस्लावके बेटोकी एकता देरतक नही रह सकी। विदेशियोसे मदद लेकर इज्यास्लावने फिरसे सिंहासनपर अधिकारकर जनताके ऊपर जो अत्याचार किये, उनसे लोगोमे उसके प्रति भारी घृणा पैदा हो गई। इससे फायदा उठाकर १०७३ ई० मे स्व्यातोस्लाव और व्सेवोलदने आक्रमण करके इज्यास्लावको कियेफसे भगा दिया। अब स्व्यातोस्लाव कियेफकी गद्दीपर बैठा।

स्व्यातोस्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०७३--१११३ ई०)

स्व्यातोस्लाव थोडे ही दिनोतक भाईको सिंहासनसे वंचित रख सका। इज्यास्लाव भागकर जर्मन-सम्राट् और रोमके पोपके पास मदद मांगने गया, और अंतमे पोलोकी मददसे उसने फिर अपने सिंहासनको प्राप्त किया, लेकिन वह थोडे ही समय बाद अपने भतीजोसे लडते हुये मारा गया।

यारोस्लावके पौत्रोमे भी बराबर संघर्ष जारी रहा—कभी कोई किसीको भगाता और कभी कोई फिरसे अपने राज्यको प्राप्त करता। आपसकी लडाई और पोलोवत्सियोके आक्रमणोसे देशकी हालत बहुत बुरी हो गई थी। इसीलिये १०९७ ई० मे कुछ प्रभावशाली राजुलोंने ल्यूबेकमें जमा होकर सोचा—"हम क्यो रूस-भूमिको नष्ट कर रहे हैं ?" उन्होने कहा—"हम आपसमे एक दूसरेके साथ विश्वासघात करनेका उपाय सोच रहे है। पोलोवत्सी हमारे देशका तहस-नहस करते इस बातसे प्रसन्न है, कि हम आपसमे लड रहे है। आओ, आजसे हम मेलसे रहे।" उन्होने अंतमें यह निश्चय किया, कि हरएक राजुल अपने पैतृक राज्यको अपने पास रक्खे। अब कियेफ इज्यास्लावके पुत्र स्व्यातो-पोल्कके हाथमे रहा।

१० स्व्यातोपोल्क II, इज्यास्लाव-पुत्र

जब एक दूसरेके हित परस्परविरोधी हो, तो इस तरहके भावुकतापूर्ण आदर्शवादी फैसले देर तक कैसे माने जा सकते थे ? हमने भिन्न-भिन्न देशोमे ऐसे अवसरोपर राजुलो और राजाओकी परिषदे होती, और उन्हें अच्छे निर्णयो पर पहुचते देखा है। पर आर्थिक स्वार्थोंकी चट्टानोके ऊपर उनके चकनाचूर होते भी देर नही लगती। स्व्यातोपोल्कको कियेफका अधिकार मिला और उसके चचेरे भाई व्लादिमिरको उसके पिता व्सेवोलदका पेरेयास्लाव राज्य मिला।

११ व्लादिमिर मनोमाख, व्सेवोलद-पुत्र (१११३-२५ ई०)

व्लादिरमिर विजन्तीन-सम्राट् कान्स्तन्तिन मनोमाख का धेवता था। इस सम्बन्धका उसे अभिमान भी था, इसीलिये वह व्लादिमिर मनोमाख (एक-राजा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। परिषद्के उठते देर नही हुई, कि फिर राजुलोमे झगडा शुरू हो गया। स्व्यातोपोल्कने अपने एक राजुल भाई वासिल्कोको धोखेसे पकडकर उसके प्रतिद्वंद्वी दाविद ईगर-पुत्रके हाथमे दे दिया, जिसने उसे अन्धा करके जेलमे डाल वासिल्कोके नगरोपर अधिकार कर लिया। इसपर व्लादिमिर मनोमाखने दूसरे राजुलोका नेतृत्व करके वासिल्कोके छुडानेके लिये आक्रमण कर उसे मुक्त कर दिया। ११०० ई० मे राजुलोकी दूसरी परिषद् हुई, जिसमें उन्होने दाविदको व्लादिमिरके सिंहासनसे वंचित कर दिया। आपसी संघर्षके समय पोलोवत्सियोकी खूब बन आई, और वह रूसकी भूमिमें बहुत भीतरतक लूट-मार करने लगे। परिषद्मे मनोमाखने मिलकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान करनेका प्रस्ताव किया, जिसे मानकर सभी रूसी राजुलोने व्लादिमिर मनोमाखके नेतृत्वमे पोलोवत्सीके ऊपर चढाई की। सामूहिक शक्तिके सामने पोलोवत्सी बुरी तरहसे हारे, और विजेता रूस ढोरो, घोडो, ऊटो, लूटके माल तथा बन्दियोके साथ लौटे। ११११ ई०मे उन्होने फिर एक अभियान किया, जिसमें वह पहलेसे भी अधिक सफल रहे।

स्व्यातोस्लाव १११३ ई० मे मरा, उसके बाद ही कियेफमे विद्रोह उठ खडा हुआ, जो नगरसे दीहातमे फैलने लगा। साधारण जनताके इस विद्रोहका कारण बायरो और सूदखोरोका अत्याचार था। विद्रोहियोने शहरमे उनके घरोको लूटकर नष्ट-भ्रष्ट किया। इसके कारण बायर, महन्त और छोटे-मोटे सामन्त डरने लगे। कियेफके बनियोने व्लादिमिर मनोमाखके पास सदेश भेजा—"आओ राजुल, कियेफमे। अगर तुम नही आओगे, तो यह समझ रक्खो, कि और भी बहुत बुरी बाते होगी—साधारण लोग बायरो और मठोको तग करेगे।"

व्लादिमिरने अपने अनुचरोसहित आकर विद्रोहको दबा दिया, लेकिन केवल बलपूर्वक दबानेसे काम नही चल सकता था, इसलिये उसने जनसाधारणके ऊपर होते अत्याचारोको भी कम किया। कियेफ ले लेनेके बाद व्लादिमिरने देशको और अधिक छिन्न-भिन्न होनेसे बचाना चाहा, और दूसरे राजुलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। जो नही मानते थे, उन्हे उनके नगरोसे वचित करनेकी उसमे क्षमता भी थी, इसलिये सभी राजुलोने उसे अपने ऊपर माना। व्लादिमिरने एक बार फिर अपने पुरखोके वैभवको स्थापित कर दिया। युरोपके दरबारोमे भी व्लादिमिरकी बडी धाक थी। ग्रीक-सम्राट् कान्स्तन्तिन मनोमाख उसका नाना ही था। उसकी एक पोती एक ग्रीक राजकुमारसे व्याही थी। व्लादिमिरकी बहिन जर्मन-सम्राट्से व्याही थी, और व्लादिमिर स्वय इगलिश-राजाका दामाद था। उस समय बिजन्तीन-राज्यमे जो गृह-कलह चल रहा था, उसमे भी उसने दखल दिया। व्लादिमिरकी सेना दन्यूबके किनारेतक पहुची, और वहा अपने दावेको प्राचीन रूस-भूमि (उस्मार्टल) पर स्थापित किया।

व्लादिमिर बडा ही निर्भीक और बहादुर पुरुष था। उसने अपने पुत्रोको फटकारते हुए एक बार लिखा था—"अपनी जान बचानेके लिये शत्रुके सामनेसे मै कभी नही भागा और खतरेका सदा निर्भयतापूर्वक सामना करता था। बच्चो, न तुम सेनासे डरो और न पशुसे। तुम्हारा काम पुरुषोचित होना चाहिये। मैने रात या दिन, सर्दी या गर्मी कभी अपनेको आराम लेने नही दिया।" वह शिकारका बडा शौकीन था, जिसमे कई सर्तबे उसने अपनेको खतरेमे डाला। दो सर्तबे जगली बैलने उसे अपनी सीगपर उठा लिया, एक बार हरिनने सीगसे घायल किया, एक बार एक जगली सूअरने उसकी बगलसे लटकती तलवारको तोड दिया, एक भालूने उसके कपडोको फाड डाला और एक भयकर जानवरने एक बार हमला करके उसे और उसके घोडेको गिरा दिया।

व्लादिमिर केवल एक निर्भीक योद्धा ही नही बल्कि शिक्षित पुरुष भी था। राजपरिवार-मे शिक्षा और सस्कृतिका अधिक प्रसार होनेसे उसे भी शिक्षित होना ही था। उसका पिता व्सेवोलद एक शिक्षित व्यक्ति था, जो पाच विदेशी भाषाओको जानता था। स्वय सुशिक्षित व्लादिमिरने विद्याके महत्त्वको दिखलाते हुए एक बार अपने पुत्रोको लिखा था—"जो तुम जानते हो, उसे न भूलो, और जो नही जानते, उसे पढो।" वह बडा स्वाध्यायप्रेमी था। अपनी सैनिक यात्राओमे भी वह सदा अपने पास पुस्तके रखता था। उसने "बच्चोकी शिक्षा"के नामसे एक दिलचस्प पुस्तक लिखी थी।

व्लादिमिर कियेफ-रूसके शासनकी अन्तिम चकाचौध करनेवाली ज्योति था। देशमे जो बिखराव प्रारम्भ हो गया था, उसे व्लादिमिर थोडे ही समयतक रोक सका। उसके मरते ही फिर रूस-भूमि अनेक छोटी-छोटी रियासतोमे बट गई, जगह-जगह स्वतत्र राजुल शासन करने लगे। इनमेसे कुछ महत्त्वपूर्ण रियासते थी—कियेफ, चेरनीगोफ, गालिच, स्मोलेन्स्क, पोलोत्स्क, तुरोफ-पिन्स्क, रोस्तोफ-सुज्दल, र्याजन्, नवोगारद और व्लादिमिर-वोल्हिन्स्क। ये सभी राजुल स्व्यातोस्लाव-पुत्र व्लादिमिरके वशज थे। कियेफ अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखता था, इसलिये वह राजुलोकी छीना-झपटीका बराबर अखाडा बना रहा। सैनिक जीवनसे अनभ्यस्त बिलासी राजुल अब कियेफका कोई ख्याल नही रखते थे। जहा व्लादिमिर मनोमाख अपने घोडे, बाज और रसोईका भी काम

अपने नौकरोंपर न छोड अपने हाथो करनेके लिये तैयार रहता, वहा इन राजुलोका जीवन आरामपसदीका था। इन्ही बातोके कारण राजुलोकी शक्ति भी कम हो गई, और धनी बायर अब राजुलोको अपनी बात माननेके लिये मजबूर कर सकते थे, इसीलिये हर बातमे वह उनकी सलाह लेते थे। राजुल अगर कोई बात अपने योद्धाओकी सम्मति बिना करते, तो वह जवाब देते—"राजुल, तूने हमारी रायके बिना यह निश्चय किया, इसलिये हम तेरे साथ नही जायेंगे।" इस समय पुराने समयकी प्रभावशालिनी सस्था 'वेचे' (पचायत) का भी महत्त्व बढ गया था—वेचे नागरिकोकी पचायत थी, जिसपर बायरो और धनी नागरिकोका भारी प्रभाव था। जब किसी बातका निर्णय करना होता, तो घटा बजाकर या चिल्लाकर नागरिकोको वेचे (सभा) के लिये जमा किया जाता। अगर वेचे प्रस्तावको स्वीकार करती, तो लोग चिल्लाकर कहते—"हम सब चलेंगे और हमारे बच्चे भी।" लेकिन कभी-कभी नगरके लोग राजुलकी लडाईमें शामिल नही होना चाहते, तब कहते—"राजुल, मेल करो, नही तो अपनी विपता आप सभालो।" इस प्रकार १२ वी शताब्दीमें कोई राजुल वेचेकी रायके बिना किसी शत्रुके साथ युद्धसे अपनी प्रतिरक्षा करनेकी हिम्मत नही रखता था। राजुलके सिहासनपर बैठनेके समय वेचे पहिले उससे अपनी शर्त्ते मनवाती। ऐसे भी अवसर आये, जब कि नापसन्द होनेपर वेचेने राजुलको निकाल बाहर किया और किसी दूसरे राजकुमारको यह कहकर निमत्रित किया—"आ राजुल, हम तुझे चाहते है।"

उस समय एक तरफ वेचेका अधिकार बढनेसे बायरो और धनिक नागरिकोके हाथोमे अधिक शक्ति आ गई थी, तो दूसरी तरफ बाहरी शत्रुओसे अच्छी तरह मुकाबिला करनेके लिये रूसमे कोई मजबूत सगठित शक्ति नही रह गई थी। इसी समयकी स्थितिमें एक अज्ञात कवि ने "ईगर-सेना-गाथा" लिखी थी।

ईगर सेना-गाथा—कालासागरके उत्तर एक मगोलायित घुमतू कबीला पोलोवत्सी ९वी-१०वी शताब्दी मे रहता था। कियेफ-रूसोके साथ इसका बहुत दिनोतक सघर्ष रहा। रूसी भाषाका आदिकाव्य "ईगर-सेना-गाथा" इन्ही सघर्षोंके सबधमे लिखा गया है। पोलोवत्सी इतने प्रबल थे, कि रूस उनसे अपनी रक्षा करनेमें असमर्थ थे, जिसका एक कारण यह भी था कि, रूस स्वय बहुतसे छोटे-छोटे टुकडोमें बटे थे, जिनमें आपसमें बराबर लडाई होती रहती थी। पोलोवत्सी जब हमला करने आते, तो काफी प्रतिरोध नही कर सकते थे। इन युद्धोका सबसे ज्यादा सत्यानाशी प्रभाव गावोंके किसानो-पर पडता था। "सभी नगर और गाव निर्जन हो गये थे। हम उन खेतोपरसे गुजरे, जिनमें कभी घोडो और ढोरोके झुड तथा भेडोके गल्ले चरा करते थे। लेकिन, वहा सभी चीजे वीरान पडी थी। अनाजके खेतोमें जगल जम गया था, जिसमें वन्य पशु रहा करते थे।" पुराने इतिहास-लेखकका कथन पोलोवत्सी-आक्रमणोके असरको बतलाता है। पोलोवत्सी भारी सख्यामे रूसोको बदी बनाकर अपने साथ ले जाते थे। "आफतके मारे, भूख-प्याससे काले पडे वे अभागे अपरिचित देशकी ओर वस्त्रहीन नगे पैर कदम बढा रहे थे। उनके पैर काटोसे छिल गये थे। आखोमें आसू भरकर वह एक दूसरेसे कहते थे—"मै अमुक और अमुक नगरका हू।" दूसरा जवाब देता—"मै अमुक और अमुक दीहातका हू।" रूसी भाषाके इस कलापूर्ण अमर लघु-काव्यमें राजकुमार ईगरका पोलोवत्सी घुमतुओके साथके सघर्षका वर्णन है। १२ वी शताब्दीके अतमें किसी अज्ञात लेखकने इसे लिखा था। सेवेर्स्क राजुलोने तग आकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान किया, जिसका नेता राजुल ईगर स्व्यातोस्लाव-पुत्र था। जब रूस-राजुलोसे उसने अपने साथ आ मिलनेके लिये कहा, तो सेवेर्स्क राजकुमारोने इन्कार कर दिया। पीछे उन्होने अपना स्वतत्र अभियान किया, जिसमें वह बुरी तरहसे हारे, ईगर बदी हुआ। कविने रूस-भूमिके महान् वीरके तौरपर ईगरका चित्रण किया है—"सैनिक उमगोंसे भरे उसने अपने सैनिकोका नेतृत्व करते हुये रूस-भूमिकी रक्षाके लिये पोलोवत्सियोके ऊपर अभियान किया।" ईगरने अपने सैनिकोंसे कहा—"भाइयो और योद्धाओ! बदी बननेसे मर जाना अच्छा है। मै चाहता हू अपने भालेको पोलोवत्सी मैदानके छोरसे तोड डालू। रूसजन! मै चाहता हू, तुम्हारे साथ अपने सिरको गिरा

दू, या अपने शिरस्त्राणसे दोनके जलको पीऊ ।" "काफी लोहित मदिरा वहा नही थी, रूस वीर अपने युद्ध-भोजको खतम कर रहे थे। उन्होने अपने वधुओको पान करनेका अवसर दिया, और रूस-भूमिके लिये स्वय अपने जीवनका उत्सर्ग किया।" युद्धक्षेत्रमे पडे हुये वीरोके शवोको देखकर कौवे किस तरह अपना भोज कर रहे थे, इसे कविने कितने शक्तिशाली शब्दोमें चित्रित किया है —

"भाई भाईसे बोला—'यह मेरा है,
और यह भी मेरा है, राजुल छोटीको वडी चीज कहने लगे, विश्वासघात के लिये।
और म्लेच्छ पोलोवत्सी विजयी बनकर रूस-भूमिमे आये।"

रूस-राजुलोको एक होनेके लिये कवि कहता है —

"प्रभुओ, अपने पैरोको सुनहली रिकावोमें रक्खो,
आजके अपने ऊपर होते अत्याचार तथा रूस-भूमिके लिये,
स्व्यातोस्लाव-पुत्र वीर ईगरके घावोंके लिये।"

रूमी भाषाके इस आदिकाव्य (वीरगाथा)से रूसी साहित्यका आरभ होता है और समस्त रूसी जातिको विदेशियोके विरुद्ध एक होनेका सदेश देता है। अगली शताब्दियोने देखा, कि वह सदेश व्यर्थ नही गया। ईगरके खूनका रूस वदला चाहे पोलोवत्सीसे न ले पाये हो, लेकिन उन्होने रूसके शत्रुओसे सदा वदला लिया। इसी काव्यके वीर नायकके नामपर रूसमें पुरुषोका सबसे अधिक प्रचलित नाम ईगर पाया जाता है। द्वितीय महायुद्धमें स्तालिनग्रादसे फासिस्तोको खदेडते हुये हजारो रूसी सैनिकोने दूनियेपरके तटपर पहुचकर अपने शिरस्त्राणोसे उस पवित्र जलको पीकर ईगरकी अपूर्ण इच्छाको पूरा किया।

ख　रोस्तोफ-सुज्दल-राजुल

१२ वी शताब्दीमे जब दूनियेपर-उपत्यकाकी रूस-भूमि पोलोवत्सीके आक्रमणोका शिकार हो अपने ऐतिहासिक महत्त्वको खो बैठी थी, इसी समय उत्तर-पूर्वी रूस-भूमिमें वोल्गा और ओका नदियोके बीच रोस्तोफ-सुज्दलका एक नया राज्य स्थापित हुआ, जिसने रूसके इतिहासमें महत्त्वपूर्ण काम किया। यह भूमि कियेफ जैसी उर्वर नही थी। जगली भूमि थी, जिसमे जगली जानवर और मधुमक्खिया वहुत थी, नदियोमे मछलियोकी वहुतायत थी, लेकिन जहातक खेतीलायक भूमिका सवध है, ऐसी भूमि वल्याज्मा नदीके तटपर ही थी। ओका और उसकी शाखा मस्क्वा नदीके किनारे रहनेवाले स्लाव जातिका नाम व्यातिची था। समय-समयपर आसपासके स्लाव भी यहा आकर वसते जा रहे थे। रोस्तोफ यहाका प्रधान नगर था, जिसका उल्लेख पहले-पहल १०वी शताब्दीमें मिलता है। इस भूमिकी दूसरी प्राचीन नगरी सुज्दल थी। यारोस्लावके शासनकालमें उसने अपने नामसे यारोस्लाव्ल नगरको ११ वी शताब्दीमें बसाया। व्लादिमिर नगरको सभवत व्लादिमिर मनोमाखने १२ वी शताब्दीमें कायम किया। इस प्रकार व्यातिचियोकी इस भूमिमें रोस्तोफ, सुज्दल, यारोस्लाव्ल और व्लादिमिर—चार नगर थे, पाचवा नगर मस्क्वा (मास्को) आगे स्थापित होकर जगद्विख्यात बननेवाला था।

व्यातिची स्लावोके पडोसमे मेरिया, वेसी और मोर्दावी रूसी-भिन्न जन-जातिया रहती थी, जिनका मुख्य काम था शिकार, मधु-सग्रह तथा थोडी-सी खेती। इनके अलग-अलग कवीलोपर अपने-अपने ठाकुर शासन करते थे। रूसियोके ईसाई हो जानेके वाद भी यह लोग वहुत समयतक अपने जन-जातीय धर्मको मानते थे। उस समय ओका और वोल्गाके तटोपर यह काफी सख्या में वसते थे।

१२ वी शताब्दीमें रोस्तोफ-सुज्दलके इलाके तथा दूनियेपर-उपत्यकामें भी रूसी और अ-रूसी लोगोके खेतो और भूमियोको वायरो और महतोने अपने हाथमें कर लिया था और जन-साधारण बधुवाले रह गये थे—ओका और वोल्गाके बीचके लोगोको पादरियोने जवर्दस्ती ईसाई बनाया था।

१२　यूरी I दीर्घबाहू, व्लादिमिर मनोमाख-पुत्र (११५७ ई०)

१२ वी सदीके पूर्वार्धमे रोस्तोफ-सुज्दलमें एक स्वतत्र राजुलका शासन कायम हुआ था, जिसका प्रथम गद्दीधर व्लादिमिर मनोमाखका पुत्र यूरी था। यह धनी वायरोकी जमीनको जवर्दस्ती छीन लेनेमें

आनाकानी नही करता था, शायद इसीलिये उसका नाम "दोलगोरुकी"--दीर्घबाहू पडा। जहा पीछे मास्को नगर बसा, वही बायर कुचकाका गाव था। यूरीने उस गावको ले मास्को नदीके किनारे वही अपने लिये एक महल बनाया, जहापर ११४७ ई०मे उसने अपने मित्र चेर्नीगोफके राजुलका स्वागत किया था। यह गाव सुज्दल और चेर्नीगोफ दोनो रियासतोकी सीमापर था। यूरीने पहले मास्कोके चारोतरफ एक लकडीकी दीवार बनवाई, जिसे ११५६ ई० मे दुर्गके रूपमे परिणत कर दिया। यूरी अपने समयका सबसे अधिक शक्तिशाली रूसी राजुल था। उसने वोल्गा-तटवाले बुल्गारोको कई बार लडाईमें हराया और पुराने नगर नवोगोरदको अपने राज्यमें मिला लिया। कियेफपर भी अधिकार करके कियेफ-राजुल बनकर वह ११५७ ई० मे मरा।

१३ अन्द्रेइ बगोल्युवोव्स्की, यूरी-पुत्र (११५७-७४ ई०)

यूरीके पुत्र अन्द्रेइके शासनकालमे रोस्तोफ-सुज्दलकी शक्ति और बढी। उसने पडोसके कितने ही राजुलोको अपना सामत बनाया। ११६९ ई० में उसने अपने सामन्तोकी सेनाके साथ कियेफ-पर आक्रमण किया और तीन दिनोतक उस प्राचीन नगरीको लूटा। अगले साल अन्द्रेइने नवोगोरदके ऊपर अपनी सेना भेजी, लेकिन नवोग्रादियोने उसे बहुत हानि उठाकर खाली हाथ लौटनेके लिये मजबूर किया। नवोगोरद अन्नके लिये सुज्दलपर निर्भर था। अन्द्रेइने वहा अन्नका जाना रोक दिया, जिसके कारण नवोगोरद आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर हुआ। ११६९ ई० की लूट और ध्वसलीलाके बाद कियेफ शताब्दियोतक सभल नही सका, लेकिन सुज्दल-राज्यका नगर व्लादिमिर अन्द्रेइकी राजधानी बनकर खूब फलने-फूलने लगा। अन्द्रेइने अपनी नई राजधानीका निर्माण पश्चिमी युरोपके कलाकारो और वास्तु-शास्त्रियोके परामर्शानुसार बडे भव्यरूपमे किया। इसी समय व्लादिमिरमें प्रसिद्ध उपेन्स्की गिर्जा बनाया गया, जिसके चित्रोमें पाश्चात्य कलाका प्रभाव दिखाई पडता है। व्लादिमिर नगरके पास बोगोल्युवोवो (भगवत्-प्रिय) उसकी दुर्गबद्ध जमीदारी थी, जहापर अन्द्रेइ अक्सर रहा करता था, इसीलिये उसको "बोगोल्युवोव्स्की" कहा जाने लगा। वह बायरोकी शक्तिको बढते नही देखना चाहता था, इसीलिये उसने कुचका जैसे कितने ही बायरोको मार भगाया और अपने दरबारियोमें साधारण जनोको रक्खा। लोग कहते थे--"राजुलकी जमीदारीमे घासके चप्पलमें घूमना बायरकी जमीदारीमे सुन्दर जूता पहनके घूमनेसे अच्छा है।" अन्द्रेइने जनसाधारणसे आये अपने दरबारियो और नगर-निवासियोकी सहायताके आधारपर रूसी रियासतोको सगठित करनेकी कोशिश की, लेकिन अभी उनके आर्थिक सबध इतने दृढ नही थे, कि यह सगठन मजबूत होता। इसीलिये बायरोका उच्छेद करना उसके लिये सभव नही हुआ। तो भी बायरोको वह बहुत असतुष्ट कर चुका था। उन्होने षड्यत्र करके ११७४ ई० में बोगोल्युवोवोके प्रासादमें चुपकेसे घुसकर अन्द्रेइको मार डाला। इसके बाद भारी लूट-पाट मची। बायर बहुत नाराज थे। वह केवल अन्द्रेइकी हत्यासे ही सतुष्ट नही हुये। उन्होने उसके भाइयोको भी वचित करके उसके भतीजोको शासन करनेके लिये निमत्रित किया। लेकिन व्लादिमिरके नागरिको और अन्द्रेइके छोटे दर्जेके अनुचरोने बायरोकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। बायरोने धमकाया--"हम व्लादिमिरको जलाकर खाक कर देंगे या वहा अपने पसद्निक (नगरपाल) अनुशासन करने के लिये भेजेंगे।" तो भी वह अपने मनोरथमें सफल नही हुये। नागरिको और साधारण जनताकी सहायतासे अद्रेइका भाई व्सेवोलद यूरी-पुत्रने बायरोको हराकर उन्हे अपनेको राजुल स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया।

१४ व्सेवोलद, यूरी-पुत्र (११७६-१२१२ ई०)

व्लादिमिर (क्ल्याज्मातटी) राजधानी बननेके बाद अब रोस्तोफ-सुज्दल राज्यका नाम व्लादिमिर राज्य हो गया। व्सेवोलदने "व्लादिमिर-महाराजुल"की उपाधि धारण की। उसने नवोग्रादवालोंमे अपने पुत्रो और भतीजोको शासकके तौरपर स्वीकर करवाया। स्मोलेन्सकके राजुलोने भी उसकी अधीनता स्वीकार की। र्याजनके न माननेपर राजुलको जेलमे डाल अपने पुत्रको वहा

ले जाकर बैठा दिया। जब लोगोने इसका विरोध करना चाहा, तो उसने र्याज़नका बहुत तहस-नहस किया। उसकी इतनी तत्परता देखकर भी "ईगर-सेना-गाथा" के कविने व्सेवोलदके लिये कहा—

"महाराजुल व्सेवोलद अपनी नावोंके पतवारोंसे,
तू वोल्गाके पानीको बिखरा नही सकता,
और न अपने सैनिकोके शिरस्त्राणोंसे दोनको उलीच सकता।"

वोल्गाके बुल्गार अब भी शक्तिशाली थे, जिनसे व्सेवोलदने कई लडाइया लडी। पोलोवत्सीके खिलाफ भी उनकी भूमिमे उसने एक बहुत बडा अभियान किया। व्सेवोलदने सुदूर गुरजी (जार्जिया) के राजाके साथ सबध स्थापित किया और वहाके कारीगरोको बुलवाकर राजधानीमें द्मित्रोफ गिर्जा बनवाया। व्सेवोलद पिताकी तरह ही बायरोंसे घृणा करता था। अपने बहुतसे पुत्रोके कारण लोगोने व्सेवोलदका नाम "बोल्शोये ग्नेज्दा" (भूरिश कुलाय) रख दिया था। व्सेवोलदके मरनेके बाद उसके हर एक पुत्रको अलग-अलग ठकुराइया मिली, जिनकी सख्या पुत्रोंके समय पाच और पौत्रोके समय बारह हो गई। इनमे परिवारके ज्येष्ठ व्यक्तिको व्लादिमिर नगरका राज्य तथा "व्लादिमिर-महाराजुल" की उपाधि मिलती।

१५ यूरी व्सेवोलद-पुत्र (१२१२–१२३८ ई०)

व्सेवोलदके मरनेके बाद व्लादिमिरके राजुलोने ओका और मध्य-वोल्गाके बीचमें रहनेवाले रूसी-भिन्न जातियोकी भूमिको हडपना शुरु किया। केवल मोर्दावी कितने ही समयतक और अपनी स्वतन्त्रता कायम रख सके। महाराजुल यूरीने १२२१ ई०मे ओका और वोल्गा नादियोके सगमपर निज्नीनवो-गोरद (निचला नवोगोरद, वर्त्तमान गोर्की) नगर और दुर्गकी स्थापना की। यहासे रूसी राजुल मोर्दावियोकी भूमिमे लूट-मार करते थे। मोर्दावियोने अपने राजा पुरगसके नेतृत्वमें जबर्दस्त प्रतिरोध किया और एक बार उन्होंने निज्नीनवोगोरदपर आक्रमण करके उसकी बाहरी बस्तियोको जला दिया।

यूरीको प्रभुता दिखलानेका अब मौका नही रह गया था, क्योकि गद्दीपर बैठनेके समय (१२१२ई०) जो मगोल तूफान सुदूर चीनमें अपनी प्रलयलीला मचा रहा था, वह अब उसके घरमें पहुच गया। यूरी अपनी सेनाके साथ वोल्गाके उत्तरमें सित नदीके करीब वोल्गाकी एक शाखाके किनारे एक बडे मैदानमें पडा हुआ था। उसको खबर मिली, कि बुल्गार राजधानीको मगोल नष्ट-भ्रष्ट कर चुके। मगोलोका मुकाबिला करनेके लिये रूसी राजुलोका एक होना आवश्यक था, जिसके लिये वह तैयार नही थे। र्याजन मगोलोका पहला शिकार होना था, जिसके बाद यूरीकी बारी थी, लेकिन यूरीने र्याजनको सहायता देनेसे इन्कार कर दिया। मगोलोने र्याजनको दखलकर उसको भूमिसात् कर दिया। फिर व्लादिमिरपर आक्रमण करके उसे नष्टकर आसपासकी ठकुराइयोके लोगोको अपनी तलवारोसे घासकी तरह काट डाला। एक महीनेके भीतर उन्होने १४ नगरोको दखल किया और जलाया, मास्को भी जिनमेसे एक था। अब (१२३८ ई०) में बा-तूके मगोल सित नदीके पासवाले मैदानमे अवस्थित यूरीकी सेनापर पडे। यूरी लडाईमें काम आया। बा-तू नवोगोरदकी भूमिपर भी बढना चाहता था, लेकिन रास्तेके जगलो और दलदलोने उसे आगे बढने नही दिया। इसके बाद मगोलोने कियेफ और सुदूर पश्चिममें गालिच-वोलोहुन्स्कके राज्यको लेते पोलन्द तथा पूर्वी युरोपके और भी कितने ही राज्योका ध्वस किया। रूसियोके ऊपर अब मगोलोका कठोर शासन स्थापित हो गया, लेकिन मगोल जानते थे, कि सीधे शासन करनेसे किसी रूसी राजुलद्वारा शासन करना बेहतर है, इसलिये उन्होने यूरीके भाई यारोस्लावको व्लादिमिरका महाराजुल मान लिया।

१६ यारोस्लाव व्सेवोलद-पुत्र (१२३८–४६ ई०)

[illegible] बा-तूने रूसके मुख्य-मुख्य नगरोंमें अपने नगरपाल

(वसकाकी) नियुक्त किये। मगोल कर उगाहनेमे कितनी निर्दयता करते थे, इसे एक जनगीत बतलाता है—

यदि किसी आदमीके पास पैसा नही,
तो उससे वह उसका बच्चा लेते।
यदि आदमीके बच्चे न होते,
तो उससे उसकी बीवी लेते,
यदि आदमीके गृहिणी न होती,
तो उससे वह उसके शरीरको ही लेते।

एक समकालीन लेखक मगोल अत्याचारके बारेमें लिखता है—"हमारे पुरखो और भाइयोके खूनसे भूमि पानीकी तरह भीग गई, हमारे बहुतसे भाई और बच्चे बदी बनाकर (तारतार) ले गये, हमारे गावोमें जगल लग गये, हमारी कीर्त्ति धूमिल हो गई, हमारा सौंदर्य नप्ट हो गया, हमारा धन गैरोकी सपत्ति बना, हमारे श्रमका फल काफिरोके हाथमे चला गया, हमारा देश विदेशियोके हाथमे पड गया।" ऐसी स्थितिमें यदि रूसमे विद्या और सस्कृतिका ह्रास हुआ, तो कोई आश्चर्य नही। रूसी नगरोकी होली मचाते समय मगोलोने प्राचीन रूमी साहित्य और कलाकी भी होली मचा दी।

लेकिन सब तरहसे रूसियोको निरीह और निर्बल बनाते हुये भी मगोलोने उनके हाथमें एक बडा हथियार दे दिया था, वह था व्लामिदिरके महाराजुलोको दूसरे रूसी राजुलोके ऊपर मानना। यह काम उन्होने किसी परमार्थ बुद्धिसे नही किया था, बल्कि इस प्रकार समयपर नियमपूर्वक करकी भारी राशिको प्राप्त करना उनके लिये बहुत आसान हो गया था। मगोल खान अपने इमी स्वार्थके कारण व्लादिमिरके शासकको "व्लादिमिर और सारे रूसका महाराजुल" स्वीकार करते हुये उसे **यारलिक** (अधिकार-पत्र) देते थे। कर उगाहनेके लिये जो एकता कायम हुई थी, वह मगोल-शक्तिके क्षीण होनेके समय एक सबल राजनीतिक शक्तिमे परिणत हो गई।

नवोगोरद—पूर्वी स्लाव अभी भी जनयुगीन समाजहीमे थे, जबकि कियेफ-रूसकी स्थापना हुई थी। वस्तुत भिन्न-भिन्न परिस्थितियोके कारण पूर्वी स्लावोका सामाजिक विकास अपने पश्चिमी पडोसियोके बराबर नही हो पाया था। इसमें अपने शक पूर्वजोके समयसे ही चली आती उनकी स्वच्छद लडाकू वृत्ति भी काम कर रही थी। वह पशुपाल-जीवनको पूरीतौरसे छोडनेके लिये तैयार नही थे। यद्यपि ईसवी-सन्के आरभ और बादकी चार शताब्दियोमें हूणोके पहुचनेसे पहिले ही निम्न द्नियेपर आदि प्रदेशोमे स्लावोने नागरिक-जीवन स्वीकार कर लिया था, और महाराजुल व्लादिमिरके ईसाई-धर्म स्वीकार करने से बहुत पहले ही ग्रीक सस्कृतिसे उनके पूर्वज अतोका घनिष्ठ सबध स्थापित हो गया था, लेकिन अभी अधिकाश रूस जनयुगके मनोभावोको ही अपनाये हुये था। रूसी भाषाका हमारी सस्कृत और प्राकृत भाषाकी तरह सश्लेषणात्मक रह जाना—शब्द और धातुकी रूपावलियोका सस्कृत जैसे चलना—भी शायद उसी सामाजिक मद परिवर्तनके कारण हुआ। हमारे यहा ईसाकी ६ठी-७वी शताब्दीमें भाषा जहा श्लिष्ट रूपको छोड, विश्लिष्ट बन चुकी थी, वहा रूसी भाषा आज भी बहुत-कुछ श्लिष्ट है। यह कोई आश्चर्यकी बात नही है, क्योकि रूसके सामाजिक सगठनमे जनयुगीन जनतात्रिकताके भाव बहुत पीछेतक काम करते रहे। कियेफ रूसकी शक्तिके निर्बल होनेपर छोटे-छोटे राजुलोके साथ **वेचे**का प्रभाव भी इसी बातको बतलाता है। जहा दूसरे राज्योमे यह साधारण जनोकी जनतात्रिकता अपने राजुलोको अधिक स्वछदता न देनेका कारण बनी, वहा नवोगोरदके नागरिकोमे इसने आभिजात्यवर्ग के गणराज्यका रूप लिया और समय-समयपर होनेवाला वहाका राजुल पूरी तौरसे गणसभा—वेचे—के हाथमे था। नवोगोरदकी परिस्थिति ही ऐसी थी, जिसने उसे एक गणतात्रिक नगरके रूपमे विकसित होने दिया। यह स्लावोकी एक बहुत पुरानी नगरी वोल्गाके उद्गमके पास इल्मन सरोवरने पूर्वीय वणिक्पथके ऊपर बसी हुई थी। वहा हाट और मेलेका मैदान था। इसी मैदानमें नगरकी **वेचे** बैठा करती थी। पासके मुहल्लेमे मुख्यत व्यापारी, शिल्पकार और मजदूर बसते थे। नगरके पूर्वकी ओर—सोफिइस्कया—मे एक दुर्ग था, जिसमें प्रसिद्ध सोफिया गिर्जा खडा था। यही नवोगोरदका बडा पादरी (विशप) रहता था।

नवोगोरद नगरसे नवोगोरद-राज्य आरभ हो जाता था, जो ओनेगा और लदोगा सरोवरो एव फिनलन्दकी खाडीतक फैला हुआ था। नवोगोरदके वायरो और व्यापारियोके जहा-तहा गाव और खेतिया (कर्मान्त) थी। उन्होने पूरबमें उरालकी पहाडियोतककी आदिम जातियोको अपने अधीन कर रक्खा था, जिनसे वह करके रूपमें बहुमूल्य समूरी छालें और चादी वसूल करते थे। व्यापार, जगल और शिकारकी उपज नवोगोरदकी समृद्धिके कारण थे। अनाजके लिये उन्हें अपने पडोसी सुज्दलपर निर्भर रहना पडता था। नवोगोरदका सबध वाल्तिक समुद्रके वणिक्पथसे था, जिसके जरिये वह युरोपके साथ व्यापार करते थे। जर्मन और स्वीड् व्यापारी भी इस व्यापारमे उनके सहभागी थे। वर्षमें दो बार जर्मन "अतिथि" व्यापारके लिये नवोगोरद आया करते थे। गर्मियोके "अतिथि" फिनलन्द खाडीसे नेवा नदी होकर नाव द्वारा आते, और जाडेके "अतिथि" वाल्तिक तट (लिवोनिया) से वर्फपर फिसलनेवाली बिना पहिये की गाडियो (स्लेज) द्वारा आते। उत्तरी युरोप और नवोगोरदसे व्यापार करनेवाली जर्मन नगरियो को १४ वी सदीमे हसे कहा जाता था। नवोगोरदके व्यापारी रूसकी चीजोको इन हसीय नगरियोके माध्यमद्वारा जहा युरोपमे पहुचाते, वहा स्वय युरोपीय वस्तुओको उनसे लेकर वह रूसके नगरोमे फैलाते। शिकारपर जीवन बितानेवाली सुदूर उत्तरकी नेन्सी नामसे प्रसिद्ध जातियोंसे (जिन्हें नवोगोरदीय लोग समोयित कहते थे) कीमती समूर मिलते थे। समोयित अधिक उत्तरके तुद्रा-क्षेत्रमे रहते थे। उनसे दक्षिण तायगा भूमिमें कोमी शिकारी रहते, उत्तरी उराल की ढलानो पर युग्रा कहे जानेवाले लोग रहते थे—जो कि आजकलकी मान्सी (वोगुल) और खान्ती (ओस्तियाक) जातिया है। इनकी भूमि (जिसे बुल्गार "अधकारभूमि" कहते थे), अपने समूरी जानवरोके लिये प्रसिद्ध थी। तुद्रावाले लोगोकी मुख्य जीविका थी वारहसिंगा पालना, जल-पक्षियो और ध्रुवकक्षीय लोमडियो का शिकार करना। इन पिछडी हुई जातियोके निरकुश राजा थे नवोगोरदीय वायर और व्यापारी। उनके अत्याचारोंसे कभी-कभी मजबूर होकर वह विद्रोह भी कर बैठती थी। ११८७ ई० में युग्रा लोगोने नवोगोरदके कर उगाहनेवालेको मार डाला, जिसपर कई सालतक नवोगोरदसे उनपर सैनिक अभियान भेजे जाते रहे।

नवोगोरद नगरका सबसे प्रभुताशाली वर्ग था वायरोका। सबसे अच्छी भूमि और विजित क्षेत्र उनके हाथमें थे, जिनमे वह अपने अर्धदासो और किसानोकी मददसे अधिया (पोलोविना) पर खेती कराते थे। वायर अपने असामियाको गाव छोडकर जाने नही देते थे। हस्तशिल्प भी यहापर बहुत उन्नत था, लेकिन शिल्पकार भी वायरो और व्यापारियोके अधीन थे। गरीब मजूरोका काम था माल ढोना और नावें खेना। इस प्रकार इस गणराज्यकी सपत्तिके मालिक थे वायर और व्यापारी। काले (चोर्निये) गरीब लोग उनके लिये अपना जीवन और श्रम भेंट करते थे। रूसी नगरोंकी तरह नवोगोरदमे भी एक राजुल रहता था, लेकिन यहाकी वेचेकी शक्ति सबसे अधिक थी। १२ वी शताब्दी के प्रथम पादमें वायरो और व्यापारियोद्वारा नियत्रित वेचेने इस बातका रवाज किया, कि वहा के सभी मुख्य-अधिकारी नवोगोरदकी वायरोमेसे चुने जाये। ब्लादिमिर मनोमाखके पौत्र व्सेवोलदके राजुल होनेके समय ११३६ ई० में वेचेने विद्रोह कर दिया, क्योंकि व्सेवोलद कुछ अधिक स्वतत्रतासे काम लेना चाहता था। विद्रोहियोने दो महीनेतक व्सेवोलद और उसके परिवारको बदी रख फिर मुक्त कर दिया। तबसे वेचेकी शक्ति सर्वोपरि हो गई। यद्यपि नवोगोरद अपने यहा सदा एक राजुल रखता था, लेकिन जब कभी भी राजुल कुछ स्वतत्रता दिखलाने लगता, तो उसे बोरिया-बिस्तर बाधके निकल जाना पडता। वेचेके अधिवेशनके लिये लोगोको घटे बजाकर सूचना दी जाती, सभी लोग मैदानमें इकट्ठे होते। कभी-कभी एक ही समय वेचेकी बैठक तोर्गोवाया और सोफिस्काया दोनो जगहोपर होती, दोनोके निर्णय कभी-कभी एक दूसरेसे भिन्न होते, ऐसी अवस्थामे दोनो वेचेका वोल्खोफ पुलके आरपार झगडा होता। इस प्रकार सारी निरकुश शासनके स्थापित होनेसे पहले ही नवोगोरदमे एक सफल प्रजातात्रिक व्यवस्था कायम था।

जर्मन व्यापारी वाल्तिक तटसे व्यापार करनेके लिये नवोगोरद आते थे। १२वी शताब्दी-मे उन्होने [illegible] नदीके मुहानेपर अपनी एक व्यापारिक बस्ती स्थापित की, जो कि दूसरेकी

भूमिपर अनधिकार-चेष्टा थी। उन्होने व्यापारके साथ-साथ ईसाई-धर्मके प्रचारका भी आड लिया जिसमें उन्हे रोमके पोपकी सहायता प्राप्त थी। लोग पूर्वजोकी पुरानी सस्कृतिके प्रतीक अपने धर्मको छोडकर ईसाई वननेके लिये तैयार नही थे, इसपर पोपने उनके विरुद्ध धर्मयुद्ध घोषित कर दिया। उत्तरी जर्मन व्यापारियोने लिवोनिया (वाल्तिकतट) के विजय करनेका इसे अच्छा मौका देख इसके लिये जहाज दिये। वडा पादरी नियुक्त होकर जव अपने धर्मयोद्धाओके साथ लिवोनिया आया, तो वहाके लोगोने कहा—"अपनी सेना लौटा दो। हमें तलवारसे नही, वल्कि शब्दोसे समझाओ।" लेकिन वह तो तलवारसे ईसाई-धर्मका प्रचार करने आये थे। उनके पास देगियोकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हथियार थे। लडाईमें उन्होने लिवोनियावालोको हराया, लेकिन वडे पादरीका घोडा उसे शत्रुके दलमें ले गया, जहा प्रथम विशपको धर्म-प्रचार करते हुये शहीद वननेका मौका मिला। जर्मनोने सारे देशको लूट-मारकर वर्वाद कर दिया। नये विशप अलवर्टने पश्चिमी द्विनाके मुहानेके पास १२०१ ई० में रीगा नगरको बसाया। वहा जर्मन उपनिवेशियोको वसाकर व्यापार और धर्म-प्रचार किया जाने लगा। अगले साल (१२०२ ई० में) खड्गवीरके नामसे पोपने एक नई धर्मसेना सगठित करनेकी आज्ञा प्रदान की। यह वीर अव खुलकर देश-विजय करने लगे। लोग विरोध करते, तो वह ग्रामो और नगरोको जला देते, सभी पुरुषोको मार डालते और स्त्रियो और वच्चोको दास वनाकर वेच देते। लोग भागकर जगलोमे चले जाते, जहा यह धर्मसैनिक उनको शिकार करते पकडते। एक जर्मन सम-सामयिक लेखकके अनुसार—"वह उन्हे पीटते हुये गावमे ले आते। भगोडोका पीछा करते रास्तोंमे होते उनके घरोमें घुस उन्हें वाहर घसीटकर मार डालते। जो अपनी छतो या लकड़ीके टालोपर चढकर आत्मरक्षाका प्रयत्न करते, उन्हे पकडकर काट डालते। गावसे भागते हुये लोगोको उनके खेतो में भी पीछा करते। वहासे यदि पवित्र देववनोकी तरफ भागते, तो वह देववृक्ष उनके खूनसे लाल हो जाते।　　　पाचसौसे अधिक आदमी लडाईके स्थानमे और वहुतसे खेतोमे, रास्तोपर तथा दूसरी जगहोमें मारे गये।" ईसाके धर्मके प्रचारका कैसा सुदर तरीका था!

जर्मन धर्मयोद्धा इसलिये भी सफल हो रहे थे, क्योकि लिवोनीय लोगोमें एकता नही थी। विशप अलवर्टके मरनेके वाद लिवोनी धर्मयोद्धाओको कई वार वुरी तरहसे हार खानी पडी, जिससे उनका धार्मिक उत्साह कम होने लगा। इसी समय एक दूसरी जर्मन धर्मसेना—त्युतोनिक आकर मौजूद हुई। यह धर्मसेना १२वी शताव्दीमें फिलस्तीनमें मुसलमानोके साथ लडनेके लिये स्थापित की गई थी, जिसे पोपने इस नये धर्मक्षेत्रमें भेज दिया। जव लिथुवानी जातिके प्रसी कवीलोकी भूमि—नीमेन और विस्तुला नदियोके द्वावे—में इन त्युतोनिक धर्मयोद्धाओके पैर पडे, तो वहा कार्ल मार्क्सके अनुसार—"१३वी शताव्दी के अन्तमे यह समृद्ध देश निर्जन भूमिमें वदल गया, गाव और जुते हुये खेतोकी जगह जगल और दलदल आ मौजूद हुये। लोगोमेसे कितने ही मार डाले गये, कितनोको वदी वनाकर ले गये और वाकी लिथुवामे भागनेके लिये मजवूर हुये।"

१२३७ ई० मे लिवोनी खड्गवीर और त्युतोनिक धर्मसेना वाल्तिक प्रदेशको जीतनेके लिये एकतावद्ध हो गई।

१७ अलेक्सान्द्र नेव्स्की, यारोस्लाव-पुत्र (१२६३ ई०)

जर्मन धर्मयोद्धाओके अतिरिक्त स्वीड व्यापारी भी नवोगोरदकी भूमिपर आख गडाये हुये थे। जर्मन धर्मवीर वाल्तिक तटको दखल कर रहे थे, और स्वीड व्यापारी फिनलन्दकी खाडीपर हाथ साफ करना चाहते थे, जिसमें कि वह पूर्वी युरोपके व्यापारके एकमात्र स्वामी वन जाये। १२४० ई० मे स्वीड राजा कौन्ट वर्गरके नेतृत्वमें नेवाके ऊपर स्वीडोने आक्रमण किया, लेकिन नेवाके मुहानेपर उनके उतरते ही नवोगोरदके महाराजुल अलेक्सान्द्रने उनपर भीषण प्रहार किया। इस समयतक वा-तू खानका राज्य पूरी तौरसे स्थापित हो चुका था, और महाराजुल अलेक्सान्द्रने वा-तूकी कृपा प्राप्त कर ली थी। राजनीतिक चाल हीमें नही, वल्कि सैनिक कौशलमें भी अलेक्सान्द्र असाधारण पुरुष था। एक समकालीन लेखकके अनुसार—"विजय करते हुये वह अजेय था।" अलेक्सान्द्रके नेतृत्वमें नवोगोरदके सैनिकोने

अद्भुत वीरताका परिचय दिया। स्वीड पूरी तौरसे पराजित हुये और वह अपने जहाजोंपर बैठकर भाग निकले। नेवा-तटपर हुई इसी विजयके उपलक्षमें अलेक्साद्रका नाम अलेक्साद्र नेव्स्की पड गया। आज भी सोवियत रूसके दूसरे नम्बरके सबसे बडे नगर लेनिनग्रादके प्रसिद्ध राजपथका नाम नेव्स्की है।

अलेक्साद्रने और भी लडाइया लडी, लेकिन इसके पहले एक बार उसे वेचेका कोपभाजन हो नवोगोरदसे निर्वासित होना पडा था। पर जब बाल्तिक-तटमें जर्मनोने आक्रमण किया, तो वेचेने फिर उसे बुला लिया, और कई लडाइयोंमें उसने जर्मनोको बुरी तरहसे हराया, जिनमें ५ अप्रैल १२४२ ई० को लडी गई "बर्फकी लडाई" निर्णायक साबित हुई। नवोगोरदके लोगोंने पाच सौ जर्मन धर्मवीरोको मारकर उन्हें सात मीलतक खदेडा और पचास बदी बनाये। इस युद्धमें हारनेके बाद जर्मन वीरोने फिर रूसी भूमिकी ओर हाथ बढानेकी हिम्मत नही की।

नवोगोरदवालोंने ही अपनेसे पश्चिम बाल्तिकके रास्तेपर प्स्कोफ नगर स्थापित किया था, जो १४वी शताब्दीमे नवोगोरदसे स्वतन्त्र हो एक गणराजीय नगरमें परिणत हो गया। स्वतंत्र गणनगर होते हुये भी नवोगोरद और प्स्कोफके लोग अपनेको व्लादिमिर-महाराजुलके अधीन मानते थे। १४वी शताब्दीके प्रथम पादमें व्लादिमिर-राज्यके भीतर एक और घरेलू सघर्ष त्वेर तथा मास्कोके राजुलोंके बीच शुरू हो गया। यह दोनो नगर ऐसी जगह स्थित थे, जहापर मंगोल मुश्किलसे पहुच पाते थे, इसीलिये दूसरी जगहोंके भी कितने ही शरणार्थी यहा आकर बस गये थे, जिसकी वजहसे दोनो नगरोंका आर्थिक विकास बडी तेजीसे हुआ। त्वेर ऊपरी वोल्गा तथा उसकी शाखा त्वेरत्साके संगमके पास बसा हुआ था। नवोगोरदसे वोल्गा होकर कास्पियनतक जानेवाले वणिक्‌पथको त्वेरसे होकर गुजरना पडता था। इसी व्यापारके कारण त्वेरके नागरिक बडे समृद्धिशाली हो गये थे।

मास्को नगर वोल्गामें गिरनेवाली ओका नदीकी शाखा मास्क्वाके तटपर अवस्थित था। ऊपरी वोल्गासे ओकाकी ओर सीधा आनेवाला वणिक्‌पथ मास्कोकी भूमिसे गुजरता था। यहासे निम्न-वोल्गाकी ओर भी आसानीसे जाया जा सकता था, साथ ही दोनका ऊपरी भाग नजदीक होनेके कारण अजोफ और कालासागर होते पूर्वी युरोपका वणिक्‌पथ भी यहासे खुला हुआ था—क्रिमिया और कालासागरके तटपर इतालीके व्यापारियोंने अपनी बहुतसी व्यापारिक बस्तिया बसा रक्खी थीं। इन्हीं कारणोंसे मास्कोको विकासका त्वेरसे भी अधिक सुभीता प्राप्त था।

ग मास्को महाराजुल

१८ दानियल, अलेक्सान्द्र नेव्स्की-पुत्र (१२६३–१३०३ ई०)

१४वीं शताब्दीके आरम्भमें मास्कोकी एक छोटीसी रियासत थी, जिसमें मास्को नगर तथा रूजा और ज्वेनीगोरदके दो और छोटे-छोटे कस्बे सम्मिलित थे। लेकिन अब उसपर अलेक्सान्द्रका पुत्र दानियल राज्य कर रहा था, जो अपने पिताकी तरह ही योग्य और महत्त्वाकांक्षी था। १३०१ ई० में उसने मास्क्वा और ओकाके संगमपर अवस्थित कलोम्ना नगरको ले लिया। १३०२ ई० में उसे पासके पेरेयास्लाव्ल राज्यका उत्तराधिकार मिला, जिसके कि अधीन पहिले मास्को था। अब मास्को ज्यादा बढ गया था, तो भी अभी वह त्वेर (आधुनिक कलिनिन) का मुकाबिला नही कर सकता था, विशेषकर इसलिये भी कि मंगोल खानने वहाके महाराजुल मिखाइल यारोस्लाव-पुत्रको १४वी शताब्दीके आरम्भमें ही "व्लादिमिर-महाराजुल" स्वीकार कर लिया था। किसी रूसी राजुलको अधिक शक्तिशाली न होने दिया जाये, इसके लिये मंगोल खानोंकी यह नीति थी, कि वह कभी एकका समर्थन करते और कभी दूसरेका। उज्बक खानने व्लादिमिरके महाराजुलको अधिक शक्तिशाली देख मास्कोके राजुल युरी दानियल-पुत्रका पक्ष लेना शुरू किया।

१९ यूरी III दानियल-पुत्र (१३०३–२५ ई०)

यूरीके ऊपर उज्बेक खानकी इतनी कृपा थी, कि उसने अपनी बहिनको युरीसे ब्याह दिया और [illegible] लिये मंगोल सेना साथ कर दी। उज्बेकिस्तानके मुस्लिम इतिहासकार

पक्का मुसलमान कहते हैं, तो भी राजनीतिमें वह इस तरहके व्याहको बुरा नही समझता था। यह भी याद रखनेकी वात है, कि पश्चिमके मगोल शासकोमें सभी मुसलमान नही हुये, वल्कि कितने ही व्याह-शादीके सम्वन्धसे ईसाई होकर रूसियोके भीतर हजम हो गये। मगोलोकी सहायताके वाद भी यूरीकी हार हुई और उसकी रानी—उज्वेककी वहिन—वदिनी वनी, और उसी अवस्थामें मर भी गई। यूरीने खानके सामने त्वेर-महाराजुल मिखाइलके ऊपर इल्जाम लगाया, कि उसने उसे जहर देकर मरवा दिया। खानने मिखाइलको मृत्युदड दिया और यूरीको महाराजुलका पद प्रदान किया। इसी समयसे मास्कोका सितारा चमकने लगा। यूरी वहुत दिनोतक इस पदका उपभोग नही कर सका और वह मिखाइलके एक पुत्रद्वारा मारा गया। उज्वेकने यूरीके हत्यारेको मरवा डाला, लेकिन मास्कोको अधिक शक्तिशाली न होने देनेके लिये अवकी महाराजुल-पदको उसने मिखाइलके पुत्र अलेक्सान्द्रको प्रदान किया। पर, रूसके आर्थिक जीवनमें मास्कोकी जैसी स्थिति थी, उसके कारण पासा पलटा नही जा सकता था।

२० इवान I खलीता, दानियल-पुत्र (१३२५–४१ ई०)

मास्कोमें यूरीका स्थान उसके भाई इवान I ने ले लिया, जिसका नाम खलीता (पैसेका थैला) पड गया था, क्योकि उसके पास वहुत पैसा था। इवान खलीता ही नही था, वल्कि वह वडा चतुर और कुटिल शासक भी था। मास्कोकी शक्ति वढानेके लिये वह हर तरहके हथियारोको इस्तेमाल करनेके लिये तैयार था। उस समय रूसी सघराज व्लादिमिर नगरमें रहता था—कियेफके नष्ट हो जानेके वाद सघराजकी गद्दी यही चली आई थी। यूरीने कोशिश की थी और इवान खलीताने भी कोशिश करके सघराज पीतरको इस वातके लिये राजी कर लिया, कि वह अपनी गद्दीको व्लादिमिरसे मास्को ले आये। तवसे मास्को रूसके सवसे वडे धर्माचार्यकी राजधानी वन गया, जिससे मास्कोकी शक्ति वढनेमें वडी सहायता मिली। अव धार्मिक वहिष्कारकी धमकी देनेसे छोटे-मोटे राजुल भी मास्कोकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार हो जाते। धर्मराजका कोश भी मास्को-राजुलकी सहायता करनेके लिये तैयार था। इवान खलीता मगोल खान, उसकी खातूनो और अनुचरोपर सोनेकी वर्षा करनेके लिये तैयार रहता था, फिर वह क्यो न उसके पक्षमें होते? १३२७ ई० मे खानने अपने दूत चोलखानको एक वडी मगोल सेनाके साथ त्वेरके विरुद्ध भेजा। मगोलोने नगरको लूटना शुरू किया, इसपर लोगोने विद्रोह कर दिया और चोलखान तथा उसके सैनिक खतम कर दिये गये। इवान खलीताने दौडकर खानके पास पहुच त्वेरको दड देनेके लिये अपनी सेवायें पेश की। खानने उसे एक वडी मगोल सेना दी। इवानने त्वेरपर आक्रमण करके उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। त्वेरके महाराजुल अलेक्सान्द्रने भागकर प्स्कोफमें शरण ली। सघराजने प्स्कोफवालोको धार्मिक वहिष्कारकी धमकी दी। उनसे सहायता न पा महाराजुल लिथुवानिया भाग गया। पीछे वह त्वेर लौटा और खानने भी उसे क्षमा कर दिया, पर पीछे फिर इवान खलीताकी चालोमें पडकर खानने उसे ओर्दूमें वुलवाकर मार डाला। मास्को-राजुलका मनोरथ सिद्ध हुआ और १३२८ ई० मे उसे महाराजुलका पद मिल गया। यही नही, सारी रूस भूमिसे कर उगाहनेका इजारा भी खानने खलीताको दे दिया। खलीता समयसे पहले ही नगद कर वेवाक करनेके लिये तैयार रहता था, फिर खान क्यो नही वैसा करता? इवान खलीताने अपने शत्रुओको दवाने तथा मास्कोकी शक्तिको वढानेमें किपचक (मगोल) खानका खूब इस्तेमाल किया। उसके मरते समयतक मास्को राज्य काफी विस्तृत हो चुका था, और उसका प्रतिद्वद्वी त्वेर अपनी समृद्धिके वहुतसे साधनोको खो चुका था। अव सारी मास्क्वा-उपत्यका (कलोम्नासे मोजाइस्कतक) मास्को-महाराजुलकी थी—मास्को-साम्राज्यकी नीव पड गई।

२१ सेमेओन, इवान I-पुत्र (१३४१–५३ ई०)

खलीताके मरनेके वाद महाराजुल पद उसके पुत्र सेमेओनके हाथमें रहा।

२२ इवान II, इवान I-पुत्र (१३५३-५९ ई०)

भाईके वाद इवान I गद्दीपर बैठा, फिर उसका पुत्र दिमित्रि मास्कोका स्वामी वना।

२३ दिमित्रि दोन्स्की, इवान II-पुत्र (१३५९-८९ ई०)

महाराजुलको तरुण देखकर पडोसी राजुलोंने मास्को-राज्यपर हाथ फेरना चाहा, लेकिन दिमित्रिके पीठपर अब सघराज अलेक्सी और मास्कोके वायरोंका हाथ था। जिनके प्रयत्नसे खानने दिमित्रिको महाराजुलका पद प्रदान किया। वायरोंने बालक दिमित्रिको घोडेपर चढाकर प्रतिद्वंद्वी सुज्दल राजुलपर आक्रमण कर दिया और हाथसे निकल गये व्लादिमिर-नगरपर फिर अधिकार कर लिया। दिमित्रिके २६ वर्षके शासनमें मास्कोकी शक्ति बहुत बढी, जिसमें एक कारण (मगोल सुवर्ण-ओर्दूकी) शक्तिका कमजोर होना भी था। १३६६ ई० में दिमित्रिने मास्कोको पत्थरकी दीवारोंसे दुर्गबद्ध किया, इससे पहले उसके चारो ओर बजकी लकडीका नगर-प्राकार था। उसने त्वेर, र्‍याजन और निज्नीनवोगोरोदके राजुलोंपर जबर्दस्त आक्रमण किये, जिसपर उसके शत्रुओंने लिथुवन राजा ओलिगर्दसे मदद ली, और तीन बार मास्कोके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन मास्को अजेय साबित हुआ। पादरी, सघराज अलेक्सी और वायर सब तरहसे मदद देनेके लिये तैयार थे। मास्कोने कोमी जातिके लोगोको अपने अधीन कर उन्हें ईसाई बनानेका प्रयत्न किया। ईसाई-धर्मके प्रचारके साथ-साथ मास्कोकी शक्ति बढती गई। शक्तिके मदमें मास्कोने मगोलोंसे भी छेड-छाड शुरू की। अब मगोलोंका सुवर्ण-ओर्दू छोटे-छोटे खानोंमें बट चुका था, जिनमें सबसे शक्तिशाली ममाईखान था। मास्कोकी इस छेडखानीको मगोल कैसे बर्दाश्त करते? ममाईने १३७८ ई० में र्‍याजनपर आक्रमण करनेके लिये एक तारतार सेना भेजी, जिसका लक्ष्य था मास्कोकी ओर बढना। लेकिन ममाईकी सेनाको वोझा नदीके किनारे भारी हार खानी पडी। ममाईने अब लिथुवानी राजा जागिएलोसे समझौता किया और स्वय एक बडी सेना लेकर लडनेके लिये आगे बढा। र्‍याजनके राजुलने अपने प्रतिद्वंद्वी मास्कोके महाराजुलके विरुद्ध ममाईसे मेल कर लिया। इधर महाराजुल दिमित्रिने भी डेढ लाखकी सेना एकत्रित कर ली थी। जातीयताके जोशमें आकर भारी संख्यामें रूसी राजुलके झंडेके नीचे इकट्ठा हो गये थे। यही नहीं, राजा ओलिगर्दके दो लिथुवानी राजकुमार भी बेलोरूसी और लिथुवानी सैनिकोंके साथ ममाईसे युद्ध करनेके लिये आये। दिमित्रिने अपनी सेनासहित ओकापार हो दोनके किनारे पहुंच युद्ध-परिषद् बुलाई। कुछ लोगोंकी राय थी "दोनके पार जाओ राजुल" और दूसरे कह रहे थे "मत जाओ, वहां बहुत शत्रु हैं।" दिमित्रि मना करनेवालोंकी बात न मान दोनपार हो गया। ८ सितम्बर १३८० ई० को कुलिकोवोका भीषण और निर्णायक युद्ध हुआ। कुलिकोवोका युद्धक्षेत्र नेप्र्याद्वा नदी और दोनके सगमपर अवस्थित था। युद्ध भीषण हुआ, यहां सैनिकोंकी धरती खूनसे लाल हो गई, जहां जगह-जगह लाशें पडी थी। तारतारोंको पहले युद्धमें सफलता हुई, लेकिन इसी समय छिपे हुये रूसी सैनिकोंने अपना पीछा करते तारतारों पर पीछेकी ओरसे आक्रमण कर दिया। ठीक समयपर हुये इस जबर्दस्त प्रहारसे तारतारोंकी पूरी हार हुई। वह जान बचानेके लिये भाग निकले और रूसी सवारोंने पीछा करके उनके शिविरको लूट लिया। दोनतटपर हुये इसी युद्धके विजयके उपलक्षमें दिमित्रिको "दोन्स्की" (दोनवाला) कहा जाने लगा।

इस लडाईके थोडे दिनो बाद तोख्तामिशसे लडते हुये ममाई मारा गया। उसके बाद तोकतामिशने १३८२ ई० में अचानक मास्कोपर आक्रमण कर दिया। महाराजुल दिमित्रि तैयार नहीं था, इसलिये सेना जमा करनेको वह उत्तर चला गया। वायरोंने भी जान लेकर भागना चाहा, इसपर मास्कोमें विद्रोह हो गया। स्वतंत्रता-प्रेमी नगरवासियोंने क्रेमलिन (दुर्ग) के फाटकपर पहरेदार बैठा दिये, [illegible] नगरसे बाहर न जाने पाये। तोकतामिशकी सेनाने नगरपर आक्रमण किया। नागरिकोंने उसका पूरा प्रतिरोध किया। तीन दिनतक लडाई करनेके बाद भी सफलता न देख तोकतामिशने झूठे नगाडे सुनाया दे नगरके दरवाजेको खुलवाया और [illegible] कर दिया। इसके बाद रूसी लोग फिर खिराज देने लगे। यद्यपि कुलिकोवोके युद्धने [illegible] नहीं कर दिया, किन्तु उनके मनमें अब यह भाव पैदा हो गया था, कि [illegible] मुकाबिला कर सकते हैं।

२४. वासिलीI, दिमित्र-पुत्र (१३८९–१४२५ ई०)

पिताके कामको पुत्रने और आगे बढाया। वासिलीने निज्नीनवोगोरदको ले लिया।

२५ वासिली अध II वासिली I-पुत्र (१४२५–६२ ई०)

वासिलीके पुत्र वासिलीको अपने मनोरथमें अधिक सफलता प्राप्त करनेमें सबसे भारी बाधा पारिवारिक सघर्ष था। उसका चचा यूरी स्वय महाराजुल बनना चाहता था। खानने वासिलीको जब यह पद प्रदान किया, तो दोनोमें खुला सघर्ष शुरू हो गया, जो बीस सालतक जारी रहा। इस सधर्षमें कितनी ही बार मास्को एक हाथसे दूसरे हाथमे जाता रहा। एक बार वासिली तीर्थयात्राके लिये त्रोयत्सा गया हुआ था, उसी समय उसके प्रतिद्वद्वी राजुल शेम्याकाके सिपाहियोने उसे पकडकर मास्कोमें ले जा अधा कर दिया, जिसके कारण उसका नाम त्योम्नी (अध) पड गया। वासिलीने फिर जल्दी ही अपने राज्यको प्राप्त कर लिया, और उसके बाद उसकी शक्ति फिर बढी।

१४ वी सदीके अन्तमे रूसमे ईसाई-धर्मके प्रचारके साथ-साथ विद्याका प्रचार भी कमसे कम उच्च वर्गमें काफी था, लेकिन अध वासिली "निर्ग्रंथ और निरक्षर" था, जिससे सिद्ध है, कि अभी रूसी सामन्तवर्गमे विद्याकी उतनी अवश्यकता नही मानी जाती थी।

५· (२।१।४)

मास्को-राज्यविस्तार (१२२६-१४६२ ई०)
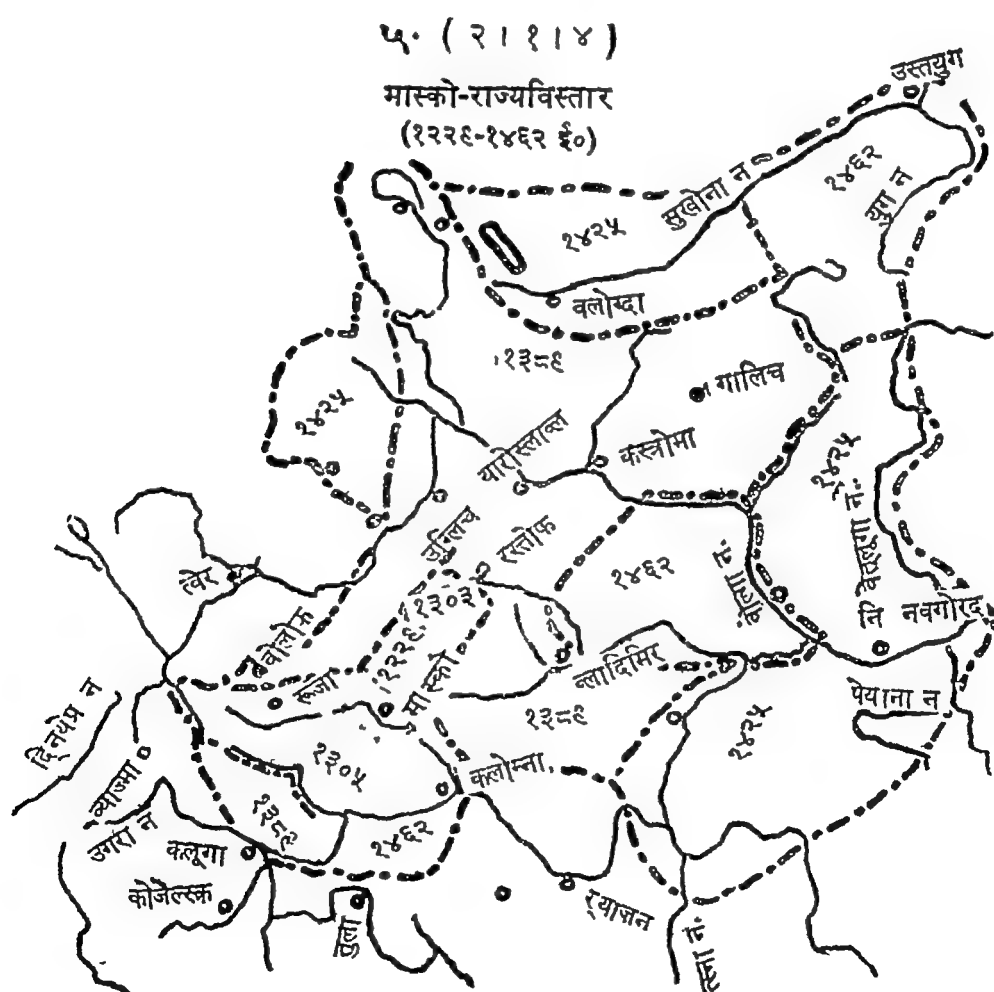
२६ इवान III, वासिली अध-पुत्र (१४६२–१५०५ ई०)

पीढियोसे धीरे-धीरे सचित होती मास्को-राजशक्ति अब बिल्कुल स्पष्ट दिखने लगी। इवान III सारे उत्तर-पूर्वी रूसका एक सुसगठित राज्य बना लिया। नवोगोरद अभीतक मास्कोसे अपनेको स्वतत्र

भी इवानने अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। उसने उरालकी ओर भी कई अभियान भेजे। १५०० ई० मे इवानकी सेनाने उराल पर्वतश्रेणी अर्थात् युरोपकी सीमासे पार हो एसियाकी सीमामे पैर रक्खा। वहाके निवासी नेन्सी अब मास्कोके करद बन गये। राज्यविस्तारके प्रयत्नमें कितनी ही बार उसे बाधाका भी सामना करना पडा, लेकिन बाधाओके होते भी इवान आगे बढनेमे सफल रहा। सैनिक-शक्ति तो उसकी प्रवल थी ही, किन्तु उससे भी अधिक उसकी कूटनीति काम कर रही थी। क्रिमिया और साइबेरियाके तारतारोको सुवर्ण-ओर्दूके अवशेषमे भिडाकर उसने अपना काम निकाला।

मास्को नगरी जहा एक शक्तिशाली राज्यकी राजधानी हो गई थी, वहा वह व्यापारका भी सबसे बडा केंद्र थी। जाडोमें बर्फ बनी हुई मास्क्वा नदीके ऊपर व्यापारी अपनी दूकानें रखते थे। एक युरोपीय यात्रीने उस समयका वर्णन करते हुये लिखा है—"सारे जाडेभर अनाज, मास, सूअर, ईंधन, भुस और दूसरी आवश्यक चीजे बेचनेके लिये वहा लाई जाती है। नवम्बरके अन्तमे मास्कोके पास-पडोसके लोग अपनी गायो और सूअरोको मारकर नगरमे बेचनेके लिये लाते है। यह बडा आनन्दका दृश्य होता है, जबकि बर्फके ऊपर चमडे निकाले हुये जानवरोको बहुत भारी परिमाणमे अपने पैरोपर हम खडा देखते है।"

इवान III ने मास्कोको एक बडी अन्तर्राष्ट्रीय शक्तिमे परिणत कर दिया। उसने शासन, सेना, और कोशको जहा केंद्रित कर दिया, वहा सैनिक हथियार और कौशलमे भी बहुत वृद्धि की। इवानने पश्चिमी युरोपसे कारीगरोको बुला तोपे ढलवाकर रूसी तोपखानेको मजबूत किया। उसकेद्वारा स्थापित रूसी तोपखाना तबसे ही दुनियाका सबसे शक्तिशाली तोपखाना बन गया, जिसे सोवियत-कालमें भी रूसने अक्षुण्ण रखा—हिटलरकी सेनाओको भगानेमे रूसी तोपोका काफी हाथ रहा। इवानको अब सभी राजा अपनी उच्च बिरादरीमें सम्मिलित करनेके लिये प्रस्तुत थे। जर्मन-सम्राट्ने राजाकी उपाधि देनी चाही, लेकिन इवानने "मुझे उसकी अवश्यकता नही" कहकर लेनेमे इन्कार कर दिया। पोपने भी उसकी ओर मित्रताका हाथ बढाया। वेनिसके धनी गणराज्य तथा पश्चिमी युरोपके दूसरे व्यापारी कालासागर और क्रिमिया होते मास्को पहुचने लगे। इवानने पश्चिमी युरोपसे तोप ढालनेके लिये ही कारीगर नही मगवाये, बल्कि वास्तुशास्त्री तथा शिल्पशास्त्रियोको भी बुलाया।

इवानके प्रभावको बढानेके लिये इसी समय एक और भी अच्छा मौका मिल गया। ईसाई धर्म कैथोलिक और अर्थोदक्स दो सम्प्रदायो (चर्चों) मे विभक्त है, जिसमे कैथोलिक पोपका केंद्र रोम नगर है और ग्रीक अर्थोदक्स चर्चका महासघराज कान्स्तन्तिनोपोलमे रहता था। १४५३ ई० मे तुर्क सुल्तानने कान्स्तन्तिनोपोलपर अधिकार करके पूर्वी रोमक (बिजन्तीन) साम्राज्यको खतम कर दिया। तुर्कोंका राज्य कालासागर-तट, काकेशस और बलकानमे दन्यूब नदीके किनारे वीना नगरके पासतक फैल गया। वेनिस और पोपकी मध्यस्थतासे इवानने अन्तिम ग्रीक सम्राट्की भतीजी सोफिया पाल्अोलोगससे व्याह किया। वेनिस और रोमको आशा थी, कि इस प्रकार वह इवानकी शक्तिसे तुर्कों-को खतम करनेमे सफल होगे, लेकिन इवान किसीका हथियार बननेके लिये तैयार नही था। क्रिमियाके खानोद्वारा इवानने तुर्कोके साथ सम्बन्ध स्थापित किया। ईरानसे भी उसने सम्बन्ध स्थापित किया। इस प्रकार मास्कोके व्यापारी कान्स्तन्तिनोपोल और ईरान तककी यात्रा करने लगे। इन्ही व्यापारियो में त्वेर (कलिनिन) नगरका अफनासी निकितिन भी था, जिसने १४६७–७२ ई० में ईरानके रास्ते समुद्रद्वारा भारतकी यात्रा की थी। अफनासीने अपना यात्राविवरण "खोज़ेनिये ज़ा-त्रि-मोर्या" (तीन समुद्रो पारकी यात्रा) लिखकर हमारे लिये छोडा है।

अफनासीकी भारतयात्रा—त्वेरके रूसी सौदागर निकितिन अफनासीने "तीन समुद्रो पारकी यात्रा" की थी। वह वास्को-द-गामाके भारत पहुचने (१४९८ ई०) से ३२ वर्ष पहिले हिन्दुस्तानमे आ बहमनी (बीदर) सुल्तान मुहम्मदशाह III (१४६२–८३) के राज्यमे ६ वर्ष (१४६६-७२ ई०) तक रह रूस लौट स्मोलेन्स्कमें मर गया। उसके यात्रा-विवरणके कुछ अश है —

मैं पवित्र स्पा (त्राता)के गिर्जेसे महान् राजुल मिखाइल बोरिसपुत्र और त्वेरके प्रधान पादरी गेनादीकी कृपामयी अनुमति प्राप्तकर रवाना हुआ। वोल्गा नदीसे चलकर पवित्र शहीद बोरिस और ग्लेबके 'जिवो नचाल्नया त्रोइत्जा'(जीवनप्रदायक त्रिमूर्ति) के पवित्र मठमें पहुचा। साधु मकरी और उनके भाईने मुझे आशीर्वाद दिया। (फिर) मैं उगलिच गया। उगलिचसे कोस्त्रोमा (त्वेर) के राजकुमार अलेक्सान्द्रके पास पहुचा। सारे रूसके शासकने मुझे स्वतंत्र जीवन प्रदान किया। इसी तरह मुझे निज्नीनवोगोरदमें उपरक्षक मिखाइल किस्लेफ और जकात-अफसर इवा साराके पास जानेकी अनुमति मिल गई।

सबसे पहले ही वासिली और पापी (मैं) चल पडे थे। फिर भी मुझे (निज्नी) नवोगोरदमें शाह शिरवानके तातार राजदूत हसनबेगके लिये प्राय दो सप्ताह रुकना पडा। वह महाराजुल इवाके पास नब्बे बाज लेकर आया था। मैं जहाजपर चढ उसके साथ वोल्गाकी राह चला और कुशलपूर्वक कजान, उर्दा, ओरल्लान, सराइ और वरेकेजाम लाघ गया।

हम बुजान नदीमें पहुचे। वहा हमें तीन बदमाश तातार मिले। उन्होंने हमें गलत खबर दी, कि सुल्तान कासिम सा तीन सौ तातारोंके साथ पडा सौदागरोंकी राह देख रहा है। शिरवानके राजदूत हसनबेगने उनमेंसे प्रत्येकको तीन-तीन मलमलके थान दिये, जिसमें वे हमें अस्त्राखानके आगेतक पहुचा दे। मैं अपना जहाज छोडकर अपने साथियोंके साथ राजदूतके जहाजपर सवार हो गया। हम अस्त्राखान पास रहे थे, (आकाश में) चाद चमक रहा था, इसी समय वहाके हाकिमने हमें देख लिया। उसके तातारोंने चिल्लाकर कहा—भागना मत! और उसने हमारे पीछे अपने सिपाही छोड दिये। बुगन पहुचते-पहुचते उन्होंने हम पापियोंको पकड लिया, और हममेंसे एकको गोली मार दी। हमने भी उनके दो आदमी मार डाले। हमारे छोटे जहाजको वहा रोककर उन्होंने लूट लिया और मेरा सारा सामान नौकाके साथ ही उनके कब्जेमें चला गया।

बडी तौरसे (भागकर) हम समुद्र-तटतक पहुचे, लेकिन (हमारी) नाव वोल्गाके मुहानेपर जमीनपर लग गई। तातार वहा हमें आ पकड कर और नावको पानीमें खींच ले गये। उन्होंने (हम) चार आदमियोंको रोक रख लिया और बाकियोंको समुद्रकी ओर भगा दिया। वह हमें बहावके विरुद्ध जाने नहीं देते थे, जिसमें हम उनके खिलाफ खबर न दे दे।

अब हम दो नावोंमें दर्बन्द (कास्पियन) समुद्रकी ओर चले। एकमें राजदूत हसनबेग, हम रूसी और तेजिक—कुल दस आदमी थे और दूसरीमें छ मास्कोके और छ त्वेरके निवासी चल रहे थे। इस सामुद्रिक यात्रामें हम तूफानमें पड गये और तटमें टकरा जानेसे छोटी नावके लोगोंको कैताकोंने पकड लिया।

हम कोइतुलमे शिरवान शाहके पास पहुचे। हमने उससे वडी मिन्नत की, कि वह हमपर दया करे और हमारे रूस लौटनेमे मदद करे, पर हमारी सख्या बहुत थी। उसने हमे कुछ न दिया। बहुत रो-धोकर हममेसे हर एकने अपनी राह ली। जिनको रूसमे काम था, वह रूस चले गये, कुछ उधर जिधर उनकी आखे ले गई गये, कुछ शेमाखमे ही पडे रहे और कुछ काम करने वाकू चले गये।

मै फिर दरवन्दसे वाकू गया, जहा कभी नही बुझनेवाली अग्नि (ज्वालामाई) सदा जलती रहती है। वाकूसे मै समुद्रकी राह चपकुर जा वहा छ महीने रहा। फिर जाकर माज़न्दरानके मुल्कमे सारामे एक महीने रहा। उसके वाद मै आमूल गया और वहा एक महीने रहा। फिर आमूलसे मै देमावन्द गया और देमावन्दसे रै (तेहरान)। यही मुहम्मद (पैगम्बर) के पोते और अलीके बेटे शाह हुसैनकी हत्या हुई थी और उसके शापसे सत्तर नगर नष्ट हो गये थे। रैसे मै गजान आया और वहा एक महीना रहा। गजानसे नाइन और नाइनसे येज्द (उयेज्द), जहा मै एक महीना ठहरा। येज्दके वाद मै सिर्दजान आया और फिर तारूम, जहा मवेशियोको चारे 'अल्त्वीन' के वदले खानेको खजूर देते है।

तारूमसे मै लार गया और लारसे वन्दर। यही ओरमुज्द (ओर्मुज) का वन्दर है। फिर भारतीय सागर, जिसे फारसीमे हिन्द-समुदर कहते है। ओरमुज वन्दरसे समुद्र केवल चार मील है।

हिन्दू मास नही खाते, न तो वाझ मवेशीका, न भेडका, न मुर्गे-मुर्गियोका और न मछलीका। वह सूअर भी नही खाते, यद्यपि देशमे सूअरोकी वहुतायत है। दिनमें वह दो वार भोजन करते है, और रातमें कुछ नही खाते। वह शराव नही पीते और न दूसरा ही ऐसा पेय, जो नशा कर दे। वह मुसलमानोके साथ नही खाते-पीते। उनका भोजन अच्छा नही होता। वह आपसमें भी एक दूसरेके साथ नही खाते-पीते, (यहातक कि) अपनी पत्नियोके साथ भी नही (खाते)। वह चावल और रोगन (घी) मिली खिचडी और अनेक प्रकारकी सब्जिया खाते है, जिन्हे वह रोगन (घी) या दूधके साथ पकाते है। वह दाहिने हाथसे खाते है, वायें हाथसे कुछ नही खाते। वह चम्मचका इस्तेमाल नही जानते। सफरके समय हर आदमी अपना भोजन (खीर) आप पकाता है। भोजनके समय वह पर्दा कर लेते है, जिसमे मुसलमान उनका खाना न देख ले। अगर मुसलमान खाना देख ले, तो हिन्दू उसे नही खायेगे। खाते समय वह अपनेको कपडेसे भलीभाति ढाक लेते है, जिसमें कोई उन्हें देख न सके।

रूसियोकी ही भाति हिन्दू भी पूर्वकी ओर मुह करके प्रार्थना करते है। वह दोनो हाथ ऊपर उठाकर सिरपर रख लेते है, फिर जमीनपर पड जाते है, यही उनका प्रणाम (साष्टाग प्रणाम) करना है। भोजनके पहले उनमेंसे कुछ (लोग) अपने हाथ-पाव धोते है और कुल्ला करते है। देवालयोमें कोई दरवाजा नही होता, उनका रुख पूर्वकी ओर होता है—कुछ मूर्तियोका मुख उत्तरकी ओर भी होता है। जब हिन्दुओमें कोई मर जाता है, तो उसके शरीरको जलाकर राखको पानीमें डाल देते है। जब किसी औरतके बच्चा होता है, तो पति उसे ले लेता है। लडकेका नामकरण पिता करता है और लडकीका माता। उनके आचार-व्यवहार अच्छे नही है और न उनमें कोई शर्म है। मिलते और अलग होते समय वह ईसाई साधुओकी भाति अपने दोनो हाथ जमीनकी ओर कर लेते है, कुछ वोलते नही।

दावुलसे कालीकट २५ दिनका रास्ता है, कालीकटसे सिंहल (लका) १५ दिनका। सिंहलसे जावत (जावा) १ महीनेका, जावतसे पेगू (वर्मा) २० दिनका, पेगूसे चीन और महाचीन फिर एक महीनेका। यह सारी यात्रा समुद्रकी राह है। चीनसे खिताईकी यात्रा खुश्कीसे छ महीनेकी और समुद्रसे चार दिनोकी है। भगवान् मेरी रक्षा करे।

वीदरमें तीन दिनो तक चाद प्राय पूरा चमकता है। हिन्दुस्तानमे गर्मी वहुत नही है। ओर्मुज और वह रैनमे—जहा मोती निकलती है—वडी गर्मी पडती है, जद्दा, वाकू, अरव, मिस्र और लारमें भी। खुरासानमे गर्मी इतनी ज्यादा नही, लेकिन चगताई (मध्य-एसिया) में बहुत है। शीराज, यज्द और कजानमे गर्मी है, पर वहा जोरकी हवा चलती है। गीलानमें वडी गर्मी है, बहुत पसीना निकलता है। वावुल, खुम्स और दमश्क भी गरम है। अलेफ इतना गरम नही। शेवास्त और जार्जियामे सभी कुछ वहुतायतसे मिलता है। वैसे तुर्कीमे भी सव चीजोकी वहुतायत है। रूमानियामें फल वहुत है और खानेकी सभी चीजें

गर्मी है। पोदोल्नियामें फल नव बागहोंमें अधिक होते हैं। भगवान् इसकी रक्षा करे, भगवान् उसे बचाये। इस संसारमें इसके समान (अच्छा) कोई दूसरा मुल्क नहीं, यद्यपि वहाके वायर अच्छे नहीं हैं। परन्तु इसकी भूमि बनाई जा रही है, उसमे बडी भलाई होगी। मेरे भगवान्, भगवान्, भगवान्, भगवान् (बोग् मोइ)।

हे मेरे भगवान्, मेरी आशाये तुझपर लगी हैं। मेरे भगवान्, मेरी रक्षा कर ले। मैं नही जानता कि हिन्दुस्तानमे किधरको जाऊ। ओर्मुजमे खुरासानको राह नही, चगताईके लिये रास्ता नहीं और दरबेन्द और यज्दके लिये भी कोई मार्ग नहीं। सर्वत्र विद्रोह हो रहे हैं, सर्वत्र बादशाह भगाये जा रहे है, मिर्जा जहान शाहको उजून (हसन) बेग ने मार डाला है, सुल्तान अबू-सईदको जहर दे दिया गया है। उजून (हसन) बेग अब शीराजमें है, पर उस मुल्कने उसको स्वीकार नही किया है। यादगार मोहम्मद उसके पास नही जाता, वहा जानेमे उसे खतरा मालूम होता है। और कोई राह नहीं। (मेरे) मक्का जानेका मतलब है मुसलमान हो जाना। ईसाई होनेकी वजहसे मक्का जानेमे (मेरी) खैरियत नही, क्योकि वहा जाते ही मुसलमान बना लिया जाऊगा। हिन्दुस्तानमे रहनेका मतलब है, अपने पास जो कुछ है, सबको खर्च कर डालना, क्योकि यहाका रहन-सहन महगा है। मैं अकेला हू, पर मेरा रोजाना खर्च ढाई अल्तीना (अशर्फी) है। यहा मन भरकर शराब मैंने कभी नहीं पी।

हम मस्कत पहुचे। वहीं मैंने पासक (ईस्टर) त्योहार मनाया। फिर तीन दिनोमे ओर्मुज पहुचा। २० दिन ओर्मुज शहर मे लार गया और वहा तीन दिन रहकर बारह दिनकी यात्राके बाद शीराज़ पहुचा, जहा सात दिन रहा। शीराजमे पद्रह दिनकी यात्रा कर अबरकुन पहुचा और वहा दस दिन ठहर, नौ दिनमें येज्द पहुचा, जहा ८ दिन रहा। येज्दमे पाच दिनमे अस्पहान पहुचा, और वहा छ दिन ठहरा। वहांसे काशान जा पाच दिन रहा। काशानमे कुम गया। कुमसे सवा, सवासे सुल्तानिया और सुल्तानियासे तब्रीज। तब्रीजसे मैं हसनबेगके कबीलेमें पहुच, उनके बीच १० दिन ठहरा। वहासे कही जानेका रास्ता न था, लडाई चल रही थी। हसनबेगने तुर्क सुल्तानके विरुद्ध अपनी ४० हजार सेना भेजी थी। सेनाने सिवास और तकातपर कब्जा कर लिया, तकातमे आग लगा दी। उन्होने अमसपर भी अधिकार कर लिया, अनेक गाव लूट लिये, फिर वह किरमानकी ओर बढे। मैंने सेनाका साथ छोड आरजिंजान (अर्जेरूम) की राह ली और वहासे त्रेपीजान्द जा पहुचा।

... त्रेपीजान्द पहुचा और पाच दिन वहा ठहर, एक जहाजपर जा कफाका किराया ... लिया, तथा कफामे चकान कर देनेके लिये कुछ सिक्के बदले।

... फौजदार और शासकने भारी नुकसान पहुचाया। वह मेरा सारा सामान ... महलमें उठा ले गया, और चूकि मैं हसनबेगके कबीलेकी ओरसे आ रहा था, इस-लिये ... मेरी तलाशी ली।

हैं, स्रष्टा और चित्रकार हैं। वह सारे पापोंका क्षमा करनेवाला है। वही सभी वस्तुओंको बढानेवाला है, हमारी अन्तरात्माओंको जानने और स्वीकार करनेवाला है। वही आकाश और पृथ्वीमें व्याप रहा है, सबकी रक्षा कर रहा है, वही सर्वोच्च, सर्वमहान्, सर्वदर्शी, सर्वश्रोता है। वह न्यायकारी, समीचीन और शालीन है।
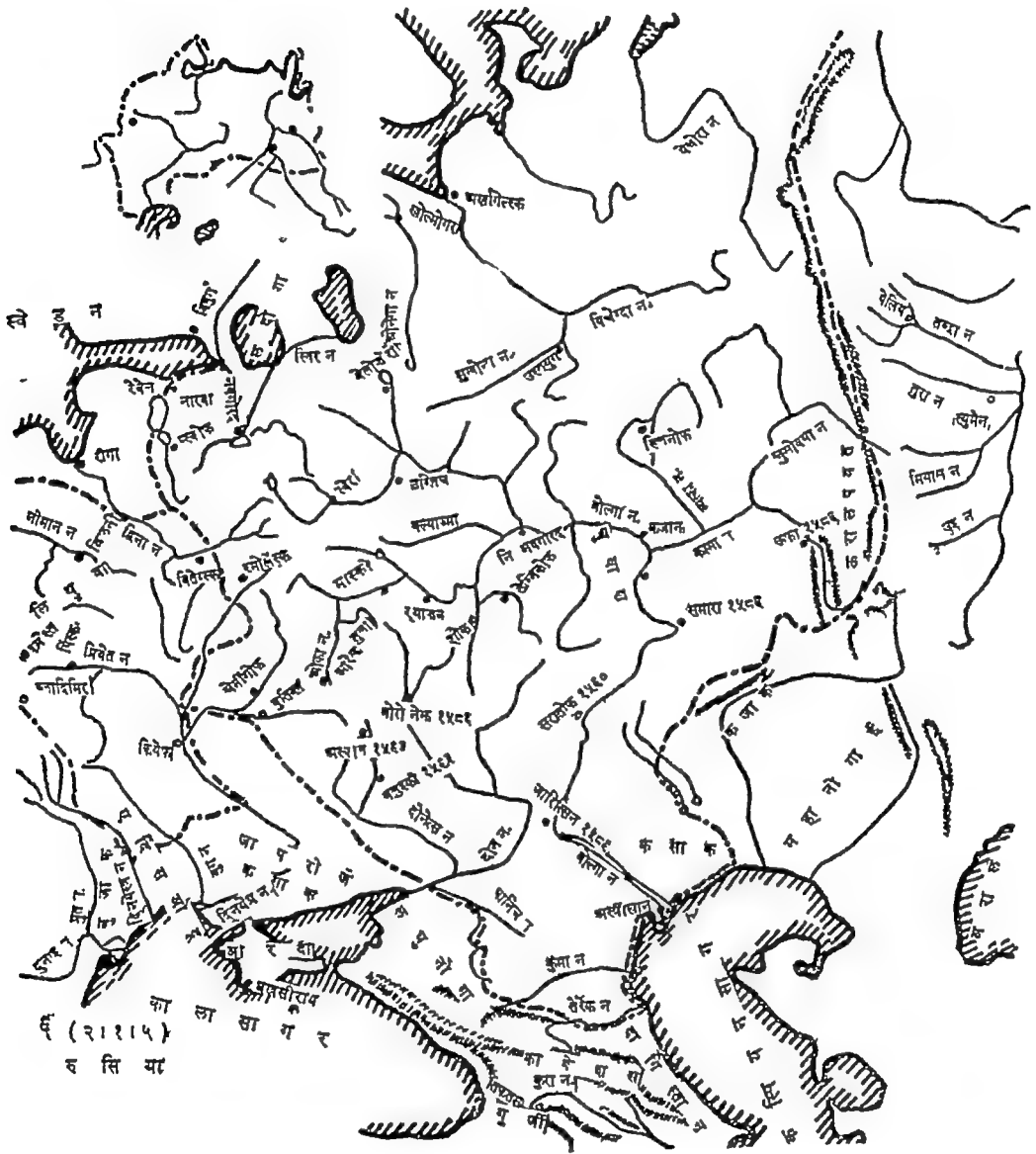
कान्स्तन्तिनोपोलके तुर्कोंके हाथमें चले जानके बाद और ग्रीक राजकुमारीसे व्याह कर लेनेपर इवान अपनेको ग्रीक सम्राटोंका सीधा उत्तराधिकारी मानने लगा। उसने बिजन्तीन राजमुद्रा--दो शिर-वाले बाज--को अपनी राजमुद्रा बनाई। दरबारके समय वह रत्नजटित सिंहासनपर एक मुकुट धारण करके बैठता था, जिसे "मनोमाख" मुकुट कहते थे, और जिसके बारेमें परम्परा कहती है, कि उसे व्ला-दिमिर मनोमाखने अपने नाना ग्रीकसम्राट् कन्स्तन्तिन मनोमाखसे पाया था।

इवानने अपनी राजधानीको भी अब राजसी ढगसे सजाना शुरू किया। पहले मास्कोके सारे घर लकडीके होते थे, राजप्रासाद भी लकडीका था। इवानके समयसे पत्थरके मकानोंकी वृद्धि होने लगी। इतालियन वास्तुशास्त्री रिदाल्फो दि फ्योरावेन्तेको बुलाकर उसने नये वास्तु-साधनोंका प्रयोग कराया। विदेशी शिल्प-शास्त्रियोंने इवानके लिये जो इमारतें बनाई थीं, उनमेंसे कुछ--क्रेमलिनकी दीवारें और मीनार, पत्थरके गिर्जे, पाषाण-प्रासाद तथा सुदर ग्रानोवितया पलाता--अब भी मौजूद हैं। इवान अब अपनेको सचमुच ही अभिमानी ग्रीकसम्राट् मानता था। जरा भी आज्ञा-

अभिनय किया जाता था। बालक इवान मेधावी था। छोटी उमरसे ही उसने लिखना-पढना सीख लिया था। उसे कितावोके पढनेका वडा शौक था। स्वय सुशिक्षित सघराज मकरीने इवानके ऊपर वहुत प्रभाव डाला था। लडकपनसे ही अपनी आखोके सामने वायरोको लूटते, खून-खरावी करते देख, स्वय उपेक्षित हो इवानके स्वभावमे क्रूरता भी सन्निविष्ट हो गई थी।

ऐसे होनहार वालकको वहुत दिनोतक गुडिया वनाके नही रक्खा जा सकता था, विशेषकर जब कि वायरोमे स्वय आपसी खूनी सघर्ष चल रहे थे। सत्रह वर्ष की उमर (१५४७ ई०) में इवानने सिंहासनको सभालते हुये पूर्वजोकी "महाराजुल" उपाधिसे सन्तुष्ट न हो ज़ारकी उपाधि स्वीकार की। इवान IV पहला रूसी ज़ार था—ज़ार-क्ज़ार-कैज़र-कैसर अर्थात् रोमक सम्राट्का ही विगडा रूप है।

वायरोने अपनी सामन्ती जागीरदारिया फिरसे स्थापित कर ली थी। उसके कारण लोगोकी बुरी हालत थी। उन्होने १५४७ ई० मे मास्कोमें ग्लिन्स्की दलके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसी समय भारी आग लग जानेसे नगरका वहुत-सा भाग जल गया था, जिसके कारण लोगोकी हालत और भी खराव हो गई और वह ग्लिन्स्कियोकी स्वेच्छाचारिताके खिलाफ उठ खडे हुये। वह ज़ारकी नानी अन्ना ग्लिन्स्कयाके ऊपर जादूसे नगरमे आग लगानेका दोष लगाते थे। विद्रोहमें ग्लिन्स्की वशका एक आदमी मारा गया और वाकी जान लेकर भाग गये। ज़ार स्वय वोरोव्योवो गाव (वर्तमान लेनिन-पर्वत) मे भागकर जा छिपा।

जब विद्रोह दवा दिया गया, तो साधारण जनताकी सतान एक चतुर और ईमानदार अफसर अलेक्सी अदाशेफ शासनका मुखिया वना। अदाशेफने अपने साथ एक प्रभावशाली दरवारी पादरी सेल्वेस्तर तथा कुछ शक्तिशाली वायरोको मिला इज्ब्रान्नया रादा (वृत-परिषद्) वनाई, जिसकी रायके विना तरुण ज़ार कोई निर्णय नही कर सकता था।

राज्य-विस्तार—इवान IV के शासनारम्भके समय उत्तर-पूर्वी रूस एकतावद्ध हो चुका था। अब रूसका विस्तार आसपासकी जातियोको जीतकर ही किया जा सकता था। वासिली III के समयमे क्रिमियाके खानकी मददसे कजानके तारतारोने अपनेको स्वतत्र कर लिया था, इसलिये इवानको कजानके खानसे सबसे पहले भुगतना था, जिसके लिये तारतारोने रूसी भूमिपर लूट-मार मचाकर वहाना भी पैदा कर दिया था। कजान मध्य-वोल्गाके ऊपर एक महत्त्वपूर्ण नगर था, जिसके विरोधी शक्तिके हाथमें रहनेपर वोल्गा-कास्पियनका वणिक्पथ खतरेमें पड जाता था और पूर्वमे उराल तथा आगेके विस्तारकी गुजाइश नही रह जाती थी। उधर तुर्कीने कालासागरको अपनी झील बनाकर काकेशसतक अपनी बाह फैला ली थी। अस्त्राखान और कजानके खान भी हमेशा तुर्कीकी ओर आशा लगाये रहते थे। इस प्रकार पूरवसे रूसको खतरा भी था। इवानने पहले कजानको खतम करनेका निश्चय किया। १५५० ई० का महाभियान असफल रहा, इसपर उसने १५५१ ई०के वसतमें मारियोकी भूमिमें वोल्गाके पहाडी किनारेपर स्वीयाजस्क नगर वनाया, जो कि कजानके सामने पडता था। मारी लोग अवतक कजानको कर देते थे, अव वह जारको कर देनेके लिये मजबूर हुये। स्वीयाजसकका दृढ दुर्ग बन जानेके वाद रूसी कजानको घेर सकते थे। कजानके तारतारोने जबर्दस्त प्रतिरोध किया, लेकिन रूसियोके पास डेढ लाख सेना थी, दूसरे उनके पास शक्तिशाली तोपखाना भी था। नगरके भीतर तीस हजार तारतार सेना थी। कुछ महीनेतक तारतारोने प्रतिरोध किया, लेकिन जब शक्तिशाली तोपोने नगरके प्राकारको उडा दिया, तो वह कहातक प्रतिरोध करते? अन्तमें २ अक्तूबर १५५२ ई०को रूसी कजानको दखल करनेमें सफल हुये। कजानके पतनके साथ तातारोका प्रतिरोध खतम नही हुआ। वह कई सालोतक लडते रहे, उनके सहायक तारतार ही नही, मारी, उदमुत, चुवाश और मोर्द्वा जैसी रूसीभिन्न जातिया भी थी। कजानके उच्छेदके वाद पहलेके खान और सामन्तोकी अधिकाश सम्पत्तिको इवानने अपने अफसरो और पादरियोमें वाट दिया और लोगोको अर्धदास वना दिया। कितने ही जारभक्त तारतार सामन्त अभी भी अपनी भूमिके मालिक रहे। इस प्रकार वोल्गाकी जनता चक्कीके दो पाटोके नीचे पिसने लगी। कजानके विजयके वाद वाश्किरोने भी इवान-

की अधीनता स्वीकार की। फिर उनमे भी पूर्व साइवेरियाके खान यादगारने १५५५ ई० मे मास्कोको कर देना स्वीकार किया। अगले साल १५५६ ई० में अस्त्राखानकी वारी आई। मास्कोकी सेनाको वहासे खानको भगानेमें कठिनाई नही हुई। अस्त्राखान नगर ले लेनेके वाद सारी वोल्गा नदी रूसके हाथमें थी। कास्पियनके तटपर वसा अस्त्राखान अव मध्य-एसिया और ईरानके साथ होनेवाले व्यापारका केंद्र वन गया। उत्तरी काकेशसके छोटे-छोटे अमीर वरावर आपसमें लडते रहते थे, जिससे इवानको मौका मिला, और उसने तेरेक नदीके किनारे एक किला वनवाना चाहा। लेकिन इवान अभी तुर्कोंसे झगडा नही मोल लेना चाहता था, इसलिये तुर्कोंके दवाव देनेपर उसने नगर वनानेका ख्याल छोड दिया। तो भी रूसी कसाक (स्वतत्र किसान) नही रुके और वह तेरेकके तटपर वरावर वने रहे। तारतार सवार लूट-मारको आमदनीका एक वैध साधन मानते थे, खासकर काफिरोके विरुद्ध वैसा करना तो पुण्यका काम था, इसलिये घोडोपर चढे वह वरावर इस ताकमें रहते थे, कि कैसे रूसकी भूमिमें घुसकर वहा लूट-मार मचाई जाये। इसके लिये मास्कोको मैदानी जगहोमें जगह-जगह फौजी चौकिया—स्तानित्सा (थाना)—स्थापित करनी पडी। स्तानित्सामें एक ऊचा मीनार या वृक्ष होता था, जिसपर वैठा एक सैनिक वरावर देखता रहता। जैसे ही दूर धूल उठती दिखाई पडती, वह उतरकर घोडे-पर चढ दूसरी स्तानित्सामें खवर देता, वहासे दूसरा सवार तीरकी तरह निकलता, इस प्रकार वहुत जल्दी ही खवर मास्कोतक पहुच जाती, और प्रतिरोधका उचित प्रवध कर दिया जाता।

कास्पियनतटको लेकर अव रूस केवल स्थलशक्ति नही रह गया था, किन्तु कास्पियन वस्तुत एक महा-सरोवर है, जिसका महासमुद्रोंसे कोई सम्वन्ध नही है। इस कमीको दूर करनेके लिये वाल्तिक समुद्र-तटपर अधिकार करना जरूरी था, जिसमें कि रूसका पश्चिमी युरोपके देशोसे सीधा सवध हो जाये। जव वाल्तिकतट (लिवोनिया) की ओर इवानने हाथ वढाया, तो लिवोनियाके पडोसी लियुवानिया, स्वीडन और डेन्मार्क चुप रहनेवाले नही थे। पर जारकी शक्ति (धन और जनका वल) इतनी वढ चुकी थी, कि समुद्रपारसे आकर लिवोनियाको मदद देना मुश्किल था। जर्मन धर्मसेनाने अच्छी तरह डटकर प्रतिरोध किया, लेकिन ग्रूनेवाल्डमें उसे जो हार खानी पडी, उसके वाद वह फिर सभल नहीं सकी। जनवरी १५५८ ई० मे इवानने लिवोनियाके विरुद्ध युद्ध छेड दिया। कितने ही महीनोकी लडाईके वाद लिवोनियाका वहुत ही महत्त्वपूर्ण वदरगाह रीगा रूसियोके हाथमें चला गया। उसके वाद यूरियेफ नगरकी वारी आई और आगे १५६१ ई० तक सारी लिवोनिया इवानके हाथोमें थी। सामने खतरेको देखकर पडोसी राज्य रेवेल (तल्लिन) ने स्वीडन और डेनमार्कको अपना सरक्षक वनाया और अवशिष्ट लिवोनियाने पोलराजा तथा लियुवानियाके शासककी शरणमें जाना पसन्द किया। इस तरह लिवोनिया कई राज्योमें वट गया। अव रूसको पोलन्द, स्वीडन और डेन्मार्कके साथ वीस वर्षतक लडना था।

लिवोनियामें वरावर सफलता ही नही होती रही, वल्कि कभी-कभी रूसियोको वहा हानि भी उठानी पडी थी। ऐसे समयमें वायर फिर अपना सर उठाना चाहते थे। वह जारके हाथमें सारी शक्ति नही रहने देना चाहते थे। इवान इस तरहके घरेलू झगडे पसन्द नही कर सकता था, उसने १५६५ ई० में शासन-प्रवधको नये तरहसे सगठित करना चाहा। वायरोपर उसको विश्वास नही था। एक दिन यकायक वह अपने विश्वास-पात्र शरीर-रक्षकोके साथ मास्को छोडकर वहासे सौ किलोमितरपर अवस्थित दुर्ग-वद्ध अलेक्सेन्द्रोवा-स्लवोदोवा गावमे चला गया। वहासे उसने सघराजको पत्र लिख वायरोकी विश्वास-घातकी तालिका वनाकर भेजते हुये सिहासन छोड देनेकी घोषणा की। इसपर मास्कोके नागरिको, पादरियो और कितनेही वायरोने जारके पास जाकर मास्को लौटचलनेके लिये वडी प्रार्थनाकी। इवानने स्वीकार किया, और मास्को लौटकर उसने विश्वासघाती वायरोको दड दे राष्ट्रीय सभा (जेम्स्की सवोर) की वैठक वुलाई। उसके साथ ही उसने "ओप्रेच्निना" (पृथक् राज्य) के नामसे अपने विश्वास-पात्रोंका एक और सगठन तैयार किया, जो जारके हुकुमको वजा लानेके लिये वरावर तैयार रहती थी। इवानने अपने सारे राज्यको दो भागोमें विभक्त किया—जेम्स्चिना (भूमिक) जिसका शासन वायरोकी दूमा (समद्) जारके अधीन रहकर करती थी और ओप्रेच्निना, जो सीधे जारके अधीन

थी। ओप्रेच्निनावाली भूमिमें राज्यके सबसे अच्छे तथा केंद्रीय प्रदेश थे, जिनका सैनिक और आर्थिक महत्त्व सबसे ज्यादा था। स्वय मास्को नगरको भी इसी तरह दो हिस्सोमें बाट दिया गया था। जेम्स्चिना भागमे बायर और ओप्रेच्निना भागमे वेवोद (राजपुरुष) दोनो साथ-साथ काम करते थे। ओप्रेच्निनाकी राजधानी अलेक्सेन्द्रोवा-स्लोवोदोवा थी, जहापर जार अपनेको अधिक सुरक्षित समझता था। ओप्रेच्निनाका काम था सामन्तो (बायरो) की शक्तिको कमजोर करना और छोटे-छोटे भूमिपति-सरदारोका एक वर्ग तैयार करना।

जार इवान निरकुशताको राजाका आवश्यक अधिकार समझता था। उसका कहना था—राजशक्ति भगवान्‌की ओरसे मिली है। जारकी आज्ञाका उल्लघन करना महापाप है। जारकी सभी प्रजा उसकी सेवक है, उसको अपनी प्रजाको क्षमा करने या मारनेका अधिकार है। जारकी शक्तिको सीमित करना अपराध ह, क्योकि इसके कारण देशकी प्रतिरक्षा खतरेमे पड जाती है।

इवान अपनी शक्तिको इस तरह दृढ करते हुये रूसकी आर्थिक और सैनिक शक्तिको मजबूत करता जा रहा था। इसी समय १५७१ ई० में क्रिमियाके खान दौलत गिराईने एकाएक आक्रमण कर दिया और प्रतिरोधका मौका दिये बिना क्रेमलिन छोड सारे मास्कोको जलाकर भारी सख्यामे बदियो-को दास बनाकर बेचनेके लिये पकड ले गया। दूसरे साल १५७२ ई० मे जब फिर उसने अपनी लूटमार-को दुहराना चाहा, तो ओका नदीपर ही जेम्स्की वेवोदोने रोककर मास्कोको बचा लिया। जेम्स्की वेवोद बायर थे। उनकी इस सेवाको देखकर जारको अब ओप्रेच्निना की अवश्यकता नही मालूम हुई और उसी साल उसने उसे तोड दिया। इवानने रूसमें एक धर्म, एक नाप-तोल और एक भूमि-नाप स्थापित कर रूसकी एकताको और आगे बढाया।

१५७६ ई० मे पोलन्दके राजा सिगिस्मद अगस्तसके मरनेके बाद स्तिफन बथोरी राजा निर्वाचित हुआ। उसने जर्मन और हुगेरियन सैनिकोकी भरती तथा तोपखानेके विकासद्वारा अपनी शक्तिको बढाकर १५७६ ई०में रूसके जीतनेके लिये अभियान किया। १५८१ ई०में एक लाख सेनाके साथ उसने प्स्कोफको घेर लिया, लेकिन सारी शक्ति लगाकर भी वह उसे ले नही सका। इवानको केवल पोलन्दसे ही लडना नही था, बल्कि स्वीडनने भी इसी समय लिवोनियाके लिये उसपर आक्रमण कर दिया। स्वीडिश सेनाको आसानीसे सफलता मिली। यद्यपि इवान अपने राज्यकी प्रतिरक्षामे सभी जगह असफल रहा, लेकिन प्स्कोफके प्रतिरोधने उसे अवसर दे दिया, कि अच्छी शर्तोंके साथ अपने शत्रुओसे समझौता कर ले। इवानने लिवोनियाको छोड दिया और बथोरीने रूसी नगरोपरसे अपना अधिकार हटा लिया। इसी तरह स्वीडनके सामने भी उसे समझौता करना पडा। इस प्रकार उसका पचीस साल (१५५८–८३ ई०) का सघर्ष अधिकतर बेकार गया, जब कि १५८४ ई० में इवान मरा।

इवान सुशिक्षित, दूरदर्शी और कुशल शासक था। वह अच्छा लिख लेता था। लेकिन, कभी-कभी उसपर सनक सवार हो जाती, तो वह क्रूरकर्मा सिद्ध होता, जिसके ही कारण लोगोने उसका नाम ग्रोज्नी (क्रूर) रख दिया था। एक बार क्रोधाध हो उसने अपने बेटे राजकुमार इवानपर डडा चला दिया, जिससे वह मर गया। इवानका शासन रूसके इतिहासके लिये बडा महत्त्व रखता है, और देशके शक्तिशाली और एकताबद्ध करनेमे उसकी सेवाओको आज भी बडे आदरसे याद किया जाता है।

येरमकद्वारा साइबेरिया-विजय—इवानके शासनका एक महत्त्वपूर्ण काम है, रूसका साइबेरियाकी ओर विस्तार। हम कह आये है, कि वासिली III और उसके पिताके समय ही रूसका विस्तार उरालकी जनजातियोकी ओर हो चुका था। साइबेरियाकी बहुमूल्य समूरी छालें सोना-जवाहरके दाम बिकती अपना विशेष आकर्षण रखती थी। इसलिये बहुतसे साहसी रूसी शिकारी और व्यापारी उरालकी ओर जा बसे थे, इन्हीमें नवोगोरदसे आया एक व्यापारिक परिवार स्त्रोगनोफ भी था। वस्तुत स्त्रोगनोफका पूर्वज पहले सुवर्ण-ओर्दूका एक तारतार मिर्जा (राजपुरुष) था। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने पर उसका नाम स्पीरिदोन पडा। चौकठेमे मढी गोलियो (अबकस) द्वारा गिनती करनेका

रवाज चीनमे पहिलेहीसे था, रूसमे इसका रवाज स्पीरिदोनने ही चलाया। मुसलमानसे ईसाई होनेके कारण मगोलोने उसे पीट-पीटकर मार डाला, इसी कारण उसके परिवारका नाम स्त्रोगोन (पीटन) पडा। स्पीरिदोनके पौत्र तथा कोस्मेसके पुत्र लूकसने जार वासिली अधको कजानके खानसे छुडानेमें पैसेसे सहायता की थी, इसलिये उसे नमककी खानोकी इजारादारी मिल गई, जिससे वह बहुत धनी हो गया। वासिलीने ग्रेगोरी और याकूब दो स्त्रोगोनोफ-भाइयोको कामा नदीके पासवाले प्रदेशमें चुसोवयाके तटपर अपनी रक्षाके लिये दुर्ग बनानेका अधिकार दे दिया था, जिसमें कि वह साइबेरियनो और नोगाई तारतारोसे अपनी रक्षा कर सके। स्त्रोगोनोफ अपने पास सैनिक और तोपे रख जारकी ओरसे इलाकेका शासन-प्रबंध भी करते थे। उन्हे गावोके बसाने, नमककी खानोको चलाने तथा कर देकर मछली और नमकको बीस वर्षतक बेचनेका ठेका मिला था। स्त्रोगोनोफने १५५८ ई०मे चुसोवया नदीपर ककोरका कसवा बसाया, १५६४ ई०मे केरगेदानका किला और कुछ ही साल बाद सेल्वा नदीके किनारे कितनी ही और बस्तिया बसाई। अग्रेज ईस्ट इडिया कम्पनीकी तरह अनेक व्यापारियोकी कम्पनीकी जगह यहा एक परिवारको व्यापार, राज्यशासन और देश-विजयका अधिकार दे दिया गया था। ईस्ट इडिया कम्पनीकी तरह कितने ही साहसी तरुण और गुडे स्त्रोगोनोफके राज्यकी ओर भी आकृष्ट हुये थे। १५७२ ई० मे स्त्रोगोनोफोने एक विद्रोहमे चेरेमिसो, ओस्तियाको और बाश्किरोको जीतकर वहा जारका राज्य घोषित किया। स्त्रोगोनोफोकी इस तरह साइबेरियामें प्रगतिको वहाका राजा कुचुम खान (१५५५–६५ ई०) अपने लिये खतरेकी बात समझता था, जो जारकी अधीनता स्वीकार करनेवाले यादगार खानको हटाकर अब स्वय खान बना था। उसने जुलाई १५७३ ई० में बहुतसी रूसी बस्तियोको नष्ट करनेके लिये अपने भाई अलताकुलके पुत्र महमेतकुलको भेजा। महमेतकुल जारकी प्रजा बने ओस्तियाकोको मार उनके बीबी-बच्चोको पकड ले गया। उसने एक रूसी अ याक चेबाकोफको भी मार डाला। नोगाई मिर्जा दीन अहमदकी पुत्रीसे अपने बेटे अलीका व्याह करनेके कारण कुचुमको बहुत अभिमान हो गया था। स्त्रोगोनोफोने जार इवानसे आक्रमणकारियोको दड देनेकी स्वीकृति पानेके साथ निम्न बातोकी भी आज्ञा मागी—तोबोल नदीके तटपर बस्तिया बसा नगर और दुर्ग बनाना, तोपखानेका उपयोग तथा सैनिकोकी भरती करना, एक सीमित समयतकके लिये लोहा, रागा, सीसा, गधककी खानोमें काम जारी करना। जारने प्रार्थनाको स्वीकृत करते हुये ३० मई १५७४ ई० को आज्ञा दी, कि वह हमारी प्रजा ओस्तियाको और वोगलोकी रक्षा करें, और इर्तिश-उपत्यकाके तारतार खानोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर करें। राजाज्ञामें स्त्रोगोनोफोके लिये यह भी रियायत दी गई थी, कि वह बुखारावालो और कजाकोके साथ विना शुल्क दिये व्यापार कर सकते है। जारने अधिकार तो मुहमागेसे भी अधिक दे दिया, लेकिन उसे काममे लानेकी दोनो भाई-स्त्रोगोनोफोमें शक्ति नही थी। ६ सालके भीतर ही दोनो भाई मर गये और उनकी अपार सम्पत्तिका मालिक छोटा भाई सिमाओन स्त्रोगोनोफ-परिवारका मुखिया हुआ, जिसके सहायक याकूब-पुत्र मासिम और ग्रेगोरी-पुत्र निकितस् थे।

काकेशसके उत्तरमे दोन नदीके तटपर बसे स्वतत्र लडाकू किसान—कसाक—ईरान और बुखाराके तरफसे आनेवाले व्यापारियोके कारवाको लूटना अपना अधिकार समझते थे। उनकी हिम्मत इतनी बढ गई थी, कि एक बार उन्होने ईरानी शाहके पास भेंट लेकर जाते जारके दूतमडलको भी लूट लिया। उनके मारे निम्न-बोल्गा-उपत्यकामें आतक छाया हुआ था। १५७७ ई० मे इवानने उनके विरुद्ध सेना भेजकर उन्हे तितर-बितर कर दिया। इस समयके भागनेवाले कसाकोकी एक टुकडी अपने आतमन (सर्दार) येरमक तिमोथियेफके नेतृत्वमें कामा नदीकी ओर गई। येरमक (येरमोलाई, हेरमोलोस) को मासिम स्त्रोगोनोफने अपने नये बसाये नगर ओरेलमे इस ख्यालसे नौकर रख लिया, कि उसके दलका उपयोग साइबेरियाके खानके विरुद्ध करेगे। स्वामीकी आज्ञा पा येरमक अपने आदमियोके साथ ८ अक्तूबर १५७८ ई० में प्रस्थानकर चुसोवया नदीके किनारे-किनारे चल ८ अक्तूबर १५७८ ई० को सिलवा तक पहुचा। वहा उसने एक दुर्ग बनाया, जिसका नाम पीछे येरमकोवो-गोरोदिची पडा। जाडोमें

येरमक वही ठहरा। उसने अपने तीन सौ कसाकोको वोगुलोके देशमे भेजा, जो कि साइवेरियन खानकी सीमातकका पता लगा लूटके मालसे लदे लौट आये। येरमकके साथ तीन ईसाई पुरोहित और एक साधू भी थे, इसलिये उसे साधारण डाकू नही कहा जा सकता। येरमककी इन सफलताओ को देखकर स्त्रोगोनोफने उसे तीन तोपे, प्रत्येक सैनिकके लिये डेढ सेर वारूद, डेढ सेर सीसा, तीन पुड (सवामन) आटा, दो पुड वकला, एक पुड विस्कुट, एक पुड नमक, ढाई पुड मक्खन दिया—आदमी पीछे नमक लगाया हुआ एक सूअर, हर सौ आदमीपर एक पवित्र मूर्तिके साथ एक झडा भी दिया। रात-दिन तैयारी करनेके वाद कुछ रसदको वही छोड येरमकका दल चल पडा। येरमक अपने साथियोके मनोविनोदके लिये वाजे ले जाना नही भूला। कसाक सेनाका मुख्य-सेनापति येरमक था और दूसरे सेनापति थे इवान कोल्जोफ, इवान ग्रोसा तथा वोगदान व्रियास्गा। इनके अतिरिक्त कुछ छोटे-छोटे और भी अफसर थे। कसाक सैनिकोका सगठन शतिक और दशकके रूपमे था। उस समय रूससे ओव नदीकी ओरके रास्ते क्रमश निम्न प्रकार विभक्त होते थे —

(१) विम नदी—वुचेगदा—विश्चेरा नदी (कामकी शाखा)—लोसवा नदी—तावदा नदी—तोवोल नदी—ओव।

(२) विम नदी—वुचेगदा—इशमा नदी—पेचोरा नदी—शोकुर नदी—सिगवा (लपिना)-ओव नदी।

(३) वुचेगदा—इशमा नदी—आलेस नदी—इलिश नदी—सोसवा नदी—ओव नदी।

(४) वुचेगदा—इशमा नदी—वुचेगदा—इशमा नदी—उसा नदी—सोव नदी—ओव—नदी।

इन रास्तोमे सवसे अधिक प्रचलित था—सिगवा और सोसवा होकर जानेवाला रास्ता।

इतिहासकार मूलरके अनुसार येरमककी सेनामे पाच हजार आदमी थे, जब कि साइवेरियन पवाडा उनकी सख्या आठ सौ चालीस वतलाता है। इस सैनिक टुकडीने रूसके लिये उस विजयका आरम्भ किया, जिसने कुछ ही समयमे सारे साइवेरियाको जारके चरणोमे डाल दिया।

५ जुलाई १५७६ ई० (भारतमे अकवरके शासनकाल) मे येरमक-सेनाने प्रस्थान किया। कुछ जिरियानी लोग उनका पथप्रदर्शन कर रहे थे। चुसोवया नदीकी ऊपरी धार उथली और धीमी थी। येरमक-दल अपनी छोटी नावे लेकर इसी धारसे उत्तरकी ओर वढा। सेराव्रेंकाके तटपर वह जाडोके लिये रुक गये। यहाके निवासी वोगलोने रूसियोके साथ अच्छा वर्ताव किया, लेकिन कसाकोने उन्हें निष्ठुरतापूर्वक लूटकर इसका वदला दिया। उनके इस अत्याचारके कारण आगेके सारे कवीलोमें आतक और घृणा पैदा हो गई। १५८० ई०के वसतके आनेपर येरमक-दल फिर आगे चला। उरालकी नाटी पहाडियोको पारकर वह वरदाके पनढरपर पहुचा, जो कि ध्रुवीय महासागर तथा कास्पियनमें जानेवाले जलका विभाजक है। जहापर वह जाडोके लिये ठहरे, वहासे दस वर्स्त (कोश) चलनेपर लडाई शुरू हो गई, साथ ही वीमारीने भी शत्रुका काम किया, जिसके फलस्वरूप अव केवल सोलह सौ छत्तीस कसाक वच रहे। लेकिन येरमक और उसके साथी हिम्मत हारकर पीछे लौटनेवाले नही थे। वह १२ मई १५८० ई० को रवाना हो जल्दी ही तगिल नदीके तटपर पहुच गये। पहिलेकी नावोको वह पीछे छोड आये थे, इसलिये कुछ सप्ताह ठहरकर यहा उन्होने नई नावे वनाईं, जिनपर चढकर वह तुरा नदीके तटपर पहुचे। यहा एक तारतार सरदार पेपच (पस) रहता था, जो पडोसी वोगलो-का भी शासक था। उसने तीर-धनुष चलाया, लेकिन वारूदी हथियारोके सामने तीर-धनुप क्या करते? उसके आदमी भाग गये और येरमक-दलने उनके डेरोको दखल करके लूट लिया। कसाक लूटते-पाटते तुराके किनारे-किनारे आगे वढे। चिङ्गी (त्यू-मेन) नगरको उन्होने वडी आसानीसे ले लिया। इस उपजाऊ इलाकेमे उन्होने शरद्-निवास करके चारो ओर लूट और छालेके रूपमें कर वसूल किया। येरमकने एक टुकडीको कुचुमखानके सीमात तुरा-तोवोलके सगमपर वसे तुरखन किलातक भेजा। वहा एक तरखन (राजकुमार) रहता था। उस समय कुचुमखानका तहसीलदार कुतुगाई भी तरखनके पास आया हुआ था। कसाक आक्रमण कर कुतुगाईको अपने साथ पकड ले गये। येरमकने वहुत खातिर करके उससे वहुतसी वातोका पता लगाया, और उसे इनाम तथा खान, उसकी खातूनो और कुमारोके

लिये भेट देकर विदा किया। येरमककी चालको कुचुमने समझ लिया और रूसी पोशाकमे लौटे कुतुगाईकी बातोपर विश्वास न कर सेना जमा करनी शुरू की।

मई १५८१ ई० मे येरमक-दलने तुरासे आगे प्रस्थान किया। थोडा ही आगे जानेपर ६ तारतार-राजकुमारोके अधीन आई सेनाके साथ भारी युद्ध हुआ। विजय कसाकोके साथ रही। उन्होने बडी निष्ठुरतापूर्वक शत्रुओको कतल किया। लूटका जो माल हाथ आया, उसे बाकी बचे हजार कसाक साथ नही ले जा सकते थे। उन्होने बचे मालको जमीनमे गाड दिया और फिर नावपर तोबोल नदीमे आगे बढे। नदीके ऊँचे किनारोपर भुर्ज वृक्षोके जगल थे, जिसमे छिपकर तारतार लडते, लेकिन बन्दूकोके सामने उन्हे भागना पडता। आगे बढनेपर तोबोलनदी जहा पतली हो गई वहा तारतारोने जजीर बाधकर नावोको रोकनेकी कोशिश की। येरमक वहा १६ जुलाईको पहुचा। तारतार यसाउल अलीशेरकी एक भी न चली और येरमक उन्हें मारता-पीटता आगे निकल गया। अन्तमें वह तोबोल और तावदा नदीके सगमपर पहुचे, जहासे कि रूसका व्यापार-मार्ग जाता था। प्रस्थान करते वक्त येरमक-दलने यहीतक आनेका निश्चय किया था। लेकिन येरमक उतनेमे सतुष्ट होनेवाला नही था। आठ दिन वहा ठहरकर उसने कुचुमके राज्यके बारेमें और जाननेके वास्ते फिर आगेके लिये प्रस्थान किया। कुचुमने तारतारो, ओस्तियाको और वोगुलोकी एक सेना जमा कर उसे महमेतकुलके अधीन प्रतिरोध करनेके लिये भेजा, राजधानी सिबिरकी रक्षाके लिये नई खाईं बनवाई और पास-पडोसके तारतार अमीरोको भी अपने नगरोको दुर्गबद्ध करनेके लिये कहा। चुवास-पर्वतके पास इर्तिश नदीपर कुचुमने मोर्चाबदी कराई। येरमक जब तावदासे आगे बढने मिर्जाबाखान-गाव (बाखान्स्की-युर्त्त) मे पहुचा, तो महमेतकुल वहा लडनेके लिये तैयार था। यद्यपि महमेतकुलके पास दसगुने (दस हजार) सवार थे, लेकिन पाच दिनके युद्धके बाद उसे बुरी तरहसे हारना पडा। येरमकके सारे अभियानका यही सबसे बडा युद्ध था। बारूदी हथियारोके सामने तीर-धनुषकी क्या पेश जाती? तारतारोने कुछ नीचे तुरवाके सगमपर फिर असफल प्रतिरोधकी कोशिश की। इसके आगे तोबोल और इर्तिशके सगमसे १६ वर्स्त पहले एक सरोवरपर फिर कुचुमके दर्बारी कराचिनके नेतृत्वमें तारतार जमा थे। उनकी सख्या देखकर कसाक कुछ भयभीत हो लौटनेकी सोचने लगे, लेकिन एक बोगोल बूढेने तारतारोकी कमजोरीको बतलाकर उनकी हिम्मत बढाई। इस प्रकार येरमक-दल लडते-लडते आगे बढता गया। १२ अगस्त १५८१ ई० तक अब उनके पास लूटमें बहुत भारी परिमाणमें सोना, चादी, मोती, जवाहिर, पशु, अनाज और मधु आ गया था। इसी समय ग्रीक ईसाई सम्प्रदायके अनुसार चौदह दिनका व्रत आया। येरमकने चौदह दिनकी जगह चालीस दिन व्रत रखनेका हुकम दिया।

२६ सितम्बरको फिर कसाकोने प्रस्थान किया। अब वह इर्तिश नदीमें जा रहे थे। उन्होने तारतार-कुमार अतिककी बस्ती (साउस्त्रोफनी) को आसानीसे ले लिया। सामान नावोंपर लदा था। सख्या भी कम हो गई थी। वह सोचने लगे लौटें या आगे बढे। अन्तमें उन्होने आगे बढनेका ही निश्चय किया। अब वह खानके राज्यके गर्भमें पहुच रहे थे। कुचुम अपने लोगोके साथ चुवासके दुर्गबद्ध प्रदेशमे प्रतिरोधके लिये तैयार था। कुचुमका आक्रमण इतना जबर्दस्त था, कि येरमक और कोल्जोफ भी "भगवान् बचाये" चिल्लाते आगे बढे। तारतार अपने (शायद अधे) सरदार को घेरे हुये खडे थे, इमाम और मुल्लाह "या मुहम्मद" पुकार रहे थे। कसाक मोर्चेके तीन खुले स्थानोकी ओर दौडे। महमेतकुल लडाईमें घायल हुआ था, जिसे इर्तिशपर नावद्वारा पहुचाया गया, बाकी सेना हताश हो भागने लगी—भागनेवालोमे सबसे पहले ओस्तियाक सरदार थे, उनके बाद तारतार। कुचुम कुछ खजानेके साथ इशिमकी शाखा इशिम नदीकी ओर भागा। इस युद्धमें एक सौ सतर रूसी मारे गये, जिनके लिये बहुत पीछेतक तबोल्स्क नगरके गिर्जामें विशेष प्रार्थना की जाती थी। कुचुमने कजान या बुखारासे लोहेकी दो तोपें मगवाई थी, जिन्हे भागते वक्त उसने इर्तिशमे फेंक दिया था। कसाकोने निकालकर उन्हें विजयकी सौगात बनाया। चुवाश, विजिक, सुसगन, अबालक नगरोके तारतार-अमीर कुचुमके साथ भाग गये। कुचुम भागते समय थोडी देरतक तोबोल नदीके तटपर अवस्थित यालुतुरामें ठहरा था।

७ नम्बर १५८१ ई०को येरमक सदलवल राजधानी सिविरमे दाखिल हुआ। वहाकी छोटी कोठरियोमे मुश्किलसे खान और उसके अनुचर रह सकते थे। राजधानीकी एक ओर इर्तिश नदी और दूसरी ओर सिविरका नामकी एक छोटी नदिका वह रही थी, बाकी दो तरफ धुस्सकी मोर्चेबर्दी थी। मकान सारे लकडीके थे, इसलिये पीछे उनका कोई अवशेष नही रह गया। खानकी राजधानीमें समूरी छाल तथा दूसरी बहुमूल्य वस्तुयें भारी परिमाणमे मिली, लेकिन आहारकी कोई चीज नही प्राप्त हुई।

विजयके तीन दिन बाद देमियान्का नदीसे होते एक ओस्तियाक सरदार येरमकके पास सम्मान प्रदर्शन करनेके लिये आया। वह अपने साथ समूर, मछली तथा दूसरी खाद्य वस्तुयें ले आया था। येरमकने थोडासा कर लेकर खातिर-सम्मान प्रदर्शन करके उसे लौटा दिया। धीरे-धीरे भय छूट गया और इर्तिश तथा तोबोल-उपत्यकाओंके और बहुतसे कबीले भेट ले-लेकर पहुचने लगे। लेकिन, अभी सिविरखानने हथियार रख नही दिया था। अन्नके अभावमे मछली रूसियोका प्रधान खाद्य थी। बीस रूसी मछली मारने गये थे। महमतकुलने एकाएक आक्रमण करके उन्हे मार डाला। येरमकने पीछा करके महमतकुल और उसके आदमियोको इर्तिश नदीके तटपर अवस्थित शम्सिन्स्की गावमे पकडकर घोर बदला लिया। कुछ ही आदमी अपने सरदारके साथ वहासे बच निकले। इस विजयके बाद अमीर इशवरदीने येस्केल्विनियान (तावदा) झीलसे आकर अधीनता ही नही स्वीकार की, बल्कि और छोटे-छोटे राजाओसे अधीनता स्वीकार करानेमें रूसियोकी सहायता की। सुकलेन (शायद वोगल) सरदारने भी छालोके रूपमें कर प्रदान किया।

सिविर-विजयकी खबर देनेके लिये येरमकने अपने साथी इवान कोल्जोफको मास्को भेजा, जिसके साथ कुचुमके अधीनता स्वीकार करनेका पत्र भी था। कोल्जोफ जाडेके मध्यमें बर्फवाला जूता पहने, समूरके कोटसे शरीर ढाके लम्बी-पतली बेपहियेकी गाडीको कुत्तो और बारहसिंगोसे खिंचवाते इशवरदीको पथप्रदर्शक बना तावदासे पहाडोके रास्ते होते चेरदिन पहुचा।

इससे कुछ पहले चेरदिनको एक वोगल सरदारने लूटा था। वहाके कमाडर वासिली पेलेपेलिज़िनने ज़ारके पास शिकायत भेजी थी, कि स्त्रोगोनोफोने दोनवाले विद्रोही कसाकोको शरण दी है, जिन्होने वोगलोको लूटा, उसीसे नाराज होकर उन्होने हमारे ऊपर आक्रमण किया। इसपर जार इवानने नाराज हो २८ नवम्बर १५८२ ई० को स्त्रोगोनोफोके पास सख्त पत्र लिखकर येरमक तथा उसके साथियोको बुरा-भला कहा था। लेकिन इसके थोडे ही समय बाद जब कोल्जोफने अपने साथियोंके साथ मास्को पहुचकर सिविर-विजयकी खुशखबरी दी, तो जारने अपनी बातको वापस ले लिया और दो मूल्यवान् कवच, एक चादीका प्याला, अपने पहननेका एक समूरी चोगा, तथा कितने ही और कपडे येरमकके लिये और दूसरे इनाम उसके साथियोके लिये भेजकर कोल्जोफको लौटाया।

महमतकुल अभी भी हाथ नही आया था। १५८२ ई० के शुरूमें पता लगते ही येरमकने साठ सैनिकोको उसपर अचानक हमला करनेके लिये भेजा। इर्तिशके किनारेसे नातिदूर तुलार झीलके पास, जहा पीछे कुलारेप्स्कया स्लोबोदा गाव बसा, एक जगह डेरा डाले पडे महमतकुलपर कसाक टूट पडे। अपने बहुतसे आदमियोको मरवाकर महमतकुल बदी बना। कुचुमके विरुद्ध महमतकुल अच्छा जामिन मिला, यह समझकर येरमक बहुत खुश हुआ, और उसने उसे बडी खातिरके साथ सिविर नगरमें अच्छी तरह रखा। कुचुम भागकर इशिम नदीकी ओर चला गया। वही सिविरके पुराने खान बेग-फुलातके पुत्र सैदियतने बुखारासे लौटते समय कसाकोसे मेल करके अपने पिताके शत्रुपर आक्रमण कर दिया। तबतक सबसे शक्तिशाली अमीर मिर्जा कराचा भी कुचुमका साथ छोड चूलिम्स्कोये सरोवर-पर चला गया था। सैदियतके आक्रमणने कुचुमकी हालत और बुरी कर दी।

१५८२ ई० के वसतमें येरमकने पचास सैनिकोके साथ बोगदान ब्रियास्गाको इर्तिशके तारतारो तथा ओस्त्रियाकोसे कर उगाहनेके लिये भेजा। तारतारोने प्रतिरोध किया। उनकी गढी अरिन्द्-

सियकाके तटपर थी। कसाकोने आक्रमण करके उसे तोड दिया। यह तारतार अभी भी मुसलमान नही थे। वह अपनी खून लगी तलवारको चूमते थे। सैनिकोने वहामे वहुतसे छाले और रसद येरमकके पास भेजी। फिर आगे वढने हुये कितने ही और कवीलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजवूर किया। तुरतेस नदीके तारतार तथा पडोसी उवाती तारतारोने भी अवीनता स्वीकार की। इर्तिशके किनारेके उग्रोने भी कर देना स्वीकार किया। कसाक-टुकडी इर्तिशके साथ-साथ ओव नदीतक जा फिर सिविर-नगरमें लौट आई। रास्तेमें उन्हें कितनी ही वार लडना पडा, लेकिन उनका एक भी आदमी नुकसान नही हुआ।

१५८२ ई० की गर्मियोको येरमकने सिविरमे विताया। फिर महमतकुलके साथ वहुतसी भेंट और शुल्ककी वस्तुयें देकर उसने मास्को दूतमडल भेजा। १५६३ ई० में व्रियाजगाने जो रास्ता पकडा था, उसी रास्ते वह इर्तिशके नीचे ओवकी ओर चले। आगे तावदा नदीके तारतारोसे भारी लडाई हुई, झील लाशोंके मारे गदी हो गई, इसीलिये उसका नाम पगन्नुये ओज़ेरो पडा।

जारने नवविजित सिविर (साइवेरिया) देशपर शासन करनेके लिये पाच सौ कसाकोंके साथ सेमिओन दिमित्रि-पुत्र वोल्खोव्स्कीको २२ मई १५८३ ई० को मास्कोसे रवाना किया। वह नवम्वरमे सिविर पहुचा। इसके वाद ही साइवेरियामें अकाल पड गया। येरमकका अभियान इतना निष्ठुर और ध्वसकारी था, कि वहा अन्न मिलना मुश्किल हो गया। कितने ही कसाक भूखके मारे मर गये। उसके वाद चर्मरोगने आफत ढाई। वोल्खोव्स्की स्वय मौतका शिकार हुआ। मिर्जा कराचाने कजाकोंसे सुरक्षित रखनेके वहाने कोल्जोफ और उसके चालीस साथियोको वुलाकर मार डाला। तारतारो और ओस्तियाकोने अव आम विद्रोह कर दिया, जिसके कारण कितने ही कर-उगाहनेवाले कसाक मार डाले गये। कराचाने अन्तमें सिविर नगरको भी घेर लिया। येरमकके ऊपर नगरकी रक्षाका भार छोडकर अधिकाश कसाकोने रातके वक्त सोसकानमें पडे कराचाके डेरेपर छापा मारकर उसे दखल कर लिया। मारे जानेवालो में कराचाके दो पुत्र भी थे, लेकिन कराचा भाग निकलनेमें सफल हुआ। फिर सेना जमा करके तारतारोने हमला किया। उस वक्त दुश्मनकी गाडियोसे मोरचावदी करके रूसियोने उनका मुकाविला किया। काफी हानि उठानेके वाद तारतार भाग गये। अव रूसियोकी धाक चारो ओर जम चुकी थी। पास-पडोसके तारतारो और ओस्तियाकोने समझ लिया, कि प्रतिरोव करनेसे कोई फायदा नही हो सकता, इसलिये उन्होने अधीनता स्वीकार की, सिविरमे अव खाने-पीनेकी चीजे काफी आने लगी।

साइवेरियाका नाम इसी सिविर नगरके कारण पडा, यद्यपि रूसी भाषामें सिविरका अर्थ उत्तर (दिशा) भी है। सिविर नगर साइवेरियाके कीमती समूरोंके व्यापारका वड़ा केद्र था, इसलिये वहा वुखाराके व्यापारी भी आया करते थे। मुमकिन है, साइवेरियाके समूर और अल्ताईके सोनेके लिये मध्य-एसियासे यहा आनेवाला मार्ग वही पुराना वणिक्पथ हो, जिससे वुखाराके वाणिज्य-सार्थ यहा आया करते थे। वुखाराके कारवाके आनेका समय था। पता लगा, कुचुम उसपर हमला करना चाहता है। येरमकने कारवाकी रक्षार्थ डेढ सौ सैनिक भेजे और स्वय भी वगाई नदीके सगमतक गया। कारवा नही आया। येरमक अपने दलको लेकर वेगुइशेव्स्कोये सरोवरपर अवस्थित तारतार-राजकुमार वेगुइशके गढपर आक्रमण किया, प्रतिरोव करनेमें प्राय सारे तारतार मारे गये। इसके वाद येरमकने शमसा और वियाचिक, साला, कोर्दकपर चढाई की। सालामे थोडा-सा प्रतिरोध हुआ। कोर्दकके आदमियोंने भागकर जगलमें शरण ली। तेवेन्दा (तुवेंदा) के तारतार-राजा येलिगइने अपनी सुदरी लडकीका येरमकसे व्याह करना चाहा, किन्तु येरमकने विवाहसे इन्कार करते हुये उसे अभय वचन दिया। कुचुम इसी लड़कीको अपने लडकेके लिये चाहता था। इशिमके सगमकी लडाईमें पाच कसाक मारे गये। वाकी दल इर्तिशके साथ-साथ आगे चला। अटसकाकुन झीलके ऊपर प्रसिद्ध तारतार किला कुल्लरा था, जो कलमक मगोलोंसे सीमाकी रक्षाके लिये वनाया गया था। उसके ऊपर पाच रोज घेरा डाल लौटते वक्तके लिये छोडे कसाक-दलने इर्तिशके पूरव कुलारचोव झीलके ऊपर अवस्थित ताशदकान नगरपर आक्रमण किया, जो

विना लडाईके ही सर हो गया । फिर शिस् और इर्तिशके संगमपर बसे तारतारोंके अन्तिम गाव शिसतमकपर पहुचे । कसाक गरीबोंसे कर नही थोडी-सी भेंट लेते थे, जिसका प्रभाव साधारण जनतापर अच्छा पड रहा था । जब वह लौटनेके लिये ताशदकान पहुचे, तो बुखाराके कारवाके आनेकी खबर मिली । उससे मिले विना ही कसाक-दल येरमकके नेतृत्वमें सिविरकी तरफ लौटा । वह अपने पहलेके एक डेरे—येरमकोवा पेरेकोफ—के पास एक भीटे (ज़्रेवो गोरोदिची) पर पहुचे, जिसके बारेमें तारतारोका कहना था, कि यह उसी कूसिम-तुरा (कुमारी दुर्ग) का अवशेष है, जिसको कि कुमारियोने अपने लहंगेमें मिट्टी ढो-ढोकर बनाया था । दुश्मनसे अब कसाक निश्चिंत हो गये थे, इसलिये विना संतरी रखे ही उन्होने वहा डेरा डाल दिया । कुचुमके चरने तीन बन्दूको और कितने ही कारतूसोको ले जा कसाकोके बारेमे उसे खबर दे दी । वह अपने आदमियोके साथ आकर उनपर टूट पडा । येरमक शत्रुओकी पातीको चीरता नदीके किनारे उस स्थानपर पहुचा, जहापर अपनी नावोके होनेकी उसे आशा थी । नाव न पाकर वह नदीमे कूद पडा । जारने जिस कवचको उसकी रक्षाके लिये भेजा था, वही उसके मरनेका कारण बना—कवचके बोझके मारे १७ या १८ अगस्त १५८५ ई० को येरमक नदीमें डूबकर मर गया । इस प्रकार एक क्रूर किन्तु साहसी पुरुषकी जीवन-यात्रा समाप्त हुई ।

येरमकका शव अबालकसे १२ वर्स्तपर २५ अगस्तको येपचिन्स्की नामक तारतार गावमें मिला । कवचका एक भाग और ओस्तियाकोकी देवमूर्तिसे बेलोगोर्स्कके लिये एक घंटा बनाया गया और दूसरे भागको मिर्जा कंदोलको दिया गया । येरमकका चोगा राजकुमार सैदियतको मिला, और तलवार तथा कमरबन्द मिर्जा कराचाको । मुल्लोने पूजाके डरसे येरमककी कबरको छिपा दिया ।

इस लडाईसे सिर्फ एक आदमी बच निकला, जिसने सिविरमें जाकर खबर दी । तारतारोसे भयभीत नेताविहीन एक सौ पचास भूखे कसाक २७ अगस्त १५८४ ई० को सिविर छोडकर लौटनके लिये मजबूर हुये । कुचुमने उन्हें नही छेडा और अपने पुत्र अलीको भेजकर सिविरपर फिरसे अधिकार कर लिया । जल्दी ही पुराने खानवंशके राजकुमार सैदियतने अलीको मार भगाया । साइबेरियाका अभियान निष्फल नही हुआ, और न रूसियोका पैर तोबोल नदीके तटपर सिविर नगरतक ही आकर रुक गया ।

३०. फ्योदर, इवान IV-पुत्र (१५८४-९८ ई०)

इवान IV ने क्रोधाध हो अनजाने अपने ज्येष्ठ पुत्र इवानको मार दिया । क्रूर इवानके मरनेके समय उसके दो पुत्र जीवित थे, जिनमेंसे फ्योदर उसकी पहिली बीबी अनस्तासिया रोमनोवासे था और दूसरा शिशु दिमित्रि उसकी अन्तिम स्त्री मरिया नागायासे । अनस्तासिया रोमनोफ वंशकी थी, जो कि जल्दी ही रूरिक-वंशका स्थान लेनेवाला रूसका अंतिम राजवंश बनने जा रहा था । फ्योदर रूसका जार बना और जारकुमार दिमित्रि अपनी मा और नानावंश (नगाय) के साथ उगलिच नामके छोटेसे नगरमें एक छोटी-सी जागीर देकर निर्वासित कर दिया गया । दिमित्रि बहुत दिनोतक नही जिया, और १५९१ ई०में मर गया । फ्योदर चिररोगी, बहुत दुर्बलबुद्धि किंतु साधु स्वभावका आदमी था । वह अपना सारा समय भगवान्‌की भक्तिमें बिताता । गिर्जेके घंटोको बजाते उनकी टुन-टुनकी आवाज सुननेमें उसे बडा आनंद आता था । लोग खुलेआम उसे मूर्ख कहते थे । राज्यका शासन जारके संबधियों और उसके कृपापात्र बायरोके हाथमें चला गया, जिनमें बायर बोरिस फ्योदर-पुत्र गदुनोफ जल्दी ही सबसे अधिक प्रभाव-शाली बन गया । गदुनोफ-परिवार पुराने रूसी राजुल-वंशोमेंसे नही था, इसलिये वह उच्चकुलीन होनेका दावा नही कर सकता था । लेकिन इवान IV के अन्तिम दिनोमें बोरिसका प्रभाव बहुत बढ गया था, जिसमें उसकी बहिन इरिनाका जार फ्योदरसे ब्याह होना भी एक कारण था । वैसे बोरिस गदुनोफ बडा ही योग्य और गुणीपुरुष था, यद्यपि उसने ईसाई-धर्मके अनुसार पुस्तकोकी शिक्षा अच्छी तरह नही पाई थी । कुलीन बायर पुराने रीति-रवाजोका पालन करना आवश्यक समझते थे, किंतु बोरिस उनकी पर्वाह नही करता था । वह विदेशियोंसे मिलने-जुलनेमे जरा भी आनाकानी नही करता था ।

अपने वहनोईकी ओरसे शासनका भार सभालते ही उसका पहला काम था, अपने काममें वाधा देनेवाले वायरोको दरवारसे निकाल वाहर करना। वह स्वय विदेशी राजदूतोसे मुलाकात करता और अपने घरमे राजदरवार जैसा ठाट रखता था। गदुनोफ ग्रीक चर्चके महत्त्वको समझता था। इस चर्चका सवसे वडा महन्त या महासघराज कान्स्तन्तिनोपोलमे रहता था, जो कि १४५३ ई० में सुल्तान मुहम्मद उसमानअली तुर्कके हाथमें चला गया था। यह कैसे पसद किया जा सकता था, कि ईसाई-धर्मके एक वडे सम्प्रदायका महागुरु ईसाई-विरोधी सुल्तानके मातहत रहे। १६ वी सदीके अन्तमें महासघराज जव-तव मास्को आने लगा था, जहा उसे वहुत भेंट-पूजा मिलती थी। इसी तरहकी एक यात्रामें महासघराज जेरेमिया जव मास्को आया, तो गदुनोफने उससे रूसी चर्चके लिये एक पृथक् सघराज होनेकी स्वीकृति ले ली। १५८६ ई० मे इस प्रकार वना प्रथम रूसी सघराज योव गदुनोफका अनुगामी था।

जार पयोदरके शासनके अन्तिम वर्षोंमें सारा शासनयत्र वोरिस गदुनोफके हाथमें चला गया। गदुनोफकी सफलताओने भी उसके प्रभावको वढानेमें सहायता की। लिवोनियाके युद्धमें रूसके हार खानेपर वाल्तिक तटको स्वीडनने दखल कर लिया था, जिसके कारण पश्चिमी युरोपसे रूसका सीधा सवध नही रह गया था। गदुनोफने इसके लिये १५९० ई० में स्वीडनसे लडाई शुरू की, और १५९५ ई० की सधिके अनुसार स्वीडनको मजवूर होकर फिनलन्द खाडी और लदोगा-सरोवरके तटके भूभाग (इवान-गोरद, याम, कोपोरये, करेला)को दे देना पडा। उस समय-राज्यके सामने किसानोकी एक वडी समस्या थी—रूसी किसान भूमिपतियोके शोषण और अत्याचारके कारण अपने गावोको छोड दक्षिण-पूर्व और उत्तरकी सीमात-भूमिमें वसते जा रहे थे, जिसके कारण खेतोका जोतना मुश्किल हो गया था। उन्हें मजवूर करके रखनेके लिये स्वीडनसे युद्ध होते समय (१५९२-९३ ई०) ही किसानोकी गणना की गई थी। उस वक्त जो किसान जिस जमीदारके अधीन दर्ज किये गये थे, उन्हें १५९७ ई० की राजघोषणाके अनुसार वही रहनेके लिये मजवूर किया गया।

१५९८ ई० में जार पयोदरके मरनेके साथ प्राचीन रूरिक-राजवश समाप्त हो गया। जेम्स्की सवोर (राष्ट्रीय परिषद्) ने १५९८ ई० में वैठक करके वोरिस गदुनोफको नया जार चुना।

रूरिक-वशने रूसके लिये वडा ही ऐतिहासिक काम किया। इसीके शासनकालमे जनयुगके अवशेषो को खतम करके रूसमे एक शक्तिशाली सामन्ती व्यवस्था कायम की गई, फिर रूसके भिन्न-भिन्न टुकडो-में वटी रियासतोको इकट्ठा करके वृहत्तर रूस देशके निर्माण करनेका प्रयत्न किया गया। इसमें मगोलोने आकर दो शताब्दियोतक कुछ वाधा जरूर डाली, लेकिन अन्तमें फिर एकीकरणका काम वहुत जोरसे शुरू हुआ और रूसकी सीमाए उत्तरमें फिनलन्दकी खाडी, पश्चिममें वाल्तिक-समुद्र, दक्षिणमें कास्पियन सागर और पूरवमे सिविर नगरतक फैल गईं। दक्षिणी सीमा कालासागरतक पहुच जाती, लेकिन कान्स्तन्तिनोपोलके तुर्कोने (१४७५ ई० में) क्रिमियाके खानको अपने अधीन करके उधरका रास्ता रोक दिया। यद्यपि आगेकी पौन शताब्दी रूसके लिये वहुत अच्छी सावित नही हुई, लेकिन साथ ही एक वार जहातक वह अपने पैरोको रख चुका था और जहा जनताका स्वार्थ सहायता देनेके लिये मौजूद था, वहासे उसे पीछे हटाया नही जा सकता था। रूसको और आगे ले चलनेका काम अव प्रथम पीतरको करना था, जो कि औरगजेवका तरुण समकालीन था। अकवरकी मृत्युसे सात वर्ष पहले पयोदरका देहान्त हुआ। देशके एकीकरण और दृढताके लिये जैसे अकवरने भारतमें काम किया था, वही काम रूरिक-वशके १६ वी शताब्दीके जारोने किया। अकवरके कामको औरगजेवने वेकार कर दिया, लेकिन रूसके सौभाग्यसे उसे जार पीतर जैसा दूरदर्शी शासक और चतुर सेनानायक मिला, जिसने रूससे पिछडेपनको हटानेका काम वडी सफलतापूर्वक किया।

रूरिक-वंशवृक्ष
(....६११-१५९८ ई०)

१ रूरिक (६११-?)

२ ओलेग (६११ ई०)

३ ईगर=४. ओलगा (६४५-५७) (. ६४५)

५ स्व्यातोस्लाव I (६५७-७३)

यारोपोल्क

ओलेग

६ व्लादिमिर I (६७३-१०१५)

७. स्व्यातोपोल्क (१०१५-१६)

८ यारोस्लाव (१०१६-५४)

६. इज्यास्लाव (१०५४-७३)

स्व्यातोस्लाव II (मृ० १०७६)

व्सेवोलद

१० स्व्यातोपोल्क (१०७३-१११३)

११ व्लादिमिर II मनोमाख (१११३-१५)

ओलेग (मृ० १११५)

मिस्तस्लाव

१२ युरी I दीर्घबाहु (सुज्दल) (-११५७)

स्व्यातोस्लाव (मृ० ११६४)

१३ अन्द्रेइ (११५७-७४)

१४. व्सेवोलद (११७६-१२१२)

ईगर (वीर) (मृ० १२०२)

१५ युरी II (१२१२-३८)

१६ यारोस्लाव II

१७ अलेक्सान्द्र नेव्स्की (–१२६३)

यारोस्लाव (त्वेर) (मृ०१२७२)

१८ दानियल (मास्को) (१२६३-१३०३)

१६. युरी III (१३०३-२५)

२० इवान I खलीता (१३२५-४१)

२१ सेमअोन (१३४१-५३)

२२ इवान II (१३५३-५६)

२३ दिमित्रि (१३५६-८६)

युरी

२४ वासिली I (१३८६-१४२५)

२५ वासिली II अघ (१४२५-६२)

२६ इवान III (१४६२-१५०५)

२७ वासिली III (१५०५-३३)=[illegible]

२८. इवान IV [illegible]

[illegible]

भाग २

दक्षिणापथ (१२२४–१७४७ ई०)

अध्याय १

चगताई-वंश

(१२२२–१३७० ई०)

छिङगिस्के मरने के बाद उसका राज्य चार उलुसोमे विभक्त हुआ–(१) जू-छि-उलुस या सुवर्ण-ओर्दू (किपचक-राज्य), जिसके बारेमें अभी हम कह चुके है, (२) ओगोताई-उलुस, चगताईके उत्तर-पूर्वमें था, जिसके खान एमिल और कुवानमें रहते थे, (३) तूलुइ-उलुस, जो कि ओगोताई उलुस-के उत्तरमें था और (४) चगताई (जगताई, जगदाई)-उलुस जिसके हाथमें अन्तर्वेद, सप्तनद और पूर्वी तुर्किस्तान था। इन चारो उलुसोके अतिरिक्त कुबिलेइ खानके अनुज खुलाकूने ईरान, इराक, शाम और आजुरबाइजानमे अपना एक अलग राजवश कायम किया था। छिङ-गिस्ने ही अपना राज्य चार भागोमें विभक्त करके चारो पुत्रोको दे दिया था, लेकिन साथ ही चारो उलुसोके खानोको एक कआन (महाखान) के अधीन रहनेकी व्यवस्था भी कर दी थी। यह व्यवस्था बहुत-कुछ १३वी शताब्दीके अन्त (कुबिलेके मृत्युके समय १२९४ ई०) तक चलती रही, जिसमे सबसे अधिक बाधा ओगोताइ और चगताई-उलुसोकी ओरसे दी गई।

१. जगताई, छिङ-गिस्-द्वितीय पुत्र (१२२७–४२ ई०)

छिङगिस्ने अपने द्वितीय पुत्र चगताई (जगताई, छगताई) को जो भूभाग दिया था, उसमे अन्तर्वेद (आमू और सिर-दरियाके बीचका भाग), काश्गर, बदख्शा, बलख–अर्थात् उइगुर डाडे, अल्ताई और हिन्दूकुश पर्वतमालाओके बीचके देश शामिल थे। चगताई-भूमिमें आजकल चीनी-तुर्किस्तान, सोवियत कजाकस्तान-किर्गिजस्तान-उज्बेकिस्तान-ताजिकिस्तान-तुर्कमानिस्तान और अफगानिस्तान शामिल हैं। चगताईवशने ७७१ हि० (१३७० ई०) तक १४६ वर्ष राज्य किया, फिर उसका स्थान तेमूर और उसके वशजोने लिया। लेकिन, तेमूरकी सतानोने अबू-सईद (१४५१–६९ ई०) तक चगताई-वशके किसी व्यक्तिको गुडिया खान बनाकर कायम रक्खा। जिस तरह अब्बासी खलीफोकी राजशक्ति खतम हो जानेपर भी बगदादमें उन्हें कठपुतली खलीफा बनाकर कायम रक्खा जाता रहा, उसी तरह छिङ-गिस्के वशकी पवित्रताका खयाल करके चगताई खानोको समरकन्दकी गद्दीपर रखा जाता रहा। चगताई-उलुस १२२७ ई० से १३१८ ई० तक रहा। उसके बाद राज्यशक्तिको हथियानेके लिये मगोल और अ-मगोल, स्वदेशी और विदेशी दलोका झगडा उठ खडा हुआ, जिसमें अन्तर्वेदमें स्वदेशी तुर्कोंका पलडा भारी हो गया और इस प्रकार अन्तर्वेद (मावरा-उन्-नह्र) और मुगोलिस्तानके दो राज्य पैदा हो गये। चगताई खानकी राजधानी अल्मालिक इलि-उपत्यकामें वर्तमान कुलजा नगरके पास थी।

छिङ-गिस्के अन्त पुरमे पाच सौ खातूने (रानिया) और बेटिया थी। हरेक बडे विजयमे हाथ लगी सुदर राजकन्याओमेंसे एकको हरएक सेनापति अपने कआनके पास भेजना आवश्यक समझता था। बापकी तरह उसके लडकोके भी बडे-बडे रनिवास थे, तो भी प्रमुख रानिया (खातूनें) मगोल-वशकी-ही होती थी।

चगताई खान अपने पिताके यस्सा (नीतिशास्त्र) का पडित तथा उसपर अक्षरश चलनेवाला माना जाता था। यस्साके अनुसार घरेलू जानवरोको जवह (हलाल) करना या दिनमें बहते पानीमे नहाना वर्जित था। जगताईने यस्साके विरुद्ध आचरण करनेपर एक मुसलमानको मृत्युदड दे दिया था। उसका शासन दृढ किंतु न्यायानुमोदित था। उसके राज्यमे डाकका बहुत अच्छा प्रबन्ध था। यद्यपि वह जबर्दस्त

पियक्कड था, किन्तु राजकाजके देखनेमे गफलत नही करता था। लोग उसके कठोर नियमोको भी मानते, क्योंकि वह भरसक अन्याय नही होने देता था। उसके यहा सभी धर्मो और जातियोंके लोग समान थे। समान दृष्टिसे देखे जानेका यह अर्थ नही था, कि मगोलोके समान ही दूसरे लोगोको भी माना जाता था। उसकी प्रजामें अधिकाश मुसलमान थे, इसलिये उसने मुसलमानोको बडे-बडे दर्जे दिये थे, तो भी बडे पदोपर मगोलोके बाद तुर्कोको अधिक देखा जाता था। इसका कारण भी था—केवल दक्षिणके थोडेसे अशको छोडकर उसकी प्रजा अधिकाश तुर्क थी। तुर्को और उनके सरदारोने तुर्क जातिके इतिहासमें प्रवेश करनेके समय (६ठी सदीके मध्य) से ही सैनिक जीवनको नही छोडा और वह अब भी जब-तब घुमन्तू जीवनका भी अभिनय करते थे, क्योकि मध्य-एसियामे घुमन्तू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय समझा जाता था। चगताई और जू-छिके उलुस तुर्कोके ऊपर शासन करते थे। अतमें इन उलुसोके मगोल भी इन्ही तुर्कोमें विलीन हो गये। लेकिन, चगताई खानके लिये अभी वह समय दूर था। चग-ताईने यलजपुत्र मसूदवेगको अन्तर्वेदका शासक नियुक्त किया था, जो कि तुर्क मुसलमान था। मसूद पहले चीनमें भी शासक रह चुका था। उस वक्त राज्यमें व्यक्ति-कर आमदनीका एक बडा स्रोत था, जो सम्पत्तिके अनुसार प्रतिव्यक्ति एकसे सात तका (११० जूयेनी) होता था। सभी धर्मोके पुरोहित करसे मुक्त थे।

अपने गुरु तातातुगाकी शिक्षासे चगताईने फायदा उठाया था। गुरुने शिक्षा दी थी—शासकको न्यायपरायण और उत्साही होना चाहिये। समरकन्द तथा बुखाराकी जगह अलमालिकको राजधानी बनाना चगताईके बाद उसके वशजोको भी पसद आया, क्योकि वहा उनके बहुसख्यक घोडो और पशुओंके चरानेके लिये विशाल चरागाहें थी। अभी राजशक्ति मगोल तलवारोके ऊपर निर्भर थी, जो ऐसे खानको कभी नही पसन्द करते, जो पूर्वजोके जीवनको छोडकर नगरके विलासी जीवनमें फस गया हो। मगोलोंका शासन आर्थिक शोषणका था ही, इसलिये सारी निष्पक्षता दिखलानेपर भी मुल्ला मगोल काफिरोंके विरुद्ध लोगोको भडका दिया करते थे, जिसके कारण विद्रोह हो जाना आसान था।

बुखारा-विद्रोह (१२३२ ई०)—१२३२ ई० मे बुखारामें मगोलोके विरुद्ध जो विद्रोह हुआ, उसका नेता एक छलनी बनानेवाला महमूद था। वह बुखारासे तीन लीग (योजन) दूर तारावमें पहले-पहल १२३२-३३ ई० (६३० हि०) मे प्रकट हुआ। उसने दावा किया—अल्लाने मुझे दिव्य शक्ति देकर भेजा है। पहले शायद भूत भगानेका काम करके उसने अपने प्रति लोगोंके मनमें विश्वास पैदा किया। मुसलमान हो जानेपर भी पुराने भूत-प्रेत लोगोके मनसे गये थोडे ही थे—मुसलमान भी जिन, शैतान आदिपर विश्वास करते थे। महमूदकी दिव्यशक्तिको पहले उसकी बहिनने स्वीकारा, फिर उसके दूसरे कितने ही अनुयायी बने। सब जगह हल्ला हो गया है, कि सत महमूदके पास जो जाता, उसकी बीमारिया छूट जाती है। फिर अवे-लूले-लगडे बडी भारी सख्यामें उसके पास पहुचने लगे। जब २०वी शताब्दीके मध्यमें उडीसाके नैपालबाबाके पास लोग रेलो-मोटरो-विमानोसे दौडने लगे, तो आजसे सवा सात सौ वर्ष पहलेके अतर्वेदके लोगोका ऐसा करना कौनसी आश्चर्यकी बात थी? मह-मूदका यश तारावसे चलकर राजधानीमें पहुचा। मुल्ला शम्सुद्दीन महमूदने पहले हीसे भविष्यद्वाणी लिख छोडी थी, कि मुसलमानोका मुक्तिदाता तारावमें पैदा होगा। धर्माध महमूदने जल्दी ही देखा, कि उसके अनुयायियोकी सख्या बहुत अधिक हो गई है और वह मगोलोके विरुद्ध उठ खडे होने के लिये उसकी आज्ञा भर चाहते है। इस परिस्थितिको देखकर बुखाराके राज्यपाल और दूसरे अधिकारी घबडा उठे। उन्होने उस समय खोजदमे अवस्थित मसूदबेगके पास सलाहके लिये खबर भेजी और इधर नये पैगम्बरको दुआ देनेके लिये बुखारा बुलवाया। मौका पाते ही उस पागलको मरवा डालनेका निश्चय किया गया था, किंतु महमूद उतना पागल नही था। उसे षड्यत्रका पता लग गया। उसने साथ चलने रक्षी मगोलोकी ओर मुह करके एकाएक उनके विश्वासघातके लिये भर्त्सना करने कहा—मैं तुम सबको इसी समय अधा कर देता हू। मगोल रक्षियोके दिलमें इसका भारी भय छा गया। उन्होने इसे उसकी दिव्यशक्तिका प्रमाण समझा। बुखारामें महमूदका स्वागत

राजसी ढंगसे हुआ। उसे सल्जूकी सुल्तान सजरके बनवाये महलमें ठहराया गया। दर्शन करनेवालो की भारी भीड लगने लगी। लोग यह सोचकर अपनी जीभ निकाले खडे होते, कि महमूदके थूककी एक बूंद हमारे मुहमे चली जाये और हम सारे रोगो और आफतोंसे मुक्त हो जायें। बुखाराके मुल्लो और अमीरोने इस अद्भुत सतको अपनी दूकानदारी और अधिकारके लिये खतरनाक समझा। उन्होने मगोलोको उसे मार डालने की सलाह दी। सब होते भी महमूदको उनके फंदेसे निकलकर पडोसके पहाडमे भाग जानेमे कोई अडचन नही हुई। लोग पैगम्बरके पीछे-पीछे चले। किसानोने हल्ला उडाया, कि पैगम्बर हवासे उडकर उस पहाडमे चला गया। लोगोकी भक्ति और भी बढ गई। महमूदने जब देखा, कि शासक उसका प्राण लेनेके लिये तैयार है, तो उसने हथियार उठानेके लिये हुकुम देते हुए कहा "अब समय आ गया है, कि काफिरोको कतल कर दिया जाय।" थोडे ही समय बाद महमूद पैगम्बर और सुल्तानके रूपमे एक भारी अधविश्वासी भीडको लिये बुखारामे दाखिल हुआ। उसने मुल्ला शम्शुद्दीन महमूदको बुखाराका सदरे-जहान नियुक्त किया, और लोगोको हुकुम दिया, कि धनियो तथा
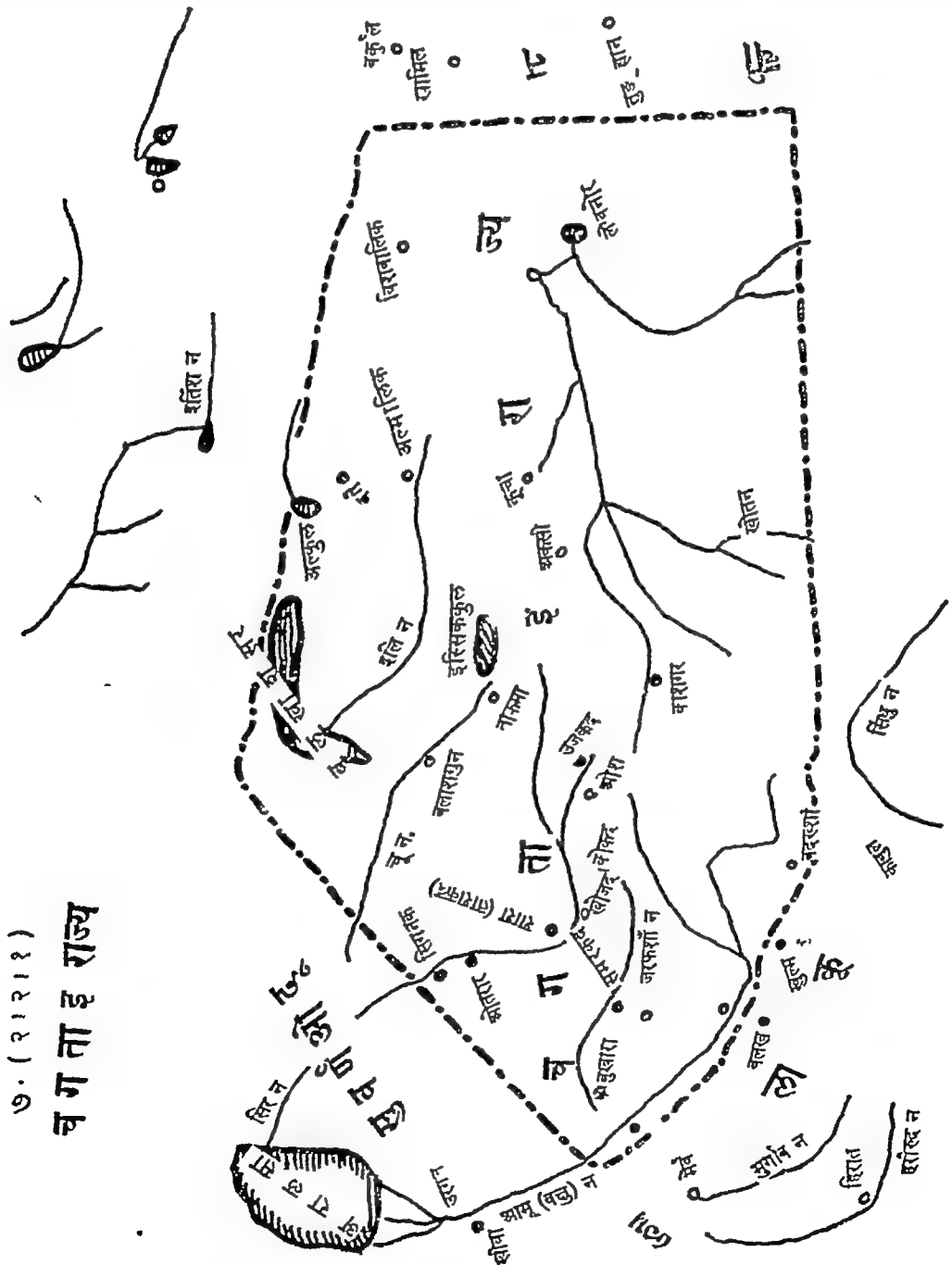
७. (२।२।१) चगताइ राज्य

अमीरोंको लूटो। अपने भक्तोंको उसने विश्वास दिलाया—"मेरे पास एक गुप्त सेना है, जो हवामें मेरे हुकुमकी प्रतीक्षा कर रही है। देखो उन हरितवस्त्रधारियोंको और उन दूसरे श्वेतवस्त्र-धारियोंको, जैसे ही मैं संकेत करूँगा, वह हमारी मददके लिये उतर आयेंगे।" भीड़मेंसे एक आदमीने कहा, "हाँ, मैं देख रहा हूँ।" फिर सभीने वही बात दुहराई। महमूदने अगले जुमा (शुक्रवार) को अपने नामका खुतबा पढ़वाया। उसने धनियोंकी सम्पत्ति जब्त कर ली। बुखाराकी सुंदरियाँ बहुत भारी संख्यामें उसके घरमें चली आईं। बुखाराके धनी-मानी करमीनाकी ओर भाग गये, और वहाँसे मंगोल सैनिकोंको लेकर फिर बुखारा आये। महमूद अपने एक शागिर्दके साथ निहत्था ही उनसे मिलने चला गया। अंधविश्वासियोंकी भारी भीड़ भी पीछे-पीछे थी। इसी समय अकस्मात् धूल लिये आँधी उठी, जिसमें आदमी एक-दूसरेको देख नहीं सकते थे। चमत्कारोंपर विश्वास करने-वाले मंगोल डरके मारे भागने लगे। बुखारियोंने पीछा करके उनमेंसे बहुतोंको मारा, लेकिन इसी समय उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, कि उनका पैगम्बर मारा जा चुका है। महमूदका स्थान उसके भाई ने लिया, लेकिन वह एक ही सप्ताह शासन कर सका। इसी समय मंगोल सेनापति इल्दिर नोयन और जेद्दगिन कुरजी काफी सेना लेकर आ पहुँचे। पहले ही आक्रमणमें महमूदके अनुयायी भाग खड़े हुए। मसूदबेगने मंगोलोंको नगर लूटनेसे तबतक रोके रखा, जबतक कि खानके पाससे आज्ञा न आ जाय। चगताईने लूटनेकी आज्ञा नहीं दी।

मंगोलों और उनके सरदारोंके बारेमें कितने ही लोग ख्याल करते हैं, कि वह बर्बर थे, लेकिन एक युरोपीय लेखक बर्थ्रेरीका कहना है—"मंगोलोंका संबंध ऐसी जातियोंसे हुआ था, जो सभ्यताके उच्च तलपर थीं। अपनी जन्मभूमि (मंगोलिया) की तरहकी खुली जगहोंके लिये उनके दिलोंमें भारी प्रेम था। नगरों और बस्तियोंको वह भ्रष्टाचार और नामर्दीका स्रोत मानकर बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे।" उनके लिये आदर्श जीवन था पशुपालोंका—अर्थात् अपने पशुओंको लिये सफेद नम्देके तम्बुओंमें खुली जगहोंमें रहना। बस्ती और नगरके वासियोंको वह तबतक छेड़ना नहीं चाहते थे, जबतक कि वह आज्ञाकारी रहें। बल्कि, ऐसे लोगोंके लिये वह युद्धध्वस्त नगरोंको फिरसे बसानेमें सहायता और प्रोत्साहन देते थे। इराक के जैसे कितने ही शहर उनकी लड़ाइयोंके कारण उजड़ गये थे, लेकिन मंगोलों ने वहाँके लोगोंको घुमन्तू जीवनकी ओर लौटानेका प्रयत्न नहीं किया। काश्गर प्रदेशकी अवस्थामें कुछ भेद था। मंगोलोंने जल्दी ही इस प्रदेशको अपने हाथमें कर लिया था। तरिम-उपत्यका उस समय उइगुरोंकी थी, जो बौद्धधर्मी रह संस्कृतिमें अधिक विकसित हो चुके थे। वह अब घुमन्तू नहीं बल्कि बस्तीमें रहना पसन्द करते थे, और उन्होंने चीनी तुर्किस्तानके नागरिक जीवनको स्वीकार कर लिया था। उइगुरों (कराखानियों)के उत्तराधिकारी कराखिताई भी जल्दी ही नागरिक जीवनके प्रभावमें आ गये थे। लेकिन, जिस तरह पश्चिमी तुर्किस्तानमें नगरोंके जीवनको फिरसे स्थापित करनेमें चगताइयों ने सहायता की, वही बात पूर्वी तुर्किस्तानमें नहीं हुई। वहाँ उजड़े हुए नगर फिर नहीं बस सके, न टूटी नहरें फिरसे जारी की जा सकी, जिसके कारण हरे-भरे गाँव और सुंदर नगर बालुकासमुद्रमें डूब गये।

मंगोलोंके शासनकालमें दूसरी विद्याओंका प्रचार और विकास रुक गया, हाँ, इस्लामिक धर्म-शास्त्र और उससे भी ज्यादा सूफी-सन्तोंका प्रभाव अवश्य बढ़ा। इस समयसे सूफी-सन्तों (खोजो,शेखों) का प्रभाव इस भूमिमें इतना जबर्दस्त स्थापित हो गया, जितना किसी दूसरे इस्लामी देशमें देखा नहीं जा सकता। इसी समयसे इन सन्तोंके परिवारोंने स्थायी तौरसे देशका धार्मिक और सांस्कृतिक नेतृत्व अपने हाथोंमें ले लिया। सन्तों और सूफियोंकी ओर लोगोंका इतना झुकाव शायद इसीलिये हुआ कि मंगोलोंने विजयी इस्लामको धूलमें मिला दिया था। संसारसे किसी ओरसे आशा न रह जानेपर अब लोगोंका ध्यान सूफियोंके चमत्कारपूर्ण रहस्यवादी उपदेशों और विचित्र जीवनोंकी ओर खिंच गया।

चगताईके शासनके आरम्भ होते ही मंगोलोंद्वारा ध्वस्त नगरों और गाँवोंको फिरसे आबाद करनेके लिये सबसे जरूरी बात थी, भयभीत किसानों और कारीगरोंको समझा-बुझाकर काममें लगाना। हम देख चुके हैं, नगरोंके भीषण नर-संहारके समय भी मंगोलोंने कारीगरोंको प्राण-दान देकर

उनके दिलमे विश्वास कायम करनेकी कोशिश की थी। चगताई-शासकोके सहानुभूतिपूर्ण भावने भी लोगोके दिलमें विश्वास पैदा किया। मसूदवेग चगताई खानका परम विश्वासपात्र अधिकारी था, तो भी उसके अधीनस्थ नगरोमें कितने ही मगोल शासक भी नियुक्त थे, जैसे समरकन्दका शासक जोङ्-सान ताउ-फू और बुखाराका बुका-बोशा, जिनमे पहला शायद चीनी था। चगताईका वजीर हेजिर तुर्क था। मसूदने लोगोकी, सहानुभृति प्राप्त करनेके लिये मदरसे भी कायम किये। १२३४ ई० में बुखाराके मसूदवेग और शेरकुली मदरसोमे हजार विद्यार्थी पढते थे।

गर्मियोमें चगताई खानका निवास कूयाश (सूर्य) अलमालिकके पास कोक (नील) पर्वत में रहता था। जाडोमें वह मेराउरिक (? मेराउजिक)—इलामे रहता, जो इलिके तटपर था। कूयाशके पास चगताईने कुतुलुग (पवित्र) गाव बसाया था। चीनी पर्यटक चान-चुनके अनुसार चगताई का ओर्दू इलि नदीके दक्षिणी किनारेपर—शायद उसी जगह जहा कि उसके उत्तराधिकारीका ओर्दू— उलुस-इफ या उलुस-इकमें था। चगताईका इल-अलरगू (सबसे बडा नगर) अलमालिक था। चगताई-की उइगुर प्रजामे अब भी कुछ बौद्ध थे, और कुछ ईसाई। इन दोनो हीके साथ मुसलमानोकी सख्त दुश्मनी थी। अभी सप्तनदके मुस्लिम जिलोमें भी काफी गैर-मुस्लिम रहते थे—उदाहरणार्थ, चू-उपत्यकाके नेस्तोरी। १२५३ ई० में जब रुवरिक इधरसे गुजरा, तो कयालिकसे उत्तर तीन फ्रासीसी मील (ल्यू, १३॥ वर्स्ते) पर उसने एक गाव देखा, जिसके सारे निवासी ईसाई थे और वहापर उनका गिर्जा भी था। इस्सिकुल सरोवरके तटपर भी इसी नामके एक नगरमें १४वी सदीमे अर्मनी साधुओके मठ थे। मार्को पोलोके अनुसार चगताई स्वय ईसाई था। जो भी हो, मुसलमानोको जानवरोके हलाल करने और बहते पानीमे नहानेके लिये मृत्युदड देना, उन्हे भडकानेके लिये काफी था। इसी भावको प्रकट करते चगताईकी मृत्युपर किसी मुसलमानने पद्य लिखा था—

"जिसकी डरसे कोई पानीमे नही उतरता था,
वह डूब गया गहरे समुद्रमें।"

आज्ञाका विरोध करनेके लिये चगताईके हुकुमसे ६२६ हि० (३० XI १२२८—२१ X १२२९ ई०) में मुल्ला अबू-याकूब-यूसुफ सैकाकी मारा गया, जिसकी कब्र १६वी सदीमे भी तेकेस नदीके तटपर मौजूद थी। लेकिन, यह सब होते हुए भी चगताई मुसलमानोका द्वेषी नही था, यह इससे भी सिद्ध है, कि उसके बहुतसे राजविभागोके प्रमुख मुसलमान थे। सबसे शक्तिशाली और धनी व्यापारी कुतुबुद्दीन खवास-आमिद था। ख्वारेज्मशाह मुहम्मदकी एक कन्या कुतुबुद्दीनसे व्याही थी और दूसरी चगताईके हरममे थी।

चगताईने अपने जीवनमें ही ओगोताई कआनकी सम्मतिसे अपने पोते करा हुलाकूको अपना उत्तराधिकारी बनाया था। वह दिसम्बर १२४१ ई० मे मरा।

चगताई-वशमे निम्न खान हुये—

१	चगताई, छिङगिस्-पुत्र	१२२७-४२ ई०
२.	करा हुलाकू, मोतुगान-पुत्र	१२४२-४६ "
३	येस्सू मङ्गू, चगताई-पुत्र	१२४६-५१ "
	करा हुलाकू (पुन)	१२५१ "
४	ओरगाना खातून, कराहुलाकू-पत्नी	१२५१-५९ "
५	अलगू, अरिकबुगा, बेदार-पुत्र	१२५९-६५ "
६	मुबारकशाह करा हुलाकू-पुत्र	१२६६ "
७	बोराक इसुनदावा-पुत्र	१२६६-७१ "
८	निकपाई सरवान-पुत्र	१२७१-७४ "
९	तोका तेमूर कदमी-पुत्र	१२७४-८२ "
१०	दुवा, दावा, बोरा-पुत्र	१२८२-१३०७ "

११	कुजेक, कोन्चोग्, दुवा-पुत्र	१३०७-८ ई०
१२	तलिकू, खिजिर, कदमी-पुत्र	१३०८-९ "
१३	केबेक, दुवा-पुत्र	१३०९ "
१४	एसेन्बुका, ईसनबुका, दुवा-पुत्र	१३०९-१८ "
	केबेक (पुन)	१३१८-२६ "
१५	इल्चिकदई, इल्चिगिदई, दुवा-पुत्र	१३२६ "
१६	दुवा तेमूर, दुर्रा तेमूर, दुवा-पुत्र	१३२६ "
१७	तर्मा शेरिन, सजर, दुवा-पुत्र	१३२६-३४ "
१८	वजन, बोजन, दुवा-तेमूर-पुत्र	१३३४ "
१९	जेंड्किस खर्लाल, एबुगेन-पुत्र, दुवा-पौत्र	१३३४-३८ "
२०	येसुन तेमूर, एबुगेन-पुत्र	१३३८-४० "
२१	अली सुल्तान, ओगोताई-वंशज	१३४०-४२ "
२२	मुहम्मद पुलाद, कोन्चोग-पुत्र	
२३	काजान, गाजान, यसाउर-पुत्र	१३४६ "
२४	दानिशमन्द, ओगोताई-वंशज	१३४६-४८ "
२५	बायनकुली, सूरगू ओगलान-पुत्र	१३४८-५८ "
२६	तेमूरशाह	१३५८– "
२७	इलियास खोजा, तुगलक-तेमूर-पुत्र	–१३६३ "
२८	काबिलशाह	१३६३-६९ "

२ करा हुलाकू, मोतुगान-पुत्र (१२४२—४६ ई०)

छिड्गिस् जिस वक्त हिन्दूकुश-पर्वतमालाके अजेय दुर्ग बामियान पर आक्रमण कर रहा था, उसी समय उसका अत्यन्त प्रिय पौत्र मोतुगान मारा गया। शायद बापके मारे जानेपर छिड्गिस्का भारी शोक करना करा हुलाकूके लिये चगताईके प्रेम और उत्तराधिकार पानेका कारण हुआ। गद्दीपर बैठने समय करा हुलाकू छोटा था, इसलिये राजकाजका भार अभिभाविकाके रूपमें उसकी दादी एबुस्किनने अपने हाथमें लिया। अभिभाविकाने पहिला काम यह किया, कि हकीम मजीदुद्दीन और अपने पतिके हमशाय वजीर हेंजिरको हकीमने मिलकर चगताई खानको मरवानेके इल्जाममें मरवा डाला। उसने अपने बहनोई हबश अहमदको अपना वजीर बनाया। अभी अवस्था ठीक नहीं हुई थी, कि इसी समय ओगोताई कआन मर गया और कूयुकने जबर्दस्ती कआनपदको ले लिया। उसने अपने सभी विरोधियोंको उनके पदसे निकाल दिया, जिनमें एबुस्केन भी थी। कूयुकने ६४५ हि० (८ V १२४७—२८ III १२४८) में इस्सुनको चगताई-उलुसका खान नियुक्त किया, जिसके कारण केवल अलमालिकमें ही नहीं, सारे चगताई-उलुसमें गड़बड़ी फैल गई। मसूदबेगको भी भागकर बातूके पास शरण लेनी पड़ी। कआनका निर्वाचन १२४६ ई० तक नहीं हो सका था। कूरिल्ताई (महासभा) की बैठकमें ओगोताईके पुत्र कूयुक (गूयुक) को कआन चुना गया। कूयुक ईसाई-धर्मका पक्षपाती तथा चगताईकी तरह ही इस्लाम-विरोधी था। अब साम्राज्यमें ईसाइयोंका मान बहुत बढ़ गया था। गूयुक कआनने करा हुलाकूको हटाकर चगताई-पुत्र येस्सू-मुड्खे (येसू-मड्गू) को खान बनाया।

३ येस्सू मड्गू, येसू-मुड्-खे (१२४६-५१ ई०)

येसू-मुड्खे सदा शराबमें मस्त रहता था, राजकाजका काम उसकी रानी तुगाशी देखती थी। सामन्तमें उसे खवास हबश जैसा योग्य खवास-अमिदा (वजीर) मिला था। खवास हबशने जगताई खानके हकूम पुत्रके साथ अपने एक-मात्र पुत्रको लगा रक्खा था। येसू-मुड्खेके दरबारमें विद्वान् बहाउद्दीन मेर्गीनानी रहता था। उसका पिता फरगानाका शेखुल्-इस्लाम और मा कराखानी वंशजा थी। कूयुकके समय बातू भारी सेनाके साथ पश्चिममें दिग्विजयके लिये भेजा गया था। इसी समय हुलाकू-

को दक्षिणमे दिग्विजयके लिये भेजा गया । अभी यह दिग्विजय-सेना कयालिक नगरसे सात दिन पर अवस्थित (सप्तनदके दक्षिणके अलाताऊ पर्वतके पास) अलाकामकमे थी, कि गूयुक कआनके मरनेकी खबर मिली । अब तुलुइका ज्येष्ठ पुत्र तथा कुविलेईका वडा भाई मुङ-खे (मङ-गू) कआनकी गद्दीपर बैठा । ओगोताईके पौत्रोने इसका विरोध किया । वह समझते थे, कि गूयुकके वाद अव उनके उलुसका कआन होना चाहिये । इस विरोधमे येसू-मङ-गू भी ओगोताईके पौत्रोके साथ था । १२५१ ई० मे राजधानी कराकोरममें कूरिल्ताई बुलाई गई, जिसमे मुङ-खेके गद्दीपर बैठनेका वडा विरोध हुआ । मगोलोमे भीषण सघर्ष शुरू हो गया । सतहत्तर वडे-वडे सरदार मारे गये, और बहुतसे खानजादे दूर-दूर निर्वासित कर दिये गये, जहा कितनेही मर गये । चगताई-गद्दीसे वचित करा हुलाकूने मुङ-खेका पक्ष लिया । कआन अव भला येसू-मङगूका क्यो पक्ष लेने लगा ? करा हुलाकूने अपने भाई वुरीके साथ एक वडी सेना ले चढाई की । येसू-मङगू, तुगाशी खातून और वुरी आसानीसे पकड लिये गये । तुगाशी करा-हुलाकूको दे दी गई । येसू-मङगू और वुरी भागकर वातूके ओर्दूमे चले गये, जहापर वुरीको मृत्युदड दिया गया, और उसके वारह भाइयोके साथ येसू-मङगूको भी उसकी जन्मभूमिमे भेज दिया गया । येसूको फिर खानका स्थान मिलनेवाला था, किन्तु वह रास्ते हीमे मर गया । तुगाशी खातूनपर मुकदमा चलाकर उसे घोडेके नीचे रौंदवाकर मरवाया गया ।

करा हुलाकू (पुन १२४६ ई०)

करा हुलाकूके राज्य सभालनेपर हवश आमिद फिर वजीर हो गया । उसने वहाउद्दीनको जेल-में डाल दिया । वहाउद्दीन ने कवितामें वहुत स्तुति की, लेकिन सव वेफायदा । रानी एरगेनाने नमदेमे लपेट ठोकरें लगवाती उसकी हड्डी तुडवाई । करा हुलाकू अधिक दिन नही जी सका । उसके वाद उसकी रानी ओरगाना (एरगेना) ने गद्दी सभाली ।

४ एरगेना, ओरगाना, करा हुलाकूपत्नी

एरगेना मजुलता, सौंदर्य, और प्रतापमे अपने समयकी तीन अद्वितीय मगोल-राजकुमारी वहिनोमेंसे थी, जिनके वारेमें कहा जाता था, कि दुनिया का कोई चित्रकार उनके रूपको अपनी तूलिकासे चित्रित नही कर सका—तीनो वहनें चगताई, वा-तू और खुलाकू-वशी खानोकी रानिया थी ।

मुङखे कआनद्वारा पश्चिमके दिग्विजयार्थ भेजी गई सेनाओमेंसे कराकुरम और विशवालिगसे आनेवालियोको चगताई-भूमिमें मिलना था । वहासे कयालिक और ओतरारके बीच पहुचनेपर ओरदा (जूछि-पुत्र) के पुत्र खकिरिन (खूकिरान) को इस भारी सेनाका सचालक वनना था । लेकिन अव वातू और मुङखे कआनमे मतभेद हो गया था । मुङखेने इसी वातको साधु रुवरिकसे कहा था—"जैसे सूर्य अपनी किरणोको सर्वत्र फैलाता है, उसी तरह मेरी और वातूकी राज्यशक्ति भी देश-देशमे फैली हुई है ।" यह कहना इसी वातको सिद्ध करता है, कि अव कआनका वातूपर कोई दवाव नही था । कआन और वातूकी सीमा तलस (तरस) से थोडा पूरबमें मिलती थी ।

प्रधान-वजीर हवश हमीद (अमीद) और उसका पुत्र नासिरुद्दीन राजकाजमे ओरगानाकी सहायता करते थे । रानीकी योग्यतासे कोई इन्कार नही करता । इतिहासकार वस्साफके अनुसार ओरगाना स्वय वौद्ध थी । १२८४ ई० मे ओरगाना अलमालिकमें ही थी, इसी समय कआनका अनुज तथा रानीका बहनोई खुलाकू पश्चिमी एसियाके दिग्विजयके लिये आते हुए उससे मिला । वहासे खुलाकू की सेना सप्तनद और सिर-उपत्यका होते १२५५ ई० के वसतमे समरकन्द पहुची । इससे दो साल पहले (१२५३ ई० में) साधु रुवरिक सप्तनदसे गुजरा था । उसने अपने यात्रा-विवरणमे इस प्रदेशका अच्छा वर्णन किया है । लडाईके ध्वसके रूपमें उसने ढलितटपर मिट्टीकी दीवारोवाले अनेक खडहर देखे थे । उससे कुछ दूरपर एक प्रसिद्ध नगर इलानवालिक था, जहासे १२५५ ई० में अर्मनी राजा गयतोन गुजरा था । उसने लिखा है—पहाडसे निकलकर वहुतसी नदिया वलकाश झीलमें गिरती है । यहीपर कयालिक नामका वडा नगर था । जहा वहुतसे व्यापारी रहते थे । यहाकी मैदानी भूमिमे पहले वहुतसी वस्तिया थी, जिन्हे तारतारोने ध्वस्त कर दिया । सप्तनदके उत्तरी भागमे अव

मगोल बुमन्तू रहा करते थे। इतिहासकार जुवेनीके अनुसार मुङ्खे कआनने उज्कन्दको करलुकवशी अरसलनखानके पुत्रको प्रदान किया था।

हुलाकू (खुलाकू)ने ईरान पहुच वहासे चाङतेको किसी काममे इलि और चूके बीचकी भूमि (सप्तनद) द्वारा कआनके पास भेजा। यह चीनी यात्री १२५९ ई० मे सप्तनद होकर गया था। वह इस प्रदेशका नाम इ-तू (इ-हू) बतलाता है और कहता है, कि वहा बहुतसी जातियोकी बस्तिया है। उस समय इस प्रदेशमें बहुत वृक्ष थे।

ओरगानाने सप्तनद और अन्तर्वेदपर दस सालतक अच्छी तरह शासन किया।

कआनके मरनेपर फिर जो उथल-पुथल हुई, उससे चगताई-उलुसमे भी गडबडी मची। मुङ्खे-कआन ६५८ हि० (१८ XII १२५९—७ XI १२६० ई०) मे मरा। अब कआनके सिंहासनके लिये मुङ्खेके दो भाइयों कुबिले और अरिकबुगाका झगडा हुआ। अरिकबुगाने अलगूको और कुबिलेने बूरी-पुत्र अबिस्काको चगताई खान बनाया। अलगूकी शक्ति ज्यादा मजबूत थी। उसने ओरगानाको भगाकर अलमालिककी गद्दी सभाल ली।

५ अलगू, अरिकबगा, वेदार-पुत्र (१२५९–६५ ई०)

कुबिलेद्वारा निर्वाचित चगताई खान अबिस्काको रास्तेमे ही कुबिलेके प्रतिद्वद्वीने बदी बना लिया, लेकिन पीछे अलगूने इसका बदला कुबिलेके प्रहारके समय सहायता देनेसे साफ इन्कार करके लिया। यही नहीं, उसने अरिकबुगाके तीन कर उगाहनेवालोको पकडकर उनके पासके पैसोको छीनकर मरवा डाला, और इसके बाद वह खुल्लमखुल्ला कुबिलेका समर्थक बन गया।

तुर्किस्तान भाग अलगूके राज्यमे सम्मिलित था। उसके पास डेढ लाख सवार-सेना थी। ओरगानाने अरिकबुगाका पक्ष लेते उसके पास सदेश भेजा, इसपर अलगूने पाच हजार सैनिकोके साथ उचाचर और बिकी ओगलान तथा अमीरोंमेसे हबश अमीर-पुत्र सुलेमानको भी बितिकची और अबिस्काके साथ समरकन्द, बुखारा तथा अन्तर्वेदके दूसरे इलाकोंमें मीमानोकी रक्षाके लिये भेजा। अलगूको सुवर्ण-ओर्दूके खिलाफ ख्वारेज्ममे भी सफलता मिली।

इस विश्वासघातसे नाराज होकर अरिकबुगाने कुबिलेके सकटकी पर्वाह न कर अलगूपर चढाई कर दी। ऐसा अच्छा मौका पाकर कुबिलेने आक्रमण करके राजधानी कराकोरमको अरिकबुगासे छीन लिया। उधर अरिकबुगाने भी अलगूसे चगताईराजधानी अलमालिक ले ली। अलगू भागा, और काशगर, खोजन्द होते समरकन्द पहुचा। अरिकबुगाने ६६२ हि० (४ XI १२६३—२४ X १२६४ ई०) के जाडोंको अलमालिकमे बिताया। उसने अलगूके अनुयायियोके साथ बडा निष्ठुर वर्ताव किया, और पास-पडोसके इलाकोंको इतना उजाड दिया, कि भयकर अकालके मारे हजारो आदमी मर गये। अरिकबुगाके इस क्रूर बर्तावसे उसके अच्छे-अच्छे सेनापतियोने साथ छोड दिया। तब उसे होश आया और समझौतेके लिये तैयार हुआ। ओरगाना और मसूदबेग बातचीत करनेके लिये नियुक्त किये गये। अन्तमे चगताईका प्रदेश अलगूको दे देना पडा। खाली कोशको भरनेके लिये मसूदबेगने फिर प्रयत्न करना शुरू किया। अलगूका एक और भी दूसरा भयकर प्रतिद्वद्वी था ओगोताईका पौत्र कैदू (काइ-दू), जिसने शत्रुकी सहायतासे अन्तर्वेदके उत्तरी भाग—तुर्किस्तान प्रदेश—को हडपनेकी कोशिश की, लेकिन, अरिकबुगासे छुट्टी पाकर अलगूने उसे मार भगाया। ओरगाना अलगूकी प्रिया पत्नी थी, जिसकी मृत्युके थोडे ही समय बाद ६६४ हि० (१३ X १२६५—३ IX १२६६ ई०)में अलगू भी मर गया। अन्तिम समयमे अलगूको सदेह हो गया था, कि ओरगाना अन्तर्वेदके मुसलमानोका अधिक पक्षपात करती है, जिसके ही पापके कारण वह मरी।

अलगूका प्रतिद्वद्वी कैदू बहुत समयतक कुबिले खानका भी जबर्दस्त प्रतिद्वद्वी रहा। कुबिलेको कआनका महासिंहासन और सभी तरहके भौतिक साधन प्राप्त थे, किंतु कैदूको केवल अपने कौशल तथा वीरताके बलपर लडना था। उसने न कभी शराब पी और न कूमिस ही। पहले वह पहाडोंके भीतर छिपकर कआन और अलगूसे लडता रहा। फिर उसने बेरेक खान (सुवर्ण-ओर्दू) और अलगूके बीचमें

झगडा डलवा दिया। वेरेकने किसी ज्योतिषीसे सुना था, कि कैदू बहुत भारी आदमी होगा, इसलिये वह उसकी सहायताके लिये तैयार होगया। जू-छि उलुसकी मददसे कैदू काफी शक्तिशाली हो गया, और उसने अलगूकी एक वडी सेनाको हराकर नष्ट कर दिया। अलगूने दूसरी जबर्दस्त सेना भेजी, जिसने ओतरारके पास वेरेक खानको हराया—यह १२६५ ई० के अन्त या १२६६ ई० के आरम्भ की वात है। इन आरम्भिक लडाइयोके वाद अलगूको सफलता मिलने लगी और वह अपने सभी इलाकोको अपने हाथ में करनेमें सफल हुआ।

६ मुबारकशाह, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६ ई०)

इतिहासकार जमाल करशीके अनुसार ओरगाना-पुत्र मुवारकको १२६६ ई० मे आहनगर उपत्यकामें खान बनाया गया। चगताई खानोमें वह पहला मुसलमान था, यद्यपि अभी खानोका इस्लाम अधिकतर दिखावेके लिये था। सारी प्रजाके मुसलमान होनेके कारण ऐसा करनेमे लाभ था। मुबारकको वहुत कोमलप्रकृति और न्यायप्रिय कहा जाता है। कुविलेने उसको चगताई खान स्वीकार कर भी उसके सौतेले भाई वोराकको उसका उपराज वनाया, जिसमे कही मुवारककी शक्ति ज्यादा न वढ जाये। इस समय अव चगताई-राज्यके भीतर मुल्की,गैरमुल्की, मगोल-अ-मगोलका सवाल छिड गया था, जिसके उठानेमें वोराकका भी हाथ था। निम्न सिर-उपत्यका भी अव कैदूके हाथमें चली गई थी। कैदूके चालीस पुत्र अलग-अलग सेनाओके सेनापति थे। लूटप्रेमी, घुमन्तू मगोल और तुर्क वडी सख्या में कैदूके झडे के नीचे चले गये थे। कैदू अन्तर्वेद ही नही, कुविलेके राज्यको भी लेना चाहता था। कुविलेने उसके विरुद्ध अपने पक्षको मजवूत करनेके ख्यालसे वोराकको मुवारकका उपखान वनाकर अल्मालिक भेजा था, लेकिन वोराकने शुरूसे ही कैदूके साथ सहानुभूति दिखलानी शुरू की। दोनोने वुखारा और समरकन्दके हथियार वनानेवाले (वस्साफ) के अनुसार ६६१ हि० (१५ XI १२६२–६ X १२६३ ई०) में सोलह हजार कारीगरोको भेंडोकी तरह आपसमें बाट लिया। इनमेंसे पाच हजार बातूको, तीन हजार हुलाकूको और वाकी कआनको मिले। उज्गद और पूर्वी तुर्किस्तानमें भी वोराकको सफलता मिली। इन सफलताओके वाद अव मुवारकको गद्दीपर वनाये रखनेकी जरूरत नही थी, इसलिये सितम्वर १२६६ ई० मे उसे वन्दीखानेमें डाल दिया गया, और सौतेले भाई वोराकने सीधे गद्दी सभाल ली।

७ बोराक, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६-७१ ई०)

कैदू कुविलेके विरुद्ध सफल नही हो रहा था, जूछि-उलुस भी प्रवल था, इसलिये वह चगताई-राज्य से ही कुछ छीन सकता था, इसीलिये वोराक और कैदूमें पूर्वी सिर-उपत्यका और सप्तनदके लिये झगडा हो गया। १२६८ ई० में जूछि-उलुसके खान मङ्गू-तेंमूरकी सहायतासे कैदूने सिर-उपत्यकाको अपने हाथमें कर लिया। लेकिन उसके कुछ ही समय वाद कैदू और मङ्गू तेमूरमें लडाई हो गई। इस अवसरसे फायदा उठाते हुए वोराक भी कैदूके ऊपर चढ दौडा,। दोनोमें सेहून (सिर-दरिया) के तटपर लडाई हुई। कैदू और किपचक-सेनाकी हार हुई। वहुतसे लोग मारे गये या वन्दी वने, भारी सम्पत्ति लूटमे मिली। यह खबर सुनकर मङ्गू-तेमूरने अपने चचा वेरकेचरको पाच तुमान (पचास हजार) सेना देकर भेजा। उसने वोराकको वुरी तरह हराया। वह समरकन्दकी ओर भी वढना चाहता था, लेकिन कैदूने उसे मना कर दिया।

इस युद्धमे हारकर वोराक अन्तर्वेदकी ओर भागा। उसकी सेना विना लूटका माल पाये ही लौट रही थी, इसलिये उसे सतुष्ट करना आवश्यक था। वोराकने इसके लिये वुखारा और समरकन्दके लोगोको केवल शरीर ले नगरसे वाहर निकल जानेका हुकुम दिया, जिसमें कि सेना नगरको लूटकर अपना मनोरथ पूरा कर सके। लोगोके वहुत रो-धोकर विनती करने, भारी कर देने तथा हथियार वनानेवाले सिकलीगरोके रात-दिन हथियार वनानेके लिये वचन देने पर वोराकने अपने इरादेको छोड दिया। वडे जोरसे तैयारी होने लगी और वोराक जल्दी ही फिर लडनेके लिये तैयार हो गया।

कैदू केवल योग्य सैनिक ही नही, वल्कि एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। वह अरिकवुगाकी गलतीको दुहरा नही सकता था। वह जानता था कि मेरा सवसे जवर्दस्त शत्रु कुविले खान है,

इसलिये उसने शान्तिसे काम लेना चाहा और मेल करानेके लिये बोराकके लगोटियायार किपचक ओग-लानको उसके पास भेजा। बोरकने अपने मित्रका खूब स्वागत किया। दोनोने एक दूसरेको प्याला दिया, सलाह हुई, कि जूछि, चगताई और कैदूके उलुसोके बीच मित्रता स्थापित करनेके लिये एक कूरिल्ताई (महापरिषद्) बुलाई जाय।

६६७ हि० (१० IX १२६८–१ VIII १२६९ ई०) के वसत (मार्च-अप्रैल १२६९ ई० में) तलस और केंजककी मैदानी भूमिमे कूरिल्ताई एकत्रित हुई। कैदू और बोराक दोनो अपने-अपने रक्त तथा सुवर्णसे मिश्रित मदिराको एक साथ शान्तिचषकमें पीकर एक-दूसरेके अदा (परम मित्र) बने। कूरिल्ताईमें कैदूने कहा था—"हमारे महान् पितामह (छिङ-गिस्) ने दुनियासे युद्ध किया तलवार और बाणके बलपर विशाल राज्य स्थापित किया। जब हम अपने पुरखाकी ओर देखते हैं, तो हम सब भाई भाई हैं। लेकिन हममें कुछ भी मेल नही।" इसके जवाबमें बोराकने कहा—"बात ठीक है। मैं भी उसी वृक्षका फल हू। मेरे पास भी थोडा-बहुत यूर्त (ओर्दू) है। चगताई और ओगोताई (कैदूका पिता-मह) छिङ-गिस् खानके ही पुत्र थे। ओगोताई कम्रानसे कैदू, चगताईसे मैं, जेठे भाई जूछिसे बेरकेचर और मङ्गू-तेमूर और कनिष्ट भाई तू-लुईसे हुलाकू और कुबिले हैं।

"हमारे समयमें पश्चिमातका स्वामी मङ्गू-तेमूर खताई-माचीनका राजा कुबिले खान है, जिसके राज्यकी लम्बाई-चौडाईको भगवान् ही जानता है। पश्चिमानमें आमूसे सिरिया और मिस्रतक पिता-द्वाराअर्जित राज्यका खान अबका है। दोनोके बीचमें हमारा राज्य, तुर्किस्तान और किपचक है। मुझे अपना कसूर नही मालूम होता।' इसपर कैदू और बोराक दोनोने कहा—"सत्य तुम्हारी ओर है। अब यही निर्णय है, कि आजके बाद हम एक दूसरेके विरोधी नही बनेंगे।"

इस प्रकार गरमागरम भाषण करते और भावुकता दिखलाते हुए मगोल-राजवशियोने आपसमे मेल किया। उनके लाखो घोडो और पशुओके लिये चरागाहोकी अवश्यकता थी, जो गर्मीकी अलग और जाडेकी अलग होती थी। गर्मीके दिनोमे ओर्दू ऊची ठडी जगहोमें जाकर अपने तम्बू लगाता और जाडेके दिनोमें ऐसी जगहपर, जहा हवा और सर्दी कम होती तथा कुछ घास-चारा भी मिल सकता था। कूरिल्ताईने याइलक (गरम चरागाह) और किशलक (सर्द चरागाह) निश्चित कर दिये गये। कैदूके ओर्दूको मप्तनदमें स्थान दिया गया। मुस्लिम इतिहासकार कैदूकी न्यायप्रियताके बडे प्रश-सक हैं—कैदूने सफल युद्ध करके अपने राज्यमें व्यवस्था कायम की थी।

कूरिल्ताईके फैसलेका प्रभाव ज्यादा दिन नही रहा। जब आर्थिक स्वार्थ एक-दूसरेके विरोधी हो, तो स्थायी मेल कैसे हो सकता है? बोराकको इस बटवारेके कारण अन्तर्वेदका एक-तिहाई हिस्सा—खोजदसे समरकन्दके पासतककी भूमि—कैदूको देना पडा। बोराक इस क्षतिको पूर्ण करनेके लिये आमूके दक्षिण (हुलाकूके राज्य) खुरासानपर चढा। लूट-पाटके मारे किसान भागने लगे। गावोके उजड जाने पर मार्गो अनालका सामना करना पडता, इसलिये दोनो खानोने वजीर मसऊदबेगको भेजकर किसानो को सान्त्वना देनेका प्रयत्न किया। वस्तुतः इसवक्त बडी बुरी अवस्थामे था। बोराक अबका खान (ईरान) पर चढ दौडनेके लिये उतावला हो रहा था। मसऊदने ऐसा न करनेकी सलाह दी, तो गुस्सेमे आकर बोराकने उसे सात कोडे लगवाये, जिसके लिये पीछे उसे खेद हुआ। तो भी उसने अपना सकल्प नही छोडा। रुपये-पैसे का हिसाब करनेके बहाने मसऊदबेग अबका (इलखान) के पास गया, लेकिन उसका असली उद्देश्य था इलखानकी सैनिक स्थितिका पता लगाना। इलखानको पता लग गया। बडी मुश्किलसे मसऊदबेग जान बचाकर भाग सका। इस तरह असफल होनेपर चगताई खानने ईरानमें रहते चगताई-राजकुमार निकूदरको फोडनेके लिये एक गुप्तचर भेजा। अतमे अपने पुत्र बेग-तेमूरको एक तुमान सेना के साथ राजरक्षाके लिये भेजा। कैदूने भी कितने ही राजकुमारोको सेना देकर बोराककी सहायताके लिये भेजा, जिनमें मोतूगन-पौत्र बुरी-पुत्र अहमद, चगताई-पौत्र सरबान-पुत्र निकबेई ओगुल, और ओगोताई-पौत्र कैदू-पुत्र चानिगू (यान्गू) थे। सभी लोग वक्षु (आमू दरिया) पार होनेके लिये तेरमिजकी ओर रवाना हुए। दूसरी सेना गू-युक कम्रान-पौत्र, हकुरखान-पुत्र चुबाद, तथा कैदू-पुत्र किपचकके साथ शौवामें वक्षु नदी पार होनेके लिये भेजी गई। एक और भी सेना मद्दकिशलकसे होते कोकाजू

कुचुकके नेतृत्वमे रवाना हुई। अपने पुत्र बेक तेमूरको दस हजार सेना दे बोराक अन्तर्वेदमें छोड नावोके पुलसे वक्षु पार हुआ। उसका कैम्प मेर्वमे पडा, जहासे उसने अपने सैनिकोको कुबिले कआनके भतीजे खुलाकू-पुत्र अबकाके सारे देशको लूटकर बरबाद करनेका हुकुम दिया। उस समय खुरासान का राज्यपाल अबका-पुत्र अरगून था। बोराककी सेना खुरासानमें दाखिल हुई और उसने बदख्शा, कीसिम, शापूरगान, तालिकान, मेर्व-शायान, तथा नेशापोर (२८ अप्रैल १२६९ ई०) तकके प्रदेशको लूटा और उजाडा। थोडेसे प्रतिरोधके बाद सारे खुरासानपर बोराकका अधिकार हो गया। उसका मुकाबिला करनेके लिये अबका आजुरबाइजानसे चला। हेरातके पास दोनो सेनाओमें लडाई हुई, जिसमें बोराकको हार खानी पडी। अबकाने पराजित सेनाका पीछा किया। शायद सारी चगताई सेना नष्ट हो जाती, लेकिन सेनापति जलेरताईने बडे कौशलसे उसे नष्ट नही होने दिया। अबकाने अन्तर्वेदके बहुत से इलाकोको लूटा। उस वक्त मगोलोके सामने मुसलमान चापलूसी करते कहातक गिर गये थे, इसका उदाहरण यह घटना है—अबकाने खाते समय एक बार अपने वजीर शम्शुद्दीनकी ओर चाकूके नाकपर सूअरका मास रखकर बढाया। वजीरने जमीन चूमकर इस अत्यन्त हराम भोजनको खा लिया। इसपर खानने अपना प्याला उठाकर उसकी तरफ किया। उसके न लेनेपर अबकाने कहा—"इसने प्याला लेनेसे इन्कार करके मुझे नाराज नही किया, लेकिन यदि इसने मासको लेनेसे इन्कार किया होता, तो मैं उसी चाकूसे इसकी आखे निकाल लेता।"

जिस समय बोराकने खुरासानपर सफल आक्रमण किया, यदि उसी समय उसके मित्रोमें फूट न हो गई होती, तो शायद अबकाको इतनी आसानीसे सफलता न मिलती। बोराकका अदा (परम मित्र) किपचक ओगलान चगताई सेनापति जलेरताईके किसी बर्तावसे असतुष्ट हो साथ छोडकर चला गया। बोराकने उसे दड देनेका वचन दिया भी, किंतु किपचक ओगलान नही रुका। गू-युक कआनके पुत्र जबात ने भी इसी समय साथ छोड दिया। अबकाने एक और चाल चली। उसने बोराकके तीन दूतोको पकड सासत देकर उनसे यह स्वीकार करवाया, कि हम अपने खानकी ओरसे गुप्तचरका काम करने आये है। वह मृत्युकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे, कि इसी समय धूलिधूसरित धावनने आकर खबर दी—"मेरे स्वामी! दरबन्द (कास्पियन) की ओरसे शत्रुओ (किपचको) ने भारी सख्यामें आकर देशपर धावा बोल दिया है, पश्चिमी प्रदेश तलवार और आगसे ध्वस्त किये जा रहे है।" अबका यह खबर सुनकर आजुरबाइजानकी ओर चला गया और बोराकके दूतोको भागनेका मौका मिल गया। बोराक विजयने कुछ निश्चितसा हो गया, किंतु, फिर अचानक लौटकर अबकाने हेरातके पास बोराकको जबर्दस्त हार दी। बोराक इस लडाईमे घायल हुआ। अपनेको खतरेमें डालकर सेनापति मेरगुल और जलेरताईने बोराकको निकालकर वक्षुपार न कराया होता, तो बोराककी जान न बचती।

इस भीषण पराजय और मित्रोके विश्वासघातके बाद बोराक ६६९ हि० के वसत (मार्च-(अप्रैल १२७१ ई०) में मर गया।

८ निगपई, सरवान-पुत्र (१२७१–७४ ई०)

नये खानके शासनकालमें भी चगताई और ओगोताई उलुसोका झगडा जारी रहा। कैदूने निगपईको खान बनाया, इसपर बोराक और अलगूके पुत्रोने विद्रोहकर दिया। इस सघर्षमें जरफ्शा-उपत्यका के सारे नगर नष्ट हो गये। निगपई पीछे कैदूके विरुद्ध हो गया और उसके साथ लडते हुए १२७४ ई० में मारा गया।

९. तोका तेमूर, कदमी-पुत्र (१२७४–८२ ई०)

निकपाई और तोका तेमूरका नाम कितनी ही वंशावलियोमें नही मिलता, जिसका कारण यही हो सकता है, कि उनका शासन गृह-युद्धोंके समयका था, जिसमें एकसे अधिक राजकुमार तख्तके दावेदार थे।

१०. दुवा, तुवा, दावा, बोराक-पुत्र (१२८२–१३०७ ई०)

चगताइयोमें दुवा बहुत शक्तिशाली खान, और कैदूका पक्का साथी था। उसके लिये इसने कैदूसे खानोसे बहुतसी लडाइया लडी। प्रसिद्ध इतिहासकार शम्शुद्दीन जुवैनी इसका वजीर था। अबका

की सेना लूट-पाट करते ६७१ हि० (२९ VII १२७२–१९ VI १२७३ ई०) में बुखारा पहुच महान् नगरको लूट वहाके नागरिकोमेंसे पचास हजारको बन्दी बना जब लौट रही थी, तो सेनापति चापरने आक्रमण करके उनमेंसे कितने ही वन्दियोंको छुडा लिया। तीन साल बाद फिर अवकाने आकर देशको बरबाद किया, जिसका सुधार दुवाके शासनकालमें ममऊदवेगके योग्य प्रबन्धके कारण हो पाया। श्वेत-ओर्दूके वायन खानसे भी दुवाका विशेष झगडा था, क्योंकि वह कैदू और दुवाके विरोधियोका पक्षपाती था। १३वी सदीके प्रथम वर्षमे इन दोनो दलोने अठारह लडाइया लडी। वायनके पीठपर तेमूर कआन था, सुवर्ण-ओर्दू और इलखान (ईरान) भी वायनके दलमें सम्मिलित थे—दुवाके विरुद्ध उत्तर-पश्चिममें तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू) और वायन (श्वेत-ओर्दू) की सेनायें थी, दक्षिण-पश्चिममें गाजनखान (ईरान) और दक्षिण-पूर्वमें बदख्शाका शासक भी चीन-सम्राट् (कुबिले) के पक्षपाती थे। इतने जबर्दस्त शत्रुओंसे घिरे रहते भी देशकी समृद्धि और राज्यकी शक्तिको बनाये रखना दुवा की योग्यताका परिचायक था।

कैदूके चालीस पुत्र थे, यह हम कह आये है। उसने छिड्-गिस् खानकी तरह अपने राज्यको अपने ४० लडकोमें बाट दिया था—बडेको चीन सीमान्तपर, वेंकेचेरको जूछि सीमातपर सरवानको अफगानिस्तानमे सर्वज्येष्ठ पुत्र चापरको सबसे अधिक सघर्षके स्थान सप्तनदमें रक्खा था। कैदूकी-पुत्री खुतुलुन चागा भी बडी ही वीर तरुणी थी। अपने पिताके अभियानोमे भाग लेनेके कारण उसने व्याह नही करना चाहा। कैदू उसे बेटी नही, बेटेकी तरह प्यार करता था। उसने उसे स्वयवर चुननेके लिये कहा। जब कोई वर नही मिला, तो गाजन खान (ईरान) को देना चाहा, लेकिन खुतुलुन चागाने यह पसन्द नही किया और अपने पिताके बडे दरबारी एक चीनीको अपना हाथ दिया। कैदू करशीके अनुसार १३०१ ई०में (दूसरोंके अनुसार १३०३ ई० के वसतमें) लडाईमे मरा। उसका मृत शरीर चू और इलि नदियोंके बीचके ऊचे पहाड सिवालिकमें दफनाया गया।

कैदूके मरनेके बाद अब दुवा सबसे प्रभावशाली खान था। उसने १३०३ ई० के वसतमें चापर को कैदूका उत्तराधिकारी बनाया, जिससे कैदू-पुत्रोमें झगडा उठ खडा हुआ। बाहर भी शत्रुओंका भय था ही। तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू खान) ने वायनके शत्रु कुइलुकको समर्पण करनेकी माग की। इन्कार करनेपर उसने दो तुमान सेना दे वायनकी पीठ ठोकी। फर्वरी १३०३ ई० के आरम्भमें वायनका दूत दुवा और चापरके साथ मिलकर लडाई करनेकी बात तै करने बगदाद गया।

दुवा एक कुशल सैनिक ही नही था, बल्कि कैदूकी तरह एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। यद्यपि शक्ति छिन्न-भिन्न करनेवाले विरोधी तत्त्वोंसे उसे लडना पड रहा था, लेकिन वह समझ रहा था, कि यदि लडाई इसी तरह चलती रही, तो कुछ ही समयमें अन्तर्वेद, सप्तनद, किपचक और ईरान-इराक से छिड्गिस-वशका नाम मिट जायेगा। इसीलिये वह सोच रहा था, कि कआनकी अधीनतामें सभी उलुगोंका एक सघ बनना चाहिये। उसने इसके लिये एक योजना बनाई—(१) सभी आपसमें शातिसे रहते कआन (चीनके मगोल सम्राट्) को अपना प्रभु मानें, (२) सभी देशोमें व्यापारकी स्वतन्त्रता हो। उसने इस योजनाको सबसे पहले कआन तोगनोगूके पास भेजा, जिसने उसे बहुत पसन्द किया। इसके बाद अगस्त १३०४ ई० मे चापर और दुवाके दूत योजनाको लेकर ईरान गये। वहा तथा पीछे जूछिके दरबारमें भी इस योजनाका स्वागत नहीं हुआ, शायद उन्होंने इसे दुवाकी एक चाल समझा।

चगताई राजकुमार अपने यूर्तोंको लेकर चरागाहोंमें घूमा ही करते थे, जहा किसी छोटीसी बातोंको भी लेकर झगडा हो पडना स्वाभाविक था। १३०५ ई०में अन्तर्वेदमें चापरका कुछ चगताई राजकुमारोंसे मार-झगडा हो गया। उसके लिये तरुणोंके लडकपनपर अफसोस प्रकट करते लोग समझौता करानेके लिये ताशकन्दमें जमा हुये। ओगोताईके राजकुमार जोचोकबालिकमें चापरके भाई शाहके पुत्रपर टूट पडे। उस समय दुवाका सेनापति दक्षिण-सप्तनदके अरपा-उपत्यकामे हेमत-वास कर रहा था। शाह अपने सात हजार आदमियोंके साथ भागकर अपने भाई वेकेचरके पास पहुचा। विरोधी राजकुमारोंने समर-कन्दके पासवाले नगरोंको लूटा। चापरको यह खबर कआनकी सेनासे लडते [illegible] के पास मिली। वहासे हार खाकर वह तीन सवारोंके साथ भागकर दुवाके पास गया।

रशीदुद्दीनके अनुसार दुवा १३०६ ई० मे मरा और वस्साफके अनुसार १३०७ ई० मे ।

११. कुज़ेक, कुचोक, दुवा-पुत्र (१३०७-८ ई०)

दुवाके मरनेपर वरकुलसे बुलाकर कुजेकको अलमालिकके पास सेवकुन स्थानमे गद्दीपर बिठाया गया । यह युलदुजमे मरा । इसके समयमे भी गृह-युद्ध जारी रहा, और बुरीवाशीके पास तथा सिर-उपत्यकाके पूर्वी भागोमे कई लडाइया हुईं । अपने प्रतिद्वद्वी ओगोताई राजकुमार कुरसेवेंसे लडकर भागते समय कुजेक मारा गया ।

१२ तलिकू, तलिक, खिजिर, कदमी-पुत्र (१३०८-१० ई०)

बुरीको १२५१ ई० में कतल किया गया था, यह हम बतला चुके हैं । उसीका पुत्र तलिकू अब गद्दीपर बैठा । इस समय जल्दी-जल्दी खानोका वदलना यही बतला रहा था, कि अब सत्ता दरवारियो-के हाथमे थी और खान उनके खेलके मुहरे थे । मुस्लिम दरवारियो और प्रजाको प्रसन्न करनेके लिये तलिकूने खिजिरके नामसे अपनेको मुसलमान घोषित किया, जिससे मगोल राजकुमार नाराज हो गये—अबतक मगोलोने बौद्ध धर्मको जातीय धर्मके तौरपर स्वीकार कर लिया था, इसलिये वह नही पसन्द कर सकते थे, कि उनका खान मुसलमान वन जाये । इसी भावनासे प्रेरित हो तीन सौ सवारोके साथ दुवा-पुत्र केवैकने रातको भोजके समय खेमेमे घुसकर खानको मार डाला । वस्साफके अनुसार तलिकू ७०८ हि० (२१ VI १३०८—१२ V १३०९ ई०) मे गद्दीपर वैठा, दूसरे इतिहासकारोके अनुसार ७०९ हि० (११ VI १३०९—२ V १३१० ई०) में गद्दीपर बैठा, तथा ७१० हि० (३१ V १३१०—२१ IV १३११ ई०) मे उसकी मृत्यु हुई ।

१३ केबेक, दुवा-पुत्र (१३१० ई०)

केवेक बहादुर और स्पष्टवादी खान था । चापरने पिताकी शत्रुताको उसके पुत्र केबेकतक कायम रक्खा, लेकिन उसे हार खानी पडी । अब चगताई-उलुस अस्त-व्यस्त हो चुका था । चापरने त्युकमे, बइ-केचर और उरुस-पुत्रोके साथ मिलकर केवेकके ऊपर चढाई की, लेकिन उसे इलि नदीके पश्चिममे परा-जित होना पडा । फिर इलिके रास्ते जाकर उसने त्युकमेको हराकर उसके युर्तको छिन्न-भिन्न कर दिया । त्युकमेने पूरवमें भागकर कआनके पास चीनमें जाना चाहा । भागते समय त्युकमेकी भिडत केबेककी सेनासे हो गई, जिसमें वह मारा गया । राजकुमारोके इस घरेलू सघर्षोंके कारण कृषि और व्यापारको भारी क्षति हुई । केवेकने इस सघर्षको वन्द करनेके लिये ७०९ हि० (११ VI १३०९—२ V १३१० ई०) में कूरिल्ताई बुलाई और उसके इस निर्णयको स्वीकार किया, कि गद्दी उसके भाई एसेनबुकाको दी जाय, और वह कआनके अधीन रहे ।

१४. एसेनबुगा, ईसनबुका, दुवा-पुत्र (१३१०-१८ ई०)

कैदूका विशाल राज्य अब छिन्न-भिन्न हो गया था, और उसका अधिकाश चगताई-उलुसके हाथमें चला आया था । कैदूके पुत्रोमेंसे शाहके पास कुछ इलाके रह गये थे । एसेनबुगाने राज्यके भीतर और वाहर शान्ति स्थापित करनेका प्रयत्न किया । इसके लिये उसने १३१२ ई० में उज्वेक खान (सुवर्ण-ओर्दू) के साथ मित्रता स्थापित की, जो १३१५ ई० तक रही, जवकि चगताई और जूछि दोनो उलुसोने अपने शत्रु उलजैतू (ईरान) पर आक्रमण किया । चगताई सेनाने इलखानी सेनाको हराकर हेरात तक उसका पीछा किया । चार महीनेतक यह प्रदेश चगताइयोके हाथमे रहा और उनकी सेनाने वहा बहुत अत्याचार किये ।

कआन बयन्तुका ओर्दू जाडोमें कोवुक-तटपर और गर्मियोमे एसुन मोरान (इर्तिश-शाखा) पर रहता था । ऐसे ही समय एसुन मोरानके पास उसका चगताई उलुससे झगडा हो पडा । कआनकी दूसरी सेना उस समय चालीस दिनके रास्ते पर थी । तोकाजीके नेतृत्वमे कआनकी सेनाने एसेनवुगाके हेमत-वास (इस्सिकुलके समीप) और ग्रीष्मवास (तलसके समीप) को लूटा-पाटा । इस समय (१३१२ ई०) एसेनवुगाकी उज्वेक खानके साथ मित्रता थी । जव कआनकी सेनाके आक्रमणकी वात एसेनवुगाको मिली, तो वह खुरासान छोडकर उत्तरकी ओर लौटा । लेकिन इलखान उल्जैतू खुदावन्दा

एसेनके अत्याचारोंको कैसे भूल सकता था? एसेनबुगासे नाराज उसका मुसलमान हुआ भाई यसाउर उस समय ईरानमें रहता था। उल्जैतूने उसे सेना देकर ७१६ हि० (२३ III १३१६—१४ II १३१७ई०) में वक्षुपार भेजा। एसेनबुगाकी भारी हार हुई और वह अन्तर्वेद छोड़कर भाग गया। उल्जैतूकी सेना-ने देशमें लूट-मार मचाई, और उसने बुखारा, समरकन्द और तेरमिजके निवासियोंको बीच जाड़ेमें जबर्दस्ती दूसरे स्थानोंमें भेज दिया, जिसके कारण उनमेंसे हजारों मर गये।

एसेनबुगा १३१८ ई० में मरा। प्रसिद्ध पर्यटक इब्न-बतूताके अनुसार वह शमानी (बौद्ध) धर्मको मानता था, यद्यपि मुसलमानोंके साथ उसका बर्ताव अच्छा था।

केबेक पुन. (१३१८—२६ ई०)

केबेकने इसलिये गद्दी छोड़ी थी, कि चगताई-उलुसके आपसी झगड़े मिट जायें और राजशक्ति मजबूत हो, लेकिन एसेनबुगाके अत्याचारोंने अवस्था और शोचनीय बना दी। केबेक फिर गद्दीपर बैठा, लेकिन वह एकता स्थापित करनेमें सफल नहीं हुआ। चगताई-उलुस अब दो भागोंमें बट गया। अन्तर्वेदमें मुसलमान (तुर्क) अमीरोंका प्रभाव अधिक था और पूर्वी भागमें मगोल अमीरोंका। पूर्वी भाग—सप्तनद और पूर्वी तुर्किस्तान—मुगोलिस्तान के नामसे इसी समय अलग होने लगे, जिसका प्रथम खान एसेनबुगा-पुत्र तुगलुक तेमूर हुआ। केबेकद्वारा गद्दीसे वंचित होनेका बदला एसेनबुगाके पुत्रने इस बटवारे द्वारा लिया। अब भी केबेकके शासनमें अफगानिस्तान, अन्तर्वेद और सप्तनदका बहुतसा भाग था। केबेकने अपनी राजधानी नखशेबमें रखी, और वहांसे ढाई फरसख* पर अपने लिये एक करशी (महल) बनवाया, जिसके ही कारण पीछे नकशेबका नाम करशी पड़ गया। इब्न-बतूताके अनुसार केबेकको उसके भाई तरमाशेरिन (धर्म-छे-रिङ) ने मार डाला।

१५ इलिकदई, इलचीगिदई, दुवा-पुत्र (१३२६ ई०)

केबेकके बादके खान जल्दी-जल्दी बदलते रहे या वजीरोंके हाथकी गुड़िया बने रहे। इसी समय कैथलिक मिशनरियोंने ईसाई-धर्मके प्रचारमें बड़ी सरगरमी दिखलाई।

१६ तुवा-तेमूर, दुवा-तेमूर, दुरी तेमूर, दुवा-पुत्र (१३२६ ई०)

खान बननेसे पहले यह एक पूर्वी जिलेका ठाकुर था। वहीं रहते १३१५ ई० में इसके पास चीन-से सहायता आई थी। गद्दीपर यह कुछ ही महीनों रह पाया, क्योंकि इसके भाईका हत्यारा तरमाशेरिन राज्यपर घात लगाये हुए था।

१७ तरमागेरिन, धर्म-छे-रिङ, दुवा-पुत्र (१३२६—३४ ई०)

धर्म-छे-रिङ संस्कृत धर्म और तिब्बती छेरिङ (दीर्घायु) दो शब्दोंसे मिलकर बना है। इसका नाम ही बतलाता है, कि चगताई-वंशपर बौद्ध-धर्मका कितना प्रभाव था, लेकिन तरमाशेरिनने अपनेको कट्टर मुसलमान सिद्ध करनेकी कोशिश की। राजवंशका डूबता सितारा मुसलमान बनकर अवलम्ब ढूंढ रहा था। तरमाशेरिन १३२६ ई० के अन्तमें गद्दीपर बैठा और खान बनते देर नहीं लगी, कि उसने मुसलमान बन अलाउद्दीन नाम धारणकर धार्मिक कर्तव्यपालन करनेके लिये अफगानिस्तान और पंजाब तक जहाद (धर्मयुद्ध) शुरू कर दिया, लेकिन इसी समय अलमालिक और राज्यका पूर्वी भाग हाथसे निकलकर मुगोलिस्तानके खानके हाथमें चला गया। मुगल-राजकुमारोंका प्रभाव अब खतम हो चुका था। इस्लाम तुर्क मुसलमान अमीर सर्वेसर्वा थे। यह मगोलोंकी संस्कृतिपर इस्लामकी विजय थी। लेकिन यहां केवल इस्लाम और गैर-इस्लाम धर्मका ही झगड़ा नहीं था, बल्कि युद्धजीवी घुमन्तू और कृषि-व्यापार-जीवी स्थायी निवासियोंका भी द्वंद्व चल रहा था। युद्धजीवी घुमन्तुओंमें मगोल ही नहीं बल्कि भारी संख्यामें तुर्क भी शामिल थे।

तरमाशेरिनने ७२५ हि० (१८XII १३२४—८XI १३२५ ई०) में भारतपर आक्रमण किया था, लेकिन नये [illegible] गजनीमें जबर्दस्त हार खाकर वक्षुपार भागना पड़ा। इब्न-

* १ फरसख—६ [illegible]=१२ ली=३ मीलके करीब।

वतूता दो महीनेतक बुखारामे तरमाशेरिनका मेहमान रहा। वह इसे बडा ही पक्का मुसलमान कहता है। अपने समसामयिक दिल्लीके सुल्तान मुहम्मद तुगलकके साथ इसका बहुत अच्छा सबध था और तुगलककी इस्लाम-भक्तिका वह अनुकरण भी करना चाहता था। इब्न-वतूताने लिखा है—एक वार किसी धार्मिक भूलके लिये मुल्लाने तरमाको लोगोके सामने फटकारा। खानने उसे बुरा न मान आसू वहाते हुए तोवा किया। इब्न-वतूताके अनुसार उसने अपने सिंहासन और प्राण इस्लामके लिये न्योछावर कर दिये थे।

इस्लामकी इतनी अधभक्ति देखकर मगोल-राजकुमार चुप रहनेके लिये तैयार नही थे, आखिर उन्हें भी धर्म-भक्ति करनेके लिये तिब्वतसे बौद्ध-धर्म मिल चुका था। १३३४ ई० में दुवा तेमूरके पुत्र बूजनके नेतृत्वमे विद्रोह हुआ—इब्न-वतूताके अनुसार बूजन मुसलमान था, जो सदिग्ध है। तरमा हारकर भारतकी ओर भागा जा रहा था। बलखके राज्यपाल तथा केवेकके पुत्र यङगीने उसे पकडकर बूजनके पास भेज दिया, जिसने उसे समरकन्दके पास कतल करवा दिया।

१८ बूजन, बोजन्द, दुवा तेमूर-पुत्र (१३३४ ई०)

अपना-अपना मतलव सिद्ध करनेके लिये दरवारमे अव इस्लामी और इस्लामविरोधी दो दल हो गये थे। बूजन इस्लामविरोधी दलका अगुवा था—इन्हें मगोल और गैर-मगोल दल कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। बूजन ईसाइयो और यहूदियोका अधिक पक्ष करता था—बौद्धोका उसके राज्यमें अभाव-सा था। इसके अल्पकालीन शासन मे ईसाइयो और यहूदियोके मन्दिर अधिक वने, प्रचार भी वढा। इससे पहले १३२९ ई० में ही दोमनिकन साधु थामस मन्तजोला अन्तर्वेदमे कैथलिक धर्मका प्रचार करने आया था। मगोल-शासक मुस्लिम धर्मांधतासे भय खाते चाहते थे, कि उनकी प्रजापर मुल्लोका एकाधिपत्य न रहे, इसीलिये वह बौद्ध-धर्मके साथ-साथ ईसाई धर्मको भी प्रोत्साहन देते थे। बूजन अपने प्रतिद्वद्वी वहुतसे अमीरो और राजकुमारोको जरा-जरासे सदेहपर वहुत क्रूर दड देता था। इसके कठोर शासनसे लोग तिलमिलाकर विद्रोह कर वैठे, जिसमें प्रसिद्ध ताजिक नेता हुसेन कर्तने प्रमुख भाग लिया। अरपाखानसे खुरासानको छीननेके लिये बूजन जब बुखारामे था, उसी समय अन्दखोई और शापूरगान (सिवोरगान) के तुर्क कवीलोने अरलत और एवरदीको लूटा। तुर्कोंने अपने सजातीय तथा अत्यन्त प्रभावशाली अमीर कजगनसे सहायता ली। हेरातके शासक मलिक हुसेन तथा वजीर अलाउलमुल्क खुदावन्दजादा (तेरमिज)ने भी उनकी सहायता की। लडाईमें बूजन पकडा गया और उसे उसके शत्रुओके हाथमे दे दिया गया। इब्न-वतूताके अनुसार यसाउर-पुत्र खलीलने बूजनको मार डाला और १३३४ ई० में ही जेंकिश (चेगिज) ने उसका स्थान लिया।

१९ जेंकिश (जिकशी), खलील, दुवा-पौत्र, एबुगेन-पुत्र (१३३४–३८ ई०)

यह भी इस्लामी पार्टीका नही वल्कि मुर्सैबीके अनुसार बौद्ध था। मगोलोने किसी दूसरेको खान वनाया, जिसपर जेंकिश ताराजमे मगोलोको हराते अलमालिक पहुचकर गद्दीपर वैठा। फिर आगे वढते उसने विशवालिग और कराकोरम (मगोलिया) को ले लिया, जिसपर कआन (चीन-सम्राट्) को दव-कर सुलह करनी पडी। अलमालिकमें वजीर अलाउलमुल्क खुदाबदजादाको शासनके लिये छोडकर वह समरकन्द लौट आया, लेकिन पीछे सदेह हो जानेपर उसने अलाउलमुल्कको मरवा डाला। विशवालिक और कराकोरमके विजयकी वात कहातक ठीक है, इसे नही कहा जासकता, लेकिन १३३२ई०में जेंकिशने चीन-दरवारमे भेट भेजी थी। वह अधिकतर अलमालिकमे रहता था। कैथलिक मिश्नरी वहा वडे जोरसे धर्म-प्रचार कर रहे थे। कैथलिक चर्चने फ्रासिस्कन साधु निकोलाई (मिखाइल) को चीनका आर्चविशप (लाट-पादरी) वनाकर भेजा था। अलमालिकमे जेंकिशके दरवारमें उसका वडा सम्मान हुआ। कुछ ही समयमें राजधानीमें पादरियोका भारी जमाव हो गया—वरगडीका रिचार्ड, अलक-सदरियाका साधु फ्रासिस्क, रायमुन्द और इसी तरह कितने ही और धर्म-प्रचारक वहा मौजूद थे। खानका सात वर्षका पुत्र वपतिस्मा लेकर योहन वना। स्पेनिश साधु पसखालिस १३३८ ई० में धर्म-प्रचारार्थ उरगजसे अलमालिक जा पाच महीने रहा।

आगे जेंकिज और मलिक हुसेनमें लड़ाई हुई। हुसेनने उसे पकड़कर क्षमा कर दिया। उस समय जेंकिज हेरातमें था, जबकि १३४७ ई० के वसंतमें बतूता वहांसे भारतके लिये प्रस्थान कर रहा था।

२० येस्सुन तेमूर, एसुन, एबुगेन-पुत्र (१३३८–४० ई० ?)

थोड़े दिन राज्य करनेके बाद ओगोताई-राजकुमार अली सुल्तानने इसे हटाकर इसका स्थान लिया। इससे थोड़े समय पहले सप्तनदमें ईसाइयोंपर भारी अत्याचार हुए और आठ शताब्दियोंसे चला आया नेस्तोरीय सम्प्रदाय वहाँसे सर्वदाके लिये उच्छिन्न हो गया।

२१ अली-सुल्तान, ओगोताई-वंशज (१३४०–४२ ई० ?)

अली-सुल्तान मुस्लिम पार्टीका था, किंतु इसके जुलमसे ईसाई ही नहीं मुसलमान भी पनाह मांगते थे।

२२ मुहम्मद पुलाद, पोलाद, कुजेक-पुत्र (१३४२ ई० ?)

अली-सुल्तानको हटाकर कुछ समयतक यह चगताई खान रहा।

२३ काजान, गाजान, यसाउर-पुत्र (७३३–४७ हि०* ?)

यह भी बड़ा अत्याचारी था। इसके डरके मारे दरबारी पहले अपनी वसीयत करके तब खानके पास जाते थे। उसके १३-१४ सालके शासनमें चारों तरफ आतंक फैला रहा। प्रभावशाली वजीर कजगनने उससे पिंड छुड़ानेके लिये विद्रोह कर दिया। पहली लड़ाई ७४४ हि० (२६ मई १३४३—१५ अप्रैल १३४४ ई०) अथवा मीरखोजन्दके अनुसार १३४५ ई० मे हुई, जिसमें खान जीता और अमीर कजगन की एक आंख तीर लगनेसे फूट गई। सफल होनेपर भी खान शत्रुओंका पीछा नहीं कर सका। उसने जाड़ा करशीमें बिताया। सख्त जाड़े और हिमवर्षाके कारण घोड़े और बोझा लादनेके बहुतसे पशु मर गये। ७४७ हि० (२४ अप्रैल १३४६–१५ मार्च १३४७ ई०) में फिर लड़ाई हुई, जिसमें खानकी हार हुई और उसका अत्याचारी शासन खतम हुआ।

२४ दानिशमन्द, ओगोताई-वंशज (१३४६–४८ ई०)

अमीर कजगनको एक गुड़िया खानकी जरूरत थी। उसने ओगोताई दानिशमन्द ओगलान (राजकुमार) को लाकर गद्दीपर बिठाया। दो साल बाद उससे मन ऊब गया, फिर उसने बायन कुल्लीको गद्दीपर बिठाया।

२५. बायन कुल्ली, सुरगू ओगलान-पुत्र, चगताई-वंशज (१३४८–५८ ई०)

कजगनके अनुकूल होनेसे यह दस सालतक खान बना रहा। अमीर कजगन एक तो स्वदेशी तुर्क था, दूसरे बड़ा ही चतुर और न्यायप्रिय भी, इसलिये वह बहुत जनप्रिय था। कजगनके मरनेपर उसका लड़का अब्दुल्ला वजीरआजम (महामंत्री) बना, जिसने बायनको कुदुजमें शिकार करते समय कत्ल करवा दिया—अब्दुल्ला बायनकी बीबीका यार था। अब अब्दुल्लाने तेमूरशाह ओगलान-को गद्दीपर बिठाया।

२६ तेमूरशाह (१३५८—ई०)

चिङ्गिस्-वंशकी इतनी शान और पवित्रता स्थापित हो गई थी, कि खानके सिंहासनको कोई लेनेकी हिम्मत नहीं रखता था। स्वयं तेमूरलंगने भी खान बनना नहीं चाहा और विश्वविजयी होनेके बाद भी वह "अमीर तेमूर" या "सुल्तान तेमूर" ही बना रहा। अब्दुल्लाका प्रभाव बापके बराबर नहीं था। तेमूरशाहको जिस तरह गद्दीपर बिठाया गया, उससे दरबारी नाराज हो गये। अमीर बायन सुल्दुज अब्दुल्लाके विरुद्ध चढ़ाई करनेके लिये जब समरकन्दकी ओर जा रहा था, तो रास्ते में केश (शहरसब्ज) का शासक हाजी बिरलास भी उसके साथ हो लिया—यही हाजी सैफुद्दीन बिरलास तेमूर

* २२ IX १३३२–११ VIII १३३३ ई० से २४ IV १३४६–१५ III १३४७ ई०

लगका चचा था। अब्दुल्ला हारकर अन्दराव (अफगानिस्तान) की ओर भागा, और उसने अपना बाकी जीवन वही बिताया। चगताई-शासनकी बागडोर अब अत्यन्त अयोग्य भारी पियक्कड सेलदूज तथा हाजी बिरलसके हाथोमे थी। सारे राज्यको अमीरोने अपनी-अपनी रियासतोमे बाट लिया, जिसमे केश (शहरसब्ज) और आसपासका इलाका बिरलसको मिला। चारो ओर गृहयुद्ध और अराजकताका दौरदौरा था।

२७. इलियास खोजा, तुगलक-तेमूर-पुत्र (–१३६३ ई०)

तेमूरशाहकी जगह इलियास गद्दीपर बिठाया गया। चगताई-वंशकी पश्चिमी शाखाकी जहा यह अवस्था थी, वहा उत्तर-पूर्वी शाखावाले मुगोलिस्तानके खान अभी इतने शक्तिहीन नही हुए थे। अन्तर्वेदकी अवस्थाके बारेमे सुनकर अलमालिकका खान तुगलक तेमूर एक बडी सेना लेकर समरकन्दकी ओर चला। आपसमे लडते छोटे-छोटे अमीर भला उसका मुकाबिला कैसे कर सकते थे? हाजी सैफुद्दीन बिरलस (तेमूरका चचा) बिना लडे ही खुरासानकी ओर भाग निकला। उसके भाई तुरगाई बिरलसके तरुण पुत्र तेमूर लगने चचासे राय लेकर तुगलक तेमूरसे भेट की। तरुणसे खान इतना प्रभावित हुआ, कि उसने केशके निवासियोपर अत्याचार नही किया। तुगलक तेमूरने अन्तर्वेदको जीत कर अपने पुत्र इलियास खोजाको समरकन्दमे उपराज घोषित कर तेमूर लग बिरलसको विश्वास-पात्र जान वजीर (अमात्य) नियुक्त किया। तुगलक तेमूर काशगरकी ओर लौट गया। अमीरोके आपसी झगडोमें पडना तेमूरने पसन्द न कर बुखारा तथा खीवा होते कास्पियनतटवर्ती रेगिस्तानोका रास्ता लिया। इस निर्जन भूमिमे वह कितने ही समयतक मारा-मारा फिरता रहा। अन्तमे वह अपने केश लौटे कुछ साथियोको लेकर वक्षु नदीके दक्षिण चला गया। ७६५ हि० (१० अक्तूबर १३६३–३० अगस्त १९४६ ई०) में कुदुजके पास दानियालकी सेनाको हराकर तेमूर उसका पीछा कर रहा था, इसी समय तुगलक तेमूर खानके मरनेकी खबर आई और इलियास खोजा समरकन्द छोडकर बापकी गद्दी सभालने अलमालिक चला गया। तेमूर लगने तुरत अन्तर्वेद लौट सरदारोकी कूरिल्ताई बुलाकर काबिलशाहको खान घोषित किया।

२८ काबिलशाह (१३६३–६९ ई०)

काबिलको छिङ्ग-गिस्-वंशका अन्तिम चगताई खान तो नही कह सकते, क्योकि तेमूरके वंशने भी अबू-सईदके समय (१४६७–९४ ई०) तक छिङ-गिसी राजकुमारोको बराबर समरकन्दकी गद्दीपर गुडिया खान बनाये रक्खा। ८ अप्रैल १३६७ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) तक काबिलशाह बहुत कुछ अपने पूर्वजो जैसा ही खान रहा। उसके बाद तेमूरने बाकायदा अपनेको शासक घोषित किया, यद्यपि उसने खान-परपराका उच्छेद नही किया।

चगताई-अर्थनीति––मगोल-शासन घुमन्तू सैनिक सामन्तोका शासन था, जो अपनेसे भिन्न जातियोके लिये निरकुश था, किन्तु जहातक मगोल सामन्तो और राजकुमारोका सबध था, खानके लिये बहुमतकी इच्छाका उल्लघन करना आसान काम नही था, क्योकि सेना उनकी थी। मगोल शासक नागरिको और ग्रामीणोकी गाढेकी कमाईको उडाना अपना हक समझते थे। पहले कितने ही समयतक इनके भीतर सैनिक जीवन कायम रहा, किंतु आगे विलासिता बढनेके कारण उसका ह्रास होने लगा। इसके साथ ही राजपरिवार और सामन्त-परिवारोकी सख्या बढनेके कारण प्रजाका शोषण-उत्पीडन और भी भयकर होने लगा। उनके सहकारी तुर्क घुमन्तू थे, जो देशमें शताब्दियो पहलेसे अपना प्रभाव जमाये हुए थे, और छिङ-गिस्‌की सेनामे दूध-पानीकी तरह मिल गये थे। वह अब अपने स्वार्थोंको हाथ से जाने देनेके लिये तैयार नही थे। मगोल-राजपरिवार और मगोल अमीर-परिवारोकी निर्बलताके समय तुर्कोंने शासनकी बागडोर भी अपने हाथमें सभाल ली। प्रजाका शोषण पूर्ववत् जारी रहा, तो भी अन्तर्वेदकी सम्पत्तिका महास्रोत––अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य और सुदर दस्तकारी–सूखा नही था।

साहित्य––मगोलोके सर्वसहारी प्रहारके बाद साहित्यकी और धाराए रुकसी गई, लेकिन धर्मशास्त्र (शरीयत), धार्मिक साहित्य, सूफी साहित्य, मदिरावाद फूलता-फलता रहा। मुल्लो और

सूफियोकी मगोल-दरवारमे वडी इज्जत थी। जिसके कारण इस्लामिक शरीयतका प्रभाव भी वढ चला। कहना चाहिये शरीयत और सूफीमतका इतना प्रभाव मध्य-एसियाकी जनतापर पहिले कभी नही पडा था। कुछ परिवारोने शरीयत और सूफीवादके लिये अपनी पुश्तैनी गद्दी वना ली, और उनका सम्मान पैगम्बरोकी तरह होने लगा। इन परिवारोमे सिताजी और खावन्द वहुत प्रसिद्ध थे। जमालुद्दीन सिताजी—मृत्यु ६४० हि० (१ VII १२४२–२२ V १२४३ ई०)—एक सूफी कवि था, जो ६२८ हि० (९ XI १२३०–३० IX १२३१ ई०) में खोजन्दमें आकर वस गया था, और मगोलोके आक्रमणके समय ६४० हि० में मरा। वुखाराके खावन्द-परिवारका अमीर शम्शुद्दीन-पुत्र कमालुद्दीन अच्छा कवि था, जिसके कई दीवान (कविता-सग्रह) मौजूद है। इसने "मिन्हाजुल्-मुज्वक्करीन" के नामसे भक्तमाल जैसा एक जीवनचरितात्मक ग्रन्थ लिखा। इलखान अवकाकी सेना-द्वारा ६७१ हि० (२९ VII १२७२–१९ VII १२७३ ई०) में वुखाराकी लूटके पहले ही दिन कमा-लुद्दीन मर गया। शाह फखरुद्दीन, मुल्ला ताजुद्दीन इस समयके दूसरे साहित्यकार थे। मुल्ला ताजुद्दीन ७३० हि० (२५ X १३२९–१५ IX १३३० ई०) में मरा। इसने "वोस्ताने-मुज्वक्करीन" लिखा। तरमाशेरिनके वाद मगोल-राजवश जल्दी-जल्दी मुसलमान होने लगा। मगोलोके लिये इस्लामके समुद्रमें डेढ ईंटकी अलग मस्जिद वनाकर रहना आसान नही था। मगोल-राजवश वौद्ध-सतो और लामाओ की अधभक्ति सीख चुका था, अव वही अन्धभक्ति उनकी सूफियोके प्रति हो गई। मानके वढनेके साथ सूफियोकी सख्या भी वहुत वढी। मुल्लाओका गढ वुखारा अव सूफियोका भी गढ वन गया, इसीलिये उस समय किसी कविने लिखा था—

"वुखारा मीरवी दीवाना।
लायक जजीरे-जिंदानखाना।"

(वुखारा जा रहा है पागल, वह तो जेलखानेकी जजीर जैसा है।)

अध्याय २

हुलाकू-वंश

(१२५६-१३४७ ई०)

हुलाकूने ईरान-इराक तथा दूसरे देशोको विजय करके अपने वशकी स्थापना की थी। हुलाकू-के वाद इसकी राजधानी तब्रीज हो गई। सभी मगोल खानोंके ऊपर कआन (खाकान, हागान) माना जाता था। उसके नीचे भिन्न-भिन्न उलुसोके खानोको इलखान कहते थे। इल या एल जन (कबीले) का पर्याय है। इसीसे एलची शब्द निकला, जिसका अर्थ है जनदूत या राजदूत। पीछे "इलखान" ईरानी मगोल-राजवशके लिये रुढ हो गया।

इलखानोकी नामावली निम्न प्रकार है--

१	हुलाकू, तूलुइ-पुत्र	१२५६-६४ ई०
२	अवका, अरिकवुगा, हुलाकू-पुत्र	१२६४-८२ "
३	अहमद तगूदर, हुलाकू-पुत्र	१२८२-८४ "
४	अरगून, अवका-पुत्र	१२८४-९२ "
५	गैखातू, अवका-पुत्र	१२९२-९५ "
६	वैदू, तरगई-पुत्र	१२९५ "
७	गाजन, अरगून-पुत्र	१२९५-१३०४ "
८	उलजैतू, अरगून-पुत्र	१३०४-१७ "
९	अवूसईद उलजैतू-पुत्र	१३१७-३५ "
१०	अरपगोन, सूसू-पुत्र	१३३५-३६ "
११	मूसा, अली-पुत्र	१३३६-३७ "
१२	मुहम्मद येल, कुतुलुग-पुत्र	१३३७-३८ "
१३	सातीवेग, उलजैतू-पुत्र	१३३८-४० ,
१४	शाहजहा तेमूर, अलाफेफ-पुत्र	१३४० "
१५	सुलेमान, युसुफशाह-पुत्र	१३४०-४४ "
१६	नौशेरवा	१३४४ "

१ हुलाकू, खूलागू, तूलुइ-पुत्र (१२५६-६४ ई०)

हुलाकू (जन्म १२१६ ई०) छिङ्-गिस्के पुत्र तूलुइका बेटा चीनके प्रसिद्ध कआनो मुङखे और कुविलेइका अनुज था। मुङखेन १२५२ ई०में जो कुरिल्ताई बुलाई थी, उसमें ईरान-इराकके विजयका भार हुलाकूके ऊपर दिया गया। हुलाकू कूच करते हुए १२५३ ई०के मार्चमें अलमालिकके पूर्वके पहाडो में पहुचा। फर्वरी १२५४ ई०में चगताईकी राजधानी अलमालिकमें उसकी साली रानी ओरगानाने उसका स्वागत किया। सितम्बर १२५५ ई० में अपनी सेनासहित वह समरकन्द पहुचा और २ जनवरी-को उसने वक्षु पार कर लिया। फिर खुरासान होते मध्य-ईरानमे पहुच हसन विन-सव्वाहके गढ अल्-मौतको विजय करके ध्वस्त कर दिया। कवि खैयाम और इस्लामी चाणक्य निजामुल्मुल्कके सहपाठी तथा इस्माईली सम्प्रदायके मुखिया हसन विन-सव्वाह (सव्वाह-पुत्र) ने शिष्योको जीते-जी स्वर्गकी सैर करानेका प्रवन्ध करते हुये अल्मौत नामका नगर और दुर्ग स्थापित किया था। हसनके चेलोसे राजाओ और राजमन्त्रियोको भी प्राणोका डर वना रहता था, इसीलिये कोई उसे छेडता नही था। हुलाकूने

सूफियोकी मगोल-दरवारमें वडी इज्जत थी। जिसके कारण इस्लामिक शरीयतका प्रभाव भी वढ चला। कहना चाहिये शरीयत और सूफीमतका इतना प्रभाव मध्य-एसियाकी जनतापर पहिले कभी नही पडा था। कुछ परिवारोने शरीयत और सूफीवादके लिये अपनी पुश्तैनी गद्दी वना ली, और उनका सम्मान पैगम्वरोकी तरह होने लगा। इन परिवारोमे सिताजी और खावन्द वहुत प्रसिद्ध थे। जमालुद्दीन सिताजी—मृत्यु ६४० हि० (१ VII १२४२–२२ V १२४३ ई०)—एक सूफी कवि था, जो ६२८ हि० (६ XI १२३०–३० IX १२३१ ई०) में खोजन्दमें आकर वस गया था, और मगोलोके आक्रमणके समय ६४० हि० में मरा। वुखाराके खावन्द-परिवारका अमीर शम्शुद्दीन-पुत्र कमालुद्दीन अच्छा कवि था, जिसके कई दीवान (कविता-सग्रह) मौजूद है। इसने "मिन्हाजुल्-मुजक्करीन" के नामसे भक्तमाल जैसा एक जीवनचरितात्मक ग्रन्थ लिखा। इलखान अवकाकी सेना-द्वारा ६७१ हि० (२६ VII १२७२–१६ VII १२७३ ई०) में वुखाराकी लूटके पहले ही दिन कमा-लुद्दीन मर गया। शाह फखरुद्दीन, मुल्ला ताजुद्दीन इस समयके दूसरे साहित्यकार थे। मुल्ला ताजुद्दीन ७३० हि० (२५ X १३२६–१५ IX १३३० ई०) में मरा। इसने "वोस्ताने-मुजक्करीन" लिखा। तरमाशेरिनके वाद मगोल-राजवश जल्दी-जल्दी मुसलमान होने लगा। मगोलोके लिये इस्लामके समुद्रमें डेढ ईंटकी अलग मस्जिद वनाकर रहना आसान नही था। मगोल-राजवश वौद्ध-सतो और लामाओ की अधभक्ति सीख चुका था, अव वही अन्धभक्ति उनकी सूफियोके प्रति हो गई। मानके वढनेके साथ सूफियोकी सख्या भी वहुत वढी। मुल्लाओका गढ वुखारा अव सूफियोका भी गढ वन गया, इसीलिये उस समय किसी कविने लिखा था—

> "वुखारा मीरवी दीवाना।
> लायक जजीरे-जिंदानखाना।"

(वुखारा जा रहा है पागल, वह तो जेलखानेकी जजीर जैसा है।)

अध्याय २

हुलाकू-वंश

(१२५६–१३४७ ई०)

हुलाकूने ईरान-इराक तथा दूसरे देशोको विजय करके अपने वशकी स्थापना की थी। हुलाकूके बाद इसकी राजधानी तब्रीज हो गई। सभी मगोल खानोके ऊपर कत्रान (खाकान, हागान) माना जाता था। उसके नीचे भिन्न-भिन्न उलुसोके खानोको इलखान कहते थे। इल या एल जन (कबीले) का पर्याय है। इसीसे एलची शब्द निकला, जिसका अर्थ है जनदूत या राजदूत। पीछे "इलखान" ईरानी मगोल-राजवशके लिये रूढ हो गया।

इलखानोकी नामावली निम्न प्रकार है—

१	हुलाकू, तूलुइ-पुत्र	१२५६–६४ ई०
२.	अवका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र	१२६४–८२ ,,
३	अहमद तगूदर, हुलाकू-पुत्र	१२८२–८४ ,,
४	अरगून, अवका-पुत्र	१२८४–९२ ,,
५	गैखातू, अवका-पुत्र	१२९२–९५ ,,
६	वैदू, तरगई-पुत्र	१२९५ ,,
७	गाजन, अरगून-पुत्र	१२९५–१३०४ ,,
८	उलजैतू, अरगून-पुत्र	१३०४–१७ ,,
९	अबूसईद उलजैतू-पुत्र	१३१७–३५ ,,
१०	अरपगोन, सूसू-पुत्र	१३३५–३६ ,,
११	मूसा, अली-पुत्र	१३३६–३७ ,,
१२	मुहम्मद येल, कुतुलुग-पुत्र	१३३७–३८ ,,
१३	सातीवेग, उलजैतू-पुत्र	१३३८–४० ,,
१४	शाहजहा तेमूर, अलाफेफ-पुत्र	१३४० ,,
१५	सुलेमान, युसुफशाह-पुत्र	१३४०–४४ ,,
१६	नौशेरवा	१३४४ ,,

१ हुलाकू, खूलागू, तूलुइ-पुत्र (१२५६–६४ ई०)

हुलाकू (जन्म १२१६ ई०) छिड-गिस्के पुत्र तूलुइका बेटा चीनके प्रसिद्ध कत्रानो मुडखे और कुबिलेडका अनुज था। मुडखेने १२५२ ई०में जो कूरिल्ताई बुलाई थी, उसमे ईरान-इराकके विजयका भार हुलाकूके ऊपर दिया गया। हुलाकू कूच करते हुए १२५३ ई०के मार्चमें अलमालिकके पूर्वके पहाडो में पहुचा। फर्वरी १२५४ ई०में चगताईकी राजधानी अलमालिकमें उसकी साली रानी ओरगानाने उसका स्वागत किया। सितम्बर १२५५ ई० मे अपनी सेनासहित वह समरकन्द पहुचा और २ जनवरी-को उसने वक्षु पार कर लिया। फिर खुरासान होते मध्य-ईरानमे पहुच हसन बिन-सब्बाहके गढ अल्-मौतको विजय करके ध्वस्त कर दिया। कवि खैयाम और इस्लामी चाणक्य निजामुल्मुल्कके सहपाठी तथा इस्माईली सम्प्रदायके मुखिया हसन बिन-सब्बाह (सब्बाह-पुत्र) ने शिष्योको जीते-जी स्वर्गकी सैर करानेका प्रबन्ध करते हुये अलमौत नामका नगर और दुर्ग स्थापित किया था। हसनके चेलोसे राजाओ और राजमंत्रियोको भी प्राणोका डर बना रहता था, इसीलिये कोई उसे छेडता नही था। हुलाकूने

इस गढ़को तोड़कर उसे हमेशाके लिये नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, और उसके बाद इस्माईली फिर अपने लिये वैसा सुदृढ़ दुर्ग नहीं बना सके। इसी इस्माईली सम्प्रदायके गुरु हमारे यहाके आगाखान है, या यो कहिये, हुलाकूकी आगीमे उड़े पत्तोंमेंसे एक है। मार्च १२५७ ई० को हुलाकूने हम्दानके लिये प्रस्थान किया। छिङ-गिस्की दिग्विजयमे उसके सेनापति हम्दानतक ही आ पाये थे। यहासे हुलाकूको उस रास्तेपर जाना था, जिसपर मगोल घोडोकी टाप नही पडी थी। ईरानके जिस भागको छिङ-गिस्के सेनापतियोंने जीता था, उसपर भी अभीतक मगोल शासन पक्का नहीं हो पाया था। हुलाकू अब इस कामको बडे दृढतासे करता चल रहा था। १८ जनवरी १२५८ ई०को वह खलीफाकी राजधानी बगदादके पूर्वमे था। ४ फर्वरीको उसने बुर्जेअली किलेको ध्वस्त किया। खलीफा पूरी तौरसे पराजित हो १० फर्वरीको हुलाकूके शिविरमे कोरनिश करने गया। यद्यपि खलीफाकी राजशक्ति तीन शताब्दियो पहले ही खतम हो चुकी थी, लेकिन इस्लामके पोषकके तौरपर उसका सम्मान अब भी बहुत अधिक था। देश-देशके स्वतन्त्र सुल्तान उसके पास बडी-बडी भेटें भेजकर उसके दिये चार अक्षरोके नामोको बडे अभिमानपूर्वक अपने नामके साथ जोडते थे। खलीफाका हुलाकूके दरबारमें सलाम बजाने जाना वैसा ही था, जैसा कि हालमें सूर्यदेवीके पुत्र जापानके मिकादोका अमेरिकन जेनरल मेकआर्थरके सामने दडवत् करना। लेकिन हुलाकू सापको पालनेके लिये तैयार नही था। वह समझता था, खलीफा मुसलमानोंको भडका सकता है, इसीलिये बडे लडकेके साथ खलीफाको उसने २० फर्वरी को मरवा दिया।

बगदादपर अधिकार करके विजित देशकी व्यवस्थाके लिये कुछ समयतक हुलाकू रुका, फिर वह पश्चिमकी विजय-यात्राके लिये निकला, और २५ जनवरी १२६० ई० को जाकर उसने हलब (अलेप्पो) पर अधिकार किया। शाम (सिरिया) की राजधानी (दमिश्क) की ओर बढनेपर उसका मुकाबिला मिस्रके ममलूक सुल्तान सैफुद्दीन फीरोजसे पडा। हुलाकूके सेनापति कीतू-बुगाने मिस्रियोके पास निम्न शब्दोमें अल्तिमेत्यम् भेजा—

"तुमने सुना होगा, कैसे हमने एक विशाल साम्राज्यको जीता, कैसे हमने पृथिवीकी गदगियोको हटाकर शुद्ध किया, और अधिकाश लोगोंको कत्ल कर डाला। तुम्हारा काम है, भागना और हमारा काम है पीछा करना—जहा भी तुम जाओ, जिस रास्तेसे भी जाओ, वहा तुम्हारा पीछा करना। तुम कैसे हमसे बच सकते हो? हमारे घोडे बडे तेज है, हमारे बाण बडे तीक्ष्ण है, हमारी तलवार वज्र जैसी है, हमारे हृदय पहाडकी तरह कठोर है, हमारे सैनिक बालूके कणोकी तरह असख्य है। किले हमें रोक नही सकते, न हथियार ही। हमारे विरुद्ध तुम्हारी प्रार्थनाओंको भगवान् नही सुनेगा। तुम हीन उपायोंसे अपनेको बचाना चाहते हो और शपथ-पूर्वक की हुई प्रतिज्ञाओंको तोड़ते हो। विद्रोह और अव्यवस्था तुम्हारे भीतर फैली हुई है। अपने अभिमानके लिये तुम्हे अब भयकर दण्ड मिलनेवाला है। अन्यायी अपने भाग्यसे शिक्षा लेने जा रहे है। हमारे साथ युद्धका मसूबा रखनेवाले अब पछतानेवाले है। जो हमारी शरणमे आना चाहते है, केवल उन्हीकी रक्षा होगी। अगर तुम हमारी आज्ञा और पेश की हुई शर्तोंको मानोगे, तो हमारे वैभवमें भागीदार बनोगे, यदि प्रतिरोध करोगे, तो नष्ट हो जाओगे। आत्महत्या मत करो। जिसे पहलेसे सजग कर दिया गया है, उसे अपने लिये सावधान रहना चाहिये। तुमसे कहा गया है, कि हम काफर है, पर हम तुमको पापी समझते है। जिस भगवान्की आज्ञाए अमिट है, जिसका फैसला पूर्णतया न्यायानुमोदित है, वही तुम्हारे ऊपर हमें विजयी बना रहा है। हमारी आखोंमें तुम्हारी सबसे जबर्दस्त सेनायें भी आदमियोंकी एक छोटीसी टुकडी है। तुम्हारे प्रसिद्ध वीरोंको भी हम तुच्छ समझते है। तुम्हारे राजाओंको हम घृणाकी दृष्टिसे देखते है। जवाब देनेमें जल्दी करना। ऐसा न हो, कि युद्ध तुम्हारे ऊपर आग लगा दे और तुम्हारे ऊपर अपनी चिनगारिया फेंकने लगे। हमारा कहा न करोगे, तो जो भयकर सत्यानाश तुम्हारा होनेवाला है, उससे कहीं त्राण नही पा सकोगे और तुम अपने देशको रेगिस्तान बना दोगे। हम पहलेसे चेतावनी देकर तुम्हारी भलाई करना चाहते है, तुम्हें तुम्हारी नीचतासे टराना चाहते है। अब तुम ही एकमात्र (हमारे) शत्रु रह गये हो, जिसके विरुद्ध हमे कूच करना है। तुम्हारे और जो लोग भी देशी आदेशका अनुगमन करते है, सोतने

डरते हैं; उनके लिये भी सुरक्षाका यही रास्ता है, कि वह कआनकी आज्ञाको माने। मिस्रको कहो—हुलाकू इस भूमिके बड़ोको अपमानित करने आ रहा है, वह बच्चोको वहा भेज देगा, जहा बूढे गये है।"

इसका जवाब सुल्तान फीरोजने इस प्रकार दिया—

"ओ तरुण, तुमने अभी-अभी अपना जीवन आरम्भ किया है, इसीलिये तुम जीवनकी ओर इतना कम ध्यान देते हो। तुमने अभी दस दिनोकी ही समृद्धि और सौभाग्यका उपभोग किया है। ऐसा होनेपर भी तुम सारी दुनियासे अपनेको बड़ा समझते हो और अपनी आज्ञाको भवितव्यताकी आज्ञा मानकर उसे अनिवार्य समझते हो। तुम क्यो मुझसे ऐसी माग कर रहे हो, जिसे कि तुम पा नही सकते? क्या तुम अपनी चालाकी, अपनी सैनिक शक्ति और अपनी हिम्मतसे एक भी तारेको बन्दी बना सकते हो? तुम शायद नही जानते, कि पूरबसे पश्चिमतक अल्लाके बन्दे, धर्मात्मा पुरुष, राजा-रंक, बच्चे-बूढे, सभी इस (मेरे) दरबारके दास है, वह मेरी सेना है। जब मैं अलग-अलग प्रतिरोधियो को इकट्ठा हो जानेकी आज्ञा दूगा, तो पहले ईरानके मामलेको ठीक करूगा, फिर तूरान (तुर्किस्तान) पर चढूगा और वहा हरएक आदमीको उसके पदपर स्थापित करूगा। इसमें सन्देह नही, कि मेरे इस कामके परिणाम-स्वरूप पृथिवीपर अशाति और गड़बड़ी फैलेगी, लेकिन यह सब मैं बदला लेनेके लोभसे नही करता और नही लोगोकी वाहवाही लूटना चाहता हू। मैं इसके लिये उत्सुक नही, कि सेनाके बजते बाजोके साथ आदमी मारे जाय। मैं दुआ या शापको भी नही पसन्द करता। मेरे, कआन और हुलाकू—सबके पास एक-सा ही दिल है, एक-सी ही भाषा है। अगर मेरी तरह तुम भी मित्रताका बीज बोना चाहते हो, तो मेरे सेवकोकी खाइयो और मोर्चाबन्दियोसे तुम्हारा क्या काम है? भलाईके रास्तेको पकड़ो और खुरासान लौट जाओ। यदि तुम लड़ना ही चाहते हो, तो मेरे पास हजारो सेनायें है, जो कि बदला लेनेके समय आनेपर समुद्रको सुखा देंगी।"

३ सितम्बर १२६० ई० को मगोल और ममलूक सेनाओमें भीषण लड़ाई हुई। यद्यपि ममलूक सुल्तान-खलीफाने अपने लिखे अनुसार ईरान और तूरान (मध्य-एसिया) की ओर पैर नही बढाया, लेकिन हुलाकूकी सेनाको उसने पूरी तौरसे हराकर अफ्रीकामें बढनेका रास्ता बन्द कर दिया। हुलाकू की विजयिनी सेनाको ही मिस्रियोने नही रोका, बल्कि तैमूरलगकी विजययात्रा भी यही आकर खतम हो गई। नील-उपत्यका एक छोटासा देश है। वह कैसे विश्वविजेताओकी सेनाओको रोक सका, इसका कारण उतनी उसकी अपनी शक्ति नही थी, जितनी कि बड़ीसे बड़ी सैनिक शक्तिका भारी बिखरावके कारण अन्तमें क्षीण हो जाना—तरिम, चू, मुरगाब, जरफशा (सोग्द) और खुद हमारे यहा की प्राचीन सरस्वती (-घग्घर) भारी जलप्रवाहको लेकर चलती है, लेकिन अन्तमें उनके पानीको सोखते हुए रेगिस्तान उन्हे अपनेमें लीन कर लेता है।

मिस्रकी ओर आगे न बढ सकनेपर हुलाकू लौट पड़ा। तब्रेजको लेकर १२ सितम्बर (१२६० ई०)को उसने आगेकी विजययात्रा शुरू की, और दियारबेकर, जजीरा, रोहा (एदेस्सा), अर्रान और निसिबीके नगरोपर अधिकार किया। रोहाके पास हुलाकूने मगोल सैनिक शक्तिका एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया, जिसे देखने के लिये रोम और अर्मनीके राजा भी उपस्थित थे। दमिश्कपर अधिकार करनेके बाद हुलाकूने दुनियाका सबसे पहला कागजी नोट (चाउ) जारी किया, दूसरे इतिहासकारोका मत है, कि वह पहलेपहल १२ अप्रैल १२६४ ई० को तब्रेजमें जारी किया गया।

विजयोके बाद हुलाकूने मरगाको अपनी राजधानी बनाया, जिसे उसका लड़का तब्रेजमें ले गया।

हुलाकू और उसके चचेरे भाई बरका खान (१२५५—६५ ई०) का पहले मेल था, उसके बाद दोनोमें झगड़ा होनेका कारण बरकाने हुलाकूके इस्लाम और खिलाफतके ध्वस करनेकी बात बतलाई, लेकिन वस्तुत झगड़ा काकेशसपर अधिकारका था।

काकेशसकी ओर बढते हुए अब जूछि-उलुसकी सीमा नजदीक आ गई तो अनिश्चित विजित देशोके लिये दोनोमें झगड़ा शुरू हो गया। यह बतला आये है, कैसे ११ नवम्बर १२६२ ई० को जूछि-उलुसके खान बेरकेसे मुकाबिला करनेके लिये हुलाकूकी सेना दरबन्द पहुची, लेकिन वही बरकाके सेनापति नोगाईने उसे हराकर पीछे हटा दिया। बरका और मिस्र-सुल्तान फीरोज दोनो हुलाकूके शत्रु

थे। "शत्रुका शत्रु मित्र" की नीतिके अनुसार सुवर्ण-ओर्दू और मिस्रमें मेल-जोल करनेका प्रयत्न होने लगा। १२६३ ई० के शरद्में बर्काका दूतमंडल मिस्रके मुल्तानके पास पहुंचा।

मिस्र और दरबन्दकी हारोंके बाद हुलाकूने समझ लिया, कि हमारे राज्यका जितना विस्तार हो सकता है, उतना हो चुका। इसीलिये अब वह शासन-प्रबन्धमें लग गया। १२६४ ई० में उसने कई शासन-सुधार किये। १६ रबी II ६६३ हि० (८ फर्वरी १२६४ ई०) को हुलाकू जगात (मेरगाम) में मर गया।

हुलाकूकी पटरानी ओइरोत (मंगोल)-राजकुमारी कूबेक (ओलेज) खातून थी।

हुलाकूके अलमौतके किलेके ध्वस्त करते समय इस्माईली पोप अलाउद्दीन मुहम्मदने मुहक्किक नासिरुद्दीन तूसी (१२०१-७४ ई०) को अपने बन्दीखानेमें डाल रखा था। तूसी बहुमुखी प्रतिभाका धनी था। हुलाकूने उनकी कदर की। तूसी हुलाकू और उसके बेटे अबका खानके शासनकालमें बहुत सम्मानित रहा। उसने "जिज्रे इलखानी" नामसे एक पचांग बनाया।
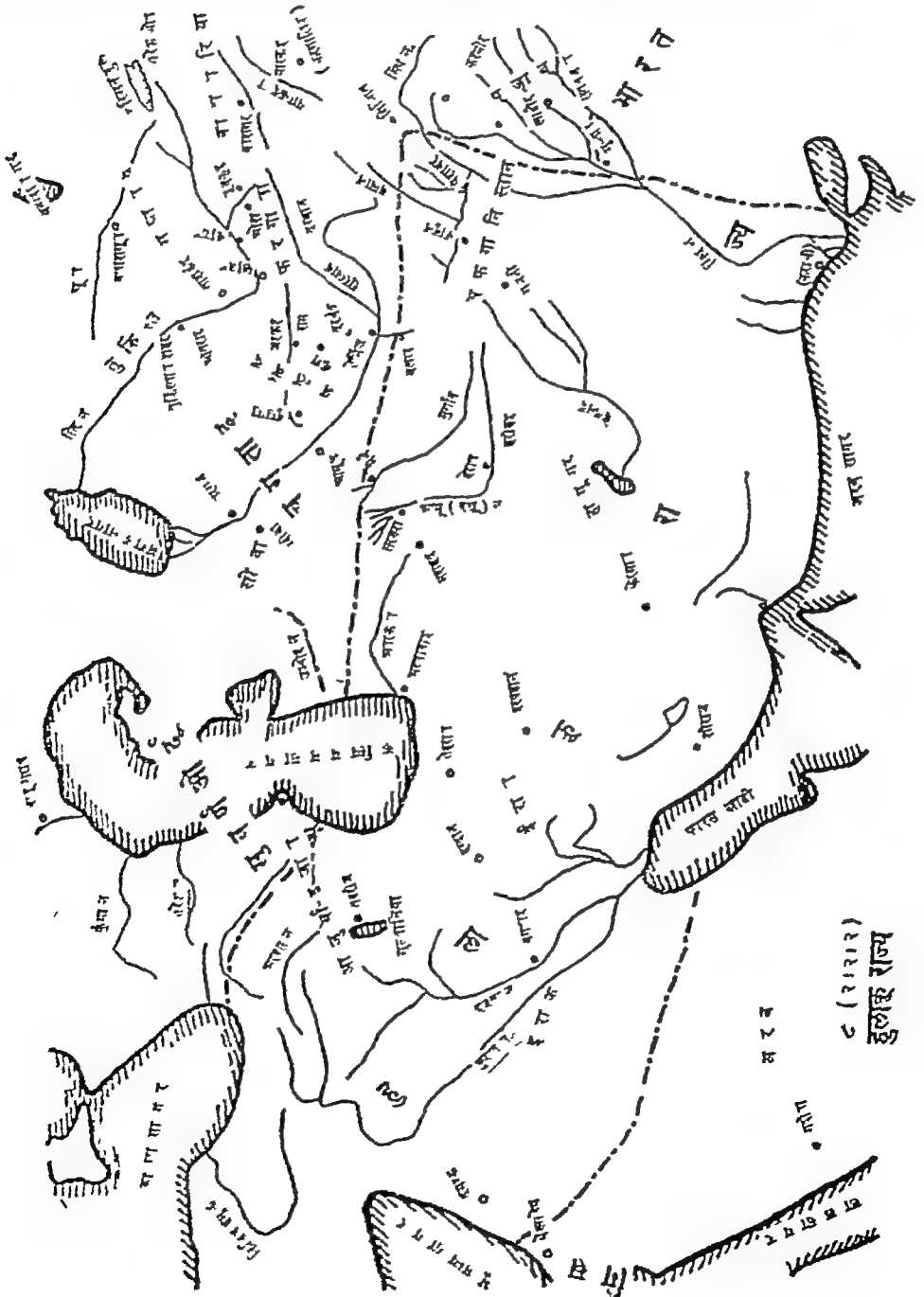
२. अबका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र (१२६४–८२ ई०)

अबका बापकी तरह ही एक कुशल सैनिक और शासक था। बापके समय बेरका खानसे जो झगडा हुआ था, वह इसके समयमे भी जारी रहा। बेरकाके उत्तराधिकारी बातू-पुत्र मङ्गू-तेमूर (१२६५–८० ई०) के साथ भी इसकी लडाइया होती रही। नोगाई-द्वारा पिताकी हारका बदला लेनेके लिये अबकाने राजकुमार यशमुतके अधीन एक बडी सेना ले १९ जुलाई १२६५ ई०को प्रस्थान किया। कुरा-तटपर पहुचकर दोनों ओरकी सेनाये दाव-पेच ढूढने लगी, और लडाई नही हो पाई।

२६ नवम्बर १२७० ई०को कुबिलेका भेजा यारलिक (शासन-पत्र) जगातमें मिला। अबका बराबर अपने चचा कुबिलेका पक्षपाती रहा, जब कि चगताई और ओगोताई-वशके खान उसके प्रति-द्वद्वी थे। जगताई-खान बोरक अबकासे खुरासान को छीनकर बहुत दिनोतक अपने अधिकारमे नही रख सका। अबकाने खुरासानका बदला ६७२ हि० (२९ VII १२७२–१९ VI १२७३ ई०)मे अन्तर्वेद तथा बुखाराको लूटकर लिया।

फारसीका महान् कवि (मुशर्रिफुद्दीन) **सादी** (११८४–१२९२ ई०) हुलाकू और अबका-के समयमें ही हुआ था, जिसने अपने दो महान् ग्रन्थो "बोसता" और "गुलिस्ता" को १२५७-५८ ई० में लिखा था। लेकिन, सादी-जैसा स्वतन्त्रचेता पुरुष मगोलोका दरबारी नही हो सकता था। सर्वश्रेष्ठ सूफी कवि मौलाना जलालुद्दीन **रूमी** (१२०७–७३ ई०) भी हुलाकू और अबकाके समयमे ही हुआ था। रूमी वस्तुत रूममे नही बल्कि १२०७ई० मे बलखमे पैदा हुआ था, जहासे वह अपने बापके साथ नेशापोर (खुरासान) गया और अन्तमे मक्का और दूसरी जगहोकी यात्रा करते बापके साथ क्षुद्र-एसियाके कोन्या (इकोनियम्) नगरमें रहने लगा। इसकी प्रसिद्ध कृति "मस्नवी" (कथाकाव्य) में सत्ताईस हजार शेर है, जिसका स्थान दुनियाके महान् काव्योमें है। सादी और रूमी हुलाकू-अबकाके कालकी उपज है, इसलिये उनकी कविताओपर उस समयकी स्थितिका प्रभाव पडना जरूरी है। सादीने वैरागियो और दरवेशोकी जिदगी पसन्द की, और मौलाना रूमीने वेदान्ती रहस्यवाद स्वीकार किया, इसका कारण मगोलोकी ध्वसलीलासे पैदा हुआ निराशावाद था।

३. अहमद तगूदर, निकोदर, हुलाकू-पुत्र (१२८२–८४ ई०)

अबकाके मरनेपर उसके भाईने गद्दी सभाली। उसने अपनी अयोग्यताको ढकनेके लिये इस्लाम स्वीकार किया, जिसपर मगोल बिगड गये और अबकाके पुत्र अरगूनने उसे मार डाला।

४ अरगून, अरगोन, अबका-पुत्र (१२८४–९२ ई०)

हुलाकूके समयसे ही राज्यका वजीर-आजम ख्वाजा शम्सुद्दीन चला आता था। उसके प्रभावको न सहकर अरगूनने ६८३ हि० (२० III १२८४–८ II १२८५ ई०) में उसे मरवा दिया। अरगूनको परेशान करनेके लिये बाप-दादोके समयसे ही किपचकोके साथ झगडा चला आ रहा था। २१ सितम्बर १२८६ ई० को अरगूनका शिविर मेरागमे पडा था। छिटपुट झडप होती ही रहती थी। इसी बीच २६ मार्च १२९० ई० को दूतोने आकर खबर दी, कि किपचक-सेना आगे बढती दरबन्द[1] आ पहुची है। किपचक और इलखानके झगडोमें दरबन्दका ज्यादा महत्त्व था। किपचकोके आनेकी खबर पाकर अरगूनने तुकाल, शिकतुर नोयन और कुजुकबलके नेतृत्वमे एक बडी सेना २७ मार्चको रवाना की। इस सेनामे तुगाचार और दूसरे मगोल अमीर भी थे। २१ अप्रैल (१२९० ई०) को सेनाका हरावल करासू नदीपर पहुचा। मेगलान बुका आदिके नेतृत्वमे उत्तरसे दो तुमान (बीस हजार) किपचक-सेना आ रही थी। इलखानियोने नदी पारकर उसपर आक्रमण किया। दुश्मनके तीन सौ सवार मारे गये और कितने ही बन्दी बने। ३ मई १२९० ई० को अरगून बिलियासुवरमे पहुचा। अन्तमे राजकुमार बैदूने विद्रोह करके इसे मार डाला।

---

१ दरबन्द (द्वारबन्ध) दो थे, जिनमे एक मध्य-एसियामें तेर्मिजके उत्तरके पहाडोका लौहद्वार था, और दूसरा बाकूसे उत्तर काकेशस पर्वत तथा कास्पियन समुद्रके मिलनस्थानपर।

सादी शाराजी इनीके समय (६६१ हि०) मरा। सादीने हिन्दुस्तान, काशगर और पश्चिममें मिस्रतककी यात्रा की थी। हुलाकूके शीराजके राज्यपाल अलाउद्दीन और उसके भाई दोनो वजीरआजम शम्शुद्दीन सादीके बडे भक्त थे, जिनके कारण सादीका परिचय अबकासे हुआ था, लेकिन यह नही कहा जा सकता कि अरगूनसे भी उसका परिचय था। सादीका बादशाहोसे ज्यादा मेल-जोल न था, तो भी उसने लिखा है—

बादशह सायये-खुदा बाशद्।
साया बा-ज़ात आश्ना बाशद्।

(राजा भगवान्की छाया है। छाया है यदि वह भगवान्से परिचित हो।)

अल्लामा कुतुबुद्दीन (मृत्यु १३११ ई०) तब्रेजी अपने समयका बडा विद्वान् था। अरगूनका कृपापात्र कवि औहदी (मृत्यु १३३७ ई०) इसी समय हुआ था। यही समय था, जब कि भारतमें अमीर खुसरो-जैसा फारसीका महान् कवि पैदा हुआ। खुसरोका बाप छिङगिसी हमलेके मारे बहुतसे दूसरे तुर्कोकी तरह मध्य-एसियासे भागकर भारत चला आया था। अमीर खुसरो जब मुल्तानके हाकिम सुल्तान मुहम्मदके दरबारमें था, उसी समय ६८३ हि० (२० III १२८४–८ II १२८५ ई०) अरगून खानके एक सेनापति तेमूर खानने बीस हजार सवार लेकर पजाबपर हमला किया, और लाहौर, दीपालपुरको लूटते-मारते वह मुल्तानकी ओर बढा। मुकाबिलेके लिये गया सुल्तान मुहम्मद मगोलो के सामने हारा और मारा गया। अमीर खुसरो और उनके साथी दूसरे कवि हसन देहलवी भी अपने स्वामीके साथ इस सघर्षमें शरीक थे। मगोल दोनोको बन्दी बनाकर बलख ले गये। अमीर खुसरो दो सालतक बलखमें रहा, जिसके बाद उसे छुट्टी मिली और वह लौटकर दिल्ली चला आया। इस घटनाका बडा ही करुणापूर्ण वर्णन अमीर खुसरोने अपनी कवितामे किया है, जिसको हम पहिले उद्धृत कर चुके है।

५ गैखातू, अबका-पुत्र (१२९२–९५ ई०)

अरगूनके बाद बेटेको वचित कर भाईको गद्दी मिलना यही बतलाता है, कि अभी सैनिक जनतन्त्रताका मगोलोमे बिलकुल उच्छेद नही हुआ था। गैखातूका समकालीन किपचक खान तोकताई बडा ही शक्तिशाली था, लेकिन पीढियोंसे लडते-लडते तग आकर अब वह चाहता था, कि काकेशसके लिये चलती रहनेवाली लडाई बन्द की जाय। उसने कोनिचि ओगलान (राजपुत्र) को शातिदूत बनाकर १३ जुलाई १२९३ ई० को भेजा। २८ मार्च १२९४ ई० (२८ रबी II ६९३ हि०) को तोकताईका भेजा दूसरा दूतमडल भी आया, जिसके मुखिया राजकुमार कलिनतई और उलाद थे। दलननोरमें उनसे बातचीत कर २ अप्रैल १२९४ ई०को गैखातूने बडे सम्मानके साथ उन्हें विदा किया। किपचकोकी ओरसे अब इलखानको कुछ निश्चितता-सी थी।

६ बैदू, तरगई-पुत्र (१२९५ ई०)

बैदू अधिक दिनोतक शासन नही कर पाया और जल्दी ही उसे हटाकर गाजनने सिहासन दखल कर लिया।

७ गाजन, अरगून-पुत्र (१२९५–१३०४ ई०)

गाजन इस्लामका धर्मराज कहा जाता था। इसमें शक नही कि उसके समयसे ईरानके मगोल-राजवशपर इस्लामका प्रभाव बहुत जोरसे पडने लगा। किपचक खानसे फिर झगडा शुरू हो गया। ३ मई १३०१ ई०को तोकताई खानका दूत आया, लेकिन सुलह नही हो सकी। इसपर गाजन एक बडी सेना ले शिरवान और गुर्जिस्तान होते दरबन्द पहुचा। तोकताईको उसकी सेनाके सामने हारकर भागना पडा। इलखानके प्रतिद्वद्वी मिस्रके सुल्तान-खलीफाके साथ किपचक खानका सबध अच्छा था, यह बतला चुके है। मिस्रका सुल्तान केवल राजा ही नही बल्कि खलीफा (धर्मगुरु) भी था। किपचक खान ने उसे अपनी लडकी दी थी। गाजनने अपनी ओरसे काजी नासिरुद्दीन तब्रीजी और काजी कमालुद्दीन मोसली को दूत बनाकर तोकताईके पास भेजा। मिस्री दूतमडल हिल्लामें आकर गाजनसे बातचीत कर रहा था। इसी समय २१ जनवरी १३०२ ई०को तोकताईके भी दूत तीन सौ सवारोके साथ आ पहुचे।

गाजन किपचक-दूतमडलसे वहुत अच्छी तरह मिला। तोकताई अपने प्रभावशाली वृद्ध सेनापति नोगाईके झगडेसे निवट चुका था, और अब अर्रान और आजुर्वाइजानको लेना चाहता था। उसका कहना था—पितामह छिड.गिस्ने यह प्रदेश वातू खानको दे दिया था। लेकिन, गाजन तलवारसे जीते इलाकेको वात-से कैसे लौटा सकता था ? उसने धमकी दी—यदि हमारी वात नही मानोगे, तो तुम्हारे विरुद्ध करा-कोरमसे किमियातककी सारी शक्ति तथा दस तुमान (एक लाख) सेना डेरोमे तैयार खडी है। गाजनने यह भी कहा—हुलाकूके समयसे ही यह भूमि हमारी है। भूमि लौटानेकी वात तलवारकी भाषामे ही हो सकती है।

३० जनवरी १३०३ ई०को नववर्षका पर्व आया। राज्यके वजीर, अमीर, गुरजी (जार्जिया) अर्मनी, रोमके राजा एव खुरासान-मिस्र-सिरिया आदिके लोग भी भेंट लेकर आये। तीन दिन तीन रात वडे धूमधामसे महोत्सव मनाया गया। दान-इनाममे इस्लामके सुल्तानने वडी उदारता दिखलाई। इतिहासकार वस्साफ गाजनको इस्लामका सुल्तान कहता है, लेकिन इस्लामका सुल्तान वननेसे पहले गाजनने ईरानमे एक वडा वौद्ध विहार वनवाया था। पर, जब उसने देखा, चीन और मगोलिया यहासे वहुत दूर हैं, इसलिये वहा सर्वत्र प्रचलित वौद्ध-धर्म इस्लामी ईरान-इराकमें कोई सहायता नही दे सकता, तो वह मुसलमान हो गया।

गाजनके समय रशीदुद्दीन फज्लुल्ला (१२४७–१३२८ ई०) गणित, दर्शन और चिकित्सा-शास्त्रका उच्च कोटिका विद्वान् था। अवकाका वह विश्वासपात्र दरवारी था। गाजनने उसे अपना वजीर वनाया। अवूसईदने थोडे दिनोके लिये उसे हटा दिया था, पीछे उल्जैतूको विरेचनमे जहर देकर मारनेका अपराध लगा, उल्जैतूके पुत्र इब्राहिमने उसे मरवा दिया। रशीदुद्दीन अपने समयका वहुत वडा इतिहास-कार भी है। उसकी पुस्तक "जामे-उत्-तवारीख" एक विशाल और वहुमूल्य इतिहासग्रथ है।

८. उल्जैतू, मुहम्मद खुदाबन्दा, अरगून-पुत्र (१३०४–१७ ई०)

इलखानोने वगदादके खलीफाको खतम किया, लेकिन मिस्रके खलीफाका वह कुछ विगाड नही सके। वगदादका खलीफा सुन्नियोका धर्मगुरु था, और मिस्रका खलीफा शियोका। उल्जैतूने इस्लाम-प्रेम दिखलानेके लिये अपना नाम मुहम्मद खुदावन्दा रखा। ईरान अभी शियोका नही हुआ था, लेकिन उल्जैतूने अपनेको शिया दिखलानेके लिये शियोके वारह इमामोके नामवाले सिक्के चलाये। उल्जैतूका अपने प्रतिद्वद्वी किपचकखानो तोकताई और उज्वेक (१३३३–४० ई०)से मुकाविला था। ३१६ ई०में किपचक-राजकुमार वावा ओगलान भागकर उल्जैतूकी शरणमें आया। उसने उसे सहारा दिया। वावा तुरत ही अपनी सेना लेकर ख्वारेज्मपर चढ गया, जो उज्वेकखानके राज्यमे था। इसके लिये उज्वेकने दूत भेजा और किस तरह वावा ओगलान ख्वारेज्मसे मारकर भगाया गया, यह हम पहले कह आये हैं।

मगोलोके शासनकालमें जिस तरह शरीयतके विद्वानों और सूफी कवियोकी कृतिया अधिक प्रचलित हुई थीं, उसी तरह फारसी गद्य-कथासाहित्यके विकासका भी यही समय था। तुगराई (मृत्यु १३२४ ई०) मशहदी इस समयका वहुत वडा कथाकार था, जिसके "मिरातुल्-मफतूह", "कुजुल् मआनी", "चश्मये फैज" आदि कितने ही कथाग्रन्थोका वहुत मान हुआ।

९ अबूसईद, उल्जैतू-पुत्र (१३१७–३५ ई०)

अवूसईद कम उमरमें ही गद्दीपर वैठा था, इसीलिये शासनका सारा प्रवन्ध उसके सेनापति अमीर चोवानके हाथमे था। चोवानने उज्वेक खानकी सेनाको खदेडकर दरवन्दके पार तेरेक नदीतकके प्रदेशको लूटा था, इसलिये उसका प्रभाव वहुत अधिक हो गया था। उसके नौ पुत्रोमें सवसे वडा अमीर हसन खुरासान और माजदरानका राज्यपाल था, और हसनका वडा पुत्र तालिश अस्पहान पारस-केर-मानका। हसन और तालिशका वापसे झगडा हो गया, जिससे चोवानने उनपर आक्रमण कर दिया। हसन और तालिश दहिस्तानके रास्ते ख्वारेज्म भागे। वहाके राज्यपाल अमीर कुतुलुक तेमूरने उनका स्वागत करते उज्वेकखानके पास भेज दिया। उज्वेकने उनकी वडी खातिर की। चेरकासियोके खिलाफ उज्वेक खानकी ओरसे लडते हुए हसन घायल हो गया। उज्वेकने वडी चिकित्सा कराई, लेकिन वह न वचा। उसका लडका वहुत दिनोतक जीता रहा।

७३५ हि० (१ सितम्बर १३३४–२३ जुलाई १३३५ ई०)मे उज्वेकखानकी सेनाने फिर दश्तेखाजार—कास्पियनके उत्तर-पश्चिमतटके मैदानी प्रदेश—के रास्ते अर्रान और आजुर्बाइजानपर आक्रमण करनेके लिये प्रस्थान किया। अबूसईद भी खबर सुनकर मुकाबिलेके लिये चला, किन्तु करावाग-में ३१ अक्तूबर १३३५ ई० (१० रबी I ७३६ हि०) को इस "दीनदार नेककिर्दार बादशाहके प्राण-पक्षीने शरीरके पिजडेसे उडकर उत्तम स्वर्गको घर बनाया।" उज्वेकखानने अपनी सेनासहित आगे बढ कुरा नदी तकके सारे इलखानी प्रदेशको बरबाद कर दिया। तारीफ यह कि मुसलमान इतिहासकारोंके लिये अबूसईदकी तरह उज्वेक खान भी धर्मराज था। दरबारी कवि औहदीने अपने सरक्षक अबूसईदकी तारीफमें अपनी मस्नवी "जामेजम"में लिखा है—

दो जहां रासिलयं-ईद जदन्द।
-सिक्क बर-नाम बूसईद जदन्द॥
दर्-चमन गुफ्त बुलबुल ओ कुमरी।
मदहि-गुल गुली उलुल-अमरे॥

(दोनो लोकोंकी खुशीका पारितोषिक किया, अबू-सईदके नामपर सिक्का चलाया। उपवनमें बुलबुल और कुमरीने इस फूलकी तारीफ की।)

अबूसईदके मरनेपर भारी शोक मनाया गया। मस्जिदोके मीनारोंको शोक-प्रकाशक कपडोंसे ढाक दिया गया था।

अबूसईदके बाद हुलाकू-वंशका पतन बहुत जल्दी-जल्दी होने लगा और ग्यारह वर्षोंके भीतर ६ खान गद्दीपर बैठे।

अबूसईदके समय "तारीखे गुजीदा" नामक इतिहासके बहुत सुदर ग्रथका लेखक हम्दुल्ला मुस्तौफी (मृत्यु १३४९ ई०) हुआ था। मुस्तौफीने अपने ग्रथको प्रसिद्ध इतिहासकार रशीदुद्दीनके बेटे गयासुद्दीनको समर्पित किया था। इस ग्रन्थके उद्धरण फज्लुल्ला-पुत्र अब्दुल्ला शीराजी (मृत्यु १३२८ई०) ने अपने ग्रथ "तारीखे वस्साफ" में दिये हैं। दिल्लीके फारसी कवि अमीर खुसरो (१२५३–१३२५ ई०) का यह समकालीन था।
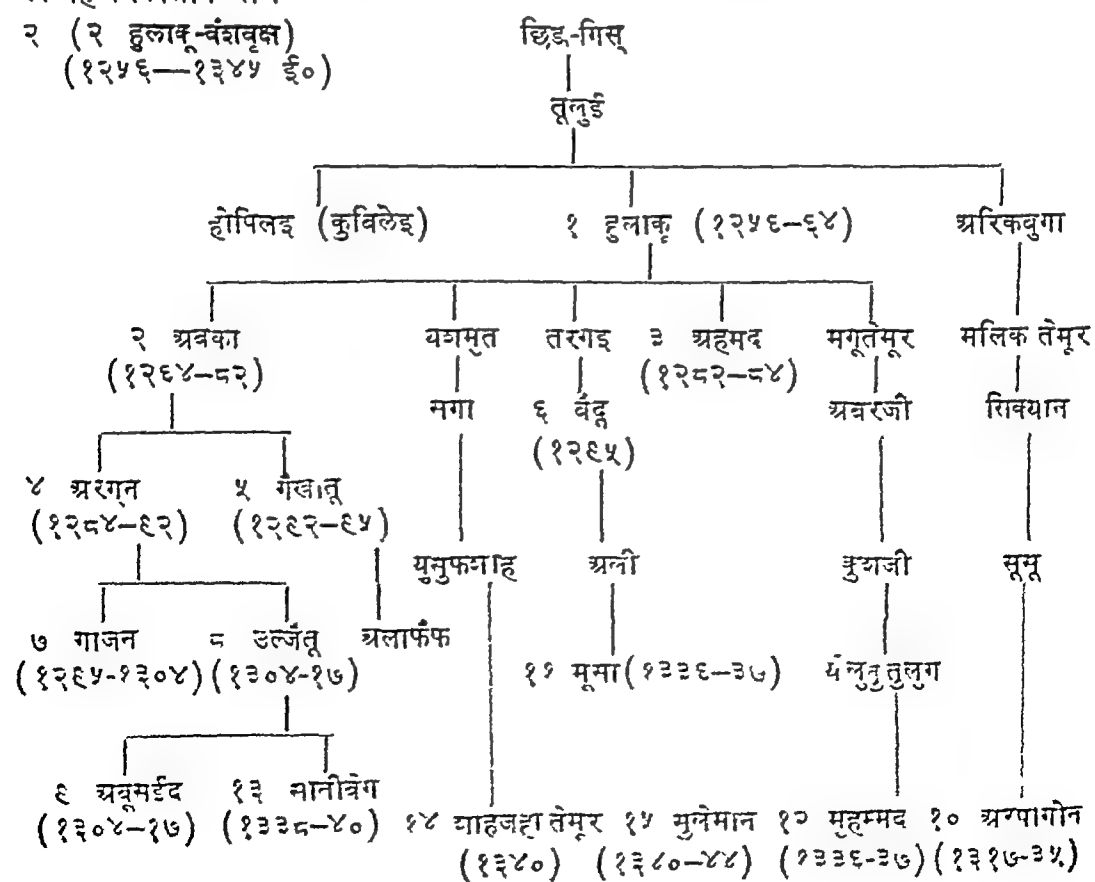
अबूसईदके बाद अब छिङगिसी राजकुमार पूरी तौरसे मुसलमान थे। मंगोल अब संस्कृतिहीन नही थे, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता, न्यायप्रियता आदि गुणोके कारण उनकी संस्कृति उच्च स्तरकी थी; किन्तु इस्लामके समुद्रमे उनका कोई बस नही चला। दरबारियोने जब शक्ति हथिया ली, तो गुडिया खानको कभी अपने शक्तिशाली वजीरोको प्रसन्न करनेके लिये और कभी प्रजाके प्रभावशाली वर्गको अपनी ओर करनेके लिये इस्लाम लाना जरूरी था। अन्तमें मंगोल-वंशकी समाप्ति होकर इसकी जगह पाच छोटे-छोटे राजवंश कायम हुये, जिनका अन्त तेमूरलंगने अपने दिग्विजयमें किया। यह पाचो खानदान थे—(१) जलायर, (२) मुजफ्फरी, (३) सर्वदारी, (४) बनीकर्त्त और (५) चोबानी। जलायर सुल्तान ओवेसके बाद सुल्तान अहमद हुआ, जिसे १३८० ई०मे तेमूरने खतम किया।

हजारा—मंगोलोके शासनकालमे जो मंगोल इधर आकर रह गये थे, उनमेंसे कुछ तो साधारण तुर्क जन-समूहमे विलीन हो गये, किन्तु कुछ घुमन्तू हिन्दूकुश (हिन्दूकोह)की उपत्यकाओमे जाकर कृषक और पशु-पालका जीवन बिताने लगे। इनके पचीस कबीले थे, जो आजकल हजाराके नामसे अफगानी-ताजिको और वक्षु-उपत्यकाके दक्षिणवाले तुर्कोंके बीचमे रहते है। इनकी भाषा तुर्की नही, एक तरहकी फारसी है, लेकिन बाबरके समयतक यह मंगोल-भाषा बोलते थे। अबुलफजल (अकबरके प्रधान-मंत्री)ने इन्हें मङ्गू खानका वंशज कहा है, और यह भी उल्लेख किया है, कि इनकी स्त्रिया पुरुषो जैसी ही लडनेमे बहादुर होती है। अफगानिस्तान और सोवियत मध्य-एसियाके सुन्नी मुसलमानोके महासमुद्रके बीचमें अपनेको शिया बनाये रखना हजारोकी विशेषता है। विद्वानोने इनकी भाषामें कितने ही मंगोल शब्द भी ढूढ निकाले है।

साहित्य—इलखानियोके समयमें फारसी गद्य-पद्य-साहित्यकी रचनाये बढी, यद्यपि इस साहित्यमे निराशावादकी ही प्रधानता है। इस कालकी कविता तीन श्रेणियोमे बाटी जा सकती है—सूफी रहस्यवाद, गजल (प्रेम-पत्र), कसीदा (स्तुतिप्रशंसा) और उपदेश।

इनमे सूफी कवि थे—फरीदुद्दीन अत्तार (१११६–१२२६ ई०)–जिसे प्रथम मंगोल आक्रमणमे एक मंगोल सैनिकने मार डाला, सादी, औहदी, इराकी और मगरदी।

गजलके कवि थे—मौलाना रूमी, सादी और हाफिज।

कसीदाके कवि—कमाल इस्माईल और सुलेमान सावजी।

उपदेशात्मक रचना करनेवालोमें निपुण थे—सादी और इब्न-यमीन।

अध्याय ३

तेमूर-वंश

(१३७०–१५०० ई०)

१ तेमूरलग (१३७०–१४०५ ई०)

तेमूरके पिता तुरगाई बरलसको अमीर कजगनने केश (शहरसब्ज) और नख्शेव (करशी)के इलाके दिये थे। अपने स्वरचित जीवनचरित्र "तुजुकाते-तेमूर"[१] मे तेमूरने लिखा है—"बारह वर्षकी उमरमे ही मुझे अपनी असाधारण बुद्धि और दिमागी शक्तिका पता लगने लगा, और मैने अपनेको अध्ययन और आत्मसयमका अभ्यासी बनाया। अठारह सालकी उमरमें मै खेलो और बहादुरीके विनोद-कार्योमे अपनी चतुराईके लिये कम अभिमान नहीं रखता था। मै अपना समय कुरान पढने, शतरज खेलने तथा बहादुरोके अनुरूप दूसरे खेलोमे बिताता था।" १३५६ ई० में तेमूरके पिताने उसे अमीर कजगनके पास दूत बनाकर भेजा। कजगन उससे इतना प्रसन्न हुआ, कि उसने अपने लडके सेला-खानकी बेटी ओलजे तुरकान खातूनसे उसका ब्याह कर दिया और "मिगवाशी" (सहस्रपति)का पद दे हुसेन कर्त (खुरासान)के विरुद्ध अभियानमे जाते समय तेमूरको अपने साथ ले गया। अभियान सफल रहा, किंतु इसी समय कजगनकी हत्या कर दी गई और थोडे ही समय बाद तेमूरका पिता भी मर गया। अमीर कजगनके पौत्र अमीर हुसेनके साथ तेमूरकी मित्रता हो गई। अभी वह अमीर कजगनकी हत्याका बदला लेनेकी सोच रहे थे, कि मुगोलिस्तानका खान तुगलक (ध्वजाधारी) अन्तर्वेदपर चढ दौडा।

हम कह आये है, कैसे अन्तर्वेदके चगताई-राज्यकी डावाडोल स्थितिको देखकर जाते (सीमाती) मुगोलिस्तानके खान तुगलक (ध्वजाधारी) तेमूर[२] ने ७६१ हि० (२३ XI १३५९—१३ X १३६० ई०) मे काशगरके रास्ते आकर आक्रमण किया। खोजन्द नदी पार कर लेनेपर अमीर बायजीद जलायर उससे आ मिला। दोनो शहरसब्ज (केश) की ओर बढे। तेमूरलगके चचा हाजी बिरलसने पहले मुकाबिला करनेका ख्याल किया, लेकिन फिर उसे व्यर्थ समझकर खुरासानकी ओर भागना ही अच्छा समझा। चचाकी सलाहसे तेमूरलग किस तरह लौटकर समरकन्दमें प्रधान बना, इसके बारेमे हमने अन्यत्र बतलाया है। तेमूर और उसके वशज अपनेको छिङ-गिस्-वशी सिद्ध करनेकी बहुत कोशिश करते है। भारतमें तो उसके वशजोने अपने खानदानका नाम ही मुगल रख दिया। लेकिन, वस्तुत वह छिङगिस्-वशज नही थे। कुछ इतिहासकारोने उन्हें चगताई-सेनापति कराचार नोयनके वशका बतलाकर मगोल सिद्ध करनेकी कोशिश की है, लेकिन वस्तुत बिरलस तुर्क थे। हा, वह उन तुर्कोमेंसे थे, जो कि मगोलोके मध्य-एसियाकी ओर बढनेके समय उनकी सेनामें बहुत भारी सख्यामे शामिल हो गये। वह मगोलोके विश्वासपात्र सरदारोमेंसे थे, लेकिन जब मगोल-शक्ति निर्बल हो गई, तो वह उनके तुर्क-प्रतिद्वद्वी बन गये। अमीर कजगनके बाद इनका जोर अन्तर्वेद और तुर्किस्तान (मध्य-सिर-उपत्यका)में बढा। मगोल-राज्यकी बदर-बाटके समय तेमूरका पिता हाजी तुगाई बिरलस तुर्कोकी कोरकान (गूरगान) शाखाका मुखिया और केश (शहरसब्ज) इलाकेका स्वामी बन गया, जिसके मरनेपर उसका उत्तराधिकारी उनका भाई हाजी बिरलस हुआ—

१ "तुजुकाते-तेमूर" (तेमूरके नियम) तुर्कीमे लुप्त तथा फारसी अनुवादमे ही प्राप्य है।

२ जन्म ७३० हि० (२५ X १३२९—१५ IX १३३० ई०), गद्दी ७४८ हि० (१३ IV १३४७—३ III १३४८ ई०), मुसलमान ७५४ हि० और मृत्यु ७६४ हि० (२१ X १३६२—११ IX १३६३ ई०)

हाजी विरलमको किन्ही-किन्ही इतिहासकारोने तेमूरलगका भाई भी लिखा है। तेमूरलगके वापका स्थान हाजी विरलसने लिया, इसमे कोई मतभेद नही है। यही केश नगरमे ५ शावान ७३६ हि० (१९ मार्च १३३६ ई०)को तेमूर पैदा हुआ। वचपनसे ही उसमे नेतृत्वके लक्षण दिखलाई पडने लगे। लडकोकी पचायत और शिकारमे निपुणता दिखलाकर सावित कर रहा था, कि वह एक कुशल शासक और सैनिक होगा। तुगलक तेमूरने तेमूरलगके आनेपर उससे प्रभावित हो ७मे केशका हाकिम वना दिया। जव खान काशगर लौट गया, तो अमीरोमें झगडा वढ चला। अगले साल ७६२ हि० (११ XI १३६०—२ X १३६१ ई०)मे खान फिर अन्तर्वेद आया और अमीरो-को भगाकर उसने समरकन्दपर फिर अधिकार कर वहाका शासन अपने पुत्र इलियास खोजा ओग-लानके हाथमें दिया और तेमूरलगको उसका मुख्य-पारिषद् (अतालीक) नियुक्त किया। लेकिन तेमूरकी दूसरे अमीरोसे नही पटी और वह अमीर कजगनके पौत्र तथा अपने साले अमीर हुसेनकी खोजमें भाग निकला।

समरकन्दसे भागनेके वाद तेमूर कराकुमके उसी रेगिस्तानकी ओर गया, जो कि उत्तराभिमुख वक्षुसे कास्पियन समुद्रतक फैला हुआ है। यहा उसे वहुत तकलीफ उठानी पडी। निर्जन मरुभूमिमे खानेका भी ठिकाना नही था। तेमूर अपने तुजुकातमे लिखता है—मै और मेरी पति-परायणा पत्नी ओल्जाई अमीर हुसेनसे मरुभूमिमें मिले और फिर महीने भर रात-दिन रेगिस्तानमें भटकते रहे। कितनी ही वार हमें अन्न और जल भी मुयस्सर नही हुआ। अन्तमे एक तुर्कमानने हमे पकडकर वन्दी वना लिया और ओल्जाईको एक ऐसी पशुशालामे ले जाकर वन्द कर दिया, जो पिस्सुओ और खट-मलोसे भरी थी। तेमूर किसी तरह साले और वीवीके साथ वहासे भागकर केश पहुचा। थोडे ही दिनो-मे उसके पुराने साथी उसके पास जमा हो गये, जिनके साथ वक्षु पार हो वह दक्षिणके इलाके (पुराने वाह्लीक)मे चक्कर काटता रहा। अन्तमे लूट-पाट करनेके लिये सीस्तानके ऊपर आक्रमण किया और वलूचियोने एक किला छीन लिया। लेकिन जल्दी ही लोगोने उसके ऊपर आक्रमण किया, जिसमें उसके पैरमे चोट लग गई और वह जिन्दगीभरके लिये लग (लगडा) हो गया। मगोलो और तुर्को-में तेमूर नाम वहुत अधिक पाये जाते है, जिनसे अलग करनेके लिये वह इतिहासमे तेमूर-लग (तेमूर लगडा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। तेमूरके साले हुसेनने इसी समय वलखपर अधिकार कर लिया। तेमूर भी वही चला गया। धीरे-धीरे तेमूरके पद्रह सौ अनुयायी हो गये। ७६५ हि० (१० अक्तूवर १३६३—३० अगस्त १३६४ ई०) में इलियास खोजाकी सेनाके साथ उसकी प्रथम भिडत वक्षुके वाये तटपर कुदुजके नजदीक हुई। यद्यपि इलियासकी सेना पाचगुनी थी, लेकिन तेमूरने उसपर पूर्णतया विजय प्राप्त करके सेनाको नदी पार भगा दिया। इसी समय पिताके मरनेकी खवर सुनकर इलियास वापकी गद्दी सभालने अलमालिककी ओर दौडा, और तेमूर वहुत आसानी-से जेतो (मगोलिस्तानियो)को अन्तर्वेदमे निकालनेमे सफल हुआ। अव तेमूर अपनी जन्मभूमि-का स्वामी था, लेकिन प्रतिद्वद्वियो और वाधाओकी कमी नही थी, इसलिये उसने प्रभावशाली सरदारो की एक कूरिल्ताई वुलाई, जिसमे रिक्त सिहासनपर कावुलशाहके वैठानेका निर्णय हुआ। तेमूर-वशने अवूसईदके समय (१४५१-५२ ई०)तक मगोल खानोको समरकन्दकी गद्दीपर वनाये रक्खा, जो यही वतलाता है, कि अन्तर्वेदके लोगोमे छिन्नगिमी राजवशके साथ एक विशेष तरहका लगाव स्थापित हो गया था। खानकी जगह सभालनेपर तेमूरको भारी विरोधका सामना करना पडता।

जाडा वीतते ही इलियास खोजा एक वडी सेना लेकर फिर अन्तर्वेदकी ओर आया। तेमूरका शिविर उस समय चिनाम और ताशकन्दके वीचमें था। हुसेनने सिर-दरियाको पार कर लिया। लडाईमे दो हजार आदमियोको मरवाकर हुसेन अपनी राजवानी सालीसराय (नदीके परले तट-पर) चला गया और तेमूर करशीकी ओर भागा। जेतोने फिर समरकन्दको ले लिया। इसी समय तेमूरकी मददके लिये जेतोके घोडोमें महामारी फैल गई, जिसमे वहुत सारे घोडे मर गये और उन्हें अपना सामान पीठपर ढोनेके लिये मजवूर होना पडा। वह अन्तर्वेद छोडकर चले गये। तेमूरके लिये यह वहुत अच्छा अवसर मिला था, किन्तु इसी समय हुसेनसे उसका विगाड हो गया, जिसके

कारण उससे पूरा फायदा नहीं उठा सका। हुसेनने पहले धोखेसे तेमूरको खतम करवाना चाहा, जब उसमें सफलता नहीं मिली, तो उसके खिलाफ अमीर मूसाको सेना देकर भेजा। मूसा बलखसे वक्षु पार हो उत्तरकी ओर बढ़ा, लेकिन तेमूरने उसे हरा दिया। फिर हुसेन स्वयं सालीसरायसे एक भारी सेना लेकर चला। तेमूर करशी होते बुखारा लौटा फिर अन्तर्वेद छोड़ ख्वारेज्मकी ओर भाग गया। हुसेन अब सारे अन्तर्वेदका स्वामी था। तेमूरने जाड़े भर तैयारी की। वसंत शुरू होते ही एक छोटी किन्तु बहुत ही सुशिक्षित और बहादुर सेनाके साथ आक्रमण कर उसने ताशकन्द ले लिया, फिर समरकन्द और करशीसे अपने प्रतिद्वंद्वीकी सेनाको चीरते वह जलायर अमीर कैखुसरोसे जा मिला। कैखुसरोने अपनी लड़कीका तेमूरके पुत्र जहांगीरसे ब्याह कर भारी सेनासे उसकी मदद की। तेमूरने पीछे मुड़कर हुसेनको वक्षुपार मार भगा दिया। जेतोके सामन्त अमीर जलायरसे तेमूर-का मेल हुसेनके लिये बहुत भयंकर था और अन्तमें उसने बहनोईसे संधि कर ली। हुसेनको तेमूरने उसके विद्रोही सामन्त बदख्शाके हाकिमको दबानेमें सहायता भी दी। लेकिन, जब तेमूरके ऊपर जेतोंने प्रहार किया, तो हुसेनने विश्वासघात किया, और अन्तमें हारकर तेमूरके हाथमें बन्दी हुआ। तेमूर उसे मारना नहीं चाहता था, लेकिन उसके अमीरोंने बहुत जोर दिया और अन्तमें ७७१ हि० (५ VIII १३६९—२९ VI १३७० ई०)में उसे अपने बहनोईको मरवाना पड़ा।

अब तेमूरका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं रह गया था। इसी समय १३६९ ई०में बलखमें उसने एक बड़ी कूरिल्ताई बुलाई, जिसमें चगताई-राज्यके सभी अमीर, तेमूरके गाढ़े दिनों और लग्णाईके साथी तथा उसके पुराने प्रतिद्वंद्वी भी शामिल हुए। सबने तेमूरको अपना शासक स्वीकार किया और मंगोलों तथा उनके पूर्वजोंके समयसे चली आई प्रथाके अनुसार ८ अप्रैल १३६९ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) को तेमूरलंगको एक सफेद नम्देपर बिठाकर उसे चारों ओरसे पकड़कर उठाया, और धर्मगुरु सैयद बरकाद्वारा अल्लाहकी दुआ पढ़े जानेके बाद अमीर घोषित किया। वक्षुके दक्षिणवाले प्रदेशपर अपना दृढ़ शासन स्थापित कर तेमूरने समरकन्दको अपनी राजधानी बनाया।

७८२ हि० (७ IV १३८०—२६ II १३८१ ई०) में तेमूरने अपने पुत्र मीरांशाहको खुरासानपर अधिकार करनेके लिये पहले भेज फिर स्वयं भी वहां पहुंचा। इस समय ईरान कई राजवंशोंमें बंटा हुआ था। उनमेंसे सर्वेदार-वंश था, जिसके—(१) अब्दुर्रजाक (एक वर्ष दो मास), (२) मसऊद (७ वर्ष), (३) शम्सुद्दीन, (४) लोगान तेमूर, (५) कल्लाव हैदर, (६) यहिया करनी, (७) हसन दम्गानी, (८) अली मोवैयद अब्दुर्रजाक—आठ शासकोंने उत्तरी ईरानपर पैंतीस साल शासन किया। अन्तिम शासक अब्दुर्रजाकने तेमूरकी अधीनता स्वीकार कर ली। खरासानमें हिरातको राजधानी बना कर्तिवंश शासन कर रहा था। तेमूर इसी वंशके खिलाफ चढ़ा। राजधानी-के पास भारी लड़ाई हुई। कितने ही नगर काबूशान, तूस, नेशापोर, सब्जवार ध्वस्त होकर ईंटों और मिट्टीके ढेर बन गये। खुरासानके बाद तेमूरने सीस्तान, बलोचिस्तान और अफगानिस्तानपर आक्रमण किया। इस प्रकार १३८६ ई० (७८८ हि०)में वह ईरानपर आक्रमण करनेके लिये स्वतंत्र था। इस्फहानका सारा इलाका और पारस मुज्जफरी-वंशके हाथमें था। इराक और आजुरबाइ-जानके इलाके अब भी इल्खानी अमीर चोबानके वंशके हाथमें थे। बगदादने बिना प्रहारके ही अधीनता स्वीकार कर ली, इस प्रकार खिलाफतकी राजधानी तेमूरके हाथमें आ गई।

ईरानपर विजय प्राप्त करनेके बाद तेमूर समरकन्द लौटा। समरकन्दका भाग्य जाग उठा। तेमूरने अपने दरबारको बड़े ही दबदबेके साथ सजाया। समरकन्दमें एकसे एक सुंदर महल, मस्जिदें और मदरसे बनवाये, जिनके बनानेके लिये शाम, ईरान और भारततकके वास्तु-शास्त्री और शिल्पी बुलाये गये। लाखोंकी संख्यामें देश-विदेशोंके दास-दासियोंमेंसे काफी समरकन्दमें लाये गये, जिनके कारण समरकन्दके शिल्प और उद्योगको आगे बढ़नेमें बड़ी सहायता मिली।

तोख्तामिशपर आक्रमण—इसी वक्त पहलेके आश्रय-प्राप्त किपचक खान तोख्तामिशने तेमूरका झगड़ा हो गया और उसे अपने उत्तरी पड़ोसी शक्तिको तोड़नेकी आवश्यकता पड़ी। तोख्तामिश सिरदरियाके रास्ते सफल न होनेपर १३८५ ई०में काकेशसके रास्ते तब्रेजपर जा पड़ा, और इस्लामियोंके

समयसे चले आते इस समृद्ध नगरको लूटकर बर्बाद कर दिया। इसका बदला लेनेके लिये १३८७ ई० में तेमूरने काकेशसके रास्ते दरबन्द पहुच तोकतामिशको बुरी तरह हराया। १३८८ ई० (७९० हि०)मे तोकतामिशने सिरदरियाकी ओरसे भारी आक्रमण किया। तेमूरको उसके लिये ७९२ हि० (२० XII १३८९—१० XI १३९० ई०)मे प्रथम महाभियान करना पडा। वह सिर-दरियाके पार हो उत्तरमे बढने-बढते ६ अप्रैलको वोल्गारोकी भूमिमे अवस्थित कुचुकताग (लघु-पर्वत) मे पहुचा। फिर उलुगताग (महापर्वत)पर चढकर उसने आसपासकी भूमिका अवलोकन किया। यहीपर उसने २८ अप्रैल १३९१ ई०को एक शिलालेख लिखकर स्थापित किया।

आगे तोकतामिशको तेमूरने कैसे हराया, इसका वर्णन हम पहिले कर चुके है *।

उस करारी हारके बाद भी तेमूरके हटते ही तोकतामिश फिर सबल हो उठा, जिसके लिये तेमूरको २५ फर्वरी १३९३ ई०मे दूसरा महाभियान काकेशसके रास्ते कास्पियनसे पश्चिम-पश्चिम करना पडा। १३ अप्रैलको वह तेराक नदीपर पहुच गया। तोकतामिशको हारकर पीछे भागना पडा। तेमूर उसका पीछा करके आगे वोल्गाके किनारे-किनारे सराय पहुचा। नगरवासियोको घर छोड बाहर निकल जानेका हुकुम दे उसे खूब लुटवाया। फिर मास्कोकी ओर जाना चाहता था, जिसके लिये भगवान्की मा (मरियम)का बडा जुलूस निकाला गया, बडी पूजा-प्रार्थना की गई, और भगवान्की माने मास्कोको बचा लिया। तेमूरने क्रिमियाके बडे नगर अजाकको भी लूटा। सोना, चादी और रतन लदवाये तथा सुदर दास-दासियोके समूहको लिये वह दरबन्दके रास्ते लौटा। तेमूरकी विजय-यात्राओमे छिङगिस्की विजय-यात्राने प्रेरणा दी थी, लेकिन जहा छिङगिस् हर एक विजयपर अपना दृढ शासन स्थापित करता था, वहा तेमूरके बहुतसे अभियान केवल लूटमारके लिये होते थे।

७९९ हि० (५ X १३९६–२६ VIII १३९७ ई०)में पाच सालकी अनुपस्थितिके बाद तेमूर राजधानी समरकन्द लौटा। वक्षु-तटपर अपनी खातूनो, पुत्रियो-पौत्रियो तथा राज-कुमारोके साथ पहुचनेपर लोगोने उसका अपार स्वागत किया। खुशीमें उसने सोना और जवाहर लुटाये। तेमूर साठ वर्षका हो चुका था। इसी समय उसने तौकेल खानमसे शादी करके उसे "दिलकुशा" प्रासाद प्रदान किया। अभी भी उसकी लूटसे तृप्ति नही हुई थी, और अब उसकी नजर सिंधु और गगाकी ओर थी।

भारतपर आक्रमण—८०० हि० (२४ IX १३९७—१५ VIII १३९८ ई०)को उसने भारतके लिये प्रस्थान किया। उसका पौत्र पीर मुहम्मद पहले ही आकर मुल्तानका मुहासिरा किये हुये था। तेमूर बलख और हिन्दूकोहके रास्ते काबुल पहुचा। ८०१ हि०के पहले दिन (१३ सितम्बर १३९८ शुक्र) उसने सिंध नदीको पार किया। रास्तेमें नगरोको लूटता और लोगोकी लाशो-से सडकोको पाटता जब सतलजके किनारे पहुचा, तो पीर मुहम्मद भी उससे आ मिला। फिर भारतकी राजधानी दिल्लीकी बारी आई। बदियोके मारे जल्दी चलनेमे रुकावट हो रही थी, इसलिये उनसे छुट्टी पानेके लिये उसने एक लाख बदियोको कतल करवा डाला। यह इतना अमानुषिक कार्य था, जिसे करनेकी हिम्मत कुछ जल्लाद नही कर सकते थे, इसलिये सारी सेनाको हुकुम हुआ, कि हर एक आदमी इस काममे सहायता करे। इतिहासकार नासिरुद्दीन इसका बडा करुणापूर्ण वर्णन करता है। उसके लिये अपने पद्रह हिन्दी दासोका मारना बहुत मुश्किल हो गया था। जो जरा भी ढिलाई करता, उसे पीटा जाता। अपने व्यापार और राजसी वैभवके लिये प्रसिद्ध दिल्लीने अपना खजाना तेमूरके लिये खोल दिया, लेकिन तेमूरने दया नही दिखलाई। वही हालत मथुराकी हुई—वहाके मदिर ध्वस्त कर दिये गये और मूर्तिया तोड दी गई। रास्तेमे हर एक आदमीको मारते और लूटनेसे बची हर एक चीजको नष्ट करते तेमूर हरिद्वारकी ओर पहाडके भीतरतक घुस गया। उसके इतिहासकारोने गढवालके पर्वतवासियोके भीषण प्रतिरोधका वर्णन किया है, लेकिन तब भी वहाकी राजधानी तेमूरके हाथसे बच न सकी। कुछ लोगोका मत है, कि तेमूर देहरादून-

---

* विशेषके लिये देखो पृष्ठ ५६-६२

की तरफ गया था, लेकिन उस समयके अलकनन्दा और भागीरथीके प्रदेशोका केन्द्र दूनकी उपत्यका नही, वल्कि श्रीनगरके आसपास कहीपर था। वहासे उसे लूटमें वहुतसा धन मिला था।

यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि तेमूरकी भारतपर चढाई केवल लूट-पाटके लिये हुई थी। भारतसे अपार सम्पत्ति और लाखो दास-दासी लेकर तेमूर उसी साल (१३९८ ई०) समरकन्द लौट गया।

सिरिया-विजय करते समय वहाके शासक मिस्रके ममलूकोको हुलाकूकी तरह तेमर भी नही दवा पाया। दुवारा हम्ला करके वह उनके हाथसे दमिश्कको ही छीन सका।

सिरिया-विजयके वाद ८०५ हि० (१४०३ ई०)के वसतमें क्षुद्र-एसियाकी विजयके लिये तेमूर सिवास और कराशहर होते यनकुरु (अगोरा)के मैदानमे पहुच सुल्तान वायजीदसे भिडा। उसमानअली तुर्कसेना तेमूरके सामने पूरी तौरसे पराजित हुई। सुल्तान वायजीद अपने रनिवासके साथ तेमूरका वदी वना। अव सारे क्षुद्र-एसिया (भूमध्य-सागरसे काला-सागरके तटतक)का स्वामी तेमूर था। यहासे लौटकर जव तेमूर समरकन्द गया था, उसी समय स्पेनके राजा तृतीय हेनरीका दूत दोन रुय गोनजा-

१ (२।२।३) तैमूरी साम्राज्य (१४०० ई०)
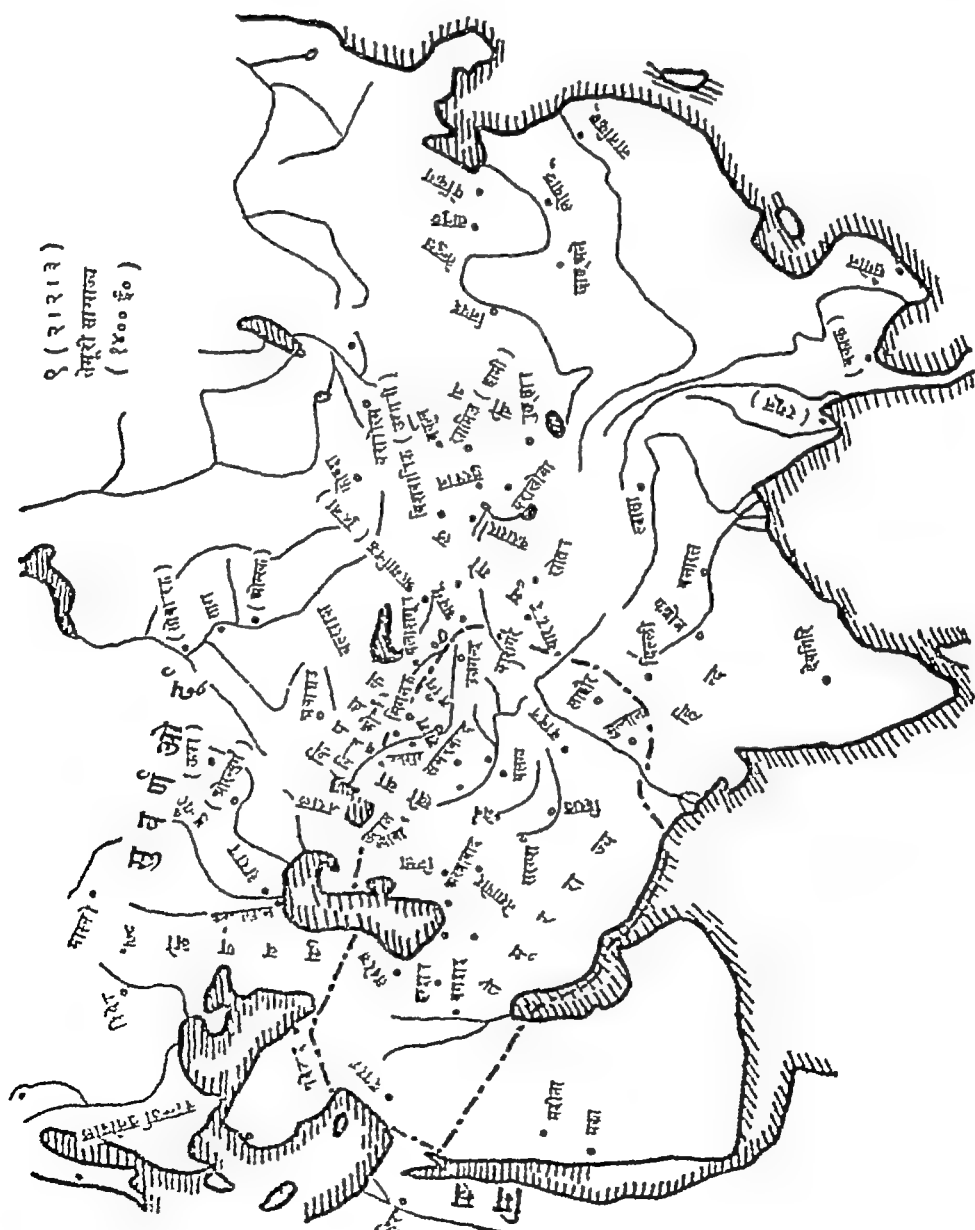
लेज दे क्लावियो समरकन्दमे उसके दरवारमे पहुचा। क्लावियोने अपनी यात्राका वहुत सुन्दर वर्णन किया है। तेमूरका दरवार उस समय एक वडे ही विशाल और कीमती तम्वूके भीतर लगा हुआ था। उसकी रानिया विना किसी परदेके तेमूरके पास तख्तपर वैठी थी। यही नही, तेमूरकी खातूनो (रानियो)ने अपनी मद्य-गोष्ठीमे क्लावियोको अलग निमत्रित करके सम्मानित किया था। इससे स्पष्ट है, कि तेमूरके समयतक अभी मध्य-एसियाके तुर्क राजपरिवारमे परदा-प्रथा जारी नही हुई थी, लेकिन उसके वशजोने भारतमे पहुचकर जल्दी ही उसे अपना लिया।

जनवरी १४०५ ई० (८०७ हि०—१० VII १४०४—३१ V १४०५ ई०)मे फिर तेमूर अपनेको विजय-यात्रासे रोक नही सका। पश्चिममे उसके घोडोकी टाप रूसकी भूमितक पहुच चुकी थी, लेकिन जवतक पूरवमे चीन-विजय न कर ले, तवतक वह छिड्गिस्के समकक्ष कैसे हो सकता था? इसीलिये जाडेमे ही उसने अभियान कर दिया। लेकिन, फरवरीमे सिरतटपर ओत-रारमें पहुचकर वीमार हो १७ फरवरीको वही मर गया। चरित्रलेखक अहमद अरवशाह-पुत्रने जाडेके मुहसे तेमूरके वारेमे कहलवाया है—

"ओ क्रूर अत्याचारी, अपनी गतिको रोक! कवतक तू दुखी दुनियाको अपनी तलवार और आगसे नष्ट करता रहेगा? अगर तू शैतान है, तो यह भी समझ ले, कि मै भी एक शैतान हू। हम दोनो वूढे है, हम दोनोंके सामने एक ही लक्ष्य है, और वह है दासोको अपने जूए के नीचे लाना। अगर तू मानव-जातिका उच्छेद करना जारी रक्खेगा और दुनियाको निर्जन और ठडी वनाएगा, तो समझ ले मेरी सास उससे भी कही अधिक ठडी और ध्वसकारी है। तू अभिमान करता है अपनी उस असख्य सेनापर, जो कि तेरा हुकुम वजा लानेके लिये दौड पडती है और जिसके द्वारा तू सभी चीजोको नष्ट-भ्रष्ट कर सकता है, तो मेरे इन जाडेके दिनोको भी याद कर, जो कि सर्वशक्तिमान्के श्वासोकी मददसे हर चीजके नष्ट करनेकी क्षमता रखते है। मै किसी वातमे तुझसे कम नही। जरा देर ठहर! वदला लेनेके लिये मै अभी पहुच रही हू और तेरी सारी आग और क्रोध मेरी वर्फीली आधी द्वारा लाई ठडी मौतसे तुझे नही वचा सकते।"

तेमूर अपने वारेमे "मेन् तिड्री-कुली तेमूर" (मै भगवान्का दास तेमूर) लिखता था, लेकिन जिस भगवान्का दास तेमूर था, वह अवश्य ही निष्ठुर रहा होगा। छिड्गिस् और उसके उत्तराधिकारियोने भी तलवार और आगसे दुनियाको जीता था, लेकिन अनावश्यक हत्याके वह इतने पक्षपाती नही थे, जितना कि खूनका प्यासा तेमूर। ईरानी शियोको दासके तौरपर वेंचना, एक वडी समस्या थी, क्योकि मुसलमानको दास नही वनाया जा सकता। इस समस्याको मुल्ला शमशुद्दीनके इस फतवाने हल कर दिया—शिया मुसलमान नही है, वल्कि काफिरोसे भी वदतर है।

यदि तेमूर चाहता, तो अपनेको खान (वादशाह) क्या खलीफा घोषित कर सकता था। तेमूरकी सेना उसके कौशल और सार्वत्रिक विजयोके कारण उसपर इतना विश्वास रखती थी, और उसके हुकुमकी इतनी पावन्द थी, कि अपार सम्पत्तिके लूटनेमें लगी होनेपर भी तेमूरके ना करनेपर अपने हाथोको तुरत रोक देती थी। ऐसी अधभक्त सेनाके वलपर पैगम्वर वनना उसके लिये विल्कुल आसान था। कवियोके प्रति तेमूरकी विशेष सहानुभूति नही थी, लेकिन वह दरवारमे कवियो, गायको, सूफियोका सत्कार करता था। नकशवन्दी दरवेशोके सम्प्रदायका सस्थापक ख्वाजा वहीउद्दीन [मृत्यु ७९१ हि० (३१ XII १३८८—२१ XI १३८९ ई०)], ख्वाजा अहरार, ईशान मखदूम कासानी और सूफी अल्लामदारपर उसकी वडी आस्था थी। कवियो और सूफियोने उसके खूखार सैनिकोके मनको नरम करनेमे शायद ही कुछ काम किया हो।

वोल्फके अनुसार तेमूर "लम्वे-चौडे कदका आदमी था। उसका सिर असाधारण तौरसे वडा तथा ललाट चौडा था। रग उसका वहुत ही सुन्दर लाली लिये हुये गोरा था। उसके लम्वे वाल जन्मसे ही (ईरानी) पुराण-प्रसिद्ध जालकी तरह सफेद (व्लौंड) थे। अपने कानो में वह दो वहुमूल्य हीरे पहना करता था। उसके चेहरेपर हमेशा गभीरता और एक तरह की उदासी छाई रहती थी। उसे

हास-परिहास और चुहल विल्कुल पसन्द नही थी, खास करके झूठका तो वह वहुत भारी शत्रु था। झूठकी जगह वह अपनी रायके विरुद्ध सचको ज्यादा पसन्द करता था। तेमूर जिस वात या लक्ष्यको पकड लेता या आज्ञा दे देता, उसे फिर उलटता नही था। अतीतके लिये उसे कभी अफसोस नही हुआ और न अनागतकी आशामे उसने कभी आनन्द मनाया। उसे कवि और विदूषक पसन्द नही थे। उसे प्रिय थे चिकित्सक, ज्योतिषी, धर्मशास्त्री। वह अक्सर अपने सामने शास्त्रार्थ कराया करता। सबसे ज्यादा भक्ति उसकी दरवेशो (साधु-सतो)के ऊपर थी, जिनके आशीर्वादसे वह अपनी विजयोकी सफलता समझता था। लिखना-पढना वह जानता था और जीवन-घटनाओपर उसने अपनी लेखनी चलाई भी है। उसकी स्मृति वहुत तेज थी। वह अरवी नही जानता था, लेकिन तुर्की, मगोल और फारसी भाषाये अच्छी तरह जानता था। वह कट्टर मुसलमान नही था, क्योकि वह छिड्गिस्के यासा (तुरा) को कुरानके ऊपर मानता था। उसने अपने कानून (तुजुक)को यासासे लेकर वनाया। वावर और अकवरने भी अपने पुरखा तेमूरका ही अनुकरण किया। प्रसिद्ध ही है, कि भारतीय मुगल राजकुमारोका खतना नही होता था। तेमूर यात्रियो और दरवेशोसे दूसरे मुल्कोंके वारेमें जहा ज्ञान प्राप्त करनेकी कोशिश करता था, वहा इस कामके लिये उसने खुद भी अपने आदमी दूसरे देशोमें भेज रखे थे।

तेमूरके उत्तराधिकारी—और वातोमें छिड्गिस्का अनुकरण करते भी तेमूरने अपने राज्यको नही वाटा। उसने अपने जीवनमें ही अपने पौत्र (जहागीर-पुत्र) पीर मुहम्मदको अपना उत्तराधिकारी चुना था। तेमूरकी मृत्युके समय वह कधारमे था। उसके आनेसे पहले ही दूसरे पुत्र खलील सुल्तानने सेनाके वलपर अपनेको अमीर घोषित कर दिया। तेमूर-पुत्र शाहरुख हिरात (खुरासान)का शासक था, सिंहासनके लिये उसका भी दावा था। उसे खुरासान, सीस्तान और माजन्दरानका राज्य मिल गया, तो भी वह चुप न हुआ। खलील सुल्तानकी राजगद्दीकी घोषणा सुनकर शाहरुख भी अपने एक सेनापतिको हिरातमे छोड वक्षुकी ओर चला। खलील और पीर मुहम्मदने समझौता कर लिया, कि खलीलके वाद पीर मुहम्मद उत्तराधिकारी होगा। दोनोकी सयुक्त शक्तिके सामने शाहरुख उस वक्त कुछ नही कर सका, लेकिन दो साल वाद उसने अन्तर्वेदको खलीलसे छीन लिया, और ८१७ हि० (२३ III १४१४—११ II १४१५ ई०) तक अस्पहान और शीराजतक वढकर तेमूरके प्राय सारे राज्यका शासक वन गया। समरकन्द, वुखारा, हिरात, मर्व, सब्जवार, शुस्तर, अस्त्रावाद और शीराज-जैसे नगर उसके हाथमे थे।

साहित्य और कला—यद्यपि तेमूरने ललित कलाओंके लिये सहृदय हृदय नही पाया था, लेकिन दुनियाके दूसरे वादशाहोंके दरवारी ठाटको वहुत पसन्द करता था, इसीलिये अनिच्छापूर्वक भी उसके द्वारा कलाको प्रेरणा मिली। वास्तुकलाके लिये विशेष तौरसे, क्योकि उसे महलो, मस्जिदो और अच्छी-अच्छी इमारतोके वनानेका वडा शौक था। समरकन्दमे अव भी उसकी वनवाई कुछ इमारते मौजूद है। उसके समय इस दिशामे जो कार्य आरम्भ हुआ, उसकी पूर्णता उसके लडके शाहरुख और पोते उलुगवेगके समय हुई। तेमूरने १३७१ ई०मे तुरकान आकाका रोजा समरकन्दमे वनवाया था, जो शाहजिदाके नामसे अव भी एक सुन्दर इमारत है। वीवी खानमकी मस्जिद (समरकन्द मे) १३९९-१४१४ई०में तैयार हुई थी, जो आज यद्यपि वहुत टूटी-फूटी अवस्थामे पहुच गई है, किन्तु है एक सुन्दर इमारत। तेमूरकी अपनी समाधि "गोरे-अमीर" जिसे उसके लडके शाहरुखने वनवाया, अव भी समरकन्दकी भव्य इमारत है।

तेमूरके कालकी एक वहुत वडी देन है अरवी लिपिकी नस्तालीक शैली। अरवके आरम्भिक खलीफोंके समय अरवी भाषा कूफी लिपिमे लिखी जाती थी जिसका स्थान जल्दी ही टेढी-मेढी नस्ख लिपिने लिया। आज भी कुरान और अरवीकी पुस्तके इसी लिपिमे छपी मिलती है। लेकिन तेमूरके दरवारी मीरअली तव्रेजी [जन्म ७८१ हि० (१३ IV १३७९—१ III १३८० ई०)—मृत्यु ८०७ हि० (१० VII १४०४—३१ V १४०५ ई०)] ने नस्ख लिपिके टेढे-मेढे अक्षरोको तोडकर सीधा कर दिया, और इससे एक वहुत ही सुन्दर लिपि "नस्तालीक" निकल आई। अरवी-भिन्न

फारसी आदि भाषाओके लिए नस्तालीक लिपि बहुत पसन्द की गई। भारतमे भी उर्दू इसी लिपिमे लिखी जाती है। छापेके जमानेमे टाइपकी सुविधाके कारण "नस्ख" फिर आगे बढ गई—ईरानमे उसीमे पुस्तके और अखबार छपते है। लोगोको बहुत अफसोस है, कि टाइपोके बनानेमे सुविधा न होनेके कारण मुद्रण-कलाने नस्तालीकको उपेक्षित कर दिया। लेकिन हमारे यहा उर्दूके लिये टाइपोसे अधिक लियोका प्रचार है, जिसके कारण उर्दूमे अब भी तेमूरके समयकी देन 'नस्तालीक'का बहुत प्रचार है। नस्तालीकके प्रचारमे सबमे अधिक हाथ हिरातके सुलेखकोका है, जिन्होने लेखन-कलाका मान इतना ऊचा कर दिया, जहापर उसके बाद फिर वह नही पहुच सका।

राजावलि—तेमूर-वशमे निम्न सुल्तान हुए —

१	तेमूर-लग	१३७०-१४०५ ई०
२	खलील सुल्तान, तेमूर-पुत्र	१४०५-६ ,,
३	शाहरुख, तेमूर-पुत्र	१४०६-४७ ,,
४	उलुगबेग, शाहरुख-पुत्र	१४४७-४९ ,,
५	अब्दुल्लतीफ, उलुग-पुत्र	१४४९-५१ ,,
६	अब्दुल्ला, शाहरुख-पुत्र	१४५१-५२ ,,
७	अबूसईद, मीराशाह-पुत्र	१४५२-६९ ,,
८	अहमद, अबूसईद-पुत्र	१४६९-९३ ,,
९	सुल्तान मुहम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र	१४९३-९४ ,,
१०	बैसुकर, मुहम्मद-पुत्र	१४९४-९७ ,,
११	सुल्तानअली, मुहम्मद-पुत्र	१४९७-१५०० ,,
१२	बाबर, उमरशेख-पुत्र	१५००-१ ,,

२ खलील सुल्तान, तेमूर-पुत्र (१४०५-६ ई०)

खलील सुल्तानमे बहुतसे गुण थे, लेकिन वह सीमासे अधिक शाखर्च था, जिसके कारण खजाना खाली होते देर नही लगी। उसमे दूसरी कमजोरी यह थी, कि वह भी नूरजहा-प्रेमी जहागीरकी तरह शादमुल्कका गुलाम था। इन कारणोसे जल्दी ही उसके बडे-बडे समर्थक उदासीन या अलग हो गये। १४०६ ई०मे खुदादाद और शेख नूरुद्दीनने स्वामीसे विद्रोह करके समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। उस समय तो किसी तरह उसे बचाकर अगले साल नूरुद्दीनके साथ सुलह कर ली, लेकिन, फिर खुदादादने दूसरे अमीरोको मिलाकर समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। बातचीतके बहाने विद्रोहियोने सुल्तानको बहकाकर उसे कैद कर लिया और नगरपर उनका अधिकार हो गया। यह खबर सुनकर शाहरुखने अपने सेनापति शादमुल्कको खुदादादको दड देनेके लिये भेजा। खुदादाद समरकन्द छोडकर भाग गया। शादमुल्क खुले दरवाजो समरकन्दके भीतर घुसा। उसने रानी शादमुल्कके साथ बडा ही घृणाजनक दुर्व्यवहार किया, जो शाहरुखके लिये अच्छा नही था। शाहरुख अपने तरुण पुत्र उलुगबेगको राज्यपाल बना समरकन्दमे रख हिरात लौट गया। खलील उस समयतक भागकर मुगोलिस्तानमे चला गया था, किंतु शादमुल्कका वियोग वह नही सह सका और हिरातमें जाकर उसने अपने भाईको आत्मसमर्पण कर दिया। शाहरुखने उसे सम्मानपूर्वक हिरातका राज्यपाल बना दिया, लेकिन वह उसी साल मर गया।

३ शाहरुख, तेमूर-पुत्र (१४०६-४७ ई०)

तेमूर खानदानका यह सबसे बडा और प्रतापी बादशाह था। बहुत दिनोसे हिरातमे रह जानेके कारण उस नगरके साथ इसका इतना प्रेम हो गया था, कि तेमूरकी गद्दी सभालनेपर भी उसने अपनी राजधानी समरकन्दमे नही बदली। तेमूरी-वश और मध्य-एसियाकी कला और साहित्यका

चरम उत्कर्ष शाहरुखके समय हुआ। उसने अपने बडे पुत्र उलुगबेगको समरकन्द (अन्तर्वेद) का शासक बना दिया था, जिसने वहा अपनी सुरुचि और विद्याप्रेमका परिचय दिया।

अब्दुर्रजाक समरकन्दी शाहरुखका बहुत कृपापात्र इतिहासकार था। इसने "वकाया" लिखना शुरू किया, जिसकी परिपाटी भारतमे भी मुगलवशने जारी की। तत्कालीन इतिहासके लिये सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओके ये दरबारी अभिलेख बहुत ही उपयोगी है। समरकन्दीके ग्रथ "मतलऽस्रादेन" मे प्रतिवर्षकी घटनाओका उल्लेख है। ८१२ हि० (१६ मई १४०९–६ अप्रैल १४१० ई०)की "वकाया" लिखते समय वह कहता है—'उज्वेकमुल्क (किपचक)के स्वामी पुलाद खानका अमीर अदिकू बहादुर और अमीर ईसाके नोकर (अफसर) दूत बनकर आये। उन्होने शिकारी जानवर और दूसरी चीजे भेट की। मिर्जा (राजकुमार) मुहम्मद जौकीके लिये लडकीकी खास्तगारी करते हुये शाहरुखने खानके लिये बहुतसी भेटें और दूतोंके लिये बहुतसे इनाम दिये।" अगले साल भी राजधानी हिरातमे "वलायत-उज्वेक" और "दश्ते-किपचक"से अमीर अदिकू दरबन्दके रास्ते और अमीर शेख इब्राहीम शरवानके रास्ते दूतमडल लेकर आये।

८१५ हि० (१३ अप्रैल १४१२ ई०—४ मार्च १४१३ ई०)मे समरकन्दी लिखता है—ख्वारेज्म-को लेकर शाहरुखका किपचकोंके साथ सघर्ष हो गया। ८२२ हि० (२८ जनवरी—१९ दिसम्बर १४१९ ई०) में किपचक खान बुराकने उलुगबेगके ऊपर आक्रमण किया। तेमूरने जैसे तोकतामिश-को सरक्षण देकर आगे बढाया और अन्तमें वह भस्मासुर बनने लगा, वही बात बुराक खानने अपने भूतपूर्व सहायक और सरक्षक उलुगबेगके साथ की। ८३० हि० (२ नवम्बर १४२६–२३ सितम्बर १४२७ ई०)में बुराक ओगलानने अन्तर्वेदपर भीषण आक्रमण किया। समरकन्दमे लोग इतने डर गये, कि उन्होने नगरका दरवाजा बन्द करनेका विचार शुरू किया। उलुगबेगके हारकर भागनेकी खबर सुनकर शाहरुख स्वय एक बडी सेना लेकर समरकन्दकी ओर आया और बुराकको अन्तर्वेद छोडकर भागना पडा।

शाहरुखने थोडे ही समयमें तेमूरद्वारा विजित प्राय सारे साम्राज्यको अपने हाथमे कर लिया। उसके बाद जब-तब ख्वारेज्म या सिर-दरियाकी ओर किपचको (उज्वेको)के आक्रमणका मुकाबिला करना पडता था, नही तो वह अपने समयको साहित्य, सगीत और कलाके विकासमे लगाता था। सगीतका वह प्रेमी ही नही था, बल्कि उसने इसके लिये स्वय बहुतसे गीत बनाये थे। ८२०–२३ हि० (१४१७–२० ई०) मे शाहरुखके दरबारमे चीनसे एक दूतमडल आया, जिसके उत्तरमे ८२३ हि० (१७ I–७ XII १४२० ई०)में शाहरुखने अपना दूतमडल चीन भेजा। शाहरुखका बडा लडका उलुगबेग ज्योतिष और गणितका विद्वान् तथा भारी सरक्षक था। इसी तरह उसका छोटा लडका बैसुकर पुस्तको और ललित कलाका बडा प्रेमी था। बैसुकरने इस दूतमडलके साथ नक्काश (चित्रकार) ख्वाजा गियासुद्दीनको कर दिया था, जिससे कि वह चीनी जीवनके हर पहलूको चित्रित करके लाये, तथा चीनी चित्रकलाको नजदीकसे देखे।

८३९ हि० (२७ जुलाई १४३५–१६ जून १४३६ ई०)मे ख्वारेज्मकी ओरसे दूतने खबर दी कि किपचक शासक अबुल्खैर ओगलानने अचानक दश्त (किपचक-मैदान)की ओरसे ख्वारेज्म-पर आक्रमण कर दिया है और वहाका राज्यपाल सुल्तान इब्राहीम शादमुल्क-पुत्र भाग गया है। शहर-को सर करके किपचकोने उसे लूटा बरबाद किया, फिर अपने देश लौट गये। ८४४ हि० (२ जून १४४०–२३ अप्रैल १४४१ ई०)मे अस्त्राबादकी ओरसे खबर आई, कि दश्तकी ओरसे आकर उज्वेक-सेना मुल्कमे लूट-पाट मचा रही है। वहाका शासक अमीर हाजी यूसुफ जलाल कुतलुग कुछ नही कर सका। "वकायानिगार" (घटना-लेखक) समरकन्दीने लिखा है—"कही-कही उज्वेक-सैनिक कजाक होकर (उज्वेक कजाकशुदा) माजन्दरान प्रदेशमे भी घुस आये और वहासे लौट गये।" १४४० ई०में अभी "कजाक" शब्द एक विशेष जातिका वाचक नहीं हुआ था, बल्कि उज्वेकोंके लुटेरेपनेको दिखलानेके लिये ही यहा कजाक शब्दका प्रयोग हुआ, लेकिन पीछे उज्वेक (किपचक)

तुर्कोके एक भागको कजाक कहा जाने लगा, जिनके ही नामपर आज सोवियत सघका दूसरे नवरके सवसे वडे गणराज्यका नाम कजाकस्तान है और आज कजाक शब्द लुटेरेका पर्यायवाची नही समझा जाता ।

अन्तर्वेदपर किपचको (उज्वेको)का आक्रमण १४१२ ई०से ही होने लगा था। उसके वादके अट्ठाईस वर्षोमे उनके साथ वहुतसे सघर्ष हुये । पहले वह मध्य-सिर-उपत्यका और ख्वारेज्मतक लूट-पाट मचाते थे, पीछे अव माजन्दरानतक हाथ वढाने लगे। यद्यपि अभी अन्तर्वेदके उज्वेकोके हाथो-मे जानेमे साठ वर्षकी देरी थी, किंतु उनका आतक अभीसे छा गया था और १४४० ई०मे शाहरुखने हुकुम दिया था—"हर साल दसहजारी अमीरोमेंसे कुछ वलायत-माजन्दरानमे जा सजग रहते वास करे ।" इसके वाद मिर्जा वैसुकर, फिर मिर्जा अलाउद्दीन दोनो राजकुमारोने भी वहा जाकर डेरा डाला। इसी साल अमीर हाजी युसुफ जलील, उसका भाई अमीर शेख हाजी और दूसरे दसहजारी अमीर अपनी सेना लेकर वहा पहुचे, किंतु यकायक उज्वेक सेना उनके ऊपर टूट पडी और अमीर हाजी युसुफ मारा गया ।

८४५ हि० (२२ मई १४४१ ई०–१२ अप्रैल १४४२)मे शाहरुखने इतिहासकार अव्दुर्रजाक के नेतृत्वमे एक दूतमडल भारत भेजा। तेमूरियोके कितने उदार विचार थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि शाहरुखने अपने दूतमडलको दिल्ली या वहमनी रियासतके पास न भेजकर उस समयके दक्षिणके सवसे शक्तिशाली हिंदूराज्य विजयनगरमे भेजा, जिसमें एक सुभीता यह भी था—ईरान शाहरुखके राज्यमे था, जिसका समुद्रके रास्ते भारतके साथ व्यापारिक सबध विजयनगरके समुद्र-तटद्वारा स्थापित था । यह दूतमडल हिरातसे चलकर केरमानके रास्ते ओरमुज्द वदरगाहपर पहुचा, जहासे जहाजमे बैठकर भारत आया। अव्दुर्रजाकने विजयनगरका वहुत ही सुदर वर्णन "मतलऽसादेन"मे किया है ।

राज्यपाल होनेके समय भी शाहरुखने हिरातको वहुत ही समृद्ध और अलकृत किया था, लेकिन जब उसने उसे तेमूरी राज्यकी राजधानी वना दिया, तो हिरात सारे इस्लामिक जगत्का एक वडा सास्कृतिक केन्द्र वन गया। विद्वानो और कला-विशारदोका वहा वडा सम्मान था । वावरने अपने ग्रथमे लिखा है, कि हिरात-जैसा शहर दुनियामे नही है। हिरातमे चित्रकलाकी एक खास कलम—सूक्ष्मचित्र—का आरम्भ किया गया, जो कि शायद पहिले समरकन्दसे वहा आई। हिरात नगरके पश्चिमोत्तरमें शाहरुखने १४१८–३७ ई०मे अपनी रानी गौहरशादका रौजा मस्जिदके साथ वनवाया। यह वहाकी सवसे सुदर इमारत है। शाहजहा भी एक समय खुरासान गया था, जिसका ही प्रधान नगर हिरात है। हो सकता है ताजमहल वनानमें उसे यहाके गौहरशाद-के रौजेसे प्रेरणा मिली हो। इस रौजेका निर्माण कवामुद्दीन शीराजी नामक एक कुशल वास्तुशास्त्री-ने किया था। यही गौहरशाद उलुगबेग और वैसुकरकी मा थी, जिससे शाहरुख वहुत प्रेम करता था। वैसुकरने हिरातमे एक किताबखाना वनवाया था, जिसकी इमारत अत्यन्त सुदर ही नही थी, वल्कि वहापर पुरानी पुस्तकोका वहुत अच्छा सग्रह था, और कितने ही सुलेखक पुस्तकोको लिखते रहते थे । हुसेन वैसुकरने १४३० ई०मे "शाहनामा"की एक वहुत ही सुदर प्रति लिख-वाई, जो कि आजकल तेहरानके सग्रहालय मे है ।

४. उलुगबेग, शाहरुख-पुत्र (१४४७–४९ ई०)

उलुगबेगने अपने पिताके उपराजके तौरपर एकतालीस वर्ष (१४०६–४७)तक समरकन्द-मे रहते अन्तर्वेदका शासन किया। ज्योतिष और गणितके विकासमे उसने खासतौरसे सहायता की। तारो और ग्रहोके ठीक-ठीक वेधके लिए उसने एक वहुत वडी वेधशाला समरकन्दके पास कोहक नदीके ऊपर वनवाई, जिसका आरम्भ ८३२ हि० (११ अक्तूवर १४२८— १ सितम्वर १४२९ ई०) में हुआ था। इसके दरवारमे तथा वेधशालाके विद्वान् काजी जादरूम गयासुद्दीन, जमशीद मोहीउद्दीन काशानी, इसराईली (यहूदी) सलाहुद्दीन थे। यहीपर प्रसिद्ध सारणी ८१४ हि० (५ जुलाई १४३७–

२६ मई १४३८ ई०)मे तैयार हुई। उलुगवेगकी वेधशालाके ध्वंसावशेष नगरके पूर्वी उपान्तमे चोपान-अता पहाडीपर अब भी मौजूद है। उसकी ज्योतिष सारणी—"जीजे-उलुगवेग"—सदियों तक यूरोपमें भी मान्य रही। पूर्वके देशोमे बनी सभी ग्रह-सारणियोमें यह सबसे अधिक पूर्ण और शुद्ध थी। इसमें —(१) समय और युग, (२) समय-माप, (३) ग्रह-कक्षा, (४) नक्षत्र-ताराके स्थान दिये गये है। इसका बहुत ही सुदर पहला सस्करण प्रोफेसर ग्रीव्सने १६४२–४८ई०मे आक्सफोर्ड में छपवाया था। डाक्टर टामस हाइडने १६६५ ई०मे इसका लातिनी अनुवाद प्रकाशित कराया। उलुगवेगकी नक्षत्र (तारा)-सूची इतनी पूर्ण है कि आज भी खुली आखोसे दिखलाई देनेवाले उतने ही (डेढ हजार) तारोकी सूची बन पाई है समरकन्दको उलुगवेगने मध्य-एसियाकी उज्जयिनी बना दिया था।

उलुगवेगके बनवाये महल, मस्जिद, मदरसे वास्तु-कलाके अत्यन्त सुदर नमूने है। अगर उसके पिताने हिरातको भव्य बनाया, तो उलुगवेगने समरकन्दको भी उससे पीछे नही रहने दिया। उसके महलोको सजानेके लिये चीनके सुदर चित्रकारो और कलाकारोने आकर वर्षो काम किया था। चीनी बरतनोका उसके पास बहुत ही सुदर सग्रह था।

८५० हि० (२९ III १४४६—१७ II १४४७ ई०)मे पिताके मरनेपर तेमूरी सिंहासन-का अब उलुगवेग उत्तराधिकारी था, इसलिये उसे समरकन्द छोडकर हिरात जाना पडा। उलुग-वेग सैनिक योग्यता नहीं रखता था, न कूटनीतिका पडित ही था, इसीलिये वह दो सालसे अधिक शासन नही कर सका। जल्दी ही उसके प्रतिद्वद्वी अलाउद्दौलाने समरकन्दका किला उससे छीन उलुगवेगके पुत्र अब्दुल्लतीफको बदी बनाया। उलुगवेगने आक्रमण करके सुलहकी सबसे पहली शर्त यह रक्खी, कि अब्दुल्लतीफको भेज दिया जाय। दूसरी शर्ते अलाउद्दौलाने पूरी नही की, जिससे फिर लडाई शुरु हुई। अलाउद्दौला हारकर मशहद (खुरासान)की ओर भागा। इसी समय तुर्क-मानोने हिरातको और उज्बेकोने समरकन्दको लूटा। उलुगवेगने वर्षो लगाकर "चीनीखाना" को चीनी कलाकारो द्वारा अलकृत करवाया था और सुदर चीनी बर्तनोका अद्भुत सग्रह करवाया था। उन सबको पल मारते-मारते उज्बेकोने नष्ट कर दिया। जल्दी ही पुत्रवत्सल पिताके विरुद्ध अब्दुल्लतीफने विद्रोह कर दिया और आक्रमण करके उसे बन्दी बना दिया। उसने इतनी ही नृशसता नही दिखलाई, बल्कि चुपकेसे एक ईरानी गुलाम भेजकर बापको मरवा दिया।

उलुगवेग बहुत ही कोमल स्वभावका आदमी था, कला और विज्ञानके पीछे तो वह पागल था। उसकी कोमलहृदयताने तोकनामिशकी कहानियोंको जानते हुये भी बोराक ओगलानका सरक्षक बनवाया। उसके विद्या-प्रेमकी प्रतीकके रूपमे बुखारामे उसके हुकुमसे बने एक मदरसेमे बहुत सुदर अक्षरोंमे अब भी एक छोटासा अभिलेख मौजूद है। "तलबल्-इल्म फरीजत अला-कुल्ले सुब स्लेमुन्व मुस्लेमात" (विद्या पढना हरएक मुसलमान स्त्री-पुरुषका कर्तव्य है)।

साहित्य—ख्वाजा इस्मत बुखारी उलुगवेगका राजकवि था। उसके अतिरिक्त सियाली, बुरुन्दक, रुस्तम खूरियानी आदि भी दरबारके फारसी कवि थे—अभी तुर्कीको साहित्यकी भाषा नही स्वीकार किया गया था, तो भी उलुगवेगके पिता शाहरुखने तुर्की गीत बनाये थे। उमरशेख-पुत्र सुल्तान इस्कन्दर और खलील मिर्जा दोनो राजकुमार फारसीके कवि थे। शाहरुखके लडके बैसुकरका पुत्र बाबर मिर्जा सुदर प्रतिभाशाली कवि था जो तरुणाईमे ही मर गया। यह भारतके मुगल-सम्राट् बाबरसे भिन्न था। तुर्की कवि मिर्जा अहमद मिर्जाने "लताफतनामा"के नामसे एक ससनवी (कथाकाव्य) लिखी थी। इसी वशमे आगे पैदा होनेवाला जहीरुद्दीन बाबर तलवारका ही धनी नही, बल्कि सरस्वतीका वर-पुत्र भी था।

५ अब्दुल्लतीफ, उलुग-पुत्र (१४४९-५१ ई०)

पिताके हत्यारे नृशस अब्दुल्लतीफको निश्चिन्त हो राज्य भोगनेका मौका न मिला। पिता तथा अपने प्यारे सम्बन्धियोंकी निर्मम हत्या सामन्तोंके लिये कोई असाधारण बात नहीं समझी

जाती, इसीलिये सस्कृतमे कहावत मशहूर है—"जनकभक्षा राजपुत्रा" (पिताके भक्षक होते है राजपुत्र)। अव्दुल्लतीफका एक वडा प्रतिद्वद्वी तेमूर-पौत्र मीराशाहपुत्र अबूसईद (सम्राट् बावरका दादा) था। उसे अव्दुल्लतीफने हरा दिया। किंतु अव्दुल्लतीफके महापापको अधिक दिनोतक वर्दाश्त नही किया जा सकता था। उलुगबेगके एक स्वामिभक्त सेवकने इस आततायीको ८४५ हि० (१४ फर्वरी १४५०–५ जनवरी १४५१ ई०)मे मार डाला।

६ अव्दुल्ला, शाहरुख-पुत्र (१४५१–५२ ई०)

साल-साल दो-दो सालके लिये गद्दीपर बैठनेवाले तेमूरी शासकोने अब बतला दिया, कि वशकी नैया डावाडोल हो रही है। अव्दुल्लाने उन्ही उज्वेकोकी सहायतासे समरकन्दको प्राप्त किया, जो कि तेमूरी-वशका स्थान लेनेवाले थे। "वकायानिगार" समरकन्दीने ८५५ हि० (३ फर्वरी १४५१–२५ दिसम्बर १४५३ ई०)मे लिखते हुए बतलाया है—"इसी बीच राजसेवकोने खबर दी, कि उज्वेक बादशाह अबुल्खैर खान (१४२८–६८ ई०)—जो बहुत दिनोसे अपने दरबारका दोस्त और शुभेच्छु है—आज्ञा पानेपर सेवामे आना चाहता है। सुल्तानकी स्वीकृति पाकर अबुल्खैर जल्दी-जल्दी अव्दुल्लाके ओर्दूमे आया। सुल्तानने उसका बडा स्वागत किया। (पीछे) अबुल्खैरने समरकन्द-विजयकी तदबीर अबूसईदको बतलाई। फिर दोनो यस्सी नगरके सीमातसे ताशकन्द और खोजन्दके इलाकेमे आये। जब अव्दुल्लाको पता लगा, कि अबूसईद उज्वेक खानकी सेनाके साथ आ रहा है, तो वह एक बडी सेना ले कोहक नदी पार हो आगे बढा। दोनो सेनाए आमने-सामने खडी हुई और दोनोमे २२ जून १४५१ ई० शनिवार (२२ जमादी II ८५० हि०)को भयकर लडाई हुई जिसमे अव्दुल्ला मारा गया और भारतीय मुगल-वश-सस्थापक बाबरका पितामह, अबूसईद विजयी हुआ।

७ अबूसईद, मीराशाह-पुत्र (१४५२–६९ ई०)

अबुल्खैरको उसकी सहायताके लिये अबूसईदने बहुतसी भेट दे कृतज्ञता प्रगट की, और अव्दुल्लतीफकी हत्यामें हाथ रखनेवालोको भी दड दिया। शाहरुखके मरनेके बादसे ही जो गृह-कलह चल रहा था, उसे दबानेमें अबूसईद सफल हुआ। तेमूरी वशका यह अन्तिम शक्तिशाली सुल्तान था। जैसा कि पहले बतला चुके है, अभी भी छिङ्-गिस्वशी खान समरकन्दकी गद्दीपर बैठा करते थे। अन्तर्वेद, पूर्वी ईरान और अफगानिस्तान अबूसईदके राज्यमे थे। वह चतुर सैनिक और कुशल शासक था। इसका समकालीन तुर्कीका सुल्तान मुहम्मद II था, जिसने १४५३ ई०मे कान्स्तन्तिनोपल लेकर बलकान (युरोप)मे इस्लामी राज्यकी स्थापना की।

रबी I ८६४ हि० (२६ दिसम्बर—२५ जनवरी १४४९—६० ई०)के आरभमे इसके दरबार में कलमको (मगोलो) और किपचकोके दूत आये, जिनका अबूसईदने बहुत सम्मान किया। लेकिन उत्तरके घुमन्तुओकी मित्रता बादलके छाहसे बढकर नही होती। ८६९ हि०के जमादी II (फर्वरी १४६५ ई०)के मध्यमे खबर मिली, कि किपचक खान अबुल्खैरके भाई सैयद यक्का सुल्तानको अमीरो (उच्च अफसरो)ने ख्वारेज्ममे पकडकर हिरात भेज दिया, जहा वह वन्दीखानेमे पडा है। अबूसईदने उसे अपने पास बुलाया, और "उस सदाचारी सुभक्त तरुण"को बहुत सम्मानपूर्वक घोडा, सोना, कुलाह और इनग्म प्रदान कर बलायत उज्वेकमे भेज दिया। लेकिन उज्वेक घुमन्तू इन उपकारोको देरतक कैसे याद रख सकते थे, जब कि दक्षिणके समृद्ध नगरोको लूटकर ही वह मौजका जीवन बिताते अपने सैनिकोमे अनुशासन कायम रख सकते थे। ८७२ हि० (२ अगस्त १४६७—२२ जून ६८ ई०)की घटनाके बारेमे समरकन्दीने लिखा है—मरदुमें-उज्वेक (उज्वेक लोगो)के प्रहारमे अन्तर्वेदको हरसाल जहमत और बर्बादी उठानी पडती रही, लेकिन इस साल वहासे एसी खबर नही आई। इसी समय ख्वारेज्मसे दूतने आकर कहा, कि किपचकोकी भूमिसे देरसे कजाक हुये मिर्जा मुल्तान हुसेनने ख्वारेज्मपर आक्रमण किया। तेमूरी अमीर उसके सामने नही टिक सके, और मिर्जाने ख्वारेज्मको पामाल किया। यह खबर सुनकर अबूसईदने अपने सभी उच्च सेनापतियोको ख्वारेज्म जानेका

आदेश दिया, लेकिन उधर आजुर्बाईजानमें भी उजुन हसनबेगने खतरा पैदा कर दिया था, इसलिये उसी साल अबूसईद सेना लेकर उधर गया और लड़ाईमें बन्दी हुआ। उजुन हसन (१४६७–७८ ई०) ने अबूसईदको शाहरुखकी बेगम गौहरशादके पुत्र यादगार मिर्जाके हाथमें दे दिया, जिसने अपनी माकी हत्याका बदला लेते अबूसईदको मार डाला। अबूसईदके ग्यारह पुत्रोंमें एक उमरशेख मिर्जा था। इसीका पुत्र बाबर था। जिसने भारतमें मुगल-साम्राज्यकी स्थापना की।

अबूसईदको भी सुन्दर इमारतोंके बनानेका बड़ा शौक था। आज भी उसकी लड़की सुल्तान खाविन्द बिकीके रौजेकी सुन्दर इमारत समरकन्दमें "इशरतखाना"के नामसे मौजूद है।

८ अहमद, अबूसईद-पुत्र (१४६९–९३ ई०)

अहमद एक मामूली बुद्धिका आदमी था, ऊपरसे वह कभी शराबमें मतवाला रहता और कभी भक्ति और खुदाके इश्कमें गर्क। इसके समयमें दरबारी अमीर अक्सर विद्रोह करते रहे। खुरासान बिल्कुल स्वतन्त्र हो गया, जिसपर तेमूर-वंशी सुल्तान हुसेन (१४६९—१५०६ ई०) हिरातमें शासन करता रहा। अहमदने अपने भाई उमरशेखको फरगाना देकर उसे दूसरोंके हाथों में जानेसे बचा लिया। उमरशेखके फरगानामें शासन करते समय ही उसका पुत्र बाबर पैदा हुआ। अहमदके सत्ताईस सालके शासनमें समरकन्दको फिर तरक्की करनेका मौका मिला।

कवि नवाई—हिरातने स्वतन्त्र होकर अपने गौरवको फिर लौटा लिया। हुसेन मिर्जा (१४६९–१५०६ ई०)के शासनकालमें हिरातने साहित्य और कलामें चरम उन्नति की, जिसका बहुत कुछ श्रेय तुर्की साहित्यके कालिदास अली शेर नवाईको है। नवाई १४४१ ई०में हिरातमें पैदा हुआ था। उसके बचपन और जीवनका भी अधिकतर भाग हिरातमें बीता। वह शिक्षा प्राप्त करनेके लिये समरकन्द भेजा गया। वहाका सबसे बड़ा धनी दरवेश मुहम्मद तरखन उसका संरक्षक था। सुल्तान अहमद मिर्जाके समय नवाई बुखारा और समरकन्दका सबसे बड़ा जमींदार था। हिरातमें रहते बचपनमें हुसेन मिर्जा नवाईका सहपाठी था। जब हुसेन मिर्जा हिरातकी गद्दीपर बैठा, तो उसने समरकन्द में सुल्तान अहमद मिर्जाको नवाईको भेजनेके लिये लिखा। समरकन्दमें रहते वक्त नवाईको जिन लोगोंके सम्पर्कमें अधिक आना पड़ा था, उनमें सूफी मत खोजा उबैदुल्ला अहरार मुख्य था। संत-महन्त होनेके साथ खोजा अहरारकी जमींदारीका ठिकाना नहीं था। कहावत है—कोई आदमी अपने गदहेपर चढ़ा अन्तर्वेदमें उत्तरसे दक्षिणकी यात्रा कर रहा था। सैकड़ो मील चलता गया, लेकिन जब भी किसी लहलहाते खेतके बारेमें पूछता, तो लोग कहते—'यह खोजा अहरारका है।' इसपर मुसाफिरने अपने गदहेको भी खेतकी तरफ हाकते हुए कह दिया—"जा तू भी खोजा अहरारका हो जा।" खोजा अहरारकी महिमा सबमें अधिक इसलिये फैली कि वह अपनी अपार सम्पत्तिका उपयोग परोपकारमें करता था। नवाई भी बहुत भारी जमींदार था, अहरारकी प्रेरणासे उसने भी अपनी सम्पत्तिको वैसे ही कामोंमें खर्च करनेका निश्चय किया।

सुल्तान हुसेन सूक्ष्मचित्र, सुलेखनकला, वास्तुकला और संगीतका बड़ा प्रेमी था। अली शेर नवाई तो विद्वानों और कलाकारोंका अपने सुल्तानसे भी बड़ा संरक्षक था। हिरातमें एसियाके ही भिन्न-भिन्न देशो के व्यापारी नहीं आते थे, बल्कि १८९४ ई० मे एक फ्रांसीसी कारवा भी आया था। भारत, चीन आदि के व्यापारी तो सदा ही आते रहते, इसलिये यहापर विद्वानो और कलाकारोंके लिये विचार-विनिमयका अच्छा अवसर मिलता था।

१४६९ ई०मे समरकन्दसे लौटनेके बाद १४८७ ई०तक नवाई सुल्तान हुसेनके दरबारका एक बहुत ही शक्तिशाली अमात्य था। दरबार छोड़नेके बाद उसने अपने बड़े-बड़े निर्माण-कार्य आरम्भ करके पूरे किये। उसकी बनवाई सबसे बड़ी इमारत "इखलास" (स्नेह) बीस साल-में तैयार हुई, जो हिरात नगरके बाहर यजील नहरके किनारे अवस्थित थी। कितने ही हजार आदमी इसके बनानेके लिये रोज काम करते थे। कितनी ही बार नवाई स्वयं मजदूरोंकी तरह काम करता। "इखलास"के भीतर सुन्दर मदरसा, खानकाह तथा मस्जिद बनी हुई थी। खानकाहमें पश्चिम

"खानकाह-शफाइया" (सार्वजनिक अस्पताल) था, जहापर अपने समयके प्रसिद्ध चिकित्सक हकीम गयासुद्दीन मुहम्मद चिकित्सा करते थे। यहाकी बहुतसी इमारतोमे "मदरसा निजामिया" भी था, जिसमे अच्छे-अच्छे अध्यापक नियुक्त थे। नवाईने और जगहोपर भी खानकाहे और मदरसे बनवाये, जिनमे "मदरसा-खुसरविया" मेर्वके अब्दुल्लाखान-किलेमे अवस्थित था। खुरासान और ईरानके दूसरे स्थानोमे मुसाफिरोके आरामके लिये नवाईने पचास रबाते (धर्मशालाए) बनवाई थी। उसके आश्रित इतिहासकार खोन्दमीरके अनुसार नवाईने हम्माम (स्नानागार) और चौदह मस्जिदे इस्तिखर सेरख्स और अस्त्राबादमे बनवाई थी।

नवाईको जहा अपने परोपकारी कामोके लिये खोजा अहरारसे प्रेरणा मिली थी, वहा उसकी काव्यप्रतिभाको निजामी (११६१—१२०३ ई०) और जामी (१४१४—९२ ई०)की कविताओसे भारी प्रेरणा मिली थी। जामी नवाईका समकालीन था, और हिरातके पास हीमे रहता था। फारसी भाषाका वह अन्तिम महाकवि था। यद्यपि नवाईने "फानी" (नाशमान)के नामसे फारसीमे भी कविताए की हैं, लेकिन वह अमर है अपनी तुर्की कविताओके कारण। आजकल मध्य-एसियाकी सबसे प्रगतिप्राप्त उज्बेक जातिका वह परम श्रद्धाभाजन कवि है। उज्बेक राजधानी ताशकन्द मे नवाई नाट्यशालाके नामसे एक बडी ही विशाल और सुन्दर रगशाला स्थापित की गई है। नवाई-की जीवनीको लेकर उज्बेक-लेखक ऐबकने एक उपन्यास "नवाई" लिखा है, जिसपर उसे स्तालिन पुरस्कार प्राप्त हुआ। नवाईने सत्तरसे अधिक पुस्तके लिखी है, जिनमे उसका "खमसा" (पचक) सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। जिन विषयोको लेकर नवाईने अपने पाच काव्य लिखे, उन्हीपर पहले निजामीने और उसके बाद खुसरो देहलवी (१२५३—१३२५ ई०)ने भी सुन्दर काव्य लिखे हैं—

निजामी (११६१–१२०३)	खुसरो (१२५३–१३२५)	नवाई (१४४१–१५०१)
१. मख्जनुल् - असरार	मत्लउल्-अनवार	खैरतुल्-अबरार
२ खुसरो-व-शीरी	शीरी-खुसरो	फरहाद शीरी
३ सिकदरनामा	आईने-सिकन्दरी	सद्दे-सिकन्दरी
४ लैला-व-मजनू	मजनू-लैला	लैला-मजनू
५ हफ्त-पैकर	हश्त-बहिश्त	हफ्त-किश्वर

नवाईसे पहले तुर्की भाषाने साहित्यमें ऊचा स्थान नही प्राप्त किया था। यद्यपि नवाईने अपनी कृतियोको हिरातमे बैठकर लिखा था, लेकिन हिरातमे तुर्कोंकी काफी सख्या रहते भी, वह खुरासानी ईरानी भाषाका प्रदेश था। पूर्वी तुर्की भाषा (चगुताई तुर्की)मे भी स्थानोके अनुसार भेद हो गया था, और सबसे शिष्ट अन्दिजान (फरगाना)की तुर्की समझी जाती थी। बाबर स्वय वही पैदा हुआ था। उसने बाबरनामामें नवाईकी भाषाके बारेमें लिखा है*—

"अन्दिजान ऐले नयग लफ्जे कलम बेरल, रास्ते तोर हानी हो जू केम नीर अली शेर नवाई नयग मुसन्निफाते बावजूद हरेदा नशो-नुमा तापैव तोर बोतेल बेल दो।"

(अन्दिजानके लोगोकी भाषा मीर अली शेर नवाईके ग्रन्थोकी भाषासे मिलती है, जिसे कि उसने हिरातमे लिखा था।)

अन्दिजान काश्गरसे दूर नही है। तुर्की साहित्यकी सबसे पहिली पुस्तक "कुतदगु-बिलिक" काश्गरमे नवाईसे तीन शताब्दी पहिले लिखी गई थी। "कुतदगु-बिलिक"की भाषा प्राचीन उइगुर भाषासे बहुत घनिष्ठ सबध रखती है। हम कह आये है, कि उइगुर और तुर्क पहले एक ही जातिका नाम था। प्राचीन उइगुर भाषाके नमूने कितने ही बौद्ध सूत्रोके अनुवादके रूपमे अब भी प्राप्त है। छिङ्गिस् और उसके बेटो-पोतोके राज्यमें किपचक, ईरान और अन्तर्वेदके सभी जगहके दरबारो और आफिसोमें उइगुर लेखक हुआ करते थे, जिनमे अधिकाश भिक्षु थे, जिसके कारण

* "बाबरनामा" पृष्ठ २ ख (लन्दन १९०६ ई०)

लेखकको बक्सी (भिक्षुका उइगुर अपभ्रंश कहा जाने लगा। इसी प्राचीन उइगुर भाषा और लिपि-का प्रचार सारे चगताई राज्यमें हुआ और पीछे इसे चगताई भाषा कहा जाने लगा। जब अन्तर्वेदमें उज्बेकोंका शासन स्थापित हुआ, तो वहाके सभी तुर्क उज्बेक कहे जाने लगे, तबसे इस भाषाका नाम उज्बेकी पड़ गया। आजकल वह इसी नामसे प्रचलित तथा उज्बेकिस्तान गणराज्यकी राज्यभाषा है। मगोल चगताई तुर्कोंमें विलीन हो गये, इसीलिये पीछे कहा जाने लगा—"तुर्क कौम लारी जूजी दरदार युग व जगताई" (जू-छि चगताई तुर्क कौमके थे)।

नवाईका काम सुन्दर इमारतों और उपकारी सस्थाओंके निर्माण तथा काव्योंतक ही सीमित नही था, वह विद्वानों और कलाकारोंके लिये कल्पवृक्ष था। एसियाका एक अद्वितीय चित्रकार कमालुद्दीन बेहजाद (मृत्यु १५२१ ई०) नवाईके ही सरक्षणमें आगे बढ़ा, जिसे कि "नजाकते कलम बेनजीर" (तूलिकाकी कोमलतामें अनुपम), "सूरतेहालका मुसव्विर" (यथारूप चित्रण-कर्ता) और "द्वितीय मानी" कहा जाता है। मानी ईरानका पैगम्बर (२१६–२७६ ई०) चित्रकला-में भी अद्वितीय समझा जाता था। मानीकी चित्रकलाके नमूने अब प्राप्त नही है। ईसाकी तीसरी सदीके बाद चित्रकलाके एकसे एक दुश्मन दुनियामें आये, जिनके हाथमें मानीके चित्रोंका बच निकलना सभव नही था। लेकिन बेहजादके बनाये हुये चित्र अब भी दुनियाके सग्रहालयोंमें मिलते है।

सुल्तान अली मशहदी, मीर अली मजनू, मुहम्मद शिकावी जैसे सब समयके लिये अनुपम सुलेखक नवाईके दरबारमें थे। सुल्तान अलीने नवाईके "खम्से"की एक प्रति १४९२–९ ई०में लिखी थी, जो कि आजकल लेनिनग्रादके राजकीय लोक-पुस्तकालय (प्राच्य ५६०)में मौजूद है, जिसमें लेखक ने लिखा है—"खम्सा मीर अली शेर नवाई ब-खते किब्लउल्कुत्ताब मौलाना सुल्तान अली मशहदी" (मीरअली शेर नवाईका पचक, लेखकशिरोमणि मौलाना सुल्तान अली मशहदीके अक्षरोंमें) सुल्तान अलीको बुढ़ापेमें भी अपनी लेखनीपर कितना अभिमान था, यह उसकी प्रतिलिपि की हुई एक पुस्तक के अन्तमें मौजूद निम्न पद्यसे मालूम होगा—

मरा उम्र शस्त व-से शुद बेशकम् ।
हनोजम् जवानस्त मुश्की कलम् ॥
तवानम् हनोज अज खफी-वो-जली ।
नविश्तन् कि अल्-अब्द सुल्तान् अली ॥

(मेरी उम्र कम-बेशी तिरसठ हो गई, किन्तु अभी भी मेरी काली कलम जवान है। अब भी मैं सूक्ष्म और स्थूल हस्ताक्षर सुल्तान अलीके साथ लिख सकता हूँ।)

नवाईका देहान्त ३ जनवरी १५०१ ई०को हुआ।

९ सुल्तान महम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र (१४९३–९४ ई०)

भाईके मरनेके बाद पाच तरुण भतीजोंको मारकर मुहम्मद समरकन्दकी गद्दीपर बैठा। यह बड़ा क्रूर, पियक्कड़ और व्यभिचारी था, जिसके कारण उसके अमीर विरुद्ध हो गये और थोड़े ही समय बाद उसकी शायद अकाल-मृत्यु हो गई।

१० बैसुंकर, महम्मद-पुत्र (१४९४–९७ ई०)

बापके मरनेपर मसऊद, सुल्तान अली और बैसुकरमें तख्तके लिये झगड़ा हुआ, और अन्तमें अठारह सालकी उम्रमें बैसुकर सुल्तान बना। अहमदके समयमें ही उत्तरके उज्बेक और देशके भीतर अमीर बहुत शक्तिशाली होने लगे। बैसुकरकी तरुणाईमें उनको और भी आगे बढ़नेका मौका मिला, जिससे आपत्ति करनेपर अमीरोंने क्रोधसे उसके भाई सुल्तान अलीको बुलाया। बैसुकर भाग गया, किन्तु पीछे फिर अमीरोंने उसे ही बुखारा गद्दीपर रहने दिया। सुल्तान अली बुखाराकी ओर भागा और फिर पूरी तैयारी करनेके बाद बुखारासे समरकन्द आया। दूसरा भाई मसऊद भी उसकी

सहायतार्थ दक्षिणसे आया। उमरशेख-पुत्र बावर मिर्जा इस समय खोकन्द (फरगाना)का स्वतन्त्र शासक था। उसकी भी नजर समरकन्दपर थी। चारो ओरसे निराश होकर वैसुकर अपने भाई मसऊदकी शरणमे [९०३ हि० (३० VIII १४९७—२१ VII १४९८ ई०)] भागा, जिसके पास ही रहते ९०५ हि० (८ VIII १४९९—२८ VI १५०० ई०)मे वह गुमनाम मरा।

११ सुल्तान अली, मुहम्मद-पुत्र (१४९७–१५०० ई०)

तेमूरी राज्यको वावर और सुल्तान अलीने आपसमे वाट लिया। दोनो ही कम उमरके थे, इसलिये शासनकी वागडोर अमीरोके हाथमे थी। सुल्तान अली तीन साल ही राज्य कर पाया, कि एक सौ चालीस वर्ष पुराने तेमूरी वशके दीपकको उज्वेकोके खान शैवानीने बुझा दिया। बावरने वशकी नैयाको डूवनेसे वचानेकी कोशिश की, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।

१२ जहीरुद्दीन बावर, उमरशेख-पुत्र (१५००–१ ई०)

हम कह चुके है कि अहमदके समरकन्दकी गद्दी सभालनेके समय उसका भाई उमरशेख फरगानाका शासक रहा। बावर वहीपर १४८१ ई०मे पैदा हुआ और बापके बाद फरगानाका शासक बना। शैवानीके समरकन्दपर पैर जमानेसे पहले बावरने भी समरकन्दकी ओर हाथ फैलाया था, लेकिन उज्वेक सेनाने उसे हरा दिया। समरकन्द लेकर मुहम्मद शैवानी निश्चित नही रह सका। एक बार बावरने समरकन्द, मियानकुल और करशीसे उसे भगा दिया, लेकिन बुखारासे उज्वेकतक भी चिपटे रहे। अगले साल ९०७ हि० (१७ VII १५०१—७ VI १५०२ ई०)मे शैवानीने बडे जोरका आक्रमण किया, और बावरके पैर उखड गये। समरकन्दसे भगाये जानेपर वक्षुपार हो बावरने कुदुज ले लिया। ईरानी शाह इस्माईलकी मदद लेकर और किस तरह बावरने बारह सालतक तेमूरकी भूमि लेनेका प्रयत्न किया, इसे हम आगे बतलायेगे। कुदुजसे ही वीस हजार सेना जमा करके बावरने ९०९ हि० (२६ VI १५०३—१६ V १५०४ ई०) मे कावुलको दखल कर लिया और वहासे भारतपर आक्रमण करके १५२६ई०मे लोदियोसे दिल्लीका तख्त छीनकर मुगल-वशका सस्थापक बन गया। जो बावर मुट्ठीभर उज्वेक घुमन्तुओके सामने सारे प्रयत्न करनेके बाद भी टिक नही सका, वही बावर हिंदुस्तानको जीतनेमे सफल हुआ, यह यही बतलाता है कि उस समयकी परिस्थितिमे सैनिक तौरसे घुमन्तू जितने मजबूत थे, उतने स्थिर बस्तीवाले नही। साथ ही हिदुस्तानकी लडाईने कभी लोकयुद्धका रूप नही लिया, लडनेवाले मुट्ठीभर सामन्त और उनके अनुचर थे, अधिकाश जनता शासकोके अत्याचार और स्वेच्छाचारसे तग होकर इतनी निराश थी कि वह यही कहती थी—"कोउ नृप होय हमहि का हानी।"

साहित्य और सस्कृति—अब भी तेमूरवशी छिडगिस्के "यासा" (विधान) और तेमूरके "तुजुक" (व्यवस्था)को मानते थे, और मुसलमान होते हुये भी धर्मांध नही थे। तेमूरवशके रूपमे मध्य-एसियामे तुर्कजाति गौरवके शिखरपर पहुची। इस समय बडे-बडे विद्वान् और कलाकार पैदा हुए। तेमूर स्वय कलम चलाना जानता था। उसका पुत्र शाहरुख सुन्दर गीतोका लेखक था। उलुगवेग गणित और ज्योतिषका विद्वान् तथा सरक्षक था। उसका छोटा भाई वैसुकर पुस्तको और चित्रकलाका प्रेमी था। बावर कवि-लेखक, शासक-योद्धा था। इस कालमें बुखारा, समरकन्द और मेर्वमे बडे-बडे धर्मशास्त्री (फकीह, दार्शनिक और कवि हुये, जिनमे फारसीका कवि जामी (१४१४–१४९२ ई०) और तुर्की साहित्यका सर्वश्रेष्ठ कवि नवाई (१४४१–१५०१ ई०) भी थे। तुर्की भाषाका मान सबसे अधिक इसी समय हुआ। अरब खलीफोके समय अरबी भाषा सरकारी भाषा थी। ताहिरियोने अरबीकी जगह फारसीको दी, तबसे फारसी ही राजकाज और साहित्यकी भाषा समझी जाने लगी। तेमूरियोने यद्यपि फारसीको स्थानच्युत नही किया, लेकिन तुर्कीका सम्मान जरूर बढाया, जिसमे नवाई और बावरका हाथ बहुत अधिक था। बावरकी देखादेखी जहागीरने भी तुर्कीमे "तुजुक जहागीरी" लिखी, लेकिन शायद वह आखिरी मुगल था, जो कि भारतमे अच्छी तुर्की बोल-लिख सकता था। तुर्की वैसे सभी मध्य-एसियाके तुर्कोकी भाषा थी,

लेकिन जैसा कि हमने पहले कहा, अन्दिजान और काश्गरमे बोली जानेवाली तुर्कीको ही साहित्य-की भाषा माना गया। तुर्की भाषाके सबधमे यह कहा जा सकता है कि जितना ही पूरब जाये, उतना ही वह अधिक शिष्ट रूपमे मिलती है। यहा तुर्की भाषामे हमारा मतलब पूर्वी तुर्कीसे है, जिसे पहले चगताई और आजकल उज्बेकी कहा जाता है। यारकन्द काश्गरकी भाषाका भी इसी भाषा-से सबध है। पश्चिमी तुर्कीमे तुर्कमानी, आजुरबाईजानी और उसमान अली (तुर्की राज्यकी) भाषाए सम्मिलित है, जो आपसमे भेद रखते हुये भी एक दूसरेसे बहुत समानता रखती है।

तेमूरी-वंशवृक्ष—
(१३७०-१५०० ई०)

अध्याय ४
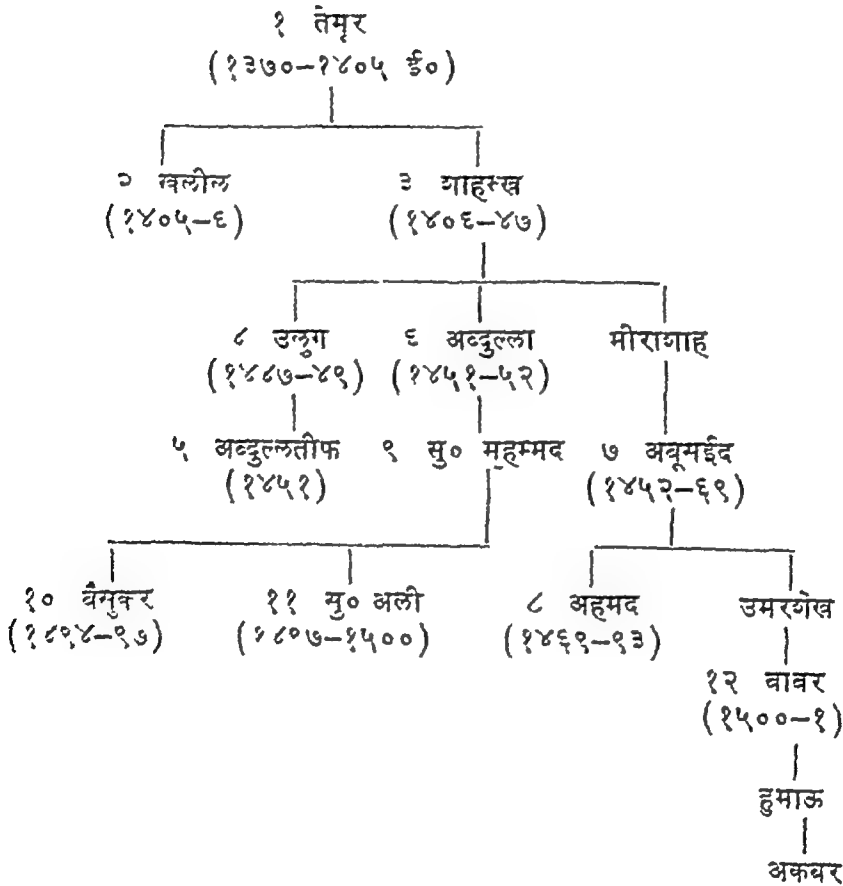
शैबानी-वंश

अबुल्खैर—तोकतामिशके सुवर्ण-ओर्दूके गौरवको पुन जागृत करनेका प्रयत्न विफल होनेपर तूरान-अधित्यका (किरगिज-स्तेपी)का स्वामी बुराक खान हुआ, जिसने तेमूरियोको बहुत तग किया। उसके बाद अबुल्खैर [जन्म १४१३ ई० (८१६ हि०)] का प्रताप बढा। इसका पौत्र तथा अन्तर्वेद-विजेता शैबानीके नामसे मशहूर है। वह जू-छिके पुत्र शैबानके वशका था।

शैबानी-वश यद्यपि छिङ्गिस्-पुत्र जू-छिके पाचवे लडके शैबानके नामसे प्रख्यात हुआ, लेकिन वह मुहम्मद शैबानीके अन्तर्वेद जीतनेसे पहले किपचक या उज्वेक नामसे प्रसिद्ध था। उज्वेक खान (१३१३–४० ई०) सुवर्ण-ओर्दूका एक शक्तिशाली शासक तथा इस्लामका धार्मिक धर्मराजा था, इसीलिये जू-छिका उलुस, विशेषकर बा-तू-वशकी प्रजा पीछे उज्वेकके नामसे प्रसिद्ध हुई है, यह हम बतला चुके हैं। जू-छि-उलुस आरम्भ हीमे बा-तू और ओर्दाके उलुसोमे विभक्त हो गया था, जिसमें बा-तूका उलुस सुवर्ण-ओर्दू और ओर्दाका श्वेत-ओर्दूके नामसे पुकारा जाता था। उज्वेक सुवर्ण-ओर्दूका खान था, इसलिये सुवर्ण-ओर्दवालोका ही नाम उज्वेक पडना चाहिए, लेकिन पीछे इसका उतना ध्यान नही रखा जाता रहा, और सारे जू-छि-उलुस या किपचक-जातिको उज्वेक कहा जाने लगा। हम यह भी देख चुके हैं, कि इन्ही उज्वेको या किपचकोको लूट-मार करनेके कारण अन्तर्वेदी कजाक कहने लगे, जिससे आगे किपचकोकी एक शाखा कजाक नामसे प्रसिद्ध हुई। जू-छिकी सातवी पीढीमे अबुल्खैर किपचकोका जबर्दस्त खान हुआ, जिसने अन्तर्वेदकी राजनीतिमे दखल दिया। बाबरके दादा अबूसईदको तख्तपर बैठानेमे उसका मुख्य हाथ था। उज्वेक-राज्यका सस्थापक वस्तुत यही अबुल्खैर था। अभी बीस सालका भी नही हुआ था, कि उसने तेमूर-पुत्र शाहरुखके कुछ इलाकोको छीन लिया। उज्वेक गद्दीका मालिक बननेसे पहले उसे सुवर्ण-ओर्दूके मुखिया मुस्तफा खानको हराना पडा, जिसमे मिली भारी लूटकी सम्पत्तिको अपने अमीरो और सैनिकोमे बाटकर वह सर्वप्रिय हो गया। निम्न-सिर-दरियाके तटपर अवस्थित सिगनक किपचकोके हाँथसे निकल गया था। अबुल्खैरने उसके ऊपर आक्रमण किया और शाहरुखके स्थानीय राज्यपालको आत्मसमर्पण करना पडा। फिर अबुल्खैर आगे बढकर अककुरगान, अरक, सूजक और उजकन्द ले सूजकपर बख्तियार सुल्तान, सिगनकपर मनाहदान ओगलान और उजकन्दपर बखसमवी मगुतको शासक नियुक्त किया। उसने जाडा सिर-उपत्यकामे बिताते १४४८ ई०के बसतमे इलाककी ओर बढनेकी तैयारी की। इसी समय पता लगा, कि शाहरुख मर गया, और उलुगबेग गद्दी सभालने खुरासानकी ओर गया है। समरकन्दको अरक्षित-सा देख अबुल्खैरने उधर कूच कर दिया। समरकन्दके राज्यपाल जलालुद्दीन बायजीदने बहुत-सी भेट देकर अबुल्खैरके पास कहलवाया—"उलुगबेग सदा खानके साथ अच्छा सबध रखता था, इसलिये यही अच्छा है, कि खान हमारी भेट स्वीकार करके लौट जाय।" अबुल्खैर बिना समरकन्दको लूटे ऐसा करके अपने अमीरो और सैनिको को सन्तुष्ट नही रख सकता था। समरकन्दपर अधिकार कर विशेष तौरसे "चीनी-खाना"की चित्रशालाकी दीवारोपर सुन्दर-सुन्दर पच्चीकारी किये चित्रोको उज्वेकोने अपनी गदासे मारकर तोड दिया। सोनेके कामको उन्होने सोनेके लोभसे कुरेदकर निकाल लिया। इस प्रकार "कई वर्षोंके परिश्रमके बाद बने हुये कलाके कामोको कुछ घटोमे उन्होने नष्ट कर दिया।"

शाहरुखके उत्तराधिकारियोमे उसका पौत्र अब्दुल्ला मिर्जाने आपसी झगडोमे हारकर तुर्किस्तानकी ओर भाग यस्सी (तुर्किस्तान शहर)के किलेपर अधिकार कर लिया। अबुल्खैर

भारी सेना लिये अबूसईदको गद्दी दिलानेके वास्ते समरकन्द आया। गर्मियोकी गर्मीमे उसे भागनेके लिये मजबूर होना पड रहा था। इसी समय उसने येदेची (मंत्रद्वारा वर्षा करानेवाले)को वर्षा बरसानेके लिये कहा। कहते है, वर्षा हुई, और अबुल्खैरकी सेना जीजक-के रेगिस्तानके रास्ते आसानीसे पार हो गई। अब्दुल्ला उस समय तुर्किस्तान, अन्तर्वेद, बदख्शा और काबुलका स्वामी था। बुलालगरके तटपर कनवानके मैदानमे अवस्थित शीराजमे अबूसईद-समर्थक अबुल्खैरकी उज्बेक-सेना और अब्दुल्लासे १४५२ ई० (८५५ हि०)मे लडाई हुई। अब्दुल्लाने राज्य और प्राण दोनो गवाये। अबुल्खैरने पकडे हुये बंदियोको छोड दिया और अपने सैनिकोको लूटनेसे मना किया। समरकन्दमे उसने स्वय बागे-मैदानमे डेरा डाला, और उसके अमीर कशुलमे ठहरे। एक बडा दरबार रचाकर अबुल्खैरने अबूसईदको गद्दीपर बैठाया। फिर वह अपनी इस्लाम-भक्ति और शास्त्रोंके ज्ञानका परिचय देता अन्तर्वेदके शेखुल्इस्लाम (इस्लामिक-धर्मराज)मे कितने ही समयतक सत्सग करता रहा। अबूसईदने रोज उसके पास भेट और सौगात भेजी, तथा उलुगबेगकी पुत्री राबिया सुल्तान बेगमको अबुल्-खैरको प्रदान किया। शांति स्थापित करके अबुल्खैर दश्तेकिपचककी ओर लौट ही रहा था, कि जुगारियाके कलमक राजा उजतेमूर थैगीकी जीभमे पानी भर आया, और उसने अन्तर्वेदकी ओर बढना चाहा। इसपर अबुल्खैर और कलमकोकी सेनाए नूरतुकाईके इलाकेमे चिर नदीके पास कोक-काशानामे गज्-दूनरेसे भिडी। कलमकोने उज्बेकोको करारी हार दी। उज्बेक और कलमक दोनो ही घुमन्तू लडाकू जातिया थी, जिनमे उज्बेक जहा तुर्क मुसलमान थे, वहा कलमक मगोल बौद्ध। १५वी सदीके मध्यमे जो बौद्ध मगोलोने किपचक भूमि और अन्तर्वेदकी ओर पैर बढाना शुरू किया, तो अगली तीन शताब्दियोतक वह रुके नही, और जैसा कि हम आगे देखेगे, उस समय उनकी सफलताओको देखकर सम्भावना होने लगी थी, कि अपने पूर्वज छिङ्-गिस्की तरह शायद वह भी सारे पूर्वी-पश्चिमी तुर्किस्तान, क्पिचक-मगोलियाके मालिक बनें। कोक-काशानामे हारकर अबुल्खैर सिगनककी ओर भागा। कलमकोने ताशकन्दके प्रदेश तथा तुर्किस्तान और शाहरुखिया आदि नगरोको लूटा, फिर वह सैराम होते चू-उपत्यकाके रास्ते लौट गये। शायद यह तेमूर थैगी ओइरोद मगोलोंके दक्षिणपक्ष (सेगोन-गार)का चिङ्-साङ् (उपराज) तथा एसेन तायशा उत्तराधिकारी था। कलमक परम्परामें अबुल्खैरको बोल्गारी खान कहा गया है। अपने इसी अभियानमें खोशोत मगोलोंने सबसे पहले नाम पैदा किया। खोशोत कबीलेके प्रमुख अवनू गल्दनके दो पुत्र अराक तेमूर और बगीर तेमूर सयुक्त शासक थे।

इस युद्धके बाद अबुल्खैरका ध्यान अब दश्तेकिपचककी ओर ज्यादा हुआ, जिसके कारण यह भूमि अधिक समृद्ध हुई। १८५५ ई०मे एक बार फिर अबुल्खैरने तेमूरी खलीफ-पुत्र मोहम्मद मिर्जा को गद्दीपर बिठानेके लिये अपनी सेना भेजी, मगर अबूसईदसे हारकर उसे खाली हाथ लौटना पडा। अबुल्खैरके धन और प्रतापको बढते देख उसके सबधियोने ईर्ष्या करके विद्रोह कर दिया, जिसमे ८७४ हि० (१४६९ ई०)मे अबुल्खैर मारा गया। अबुल्खैरका राज्य किरगिज स्तेपीके पश्चिमी भागपर था। १४६५ ई० (८७० हि०)के आसपास कुछ उज्बेक अबुल्खैरसे असन्तुष्ट हो जू-छिवशकी एक दूसरी शाखाके सुल्तान गिराई और जानीबेगके साथ मुगोलिस्तानमे भाग गये जिनको वहाके खान इसानबुगाने स्वागत कर चू-नदीके पास अपने राज्यके पश्चिमी भाग-मे स्थान दिया। इन्हीको पीछे उज्बेक-कजाक और अन्तमे कजाक कहा जाने लगा। कजाक सुल्तानो-का राज्य इस प्रकार १४६५ ई०मे शुरू हुआ, और १५३३ ई० (९४० हि०) तक वह पुरानी उज्बेक-भूमिके अधिकाश भागके शासक हो गये। १४६९ ई० (८७४ हि०)मे अबुल्खैरके मरनेपर कितने ही उज्बेक फिर मुगोलिस्तानसे अपनी भूमिमे लौट आये। अबुल्खैरने ख्वारेज्म और निम्न [illegible]-उपत्यकापर अधिकार कर लिया था। अबुल्खैरके पुत्र थे—बुदग या शाह बुदग, [illegible], [illegible] महम्मद, हैदर, मजर, इब्राहीम, कूचुनजी, सुइउनिच, अवयून और सैयद [illegible]। इनमे [illegible] पुत्रोंमें [illegible] हुआ। ख्वारेज्म-शासक यादगारकी सतानोंने ख्वा-

कर जवर्दस्त संघर्ष हुआ। बूदगकी कजाकोंके खानो—गिराई और जानीवेगसे भी बहुत प्रतिद्वंद्विता थी, जो कि सिर-उपत्यकामें रहते थे। कजाकोंकी मददके लिये मुगोलिस्तानका खान यूनस आया। युद्धमें बूदगने हारकर अपना शिर कटवाया। इसी बूदग (बदाग)का पुत्र था अबुल्-फतह् मुहम्मद शैवानी, जिसने अन्तर्वेदमें शैवानी-वंशका शासन स्थापित किया। जिस समय उज्बेक दक्षिणमें मध्य-एसियाकी ओर बढ़ रहे थे, उसी समय रूस, तारतारों (मंगोलो)के जूयेको फेंककर मजबूत हो रहा था। मुहम्मदने पहले-पहल १५०० ई० (९०६ हि०)में अन्तर्वेदको जीता, किन्तु इसी समय उन्नीस वर्षकी आयुमें वावरने आकर उसे बुखारा छोड़ सब जगहोंसे खदेड़ दिया। अगले साल १५०१ ई० (९०७ हि०)में वावरको मुहम्मद शैवानीने सारे अन्तर्वेदसे भगा दिया और १५०५ ई० (९११ हि०)तक फरगाना भी वावरके हाथसे जाता रहा, यही नहीं, ख्वारेज्म, हिसार (ताजिकिस्तान) और मेर्वको भी शैवानीने ले लिया।

राजावलि—शैवानी-वंशके खानोंकी नामावली निम्न प्रकार है —

१	मुहम्मद शैवानी, बूदग (बदाग)-पुत्र	१५००–१२ ई०
२	कूचुनजी, अबुल्खैर-पुत्र	१५१२–३० ,,
३	अबूसईद, कूचुनजी-पुत्र	१५३०–३२ ,,
४	उबैदुल्ला, महमूद-पुत्र	१५३२–४० ,,
५	अब्दुल्ला I, कूचुनजी-पुत्र	१५४० ,,
६	अब्दुल्लतीफ, कूचुनजी-पुत्र	१५४०–५१ ,,
७	नौरोज अहमद, सूयुनजी-पुत्र	१५५१–५६ ,,
८	पीर मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र	१५५६–६१ ,,
९	इस्कन्दर, जानीवेग-पुत्र	१५६१–८३ ,,
१०	अब्दुल्ला II, इस्कन्दर-पुत्र	१५८३–९६ ,,
११	अब्दुल मोमिन, अब्दुल्ला II-पुत्र	१५९६–९७ ,,
१२	पीर मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र	१५९७–९९ ,,

१ मुहम्मद शैवानी, बदाग-पुत्र (१५००–१२ ई०)

मुहम्मदका जन्म १४५१ ई०में हुआ था। बापके मारे जानेपर उसके नाना उइगुर शेख हैदरने उसका पालन-पोषण किया था। उस समय किपचक-भूमिकी शक्ति निर्वल थी। उसके शासक थे—सैदिक, ऐवक (शैवानी ओर्दूके खान हाजी मुहम्मदका पुत्र), अरवशाहकी सताने, श्वेत-ओर्दूके खान बोराकके पुत्र जानीवेग और गिराईवेग उसके बाद मंगित या नोगाई खान या यमगुरची, अब्बास और मूसा। नानाके मरनेपर मुहम्मद और उसके भाई महमूदको अमीर कराचिनवेगने अपने संरक्षणमें ले लिया। हैदरको ऐवकने हरा दिया, इसपर अमीर कराचिन अस्त्राखानी कासिमखानके दरबारमें भाग गया, जहां उसके साथ मुहम्मद और महमूद दोनो भाई भी गये। कासिमखानने अपने अमीरुलउमरा तेमूरवेग नोगाईके संरक्षणमें दोनो भाइयोंको दे दिया। जिस समय सुवर्ण-ओर्दूके ऐवक खानने अस्त्राखानको भी आ घेरा उस समय मुहम्मद और महमूद तरुण थे। दोनोंने कराचिनके साथ लड़ते हुये शत्रुओंकी पांती तोड़कर निकल भागनेमें सफलता पाई। फिर मुहम्मद अपने पुराने देश निम्न-सिर-उपत्यकामें लौटा। लोग खान-पुत्रोंके झंडेके नीचे आकर खड़े होने लगे। मुहम्मद कजाकोंके खान जानीवेग-पुत्र इराचीके साथ सावरानके पास लड़ा, किन्तु असफल हो उसे बुखाराकी ओर भागना पड़ा। तेमूरी अहमद मिर्जाके राज्यपाल अमीर अब्दुल अली तरखनने उसे बुखारामें बड़े सम्मानके साथ रक्खा। फिर अहमद मिर्जाने अपने पास बुलाकर उसका बहुत अच्छी तरहसे आतिथ्य किया। दोनो भाई दो सालतक बुखारामें रहे। इस बीचमें वह अन्तर्वेदसे अच्छी तरह परिचित हो गये। इसके बाद अब्दुल अलीको साथ लिये दोनो खानजादे अपनी जन्मभूमिकी ओर बढ़े। अरतक किलेके पास जानेपर खोजा वेगचिकने—जो कि अपने कबीलेका मुखिया तथा किपचकोंके सबसे पुराने अमीरोंमेंसे था—किलेकी कुंजी लाकर

मुहम्मदके हाथमें दे दीं। इस आरम्भिक सफलताके बाद मुहम्मद सिगनक शहरकी ओर बढा। वहा उसे मगित (नोगाई) सरदार मूसाका दूत मिला, जिसने उसे दश्तेकिपचकका खान बननेके लिये अपने स्वामीकी ओरसे निमंत्रण दिया। मुहम्मद उसके पास गया और मूसाके प्रतिद्वंद्वी कजाक खान बेरेदकको हरानेमे मुहम्मदने सहायता की, पर अब मूसा बहानेबाजी करते कहने लगा, कि मगित लोग राजी नही है। निराश होकर मुहम्मद शैवानीने दश्तेकिपचकमे लौट सूजकपर अधिकार कर जानीबेग-पुत्र मुहम्मद सुल्तान (कजाक)से कई लडाइया लडी, लेकिन अतमे हारकर उसे मगिशलक (कास्पियनतट) होते ख्वारेज्मकी ओर भागना पडा। खुरासानके शासक सुल्तान हुसेन मिर्जाके राज्यपाल अमीर नासिरुद्दीन अब्दुल खालिक फीरोजशाहने उसे बहुत-सी मूल्यवान् भेटे प्रदान की। ख्वारेज्मसे कराकुल होते मुहम्मद बुखारा पहुचा और फिर अली तरखनके साथ समरकन्द। अन्तर्वेदके बादशाह अहमद मिर्जाकी मुगोलिस्तानके खान महमूद खानसे ताशकन्द-शाहरुखियाके लिये लडाई हो रही थी, जिसमे अहमद मिर्जाके साथ १४८८ ई०मे मुहम्मद शैवानी भी शामिल हुआ। सिर-दरियाकी शाखा चिर (चिरचिक)के तटपर दोनो सेनाओकी भिडत हुई। शैवानीने अपने उपकारसे विश्वासघात करते शत्रुके साथ चुपके-चुपके सलाह कर ली थी, कि यदि मुझे अपना सिंहासन मिल जाय, तो मैं अपने सपक्षियोमें गडबडी पैदा करके उनका साथ छोड दूगा। अगले दिन मुगोलिस्तानी सेना चिर (चिरचिक) नदी पार हुई—पैदल सेना आगे-आगे थी, और रिसाला पीछे-पीछे। शैवानीने अपनी योजना पूरी की। सुल्तान अहमद मिर्जा हारा और उसके बहुतसे आदमी भागते हुये नदीमे डूबकर मर गये। मुगोलिस्तानी खानने पारितोपिकके रूपमे मुहम्मद शैवानीको तुर्किस्तान शहर दे दिया। लेकिन तुर्किस्तान शहर श्वेत-ओर्दूके खानोका था, इसलिये कजाक खान जानीबेग और गिराईका मुगोलिस्तान-के खान महमूदके साथ झगडा होना जरूरी था। महमूदने शैवानीकी सहायता की, अबुल्खैरके पुराने सैनिक भी मुहम्मद शैवानीके झडेके नीचे आ जुटे थे। मुहम्मदके उज्बेकोने जानीबेग और गिराईके कजाकोसे लोहा लिया। आसपासके कई किलोको हाथमे करके शैवानी सिगनकपर चढा, जहा कजाक खान बेरेदकसे भिडत हुई। इसी समय पता लगा कि फीरोजशाह ख्वारेज्मसे खुरासान गया हुआ है। फिर क्या, मुहम्मद शैवानी ख्वारेज्मपर चढ दौडा। कई दिनोंके आक्रमणके बाद भी वह सफल नही हुआ। इसी समय फीरोजशाह लौट आया। शैवानीने ख्वारेज्म छोडकर बुलदुमके किले-पर आक्रमण किया, जिसका ध्वसावशेष खीवासे ८८ वर्स्त (२४$\frac{3}{4}$ फरसख) पर अब भी मौजूद है। इसके बाद बेजिर (बेसिर) शहरको जा लिया, किन्तु खुरासानी सेनाने आकर उसे वहासे भगा दिया। फिर मुहम्मद शैवानी कितने ही नगरोको लूटते-पाटते इलाक और अस्त्राबादतक गया। इसी समय मुगोलिस्तानके खान महमूदका निमंत्रण मिला और वह ओतरार (उतरार) चला गया।

साबरानके लोगोका वहाके दारोगा (राज्यपाल) कुल मुहम्मद तरखनके साथ झगडा हो गया। उन्होने उसे निकाल बाहर कर नगरकी कुजी मुहम्मदके भाई महमूद शैवानीको दे दी, और सारे तुर्किस्तान (मध्यसिर-उपत्यका)के लोगोने दोनो शैवानी भाइयोको अपना शासक मान लिया। इसी समय कजाकोने आक्रमण करके महमूदको पकडकर कजाकसरदार कासिम—जो कि महमूदका मौसेरा भाई था—के हाथमे दे दिया। कासिमने कुछ दिन रखकर सैनिक पहरेमे उसे सूजकके लिये रवाना किया, किन्तु रास्तेमे महमूद भाग निकला, और उसने उगुजमान पहाडपर जाकर भाईसे भेट की। फिर दोनो भाई ओतरार गये। थोडे ही समय बाद कजाक खान बेरेदकने ओतरारपर आक्रमण किया, लेकिन कुछ दिनो बाद सुलह हो गई।

मुहम्मद इधरसे छुट्टी पा यस्सी (तुर्किस्तान) जा वहाके दारोगा मुहम्मद मजीद तरखन * को कैद कर ओतरार लाया, लेकिन मुगोलिस्तानके खान महमूदने आकर उसे छुडाकर समरकन्द भेज दिया। अभीतक महमूद खान (मुगोलिस्तानी) मुहम्मद शैवानीपर बहुत विश्वास रखता था, लेकिन अब उसे मालूम हो गया, कि वह बडा ही अविश्वसनीय और खतरनाक आदमी है, इसीलिये वह

* तरखन=राजकुमार (तुर्की)

उज्वेकोका साथ छोड कजाकोकी ओर हो गया। कजाकोने यस्सीको लेना सम्भव नही समझा, इसलिये ओतरारपर आक्रमण करके महमूद सुल्तानको घेरना चाहा, लेकिन उसमे वह सफल नही हुये। फिर दोनो दलोमे सुलह हुई और कजाक खान वेरेदकने अपनी दो बहिनोमेसे एकको मुहम्मद शैवानी और दूसरीको उसके पुत्र मुहम्मद तेमूरको दिया। मुहम्मद शैबानी जैसे भी हो तैसे अपना मतलब सिद्ध करनेवाला आदमी था, उसे वचन, शपथ या उपकारका कोई ख्याल नही था। अपने राज्यविस्तारमे उसने किसी भी तरीकेको इस्तेमाल करना उठा नही रक्खा। ईमानदारी तो उसे छू नही गई थी। महमूद खानने उसकी बहुत सहायता की थी, लेकिन उसके मनमे भी उसने सदेह पैदा कर दिया। तो भी मुगोलिस्तानी खान समरकन्द और बुखाराके जीतनेकी अपनी योजनामे शैवानीका उपयोग करना चाहता था। लेकिन उससे शैवानीकी शक्तिके बढनेमे ही सहायता मिली।

१४९७ ई०मे बावरने समरकन्दको लेनेके लिये आक्रमण किया, उस समय महमूद शैवानी बाबरके प्रतिद्वद्वी सुल्तान बैसुकर मिर्जाके बुलानेपर ओतरारसे गया। सुल्तान महमूद शैवानीको जीजकमे पहुचकर हार खानी पडी, तब उसका भाई मुहम्मद शैवानी मदद करने आया। अबकी बार एक हजार जेतो (मुगोलिस्तानी खानकी सेना)ने धोखा दिया, और मुहम्मदको भी मुहकी खानी पडी। शैवानीके लिये ईमान-धर्मकी पावन्दी जरूरी नही थी, लेकिन सूफियो और शेखोकी करामातपर उसका बहुत विश्वास था। एक बार उसने शेख मसूरको भोजन कराया। जब वह दस्तरखानके कपडे को बीचसे उठा रहा था, तो शेखने कहा—"तुझे मालूम नही, कि इस कपडेको बीचसे खीचकर नही, बल्कि चारो कोनोंसे मोडकर उठाया जाता है। इसी तरह देशको उसकी राजधानीपर दखल करके नही, बल्कि उसके सीमान्तोपर अधिकार करके जीता जाता है।" इस गुरुमन्त्रके बाद मुहम्मद शैवानी अपने अनुयायियोको लेकर अतर्वेदके समृद्ध और सुखी इलाकोके ऊपर चढ दौडा जिसका कि कोना-कोना वह अपने भगोडे जीवनमे देख चुका था। लूटका माल मिल रहा था, इसलिये घूमन्तू सैनिकोकी क्या कमी हो सकती थी? शैवानीकी सेनामे दश्तेकिपचकके सभी इलाकोके उज्वेक शामिल थे, पीछे खीवासे भी कितने ही मगित आ मिले। तुर्किस्तान और ओतरारके शासक उसके दो चचा कूचुनजी और सुईउनिच थे, जो अपने सवधी हमजा सुल्तान और महवूब सुल्तानके साथ एक वडी सेना लेकर भतीजोके दलमे शामिल हो गये। उत्तरमे घुमन्तुओकी इतनी जवर्दस्त शक्ति तैयार हो रही थी, और उधर दक्षिणमे तेमूरी सुल्तान आपसमे दगल लड रहे थे। गृह-युद्धके भडकानेमे वावरका मुख्य हाथ था। वापसे मिले फरगानापर सतुष्ट न रहकर उसने १४९७ ई०मे समरकन्दको आकर ले लिया, लेकिन थोडे ही दिनो वाद उसे छोडना पडा और वहाका शासन महमूद मिर्जा-पुत्र सुल्तान अलीके हाथमे चला गया। एक उज्वेक रखेली जूरे-वेगी आगा सुल्तान अलीकी मा थी, शायद इस कारण भी दूसरे शाहजादे उसे गद्दीपर देखना नही चाहते थे। लेकिन अब तेमूरी सुल्तान दरबारियोके हाथके कठपुतली भर रह गये थे, इसलिये असली शक्ति सुल्तान अलीके हाथमे नही थी, वल्कि चार सौ सालोसे शेखुल्-इस्लाम होते आये वशके मुखिया खोजा अहिया सर्वेसर्वा था।

मुहम्मद शैवानीको तेमूरियोकी भीतरी कमजोरिया अच्छी तरह मालूम थी। अन्तर्वेदके और स्थानोकी लूट-मारसे शक्तिशाली वन वह १५०० ई० (९०६ हि०)मे समरकन्दपर पहुचा। दस दिनतक उसने नगरको घेरे रक्खा। शेखके पुत्रने दरवाजेसे निकलकर शैवानी सेनाको हरा पीछे ढकेल दिया, लेकिन शैवानीने मौका पा चहार-राह दरवाजेसे नगरमे घुसनेमे सफलता पाई और विना प्रतिरोधके ही वह वागेनौके ग्रीष्मप्रासादमे पहुच गया। अब उसे नगरके भीतर रह गये शत्रुओसे लडना था। युद्ध मध्याह्नमे शुरू हो आधी राततक जारी रहा। मुहम्मद शैवानीने वीरता दिखलाने-मे खतरेकी विलकुल परवाह नही की। दूसरे दिन खबर मिली, कि अब्दुल अली तरखनका पुत्र और कितने ही और तरखन (राजकुमार) वुखारासे सहायताके लिये आते दवूसियाका मुहासिरा किये हुये है। यह खबर सुन उज्वेकोने समरकन्दके मुहासिरेके लिये थोडीसी सेना छोड पहले तरखनोकी ओर मुह मोड और उन्हे हराकर वे वुखाराके ऊपर जा धमके, जिसके सर करनेमे वहुत कठिनाई नही

हुई। शैवानीने वहा कुछ सेना और अपने अन्त पुरको रखकर कराकुलपर आक्रमण किया। इसी समय बुखारावालोने उज्वेक-सेनाको मार डाला। खवर मिलते ही शैवानीने तुरन्त लौटकर बुखारा शहर-पर अधिकार करके वहाके नागरिकोसे वहुत सख्त वदला लिया। फिर वह समरकन्दपर आया, जिसके विजयमे अली मिर्जाकी अपनी मा—जोकि उज्वेक जातिकी थी—ने विश्वासघात किया। वावर उसके वारेमे लिखता है—"अपनी जडता और मूर्खताके कारण उसने शैवानी खानके पास गुप्त रीतिसे सदेश भेजकर प्रस्ताव किया, कि यदि तुम मेरे साथ व्याह करो, तो मेरा लडका इस शर्तपर समरकन्दको समर्पण कर सकता है, कि जव तुम अपने पैतृक राज्यको प्राप्त कर लोगे, तो इस नगरको मेरे वेटे सुल्तान अली को दे दोगे।" इसी कारण चहार-राह दरवाजा अरक्षित मिला। जब शैवानी वागे-मैदानमे पहुचा, तो सुल्तान अली मिर्जा विना किसीसे कुछ कहे कुछ अनुचरोके साथ चहार-राह दरवाजेसे निकलकर शैवानीसे मिला। शैवानीने उसकी कोई इज्जत न कर उसे निचले आसन पर वैठाया। सुल्तान अलीके जानेकी खवर सुनकर खोजा अहिया भी पहुचा, लेकिन शैवानीने चार सौ वर्षोके शेखुल्-इस्लाम-वशका कुछ भी ख्याल न कर उठकर उसका स्वागत भी नही किया, और खूब कडे-कडे शब्दोमें उसे फटकारा—"अभागी दुर्वल स्त्रीने पति पानेके लालचसे अपने खानदान और लडकेकी इज्जतको धूलमे मिला दिया, लेकिन उसके साथ भी अच्छा वर्ताव नही हुआ, क्योकि शैवानी उसको अपनी रखेलिनोके वरावर भी नही समझता था।" १५०० ई० (९०६ हि०)मे समरकन्दको सर करनेके वादसे शैवानीका सन-जलूस (अभिषेक-सवत्) चला। तीन-चार दिन वाद सुल्तान अलीको उसने मरवा डाला, फिर खुरासानकी ओर यात्रा करते समय तुरन्त ही उसने विश्वासघाती खोजा अहिया और उसके दो पुत्रोको कत्ल करवा दिया।

शैवानी और उसके अमीरोको समरकन्द जैसा समृद्ध-सुन्दर नगर मिला, "लेकिन उसके सैनिकोका नागरिक जीवनसे प्रेम नही था। नगरमे कुछ दिनो रहनेके वाद शैवानीने अपने सात-आठ हजार सैनिकोंके साथ खोजा-दीदारके पास जा डेरा लगाया।" दो हजार सैनिक शहरके आसपासमे छावनी डाले पडे रहे और नगरके भीतर सिर्फ छ सौ सैनिक रह गये थे। १९ सालके वावरको जव यह पता लगा, तो उसने दो सौ चालीस आदमियोको लेकर वडे साहसका काम करना चाहा। नगरके सैनिकोको सजग देखकर उसे कितनी ही वार अपने इरादेको रोकना पडा। लेकिन एक रात खोजा अब्दुल मकरम सत्तर या अस्सी आदमियोको लिये मोगाकपुल होते प्रेमियोंकी गुफाके सामनेसे नगर-प्राकार फादनेमें सफल हुआ और पीछेसे जा फीरोजा दरवाजाके रक्षक सिपाहियोंके ऊपर टूट पडा। इस आक्रमणमे दरवाजेके गारदका कमाडर फाजिल तरखन मारा गया। मुकरमके आदमियोने कुल्हाडेसे ताला तोड दरवाजा खोल दिया। अव वावर भी शहरके भीतर दाखिल हुआ। इस समयके वारेमे वावर लिखता है—"नागरिक गहरी नीदमें थे, लेकिन दूकानदारोने जव अपनी दूकानोसे झाककर देखा और उन्हें असली वातका पता लग गया, तो उन्होने शुक्रिया अदा करनेके लिये भगवान्से प्रार्थना की। नगरके वाकी लोग भी जल्दी जाग उठे और अपने लोगोकी सहायता पा हमने पागल कुत्तेकी तरह उज्वेकोको हर एक कूचे और सडकमें पत्थरो और लकडियोंसे पीट-पीटकर मारा।" चार-पाच सौ उज्वेक सैनिक मारे गये। उज्वेकोंकी ओरसे नियुक्त नगर-कोतवाल जानेवफा जान वचाकर शैवानीके पास भागा। वावर मदरसा-उलुगवेगकी ओरसे होते मेहरावोवाली शाला (उलुगताक)मे जाकर वैठा। नागरिकोंने नये तैमूरी वादशाहको वधाई दी। दूसरे दिन मालूम हुआ, कि आहनीदरवाजा (लौहद्वार) अब भी शत्रुओंके हाथमे है। वावर पन्द्रह-वीस आदमियोके साथ उधर दौडा, लेकिन उसके पहुचनेसे पहले ही नगरके गुडोंने उन्हे वाहर निकाल दिया था। जव मुहम्मद शैवानीको यह खवर मिली, तो डेढ सौ सवारोंके साथ आकर उसने दरवाजा आहनीपर आक्रमण करना चाहा, लेकिन उसे व्यर्थ समझकर वह लौट गया। समरकन्दपर अधिकार हो जानेके वाद आसपासके वहुतसे इलाकोसे उज्वेक मार भगाये गये। सोग्द और मियानकुलपर वावरका अधिकार था, और खोजार तथा करशीपर वाकी तरखन (बुखारा-राज्यपाल)का। मेर्वसे लौटकर शैवानी-सेनाने सिर्फ बुखाराको अपने हाथमे लौटा पाया।

-- उस साल तो यही मालूम हो रहा था, कि बावर फिर तेमूरकी कीर्तिको जगाके रहेगा, लेकिन शैवानी भी चुप रहनेवाला आदमी नही था। उसने तैयारी करके १५०१ ई०के वसन्तमे कराकुल और दवूसिया ले लिया। अप्रेल या मई १५०१ ई०मे शैवानीसे लडनेके लिये बावरने सरेपुलके पास जाकर मोर्चाबन्दी की। उसके शिविरसे शैवानीका शिविर चार मीलपर था। चार-पाच दिनोतक दोनो दलोमें मामूली झडप होती रही। यद्यपि अभी मददके लिये आनेवाली सेनाकी प्रतीक्षा करनेकी जरूरत थी, लेकिन ज्योतिपियोका वतलाया मुहूर्त वीता जा रहा था, इसलिये सहायता आनेसे पहले ही वावरने युद्ध छेड दिया। उज्वेकोकी युद्धविद्यामे एक ज्यादा प्रचलित चाल थी "तुलुगमेह" अर्थात् शत्रुके पार्श्वोको प्रहार करके मोड देना, दूसरी चाल थी सरपट दौडते वाण-वर्षा करना, इसके लिये सेनानायक और सिपाही दोनो पीछा किये जानेपर सरपट लौट पडते। शैवानीकी सेना वावरसे कही अधिक थी। इसी समय मुगोलिस्तानकी सेनाने वावरके साथ धोखा दे दिया। वावरकी पूरी हार हुई। वह अपने दस-पन्द्रह अनुयायियोके साथ कोहक नदीकी धारमे कूद पडा। सवार और घोडे दोनो वख्तरदार थे, जिसके कारण उनके शरीरपर भारी वोझा था, तो भी किसी तरह भागकर वह रातसे पहले ही समरकन्द पहुचे। वावरने इस समयके अपने उतावलेपनके ऊपर एक शेर लिखा—

"जो उतावला होकर जल्दीमे अपनी तलवारपर हाथ रखेगा,
वह उस हाथको अफसोस करते हुये अपने दातोसे काटेगा।"

उलुग-मदरसेमे चादर-सफेदके नीचे ठहरकर वावर शहरके वचानेकी तैयारी करने लगा। नगरके वहुतसे निकम्मे और फजूलके "गाजी" हर मुहल्ले और कूचेसे बडी सख्यामे आकर मदरसेके फाटक-पर "पैगम्बरकी जय" करते उतावलापन दिखला रहे थे। तजर्वेकार लोग रोकनेकी कोशिश करते, तो उन्हे वह गाली सुनाते। वात न मानकर वह गये और उज्वेकोसे खूब पिटे। वावरने पीछे हटते समय रक्षा करनेके लिये सेना भेजी, लेकिन तवतक गाजियोकी भीड पिटकर तितर-वितर हो चुकी थी। अव सिपाहियोको नगरके मुहासिरेकी लडाई लडनी थी। वीच-वीचमे सैनिक वाहर निकल छापा मार-कर कितने ही गिर काट लाते। मुहासिरेके कारण नगरमे वाहरसे खूराक आनी वन्द हो गई, जिसके कारण भीषण भुखमरी और अकाल पडा। गरीव लोग कुत्तो और गदहोका मास खाने लगे। घोडोको वृक्षोका पत्ता खिलाया जाता। ऐसी स्थितिमे कितने दिनोतक अपनेको रोके रखता, समरकन्दको आत्मसमर्पण करना पडा। वावरकी बडी वहिन खानजादा विदेशी लुटेरे शैवानीके हाथ-मे पडी। अपनी मा और कुछ दूसरी औरतोको साथ लिये वावर आधी रातको नदीको पारकर समरकन्दसे भाग निकलनेमे सफल हुआ। जीजकमें पहुचनेपर उसे एक नई दुनिया जान पडी, जव समरकन्दकी भुखमरीके वाद उसे वढिया मोटा मास, वारीक आटेकी अच्छी तरह पकी हुई रोटी, मीठे तरवूजे और स्वादिष्ठ अगूर भारी परिमाणमे मिले—चरम अकालसे वह चरम सुकालमे पहुच गया था। अव सोग्द (अन्तर्वेद)का स्वामी शैवानी था। उसने मुगोलिस्तानी खान महमूदको अगूठा दिखला दिया, जिसने जाकर ताशकन्द-शाहरुखियाको हाथमे किया। जाडोमे सिर नदीके जम जानेपर उसे आसानीसे पार हो शैवानीने ताशकन्द शाहरुखियाको लूटा। १५०२ ई०मे मुगोलिस्तानी राज्यपाल सुल्तान अहमद तम्वोलने अपने मालिकसे विद्रोह करके शैवानीको सहायताके लिये बुलाया। शैवानीने पहुचकर महमूद खानको बुरी तरहसे हराया, और उसके साथ आया वावर मिर्जा जान वचाकर फरगानाके दक्षिणवाले पहाडोमे भाग गया। मुगोलिस्तानी खानको दौलत सुल्तान खानम (अपनी वहिन), तथा अम्वा सुल्तान खानम, कुरुज खानम आदि कई राजकुमारियोको जून १५०३ ई०मे भेट देनी पडी। शैवानी फरगानाके मुख्य नगरोमे उज्वेक छावनिया रखकर लौट आया।

१५०५ ई०तक सारा फरगाना, ख्वारेज्म और हिसार (ताजिकिस्तान) आदिके इलाकोपर भी शैवानीका अधिकार हो गया। अव वह अपनी सारी सेना ले तेमूरके द्वितीय पुत्र उमरशेखके वशज हुसेन वेकरासे खुरासान छीननेके लिये दक्षिणकी ओर वढा। पहले साल वह वलख नगरतक अपना अधिकार करके समरकन्द लौट गया। हुसेनने अपने पडोसी ईरानी शाह इस्माईल और वावरसे भी

मदद मागी। वावर ९०९ हि० (१५०३–४ ई०)मे कावुलका राजा बन चुका था। वह भी हुसेनकी मददके लिये खुरासान आया, लेकिन तवतक हुसेन मर चुका था, और उसके दोनो वेटोमें राज्यके बटवारे को लेकर भयकर फूट पैदा हो गई थी। शैवानी जैसे भयकर शत्रुको शिरपर देखकर भी ऐसा करना वावरको वहुत वुरा लगा—"दस फकीर एक चट्टानपर बैठ सकते है, किंतु दो राजाओंके लिये सारा भूमडल छोटा है।" वावर निराश होकर लौट गया। ९१२ हि० (१५०७ ई०)के वसन्तमे शैवानी फिर सेना ले वक्षु पार हुआ, और रास्तेके इलाकोको जीतते जूनमे मुरगाव नदी भी पार हो गया। खुरासानकी राजधानी हिरात नगरी तुरन्त उसके हाथमे आ गई। वहाका किला कुछ देर-तक प्रतिरोध करता रहा, लेकिन दो-तीन सप्ताह वाद किलेने भी आत्मसमर्पण किया। शैवानीने हिरात-के साथ इतनी मेहरवानी की, कि एक लाख तका कर लेकर कला और विज्ञानके इस महान् केन्द्रको अपने लुटेरे उज्वेकोंके हाथो वरवाद होने नही दिया। शैवानीने अपनी सेनाके साथ शहरके वाहर डेरा डाला। हुसेन वेकराके वेटे मुजफ्फर हुसेन मिर्जाकी वीवीके सौंदर्यको सुनकर अट्ठावन वर्षका शैवानी उसपर मुग्ध हो गया। उसने उसे अपने हरममे दाखिल किया। हिरातके राजभवनमे उसे भारी परिमाणमे सोने-चादीके वर्तन, वहुमूल्य लाल, हीरे, मोतिया तथा दूसरे रत्न प्राप्त हुये।

उसकी सेनाने वाकी तेमूरी राजकुमारोको हराते सारे खुरासानको अपने हाथमे कर लिया। वावर शैवानीसे हारा और जला-भुना हुआ था, इसलिये उसे अपने शत्रुमें केवल दोष ही दोष दिखलाई पडते थे। शैवानी कवि था, और उसकी कवितायें वुरी नहीं होती थी, लेकिन "वावरनामा"मे वावर लिखता है—"विल्कुल अज्ञ होते भी उसने ढिठाई दिखलाते हुये काजी अख्तियार और मुहम्मद मीर युसुफ (खुरासाने प्रसिद्ध मुल्ला) जैसे विद्वानोंके सामने कुरानकी व्याख्या करते व्याख्यान दिया। उसने कलम उठाकर सुलेखक मुल्ला सुल्तान अली और चित्रकार वेहजादके लेखो और चित्रोका सशोधन किया। वह अपने उवा देनेवाले शेरोको मेम्वरसे पढकर सुनाता था, और उन्हे उसने लिखवाकर चारसूमे टगवा दिया था।" आधुनिक कालके तुर्की साहित्यके एक विद्वान् वाम्वेरीने शैवानीकी कविताके वारेमे लिखा है—"शब्द और अर्थ दोनोकी दृष्टिसे शैवानीकी कविता पूर्वी तुर्की साहित्यकी सर्वश्रेष्ठ कृतियोमें है, और उससे पता लगता है, कि शैवानीको तुर्की, फारसी और अरवीका ज्ञान वहुत अच्छा था।"

शैवानीने वावरका पीछा भी करना चाहा, लेकिन कधार नगरके मुहासिरेमे असफल रहनेके कारण वह कावुलकी ओर नही वढा। १५०८ ई०में उसने मुगोलिस्तानके खान महमूदको ताशकन्दमे जाकर हराया। खानने फरगानाके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन अपने पाच पुत्रोंके साथ प्राण खोनेके सिवा उसे कुछ हाथ नही लगा।

पूर्वी और दक्षिणी प्रतिद्वद्वियोसे निपटनेके वाद भी अभी उत्तरमे कजाक खान कासिमके दो लाख सैनिक मौजूद थे। जाडोंमे दोनोंके ओर्दू घास-चारेके सुभीतेवाले स्थानमें डेरा डाला करते थे। शैवानीका ओर्दू उस समय कुरुकमे था। १५०९-१०ई०के जाडोमे एक दिन कासिम खान अपनी सेनाके साथ आ पहुचा। उज्वेकोने अपने लूटके मालको छोड दौडकर शैवानीको खवर दी। शैवानीने तुरन्त पीछे हटनेके लिये नगारा वजवाया और जाडोंके अन्ततक उज्वेक वडी अस्तव्यस्त अवस्थामें समरकन्द पहुचे।

यह कह चुके है कि मगोल कवीलोंके अवशेष हजाराके नामसे अफगानिस्तानके पश्चिमी पहाडोंमे रहने थे। शैवानी १५१० ई०मे उनपर आक्रमण करनेके लिये हिंदूकोहके भीतर घुस गया। लेकिन लौटते वक्त हेल्मन्दकी उपत्यका में उसे आदमियो और पशुओकी वडी क्षति उठानी पडी। खुरासानमें पहुचनेपर उसके पास दो सेनाए आ गई और उसने क्षतिग्रस्त सेनाको तुर्किस्तान जानेकी छुट्टी दे दी।

शैवानीका प्रतिद्वद्वी ईरानी शाह इस्माईल सवसे अधिक शक्तिशाली था। उसने आजुरवाइजानी तुर्क-वश (श्वेत-मेष)का उच्छेद करके सारे ईरानपर अधिकार करते हुये सफावी-वश (१४९९–१५२४ ई०)की स्थापना की थी। वह कैसे देख सकता था, कि पूर्वी ईरान-खुरासानपर उज्वेकोका

अधिकार हो। ९१६ हि० (१० IV १५१०–१ III १५११ ई०)मे उसने खुरासानपर आक्रमण किया। उस समय उज्बेकोकी सेना हिरातमे एकत्रित हुई थी। शैबानीकी सेना इस्माईलकी अपेक्षा कम थी। वह हिरातमे छावनी छोड मेर्वकी ओर लौटा। मशहदकी तीर्थयात्रा समाप्त कर शाह इस्माईलने उज्बेकोका पीछा किया। तूकेराबादके पास दोनो सेनाओमे जबर्दस्त लडाई हुई, शैबानी हारा और शाहकी सेना उसे मेर्वकी दीवारोतक खदेड ले गई। शैबानी मेर्वमे दुर्गबद्ध हो गया और शहरके आस-पास शाह इस्माईलने घिरावा डाल दिया। इस तरहकी कायरता दिखलानेके लिये शाहने शैबानीको फटकारते हुये चिट्ठी लिखी। यद्यपि शैबानी इस तरहकी व्यर्थकी वीरता दिखलानेका नही, बल्कि कल-बल-छलका पक्षपाती था, लेकिन उस वक्त अपने बीस हजार घुडसवारोको लिये इस्माईलकी चालीस हजार सेनाके साथ लडनेके वास्ते मैदानमे चला आया। लोगोने उसे प्रतीक्षा करनेकी सलाह दी, लेकिन उसने नही माना और सामने और पीछे दोनो तरफसे आक्रमण कर दिया। इसमें शक नही, उज्बेकोने युद्धमें बडी बहादुरी दिखलाई, लेकिन सख्यामे दूने सफावी भी लडनेमे निर्बल नही थे। उज्बेक-सेना छिन्न-भिन्न हो गई, शैबानी पाच सौ सवारोके साथ भागकर पशुओके एक हातेमे जा छिपा। दूसरी तरफ द्वार न होनेसे नदी-तटकी ओर प्राकारसे उज्बेक सैनिक एक दूसरेके ऊपर कूदे, खानको कूदनेमे चोट आई। दुश्मनोने उसके शरीरको आदमियोके ढेरमेसे निकालकर मार डाला, और शैबानीका सिर काटकर शाहको भेट किया। उसने आज्ञा दी, कि शैबानीके शरीरको टुकडे-टुकडे करके राज्यके भिन्न-भिन्न भागोमे प्रदर्शित किया जाय। इस्माईलने उसके चमडेमे भूसा भरकर तुर्क-सुल्तान बायजीदके पास भेज दिया। बायजीद सुन्नियोका सबसे बडा नेता था, और इस्माईल शियोका, इसलिये उसने तुर्क-सुल्तानके पास सुन्नी भाई तथा महान् उज्बेक-नेताकी इस दुर्गतिको दिखलाना चाहा। शैबानीकी खोपडीमे सोना मढवाकर इस्माईलने शराबके प्यालेके तौरपर प्रदर्शन कराया।

इसमे शक नही, शैबानी उत्तरी घुमन्तुओका अन्तिम सबसे बडा विजेता था, जिसने मध्य-एसियामे एक बडे राज्यकी स्थापना की। लेकिन इसी समय ईरानमे सफावी जैसा शक्तिशाली वश स्थापित हो गया, जिसने ईरानको शिया घोषित करके पूर्वी और पश्चिमी सुन्नी देशोके बीचमे पच्चरका काम किया। वक्षु (आमू-दरिया)तक इस्माईलने बढकर फिर उसे एक बार ईरान और तुरानके बीचकी सीमा बनाई।

२ कूचुनजी (१५१२–३० ई०)

शैबानी घुमन्तू राजवश था, इसलिये हजारो वर्षसे स्थापित अपनी पुरानी व्यवस्थाके अनुसार उसके हरएक राजकुमारको छोटे-छोटे प्रदेशका राजा बनाया जाता था। वह अपने ऊपर एकको खान मानते थे। खानके मरनेपर वशके सभी कुमार मिलकर उसका उत्तराधिकारी खान तथा आवश्यकता होनेपर कलगा (युवराज) चुनते थे, इसमे योग्यतासे अधिक रिश्ते और उमरमे सर्वज्येष्ठका ख्याल काम करता था।

मेर्वमे शैबानीकी जो दशा हुई, उसकी खबर सुनकर बाबर काबुलसे अपने पूर्वजोके देशकी ओर चला, लेकिन नेताके मर जानेसे शैबानी-सेना नष्ट नही हो गई थी। जानीबेग सुल्तान उस समय उपराज था, जिसके झडेके नीचे फिर बडी सेना इकट्ठी हो गई। इसी सेनाने मुगोलिस्तानका कत्ले-आम किया था, जिसमे "तारीख रशीदी"का लेखक इतिहासकार हैदर बाल-बाल बचा था। बाबर अपनी सेना ले आमू पारकर खुत्तलके प्रधान शहर दश्तेकुलाकमे पहुचा। यहा वक्षुके पास फिर दोनो सेनाओमे झडप हुई, लेकिन शक्ति आजमा लेनेपर दोनोने लडनेकी हिम्मत नही दिखलाई। बाबर वक्षु पार हो कुदुज लौट गया और शैबानी-सेनापति हमजा सुल्तान हिसारको। मेर्वसे शाह इस्माईलने शैबानीकी बीबी खानजादा बेगमको भेज दिया था, जो अपने भाई बाबरसे जा मिली। बाबरने इसके लिये इस्माईलको बहुत धन्यवाद देते हुये अन्तर्वेद जीतनेके लिये उससे सैनिक सहायता मागी।

शाह इस्माईलकी भेजी सेनाको भी साथ ले बाबर फिर पहाडी रास्तेसे आमू दरिया पारकर उत्तरकी

ओर बढा। आसकी एक शाखा मुरखावपर पुलेसगीनको हमजा सुल्तान दखल किये हुये था। बाबरको मालूम हो गया, कि दुश्मन बहुत शक्तिशाली है, तो भी साहस करके पुलकी आशा छोड नदी पार करनेकी कोशिश की। लेकिन, जल्दी ही उसे एक दुर्गम रास्तेसे आवदराकी ओर लौटना पडा। उज्बेक उसका पीछा कर रहे थे। आधी रातको खबर लगी, कि उज्बेक नजदीक आ गये है। बाबरने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया और हमजा सुल्तान तथा मेहदी सुल्तान बाबरके बन्दी बने। बाबर चगताइयोकी पूर्वी शाखावाले मुगोलिस्तानके खानका नाती था, इसलिये चगताई-वंशज होनेका दावा करता था। उसने इस सफलताके बाद और भी आगे बढकर दरबन्दे-आहनी (लौहद्वार)तक उज्बेकोका पीछा किया। यार मुहम्मद नज्म-सानी (द्वितीय तारा)ने करशीको लूटा और लोगोको कत्ल किया। अब पामीरमे हिसार और खुत्तलान, खोजर तथा आमूके दक्षिण कुदुजके प्रदेश बाबरके हाथमे आ गये। दर्रा-खैबरसे दरबन्दतकके प्रदेशको कुछ समयके लिये अपने हाथमे करके बाबरको प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी, लेकिन वह जबतक समरकन्दमें पहुचकर तेमूरके तख्तपर नही बैठता, तबतक अपनी सफलतासे सन्तुष्ट नही हो सकता था। उसके इस मनोरथको पूरा करनेके लिये शाह इस्माईलने भारी सेना भेजी। उज्बेक सेनापति उबैदुल्लाने करशीमे मोर्चाबन्दी कर रखी थी, बाकी उज्बेक समरकन्द भाग गये थे। बाबरने साठ हजार सयुक्त सेनाके साथ आक्रमण करके उबैदुल्लाको हराकर बाकी उज्बेकोको भी किजिलकुमके रेगिस्तानमे भगा दिया। दूसरे उज्बेक सुल्तानोको जब पता लगा, तो सामने होकर लडनेकी जगह उन्होने तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका)की ओर भागना ही अच्छा समझा। बाबर अब सारे अन्तर्वेदका स्वामी था।

८ अक्तूबर १५११ ई०को समरकन्दमे बाबर तेमूरके सिहासनपर बैठा। इस वक्त उसे कितनी प्रसन्नता हुई होगी, इसे कहनेकी अवश्यकता नही। उसे क्या पता था, कि यह आठ महीनोकी चादनी है। हा, उसके बाद उसे एक और भी विशाल और वैभवशाली साम्राज्यको भारत मे स्थापित करनेका मौका मिलेगा। इस समय "बाबरका राज्य" तारतारी रेगिस्तानोंसे गजनी और काबुलतक था, जिसमे कुदुज, हिसार, समरकन्द, बुखारा, ताशकन्द, सेरम, खाकन्द (फरगाना) आदि नगर सम्मिलित थे। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि खुरासान अब शाह इस्माईलका था।

लेकिन शाहकी मदद बाबरके लिये बहुत महगी पडी। उसने शाहके नामका खुतबा पढवाया। एक शिया बादशाहके नामका खुतबा पढे जाते देख सुन्नी अन्तर्वेद कैसे सन्तुष्ट हो सकता था? बाबरने स्वय ईरानी पोशाक धारण की, और अपनी सेनाको भी वैसा ही करनेका हुक्म दिया। खासकर ईरानी टोपी धारण करनी अनिवार्य कर दी, जिसमें शियोके बारह इमामोके चिह्न बने हुये थे, और पोशाकमे एक लम्बी लाल पट्टीको लगानेके लिये कहा, जो कि बीचमे होकर पीठके पीछे लटकती थी, जिसके कारण ईरानियोको किजिल-बास (रक्त-केश) कहा जाने लगा। बाबर जरूर समझता होगा, कि शिया-धर्म, शियोकी वेश-भूषा तथा शिया इस्माईलको अपना प्रभु स्वीकारकर वह सुन्नियोका कोप-भाजन बनेगा, लेकिन उसके लिये और कोई रास्ता नही था। प्रजाके असन्तोषकी खबर उज्बेकोको लगी, और १५१२ ई०के वसन्तमे एक उज्बेक-सेना ताशकन्दकी ओर बढी, दूसरी रेगिस्तानके रास्ते उबैदुल्लाके नेतृत्वमे यतीकुदुप (सप्तकूप) होती बुखाराकी ओर। ताशकन्दमे मुकाबिला करनेके लिये बाबरने सेना भेज दी, और स्वय उबैदुल्लाकी ओर चला। कुलमलिकमें दोनोमें जबर्दस्त सघर्ष हुआ, लेकिन यह चमत्कारसे कम नही था, जो कि १८ अप्रैल १५१२ ई०मे बाबरकी चालीस हजार सेनाको तीन हजार उज्बेकोने हरा दिया—अर्थात् एक उज्बेक दस बाबरी सैनिकोसे भी अधिक युद्धक्षमता रखता था। पीछे भारतपर विजय प्राप्त करनेके समय हर एक बाबरी सैनिक शायद हिदुस्तानी सैनिकोसे दसगुणीसे अधिककी क्षमता रखता था। इसमे कारण नागरिक विलासितापूर्ण जीवन तथा पारस्परिक फूट ही सकती थी।

कुलमलिकमे हारनेके बाद बाबरके लिये समरकन्दमे भी शरण नही थी। अब वह शाह इस्माईलके पास जानेके लिये दरबन्दकी ओर चला। दरबन्दमे भी मोर्चाबन्दी हो चुकी थी। शाह इस्माईलने

यार मुहम्मदके नेतृत्वमे साठ हजार तुर्कमान भेजे, जिन्होने उज्बेक सेनापति हमजाको हराकर लौहद्वार (दरबन्द) पार हो खोजार (गुजार), करशीको लूटा। करशीमें पन्द्रह हजार नागरिकोको बिना यह ख्याल किये कत्ल कर डाला गया, कि वह उज्बेक है या स्थानीय नागरिक, बूढ़े-बच्चे है, या स्त्री। इसी कत्ले-आममे कवि बीनाई भी मारा गया। शिया अपनी धर्मान्धताका परिचय दे रहे थे। बाबर समझ गया, कि अब उसे अन्तर्वेद क्षमा नही कर सकता, इसलिये अपनेको उसने अलग कर लिया। इसके बारेमे हैदरने लिखा है—"इस्लाम (सुन्नी-धर्म)का प्रभाव कुफ्र और अविश्वासके ऊपर विजय पाने लगा, सच्चे धर्मकी विजय घोषित हुई। आक्रमणकारी बुरी तरहसे हारे, और उनमेसे अधिकाश युद्धक्षेत्रमे मारे गये। गिज्दुवानके बाणोने करशीके खूनका बदला लिया। मीर नजीम तथा दूसरे सभी तुर्कमानोके मुख्य सेनानायक नगरमें भेज दिये गये।"

मीर नजीमके दबदबेके बारेमे वही इतिहासकार लिखता है—उसके रसोईखानेमे प्रतिदिन सौ भेडें, असख्य मुर्गे-मुर्गिया, हस, बतके और चालीस खवार्त (५६० सेर ?) दालचीनी, केसर और दूसरे मसाले इस्तेमाल होते थे। उसके खानेकी तश्तरिया या तो बिलकुल सोनेकी थी या बहुत मूल्यवान् चीनी मिट्टीकी। अब बाबरने सदाके लिये अन्तर्वेदसे बिदाई ली, और वह काबुल लौट गया।

जिस वक्त दक्षिणमे बाबर-इस्माईल और उज्बेकोका इस तरह सघर्ष हो रहा था, उसी समय मुगोलिस्तानके खानने पूरबसे अन्दिजानके रास्ते प्रधान उज्बेक-सुल्तान सुयुन्जिक खानके ऊपर आक्रमण किया और जरफ्शा-उपत्यकामे समरकन्दसे चालीस मील पूर्व बिशकन्द (पजकन्द) मे उसे पूरी तौरसे हरा दिया। यह वह समय था, जब कि बाबर ईरानी सेना लेकर समरकन्दकी ओर बढ रहा था।

१० (२।४।५)
शैबानी–अस्त्राखाती (१५००-१७४७)
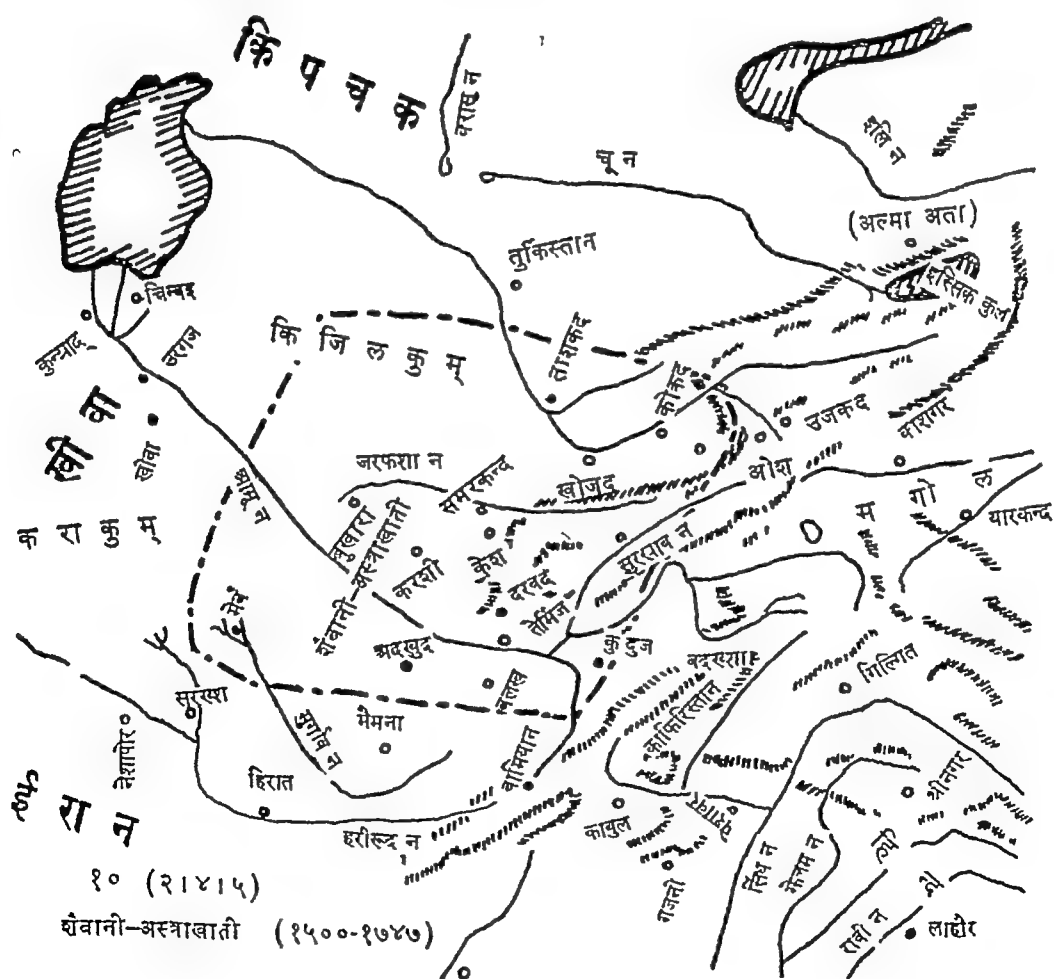
बुखारासे उत्तर गिज्दुवानमे शाह इस्माईलके सैनिकोका जानीबेग-सुल्तानने किस तरह मुकाबिला किया, इसे "तारीख रशीदी"मे मिर्जा हैदरके शब्दोमे सुनिये—

"उज्बेक सुल्तान उसी रातको किलेके भीतर प्रविष्ट हुये, जिस रात तुर्कमान (इस्माईलके सैनिक) और बाबर घुसे थे। तुर्कमान और बाबर महलके सामने छावनी डालकर मोर्चाबन्दीके यंत्रोंको ठीक-ठाक करनेमें लगे हुये थे। सूर्योदयके समय उन्होंने उपनगरमें अपनी सेनाओंको शत्रुकी ओर मुँह करके खड़ा किया। दूसरे पक्षने भी लड़ाईकी तैयारी की। उज्बेकोंके उपनगरमें होनेसे युद्धक्षेत्र बहुत सकरा था। उज्बेक-पैदल-सेनाने चारों ओरसे वाणोंकी वर्षा करनी शुरू की, और जल्दी ही इस्लामको ताकनेवाले कुफ्र और नास्तिकताके हाथको तोड़ दिया, सच्चे धर्मकी विजय घोषित हुई। इस्लामके विजयी वीरोंने धर्मविद्वेषियोंके झंडेको गिरा दिया। तुर्कमान पूरी तौरसे हारे, उनमेंसे अधिकांश लड़ाईके मैदानमें मारे गये। करशीमें तलवारसे जो घाव हुये थे, उनको बदलेके वाणोंकी सिलाईने सी दिया। विजेताओंने मीर नजीम और सभी तुर्कमानोंको नरकमें भेज दिया, बादशाह (बाबर) निराश और दुखी हो हिसारकी ओर लौटा।"

बाबरका यह अन्तिम प्रयत्न था। उसने काबुल लौटकर अब अपनी शक्तिको हिन्दुस्तान जीतनेमें लगाया।

गिज्दुवानके युद्ध ९१८ हि० (१९ III १५१२–७ II १५१३ ई०)के बाद शैबानी सुल्तानोंने अपने तुरा और यास्साक (कानून)के अनुसार मुहम्मद शैबानीके चचा कूचुनजीको अपना खान बनाया और सूयुन्जिक कलगा (युवराज)के पहले ही मर जानेके कारण जानीबेग कलगा बनाया गया। लेकिन वह भी पहले ही मर गया। जानीबेगने शैबानी सुल्तानों (राजकुमारों)में इलाके बाँट दिये, जिनमें कूचुनजीको समरकन्द, सूयुन्जिकको ताशकन्द, उबैदुल्लाको कराकुल-करशी-बुखारा और जानीबेगको समरकन्द-मियानकुल-कर्मीना मिला।

ताशकन्दपर आक्रमण करनेवाली सेनाका सचालक सूयुन्जिक था। उसने नगरपर अधिकार कर लिया। १५१२ ई०में सुल्तान सईद खान मगोलिस्तानीने पाँच हजार सेना ले फरगानासे होकर सूयुन्जिकके ऊपर आक्रमण किया। शिरकन्दमें हार खाकर सुल्तान सईद अन्दिजान पहुँचा। गिज्दुवानमें भारी विजय प्राप्त करनेके बाद सूयुन्जिकने सईदकी ओर मुँह किया, लेकिन सईदने अन्दिजान, अक्सी और मरगिनानमें मजबूत सैनिक छावनियाँ रख दक्षिणके पहाड़ोंका रास्ता लिया। सईदने कजाकोंके शक्तिशाली खान कासिमको सहायताके लिये बुलाया, जो कि शैबानियोंका भी शत्रु था। दश्तेकिपचकके गर्भमें रहनेवाले इस खानके पास बड़ी भारी सेना थी। वह सईद खानकी मददके लिये दक्षिणकी ओर चला। सैरामके राज्यपालने बिना लड़े ही किलेकी कुंजी कासिमके हाथमें दे दी। फिर कजाकसेना रास्तेके नगरों और गाँवोंको लूटती-पाटती ताशकन्दकी ओर चली। १५१३-१८ ई०में सूयुन्जिक कजाकखानके प्रतिरोधमें ही लगा रहा। १५१५ ई०में कासिमने किसी दूसरी दिशामें लूट-पाट करनेके लिये अभियान किया, तब कजाकोंसे छुट्टी पा उज्बेक फरगानाकी ओर मुड़े। सुल्तान सईद खान बिना मुकाबिला किये ही काशगरकी ओर भाग गया, जहाँ उसने कई साल शासन किया। फरगानापर फिर उज्बेकोंका अधिकार हो गया।

गिज्दुवानकी विजयमें शाह इस्माईलकी सेनाकी जो गति हुई थी, उससे उज्बेकोंकी हिम्मत बढ़ गई और उन्होंने एक बार बलखतक घुसकर खुरासानमें लूट-पाट की, लेकिन जब शाह इस्माईलकी सेनाके प्रहारका भय लगा, तो वह पीछे हट आये। शाह इस्माईल १५२३ ई०में मर गया, और उसका बालकपुत्र तहमास्प (१५२४–७६ ई०) तख्तपर बैठा। इस समय फिर उज्बेकोंको मौका मिला और १५२५ ई०में उबैदुल्ला एक बड़ी सेना ले मर्व जीतते खुरासानकी ओर बढ़ा। अप्रतिरक्षित मशहद नगरने आत्मसमर्पण किया। उबैदुल्ला तूसको भी लेते अस्त्राबाद पहुँचा, और अपने पुत्र अब्दुल अजीजको वहाँका शासक बना बलखकी ओर लौटा। आजुरबाईजानसे सेना आई, लेकिन उसे उज्बेकोंने बोस्तासमें हरा दिया, और अस्त्राबाद अब्दुल अजीजके ही हाथोंमें रहा।

उबैदुल्लाने जाड़ोंको गोरियान (गोरी सुल्तानोंकी मूलभूमि)में बिताया। ९३४ हि० (२७ सितम्बर १५२७–१७ अगस्त १५२८ ई०)में उसने सात मासतक हिरातका मुहासिरा किया। शाह तहमास्प एक बड़ी सेना ले उसके मुकाबिलेके लिये आया, जिसे देख उबैदुल्ला हट गया।

फिर उसने ईरानी शाहसे मुकाबिला करनेके लिये भारी तैयारी शुरू की, और डेढ लाख सेना लेकर दक्षिणकी ओर चला—छिङ-गिस्के बाद इतनी बडी सेना वक्षु पार नही हुई थी। यद्यपि ईरानी सेनामे पचास हजार ही आदमी थे, लेकिन वह बडे तजर्बेकार और अनुशासन-सपन्न थे। उन्होने (टर्कीके) उस्मानी तुर्कोके साथ अनेक सफल लडाइया लडी थी। युरोपने मगोलोसे सीखकर बारूदके हथियारोमे बहुत तरक्की कर ली थी। उस्मानी तुर्कोंने उनसे तोप और पलीतेकी बन्दूकोका इस्तेमाल सीखा था। उस्मानी तुर्कोके प्रतिद्वन्द्वी सफावी इन नये शक्तिशाली हथियारोके बिना कैसे सफलता पा सकते थे ? आविष्कारोके इतिहाससे मालूम है, कि युद्ध-सम्बन्धी आविष्कार सबसे जल्दी प्रचलित हो जाते है। तहमास्पकी सेनामे दो हजार तोपची और छ हजार बन्दूकची थे। उज्बेकोकी सेना यद्यपि तीनगुनी थी, लेकिन उनके हथियार वही पुराने—तीर-धनुष और तलवार-भाले थे। शाह तहमास्प मशहद और हिरातके रास्ते जामके समीप पहुचा—मुख्य सेना मशहदमे डेरा डाले पडी थी। बीस हजार ईरानी सवारोको दुश्मनकी छावनीका पता लगानेके लिये भेजते हुये हिदायत दी गई, कि कोई आदमी अपनेको खाइयोसे बाहर न दिखलाये। इधर मत्रशास्त्रियोको लगा दिया गया था, कि वह जादू करके शत्रुको ऐसा बना दे, कि उनमेंसे एक भी बच निकलने न पाये। अभी तैयारी पूरी नही हुई थी, कि शाह तहमास्पने युद्ध करनेकी ठान ली। २५ सितबर १५२९ ई० को जाममे दोनो सेनाये एक दूसरेसे भिडी। यह ९ मुहर्रम करबलामें इमाम हुसेनकी शहादतका दिन था, इसलिये शिया शाहने इसी पवित्र दिन युद्ध छेडना अच्छा समझा। बीचमे तोपोको रक्खे बीस हजार चुनी हुई सेना खडी थी, जिनके साथ शाह भी था। उज्बेक पार्श्वोंपर आक्रमण कर दोनो छोरोको पीछे ढकेल पीछेसे भी डेरोको लूटने लगे। लेकिन पार्श्वोंके इस प्रकार ढकेल दिये जानेपर भी केंद्र मजबूत रहा। ठीक समयपर तोपोको बाधनेवाली जजीरे गिरा दी गईं और वह आग और गोले उगलने लगी। तिगुना जनबल रखते हुये भी उज्बेक घास-मूलीकी तरह कटने लगे। युद्धक्षेत्रमे उनके पचास हजार आदमी काम आये, लेकिन उन्होने बीस हजार अपने शत्रुओका भी सहार किया। उज्बेकोकी भारी हार हुई।

तहमास्पके विजयसे बाबर प्रसन्न नही शकित हो उठा। उसे डर लगा, कही वह खुरासानसे हमारे राज्यकी ओर भी न बढ आये। बाबरने अपने बेटे हुमायूको पचास हजार सेना देकर आगे बढनेका हुक्म दिया—हुमायू उस वक्त पिताकी ओरसे बदख्शाका राज्यपाल था। बेटेको इस तरह रवाना करके बाबर स्वय मुगोलिस्तानी राजकुमार सुल्तान वेसके साथ समरकन्दकी ओर चला। वेसके भाई शाह कुल्लीने हिसारको ले लिया। तुरसुन मुहम्मद सुल्तानने तेर्मिज और कबादियानपर हाथ साफ किया। जिस समय हुमायू इस प्रकार, कूचुनजी खानको तहस-नहस करनेमें व्यस्त था उसी समय बाबर आगरामें कूचुनजीके दूत अमीन मिर्जाकी बडी आवभगत कर रहा था। भोजके बाद सिरकमाश मलमलका जामा, और बहुमूल्य बटन, सोना तथा दूसरी चीजें भेंटमे पा ३१ जनवरी १५२९ ई०को उज्बेक-दूत बाबरसे विदा हुआ। दूत अमीन मिर्जाको एक खाडा, एक कमरबन्द, एक हाथीका अकुश तथा कई हजार तका इनाम मिला था। इसी तरह दूतकी बीबी मेहरबान खानम और उसके पुत्र पूलादको भी बाबरने भेट-इनाम देनेमे बडी उदारता दिखलाई। दूतको क्या पता था, कि जिस समय पिता उसकी इतनी खातिर कर रहा है, उसी समय उसका बेटा (हुमायू) उज्बेकोके राज्यमे आग और तलवारका जौहर दिखला रहा है।

लेकिन इस भीषण सग्रामके खतम करनेका समय यकायक आ गया, जब कि १५३० ई०मे कूचुनजी मर गया और उसी सालके दिसम्बरमे बाबरकी प्रार्थना स्वीकृत हुई—हुमायू बीमारीसे बच गया, लेकिन उसके बदलेमें अल्लाने बाबरको बुला लिया।

३ अबूसईद खान (१५३०-३२ ई०)

कूचुनजी (अबुल्खैर-पुत्र)के राज्यकालमें ही उसके उत्तराधिकारी (कलगा) चुने गये सूयुन्जिक तथा जानीबेग खोजा (मुहम्मद-पुत्र) मर गये, इसपर कूचुनजीके पुत्र अबूसईदको खान चुना गया। पिताकी भाति इसने भी अपनी राजधानी समरकन्दमे रक्खी। लेकिन, उज्बेक सैनिक-

शक्तिका सचालक अब उबैदुल्ला था, जो बुखारामे रहता था। ईरानियोसे एक बार बुरी तरहसे हार खानेके बाद भी उबैदुल्ला फिर खुरासानकी ओर बढना चाहता था, मगर अबूसईद और दूसरे सुल्तान (राजकुमार) इससे सहमत नही थे। बारूदके हथियारोने इन घुमन्तुओकी हिम्मत तोड दी थी। ईरानका मछलीवाला झडा एक बार फिर सारे खुरासानपर फहराने लगा। तहमास्पने अपने भाई बहराम मिर्जाको अपना उपराज बनाकर खुरासानका शासक बनाया। उबैदुल्ला सेनाका प्रधान-सेनापति था, इसलिये उसने राय न होनेपर भी १५३१ ई०में मशहदकी ओर अभियान किया, लेकिन वहासे हार खाकर भागनेके सिवाय कुछ हाथ नही लगा। घुमन्तू टिड्डी-दलकी तरह हारसे भय खाकर सदाके लिये पीछे नही भाग सकते। १५३२ ई०में उज्बेक-सेनाने हिरात, मशहद, अस्त्राबाद और सब्जवारतकके सारे प्रदेशको डेढ सालतक लूटा-बरबाद किया। घिरावेमे पडे हिरात शहरके लोगोने अन्नाभावमे कुत्ते-बिल्लियोको खाकर खतम कर दिया। शहर आत्म-समर्पण करनेकी सोच रहा था, इसी समय तहमास्पको पश्चिममे उस्मानी तुर्कोंसे छुट्टी मिल गई और वह खुरासानकी ओर बढा, जिसपर उबैदुल्ला लौट गया। ९३९ हि० (३ VIII १५३२–२४ VI १५३३ ई०) मे अबूसईद मर गया।

४ उबैदुल्ला, महमूद-पुत्र (१५३२–४० ई०)

विजेता मुहम्मद शैबानीका भतीजा उबैदुल्ला खान बनकर और भी निरकुश हो गया। १५३५ ई० में उसने फिर खुरासानमे लूट-मार करनेके लिये सेना भेजी, और अगले साल खुद खुरासानकी ओर बढा। चार मासतक हिरातपर उसका अधिकार रहा, जिसमें उसने शियोपर बहुत अत्याचार किये। शाह तह्मास्पका पूरबमे ही जबर्दस्त शत्रु नही था, पश्चिममे उस्मान अली तुर्कोंसे उसका सघर्ष चलता रहता था, जिसमे राजनीतिके साथ-साथ शिया-सुन्नीका झगडा भी शामिल हो जानेसे युद्धका रूप बहुत भीषण होता था। जब वह अपनी अधिकाश सेना ले पूरबकी ओर बढता, तो पश्चिमका शत्रु प्रहार करने लगता, और जब वह पश्चिमकी तरफ मुह करता, तो पूरबकी ओरसे प्रहार होने लगता। जब शाह तहमास्प खुरासानमे उबैदुल्लाके खिलाफ सेना लेकर आया, तो उबैदुल्ला देश लौट गया। तोपो और बदूकोके डरके मारे अब उज्बेक जमकर लडनेकी हिम्मत नही करते थे, लेकिन खुरसानमे लूट-मार करनेके लिये वह दो-तीन बार और जाते रहे।

इसी बीच खीवा (ख्वारेज्म)मे उज्बेकोका एक और स्वतत्र राज्य कायम हो गया, जिसके कारण वहा गडबडी फैल गई। उससे फायदा उठा उबैदुल्ला अपने अमीरोके साथ उरगजके ऊपर चढा। ख्वारेज्मके राजकुमार मङ्गिशलककी ओर भाग गये। उरगज पहुचकर उबैदुल्लाने उन्हे पकडनेके लिये सेना भेजी और अवानेक खान अपने सारे लोगोके साथ वेजिरसे उत्तर वेगातकिरी स्थानमे पकडा गया। उबैदुल्लाने अवानेकको उमरगाजीके हाथमें दे दिया, जिसने उसे मारकर अपने बापकी हत्याका बदला लिया। उबैदुल्लाने ख्वारिज्मको अपने पुत्र अब्दुल अजीजके हाथमे दे दिया। वहाके निवासी सर्तो (फारसी भाषाभाषियो) और तुर्कोंको उबैदुल्लाने नही छेडा। उज्बेकोको चार भागोमे बाटकर उसने बुखारा (उबैदुल्ला), समरकन्द, ताशकन्द और हिसारके सुल्तानोको दे दिया। लेकिन अवानेक खानका पुत्र दीन मुहम्मद अब भी अपनी रियासत देरूनका स्वामी था। उसके पास उरगजसे भी कितने ही भगोडे आ गये थे। दीन मुहम्मदने खीवापर धावा कर दारोगा (राज्यपाल) और उसके आदमियो को हराकर मार दिया। हजारास्पका दारोगा भी जान लेकर भागा। अब्दुल अजीजकी भी हिम्मत उरगजमे रहनेकी नही हुई, और वह भी वहासे खिसका। खबर सुनकर उबैदुल्ला चार हजार सेना लेकर पहुचा, जिसके मुकाबिलेके लिये दीन मुहम्मद भी अपने तीन हजार सैनिकोके साथ तैयार था। अमीरोने मना किया, लेकिन दीन मुहम्मदने नही माना। घोडेसे उतरकर उसने अपने कुर्तेपर मिट्टी फेकते हुए कहा—"मेरे अल्लाह, मै अपना आत्मा—प्राण तेरे हाथोमे देता हू और अपना शरीर धरतीको।" फिर उसने पीछे मुह फेरकर कहा—"मै अपनेको मरा हुआ समझता हू। तुममेंसे जिसको अपना प्राण मुझसे ज्यादा प्यारा हो, वह मेरे साथ आगे न बढे, जिसको नही वह आये।"

यह कहकर दीन मुहम्मद फिर घोडेपर चढा। उसके सैनिक भी उत्साहसे भरे उसके पीछे-पीछे चले। पहली भिडतमे ही उन्होने दुश्मनोको भारी क्षति पहुचाई। दोनो उज्बेक जातिके ही लोग थे, इसलिये समझौतेकी बात चलने लगी। इसी बीच ९४६ हि० (१९ V १५३९–८ IV १५४० ई०)मे उबैदुल्ला मर गया। इतिहासकार हैदरके अनुसार पिछले सौ सालोमे उबैदुल्ला जैसा बादशाह नही हुआ था। वह बडा ही सदाचारी, नम्र, धार्मिक, सयमी, न्यायपरायण, उदार और वीर पुरुष था। उसने अपने हाथसे कई कुरानकी प्रतिया लिखी। तुर्की-अरबी-फारसीका वह कवि तथा सगीतज्ञ था। उसके समयमे राजधानी बुखारा हुसेन मिर्जाके हिरातकी याद दिलाती थी।

५ अब्दुल्ला I, कूचुनजी-पुत्र (१५४० ई०)

यह थोडे ही समय बाद मर गया, और फिर उसका भाई गद्दीपर बैठा।

६. अब्दुल्लतीफ, कूचुनजी-पुत्र (१५४०–५१ ई०)

१५२६ ई० में बलख जीतनेके बाद उसे जानीबेगके पुत्र पीर मुहम्मदके बेटेको दे दिया गया था। अब्दुल्लतीफके समय १५४७ ई०मे अपने भाई हुमायूसे विद्रोह करके बाबर-पुत्र कामरान काबुलसे बलखकी ओर भागा। पीर मुहम्मदने उसका स्वागत किया और उसे सेना देकर लौटाया। कामरानने गोरी और बकलानपर अधिकार कर लिया। इस समय पीर मुहम्मद उसके साथ था और यहींसे सेना देकर लौट गया। प्रतिद्वन्द्वी भाईकी इस तरह सहायता करनेके लिये बादशाह हुमायू बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने बलखके विरुद्ध अभियान किया। हुमायू इस वक्त अन्दराब, तालिकान होते नारीडाडेको पार हो निलबरकी सुन्दर उपत्यकामे होते बकलान पहुचा और सेनाको ऐबकके ऊपर आक्रमण करनेका हुक्म दिया––बलख-राज्यमे ऐबक एक बहुत ही उर्वर और समृद्ध इलाका है। ऐबक ले लेनेके बाद खोलम होते हुमायूकी सेना आगे बढी, लेकिन प्राकृतिक और मानवी प्रतिरोध इतने कडे हुये, कि उसे लौटना पडा। हुमायूके लौट जानेपर कामरानने बदख्शापर असफल आक्रमण किया। अब्दुल्लतीफके शासनकालमे की यही एक महत्त्वपूर्ण घटना है। ९५९ हि० (२९ दिसबर १५५१–१८ नवम्बर १५५२ ई०)में अब्दुल्लतीफ मर गया।

७. नौरोज मुहम्मद, सूयुनजी-पुत्र (१५५१-५६ ई०)

उज्बेक और उस्मानअली तुर्क-राज्योके बीचमे सुन्नियोकी घृणाके पात्र सफावी शियोका राज्य था, जिनसे दोनो लडते रहते थे। इसके कारण दोनो सुन्नी तुर्क-शासकोके बीचमे अब बहुत घनिष्ठता स्थापित हो चुकी थी, जिसे ब्याह-शादीद्वारा भी दृढ करनेकी कोशिश की जाती थी। नौरोजके शासन कालमे दोनो राज्योमे दूतोका बहुत दानादान होता रहा।

८ पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५५६-६१ ई०)

पीरमुहम्मदके शासनके बारेमें यही कहा जा सकता है, कि अभी शैबानियोकी शक्तिका ह्रास होना शरू नही हुआ था।

९. इस्कन्दर, जानीबेग-पुत्र (१५६१-८३ ई०)

इस्कन्दरके शासनकालमें राज्यका सर्वेसर्वा उसका पुत्र अब्दुल्ला था। अब्दुल्लाने १५५६ ई० में बुखाराकी शाखाको खतम कर दिया। फिर ९६८ हि० (२२ IX १५६०–१३ VII १५६१ ई०)मे उसने अपने पिताको "खाकानेजहा" (दुनियाका राजा) घोषित किया। ९८६ हि० (१० III १५७८–२९ I १५७९ ई०)मे उसने समरकन्दकी शाखाको भी खतम कर दिया, जिससे पहिले १५८१

ई०मे वावाजान मुल्तानपर उसने विजय प्राप्त कर ली थी। अब्दुल्ला असाधारण आदमी था, इसमें सन्देह नही। जीजकमे समरकन्दकी ओर आनेवाले रास्तेमें जीलानउति टाडेपर एक चट्टानके ऊपर उसने एक अभिलेख खुदवाया है—"रेगिस्तानको पार करनेवालो और जलथलके यात्रियोको मालूम होना चाहिये, कि ९७९ हि० (२६ मई १५७१–१५ अप्रैल १५७२ ई०)मे खलाफनके सहायक, महाखाकान सर्वशक्तिमान् महाखान इस्कन्दरखान-पुत्र अब्दुल्लाके तीस हजार सैनिको, और बोरका खानके पुत्रो दरवेशखान-वावाखान आदिकी सेनाओके वीचमे युद्ध हुआ। उसकी सेनामें सुल्तानके पचास सम्बन्धी और तुर्किस्तान-ताशकन्द-फरगाना-दश्तेकिपचकके चालीस हजार योद्धा थे। तारोके सौभाग्यसूचक समायोगसे शाहकी सेनाको विजय प्राप्त हुई। उपर्युक्त मुल्तानोमे बहुत-से मारे गये, और बहुतसे बन्दी हुये। इस एक महीनेके भीतर इतना खून बहा, कि जीजक नदीके पानीके ऊपर खून तैरता रहा। ।"

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि चट्टानोपर अभिलेख खुदवानेवाले मध्य-एसियामे बहुत कम ही खान और सुल्तान हुये।

९८७ हि० (२८ II १५७९–१९ I १५८० ई०)में वावाखानने ताशकन्द ले अपने भाई दरवेशको मार डाला। अब्दुल्लाको यह खबर खोकन्दके इलाकेमे मिली। उसने पहुचकर ताशकन्दके पास वावाको हराकर भगा दिया। अब्दुल्लाको सूचना मिली, कि वह कजाकोके बीच जाकर छिपा है। इसपर उसने उसे पकडनेके लिये तलस और सैरामतक सेना भेजी। १५७९-८० ई०में कजाकोंने यस्सी और सरवान ले लिया, फिर सरवान-मुल्तानके नेतृत्वमे बुखारातक और वादमें समरकन्दतकके इलाकेको लूटा। इसी बीच वावाका कजाकोके साथ झगडा हो गया और वह उनके कई सरदारोको मार, उनके खान सिगाईको हराकर भारी लूटके मालके साथ ताशकन्द लौटा।

वावाने फिर अब्दुल्लाकी नीद हराम कर दी और १५८१ ई०में वह उसके विरुद्ध उजकदतक पहुचा। जब उसका डेरा कराताउमे पडा हुआ था, उसी समय सिगाई खान उसके पास आया, जिसे उसने खोजन्द शहर प्रदान किया। कजाकोंमे और घनिष्ठ मित्रता करनेके लिये बुखारामे एक बहुत बडा जल्सा मनाया गया, जिसमें अब्दुल्लाके पुत्र अब्दुल-मोमिन और सिगाईके पुत्र तवक्कलने खेलमे अपनी सिद्धहस्तता दिखलाई। १५८३ ई०मे अब्दुल्लाने फरगाना और अन्दिजानको जीता, जिसमे कजाक तवक्कल खान उसका सहायक रहा। वावा सुल्तानके पतनके बाद तुर्किस्तान और ताशकन्दने अब्दुल्लाकी अधीनता स्वीकार की। इसी साल पिताके मरनेपर अब्दुल्ला शैबानी-तख्तपर बैठा।

१० अब्दुला II, इस्कन्दर-पुत्र (१५८३–९६ ई०)

अब्दुल्ला अकबरका समकालीन था। बापके समयमे भी सारा राजकाज तथा दिग्विजय अब्दुल्ला ही करता रहा। अब्दुल्लाकी सबसे बडी इच्छा थी, मुहम्मद शैबानीके साम्राज्यकी सीमाओं-तक अपने राज्यको पहुचाना, जिसमें वह बहुत कुछ सफल भी हुआ। शैबानियोका वह सबसे बडा खान था। इस्कन्दरके मरनेके वक्त वह खोजन्दमें था। वही शैबानी-मुल्तानोंने उसे अपना खाकान चुना, और मक्काके जमजमके पानीमे भिगोकर पवित्र किये गये सफेद नम्देके ऊपर बैठाकर उसे अपने कधोपर उठाया। इस प्रकार छिङ-गिस् और उसके पहलेसे चली आई नम्दारोहण (सिंहासनारोहण) की रसम अदा की गई। अमीर वहासे जमीन गये, जहासे गद्दी पानेकी खबर दी गई। अपने पिताके समयमें ही अब्दुल्लाने कजाक-मरुभूमिसे काबुलकी सीमातकके बहुतसे प्रतिद्वन्द्वियो और शत्रुओको परास्त किया, और छोटी-छोटी रियासतोंमे बटे उज्बेक-राज्यको एकतावद्ध किया था। उसके राज्यकी सीमा उत्तरमे सिर नदीसे आगेकी मरुभूमितक तथा पूरबमे काश्गर और खोतनतक थी।

दक्षिणमें अकबर और सफावी शाहके साम्राज्य उसके आगे बढनेमे बाधक थे, लेकिन बलख और बदख्शाको उसने दिल्लीसे छीन लिया था।

शाह तहमास्पके मरनेपर अब्दुल्लाकी शक्ति और भी अधिक बढी। ख्वारेज्म आपसी फूटसे अस्त-व्यस्त था, जिसका अन्त करनेवाला शाह अब्बास (१५८७–१६२९ ई०) ईरानके अत्यन्त शक्तिशाली शाहोमेंसे था। १५८५ ई०मे शाह अब्बासको उस्मानी तुर्कोंकी लडाईमे फसा देखकर उज्बेकोने हिरातपर आक्रमण कर दिया और नौ महीनेके मुहासिरेके बाद उसपर अधिकार कर लिया। इस लडाईमे राज्यपाल अलीकुल्ली खान शामलू और कितने ही दूसरे ईरानी सेनापति काम आये। सुन्नी-उज्बेक शियोको काफिरोंसे भी बदतर मानते थे, इसलिये उन्होने हिरातियोके साथ बहुत कठोर बर्ताव किया। सदियोसे शिया-सुन्नी मुल्ला कलमकी लडाई लड रहे थे, और उनके सुल्तान अपनी तलवारो द्वारा एकको मिटाकर इस भेदको मिटाना चाहते थे। तरुण शाह अब्बास जब कजवीनसे अपनी सेना लेकर खुरासानकी ओर बढा, तो अब्दुल्ला चुपकेसे मेर्व होते बुखारा लौट गया। मशहद पहुचनेपर अब्बासको पता लगा, कि तुर्कोंने गुरजी (जार्जिया)पर आक्रमण कर दिया है। अब्बास जल्दी-जल्दी उधर लौटा, लेकिन लडाईमे उसकी हार हुई। इसकी खबर पाते ही अब्दुल्ला मशहदपर चढ दौडा। उसके हरावलका नेतृत्व अब्दुल-मोमिनके हाथमें था, जिसने मशहदपर भारी अत्याचार किये। अब्दुल-मोमिन बडा ही बर्बर, क्रूर, महत्वाकाक्षी आदमी था। वह एक बडी सेना लिये दीन मुहम्मदके साथ जल्दी-जल्दी आगे बढा। हिरातका राज्यपाल तथा अब्दुल्लाका विश्वासपात्र सेवक कुलबाबा कोकलताश भी उसके साथ था। इस सेनाने पहले नेशापोरपर आक्रमण किया। कुछ थोडेसे आदमी पकडकर छोड दिये गये। नेशापोरको लूटकर वह शियोके पवित्र नगर मशहदपर चढे—लूट-मारके भयसे बहुतसे गावके लोग भी मशहदको सुरक्षित समझ वहा चले आये थे। इतने आदमियोके लिये अन्न कहासे मिलता? अकाल पड गया। पहले ही प्रहारमे नगरपर उज्बेकोका अधिकार हो गया, और वहाके राज्यपाल उम्मत खान उस्ताजलूका सारा प्रयत्न व्यर्थ गया। अब्दुल-मोमिनके सैनिकोने शहरके भीतर जाकर देखा, कि "बहुसख्यक स्त्री-पुरुष, सत और विद्वान्, सभी इमाम रजाके रौजेके बाहरी आगनमे इस आशासे जमा हो गये है, कि स्थानकी पवित्रताके कारण शायद उन्हें प्राणदान मिल जाय। लेकिन, उज्बेक शिया-पवित्रस्थानको कब माननेवाले थे? उन्होने बिना किसी विचारके जो भी चीज सामने आई, उसे काटा और नष्ट कर दिया।" पैगबरके नातीकी सतान इमामरजाके वशजोको भी उन्होने नही छोडा—वह बेचारे अपने पूर्वज शहीदकी कब्रसे लिपटे हुये थे। कहा जाता है, अब्दुल-मोमिन स्वय उस समय मीर अलीशेखके महलसे तमाशा देख रहा था, जब कि उसके आदमी अपनी तलवारोको इन निरपराध स्त्री-पुरुषोके खूनसे रग रहे थे। न जाने कितने अच्छे-अच्छे विद्वान् और धर्मशास्त्री भी इस हत्याकाडमें मारे गये। हजारो आदमियोके करुण क्रदनसे भी उज्बेको का दिल नही पसीजा। सिर्फ सडको और आगनोको ही नही, बल्कि पवित्रतम स्थानो और मस्जिदोको भी उन्होने खूनसे रग दिया। मशहदके हत्याकाडमे अलीके वशजोकी कब्रोको भी अब्दुल मोमिन ने नही छोडा, और उन्हें तोड-फोडकर नष्ट कर दिया। तीन शताब्दियोसे तीर्थयात्री और दूसरे धार्मिक लोगोने जो मूल्यवान् भेंटें—अतिविशाल सोने और रूपेके दीपस्तम्भ, बहुमूल्य धातुओ और रत्नोसे जटित कवच, दुर्लभ रत्न, तथा दूसरी कितनी ही अनमोल चीजें—इमामरजाकी समाधिपर चढाई थी, उन सबको विजेताओने लूट लिया। यही नही, उन्होने वहाके विशाल पुस्तकालयको भी ध्वस्त कर दिया, जिसमे पुराने सुल्तानोके दान दिये कितने ही प्रसिद्ध कुरानके अत्यन्त सुन्दर कलापूर्ण हस्तलेख थे। "शियोकी पुस्तकें" कहकर उन सबको घसीटकर सडकोपर ले गये और फाडकर उन्हे पूरी तौरसे नष्ट कर दिया। सुन्नी विजेताओने मुर्दोंके ऊपर भी रहम नही किया। इमाम रजाके पास सोये शाह तहमास्पकी लाशको जलाकर उन्होने हवामे उडा दिया।

शाह अब्बास उस समय बीमार था, इसलिये तेहरानसे नही आ सका। जैसे ही स्वस्थ हुआ, वह तैयारी करने लगा। लेकिन अधिकाश खुरासान—हिरात, मशहद, सेरख्स, मेर्व, खाप, जाम, फूसड, गोरियान—अब्दुल्लाके हाथमें करीब-करीब उसकी मृत्युके समयतक रहा।

१५८६ ई० मे ही अब्दुल्लाको खुरासानकी ओर गया जानकर उत्तरसे कजाकोने लुटेरोके घर-को लूटनेका निश्चय किया और तवक्कल खान तथा उसके भाई इशिमके नेतृत्वमे वह अन्तर्वेदपर चढ आये। लूटकर जब वह रेगिस्तानकी ओर लौट रहे थे, तब अब्दुल्लाके भाई उबैदुल्लासे उनका मुकाबिला हुआ।

जिंदगीभर संघर्ष करते हुये भी अब्दुल्लाका जीवन असफल रहा, ऊपरसे अन्तमे पुत्र अब्दुल मोमिन-के वर्तावोने उसे और दुःखी बना दिया। उत्तरके कजाक उसे दम नही लेने दे रहे थे। १५९६ ई०मे उनके खान तवक्कलने फिर चढाई की, और ताशकन्दको लूटा, फिर ताशकन्द एव समरकन्दके बीचमे अब्दुल्लाको बुरी तरह हराया। उधर शाह अब्बास ख्वारेज्मके उज्बेकोसे दोस्ती कर उनकी मददसे मेर्व, मशहद और हिरातको छीननेके लिये तैयार था। इस प्रकार अब्दुल्लाने अन्तमे अपनी आखोके सामने ही अपने कियेपर पानी फिरत देखा और ६ फर्वरी १५९७ ई०को अर्थात् अकबरसे आठ वर्ष पहले बेटेके हाथो प्राण खोया।

११ अब्दुल मोमिन, अब्दुल्ला II-पुत्र (१५९६–९७ ई०)

अब्दुल्लाके मरते ही देशमे अराजकता फैल गई। पिताको मारकर तख्त लेनेकी इच्छा रखनेवाले पुत्रने गद्दी सभालते ही पहले पिताके विश्वासपात्र सेवकोको मरवाना शुरू किया, जिसके कारण दरबारी उसके खूनके प्यासे हो गये। उसे चारो ओर षड्यंत्र ही षड्यंत्र दिखाई देता था। जुलाई १५९७ ई०मे गर्मीसे बचनेके लिये वह रातमे यात्रा कर रहा था। मशालची और कितने ही सवार उसके साथ थे। उरातिप्पा और जमीनके बीचमे एक सकरा दर्रा आया, जिसमे मशालचीके साथ सिर्फ दो सवार एक साथ गुजर सकते थे। इसी समय इस आततायीके ऊपर बाणोकी वर्षा होने लगी। मोमिन घायल होकर गिर पडा, और हत्यारोने तुरन्त उसका शिर काट लिया। दूसरे दिन पीछेसे आनेवालोने पोशाकसे उसके धडको पहचाना। इस प्रकार छ महीना शासन करनेके बाद इस राक्षसने सचमुच ही नरकका रास्ता पकडा।

१२ पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५९७–९९ ई०)

अब्दुल मोमिनके मरनेपर तख्तके बहुतसे दावेदार उठ खडे हुये, लेकिन शैबानी-वशके अन्तिम खान बननेका सौभाग्य पीर मुहम्मदको हुआ। जुलाई १५९८ ई०में शाह अब्बासने हिरातके पास कूल्सालारमे उज्बेकोको करारी हार दी, और उनसे सब्जवार, मशहद और हिरात छीन लिया। देशकी इस अवस्थाकी खबर कजाकोको भी मिले बिना नही रही, और तवक्कल अपने सत्तर-अस्सी हजार सवारोके साथ तुर्किस्तान-शहर, अक्सी, अदिजान, ताशकन्द, समरकन्दको लूटते-अधिकार करते बुखारा पहुचा। पीर मुहम्मद पन्द्रह हजार सैनिकोके साथ नगरमे घिर गया। बारहवे दिन फाटकसे बाहर निकल उसने कजाकोको बुरी तरह हराया। लुटेरोके विरुद्ध लोग एक हो गये थे। मियानकुलके उजुनसकालमे दुश्मनोसे फिर मुकाबला हुआ। बाकी मुहम्मद भी युद्धके आरम्भके समय भाग ले रहा था, लेकिन इसी समय खुरासानमे अब्बासद्वारा उज्बेक-सेनाके घोर पराजयकी खबर पहुची। कजाकोसे महीनेभर केवल जब-तब झडप करते रहनेके बाद युद्ध हुआ, जिसमें दोनोकी बहुत क्षति हुई। तवक्कल घायल न हो जाता, तो शायद उज्बेकोका उसी समय खातमा हो जाता। तवक्कल ताशकन्द लौटकर मर गया, और एक नक्शबन्दी शेख (साबु)ने बीचमे पडकर कजाको और उज्बेको-में सुलह करवा दी। बाकी मुहम्मदको समरकन्द मिला, लेकिन वह तो पीर मुहम्मदसे तख्त छीनना चाहता था। पीर मुहम्मद समरकन्दमें लडते वक्त मारा गया, और बाकी मुहम्मदकी इच्छा पूर्ण हुई। बाकी मुहम्मद अब्दुल्ला II की बहिन जोहरा खानम तथा जानीबेग सुल्तानका बेटा था। पीर मुहम्मद-के साथ शैबानी-वशका अन्त हुआ।

इतिहास-लेखक वेम्वरीके अनुसार शैवानियोके कालमे पूर्वी और पश्चिमी इस्लाम पूरी तौरसे अलग हो गया, और उसने वह रूप लिया, जो उसका आज भी मौजूद है। ईरान, चीन (सिङ-क्याग) और हिन्दुस्तान पूर्वी इस्लामके अन्तर्गत हुये और पश्चिमके देश पश्चिमी इस्लाममे। चीन और मध्य-एसियाके मुसलमानोमे साधु-सतो, जादूगरो और ज्योतिषियोका बहुत ज्यादा मान था। यदा-तासी (जादूके पत्थर)से वह वायु-जल-नियत्रण, रोगमुक्ति और युद्धमे विजय प्राप्त करना चाहते, इस्लामसे भी अधिक उसके सतो और सूफियोपर विश्वास रखते थे। मगोलोके शासनकालमे मुट्ठीभर मुल्लो और सूफियोके खानदानोने धर्मकी इजारादारी अपने हाथमे ले ली थी, जिनके सामने अत्यन्त शक्तिशाली और स्वेच्छाचारी सुल्तान भी शिर झुकानेके लिये तैयार थे। यह लोग राजा और प्रजा दोनोके भक्तिभाजन थे—साधारण जनता समझती थी, कि उनके पास दिव्य शक्ति है। उनके प्रति सुल्तान और खान केवल भारी सम्मान ही नही दिखलाते थे, बल्कि अपनेको उनका तुच्छ सेवक साबित करनेकी कोशिश करते थे। मखदूम आजम मौलाना खोजकी काशानी—प्रसिद्ध खोजा अहरारका शिष्य—अपने त्याग और वैराग्यपूर्ण जीवनके लिये बहुत माननीय समझा जाता था, और अपनी दिव्य शक्तिके कारण लोगोमे सम्मान ही नही भयकी दृष्टिसे भी देखा जाता था। वह २१ मुहर्रम ९४९ हि० (७ मई १५४२ ई०) मे मरा। उसकी समाधि देहबिदमे है, जहापर हालतक लोग भारी सख्यामे तीर्थयात्राके लिये जाते थे।

साहित्य-सस्कृति—शैवानी-कालमे तुर्की भाषा और साहित्यका सर्वत्र प्रचार हुआ। कितने ही कवि अब केवल तुर्की (उज्वेकी)मे ही कविता करते थे, यद्यपि अन्तर्वेदके गाव-गावमे भी ताजिकोके रहनेसे पुरानी भाषा फारसीका इतना प्रचार था, कि प्राय सभी तुर्क स्त्री-पुरुष द्विभाषी थे। इन कवियोमे सबसे प्रसिद्ध उज्वेक-राजकुमार मुहम्मद सालेह था, जिसके पिताको तेमूरियोने स्वारेज्म-के राज्यसे वचित कर दिया था वह तरुणाईमे ही शैवानियोके दरबारमे चला आया। अपने महाकाव्य "शैवानीनामा"द्वारा किसी-किसीके मतमे वह नवाईसे भी बडा कवि है। इस समयके दूसरे बडे कवि थे—अमीर अली कियातिब, प्रथम शैवानी-राजकवि मुल्ला नीरक, मुल्ला मुशफिकी (मृत्यु १५८५ ई०), काजी पायन्दा, जमीनी, वजीर। पायन्दाने कुलबाबा कोकलताशकी प्रशसामे एक काव्य लिखा, जिसमे बिंदीवाले अक्षरो (बे, ते, जीम, चे, खे, जाल, जे, शीन, ज्वाद, जोय, गैन, फे, काफ और नून) का प्रयोग नही किया। शीरी खोजा उवैदुल्लाकालीन, और खैर हाफिज [मृत्यु ९८१ हि० (१५७३-७४ ई०)] इस कालके मशहूर सगीतकार और गायक थे—खैर हाफिज अब्दुल्लाके दरबार-मे था।

शैवानीकालमे खान, खानजादो तथा अमीरोने मस्जिदो, मदरसो और रौजोको बनानेमे होड-सी लगा रक्खी थी। वजीर कोकलताशने १५२७ ई० (९३४ हि०)मे समरकन्दमे अपने नामकी विशाल मस्जिद बनवाई, जिसके सगमर्मरके मेम्बर (वेदी) को कूचुनजी खानने प्रदान किया। अब्दुल्ला खानका बनवाया मदरसा बोल्शेविक क्रातिके पहलेतक मौजूद था। इसके विशाल फाटकपर कुरानकी आयते लिखी हुई है, जिसके एक-एक अक्षर दो फिट लम्बे है। अब्दुल अजीज खानने अरबोके वक्तकी बनवाई मोगक मस्जिद (पारसी मदिर)की मरम्मत करवाई और बुखारासे थोडी दूरपर अवस्थित खोजा बहाउद्दीनके सुन्दर मकबरेको बनवाया। अबसईदने समरकन्दमे एक बडा मदरसा बनवाया। करोडपति मीर अरबने बुखारामे एक मदरसा स्थापित किया, जिसके बारेमे हालके लेखकोने लिखा है—"यह सारे मध्य-एसियाका सबसे अधिक धर्मस्व-सपत्ति रखनेवाला मदरसा है।"

इस समयके सुल्तानोमे सभी जगह कवि होनेकी बडी लालसा थी, और उनमेंसे कुछको कविकर्ममे सफलता भी मिली। इस्माईल, तहमास्प, अब्बास फारसीके कवि थे। मुहम्मद शैवानी, उवैदुल्ला, अब्दुल्ला II भी कवि थे। बाबर, हुमायू और अकबरने भी कविता की, जिसमे बाबर तो तुर्की भाषाका आज भी एक श्रेष्ठ कवि माना जाता है।

शैबानी-वंशवृक्ष—
(१५००—६६ ई०)

- अबुल्खैर
  - शाहबुदाग
    - महमद मु०
      - ४ उबैदुल्ला (१५३३-६०)
    - १ मुहम्मद (१५००-१२)
  - खोजा मुहम्मद
    - जानीबेग
      - ८ पीर मु० (१५५६—६१)
      - ६ इस्कंदर (१५६१-८३)
        - १० अब्दुल्ला II (१५८३-६६)
          - ११ अब्दुल्मोमिन (१५६६-६७)
        - जुहरा=जानीबेग
          - दीन मु०
          - बाकी म०
          - वली मुहम्मद
      - सुलेमान
        - १२ पीर मु० (१५६७-६६)
  - २ कूचुनजी (१५१२-३०)
    - ३ अबमईद (१५३०-३२)
    - ५ अब्दुल्ला I (१५४०)
    - ६ अब्दुल्लतीफ (१५४०-५१)
  - सूयुनजी
    - ७ नौरोज (१५५१-५६)

अध्याय ५
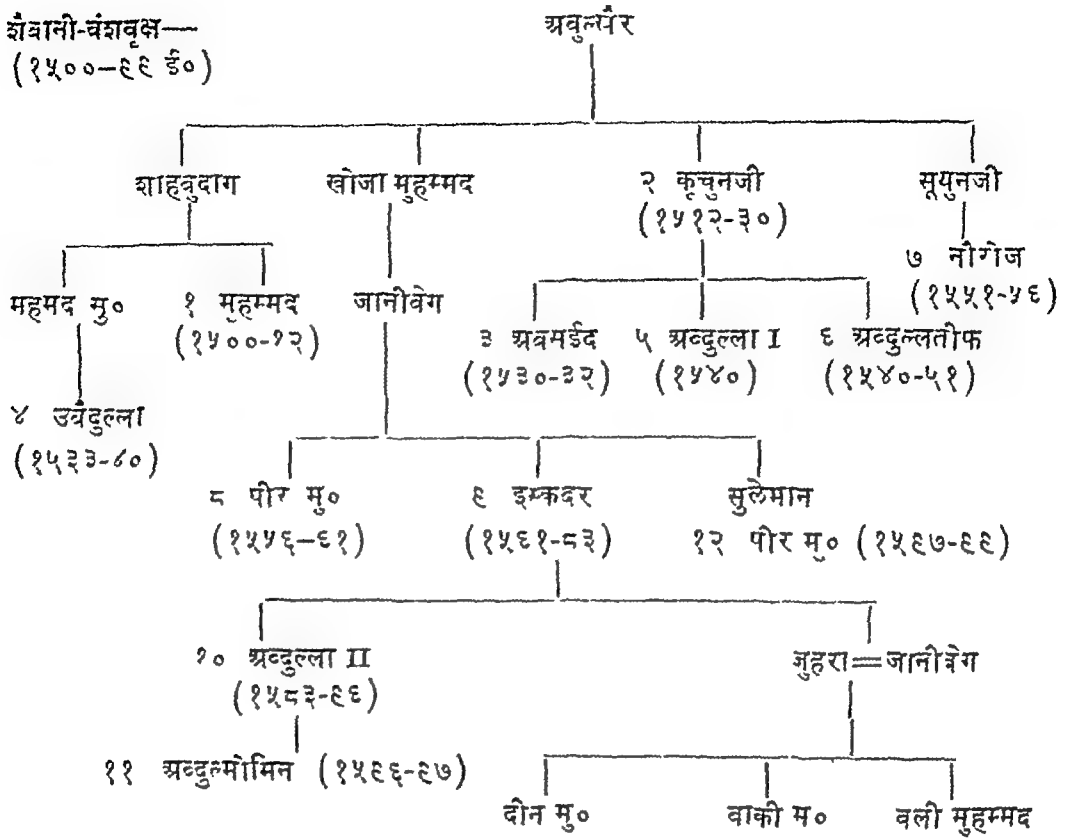
अस्त्राखानी (१५९९--१७४७ ई०)

१ दीन मुहम्मद (१५९८ ई०)

सुवर्ण-ओर्दूकी राजधानी सरायवरका जब ध्वस्त हो गई, और जू-छिका उलुस कई टुकडोमे बट गया। उस वक्त उनके एक खानकी राजधानी वोल्गा और कास्पियनके सगमपर अस्त्राखान थी। सुवर्ण-ओर्दूके प्रसिद्ध खान कूचुक मुहम्मदका पुत्र अहमद उसका उत्तराधिकारी बना। कूचुकका दूसरा पुत्र चुवाक सुल्तान था, जिसका पुत्र मगिशलक और पौत्र यार मुहम्मद थे। जब रूसियोने अस्त्राखानको भी छीन लिया, तो यार मुहम्मद खानने भागकर बुखारामे इस्कन्दर खानके पास शरण ली। अस्त्राखानी और शैबानी दोनो ही जू-छिके वशज थे। इस्कन्दरने यार मुहम्मदका बहुत सम्मान किया और उसके लडके जानीबेग सुल्तानके साथ अपनी लडकी जोहरा खानमका व्याह कर दिया। जानीबेग ९७५ हि० (८ जुलाई १५६७–२८ मई १५६८ ई०) की विजय-यात्राओमे अपने साले अब्दुल्लाके साथ रहा। अब्दुल्लाके समय उसके भाजे दीन मुहम्मदने खुरासानके कई शहरोपर शासन किया, अन्तमे वह निसा और अबीवर्दका राज्यपाल बना। अब्दुल मोमिनने उसके पिता जानीबेगको जेलमें डाल दिया था, इसपर विद्रोह करके दीन मुहम्मदने हिरात लेनेका असफल प्रयत्न किया। अब्दुल मोमिनके मरनेके बाद ईरानी फिर खुरासानको जीतनेका प्रयत्न करने लगे। इसने भी हाथ-पैर फैलानेकी कोशिश की। अब्दुल मोमिनके बाद शहर-शहरमे खान (राजा) बनते जा रहे थे। दीन मुहम्मदने भी मक्का-मदीनासे लौटे अपने दादा सुल्तान यार मुहम्मद-के नामसे खुतबा और सिक्का चलाना चाहा। मेर्वमे कासिम सुल्तानने अपना राज्य कायम किया, लेकिन जल्दी ही वह मार डाला गया। मेर्वको भी दीन मुहम्मदके छोटे भाई वली मुहम्मदने बडे भाईके नामसे दखल कर लिया। जुलाई १५९८ ई०मे नूर मुहम्मदको हराकर शाह अब्बासने हिरात ले लिया। दीन मुहम्मद हारकर भागा जा रहा था, लेकिन शाही कपडोके कारण पहचाना गया और काराई घुमन्तुओने उसे मार डाला। बाकी मुहम्मदने तवक्कलसे लडकर पराजित होते समय खबर दी और उसे समरकन्दका राज्य मिला।

शायद हिरातमे कुल्लेमालारके निर्णायक युद्धके समय ही यार मुहम्मद और जानीबेग मारे गये, यद्यपि इससे पहले ही हिरातमे यार मुहम्मदने अपनेको खान घोषित कर दिया था। दीन मुहम्मदके मरनेपर उसके स्वामिभक्त नौकर खाकी यमाउल्ने खानम और उसके दोनो बच्चो इमामकुल्ली और नादिर (नासिर)को अपने घोडेकी पीठपर दोनो ओर रखकर सरपट भागते हुये उनकी जान बचाई। नादिर मुहम्मदके पैरमे गोली लग गई, जिससे वह जन्मभरके लिये लगडा हो गया। बाकी मुहम्मद और वली मुहम्मद अन्तर्वेदमे थे। बाकी मुहम्मदने राज्य सभाला। इतना कहनेसे यह मालूम होगा, कि यद्यपि बाकी मुहम्मदके गद्दी सभालनेके बाद एक नये अस्त्राखानी राजवशकी स्थापना हुई, किन्तु वस्तुत दोनो ही राजवश उज्बेक जातिके ही थे। सुवर्ण-ओर्दूके प्रतापी मुसलमान खान उज्बेकके नामसे किपचकोकी यह सज्ञा हुई, यह हम कह आये है। शैबानी और अस्त्राखानी ही नही, बल्कि दोनोके उत्तराधिकारी तथा अन्तिम राजवश मगीत भी उज्बेक ही था। बोल्शेविक क्रातिने मगीत-वशका उच्छेद करके वहा सोवियत गणराज्य कायम कर देशको उज्बेकिस्तान नाम दिया।

राजावलि—इस वंशमें निम्न खान हुये—

१	दीन मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र	१५९८ ई०
२	बाकी मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र, इस्कन्दर-नाती	१५९९–१६०५ "
३	वली मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र	१६०५–८ "
४	सैयद इमामकुल्ली, दीन मुहम्मद-पुत्र	१६०८–४२ "
५	नादिर मुहम्मद, दीन मुहम्मद-पुत्र	१६४२–४७ "
६	अब्दुल अजीज, नादिर मुहम्मद-पुत्र	१६४७–८० "
७	सुभानकुल्ली, नादिर मुहम्मद-पुत्र	१६८०–१७०२ "
८	मुकीम, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७०२–७ "
९	उबैदुल्ला I, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७०७–१७ "
१०	अबुल्-फैज मुहम्मद, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७१७–४७ "
११	अब्दुल मोमिन, अबुल्फैज-पुत्र	१७४७ "
१२	उबैदुल्ला II, अबुल्फैज-पुत्र	१७५१ "
१३	अबुलगाजी, इब्राहीम-पुत्र इमामकुल्ली-वंशज	

२ बाकी मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५९९-१६०५ ई०)

हम बतला चुके हैं, कि कैसे दीन मुहम्मदने पहले ही खुरासानमें अपनेको स्वतन्त्र खान घोषित किया। अब्दुल मोमिनके मारे जानेके बाद उसने अन्तर्वेदकी ओर पैर बढाया और वहाका शासक बन गया। वस्तुत बाकीने ही अस्त्राखानी वंशकी नींव रक्खी। इसने हिसारके पहाडी इलाके (ताजिकिस्तान)को सर किया और इसके भाई वली मुहम्मदने बलखको ले लिया, जिसे कि पीर मुहम्मदके भाई इब्राहीमने ईरानसे आकर हथिया लिया था। इब्राहीमके शिया होनेसे लोग नाराज थे, साथ ही वह पियक्कड और बहुत क्रूर भी था। उसे हटा उबैदुल्लाको बैठाया गया, जिसे वली मुहम्मदने हिसारसे आकर भगा दिया। काराई तुर्कमानोंने उसके भाई दीन मुहम्मदको मारा था, उसका बदला लेनेके लिये बाकी मुहम्मदने १६०२ ई०में कुदुजपर हमला किया। उज्बेकोंने अपने पुराने शत्रुओं (तुर्कमानों)से बड़ा ही निष्ठुर बदला लिया। बहुत-से तुर्कमान भागकर कुदुजके किलेमें बन्द हो गये। किला बहुत मजबूत था। उज्बेकोंने बारूद लगाकर दीवारके एक बडे भागको उडा दिया, जिसके साथ सैकडों तुर्कमान भी चिथटे-चिथडे होकर उड गये। फिर आक्रमण करके किलेको ले उज्बेकोंने किसीको जीवित बन्दी नही बनाया। तुर्कमानोंके काराई कबीलेको इस लडाईमें बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया, जिसके बाद वह फिर अपनेको सभाले नही सके—काराई तुर्कमान शाह अब्बासके सहायक थे। उज्बेकोंने शापुरगान और अन्दखूईको ले बिलुक-अकचीतक देशको लूट-मारकर उजाड दिया। ईरानी इनके मुकाबिलेके लिये आये, लेकिन बलखके पास बाबर अब्दुलके मकबरेके नजदीक उनमें महामारी फैल गई। ऊपरसे उज्बेकोंने दोनों ओरसे हमला कर दिया। शाह अब्बास बडी मुश्किलसे कुछ हजार आदमियोंके साथ जान बचाकर भाग सका।

१६०५ ई०में बाकी बीमार पड़ा और असाध्य रोगसे मुक्ति पानेके लिये एक प्रसिद्ध सत शेख आलिम अलीजानकी शरणमें गया। शेखने उसे वक्षु (आमू-दरिया) की ताजी हवा सेवन करनेकी सलाह दी। बाकी मुहम्मदको खटोलेमें लिटा नावपर ले गये। वह कई दिनोंतक नदीकी हवा खाता घूमता रहा। अन्तमें रजब १०१४ हि० (१२ नवम्बर–१२ दिसम्बर १६०५ ई०) में अर्थात् अकबरकी मृत्यु-महीने रजब १०१४ हि० में मरा।

३ वली मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१६०५–८ ई०)

यह बड़ा ही शराबी और व्यभिचारी था, ऊपरसे लोग इसके वजीर शाहबेग कोकलताशके जुल्मोंसे भी परेशान थे, इसलिये इसके भतीजे सैयद इमामकुलीके नेतृत्वमें विद्रोह हो गया। वली ईरानकी ओर

भागा। शाह अब्बाससे अस्सी हजार सेनाकी मदद ले वह फिर वक्षुकी ओर चला। मखदूम आजमके वंशज खोजा मुहम्मद अमीनसे इमामकुल्लीको सहायता प्राप्त हुई। खोजा (संत)ने अपने सूफियोंके चोगेके ऊपर धनुष-बाण लटकाकर पहला तीर छोड़ा, फिर दुआ पढकर मुट्ठीभर मिट्टी शत्रुओंकी ओर फेंक दी—जिसका अर्थ था, शत्रु अंधे हो जाय। तुमुल युद्ध हुआ। मामियान सरोवरके किनारे इस युद्धमें वली मुहम्मदने तख्त गंवा अपनेको भतीजेके हाथमें बंदी पाया। शायद भतीजा चचाको छोड़ भी देता, लेकिन शेखका हुक्म था, इसलिये कत्ल किये बिना कैसे रह सकता था? वली मुहम्मद-के पुत्र रुस्तम और रहीम ईरान भाग गये।

४. सैयद इमामकुल्ली बहादुर, दीन मुहम्मद-पुत्र (१६०८–४२ ई०)

यह जहांगीर और शाहजहांका समकालीन था, और भारतीय मुगल-साम्राज्यसे इसकी सीमा मिली हुई थी। जिस वक्त अब्दुल मोमिनने मशहदमें कत्लेआम किया था, उसी समय इमामरजाके वंशजोंके मुखिया अबूतालिबने दीन मुहम्मदके घोडेकी लगाम पकडकर अपने परिवारके लोगोंके प्राणोंकी भिक्षा मांगी। दीन मुहम्मद उनके बचानेके लिये उसी मुहल्लेमें ठहरा और उसने अबूतालिबकी बेटी जोहरा बानूसे ब्याह किया। इसी जोहरा बानूसे इमामकुल्ली और नजर (नादिर मुहम्मद, नासिर) मुहम्मद पैदा हुये। यद्यपि बापकी ओरसे यह उज्बेक या छिङ-गिस्के वंशज होनेका अभिमान कर सकते थे, लेकिन पैगंबर मुहम्मदकी बेटीकी संतान होनेके कारण आगे अब अस्त्राखानी खानोंने अपने नामके साथ सैयद लगाना शुरू कर दिया। इमामकुल्लीका दीर्घकालीन शासन अन्तर्वेदकी उन्नति और समृद्धिका समय था। उसके शासनकी यह एक और भी विशेषता थी, कि इसने बिना किसी युद्ध और विजयकी लूट-पाटके अपने राज्यको खुशहाल बनाया। अपने भाई नादिर (नजर) को इसने बलखका राज्यपाल बनाकर मुगल-साम्राज्य की सीमापर रख दिया। इमामकुल्ली दृढ शासक होते हुये भी बडा ही धार्मिक, शिक्षित, सत्संग-प्रेमी और स्पष्ट वक्ता था। राजधानी बुखारा इस समय धन-जन, कला-सौंदर्यसे भरी फल-फूल रही थी। इमामकुल्लीका पडोसी शाह अब्बास शक्तिशाली होते हुये भी एक बार भारी मुंहकी खा चुका था। हां, उत्तरके कजाक और कल्मक अब भी खतरनाक थे, जिसके लिये इमामकुल्लीको १६१२ ई०में कजाकों और कल्मकोंको हरानेके लिये सिर-दरियाके उत्तरमें अशगरा और करातागं-तक जाना पडा। उसने अपने इकलौते पुत्र इस्कन्दरको ताशकन्दका राज्यपाल बनाया। कुछ ही समय बाद वहां विद्रोह हो गया, जिसमें पुत्र मारा गया। विद्रोहको दबानेके लिये इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको भी बलखसे बुला लिया, और सारी सेना लेकर ताशकन्दको घेर लिया। ताशकन्दियोंने प्रतिरोध करनेका निश्चय किया। इकलौते बेटेकी मृत्युसे पागल इमामकुल्लीने शपथ कर ली थी, कि मैं तबतक हत्याकांडको बन्द नहीं करूंगा, जबतक कि ताशकन्दियोंका खून मेरी रिकाबतक न पहुंच जाये। नगर सर होनेपर लूट-मार शुरू हुई। कुछ घंटोंके कत्लके बाद लोगोंने खानको बहुत समझाया, लेकिन वह तो प्रतिज्ञा कर चुका था। तब मानवरक्त-से भरे एक हौजमें घोडेपर चढकर वह खडा हुआ। खून रिकाबतक पहुंच गया, खानकी प्रतिज्ञा पूरी हुई, और निर्मम हत्या बन्द हुई। लेकिन यह विजय स्थायी नहीं थी। कुछ ही सालों बाद कजाकोंने ताशकन्दको फिर अपने हाथमें कर लिया। इमामकुल्लीने भी संघर्षको बेकार समझकर कजाकखान तुरसुनसे सुलह करके १६२१ ई०में ताशकन्दको उसके हाथमें दे दिया।

इमामकुल्लीके ऊपर इकलौते पुत्रकी मृत्यु और ताशकन्दमें वही खूनकी नदीका, जान पडता है, बडा भारी प्रभाव पडा था। वह कितनी ही बार शाही लिबासको छोड फकीरोंका चोगा पहिन बुखारामें घूमता था। उस समय उसका वजीर नजर दीवानबेगी और उसका भक्त अब्दुल वमी भी साथ रहता था। इस प्रकार वह अपनी आंखो प्रजाकी दशा देखना चाहता था। कवि "तुराबी" और मुल्ला "नखली" उसके बडे कृपापात्र थे। खान खुद भी कवि था। एक तरुण मुल्ला किसी सुन्दरीपर मुग्ध हो गया। त्योहारके लिये प्रेमिकाके पास सुन्दर पोशाक भेजकर उसने अपने प्रेमका परिचय देना चाहा, लेकिन मुल्लाके पास इतना धन नहीं था। सोचा "माले-काफिरां हस्त बर-मोमिन

हलाल" (काफिरोका माल मुसलमानोके लिये हलाल है)। उस समय क्या वोल्शेविक क्रांतिके होनेतक हिन्दू जौहरियो और महाजनोकी कितनी ही दूकानें बुखारामें थी। मुल्लाने हिन्दू जौहरीकी दूकान तोडनेका निश्चय किया और अपने दो नौकरोंके साथ वहा पहुचकर आसानीसे दरवाजेको खोल लिया। फिर रत्नोकी एक पिटारीके साथ निकलकर सडकपर आया। इसी बीच आहट पा हिन्दू जौहरी जाग उठा और हल्ला मचाते हुये जाकर उसने मुल्लाकी गरदन पकडी। उधर मशाल हाथमे लिये पहरेदार भी पहुच गया। मुल्लाने तुरन्त मारकर मशालको गिरा दिया, और अधेरेमें बोल उठा—"ओह, नजर दीवानवेगी, तुमने बडा मूर्खतापूर्ण मजाक किया।" जवाब मिला—"आला हजरत (परमभट्टारक), मैं नही, यह अब्दुल वमी कुरजी था।" पहरेवालेको जव मालूम हुआ, कि खानका दल भेस बदले आ पहुचा है, तो वह डरकर भाग निकला। हिन्दू जौहरीने खानसे प्रार्थना करते पहरेवालेके कर्त्तव्य न पालन करनेकी शिकायत की। पूछ-ताछ करनेपर मुल्लाके प्रेम और साहसकी सारी वातका पता लग गया। खानने जौहरीके मालको लौटवा दिया, लेकिन मुल्लाकी दिक्कतोको देखकर उसे दड न दे इतना पारितोषिक दिया, जिसमे वह अपनी प्रेमिकाको भेट भेज सके।

१६२० ई०मे रूसी जार मिखाइल फ्योदर-पुत्र (मृत्यु १६४५ ई०)ने इमामकुल्लीके पास यह सिखलाकर अपना दूतमडल भेजा, कि किसीको भेंट-बखशीश न देना, खानके तख्तके पास बुलानेपर ही जाना, यदि दूसरा दूत हो, तो उसके आसनके नीचा होनेपर ही अपने आसनपर वैठना। जारका दूत बुखारा पहुचा। महलके एक अफसरने जारके पत्रको लेना चाहा, लेकिन रूसी दूतने उसे देनेमे इनकार किया। जारकी ओरसे अभिनन्दन भेट करते हुये जब जारका नाम लिया गया, तो खान उठकर खडा नही हुआ। इसपर दूतने कहा—"सभी राजाओका कायदा है, जारका नाम लेनेपर खडे हो जानेका।" इमामकुल्लीने इस ढिठाईका जवाब नरमीसे दिया—"बहुत दिनके बाद रूसी राजदूत आया है, इसलिये मैं वैसा करना भूल गया, मेरी मशा अनादर करनेकी नही थी।"

इमामकुल्लीने जहा जारके साथ दौत्य-सम्बन्ध स्थापित किया था, वहा उसने अपने सिंहासनारोहणकी सूचना देनेके लिये जहागीरके पास भी अपना दूत भेजा था। रसीले जहागीरने इमामकुल्लीकी वेगमका भी कुशल-मगल पूछा, जो कि मुस्लिम शिष्टाचारके विरुद्ध था। लेकिन जहागीर मुस्लिम शिष्टाचारका उतना प्रेमी नही था, उसका वश मुस्लिम शरीयतसे ज्यादा छिड्-गिसी यास्साको मानता था। उसने मुस्लिम सुल्तानो और इस्लामिक रवाजोको धत्ता वताते हुये अपने सिक्कोपर मूर्तिया अकित कराई थी। जहागीरको बुखाराके दूतने इतना ही जवाब दिया, कि मेरा मालिक सासारिक इश्कसे मुक्त है, वह इस दुनियाकी चीजोसे प्रेम नही करता। इसपर जहागीरने तुरन्त जवाब दिया—"तुम्हारे खानने कव इस दुनियाको देखा, जो कि उसे इतना वैराग्य हो गया?" इमामकुल्लीका दूत वैद्य था। परिहास करनेके वाद भी जहागीरने उसे बहुत-सा सोना, जवाहर तथा जरीके काम किये हुये एक तम्बूको देकर विदा किया। बहुत जोर देनेपर शिकारके समय खान दूतसे मिलनेके लिये राजी हुआ। दूतने सुनहले तम्बूमे सारी भटोको सजा दिया। इमामने शिकारसे लौटते वक्त एक नजर डाली, फिर रहीम परवानेजीकी ओर मुह करके बोला—"ले जा, इस सबको हमने तुझे दे दिया।" दूसरे दिन भारतीय दूतने दरबारमें एक तलवार पेश करते हुये खानसे कहा—"अकबर शाहको दो वढिया तलवारे मिली थी, जिनमेंसे एकको सम्राट्ने अपने लिये रख लिया है, और दूसरेको उसने अपने भाईके पास मित्रताके चिह्नके तौरपर भेजा है।" खानने हाथमे लेकर तलवारको मियानसे निकालना चाहा, किन्तु वह नही निकली, इसपर उसने कहा—"तुम्हारी तलवारोका निकालना बहुत मुश्किल है।"

दूतने जवाब दिया—"केवल यही ऐसी है, क्योकि यह शातिकी तलवार है, अगर यह युद्धका हथियार होती, तो अपने मियानसे तुरन्त निकल पडती।"

"नख्ली" और "तुराबी" दोनो दरबारी कवियोमे प्रतिद्वन्द्विता रहा करती थी। खानने उनके बारेमे हिन्दी दूतकी राय पूछी, जिसने तुरन्त जवाब दिया—"ओ खान, तुराब (मिट्टी)से ही

नख्ल (खजूर) उगती है।" इस तरह उसने दोनो कवियोको प्रसन्न रखनेकी कोशिश की। जहागीर-का दूत १०३६ हि० (२२ सितम्बर १६२६ ई०—१३ अगस्त १६२७ ई०) मे वुखारासे लौटा। इसके वाद ही जहागीर मर गया और शाहजहा गद्दीपर वैठा। मुगल वावरके समयसे ही अपने पूर्वजोकी भूमिकी ओर चाहभरी दृष्टिसे देखा करते थे। इसी इच्छाको पूरी करनेके लिये शाहजहा एक वडी सेना ले कावुलसे आगे बढा। खवर पाकर इमामकुल्ली भी अपने भाई नादिर, दस भतीजो-के साथ एक वडी सेना ले वलख पहुचा। सभी पैदल थे, सिर्फ इमामकुल्ली घोडेपर सवार था। लोग भेट करनेके लिये आये। इमामके लिये रास्तेमें पावडे विछा दिये गये। वडा स्वागत हुआ। फौजी तैयारी करते इमामकुल्लीने दादखा हाजी मसूरको दूत वनाकर शाहजहाके पास कावुल भेजा। शाह-जहाने कहा—"मै तो सिर्फ सूबोको देखनेके लिये आया हू।" नादिरकी शियोसे मित्रता थी, जिससे ईरानके साथ उसका अच्छा सम्वन्ध रहा, तो भी मेर्वके लिये एक वार उसने असफल कोशिश की। १६२१ ई०मे भी नादिरने पायन्दा मिर्जाको दूत वनाकर उसके द्वारा पचास तुर्किस्तानी घोडे मुगल-दरवारमें भेजे थे। अडतीस सालके शासनके वाद इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको वलखसे वुलाकर राज्य सौप दिया। इस समय वह वीमारीके कारण अन्धा हो गया था। जुमाकी नमाजके वाद उसने अपने सामने भाईके नामका खुतवा पढवाया और फिर अन्तिम जीवन वितानेके लिये मदीनेका रास्ता लिया। सारे लोग यह दृश्य देखकर रो रहे थे।

५ सैयद नादिर मुहम्मद, नाजिर, नासिर, दीन मुहम्मद-पुत्र (१६४२-४७ ई०)

नादिरके खजानेमे अपार धन था, जो आठ हजार ऊटोका भार (चालीस हजार मन) आका जाता था। उसकी घोडसालमे आठ हजार घोडे थे। उसके पास कीमती छाले पैदा करनेवाली अस्सी हजार कराकुल भेडे थी, कीमती गुलावी साटनसे भरी चार सौ सन्दूकें थी। इतनी सम्पत्ति उसे मिली थी। वह उसे वाटकर नाम कमाना चाहता था, लेकिन भाईने प्रजारजनद्वारा जितनी कीर्ति अर्जित की थी, वह उसे मिलनी सभव नही हुई।

नादिर-पुत्र अव्दुल अजीजने पिताके रुष्ट होनेपर उसे मनानेके लिये क्षमापत्र लिखा। दूसरा भाई सुभानकुल्ली समझाने गया। विद्रोह दवानेके लिये भेजा गया पुत्र कुतुलुक सुल्तान विद्रोह करके कुदुजके किलेमे दुर्गवद्ध हो गया। पिताकी आज्ञा पा किला सर करके सुभानने उसे मरवा डाला। इसपर नादिरने कहा, कि मैने मारनेके लिये नही कहा था। सुभान महत्त्वाकाक्षी था। वह चाहता था कि मुझे "कलाखान" (महासेनापति)की पदवी प्राप्त हो। न मिलनेपर वापसे वागी हो उसने वापके खिलाफ दिल्लीके वादशाह शाहजहासे मदद मागी। शाहजहाने अपने दोनो पुत्रो मुरादवख्श और औरगजेवको एक वडी सेना देकर भेजा। खुसरू सुल्तानने वलखमे प्रतिरोध करना चाहा, लेकिन उसे वन्दी वनाकर भारत भेज दिया गया। किसीने इसी वीच नादिरको वतलाया, कि हिन्दी सेना तुम्हारी मददके लिये नही, वल्कि वलखपर अधिकार करने आई है। इसपर नादिर रातको ही अपने खजानेको जमा करके शापुरगान और अन्दखुदकी ओर से भागकर शाह अव्वास II के पास चला गया। उसकी मा इमामरजाकी सतान थी, इसलिये अव्वासने उसका वडा सम्मान किया। उधर चगताई (शाहजहाकी) सेना आगे वढती गई, और उसने वक्षुके दक्षिणके नगरोमे अपने शासक नियुक्त किये। सारे उज्वेक भागकर वक्षुपार चले गये। दो सालतक आमू दरिया (वक्षु) और हिन्दूकोहके वीचके प्रदेशपर शाहजहाका शासन रहा। भारत जैसे गरम मुल्कके सैनिक यहाकी सर्दीके मारे परेशान थे। मुगल इतिहासकारने लिखा है—"जो घरसे वाहर निकलते, वह ठडा होकर मर जाते, और जो भीतर रहते, वह अपनेको गरम करनेके लिये आगके सामने झुलसते रहते।" भारतीय सेनाने, इसमें शक नही, हिन्दूकोह पार करके इस इलाकेको वहुत वरवाद कर दिया, जिसके कारण वलखमे अकाल पड गया। १०६० हि० (४ जनवरी १६५० ई०-२५ नवम्वर १६५० ई०)के जाडोमे एक खरवार (गदहेका वोझ) अनाजका दाम हजार फ्लोरिन (रुपये) था। जाडा वहुत ही सख्त था। अन्तमे जव हिन्दी सेनाको लौटनेके लिये मजवूर होना पडा,

तो एक ओर हिन्दूकोह (हिंदूकुश)के ऊचे दर्रोंकी सर्दीने भारी सख्यामे बलि लेनी शुरू की ओर दूसरी ओर उज्बेक सैनिकोने उन्हे गिद्धकी तरह नोचना शुरू किया। हजारोंकी सख्यामे लोग रास्तेमे मर गये। अगले साल "तारीख मुकीमखानी"का लेखक जब दूत बनकर इसी रास्ते भारतकी ओर आ रहा था, तो उसने सब जगह भारतीयोके ककालोके ढेर देखे।

सेना लौटानेसे पहले शाहजहाने नादिरको अपना राज्य सभाल लेनेके लिये कहा। नादिर लौटा, लेकिन उसके बेटोमे झगडा हो गया, जिसपर नाराज हो नादिरने राज्यको बाटकर* मदीनेका रास्ता लिया। वह रास्ते ही मे मर गया, पर उसकी लाश मदीनेमें उसके भाईके पास दफनाई गई।

नादिर खानके प्रिय पुत्र कासिम सुल्तानके बारेमें इतिहासकारोका कहना है, कि अस्त्राखानियो-मे कोई इतना बहादुर, बुद्धिमान्, उदार और साहसी नही हुआ। वह अच्छा कवि और सुन्दर गद्य-लेखक था। एक हजार शेरोका उसका दीवान (कविता-सग्रह) मौजूद है, जिसमे उसने सायब इस्पहानीका अनुसरण करते बहुतसी रचनायें की है। "तुराबी" और "नखली" दोनो इस समयके कवि थे, इसे हम बतला आये है।

बुखारामे अब युरोपके नये हथियारोका प्रचार हो चला था, लेकिन उलुगबेगके बाद विज्ञानकी ओर बढनेका कोई प्रयत्न नही हुआ। अब तो वहा धर्म और मुल्लोने अपना एकच्छत्र राज्य कायम कर दिया था। शैबानियोके शासनके अन्तिम कालमे युरोपीय व्यापारी अन्थनी जेंकिन्स १५५८-५९ ई० में बुखारा पहुचा था, इससे पहले पोलो भ्रातृ-युगल तीन साल (१२६४–६७ ई०) बुखारामें रहे थे, जब कि चगताई खानोका राज्य था और बुखाराकी कोई प्रधानता नही थी। बुखारा पहले भी समय-समयपर अन्तर्वेदकी राजधानी रहा, किन्तु अस्त्राखानियोके शासनके आरम्भ होनेके साथ-साथ वह अब स्थायी राजधानी बन गया।

६. सैयद अब्दुल अजीज, नादिर-पुत्र (१६४७–८० ई०)

गद्दी सभालनेके बाद अब्दुल अजीजने अपने भाई बलख-शासक सुभानकुल्लीको रास्तेका काटा समझ हटाना चाहा। इस कामके लिये उसने अपने दूसरे भाई (कवि) कासिम मुहम्मदको भेजा। लेकिन कासिमको हारकर हिसारकी ओर भागना पडा, और सुभानकुल्लीको युवराज कबूल करके समझौता करना पडा। ख्वारेज्म बहुत समयसे अस्त्राखानियोके अधीन रहता चला आया था, लेकिन १६६३ ई०मे अबुलगाजीने स्वतन्त्र होनेका निश्चय कर लिया। वह निम्न-वक्षु-उपत्यकासे बुखारियोको भगाते हुये अन्तर्वेदके भीतर घुस आया। करमीनामे अब्दुल अजीजने उसे हराया। अबुलगाजीने घायलकी हालतमे नदी तैरकर अपनी जान बचाई। लेकिन उसके एक हारसे हार माननेवाले थोडे ही होते है? अबुलगाजीने दूसरी बार तैयारी की, और अबके लूटते-पाटते वह बुखाराके दरवाजेतक पहुच गया। उसका उत्तराधिकारी और पुत्र अनुशा खान और भी साहसी निकला। उसने १०७६ हि० (१४ VII १६६५–४ VI १६६६ ई०)मे एक बडी सेना लेकर चढाई की। उस वक्त अब्दुल अजीज करमीना गया हुआ था। उसकी अनुपस्थितिमे अनुशाने बुखारापर अधिकार कर लिया। अब्दुल अजीज भी कम साहसी नही था। वह केवल चालीस अनुयायियोके साथ बुखाराके अर्क (किले)मे घुस गया और लोगोको युद्ध करनेके लिये तैयार किया। ख्वारेज्म वालोके सभी विरुद्ध हो गये और सामूहिक शक्तिके बलपर अब्दुल अजीजने अनुशाको बुरी तौरसे हराया। अब्दुल अजीज शरीरमे महाकाय था, लेकिन जूता उसके पैरोमे चार सालके बच्चे जैसा लगता था। युद्धमें वह बडा ही साहसी और काममें तत्पर रहता था। अपने पूर्वजोसे उसने भी शेखो और सूफियोकी आदत सीख ली थी, और कितनी ही बार दूसरे सासारिक कामोको छोडकर एकातमे ध्यान और भजन करने लगता। उसने भी अन्तमे अपने भाई सुभानकुल्लीको तख्त देकर मदीनेका रास्ता लिया।

---

* बाटमे सुभानकुल्लीको बलख और खोजा सालूको ऊपरी-वक्षु-प्रदेश मिला।

प्रसिद्ध सुलेखक मुल्ला हाजी इसके यहा सात सालतक रहा, और उसने खानके लिये "हाफिज" का दीवान उतारा ।

७. सैयद सुभानकुल्ली, नादिर-पुत्र (१६८०–१७०२ ई०)

गद्दीपर बैठनेके बाद इसने अपने पुत्र इस्कन्दरको "कलाखान" बनाया, लेकिन दो वर्ष बाद उसके भाई मसूरने जहर देकर उसे मरवा दिया। पिताने फिर तीसरे पुत्र उबैदुल्लाको बनाया, उसे भी दूसरे बेटेने कत्ल करवा दिया। बेटोंके इस विद्रोहसे वह बहुत परेशान था। उसके मंत्री मुकीम खानने व्यापारियो और कारीगरोपर भारी टैक्स लगाकर चीन और युरोपके कारीगरोद्वारा बनाई सुन्दर कलाकी चीजो और गोटेवाले मखमल लिये। चार महीने बाद वह भी षड्यत्रका शिकार हुआ। फिर चौथे पुत्र मसूरको राज्यपाल बनाया।

इसी समय खीवासे भी झगडा उठ खडा हुआ। खीवाके अमीरने १०६५ हि० (२० XII १६८३–६ XI १६८४ ई०)मे बुखारापर चढाई की। सुभानकुल्लीके सेनापति मुहम्मद बीने उसे मार भगाया, लेकिन दूसरे साल फिर उसने आक्रमण किया। इसके बाद ११०० हि० (२६ X १६८८–१६ IX १६८९ ई०)मे खीवाका खान बुखाराके दरवाजेतक पहुच आया था। अब भी मुहम्मद बीने उसे बुरी तरहसे हराकर पीछे भगाया। कुछ समयके लिये खीवाने सुभानकुल्लीकी अधीनता भी स्वीकार की।

ख्वारेज्मका खान अनुशा बडा शक्तिशाली शासक था। उसे भगानेमे मदद देनेके लिये सुभानकुल्लीने अपने बेटे सादिकको बुलाया, लेकिन उस वक्त उसके शासित इलाके (बलख)मे भी भीतरी-बाहरी झगडे थे, इसलिये वह वहा लौट गया। इस बेहुक्मीके लिये सुभानने अपने बेटेको दड देना चाहा, इसपर उसने बगावतका झडा खडा कर दिया। उसने इससे पहले अपने दो भाइयो अब्दुल गनी और अब्दुल कयूमको मारकर औरगजेबके पास मैत्री करनेका प्रस्ताव किया। यह खबर सुनकर १६८५ ई०में सुभानकुल्ली अपने पुत्रके विरुद्ध खानाबाद पहुचा, जहासे उसने बहुत स्नेहपूर्ण पत्र भेजकर उसे क्षमा कर देनेका वचन दिया, किन्तु जब पुत्र आया, तो उसके पैरोमे बेडी डलवा कालकोठरीमे बद कर दिया, जहा वह तीन महीने बाद (१६८६ ई०मे) मर गया।

इस समय तुखारिस्तानके दो कबीलो मेमना-अन्दखुदवाले मिंग, और बलखके पासके किपचकोमे बडी लडाई थी। सुभानकुल्लीने मशहदकी तीर्थयात्रा करनेकी सोची। इसी वक्त खीवाके खान अनुशाके बुखाराकी ओर लूटपाट करनेकी खबर आई। सुभानकुल्ली आया और उसके सेनापति मुहम्मद बीने खीवाकी सेनाको बुरी तरह हराया। अनुशा अपने ही लोगोद्वारा मारा गया, और उसका पुत्र एरेंग सुल्तान ख्वारेज्मकी गद्दीपर बैठा।

औरगजेबको दिये वचनके अनुसार सुभानकुल्लीने महमूद जान बीके नेतृत्वमें खुरासानपर एक सेना भेजी, जो देशको लूटकर बहुतसे स्त्री-बच्चोको बदी बना लौट आई। इसी बीचमें एरेंगकी सेनाने फिर बुखारापर धावा किया। दस दिनतक बुखारावालोने मुकाबिला किया, लेकिन जबतक बदख्शा-बलखका राज्यपाल महमूद बी अतालीक नही पहुचा, तबतक ख्वारेज्मियोको दबाया नही जा सका। अतालीकके आनेपर ख्वारेज्मियोकी हार हुई और खीवाके आदमियोने षड्यत्र करके एरेंग खानको मार डाला। सुभानका शासन खीवावालोने स्वीकार किया। १६८७ ई०मे वहा उसके नामका खुतबा और सिक्का चला और सुभानने शाहनियाज इशिक आकाको वहाका राज्यपाल नियुक्त किया। सुभानका तुर्कीके सुल्तान अहमद II (१६९१–९५ ई०)के साथ भी दौत्य-सबध था, जिसके पास प्रशसा करते हुये उसने अपने पत्रमें लिखा था—"फ्रेंक काफिरो और अभागे अधर्मियो (किजिलबासो) को भूतलसे नष्ट कर देने-जैसे अल्लाहके महान् काममें आप लगे है।" मुस्लिम जगत्मे इस समय बुखाराका नाम बडे गौरवसे लिया जाता था। औरगजेबने सुभानकुल्लीके पास दूतके साथ एक हाथी और कितनी ही और मूल्यवान् भेटे भेजी। तुर्कीका सुल्तान अहमद II उसे प्रशसापूर्ण पत्र लिखते समय "भाई"के नामसे सबोधित करना नही भूलता था।

सुभानकुल्लीको पढने-लिखनेका भी शौक था। उसने ग्रीक-चिकित्सकों—गेलन और हिप्पोक्रेत—तथा बूअली सेनाकी पुस्तकोंके आधारपर तुर्की भाषामें वैद्यकपर एक पुस्तक लिखी, जिसमें रोगमुक्तिके एक बडे साधन गंडा-तावीजको लिखना वह नहीं भूला।

अस्सी सालकी उमर हो जानेपर उसने अपने पुत्र मुकीमको बलखसे बुलाकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, और १११४ हि० (२८ V १७०२–१८ IV १७०३ ई०) में मर गया।

८ मुकीम, सुभानकुल्ली-पुत्र (१७०२–७ ई०)

मुकीम खानको गद्दी सभालते ही अपने बडे भाई उबैदुल्लाके विरोधका सामना करना पडा। सगीत कबीलेका शक्तिशाली सरदार रहीम बी बडे भाईका समर्थक था, इसलिये पांच सालतकके बडे संघर्षके बाद मुकीमको अपने हाथमें शक्ति लेनेमें सफलता मिली।

९ उबैदुल्ला I, सुभानकुल्ली-पुत्र (१७०७–१७ ई०)

अब अस्त्राखानी वंशमें भी गुडिया सुल्तान होने लगे। उबैदुल्ला, सगीत-सरदार रहीम बीके हाथका कठपुतली था।

१११५ हि० (१७ V १७०३–८ IV १७०४ ई०)में ककुरत कबीलेवालोंने उबैदुल्लाके शहर खानाबादपर आक्रमण किया। अतालीक महमूद बी उनसे लडने गया, जिसमें उसका भाई अब्दुल्ला मारा गया। महमूद बीने इस खतरनाक कबीलेको पूरी तौरसे दंड देनेके लिये आज्ञा मागी, क्योंकि उन्होंने वक्षुकी भूमिमें लूट-मार मचा रक्खी थी। मुकीम खानकी आज्ञा पा महमूद बी जल्दी-जल्दी कूच करते हुये तीन दिनमें कबादियान किलेपर पहुंचा, जिसे कि ककुरतोंके सहायक दुश्मन कबीलेने दखल कर रखखा था। महमूद बीके सामने उन्होंने आत्मसमर्पण किया। कबादियानसे एक सेना ले महमूद बी ककुरतोंके विरुद्ध चला, जो अपने डेरे और चीज-वस्तुओंको छोडकर भाग गये। महमूदने बहुतोंको मारा, लेकिन दुश्मनोंके पामीरके पहाडोंमें भागकर छिप जानेपर पीछा करना आसान नहीं था। अतालीक महमूद बीने धन ले लडकों-बच्चोंको छोड दिया। फिर उसने तगि-दीवान और बदे-हस्मकी ओर उनका पीछा किया और ककाई किलेमें डेरा डाल चारों ओर सेना भेजकर ककुरत कबीलेको नष्टप्राय कर दिया। जब वह बलख लौटा, तो मुकीमने उसे और उसके साथियोंको बहुत मूल्यवान् खिलअत तथा दूसरी भेंटें प्रदान कीं।

१० अबुल्फैज, सुभानकुल्ली-पुत्र (१७१७–४७ ई०)

उबैदुल्ला खान अतालीक रहीम बीसे झगड पडा, जिसके लिये उसे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पडा। रहीमने उसकी जगह अबुल्फैजको खान बनाया। उज्बेकोंने उसके समय भी खुरासानपर आक्रमण करना जारी रक्खा। ऐसे ही एक आक्रमणमें उन्होंने नादिर (पीछे दिल्ली लूटनेवाले महान् विजेता नादिरशाह)को पकड लिया था। १७१८ ई०में उज्बेकोंने अब्दाली-अफगानोंके सरदार आजादुल्लासे मेल करके खुरासानको लूटा। सेफे-कुल्ली खानके अधीन तीस हजार ईरानी सेना आई, जिसने खुरासानसे बारह हजार उज्बेक-सेनाको हराया, लेकिन उसे खुद उज्बेकोंके मित्र अफगानोंसे हारना पडा।

१७३६ ई०में ईरानी सेनापति नादिरशाहने गुरजी (जार्जिया)में उसमानी तुर्कोको बुरी तरहसे हराकर उत्तर-पूर्वकी ओर नजर फेरी, और उसके पुत्र रजाकुल्ली खानने अबुल्फैजकी सेनापर आक्रमण किया, लेकिन इसी समय इलबर्स खीवासे अपने उज्बेक भाइयोंकी सहायताके लिये आ गया, जिससे उनकी जान बच गई।

१७३६–३८ ई०में नादिरने कंधारका मुहासिरा करते समय अपने पुत्र रजाकुल्लीको बादगियो और मरचो (मरवेचकी)के रास्ते अफगानोंके दोस्त अलीमरदाखा (अन्दखुद)के खिलाफ

भेजा। पडोसी घुमन्तुओने अलीमरदाका साथ छोड दिया और रजाकुल्लीने उसे वन्दी वनाकर वापके पास भेज दिया। रजाकुल्लीने शापूरगान और अक्सी ले वलखको भी जीत लिया, फिर वक्षुपार हो अबुल्फ़ैजकी शक्तिको नष्ट करना चाहा, लेकिन इसी समय ख्वारेज्मके खान इलवर्सने आकर फिर अपने भाई उज्वेकोको वचा लिया। हार खानेके वाद नादिरने रजाकुल्लीको इस वहानेसे वुला लिया—'उच्च तुर्कमान कुलो तथा छिङ-गिस् खानकी सतानोके पैतृक-देशोपर हाथ नही मारना चाहिये।"—यह अगूर खट्टे-जैसी वात थी।

नादिर दिल्ली लूटनेके लिये चला गया और लौटते समय पेशावरमे उसे अबुल्फ़ैजका पत्र मिला, जिसमे लिखा था—"मै पुराने वशकी अन्तिम सतान हू। मै तुम्हारे जैसे शक्तिशाली वादशाहका विरोध करने की काफी शक्ति नही रखता, इसीलिये मै अलग रहकर तुम्हारी भलाईके लिये दुआ करता रहता हू। तो भी, यदि तुम मुलाकात करके मुझे सम्मानित करना चाहते हो, तो मै एक अतिथिके तौरपर तुम्हारा उचित सत्कार करूगा।" अबुल्फ़ैजने अपने दोस्त खीवाके खानको भी वैसा ही करनेको कहा। लेकिन नादिरशाहने इस चापलूसीभरी वातको वडी घृणाकी दृष्टिसे देखा। दिल्लीसे तीन सौ हाथियो, मोती-हीरा-जटित तम्वू, वहुत-सी सम्पत्ति और शाहजहाके प्रसिद्ध सिंहासन तख्त-ताऊसके साथ लौटकर नादिर कुछ दिनो हिरातके पूर्वके पहाडो (कोहिस्तान) मे ठहरा। यहीसे उसने रूसी साम्राज्ञी एलिजावेथ (१७४१–६१ ई०) तथा अबुल्फ़ैजके पास कुछ भेटे भेजी।

नादिरने अव इलवर्सके सत्यानाश करनेका निश्चय किया। वह वुखाराके सीमान्तपर वक्षुतटके करकी स्थानमे पहुचा, जहापर अस्त्राखानियोका सर्वेसर्वा रहीम वी भेट लिये उपस्थित था। वहासे नादिर चारजूय गया। तीन दिनमे वक्षुपर नावोका पुल वनवाकर वहुतसी सेनाको खजानेकी रक्षाके लिये छोड वह वुखारासे एक मजिल पहले कराकुलमे पहुचा। अबल्फ़ैजने सुन्दर अरव घोडोकी भेंट लिये अपने अमीरो और मुल्लाओके साथ स्वागत किया। नादिरशाहने खानको वैठनेके लिये स्थान देते उसे "शाह" के नामसे सम्वोधित किया। अबुल्फ़ैजने अपनी वेटीको नादिरशाहसे व्याहा और नादिरने अपनी वहिनको अबुल्फ़ैजके भतीजेके लिये दिया। रहीम बीको नादिरशाहने खानकी उपाधि देकर छ सौ तुर्कसेनाका नायक वनाया। इस तरह वुखाराको अपने अधीन कर वह खीवाकी ओर वढा। इलवर्सने अधीनता स्वीकार करानेके लिये आये नादिरके दूतको मरवा दिया था। नादिर अव उसके ऊपर चढा। इलवर्स खानकाहके किलेमे घिर गया। तीन दिनकी गोलावारीके वाद इलवर्सने अपनेको नादिरके रहमपर छोड दिया, और खूनखार नादिरने उन्तीस प्रधान अफसरोके साथ उसे कत्ल करवा दिया। चारजूय लौटकर नादिरने अपनी नव-विवाहिता वीवीको उसके पिता-के पास भेज दिया। मेर्वके रास्ते जव वह खुरासानमे पहुचा, तो वही २३ जून १७४७ ई०को उसके एक अनुचरने उसे मार डाला।

नादिरशाहकी मृत्युकी खवर पाकर अव रहीम वीने अबुल्फ़ैजको गद्दीपर वैठाये रखनेकी जरूरत नही समझी, और उसे पैमनारमें मीर अरवके मदरसेमें कैद कर दिया। ईरानी इसपर क्षुब्ध हुये, तो रहीमने कहा—"मैं तो मामूली उज्वक हू। नदिरशाहने तो न जाने कितने वडे-वडे खानदानी राजाओको लूटा-मारा।" ईरानी सेना जव रहीम खानको घेरनेका मसूवा वाधने लगी, तो रहीमने गिलजई अफगानोका कान भरा—नादिरने तुम्हारे देश कन्धारको अव्दालियोके हाथमे दे उन्हे भूमि, स्त्री और वेतन देनेका वचन दिया है। उन्होने उसकी वात मान ली। रहीम वीने उसी रात अबुल्फ़ैजको मार डाला। दूसरे दिन ईरानियोने रहीम वीसे सुलह कर ली। अपने तोपखानो, तम्वुओ और रसदके सामानको छोड जानेके लिये रहीम वीने उन्हें अच्छी भेट देकर देश लौट जानेकी छुट्टी दे दी। इस प्रकार कुछ ही महीनोमें रहीम वीने ईरानियोके प्रभुत्वको वुखारासे खतम कर दिया।

११ सैयद अब्दुल् मोमिन मुहम्मद, अबुल्‌फैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अबुल्‌फैजको मारकर अभी रहीम बी सीधे गद्दीपर बैठनेके बारेमे निश्चय नही कर पाया था। उसने अपने दामाद तथा निहत खानके पुत्र अब्दुल् मोमिनको गद्दीपर बैठा दिया। एक दिन मीठे खरबूजे कपडेसे ढाक्कर खानके पास आये थे। बीबीने पूछा—"क्या है ?" उसने जवाब दिया—"तुम्हारे बापका शिर है, जिसने मेरे बापको मारकर देशपर अधिकार कर लिया है।" बीबीने यह बात बापसे कह दी और रहीमने अब्दुल् मोमिनको कुयेमें ढकेलकर मरवा दिया।

१२ सैयद उबैदुल्ला II, अबुल्‌फैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अफगान—अफगानोका उत्कर्ष इसी समय होने लगा। महमूद बीके समय सुलेमान पर्वत-श्रेणीमे उनका एक छोटा-सा कबीला था, जिसने अपनी शक्ति बढाते-बढाते एक समय वक्षुसे सिन्ध-तटतककी भूमि ले ली। जातिकी तौरपर सिन्ध-तटतक अब भी पख्तून (अफगान) रहते है, लेकिन पश्चिममे काबुलके पासकी कोहदामन-उपत्यकासे ही ताजिको, फिर हजारो और अन्तमें उज्बेकोके इलाके आ जाते हैं। तो भी वक्षु (आमू)के तटतक अब भी अफगानिस्तानकी राज्यसीमा है। १८वी सदीके आरम्भमे अर्थात् औरंगजेब और उसके कुछ उत्तराधिकारियोंके समयतक उज्बेकोसे बचनेके लिये अफगान भारत और ईरानके बादशाहोकी प्रजा बनकर उन्हें कर देते थे। लेकिन जब सफावी-वश (१४९९–१७२२ ई०)का सितारा डूब गया, तो गिलजई कबीलेके सरदार महमूदके नेतृत्वमे अफगानोने अस्पहानतकपर आक्रमण करनेका प्रयत्न किया, जहासे नादिरने उन्हें मार भगाया। इस अन्तिम एसियाई महान् विजेताके पतन, भारतीय "मुगल"-साम्राज्यके क्षीण होने एव उत्तरमे बुखाराके उज्बेकोमे फैली गडबडीसे फायदा उठाकर अफगानोने वक्षु और सिंधके बीचके नादिरके जीते हुये देशको हडप लिया। अहमदशाह दुर्रानी (अफगान-सरदार)ने नादिर-वशज तथा तैमूरके पौत्र शाहरुख मिर्जासे मेल करके ११६६ हि० (८ XI १७५२–२९ IX १७५३ ई०) में वक्षुसे दक्षिणवाले इलाकेको बुखारासे छीन लिया, जिसमे मैमना, अन्दखूई, आकचा, शापूरगान, शेरपुल, खुल्म, बलख, बदख्शा और बामियान अवस्थित है। विजेता अफगान सेनापति बेगीखान पीछे सदर-आजम अहमदका उत्तराधिकारी बना। १२०३ हि० (२ X १७८८–२३ VIII १७८९ई०) मे तैमूरशाहको बहावलपुरके अभियानमे फसा देख उज्बेकोने वक्षु पार हो अपने बहुतसे इलाकोको फिर ले लिया। १२०८ हि० (९ VIII १७९३-३० VI १७९४ ई०) मे तैमूरशाह मर गया, जिसकी जगहपर उसका पुत्र शाहजमा काबुलकी गद्दीपर बैठा। इसीके समय बुखाराके मगीत अमीर मासूम-ने हमला किया, और बलख घिरा रहा। शाहजमा उस समय भारत और खुरासानके अभियानोमे व्यस्त था, किन्तु जब उससे उसने छुट्टी पा ली, तो मासूमने लडनेकी जगह उससे सुलह करना ही अच्छा समझा। शाहजमाके प्रतिद्वन्द्वी भाई शाह महमूदको अमीर मासूमने १२१४ हि० (५ VI १७९९-२६ IV १८०० ई०)मे बखारामें शरण दी।

बेगीखानको वक्षुके दक्षिणवाले प्रदेशके जीतनेके उपलक्षमें सदर-आजमकी उपाधि मिली। अमीर मासूम और बेगीखान मगीती अमीर शाह मुरादकी भी उपाधि थी, जो कि रहीम बीका भतीजा था।

अस्त्राखानी कालकी इमारतोंमें मदरसा-शेरदिल भी है, जो १६१० ई०में बना था।

१३ सैयद अबुल्‌गाजी, इब्राहीम-पुत्र (१७४७, ई०)

रहीम बीके हाथका यह अन्तिम अस्त्राखानी कठपुतली खान था, जिसके बाद रहीमने स्वय गद्दी समाल ली।

अस्त्राखानी-वंशवृक्ष—
(१५१५–१७४७ ई०)
इस्कन्दर (शैवानी)
जुहरा=जानीवेग
१ दीन मु०
(१५९८)
२ वाकी मु०
(१५९९-१६०५)
३ वली मु०
(१६०५-८)
४. इमामकुल्ली (१६०८-४२)
५ नादिर मु० (१६४२-४७)
रजव मु०
इब्राहीम
१३ अबुल्गाजी
(१७४७)
६ अब्दुलअजीज
(१७४७-८०)
७ सुभानकुल्ली
(१६८०-१७०२)
खुदायार अतालीक
९ उबैदुल्ला I
(१७०७-१७)
८ मुकीम
(१७०२-७)
१० अबुल्फैज
(१७१४-४७)
दानियालवी
११ अब्दुल् मोमिन
(१७४७)
१२ उबैदुल्ला II
(१७४७)
शम्सबानू=शाहमुराद

अध्याय ६

खीवा-खान

(१५१५–१७१४ ई०)

ख्वारेज्म अब अपनी राजधानी खीवाके नामसे प्रसिद्ध होने लगा था। ख्वारेज्मकी भूमि पश्चिममें कास्पियन और दक्षिणमे खुरासानसे अलग करनेवाले रेगिस्तान कराकुम और पूर्वमें बुखारासे अलग करनेवाले रेगिस्तान किजिलकुममे घिरी हुई बालुका-समुद्रमें द्वीपकी तरह है—उत्तरमें अराल समुद्रके दोनो तरफ भी मरुभूमि है। इस अपार बालुका-राशिके भीतर रहते भी ख्वारेज्म हमेशासे बड़ा ही उर्वर और समृद्ध देश, तथा युरोपके साथके व्यापारका केंद्र रहा। रेगिस्तानोके कारण ही दक्षिण और पूर्वके राज्योकी अपेक्षा इसका सम्बन्ध वोल्गा-उपत्यकासे अधिक रहा। सदियोतक जू-छि उलुसने इसपर शासन किया। बहुत पीछे सफावियोने मौका पाकर खीवाको अपने हाथमें कर लिया। लेकिन, जब उज्बेकोने मुहम्मद शैबानीके नेतृत्वमे अन्तर्वेदको जीता, तबसे उज्बेकोंकी ही प्रधानता खीवापर भी हो गई। १५१० ई०में शैबानीको हराकर शाह इस्माईलने ख्वारेज्मको बाटकर वहा अपने तीन राज्यपाल नियुक्त किये—(१) खीवा-हजारास्प, (२) उरगज, (३) वेसिर (वेजिर)। ख्वारेज्ममे सुन्नी धर्मकी प्रधानता थी, और सफावियोने शिया-धर्मको राजधर्म घोषित किया था। इससे फायदा उठा उमर गाजीने शियोके विरुद्ध ख्वारेज्मियोको उभाडना शुरू किया और दो साल बाद ही हुसामुद्दीन कतल नामक एक धार्मिक नेताने वेसिरके लोगोको समझाकर उज्बेक खान बरकाके पुत्र इलबर्सको लाकर गद्दीपर बैठा दिया।

बरका खान जू-छि-पुत्र शैबानके प्रपौत्र पूलाद खानके पुत्र अरबशाहकी सतानोमे से था। अबुल्खैरके दादा इब्राहीम ओगलानका भाई यही अरबशाह सुवर्ण-ओर्दूके छिन्न-भिन्न टुकडोमेंसे एकका खान था—अरबशाह और इब्राहीम दोनोने बापकी सम्पत्तिको आपसमें बाट लिया, इस प्रकार अरबशाह भी एक छोटासा खान (राजा) बन गया। इब्राहीमके पोते अबुल्खैरने अपनी शक्ति कितनी बढाई, इसका वर्णन हम तेमूरी-वंशके वर्णनमें कर आये है। अरबशाहके बेटे हाजी तुली (तुगलक हाजी) का एक ही पुत्र तेमूरशाह था, जो कि कल्मकोके युद्धमें मारा गया। उइगुरोके सरदारने तेमूर-शेखकी खानमसे बिदाई देते समय पूछा, तो खानमने कहा—"मुझे तीन महीनेका गर्भ है।" इसपर उइगुर घुमन्तू थम गये। यह खबर पाकर कुछ दूर चले गये नेमन कबीलेवाले भी ठहरकर बच्चेके पैदा होनेकी प्रतीक्षा करने लगे। छिङ्-गिस्के पवित्र खूनकी इतनी महिमा थी, कि अपने भावी खानकी आशामें उन्होने अपने लाखो पशु-प्राणियोंके साथ वहा ठहर जाना आवश्यक समझा। छ महीने बाद खानमको बच्चा पैदा हुआ, जिसका नाम यादगार रक्खा गया। उइगुरोने दूसरे कबीलोके पास सूयुनजी (भेट) भेजनेके लिये न्योता भेजा। नेमन काला घोडा भेजकर यादगारके ओर्दूमें लौट आये। उनके आनेपर माने गोदमे ले बापके तम्बूमे खानके आसनपर बच्चेको बिठा दिया। उइगुरोने अधिक सम्मान दिखलानेके लिये अपने स्थानको खानके दरबारमे नेमनोको दे दिया। इसी तरह और भी कितने ही कबीले खबर पाकर अपने खानके पास लौट आये, लेकिन उइगुर और नेमन यही दोनो उज्बेक कबीले खानके कराची (विपत-सपतके साथी) रहे।

बडा हो यादगारने अपने उलुसका अच्छा नेतृत्व किया। उसके चार पुत्र हुये—बरका (बेरेका), अबेक, अर्मानक और अलक। १५वी सदीका समय था, लेकिन अभी भी मगोल भाषा बिल्कुल विस्मृत नही हुई थी, यह खानजादोके नामसे पता लगता है। अमीन अरबी नही मगोल-भाषाका शब्द है, जिसे अरबीमे जान, फारसीमें होश, और उज्बेकी तुर्कीमें तिन कहते है। "शैबानीनामा"में चारो पुत्रोको बरका, अबलक, अबका और इलबानेक कहा गया है। बरका शरीरसे बहुत ही शक्ति-

शाली था। उसके समयमे अबुल्खैर दश्ते-किपचकका सबसे शक्तिशाली खान था। उसने १४५५ ई०में बरकाके नेतृत्वमे एक सेना बुखाराके खान अब्दुल्लतीफके पुत्रकी मददके लिये भेजी। उज्बेक अपने सहयोगी बुखारियोंसे झगड पडे, और सोग्द इलाकेके लूटके मालको ऊटोपर लादे लौट गये। कुछ समय बाद दो नोगाई खानो मूसाबेग और कुजाश मिर्जाके बीचमें लडाई हो गई। कुजाशके जीतनेपर मूसाने बरकासे सहायता मागी—नोगाई-वश ज्यादा सम्माननीय समझा जाता था। बरकाने इस शर्त्तपर सहायता देनी स्वीकर की, कि मेरा पिता यादगार खान बनाया जाये और मूसा उसका प्रधान बेक (अमीर) बने। मूसाने स्वीकार किया। सफलताके बाद यादगारको सफेद नम्देके ऊपर उठाकर बाकायदा खान घोषित किया गया। यादगार खान अभियानपर चला। उसके हरावलका नायक मूसाबेग था। जाडेके दिन थे। जमीन बर्फसे ढँकी थी। घास-चारेका ठिकाना नही था। घोडे दुबले होते गये और रसद खतम हो गई। लौट चलनेकी बात कहनेपर बरकाने इन्कार कर दिया। एक पहाडीपर चढकर देखा, तो (उश्तउर्त) के परे एक उपत्यकामें कुजाश मिर्जाके तम्बू दिखाई पडे। बरकाने तुरन्त आक्रमण कर दिया। कुजाश पकडकर मारा गया, और उसके डेरे लूट लिये गये। बरका सुल्ताननें कुजाशकी लडकी मलाई खानजादाके साथ ब्याह किया। इस घटनाके कुछ ही समय बाद यादगार मर गया। अबुल्खैरकी मृत्यु भी इससे थोडा ही पहले हुई थी। अबुल्खैरकी मृत्युके बाद उसके उज्बेक जहा-तहा बिखर गये। उज्बेक कहावत है—"अगर तुम दुश्मनको अपने बापके घरकी ओर दौडते देखो, तो तुम्हें उसके साथ होकर लूटमे भागीदार बनना चाहिये।" बरका भला अबुल्खैरके धन और शक्तिकी लूटमे क्यो पीछे रहता ?

कुछ सालो बाद अबुल्खैरका पौत्र प्रसिद्ध विजेता मुहम्मद शैबानीका डेरा निम्न सिर-उपत्यकामे बरका सुल्तानके पास पडा था। उसने अपने आदमियोको हुक्म दिया—"रातको घोडोपर चढकर जाओ, और सूर्योदयके वक्त बरकाके तम्बूपर टूट पडो, दूसरी किसी चीजका ध्यान न करके सिर्फ उसको पकड लाओ।" बरका अपने तम्बूमे था। उसने घोडोके टापकी आवाज सुनी, और उसी समय कधेपर एक समूरी चोगा डालकर नगे पैर सरकडेके जगलोमें घुस गया। बर्फ पडी हुई थी। एक सरकडेने उसके पैरको घायल कर दिया, लेकिन वह उसकी परवा न कर सिर-दरियाके किनारे उगनेवाले उन्ही सरकडोके घने जगलमे छिपा रहा। शैबानीके आदमी इधर-उधर पूछ-ताछ करने लगे, जिसपर उइगुर कबीलेके एक ईनक (सरदार) मुगाने कह दिया, कि मै ही बरका हू। उसे पकडकर मुहम्मद शैबानीके पास ले गये। शैबानी बरकाको अच्छी तरह पहचानता था। उसने मुगासे पूछा, कि तुमने झूठ क्यो कहा। इसपर मुगाने जवाब दिया—"मैने उसका बहुत नमक खाया है। मै उसकी विपत्ति-सपत्तिमें साथी रहा हू। मैंने सोचा, यदि मै उसका पीछा करनेवालोमेंसे कुछको इस तरह फसा रक्खू, तो उसे भागनेका अच्छा मौका मिलेगा। बाकी, अब जो तुम्हारी मर्जी हो, मेरे साथ करो।" शैबानीने प्रसन्न हो उसे इनाम देकर छोड दिया। उधर शैबानीके कुछ आदमी खूनसे पता पा बरकाको पकड लाये। शैबानीने उसे मार डाला, और उसके शिविरको लूट लिया। बरकाकी विधवा खातून अबुल्खैरके द्वितीय पुत्र खोजा मुहम्मद सुल्तानकी बीबी बनी। उसे पहले ही गर्भ था, जिससे जानीबेग (अब्दुल्ला खानका दादा) पैदा हुआ। बरकाके पहले हीके दो पुत्र इलबर्स और बलबर्स थे, जिनमे बलबर्स दोनो पैरोंसे लुज था। इन्ही दोनो भाइयोमेंसे एक इलबर्सको हुशामुद्दीनने बेसिरकी गद्दीपर बैठाया।

राजावलि—बरका-वशी खीवा-खान निम्न प्रकार हुये—

१	इलबर्स, बरका-पुत्र	१५१५ ई०
२	सुल्तान हाजी, बलबर्स-पुत्र	
३	हसनकुल्ली, अबलेक-पुत्र	
४	सोफियान, अमीनेक-पुत्र	
५	बुजुगा, अमीनेक-पुत्र	
६	अवानेक, अमीनेक-पुत्र	

७	काल, अमीनेक-पुत्र	१५३९–४६ ई०
८	अकताई, अमीनेक-पुत्र	१५४६ "
९	दोस्त, बुजुगा-पुत्र	१५५६ "
१०	हाजी मुहम्मद, अकताई-पुत्र	१५५६–१६०२ "
११	अरब मुहम्मद, हाजी मुहम्मद-पुत्र	१६०२–२१ "
१२	इसफन्दियार, अरब-पुत्र	१६२२–४२ "
१३.	अबुलगाजी, अरब-पुत्र	१६४३–६३ "
१४	अनुशा, अबुलगाजी-पुत्र	१६६३–८६ "
१५	एरेग, अनुशा-पुत्र	१६८६–८७ "
१६	शाहनियाज	१६८७–१७०२ "
१७	अरब मुहम्मद, अनुशा-पुत्र	१७०२ "
१८	हाजी मुहम्मद, अनुशा-पुत्र	१७१४ "
१९	यादगार, अनुशा-पुत्र	
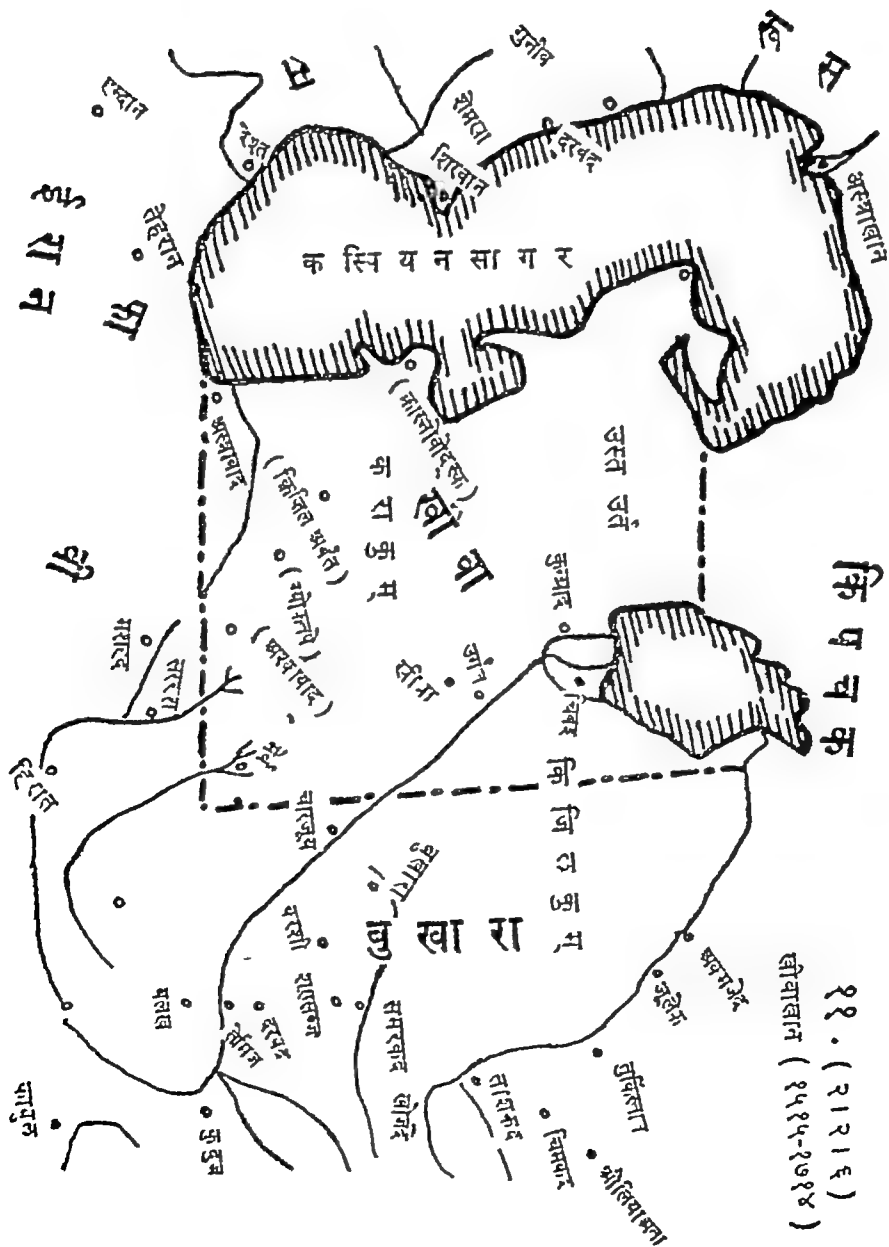
१. इलबर्स, बरका-पुत्र (१५१५ ई०)

इलबर्सको बुलाकर इधर छिपा रक्खा गया और उधर षड्यन्त्रियोने घृणास्पद शिया ईरानियोके ऊपर आक्रमण करके उन्हे मार डाला, केवल एक ईरानी भागकर जान बचा पाया। दूसरे दिन ईरानी राज्यपालके महलमे लाकर इलबर्सको खान घोषित किया गया। उज्बेक और सरत (फारसीभाषी) दोनो ही सुन्नी होनेसे शियोके साथ घृणा करते थे। उन्होने इस समय बडा उत्सव मनाया। इसके बाद यगी शहर और तेरसेकने भी इलबर्सकी सेनाके सामने शिर झुकाया। इलबर्सने अपने भाई बलबर्सको "विलि-किच"की उपाधि दे यगीशहरका शासक बनाया। उरगजमे अभी ईरानी राज्यपाल सुल्तानकुल्ली अरब शासन कर रहा था, लेकिन तीन ही महीने बाद इलबर्सने सुल्तानकुल्लीको भी महलमे पकडकर सभी नौकरोके साथ मार डाला। हजारास्प और खीवाकी छावनियोने वहाके सरतोसे राय पूछी, तो उन्होने रहनेके लिये जोर दिया। दश्तेकिपचकसे अब इलबर्सने अपने भाई-बधोको बुलाया और बूढे उइगुरकी बात नही मानी—"उज्बेकोमे बादशाहकी महिमा अपने अधीनोके प्रेमपर निर्भर करती है।" यादगारके सभी पुत्र मर चुके थे, किन्तु अबलेक खानका एक पुत्र और अमीनेक खानके छ पुत्र अपने परिवारो और ओर्दूके साथ आकर उरगजमे बस गये। इलबर्स स्वय वेजिरमे रहता था। उसके भाई-बधोने खीवा और हजारास्पको इतना लूटा और बरबाद किया, कि इन शहरोको और कातको भी ईरानी छोड गये। १५२३ ई०मे शाह इस्माईल मर चुका था। खुरासान पर्वतश्रेणीके उत्तरवाले महीने और देरूनतक उसके सभी राज्यपाल अपने स्थानोको छोडकर भाग गये। उज्बेकोके लिये खुरासानियो और तुर्कमानोके ऊपर लूटके अभियान करनेकी छूट मिल गई। इन अभियानोमे लुज बलबर्स रथपर चढकर अगुवा बनता था। किजिल-बासोपर विजय प्राप्त करनेके उपलक्षमे इलबर्सके सात पुत्र गाजी (धर्मयोद्धा) कहलाये।

२. सुल्तान हाजी, बलबर्स-पुत्र

इलबर्सके मरनेपर दोनो भाइयोके पुत्रोमे सबसे बडा सुल्तान हाजी गद्दीपर बैठा, किन्तु राज्यकी सारी शक्ति उसके चचेरे भाई सुल्तान गाजीके हाथमे रही। सुल्तान गाजी बहुत ही धनी और स्वेच्छाचारी था। एक साल राज्य करनेके बाद सुल्तान हाजी मर गया, और उसके बाद यादगार-वशकी ज्येष्ठतम सतान होनेसे हसनकुल्लीको खान बनाया गया।

३. हसनकुल्ली, अबलेक-पुत्र

उरगजको इसने अपनी राजधानी बनाया। इलबर्स और अबानेकके पुत्रोने इसके ऊपर आक्रमण किया, और मुहासिरेके कारण उरगजमे भुखमरी शुरू हो गई। चार महीने बाद उसने आत्म-समर्पण किया। हसनकुल्लीपर अगकनाईके वधका दोष लगाया गया था, जिसके लिये उसके ज्येष्ठ पुत्र बलाल सुल्तानको मारकर बदला लिया गया। हसनकी विधवा और दूसरे पुत्र समरकद भेज दिये गये।

४. सोफियान, अमीनेक-पुत्र

अमीनेक (अबानेक)का पुत्र सोफियान उरगजमे खान बना। खानजादोमें रियासतोका फिरसे वितरण किया गया, जिसमे बरका सुल्तानके पौत्रोको वेजिर, यगीशहर, तेरसेक, देरून, खुरासान और मगिशलकके तुर्कमान मिले। अबानेक खानके चार पुत्रोको खीवा, हजारास्प, कात, बलदुमाज, नीकीची सूबुई (नदी-तटका इलाका), वगाबाद, निमा, अबीवर्द, चिहारदे, मेहीने, जेजे तागवुई (पहाडी इलाका), और साथ ही आमू, बलखान और देहिस्तानके तुर्कमान भी मिले। उस समय अबुल्गाजीके अनुसार वक्षु नदी बलखानमे कास्पियन समुद्रमे गिरती थी, और आजकल जहा विकराल रेगिस्तान खडा है, वहा बहुतसे समृद्ध ग्राम और नगर बसे हुये थे। पाच शताब्दियो बाद, अब फिर कास्पियन समुद्रकी ओर वक्षुकी एक धारा मनुष्योके हाथोद्वारा मोडी जा रही है, जिसके कारण फिर इस मृत भूमिमे जीवन सचार होनेवाला है। बलखानके नजदीक रहनेवाले इरसारी तुर्कमानोने कुछ

समयतक सोफियानको कर दिया, इसके बाद खानकी ओरसे कर उगाहनेके लिये जब आदमी भेजे गये, तो उन्हें इन घुमन्तुओंने मार डाला। इसपर सोफियान एक बडी सेना ले इरसारियो तथा पडोसी खुरामानके सलूरियोंके डेरोंपर आक्रमण करके लूट-मार करते बहुतसे स्त्री-बच्चों और सम्पत्तिको अपने साथ ले गया। उस समय कितने ही तुर्कमानोंने चू-तटकी निर्जल-अधित्यका (प्लेटो) में शरण ली थी। उन्हें चारों ओरसे घेर लिया गया, जिसके कारण बहुतसे प्यासके मारे मर गये। अबानेक-पुत्र अगताईको उन्होंने वचन दिया, कि हम तुम्हारी संतानके सदा भक्त रहेंगे। अगताईने बीचमें पडकर प्रत्येक मारे गये कर-उगाहकके लिये हजार भेडें अर्थात् कुल चालीस हजार भेडें दंड देनेपर समझौता करा दिया। इरसारियोंने सोलह हजार, खुरामानी सलरियोंने सोलह सौ, और तेके-सारिक-यामूत—इन तीन कबीलोंने आठ हजार भेडें दीं। कुछ समय बाद तुर्कमानोंकी जनगणना करके उनके ऊपर निम्न प्रकार कर लगानेका निश्चय हुआ—

इनरकी सलूर (भीतरी सलूर)	१६०००, तथा उसके ऊपर		१६००	खानकी रसोईके लिये।
हसन कबीला	१६०००	और	१६००	" " "
अरबाजी (भीतरी सलूर)	४०००	और	४००	" " "
गोकलान	१२०००	और	१२००	" " "

अदकली (खिजिर), अली, तीवेची } इन तीनों वक्षु-तटवासी कृषक कबीलोंको अपनी उपज और भेडोंमेंसे कुछ कर और अदकली (सैनिक) भी देने पडे।

सोफियानके मरनेपर खीवा उसके पुत्रोंको खोरिशके रूपमें मिला।

५. बुजुगा, अमीनेक-पुत्र

भाईका स्थान जिस वक्त बुजुगाने लिया, उस वक्त बुखाराके उबैदुल्ला खान और ईरानी शाह तहमास्पके बीचमें संघर्ष हो रहा था। ख्वारेज्मी भी इससे फायदा उठानेके लिये पील-कुपरुकीतक जा खोजन्द और अस्तेराई (अस्त्राबादके समीप) पर टूट पडे। शाह तहमास्पके ऊपर पश्चिमसे उसमान-अली तुर्क भी प्रहार कर रहे थे। दुश्मनोंमें फूट डालनेके लिये शाह तहमास्पने छिङ-गिस् खानके खूनसे संबंध जोडनेके लिये बुजुगा खानसे पुत्री मांगी। खानने अपनी पुत्री न होनेसे अपनी भतीजी तथा सोफियान खानकी पुत्री आइशाको देना चाहा। विवाहपत्र लिखवानेके लिये लडकीका भाई आगिम सुल्तान गया। शाहने उसका कजवीनमें स्वागत-सत्कार किया और खोजन्द-शहर (ईरान)को उसे जागीरमें दिया। उसने सोनेके नौ डले, चांदीके नौ डले, अच्छी जातिके सुसज्जित नौ घोडे, रेशमके ऊपर सोनेके काम किये नौ तम्बू तथा समुचित कालीन और तकिये, एक हजार थान रेशम, आदि बुजुगा खानके लिये भी भेंट भेजे। इसके फलस्वरूप कुछ समयके लिये ख्वारेज्मी उज्बेकोंने ईरानी सीमापर लूट-मार बन्द कर दी। काफी दिनोंतक राज्य करनेके बाद बुजुगा मर गया और उसकी जगह उसका भाई अबानेक खान बना।

६ अबानेक, अमीनेक-पुत्र

बुजुगाके तीनों पुत्रों दोस्त मुहम्मद, ईस मुहम्मद और बुरुममेंसे पहले दोनोंको कातकी जागीर मिली। अबानेककी दो बीबियां मगीत कबीलेकी थीं, और एक दासी थी। दासीसे उसका पुत्र दीन मुहम्मद हुआ, जो लडकपनसे ही युद्धके खेल खेला करता था। उस समय अस्त्राबादके पासका इलाका उरगंजके उज्बेकोंके हाथमें था। दीन मुहम्मद बीस सालका हो गया। उसने इस इलाकेको अपने लिये मांगा। न देनेपर उसने चालीस सहायकोंके साथ जाकर एक तुर्कमान बेक (सरदार)के ऊटों और भेडोंको लूट लिया। तुर्कमान बेकने अपने स्वामी मुहम्मद गाजी सुल्तान इलबर्स-पुत्रको इसकी खबर दी। मुहम्मद गाजीकी बहिनकी शादी हाल हीमें अबानेक खानसे हुई थी। उसने छापा मारकर दीन मुहम्मदको पकड, लूटे मालको छीन, कुछ दिनों बंदी रख उसे हाथ-पैर बांधके घोडेपर सवार करके बापके

पास भेज दिया। लेकिन दीनू (दीन मुहम्मद) ऐसा-वैसा आदमी नही था। उसके लिये उसके साथी अपना खून-पसीना एक करनेके लिये तैयार थे। उन्होने रास्ते हीमे दीनूको छुडा लिया। दीनूने बाप और सौतेली मा तमगाज चुराको झूठी चिट्ठी लिखी, कि तमगाजकी बहिन बहुत बीमार है। बहिन और बहनोईकी चिट्ठी पाकर मुहम्मद गाजी आया, तो पता लगा, चिट्ठी जाली थी। बहिनने भाईको बहुत सावधान कर दिया। इसी समय दीनूके आदमियोके पैरको आहट सुनकर मुहम्मद गाजी अस्तबलमें रक्खी सूखी लीदके ढेरमे जा छिपा, किन्तु आदमियोने उसे पकड लिया और उसकी गर्दन काट दी। यह खबर वेजिरमे गई। निहत सुल्तानके भाई सुल्तान गाजीसे मिलने अली सुल्तान गया था। उसने भाईके वधका गुस्सा अली सुल्तानको मारकर निकाला—"खूनका बदला खून" घुमन्तू कबीलोका एक सर्वोपरि विधान है। इलबर्सका ओर्दू वेजिरमें रहता था और अबानेकका ओर्दू उरगजमे। खानने अपने कबीलेवालोको मना किया, लेकिन वह अली सुल्तानके खूनका बदला लेनेके लिये अधीर थे। दोनोका किर-मगिशलकके छोरपर अवस्थित कुमकदमे युद्ध हुआ, जिसमे अबानेककी जीत हुई। इलबर्सके खानदानको मारकर सामानको लूट लिया गया। सुल्तानकी बेगा उलुग तूत्रे अपने लडको और लडकियोके साथ बुखारा जानेके लिये छोड दी गई, जहापर बलबर्स मुल्तानका भी परिवार पहलेसे ही रहता था। अब सारा ख्वारेज्म अबानेक खानके लडकोका था। खानने अपने लिये उरगज रख बाकी अपने बेटे-पोतोमे बाट दिया। दीन मुहम्मदको सुल्तान गाजीवाला देरून इलाका मिला।

सुल्तान गाजीके दो पुत्र उमर गाजी और शेर गाजी बुखारामे रहने लगे थे। उमरने बापके खूनका बदला लेनेके लिये उबैदुल्ला खानसे सैनिक सहायता ले अबानेकपर आक्रमण किया, और उसे मारकर पितृ-ऋण चुकानेमे सफल हुआ।

इस झगडेके बाद भी देरूनका इलाका दीन मुहम्मदके हाथमें रहा, जहा अबानेकके दो बेटे भी ख्वारेज्मसे भागकर आ गये थे। दीन मुहम्मदने खिजिर कबीलेकी शाखा अदकालोके बेक (सरदार) को सैनिक सहायता देनेके बदले तरखून (राजकुमार) की पदवी और सेनामे वामपक्षमें स्थान पानेका सम्मान प्रदान किया, तथा अदकालियोको उज्बेकोमे गिने जानेका प्रलोभन दे अपनी ओर कर लिया। इस प्रकार एक हजार अदकाली सैनिक मिले। तीन हजार और सैनिकोको जमाकर दीन मुहम्मदने खीवापर चढाई कर दी, और बुखारासे आई उबैदुल्लाकी सेना को हराकर १५३९ ई०के आसपास परिवारकी रूठी लक्ष्मीको मना लिया।

७ काल, अमीनेक-पुत्र (१५३९–४६ ई०)

लेकिन ख्वारेज्मका खान अब भी अबानेकका भाई काल खान हुआ, जिसने सात वर्षतक शासन किया। उसके समयमे ख्वारेज्म कितना धनधान्यपूर्ण था, वह इस कहावतसे सिद्ध है—"काले खानने गद्दी पकडी, एक पैसेमे रोटी तगडी।"

८ अकताई खान, अमीनेक-पुत्र (१५४६ ई०)

नये खानने वेजिरको अपनी राजधानी बनाया। काल खानके पुत्रोको कात नगरकी, उसी तरह सोफियान खानके पुत्रो यूनस और पहलवान-कुल्लीको भी जागीर मिली थी। लेकिन, बुजुगा खान, अबानेक खान और अकताई खानके बेटोने मिलकर अपने इन सबंधियोको भगा दिया और वह बुखारामे शरण लेनेके लिये मजबूर हुये। छिने हुये इलाकेकी बाटमे अबानेक खानके पुत्र अली सुल्तानको देरून दिया गया, उसके भाई महमूदको उरगज, हाजिमको बगाबाद, दीन मुहम्मदको निसा और अबीवर्द, और बुजुगाके दोनो पुत्रो ईस और दोस्तको खीवा-हजारास्प मिले। सोफियानके पुत्र यूनसने नोगाइयोके प्रसिद्ध सुल्तान इस्माईलकी लडकीसे व्याह किया। वह अपने चालीस अनुचरोके साथ बुखारा जा रहा था। तुतूक उस समय निर्जन था और लोग उरगजके पास डेरा डाले हुये थे। इसी समय यूनसको अपने पूर्वजोकी सम्पत्तिको लौटानेका ख्याल आया, और रातमे अपने साथियोके साथ महलमे घुसकर उसने राज्यपाल सरी मुहम्मद सुल्तानको पकड पहरेमे अकताई खानके पास वेजिरमें

भेज दिया। सैनिक और नागरिक महमूदसे परेशान थे, इसलिये उन्होंने यूनसका स्वागत करते हुये उसे खान घोषित कर दिया। अकताई सेना लेकर आया, लेकिन उसे हारकर भागना पड़ा। यूनस और अकताईकी पुत्रीके बेटे कासिम सुल्तानने पीछा करके नानाको पकड़कर उरगज लेजा चुपकेसे अकताईको इस तरह मार डाला, कि उसके शरीरपर कोई घावका चिह्न नहीं दिखाई पड़ता था—मालूम पड़ता था, जैसे वह स्वाभाविक मृत्युसे मरा हो। निहतकी लाशको उसके परिवारके पास वेजिरसे भेज दिया गया। मृत खानके पुत्रोंने बदला लेनेके लिये उरगजपर चढ़ाई की, और यूनसको बुखारा भाग जाना पड़ा, लेकिन किसी अनुचरने छिपे हुये कासिम सुल्तानको पकड़ा दिया। उरगज शत्रुओंके हाथमें गया, और कासिम कत्ल कर दिया गया। सोफियान खान और काल खानके वंशका उच्छेद हो गया और अवानेक खानके लड़के खुरासान भाग गये। फिर बटवारा हुआ, अकताई खानके परिवारको वेजिर और उरगज मिले, और बुजुगा खानके पुत्रों ईस, दोस्त और बुरूमको खीवा, हजारास्प और कातके इलाके।

९ दोस्त खान, बुजुगा-पुत्र (१५५६ ई०)

दोस्त बड़े ही नरम स्वभावका आदमी था। भाई ईसने उरगज मांगा, और अपने लिये सिर्फ खीवा-को रखनेके लिये कहा। दोस्तके देनेपर भी हाजिमने इन्कार कर दिया। इसपर ईसने हाजिमको वहांसे हटानेके लिये हमला कर दिया। सात दिनतक मुहासिरा करनेपर भी सफलता नहीं मिली। इसपर खिसियाकर उसने उइगुर और नेमन कबीलेके आदमियोंको छोड़ बाकी सभी बंदियोंको बड़ी निष्ठुरतासे मार डाला, और फिर खीवा जाकर इन कबीलोंके उज्बेकोंको वहांसे भगाकर उनका स्थान दुश्मन कबीलेको दे दिया। कुछ समय बाद १५५६ ई०में वह फिर उरगजपर चढ़ा, और सात दिनके असफल मुहासिरेके बाद धोखेसे नरनोंके मुहल्लोंमे घुस गया। अकताईका पुत्र नेमन उइगुर कबीलेवालोंके साथ वेजिरकी ओर हट गया। कुछ समय बाद हाजिम मुहम्मदने अपने भाइयों तथा अवानेक-पुत्र अली सुल्तान एवं दीन मुहम्मद-पुत्र अबुल्‌सुल्तानकी सहायतासे उरगजपर आक्रमण किया। चार महीनेके मुहासिरेके बाद किला तोड़नेके लिये आक्रमण करते समय ईस सुल्तान मारा गया। कुछ सैनिकोंने खीवामें जा दोस्त मुहम्मदको भी मार डाला। ईसके दो लड़के वहांसे भागकर बुखारा जा वहीं मरे। खीवा-राजवंशमें राजपरिवारोंका कत्लेआम और उच्छेद आम बात थी। अब बुजुगा खानका वंश समाप्त हो गया। यह घटना ९६५ हि० (२४ X १५५७–१४ IX १५५८ ई०) की है।

१० हाजी मुहम्मद, हाजिम, अकताई-पुत्र (१५५६–१६०२ ई०)

हाजिम अकबरका समकालीन था। खान घोषित होने समय इसकी उमर उन्तालीस सालकी थी। इसने वेजिरको अपनी राजधानी बनाया, और अली सुल्तानको उरगज, हजारास्प तथा कात मिले। हाजिमके भाई महमूदको आधा खीवा, उलुग-तूबे-ताश-कूनिशके तुर्कमान, दूसरे भाई तैमूरको आधा खीवा मिला। दीन मुहम्मदके पोते नूर मुहम्मदके इलाके मेर्वपर हमला किया करते थे। दीन मुहम्मदको निसा और अबीवर्द मिला था, यह हम बतला आये हैं, जहांसे वह बराबर ईरानके शियोंपर जहाद किया करता था। शाह तहमास्पने सेना भेजकर अबीवर्दको छीन लिया। दीन मुहम्मद इसपर सीधे कजवीन चला गया। वह साहसका पुतला था। शत्रुके हाथ मारे जानेका उसे कोई डर नहीं था। फिर शाहकी जाली चिट्ठी लाकर उसने अबीवर्दको खाली करवा लिया। फिर एक-एक करके किजिल-वाश (शिया) बादशाहके अनुयायियोंको मारा। तहमास्प उसे दंड देनेके लिये आया, तो दीन मुहम्मदने चालीस-पचास आदमियोंके साथ सीधे शाहके पास जा उसके दामन को चूमा। शाहने अपना एक हाथ उसकी गर्दनपर और दूसरा हाथ छातीपर रखकर देखा, उसकी साम चिन्तुन स्वाभाविक-सी चल रही है। इसपर उसने आश्चर्य करते हुये कहा—"जरूर यह (हृदय) पत्थरका है।"

फिर दीनूके सम्मानमे शाहने एक बडी दावत की और क्षमा करके अबीवर्द भी उसे प्रदान कर दिया।

बुखाराके खान उबैदुल्लाने मेर्वमे योलुम बीको अपना राज्यपाल नियुक्त किया था। लोगोने विद्रोह कर दिया, इसपर तीस हजार सेना लेकर उबैदुल्ला आया। योलुमने दीन मुहम्मदसे मदद मागी। दीन मुहम्मद अपने सवारोके साथ उस जगह पहुचा, जहापर मुरगाव नदी वालुका-राशिमे अन्तर्धान हो जाती। उसने अपने सवारोको दोनो वगलोमे वृक्षकी डालिया वाधकर धीरे-धीरे चलनेके लिये कहा। धूलसे आसमान छा गया। बुखारी सेना उसे देखकर डर गई। एक ओरसे दीन मुहम्मदकी भारी सेना और दूसरी तरफ योलुमकी फौज, दोनोके वीचमें पडकर मरनेकी जगह बुखारियोने घर लौट जाना ही अधिक पसन्द किया। दीन मुहम्मदने इस प्रकार मेर्वपर अधिकार करके अपनेको वहाका खान घोषित किया, और वही रहते चालीस वर्षकी उमरमें ६६०हि० (१८XII१५५२–८ XI १५५३ ई०) मे मरा। उसने अपने द्वितीय पुत्र अबुल मुहम्मदको अपना कलखान (युवराज) बनाया था, जो उसके बाद मेर्वकी गद्दीपर बैठा।

एक समय अबुल मुहम्मदके पुत्र जलालने खुरासानपर आक्रमण किया। प्रतिरोधके लिये ईरानियोने मशहदमे सेना जमा की। दोनो ओरकी सेनाओमे लडाई हुई, जिसमे अपने दस हजार उज्बेकोके साथ जलाल मारा गया। अबुल मुहम्मदको अपने इकलौते पुत्रके मारे जानेका भारी सदमा हुआ, जिसका इलाज हकीमोने दूसरा पुत्र प्राप्त करना बतलाया। मेर्वकी एक लोली (डोम या रोमनी) स्त्री बीबीजेह तम्बुरिन बजा और चित्र खीचकर जीविका कमाती थी। उसने व्याह नही किया था, किन्तु उसके पास चार सालका लडका था। उसी लडकेको लाकर घोषित कर दिया गया कि, यह अबुल मुहम्मदका लडका है। अबुल मुहम्मदने उसका नाम नूर मुहम्मद रखा। यही नूर मुहम्मद अबुलके मरनेके बाद मेर्वके गद्दीपर बैठा। कितने ही सालो बाद हाजिमके पुत्रोने यह कहते हुये उसपर आक्रमण किया—"हम लोली (वेश्या) के लडकेको नही मान सकते।" इसपर नूर मुहम्मदने बुखारावालोके पास सदेश भेजा—"मै तुम्हारी ओरसे राज्यपाल होनेके लिये तैयार हू।" अब्दुल्ला खानने आकर मेर्वको तो ले लिया, लेकिन साथ ही नूर मुहम्मदको अगूठा दिखला दिया। नूर अब उरगजमे हाजिमकी शरणमे गया। अवानेक-पुत्र अली सुल्तानको उरगज-हजारास्प-कातके अतिरिक्त निसा, अबीवर्द और तागबुई भी मिले थे। वहासे वह बसत और गर्मियोमें बरावर खुरासानपर आक्रमण करके पीलकुरुकी, तरशीज, तरवेत, जाम और खारकारमें लूट-मार मचाया करता था। अली सुल्तानसे नूर मुहम्मदसे जुरजान, जार्जरूम, कराइलू और अस्त्राबादको जीत लिया। अब उसके पास चालीस हजार सेना थी। वह अपने प्रत्येक उज्बेकको प्रतिवर्ष सोलह भेडें देता था, जिसके लिये तुर्कमानोसे कुछ कर लेता, कुछ ईरानकी लूटमेंसे, और एक पचमाश भाग अपने पाससे भी देता था। एक वार उसने ईरानियोकी पन्द्रह हजार सेनाको हराकर पाच हजार घोडे पकडे थे। ईरानको इन्ही चढाइयोमें ६७६ हि० (२६ VI १५६८–१७ V१५६६ ई०) मे अली सुल्तानके मारे जानेके वाद उसका पुत्र सजर निसामें उसका उत्तराधिकारी हुआ, किन्तु पच्चीस वर्षकी आयुमें ही निस्सतान मर गया। अली सुल्तानके मरनेपर हाजिम खानने वेजिरको अपने भाई मुहम्मद सुल्तानको दे दिया और स्वय जाकर उरगजमें रहने लगा। तुर्कीके सुल्तान—जो सुन्नियोका खलीफा भी था—का दूत मिलकर शियोपर हमला करनेकी प्रेरणा देनेके लिये हिन्दुस्तान गया था। अब वह उसी वातके लिये बुखारा आया। बुखारासे वह उरगज और मगिशलकके रास्ते जब लौट रहा था, उसी समय हाजिमके पुत्र मुहम्मद इब्राहीमने उरगजमे उसे लूट लिया और मुश्किलसे यात्रा भरके लिये थोडासा पैसा छोड दिया। बुखाराका खान अब्दुल्ला इसपर नाराज हो गया। उधर कास्पियनके पश्चिमी तटका इलाका शिरवान तुर्कीके सुल्तानके हाथमें था। अन्तर्वेदके व्यापरियोको उरगजसे आगे मगिशलक पहुच जहाजसे कास्पियन पार कर शिरवानके रास्ते यात्रा करनी पडती थी, क्योकि कास्पियनका दक्षिणी तट शियोके हाथमें था, जहा सुन्नी व्यापारियोके जान-मालकी खैरियत नही थी। उक्त घटनासे एक साल पहले हाजी किरतास एक बडे कारवा और मक्काके तीर्थयात्रियोके साथ उरगज पहुचा। उसे भी पुलाद सुल्तानके पुत्र वावा सुल्तानने लूटकर

बुखाराकी ओर खदेड दिया। नूर मुहम्मदने मेर्वको लेकर अब्दुल्लाके मनोरथको असफल कर दिया था, इसलिये अब्दुल्लाने बडी तैयारी की। हाजिम खान अपने उज्बेकोपर विश्वास नही करता था। वह अपने पुत्र मुहम्मद इब्राहीमके हाथमे उरगजको छोड अपने दूसरे पुत्र अरब मुहम्मद सुल्तानकी जागीरमे वेरून चला गया। बुखारी सेनाके आनेपर ख्वारेज्मी-उज्बेक खीवा और हजारास्प आदि नगरोको छोड वेजिर * भाग गये।

खीवासे निकला दो हजार परिवारोका विशाल गिरोह किसी उत्सवके जलूसकी तरह मालूम होता था। पातीसे खडा होनेमें उन्हे आधा दिन लगा था। उन्होने अपनी गाडियोपर घरकी मुर्गियो, चटाइयो और सभी चीजोको लटका रक्खा था। बुखारी सेनाने खीवापर अधिकार कर नागरिको-के साथ मित्रतापूर्ण घोषणा करके वेजिरका रास्ता पकडा। रास्तेमे उसने पुलाद सुल्तानके अनुचरोको तितर-बितर करते हुये उनका सामान लूट लिया। वेजिरमे आपसमे फूट थी, इसलिये वह शत्रुसे कैसे मुकाबिला करते? एक मासतक नगरका मुहासिरा रहा। बुखारी अब्दुल्ला खानने माग की थी—"मै केवल बाबा सुल्तानको दड देनेके लिये आया हू, तुम मेरे पास निर्भय चले आओ।" खान स्वय अब्दुल्लाके शिविरमे चला गया, और इस प्रकार आपसी फूटके कारण सारा ख्वारेज्म बिना एक भी प्रहारके अब्दुल्लाके हाथमे चला गया। अब्दुल्ला वहाके भिन्न-भिन्न शहरोमे अपने राज्यपाल नियुक्त करके १००२ हि० (१७ IX१५९३–१८ VIII १५९४ ई०) में बुखारा लौट गया। पीछे अपनी शपथकी कोई पर्वा न करके अब्दुल्लाने बीस-बाईस राजकुमारोको अक्सूमे डुबाकर मरवा दिया और लोगोके ऊपर भारी कर लगाया। हाजिम खान अपने बचे-खुचे सुल्तानोके साथ भागकर शाह अब्बास I के पास चला गया, और उसका पुत्र सुईउनिच मुहम्मद अपने दो पुत्रोके साथ काफिर शियोके पास जाना पसद न कर तुर्कीमें शरणार्थी हुआ। इस समय अब्दुल्लाका खूनखार पुत्र बलखका राज्यपाल अब्दुल मोमिन सफावियो (ईरानियो) से लड रहा था। ख्वारेज्ममें सेना कम रह गई थी, यह खबर पाकर हाजिमके पुत्र अरब मुहम्मदने चुपचाप अस्त्राबादके लिये प्रस्थान कर दिया। पीछे हाजिम भी आ पहुचा। तुर्कमान मदद करनेके लिये तैयार ही थे। इस प्रकार अरब मुहम्मदने १००४ हि०(६ XI १५९५–२७VII१५९६ ई०)मे कई शहरोको ले लिया। लेकिन जब अब्दुल्लाने भारी सेना भेजी, तो दुश्मन तितर-बितर हो गये। हाजिम अस्त्राबाद होते शाहके दरबारमे पहुचा। अब्दुल्लाको बाबा सुल्तानसे मुकाबिला करनेके लिये हजारास्पका चार मासतक मुहासिरा करना पडा। अन्तमे बाबा सुल्तान पकडकर मारा गया और ख्वारेज्मपर फिर बुखाराका शासन स्थापित हो गया।

१००५ हि० (२५ VIII १५९६–१६ VII १५९७ ई०)मे अब्दुल्लाके मरनेपर शाहने स्वय सेना लेकर खोरासानपर चढाई की, और हाजिम तथा उसके पुत्र अरब मुहम्मदको ख्वारेज्म जानेके लिये आदेश दिया। हाजिम उस समय पद्रह आदमियोके साथ कुरेन पहाड़में एक तेके कबीलेके डेरेमें था। अब्दुल्लाके बाद उसके उत्तराधिकारी अब्दुल् मोमिनके भी कत्लकी खबर सुनकर वह आठ दिनमें चलकर उरगज पहुच गया, और उसका शासन फिरसे ख्वारेज्मपर स्थापित हो गया। उसने अपने पुत्र अरब मुहम्मदको खीवा और कात दिया, पौत्र इसफन्दियारको हजारास्प, और अपने लिये उरगज तथा वेजिरको रक्खा। जिन उज्बेकोको जबर्दस्ती बुखारा ले जाया गया था, वह भी लौट आये। इसी समय नूर मुहम्मद भी ईरानसे अपनी पुरानी जागीरमें लौट आया था। नूर मुहम्मद उज्बेकोको सताता और तुर्कमानो तथा सरतोका पक्षपात करता था। यह खबर सुन शाह अब्बासने एक मासके मुहासिरेके बाद मेर्वको उससे छीन लिया। अबीवर्द, निसा और देरून भी शाहके हाथमे चले गये, जहापर उसने अपने राज्यपाल नियुक्त किये। नूर मुहम्मदको वह पकडकर अपने साथ ईरान ले गया, जहा वह बन्दीखानेमे मरा।

---

* बर्तोल्दके अनुसार इसका ध्वसावशेष उस्तउर्तकी अधित्यकामे चिकके नजदीकका देवकेसकेन है, अथवा कुन्या-उरगजके दक्षिण-पश्चिम २४ मीलपर अवस्थित शेखानका ध्वसावशेष है, जो वक्षु-कास्पियन नहरके बननेकी प्रतीक्षामे सोया हुआ है।

हाजिम मुहम्मद १०११ हि० (२१ VI १६०२–१२ V १६०३ ई०) में मरा।

जेन्किन्सनकी यात्रा—हाजिम मुहम्मदके शासनकालमे अग्रेज व्यापारी जेन्किन्सन खीवासे गुजरा था। उसके यात्रा-विवरणसे उस समयकी बहुतसी बातोपर प्रकाश पडता है। जेन्किन्सनने १३ अप्रैल १५५८ ई०को अपने मालके साथ मास्को छोडा और १४ जुलाईको वह अस्त्राखान पहुचा। अपने मालके ढोनेके लिये वहा उसने बनी-बनाई नाव खरीदी, और कास्पियन समुद्रके उत्तरी तटसे होते यायिक (उराल) और यम्बा नदियोके मुहानोको बाई ओर छोडते वह २७ अगस्तको मगिशलकमे उतरा। उसके साथ और भी कितने ही ईरानी तथा तातार व्यापारी अपनी नावोमे चल रहे थे। मगिशलकके राज्यपालने ऊटोका इन्तिजाम कर दिया। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि उसे काफी भेंट-पूजा देनी पडी। जेन्किन्सन अब अपना माल ले स्थल-मार्गसे वेजिर पहुचा। वह लिखता है—लोग बडे नोचनेवाले हैं। मुझे प्रत्येक ऊटके लिये तीन रूमी चमडे और चार लकडीके वर्त्तन देने पडे, राज्यपालको अलग नौ चमडे और चौदह दूसरी चीजें भेंट देनी पडी। जिस कारवामे जेन्किन्सन चल रहा था, उसमे हजार ऊट थे। पाच दिनकी यात्राके बाद वह मगिशलकके उस इलाकेपर पहुचा, जिसपर तेमूर सुल्तानका अधिकार था। सुल्तानने बडा अच्छा बर्ताव किया और जेन्किन्सनको मास और घोडीका दूध दिया। उसने उससे पद्रह रूबलकी चीजे ली, लेकिन उसके बदलेमें एक घोडा इनाम दे अपने तम्बूमे अग्रेज व्यापारीकी जियाफत भी की। वहासे रेगिस्तानके भीतर बीस दिनका रास्ता चलना पडा। खानेके लिये एक घोडा और एक ऊट मारना पडा। पानी कभी दो दिनपर मिलता था, सो भी खारा-सा। अब कारवा कास्पियनकी एक खाडीपर पहुचा, जहाके तुर्कमान सरदारने धमकाकर पैसा वसूल किया। जेन्किन्सन लिखता है कि, इस समय (१५५८ ई०) वक्षु (आमू-दरिया) यहीपर कास्पियन-समुद्रमें गिरती है।

६ अक्तूबरको रवाना होकर तीन दिनकी यात्राके बाद वह शहर वेजिर (सेलीजर) में पहुचा। अजीम (हाजिम) खान अपने तीन भाइयोके साथ यही रहता था। जेन्किन्सनने ६ अक्तूबर (१५५८ ई०) को खानसे भेंट की, और भेटके अतिरिक्त रूसके जारका पत्र भी उसे दिया। खानने घोडेके मास और दूधसे दावत कर, रास्तेके लिये सुरक्षा-पत्र भी दिया। वेजिरका दुर्ग एक ऊचे पहाडपर था। खानका घर बहुत ऊबड-खाबड और दुर्बल मिट्टीका था। लोग बहुत गरीब थे। दक्षिण का इलाका अधिक उर्वर था। उसने लिखा है—"यहा एक बढिया फल दोनी (तरबूजा) होता है, जो बहुत बडा और उसमें पानी भरा होता है। लोग खानेके बाद पेयकी जगह इसे खाते है। एक और भी फल है, जिसे खरबूजा कहते है, और वह खीरेके जैसा बडा पीले रंगका तथा मीठा होता है। एक और भी अनाज जेगुर (बाजरा) होता है, जिसके डठल वेतकी तरह ऊचे होते है और उसके सिरेपर चावलकी तरह दोनोके गुच्छे लगते है, मानो छोहारोके लच्छे है। सिचाईके लिये वक्षुमे इतना पानी ले लिया गया है, कि नदी अब कास्पियनतक नही पहुचती।"

वेजिरसे दो दिन चलनेके बाद जेन्किन्सन उरगंज पहुचा। यहा भी कर देना पडा। जेन्किन्सनने हाजिमके भाई अली सुल्तानसे भेंट की, जिसने गृहयुद्ध करते सात वर्षोमें चार शहर लिये और खोये। युद्धके कारण यहा बहुत कम व्यापारी आते थे, इसलिये मालकी बिक्री अच्छी नही थी। जेन्किन्सन केवल चार केरसियोको वेच सका। यहासे कास्पियनतकका प्रदेश तुर्कमानोका देश कहा जाता था, और शासक थे हाजिम खान और उसके भाई। "जो भिन्न-भिन्न माताओ और कुछ दासियोंके पुत्र होनेसे एक-दूसरेसे ईर्ष्या करते, एक-दूसरेको खतम करनेकी कोशिश करते हैं।" आपसके युद्धमें उनमेंसे हारकर कोई बच निकलता, तो आमतौरसे साथ ही उसके अनुचर भी रेगिस्तानमें चले जाते, और रास्तेके पानी लेनेके पडावोपर छापा मारते। इसी प्रकार वह कारवाको लूटते रहते, जबतक कि फिर वह घरेलू सघर्षके लिये अपनेको काफी मजबूत न कर लेते।

उरगज छोडकर वक्षुके किनारे-किनारे सौ मील चलनेपर जेन्किन्सन एक स्थानपर पहुचा, जिसको वह आरदोक कहता है—यहा तेज प्रवाहवाली धारा थी, जो कि वक्षुको छोडनेके बाद हजार मीलपर उत्तरमे जा भूमिमे विलीन हो जाती है, फिर प्रकट होकर खिताई समुद्रमें जाकर

मिलती हैं। आगे जेन्किन्सनको कात नगर मिला। वहाके लोग हाजिमके भाई सरामेत सुल्तानकी प्रजा थे। जेन्किन्सनने सुल्तानको अपने प्रत्येक ऊट मालके लिये एक रूसी लाल चमडा और दूसरे कर दिये। सुल्तानने उसके साथ प्रतिरक्षी भेज दिये। "प्रतिरक्षी भी खाऊमल थे। तीन दिन जानेके बाद उन्होने और आगे जानेके लिये भारी रकम मागी और न देनेपर वह लौट गये। फिर कार्वाके खोजे (स्वामी) वहीं मुकाम करनेपर जोर देकर भेडकी पसलीकी हड्डीसे शुभाशुभ सगुन विचारने लगे। वह इस हड्डीको जलाकर उसकी राखकी स्याही बनाकर कुछ अक्षर लिख रहे थे। इसी समय एक निर्वासित राजकुमारने अपने कुछ अनुयायियोके साथ जबर्दस्त आक्रमण किया, लेकिन व्यापरियोने भी उसका मुकाबिला किया।" जेन्किन्सनके पास कुछ बन्दूकें थी, जिन्होने इस समय बडा काम दिया। लोगोने अपने पशुओ और सन्दूकोका मोर्चा बना लिया, और उसके पीछेसे गोलिया दागी जाने लगीं। रातके वक्तमे डाकू सुल्तानने सदेश भेजा, कि हम मुसलमानोको छोड देगे, यदि तुम अपने क्रिस्तान साथियोको हमारे हाथमे दे दो। लेकिन उसका कोई फल नही हुआ अन्तमें कुछ भेट और एक ऊट देकर जान छुडानी पडी। यात्री फिर वहासे बुखारा गये। जब व्यापार करके जेन्किन्सन उरगज लौटा, तो रूसके जारके पास जानेवाले हाजिम खानके चार दूत भी उसके साथ हो लिये। १५६५ ई०मे जार फ्योदरके पास खीवासे नये राजदूत भेजे गये थे।

११. अरब मुहम्मद, हाजिम-पुत्र (१६०२–२१ ई०)

अरब मुहम्मद जहागीरका समकालीन था। इसने अपने पुत्र अस्फन्दयारको हजारास्पकी जगह कातका इलाका दिया। कुछ समय बाद १६०२ ई०मे यायिक-तटनिवासी हजार रूसी कसाकोने आकर उरगजको लूटा और हजारसे अधिक नागरिकोको मार डाला। वह लूटे मालको हजार गाडियोपर ले चले। अरब मुहम्मदने उनके रास्तेको काट दिया, जिससे कसाक रेगिस्तानमे भटक गये, जहा पानीके अभावके कारण उन्होने पशुओका खून पी प्यास बुझाई। पाच दिनतक उन्हें खून भी नही मिला और ऊपरसे उज्बेक चारो ओरसे आक्रमण कर रहे थे। एक बार उज्बेक पीछेसे उनकी गाडियोके मोर्चेके भीतर घुस गये और उन्हे टुकडे-टुकडे कर डालनेमे सफल हुये। सिर्फ एक सौ कसाक किसी तरह बचकर अरालके किनारे पहुचे। उन्होने तूकके किलेके पास अपना किला बनाया और कुछ समयतक वह मछली खाकर जीते रहे। अन्तमे अरब मुहम्मदने उनके किलेको दखल कर लिया।

पूर्वसे कलमक-मगोल अरालकी ओर पैर फैलाते हुये अब यहा भी आकर आक्रमण करने लगे। वह खोजाकुल और शेख जलील पर्वतके बीचमे पहुचकर तूकतक उज्बेक डेरोको लूटकर बूरीचीके रास्ते लौट गये। अरब मुहम्मदने पीछा करके माल और बदियोको छुडा लिया, लेकिन कलमक हाथ नही आये। कुछ समय बाद नेमन कबीलेवालोने इलबर्स खानकी सतान खुसरो सुल्तानको अपना खान बननेके लिये बुलाया, जिसने षड्यत्र किया, लेकिन परदा खुल जानेपर खुसरो और षड्यत्री नेता मारे गये। दो साल बाद फिर षड्यत्र हुआ। इसके दस साल बाद (१६१५ई०) कलमकोने आकर बडी लूट-मार मचाई। सोलह साल राज्य करनेके बाद १६१८ ई०मे हबश इलबर्सके दो सोलह और चौदह सालके पुत्र अरब मुहम्मदसे विद्रोह कर खीवासे उरगजपर चढ आये। छोकरे भला इतनी हिम्मत कैसे करते, असलमे यह काम उनके अनचरोका था, जिनकी सख्या लूटकी लालचसे बहुत बढ गई थी।

खीवाके खानोमे इस तरहका विद्रोह और वशोच्छेद असाधारण घटना नही समझी जाती थी, यह हम देख चुके है।

१०१३ हि० (३० V १६०४–२० IV १६०५ ई०)मे (इतिहासकार अबुलगाजीके जन्मके एक साल पहले) अरब मुहम्मदने एक नहर खुदवाई, जो तूक, उरगज होती अराल समुद्रमे गिरती थी। तुला (अक्तूबर-नवम्बर)मासके आते ही इस नहर को बन्द कर दिया जाता, और फसलके कट जानेपर फिर खोल दिया जाता था। कुछ सालो बाद यह एक तीरकी मारसे अधिक चौडी कर दी गई।

इस नहरके कारण खेतीको इतना फायदा हुआ, कि गेहू बहुत सस्ता हो गया। सारे इलाकेमे गेहूकी फसल खडी दिखलाई पडती थी। दोनो खान-पुत्रोने अन्न-भडारोको खोलकर अनाजको गरीबोमे बाटना शुरू किया। अन्तमें उन्हे वेजिर शहर और उस इलाकेमें रहनेवाले तुर्कमानोको देकर समझौता किया गया। दोनो चार हजार अनुयायियोके साथ बापसे मिलकर वेजिरमे जा पाच साल तक शातिपूर्वक रहे। छठे साल (१६२० ई०) जब खान उरगजमे था, उसी समय इलवर्सने आक्रमण करके खीवा ले अपने पाच सौ आदमियोको भेजकर बापको भी बन्दी बना लिया। खजाना लूटकर उसने "कुत्तो और चिडियोमे बिखेर दिया, और बेगोको निकाल बाहर किया।" इसके बाद वह वेजिर लौट गया। अब अस्फन्दयार और अबुलगाजी (प्रसिद्ध इतिहासकार) बापके सहायक बन गये, और दोनोने मिलकर इलवर्स सुल्तानके ऊपर आक्रमण किया। इलवर्स किर (उश्त-उर्त)की ओर भागा, और उसका माल-असबाब लूट लिया गया। अबुलगाजीने बापको बहुत समझाया, कि विद्रोहियोको इसी वक्त नष्ट कर देना चाहिये, लेकिन बापका सलाहकार अतालीक हुसेन हाजी भीतरसे विद्रोहियोके पक्षमे था। उसने वैसा नही होने दिया। अस्फन्दयार भी बहुत आगे बढना नही चाहता था। हबश और इलवर्स दोनो अबुलगाजीके भारी शत्रु थे। इस अपूर्ण अभियानके बाद अरब मुहम्मद खान खीवा लौटा, अस्फन्दयार हजारास्प गया और अबुलगाजीको कात मिला। पाच महीने-बाद अब खानको अक्ल आई, और उसने अपने पुत्रोको खुले तौरसे आक्रमण करके दड देना चाहा। अली सुल्तानकी खुदवाई नहर तस्ली-यामिशके तटपर लडाई हुई। खान हारकर बदी बना। हबशने बापको अधा कर तीन बीबियो और दो छोटे पुत्रोके साथ उसे छोड दिया। अब हबश अस्फन्दयारके पीछे पडा। अबुलगाजी डरके मारे कात होने बुखारा भाग गया। अस्फन्दयार अपने दूसरे दो भाइयो शरीफ और ख्वारेज्मशाहके साथ हजारास्पमे किलाबन्द हो गया—यह १०३० हि० (२६ XI १६२०–१७ X १६२१ ई०)की बात है। चालीस दिनके मुहासिरेके बाद दोनो पक्षोमे समझौता हुआ—अस्फन्दयार मक्का चला जाये, शरीफ मुहम्मदको कात मिले और ख्वारेज्मशाह तथा अफगान दोनो छोटे भाई बाप-माके साथ खीवामे रहे। अगले साल (१६२२ ई०) इलवर्सने बाप, अपने भाई ख्वारेज्मशाह और अस्फन्दयारके दो पुत्रोको मरवा डाला और दूसरे भाई अफगानको मरवानेके लिये हबशके पास भेज दिया—लेकिन हबशने उसे रूस भेज दिया, जहा वह १६४८ ई०मे मरा। हाजिम सुल्तानकी लडकी अलतून खानिम—अफगानकी विधवा—ने कासिमोफमें अपनी बनवाई तकियामे पतिके शवको दफनाया।

१२. इस्फन्दयार, (अस्फ०) अरब-पुत्र (१६२२–४२ ई०)

यह शाहजहाका समकालीन था। ख्वारेज्ममे तुर्क और सरत दो जातिया बसती थी। सरत पुराने बाशिन्दे ईरानी जातिके थे, और तुर्क जातिमे तुर्कमान पुराने कगलियो या गूजोकी सतान थे, जिनका सलजूको और उसमानअली तुर्कोसे निकटका सम्बन्ध था। उज्बेक वहा मुहम्मद शैबानीके साथ आये थे। सरतोका शासन उठे युग बीत गये थे, लेकिन तुर्कमानोके पूर्वज सलजूक बहुत दिनोसे इस भूमिके शासक थे, इसलिये वह अब भी अपनेको स्वामी समझते थे। इसीलिये उनसे तथा नये स्वामी उज्बेकोसे बराबर सघर्ष होता रहता था। यदि खान तुर्कमानोका पक्ष करता, तो उज्बेक नाराज होते, उज्बेकोका करता, तो तुर्कमान शत्रु बन जाते। अरब मुहम्मदने यही गलती की थी, कि उसने दोनोको सभालकर नही रक्खा। बापकी पराजयके बाद अस्फन्दयार शाह अब्बासके पास ईरान भाग गया और उससे सहायता लेकर देरून और बलखान पर्वतको लेनेमें सफल हुआ। यही तेके, सारिक और यामूत तुर्कमान कबीलोके तीन सौ जवान उससे आ मिले। उसने रातके वक्त वक्षु-तटपर तूक किलेके सामने पडे हबशके डेरेपर छापा मारा। लेकिन हबश प्राण बचाकर इलवर्सके पास जानेमे सफल हुआ। इलाकोका फिरसे बटवारा हुआ, जिसमे हबशको उरगज और वेजिर (वजीर) और इलवर्सको खीवा-हजारास्प मिला। शरीफ और अबुलगाजीके अनुचरोने भी मदद दी थी, किन्तु हारकर अस्फन्दयारको मगिशलक भागना पडा। अपने सहायक तीन हजार

तुर्कमानोको लेकर फिर वह उरगज पहुंचा, जहा बीस दिनतक लडाई होती रही। इलवर्स अन्तमे पकडकर मार डाला गया। हबश पहले कराकल्पकोमें भागा, फिर यम्बाके नोगाइयोमे पहुचा, जिन्होने उसे पकडकर अस्फन्दयारके पास भेज दिया और उसने भाईके खूनसे हाथ रग लिया। अस्फन्दयार उज्बेकोके विरुद्ध तथा सरतो और तुर्कमानोका पक्षपाती था। सरतोसे लडाईमे मदद नही मिल सकती थी, किन्तु बडे-बडे धनी व्यापारी इन्हीमे थे, जिनसे धनकी बडी मदद मिलती थी।

१३ अबुलगाजी, अरब-पुत्र (१६४३–६३ ई०)

प्रसिद्ध इतिहास-लेखक अबुलगाजी १०१४ हि० (१६ V १६०६–६ IV १६०५ ई०)में पैदा हुआ था। उसके बाप अरब मुहम्मद खानने उसी साल उरालके काफिर कसाक-रूसियोको हराया था, इसीलिये बच्चेका नाम अबुल-गाजी (काफिरोसे लडनेवाला) रक्खा गया। इलवर्सके साथ बापकी लडाईमे वह दक्षिणपक्षका कमाडर था, जिसमे एकके बाद एक उसके तीन घोडे मारे गये। बापकी हार होनेपर वह एक अनुचरके साथ भाग निकला। शत्रु उसका पीछा कर रहे थे। आकर एक बाण मुहमें लगा, जिससे जबडेकी हड्डी टूट गई। लेकिन वक्षु-तटके घने फराम (झाऊ)के जगलोमे वह छिपनेमे सफल हुआ। फिर अपने कवच और हथियारोको फेककर घोडेपर नदीमे कूद पडा। प्यासा घोडा पानी पीनेके लिये जरा रुकना चाहता था, लेकिन पीछा करनेवाले शत्रु बाण छोड रहे थे। कोडा नही था, कि घोडेको मारकर आगे बढाये। घावके कारण मुहमे खून भरा हुआ था, अपने भारी कवचके कारण घोडा पानीमे डूबने लगा और नाक-कान ही थोडे-थोडे बाहर निकले हुये थे। इसी समय अबुलगाजीको बूढे सैनिककी बात याद आई—"चारजामेसे उतर एक पैरको रिकाबमें और दूसरेको घोडेकी पूछपर डाल चारजामेके पिछले छोरको एक हाथसे पकडे—दूसरे हाथसे लगामका इशारा करते चले, तो पानीमे भी बोझ हलका करनेमे सहारा मिलता है।" उसने ऐसा ही किया और वह सहीसलामत नदी पार हो गया। वह कात पहुचा। वहासे कितने ही आदमी, नये घोडे और रसद ले वह समरकन्द पहुचा, जहा इमामकुली खानने उसका अच्छा स्वागत किया। इसके दो साल बाद भाई अस्फन्दयार खान घोषित हुआ। अबुलगाजी और शरीफ फिर देश लौट आये। अबुलगाजीको उरगज और शरीफको वैजीरके इलाके मिले। अस्फन्दयारने अपने पास खीवा, हजारास्प और कातको रक्खा। लेकिन देरतक शाति कहा रह सकती थी? जल्दी ही भाइयोमें फिर झगडा उठा। अस्फन्दयार सरतो और तुर्कमानोका पक्षपाती था, और उसके दोनो भाई उज्बेकोके। फसल कट जानेके बाद १६२४ ई०मे अबुलगाजी अस्फन्दयारसे मिलने खीवा गया। तीन दिन रहनेके बाद थोडे कम लिये थे, इसी समय खानने हुक्म दिया, कि सभी नेमनो और उइगुरोको कत्ल कर दिया जाय। बातकी बातमे सौ उज्बेक मार डाले गये। इतना ही नही हजारास्प और रुस्तमीनारेसीमें डेरा डाले सभी खानभक्त उज्बेक बूढे-बच्चोतक मार डाले गये, किसी नैमन और उइगुरको जीता नही छोडा गया। शरीफको इन दोनो कबीलोंको कत्ल करनेके लिये उरगज भेजा गया, और अबुल-गाजीको मार डालनेकी गरजसे खीवामे रोक लिया गया। इसी समय उज्बेकोने धमकी दी, कि यदि अबुलगाजीको नही छोडा गया, तो हम राज्य छोडकर चले जायेंगे। छोड दिये जानेपर अबुलगाजीने उरगज पहुचकर उसे जनशून्य-सा पाया। वक्षु नदी पहले पाससे बहती थी, अब उसने अपनी पुरानी धार छोडकर नई धारा पकड ली थी। अबुलगाजी तूकके किलेमें ठहरा, जहा शरीफ भी उससे आ मिला। दोनो भाइयोके आसपास भारी सख्यामें उज्बेक जमा हो गये। उन्होने तुर्कमानोपर आक्रमण करनेका विचार किया, लेकिन इसका पता तुर्कमानबेक मुहम्मद हुसेनको लग गया, और वह अपने अनुयायियोंके साथ अस्फन्दयारके पास चला गया। अब दोनो भाई उज्बेकोको लिये खीवापर चढे। ख्वाईवानाक नहरके ऊपर बने ताशकुपुरुक (पाषाणपुल)पर कितने ही भूखसे अधमरे तुर्कमान मिले, जिन्हें उन्होने मार डाला। लेकिन इसी समय कल्मक-मगोल उनके ऊपर आ पडे और वह कितने ही उज्बेकोको पकड ले गये। कल्मकोका आतक इतना छाया हुआ था, कि अबुलगाजीके कितने ही सहायक साथ छोड गये। खीवाके तुर्कमानोको हिम्मत और मदद मिल गई। उन्होने चश्मीके पास

छ दिनतक युद्ध किया, लेकिन कोई फैसला नही हुआ, इसपर घर लौट जानेकी सलाह हुई। इसी समय अस्फन्दयारने तुर्कमानोको वढावा दिया। यद्यपि तुर्कमानोकी सख्या उज्वेकोसे दसगुनी थी, लेकिन तो भी युद्धका परिणाम अनिश्चित ही रहा। अस्फन्दयारने गर्मिया खीवामें बिताई, अबुलगाजी और शरीफ उरगजमे रहे। १६२८-२९ ई०मे एक पुच्छलतारा निकल रहा था, जिसे भारी असगुन माना जाता था। उज्वेकोमेंसे कुछ अन्तर्वेदकी ओर भाग गये और कुछ तुर्किस्तानमे, इस प्रकार उनके निम्न तीन वडे-वडे भाग हुये—(१) वुखाराकी ओर जानेवाले, (२) मगीतो (नोगाइयो)मे जानेवाले, (३) कजाकोमे जानेवाले। अबुलगाजी उज्वेकोके उस गिरोहके साथ था, जो कजाकोकी भूमिमें गया और शरीफ बुखारावालोके साथ। तीन साल वाद (१६३१-३२ ई०) उनमेंसे दो हजार परिवार फिर ख्वारेज्म लौट आये, जिनमे आठ सौ वुखारावाले परिवार भी आकर मिल गये। अब यह लोग अरालमें सिरके गिरनेवाले इलाकेमे पशुचारण करने लगे। अस्फन्दयारने उन्हे चैनसे नही रहने दिया और आक्रमण करके उनका नाम-निशान मिटा दिया।

अबुलगाजी कजाकखान इशिमके पास जाकर रहने लगा। वहा उसका परिचय राजकुमार तुरसुनसे हुआ, जिसके साथ वह दो साल ताशकन्दमे जाकर रहा। इशिमने तुरसुनको उसी समय मार डाला, लेकिन अबुलगाजीको इमामकुल्लीके पास बुखारा जाने दिया। यहा उसे अस्फन्दयारके अत्याचारोसे ऊव गये ख्वारेज्मी तुर्कमानोका निमत्रण मिला और वह खीवा पहुचा। अस्फन्दयार हजारास्प लौट गया था। इसी वीच शरीफ भी अबुलगाजीसे आ मिला और दोनोने मिलकर अस्फन्दयारपर आक्रमण करके उसे हरा दिया। लेकिन इतनेसे सघर्ष खतम नही हुआ। फिर कितनी ही लडाइया और लूटपाट होती रही। एक बार अबुलगाजीको खुरासानमें वेगलरवेगने पकडकर हमदानमे शाह अव्वास I के पौत्र शाह शफीके पास भेज दिया, जिसने उसे अस्पहानमें नजरबन्द कर दिया—अबुलगाजीको दस हजार तका पेंशन और रहनेके लिये मकान मिला था। १६३०-४० ई०तक अबुलगाजी इस तरह ईरानमें बदी रहा। उसने धीरे-धीरे आठ घोडे खरीदकर भिन्न-भिन्न जगहोमें छिपा रक्खे। यही उसके कुछ विश्वासपात्र नौकर भी आ मिले। अबुलगाजी स्वय एक नौकर-का साईस वना। घोडे तैयार कर लिये गये थे। नगाडखानेमे जिस वक्त मध्य-रात्रिका नगाडा वज रहा था, उसी वक्त वह सडकसे होकर निकल पडा। द्वारपर पहुचकर उसने चिल्लाकर कहा—"खोलो दरवाजा"। दरवाजा खुल गया और अबुलगाजी अपने साथियोके साथ चलता बना। बोस्तामके पास जव वह एक कब्रिस्तानसे गुजर रहा था, तो वहा कोई मुर्दा दफन किया जा रहा था। अबुलगाजीने वही एक गरीब सैयदसे बातचीत करके रसद तथा तीन घोडोके बदलनेका प्रबन्ध किया। गलतीसे उसने मग्जका रास्ता पूछ लिया, जिससे लोगोको सदेह हो गया, कि यह भगोडे उज्वेक कैदी हैं। प्रत्युत्पन्नमति अबुलगाजीने झट वहाना कर दिया, कि हम शाहके चिरकासी मुहम्मद कुल्लीबेग है—और एक प्रसिद्ध मुल्ला—से मिलने जा रहे हैं। इस तरह चिरकासी मुहम्मद कुल्लीबेग बनकर अबुल गाजीकी जान बची। आगे जाकर जब वह रेगिस्तानके छोरपर पहुचे, तो मगिशलकके कितने ही भगोडे तुर्कमान आ मिले। उनसे मालूम हुआ, कि वोल्गाकी ओरके कलमकोने आक्रमण किया था, वह वहुतसे पशुओको लूट ले गये। अबुलगाजीने अपना परिचय दिया। तुर्कमानोने उसे अपने पास जाडा वितानेके लिये निमन्त्रित किया। जाडोके बाद वसतमे अबुलगाजीको तेक्के (तुर्कमान) कवीले—जो कास्पियनके पूर्वी तटके पासके वलखान पहाडमें रहते थे—के पास जानेको कहा। वहा जाकर अबुलगाजीने दो साल बिताये। फिर वह मगिशलक पहुचा, जो कि अब कलमकोके अधीन था। कलमक सरदारको जब वात मालूम हुई, तो उसने अबुलगाजीको वुलाकर सालभर नजरवन्द रक्खा। अन्तमे १६४२ ई०मे वह उरगज लौटनेमे सफल हुआ। इसके छ महीने वाद अस्फन्दयार मर गया, शरीफ मुहम्मद दो साल पहले ही मर चुका था, इसलिये ख्वारेज्मकी गद्दी अब अबुलगाजी वहादुरके लिये हाजिर थी।

जहा खूनखरावी और लूट-मारको खेल समझा जाता हो, और हर एक वातका फैसला केवल तलवारसे किया जाता हो, वहा जीवन कैसे व्यवस्थित रह सकता है? आश्चर्य तो यह है, कि इतनी

मारकाट रहनेपर भी रूसके साथ होनेवाला व्यापार अब भी बन्द नही था। व्यापार सचमुच ही बडी-बडी लडाइयोंके भीतरसे भी अपना रास्ता निकाल लेता है। दोनो लडनेवाले सरदार भेंट-पूजा लेकर व्यापारीका रास्ता छोड देते है। ख्वारेज्ममे बडी अशान्ति थी, जब कि अस्फन्दयारकी मौतके सालभर बाद अबुलगाजी अरालके उसी इलाकेमें खान घोषित हुआ, जहापर वक्षु अराल-समुद्रमे गिरती है। इस इलाकेमे प्राय सारे ही उज्बेक बसते थे। ख्वारेज्मके बाकी भागोंमें अस्फन्दयारके दो पुत्रो युशन और अशरफके अनुयायी तुर्कमान रहते थे। खुतबा उस समय बुखाराके खान नादिर महम्मदके नामसे पढा जाता था, जिसके पास अशरफ जामिनके तौरपर रहता था। अबुलगाजीने दो बार चढाई करके खीवाके उपनगरको लूटा। नादिर मुहम्मदने खीवा और हजारास्पमे अपने राज्यपाल नियुक्त किये थे और अस्फन्दयारकी विधवाको उसके एक पुत्र और कन्याके साथ करशीमे रहनेके लिये भेज दिया था। बुखारी राज्यपाल वस्तुत सैनिक कमाडर था, नागरिक शासन अस्फन्दयारद्वारा नियुक्त तुर्कमान अमलोंके हाथमे था। इसी समय बुखाराने खानका पौत्र तथा खुसरो सुल्तानका पुत्र कासिम सुल्तान निगरानीके लिये ख्वारेज्म आया, किन्तु वह तुर्कमान अमलोंसे छेडखानी नही करता था। कासिमके आनेकी खबर सुनकर अबुलगाजीने और सेना जमाकर खीवापर चढाई की। बुखारी सेना बहुत अधिक थी, जिससे लडनेके लिये अबुलगाजीकी सेना कई टुकडियोंमें बट गई। खीवाके हजार सैनिकोमे आठ सौ कवच-शिरस्त्राणमे इस तरह ढकेहुये थे, कि उनकी सिर्फ आखें दिखलाई पडती थी। अबुलगाजीके आदमियोंमेंसे केवल पाच कवचधारी थे। लेकिन अबुलगाजीने बहुत अच्छी तरहसे व्यूह-रचना की। लडाईका फैसला होनेसे पहले ही याकूब तुपितको भेजकर कासिमको बुखारा बुला लिया गया। थोडे समय बाद नादिर स्वय बुखाराका खान नही रहा और उसके बेटो (अमीरो) ने उसके बेटे अब्दुल अजीजको तख्तपर बैठाया। खीवामे नियुक्त बुखारी सेना भी अब भाग गई और १६४४ ई०मे अराल-तटसे आकर अबुलगाजीने खीवापर अधिकार कर लिया। अबुलगाजीने सार्वजनिक क्षमादानकी घोषणा करतेहुये भगोडे तुर्कमानोको लौटनेके लिये कहा। भगोडे तुर्कमानोंके सरदार गुलाम बहादुर, दीन मुहम्मद, उतउतबेगी और उरुसबेगीने हजारास्पके पासके रेगिस्तानमें डेरा डालकर अपने अक-सक्कालो (जेठो)को भेज आत्म-समर्पण किया। खानके वचन देकर बुलानेपर वह आये थे, लेकिन जियाफतमे खाना शुरू करनेके समय ही अबुलगाजीके हुक्मसे उनका कत्लेआम शुरू हुआ। तुर्कमान भारी सख्यामें मारे गये, माल-असबाब लूट लिया गया और उनके बीबी-बच्चे दास बना दिये गये। इस हत्याकाडके बाद अबुलगाजी खीवा लौटा, और थोडे समय बाद उसने तेयेनमे तुर्कमानोंके एक दूसरे समूहपर आक्रमण करके उन्हें लूटा-मारा। यही खीवा और बलखके भगोडोने बामे-दुनियामे पनाह लेनेके लिये एक पत्थरका किला बनाया था। उन्होने अपने परिवारको कराकुम्नी भेज दिया। उनपर भी आक्रमण करके अबुलगाजीने एक-एक आदमीको मार डाला, और लगे हाथो कराकुम्नीमें पडे उनके डेरोको भी लूट लिया। लेकिन मगोल कोंरोत (कल्मक) ख्वारेज्मके लिये अब एक भारी समस्या हो उठे थे। १६४८ ई०में अबुलगाजीने उन्हे हराया, तो भी व्यापार करनेके लिये आये तोरगुत (मगोल) सरदार वायनको सुरक्षित घर जाने दिया। १६५१ ई०में अबुलगाजी उनके सरदारके साथ वैराज तुर्कमानोको नष्ट कर औरतो-बच्चोको पकड ले गया। अगले साल तूजके अमीरो और सारिक तुर्कमानोकी बारी आई, इसी साल तोरगुत (वोल्गा) कल्मकोने हजारास्पके पास लूट-मार की, जिन्हें अबुलगाजीने भगाकर बहुत दूरतक पीछा किया।

इस प्रकार कुछ सालोंकी सरगरमीके बाद अबुलगाजीने सभी तुर्कमानोंको दबाकर कितने ही समय तक शान्तिपूर्वक राज्य किया। १०४६ हि० (५ VI १६३६–२६ VI १६३७ ई०)मे उसके भाई शरीफके दामाद सुभानकुल्लीने अपने भाई अब्दुल अजीज खान (बुखारा)के खिलाफ मदद मागी। बत्तीस ख्वारेज्मी कुमारोंके खूनका बदला लेनेका यह अच्छा मौका था। अबुलगाजीने मदद दी और उसके सेनापति बेककुली इरनेकने करायुलके इलाकेको लूट-मारकर उजाड दिया और वह बुखाराके पासके गाव सुइदनिचवालातक जाकर कर्केदेनिक लौट आया। फिर उसी साल बुखारी सेनाको

हराकर कराकुलको जला चारजूयके इलाकेको भी उसने वरवाद किया। कुछ महीने वाद (१६५४-५५ ई०) वह याइजी इलाकेको नेरेजेमतक लूटते कराकुल होने भारी सख्यामे युद्धवदियोको लिये खीवा लौटा। यह सब देखते हुये भी अब्दुल अजीज खानको सामने आनेकी हिम्मत नही हुई। १०६५ हि० (११ XI १६५४–२ X १६५५ ई०) मे ही ख्वारेज्मियोने करमीनापर अधिकार करके लूटा। इन लडाइयोमें अबुलगाजी स्वय शामिल होता था। एक वार खतरेसे बचानेके उपलक्षमे अबुलगाजीने अपने पुत्र अनुशा (अनुशाह) को एक झडा, एक सेना तथा हजारास्पकी कमाड प्रदान की। अबुलगाजीने १६५८ ई०मे वरदजा इलाकेको लूटा, जिसमें कि वुखारा शहर है। १६६१ ई०मे उसने फिर वुखारा इलाकेको लूटा। इस तरह अपने सहधर्मियोको अनेक वार लूटने-मारनेके वाद उसका ख्याल काफिरोको लूटकर पुण्य कमानेका हुआ। इसके लिये उसकी नजर ईरानी किजिल-वासो और वोल्गाके पासवाले कल्मकोपर पडी। उसने दूतद्वारा अब्दुल अजीज खानके पास सुलहका प्रस्ताव भेजा, और शासनका काम अनुशाको सौप दिया। लेकिन उसे पुण्य-अर्जनका अवसर नही मिला और घोर युद्ध तथा अशातिके वीस सालके शासनके वाद वह १०७४ हि० (५ VIII १६६३–२५ VI १६६४ ई०) मे मर गया। एक तरफ वह खूनका प्यासा निपट श्वापद था, तो दूसरी तरफ उसकी लेखनीने एक वडे ही सुन्दर इतिहास-ग्रथको हमारे लिये छोडा। अपने समकालीन औरगजेवके कितने ही अवगुण उसमें भी थे।

१४. अनुशा मुहम्मद बहादुर, अबुलगाजी-पुत्र (१६६३–८६ ई०)

वापने वुखाराके साथ मैत्री कर ली थी, लेकिन वेटा उसे माननेके लिये तैयार नही था। उसने वुखाराके नजदीक जूयेवारके खोजोको जाकर लूटा। उस समय अब्दुल-अजीज खान करमीनामें था। खवर सुनते ही वह दौडा। आधी रातको जव वहा पहुचा, उस समय नगर ख्वारेज्मियोके हाथमे था। केवल चालीस दासोको लिये उसने रक्षि-सैनिकोके ऊपर पड अपने लिये रास्ता वनाया, और लडते-लडते वह आर्क (किले) में जा पहुचा। उसने ख्वारेज्मियोके कत्ले-आमका हुक्म दे दिया। उज्वेको, ताजिको या विदेशी व्यापारियोमे जिनके हाथमें भी हथियार था, सभी शत्रुओके ऊपर टूट पडे—नगर के वाहर जानेवाले सारे रास्ते वाडे खडी करके वन्द कर दिये गये थे। ख्वारेज्मियोका भीषण सहार हुआ, लेकिन अनुशा एक छोटी-सी टुकडीके साथ भागकर ख्वारेज्म पहुचनेमें सफल हुआ। इस मारके कारण थोडी देरके लिये अनुशाकी हिम्मत टूट गई।

यद्यपि अब्दुल अजीज खानने ख्वारेज्मियोके आक्रमणका सफल प्रतिरोध किया, लेकिन तव भी १६८० ई०मे अब्दुल अजीजको सुभानकुल्लीके लिये गद्दी खाली करनी पडी। सुभानका आरम्भिक शासन बेटोके विद्रोहके कारण कमजोर था, इसलिये अनुशाको फिर हिम्मत हुई, और उसने १६८३ ई०में आक्रमण करके नगरो और गावोको वुखारा शहरके आसपासतक ध्वस्त कर दिया और वहुत से माल और युद्धवदियोके साथ लौट गया। सुभानने हाल हीमे विद्रोह करनेवाले अपने पुत्र सादिकको सहायताके लिये वुलाया, लेकिन रास्तेमे उसने सुना, कि अनुशाने खुरासानपर आक्रमण करके वहा अपने नामका सिक्का और खुतवा चलाया है। हिसार (ताजिकिस्तान) और खोजन्दके अमीर भी अव खुली तौरसे सुभानकुल्लीसे विद्रोही वन गये और उसके कितने ही दरबारी भी अनुशाके पक्षमें हो गये। यह स्थिति देखकर सादिकने वुखारा जानेकी जगह लौटकर वलखकी रक्षा करना अधिक पसन्द किया। इसपर खानने वदख्शाके राज्यपाल महमद वी अतालिकको वुलाया, जिसने गिज्दुवानमें अनुशाकी सेनाको पूरी तौरसे हरा दिया, यह हम पहले वतला चुके है। अगले साल (१६८५ ई०) खानको वलखके झगडेमे फसा देखकर वुखाराके द्वारपर अनुशा फिर आया, किन्तु मुहम्मदजान अतालीकने वलखसे आकर फिर उसे हरा दिया। इसके कुछ समयवाद जव सुभानकुल्ली मशहदमें तीर्थ-यात्राके लिये गया था, तो अनुशाने फिर अन्तर्वेदपर आक्रमण किया, लेकिन लोगोने एक होकर भयकर हत्याके साथ ख्वारेज्मियोंको हटनेके लिये मजबूर किया—

इस संघर्षमें बहुतसे ख्वारेज्मी नेता भी मारे गये। अनुशा फिर चढाई करनेकी सोच रहा था, लेकिन अमीरोंने मना करते हुए कहा, कि कलमक बडी सेना लेकर हमारे ऊपर आक्रमण करने आ रहे हैं, उनसे लडनेके लिये एरेंक (औरंग) को सेनाका संचालक बनाकर भेजो। सेना हाथमें आते ही एरेंकने बापको पकड लिया और लाल लोहेसे दागकर उसे अंधा बना तख्तसे उतार दिया।

१५ मुहम्मद एरेंक, औरंग, अनुशा-पुत्र (१६८६–८७ ई०)

ख्वारेज्मके दरबारमें भी कितने ही अमीर सुभानकुल्लीके पक्षमें थे। एरेंकने सुभान-कुल्लीके पक्षवाले अमीरोंको देश-निकाला दे दिया, फिर बुखारी सेनाको खुरासानमें गई जानकर बुखारापर चढाई की। सुभानकुल्लीने दस दिनतक नगरकी रक्षा की, फिर महमूद बी अतालीक आ गया, जिसने बुखाराके नगर-प्राकारके नीचे ख्वारेज्मियोंको हरा उनमेंसे बहुतोंको बन्दी बना लिया। इस बीच सुभानपक्षी अमीरोंने उरगंजमें षड्यंत्र कर रक्खा और लौटते ही एरेंकको जहर देकर मार डाला।

१६ शाहनियाज खान (१६८७–१७०२ ई०)

ख्वारेज्मके खानोंका वंश गोत्र-वधके लिये हदसे अधिक बदनाम हो गया था, जिसके कारण वहाके अमीर उन्हें पसन्द नहीं करते थे, इसलिये एरेंकके मरनेके बाद विद्रोहियोंने सुभानकुल्लीके पास कोई शासक प्रदान करनेके लिये अपना शिष्टमंडल भेजा। सुभानकुल्लीने शाहनियाज इशिक आकाको राज्यपाल बनाकर भेज सिक्का तथा खुतबा अपने नामसे जारी कराया। सुभानका शासन कई सालोंतक रहा। उसने १७०० ई०में रूसी जार पीतर I के पास दूत भेजकर प्रार्थना की, कि हमारे देशको अपने संरक्षणमें ले लो। उसी साल ३० जुलाईको पत्रद्वारा पीतरने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। १७०२ ई०में सुभानकी मृत्युके बाद, जान पडता है, शाहनियाजका शासन भी खतम हो गया।

१७ अरब मुहम्मद II, अनुशा-पुत्र (१७०२ ई०)

१७०२ ई०में पीतर I ने एक मित्रतापूर्ण संदेश भेजकर अरब मुहम्मद और उसके लोगोंको अपनी प्रजाके तौरपर स्वीकार किया, इस प्रकार हम देख रहे हैं कि औरंगजेबके शासनके अन्तिम समयमें रूसी जारकी बाहु ख्वारेज्मतक पहुंच चुकी थी।

१८. हाजी मुहम्मद बहादुर, अनुशा-पुत्र (१७१४ ई०)

इसके बारेमें इतना ही मालूम है, कि १७१४ ई०में इसका दूत पीतरबुर्गमें पीतर I के दरबारमें पहुंचा था।

१९ यादगार, अनुशा-पुत्र (१७१४ ई०)

यह १७१८ ई०में मरा था। जान पडता है, यह अधिक समयतक राज्य नहीं कर पाया। इसके साथ बेरेका खानकी सन्तानोंका शासन ख्वारेज्ममें खतम हो गया, और उनका स्थान बाहरसे नये-नये आते खानोंने लिया।

खीवाखान-वंशवृक्ष
(१५१५–१७१४ ई०)
जूछि
शैवान
यादगार
वेरेक
अवलेक
अमीनेक
वलवर्स
१ इलवर्स
(१५१५)
३ हसनकुल्ली
२ मु० हाजी
४ सोफियान
५ बुजुगा
६ अवानेक
७ कल
८ अकताई (१५४६)
९ दोस्त
(–१५५६)
दीन मु० (१५३९–४६)
१० हाजी मु०
(१५५६–१६०२)
११ अरब मु०
(१६०२–२१)
१२. इस्फन्दयार
(१६२२–४२)
१३ अबुलगाजी
(१६४३–६३)
१४ अनुशा
(१६६३–८६)
१५. एरेक
(१६८६–८७)
१६ शाहनियाज
(१६८७–१७०२)
१७ अरब मु०
(१७०२)
१८ हाजी मु०
(१७१४)
१९ यादगार
(१७१४)
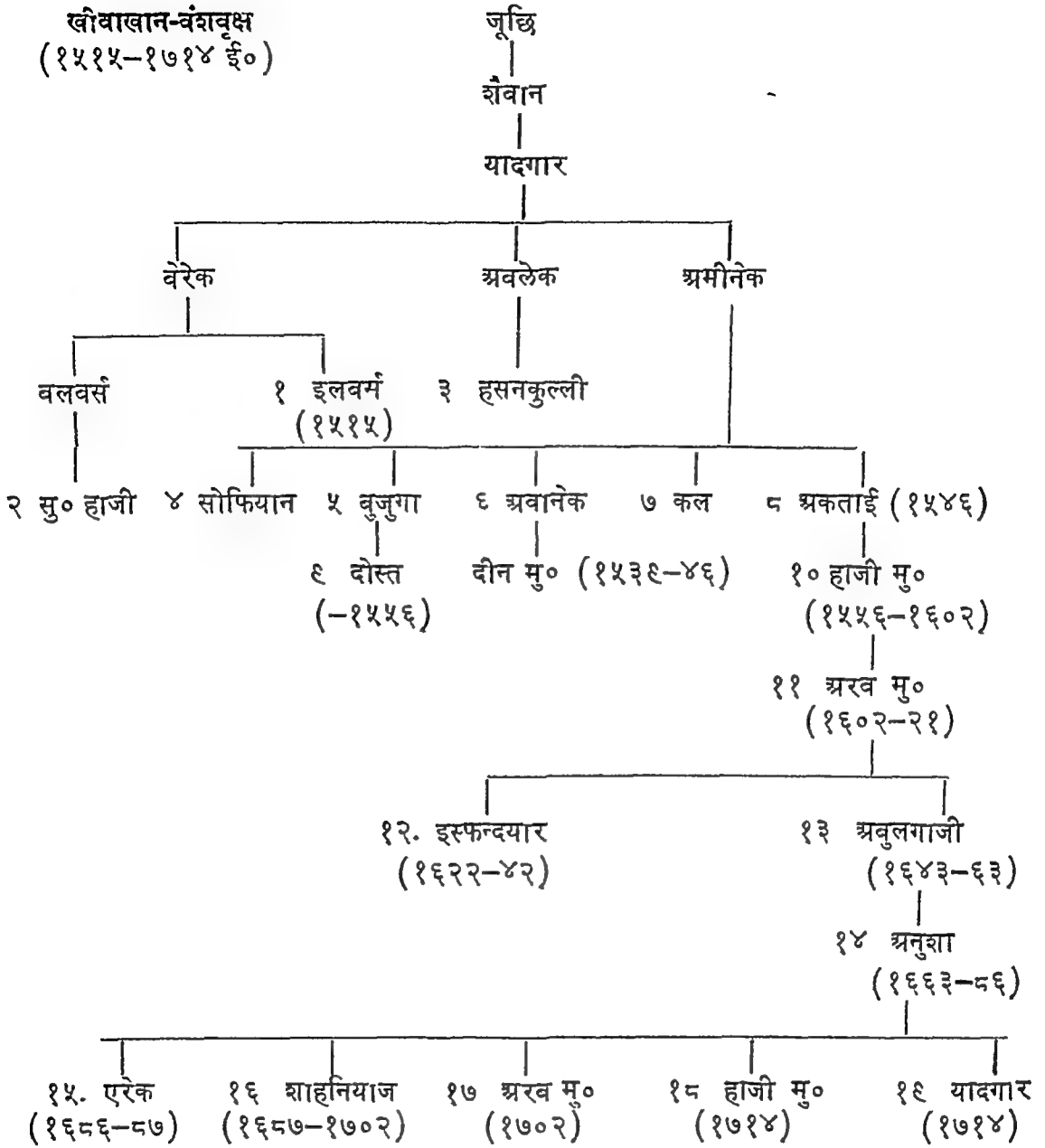
भाग ३

उत्तरापथ

अध्याय १

रूसका प्रसार

(१५९८–१८०१ ई०)

१. बीचके जार

१. बोरिस गदुनोफ (१५९८-१६०५ ई०)

१६वी सदीके अन्ततक रोरिक-वशके नेतृत्वमे रूसका किस तरहसे एकीकरण और प्रसार हुआ, इसके बारेमे हम कह आये है। रूरिकवशी अन्तिम जार फ्योदोर इवान-पुत्रके मरनेके साथ १५९८ ई०में रूरिक-वशके खतम होनेपर बोरिस गदुनोफ जार बना। विवाह-सबध तथा फ्योदोर-के समय शासनकी वागडोर हाथमे रखनेके कारण गदुनोफको कठिनाई नही हुई और १५९८ ई० में "जेम्स्की सवोर" (राष्ट्रीय परिषद्)में एकत्रित सामन्तो और व्यापारियोके बहुमतने बोरिस गदुनोफको मास्कोका जार निर्वाचित किया। बोरिसने इवानIVकी नीतिपर चलते हुये देशमें व्यवस्था कायम रखनेकी सफल कोशिश की। पुराने राजुलो और सामन्तोके परिवार हमेशा देशको विकेन्द्रित करनेकी कोशिश करते थे, इसलिये इवानIIIकी तरह गदुनोफको भी उन्हे कडाईसे दवाना पडा। निकिता रोमन-पुत्र और उसके परिवारवाले—जो पीछे रोमनोफके नामसे प्रसिद्ध हुये—गदुनोफके लिये सबसे अधिक चिंताके कारण थे। रोमनोफोका सबध जार फ्योदोरसे था, और नागरिकोमे उनके मुखिया फ्योदोर निकित-पुत्रके वहुतसे अनुयायी थे। गदुनोफने गुप्त सूचनाओके बलपर उनपर षड्यत्र करनेका आरोप लगाया, और सभी भाइयोको उत्तरकी ओर निर्वासित कर दिया। फ्योदोर रोम-नोफ इसी समय पापा फिलारेतके नामसे साधु बन गया। अपने भूमिपति शत्रुओको गदुनोफने दबा दिया, लेकिन इसी समय किसान विद्रोहके रूपमे दूसरा भारी खतरा उठ खडा हुआ।

१६०१ ई०में रूसमें अकाल पड गया—पहले बहुत वर्षा हुई, फिर शरद्के आरभ हीमें पाला पडा, जिसके कारण सारी फसल बरबाद हो गई और वसतमे खेतोमे कोई अनाज नही पैदा हुआ। वसतकी बोआईके लिये किसानोके पास बीजतक नही रह गया। लोग भूखके मारे घास और भोजपत्रकी छाल खा रहे थे। कोई-कोई गाव तो सारा-का-सारा मर गया। मास्कोकी सडकोपर भी बिना दफनाई लाशे पडी हुई थी। यह भयकर अकाल तीन वर्ष (१६०१–१६०३ ई०)तक रहा। तालुक-दारो, मठो और व्यापारियोके पास भारी परिमाणमे गल्ला था, लेकिन उन्होने उसे महगे भावो-पर बेचकर धन जमा करना पसद किया। सामतो और जमीदारोने उस समय खाना देनेसे इन्कार करके अपने सेवकोतकको भी भगा दिया। भुखमरोके विद्रोहका भय देखकर गदुनोफने हुक्म दिया, कि सरकारी बखारोको खोलकर लोगोमे अनाज बाटा जाय, लेकिन बाटने वालोने उसमे भी अपने लिये खूब पैसे बनाये। सरकारके पास इतना गल्ला भी नही था, और जिनके पास बहुत गल्ला था, वह मूल्यके और भी अधिक बढनेकी आशामे अपनी बखारोको खोलना नही चाहते थे। "मरता क्या न करता"के अनुसार अब भूखसे मरते किसानो और अर्धदासोने अपनी टुकडिया बना जमीदारो और बनियोको लूटना शुरू किया। उनमेंसे कुछ दोन-उपत्यका और ब्रयास्कके जगलो-में चले गये। १६३० ई०मे खलोपको कसलोपके नेतृत्वमे किसानोकी एक बडी टुकडी राज-धानी (मास्को)के पास पहुची, जिसकी जारकी सेनासे एक भयकर लडाई हुई, जिसमे जारका वोयवद (राज्यपाल)इवान बसमानोफ मारा गया। बडी मुश्किलसे जारकी सेनाने राजधानीसे विद्रो-

हियोको भगा पाया। खलोपको कसलोप आहत होकर पकडा गया, लेकिन जल्दी ही मर गया। वहुतसे किसान और अर्ध-दासोको जारके वोयवदोने मास्कोकी ओर आनेवाली सडकोके किनारेके वृक्षो-पर लटकाकर फासी दे दी।

इसी समय प्रतिद्वद्वी पोलन्दने रूसकी इस हालतसे फायदा उठाया और पोल-राजा सिगिस्मद III ने एक मिथ्या दिमित्रि को अपने हाथका हथियार वनाना चाहा। रोमन कैथलिक धर्मराज पोपको जव यह खवर मिली, तो उसने भी दिमित्रिका समर्थन किया। अफवाह फैलाई गई, कि जार-पुत्र दिमित्रि उगलिचमे मारा नही गया, वल्कि वह भागकर पोलन्द चला गया। वोरिस गदुनोफ जिम समय गद्दीपर वैठा, उसी समय उक्रइनने पान (सामन्त) आदम विस्नियो-वियेच्कीके गढमे एक आदमी प्रकट हुआ, जिसने अपनेको इवान IVका पुत्र दिमित्रि घोपित किया। मास्को-सरकारको जव यह पता लगा, तो उसने उसके वारेमे कहा—यह दिमित्रि एक भूतपूर्व साधु ग्रिगोरी ओतरेपयेफ है, जो कि कस्त्रोमाके एक छोटेसे सामन्ती घरानेमें पैदा हुआ। ग्रिगोरी जवानीमे कितने ही मठोमे घूमता रहा, फिर उसने अपना कुछ समय मास्कोमें विताया, और अतमें दूसरे तीन साधुओके साथ पोलन्द भाग गया। आधुनिक इतिहासकारोका कहना है, कि मिथ्या दिमित्रि कौन था, इसका पता लगाना मुश्किल है।

पोल अमीरोने मिथ्या दिमित्रिके प्रकट होनेकी खवरका वडा स्वागत किया। उसे विस्-नियोवियेच्कीके एक सवधी तथा सम्त्रोरके वोयवोद यूरी म्निस्जेफके पास पहुचाया गया। १६०४ ई०के वसतमें राजा सिगिस्मदIII ने राजधानी क्राकोमे दिमित्रिका स्वागत किया। उस समय तुरत रूसके साथ खुली लडाई करना पसद नही किया गया, लेकिन इस वातकी कोशिश की गई, कि दिमित्रिके पक्षपाती उसकी सेनामे आकर शामिल हो। पोल अमीरोको रूसके धनका लोभ था, इसलिये वह दिमित्रिकी हर तरहसे सहायता करनेके लिये तैयार थे। दिमित्रिने पोप, पोलन्दके राजा तथा अमीरोको वहुत वडे-वडे वचन दिये। पोपको खुश करनेके लिये उसने कैथलिक-धर्म स्वीकार किया और सभी रूसियोको कैथलिक वनानेका वीडा उठाया। पोल-राजाको उसने स्मोलेन्स्क नगर तथा चेर्निगोफके इलाके (सेवेर्स्क)को देनेका वचन दिया। म्निस्जेफ परिवारको उसने नवगोरद और पुस्कोफ प्रदेशका शासक वनानेका वादा करते कहा, कि जारके खजानेसे जो कुछ भी पैसा और रतन-जवाहर मिलेगा, वह तुम्हारा होगा। इस शर्तपर यूरी म्निस्जेफने अपनी लडकी मरीनाका व्याह मिथ्या दिमित्रिसे करना कवूल किया—मरीना रूसी जारित्सा (जारानी) वनती। दिमित्रिके लिये सारी तैयारी सम्वोरमे होने लगी। तैयारीके वाद १६०४ ई०के शरद्के अन्तमे चार हजार पोल-सेना तथा कई सौ रूसी कसाकोंके साथ दिमित्रिने कियेफके पास द्नियेपर नदी पार किया। विना प्रतिरोध किये ही कितने ही नगरोने दिमित्रिकी अधीनता स्वीकार की। वोरिस गदुनोफके शासनसे असतुष्ट अकालके मारे कितने ही भगोडे किसान, अर्ध-दास तथा छोटे-छोटे सैनिक भी उसके झडेके नीचे जा खडे हुये। वहुतसे किसान सचमुच ही उसे इवानIVका पुत्र समझने लगे। उनको यह भी विश्वास था, कि वह हमे अर्ध-दासतासे मुक्त कर देगा। १६०४ ई०के अन्तमे मास्कोकी सेना दिमित्रि द्वारा घेरे गये नवगोरद-सेवेर्स्कको मुक्त करनेके लिये पहुची। मिथ्या दिमित्रिने चाहा, कि विना लडे सेवेर्स्ककी ओर चला जाय। जनवरी १६०५ ई०मे वह सेवेर्स्कके पास दोवरोनीची गावमें हारकर अपने वचे-खुचे आदमियोंके साथ पुतिवलकी ओर भाग गया। विजय प्राप्त करनेके वाद भी गदुनोफकी हाल वेहतर नही हुई। विद्रोहियोके नये-नये दल आकर आक्रमण करते रहे। जारकी सेना क्रोमीके किलेको घेरे हुई थी। दोनके कसाक दिमित्रिकी ओर होकर लडने लगे। इसी समय जारकी सेनाने भी दिमित्रिके विरुद्ध लडनेसे इन्कार कर दिया और वहुतसे सिपाही मैदान छोडकर घर चले गये। इसी अवस्थामे अप्रेल १६०५ ई०मे गदुनोफ एकाएक मर गया। सामन्तोने तुरन्त उसके सोलह वर्षके पुत्र फ्योदोरको जार घोपित कर दिया।

गदुनोफके शासन-कालमें ही १५९८ ई०मे साइवेरियामें जाकर रूसी प्रवासियोके वसने-का पहिला उल्लेख मिलता है। जार-पुत्र दिमित्रिके मरनेके वाद ये लोग उगलिचसे भागकर पूर्वमे

चले गये थे । साइबेरियामे रूसियोकी कुछ बस्तिया बल्कि पहले ही १५८७ ई०मे तवोल्स्क नगरकी स्थापनाके समयसे बसने लगी थी । १६०४ ई०मे तोम्स्क नगर भी स्थापित हो गया ।

२ फ्योदोर, बोरिस-पुत्र (१३ अप्रेल–१ जून १६०५ ई०)

फ्योदोरको गद्दी नही वल्कि थोडे दिनोके लिये खाली सिंहासनपर बैठकर रूसकी राजावलीमे नाम लिखवानेका मौका मिला । गदुनोफके हटते ही मिथ्या दिमित्रिका रास्ता खुल गया । क्रोमामें जो बची-खुची सरकारी सेना रह गई थी, वह भी पीतर बसमानोफकी अधीनतामे दिमित्रिकी ओर चली गई । सामन्त पहिले हीसे गदुनोफसे घृणा करते थे, क्योकि वह राजुलोके अस्तित्वको खतरेमे डाले हुये था । राजुल वासिली इवान-पुत्र शुइस्कीने पहले उगलिचमे जार-पुत्र दिमित्रिके मरनेकी गवाही दी थी । अव उसने अपनी वातसे इन्कार करते कहा, कि गदुनोफ जार-पुत्रको मारना चाहता था, किंतु वह जान बचाकर भाग गया । वह जिंदा है और अव राजधानीकी ओर आ रहा है । दिमित्रिके दूतोके मास्को पहुचनेपर अमीरोने जार फ्योदोर और उसकी माको मार डाला । दिमित्रिने विना किसी विरोधके जून १६०५ ई०मे अपने सहायक पोलोके साथ रूसी राजधानीमे प्रवेश किया—यह अकवरकी मृत्युका साल था ।

३ दिमित्रि, मिथ्या (१६०५–६ ई०)

दिमित्रिने जारके पुराने सिंहासनपर बैठते ही अपने असली रूपको दिखलाना शुरू किया । पहले उसने असतुष्ट किसानोको विश्वास दिलाया था, कि हम तुम्हारी हालत बेहतर बनायेगे, लेकिन अब उसने फिर जमीदारो और सामन्तोकी पूर्व-स्थितिको मजवूत करना शुरू किया । ऊपरसे जो पोल अमीर और दूसरे अनुचर आये थे, वह अपनेको रूसियोका विधाता समझते उनके साथ बडा दुर्व्यवहार करते दोनो हाथोसे नोच-खसोट कर रहे थे । दिमित्रिके चारो तरफ भाडेके विदेशी नौकर भरे हुये थे । दिमित्रि स्वय वहुत भारी परिमाणमे पैसा पोलन्द भेज रहा था । अव लोगोकी आखे खुली और मास्कोके नागरिकोने खुल्लमखुल्ला शिकायत करनी शुरू की । १६०६ ई०के वसतमे दिमित्रिकी वीवी मरीना आई, जिसके साथ पोल अमीरोका एक बडा दल वहुतसे अनुचरोको लिये आया । मरीनाके साथ दिमित्रिका विवाह-महोत्सव बडे ठाट-वाटसे मनाया गया, कई दिनोतक मौज होते रहे । शरावमे मस्त उसके विदेशी सहायकोने इस समय और भी गजव ढाया, जिससे जनता क्रोधमे पागल हो गई । राजुल वासिली शुइस्कीने इस अवस्थासे फायदा उठा षड्यत्र रचा और १७ मई १६०६ ई०को घण्टेकी आवाजके सकेतको सुनते ही लोग मुकाविलेके लिये खडे हो चिल्ला उठे—"चलो लितवो पर ! लितवोकी क्षय ! !"—रूसी उस समय पोलोको लितवा कहते थे । मिथ्या दिमित्रिको जव खतरेकी खवर मिली, तो महलके सामने काफी भीड जमा हो चुकी थी । जान वचानेके लिये खिडकीसे कूदा, जिसके कारण वह वुरी तरह घायल हो गया । लोगोने पहुचकर उसे तुरन्त ही मार डाला । कुछ दिनो वाद मिथ्या दिमित्रिके शरीरको जला उसकी राख एक तोपमे भरकर उसे उसी ओर मुह करके दाग दिया गया, जिधरसे वह आया था । सारे नागरिक शहरमे ढूढ-ढूढकर पोल अमीरो और दरवारियोको मारने लगे । पत्थर, छुरा, डडा जो कुछ भी हाथ आया, उसीसे उन्होने हथियारवद पोलोपर आक्रमण किया । दो हजार पोल मारे गये और वाकियोने मोर्चावदी छोड आत्म-समर्पण कर दिया । वायरोको डर लगा, कि विद्रोही जनसाधारण कही उनके विरुद्धभी कुछ न कर वैठे, इसलिये उन्होने सबसे पहले सिंहासनपर किसीको वैठाकर राजशक्तिको मजवूत करना जरूरी समझा । उन्हे राष्ट्रीय परिषद् (जेम्स्की सबोर)को वुलाने, की हिम्मत नही हुई । डर रहे थे, शायद अधिकाश नागरिक और अमीर भी विरोध करें, इसलिये पुराने राजुलवशी वासिली इवान-पुत्र शुइस्कीका नाम विना निर्वाचनके ही १९ मईको क्रेमलिनके सामने जमा हुये लोगोके बीच जारके तौरपर घोषित कर दिया ।

इस गडवडीके समयके जार निम्न थे—

१ वोरिस गदुनोफ	१५९५–१६०५ ई०
२ फ्योदोर, वोरिस-पुत्र	१३ अप्रेल-१ जून १६०५"
३ दिमित्रि (मिथ्या)	१६०५–६ "
४ वासिली, इवान-पुत्र शुइस्की	१६०६–१०"
५ व्लादिस्लाव, सिगिस्मद-पुत्र	१६१०–१३ "

४ वासिली शुइस्की, इवान-पुत्र (१६०६-१० ई०)

शुइस्कीने वायरोको वचन दे दिया था, कि मै तुम्हारी सम्मतिसे राज्य करूगा, और क्रास (सलेव) के ऊपर कसम खाई थी, कि विना वायरोकी दूमा (ससद)की रायके मृत्युदड नही दूगा, न दडित-पुरुषके सवधियोकी सम्पत्ति जब्त करूगा। रूसके भिन्न-भिन्न नगरोमे उसके जार होनेकी घोषणा की गई। धनी वायरोने सवसे अधिक लाभके पदोपर झपट्टा मारा, और उन्होने फिर मनमानी करनी शुरू की। पुराने राजुलवगो और नये जमीदार-वनियो—वायरो—के स्वार्थ एक नही थे। सामन्त कव वरदाश्त करने लगे, कि सभी वडे-वडे पदो को वायर दखल कर लें। जल्दी ही विद्रोह उठ खडे होनेकी शका होने लगी। वायरोने प्रतिरक्षाके लिये क्रेमलिनमे तैयारी शुरू की, उसकी दीवारोपर तोपे लगा दी, और खाइयोंके ऊपरके पुलोको हटा दिया।

किसान-विद्रोह (१६०६-८ ई०)—किसानोने विद्रोह किया, लेकिन वह सगठित नही था। जहा-तहा छिटपुट लोग सरकारके विरुद्ध आक्रमण कर रहे थे, जिससे सरकारी सेनाको अच्छा मौका मिला, और एक जगहके विद्रोहको दवा देनेपर दूसरी जगहके विद्रोहको दवाना आसान था। सवसे ज्यादा खतरनाक और जवर्दस्त विद्रोह था मजदूरो, अर्ध-दासो और कसाकोका, जिसका नेता इवान वलोतूनिकोफ (१६०६-७ ई०) था। अपनी जवानीके समय वलोतूनिकोफ एक वायरका अर्ध-दास था, जिसके अत्याचारोसे परेशान हो वह दोन-उपत्यकाके कसाकोमे भाग गया, जहा वह तार-तारोंके हाथमे पड गया। उन्होने उसे दास वनाकर तुर्कोके हाथमे वेच दिया। कुछ दिनो तक वलोत्निकोफ दूसरे वदियोकी तरह पैरोमे वेडी पहने नावकी पतवार चलाता रहा, लेकिन थोडे ही समय वाद वह तुर्कोकी दासतासे मुक्त होनेमे सफल हुआ। तुर्कोसे युरोपके भिन्न-भिन्न देशोमे कितने ही साल घूमनेके वाद रूसी सीमातके भीतर लौट आया। इसी समय शुइस्कीके विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हुआ था। वलोत्निकोफने विद्रोही सेनाका नेतृत्व स्वीकार किया। समसामयिक लेखक उसकी असाधारण शारीरिक शक्ति, तीक्ष्ण वुद्धि और वहादुरीकी प्रशसा करते है। विदेशी लेखक उसे "युद्धवीर" कहते थे। युद्धोमे उसने अपनी सैनिक प्रतिभाका अच्छा परिचय दिया था। जहा-कही भी वलोत्निकोफकी सेना जाती, किसान अपने जमीदारोंके विरुद्ध होकर उसकी सेनामे आ मिलते। शहरके गरीव भी उसकी तरफ हो जाते। वलोत्निकोफकी सेना पुतिवलसे जल्दी-जल्दी क्रोमी, सेरपुखोफ और कलोम्ना होती मास्कोकी ओर वढी। अक्तूवर (१६०६ ई०)के मध्यमे वलोत्निकोफ मास्कोके सामने पहुचा। राजधानीके चारो तरफ प्रतिरक्षाके लिये तेहरी पत्थरकी दीवार तैयार की गई थी। वलोत्निकोफ उसे सर नही कर सका, फिर मुहासिरा करके वैठ रहा। उसने नागरिकोंसे अपील करते पत्र लिखकर लोगोमे वटवाया, किसानो और अर्ध-दासोको कहा—अपने वायरो और जमीदारोको खतम कर डालो, मै तुम्हे राजुलोंकी भूमि प्रदान करूगा। वलोत्निकोफकी सेनामे कुछ असतुष्ट राजुल भी थे, जिन्होने इस खतरेको देखा। र्याजनके सामत तथा ल्यापुनोफ-भ्रातृयुगल वलोत्निकोफका साथ छोडकर शुइस्कीकी ओर हो गये। इसपर जारकी सेनाकी हिम्मत और शक्ति वढी, जिसके साथ ही कितने ही और अमीर जारकी ओर हो गये। वलोत्निकोफको वची-खुची सेना लेकर दक्षिणकी ओर हटना पडा। उसने जाकर कलूगामें छावनी डाली। १६०७ ई०के वसतमे जारकी सेनाने कलूगाको घेर लिया, लेकिन इसी समय विद्रोहियोंकी एक नई सेना वलोत्निकोफकी मददके लिये आ गई और शुइस्कीकी सेनाको वुरी तरहसे हार घेरा उठाकर भागना पडा।

वलोत्निकोफ आगे वढकर तुला पहुचा, जहा कसाकोका एक नया दल उससे आ मिला। इसी दलमे पीतर नामक एक आदमी था, जो अपनेको जार फ्योदोर (इवान-पुत्र)का बेटा कहता था, यद्यपि वस्तुत फ्योदोरका कोई बेटा नही था। गर्मियोमे शुइस्की एक बडी सेना जमाकर चार महीनेतक तुलामे बलोत्निकोफपर आक्रमण करता रहा। जारके सेनापतियोने देखा, कि वलोत्निकोफको जल्दी हराया नही जा सकता और जाडोमे घेरा रखना मुश्किल होगा, इसलिये उन्होने पासकी उपा नदीके ऊपर एक ऊचा वाध वाध दिया, जिससे नदीका पानी इकट्ठा होकर जोरसे शहरके भीतर वढा, जिससे वलोत्निकोफकी रसद और वारूद वह गई। इसपर समर्पणकी वात होने लगी। जार वासिलीने वचन दिया, कि मै सभी विद्रोहियोको क्षमा कर दूगा, लेकिन उसने अपनी वचनका पालन नही किया। इवान वलोत्निकोफको उत्तरमे करगोपोलकी ओर भेजकर अधा करके डुवा दिया गया, और वहुतसे दूसरे विद्रोहियोको खलोपी (गृहदास) और अर्धदास वनाकर अमीरोको दे दिया गया। वलोत्निकोफ मारा गया, उसके सैनिक तितर-वितर हो गये, लेकिन शुइस्कीके विरुद्ध विद्रोह नही दवा। वोल्गा-उपत्यकाके मोर्द्विन और मारी (चेरेमिसी) विद्रोही बने और उन्होने रूसी किसानो और अर्ध-दासोको साथ लेकर निज्नी-नवोगोरदको घेर लिया। उस समय तो जारकी सेना उन्हे हटानेमें सफल हुई, लेकिन १६०८ ई०की शरद्मे सारी मध्य-वोल्गा उपत्यका विद्रोही वन गई।

इधर देशके भीतर इस तरहकी विद्रोहाग्नि जल रही थी, उधर पोल भी चुप नही वैठे थे। उन्होने यह अफवाह फैलाई, कि मास्कोमें खिडकीसे कूदकर मरनेवाला आदमी वस्तुत दिमित्रि नही था, वल्कि दूसरे आदमीने अपनी जान देकर जार दिमित्रिके भागनेमे सहायता की। यह अफवाह यद्यपि दिमित्रिके मरनेके दिनसे ही उडाई जाने लगी थी, लेकिन उसका प्रभाव उस समय अधिक नही पडा। १६०८ ई०के वसतमें एक नया जार-पुत्र मिथ्या दिमित्रि II मास्कोके सीमातपर प्रकट हुआ। उसके साथ पोलदकी सरकारी सेना और दूसरे वहुतसे सैनिक थे। लिथुवानी सामन्त यान सपिएहा ७५०० पैदल और सवार सेना लेकर आया, हेतमन रोजिन्सकी भी चार हजार आदमियो के साथ पहुचा। इसी तरह दोन और जापोरोज्ये कसाक भी मिथ्या दिमित्रि IIके साथ आ मिले। वोल्खोफके पास १६०८ ई०के वसतमें जारकी सेनाने हार खाई और दिमित्रि IIकी मुख्य सेना कलूगा और मोजाइस्कके रास्ते मास्कोकी ओर वढी। उन्होने मास्कोपर अधिकार करनेकी विफल कोशिश की। इसके वाद पोलोने राजवानीसे थोडी दूरपर मास्क्वा नदीके ऊचे तटपर अवस्थित तुशिनो गावमे मोर्चावदी करके डेरा डाला, जिसके ही कारण लोगोने मिथ्या दिमित्रि IIको "तुशिनो जार" अथवा "तुशिनोका चोर" कहना शुरू किया। मास्कोकी स्थिति वहुत वुरी हो गई थी। नगरमें आहारका अकाल था। कितने ही वायर और राजुल शुइस्कीके पतनको निश्चित समझकर मिथ्या दिमित्रिके पास चले गये। मास्कोपर घेरा डालकर मिथ्या दिमित्रिकी सेनाने आसपासके महत्त्वपूर्ण स्थानोपर अधिकार करना शुरू किया। राजधानीसे सत्तर किलोमीतरपर अवस्थित त्रोइत्स्क-सेर्गियेफ मठ (आधुनिक जागोर्स्क)को पोलोने लेना चाहा। लेकिन रक्षाके लिये पासके किसान भी मठकी ऊची दीवारोके भीतर पहुचे हुये थे। मठने अपनी तोपो और सैनिकोके वलपर पोलो और दिमित्रिकी सेनाको मार भगाया। ऊपरी वोल्गाके नगरोमें उसे जरूर सफलता मिली, क्योकि वहाके लोग जार और वायरोसे इतनी घृणा करते थे, कि उन्हे मिथ्या दिमित्रि सच्चा दिमित्रि मालूम होता था।

लेकिन दिमित्रिको जितनी सफलता होती जाती थी, उतना ही उसके सहायक पोलोका अत्याचार और अपमानजनक वर्ताव वढता जाता था। वह नगरोमे पहुचकर व्यापारियोके मालको छीनते, किसानो और कारीगरोपर भारी कर लगाते, जरा भी आनाकानी करनेपर उनके घरो और खेतोकी फसलको जला देते। कितने ही रूसी वायरो और जमीदारोकी सम्पत्तिको क्षतिपूर्तिके तौरपर उन्होने छीन लिया। लोग उनके विरुद्ध खडे होनेके लिये मजबूर हुये। छिटफुट होते विद्रोह १६०८ ई०में देशव्यापी गोरिल्ला-युद्धके रूपमे परिणत हो गये।

शुइस्कीने देखा, कि वह अकेला दोनो ओरकी मारको नही वर्दाश्त कर सकता, इसलिये उसने स्वीडेनके राजा चार्ल्स नवमसे मददके बदलेमे सधि द्वारा करेला (केखहोल्म)के नगर और आसपासके प्रदेशको स्वीडेनको दे दिया। चार्ल्सने इसके वदलेमे पोलोको भगाने तथा जारकी शक्तिको मजवूत करनेके लिये सहायता देनेका वचन दिया। स्वीडेनने १६०९ ई०के वसतमें पद्रह हजार सेनाके साथ जेकव देलागारदीको भेजा। इस सेनामें स्वीड्, जर्मन, अग्रेज, फ्रेंच और दूसरे कितने ही देशोंके भाडेके सैनिक थे। शुइस्कीका भतीजा राजकुमार स्कोपिन-शुइस्की भी अपने रूसी सैनिकोको लिये इस सेनाके साथ हो गया। सेना रास्तेमें कितने ही नगरो और कस्बोको मुक्त करती तुशिनोकी ओर वढी। पोल भी आखिरी दाव लगानेके लिये तैयार थे। १६०९ ई०के ग्रीष्ममे भिन्न-भिन्न पोल सेनाओने जगह-जगहपर आक्रमण करके लूट-मार की, और इसी सालकी शरद्में पोल राजा सिगिस्मदIIIने एक वडी सेना ले रूसके भीतर घुसकर स्मोलेन्स्क नगरपर घेरा डाल दिया। सीधे रूस और पोलन्दके बीच खुलकर लडाई होने लगी। सिगिस्मदको अव मिथ्या दिमित्रिIIकी अवश्यकता नही थी। जनवरी १६१० ई०में मिथ्या दिमित्रिII पोल सहायतासे वचित होकर तुशिनोसे कलूगाकी ओर भागा। उसके साथ अव भी कुछ पोल इस आशासे चल रहे थे, कि शायद मास्कोका सिंहासन आखिरमे उसको ही मिले। दिमित्रिका पक्ष लेनेवाले रूसी वायरो और राजुलोने आशा छोडकर सिगिस्मदके साथ समझौता करना चाहा, और पोल राजाके पुत्र व्लादिस्लावको मास्कोका जार स्वीकार करते हुये ४ फर्वरी १६१० ई०मे सधि की। सिगिस्मदने अपने पुत्रकी ओरसे वचन दिया, कि वह अमीरो और जमीदारोके अधिकारोपर प्रहार नहीं होने देगा और भगोडे किसानोको उनके पास लौट जानेके लिये मजवूर करेगा।

५ व्लादिस्लाव सिगिस्मद-पुत्र (१६१०-१३ ई०)

मार्च १६१० ई०मे रूसी-स्वीडिश सेना मास्कोके भीतर दाखिल हुई। उधर मास्कोपर अधिकार करनेके लिये एक पोल सेना पहुची, जिसके विरुद्ध शुइस्कीने अपने भाई दिमित्रि शुइस्कीके नेतृत्वमे एक सेना भेजी। जून १६१० ई०में क्लुशिनो गावके पास दोनो सेनाओमें लड़ाई हुई, लेकिन लडते समय जर्मन और स्वीट भाडेके सैनिक रूसियोका साथ छोडकर पोलोकी ओर मिल गये—उन्हें तो पैसेसे काम था। पोलोने स्वीडोको स्वतन्त्रता-पूर्वक लौट जानेकी इजाजत दे दी। जुलाई १६१० ई०में मास्कोके नागरिकोमें भूखे मरनेकी और शक्ति नही रह गई, और उन्होने वासिली शुइस्कीके खिलाफ विद्रोह कर दिया। वायरो और राजुलोने वासिलीको पकडकर उसे साधु वननेके लिये मजवूर किया, जिसमे कि वह राजकाजमें दखल न दे सके। शासन-भार अव सात वडे-वडे वायरोकी वनी सरकारके हाथमें चला गया, इसीलिये इस सरकारको सेमी-वायर्-श्चिना (सात वायर शासन) कहा जाता था। वायरोने अपनी स्थितिको मजवूत नही देखी, इसलिये उन्होने इस शर्तपर व्लादिस्लावको मास्कोका जार वनना स्वीकार किया, कि वह वायरोके साथ मिलकर शासन करे। विश्वासघातियोंने समझौता करके पोल-सेनाको मास्कोके भीतर आने दिया। सघराज फिलारेत तथा कुछ और वायरोका एक प्रतिनिधि-मडल स्मोलेन्स्ककी दीवारोंके वाहर सिगिस्मदIII से मिलकर सधि करनेके लिये गया। लेकिन, पोलोंने इन देशद्रोहियोको उनके कियेका अच्छा मजा चखाया और सवको पकडकर पोलन्द भेज दिया। इन प्रतिनिधियोने मास्कोमे गुप्त रीतिसे चिट्ठिया भेजकर अपनी हीन स्थिति और पोलोंके विश्वासघातके वारेमें सूचित करते कहा, कि पोलोंकी अधीनता स्वीकार मत करो, आपसमे इसके वारेमें राय करो तथा हमारे पत्रको "नवोगोरद, वलोग्दा और निजनीमे भेज दो, जिसमे सव इस वातको जान लें।" पोल राजाकी मशा वस्तुत स्वय मास्कोका जार वननेकी थी।

मास्कोके भीतर पहुचकर फिर पोलोने मनमानी शुरू कर दी, और जरा भी विरोध करनेपर लोगोको तुरन्त गिरफ्तार करके वदीखानेमें डाल दिया जाता। पोल अमीरोने क्रेमलिनमे जारके खजानेको लूट लिया। उधर अपने राजाके नेतृत्वमे एक पोल सेना स्मोलेन्स्कको घेरे रही।

उत्तरमे स्वीडोने फिनलन्द-खाडीके दक्षिणी तटपर अधिकार करके नवोगोरदको खतरेमे डाल दिया। व्यापारियो और कारीगरोकी हालत बुरी हो गई थी, क्योकि नगरोके भीतर आपसी व्यापार बिल्कुल बद हो गया था। जमीदारो और अमीरोकी हालत भी खराब थी, क्योकि उनके खेतोमे काम करनेके लिये आदमी नही रह गये थे।

मास्कोमे पोलोने बहुत कोशिश की, कि लोग पोल-राजाकी राजभक्ति स्वीकार करे, लेकिन वह इसके लिये तैयार नही थे। जिन बायरोने विश्वासघात करके पोलोको बुलाया था, उनके खिलाफ घृणाजनक पत्र प्रसारित हो रहे थे। रूसी चर्चका प्रधान सघराज हर्मोगेनने भी इसी समय पोलोके विरुद्ध अपने विचार प्रकट किये और १६१० ई०के अन्तमे उसने भिन्न-भिन्न नगरोमे अपनी घोषणा भिजवाकर कहा, कि राजधानीकी मुक्तिके लिये रूसी जनताको आगे बढना चाहिये। सघराजकी घोषणाने लोगोको और भी उत्तेजित कर दिया। जब इसकी खबर पोलोको मिली, तो उन्होने सघ-राजको जेलमे डालकर तरह-तरहकी यातना देनी शुरू की, लेकिन उसने हिम्मत नही छोडी।

व्लादिस्लावको जारका सिंहासन तो मिला, लेकिन उसे और उसके बापको रूसियोने चैनसे रहने नही दिया। मास्कोको मुक्त करनेके लिये सारे देशमे तैयारी होने लगी। जनवरी १६११ ई०मे र्याजनके वोयवोद (राज्यपाल) प्रोकोपी ल्यापुनोफने मास्कोकी मुक्तिके लिये स्वयसेवको-का सगठन शुरू किया, जिसमे पहिले मुख्यत दक्षिणी जिलोके अमीरोकी सैनिक टुकडिया शामिल हुईं। ल्यापुनोफने कसाको और अर्धदासोको भी पैसे और मुक्तिका लोभ देकर अपनी ओर खीचा। शक्ति बढाकर एक सैनिक टुकडी राजकुमार दिमित्रि मिखाइल-पुत्र पजार्स्कीके नेतृत्वमे पोलोके ऊपर प्रहार करने लगी। इस सेनाका हरावल ठीक समयपर मास्कोके पास पहुचा, और पोल तथा देशद्रोही बायरोने मास्कोमे आग लगा दी। जलते हुये घरोके बीच लडाई जारी रही, पर अतमे धूयें और आग-की ज्वालाने रूसी सेनाको शहरसे बाहर निकलनेके लिये बाध्य किया। राजकुमार पजार्स्की इसी लडाईमे घायल हुआ। कुछ महीनेतक मास्कोके बाहर रहकर फिर कोशिश की, लेकिन वह राज-धानीको मुक्त नही करा सके। ३० जूनको सेना-सगठनके बारेमें कसाको और सामन्तोने आपसमे समझौता किया, जिसमे सामन्तोका प्रतिनिधि ल्यापुनोफ था और राजकुमार दिमित्रि त्रुबेत्स्की तथा अतमन इवान जारुत्स्की कसाकोके प्रतिनिधि थे। समझौता ठीकसे चला नही, दोनो पक्षोमे जब-तब झगडा हो उठता। ३० जूनको वह यहातक बढा, कि कसाकोने प्रोकोपी ल्यापुनोफको मार डाला, जिसके बाद स्वयसेवक-सगठन छिन्न-भिन्न हो गया। सामन्त अपने सैनिकोको लेकर चले गये और सिर्फ कसाक सैनिकोका एक भाग मास्कोके सामने रह गया।

उधर स्मोलेन्स्कके प्रतिरक्षियोने करीब-करीब दो सालतक पोलन्दकी भारी सेनाका मुका-बिला किया। पोल राजाने तोपोके गोलोसे सफलता न पाकर बडे-बडे वादोसे फुसलाना चाहा, लेकिन स्मोलेन्स्कके नागरिक इसके लिये तैयार नही थे। जून १६११ ई०के आरम्भमे पोल किलेकी दीवारको एक जगह उडानेमे सफल हुये, नागरिकोने जलते हुये नगरकी सडकोमें आखिरी लडाई लडी। बहुतोने शत्रुके हाथमे पडनेकी जगह आगकी ज्वालामे कूदकर जान दे दी। सत्तर मन बारूदके एक ढेरमें आग लगा दी गई, जिससे रूसियोके साथ बहुतसे पोल भी चिथडे-चिथडे उड गये। बहुत थोडेसे प्रतिरक्षी पोलोके हाथ बदी हुये। जिस समय स्मोलेन्स्कको पोलोने लिया, उसी समय स्वेडोने उत्तरमे नवोगोरद नगरपर अधिकार किया।

कसाको और सामन्तोके झगडेके कारण यद्यपि सैनिक स्वयसेवकोका सगठन छिन्न-भिन्न हो गया था, लेकिन रूसियोने पोलोके विरुद्ध अपनी तलवार मियानमे नही रक्खी। निजनी-नवोगोरदने फिरसे स्वयसेवकोके सगठनमे आगे बढकर काम किया और मास्कोकी लडाईमे घायल प्रसिद्ध वीर राजकुमार दिमित्रि पजार्स्कीको सेनाका सचालक बननेके लिये निमत्रित किया। चारो ओर फिर एक नया उत्साह दिखाई देने लगा। मास्कोमे पोलोको जब पता लगा, कि हमारे विरुद्ध एक बडी भारी सेना जमा हो रही है, तो उनमें घबराहट मच गई। उनसे भी ज्यादा

भयभीत थे देशद्रोही बायर। उन्होने लोगोसे बहुत कहा, कि पोल राजकुमार व्लादिस्लावकी अधीनता स्वीकार करो, लेकिन लोग इसके लिये तैयार नही हुये।

१६१२ ई०के वसतमे स्वयसेवक-सेना निजनी-नवोगोरदसे यारोस्लाव्ल पहुची। सब जगह लोग बडे उत्साहके साथ स्वागत करते आ-आकर उसमे भर्ती हो रहे थे। यारोस्लाव्लमे सेना चार महीने रही। यहापर उन्होने राष्ट्रीय सरकार सगठित की और शासन-प्रबधके भिन्न-भिन्न विभाग कायम किये। स्वयसेवकोमे भिन्न-भिन्न नगरोके अमीर, तथा सभी वर्गोके आदमी, कसाक, किसान और स्त्रेलेत्सी (धनुर्धर) ही नही, बल्कि तारतार, मारी और चुवाश जैसे अ-रूसी जातियोके भी लोग सम्मिलित थे। सेनाने अपना केंद्र यारोस्लाव्लमे रक्खा, लेकिन उसकी टुकडिया चारो तरफ फैलकर देशको पोलोंसे स्वतन्त्र करने लगी। पोल आकर रूसके भिन्न-भिन्न इलाकोमे फैल तो गये थे, लेकिन उनको देशका परिचय कम था, इसलिये हर जगह ग्रामीणोको पथ-प्रदर्शनके लिये मजबूर करते। कितने ही पथ-प्रदर्शकोने उन्हे ऐसी जगह पहुचा दिया, जहा वह रूसी स्वयसेवकोके हाथमे पडकर नष्ट हो गये। ऐसे ही पथ-प्रदर्शकोमे कस्त्रोमाका एक किसान इवान सुसानिन था। उसने पोलोका पथप्रदर्शन करते उन्हे इसुपोव्स्कोयके दलदलमे डाल दिया। पोलोने सुसानिनको मार डाला, लेकिन वह स्वय दलदलमें मरनेसे नही बचे। पीछे इवान सुसानिनका पद्य-नाटक (ओपेरा) बना, जो आज भी रूसियोमे बहुत जनप्रिय है।

१६१२ ई०के अगस्तके अतमे स्वयसेवक-सेनाका मुख्य अग मास्कोकी दीवारोके नीचे पहुचा। यद्यपि उसका जबर्दस्त प्रतिरोध हुआ, लेकिन वह मास्को नदीके तटपर पहुचे बिना नही रहा। स्वयसेवकोका एक मुख्य सेनापति कुजमा मीनिन चार सौ आदमियोके साथ नदीके पार हो पोलोके पक्षपर प्रहार करने लगा। पोल इसकी आशा नही रखते थे, इसलिये पहली ही चोटमे भागकर अपने डेरोमे घुस गये। चार सौ गाडियोमे भरी उनकी रसद कुजमाके आदमियोके हाथमे पडी। मास्कोमे डेरा डाले पडी पोलसेनाको अब न कहीसे अन्न मिलता और न बाहरसे सहायता आनेकी आशा थी। अन्तमे लडाई और भूखकी मारसे परेशान हो २६ अक्तूबर १६१२ ई० को क्रेमलिनके फाटकपर लडाई करते उन्होने आत्म-समर्पण किया और मास्को मुक्त हो गया।

२ रोमनोफ-वंश (१६१३ १९१७ ई०)

मास्कोको मुक्त करनेके बाद जारके निर्वाचनके लिये राष्ट्रीय सभा (जेम्स्की सबोर)को बुलाया गया। सभामे सबसे ज्यादा जनप्रिय बायर रोमनोफ थे, जिनकी लडकिया जार इवान IV और फ्योदोरको ब्याही थी। सामन्तो और बायरोको उनसे भूमि, किसान तथा दूसरी चीजोके मिलनेकी आशा थी। रोमनोफ-परिवारका प्रधान व्यक्ति फिलारेत था, जो कि रस्तोफका सघराज किन्तु अब पोलदमे बदी होकर चला गया था। वह साधु भी था, इसलिये जार नही बन सकता था। १६१३ ई०के आरम्भमे राष्ट्रीय सभाने उसके सोलह वर्षके पुत्र मिखाइलको जार निर्वाचित किया, जो बुद्धि और आचरण दोनोमे दुर्बल था।

रोमनोफ-वश रूसका अन्तिम राजवश था, जो कि अकबरकी मृत्युके सात साल बाद अस्तित्व-मे आ १९१७ ई०की बोल्शेविक क्रान्तितक शासन करता रहा। इस वशके अन्तिम आठ जार नाममात्रके ही रोमनोफ थे, वह वस्तुत जर्मन थे, जिसके कारण दरबारमे हमेशा जर्मनोकी तूती बोलती रही। इस वशमे निम्न जार हुये—

१	मिखाइल, फिलारेत-पुत्र	१६१३–४५ ई०
२	अलेक्सान्द्रा, मिखाइल-पुत्र	१६४५–७६ ”
३	फ्योदोर, अलेक्सान्द्रा-पुत्र	१६७६–८२ ”
४	इवान५, अलेक्सान्द्रा-पुत्र	१६८२–९६ ”
५.	पीतर१, अलेक्सान्द्रा-पुत्र	१६९६–१७२५ ”
६	एकातेरिना, पीतर I-पत्नी	१७२५–२७ ”

७	पीतर II, अलेक्सान्द्र-पुत्र	१७२७–३० ई०
८.	अन्ना, इवान V-पुत्री	१७३०–४० "
९	इवान VI, अन्ना-पुत्र	१७४०–४१ "
१०	एलिजावेथ, पीतर I-पुत्री	१७४१–६१ "
११	पीतर III, पीतर I-नाती	१७६१–६२ "
१२	एकातेरिना II, पीतर III-पत्नी	१७६२–९६ "
१३.	पावल I, पीतर III-पुत्र	१७९६–१८०१ "
१४	अलेक्सान्द्र I, पावल I-पुत्र	१८०१–२५ "
१५	निकोलाइ I, पावल I-पुत्र	१८२५–५५ "
१६	अलेक्सान्द्र II, निकोलाइ I-पुत्र	१८५५–८१ "
१७	अलेक्सान्द्र III, अलेक्सान्द्र II-पुत्र	१८८१–९४ "
१८	निकोलाइ II, अलेक्सान्द्र III-पुत्र	१८९४–१९१७ "

१. मिखाइल, फिलारेत-पुत्र (१६१३–४५ ई०)

वस्तुत शासनसूत्र मिखाइलके नामसे अव उसकी मा और सवधियोके हाथमे था । नई सरकारको देशमे व्यवस्था कायम करनेमें काफी दिक्कतका सामना करना पडा । अस्त्राखानमे भागे हुये जारुत्स्कीने अपनेको जार दिमित्रि घोषित किया, लेकिन उसको सहायता नही मिली और अन्तमें लोगोने उसे और उसकी स्त्री मरीनाको पकडकर सरकारके हवाले कर दिया । जारुत्स्कीको मास्कोमें फासी हुई, मरीना जेलमें मरी और उसका वच्चा भी फासीपर चढा दिया गया । यद्यपि पोलन्दसे सघर्ष कम हो गया, लेकिन रूसकी भीतरी कमजोरियोको देखकर स्वीडो-ने नवोगोरदपर अधिकार करके सघर्ष जारी रक्खा । उनसे छुटकारा १६१५ ई०मे प्स्कोफमे उनके प्रसिद्ध योद्धा राजा गस्ताव अदलफसको हराकर ही हुआ । रूसी भी लडाई वढाना नही चाहते थे, क्योकि उसके कारण देशका व्यापार तथा सारा आर्थिक जीवन चौपट हो गया था, लोगोकी हालत वुरी थी । इगलैण्ड और हालैडको वीचमे डालकर १६१७ ई०के आरम्भमे, स्तोल्वोवोकी सधि हुई, जिसके अनुसार स्वीड सेनाने यद्यपि नवोगोरद और उसके इलाकेको खाली कर दिया, लेकिन फिनलन्द-खाडीका सारा तट तथा कितने ही नगर अपने हाथमे ही रखे, इस प्रकार रूस वाल्तिक समुद्रसे वचित रहा । व्लादिस्लाव अभी भी रूसी सिंहासनकी आशा नही छोडे था । १६१८ ई०मे वह एक वार मास्कोतक पहुचा, लेकिन वहासे मार भगाया गया । आखिर उसने भी १६१८ ई०के अन्त में साढे चौदह सालके लिये मास्कोके साथ सधि कर ली, लेकिन स्मोलेन्स्क और आसपासके इलाके तथा सेवेर्स्क (चेरगीनोफ)के इलाकेको पोलोने नही छोडा । इस सधिके वाद जारका पिता फिलारेत रोमनोफ वदीखानेसे मुक्त हुआ । मास्को पहुचनेके तुरन्त ही वाद उसे सारे रूसी चर्चका महा-सघराज वना दिया गया और अवसे जीवनभर (१६१९–३५ ई०) वही रूसका वास्तविक शासक था । सभी राजादेश जार और उसके वापके नामसे निकाले जाते थे । फिलारेतको महास्वामी ("वेलीकी गसुदार")की उपाधि मिली थी । वह अव धर्म और राज्य दोनोका कर्णधार था । इस असीम शक्तिको इस्तेमाल करके उसने केन्द्रीय सरकारको वहुत मजवूत किया । मास्कोने १६३२ ई०में स्मोलेन्स्कको लौटानेकी कोशिश की, लेकिन पोलन्दने राजनीतिक चालसे क्रिमियाके तारतारोको मास्कोसे उलझा दिया, और इस प्रकार उस साल स्मोलेन्स्कका अभियान व्यर्थ गया । १६३३ ई०मे महासघराज फिलारेत मर गया ।

इस समय पोलन्दके षड्यन्त्रके कारण मास्कोके दक्षिणी सीमातको क्रिमियाके तारतारोंसे वहुत खतरा पैदा हो गया था । वह जव-तव रूसके भीतर घुसकर गावो और शहरोमे लूटपाट मचाते थे । प्रतिरक्षाके लिये दक्षिणी सीमातकी मोर्चावदी अव आवश्यक हो गई थी । तारतार दोनके कसाको-पर भी हमला करते थे, इसलिये वह भी उनको दवानेके लिये सव तरहसे तैयार थे । क्रिमियाके

तारतारोकी पीठपर उधर तुर्कोका सुल्तान भी था, जिसका अधिकार काकेशससे अजोफ समुद्रके तट तक था। १६३७ ई०मे दोनके कसाकोने अजोफके किलेपर आक्रमण किया। दोन नदीद्वारा अजोफ-समुद्रके भीतर पहुचनेमे तुर्कोका यह किला भारी बाधक था। दो महीनेके मुहासिरेके बाद कसाकोने किलेको सर कर लिया। तुर्की सुल्तान इसे कैसे बरदाश्त कर सकता था? उसने १६४१ ई०मे शक्तिशाली तोपखानेके साथ एक भारी सेना उनके विरुद्ध भेजी। मुट्ठी भर कसाक सेनाने चौबीस बार तुर्कोके आक्रमणको विफल कर दिया। अन्तमे एक और बडे आक्रमणके समय उन्हे मास्कोसे सहायता मिली। मिखाइलकी सरकार बिना जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय सभा)की सम्मति लिये तुर्कोके साथ युद्ध नही छेडना चाहती थी। सभाने उसके लिये स्वीकृति नही दी, इसपर सरकारने कसाकोको अजोफ छोडकर चले आनेकी आज्ञा दी।

यह १७वी सदीका मध्य या शाहजहाका समय था। उस समय भारतके किसानोकी भी हालत रूसके किसानोसे बेहतर नही थी। जमीन बडे-बडे जमीदारो और सामन्तोकी थी, जो अपने विला-सितापूर्ण जीवनके लिये उनका अधिकसे अधिक शोषण करते थे। किसानोके लिये अपने गावोमें अब आशा नही रह गई थी। उनमेंसे कितने ही किसानी छोडकर व्यापारी बन गये और कुछ दूसरी जगहो में भाग गये। १७वी शताब्दीके ये जमीदार अपने किसानो, अर्धदासो और कारीगरोके हाथके कामो से सतुष्ट नही थे। राजधानीके धनी अमीर और बायर इतालीके मखमल, इगलैण्डके ऊनी कपडो और विदेशी समूरी टोपियोको पहनते थे। उनको बहुमूल्य आभूषणो और विदेशी शराबोका चसका लग गया था। उनके घरोमें बहुत तरहकी विदेशी चीजे इस्तेमालमे आती थी और यह सारी विलास-सामग्री किसानोकी कमाईसे मिले पैसेके बलपर ही खरीदी जा सकती थी। उदाहरणके लिये उस समयके एक बहुत बडे बायर बोरिस इवान-पुत्र मोरोजोफको ले लीजिये। उसके पास तीन सौ गाव थे, जिनमें चालीस हजार अर्धदास रहते थे, जिनसे उसे दस हजार रूबल मासिककी आमदनी थी, जो आजकलके हिसाबसे लाखो रुपया होगा। उसकी बहुतसी बखारे थी, जिनमे लाख पूद (१ पूद=१८ सेर) अनाज भरा रहता था। पोलन्दके साथकी लडाईमे अनाजका भाव महगा हो गया। उस समय अपने अनाजको बेचकर मोरोजोफने बहुत पैसा जमा किया। उसकी जमीदारीमें सात सौ नौकर थे, जो किसानोकी अलग नोच-खसूट करते रहते थे। मोरोजोफके पास इतना पैसा जमा हो गया था, कि उसने उससे लोहेका कारखाना, पोटाश-कारखाना कायम किये और अपने किसानोको वहा जाकर काम करनेके लिये मजबूर किया। उसके पोटाशको विदेशी व्यापारी खरीद ले जाते थे।

अब कारखानोंके बढानेकी अवश्यकता समझी जाने लगी थी। लडाईके लिये लोहेकी सबसे अधिक अवश्यकता होती है, इसलिये लोहेकी उपज बढाने के लिये एक डच व्यापारी एडरू विनियस को लोह-धूनो (ओर)मे काम करनेका ठेका दिया गया और उसने तुलामे पहला लोहेका कारखाना खोला, जिससे आगे चलकर तुला रूसका लौह-केन्द्र बन गया। उसके कुछ समय बाद एक स्वीडने मास्कोके पास काचका कारखाना खोला।

कारखानेका रवाज यद्यपि बढने लगा, लेकिन अब भी व्यापार रूसके आर्थिक जीवनमे खास स्थान रखता था, जिसके कारण कितने ही विदेशी राज्योसे उसका घनिष्ठ सबध स्थापित हुआ। इसी समय पश्चिमी युरोपसे व्यापार करनेके लिये अर्खन्गेल्स्क प्रधान बदरगाह बन गया। गर्मियोमे जब समुद्र बर्फसे मुक्त रहता, तो बहुत-से अग्रेज, डच और जर्मन जहाज अपना-अपना माल लेकर वहा पहुचते—जिसमें ऊनी कपडे, रेशमी कपडे, मूल्यवान् बर्तन तथा दूसरी विलासिताकी चीजे होती। रूसी व्यापारी नावोमे साइबेरियाके समूर, चमडे, भागके कपडे, पोटाश, शूकरमास तथा गावो और नगरोंके कारीगरोकी बनाई और भी कितनी ही चीजें भरकर उत्तरी द्विना नदीसे हो अर्खन्गेल्स्क पहुचते। वहा दोनो ओरसे क्रय-विक्रय होता। एसियाके साथ व्यापार मुख्यत अस्त्रा-खानद्वारा होता था, जहापर बुखारी और ईरानी व्यापारी पूर्वी देशोंके मालको लेकर पहुचते थे। इस व्यापारसे लाभ उठानेके लिये हमारे भारतीय व्यापारी और कुछ कारीगर भी अस्त्राखानमें

जा पहुचे थे। इवान IVने भारतीय कारीगरोको वहासे मास्को बुलवा मगवाया था। व्यापारके बढानेके कारण अब नगरोकी सख्या और समृद्धि बढने लगी और धनी व्यापारियोका एक अलग वर्ग स्थापित होने लगा। देशकी शाति और केन्द्रीकरणने इस काममें बडी सहायता की।

चीनतक प्रसार—रूसका विस्तार साइबेरियामे पूर्वकी ओर हो रहा था। ऐसी अवस्थामे चीनके बारेमे ज्यादा जानकारी प्राप्त करना उसके लिये आवश्यक था। बुखाराके व्यापारी जहा एक ओर अपने कारवाको लेकर चीनमें पहुचते थे, वहा दूसरी ओर वह अस्त्राखान भी आते थे। सम्भव है, उनके साथ कुछ चीनी भी रूसमे पहुचे हो, लेकिन रूस अब पेकिङ्से ज्यादा नजदीकका सबध स्थापित करना चाहता था। १५६७ ई०मे ही पेत्रोफ और यालीसेफ नामक दो कसाकोको इसलिये भेजा गया, कि वह पडोसी लोगोकी भाषा, रीति-रवाज आदिके बारेमे जानकारी प्राप्त करे। उन्हे विशेषकर चीन-राज्य, मगोलोकी भूमि और ओब महानदीके बारेमें जानकारी प्राप्त करनी थी। वह पेकिङ्-की ओर बढते हुये कलगनतक पहुचे। लेकिन देवपुत्र सम्राट्के लिये वह कोई भेट नही लाये थे, इसलिये सम्राट् मू-चुङ् (१५६६-७२ ई०)के दरबारमे गये विना ही उन्हे लौटा दिया गया। १६०८ ई०मे फिर इसके लिये कोशिश की गई, जिसमे मगोल राजा अल्तनखाकी फिर सहायता ली गई, लेकिन इसका भी कोई परिणाम नही निकला। इसके बाद जार मिखाइलके समय १६१६ ई०मे तुमे-नेत और पेत्रोफ नामक दो कसाकोको तोबोल्स्कसे इसी कामके लिये भेजा गया। वह चीन तो नही पहुच सके, लेकिन अल्तन खानके दरबारमे कुछ समयतक रहे और खानने रूसी जारके अधीन होना स्वीकार किया। १६१९ ई०में पेंतलिन और मदोफ भेजे गये। वह भी अपने साथ भेंट नही लाये थे, इसलिये चीनी सम्राट्के दर्शनसे वचित रहे। हा, उन्हे चीनकी ओरसे एक चिट्ठी दी गई, जिसे लेकर वह तोबोल्स्क लौटे, लेकिन उस चिट्ठीको उस समय कोई नही पढ सका, और डेढ सौ साल बाद १७७६ ई०मे पेकिङ्में लाकर एक जेसुइत पादरीकी सहायतासे उस चिट्ठीका अनुवाद कराया गया।

इस प्रकार मिखाइलके समयमे चीनके साथ कोई बाकायदा दौत्य-सबध स्थापित नही किया जा सका।

मिखाइलके मरनेके बाद उसका पुत्र अलेक्सी सोलह वर्षकी आयुमे गद्दीपर बैठा।

२ अलेक्सी, मिखाइल-पुत्र (१६४५–७६ ई०)

लडके जारको बाज उडाने और दूसरे खेलोका बडा शौक था और राज्यकी सारी शक्ति एक धनी बायर बोरिस इवान-पुत्र मोरोजोफके हाथमे थी, जिसने सभी ऊचे पदोपर अपने भाई-भतीजे-भाजोको भर दिया। जारके वशसे और भी घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये उसने एक साधारण बायर मिलोस्लाव्स्कीकी एक लडकीका ब्याह जार अलेक्सीसे करवा उसकी दूसरी लडकीको स्वय ब्याह लिया। पोलन्दके युद्धके कारण देशकी आर्थिक हालत बहुत खराब हो गई, और साथ ही युद्धमे असफलता भी रही। मोरोजोफको सबसे पहले राजकोषकी स्थिति सुधारनी थी, इसके लिये उसने जहा सैनिकोका वेतन कम किया, वहा कई कर लगाये, जिनमे सबसे भारी नमकपर था। नमक इतना महगा हो गया, कि लोग मछली सुरक्षित रखनेके लिये उसे खरीदकर नही लगा सकते थे, जिसके कारण हजारो मन मछलिया सडने लगी, और मोरोजोफ-को जल्दी ही इस करको उठा देना पडा। इन सब कारणोंसे लोगोकी हालतपर इतना बुरा असर पडा, कि अलेक्सीके आरम्भिक शासनकालमे कितने ही विद्रोह हुये। १ जून १६४८ ई०को तीर्थ-यात्रासे लौटकर जार मास्को आया, तो लोगोने उसके पास जाकर मोरोजोफकी लूट-खसूटके बारे-मे शिकायत की। उस दिन आवेदन-पत्र देनेवालोको कोडोकी मारसे भगा दिया गया, लेकिन दूसरे दिन एक जन-समूहने क्रेमलिनके दरवाजेसे राजमहलमे पहुचकर माग की, कि नगर-कोतवाल ल्योन्ति प्लेश्चेयेफको हमारे हवाले किया जाय। ल्योन्ति बडा ही क्रूर और पाशविक अत्याचारी था। बायर शान्त करनेके लिये आये, लेकिन उन्होने उन्हे भगा दिया। इसके बाद जनताने बायरो और सरकारी अफसरोंके घरोपर आक्रमण किया। एक बडा अफसर मार डाला गया, नगरमे जगह-जगह

आग लगा दी गई, सन्त्रस्त जारने प्लेश्चेयेफ और त्रखानियोतोफ दो जालिम दरबारियोको जनता के हाथमे दे दिया, जो उसी समय मार डाले गये। फिर लोगोने मोरोजोफके शिरकी माग की। लाल मैदान*मे भारी भीड उमड आई थी। जारने लोगोंके सामने कसम खाकर अपने आदमियो द्वारा कहलवाया, कि मोरोजोफको सरकारसे निकाल दिया जायगा। उसी रातको उसे मास्कोसे निकाल-कर एक दूरके मठमे भेज भी दिया गया। इसी समय कितने ही असतुष्ट सामन्त भी आ गये और नागरिको तथा सामन्तोने मिलकर जारके पास आवेदन भेजा, कि एक नई विधान-सहिताके बनानेके लिये जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय सभा)को बुलाया जाय।

मास्कोके अतिरिक्त दूसरे शहरोमें भी विद्रोह उठ खडे हुये थे, इसलिये जारको राष्ट्रीय सभा जल्दी-जल्दी बुलानी पडी। सभाके सदस्योमे बहुमत नागरिको और जनपदीय सामन्तोका था। सभी मागोको मान लिया गया और जनवरी १६४९ ई०मे नई विधान-सहिता स्वीकार की गई। शाहजहाके कालमें बनी इस विधान-सहिताद्वारा किसानोंके ऊपर सामन्तोका पूरा अधिकार स्थापित करके उन्हे अर्ध-दास बना दिया गया। नागरिकोको यह अधिकार मिला, कि सभी बायरो और चर्चकी जायदाद दीहात नही नगरोकी मानी जाय, और उन्हे सामन्तो और अमीरोकी तरह कर उगाहने और राजसेवाओका अधिकार मिले। १६५० ई०मे नबोगोरद और प्स्कोफमें विद्रोह हो गये, जिनमे प्स्कोफका विद्रोह विशेष तौरसे खतरनाक था। लोगोने जारके बोयबद (राज्य-पाल)को हटाकर वहा स्वायत्तशासन स्थापित कर लिया और जारसे माग की, कि बोयबदकी अदालतमें हमारे अपने प्रतिनिधियोको बैठनेकी इजाजत होनी चाहिये। मास्कोने इसका जवाब दिया—"कभी ऐसा नही हुआ, कि बायरो और बोयबदोंके साथ अदालतमे कमेरे (मूजिक) बैठें।" प्स्कोफके विरुद्ध सरकारी सेना गई, लेकिन उसे बुरी तौरसे हारना पडा। पीछे जब वहाके बनियो और अमीरोने देखा, कि इस सघर्षमें उनका भी ठौर-ठिकाना नही रहेगा, तो उन्होने विश्वासघात करके जारके निरकुश अधिकारको फिरसे स्थापित करनेमे मदद दी—१६५० ई०के विद्रोहोको दमन करनेमें भावी महासघराज निकोनका खास हाथ था।

शासन-प्रत्र—जारका अधिकार असीम था। जो कानून और नियम बनाये गये थे, उनका अन्तिम लक्ष्य यही था, कि अर्ध-दासो और किसानोंके ऊपर बायरोका पूरा अधिकार रहे। जार सबके ऊपर स्वेच्छाचारी शासक ही नहीं था, बल्कि देशका वह सबसे बडा बायर (जमीदार) भी था। अमीरो और दूसरे जमीदारोंके लिये यह जरूरी था, कि जारकी शक्ति खूब दृढ हो, जिसमें वह उनके वर्ग-स्वार्थकी रक्षा कर सके। जारकी इच्छा ही सारे देशके लिये विधान थी। सामन्ती कुलोंके बायर भी अपनेको जारका सेवक कहते थे और गाव या नगरके साधारण लोग तो अपनेको वह भी नही कह सकते थे। वह जारके "नन्हेंसे अनाथ" थे। जारको सम्बोधित करनेपर वह अपने-को छोटा बनाते हुये पीतरकी जगह पेतरूशका (पीतरवा), इवानकी जगह इवाशका (इवनवा) कहते थे। जारको वह देवता मानते हुये धरतीपर ललाट रखकर उसे प्रणाम करते।

राज्यके महत्त्वपूर्ण विषयोपर निर्णय करनेका काम जारके दरबारी बायरोकी दूमा (परिषद्) करती थी। इस परिषद्में केवल सामन्त (राजुल) और बायर ही सम्मिलित होते थे, लेकिन १७वी शताब्दीमें साधारण कुलके प्रभावशाली नये धनी भी उसमें सम्मिलित कर लिये गये।

सरकारी दफ्तरोंके कई दर्जे और विभाग थे। एक विभागका नाम "प्रिकाजी" था, जिसका मुखिया एक बायर और जिसके एक-दो सहायक-लेखक (द्याकी) होते। आफिसके साधारण कामोको पद्याचिये (निम्न-लेखक) करते। सैनिक काम-काजकी व्यवस्था अलग थी। रज्र्याद्नी-प्रिकाज (सैनिक आफिस) सेना-सचालन विभागका काम करता था। स्त्रेलेत्स्की आफिसका काम था, स्त्रेलेत्स्की सैनिकोंके कामको देखना, पसोल्स्की प्रिकाज (दूत-कार्यालय) विदेश-विभागका काम देखता। स्थानीय शासन-प्रबन्धके मुखिया बोयबोद (राज्यपाल) होते, जो राज्यके नगरोंके शासनके लिये

*लाल या "क्रास्नी" रूसी शब्दका अर्थ सुदर और रक्त दोनो है, पहिले इसका अर्थ "सुदर मैदान" लिया जाता था, किन्तु बोल्शेविक क्रातिके बादसे क्रातिके प्रिय रग लालको माना जाने लगा।

वायरो और सामन्तोमेंसे नियुक्त किये जाते । वोयवोद नगरके सैनिक और असैनिक सभी अधिकारो का प्रमुख था। वही न्याय प्रवन्ध करता, नगर और उसके इलाकेके लोगोसे कर उगाहता, एक तरहसे वह अपने इलाकेका स्वच्छद जार था।

चर्च सुधार—रूस सदियोसे ग्रीक चर्चका पक्का अनुयायी था। चर्चके साधुओ-पुरोहितो. एव मठो-गिर्जोंका जाल गावोमे भी विछा हुआ था, लेकिन तबतक अभी उसका पूरी तौरसे केन्द्रीकरण नही हुआ था—यही नही कितने ही कर्मकाड और रीति-रवाजको लेकर चर्चकी कई शाखाये हो गई थी । प्स्कोफमे लोगोके आन्दोलनको दवानेमे मदद देनेवाला निकोन अव महासघराज था। निकोन मठोकी जायदादके साथ अपनी इच्छानुसार जैसा चाहता वैसा करता। उसके पास वहुत भारी निजी सम्पत्ति थी। वह चर्चके भीतर अपनेको सर्वशक्तिमान् जार समझता था। उसके अत्याचारोंके कारण साधु-पुरोहित उसे "जगली जानवर" कहते थे। निकोनने चाहा, कि भेदोको मिटाकर सारे चर्चको एक कर दिया जाय। इसके लिये उसने पूजा-पद्धतियो और रीति-रवाजोमें परिवर्तन करनेकी आज्ञा दी। निकोनके सामने पश्चिमी चर्चके रोमन-पोपका उदाहरण मौजूद था। उसने अपनेको पूर्वी चर्चका पोप बनाना चाहा। ग्रीक और कियेफके सुशिक्षित साधुओ-ने पद्धतियो और क्रिया-कलापोके सशोधनका काम किया। निकोनने आज्ञा दी, कि पहले जैसे दो अगुलियोंसे सलेव खीच पूजाकी मुद्रा की जाती थी, अव उसे तीन अगुलियोसे करना चाहिए। वढते-वढते उसने इस सिद्धान्तको भी चलाना चाहा, कि आध्यात्मिक (धार्मिक) शासन सासारिक शासनसे ऊपर है "आध्यात्मिक शासन सूर्यकी तरह है, जब कि सासारिक शासन चन्द्रमा जैसा है—चन्द्रमा अपना प्रकाश सूर्यसे प्राप्त करता है।" निकोन "महास्वामी" (बैलीकी गसूदर) की उपाधि धारण कर राजकाजमे भी दखल देने लगा—सैनिक अभियानो तकके लिये भी आज्ञा निकालने लगा। उसकी इस अनधिकार चेष्टासे सामन्तो और अमीरोमे भारी असतोष पैदा हो गया। यद्यपि वह चर्चको मजबूत करनेके निकोनके प्रयत्नको पसद करते थे, लेकिन नही चाहते थे, कि महासघराजके सामने जार अकिंचन हो जाये। होते-होते इस वैमनस्यने भयकर रूप धारण किया, जिसपर निकोन एकाएक अपने पदको छोड एक मठमे एकातवासी वन वैठा। उसने समझा था, कि दरवारी खुशामद करते उसे फिरसे पद सभालनेके लिये प्रार्थना करेंगे, लेकिन उसे निराश होना पडा। निकोनके कामोकी जाच करनेके लिए जारने १६६६ ई०मे दो ग्रीक सघ-राजोकी समिति बनाई। समितिने अपना निर्णय दिया, कि निकोनने राजशक्ति हथियानेका प्रयत्न किया। तो भी उसके चर्च-सबधी सुधारोको स्वीकार किया गया। निकोनको एक साधारण साधु बनाकर उत्तरके एक मठमें निर्वासित कर दिया गया।

निकोनने जो सुधार किये थे, उससे यद्यपि रूसी चर्चमे एकता स्थापित हुई, लेकिन कितने ही सनातनियोने इन सुधारोको माननेसे इन्कार कर दिया। उन्होंने "रस्कोल्निकी" (मतभेदी) अथवा पुराणविश्वासी नामसे अलग सम्प्रदाय वना लिया। आज भी रस्कोल्निकी कितनी ही जगहों-में काफी सख्यामे मिलते हैं। इन विरोधियोमें एक मास्कोका अव्वाकुम था, जिसे उसके विरोधके लिये पूर्वी साइबेरियामे निर्वासित कर दिया गया, जहा प्राय दस वर्षोतक जारके वोयवोदोने उसके साथ वडा कठोर वर्ताव किया। निर्वासनके वाद अव्वाकुमने रूस लौटकर फिर अपने कामको शुरू किया। अब उसे उत्तरमें पुस्तोजेर्स्क स्थानमें बदी बनाकर एक अधेरे तहखानेमें डाल दिया गया। राज्यको इतने हीसे सतोष नही हुआ, वल्कि १६८१ ई०में अव्वाकुमकी होली जलाई गई। वहुत दिनोतक रस्कोल्निकी सम्प्रदायका मुख्य केंद्र रूससे वाहर रूमानियामें था। क्रान्तिके वाद ही उनके साथका भेदभाव दूर हुआ, और उनका केन्द्र रूसकी भूमिमें चला आया।

उक्रइनका मिलन—१५६९ ई०में लिथुवानिया और पोलन्दमे एक समझौता हुआ, जिसके अनुसार दोनो एक हो गये। उसी समयसे उक्रइनका वहुत वडा भाग पोलन्दके हाथमे चला गया। उक्रइनी लोग पोल जमीदारो और सामन्तोके जूयेके नीचे कराह रहे थे। सवसे अच्छी भूमिको लेते वढते-वढते द्नियेपर नदीके वाये तटके गावोंके भी स्वामी पोल वन गये। ऐसे आर्थिक शोषण, राज-

नीतिक अत्याचार और दुर्व्यवहारको उक्रइनी लोग कवतक चुपचाप वर्दाश्त करते ? स्लाव जाति-के होनेपर भी पोल जहा कैथलिक होनेसे रोमके पापाको भगवान्का अवतार मानते, वहा उक्रइनी ग्रीक चर्चके अनुयायी थे। पोल अमीर और जमीदार चाहते थे, कि उनके किसान भी रोमके पापाको माने, ताकि विना चू-चिराके हमारे जूयेको उठाते रहे। इसके लिये भी कोशिश की जाने लगी, कि कैथलिक और ग्रीक चर्चको एक संघमें मिला दिया जाये। योजना यह थी, कि दोनो चर्च पूजा-पद्धति अपनी-अपनी रक्खे, लेकिन रोमके पापाको अपना प्रमुख मानें। इस कामके लिये १५९६ ई०में ब्रेस्त नगरमे एक चर्च-सभा बुलाई गई। सभाका वहुमत इसे नही पसद करता था, कि ग्रीक-चर्च रोम-चर्चके अधीन हो जाये, तो भी अल्पमतके निश्चयको स्वीकार करते पोल राजा-ने वैसा राजादेश निकाल दिया। इसपर असतोष वढना ही था। धार्मिक एकताकी आडमे असल उद्देश्य तो था, किसानो और कसेरोपर अमीरोका निर्वाध अधिकार स्थापित करना। अत्याचारोके मारे कितने ही उक्रइनी और वेलोरुसी किसान भागकर निम्न-द्नियेपर-उपत्यकाकी खाली जगहोमे चले गये जो ज़ापरोज़े कसाकके नामसे प्रसिद्ध हुये। इसी समय रूसी जमीदारो के अत्याचारोसे वचनेके लिए बहुतसे किसान दोन-उपत्यकामें भाग गये, जो दोन-कसाक कहलाये। उक्रइनके भगोडे किसानोने द्नियेपरके जल-प्रपातके पास खोर्तित्सा द्वीपमें अपना एक दुर्ग बनाया। अवतक तुर्क और क्रिमियाके तातार उक्रइनकी भूमिमे घुसकर लूट-मार करना अपना हक समझते थे, लेकिन अब ज़ापरोज़े कसाक कालासागरके तटकी उनकी भूमिमे हाथ साफ करने लगे। इनका कोई एक निश्चित निवासस्थान नही था। जब लूट-मारसे काफी माल प्राप्त हो जाय, और थोडेसे पशु-पालनसे काम चल जाये, तो स्थायी वस्ती वावनेकी क्या अवश्यकता ? कही-कही उनके मोर्चाबंदी किये डेरे होते थे, जिन्हे सेच कहा जाता था। वसतके आरभमे कसाक सेचपर जमा होते। उस समय यह द्वीप जनसकुल हो उठता। इसी समय कसाक अपना मुखिया (अतमन) तथा दूसरे सेनानायक निर्वाचित करते। सैकडो कसाक वीरी (वेद) की लकडीकी नावे वनाने या मरम्मत करनेमें लग जाते, हथियारोको ठीक करते। सव तैयारी हो जानेके वाद इन्ही नावोपर चढकर वह वडी तेजीसे कालासागरमे पहुच जाते, और फिर तट-भूमिपर लूट-मार शुरू कर देते। कभी-कभी तो वह सुल्तानकी राजधानी कान्स्तन्तिनोपोलतक भी धावा मारते। उनकी नावोकी गति इतनी तीव्र होती, कि तुर्क सतरी खतरेकी खवर भी नही दे पाते थे। जाडोमे कसाकोकी सेच जनशून्य हो जाती। उस समय वह अपने लूटके मालको ले जाकर उक्रइन और पोलन्दके नगरोमे वेंच दूसरी चीजे खरीदते।

१६वी शताव्दीके अन्तमे ज़ापरोज़े कसाकोकी सख्या काफी वढ गई। पोल राजा स्तेफन वाथोरीने उनकी सैनिक क्षमताको देखकर उन्हे अपना सचिकावद्ध (रजिस्टरवद्ध) सैनिक वनाना शुरू किया—जिसके कारण ऐसे कसाक "रजिस्टरवद्ध कसाक" कहे जाने लगे। उनको राज्य-की ओरसे कुछ वेतन तथा शहरोमे रहनेके लिये मकान मिलते थे। रजिस्टरमे नाम लिखे कसाकोकी सख्या वहुत कम थी। १६वी सदीके अन्तमें ज़ापरोज़े कसाकोमे भी धनी-गरीवका भेद स्थापित हो गया। राजा उनके सरदार (हेतमन, अतमन) को अपना अफसर वनाता।

धनी-गरीवके भेदने उक्रइन और वेलोरसियामें जनसाधारणको विद्रोह करनेके लिये मजवूर किया। इन विद्रोहोमे ज़ापरोज़े कसाक प्राय किसान-विद्रोहियोका साथ देते—कभी-कभी रजिस्टर-वद्ध कसाक भी उनके सहायक वन जाते। विद्रोही किसान पोल जमीदारोकी गाडियोमे आग लगा देते, और हाथ लगनेपर उन्हे मार भी डालते। पोल फिर सेना लेकर आते और किसानोंसे वडी क्रूरताके साथ वदला लेते। इस वक्त भी कितने ही विद्रोही किसान अपने गावोको छोडकर मध्य-द्नियेपर-के घने जगलोमे भाग जाते, जहासे अपने शत्रुओपर छापामारी करते।

१६३० ई०के आसपास ज़ापरोज़ेकी सेच पोलोंके खिलाफ एक वार फिर उठी, जिसे आसानीसे दवा दिया गया, क्योंकि उनके धनी मुखिया और सरदार विश्वासघात करनेके लिये तैयार थे। पोलोंने ज़ापरोज़े कसाकोको उक्रइनमें घुसनेसे रोकनेके लिये द्नियेपरके प्रपातके ऊपर कोदकम फ्रेंच

इजीनीयरके तत्त्वावधानमे एक किला बनवाया, जिसके तैयार हो जानेपर पोल हेतमनने कसाकोके साथ मजाक करते हुये कहा—"कोदकके बारेमे तुम क्या सोचते हो ?"

"मानव हाथोने जिसे बनाया, वह मानव हाथोद्वारा नष्ट किया जायेगा।"—यह जवाब कसाक सरदार बगदान ख्मेल्नित्स्कीका था।

कुछ वर्षो वाद सचमुच ही कसाकोने कोदक दुर्गको नष्ट कर दिया, और १६३८ ई०से पहले पोल सेना उक्रइनके विद्रोहको नही दबा सकी।

१६४८ ई०के वसतमें फिर लोगोने पोलन्दके खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस विद्रोहके आरम्भक ज्ञापरोज़े कसाक और उनका नेता बगदान (भग-दत्त) ख्मेल्नित्स्की था। बगदान उक्रइनमे बहुत जनप्रिय था। वह शिक्षित था। कियेफकी अकदमीमे उसने पढा था, और लातीनी भाषा भी जानता था। कसाकोके कितने ही साहसपूर्ण अभियानोमें उसने भाग लिया था। अभी वह बीस वर्षसे कुछ ही वडा था, कि पोलोंके साथ मिलकर उसने तुर्कोंके खिलाफ लडाई लडी थी। उस समय तुर्कोंकी सीमा पोलन्दसे मिलती थी, और कितने ही उक्रइनी गाव तुर्कोंके हाथमें थे, जिनके साथ तुर्क वडा दुर्व्यवहार करते थे। बगदानका बाप चेचोरा जासीके पास तुर्कोंकी लडाईमे मारा गया और बगदान स्वय तुर्कोंका बदी बना, जहा उसे दो सालतक रहनेके बाद मुक्ति मिली। बगदान एक अच्छा खाता-पीता समृद्ध जमीदार था, और पोल राजकीय सेनाके रजिस्टरमे भी उसका नाम था। लेकिन, उसके देशभाइयो (उक्रइनियो)के साथ पोलोका जैसा दुर्व्यवहार हो रहा था, उसके कारण बगदान अपनेको रोक नही सका। पोलोका शासन मनमानी था। एक दिन एक पोल जमीदारने दखल करनेका सरकारी परवाना ला एकाएक बगदानकी जमीदारीपर अधिकार कर लिया, और सारे परिवारको जजीरोमे बाघ दिया। बगदानने जब न्याय करनेकी बात कही, तो पोल जमीदारने बगदानके दस वर्षके लडकेको कोडेसे पीटते हुये मार डाला। बगदानने राजाके दरबारमें जाकर न्याय पानेकी कोशिश की, लेकिन वहासे भी उसे खाली हाथ लौटना पडा। जो भी थोडीसी धन-दौलत-जमीदारी उसके पास थी, वह खतम हो चुकी, साथ ही उसके बेटेकी निर्मम हत्या की गई, उसे भी वह भूल नही सकता था। उसने अच्छी तरह समझ लिया, कि इन सारे अत्याचारोका कारण देशकी परतन्त्रता—उक्रइनका पोलन्दके हाथमें रहना है। उसने अपने कसाक-मित्रोको जमा करके उनका एक दल बनाया, और फिर उनसे पूछा—

"क्या हम अपने भाइयोको इस हालतमे छोड दें ? देशमें सभी जगह मैंने अपनी आखो भयकर अत्याचार होते देखा है। हमारे अभागे भाई हमसे सहायता माग रहे है।"

इसके जवाबमे एक बूढे कसाकने कहा—"अब तलवार उठानेका समय आ गया है, पोलोंके ज्येको उतार फेकनेका समय आ गया है।" पोल जमीदारोको भी इसकी भनक लग गई, और उन्होने बगदानको जेलमें डाल दिया, लेकिन वह भागकर ज्ञापरोज़े पहुचनेमे सफल हुआ। अब उसने सगठित रूपसे पोल जमीदारोपर धावा बोलना शुरू किया। पोल अपना सब कुछ छोड जान लेकर भागने लगे। यह खबर सुन उक्रइनमें और जगहोमे भी विद्रोह होने लगे। बगदानने सोचा, हमारी शक्ति और भी मजबूत हो सकती है, यदि क्रिमियाके तारतार खानसे मित्रता हो जाये। इसके लिये वह स्वय क्रिमियाकी राजधानी बक्सीसराय गया। खान उस समय पोल-राजासे बहुत नाराज था, क्योकि कितने ही वर्षोसे उसने भेट नही भेजी थी। खानकी ओरसे बगदानका बडा स्वागत हुआ, और अपने उद्देश्यमें सफल होकर लौटा। खानने बगदानकी मददके लिये अपने एक राजकुमारके नेतृत्वमे तारतार सैनिक भी भेजे। कसाकोने बगदानका भारी सम्मान करते अपनी सभामें उसे कसाक सेनाका हेतमन (मुखिया) घोषित किया और हेतमनके दर्जेका चिह्न एक बुलवा (गदा) भेट की।

१६४८ ई०के वसतसे कसाकोने पोलोपर खूब जोरके साथ आक्रमण करना शुरु किया। गर्मीके आरम्भमे बगदानने एक बडी पोल सेनाको हराया, जिसमें कसाको और तारतारोको बहुत-सा लूट-का माल मिला। सफलताके साथ-साथ अब बगदानके अभियानोने उक्रइनी जनताके मुक्ति-युद्धका

रूर दिया। १६४८ ई०के सितम्बरमे पोल सेनाकी पिल्याव्का नदीके तटपर और भी भयकर हार हुई। इस हारके बाद बगदानके लिये पोल-राजधानी वारसाका रास्ता खुल गया था। वगदान उक्रइनसे पोलोको ल्वोफ और जामोस्तयेतक खदेडकर कियेफ लौटा। लोगोने उक्रइनके मुक्तिदाताके तौरपर उसका स्वागत किया। तीन सौ वर्षोंतक पोलोकी गुलामीमे रहनेके बाद कियेफ अब स्वतन्त्र हुआ था। पोल सरकारने उक्रइनकी शक्तिको समझ लिया और सधि कर लेनेमें ही भलाई समझी। बगदानने माग या प्रतिज्ञा की—"मैं सारी उक्रइनी जनताको पोलोकी गुलामीसे मुक्त करके ही दम लूगा।" पोल दूतोके साथ बातचीतका कोई फल नही हुआ, इसपर १६४९ ई०के ग्रीष्ममे बगदानने नया अभियान शुरू किया। क्रिमियाके तारतार अब भी उसके साथ थे, लेकिन पोलोने प्रलोभन देकर खानको अलग कर दिया और बगदानने अपनी शक्तिको देखते हुये सधि करना ही पसद किया। इस सधिके अनुसार उक्रइनका स्वतन्त्र शासन स्थापित हुआ, जिसका हेतमन बगदान माना गया। रजिस्टरबद्ध कसाकोकी सख्या छ हजारसे चालीस हजार कर दी गई।

१६४९ ई०की ज्बोरोफकी यह शान्ति-सधि भी उक्रइनको पूरी स्वतन्त्रता नही दिला सकी। पोल इस सधिको अपनी आगेकी तैयारीके लिये सिर्फ बहाना बनाना चाहते थे। १६५१ ई०के आरम्भमे उन्होने फिर पश्चिमी उक्रइनपर आक्रमण कर दिया। उसी सालके वसतमे एक बडी सेना लेकर पोल-राजा स्वय चढ आया। पोपने अपने पोल-अनुयायियोको इस धर्मयुद्धमे भाग लेनेके लिये घोषणा की—उक्रइनियोके साथ युद्ध करनेमे जो भी पाप होगा, हम उसको क्षमा करते है। बगदानके साथ क्रिमियाके खानकी सेना थी, लेकिन ऐन-मौकेपर जून १६५१ को बेरेस्तमे तारतारोने धोखा दे दिया। बगदानने जल्दीमे खानके पास जाकर सेनाको लौटनेके लिये कहा, लेकिन खानने सेना लौटानेकी जगह बगदानको ही अपने पास पकड रक्खा। बिना नेताके भी कसाक और उक्रइनी किसान कितने ही दिनोतक मोर्चा बाधे पोलोसे लडते रहे। उन्होने एक असाधारण शक्ति और हिम्मतके धनी पुरुष बोगुनको अपना नेता चुना। कसाकोने अपने पराक्रमका खूब परिचय दिया। एक घिरी कसाक-टोलीके पास पोलोने आत्मसमर्पण करनेके बदले प्राणदान देनेका वचन दिया, जिसका जवाब था—"हमे अपने प्राण प्यारे नही है। हम शत्रुकी दयाको घृणाकी दृष्टिसे देखते है।" यह कहकर वह एक-दूसरेसे गले मिल पोलोंके ऊपर टूट पडे। तीन सौ कसाकोमेंसे एक-एक वीर-गतिको प्राप्त हुआ। इतनी वीरता दिखलानेके बाद भी पोल सेनाको रोका नही जा सका। महीने भर बाद जब खानने बगदानको छोडा, तो कियेफ पोलोंके हाथमें चला गया था और तारतारोने देशको लूटकर बरबाद कर दिया था। १६५१ ई० की शरद्में जो सधि करनी पडी, उसके अनुसार सारे सघर्षमे प्राप्त सभी चीजोको हाथसे खो देना पडा। पोल जमीदार फिर उक्रइन लौटे और विद्रोहमे शामिल होनेके दडस्वरूप किसानोके ऊपर अकथनीय अत्याचार करने लगे। किसान अपने गावोको छोड-छोड दुनियेपरके बायें तटपर जमा हो वहासे रूसी राज्यके भीतर जाकर बसने लगे। पोलोंके अधीनकी उक्रइन-भूमि जल्दी ही जन-शून्य होने लगी, भगोडे उक्रइनी जाकर उत्तरी दोनेत्सकी ऊपरी उपत्यकाकी उर्वर-भूमिको आबाद करने लगे। पोल राजाने क्रिमियाके खानके साथ शाति स्थापित कर उसे चालीस दिनके लिये उक्रइनी जनताको लूटनेकी खुली इजाजत दी थी। क्रिमियाके तारतारोने लूटते-पीटते हजारो स्त्री-पुरुषोको ले जा जिन्दगीभर दास रहने के लिये बेंच दिया। इन्हीके बारेमें एक उक्रइनी लोकगीतमें कहा गया है —

> "उक्रइनी लोग दु ख भुगत रहे हैं, उन्हे कही छिपनेकी जगह नही,
> घुमन्तू सवारोंके ओर्दू बच्चोके शरीरपर दौड रहे है,
> कोमल शिशुओको रौंदते,
> उनके पीछे हथियार—जजीरमें बधे जालिम खानके शिकार।"

१६४८–५१ ई०की लडाइयोंसे उक्रइनियोको इस बातका पता लग गया, कि बिना बाहरी सहायताके पोलोंके हाथमे अपने देशको मुक्त नही किया जा सकता। इसीलिये जब १६५२ ई० में उक्रइनके किसान और कसाक दूसरी बार विद्रोह करनेके लिये तैयार हुये, तो बगदानने
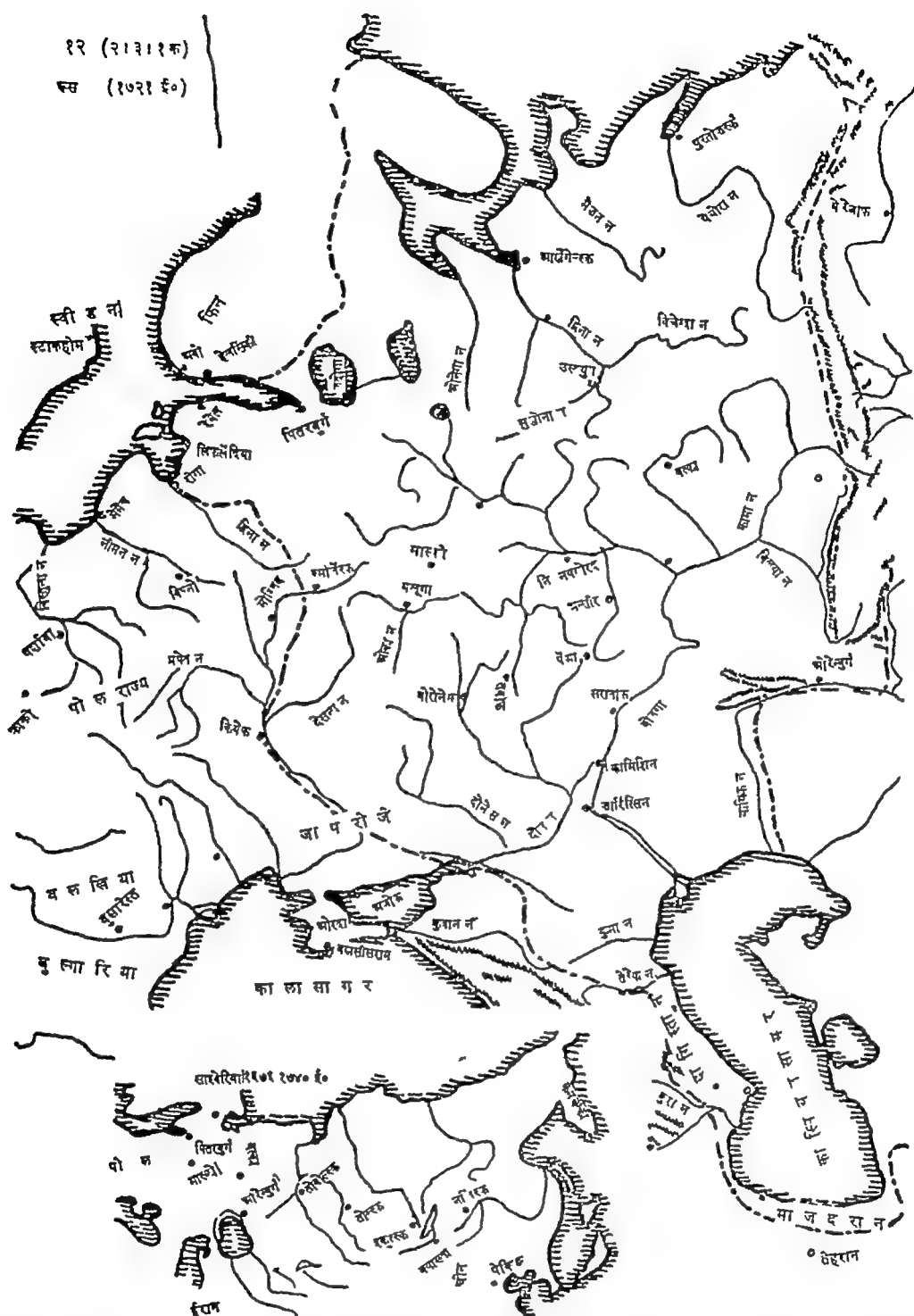
उक्रइनको रूसमे मिला लेनेके लिये मास्को-सरकारसे वातचीत शुरू की । १६५३ ई०के शरद् मे मास्कोमे "ज़ेम्स्की सवोर"के अधिवेशनमें निश्चय हुआ, कि उक्रइनको अपने सरक्षणमें ले लिया जाय, और पोलन्दके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की जाय । ८ जनवरी १६५४ ई०मे उक्रइनी कसाकोके प्रतिनिधियोका सम्मेलन—रादा—पेरेयास्लाव्लमे हुआ, जिसमे मास्कोके दूत भी शामिल हुये थे । रादाको सम्बोधित करते वगदानने अपने लोगोकी दयनीय अवस्थाका चित्र खीचते हुये कहा था—

"तुम सब जानते हो, कि हमारा शत्रु हमे पूरी तौरसे मिटा देना चाहता है, जिसमें हमारी भूमिमें रूस (उक्रइनी) नाम फिर कभी न लिया जा सके। इसीलिये तुम चार शासकोमे से किसी एकको अपने लिये चुन लो पहला है तुर्कीका सुल्तान, जो कि ग्रीकोपर जुल्म ढा रहा है, दूसरा है क्रिमियाका खान, जिसने हमारे भाइयोके खूनसे अनेक वार अपने हाथोको रगा है, तीसरा है पोल-राजा, जिसके अमीरोंके अत्याचारके वारेमे कहनेकी अवश्यकता नही और चौथा है महारूसका पूर्वी जार ।"

हजारो कठोने एक जवाब दिया —"हम पूर्वी जारके अधीन रहना चाहते है ।"

इसके बाद मास्कोमे समझौता हुआ, और रूसने उक्रइनके स्वायत्त-शासनके अधिकारको स्वीकार किया—उक्रइनी सरकारके लिये लोकनिर्वाचित हेतमन (प्रधान) बनाना स्वीकार किया गया । उक्रइनके लिये स्वेच्छाचारी जारका शासन भी पोलोंमे कम कठोर नही था, पर उक्रइनी और बेलोरुसी भाषा, धर्म और संस्कृतिमे रूसियोंके सगे भाई थे, इसलिये उनको यही रास्ता अच्छा लगा । फिर १६५४ ई० मे पोलोंसे लड़ाई शुरू हुई, जो बीच-बीचमे रुकती हुई तेरह वर्ष (१६५४–६७ ई०) तक चली । इसी युद्धमे प्राय सारी बेलोरुसिया भी पोलोंसे मुक्त हो गई । रूसकी विजयिनी सेना लिथुवानियाके मुख्य नगर विलनोमे दाखिल हुई । उधर सारी उक्रइन-भूमिको मुक्त करते हुये बगदान और मास्को के वोयवोद पोलन्दकी सीमाको पार हो लुबलिन नगरको लेनेमें सफल हुये । इसी बीच १६५६ ई० में स्वीडनके राजा दशम चार्ल्सने भी पोलन्दके ऊपर आक्रमण करके वारसा (वरसावा), क्राको और दूसरे पोल-नगरोपर अधिकार कर लिया । इस अचानक प्रहारके कारण पोल मास्कोके साथ शांति-भिक्षा मागनेके लिए तैयार हो गये । पर, शाति अस्थायी ही हो पाई, क्योंकि पोलन्द सारे उक्रइन और बेलोरुसियापर अपने अधिकारको छोडनेके लिये तैयार नही था । बाल्तिक समुद्रतट रूसके लिये इस समय खतरनाक था—जबतक स्वीडनको समुद्रतटसे भगाया न जाय, तबतक रूस अपनेको सुरक्षित नही समझ सकता था । इसके लिये १६५६ ई०मे स्वीडनसे लडाई शुरू हो गई, लेकिन कुछ सफलता होनेपर भी युद्ध कई वर्षोंतक अनिर्णायक रूपमे चलता रहा । अन्तमें १६६१ ई०मे रूसने अपनी असफलता स्वीकार करते यथापूर्व-स्थितिको मानते करसिकी-सधि-पत्रपर हस्ताक्षर कर दिया । बगदान १६५७ ई०मे मरा । वह यह देखकर प्रसन्न था, कि उक्रइन अब जालिम पोलोंसे मुक्त है ।

वोल्गाकी जातिया—१७वी सदीमे अब भी वोल्गाके दोनो तटोके घने जगलो और मैदानोमें उराल-अल्ताई-वशकी अ-रूसी जातिया रहती थी । व्यत्का नदीकी पूर्वी वनभूमिमे उदमुर्त (वोत्याक), रहते थे । वोल्गाके बाये तटपर व्यत्का और वेतुल्गा नदियोंके बीचमे तथा वोल्गाके दक्षिणी तटपर, वोल्गा और सुरा नदियोंके बीचमे मारी (चेरेमिसी) लोग रहते थे । मारियोंके पडोसमे चुवास और मोर्द्विनी रहते थे, जिनकी बस्तिया निम्न ओका और ऊपरी सुराकी भूमिमे थी । निम्न कामाके दोनो तटोपर तातारो (तारतारो) की बस्तिया थी । बाशकिर (तुर्क) कामाके दक्षिणी-पूर्वकी भूमि एव ऊफा नदीके किनारे बसते थे । कुछ बाशकिर उरालके परे तबोल् नदीके ऊपरी भागमे भी रहते थे । इन सभी जातियोको इवान IVने कजानके खानपर विजय प्राप्त करनेके बाद अपनी प्रजा बना लिया था । जारकी सरकार १५५२ ई०तक वोल्गा-भूमिके अपने पराजित लोगोसे वही कर वसूल करती थी, जो कजानके खान तथा उसके सामन्त उनसे लिया करते थे । जारके कर उगाहनेवालोका बर्ताव भी इन लोगोंके साथ अच्छा नही था, कितनी ही बार वह लोगोंके पशुओ और अन्नको जब्त कर लेते । रूसी महन्तो और जमीदारोने भी वहाकी बहुत-सी उर्वर भूमि और जगलोपर अधिकार कर लिया था—इन जगलोमें भारी सख्यामे कीमती समूरी खालवाले जानवर रहते थे । ग्रीक चर्चने यहाके लोगोको निकोनके समय जबरदस्ती ईसाई बनानेमें बडी सरगरमी दिखलाई । ईसाई पुरोहित मोर्द्विनी गावोंके किसानोको जमाकर बपतिस्मा दे उन्हे बाध्य करते, कि वह अपने पवित्र वनो-उपवनो और पितरोकी कब्रोपर बने लकडीके ढाचोको जला दे ।

बाशकिर लोग मुख्यत पशुपाल थे । वह समूरी जानवरोका शिकार, जगली मधुका सचय और मछुवाही भी किया करते थे । १७वीं सदीमे अब वह कही-कही खेती करने लगे थे, और जहा-तहा लकडीके बने उनके झोपडे भी खडे होने लगे थे । ग्रीष्ममे वह अपने ढोरो और घोडोको चराने-के लिये चरागाहोंमे और शरद्के अन्तमे अपने जाडेके निवास-स्थानोमे चले जाते । पहले उनमें अपने छोटे-छोटे कबीलोका जनसत्ताक सगठन था, लेकिन अब वह पुराने समयसे चला आता सगठन टूटने लगा था । भूमिपर कबीलेका साझी अधिकार हटकर अब उसके बडे और अच्छे भागपर तरखनो (राजकुमारो) और बातुरो (बहादुरो) का अधिकार हो गया था । इस प्रकार धनी-गरीब-

का वर्ग-भेद उनमे स्थापित हो चुका था। बाशकिर रूसी सरकारको कई तरहके मूल्यवान् समूरी खालोको करके रूपमे देते थे। १७वी सदीमे अब रूसी महत और जमीदार भी इनकी भूमिमे पहुच-कर घने जगलो, मछलीभरी नदियो, नमककी खानो, हरे-भरे चरागाहो, तथा खेतीके लिये उपयुक्त वजर भूमिको अपने हाथमे करने लगे। इसके कारण पशुपाल बाशकिरोको बडी बाधा होने लगी, जिसके लिये असतोष और विद्रोह करनेका परिणाम यही हुआ, कि वहापर ऊफा जैसे कितने ही दुर्गबद्ध नगर रूसियोने स्थापित कर दिये।

वोल्गा-प्रदेशकी अ-रूसी जातियोमे कलमक (कल्मख) भी थे। कलमक मगोलोकी एक शाखा थी, इसे हम आगे बतलायेगे। वह १६३० ई०के आसपास निम्न-वोल्गाकी भूमिमे आये। पहले यह घुमन्तू जाइसन सरोवरके उत्तरकी पहाडियोमे विचरते थे, जिसे जुगारिया भी कहा जाता है। कलमकोंके कई भिन्न-भिन्न कबीले थे, जिनका अलग-अलग राजा होता था। वैसे सभी कबीले एक-दूसरेसे स्वतन्त्र थे, लेकिन जब सारी जातिके ऊपर कोई खतरा आता, तो सबसे शक्तिशाली जातिके राजाके अधीन वह अपना लडाकूसघ स्थापित कर लेते। १७वी सदीके आरम्भमे कलमकोके एक बहुसख्यक कबीलेका डेरा इर्तिश नदीके ऊपरी भागमे था। इर्तिशके किनारे येरमककी विजयके बाद रूसियोकी बहुतसी बस्तिया बस गई थी। इर्तिशके इन कलमकोने रूसी कसबोपर आक्रमण करना शुरू कर दिया, जिसका बदला भी लिया जाने लगा। फिर दक्षिण-पश्चिमकी ओर बढते १६३० ई०के आसपास उन्होने यायिक (उराल) और वोल्गाके बीचकी भूमिको दखल कर लिया। १६५६ ई०मे कलमकोने रूसकी अधीनता स्वीकार की। १७वी सदीके अन्त तथा १८वी सदीके आरभमे वोल्गा-कलमकोका शासक आयुका बडा शक्तिशाली खान था। यद्यपि उसने जारकी अधीनतासे इन्कार नही किया, लेकिन वह अपनेको स्वतन्त्र समझता था, और वोल्गाके किनारेके रूसी नगरोपर आक्रमण करनेसे भी बाज नही आता था। जो कलमक जुगारियामे रह गये थे, उन्होने १७वी सदीके अन्ततक एक शक्तिशाली राज्य स्थापित किया, जो धीरे-धीरे साम्राज्य-का रूप लेने लगा।

रूसी शासकोके अत्याचारके कारण वोल्गाके लोग जब-तब विद्रोह कर बैठते थे, लेकिन १६६२ ई०मे इस विद्रोहने खतरनाक रूप लिया। उस साल एक ही समय बाशकिर-भूमि और पश्चिमी साइबेरियाके बहुत भागोमे बगावत हो गई। येरमकद्वारा पराजित सिबिरके कूचुम खानके एक वशजने तातारो, बाशकिरो और पश्चिमी साइबेरियाके वोगुलो (मसियो)के विद्रोहका नेतृत्व किया। विद्रोहियोने रूसियोके किलेबद नगरोपर आक्रमण किया, उनके मठो और बस्तियोको नष्ट कर दिया। यह विद्रोह कई सालतक चलता रहा। विद्रोहके दमन कर देनेके बाद जारशाही सरकार ने बाशकिरोकी और कितनी ही भूमि छीन ली, बाशकिर जवानोको जबरदस्ती सेनामे भर्ती करके क्रिमियामे लडनेके लिये भेजा। इसके कारण १६७५ ई०के आसपास फिर विद्रोह उठ खडा हुआ। छिटपुट होने विद्रोहोको १६८२ ई०मे सैयद सादिर जैसा नेता मिल गया। कलमकोका प्रधान आयु-का खान भी बाशकिरोकी सहायता करने लगा। लेकिन, अन्तमे बौद्ध कलमको और मुसलमान बाशकिरोकी प्रतिद्वद्विता इतनी बढी, कि कलमक जारकी ओर हो गये, और विद्रोहको कुचल दिया गया।

राजिन-विद्रोह—जार अलेक्सी (अलेक्सान्द्र)के कालमे रूसकी राजशक्ति और सीमा बहुत बढी, लेकिन देशमे सघर्षो और विद्रोहोंके भीतरसे ही। इन विद्रोहोमे स्तेपन राजिनके नेतृत्व-मे हुआ किसानोका विद्रोह बडा भयकर था। भूखे गरीब कसाकोमे अशातिका होना स्वाभाविक था। इसी अशातिका नेता येरमक था, जिसने साइबेरियामे रूसकी सीमाको बढाया। कसाक स्व-भावत स्वच्छन्दताप्रेमी तथा लडाकू होते है। रूसी वोयवोद उनको नाराज होनेका बहुत मौका दे देते थे। १६६६ ई०मे कसाक आतमन (सरदार) वासिलीने दोनके गरीब कसाकोको मास्को-के विरुद्ध भडकाया और एक बडी कसाक सेना ले तुलातक पहुच गया। उसके साथ दक्षिणी जमीदारोंके कितने ही अर्ध-दास किसान भी शामिल हो गये। इसी समय दोनके गरीब किसान विद्रोहियोको

आतमन स्तेपन तिमोफेयेफ-पुत्र राज्निन-जैसा नेता मिल गया। १६६७ ई०के वसतमे राज्निन अपने सैनिकोको लिये दोनसे वोल्गाकी ओर बढा। उसके कसाकोने जार, महासघराज और धनी व्यापारियोकी अनाज तथा दूसरी पण्य वस्तुओसे लदी बहुत-सी नावोको पकड लिया, जिनमे देश-निकाला पाये पैरोमे बेडी पडे कितने ही वदी भी थे। उन्हे मुक्त करके राज्निनने वदियो, स्त्रेलेत्सी (राज-सैनिको) और मल्लाहोसे कहा—"अब तुम सब स्वतन्त्र हो, जहा इच्छा हो वहा जाओ। मै तुम्हारे साथ जबरदस्ती नही करूगा। जो कोई मेरे साथ रहना चाहता है, वह स्वतन्त्र कसाक माना जायगा। मै केवल वायरो और धनी जमीदारोसे लडनेके लिये आया हू, गरीबो और सीधी-सादी जनताको भाईके तौरपर मै अपना भागीदार बनानेके लिये तैयार हू।"

इसके बाद राज्निनके कसाक नावोपर चढकर अस्त्राखानके किलेसे बचते कास्पियनमें गये। फिर अपने पच्चीस नावोमे जा उन्होने यायिक (उराल) नदीके तटपर बसे यायित्स्क नामक दुर्गबद्ध नगरपर अधिकार कर लिया। राज्निनने जाडोको यायिकके तटपर बिताया। अगले साल वह समुद्रसे होकर ईरानके तटपर पहुचा। उसके पास कई हजार कसाक थे। उसने कास्पियन-तटवर्ती काकेशसकी भूमिको लूटा, और ईरानके शाहके पास कई आदमी भेजकर कहलवाया, कि मै और मेरे कसाक तुम्हारे देशमे सदा रहनेके लिये तैयार है, क्योकि हम मास्कोके वायरोंके अत्याचारको नही सह सकते। शाहने राज्निनके दूतोको पकडकर मरवा दिया। इसपर कसाकोने ईरानके नगरोमें लूट-पाट करनी शुरू की। शाहने पचास नावोमे सैनिक भरकर भेजे, लेकिन राज्निनने उनमेसे अधिकाशको डुबा दिया। सफलता होनेपर भी इन लडाइयोमें कसाकोको बहुत क्षति उठानी पडी, जिससे उनकी सख्या कम होती जा रही थी। बचे हुओमे बीमारी फैलने लगी, इसलिये राजिन वायरोंके राज्यसे बाहर ईरानमें रहनेका ख्याल छोडकर १६६९ ई०की शरद्में फिर अस्त्राखान पहुचा। उसकी अनुपस्थितिके समय अस्त्राखानकी छावनी और मोर्चाबदीको बहुत मजबूत कर लिया गया था। राजिनने दोनकी ओर जानेके लिये इजाजत मागी। अस्त्राखानके वोयवोद जानते थे, कि नगरके अधिकाश लोगोकी सहानुभूति राजिनके साथ है, इसलिये उन्होने इस शर्तपर उन्हे जानेकी इजाजत दी, कि वह अपने लूटके माल और हथियार समर्पित कर दें। अस्त्राखानके गरीबोंने बडे उत्साहके साथ राजिनका स्वागत किया। वह उसे बत्का (बापू) कहते थे। राजिनके कसाक पहले फटे-चीथडोमे गये थे, लेकिन अब वह गोटेदार रेशमी कपडे पहने हुये थे। राजिनने खूब दिल खोलकर सोनेकी मुहरो और दूसरी चीजोको लोगोमें बाटा। हथियार रखनेमे इनकार करके अपनी हथियारबद सेनाके साथ राज्निन दोनकी ओर चल पडा। अस्त्राखानके निवासियोमेंसे भी कितने ही उसके साथ हो लिये।

चारो ओरसे दोन-कसाक राज्निनके झडेके नीचे आने लगे। इसके बाद कई बार जारशाही सेनासे उसने सफल मुकाबिला किया। जारित्सिन (आधुनिक स्तालिनग्राद)के निवासियोने उसे शहरपर अधिकार करनेमे मदद दी। १६७० ई०के वसतमें राजिन दूसरी बार वोल्गाके किनारे पहुचा। पहले वह साधारण लुटेरेके तौरपर आया था, यद्यपि उसकी उदारताकी ख्याति उसी समय चारो ओर फैल गई थी, लेकिन अब वह कई हजार अनुशासन-सम्पन्न सेनाका कमाडर था। वह वोयवोदो, अमीरो और धनी व्यापारियोका दुश्मन था, लेकिन गरीबोका पक्षपाती और दासोका हर जगह मुक्तिदाता। राजिनकी दानशीलता, उदारता और गरीबोंके प्रति प्रेम ऐसी आकर्षणकी चीज थी, जिससे वह चारो तरफ मशहूर हो गया। जारित्सिन लेनेके बाद उसने अब रूसके भीतर बढनेका निश्चय किया, लेकिन इससे पहले उसने अस्त्राखानपर अधिकार करके निम्न-वोल्गामें अपनी सत्ता जमा लेना आवश्यक समझा। अस्त्राखानके वोयवोदने स्त्रेल्त्सीकी एक सेना राजिनके विरुद्ध भेजी, लेकिन सैनिक अपने अफसरोको मारकर विद्रोहियोमे जा मिले। जून १६७० ई०में राजिन अस्त्राखानके पास पहुचा। पत्थरकी दीवारोसे घेरकर नगरको बहुत मजबूत कर लिया गया था, दीवारो और मीनारोपर तोपे लगी थी, लेकिन बहुतसे स्त्रेल्सी तथा नगरके लोग राजिनके स्वागतके लिये अधीर थे। गोधूलीके समय घटे बजने लगे, यह इस बातका सकेत था कि कसाको-

ने आक्रमण कर दिया है। कसाक अंधेरेमें चुपचाप किलेके पास आ सीढिया लगाकर दीवार फाद नगरके भीतर कूद पडे। नागरिक भी उनकी मददके लिये दीवारके पास प्रतीक्षा कर रहे थे। नगर-के समर्पण करनेकी सूचना तोपोकी पाच आवाजसे दी गई। राजिनके कसाकोके साथ अस्त्राखानके गरीव भी शामिल हो गये और उन्होंने वहाके अमीरो तथा प्रतिरोधकोको मार डाला। सवेरा होते-होते अस्त्राखानपर राजिनका पूरा अधिकार था।

राजिनकी विजय-यात्रा अब शुरू हुई। जारके स्त्रेल्त्सी और साधारण लोग राजिनकी सहायता करनेके लिये हर जगह तैयार थे। उसने सरातोफ (पुराना सरातोफ वोल्गाके वाये तटपर था), समारा (आधुनिक कुइविशेफ)को आसानीसे अपने हाथमे कर लिया, लेकिन सिम्बिर्स्क (आधुनिक उलियानोव्स्क)को लेनेमे वडे जवरदस्त प्रतिरोधका सामना करना पडा। उसके आदमी गाव-गावमे घूमकर राजिनके नामसे कह रहे थे—"सभी उत्पीडितो और गरीबोको विद्रोहके लिये खडा हो जाना चाहिये।" राजिन यह भी कहता था—"मैं महाप्रभु (जार)के लिये देशद्रोही वायरो और अमीरोसे लड रहा हू।" वह नही जानता था, कि जार उसी वर्गका सबसे शक्तिशाली आदमी है, जिसके विरुद्ध उसने जहाद छेडी है। प्राय एक महीनेतक राजिनने सिम्बिर्स्क नगरका मुहासिरा किया। १६७० ई०के अक्तूबरके आरम्भ-मे नई सेना आ गई, और एक घनघोर लडाई हुई। तलवारोकी खपाखपमे वीर राजिन निश्शक लडता दिखाई पडता। उसके मिरपर एक गोली लग गई थी, एक पैर भी गोलीसे घायल हो गया था, तो भी वह लड रहा था। सारी वीरता दिखलानेपर भी सुशिक्षित सुशस्त्रित बहुसख्यक जार-सेनाके सामने राजिनको हार खानी पडी। वह थोडेसे कसाकोके साथ दोनकी ओर निकल भागा। राजिनके हारनेके वाद भी वोल्गाकी भिन्न-भिन्न जातियो—कलमक, तातार, मोर्द्विनी, मारी, चुवाश और वाशकिर—तथा दाहिने तटके प्रदेशोके रूसी किसानोने विद्रोहको वहुत समयतक जारी रक्खा। जारकी सेना इन विद्रोहियोसे खूनी वदला लेने लगी। वदी किसानोको वह पकडकर अर्जमस नगरमे ले गये, जहा उन्हे वडी सासत देकर मारा गया। नगरके चारो ओर फासीकी टिकटिया खडी कर दी गई थी। एक विदेशी प्रत्यक्षदर्शीने लिखा है, कि तीन महीनेके भीतर अर्जमसमें ग्यारह हजार आदमियोको फासीपर चढाया गया। किसानोके नेताओने अन्तिम समयतक वडी निर्भयताका परिचय दिया। जल्लादने एकसे पूछा—

"तुम क्या करना चाहते थे?"

"हम मास्कोको लेना और तुम्हारे सभी वायरो, अमीरो और लिखनीचदोको मार डालना चाहते थे।"

एक किसान स्त्री-नेता अल्योनाको जलाकर मारनेका दड दिया गया। वह दडाज्ञा सुनकर जरा भी न घवडाई और मरते समय वोली—

"जैसे मै लडी, यदि वैसे ही दूसरे भी लडे होते, तो राजुल यूरी (सेनापत्ति)को हमारे मामनेसे जान लेकर भागना पडता।"

१६७१ ई०के आरम्भमे वोल्गाके दक्षिण-तटके विद्रोहियोको दवानेमें सफलता मिली। अव ज़ारशाही राजिनके पीछे पडी थी। अप्रैल १६७१ ई०मे उसे पकडकर मास्को ले गये, जहा राजिन को भीषण सासत दी जाने लगी, लेकिन तव भी उसने मुहसे एक वार भी आह नही निकाली। जून १६७१ ई०में उसको मारनेसे पूर्व जल्लादोने पहले हाथो और पैरोको काट दिया, फिर सिरको धडसे अलग कर दिया। जारकी सरकारने राजिनको मारकर सतोषकी सास ली, लेकिन साधारण जनताके लिये राजिन मरा नही। वह समझती थी, कि वायरोने किसी दूसरेको मारा है, राजिन तो अव भी वचकर कही छिपा हुआ है। वह फिर एक वार हम दुखियोकी मददके लिये आयेगा।

जनताका राजिनके प्रति कितना सद्भाव था, वह लोकगीतोकी निम्न पक्तियोंसे मालूम होगा—

उठ हे सूर्य, हे मैले-कुचैले,
तू जो कि पहाडोंके ऊपर इस प्रकार छाया है,
जो कि हरे उगे हुये पौधोंपर छाया है,
हमारी हड्डियोंको गरमाओ। हम ईमानदार जन है।
यद्यपि हम गरीब है, किन्तु हम किसीका जूआ नही उठायेंगे,
चोर हम नही है, और न भयकर डाकू,
स्तेपान राज़िन हमारा नेता है।

रूसी भाषाका कालिदास पुशकिन स्तेपन राजिनको रूसी इतिहासका अत्यन्त काव्यमय पुरुष कहता है।

साइबेरियामें प्रसार—हम पहले कह चुके है, कि कैसे येरमकने सिबिरके खानको हराकर रूसी सीमाको ओब और इर्तिश नदीके तटतक पहुचा दिया। साइबेरियाके जगलोंसे मिलनेवाली समूरी खाले सोनेके भाव बिकती थी, और साथ ही वहाके लोगोको पकडकर दास बनाकर बेचना भी आमदनी-का एक अच्छा खासा स्रोत था, इसलिये रूसी व्यापारियो और साहसियोका उधर खिचना स्वाभाविक था। समूरी खालोको पहले वह वहाके स्थानीय शिकारियोंके हाथसे खरीदते थे। फिर रूसी शिकारियोने स्वय जगलोमे दूर-दूर तक घुसकर शिकार करना शुरू किया। यह शिकारी कभी-कभी ऐसे स्थानो-मे पहुचने लगे, जहापर जारके सैनिक कभी नही पहुच पाये थे। इसी तरह कुछ पीढियोंमें रूसी येनि-सेइसे अखोत्स्क समुद्रतक अपना अधिकार स्थापित करनेमें सफल हुये। जहा नदियोका सहारा था, वहा शिकारियो और व्यापारियोकी टोली नावोपर चढकर जाती, फिर नावोको आदमियोंके कधो-पर उठाकर एक नदीसे दूसरी नदीमें परिवर्तित कर लेते। जार गदुनोफके कालमे रूसी व्यापारी और शिकारी मगोलियामे पहुच चुके थे। गदुनोफके समय वहा एक बडा सैनिक अभियान भेजा गया था। स्थानीय शिकारी (नेन्त्सी) इसे बर्दाश्त कैसे करते, लेकिन अपने पुराने हथियारो और बिखरी हुई अल्प-सख्याके बलपर बेचारे सफल प्रतिरोध कैसे करते? रूसी दूर-दूर जगलोमें लकडीके किले बनाकर जम जाते। इस प्रकार उन्होने निम्न-येनिसेइ-उपत्यकाके मार्गपर अधिकार कर लिया। उसके कुछ समय बाद उन्होने मध्य-ओब और मध्य-येनिसेइमे भी पहुच १६१९ ई०मे येनीसेइस्क नगरकी स्थापना की। यहासे अब वह येवेकी, बुर्यत तथा उस प्रदेशके दूसरे लोगोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर करने लगे। दस वर्ष बाद येनिसेइ नदीके तटपर क्रास्नोयार्स्क नगर स्थापित हुआ, लेकिन यहा किरगिजोने उनसे जबरदस्त मुकाबिला किया। पर, मुकाबिलेमे डरकर रूसी अपने आगेके प्रसारको रोक नही सकते थे। यनिसेइस्क नगरसे अगारा नदीके किनारे चलते हुये रूसी बैकाल महासरोवरपर पहुच गये। १७वी शताब्दीके मध्यमे उन्होने अगाराके बैकालसे निकलनेके स्थानके पास ही इर्कुत्स्कका शरद्कालीन निवास-स्थान बनाया। बुर्यत मगोल अपनी वीरताके लिये प्रसिद्ध थे। उन्होने अपनी भूमिपर हस्तक्षेप करते देखकर रूसियोंके साथ जबरदस्त सघर्ष किया, जिसमें असफल होकर कितने ही मगोलिया चले गये, लेकिन वहाके मगोल-सामन्तोंके अत्याचारके कारण कितनो हीने फिर लौटकर जारके जूयेको अपने कधेपर रक्खा। इसी समय येनिसेइसे लेना नदीकी ओर जानेवाला महत्त्वपूर्ण रास्ता स्थापित किया गया। रूसियोने अफवाह सुनी थी, कि लेनाके किनारे समूरी खालोकी खानें भरी पडी हैं, जिसे सुनकर येनिसेइस्क और मगजेया दोनो जगहोंसे रूसी साहसियोकी भीड टूट पडी। उन्होने लेना-उपत्यकाके निवासी याकूतोके ऊपर प्रहार करके उनकी समूरी खालो, पशुओ (बारहसिगो)पर ही हाथ नहीं साफ किया, बल्कि स्त्री-बच्चोको भी बेचनेके लिये बदी बनाया। व्यापारियो और शिकारियोकी पहुच स्थापित होते ही येनिसेइस्कके सैनिक अधिकारियोंने लेनाके तटपर याकुत्स्क नामका गढ स्थापित किया। कुछ ही समय बाद जारने याकुत्स्कके लिये वोयवोद (राज्यपाल) भेजना शुरू किया। याकुत्स्कमे जम जानेके बाद सैनिक, व्यापारी और शिकारी और भी आगेके अज्ञात इलाकोकी खोजमें लग पडे, और उत्तर-पूर्वमें ध्रुवक-क्षीय समुद्रके तट तक याकूगिरो (ओदुरियो)के प्रदेशमें पहुच करके उनसे कर लेने लगे।

रूसी शिकारी पहाडोमे जब लेनाके उद्‌गमकी ओर पहुचे, तो उन्हे खबर लगी, कि शिल्का और जेयामे अन्न और चादी भरी पडी है। तुगुस लोगोने भी इस खबरकी पुष्टि की। इसपर साइबेरियाके वोयवोद गोलो्विनने १६४३ ई०मे अपने एक क्लर्क वाच्तेयारोफकी अधीनतामे सात आदमियोको पता लगानेके लिये उक्त दोनो नदियोकी उपत्यकाओकी ओर भेजा। वाच्तेयारोफ इस कामके योग्य नही था, इसलिये वह खाली हाथ लौट आया। फिर उसी साल गोलोविनने पोयार्कोफके नेतृत्वमे एक बडी टोली यह कहकर भेजी, कि वहाके लोगोसे जाकर कर उगाहो, और जो देनेसे इन्कार करे,

उनमे लडाई करो। जेयाके तटपर पहुचनेपर पोयार्कोफको अन्नके लिये निराश होना पडा। वहाके लोग अधिकतर चीनसे आये अनाजपर गुजारा करते थे। पोयार्कोफ ने अपने सत्तर आदमियोको पाममे रहनेवाले दौरी लोगोकी वस्तियोमे भेजा, लेकिन उन्होंने रूसियोको अपने गावोके भीतर आने नही दिया। खाली हाथ लौटनेपर अपने लोगोने उन्हे रसद देनेमे इन्कार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ, कि उन्हे अब स्थानीय लोगोको लूट-मारकर जीवन-यापन करनेके लिये मजबूर होना पडा। वसतके आनेपर यह टुकडी नावपर दमेयानदीके नीचेकी ओर बढी। स्थानीय लोगोको खूनखार रूसियोका पता पहले हीसे लग गया था, इसलिये वह उनको आते सुनकर भाग निकले। तो भी तीन गिल्यिक पकडे गये, जिनके द्वारा रूसियोने कर उगाहनेमें सफलता पाई। आगे बढते-बढते रूसियोने आमूर नदीके मुहानेपर पहुच जाडा वितानेके लिये वहा डेरा डाल दिया। मडली जून १६४६ ई०मे याकुत्स्क लौटी। अभियान सफल रहा, क्योकि उन्होने एक नई भूमिका पता लगाया, लेकिन साथही उनकी यात्राद्वारा लोगोमे वडा भयसचार हो गया। अज्ञात कालसे पूर्वी साइबेरियाकी यह जातिया चीनको कर दिया करती थी, इसलिये अब उन्होने चीन सरकारतक अपनी गुहार पहुचाई।

१६४८ ई०मे रूसी व्यापारियोंके एक समूहने कोलुमा नदीके मुहानेके पूर्व ध्रुवीय समुद्र-तटकी भूमिके वारेमे पता लगानेका निश्चय किया। उन्हे मालूम हुआ, कि समुद्री जानवर वालरस वहाँ जाकर वच्चे देता है। वालरसका दात वहुत महगा विकता था, इसलिये वह उस अज्ञात भूमिकी ओर खिचे। इसके लिये याकुत्स्कके व्यापारियोने कसाक सिमाओन देझन्येफके नेतृत्वमे सात नावो के साथ एक अभियान भेजा। यह लोग कोलुमाके मुहानेसे समुद्रके किनारे-किनारे आगे वढे। नावें मजवूत नही थी, इसलिये अधिकतर टूट-फूट गईं, तो भी देझन्येफकी कुछ नावोको एक तूफान वहाकर अमेरिका और एसियाको मिलानेवाली समुद्रकी उस पतली धारमे ले गया, जिसका नाम पीछे वेरिंगकी खाडी पडा। उस समय युरोपमे कोई नही जानता था, कि एसिया और अमेरिकाकी सीमाओको केवल एक पतलीसी सामुद्रिक प्रणाली अलग करती है। आजकल एसियाके उत्तर-पूर्वीय अन्तिम अन्तरीपको देझन्येफ अन्तरीप कहा जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं, शाहजहाके शासनके अन्तिम वर्षोंमें ही रूसी साइवेरियाके पूर्वी छोरतक पहुच गये। जाच-पडताल करनेवालोने लेनाकी शाखा अलदल नदीसे होते अखोत्स्क समुद्रके तटपर पहुचकर वहा अखोत्स्क (शिकारवाला) गढ स्थापित किया, और बेचारे एवेंकी लोगोने वारूदी हथियारोंके सामने प्रतिरोधको व्यर्थ समझकर अधीनता स्वीकार की।

पश्चिमी सस्कृतिका प्रभाव—१७वी सदीके रूसमे अभी शिक्षाका प्रसार केवल अमीरो और व्यापारियोमे था। स्त्रिया सिर नही ढकती थी, किन्तु जवतक विवाहित नही हो जाती, तवतक पुरुषोंसे अलग रहती। वह अपरिचितकी ओर देखनेकी हिम्मत नही कर सकती थी। धनियोकी स्त्रिया अपना समय पूजा-पाठ या गोटा वनानेमे लगाती। अमीरोकी पोशाक वहुत भारी होती थी। वाहरी चोगा एडीतक पहुचता था, और लम्वी आस्तीन भी छोड देनेपर धरतीको छूनेसी लगती थी। उत्सवके समय वहुत मूल्यवान् ऊनी या रेशमी कपडे पहने जाते थे। हीरा-मोती-जटित सोने या चादीके वडे-वडे वटन चोगोमे लगते थे। सामन्त लोग समूरकी वडी लम्वी टोपी पहिनते थे, जो नीचेकी अपेक्षा ऊपर अधिक चौडी होती जाती और इतनी भारी होती थी, कि आदमी सिरको आसानीसे घुमा नही सकता था। पुरुष वालोंको काटकर रखते थे, लेकिन दाढीको वडी सावधानीसे वढाते थे। विना दाढीके आदमीको समझा जाता था, कि वह हर तरहके पाप कर सकता है। दाढी मुडाना स्वय भी पाप-कर्म था। लेकिन, १७वीं सदीमे ही पश्चिमी युरोपका प्रभाव धीरे-धीरे रूसके उच्च वर्गपर पडने लगा। व्यापारने पश्चिमी यूरोपके व्यापारियोंसे रूसका सवध वहुत घनिष्ठताके साथ स्थापित कर दिया था। अव कितने ही युरोपी रूसमे लोहे, काच आदिके कारखाने स्थापित करने लगे थे। मास्को और दूसरे नगरोमें वहुतसे ग्रीक, अग्रेज, जर्मन, डच और पोल व्यापारी तथा शिल्पी रहने लगे थे। उनमेंसे कुछ चद दिनोंके लिए आते और कितने ही रूसी नगरोंके वासी हो गये थे। मास्कोकी सरकार विदेशियोंको—विशेषकर शिक्षितो, सैनिक विशेषज्ञो, डाक्टरो, चित्रकारो तथा

दूसरे कलाकारो-शिल्पियोको—अपने यहा आकृष्ट करनेकी कोशिश करती थी। सभी विदेशी कामके नही थे। उनमेंसे कितने ही मौज उडाने, या गुप्तचरी करनेके लिये आते थे, पर इसमे भी शक नही, कि कितने ही अपनी विद्या और अनुभवसे रूसियोको लाभ पहुचाते थे। १६वी सदीके अन्तमे ही मास्कोमें विदेशियोंके रहनेके मुहल्ले बन गये थे, जिन्हे पीछे "जर्मन (मह) वस्ती" कहा जाता था। १७वी सदीके मध्यमे उन्हे यौजा नदीके किनारे प्रेयोब्रजेन्स्कोये गावके पासमे परिवर्तित कर दिया गया। कितने ही रूसी इनके सम्पर्कमे आकर युरोपीय सस्कृतिसे प्रभावित होते रहे—यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि आजकी तरह उस समय भी रूसियोके लिये "यूरोपा" एक दूसरा ही महाद्वीप था। पश्चिमी युरोप सस्कृतिके साथ-साथ विलासितामे भी वहुत आगे वढा हुआ था। मास्कोके अमीर पुरुष-स्त्री भी इगलैण्ड, जर्मनी, फ्रास और दूसरे युरोपीय तथा पूर्वी देशोमे राजदूत बनकर जाते थे। रूसी व्यापारी भी कोशिश कर रहे थे, कि अपनी पण्य-वस्तुओको सीधे युरोपके नगरोमें जाकर बेंचे, लेकिन विदेशी व्यापारी इसमे हर तरहकी वाधा उपस्थित करते थे।

उच्च वर्ग ही नही रूसी शिक्षित तथा वुद्धिजीवी वर्गपर भी पश्चिमी युरोपका प्रभाव पडने लगा था। जार अलेक्सी मिखाइल-पुत्रके समयका एक प्रभावशाली वायर ओरदिन-नाश्चोकिन् युरोपके नमूनेपर शासन-प्रवन्ध सगठित करनेका पक्षपाती था। उक्रइनके रूसमे मिल जानेसे, पोलन्द और पूर्वी युरोपके साथ सास्कृतिक सम्पर्क स्थापित होनेमें वडा सुभीता हुआ। शताब्दियोके सिद्धहस्त कियेफके मूर्त्तिकार, चित्रकार तथा दूसरे कलाकार मास्कोमे आकर काम करने लगे। वायरोंके घरोमे उक्रइनी विद्वान् शिक्षकका काम करते थे। एक सुशिक्षित बेलोरूसी साधु सिमेओन पोलोत्स्की जार अलेक्सीके परिवारमें शिक्षक था। पोलोत्स्कीने नाटक और कवितायें लिखी। उसके पद्य बहुत प्रसिद्ध थे। वह साहित्य और काव्यशास्त्रकी भी शिक्षा देता था। वहुतसे विदेशी विद्वानोने इतिहास, युद्धविज्ञान, चिकित्सा, ज्योतिष, गणित, भूगोल, प्राकृतिक विज्ञान तथा दूसरे विज्ञानोकी पुस्तके १७वी सदीमें रूसी भाषामें अनुवादित की। यह याद रखना चाहिये, कि यही हमारे यहा औरगजेबके शासन-का समय था, जिसमे जहादी लडाइया छोड विद्या-विज्ञानकी चीजोकी तरफ कोई ध्यान नही दिया गया था। रूसी शिक्षित अव सिर्फ धार्मिक साहित्य हीसे सतुष्ट नही थे, वह पश्चिमकी धर्मनिरपेक्ष कहानियो और उपन्यासोको अपनी भाषामे पढने लगे थे। अमीरो तथा व्यापारियोंके दैनिक जीवन और वेश-भूषापर भी पश्चिमका प्रभाव पडने लगा था। १७वी शताब्दीके उत्तरार्धमे शरावी साधुओ, लोभी न्यायाधीशो, और घूसखोर अमलो, तथा मूर्ख अमीरोके ऊपर व्यग्य करते कितने ही प्रहसन लिखे गये थे। सक्षेपमे कहा जा सकता है, कि अव साहित्यमे वास्तविक जीवन—वस्तुवाद—के लानेकी कोशिश की जाने लगी थी। साहित्य हीमे नही, रूसी चित्रमे भी वस्तुवाद घुसने लगा था। प्रसिद्ध कलाकार सिमओन उशाकोफकी कला वास्तविकताका दर्पण-सी थी, जिसमें तत्का-लीन जीवनकी झाकी मिलती थी। उस वक्त भी आजकी तरह बहुतसे कलाकार ऊटपटाग-बेढगी टेढी-मेढी रेखाओ और रगोंके पीछे इतने पागल थे, जिन्हे कलाका वास्तविकताके पास जाना फोटोग्राफी मालूम होता है। १७वी शताब्दीमे पहले-पहल मास्कोके दरवारियोको नाट्यकलाका परिचय मिला, जब महाबस्तीके एक पुरोहित गटफ्रिड ग्रेग्रोरीने जार अलेक्सीके शासनकालमे रूसी विद्यार्थियो और जर्मन नटोसे एक नाटकमडली बनाई, और ऐतिहासिक कहानियोको लेकर रगमचपर नाटक खेले। पीछे एक खास मकान बनाकर रूसी भाषामे लिखे नाटकोका भी अभिनय होने लगा। अभिनयके समय एक खास आसनपर बैठकर जार भी उसे देखता था, लेकिन जारानी अलग एक परदेमे बैठकर ही देख पाती थी। नवीनताकी तरफ अभिरुचि इतनी बढ गई थी, कि महासघराज निकोननें जल-भुनकर सभी देशी वाद्ययत्रोकी होली जला डालनेकी आज्ञा दी।

चीनसे सबध—जार अलेक्सीने अपना पत्र देकर पेर्फिलियेफको १६५९ ई०मे चीन-सम्राट् शी-चू (१६४४-१६६१ ई०)के पास भेजा। सम्राट्ने उससे मुलाकात की। इसे कहनेकी आवश्यकता नही, कि रूसी दूतको दरवारमें कोतौ (साष्टाग प्रणिपात) करना पडा। रूसी दूतको दस पूड (४ मन) चाय देकर बिदा किया गया। चाय शायद यह पहली बार स्थलमार्गसे मास्को पहुची। इसके वाद १६६९ ई०में अबलिनके अधीन और १६७५ ई०में परगेन्निकोफके नेतृत्वमे रूसी कारवा (वाणिज्य-

सार्थ) उरगा-कलगनके रास्ते चीन भेजे गये। असली राजकीय दूतमडल १६७५ ई०मे गया, जब कि निकोलाइ स्पाथेरीको जारने अपना दूत वनाकर चीन दरवारमे भेजा। सम्राट्ने उसका अच्छी तरह स्वागत किया, सगीतके साथ दूध-मक्खनसे वनाई चायकी दावत की। चीनी दरवारके वहुतमे व्यवहार अवुद्धिमत्तापूर्ण ही नही अपमानपूर्ण भी होते थे, किसी गलतीसे नाराज होकर सम्राट्ने जारकी भेटको करके रूपमे स्वीकार कर स्पाथेरीको हटा दिया।

आमूर-विजयसे व्यापारियोको भारी लाभ हुआ था। उसे देखकर १६४९ ई०मे एक व्यापारी येरोफेइ खवारोफने अपना समय और धन एक अभियानके सगठनमे लगाया। वोयवोद फ्रासवेकोफने भी पैसे और सहानुभूतिसे उसका उत्साह वढाया। डेढ सौ स्वयसेवक तैयार किये गये, जिनके लिये हथियार, भोजन-सामग्री खवारोफने प्रस्तुत की। आमूर-निवासियोपर विजय प्राप्त करनेके लिये प्रस्थान कर पहले वह ओलेकमाके रास्ते चले, जो नया रास्ता था। आगे पहाड पार करनेमें लोगोने कोई कठिनाई नही उपस्थित की, लेकिन उन्हे रूसियोकी क्रूरताका पता लग गया था, इसलिये जहा-कही भी वह पहुचते, लोग अपने गावोको छोडकर भाग जाते। पहली दो वस्तियोमे उन्हे एक भी आदमी का पूत नही मिला, तीसरी वस्तीमे पहुचनेपर तीन सवार मिले। खवारोफने वहुत समझानेकी कोशिश की, कि हम केवल शातिके साथ व्यापार करनेके लिये आये है, लेकिन जैसे ही सवार लोगको पता लगा, कि यह उन्ही सत्यानाशी वर्वरोमेसे है, तो वह भाग चले। खवारोफके आदमी तीन दिनतक व्यर्थ ही उनका पीछा करते रहे। पाचवे जनशून्य गावमे एक वुढिया मिली। पता लगानेके लिये उसे वहुत सासत दी, लेकिन वुढियाने जो वाते वतलाई, वह पीछे झूठ निकली। अन्तमे खवारोफको खाली हाथ ही इर्कुत्स्क लौटना पडा, तो भी वह वोयवोदको यह समझा सका, कि यदि आमूर-प्रदेशको जीता जाय, तो वहासे काफी अनाज मिल सकता है।

खवारोफ इर्कुत्स्कमे उतने ही समय तक ठहरा, जितनेमे रसद और हथियार-सहित एक अच्छे दलको सगठित करके वह फिर अपने कामको शुरू कर सके। अवकी वार वह आगे वढते हुये अलवाजीन पहुचा। वहाके दौरी लोगोने एक दिन दोपहरसे शामतक लडाई की, लेकिन तोपो और बन्दूकोंके सामने तीर-धनुष क्या कर सकते थे? खवारोफने अलवाजीनको अपना केन्द्र वना जल्दी-जल्दी उसे किलावन्द किया और पडोसके गाव गुइगुदारपर एकाएक आक्रमण करके लोगोको रूसका करद वनाया। गुइगुदारोकी अवस्था देखकर दूसरे लोगोने भी अधीनता स्वीकार करनेमे ही भलाई समझी। एक-एक आदमीसे कई-कई वार कर वसूल किया गया। इसकी शिकायत करनेपर खवारोफने लोगोको इकट्ठा होकर वात करनेके लिये वुलाया। तीन सौ आदमियोकी सभामे खवारोफने उनसे मारी वाते पूछी। इसके वाद कुछ समयतक रूसियोका वर्ताव वहाके लोगोके साथ मित्रतापूर्ण रहा। दौरी रूसियोंके डेरोमे आते, रूसियोको भी अपने घरोमे निमत्रित करके काफी रसद-पानी देते। खवारोफको अव उनपर विश्वास हो गया था, लेकिन एक दिन सवेरे ही उठनेपर उसने देखा, कि सभी दौरी अपना गाव छोडकर भाग गये है। जाडेका मौसिम था, वहुत दूरतक दौड-धूप नही की जा सकती थी, आहार भी काफी नही था। खवारोफके दलके लिये आगे वढनेके सिवा दूसरा रास्ता नही था। अपनी नावोमें चढ आमूरके नीचेकी ओर चलते अचनी नामक मछुओके इलाकेमे पहुचकर उन्होने डेरा डाल दिया। स्थानीय लोगोका प्रतिरोध व्यर्थ था।

चीन-दरवारमे की गई पुकारकी अव सुनवाई हुई, और एक चीनी सेना रूसियोंके विरुद्ध भेजी गई। आरम्भमे चीनियोने सफलता पाई, लेकिन सम्राट्ने अपने जेनेरलको हुक्म दिया था, कि रूसियोको विना मारे वदी वनाना चाहिये। इससे खवारोफके आदमियोको सुविधा मिल गई, और उन्होने चीनियोको पीछे हटनेके लिये मजवूर किया। खवारोफके मुट्ठीभर आदमी कितने दिनोतक लडते रहते? अन्तमें चीनियोने अलवाजीनके किलेको सर करके उसे नष्ट कर दिया, जिसे सालभर वाद रूसियोने फिर वना लिया, और तव चीनियोकी तोपोने प्राय सालभर तक व्यर्थ ही उसे सर करनेका प्रयत्न किया।

१६५४ ई०मे खवारोफकी जगह स्तेपानोफ नियुक्त किया गया। वह सुगरी नदीके नीचेकी ओर वढते हुये उसी मालके मई महीनेमे एक चीनी सैनिक टुकडीसे मिला। दोनो ओरसे गोला-गोली

चले। चीनियोंके जवरदस्त प्रहारसे रूसी नावोपर चढकर नीचेकी ओर भागे। चीनियोने नदीतटके निवासियोको गाव छोडकर देशके भीतर चले आनेके लिये कहा, जिसमे रूसी सैनिक उन्हे तकलीफ न दे सके, और स्वय आहारसे वचित हो भूखे मरे। बीचके समयमे चीनी दूसरी लडाईकी तैयारी करते रहे। ३० जून १६५८ ई०में सुगारी नदीके मुहानेपर फिर लडाई हुई। इस युद्धमे दो सौ सत्तर आदमियोके साथ स्तेपानोफका पता नही लगा, और करीब उतने ही कसाक पहाडोमे भाग गये। अव उनका काम चोरी-डकैती (कज़ाकी) करना रह गया। इस लडाईके बाद नेर्चिन्स्कतक आमूकी धारा शत्रुके खतरेसे मुक्त हो गई। चीनियोने निश्चित हो अपनी सेना लौटा ली। लेकिन इसी समय नेर्चिन्स्कको मदद मिली। इलिम्स्कके कसाक अपने वोयवोदको मारकर भाग गये और उन्होने पहाडके परले पार सखालिन और यालुम नदियोके सगमपर अलवाजीनका किला बनाया, जिसे चीनी और तातार याकसा कहते थे। अलवाजीनके ये कसाक अपनी शक्ति और इलाकेको वरावर वढाते जगह-जगह गढियोको कायम करके दौरी और दुचेरी लोगोसे कर उगाहन लगे।

१६८३ ई०मे अलवाजीनके कसाकोने वीस चीनी शिकारियोको जीते-जी गाड दिया। यह खबर सुनकर चीन सरकार बहुत नाराज हुई। उसने एक चीनी सेना भेजी, जिसने १२ जून १६८५ ई०में अलवाजीनको घेरकर वहा चीनका झडा गाड दिया। चद ही दिनोके प्रतिरोधके बाद अलवा-जीनियोने आत्म-समर्पण किया। किलेको विल्कुल तोड दिया गया। चीनी सेना वहासे अयहून गई। उनके जानेके बाद कसाकोने लौटकर जाडोमे अलवाजीनको फिरसे तैयार कर लिया। चीनी सेना फिर अयहूनसे आई, और उसने ७ जुलाई १६८६ ई०मे दूसरी बार अलबाजीनका मुहासिरा किया। इसी समय रूससे एक प्रतिनिधिमडल आया, जिसने सम्राट् खाड्-सी (शेड्-चू १६६१-१७२३ ई०) से जारकी ओरसे निवेदन किया, कि जार युद्धसे नही शातिके साथ मामलेका फैसला करना चाहते है। खाड्-सीने निवेदनको स्वीकार करके मुहासिरेको उठा लेनेका हुक्म दे दिया। यही समय था, जब कि एलियोत (ओयरोत) और खलखा मगोलोंके बीचमे रूसी सीमातके पास लडाई हो रही थी। चीनियोने रूसी अधिकारियोके पास पत्र भेजकर शिकायत की, कि रूसी सीमातके लोग हमारे यकसा और चूनिपचूको लूटते-मारते, तथा चीनी शिकारियोंके साथ बुरा वर्ताव करते है। उन्होने यकसाके वोयवोद अलेक्सीपर इल्जाम लगाया, कि उसके दुर्व्यवहारोसे मजबूर होकर जेनेरलको यकसा मुहासिरा करना पडा, जिसमें यकसाको अन्तमे आत्मसमर्पण करना पडा। पत्रमे आगे लिखा गया था —

"तो भी परमभट्टारकने यह समझकर रूसियोंके साथ उनके पदके अनुसार वर्ताव करनेके लिये आज्ञा दी, कि रूसी राजुल वोयवोदके कामको नही पसद करेगे। यही वजह है, जो यकसाके एक हजार रूसी सैनिकोको वदी बनानेके बाद उनके साथ कोई बुरा वर्ताव नही किया गया, बल्कि जिनके पास घोडे, हथियार या रसद नही थी, उन्हे यह चीजे देकर इस घोषणाके साथ लौटा दिया, गया, कि हमारे सम्राट् युद्ध पसद नही करते, वह अपने पडोसियोके साथ शातिपूर्वक रहना चाहते है। परमभट्टारककी इस उदारतासे अलेक्सीको वहुत आश्चर्य हुआ, और उसने आखोमे आसू भरकर कृतज्ञता प्रकट की।"

कुछ समयतक बातचीत करनेके बाद सम्राट् खाड्-सीने रूसी और चीनी प्रतिनिधियोको मिल-कर वात करनेके लिये निपचू स्थान निश्चित किया। ३१ जून १६७९ ई०को चीनी प्रतिनिधिमडल क्या सेना-मडल निपचू पहुचा, जिसमे अफसर, सिपाही और नौकर-चाकर लेकर नौ-दस हजार आदमी, तीन-चार हजार ऊट और कम-से-कम पद्रह हजार घोडे थे। वोयवोदने शिकायत की, कि चीनी सुलह नही लडाई करनेके लिये आये है और रूसी दूतमडलने १८ जुलाईतक यह कहते हुये आने-से इन्कार कर दिया, कि दोनो तरफके आदमी समान सख्यामे होने चाहिये। अतमे चीनियोने निम्न बातें कहकर समझौता किया रूसी भी उतनी ही सख्यामे आ सकते है, लेकिन बैठकके समय प्रति-निधियोको तलवार छोडकर दूसरा कोई हथियार साथ नही लाना चाहिये। धोखा न किया जाय, इसके लिये रूसियोकी तलाशी चीनी, और चीनियोकी तलाशी रूसी लेवे। वडे-छोटेका ख्याल हटाने-के लिये दोनो राजदूतोका तम्बू एक दूसरेसे सटा रहे, जिसमे वह अपने-अपने तम्बूमे बैठकर बातचीत कर सके।

समझौतेके लिये एकत्रित यह सम्मेलन वस्तुत दोनो राज्योंके वैभवका प्रदर्शन था। रूसी तम्बू बहुत साफ-सुथरा था। उसके भीतर तुर्की कालीन बिछा हुआ था। चीनी तम्बू अपेक्षाकृत सादा था, जिसके बीचमे एक लम्बी बेच रक्खी हुई थी। जब दोनो राजदूत अपने तम्बुओमें पहुचे, तो रगीन ध्वजा-पताकाये फहरा रही थी, नगारे बज रहे थे। रूसी दूतने पहले घोडेसे उतरकर कुछ कदम आगे बढकर चीनी राजदूतसे पहले तम्बूमें पधारनेके लिये प्रार्थना की। बीचमे एक मेज रखकर दोनो राजदूत आमने-सामने बेचोपर बैठ गये। अनुचर खडे रहे, और दुभाषिये मेजके छोरपर बैठे। बैठनेके बाद बातचीत शुरू हुई। दोनो ओरसे इतनी बढ-चढकर मागे पेश की गईं, कि उनमेंसे कोई उन्हे मान नही सकता था। गरबिलोन चीनी दूतमडलका दुभाषिया था। उसके कहनेके मुताबिक "बस इतना ही बढे कि दो कदम पीछे हटे।" कई दिनोतक मोल-भाव होता रहा। ऐसा मालूम होने लगा, कि सधि-वार्ता भग हो जायगी, लेकिन अन्तमें किसी तरह समझौता हुआ। ६ सितम्बरको सधिपत्रका अन्तिम मसौदा तैयार करके ऊचे स्वरमे पढा गया, और फिर मुहर और हस्ताक्षर करके दोनो पक्षोको एक-एक प्रति दी गई। ९ सितम्बर १६८९ ई०को अन्तमे "दोनो पक्षोंके मुख्य प्रतिनिधियोने खडे होकर सधिपत्रकी प्रतिको हाथमे ले अपने-अपने प्रभुओंके नामसे, सारे ससारके प्रभु सर्वशक्तिमान् भगवान्की शपथ लेकर अपने मनकी ईमानदारीका प्रदर्शन किया।" इसके बाद दोनो ओरसे भेंटे दी गईं। युरोपके किसी राज्यने बिल्कुल समानताके तलपर की गई चीनकी यह पहली सधि थी।

साइबेरियामें विद्रोह—बहुत थोडे समयके भीतर ही रूसियोंने उरालसे अखोत्स्क समुद्र तककी भूमिपर अधिकार कर लिया था। रूसी अफसर साइबेरियाके निवासियोपर भारी कर लगाने लगे, उधर रूसी व्यापारी सस्ती शराब पिलाकर मिट्टीके मोल बहुमूल्य समूरी छालोको लोगोंसे छीनने लगे। लोग विद्रोह करनेके लिये मजबूर होते, दबाये जाते, लेकिन कुछ वर्षो बाद फिर उठ खडे होते। एक बार वह याकुत्स्क नगरको नष्ट करनेमे करीब-करीब सफल हो गये थे। बुर्यत मगोल और एवेंकी हथियार रखनेके लिये तैयार नही थे। जार अलेक्सीके शासनकालमें पश्चिमी साइबेरियामें भी एक जबरदस्त विद्रोह हुआ था।

साइबेरियामें रूसी बस्तियां—रूससे अखोत्स्क पहुचनेमें एसियाके सबसे चौडे उत्तरी भागको आरपार करना पडता है। यह प्रदेश इतना सर्द है, जिसके सामने रूसकी सर्दी लडकोका खिलवाड है, लेकिन तो भी १७वी सदीमे व्यापार और शिकार रूसियोको उधर खीच ले गये। सरकार सैनिकोंके साथ कितने ही दूसरे लोगोंको भी वहा भेजने लगी। थोडे ही समय बाद सरकारने समझा, कैदियोको वहा भेजकर बसाना अच्छा है। हमें मालूम है, आस्ट्रेलियाको भी बसानेके लिये पहले अग्रेज कैदी ही भेजे गये थे—वह अग्रेज कैदियोंके लिये कालापानी बना था। बायरो और अमीरोंके लिये विद्रोही गरीबोंसे पिड छुडानेका यह अच्छा मौका था। दूसरी तरफ अपने प्रभुओंके अत्याचारोंसे पीडित कितने ही किसानोने भी मुक्त हवामें साम लेनेके ख्यालसे साइबेरियामें प्रवास करना शुरू किया। पहले वह उरालतक पहुचे, फिर आगे बढने लगे। साइबेरियामें जगह-जगह किलाबदी करके बहुतसे सैनिकोको रखना पडता था। उनके लिये अन्न भी एक समस्या थी, क्योकि साइबेरियाके अधिकाश कबीले अभी शिकारी अवस्थामें थे, खेतीको एक तरह वहा नये तौरपर शुरू करना था। जो किसान साइबेरिया जाते, उन्हे मुफ्त भूमि मिलती, और बीज-रुपया उधार दिया जाता। इसके बदलेमे वह "प्रभुके लिये" एक निश्चित मात्रामें खेती करके अनाज सरकारको दे देते। रूसके किसानो और साइबेरियाके किसानोमें यही अन्तर था, कि यहा वह किसी जमीदारके लिये नही, बल्कि जारके लिये काम करते थे। किसानोंके अतिरिक्त बहुतसे रूसी व्यापारी भी आकर साइबेरियामे बस गये, जिनमेंसे कितनोने अपनी खेती-बारी कायम कर ली और कुछ सैनिक सेवामें भी दाखिल हो गये। इस तरह १७वी सदीके अन्ततक अर्थात् औरगजेबके अन्तिम वर्षोतक साइबेरियामें जगह-जगह रूसी बस्तिया और गाव बन गये थे। रूसियोने साइबेरियामें उत्पादनको बढाकर औरोको भी बहुत प्रोत्साहन दिया। धीरे-धीरे खेतीका प्रसार बढा और १७वी सदीके अन्ततक पश्चिमी साइबेरियाके दक्षिणी जिले कृषिप्रधान हो गये। रूसी प्रवासियोंने एसियाके उत्तरी भागकी खोज-पडतालमे बहुत काम किया। उन्होने वहा लोहेकी खानो, और नमककी खानोका पता लगाकर काम शुरू

किया। रूसी यात्रियोने अपने यात्रा-विवरण तथा साइबेरियाके नक्शे प्रकाशित किये। रूसी सरकारके लिये साइबेरिया अर्थागमका एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्रोत था। वहाकी बहुमूल्य समूरी छालोकी पश्चिमी युरोप, चीन और ईरानमे बडी माग थी। इस आमदनीसे सरकार अपने सैनिक खर्च और नौकरोके वेतनोको देनेमे समर्थ थी।

३ फ्योदोर, अलेक्सी-पुत्र (१६७६–८२ ई०)

जार अलेक्सीके मरनेके बाद उसका पुत्र फ्योदोर गद्दीपर बैठा। इसने दो बार व्याह किया, जिसमे पहली स्त्री मीलोस्लाव्स्की-कुलकी कन्यासे उसकी सोफिया आदि कई लडकिया तथा दो पुत्र फ्योदोर और इवान हुये। मरनेसे थोडा समय पहले जार अलेक्सीने नारुश्किन कुलकी कन्या नतालिया किरिलोव्नासे व्याह किया। नतालिया जारके एक कृपापात्र बायर अर्तमान मत्वयेफ परिवारमे पाली-पोसी गई थी, जहा उसे पश्चिमी सस्कृतिके घनिष्ठ सबधमे आनेका मौका मिला था। मत्वयेफका घर युरोपीय ढगसे सजा रहता था। उसके पास युरोपीय अभिनेताओकी एक मडली थी। १६७२ ई० में नतालियाको एक पुत्र पैदा हुआ, यही पीछे महान् जार पीतर I हुआ। अलेक्सीके मरनेके बाद फ्योदोर जब गद्दीपर बैठा, तो उसकी उम्र चौदह वर्षकी थी। वह मस्तिष्क और शरीरका बडा ही दुर्बल बालक था। जारके अन्तिम समयमे नतालियाके सबधके कारण नारुश्किनोका प्रभाव बढ गया था, लेकिन फ्योदोरके मातृ-कुलके होनेसे मीलोस्लाव्स्कियोने अधिकार अपने हाथमे सभाल लिया। पश्चिमी युरोप और बाहरी देशोके प्रथम प्रभावके परिणामस्वरूप १६८७ ई०मे मास्कोमे प्रथम स्थायी शिक्षण-सस्था "स्लावानिक-ग्रीक-लातिन-अकदमी"के नामसे स्थापित हुई।

नारुश्किन इसे बर्दाश्त करनेके लिये तैयार नही थे, कि मीलोस्लाव्स्की दरबारमे सर्वेसर्वा हो जायें। आखिर उनका भी नाती जार-पुत्र पीतर था। जार फ्योदोर १६८२ ई० मे निस्सतान मर गया, उसके उत्तराधिकारी उसके दो भाई—सहोदर इवान तथा सौतेला पीतर थे। इवान यद्यपि उमरमें बडा, लेकिन दिमागसे बहुत कमजोर था। फ्योदोरके शासनकालमे मीलोस्लाव्स्कियोने जो मनमानी की थी, उसके कारण वह अप्रिय-से हो गये थे, इसलिये जारके जीवित-कालमे ही उन्होने नारुश्किनोके साथ मैत्री स्थापित की। जैसे ही जार फ्योदोर मरा, महासघराज और बायरोने छोटे जारकुमार पीतरको जार घोषित कर दिया। महलके सामने जमा हुई भीडने बडी हर्ष-ध्वनिसे इसका स्वागत किया, लेकिन मीलोस्लाव्स्की कुल इसे माननेके लिये तैयार नही हुआ। उन्होने स्त्रेल्त्सी (सैनिको)को भडकाया, जिनको कि काफी समयसे वेतन नही मिला था। ५ मई १६८२ ई० को स्त्रेल्त्सी बहुतसी तोपे अपने अधिकारमे कर झडा लिये नगाडा बजाते क्रेमलिनके भीतर घुस गये। लोगोने हल्ला उडाया, कि नारुश्किनोने इवानको मार डाला, इसपर पीतरकी मा नतालियाने दोनो भाइयो—इवान और पीतरको लाकर खिडकीपर खडा किया। लेकिन स्त्रेल्त्सियोका क्रोध शात नही हुआ। वह महलके भीतर घुस गये, और सबसे पहले जिस आदमीको उन्होने खतम किया, वह था नारुश्किनोका मुखिया राजुल दोल्गोरुकी। शामतक बायरोको पकड-पकडकर वह मारते रहे। वह बायरोको घसीटते हुये सैनिक मजाक उडाते थे—"यह बायर लरमोदानोव्स्की है, दूमाके सदस्यके लिये रास्ता दीजिये।" मारे गये आदमियोमे बायर अर्तमान मत्वयेफ और जारानीके दो बडे भाई भी थे। अन्तमे जारानीने स्त्रेल्त्सियोके पैंतीस वर्षके बाकी वेतनको देनेका वचन दिया और उनके आग्रहपर इवान और पीतर दोनोको सयुक्त जार घोषित किया गया—इवानको प्रथम जार माना गया। उनकी नाबालिगीके समय राजभगिनी सोफिया सरक्षिका घोषित की गई।

सोफियाका शासन—सोफियाका सबसे घनिष्ठ मित्र "प्रथम मत्री" राजुल वासिली गोलित्सिन उस कालके सबसे सुशिक्षित बायरोमे से था। वह चाहता था, कि देशमे नये सुधार किये जाय। लेकिन, अभी रूसको पोलंदसे निबटना था। इसी समय तुर्कोंके साथ पोलदका वैमनस्य बढा, जिससे उसे रूसके साथ समझौता करनेके लिये मजबूर होना पडा। तुर्कोंके विरुद्ध पोलद और वेनिस (इताली) को मदद देनेके लिये आस्ट्रियाने सधि की थी। तुर्कोंके साथ युद्ध छिडा हुआ था। मित्र-शक्तियोने वीनामे तुर्कोकी सेनाको हराया, और सुल्तानको आस्त्रियन राजधानीका मुहा-

सिरा उठाना पड़ा। अभी भी तुर्कीको पूरी तरह दवाया नही जा सका था, इसलिये मित्र-शक्तियोको रूमकी सहायताकी अवश्यकता पडी। इस प्रकार १६८६ ई० मे पोल-राजाने मास्को अपना दूतमडल भेजा, और कुछ समयकी वातचीतके वाद दोनो देशोमे "सनातन" सधि हो गई। पोलदने कियेफ और उसके पासके थोडेसे इलाकेको रूसको देना स्वीकार किया और रूसने तुर्की सुल्तानके सामन्त क्रिमियाके खानसे तुरत लडाई छेडनेका वचन दिया। १६८७ ई० मे राजुल वासिली गोलित्सिनके अधीन पहली रूसी सेनाने क्रिमियापर आक्रमण किया, लेकिन उसे पूर्णतया असफल होकर लौटना पडा। फिर १६८९ ई० के वसतमे और भी वडी सेनाके साथ गोलित्सिन तातारोके किले पेरकोफ पर पहुचा, जिसे तातारोने क्रिमियाके स्थलडमरूमध्यके सवसे सकरे स्थानपर वनाया था। गोलित्सिन इस किलेको नही ले सका, और फिर उसे लौटना पडा। इतना धन और प्राण गवाकर असफल होनेका परिणाम सोफियाकी सरकारके लिये अच्छा नही हुआ। लोगोने खुलकर असतोष प्रकट करना शुरू किया।

४ इवान VI, अलेक्सी-पुत्र (१६८२-९६ ई०)

यद्यपि इवान और पीतर दोनो सयुक्त जार घोषित हुये थे, लेकिन सरक्षिका सोफिया इवानकी सहोदरा थी, इसलिये एक तरहसे शक्ति उसके हाथमे होनेसे पीतर उपेक्षितसा था। अपनी माके साथ उपनगरमे पीतरका समय अधिकतर प्रेयोब्रजेन्स्कोयके महलमे वीतता था। वहा जगलोमें वह अपने लगोटिया यारोके साथ सिपाहियोका खेल खेला करता। वह मिट्टीके छोटे-छोटे किले वनाते, फिर उसपर आक्रमण करनेका दाव-पेच लगाते। कुछ सालो वाद पीतरने अपने साथियोकी दो नकली पलटनें वनाई, जिनमेंसे एकका नाम उसने प्रेयोब्रजेन्स्की रक्खा और दूसरेका नाम सेमओनोव्स्की—ये दोनो गाव पास-पासमे थे। एक वार अपने दादाकी चीजोमें पीतरको एक पालवाली विदेशी नाव मिली। पीतरने अव उसे लेकर नौचालनका खेल शुरू कर दिया। मास्कोके एक विदेशी निवासी ब्राटने उसे नौ-सचालन-की शिक्षा दी। ब्राट पहले नौसेनामे रह चुका था। मास्कोके पास वहनेवाली नदी यउजा (यौजा) छोटी थी, इसलिये पीतर अपनी नावको लेकर इज्माइलोवोके तालावमे पहुचा। लेकिन वह भी नावके मोडने-माडनेके लिये पर्याप्त नही था, इसलिये पीतर अव माकी आज्ञा लेकर पेरेया-स्लाव्लके वडे सरोवरमें गया। उसकी वहिन सोफिया पीतरके इन सैनिक खेलोमे लगे रहनेको पहले पसद करती थी, क्योकि इस प्रकार वह दरवारके षड्यन्त्रोकी ओर ध्यान नही दे सकता था, लेकिन आयुके वढनेके साथ-साथ पीतरके नकली सैनिक असली होते जा रहे थे। पीतर सत्रह वर्षका हो गया था। उसके लडकपनके खेलकी दोनो पलटने अव यूरोपीय ढगपर शिक्षित मास्कोकी पलटन वन गई थी। सोफियाको जव खतरेका पता लगा, तो उसने रास्तेके इस काटेको अलग करना चाहा। उसने अपनेको कागज-पत्रोमे "परमशासक" लिखना शुरू किया। वह स्त्रेलित्सयोको अपनी ओर मिलानेके लिये उनको भोज-भाज देने लगी। पीतर और सोफियाके सवध विगडते गये। अन्तमे अगस्त १६८९ ई० की एक रातको पीतरको खवर लगी, कि सोफिया आक्रमण करनेके लिये स्त्रेलित्सयोको तैयार कर रही है। पीतर तुरन्त घोडेपर सवार हो त्रोयत्स्क-सेर्गियेफके दुर्गवद्ध मठमे पहुचा। वहीपर उसकी "नकली" पलटन जमा हो गई और एक स्त्रेलत्सी पलटनके साथ कितने ही अमीर और कुछ वायर भी आ मिले। स्त्रेलित्सयोंके भडकानेका सोफियाका सारा प्रयत्न विफल हुआ। पीतरके समर्थकोकी सख्या दिनपर दिन वढती गई, और महीने वाद शक्ति पीतरके हाथमे आ गई। सोफियाको मठमें साधुनी वनके रहनेके लिये मजवूर होना पडा, और उसके सहायक राजुल वासिली गोलित्सिनको उत्तरमे निर्वासित कर दिया गया।

५ पीतर I, अलेक्सी-पुत्र (१६९६-१७२५ ई०)

औरगजेवके शासनके अन्तके साथ हम भारतके इतिहासको आधुनिक इतिहासके रूपमे वदलते नही देखते, लेकिन पीतरके शासनके साथ रूस आधुनिक जगत्मे प्रवेश करता है। जैसा कि पहले कहा गया, १६८२ ई० मे अपने भाई इवानके साथ पीतर भी सयुक्त जार घोषित हुआ। असली राजशक्ति

को हाथमे लेनेमे वह १६८९ ई० मे सफल हो गया था, तो भी अभी उसका भाई इवान १६९६ ई० तक जारके तौरपर मौजूद रहा। पीतरकी मा ऐसे परिवारकी कन्या थी, जिसमे पश्चिमी युरोपके फैशन वहुत कुछ स्वीकृत किये जा चुके थे। मास्कोमे कितने ही पश्चिमी युरोपके व्यापारी, विद्वान् और शिल्पी रहते थे, जिनके मुहल्लोमे भी पीतर जाया करता था। पश्चिमी युरोपमे उस समय ज्ञान-विज्ञानकी रोशनी फैलने लगी थी, आधुनिक युद्धकला तथा सामरिक यन्त्रोका विकास हो रहा था। पीतर जैसे प्रतिभाशाली तरुणको साफ मालूम होने लगा, कि रूसको महान् वनानेके लिये हमे पश्चिमी युरोपसे वहुतसी वाते सीखनी होगी। उनके सीखनेके लिये सिर्फ वादशाही हुक्मसे काम लेना वेकार समझ, वह स्वय आस्तीन समेटकर सीखनेके लिये दिलोजानसे कूद पडा। पीतरके शासनके प्रथम अठारह वर्ष औरगजेवके अन्तिम वर्ष थे। यह भी उल्लेखनीय वात है, कि पीतरका दूत भारत आकर औरगजेवसे सूरतमे मिला था। पीतर रूसको जहा एक सुसगठित शक्तिशाली राष्ट्रके रूप मे वडे तेजीसे परिणत कर रहा था, वहा हिन्दुस्तानी औरगजेवका काम उससे विलकुल उलटा था। पीतर ज्ञान-विज्ञान और सहिष्णुता द्वारा रूसका एकीकरण कर रहा था, और औरगजेव धर्मान्धता द्वारा मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करनेके प्रयत्नमे राष्ट्रको छिन्न-भिन्न कर रहा था। औरगजेवकी अदूरदर्शिताका फल भारतने १७०७ से १९४७ ई० तक भोगा। यही समय है, जब कि पीतरकी जमाई नीवपर रूस दुनियाका अत्यन्त शक्तिशाली राष्ट्र वन गया। यह आश्चर्य करनेकी वात नही है, यदि वोल्शेविक पीतरकी प्रशसा करते नही थकते। वस्तुत वह रूसके सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र-निर्माताओमे मे था।

वहिन सोफियाके शासनके खत्म होनेके वाद पीतरकी मा नतालिया अभिभाविका वनी। पीतरने माके काममे दखल देना पसद नही किया। वह अपने सैनिक खेलको और गम्भीरताके साथ खेलता रहा। अपने सहायकोकी मददसे एक युद्धपोत वनाकर उसने पेरेयास्लाव्ल सरोवरमे उतारा। थोडे ही दिनो वाद वह उसे लेकर ध्रुवकक्षीय अर्खगल्स्कमे गया, जहापर पश्चिमी युरोपके वडे-वडे जहाज आया करते थे। यहा पहलेपहल उसने उन जहाजोको देखा, जो कि महासमुद्रोको चीरते दुनियाके दूर-दूरके देशोम जाया करते थे। उसका जिज्ञासु हृदय उन्हे देखकर न जाने किन-किन कल्पनाओमे लीन हो गया। वहीपर एक पुराने स्काट जेनरल पेट्रिक गोर्डनसे उसने परिचय प्राप्त किया। गोर्डनने उसे अपने सामुद्रिक युद्धोकी वाते सुनाई। डच टिमरमानसे वह यही गणित और तोप चलानेका ज्ञान प्राप्त करने लगा। प्रतिभाशाली होनेके कारण थोडे ही दिनोमे वह अपने शिक्षककी भी गलतिया निकालने लगा। पीतरकी यह प्रथम तैयारी थी। वह क्रिमियासे गोलित्सिनकी असफलताओका वदला लेना चाहता था। रूसने आस्ट्रिया और पोलदके साथ हो तुर्कीसे लडनेके लिये सधि की थी, किन्तु उसने अभी उसमे पूरा मनोयोग नही दिया था। अजोफके किलेके वारेमे क्रिमियाके खानसे वातचीत चली, लेकिन उसने उसे देनेसे साफ इन्कार कर दिया। अजोफ किलेमे इस समय तुर्कीकी सेना रहती थी। उसपर विना अधिकार किये रूसी दोन द्वारा कालासागरमे नही पहुच सकते थे। पीतरने अव अपने खेलोको छोडकर वास्तविक युद्धमे उतरनेका निश्चय किया। १६९५ ई० के वसतमे तीस हजार सेना लेकर नावो द्वारा वह ओका नदीसे वोल्गा होकर जहा वोल्गा और दोन एक दूसरेके वहुत नजदीक होती है, (जहा पर १९५२ ई० मे वोल्गो-दोन नहर जारी की गई है) वहा नावोको कधोपर उठाकर दोन नदीमे पहुचाया गया। इसी समय पीतरने अपने एक पत्रमे लिखा था—"कोजुकोफमे हमे वडा आनन्द आया था (यही मास्कोके उपनगरमे पीतरने सैनिक प्रदर्शन किये थे), और अव हम खेलके लिये अजोफ जा रहे हैं।" अभी पीतरके पास युद्धपोत नही थे इसलिये वह समुद्रकी ओरसे किलेको नही घेर सकता था। तुर्की सेनाको कुमक मिलनेमे कोई दिक्कत नही थी। उन्होने शरद् आरम्भ होते-होते रूसियोपर इतने जोरका प्रहार किया, कि उन्हे अजोफका मुहासिरा उठा लेना पडा।

इस हारने पीतरके लिये वडी शिक्षाका काम दिया। उसने अनुभव किया, कि विना नौसेना के काम नही चल सकता, इसलिये सारे जाडोमे वह सैनिक पोतोके निर्माण करनेमे दिलोजानसे पिल पडा। वोरोनेज नदीके किनारे दोनके सगमसे नातिदूर वज, देवदारके जगलोके नजदीक रहनेसे वही पोतोका निर्माण किया जाने लगा। इस काममे पीतर स्वय अपने हाथसे आरे खीचने और वसूला चलानेमे

भी पीछे नही रहता था। जारकी इतनी तत्परता देखकर दूसरोमे क्यो न उत्साह होता ? जाडा खतम हो १६९६ ई० का वसत आया। इसी समय अजोफके पास रूसियोका एक बहुत बडा जहाजी बेडा देखकर तुर्कोको बहुत आश्चर्य और उससे भी अधिक परेशानी हुई। यह कहने की अवश्यकता नही, कि अभी वाष्प-इजनोका युग नही था। तुर्की सैनिक बेडेमे लडनेकी हिम्मत नही थी। पीतरने जल और स्थल दोनो मार्गोमे अजोफके किलेको घेर लिया। कान्स्तन्तिनोपोलमे कोई मदद नही मिली, इसलिये ग्रीष्म के अन्ततक तुर्कोने आत्मसमर्पण कर दिया। लेकिन पीतर जानता था, कि अजोफ ले लेनेसे ही काम नही चलेगा। कालासागरके तटपर तुर्कोके और भी कितने ही सैनिक अड्डे थे। अभी तक अधकचरा ज्ञान रखनेवाले युरोपीय लोगोमे पीतरने पश्चिमी युरोपकी बाते सीखी थी, इसलिये वह स्वय वहा जाकर सीखनेके लिये तैयार हो गया।

मा राजकाज सभाले हुई थी, इसलिये देशमे पीतरकी उतनी अवश्यकता नही थी। मुस्लिम तुर्कोके विरुद्ध पश्चिमी युरोपके राज्योसे घनिष्ठ सबध स्थापित करनेके उद्देश्यमे मास्कोने एक महादूत-मडल भेजा, जिसमे भेस बदलकर पीतर स्वय शामिल हो गया। वह वहासे अपने साथ विशेषज्ञो, इजीनियरो, तोपचियो आदिको लाना चाहता था। १६९७ ई० मे दूतमडल मास्कोसे चला था, जिसके साथ पीतर मिखाइलोफके नाममे एक साधारण जहाजी भी था। उसकी मशा युरोपकी सभी बातोको गभीरतासे सीखनेकी थी। पीतरने पीछे अपनी मुहरमे खुदवा रक्खा था—"मै गुरुओकी खोजमे रहने वाला विद्यार्थी हू।" औरगजेब और पीतरके अन्तरको यहा हम साफ देख सकते है। दूतमडलके पहले ही पीतरने कोइनिग्सबर्ग नगरमे पहुच तोप चलानेकी कला सीखी। वहासे फिर वह हालैण्डके सारडम नगरमे पहुचा, जो कि अपने पोत-निर्माणके कामके लिये बहुत प्रसिद्ध था। पीतर एक साधारण लोहारके घरमे बसकर मामूली बढईकी तरह जहाजी कारखानेमे काम करने लगा, लेकिन वह अधिक दिनोतक अपनेको छिपा नही सका। बहुतसे डच-व्यापारी रूस गये हुये थे, उनकी आखे साढे छ फुटके तगडे जवानको देखकर कैसे चूक सकती थी ? लोगोसे बचनेके लिये पीतर वहासे आम्स्टर्डम चला गया, और वहा एक सबसे बडे जहाजी कारखानेमे काम करने लगा। यह एक-दो दिनके दिखावेका काम नही था। पीतर चार महीनेतक आम्स्टर्डममे काम करता रहा, तबतक जबतक कि जिस जहाज के निर्माणमें वह स्वय भी काम कर रहा था, वह पानी मे नही उतार दिया गया। जहाजमे काम करनेके समयके बाद वह दूसरे कारखानो, मिस्त्रीखानो और म्युजियमोमे जाता, डच वैज्ञानिको और कलाकारो के साथ बातचीत करता। हालैण्डसे पीतर इगलैण्ड गया। वहा उसने वहाकी शासन-व्यवस्थाका अध्ययन किया। वह एक बार पार्ल्यामेंटके अधिवेशन को भी देखने गया। दो महीनेतक टेम्सतटपर डेप्टफर्डके कारखानेमे पोत-निर्माणकी कलाको व्यवहारिक तौरसे सीखता रहा।

समकालीन भारतमे क्या हम किसी ऐसे मुगल युवराज या शाहजादेको देख सकते थे ? पीतर अपने और अपने देशके बारेमें 'होनहार बिरवानके होत चीकने पात' की कहावतको सिद्ध कर रहा था।

इगलैण्डसे पीतर आस्ट्रियाके सम्राट्के साथ सैनिक सधिके बारेमे बातचीत करनेके लिये आस्ट्रिया गया। इस सारे पर्यटनसे महादूतमडलको मालूम हो गया, कि तुर्कोके विरुद्ध कोई बहुत बडा समझौता नही हो सकता। युरोपमे स्पेनके उत्तराधिकारको लेकर अलग ही विरोध शुरू हो गया था, जो कि अन्तमे तेरह साल (१७०१—१७१४ ई०) के युद्धके रूपमे परिणत हो गया। आस्ट्रियाके राजवशका सारा ध्यान स्पेनकी ओर था। वह तुर्कोके विरुद्ध रूसके साथ समझौता कैसे करता ? उलटे उसने तुरत तुर्कोके साथ सधि कर ली, जिसमे कि स्पेनकी ओर पूरा ध्यान दे सके। अपनी यात्रामे जहा पीतरने पश्चिमी देशोकी नई-नई प्रगतिको देखा और उनसे कितनी ही बाते सीखी, वहा उसके दिलमें यह देखकर सुई चुभ रही थी, कि स्वीडनने अब भी बाल्तिक-तटसे रूसको वचित कर रक्खा है। समुद्रका रास्ता रूसके लिये कहीसे नही था। पीतरकी दूरदर्शी आखें देख रही थी, कि कोई भी राष्ट्र बिना समुद्रके सहारे—बिना समुद्रपर विजय किये—अपनेको सुरक्षित और शक्तिशाली नही बना सकता। युरोपीय शक्तियोको तुर्कोके विरुद्ध कुछ करनेके लिये नही तैयार देख, पीतरने पहले स्वीडनसे बाल्तिक-तटको छीननेका निश्चय किया। तुर्कोकी अपेक्षा स्वीडन ही उस वक्त अधिक निर्बल शत्रु भी था। उसने झट तुर्की और क्रिमियाके खानसे सधि कर ली।

शायद पीतर अभी और कुछ समयतक विद्यार्थी बनकर पश्चिमी युरोपमे घूमता, लेकिन इसी समय स्त्रेल्त्सियो (गारद सैनिको) के विद्रोहकी खबर मिली। स्त्रेल्त्सी मास्कोमे गारदका ही काम नही करते थे, बल्कि वह अपना अधिक समय छोटे-छोटे व्यापारो और दस्तकारीके कामोमे भी लगाते थे। पीतरने राजधानीमे लौटकर उनसे माग की, कि तुम्हे अपना सारा समय सैनिक सेवामे देना होगा। इस विद्रोहसे फायदा उठानेके लिये राज्य-वचिता साधुनी सोफिया चुपके-चुपके स्त्रेल्त्सियोसे मिलकर षड्यत्र करने लगी। १६९८ ई०के ग्रीष्ममे तोरोपेत नगरकी छावनीमे रहनेवाले स्त्रेल्त्सियो की चार पल्टने बलवा कर मास्कोकी ओर चल पडी, लेकिन पीतरके जेनरल गोर्डनने राजधानीके पास उन्हे आसानीसे हरा दिया। यह खबर पीतरको वीनामे मिली। सुनते ही वह बहुत जल्दी मास्कोके लिये चल पडा। रास्तेमे वह पोलदके राजा अगस्तससे मिला। दोनोने मिलकर स्वीडनके विरुद्ध लडनेका निश्चय किया। कही लोग राजधानीमें उसके स्वागतके लिये बडी तैयारी न कर दे, इसलिये वह एक दिन यकायक पहुचकर महलमें भी न जा प्रेयोब्रजेस्कोय गावके अपने साधारणसे बगलेमे चला गया। खबर पाते ही दूसरे दिन सबेरे, बडे-बडे बायर, अमीर, व्यापारी और नागरिक स्वागत करने पहुचे। पीतरने उनके साथ बडे प्रेमसे मुलाकात की, लेकिन पुराने दस्तूरके मुताबिक उसने किसीको भी धरती पर मत्था टेककर प्रणाम करने नही दिया। इसी स्वागतके समय पीतरने कितने ही बायरोकी लम्बी दाढियोको कैंची ले अपने हाथसे कतर दिया। पीछे उसने राजादेश निकालकर लम्बी दाढी और ढीलमढाल रूसी चोगा पहननेका निषेध कर दिया। स्त्रेल्त्सी-विद्रोहके बारेमे खोज करनेपर पता लगा, कि इसके पीछे सोफियाका हाथ है। जगह-जगहपर फासीकी टिकटिया खडी करके उसने स्त्रेल्त्सियोके १९५ मरगनोको नवोदेविची भिक्षुणी मठके जगलोके सामने फासीपर लटकवा दिया—सोफिया इसी मठमें रहती थी। सब मिलाकर बारह सौ स्त्रेल्त्सियोको प्राणदड दिया गया। पीतरने मास्कोस्थित उनकी पल्टनको तोड दिया, सोफियाको षड्यन्त्र करनेके लिये इतना ही दड दिया गया, कि अब वह साध्वियोके घूघटको पहिनकर एकान्तवास करनेके लिये मजबूर की गई।

अब पीतरको तन्मयताके साथ स्वीडनसे निबटनेकी तैयारी करनी थी। किसानो, अर्धदासो तथा मुक्त आदमियोको भर्ती करके उसने एक नई सेना सगठित की। सैनिकोकी वर्दी उसने पश्चिमी युरोपकी नकलपर बनवाई और सबेरेसे रात होनेतक मास्कोके उपनगरमे यह नये रगरूट कवायद-परेडमे लगे रहते। तीन महीनेके भीतर बत्तीस हजार सेनाको शिक्षा दी गई—इसी बीच कान्स्तन्तिनोपोलमे दूत भेजकर पीतरने अगस्त १७०० ई० मे तुर्कीके साथ सधि की थी। इस सधिके अनुसार तुर्कीने अजोफपर रूसका अधिकार कबूल कर लिया। इसके बाद तुरत पीतरने अपनी सेनाको स्वीडन-अधिकृत नारवाके किलेपर प्रहार करनेका हुक्म दे दिया। बाल्तिक समुद्रमे पहुचने के लिये नारवाका लेना आवश्यक था। पीतरका मुकाबिला एक नई सेनासे था। उसे रसद और हथियारोके प्रबधमें कितने ही दोषोका पता लगा। सिपाहियोको पेटभर खाना नही मिलता था, खाइयोमें सर्दीसे तकलीफ, इसलिये बीमारी फैली। खबर पाते ही स्वीडनके राजा चार्ल्सने सहायताके लिये प्रयाण किया। अन्तमें रूसियोकी हार हुई, उनके बहुत-से सैनिक तथा सारा तोपखाना स्वीडनके हाथमे पड गया। लेकिन, पीतरके लिये हरएक असफलता नई तैयारीका अवसर देती थी। उसने सारी शक्ति लगाकर बडी तेजीसे सेनाको फिरसे सगठित करना शुरू किया। तोपोके ढालनेके लिये उसने गिर्जोके बहुतसे विशाल घटोको गला डाला और एक सालके भीतरही तीन सौ तोपे तथा नारवामे गवाई सेनासे भी दुगनी सेना तैयार कर ली। पहले बायरोको जन्मत जेनरल बननेका अधिकार था, लेकिन अब पीतर ने उनके लिये भी बाकायदा शिक्षा लेनेका नियम बना दिया। १७२१ ई० मे—औरगजेबकी मृत्युके छ साल पहले—रूसी सेना फिर लडाईके लिये तैयार थी। शेरेमेतोफके नेतृत्वमें एक रूसी सेनाने स्वीडोको दो बार हराकर बाल्तिक-तटके लिफलदिया प्रदेशपर अधिकार कर लिया। १७०३ ई०में रूसी सेनाने मरियतबुर्गको सर किया, अगले साल दोर्पत और नारवा उनके हाथमे थे। इस समय पीतर नेवा नदीके वाम तटपर इग्रियामे लडाईका सचालन कर रहा था। १७०२ ई०की शरद्मे नेवा नदीके उद्गम लदोगा-सरोवरके तटपर अवस्थित स्वीडोके अधिकृत नोटबोर्गपर अधिकार कर

लिया। पीतरने इस किलेका नाम वदलकर श्लुसेल्वुर्ग (कुजीनगर) रक्खा, क्योकि यह नेवा नदी होकर फिनलन्दकी खाडीमे पहुचनेकी कुजी थी। १७०३ ई०के वसतमे आगे वढकर समुद्र-सगमसे नाति-दूर नेवाके वाये किनारेपर अवस्थित स्वीड किले नेन्स्कान्सपर अधिकार कर इसी जगहपर पीतर और पाल किलेकी नीव रक्खी और कुछ लकडीके मकान वनवाये—यहीसे पीतरवुर्ग (आधुनिक लेनिन-ग्राद) आरम्भ हुआ, जो वोल्शेविक क्रातिके समयतक रूसकी राजधानी रहा। पीतरका एक वहुत वडा सकल्प पूरा हुआ—रूसकी सीमा समुद्र-वेलातक पहुच गई।

लेकिन, लडाईका मतलव केवल प्राणोकी ही क्षति नही, वल्कि अपार धनकी भी क्षति है, जिसके लिये किसानोका सवसे अधिक दोहन होना था। पीतरने नगरोमे दाढी रखना निपिद्ध कर दिया था, लेकिन जो दाढी-कर देनेको तैयार थे, वह उसे रख सकते थे—इस करकी रसीदके तौरपर एक तावेका सिक्का मिलता था। ग्रामीणोको दाढी रखनेकी स्वतन्त्रता थी, लेकिन नगरमे आनेपर उन्हे भी दाढी-कर चुकाना पडता। दाढीको उस वक्त धर्मके साथ सवधित समझा जाता था, इसलिये पीतर के इस कामसे लोगोंके नाराज होनेका मौका था, लेकिन वस्तुत सवसे अधिक असतोप था आर्थिक कठिनाइयोके कारण। जगह-जगह छोटे-मोटे विद्रोह हुये। एक वडा विद्रोह ३० जुलाई १७०५ ई० को अस्त्राखानमे हुआ, जिसमे वोयवोद और कितने ही राजकर्मचारी मार डाले गये। फील्ड मार्शल शेरेमेतोफके नेतृत्वमें पीतरकी सुशिक्षित सेना जव गई, तो विद्रोहियोको क्या आशा हो सकती थी? मार्च १७०६ ई०मे तोपोकी मारके सामने अस्त्राखानको आत्म-समर्पण करना पडा, जिसपर आठ महीनेतक विद्रोहियोने अपना शासन स्थापित कर लिया था। अस्त्राखानके विद्रोहके समाप्त होने के तुरन्त ही वाद दोनमे एक विद्रोह उठ खडा हुआ। इससे तीन वर्ष पहले १७०४ ई० में वाशकिरोने भी विद्रोह किया था, जिसमे विद्रोहियोंके नेताओने क्रिमियाके खान या तुर्कीके खलीफाके अधीन अपना स्वतन्त्र राज्य कायम रखनेका इरादा किया था। पीतरने १७११ ई० तक अपनी शक्तिशाली सेनाके वलपर सभी जगह विद्रोहोको दवा दिया।

स्वीडनके साथ अभी अन्तिम निर्णय नही हो पाया था। उक्रइनका हेतमन (राजप्रमुख) इवान माजेपा पीतरसे असतुष्ट हो स्वीडनके राजा चार्ल्ससे साठ-गाठ कर रहा था, इसलिये भी स्वीडन की हिम्मत वढी थी। माजेपाने रूसके खिलाफ भडकाकर अपने लोगोको विद्रोह करनेके लिये तैयार करना चाहा, लेकिन वह उसमे सफल नही हुआ। चार्ल्स अप्रैल १७०९ ई०में सेना लेकर आया और उसने पोल्तावाके किलेको घेर लिया। पोल्तावाके लेनेपर स्वीडनके लिये मास्कोका रास्ता खुल जाता। पीतरको तुर्कीसे भी डर था, तो भी वह अपनी प्रधान-सेना लेकर पोलतावाकी ओर दौडा। २७ जून १७०९ ई० को पोलतावाके पास वोर्स्कला नदीके किनारे वह निर्णायक युद्ध हुआ, जिसने रूस के इतिहासको आगे वढानेमें भारी सहायता की। युद्धके दिनसे पहलेवाली शामको पीतरने रूसी सेनाके लिये जो आदेश दिया था, उसके कुछ अश निम्न प्रकार है—

"जवानो, वह घडी आ रही है, जो हमारे देशके भाग्यका फैसला करेगी, इसलिये यह मत सोचो, कि तुम पीतरके लिये लड रहे हो। तुम लड रहे हो उस राज्यके लिये, जो कि पीतरको सौपा गया है, तुम लड रहे हो अपने परिवारके लिये, अपनी जन्मभूमिके लिये। अजेय कहे जानेवाले दुश्मन की प्रसिद्धिसे हिम्मत न हारो, क्योकि यह प्रसिद्धि झूठी वात है। इस प्रसिद्धिको तुमने कई वार अपने विजयो द्वारा झूठा सिद्ध किया है। जहातक पीतरका सवध है, तुम यह गाठ वाध लो, कि उसे अपना प्राण प्रिय नही है।"

लडाई शुरू हुई। रूसियोका प्रहार इतना जवरदस्त था, कि स्वीडोमे भगदड मच गई। वह भारी सख्यामे खेत आये। कुछ थोडी-सी सेना ले चार्ल्स और माजेपा तुर्कीकी ओर भागे, वाकी सेनाने आत्म-समर्पण किया, जिसकी सख्या वीस हजार थी। उस समय स्वीडनकी सेना युरोपमे सवसे अच्छी मानी जाती थी। पीतरने उसे हराकर सारे युरोपमे रूसकी धाक जमा दी।

उत्तरमे समुद्रके रास्ते भागना सभव न देखकर चार्ल्स तुर्कीकी ओर भागा था। उसने तुर्कोको भडकाया, जिसपर तुर्कीने १७१० ई०मे रूसके विरुद्ध युद्ध घोपित कर दिया। पीतर तुरत चालीस हजार सेना ले दन्यूव (दुनाइ) नदीकी ओर चल पडा। करीव दो लाख तुर्क सेनाने आगे वढकर प्रुथ नदीके-

किनारे १७११ ई०मे पीतर और उसकी सेनाको घेर लिया। रूसी सेनाकी भीतरी हालत वहुत वुरी थी, लेकिन तुर्की सेनापतिको इसका पता नही था, इसलिये उसने समझौतेकी वात स्वीकार की। पीतर वेवकूफीभरी वीरताका पक्षपाती नही था। उसने अजोफको तुर्कोंके हाथमे दे अपनी सेनाको वचा लेनेमे सफलता पाई।

तुर्कोंसे छुट्टी पाकर फिर उसने स्वीडनकी तरफ मुह फेरा और १७१४ ई०मे अवकी उसने हगो अन्तरीप (फिनलन्द)मे स्वीडनकी नौसेनापर भारी विजय प्राप्त की। इस नौसैनिक पराजयके वाद स्वीडनने रूससे समझौतेकी वातचीत शुरू की, लेकिन पीछे उसे तोड दिया, जिसपर १७२० ई० मे रूसको दूसरी नौसैनिक विजय प्राप्त करनी पडी। अव वाल्तिक-तट फिर रूसका हो गया। यही नही, कुछ ही वर्षोंके भीतर रूसकी नौसैनिक-शक्ति भी वहुत वढ गई। अन्तमे १७२१ ई०मे सधि करके स्वीडनने फिनलन्द-खाडीका तट और रीगा-खाडीकी तटभूमि, करेलियाका कुछ भाग—जिसमे विपुरी भी था—और दूसरे प्रदेश रूसको दे दिये।

पूर्वमें प्रसार—यद्यपि पीतरको स्वीडनके साथ वहुत सालोतक फसा रहना पडा, लेकिन उसका ध्यान अपने पूर्वी सीमातसे कभी नही हटा। इसके शासनमे १७१५ ई० और १७२० ई०के वीच सारी ऊपरी इर्तिश-उपत्यका रूसके हाथमे चली गई। इसी नदीके तटपर ओम्स्क और सेमीप्लातिन्स्क जैसे कितने ही किले वनाये गये। ऊपरी इर्तिशसे वुखारा और खीवाका वणिक्पथ जाता था। मध्य-एसियाकी ओर भी अपनी विजय-यात्राको वढानेके लिये पीतरने कास्पियन समुद्रको इस्तेमाल किया। १७१६ ई०मे राजुल वेकोविच-चेरकास्कीके नेतृत्वमे एक छोटी-सी सैनिक टुकडी ने खीवाके खानको गद्दीपर वैठनेके लिये मुवारकवादी देनेके वहाने पहुचना चाहा, लेकिन रेगिस्तानमे उसे घेरकर नष्टप्राय कर दिया गया, और इस प्रकार पीतर कास्पियन-तटसे आगे अपनी वाह फलानेमे सफल नही हुआ। इधरसे असफल होकर १७२२ ई०मे पीतरने काकेशसके विरुद्ध स्वय एक अभियान का नेतृत्व किया। काकेशसके सामन्तो—विशेषकर गुर्जी, अर्मेनियाके छोटे-छोटे राजा, व्यापारी तथा ईसाई पादरी—मुस्लिम ईरान या तुर्कीकी जगह ईसाई रूसको अधिक पसद करते थे। ईरानको काकेशसमें हार खानी पडी और उसने १७२३ ई०की सधिके अनुसार कास्पियनके अपने वहुत-से तटभागको रूसियोको दे दिया, जिसमे पश्चिमी तटपर दरवेद, वाकू और पूर्वी तटपर अस्त्रावाद भी शामिल थे, लेकिन रूस इस भूमिको वहुत दिनोतक अपने हाथमें नही रख सका।

शासन-सुधार—पीतरके सैनिक सुधारो और उसके कारण मिली सफलताओंके वारेमे अभी हम देख चुके है। पीतरने व्यवस्थित सेनाको कायम किया, जिसमे वाकायदा रगरूट भर्ती किये जाते, वर्दी और हथियार दे उनको खूव कवायद-परेड कराई जाती। पश्चिमी युरोपमे तोपोको खीचने के लिये घोडागाडियोका इस्तेमाल जव हुआ था, उससे पचास वर्ष पहले ही पीतरका तोपखाना घोडो द्वारा खीचा जाता था। राजप्रवन्धमे भी पीतरने कई वडे-वडे परिवर्तन किये। १७०८ ई०मे उसने राज्यको आठ गुवर्नियो (सरकारो)में वाट दिया, गुवर्नियाका शासक एक गवर्नर होता था, जो कि सीधे केन्द्रीय सरकारसे सवध रखता था। पहले गुवर्निया वडी-वडी वनाई गई, जिन्हे १७१९ ई०मे वाटकर पचासी प्रदेशोंके रूपमे परिणत कर दिया गया। प्रदेशोको फिर कितने ही जिलोमे विभक्त किया गया। प्रदेशो और जिलोंके शासक गवर्नर (राज्यपाल) और वोयवाद होते थे।

यह नही कहा जा सकता, कि पीतर नवीनताका अधभक्त था, लेकिन उसके कितने ही सुधारो से एक प्रभावशाली वर्ग असतुष्ट जरूर था। पीतरकी पहली वीवी योदोकिया लोपुखनासे उसका एक पुत्र राजकुमार अलेक्सी हुआ था। रुढिवादियोने अलेक्सीके ऊपर आशा लगा रक्खी थी, क्योंकि वह पादरियो और अपने ननिहालके लोगोकी देखरेखमे पला था। अलेक्सी उतावला हो गया था, कि कव वाप मरे और गद्दी उसके हाथमे आये। पीतरने कई वार अपने वेटेको सावधान किया—"अपने देशके सम्मान और समृद्धिके वढानेमे जो भी वात सहायक हो, उसके साथ प्रेम करो। यदि मेरी सलाह नही मानोगे, तो मै तुम्हे अपना माननेसे इकार कर दूगा।" अलेक्सीने वापकी वात नही मानी, और विद्रोह करके आस्ट्रिया भाग गया। आस्ट्रिया भला पीतरका कोप-भाजन वननेके लिये उसके पुत्रको क्यो शरण देनेके लिए तैयार होता? पीतरने पुत्रको वहासे पकडवा मगवाया, खास अदालतमे अभि-

योग चलवाया। अदालतने अलेक्सीको मृत्युदंड दिया, लेकिन उससे पहले ही वह जेलमे मर गया। अलेक्सीकी मौतने रूढ़िवादियोकी आशापर पानी फेर दिया।

शिक्षा और संस्कृति—पीतर शिक्षाके महत्त्वको अच्छी तरह समझता था। उस समयके भारतमे अभी प्रेसोकी छपाईका पता नही था, रूसमे भी अभी उनका प्रचार थोडा ही हुआ था। पहलेसे चले आते धार्मिक पुस्तकोके स्लावानिक अक्षरोके टाइप छापेकी दृष्टिसे कुछ दोषपूर्ण थे। पीतरने सुधार करके उनको वह रूप दिया, जो कि आज भी रूसीके लिये इस्तेमाल होता है। १७०८ ई०के वाद सिवा गिरजाकी प्रार्थना-पुस्तकोके सभी पुस्तके अब नये टाइपमे छपने लगी। शिक्षा-प्रचारके लिये विदेशी पुस्तकोका रूसीमें अनुवाद होने लगा। गणित, पोत-निर्माण, दुर्ग-निर्माण, वास्तु-विद्या, युद्ध-शास्त्र आदि विषयोपर पश्चिमी युरोपमे लिखे गये कितने ही अच्छे-अच्छे ग्रथोंके रूसी अनुवाद छापे गये। रूसी इतिहासपर भी कितने ही ग्रथ प्रकाशित हुये। पहला रूसी अखबार "वेदोमोस्ती" मास्कोमे औरगजेबके मरनेके चार वर्ष पहले (१७०३ ई०) छपना शुरू हुआ, जो पीछे पीतरबुर्ग राजधानीसे निकलने लगा। अभी तक रूसी पचागमे ईसाई पचागका अनुसरण करते हुये सन् सृष्टि-सवत्सरसे गिना जाता था, और नया वर्ष पहली सितम्बरको आरम्भ होता था। १ जनवरी १७०० ई० को युरोपके कितने ही देशोमे स्वीकृत जूलियस कैसर द्वारा स्थापित जूलियन पचागको पीतरने मान लिया। लेकिन जूलियन पचागमे भी अधिक शुद्ध ग्रेगरी पचाग युरोपके कितने ही देशोमे प्रचलित था, जिसे वोल्शेविक क्रान्तिके वाद ही रूसने अपनाया। पीतरके शासनकालमे मास्को और पीतरबुर्गमें कितनी ही शिक्षण-सस्थाये स्थापित हुईं। १७०२ ई०मे विदेशी अभिनेताओको निमत्रित करके मास्कोमे नये ढगसे रगमचकी भी स्थापना हुई, जिसमे "ओरेशेक विजय"के नाम का एक नाटक पीतरके विशेष आग्रहपर खेला गया था। सभी दिशाओमे सामाजिक परिवर्तन इस समय वडी तेज गतिसे हुआ, लेकिन इसमें सन्देह नही, कि यह परिवर्तन उच्चवर्गके ही भीतर हुआ।

पीतरबुर्ग निर्माण—स्वीडनपर लडाईमे विजय प्राप्तकर नेवाके दाहिने तटपर पीतरने "पीतर और पाल" नामक किलेकी स्थापना की थी। उस समय यहा आसपासमे वहुत घना जगल तथा जहा-तहा छोटे-छोटे गाव थे। इसी जगह पीतरने अपने नामसे नगर वसाना शुरू किया। पीतरने पहले अपने लिये ही जयाची द्वीपपर एक लकडीकी छोटी-सी झोपडी वनवाई, जिसके वाद दूसरे वायरो और व्यापारियोने पासमें घर बनाने शुरू किये।

पोल्तावाकी विजय (जून १७०९ ई०) के वाद पीतरने राजधानीको मास्कोसे पीतरबुर्ग लानेका निश्चय किया। हजारो किसान और शिल्पकार नगरके वनानेमे लगा दिये गये। दलदली जमीन भी वहुत थी, जिसके भीतर घुटनो तक डूबे काम करना पडता था। हजारो मजूर बीमारीसे मरे, उनका स्थान दूसरे हजारोने लिया। पीतरवुर्गको मास्कोकी तरह नही वनाया जा रहा था। यहा पुरानेको वढाना नही, वल्कि सारे नगरको आरम्भसे ही नया वनाना था, इसलिये इसकी सडकें सीधी वनी। पहले हीसे योजना वनाकर नगर वनानेमें जो सुभीता होता है, वह पीतरवुर्गको प्राप्त हुआ। पीतरने पश्चिमी युरोपकी राजधानियो और मकानोको देखा था, इसलिये वह चाहता था, कि उसकी राजधानीमे ईंट और पत्थरके मकान वने, इसके लिये उसने दूसरे नगरोमे ईंट-पत्थरके मकानोका वनाना निषिद्ध करके वहासे राजो और मेमारोको वुलवा लिया। नगरको सुदर और कलापूर्ण बनानेके लिये उसने कितने ही विदेशी वास्तुशास्त्रियोको भी वुलवाया। जैसे-जैसे पीतरवुर्गका प्रताप वढता गया, वैसे ही वैसे मास्कोकी अवस्था गिरती गई। धनी व्यापारी और वायर नई राजधानीमें चले गये, सरकारी दफ्तर भी मास्कोसे हट गये। पद्रह-वीस वर्षोंके भीतर ही एक छोटे-से गावसे वढकर पीतरवुर्ग सत्तर हजार लोगोका नगर वन गया।

साइवेरिया—पीतरसे पहले ही प्रशान्त-महासागरतक रूसकी सीमा जा लगी थी। युद्धके खर्चके लिये अपार धनकी आवश्यकता थी, जिसके लिये धनके सभी स्रोतोके पता लगानेकी कोशिश की गई। इसी प्रयत्नमे नई भौगोलिक खोजो और नये प्रदेशोपर अधिकार प्राप्त करनेका मौका मिला। १६९७-९८ ई०मे एक स्त्रेल्त्सी अफसर व्लादिमिर अत्लसोफके नेतृत्वमे एक छोटी टुकडी अनादिर नदीके तटपर अवस्थित अनादिरकी चौकीसे वारहसिंघोसे खीची जानेवाली वेपहियेकी गाडी

द्वारा कमचत्काके किनारे पहुची, और उसने वहाके लोगोसे मुख्यत समूरके रूपमे कर उगाहना शुरू किया। अत्लसोफ पहला आदमी था, जिसने कमचत्का प्रायद्वीपका पता लगाकर उसके बारेमे लिखा। कमचत्का-निवासी (कमचादल) अभी जनयुगमे रहते थे। वह कबीलेशाही समाजसे ऊपर नही उठे थे। उनके एक-एक जन (कबीले) मे कुछ सौ तम्बू होते थे। मछुवाही उनकी जीविका थी। जनोमे आपसमे बराबर लडाई होती रहती थी। उनके हथियार थे—धनुष-बाण। वह बाणोके फल चकमक-पत्थर या हड्डीसे बनाते थे। अत्लसोफने कमचादलोके बीचमे शासन दृढ करनेके लिये एक रूसी छावनी स्थापित की, जहापर कसाक और सैनिक रहा करते, जिनका काम जारके शासनको मजबूत रखनेके साथ लूटपाटकर अपने लिये धन बटोरना भी था। १७३१-३२ ई०मे कमचादलोने कई विद्रोह किये। इनके नेता वही थे, जो कि रूसमे रहकर बारूदी हथियारोका इस्तेमाल जान गये थे, लेकिन रुसियोने उन्हे आसानीसे दबा दिया। फिर धीरे-धीरे उनकी जन-व्यवस्था टूटने लगी।

चीनके साथ सबध—नेर्चिन्स्क की सधिके (सितम्बर १६८९ ई०) साथ चीनका रूसमे दौत्य-सबध स्थापित हुआ। उस सधिको प्रमाणबद्ध करने तथा व्यापारिक सबध सुधारनेके लिये मास्कोने १६९२ ई०मे अपने एक जर्मन सेवक येवर्ट यमब्राट इड्सको भेजा। वह अठारह महीनेमे चीचीहार नगरमे पहुचा। चीनी सीमातपर पहुचनेपर एक चीनी मदारिन (अफसर) आठ रक्षक सैनिको तथा तीन लोहेकी तोपोके साथ स्वागतके लिये आया। चीनी मदारिनने इड्सकी खूब पुरतकल्लुफ दावत की, फिर उसने भी मदारिनको युरोपीय ढगसे दावत दी। राजधानीमे भी उसका उसी तरह स्वागत किया गया। तीन दिनोतक उसकी जियाफत होती रही। इड्सने इसके बारेमे लिखा है—"मेरे लिये जो मेज रखी गई थी, वह प्राय वर्गाकार थी, जिसके ऊपर एकके ऊपर एक सत्तर तश्तरिया रखी गई थी, जो सभी चादीकी थी।" घोडीके दूधकी बनी शराब (कूमिस) को सोनेके प्यालेमे रख-कर दिया गया। अन्तमे १२ नवम्बर १६९२ ई०मे उसे दरबारमे सम्राट् खाङ-सीके दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने सम्राट्के सामने अपना राजकीय प्रमाणपत्र पेश किया। शायद उसे साष्टाग दडवत् (कौतू) करनी पडी, जिसके बारेमे एक अग्रेजने लिखा है—"राजदूत अपने आसनपर ले जाये गये, इसी समय जब सम्राट् अपने सिहासनसे उतर रहा था, यकायक चीनियोने अपने घुटनो-को मोड सिरको धरतीपर तीन बार टेका। हमे भी प्रतिहारोने वहा ले जाकर उसी तरह प्रणाम करने के लिये मजबूर किया।" इड्सने १९ फरवरी १६९४ ई०मे पेकिङ छोडा, जिसमे पहले फिर उसे सम्राट्से मिलनेका मौका मिला। सम्राट् खाङ-सीने १७१२-१७१६ ई०मे तू-ली-शिन्को दूत बनाकर तर्गुत कलमकोके खानके दरबारमे वोल्गा-तटपर भेजा। उस समय पीतर स्वीडनके साथ लडाई-मे लगा हुआ था, इसलिये वह वोल्गाके तटपर आये चीनी दूतको बुलाकर नही मिल सका। इस चीनी दूतमडलका यद्यपि बाहरी उद्देश्य था आयुका खानके स्वास्थ्यके बारेमे पुछार करना तथा आयुका-के भतीजे राजकुमार ओ-ला-पू-छू-योरको उसके पूर्व पदपर स्थापित करनेकी इच्छा प्रकट करना, लेकिन दूतको यह भी आज्ञा दी गई थी,कि वह मास्को राजधानीमे जाकर जारसे भी मिले। चीन लौटते समय जब तू-ली-शिन् रूसी सीमातपर पहुचा, तो रूसी अफसरने उसे सैनिक सम्मानके साथ सेलिगिन्स्की शहरमे पहुचा था, जहा वोयवोदने उससे बातचीत की। तोबोल्स्कमे आनेपर साइबेरियाके राज्य-पाल राजुल गजारिन मिला, जिससे तू-ली-शिन्ने राजकाजके बारेमे बहुत देरतक बातचीत की। यहा पर तू-ली-शिन्को सूचित किया गया, कि जार अपनी सेनाके सचालन करनेमे लगा हुआ है, नही तो वह बडी प्रसन्नतासे चीनी राजदूतसे मिलता। आयुकासे मिलनेके बाद तू-ली-शिन्ने पेकिङमे लौट कर सम्राट्को एक रिपोर्ट दी, जिसमे लिखा था

"इस प्रकार उत्तर-पूर्वमे रूसी राज्य अल्पजन तथा बयाबानीसा इलाका है, यद्यपि अत्यन्त प्राचीन कालसे आजतक हमारे चीन-साम्राज्यके साथ उसका सबध नही रहा, और हमारे इतिहास-लेखकोने भी रुसियोका उल्लेख नही किया और न आजतक कभी एक भी चीनी आदमी वहा पहुचा, तो भी सभी दिशाओकी तरह वहा भी हमारे देवोपम सम्राट्की महिमा और महान् गुण प्रभाव डाले बिना नही रहे। दुनियाके सभी दसो हजार राज्य सम्राट्की हितकारी सरकारके सरक्षणमे है। रूस

केवल अब चीनके साथ खुला सबध स्थापित करने लगा है, लेकिन चालीस या पचास साल पहले भी, जब कि दोनो साम्राज्योकी सीमाये निश्चित नही हुई थी, सूचनाओ द्वारा हमारे साम्राज्यके बहुतसे अच्छे गुण वहा ज्ञात थे ।"

पीतरके प्रथम दूतमडलने यह भी तै किया, कि रूसी वणिक्-सार्थ थोडे समयके बाद बराबर जाया करे। लेकिन रूसी जबरदस्त पियक्कड थे, जिसके कारण अक्सर झगडे हो जाया करते था, जिससे सम्राट् खाङ-सीने सबध-विच्छेद करनेकी धमकी दी। इसपर १७१९ ई०में पीतरने इस्माइलोफके नेतृत्वमे एक विशेष दूतमडल भेजा। इस्माइलोफके साथ एक अग्रेज जान बेल भी था, जिसने उसके बारेमे बहुत सी ज्ञातव्य बाते लिखी है। इस दूतमडलको चीनी सीमाततक पहुचनेमे सोलह महीने लगे थे। सम्राट्के विशेष प्रतिनिधिने वहा उनका स्वागत किया। बेलने अपने विवरणमे लिखा है

"हमारे पथदर्शकने खेमोमे कुछ स्त्रियोको चलते देखकर दूत (इस्माइलोफ)से पूछा—यह कौन है और कहा जा रही है? उसे बतलाया गया, कि वह हमारी मडलीकी है, और हमारे साथ चीन जा रही है। इसपर चीनी प्रतिनिधिने कहा—पेकिङमे पहले हीसे काफी औरते है। अबतक कोई भी युरोपीय स्त्री चीन नही आई, इसलिये सम्राट्की विशेष आज्ञाके बिना मै उन्हे ले जानेकी जिम्मेदारी नही ले सकता। यदि आप जवाबकी प्रतीक्षा करे, तो इसके लिये हम एक सार्थ भेजनेके लिये तैयार है, लेकिन सदेशवाहक छ सप्ताहसे पहले नही लौट सकता। इसपर यही ठीक समझा गया, कि असबाब को ले आनेवाली गाडियोंके साथ स्त्रियोको सेलिंगिन्स्की लौटा दिया जाये।"

जिस घरमें रूसी दूतमडलको ठहराया गया था, उसको दस बजे रातको सम्राट्की अपनी मुहर लगाकर बद कर दिया जाता था, जिसमे कोई आदमी भीतर-बाहर आ-जा न सके। राजदूतके कहने पर यह नियत्रण हटा दिया गया। इस्माइलोफने पहले साष्टाग प्रणिपात करनेमे इन्कार कर दिया, लेकिन पीछे उसने इस शर्तपर कबूल किया, कि चीनी दूत भी रूसी दरबारमे वहाकी प्रथाके अनुसार साष्टाग प्रणाम करेगा। बेलने रूसी दूतके दरबारमें जानेका वर्णन निम्न शब्दोमें किया है

"हमे प्राय पाव घटा प्रतीक्षा करनी पडी। पिछले दरवाजेसे सम्राट् शालमें प्रवेशकर सिहासनपर बैठा। इस समय सभी लोग खडे हो गये। अब महाप्रतिहारने कुछ दूरपर खडे राजदूतको शालके भीतर आनेके लिये कहा, और उसे एक हाथमे पकडे तथा दूसरे हाथमे राजकीय प्रमाणपत्र थामे ले चला। सीढियोपर चढनेके बाद उसने पूर्वनिश्चयानुसार प्रमाणपत्रको वहा स्थित एक मेजपर रख दिया। सम्राट्ने राजदूतको पास आनेका निर्देश किया, और उसी वक्त प्रमाणपत्रको लिये अलोईके साथ वह सिहासनके पास गया। फिर घुटना टेकते हुये उसने पत्रको सम्राट्की ओर बढाया, जिसने अपने हाथसे उसे छू दिया। फिर परमभट्टारक जारके स्वास्थ्यके बारेमे पूछकर राजदूतसे कहा—परमभट्टारक जारके लिये मेरे हृदयमे इतना मित्रतापूर्ण और प्रेमका भाव है, कि मैने उनके पत्रको लेनेसे अपने साम्राज्य की प्रचलित प्रथाके पालन करनेका ख्याल नही किया।

"थोडे समयतक यह भेट होती रही। उस समय राजदूतके अनुचर शालके बाहर खडे रहे। पत्रके देनेपर हमने समझा, कि अब काम खतम हो गया। फिर महाप्रतिहारने राजदूतको लौटाकर अनुचरोको हुक्म दिया कि नौ बार मत्था टेककर सम्राट्के प्रति सम्मान प्रदर्शित करे। महाप्रतिहारने खडा होकर तारतार (मगोल) भाषामे "मोरगू" और "बोस" मे बोलते हुये आज्ञा दी। मोरगूका अर्थ है सिर झुकाना और बोसका खडा होना।"

बेलके लिखनेसे मालूम होता है, कि रूसी दूतमडलको यद्यपि बहुत-से दरबारी अपमानजनक शिष्टाचारोको पालन करनेके लिये मजबूर होना पडा, लेकिन उनका सत्कार-सम्मान इतनी अच्छी तरहसे हुआ, कि वह सबको भूल गये। इस्माइलोफके विदा हो जानेके बाद उसका सचिव देलाग रूसी-प्रतिनिधिके तौरपर पेकिङ (पेचिङ)मे रह गया, लेकिन उसकी स्थिति एक नजरबन्द जैसी थी। जिस वक्त देलाग पेकिङमे था, उसी समय मगोलोंके एक चीनाधीन कबीलेने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली, इसपर पेकिङमे किसी भी रूसी कारवाका आना निषिद्ध कर दिया गया। देलागके साथ असह्य दुर्व्यवहार हुआ, जैसा कि उसने स्वय लिखा है

"मुझे आदेश है, कि हमारे दोनो साम्राज्योके बीचमे अधिक घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये पूरा प्रयत्न करू, लेकिन मै उन्हे—प्रधान मत्रीको—बतला देना चाहता हू, कि इस अवसरपर चीनी सचिवालयने (मेरे साथ) जो बर्ताव किया, उससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। (आपको) यह ख्याल दिलसे हटाना नही होगा। परमभट्टारक जारके स्वीडनके साथ हो रहे युद्धको सम्मानपूर्वक समाप्ति पर ही सब कुछ निर्भर करता। शायद जिस वक्त मै यह बाते कर रहा था, उसी समय सचमुच शाति-सधि की जा रही थी। उसके बाद इसमे कोई बाधा नही हो सकती, कि मेरे स्वामी (जार) धीरज खोकर कही अपने हथियारोको इस ओर न घुमा दे।"

लेकिन चीनी प्रधान-मत्री ऐसी धमकियोकी कोई पर्वाह नही करता था। अन्तमे देलागको चीन दरबारसे चले जानेकी छुट्टी मिली और सत्रह महीना रहनेके बाद एक कारवाके साथ वह चीनकी राजधानीसे रवाना हुआ। इस प्रकार पीतरके समय चीन-रूसका सबध अच्छा नही रहा। पीतरके मरनेपर यद्यपि बाहरी शक्तियोसे सघर्षने भयकर रूप धारण नही किया, लेकिन उसके बादके सैंतीस वर्षो (१७२५-६२ ई०) मे चीन मे छ प्रासादी क्रातिया हुईं। पीतरके उत्तराधिकारियोमे अन्ना इवान-पुत्री, और पीतर III अयोग्य और विलासी थे। उनके समयमे दरबारियोके हाथमे राज-शक्ति चली गई थी। पीतर II और इवान VI गुडिया जार थे। पीतर I ने १७२२ ई० मे बनाये अपने विधानमे सम्राट्के हाथमे यह अधिकार दे दिया था, कि वह स्वय अपने उत्तराधिकारीको चुन सकता है। लेकिन वह अन्त तक उत्तराधिकारीके बारेमे किसी निश्चयपर नही पहुचा। वह मृत युव-राज अलेक्सीके पुत्रको उत्तराधिकारी नही बनाना चाहता था, अपनी रानी एकातेरिनाको भी राज देने मे आनाकानी कर रहा था, और अपनी लडकियो एलिजाबेत या अन्नाके बारे भी उसने कोई निश्चय नही कर पाया था। लेकिन उसके मरनेके बाद दरबारियोके एक प्रभावशाली समुदायने पीतरकी रानी एकातेरिनाको गद्दीपर बैठा दिया।

६. एकातेरिना I, पीतर-पत्नी (१७२५-२७)

अपने दो सालके शासनमे उसने किसी योग्यताका परिचय नही दिया। दरबारके एक प्रभाव-शाली सामन्त मेंशिकोफने एकातेरिनाको पीतर I के पौत्र तथा अलेक्सीके पुत्र पीतर II को अपना उत्तराधिकारी बनानेके लिये तैयार किया। युवराजसे अपनी लडकीका व्याह करके वह अपने प्रभावको बढाना चाहता था।

एकातेरिनाके समय १७२७ ई०मे एक रूसी दूतमडल सावा व्लादिस्लाव-पुत्रकी अधीनतामे पेकिङ भेजा गया। इस दूतमडलका काम अबतक गये सभी दूतमडलोसे बडा ही लाभदायक साबित हुआ। सावाने २७ अगस्त १७२७ ई०को जिस सधिपत्रको स्वीकृत करानेमे सफलता पाई, वह सवा शताब्दियो (जून १८५८ ई०) तक मान्य रहा। इतनी देरतक रहनेवाली सधिया बहुत कम ही देखी जाती है। इसी समय रूस और चीनके बीचकी सीमारेखा पूर्वमे क्याख्तासे ऐगून नदीके मुहानेतक और पश्चिममे क्याख्तासे सुइयान-पर्वतमालाके एक डाडे शबिनादाबेगतक निर्धारित की गई। यह भी स्वीकार किया गया, कि हर तीसरे वर्ष रूसी कारवा पेचिङ आ सकते है, तथा यह भी कि पेचिङमे एक स्थायी रूसी दूतावास स्थापित किया जायगा, और रूसी अपने धर्मके अनुसार पूजा-पाठ कर सकेंगे। राजदूतके निवासमे रूसी और लातीनी भाषाओके जाननेवाले चार तरुण विद्यार्थी रह सकेंगे, जिनका खर्च चीन बर्दाश्त करेगा, और शिक्षा समाप्त करनेके बाद वह लौटनेके लिये स्वतन्त्र रहेगे। इस दूत-मिशनके ऊपर चीन सरकारको प्रतिवर्ष हजार चादीके रूबल और दस मन चावल खर्च करना पडता था। रूसी सरकार उसपर सोलह हजार चादीके रूबल खर्च करती थी, जिसमेसे एक हजार रूबल अलबाजीन कसाकोकी पेचिङमे रहती तरुण सतानोकी शिक्षापर खर्च होता था। यद्यपि इस सधिके अनुसार रूसी हर साल अपने कारवाको भेज सकते थे, लेकिन वस्तुत १७२७ ई० और १७६२ ई०के बीचमें केवल छ कारवा गये। व्यापारके लिये कई तरहके निर्बंध थे, जिनके कारण निराबाध व्यापार नही हो पाता था। बिना एक साल क्याख्तामे रहे कोई चीनी व्यापारी वहा

रूसियोंके साथ व्यापार नही कर सकता था, सरकार उन्हीको लाइसेंस देती थी, जो कि रूसी भाषा लिख-बोल सकते थे। व्यापार वदलेनमे होता था, किसी भी तरहके सिक्केका इस्तेमाल बिल्कुल वर्जित था। चीनी व्यापारी पहले क्याखता जाते और अपने पसदके मालको चुनते, फिर रूसी व्यापारी उसी मालके लिये मैमाचेन आते। अपनी सरकारो द्वारा नियुक्त कमिश्नर (आयुक्तक) चायके माध्यमसे हर एक चीजका दाम निश्चित करते। चीनी व्यापारी चायके वदलेमे ऊनी कपडे, चमडे, छाले जैसी चीजे लेते।

७. पीतर II, अलेक्सी-पुत्र (१७२७-३० ई०)

एकातेरिनाके मरनेके वाद मेंशिकोफने अपने ही महलमें पीतरको गद्दीपर वैठाया। उस समय वह वारह वर्षका लडका था। उसके नामपर मेंशिकोफ अब शासन करने लगा। धीरे-धीरे मेंशिकोफके प्रति लोगोमें वहुत असतोष पैदा हो गया और उसे पकडकर वेरियोजोफ (साइवेरिया) मे निर्वासित कर दिया गया। अब उसका स्थान दोलगोरुकी राजुल-वशने लिया। उसने अपनी कन्यासे सम्राट्का व्याह करना चाहा। यह याद रखना चाहिये, कि पीतर ने अपने लिये "सम्राट्" (एम्पेरातोर) की पदवी धारण की थी, जिसका प्रयोग अन्तिम जारतक होता रहा, यद्यपि लोग अधिकतर जारकी उपाधि ही इस्तेमाल करते थे। व्याहकी तैयारी हो ही रही थी, इसी बीच पीतर II बीमार होकर मर गया। पीतरके साथ रोमनोफ वशकी पुरुष-सतानोका अन्त हो गया, इसके वाद रोमनोफ कुमारिया तथा उनके जर्मन पतियोंकी सताने रूसपर शासन करती रही। ये जर्मन जार पूरीतौरसे रूसियोंमे मिल नही सके, उनके दरवारोमे जर्मनोका वाहुल्य था।

पीतर IIके समयकी एक उल्लेखनीय घटना है वेरिंगका भौगोलिक अभियान। १७वी सदीके मध्यमे रूसियोने कामचत्का तकका पता लगाकर उसपर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था, और सिमओन देजनिओफने चुकोत्स्क प्रायद्वीपका चक्कर लगाकर सिद्ध कर दिया था, कि एसिया और अमेरिकाके बीचमे एक पतली-सी खाडी है। लेकिन यह बात १८वी सदीके आरम्भमें भूल गई। अपनी मृत्युसे जरा-सा पहले पीतरने एसिया और अमेरिकाके मिलन-स्थानके बारेमें अधिक खोज-पता लगानेके लिये एक अभियान भेजनेकी आज्ञा दी। इस अभियानका नेता रूसी नौसेनाका एक अफसर तथा डेनमार्क-निवासी वीटस वेरिंग नियुक्त किया गया। पहले अभियान (१७२८-३० ई०)में वेरिंग (अपने नामसे प्रसिद्ध होनेवाली) खाडी तक गया, लेकिन उसने अमेरिकन तटभूमिकी पडताल नही की। दो साल बाद वेरिंग पयोदोरोफ और ग्वोज्देफ दो रूसी सैनिक और भूगोलशास्त्रियोंके साथ गया। अवके उसने सिर्फ एसिया और अमेरिकाके तटोपरकी ही जाच-पडताल नही की, वल्कि वहाका पहला नक्शा तैयार किया। उसके वाद अमेरिका-तटके अलास्का प्रायद्वीपको रूसियोने १७९७ ई०मे अपना उपनिवेश बनाया, जिसे कि जारने १८६७ ई०मे अमेरिको के हाथमें बेच दिया।

८ अन्ना, इवान V-पुत्री (१७३०-४० ई०)

पीतर IIके मरनेके वाद कुछ समयतक निजी परिषद् (प्रिवी कौंसिल)ने शासनसूत्र अपने हाथमें लिया। इस परिषद्में दो पुराने राजुल-वशो गोलित्सिन और दोल्गोरुकीका प्रभुत्व था। राजुल द० स० गोलित्सिन वहुत भारी जमींदार था, और परिषद्में उसकी चलती भी काफी थी। वह इगलैण्ड और स्वीडनकी नकलपर राज्य-व्यवस्था करनेका पक्षपाती था, जिसमे शासनमें जमींदारोका पलडा भारी होता। उसके प्रस्तावपर परिषद्ने पीतर I के भाई जार इवानकी पुत्री अन्ना को राजसिंहासन प्रदान किया। अन्नाका व्याह पीतरने एक जर्मन राजुल (कूरलडके ड्यूक)के साथ किया था। ड्यूकके मरनेके वाद वरावर वह वहीं रहती थी। परिषद्के सामन्तोने कई शर्तें रक्खीं, जिसके बारेमें अन्नाने कहा "मैं सभी बातोको बिना चू-चिराके माननेका वचन देती हू।"

दरवारी चाहते भी नहीं थे, कि अन्ना राजकाजमें अधिक भाग ले, और वह भी अपने आनद-विलासमें समय काटना चाहती थी, जिसके लिये भारी परिमाणमे धन प्राप्त करना ही उसका

लक्ष्य था। पीतरबुर्गके हेमन्तप्रासादमे अपने चाटुकारोंसे घिरी वह अपना दिन बिताती थी। उसने अपने एक जर्मन दरबारी बीरेनको अपनी तरफसे राजकाज सभालनेका काम दे दिया था। बीरेन एक निर्बुद्धि और अशिक्षित जर्मन अमीर था। उसने सभी प्रभावशाली पदोपर जर्मनोको लाकर भरना शुरू किया। वही वैदेशिक विभागका सचालन करते थे, और वही रूसी सेनाके सेनानायक थे। बीरेन रूसियोको बडी तुच्छ दृष्टिसे देखता था। उसने कभी रूसी भाषा नही सीखी। लोगोसे पैसे ऐठकर जर्मनीमे वह अपने लिये भूमि खरीदता तथा अपनी बीवीके लिये मूल्यवान् कपडो और रत्नोको जमा करता। अन्नाके शासनके साथ रूसमें जर्मनोका जबरदस्त प्रवेश शुरू हुआ, जो कि अन्तिम जारके समय हदतक पहुच गया। रूसियोंके मनमे जर्मनोके इस बर्तावसे यदि विद्वेष होने लगा, तो इसमे आश्चर्य की कोई बात नही। अन्नाके शासनकालमे कालासागरके तटपर अधिकार करनेके लिये तुर्की और क्रिमियाके साथ लडाई (१७३५-३९ ई०) हुई। रूसने तुर्की सेनाको कई जगह हराया। १७३९ई० में तुर्कोंके साथ हुई सधिके अनुसार रूसको समुद्रतक द्नियेपर नदीके दोनो तट मिल गये। लेकिन लडाईपर जो खर्च करना पडा, उसके कारण देशके जनसाधारणकी आर्थिक स्थिति बहुत बुरी हो गई।

१७३७ ई०मे अन्नाके शासनकालमे चीन और रूसके साथ व्यापारिक सबध अच्छे हो गये थे, इसलिये कारवाके व्यापारकी इजारेदारी किसी व्यापारीको न देकर खुला व्यापार करनेका रास्ता खोल दिया गया। व्यापारियोको पेकिङ भी जानेकी जरूरत नही थी। रूसी व्यापारी क्याख्ता में आके ठहरते और चीनी मैमाचिनमें—दोनो ही स्थान सीमातपर पास-पास थे। चीनी सरकार ने चीनी व्यापारियोपर कुछ निर्बंध लगा रक्खे थे, जिसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं, और उसके कारण व्यापारमे कुछ अडचन होती थी।

९ इवान VI, अन्ना-पुत्र (१७४०-४१ ई०)

अन्नाकी कोई सतान नही थी, इसलिये उसकी भतीजी अन्ना ल्योपोल्द-पुत्रीके बेटे इवानको राजगद्दी दी गई। नये जारकी मा एक जर्मन ड्युक (ब्रन्सविक)से ब्याही गई थी। १७४० ई०मे अभी तीन महीनेका बच्चा ही था, जबकि इवानको गद्दीपर बैठा दिया गया। जारको कुछ करना-धरना भी नही था, इसलिये उसके बच्चे होनेसे कुछ बनने-बिगडनेवाला नही था। उसकी मा राजमाता अभिभाविका घोषित की गई, लेकिन उसका शासन एक सालसे अधिक नही रहा। सभी जगह विदेशी जर्मनोको देख राजधानीमे देशी अमीरोंके दिलमे आग लग रही थी। सैनिक अफसरो और सिपाहियो में भी इसके लिये असतोष फैला हुआ था। फ्रासके राजदूतने भी षड्यत्रमे सहायता दी, और २५ नवम्बर १७४१ ई०को पीतर I की पुत्री एलिजाबेत यकायक अपने अनुचरो और गारदकी एक टुकडीके साथ महलमे घुस आई। गारदोने तुरन्त अन्ना ल्योपोल्द-पुत्री और उसके परिवारको पकड लिया और जर्मनोके साथ काफी दुर्व्यवहार करके एलिजाबेतको साम्राज्ञी घोषित कर दिया। शिशु सम्राट् इवानको श्लुशेलबर्गके किलेमें बद कर दिया गया, जहा उसे एकातेरिना IIके शासनकाल (१७६२-९६ ई०) मे मार डाला गया।

१०. एलिजाबेत, पीतर I-पुत्री (१७४१–६१ ई०)

एलिजाबेतके शासनकालमे रूसी सामन्तोका प्रभाव काफी बढा, और अमीरोंके फायदेके लिये कई नियम और विधान बनाये गये। अब केवल पुराने राजुलवशी ही किसानोकी बस्ती-वाली भूमिके मालिक हो सकते थे। वह अपने अर्ध-दासोको बिना अभियोगके साइबेरियामे निर्वासित कर सकते थे, जो आम तौरसे सेनामे भर्ती होकर जाते थे। एलिजाबेतको अपने आनद-मौजके सिवा किसी कामसे कोई वास्ता नही था। उसके यहा नाच, गाना और शराबकी मजलिसे लगातार होती रहती थी। एलिजाबेतने अपने भतीजे कार्ल पीतर उलरिचको अपना उत्तराधिकारी बनाया। कार्ल पीतर I की पुत्री अन्ना और उसके पति ड्युक होल्स्टाइनका पुत्र था। पीतर रूसमे फ्योदोर-पुत्र कहा जाता था। वह बहुत ही निर्बलबुद्धि तरुण था। अठारह-बीस वर्षकी उमरमे भी अभी वह खिलौनो-

मे खेला करता और उनमे ऐसे वाते करता मानो वह आदमी है। साथ ही अपने जर्मन होनेका उसे हदसे अधिक अभिमान था, और उसी परिमाणमे वह रूस और रूसियोंके साथ घृणा करता था। साम्राज्ञी एलिजावेतने उसका व्याह एक जर्मन राजकुमारी सोफिया अनहाल्ट-जर्वस्तके साथ कर दिया, जो कि रूसमे एकातेरिना अलेक्सी-पुत्रीके नाममे प्रसिद्ध हुई—बिना पिताके नामसे रूसमे किसी स्त्री-पुरुषको पुकारनेका रवाज नही है, इसलिये हरएकके साथ पितृनाम जोडना ही पडता है। एकातेरिना अपने पति जैसी नही थी। वह बडी योग्य और मेहनती स्त्री थी। उसने रूसी भाषा और रूसी रीति-रवाजोका अच्छी तरह अध्ययन किया। वह रूसी सामन्तो और अमीरोको हर तरहसे अपनी ओर खींचनेकी कोशिश करती थी।

११ पीतर III, फ्योदोर-पुत्र, पीतर I-नाती (१७६१-६२ ई०)

पीतरका शासन बहुत थोडे दिनोका था। वह अपने समयमे रूसी शासनको प्रुशियाके राजा फ्रेड्रिक (१७४०-८६ ई०) के नमूनेपर बनानेकी कोशिश करता रहा। फ्रेड्रिक बडा ही महत्त्वाकाक्षी शासक था, जिसके कारण उसके पडोसी बहुत चिन्तित रहते। फ्रास, आस्ट्रिया और सेक्सनीके साथ रूसने भी फ्रेड्रिकके विरुद्ध अपनी एक गुट बना ली थी। इगलैण्ड फ्रेड्रिकका पक्षपाती था। फ्रेड्रिकने पूर्वी पडोसीका बिना ख्याल किये ही, सेक्सनीके ऊपर आक्रमण किया इसपर उसी साल रूसी सेना प्रुशियाके भीतर घुस गई, जिस साल अग्रेजोने पलासीकी लडाई (१७५७ ई०) जीतकर हिन्दुस्तानमे अपना दृढ शासन स्थापित किया। फ्रेड्रिकको अपनी सेनापर बडा अभिमान था। वह रूसी सेनाको बिल्कुल तुच्छ दृष्टिसे देखता था, लेकिन पहली ही झडपमें उसे अपनी राय बदलनी पडी। उसने अपने सबसे योग्य सेनापतियोको भारी सेना देकर रूसियोंके विरुद्ध भेजा। अगस्त १७५७ ई० मे जर्मनोने पहला आक्रमण किया, और यह आक्रमण हिटलरके ब्लित्जक्रीगका प्रथम नमूना था। यकायक आक्रमण करनेके कारण रूसी पहले कुछ तितर-बितरसे हो गये। मालूम होने लगा, जर्मन विजयी होंगे। इसी समय जगलोमे छिपी हुई रूसी सेना मैदानमें कूद पडी। यह ब्लित्जक्रीगका अच्छा जवाब था। रूसियोने जर्मन सेनापर पूर्ण विजय प्राप्त की। कोयनिग्सबर्गके महादुर्गने बिना प्रतिरोधके ही आत्म-समर्पण कर दिया। यदि रूसी सेनाने इस समय अवसरसे लाभ उठाया होता, यदि रूसके मित्रोने सुस्ती न दिखलाई होती, तो फ्रेड्रिकका सर्वनाश हुये बिना नही रहता। अपनी सेनाको फिरसे सगठित करके १७५९ ई० में फ्रेड्रिक ओडेर-पर-फ्राकफोर्तको खतरेमें डाले हुई रूसी सेनाके मुकाबिलेमे चला। सब प्रयत्न करके भी फ्रेड्रिकको बुरी तरहसे हारना पडा। जर्मन अपने हथियारो और झडोको छोडकर भाग गये। फ्रेड्रिक रूसियोंके हाथमे बदी होते बाल-बाल बचा। फ्रेड्रिक अत्यत निराश हुआ, जैसा कि उसने स्वय लिखा है "मैं अभागा हू, जो जीनेके लिये बचा हू, जिस समय मैं यह लिख रहा हू, हरएक आदमी भाग रहा है। इन आदमियोंके ऊपर मेरा कोई वस नही है।" लेकिन जिस वक्त फ्रेड्रिक इस तरहसे निराश था, उसी वक्त उसके पश्चिमी शत्रुओने उसे बचनेका अवसर दे दिया। १७६० ई० में एक छोटीसी रूसी सेनाने जर्मन राजधानी बर्लिनपर कूच किया। यद्यपि राजधानीमे छब्बीस बटालियन पैदल, छियालीस रिसाला स्क्वाड्रेन और एक सौ बीस भारी तोपे थी, लेकिन जर्मन सेनापतियोने नगरकी प्रतिरक्षा करना बेकार समझा। रातके वक्त वह अपनी सेना लेकर बाहर चले गये, और सवेरेके वक्त बर्लिनके नगराधिकारियोने रूसी सेनापतियोको मखमलके गद्देपर रखकर नगरकी कुजी भेंट कर दी। फ्रेड्रिककी दुरवस्था चरम सीमा तक पहुच गई थी। इसी वक्त दिसम्बर १७६१ ई० मे रूसी साम्राज्ञी एलिजावेत मर गई। उसके उत्तराधिकारी पीतर II ने प्रुशियाके साथ क्षणिक विराम-सधि करके फ्रेड्रिकको बचा लिया। इस युद्धमे अपनी विजयो द्वारा रूसने पश्चिमी युरोपको चकित कर दिया। रूसी सेनापति प अ रुम्यान्त्सेफ (१७२५-९६ ई०) के युद्धकौशलका इसमे बहुत भारी हाथ था।

पीतरके दो सालके राज्यमे रूसकी प्रगतिको लाभ नही हानि पहुची। फिर जर्मन सेनापतियो और अफसरोकी सब जगह भरमार हो गई। पीतरकी दिलचस्पी रूसकी अपेक्षा अपने होल्स्टाइन वशसे अधिक थी। वह होल्स्टाइनके लिये डेनमार्कसे लडनेकी तैयारी भी कर रहा था। लेकिन अपनी

महत्त्वाकाक्षाओके अनुसार उसमे योग्यता नही थी। उसकी पत्नी एकातेरिना अलेक्सी-पुत्री जानती थी, कि उसका नालायक पति सिंहासनको खोकर रहेगा, इसलिये रूसी दलके षड्यत्रमे वह स्वय शामिल हो गई। गारदके अफसर दो-भाई ओरलोफ षड्यत्रके मुखिया थे। २८ जून १७६२ ई० के बडे तडके ही उन्होने एकातेरिनाको उपनगरके एक प्रासादसे पीतरबुर्गमे लाकर साम्राज्ञी घोषित कर दिया। अगले दिन पीतरने क्रोन्स्तात्मे भाग जानेका व्यर्थ प्रयत्न किया, फिर सिंहासनसे बाकायदा इस्तीफा दे दिया। ऐसे नालायक पतिको भी अधिक दिनोतक जीनेका अधिकार देना बुद्धिमानीकी बात नही थी, इसलिये थोडे ही दिनो बाद वह मार डाला गया।

१२ एकातेरिना II, पीतर III-पत्नी (१७६२–९६ ई०)

एकातेरिना योग्य और सुशिक्षिता स्त्री थी। जिस वक्त वह गद्दीपर बैठी, उस वक्त राज्यकी अवस्था अस्तव्यस्त हो रही थी, राजकोष खाली था, सैनिकोको सात महीनेसे वेतन नही मिला था। मरम्मत न होनेसे, युद्धपोत और दुर्ग खराब हो रहे थे। जनतामे बहुत असतोष था, विशेषकर कारखानोमे काम करनेवाले उचास हजार मजूरो और जमीदारोके डेढ लाख अर्ध-दास कैदियोसे जेल भरे हुये थे। एकातेरिनाने यद्यपि जमीदारोके अधिकारोपर प्रहार नही किया, लेकिन तब भी अपने शासनके आरम्भमे उसने किसानो और जनसाधारणके बोझेको हलका करनेकी कोशिश की। उसे पश्चिमके नये विचारोवाले दार्शनिकोके ग्रथोके पढनेका बडा शौक था। फ्रेंच विचारक वोल्तेरके साथ उसका पत्र-व्यवहार था। उस समय वोल्तेर, मोन्तेस्को, दीदरो और दूसरे फ्रेंच विचारक अपनी सशक्त लेखनी द्वारा सामन्तवादी व्यवस्थापर प्रहार कर रहे थे, मिथ्या विश्वासोको हटाकर बुद्धिवादको आगे बढा रहे थे। एकातेरिना उनके इन विचारोसे अवगत थी। वह वोल्तेर, दीदरो और दूसरोसे पत्र-व्यवहार करके यह दिखलाना चाहती थी, कि जिस आदर्श शासन या नृपतिके बारेमे तुम प्रचार कर रहे हो, वैसी बुद्धिमती और नई रोशनीवाली शासिका मै हू। रूसके किसानोमे उस वक्त भूख और अज्ञानका अखड राज्य था, लेकिन एकातेरिना वोल्तेरको लिखती थी, कि रूसमे एक भी ऐसा किसान नही है, जो इच्छा होनेपर मुर्गी न खा सकता हो, बल्कि अब तो वह मुर्गीकी जगह टर्कीका खाना ज्यादा पसद करते है। एकातेरिना पाखडमे बहुत ही चतुर थी। वह राजकाजमे सीधे भाग लेती थी। वह स्वय कानूनो और राजादेशोका मसविदा बनाती थी। साहित्यमे उसकी दिलचस्पी थी और स्वय एक पत्रिका "सबका थोडा" निकालती थी। एकातेरिनाका शासन सामतो और अमीरोके लिये रूसी इतिहासका सुनहला समय था।

जर्मनी (प्रुशिया) के साथ सात वर्ष (१७५६-६३ ई०) वाला युद्ध समाप्त होनेके बाद एकातेरिनाने राज्य सभाला था। यद्यपि बीचमे उसका नालायक पति आ घुसा था, लेकिन थोडे ही समयमे एकातेरिनाने रूसकी धाकको फिरसे जमा दिया। आस्ट्रिया और फ्रास रूसकी बढती हुई शक्तिको शकाकी दृष्टिसे देखते थे। फ्रेंच व्यापारी पूर्वी देशोके व्यापारपर एकाधिपत्य रखना चाहते थे, इसलिये वह नही चाहते थे, कि रूसियोकी शक्ति अधिक बढे। आजकलके अमेरिकाकी तरह उस समयका फ्रास रूसके चारो तरफ शत्रु-राज्योका घेरा डालना चाहता था। इसके लिये उसने तुर्की, पोलैण्ड, स्वीडन और आस्ट्रियाको अपने साथ मिलाकर एक जबरदस्त गुट बनाना चाहा। रूसने भी इसके विरुद्धमे प्रुशिया, इगलैड और दूसरे राज्योको मिलाकर एक गुट बनानेकी कोशिश की, लेकिन विरोधी स्वार्थोके कारण दोनो अपने उद्देश्यमे सफल नही हुये। आस्ट्रिया पश्चिमी उक्रइनकी उर्वर भूमिको चाहती थी, प्रुशिया पोलन्दकी निम्न-विस्तुला-उपत्यकापर हाथ साफ करना चाहती थी, और रूस अपने हाथसे छिने बेलोरूसी और उक्रइनी इलाकोको लौटाना चाहता था। इन स्वार्थो के साथ तीनोमेंसे कोई नही चाहता था, कि किसीकी शक्ति अधिक बढ जाये। शताब्दियोतक शक्तिशाली रहनेके बाद पोलन्द अब निर्बल हो गया था। वहाके अमीरो और सामन्तोने राजाके अधिकारको बहुत सीमित कर दिया था। उधर कैथलिक पोल ग्रीक-चर्चके अनुयायी उक्रइनो और बेलोरूसियोके ऊपर तरह-तरहके अत्याचार कर रहे थे। एकातेरिना कैसे चुप रह सकती थी? १७६३ई० मे अगस्तस् IIIके मरनेपर एकातेरिनाके उम्मीदवार स्तानिस्लाउस पोनियातोव्स्कीको पोलन्दका राजा

चुना गया। रूस और प्रुशिया दोनोंने माग की, कि पोलन्दमें ग्रीक-विश्वासियो तथा प्रोटेसटेंटो (सुधार चर्च) को कैथलिकोंके बराबर अधिकार दिया जाय। इन्कार करनेपर रूसी सेना पोलन्दके भीतर भेज दी गई। पोलिश समद्को मजबूर होकर रूसकी मागको स्वीकार करना पडा। इसी समय एकातेरिना ने पोलन्दको करीब-करीब अपने सरक्षणमे ले लिया। रूसके बढे हुये प्रभावको देखकर आस्ट्रिया और प्रुशियाको चिंता हो गई। फ्रेड्रिकने समझा, कि रूस सारे पोलन्दको हडप लेगा, इसलिये उसने आस्ट्रिया, प्रुशिया और रूसके बीच पोलन्दके बट जानेकी एक योजना बनाई, जिसे तीनो राज्योने स्वीकार किया—प्रुशियाको पोलन्दका बाल्तिक-तट तथा पश्चिमी भाग मिला। इस प्रकार प्रुशियाका पूर्वी भाग, जो अभी तक अलग-अलग था, पश्चिमी भाग (ब्राडेनबर्ग) मे मिल गया। प्रुशियाने दन्जिग और थोर्नको लेना चाहा, लेकिन एकातेरिनाने उसे माननेसे इन्कार कर दिया। आस्ट्रियाको उक्रइनी-गलिसिया मिली, और रूसको बेलोरूसियाका कुछ भाग। १७७३ ई०मे इस प्रकार पोलन्दका पहला बटवारा हुआ, जो कि बहुत कुछ प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१८ ई०) तक कायम रहा।

प्रथम तुर्की युद्ध (१७६८-७४ ई०)—फ्रास नही चाहता था, कि रूसकी शक्ति और बढे, इसलिये उसने तुर्कीको भडकाकर लडाई छिडवा दी। १७६८ ई०मे सुल्तानने कान्स्तन्तिनोपोल-स्थित रूसी राजदूतसे माग की, कि अपनी सेना पोलन्दसे हटा लो। तुर्कीकी इस अनधिकार चेष्टाको रूस कैसे स्वीकार कर सकता था? इसपर रूसी दूतको पकडकर जेलमें बन्द कर दिया गया। युरोपके लोग समझते थे, कि रूस तुर्की और पोलन्द दोनोंसे एक ही समय नही लड सकता। क्रिमिया का खान अपनेको तुर्कीके खलीफाके अधीन समझता था। उसने पहल की और १७६९ ई० के वसन्त मे क्रिमियाके तारतारोने दक्षिणी रूसके सीमाती इलाकोमे लूट-मार मचाई। रूसकी सीमाके भीतर यह तारतारोकी अन्तिम लूट-मार थी। प्रसिद्ध सेनापति रुम्यान्त्सेफ—जिसने सप्तवर्षीय जर्मन-युद्धमे भारी यश कमाया था—एक बडी सेना लेकर दक्षिणकी ओर बढा। उसने अपने कई योग्य सहायक चुने थे, जिनमे अलेक्सान्द्र वासिली-पुत्र सुवारोफ भी था—सुवारोफ सभी कालके रूसी सेनापतियो का शिरोमणि माना जाता है। रुम्यान्त्सेफ सबसे पहले शत्रुकी सैनिक शक्तिको अधिकसे अधिक ध्वस्त करना चाहता था। १७७० ई० में उसे पता लगा, कि लारगा नदीसे नातिदूर अस्सी हजार तुर्क-सेना छावनी डाले पडी है। रूसी सेनापतिके पास उस समय केवल तीस हजार सैनिक थे, लेकिन उसने आक्रमण कर दिया और तुर्क-सेनाको पूरी तौरसे हारना पडा। इसके दो सप्ताह बाद वह एक ओरसे अस्सी हजार तारतारो और दूसरी ओरसे तुर्कीके वजीरकी अधीनतामे डेढ लाख तुर्क सैनिकोंके बीचमे घिर गया। लेकिन इससे रुम्यान्त्सेफको घबराहट नही हुई। उसने यह कहते हुये पहले स्वय आक्रमण करनेका निश्चय किया "छोटी सेनासे बडी सेनाको हराना एक कला और कीर्तिकी बात है, और बडी सेनासे अधिक शक्तिशाली शत्रुको हरानेमे विशेष चातुरीकी अवश्यकता नही है।" तुर्की तोपखाने ने जबरदस्त गोलाबारी की और तुर्क सवारोने भारी सख्यामे रूसियोका प्रतिरोध किया। निर्णयकी जब आखिरी घडी आई, तो रूसी सेना घबडाने लगी, इसी समय रुम्यान्त्सेफ आ पहुचा और उसने चिल्लाकर कहा—"डटे रहो लडको" और वह स्वय युद्धके भीतर पिल पडा। तुर्कोंकी भारी हार हुई, और द्नियेस्तर तथा दन्यूबके बीचकी भूमि रूसियोंके लिये खाली हो गई। रूसी सेना अब दन्यूब महानदके वाम तटपर पहुच गई। इस विजयके लिये रुम्यान्त्सेफको "जा-दुनाइस्की" (दन्यूब-वाला) की उपाधि प्राप्त हुई। स्थलपर इस तरह सफलता प्राप्त करके रूसी नौसेनाने जलमे भी अपनी श्रेष्ठता दिखलाई और उसने सारे तुर्की बेडेको नष्ट कर दिया। १७७१ ई० में थोडे ही समयके भीतर रूसी सेनाने सारे क्रिमिया प्रायद्वीपपर अधिकार कर लिया। रूसी सेना दन्यूबके किनारेपर नही रुकी और उसने कई बार इस महानदको पार करके आक्रमण किया, जिसमें अलेक्सान्द्र सुवारोफने अपने सैनिक कौशलका बहुत अच्छा परिचय दिया। रूस अपनी विजययात्राको और भी जारी रखता, लेकिन एक तो युद्धके अपार व्ययका सवाल था, दूसरे इसी समय पुगाचेफके नेतृत्वमें रूसी किसानोंने जबर्दस्त विद्रोह कर दिया था। एकातेरिनाने १७७४ ई०मे जल्दी-जल्दी तुर्कीके साथ सधि कर ली। द्नियेपर और बुगके बीचका प्रदेश रूसको मिला और साथ ही कालासागरमे घुसनेकी केर्चकी खाडी भी। अब रूसी जहाज स्वच्छदतापूर्वक कालासागरमे जा सकते थे, तुर्कीने दरेदानियाल (दरदानेल्स)

और वासपोरसकी खाडियोको भी रूसी जहाजोके लिये खोल दिया । क्रिमियाके खानको तुर्कोंकी अधीनतासे स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया, और अब उसके ऊपर रूसका प्रभाव बढ चला ।

किसान-संघर्ष—रूसी अपने पूर्वजो (शको) के समयसे ही योद्धा-जाति है । सामन्ती अत्याचारोको रूसी किसान और अर्ध-दास आख मूदकर हर वक्त बर्दाश्त करनेके लिये तैयार नही रहते थे । १६वी से १८वी सदीके बीचमे केवल मध्य-एसियामे ही चालीसके करीब विद्रोह हुये । वोल्गा प्रदेशमे रूसी जमीदारो और अफसरोका अत्याचार बहुत बढा हुआ था । यह वह इलाका था, जहापर कि रूसियो और एसियाई जातियोके इलाके एक दूसरेके पडोसमे पडते थे । बाशकिरोकी भूमिपर रूसी व्यापारियो, कारखानेवालोकी खास तौरसे गृध्र-दृष्टि थी । कलमक १७७० ई० के आसपास तक निम्न वोल्गाके दोनो तटोपर रहते थे, लेकिन १७७१ ई०मे शासकोके अत्याचारोसे परेशान तथा चीनके प्रलोभनके कारण वोल्गाके बाये तटवाले कलमक अपने सारे तम्बुओ और पशुओको लेकर चीनकी ओर चले गये, जिसके बारेमे हम अभी कहनेवाले है—यह कलमक चीन द्वारा पूर्वी तुर्किस्तानमे बसाये गये । वोल्गाके दाहिने तटपर अब भी कलमक-मगोल रहते थे । किसानोका विद्रोह पहले-पहल यायिक (उराल) नदीके तटपर बसनेवाले रूसी कसाकोमे फैला । कसाक जिस वक्त भागकर जापरोजे और दोनकी भूमिमे बसे, उस वक्त उनमे उतनी सामाजिक विषमता नही थी, लेकिन अब उनके भीतर धनियो और गरीबोका भारी भेद हो गया था । सरकारी अफसर धनी कसाकोका पक्ष करते थे, और जरा भी विरोध करनेपर उन्हे बडी बुरी तरहसे दबा देते थे । १७७२ ई० मे यायित्स्क नगरमे कसाकोने विद्रोह करके जेनरल त्राउबेन्वर्ग और कितने ही कसाक आतमनो (सरदारो) को मार डाला । लेकिन सरकारी सेनाने आकर यायिकके कसाकोके विद्रोहको दबा दिया । बहुतसे कसाक मारे गये, और बहुतसे वहासे बच निकलनेमे भी सफल हुये । तुर्कोंसे लडाई हो रही थी, इसी समय दोन और यायिकके कसाकोमे अफवाह उडी, कि जार पीतर II मरा नही है, बल्कि वह हमारे बीचमे छिपा हुआ है । १७७३ ई० के शरद्मे एमेल्यान पुगाचेफ नामक एक कसाकने विद्रोहका नेतृत्व अपने हाथमे लिया । वह उसी जिमोवेइस्क गावमे पैदा हुआ था, जिसे प्रथम किसान-वीर स्तेपान राजिनको पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था ।

पुगाचेफने सप्तवर्षीय युद्धमे भाग लिया था, तुर्कोंके युद्धमे भी लडा था । बीमारीके कारण छुट्टी पाकर वह घर आया था, लेकिन उसने फिर लौटकर जाना पसद नही किया । वह दोन, वोल्गा और यायिककी उपत्यकाओमे घूमता रहा । वहा उसे कितने ही दुर्दशाग्रस्त भगोडे किसान तथा उरालके कारखानोके मजदूर मिले । अपने इस पर्यटनमे उसे लोगोसे घनिष्ठता प्राप्त करनेका मौका मिला और धीरे-धीरे उसका एक दल बन गया । अपनेको सम्राट् पीतर III कहते हुये वह सितम्बर १७७३ ई० मे यायिकके तटपर पहुचा । लोग उसके झडेके नीचे आने लगे । पहले वह अपने आदमियोको लेकर ओरेनबुर्गकी ओर गया । गेरिसनको अधिकारमे कर किलेपर अधिकार करनेमे उन्हे कोई कठिनाई नही हुई । १७७३ ई० के अक्तूबरमे पुगाचेफ ओरेनबुर्गके नगर-प्राकारके पास पहुचा, जहा एक मजबूत किला और काफी सैनिक रहते थे । पुगाचेफ छ महीने उसे घेरे रहा । इस विद्रोहने आसपासके लोगोमे उत्तेजना पैदा की । कजाक (एसियाई) घुमन्तू भी उसकी सेनामे आकर शामिल होने लगे, निम्न वोल्गा और कालासागरके बीचके घुमन्तू कलमक मगोल भी पुगाचेफकी सेनामे भर्ती होने लगे । तारतार, बश्किर और मारी नौजवान भी यायिकके तटपर पुगाचेफके पास पहुचने लगे । यह विद्रोह हर जातिके केवल किसानो तक ही सीमित नही था, बल्कि इसमे उरालके धातु-कारखानेमे काम करनेवाले मजदूर और दूसरे भी शामिल थे । धीरे-धीरे विद्रोह एक किसान-युद्धके रूपमे परिणत हो गया । पुगाचेफकी सेनामें कलमको, बश्किरो, तारतारो, कारखानोंके मजदूरो और दूसरोकी अलग-अलग पल्टने सगठित थी । उनके पास हथियारोकी कमी थी । बहुत थोडोंके पास पलीतावाली बन्दूके या पिस्तौले थी, बाकी पुराने तरहके हथियारोसे सज्जित थे । कुछ तोपे पकडी गई थी, जिनका एक तोपखाना बना लिया गया था । उरालके लोहेके कारखानोके कारीगरोकी सहानुभूति होनेके कारण, कुछ नई बदूके भी विद्रोहियोको मिल रही थी । पुगाचेफ अपनी घोषणाओको सम्राट् पीतर III के नामसे निकालता था, किसानो और गरीबोके लिये जितना कुछ उसमे हो सकता था, उतना कर

रहा था और उससे भी अधिकका वचन देता था। १७७३ ई०के अन्तमे ओरेनवुर्गको मुक्त करानेके लिये जेनरल कारके नेतृत्वमें एक सरकारी सेना आई, जिसे पुगाचेफने हरा दिया, इसके कारण उसका प्रभाव और वढ गया। सारे रूसके अमीरो, जमीदारो और धनियोमे आतक छा गया। वोल्गासे सैंकडो मील दूर रहनेवाले जमीदार भी हर वक्त भयके मारे कापने लगे। लेकिन मार्च १७७४ ई० में सरकारी सेनाने पुगाचेफको ओरेनवुर्गके पास हरा दिया। अभी भी उसने अपने सघर्पको नही छोडा। पहले वह वश्किरोके प्रदेशमे गया। फिर रूसी किसानो, वश्किरो तथा धातु-कारखानेके मजदूरोकी सेना सगठित कर वह कामा नदीकी ओर वढते कजानकी ओर चला, जो कि सारे वोल्गा प्रदेशका शासन-केन्द्र था। पुगाचेफ जुलाई १७७४ ई० मे कजान पहुचा। यहा भी उसे अन्तमें हारना पडा, और वह थोडेसे आदमियोके साथ वोल्गाके दक्षिण तटकी ओर भागा। सरकारी सेनाने पुगाचेफका पीछा करना शुरू किया। वोल्गाके दाहिने किनारेपर उसके पास अव थोडे हीसे आदमी रह गये थे, लेकिन जव वह घने वसे हुये इलाकेमे पहुचा, तो निजनी-नवोगोरदके इलाकेने हथियार उठा लिया। विना अधिक प्रतिरोधके एकके वाद एक नगरोने आत्मसमर्पण किया। परन्तु पुगाचेफकी यह सफलता क्षणिक सावित हुई। वाकायदा शिक्षाप्राप्त सरकारी सेनाके सामने किसानोका दल कैसे डटा रहता? पुगाचेफ पेजा, सरातोफ और कमिशिन होते अगस्तके अन्तमे जारित्सिन (आधुनिक स्तालिनग्राद) पहुचा, जहापर सरकारी सेनाने नगरसे नातिदूर पुगाचेफकी शक्तिको छिन्न-भिन्न कर दिया। तो भी वह अपने कुछ आदमियोंके साथ वोल्गा पार करनेमे सफल हुआ, लेकिन इसके वाद लोगोका उसकी सफलतापर विश्वास नही रह गया। अन्तमे कसाक ज्येष्ठकोने उसे पकडकर सरकारके हाथमे दे दिया। हाथ-पैर वाधकर एक लकडीके पिंजडेमे पुगाचेफको मास्को ले जा जनवरी १७७५ ई० मे फासी दे दी गई। पुगाचेफने भारी जोश और वडी-वडी आशाये रूसकी गरीव जनतामे पैदा कर दी थी, लेकिन उस समय वह विखरे और अशिक्षित किसानोको ही विद्रोहियोकी सेनामे शामिल कर सकता था। अभी कारखानेके मजदूरोकी पल्टन तैयार नही हुई थी, जो अपने सुदृढ सगठनोसे किसान-क्रान्तिको सफल वनाती।

जैसा कि पहले कहा गया, एकातेरिनाके शासनकालमे अमीरो और जमीदारोका वल और भी अधिक वढ गया। १७७५ ई० मे किसान-विद्रोहको दवानेके वाद एकातेरिनाने राज्यके प्रवन्धमे कितने ही नये सुधार किये। सारा राज्य पचास गुवर्नियो (प्रदेशो) मे वाट दिया गया—प्रत्येक गुवर्नियामे प्राय तीन लाखकी आवादी थी। हरेक गुवर्निया फिर कितने ही उयेज्दोमें वाटी गई, जिसमे प्राय तीस हजारकी आवादी थी। कभी-कभी दो-तीन गुवर्नियापर भी एक राज्यपाल नियुक्त होता, लेकिन अधिकतर प्रत्येक गुवर्नियाका एक राज्यपाल होता। इसके कहनेकी अवश्यकता नही, कि राज्यपाल या उयेज्दके शासक राजुलो (सामन्तो) और वायरो (अमीरो) मे से ही होते थे। १७८५ ई० मे नगरके शासनके लिये भी नई व्यवस्था कायम की गई, और उसका कार्य-भार नगरपालिकाके ऊपर दिया गया, जिसके सवसे वडे अधिकारी "गरोद्‌निची" को सरकार नियुक्त करती थी।

वैदेशिक नीति—एकातेरिनाका शासनकाल रूसके भारी प्रसारका काल था। १८वी शताब्दीकी अन्तिम चार दशाव्दिया रूसकी सीमाको अधिक वढाने और मजवूत करनेके लिये विशेष महत्त्व रखती हैं। एकातेरिनाके शासनकालमे ही तुर्की और स्वीडनके साथ दो-दो जवरदस्त युद्ध हुये। प्रथम तुर्की युद्धके समय १७३४ ई०मे क्रिमियाके ऊपर रूसका सरक्षण स्थापित हो गया था। कालासागरपर निरावाध अधिकार करनेके लिये क्रिमियाका रूसके हाथमें जाना आवश्यक था। क्रिमियाके खानोंमें आपसमे उत्तराधिकारके लिये झगडे होते ही रहते थे। रूसने उससे फायदा उठाया, सेना भेज शगिन-गिराईको पहले खान घोपित किया, फिर १७८३ ई० में शगिनको अधिकारच्युत करके तोरिदाके नाम से क्रिमियाको एक गुवर्निया वना दिया। अव कालासागरके तटकी काली मिट्टीवाली उर्वर भूमि (नवोरोसिया) रूसियोके हाथमे थी, जिसके अच्छे-अच्छे इलाकोको अपने हाथमे करनेके लिये रूसी सामन्त गिद्धकी तरह टूट पडे। क्रिमिया प्रायद्वीपके भीतर भी उन्होने वैसा ही किया, और निवासी तारतार पहाडोकी ओर सिमटनेके लिये मजवूर हुये। जेनरल पोतेमकिन एकातेरिनाके कृपापात्रको क्रिमियाका महाराज्यपाल नियुक्त किया गया, जिसने अपना घर भरनेमें कोई कसर उठा

एक कारण था तुरगुत मगोलोंका १७ वीसदीमें रूसके भीतर वोल्गाके किनारे चला जाना। कुछ समय तक तो वह शातिपूर्वक रहे, लेकिन उन्होंने देखा, कि रूस और तुर्कोंके चक्कीके दो पाटोंके भीतर उन्हें पिस जाना है। उधर तुलिशिनके दूतमडलने उन्हें लौटनेका भी बहुत प्रलोभन दिया। तुरगुत मगोल घुमन्तू थे, लेकिन अपनी पुरानी मगोल भूमिके साथ उनका बहुत स्नेह था। १७७१ ई०में रूसियों और तुर्कोंके बीचमें जो सघर्ष हुआ, उसमें तुरगुतोंने रूसका पक्ष लिया। इसी समय तुर्कोंके साथ लडते उन्हें अपनी शक्तिका भान हुआ, और वह समझने लगे, कि तुर्कों (कजाकों) के बीचसे चीरते-फाडते हम अपनी जन्मभूमिको लौट सकते हैं। ५ जनवरी १७७२ ई० को एक दिन यकायक सात लाख तुरगुत परिवारोंने पूर्वकी ओर प्रस्थान कर दिया। रूसियोंने पहले समझानेकी कोशिश की, फिर कुछ सेनाका भी उपयोग किया, लेकिन उस समय वह दक्षिणी शत्रुओंके साथ भी फसे हुये थे, इसलिये पूरी शक्ति नहीं लगा सकते थे। कजाक-तुर्कोंने अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वियोंको आसानीसे बढ निकलनेका मौका नहीं दिया। तो भी तुरगुत अपने लाखो ऊटों, घोडों, भेडों, तम्बुओं और दूसरे सामानके साथ वालबच्चों को लिये, पद-पदपर कजाकोंसे लडते आगेकी ओर ही बढते गये। आठ महीनेकी इतिहासकी इस अद्वितीय यात्राके बाद तुरगुत जब इली नदीके तटपर पहुचे, तो सात लाखकी जगह अब वह तीन लाख आदमी रह गये थे। इलीके तटपर चीनने उनका स्वागत किया, और उन्हें पशु, अन्न और पैसेसे मदद देकर पासमें ही अलनाई (सुवर्ण) की पहाडी भूमिमें बसा दिया। रूसने कुछ थोडे-से मगोलों को शरण दी थी, अब चीनने लाखोंकी सख्यामें चीनी प्रजाको अपने यहा जगह देकर उसका बदला लिया। रूसने भी अब चीनियोंको प्रलोभन देकर अपनी सीमाके भीतर रखना शुरू किया। इसपर दोनों राज्योंके बीच शाति कैसे कायम रह सकती थी? चीन-सम्राट् काउ-चुङ (च्यानलुङ १७३५-९५ ई०) ने विरोध प्रदर्शित करते हुये लिखा था :

"परीक्षण करनेपर हमारे दोनों देशोंके समझौतोंके भीतर पता लगा, कि अगर सीमातपर किसी राज्यका चोर पकडा जाय, तो दोनों ओरके सयुक्त अधिकारियोंके सामने उसके बारेमें जाच-पडताल होनी चाहिये और अपराधी साबित होनेपर उसे मृत्युदड देना चाहिये। इसी विधानके अनु-सार मेरे चौवालीसवें सवत्सरमें तुम्हारे यहाके ग्यारह घोडे चुरानेके कारण दो आदमियोंको मृत्युदड दिया गया। हमारे महान् साम्राज्यने सधिपत्र और विधानका ईमानदारीसे पालन करनेके लिये ऐसा किया, मित्रता कायम रखनेके लिये ही नहीं, बल्कि सत्यके प्रेमके लिये भी, जिसका कि हम बहुत सम्मान करते हैं। लेकिन, तुमने चोरोंको प्राणदड नहीं देकर मित्रता और सधिपत्रके विधान और शपथको भग किया। यद्यपि हमारे दोनों साम्राज्य एक दूसरेके सीमातपर हैं, तो भी हमारा (चीन) साम्राज्य अपनेको बडा भाई कह सकता है, क्योंकि वह साम्राज्योंमें बडे भाईका स्थान रखता है। तुम्हारी प्रार्थना पर हमने दो चोरोंको दडित किया, लेकिन तुम वही बात हमारे महासाम्राज्यको सतुष्ट करनेके लिये करनेसे इन्कार करते हो। क्या तुम नहीं सोचते, कि आनेवाली सताने तुम पर हसेंगी?"

इन झगडोंको मिटानेके लिये एकातेरिनाने क्रोपोतोफको दूत बनाकर चीन भेजा। बात-चीत होनेके बाद १७२७ ई० के सधिपत्रमें और धारा जोडी गई, जिसके बाद फिर व्यापारिक सबध पहलेकी तरह स्थापित हो गया। यह उल्लेखनीय बात है, कि एकातेरिनाका मगोलियाके मगोलोंके साथका बर्ताव वहाके लामाओं और राजुलोंके लिये अधिक अनुकूल था, इसीलिये वहाके लोगोंमें मशहूर था, कि एकातेरिना श्वेततारा देवी (चगान-तारा-एखे) की अवतार हैं। एकातेरिनाके बाद जब रूसकी गद्दीपर जार बैठने लगे, तो उन्हें भी मगोल चगान खान (श्वेत राजा) कहने लगे।

शिक्षा और सस्कृति—केवल राजनीतिक दाव-पेचोंसे ही किसी भी राजशक्तिको एकताबद्ध और शक्तिशाली नहीं बनाया जा सकता, उसके लिये तो अधिक शक्तिशाली हथियारोंकी अवश्यकता होती है। अपने प्रतिद्वद्वियोंके मुकाबलेमें अधिक शक्तिशाली हथियारोंको ढूढते हुये आदमी बारूद-के हथियारों तक पहुचा, और उनमें भी एक दूसरेसे बाजी मार ले जानेके लिये उसने नये-नये आवि-ष्कार किये, जिनके लिये आदमीको साइसकी ओर बढना पडा। जिसके साथ ही अब साइस तथा दूसरी विद्याओंकी प्रगति अनिवार्य हो गई। साइसके प्रसारके लिये पीतर I ने रूसी विज्ञान अकदमी (रूस्की अकदमी नाउक) कायम करनेके बारेमें सोचा था, जो १७२५ ई० में ही उसके मरनेके

बाद स्थापित हुई। यह हम बतला चुके हैं, कि पीतरने पश्चिमी युरोपसे कितने ही विद्वानोको निमन्त्रित करके अपने यहा रक्खा था, जिनमे बरनूली और ल्योनहार्ड यूलर जैसे गणितज्ञ भी थे। रूसका पहला विज्ञानवेत्ता मिखाइल वासिली-पुत्र लोमोनोसोफ (१७११-६५ ई०) था। उसके रूपमें रूसकी प्रतिभा विद्याके बहुत-से क्षेत्रोमे प्रकट हुई। लोमोनोसोफ उत्तरी समुद्रतटके आरखगेल्स्क नगरसे नीतिदूर समुद्रतटके एक गाव देनिसोव्कामे एक खाते-पीते मछुयेके घरमे पैदा हुआ था। दस वर्षकी उमरमें वह अपने बापके साथ समुद्रमे मछली मारने जाया करता था, लेकिन लोमोनोसोफको जल्दी मालूम होने लगा, कि पढना अच्छी चीज है। आरखगेल्स्कमे कितने ही महीनो तक बहुत लम्बी रातें होती है। इन रातोमे वह अक्सर अक्षर, व्याकरण और गणित पढता था, क्योकि इस समय मछुवाही करनेके लिये जाना नही पडता था। पास हीके कस्बे खोल्मोगोरीमे एक स्कूल था, लेकिन मछुवेका लडका होनेके कारण उसे उसमे भर्ती करने से इन्कार कर दिया गया। लोमोनोसोफ विद्याके लिये इतना व्यग्र था, कि एक मछली ले जानेवाली नावपर उसने मास्कोकी ओर प्रयाण कर दिया। अपने किसान या मछुवेके लडके होनेको छिपाकर ही वह मास्कोकी स्लावानिक ग्रीक-लातिन-अकदमीमे प्रविष्ट हो सका। पाच वर्ष तक बडी कठिनाइयोके साथ उसने वहा अध्ययन किया। बीस साल के तगडे जवान विद्यार्थीसे उसके सहपाठी बायरो और धनी व्यापारियोके लडके परिहास करते रहते थे। पढाई समाप्त करनेके बाद लोमोनोसोफको एक अवसर हाथ आया। सरकारकी ओरसे तीन विद्यार्थी उच्च-शिक्षाके लिये युरोप भेजे जानेवाले थे। लोमोनोसोफ असाधारण मेधावी विद्यार्थी था, और बायरोके लडकोमे से तीन मिल नही रहे थे, इसलिये उसे भी युरोप भेज दिया गया। उसने रसायन, धातुशास्त्र, खनिजशास्त्र और गणित अध्ययन करते हुये चार साल वहाके वैज्ञानिको और विद्वानो के सम्पर्कमें बिताये। १७४५ ई० मे स्वदेश लौटनेपर उसे प्रोफेसर होनेके साथ रूसी विज्ञान अकदमीका पहला रूसी मेम्बर बननेका अवसर मिला। अब तकके बीस वर्षोमे रूसी साइस अकदमीके सदस्य विदेशी विशेषकर जर्मन विद्वान् ही होते थे, जिनमेंसे कुछका ज्ञान बहुत ही उथला था। साइस के क्षेत्रमे लोमोनोसोफने कई नये आविष्कार किये, लेकिन अभी कोई गुणग्राहक नही था। लोमोनोसोफ के कितने ही आविष्कारो और वैज्ञानिक सिद्धान्तोकी पुष्टि १९वी सदीमे जाकर हुई। लोमोनोसोफने ही तापके यान्त्रिक सिद्धान्तको पहलेपहल बतलाया था। रसायनमे भी उसने जो नया सिद्धान्त निकाला था, उसका चालीस वर्ष बाद फ्रेंच रसायनवेत्ता लावाजियेने फिरसे पता लगाया, और आज वह सिद्धान्त उसीके नामसे विख्यात है। भूतत्त्वशास्त्रमे भी लोमोनोसोफने धातुओ और धुनोकी उत्पत्ति का अध्ययन किया, जिससे भूतात्त्विक खोजोमे बडी मदद मिली। वह पहला आदमी था, जिसने बतलाया, कि पत्थरका कोयला पथराये वृक्षो और वनस्पतियोका अवशेष है। युरोपमें वह पहला आदमी था, जिसने भौतिक रसायनकी व्याख्या करते हुये कई व्याख्यान दिये। ज्योतिषशास्त्र और नाविकशास्त्रके अध्ययनमे भी उसने बहुत समय लगाया। यगसे साठ साल पहले उसने पृथ्वीतलके कम्पनकी बातका पता लगाया। हर्शलसे तीस साल पहले उसने बतलाया, कि बुधके चारो तरफ वातावरण है। नान्सेनसे एक सौ पैंतीस वर्ष पहले उसने ध्रुवीय महासागरके बहनेकी दिशाकी सूचना दी। इस प्रकार हम देख सकते है, कि जिन बातोको हम पश्चिमी युरोप के वैज्ञानिकोकी मौलिक खोज मानते है, वह गलत है। युरोपियनोने भी विज्ञान की प्रगतिमे बहुत भाग लिया है, लेकिन यह केवल झूठा प्रचार है, कि युरोपीय दिमाग ही सभी बातोमे मौलिक होनेका ठेका लिये हुये है। रूसी दिमाग बहुत सी बातोमे उनसे आगे-आगे रहा। और तो और, परमाणु-विदरण का प्रायोगिक सिद्धान्त भी दो रूसी वैज्ञानिकोने पहलेपहल करके उन्हे छपवा भी दिया था, जिसके सहारे जर्मन और अमेरिकन विज्ञानवेत्ता आगे बढे। अपने साम्राज्यविस्तारके लिये जैसे युरोप हथियारोको चमकाने और लोगोमे फूट डालने की नीतिको इस्तेमाल करता रहा, वैसे ही अपनी दिमागी श्रेष्ठताका ढिंढोरा पीटकर भी उसने अपनी धाक जमानी चाही।

लोमोनोसोफ प्रयोगका बडा भारी पक्षपाती था। उसने तीन हजार प्रयोग करके रगीन काच बनानेकी पद्धतिका आविष्कार किया। लोमोनोसोफने ध्रुवीय सागरसे होकर पूर्वी एसियाको अभि-यान भेजनेके लिये नक्शा तैयार किया था। वह केवल शुष्क विज्ञानवेत्ता ही न था, बल्कि कवि और

साहित्यकार भी था। रूसी साहित्यको उसने धार्मिक भाषासे हटाकर जनभाषाकी ओर ले जानेकी कोशिश की। उसने वैज्ञानिक ढगपर एक अच्छा रूसी व्याकरण लिखा, जो कई पीढियो तक पढाया जाता था। उसकी प्रतिभाके बारेमे रूसके कालिदास अलेक्सान्द्र पुश्किनने लिखा था :

"अपने असाधारण बुद्धि-बलके साथ असाधारण इच्छाबल रखते हुये लोमोनोसोफने विद्याकी सभी शाखाओका अवगाहन किया। उसमें ज्ञानकी असाधारण पिपासा थी। वह इतिहासकार, साहित्यकार, यत्रशास्त्री, रसायनशास्त्री, धातुशास्त्री, चित्रकार और कवि था।"

लोमोनोसोफके अन्तिम वर्ष एकातेरिनाके शासनकालमें बीते। उसके कार्योके रूपमें रूसी साहित्य, विज्ञानकी भव्य इमारतकी दृढ नींव पडी।

१८वीं सदीमें शिक्षाकी ओर शहरोंके मध्यवर्गके लोगोका ध्यान गया था। दूसरी शिक्षण-सस्थाओंमें जगह न मिलनेके कारण अध्यापकोंने अपने घरोंमें छात्रावास-सहित स्कूल खोल रक्खे थे। बायर और धनी लोग अपने लडकोंके पढानेके लिये विदेशी शिक्षक रखते थे। फ्रेंचकी महिमा बढती चली गई थी, और १८वीं सदीके मध्य तक अमीरोंके घरोमें रूसी नहीं फ्रेंच भाषा बोली जाती थी। हमारे आजके कितने ही हिन्दो-आग्लियन परिवारोकी तरह रूसी अमीर अपने भावोंको अपनी भाषामें मुश्किलसे प्रकट कर सकते थे। वह फ्रेंच बोलनेमें फ्रेंच लोगोका भी कान काटना चाहते थे। उनके यहा फ्रेंच अध्यापकोकी बडी माग थी, और फ्रासका कोई भी ऐरा-गैरा-नत्थूखैरा आकर रूसमें अमीरो के घरोमे अध्यापक बन जाता था। पुश्किनने अपने लघु उपन्यास "कप्तान कन्या" में इसका बडा परिहास किया है। लेकिन, इसका एक अच्छा पहलू भी था। प्रौढ फ्रेंच साहित्यसे रूसी साहित्यको आरम्भमें बडी प्रेरणा मिली। उन्हे पढकर रूसी लेखक मोलियेर, वोल्तेरकी नकल करना चाहते थे। पश्चिमी युरोपके साहित्यकी माग होनेसे उनके बहुतसे ग्रथोंके रूसीमे धडाधड अनुवाद होने लगे। लोमोनोसोफ-समकालीन सुमारोकोफ (१७१८-७७ ई०) रूसी भाषाका पहला ख्यातनामा लेखक है। उसने बहुत-से ग्रथ फ्रेंच शैलीपर लिखे, जिनमें उसके ऐतिहासिक दु खात नाटक, प्रेम-गीत और प्रहसन अधिक जनप्रिय हुये। अपने समयके मास्कोके बारेमें उसने लिखा था "यहाकी सभी सडकें अज्ञानकी ईंटोंसे सात फुट ऊची चिनी गई है, जिनको तोडनेके लिये एक सौ मोलियरोकी अवश्यकता है।"

रूसी लेखकोंके मैदानमें आते ही फ्रेंच साहित्यका प्रभाव घटने लगा, यह सुमारोकोफके समयमें ही देखा जाने लगा। सुमारोकोफपर फ्रेंच क्लासिक और ग्रीक साहित्यका बडा प्रभाव था। वह रूसी साहित्यको भी उसी रगमे रगना चाहता था लेकिन उसके तरुण समसामयिक देनिस फोन-विजिन (१७४५-९२ ई०) ने साहित्यको रूसकी भूमि और रूसके जीवनमें लानेका प्रयत्न किया। १८वीं सदीका अन्त होते-होते रूसको गवरील रोमन-पुत्र देर्झाविन (१७४३-१८१६ ई०) के रूपमें एक उच्च कोटिका कवि पानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने रूसी वातावरण और रूसी जीवनको अपनाकर अपनी कविताको जनताके समीप ला दिया। इसके बाद रूसी साहित्य युरोपका भिखारी नहीं रह गया। उसने अपने लेखक और साहित्यकार इतने उच्चकोटिके पैदा किये, जिनका लोहा सभी जगह माना जाने लगा। निकोलाई मिखाइल-पुत्र करमजिन (१७६५-१८२६ ई०) ने अपनी विदेश-यात्राओं द्वारा पश्चिमी युरोपके जीवन और संस्कृतिका चित्र खीचकर रूसी पाठकोंके सामने रखा। करमजिनकी "बेचारी लीजा" कथा एक समय बहुत प्रचलित थी, लेकिन करमजिनने पीछे अपना सारा समय रूसी इतिहास लिखनेमें दे दिया।

एकातेरिनाके शासनकालमें नाट्यकला और सगीतकी भी प्रगति हुई। १७५६ ई० में रानी एलिजाबेतके शासनकालमे "दु खान्त-सुखात अभिनयका रूसी तियात्र" के नामसे पीतरबुर्गमे पहली स्थायी नाट्यशालाका उद्घाटन हुआ। सुमारोकोफ उसका पहला सचालक नियुक्त हुआ, और वोल्कोफ तथा उसके साथी पहले अभिनेता। वोल्कोफ १७६२ ई०मे मर गया, जब कि रूसी नाट्यकलाकी प्रगतिका द्वार खुल चुका था। राजधानीके अभिनयोंको देखकर देहातके अमीरोंने भी अपने यहा निजी रंग-शालायें खोलीं। हमारे यहा आज भी सूर, तुलसीके धार्मिक गीतोका ही सगीतमें प्राधान्य चला जा रहा है, लेकिन रूसमें १८वीं सदीमें ही धर्मनिरपेक्ष सगीतका खूब प्रचार होने लगा था। एकातेरिनाके शासन-काल हीमें ओपेरा (पद्यनाटक) का भी प्रचार हो चला।

इसी कालमे चित्रकला और वास्तुकलाने भी रूसमे प्रगति की, जिसमे पश्चिमी कलाकारोकी सहायता लाभदायक सिद्ध हुई। रूसी वास्तुशास्त्री बाजेनोफने कई अच्छी-अच्छी इमारते बनाई। उसकी प्रतिभाकी ख्याति देशकी सीमासे बाहर पहुच गई और फ्रासके राजाने बहुत अधिक वेतन देकर उसे बुलाना चाहा, लेकिन बाजेनोफने अपनी प्रतिभाको अपनी जन्मभूमिकी सेवामे ही लगाना चाहा। उसकी बनाई हुई इमारतोमे प्स्कोफ-प्रासाद (आधुनिक लेनिन पुस्तकालय) मास्कोमे अब भी मौजूद है।

यात्रिक आविष्कारोमे भी लोमोनोसोफके दिखलाये रास्तेको रूसियोने आगे बढाया। इवान इवान-पुत्र पोल्जुनोफ (१७२६-६६ ई०) उरालकी किसी छावनीके एक सिपाहीका लडका था, जिसने "अग्नि-चालित इजन" का पहलेपहल आविष्कार किया। उस समय तक पानीकी शक्तिको इस्तेमाल करनेवाले कारखाने जहा-तहा बन चुके थे, लेकिन ऐसे कारखाने उन्ही जगहोपर बन सकते थे, जहा बहते पानीकी तेज धारा हो। पोल्जुनोफने वाष्प-चालित यत्रोके कारखानोको किसी भी स्थानपर स्थापित करनेके ख्यालसे अपने अग्नि-चालित इजनका आविष्कार किया, लेकिन उसे बर्नोल (अल्ताई पर्वत) मे अपने वाष्प-इजनको चलाकर अपना जीवन खतम कर देना पडा। जेम्स वाटको आज वाष्प-इजनका आविष्कारक कहा जाता है। उससे इक्कीस वर्ष पहले पोलजुनोफने दुनियाका प्रथम वाष्प-इजन तैयार किया था। आविष्कारकी प्रतिभा रूसमे मौजूद थी, लेकिन सामन्तशाही रूस ऐसी प्रतिभाओको प्रोत्साहन देनेके लिये तैयार नही था। १८वी सदीके दूसरे रूसी आविष्कारक इवान पीतर-पुत्र कुलिबिन (१७३५-१८१८ ई०) की भी उसी तरह उपेक्षा हुई, जैसी पोल्जुनोफकी। कुलिबिनने अपने बचपनमे ही एक मित्रके घरमे दीवार-घडी देखी, और कुछ ही दिनो बाद उसने लकडी की उसी तरहकी घडी बना दी। बापके मरनेपर वह दूकानके कामके साथ-साथ समय बचाकर घडिया बनाने लगा। उसने और उसके साथियोने पाच वर्ष लगाकर अडेके बराबरकी एक घडी बनाई, जिसका उस समय बहुत फैशन चल पडा था। कुलिबिनने अपनी घडी एकातेरिनाको भेट की। एकातेरिनाने उसे साइस अकदमीका यात्रिक नियुक्त किया। कुलबिनने नेवा नदीके लिये एक मेहराब-वाले लकडीके पुलका नक्शा तैयार किया, लेकिन उसके नमूनेको आखसे देखनेके बाद भी किसीने काममे लानेका ख्याल नही किया। कुलिबिन अन्तमे बडी गरीबीका जीवन बिताते हुये अपने नगर निजनी- नोवगोरद (आधुनिक गोर्की) मे मरा।

रूस प्रतिगामिताका गढ—एकातेरिनाके समय रूस जिस तरहका रूप ले रहा था, उसके बारे-मे हम बतला चुके। रूसमे फ्रेच साहित्य और विचारोका बडा मान था, लेकिन इसी समय १७८९ ई० मे फ्रेंच क्राति हुई, जिसने बतला दिया कि सामन्तशाहीकी नीव बडी निर्बल है। फ्रेच क्रातिको देखकर युरोपके सभी मुकुटधारी कापने लगे थे। इसी समय रूसने एकातेरिनाके मुहसे कहल-वाया—"फ्रेच राजाका काम सभी राजाओका काम है।" उसने दृढतापूर्वक घोषित किया, कि मै कही भी चमारो (मजूरो) को राज्य-शासन करने नही दूगी। इसे सयोगकी ही बात कहिये, कि एकातेरिनाके स्थानपर रूसका सबसे शक्तिशाली शासक योसफ स्तालिन एक चमारका ही लडका था। सोलहवे लुईको जब फ्रासमे मृत्युदड दिया गया, तो सबसे पहले एकातेरिनाने फ्रेच गणराज्यमे सबध विच्छेद कर लिया, फ्रासमे रहनेवाले सभी रूसियोको बुला लिया, और क्रातिसे सहानुभूति रखनेवाले फ्रासीसियोको रूससे निर्वासित कर दिया। एकातेरिनाको "फ्रेच महामारी" का सबसे अधिक डर था, लेकिन उसके ही शासनकालमे फ्रेच क्रान्तिकी विचारधाराके पिताओ—वोल्तेर, दिदरो, रूसोकी पुस्तके प्राय सभी रूसी अमीरोके घरोमें पाई जाती थी, वह उन्हे मूल फ्रेचमे पढते थे। इन पुस्तकोका प्रभाव रूसियोकी विचारधारापर भी पड रहा था, और वह भी समता, भ्रातृभावके पक्षपाती होते जा रहे थे। ऐसे प्रगतिशील तरुणोमे अलेक्सान्द्र रादिश्चेफ पहला आदमी था। वह एक अमीर घराने में १७४९ ई० मे पैदा हुआ था। उसने जर्मनीके लाइप्जिक विश्वविद्यालयमे अध्ययन किया था। समानता और स्वतन्त्रताके विचारोसे भरे हुये रूसोके ग्रथोने उसपर बहुत प्रभाव डाला, और वह स्वेच्छाचारी शासनको बहुत घृणाकी दृष्टिसे देखने लगा। १७९० ई० मे उसने अपनी प्रथम पुस्तक "पीतरबुर्गसे मास्कोकी यात्रा" प्रकाशित की। पुस्तककी छ सौ पचास ही प्रतिया निजी तौरसे

छापी गई थी। एकातेरिनाने इस पुस्तकको देखकर कहा—"वह तो पुगाचेफसे भी भारी बदमाश है। इसके लिये दस फांसीकी टिकटिया भी पर्याप्त नही होगी"। उसने रादिश्चेफको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया। रादिश्चेफने अपनी पुस्तककी भूमिकामे लिखा था

"जब मैने अपने चारो ओर देखा, तो मानवताकी पीडासे मेरा हृदय फटने लगा।" जमींदारोके अत्याचारोंके बारेमे उसने लिखा था—"यह क्रूर पशु, कभी न अघानेवाली जोके, किसानोंके लिये वही छोडती है, जिसे वह लेना नही चाहती। जमीदार किसानोंके लिये विधान-निर्माता, न्यायाधीश है, जिसके कारण कोई अपने बचावके लिये एक शब्द भी नहीं कह सकता।" रादिश्चेफ समझता था, कि इन पशु-जोंक-जमीदारोका सीधा सबंध जारके सिंहासनमे है, इसलिये अपनी यात्रामें उसने "स्वतन्त्रता" के नामसे जिस गीतको दिया था, उसमें "लोहेके सिंहासन" को नष्ट करनेके लिये जनताके भयकर बदलेकी बात लिखी थी। सामन्तघरमे पैदा हुआ रादिश्चेफ रूसका पहला क्रांतिकारी, प्रजातत्र-पक्षपाती तथा प्रगतिशील विचारक था। अदालतने उसे मृत्युदड दिया, जिसे पीछे दस वर्ष साइबेरिया-निर्वासनके रूपमे परिणत कर दिया गया। एकातेरिनाने रादिश्चेफकी पुस्तककी होली जलवाई। एकातेरिनाके मरनेके बाद उसके उत्तराधिकारी पुत्र पावल I ने जब सार्वजनिक क्षमादान दिया, तो रादिश्चेफको भी साइबेरियासे लौटनेका मौका मिला, लेकिन उसका राजधानीमें आना निषिद्ध था, और अलेक्सान्द्र I (१८०१-२५ ई०) के समयमें ही उसके ऊपरसे यह निर्बंध हटाया गया। उसने स्वतन्त्रता और समानताके आधारपर राज्यशासनमे सुधार करनेकी योजना बनाई। सत्ताधारी उसे फिर साइबेरियामें निर्वासित करनेकी सोच रहे थे, इसपर रादिश्चेफने विष खाकर १८०२ ई० मे अपने जीवनका अन्त कर लिया। एकातेरिनाके समयके स्वतन्त्र विचारकोमें निकोलाइ नोविकोफ भी था, जिसने नये विचारोंके प्रचारके लिये पुस्तककी दूकान खोली थी। उसने एक प्रहसन और व्यगभरी पत्रिका "त्रुतेन" तथा और भी पत्र निकाले। अपने व्यगोमे वह शासकोकी अच्छी खबर लेता था, और किसानो और अर्ध-दासोकी पीडाको बडे सजीव रूपमे रखता था। उसकी पुस्तक "एक स्वामीका अपने गावके किसानोंके साथ पत्र-व्यवहार" मे बडे ही मार्मिक रूपमे किसानोकी विपदाका चित्रण किया गया था।

१३ पावल I, पीतर III-पुत्र (१७९६-१८०१ ई०)

पावलके शासनके रूपमे अब हम रूसके उस समयमे आ जाते है, जब कि भारतमे रही-सही सामन्तोंकी स्वतन्त्रता भी अग्रेज बनियोंकी ईस्ट इडिया कपनी छीन रही थी। एकातेरिना अपने पतिके मरवानेसे ही सतुष्ट नही थी, बल्कि उसकी महत्त्वाकाक्षाने अपने पुत्रके साथ भी सौहार्द स्थापित करने नही दिया। पावलको उसकी दादी एलिजाबेतने पाला था। वह समझता था, मेरी माने मेरे उचित अधिकारको छीन रखा है। एकातेरिना भी इसे समझती थी, इसीलिये वह पावलको राजकाजमें हाथ डालनेका मौका नही देती थी। पावल माकी ओरसे दी हुई अपनी जमीदारी गत्चिनामे अपना सारा समय सैनिक कार्योंमे बिताता था। उसने गत्चिनाको फ्रेड्रिक II के सैनिक नियमोंके अनुसार एक युद्ध-शिविर बना दिया था, जहापर सैनिकोको प्रुशियन सेनाकी वर्दी पहनाकर डडोंके हाथो कवायद-परेड कराई जाती थी। सिंहासनपर बैठते ही पावलने बापके कदमोपर चलते रूसी सेनाको प्रुशियन सेनाके रूपमे परिणत करना शुरू किया। उस समय राजधानी (पीतरबुर्ग) भी बहुत कुछ एक सैनिक शिविरकी तरह मालूम होती थी। राज्यके सभी विभागोंमे उसने कठोर सैनिक अनुशासनके बरते जानेकी माग की। फ्रेंच-क्रातिकी छाया अभी भी युरोपमे लुप्त नही हुई थी। उसके बारेमें वह अपनी मासे बिल्कुल सहमत था। विदेशी आकर कहीं क्रातिकी महामारी न फैला दें, इसलिये उनके आनेमें उसने निषेध और रुकावट डाल दी। वह रूसी अमीरोको भी युरोपके विश्वविद्यालयोंमें पढनेके लिये जानेकी इजाजत नही देता था। बाहरसे हर तरहकी पुस्तकोका आना उसने बद कर दिया। उसने जमीदारोंके साथ पहलेसे भी अधिक पक्षपात किया—अपने चार वर्षके शासनमें उसने तीन लाखसे अधिक किसानोंको उनके मालिकोंका अर्ध-दास बना दिया। इसका परिणाम किसानोका विद्रोह छोड और क्या हो सकता था? ५० गुबर्नियोंमेंसे बत्तीसमें किसानोंके विद्रोह हुये, जिन्हें दबानेके

लिये पावलने अपनी सेनाका बडी क्रूरतापूर्वक उपयोग किया । उस समय अर्ध-दासोके विक्रयके विज्ञापन सरकारी समाचारपत्रमे वरावर निकला करते थे, जिसके कुछ उदाहरण है "विक्रीके लिये दो परिवार अर्ध-दास, जिनमेसे एक कोडे और जूते वनानेवाला तीस वर्पका विवाहित मर्द है, उसकी स्त्री धोविन है, जो पशुओको चरा सकती है। आयु पच्चीस वर्प। दूसरा परिवार एक गायक-वादक सत्रह वर्पके मर्दका है दाम-कामके लिये लिखो, १७-१ अरवत, आप्त १।"

जिस वक्त पावल गद्दीपर बैठा, उस वक्त १७९५ ई० वाली रूस-इगलैडकी मैत्री-सधिके अनुसार रूस भी फ्रासके विरुद्ध लड रहा था। पावलने गद्दी सभालते ही अपने देशको विश्राम देनेका निश्चय किया, और अग्रेज राजदूतको सूचित कर दिया, कि हमारी माने सेना भेजनेके लिये कहा था, लेकिन उसे भेजा नही जा सकता । इगलैडने पावलको प्रलोभन देकर लडाईमे रखना चाहा, और कार्सिका द्वीपपर अधिकार करनेके लिये कहा। मिस्र जाते वक्त नेपोलियनने माल्ता द्वीपपर अधिकार कर लिया था, जो कि भूमध्यसागरमे बडे सैनिक महत्वका स्थान था। पावल भी अपनी माकी तरह चाहता था, कि भूमध्यसागरमे पैर रखनेका कोई स्थान मिले। माल्ता-धार्मिक-सगठन माल्ताद्वीपका मालिक था, जिसका जारके दरवारके साथ विशेष सवध था। उसने पावलको सहायताके लिये वुलाया। उधर नेपोलियनने जव तुर्कोके अधीन देश मिस्रपर आख गडाई, तो तुर्कोने भी अपने पुराने शत्रु रूसके साथ फ्रासके खिलाफ सैनिक सधि कर ली। अगस्त १७९८ ई० मे कालासागर के रूसी जगी वेडेके सेनापति अदमिरल उशाकोफको हुक्म हुआ, और वह सोलह जहाजो, सात सौ वानवे तोपो और आठ हजार नौसैनिकोके साथ तुर्की जगी वेडेकी मददके लिये फ्रासीसियोके खिलाफ चल पडा। छ सप्ताहमे उशाकोफने यूनिया (यवन) द्वीपोमेसे चार छोटे-छोटे द्वीपोपर अधिकार कर कोरफू द्वीपको लेनेके लिये प्रयाण किया। उस समय वहा छ सौ पचास तोपोके साथ तीन हजार फ्रेच सैनिक रहते थे। मुकाविला बहुत सख्त हुआ, लेकिन १८ फर्वरी १७९९ ई० को कोरफूकी फ्रेच सेनाने आत्म-समर्पण कर दिया। कोरफूके जीतनेके वाद रूसी सेना दक्षिणी इतालीके तटपर उतरी। इतालियन जनता नेपोलियनके विदेशी शासनसे घृणा करती थी। रूसियोने उसकी सहायतामे नेपल्स और रोमपर अधिकार कर लिया। रूसी सामुद्रिक युद्धविद्याका मूलाचार्य उशाकोफ माना जाता है, और स्थलीय युद्धविद्याका सुवारोफ ।

१७९९ ई० के आरम्भमे प्रजातत्री फ्रासके विरुद्ध रूस, इगलैड, आस्ट्रिया, तुर्की तथा नेपल्स-राज्यकी एक गुट बनी। जनवरी १७९९ ई० मे नेपोलियनकी सेनाको हराकर नेपल्सवालोने अपना गणराज्य घोपित किया। पावल नही चाहता था, कि नेपल्समे उसके मित्र राजाका इस प्रकार अन्त होकर उसकी जगह इतालीमे पेरिसका एक नया सस्करण स्थापित हो। पावलने नेपल्सके राजाकी मदद के लिये ग्यारह हजार सेना भेजकर हुक्म दिया, कि आस्ट्रियाकी मददके लिये पहिले भेजी गई बीस हजार सेनासे मिलकर आगे वढो। आस्ट्रियन सरकारकी मागपर पावलने सुवारोफको सेनापति नियुक्त किया। सुवारोफ आज सोवियत रूसका भी सवसे अधिक सम्माननीय योद्धा है, जिसने उसके नामसे वीरताका एक उच्च तमगा प्रचलित किया। वह १७३० ई० मे एक सैनिक अफसरके घर मास्कोमे पैदा हुआ था। बचपनमे उसका स्वास्थ्य वहुत खराब और शरीर वडा दुर्वल था, इसलिये पिताने उसे लडकपनमे सेनामे शामिल नही किया, लेकिन लडकेने वचपनसे ही सैनिक वातोमे दिलचस्पी लेनी शुरू की और वापके पासकी सभी सैनिक पुस्तकोको वडे ध्यानसे पढ डाला। वारह वर्पकी उमरमे उसे रेजिमेटमे नाम लिखानेका मौका मिला और सत्रह वर्पकी उमरमे कारपोरल (हवल्दार) के तौरपर उसने सैनिक जीवन आरम्भ किया। आगे तुर्की और पोलन्दके युद्धोमे उसने अपने युद्ध-कौशलका परिचय दिया, जिसके कारण उसे फील्ड-मार्शल वना दिया गया। वह गतानुगतिक नही, वल्कि "वेलीकपर चलने-वाला सिंह था।" उसने युद्धविद्यामे कई नई वाते निकाली, जिनको आज भी लाल सेना वडे आदरसे स्वीकार करती है। फ्रेड्रिक II भी एक नये सैनिक विज्ञान और सगटनका आविष्कारक माना जाता है, लेकिन उसका विचार था "सिपाही सिर्फ एक यत्र है, जिसे नियमोके अनुसार चालित होना चाहिये।" पावल फ्रेड्रिकके ही सैनिक आदर्शको मानता था, लेकिन सुवारोफ इससे विल्कुल उल्टा था। उसका कहना था "केशचूर्ण वारूदका चूर्ण नही है, झूठे ताले

तोपें नहीं हैं, लम्बी चोटी तलवारें नहीं हैं। मैं जर्मन नहीं, बल्कि जन्मजात रूसी हूं।" भला पावल ऐसे आदमीको क्यों पसंद करता ? १७९७ ई० में उसने फील्ड मार्शल सुवारोफको उसकी जमींदारीमें निर्वासित कर दिया। लेकिन जब अंग्रेज और आस्ट्रियन मित्रोंने जोर दिया, तो फिर उसने सुवारोफको बुलाकर १७९९ ई० में फ्रांसके साथ लड़नेवाली मित्रोंकी सेनाओंका प्रधान सेनापति बना दिया। सुवारोफने साढ़े तीन महीनेके भीतर श्रेष्ठ फ्रेंच सेनापतियोंकी सेनाओंको बुरी तरह से हरा, सारे उत्तरी इतालीसे फ्रांसीसियोंको निकाल बाहर किया। आस्ट्रिया सारे इतालीको अपने हाथमें करनेकी घातमें था, इसलिये बहाना बनाकर सुवारोफको स्विट्जरलैण्ड भेज दिया गया। बड़े भीषण पहाड़ी रास्तों और नदियोंको पार करते हुये सुवारोफ स्विट्जरलैंडकी ओर गया। एक जगह उसकी बीस हजार सेना साठ हजार फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा घेर ली गई। उस समय रूसियोंके पास पर्याप्त रसद, गोला-बारूद और तोप भी नहीं थी। इस स्थितिको देखकर उसने अपनी युद्ध-परिषद् में कहा—"हमें क्या करना होगा ? पीछे हटना अपमानकी बात है, मैं कभी नहीं पीछे हटा। आगे श्वाइजकी ओर बढ़ना, असम्भव, वहां मसेनाके पास साठ हजार सैनिक हैं, जब कि हमारे पास केवल बीस हजार हैं। साथ ही हमारे पास न रसद है, न गोला-बारूद और न तोपखाना। हमें किसी तरहसे भी मदद मिलनेकी आशा नहीं है। हमारे लिये बस एक ही आशा है, अपनी सेनाकी हिम्मत और आत्म-बलिदानकी भावना। हम रूसी हैं।" इसके बाद फ्रांसीसियोंके प्रहारको रोकते हुये सुवारोफकी सेनाने ४ अक्तूबर १७९९ ई० की रातको आल्पके हिमाच्छादित शिखरोंको पार करनेके लिये पानिखेर डांडेका रास्ता लिया। पहाड़ बहुत ऊंचे और सीधे खड़े थे। सिपाहियोंको कितनी ही जगह हाथों और पैरोंसे चिपक करके बर्फके ऊपर या सीधी खड़ी चट्टानोंपर सरकना पड़ा। एक खड़ी उतराईमें पकड़नेके लिये न कोई पेड़ था, न चट्टान। सुवारोफके प्रोत्साहनके सामने रूसी सैनिकोंके लिये कोई भी बात असम्भव नहीं थी। वह अपनी बन्दूकें पकड़े इस भीषण उतराईमें बर्फपर फिसल पड़े। डांडा पार करनेके बाद अंत में सुवारोफकी सेनामें पंद्रह हजार आदमी बच रहे। आस्ट्रियाने रूसके साथ वचनका पालन नहीं किया।

सुवारोफने इतालीमें जिस तरह चमत्कारपूर्ण विजय प्राप्त की, उससे इंगलैंड, आस्ट्रिया और रूसके बीच में ईर्ष्या और आशंका पैदा होने लगी। आस्ट्रियावाले गुप-चुप फ्रांससे संधि करनेके लिये बातचीत चलाने लगे। इसपर पावलने आस्ट्रियाको लिखा

"भविष्यमें तुम्हारी भलाईका ख्याल मैं छोड़ दूंगा, और केवल अपने और अपने मित्रोंके हितको देखूंगा।" उसने गुस्सामें हो सुवारोफको रूस लौटनेके लिये लिखा "तुम्हें राजाओंकी रक्षा करनी थी, अब तुम्हें रूसके योद्धाओं और अपने राजाके सम्मानकी रक्षा करनी है।"

सुवारोफ बड़ी कठिनाइयोंके साथ अपनी सेनाको रूस लौटा ले आया, और उसे रूसकी सारी सेनाका "गेनरलिस्सिमो" (महामहासेनापति) की उपाधि प्रदान की गई। लेकिन थोड़े ही समय बाद फिर जारने सुवारोफको उपेक्षित कर दिया, राजधानीमें आनेपर लोग उसका राजसी स्वागत न करें इसके लिये उसका दरबारमें आना मना कर दिया। इसी तरह अपमानित और उपेक्षित रहते १८ मई १८०० ई० को यह महान् सेनापति मरा। लेकिन आजका रूस उसे जितना सम्मान प्रदान कर रहा है, उतनेकी सुवारोफने आशा भी न की होगी।

इसी बीच पावल और इंगलैंडके भी संबंध बुरे हो गये, जब कि इंगलैंडने माल्तापर अधिकार कर लिया। नेपोलियनने इस सुअवसरसे फायदा उठाते हुये पावलके साथ समझौता करना चाहा, और माल्ताको फिरसे अधिकार करनेपर उसे रूसको देने तथा बदलेमें अपने सैनिकोंको लौटानेकी मांग किये बिना सारे हथियारोंके साथ रूसी कैदियोंको मुक्त कर देनेका वचन दिया। दिसम्बर १८०० ई० में पावलके साथ नेपोलियनने निजी लिखा-पढ़ी शुरू की, जिसका जवाब पावलने भी इंगलैंडके विरुद्ध जहर उगलते हुये दिया "इंगलैंड अपनी ईर्ष्या, धोखेबाजी और धनसे ही फ्रांसका केवल प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि हीन शत्रु होगा। . धमकी, षड्यंत्र और पैसोंसे इंगलैंडने सभी राज्योंको फ्रांसके खिलाफ खड़ा कर दिया—उसके इस पापमें हम भी सम्मिलित हो गये।" अब फ्रांसकी भी स्थिति बदल गई थी। नेपोलियनने फ्रेंच-क्रांतिका गला दबाते ९ नवम्बर १७९९ ई० की प्रतिक्रांति द्वारा वहां

अपनी सैनिक तानाशाही स्थापित कर दी थी। रूस और फ्रासने चाहा, कि दोनो मिलकर भारतसे अग्रेजोके शासनको खतम कर दे। जनवरी १८०१ ई० मे पावलने दोन-कसाक सेनाको हुक्म दिया, कि वह ओरेनवुर्गसे वुखारा और खीवा होते सीधे सिंधु नदीकी ओर कूच करे। विना तैयारी किये हुये इतने वडे अभियानका स्थलमार्गसे भेजना वुद्धिमत्ताकी वात नही थी, इसलिये पावलके मरते ही नये सम्राट् अलेक्सान्द्र I ने अभियानको रोक दिया। अपने अन्तिम जीवनमे पावलको काकेशस और ईरानके रास्ते भारत पहुचनेकी धुन सवार थी। १८ जनवरी १८२१ ई० को उसने गुरजी (जार्जिया) और रूसके स्वेच्छापूर्वक एकतावद्ध होनेकी घोषणा निकाली। अभी हिन्दुस्तानमे अग्रेजोकी जड अच्छी तरह नही जमी थी, इसलिये पावलकी गतिविधिसे अग्रेज वहुत चिंतित थे। पीतरवुर्गमे स्थित अग्रेज राजदूत भी उस षड्यत्रमे शामिल था, जिसमे पावलको अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा। ११ मार्च १८२१ ई० की रातको युवराज अलेकसान्द्रकी शहसे षड्यन्त्रियोने पावलके कक्षमे घुसकर उसे मार डाला।

साइवेरियाकी जातिया—यह हम वतला चुके है, कि कैसे येरमकने १६वी सदीमे सिविर राजधानीको लेते वहाके खानको खतम किया, और राजधानीके नामपर देशको सिवेरिया (साइवेरिया) नाम देते रूसकी सीमाको इर्तिश और तोवोल नदियोके तट तक पहुचा दिया। १७वी सदीमे येनीसेइ नदीके तटसे लेकर अखोत्स्क समुद्र तक सारा पूर्वी सिवेरिया भी रूसके हाथमे चला गया। इस विशाल भूभागमे भिन्न-भिन्न सामाजिक और आर्थिक विकासकी स्थितिकी कई जातिया रहती थी। येनिसेइसे पूर्व अखोत्स्क समुद्र तक इवेंकी (तुङ्गुस) लोग रहते थे, जो कि पुराण-एसियाई जातिसे सवधित थे। उनके अपने वडे-वडे कवीले थे, जिनके अक्सर आपसमे खूनी झगडे हुआ करते थे। जाडोमे ये लोग सिवेरियाके ताइगामे शिकार करते और गर्मियोमे मछलीके मौसिममे नदियोके किनारे चले आते। गर्मियोमे उनके तम्वू भोजपत्रके छालसे ढके रहते, और जाडोमे वह चमडेके होते। वारहसिगा उनका पालतू पशु था, जिसपर वह अपने सामानको ढोया करते थे। अपने दक्षिणी पडोसियोसे उनको लोहा मिल जाता था। कोई-कोई कवीले हड्डियोके वने हुये कवचको भी इस्तेमाल करते। भडकीले रगवाले कपडे और चमकीले आभूषण उन्हे वहुत पसद थे। वह अपने सारे चेहरे पर गोदना गुदवाते थे। इवेंकी वडे लडाकू लोग थे। उनके ऊपर अपने ओझो-सयानोका वडा प्रभाव था। ये ओझा-सयाने देवताओको अपने सिरपर वुलाते, विशेष पोशाक पहिनकर तम्वूरिन वजाते खास नाच नाचते थे।

आमूर नदीके मुहानेपर भी प्राचीन पुराण-एसियाई जातिसे सवध रखनेवाली नीवखी (गिलियक) लोग रहते थे, जिनकी मुख्य जीविका मछुवाही थी।

उत्तर-पूर्वी सिवेरियामें ओदूल (यूकागिर), निमिलन (कोर्याक), लूओरावेतलन (चुकची), इतेल्मेन (कम्सूचदाल) जातिया अव भी वर्वर अवस्थामे रहती थी। उन्हे लोहेका पता नही था। उसकी जगह वह चकमक-पत्थर तथा हड्डियोके हथियारोका इस्तेमाल करती थी। उनके छुरे पत्थरके होते थे, और वाणोंके फल चकमकके। लोहेका परिचय उन्हे पहलेपहल रूसियोद्वारा मिला, इसीलिये अपनी जन-कथाओमें वह रूसियोको "लौह-पुरुष" कहने लगे।

ऊपरी येनिसेइ उपत्यकामे प्राचीन कालसे येनिसेइ-किरगिज नामक एक तुर्की जाति रहती थी, जिन्हे चीनी लोग खकास कहते थे, और आज भी खकास ही कहा जाता है। किरगिज येनिसेइके मैदानोमें घुमन्तू-पशुपालोका जीवन विताते थे। अल्ताईके पहाडोमे भी कितनी ही पहाडी जातिया वसती थी, जिनमेंसे कुछ लोहघूनसे लोहा वनाकर कई तरहके लोहेके सामानको तैयार करती थी। अल्ताईके इन लोगोको ओइरोत-मगोलोने अपने भीतर हजम कर लिया, जिससे इस इलाकेका नाम ओइरोतिया पडा—आज यह ओइरोत-स्वायत्त-जिलेके नामसे सोवियत सघका एक भाग है।

एवेंकियोकी भूमिके मध्यमे लेना-उपत्यकाके पिछले हिस्सेमे तुर्की जातिके याकूत रहते थे। उनकी परपरासे मालूम होता है, कि एवेंकियोके साथ भारी सघर्षके वाद वैकाल-पार इलाकेके दक्षिणसे आकर वह लेना नदीके तटपर रहने लगे। १७वी सदीमें याकूत अपने पडोसियोकी अपेक्षा अधिक सभ्य थे। उनकी मुख्य जीविका पशुओ और घोडोका पालन थी। वह लकडीके झोपडोमे रहते थे, जिनको आग

जलाकर गरम किया जाता था। धातुका काम भी वह पुराने ढगसे जानते थे। उनके बनाये हुये लकडी की मुट्ठीवाले छुरे तथा कवच रूसी भी बहुत पसद करते थे। १७वी शताब्दीमे जन-व्यवस्था याकूतोमेसे उठने लगी, जब कि उनके सरदारोंके पास पशुओंके बडे-बडे रेवड और धन एकत्रित होने लगा। उनके पास साधारण चाकर और दास भी रहते थे। येनिसेइकी शाखा अगारा नदी, बैकाल सरोवर, और ऊपरी लेनाकी भूमियोंमे बुर्यत मगोल लोग रहते थे। यद्यपि इनकी मुख्य आजीविका पशु-पालन था, लेकिन वह थोडी-थोडी खेती और बदलेनके रूपमे कुछ व्यापार भी कर लेते थे। शिकार भी करते थे, लेकिन वह जीविकाका मुख्य साधन नही था। याकूतोकी तरह बूर्यतोंके भी शासक उनके सरदार होते थे। आमूर नदीके किनारे दौर और दूसरी मचुरियावाली जातिया रहती थीं। १७वी सदी मे दौर उच्च सभ्यताके धनी हो चुके थे। वह गावोमे रहते, कई तरहके अनाजो और साग-भाजीकी खेती करते तथा फलदार बगीचे लगाते थे। पशुपालन तो वह करते ही थे, साथ ही उन्होने चीनसे मुर्गी पालना भी सीख लिया था। जगलमे समूरी जानवरोका शिकार भी उनके लिये बहुत लाभकी चीज थी। कृषि और समूरी छालके कारण समृद्ध इस इलाकेकी ओर चीनी सामन्तोका भी ध्यान गया था, और उन्होंने वहा अपनी धाक जमा रक्खी थी। प्रतिवर्ष चीनी व्यापारी अपने मालको लाकर यहा मागे दामोमे बेच बदलेमे समूरी खाल और दूसरी चीजें सस्तेमे ले जाते थे। दौरोमे धनी लोग अब चीनी रेशम पहनते, चीनी बर्तनोंका इस्तेमाल करते तथा मकान बनाकर चीनियोंकी तरह अपने गवाक्षोंको कागजसे टाकते थे। उनकी पोशाक भी चीनियो जैसी थी। दौरोंके पास कितने ही दुर्गबद्ध नगर थे। किस तरह रूसी कसाको और दूसरे साहस-यात्रियोंने पूर्वी साइबेरियामें बढकर आमूरके मुहाने तकके सारे भूभागको जीता यह हम बतला चुके हैं।

येरमक (१५८१ ई०), खबारोफ (१६४९-५४ ई०) और पीछे मुरायेफ (१८४७— ई०) साइबेरियामे रूसके प्रसारके सबसे बडे वाहक थे। येरमक और खबारोफके कामोंके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं, और यह भी, कि किस तरह चीनके साथ होते सीमाती झगडोंके बारेमें दोनो राष्ट्रोंने प्रयत्न करके समझौता किया।

पावल I १९वी सदीके पहले वर्षमे मरा। उस समयतक रूसके राज्यका विस्तार पूर्वी पोलैंडको लेते प्रशान्त महासागर और बेरिंगकी खाडीतक था। उत्तरमे वह ध्रुवीय महासागरसे लेकर दक्षिण मध्य-एसियाके सीमाततक ही नही, बल्कि कही-कही उसके भीतर भी घुसा हुआ था। काकेशस में गुर्जी और उत्तरी आजुर्बाइजान उसके हाथमें थे। रूसी सेनाओंने रोम, आल्प्स और बर्लिन तककी विजय-यात्रायें की थीं। पावल हिन्दुस्तानसे अग्रेजोको भगाकर अपना शासन कायम करना चाहता था। इस प्रकार १८वी सदीके अन्ततक रूस दुनियाका एक बहुत ही शक्तिशाली देश बन गया था, इसमे सदेह नही। अभी इगलैंड उसके मुकाबिलेमे एक धनी बनियेसे अधिक हैसियत नही रखता था, लेकिन सारी १९वीं सदीमे, जहा अग्रेजोंने नई वैज्ञानिक खोजोंसे लाभ उठाकर अपने देशको उद्योग-प्रधान बनाते हुये पूजीवादी शासनकी दृढ स्थापना की, वहा रूसी अभी सामन्तशाहीका मोह छोडने के लिये तैयार नहीं थे, जिसके कारण वह अग्रेजोंके सामने पिछड गये—इस पिछडेपनको बडी तेजीके साथ सोवियतके समाजवादी शासनने दूर किया।

३. (१ जार-वंशवृक्ष)
(१५९८—१८०१ ई०)

(रोमनोफ)
रोमन

अनतासिया　　निकिता

फ्योदोर (फिलारेत)

१. मिखाइल (१६१३-४५)

मरिया=२ अलेक्सी=नतालिया
(१६४५-७६)

३ फ्योदोर (१३७६-८२)　४ इवान V (१६८२-९६)　योदोकिया=५ पीतर I = ६ एकातेरिना I
(१६९६-१७२५)　(१७२५-२७)

एकातेरिना　८ अन्ना (१७३०-४०)　अलेक्सी　अन्ना　१० एलिजाबेत (१७४१-६१)

अन्ना　७. पीतर II (१७२७-३०)　११ पीतर III = १२ एकातेरिना II
(१७६१-६२ निहत)　(१७६२-९६)

९ इवान V (१७४०-४१)　१३ पावल (१७९६-१८०१ निहत)

१४ अलेक्सान्द्र I (१८०१-२५)　१५ निकोलाइ I (१८२५-५५)

१६ अलेक्सान्द्र II (१८५५-८१ नि०)

१७ अलेक्सान्द्र III (१८८१-९४)

१८. निकोलाइ II (१८९४-१९१७ निहत)　मिखाइल (निहत)

चीन-वंशावली : मिङ और छिङ—रूसके पूर्वकी ओर प्रसारके समय उसका मुकाविला चीनकी शक्तिसे होने लगा था। मगोल-वंश (१२०६-१३६८ ई०) के वादकी चीनी राजावली इस प्रकार है —

मिङ-वंश १३६८-१६४४ ई०—राजधानी नानकिङ (१३६८-१४०२ ई०), पेकिङ (१४०३-१६४४ ई०)

रूसी जार

१	ताइ-चू (चू-युवान-चाङ)	१३६८–९८ ई०
२	हुइ-ती	१३९८–१४०२ "
३	चेङ-चू	१४०२–२४ "
४	जे-चुङ	१४२४–२५ "
५	स्वान्-चुङ	१४२५–३५ "
६	यिङ-चुङ	१४३५–४९ "
७.	ताइ-चुङ	१४४९–५७ "
	यिङ्-चुङ (पुन)	१४५७–६४ "

८	सियान्-चुङ	१४६४–८७ "	
९	स्याव-चुङ	१४८७–१५०५ "	
१०	वू-चुङ	१५०५–२१ "	
११	मू-चुङ	१५६६–७२ "	
१२	शेन्-चुङ	१५७२–१६२० "	मिखाइल (१६१३-४५)
१३	कुवाङ-चुङ	१६२० "	
१४	सी-चुङ	१६२०–२७ "	
१५	मू-चुङ	१६२७ "	

छिङ (म-चू)-वंश १५८३–१९११ ई०—राजधानी ल्याव-याङ (१६२१–४३ ई०), पचिङ (१६४४–१९१२ ई०)

१	ताइ-चू नुर-हा-चू	१५८३–१६२७ "	मिखाइल (१६१३-४५)
२	ताई-चुङ (ह्वाङ-ताई-ची)	१६२७–४४ "	
३.	शि-चू	१६४४–६१ "	अलेक्सान्द्र I (१६४५–७६)
४	शेङ-चू (खाङ-सी)	१६६१–१७२३ "	फ्योदोर (१६७६–८२)
५	शी-चुङ	१७२३–३५ "	पीतर I (१६९६–१७२५)
६	काउ-चुङ	१७३५–९५ "	एलिजावेत (१७४१–६१)
			एकातेरिना II (१७६२–९६)
७.	जेन्-चुङ	१७९५–१८२० "	पावल I (१७९६–१८०१)
			अलेक्सान्द्र I (१८०१–२५)
८	स्वान्-चुङ	१८२०–५० "	निकोलाइ I (१८२५–५५)
९.	वेन-चुङ	१८५०–६१ "	अलेक्सान्द्र II (१८५५–८१)
१०	मू-चुङ	१८६१–७५	अलेक्सान्द्र III (१८८१–९४)
११	ते-चुङ	१८७५–१९०८ "	निकोलाइ (१८९४–१९१७)
१२	पू-यी	१९०८–११ "	

स्रोत ग्रन्थ

1. History of U S.S.R. (Ed. A.M. Pankratova, Moscow 1947)
२ ओचेर्क को इस्तोरिइ कलोनिजालिमइ सिविरि १७वी-१८वी सदी (मास्को १९४६)
३ यज़ीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरी (म स विलिन्स्की आदि, मास्को १९१४)
४ यज़ीकोज्नानिये
५ इस्तोरिया अेकातेरिनी व्तरोय (२ तोम्, विल्वस्सोफ, बर्लिन १९००)
६ इस्तोरिया त्सार्त्वोवानिया पेत्रा वेलिकओ (५ जिल्द, ओस्त्रियालोफ्, पेतेरबुर्ग, १८१५-७१)
७ ओ देकब्रिस्ताख् पो सेमेइनीम् वोस्पोमिनानियाम् (स वोल्खोन्स्की)
८ इस्तोरिया सससर (४ जिल्द, व इरव्दोनिकम्)
९ क् वप्रोमु ओ खिस्तियान्स्त्वे ना रुशि दो व्लादिमिरा (न वोल्गोन्स्काया, १९१७)

अध्याय २

श्वेत-ओर्दू (२)

(१४२५-१७२८ ई०)

१. बुर्राक, बरका, कोइरियक-पुत्र (—१४२७ ई०)

श्वेत-ओर्दू (अक-युर्त) के बारेमें हम पहले कह चुके हैं। उसी ओर्दूके प्रतापी खान बुर्राकने अपने दक्षिणी पडोसियोकी नाकमे दम कर रक्खा था। वोराक खानकी मृत्यु ८३१ हि० (२२ X १४२७—११ IX १४२८ ई०) मे हुई। यही बुर्राक (वोर्राक) या बरका श्वेत-ओर्दूकी नई शाखाका सस्थापक था, जिसकी राजधानी सिर-दरियाके तटपर सिगनक थी। बुर्राक खानके दो बेटो गिराई और जानीवेगमेंसे गिराई बापके मरनेपर गद्दीपर बैठा। इस वशमे निम्न खान हुये—

१.	बुर्राक, वरका, कोइरियक-पुत्र	—१४२७ ई
२.	गिराई, बुर्राक-पुत्र	१४२७— "
३	बेरेदक, गिराई-पुत्र	—१५०९ "
४.	कासिम, जानीवेग-पुत्र	१५०९–१८ "
५	मीमाश, यादिक-पुत्र	१५१८— "
६	ताहिर, यादिक-पुत्र	
७	उजियाक अहमद, उज्बेक, जानीवेग-पुत्र	
८	अकनजर, कासिम-पुत्र	—१५८० "
९	शिगाई, यादिक-पुत्र	१५८०— "
१०.	तवक्कल, शिगाई-पुत्र	—१५९८ "
११.	इशिम, शिगाई-पुत्र	१५९८–१६३५ "
१२.	जहागीर, इशिम-पुत्र	१६३५–९८ "
१३.	तौफीक, तिअवका, जहागीर-पुत्र	१६९८–१७१८ "

२ गिराई, बुर्राक-पुत्र (१४२७–ई०)

१४९१ ई० मे अबुल्खैर शैबानीका किपचक भूमिमें प्रताप छाया हुआ था, जिसके डरके मारे गिराई और जानीबेग दोनो भाई किपचक छोड भागकर इस्सिकुल-काशगर (मुगोलिस्तान) के खान इस्सनबुगाके पास पहुचे। मुगोलिस्तानी खानने दोनो भाइयोको चू-उपत्यका और वशीकुजीमे चर-भूमि दी। जब तक १४६९ ई० मे अबुल्खैर मर नही गया, तब तक दोनो भाइयोको पश्चिम की ओर नजर डालनेकी हिम्मत नही हुई। अब उनके पास दो लाख व्यक्ति हो गये थे—इनके ओर्दूका नाम उज्बेक-कजाक पडा था। दोनो भाइयोने अपनी पितृभूमिके उद्धारका बीडा उठाया, लेकिन अबुल्खैरके पुत्र भी दबनेवाले नही थे, इसलिये जबर्दस्त सघर्ष शुरू हुआ। मुगोलिस्तानके खान महमूदने एक ओर बुर्राकके पुत्रोकी सहायता की, तो दूसरी ओर अबुल्खैरके पौत्र मुहम्मद शैबानीको भी तुर्किस्तान शहर देकर सहारा दिया। गिराई और जानीवेग इससे रुष्ट हो गये—"शैबानी हमारा शत्रु है, फिर खान क्यो उससे मेल कर रहा है?" अन्तमे दोनो भाइयोने मुगो-

लिस्तानी खान महमूदसे झगडा कर दो लडाइयोंमें महमूदको बुरी तरह हराया, जिसका बदला महमूद के छोटे भाई अहमदने उज्बेक-कजाकोंको तीन बार हराकर लिया—इसी समय इनका नाम उज्बेक-कजाक पडा, जिसमें कजाक शब्द साधारण डाकूके लिये नही, बल्कि साहसियोंके लिये मध्य-एसियामें
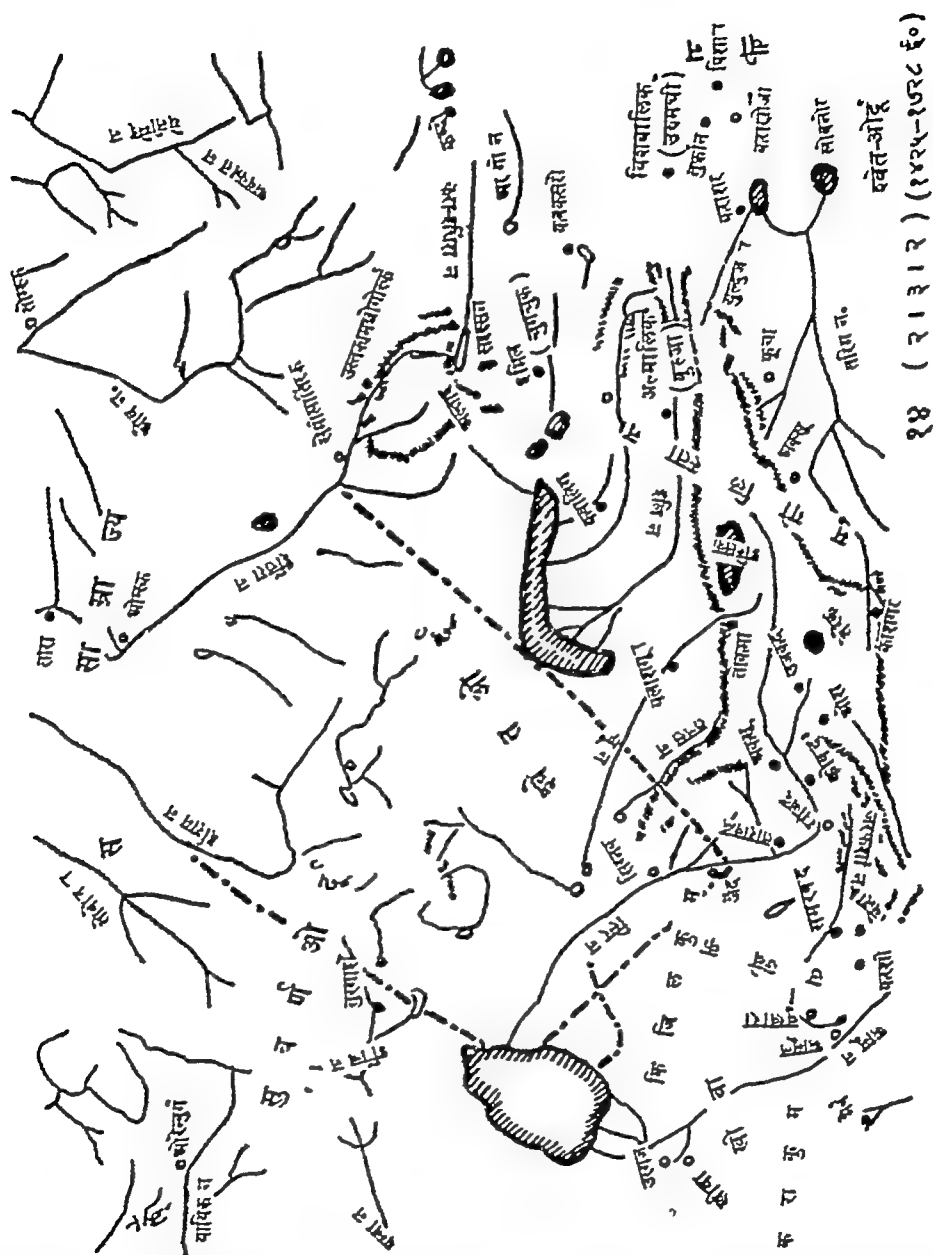
प्रयुक्त होता था—उज्बेक-कजाक (=श्वेत-ओर्दू) का अर्थ पहले "साहसी* उज्बेक खानके उलुस-वाले" लिया जाता होगा, पीछे कजाक विशेषण नही, बल्कि बुर्राकके पुत्रों गिराई और जानीबेगके अनुयायी श्वेत-ओर्दूका दूसरा नाम ही पड गया, जो आज भी प्रचलित है।

३. बेरेदक खान, गिराई-पुत्र (—१५०९ ई०)

गिराई और जानीबेग कब मरे, इसका ठीक पता नही है। उनके बाद गिराईका पुत्र बेरेदक उज्बेक-कजाकोंका खान हुआ। उज्बेक खानका पुराना उलुस अब शैबानी और कजाक दो प्रतिद्वंद्वी भागोंमें विभक्त था, जिनका द्वंद्व बेरेदकके समयमें भी जारी रहा। आगे चलकर मुहम्मद शैबानी

*तुर्की भाषामें "कजाक" बहादुर (वीर) को कहते हैं।

के किपचक-तुर्क उज्वेक कहे जाने लगे, और बुर्राक-वशके अनुयायी कजाक। बेरेदक उस समय सिगनकमें था, जब कि उज्वेक मुहम्मद शैवानीके पास नोगाई खान मूसाका दूत आया था, और उसने दश्तकिपचकका खान बननेके लिये निमत्रण दिया। मुहम्मद शैवानी वहा गया। मूसाने स्वागत भी किया, लेकिन अब उज्वेकोका वास्तविक नेता बेरेदक खान था, जिसे पसद नही था, कि मुहम्मद शैवानी किपचकका भी खान बने। बेरेदक सेना लेकर आया, लेकिन शैवानीने उसे मार भगाया। पीछे मूसाने अपने वचनको भग कर दिया और अमीरोके राजी न होनेका वहाना करके मुहम्मद शैवानीको खान बनने नही दिया। १४९४ ई० मे मुहम्मद शैवानी और उसके भाई महमूदने सारे तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका) पर अधिकार कर लिया। शैवानीके हटते ही बेरेदक अपनी सेना लेकर सावरानपर चढ आया। अमीर मुहम्मद तरखनके कहनेपर नागरिकोने महमूद शैवानीको पकडकर बेरेदकके चचेरे भाई जानीबेग-पुत्रके हाथमे दे दिया, जिसने उसे सूजक भेज दिया, लेकिन वह भागकर अपने भाई मुहम्मद शैवानीके पास ओतरार पहुचनेमें सफल हुआ। बेरेदक सावरान शहरको नही ले सका था। इसी समय बेरेदकके कजाक मुगोलिस्तानके खानसे मिलकर ओतरारके विरुद्ध अपना सैनिक प्रदर्शन कर लौट आये। इसपर शाहीबेग कजाकोके ऊपर चढ दौडा। उस समय उनका डेरा अलाताग (बेर्नोये) के पास अलाताउके पहाडोमे था। आखिरमे दोनो पक्षोमे समझौता हो गया। बेरेदकने अपनी लडकी मुहम्मद शैवानीके पुत्र मुहम्मद तेमूर सुल्तानको प्रदान की। लेकिन घुमन्तुओका समझौता तोडनेके लिये ही हुआ करता था। ९१२ हि० (२४ V १५०६–१४ IV १५०७ ई) मे कजाकोने फिर अन्तर्वेदपर आक्रमण कर दिया। शैवानीने उनका जवाब दिया। दो साल बाद १५०९ ई० मे फिर कजाकोने प्रहार किया। इस समय बेरेदक किपचकोका नाममात्रका खान था, असली शक्ति उसके चचेरे भाई जानीबेग-पुत्र कासिमके हाथमे थी। कजाकोकी दो लाख सेना उसके पास थी। जाडोमे मुहम्मद शैवानी कुरुकमे ठहरा हुआ था। जाडोके अन्तमे यकायक कासिमके चढ आनेकी बात सुनकर उसने मुकाबिला करना चाहा, लेकिन बहुत हानि उठाकर उसे वहासे समरकन्द भागना पडा, जहासे भी खुरासानमे हटना पडा। इसी समय कासिमने कजाक तख्त लेकर बेरेदक खानको समरकन्द भगा दिया।

४. कासिम, जानीबेग-पुत्र (१५०९-१८ ई०)

अब खानकी गद्दी गिराईके वशसे निकलकर जानीबेगके खान्दानमें चली गई। किपचक-भूमि गिराई-जानीबेगके कजाकोके हाथमे थी। धीरे-धीरे दश्त-किपचककी जगह कजाकस्तानका प्रयोग होता जा रहा था। बेरेदकके शासनकालमे कासिमने अपनी प्रभुता बढा ली थी, लेकिन वह खानके पास यह कहकर नही रहता था—"यदि मै सम्मान नही दिखाऊगा, तो खान नाराज होगा, और सम्मान दिखाना मेरी आत्माके विरुद्ध होगा।" उस समय बेरेदक सिगनक और मुगोलिस्तानके सीमातपर रहता था। खान हो जानेपर कासिम किपचकोका सबसे शक्तिशाली खान था। उसके पास दस लाख सेना थी। इतनी बडी सेना जू-छिके बाद किसी खानके पास नही रही। कासिमके नौ भाइयोमें सबसे अधिक प्रसिद्ध यादिक या उज्बेक सुल्तान था, जिसने मुगोलिस्तानके खान यूनसकी चौथी लडकी सुल्तान निगार खानम् (तेमूरी सुल्तान अबूसईदके लडके महमूद मिर्जाकी विधवा)से शादी की थी। यादिकके मरनेपर वह कासिमकी भी बीबी बनी। नोगाई शेखमिर्जासे लडाई करते वक्त ९३० हि० (१० XI १५२३–२८ X १५२४ ई०) बेटेने कासिमको मार डाला, और अपने बाप यादिकके स्थानको चचासे छीन लिया।

५ मीमाश, बिबाश, यादिक-पुत्र (१५१८—ई०)

मीमाशने मुगोलिस्तानके रशीद खानकी लडकी व्याही थी। वह लडाईमे मारा गया।

६ ताहिर, यादिक-पुत्र

भाईके मरनेपर ताहिर गद्दीपर बैठा। ९२९ हि० (२० XI १५२२–११ X १५२३ ई०)

मे उसने स्वय अपने भाईकी विधवा सुल्तान निगार खानम्को ले जाकर उसके बापके पास पहुचा दिया। बाप अपनी बेटीको बहुत प्यार करता था, लेकिन बेटी घुमन्तू जीवनमे तग थी, इसलिये इजाजत लेकर वह अपने भाईके लडके सुल्तान सईदके पास चली गई। बुवाके मवचसे खान सईदने उठकर स्वागत करना चाहा, मगर ताहिरने चगताई खानका ख्याल करते हुये उसके सामने कोर्निश की। ताहिरकी बहिन रशीद खानसे व्याही गई। ताहिरका सितारा गिर चुका था। पडोसी सुल्तानोंमे बराबर लडाई-झगडा रहता था। ताहिरने अपने भाई अबुल-कासिम सुल्तानको अपने हाथो मारा, जिसपर उसके उलुसके लोगोने साथ छोड दिया। वह अकेला पुत्रके साथ किर्गिज (बुरुत) लोगोमें चला गया। लडका भी बापसे तग आ गया, और ९३६ हि० (५ IX १५२९–२७ VII १५३० ई०) में वह भी साथ छोड गया। इसी हालतमे बडी दुर्गतिके साथ ताहिरकी मृत्यु हुई। कहा ९२४ हि० (१३ XI–४ VII १५१८ ई०) मे उसके पास दस लाख सेना थी और कहा ९४४ हि० (१० VI १५३७–१ V १५३६ ई०) मे उसके कजाकोका चिह्न नही रह गया। तीस हजार कजाकोने मुगोलिस्तानमें पहुचकर ताहिरके भाई बुइदशको खान बनाया, लेकिन अब कजाकोके कई खान थे।

७ उजियाक अहमद, उज्बेग, जानीबेक-पुत्र

किपचक कजाकोकी इस गडबडीमे जगह-जगह उनके कई खान बन गये थे, जिनमे ही यादिक या सैदिक-पुत्र उजियाक भी था। इसने अधिक दिनो तक शासन नही किया। उस समय दश्त-किपचकमें नोगाइयोकी शक्ति बढ गई थी। नोगाइयोंके अमीर सैदकमे लडते हुये उरुक मिर्जाके हाथो उजियाक मरा। उसका पुत्र बुलात (पुलाद, फौलाद) सुल्तान भी अपने पुत्रो सहित नोगाइयोंके हाथो मारा गया। उजियाक खान लघु-ओर्दूके प्रसिद्ध खान अबुल्खैरका पूर्वज था—यह अबुल्खैर शैबानी अबुल्-खैरसे अलग था। नोगाइयोने ९३२ हि० (१८ X १५२५—८ IX १५२६ ई०) मे बहुसख्यक कजाकोको मार भगाया। १५३३ ई० तक नोगाइयोकी शक्ति इतनी बढ गई, कि उन्होने ताश्कन्द पर अधिकार कर लिया। नोगाई अमीर यूसुफने १५३७ ई० मे अपने विजयोंके बारेमे रूरिकवशी जार वासिली-पुत्रके पास लिखकर भेजा था।

८ अकनजर, कासिम-पुत्र (——१५८० ई०)

प्रतापी कासिम खानके बेटे अकनजरने कजाकोंके रूठे भागको लौटानेकी कोशिश की। अपने विजयोंके कारण अकनजरका यश बहुत दूर-दूर तक फैला। कजाक और किर्गिज उसे अपना खान मानने में गौरव समझते थे। अकसू और मुगोलिस्तानके शासक अब्दुर रशीद खानके पुत्र अब्दुल लतीफ सुल्तान को इसने लडाईमे मारा। ताश्कन्दके राज्यपाल बाबा सुल्तान और शैबानी खान अब्दुल्लाके साथ इसकी प्रतिद्वंद्विता थी। बाबा सुल्तान शैबानी अब्दुल्लासे डरकर तलस नदीपार कजाकोमे चला गया। दूतने आकर यह खबर मुगोलिस्तानके खानको दी। जाच करनेपर मालूम हुआ, कि अकनजर खान जालिम सुल्तान, यादिक-पुत्र शिगाई सुल्तान आदिके साथ तरस नदीपर डेरा डाले हुये है। शिगाई-पुत्र ओन्दन सुल्तानने अब्दुल करीम सुल्तानकी विधवा पत्नीसे व्याह किया था, और बीवीकी बहिन को जालिम सुल्तानके लिये रख रखा था। बाबा सुल्तानके भागकर कजाकोमे शरण लेनेकी बात भी गलत मालूम हुई, इसलिये गलत खबर देनेवाले गुप्तचरको मार डाला गया। मुगोलिस्तानका खान अपनी सेना ले तलसकी ओर बढा। इसकी खबर पाकर कजाकोने खानके स्वागतके लिये अपना दूत भेज आज्ञा शिरोधार्य करनेकी बात कही। सुलहनामा हुआ, जिसमे यह भी शर्त थी, कि बाबाके एक लडकेको—जो अपने कुछ अनुचरोके साथ कजाकोमे भाग गया था—पकडकर जिंदा या शिर काटकर भेजा जाय। कजाकोंके दूतको खानने खिलत और इनाम दिया, तथा प्रसन्न होकर उन्हे तुर्किस्तान के चार शहर भी प्रदान किये। मुगोलिस्तानके खानकी उदारतासे तुर्किस्तानमे कजाकोंके पैर जम गये, और पीछे वह खानके राज्यमे भी लूटमार करने लगे। मुगोलिस्तानी ताश्कन्दका राज्यपाल

कजाकोको रोकनेमे असमर्थ रहा। उसने यस्सी (तुर्किस्तान) और सावरानके शहरोको भी उनके हाथमे जाने दिया। वावा अपने आदमियोके साथ समरकन्द चला गया। उसने खानके विरुद्ध लडने के लिये कजाकोको मिलानेके वास्ते जानकुली बेगको दूत बनाकर अपने ससुर जालिम सुल्तानके पास भेजा। कजाक इसके लिये तैयार नही थे, बल्कि उन्होने जानकुलीको भी मार डालना चाहा। किसी तरह हत्यारोके हाथसे बचकर उसने वावाको खबर दी, कि जालिम सुल्तानको तुम्हे मारनेके लिये नियुक्त किया गया है। यकायक जालिम और अकनजरके दो पुत्र काफी सेना ले वावाकी ओर दौडे। शरावखानी नदीके तटपर वावासे उनकी भेट हुई। उसे अकनजरके पास चलनेके लिये कहा। वावा जानता ही था, उसके साथ क्या होनेवाला है, इसलिये उसने अपने सैनिकोको तलवार निकालकर उन्हे काट डालनेका हुक्म दिया। जमीनको उनके खूनसे लाल कर उसने अपने भाई वूजाखुरको अकनजरपर चढाई करनेके लिये कहा—यह १५८० ई० (अकवरके समय) की वात है। शायद इसी लडाईमे कई सुल्तानोके साथ अकनजर मारा गया। अकनजर नोगाइयोका दुश्मन था। नोगाइयोपर इस समय रूसियोका प्रहार हो रहा था, इसलिये अकनजर रूसियोसे मेल करना चाहता था।

९ शिगाई, सैदिक (यादिक)-पुत्र (१५८०—ई०)

अकनजरके वाद १५०३ ई० मे मारे गये सैदिकका पुत्र शिगाई गद्दीपर बैठा। यह अनुभवी और राजनीति-पटु खान था। इसने एक वार तलसमे वावाके ऊपर अचानक असफल आक्रमण किया। १५८१ ई० मे वावा सिर-दरियाके पास कराताउमे डेरा डाले हुये था। यही उससे मिलनेके लिये तवक्कलके साथ शिगाईका पुत्र आया। दोनोमे मित्रतापूर्ण वातचीत हुई। अब्दुल्ला शिगाईको खोजन्दका राज्यपाल वना तवक्कलको अपने साथ समरकन्द ले गया। तवक्कलने शैवानी खानके यहा निशानावाजीमे प्रसिद्धि पाई। खानके वागकी वगलमे वन्दूक चलानेका एक भारी खेल हो रहा था, जहा लम्वे खम्भोपर लटकती सोने-चादीकी चमकती गोलियोपर लोग निशाना लगा रहे थे। इस कठिन लक्ष्य-वेधको तवक्कलने करके दिखाया और इस प्रकार उसे अब्दुल्ला खानसे ज्यादा समीपता प्राप्त हुई। इसके वाद ही जनवरी १५८२ ई० मे अब्दुल्ला खानने वावा सुल्तानके विरुद्ध उलुगतागकी ओर अभियान किया। सिर दरियाके वाद अरिसको भी पार करनेपर सुना, कि वावा दश्तेकिपचककी ओर चला गया है। इसपर अब्दुल्ला अरिस-तटपर अवस्थित कराअसमन (करा-सामा) में कुछ सेना छोड वुगान-चोयान नदियोसे अर्सलनलिकतोईकान (तुर्किस्तान शहरके पास गाव) होते सरीसू पार हो अप्रैलमे उलुगताग पहुचा। वहा पता लगा, कि वावा मगीतो (नोगाइयो) मे शरणापन्न हुआ है। वावाका पीछा करनेके लिये एक सेना छोड अब्दुल्ला राजधानीकी ओर लौटा, लेकिन सावरानके मुहासिरेमे दो मासतक रुकना पडा। अब्दुल्ला (शैवानी खान) सावरान नदी पारकर शिकार खेलने गया था, जहा उसका पुत्र अब्दुल मोमिन सुल्तान खो गया, जिसे पहुचा कर शिगाईके छोटे भाई यानवहादुर सुल्तानने शैवानी खानसे वहुत इनाम पाया।

शिगाई खान अन्तर्वेदके प्रतापी शावानी खान अब्दुल्लाका पडोसी और प्रतिद्वद्वी था। उसने एक वार फिर किपचकमे शत्रुओके विरुद्ध अभियान किया। तवक्कलने अपने कजाकोके साथ शत्रुका पथप्रदर्शन किया, और वह केन्दरलिक नदी पार हो गये। यही जू-छि खानकी कब्र थी, जिसके पास ही उसके कुछ दूत दुश्मनके हाथोमें पडकर मारे गये। खवर पा वावा सुल्तान नोगाइयोमे भाग गया, और कुछ आदमियोको शिगाई खानने पकडकर लूटा। शिगाई खानकी सरगरमीको सुनकर अब्दुल्ला खान फिर उलुगतागकी ओर चला, और ईलाचिक (जिलाचिग) में शिगाईने आकर उससे मुलाकात की, इस प्रकार झगडा नही हुआ। सिविरके प्रसिद्ध खान कूचुमके भाई अहमद गिराइने "वुखारा" के अमीर गिराईकी लडकीको व्याहा था। उनके वुरे वर्तावके कारण नाराज हो शिगाईने आकर उसे इर्तिशके तटपर मार डाला। जगताई शाहजादी याशिम वेकिमसे उसे तुकाई या तवक्कल पुत्र पैदा हुआ था, जो वापके वाद कजाकोका खान वना।

१० तवक्कल, शिगाई-पुत्र (१५९८ ई०)

वावा सुल्तान और शैवानी अब्दुल्ला खानका झगडा इसके समयमे भी चलता रहा। तवक्कल अब्दुल्ला शैवानीके दरवारमे एक वार नाम कमा चुका था। वह शैवानी खानका समर्थक था। जव १५८२-८३ ई०मे अपने उलुगतागवाले प्रसिद्ध अभियानमे शैवानी खान लौट रहा था, उसी समय तवक्कल अककुरगानमे अपने पशुओकी देखभाल कर रहा था। उसने सुना कि वावाका भाई सुल्तान ताहिर अभी-अभी सुगकके डाडेसे पार हुआ है। तवक्कलने पीछा करके ताहिरको पकडकर अब्दुल्लाके हाथमे दे दिया। खानने उसे जरवफ्तकी खिलअत और इनाम दिया। कुछ ही दिनो वाद तवक्कलने वावा सुल्तान, जानमुहम्मद अतालीक, वावाके पुत्र लतीफ सुल्तान और दूसरोके शिर काटकर अब्दुल्लाके पास भेट किये। खानने वहुत भारी इनाम दे उसे समरकन्दके सवसे अच्छे इलाके आफरीकदका राज्यपाल वना दिया, जहा अब्दुल्ला स्वय वापके समय राज्यपाल था। तवक्कलके हाथमे वावाके पडनेके वारेमे कहा जाता है नोगाइयोमें जानेपर उसे विश्वासघातका डर लगने लगा, तव उसने भागकर तुरा (साइवेरिया)की ओर जाना चाहा। फिर आशा हुई, कि शायद अपने लोगोसे मदद मिले, इसलिये तुर्किस्तानकी ओर मुड पडा। रास्तेमें सिगनकमें ठहरकर उसने अपने दो कलमक सहायकोको पता लगानेके लिये भेजा। दोनो कलमक तवक्कलके हाथमे पड गये, और उन्होने तवक्कलको साथ ले तम्बूमे पडे वावाका शिर कटवानेमे सहायता की।

तवक्कल दो लाख कजाक-परिवारोका खान था। इस समय कलमक भी वहुत शक्तिशाली हो चुके थे। तवक्कलने अपने कजाकोको लेकर एक वार कलमकोके देशपर हमला किया। इसपर कलमक राजाने अपने सैनिकोको यह कहकर भेजा, कि तवक्कलका शिर लिये विना न लौटना। कलमकोकी भारी सेना देखकर तवक्कल ताश्कन्दकी ओर भागा, लेकिन कल्मकोने पीछा करके उसके आधे आदमियोको वदी वना लिया। वाकी वचे ताश्कन्द पहुचे, जिसका राज्यपाल नौरोज अहमद वुर्राक खान था। तवक्कलने उसके पास दूत भेजकर कहलवाया—"मै तुम्हारे देशमे आया हू, तुम्हारी शरण लेना चाहता हू। हम दोनो छिङ-गिस् खानके वशज है, अतएव एक दूसरेके सवधी है। दोनो मुसलमान होनेसे धर्म-भाई भी है। मेरी सहायता करो और आओ हम दोनो मिलकर कलमकोसे लडें।" वुर्राक खानने जवाव दिया—"अगर हमारे-तुम्हारे जैसे दस अमीर भी एक हो जायें, तो भी हम कलमकोका कुछ नही विगाड सकते। वह याजूजके ओर्दूकी तरह असख्य है।"

तवक्कलने अन्तमे भागकर अब्दुल्ला खान शैवानीकी शरण ली। १५८३ ई० मे अन्दिजान और फरगाना पर अब्दुल्लाने जो अभियान किया था, उसमे तवक्कल उसके साथ था। इसी समय तवक्कलको पता लगा, कि अब्दुल्लाके भाव उसके प्रति अच्छे नही है, इसलिये वह उसके हाथसे निकलकर दश्त-किपचकमे चला गया। १५८६ ई० मे अब्दुल्लाको दूसरी जगह फसा देखकर तवक्कलने तुर्किस्तान, ताश्कन्द ही नही समरकन्दको भी खतरेमे डाल दिया। अन्तर्वेदसे छोटी-सी सेना आई, जिससे शराव-खाना (ताश्कन्द इलाकेमे) मे लडाई हुई। कजाकोके पास अच्छे हथियार नही थे, कवचकी जगह उनके पास चमडेके कोट थे, लेकिन वह वडे वहादुर थे, इसलिये अब्दुल्लाके उज्वेक वुरी तरहसे हारे। अब्दुल्लाके भाई उवैदुल्ला सुल्तानने समरकन्दमे पराजयकी खवर सुनी, तो वह सेना ले सिर नदी पार हो ताश्कन्द पहुचा। तवक्कल उस समय सैरामके पास डेरा डाले पडा था। भारी सेनाकी खवर पाकर वह किपचकभूमि की ओर लौटा, जहा कुछ समय तक उवैदुल्लाने उसका पीछा करनेका असफल प्रयत्न किया।

१५८८ ई० मे अब्दुल्ला खानके वहनोई, रुस्तम-पुत्र जानीवेग-पौत्र उज्वेकन ताश्कन्दके राज्य-पाल रहते समय विद्रोह कर दिया। ताश्कन्द-शाहरुखिया-खोजदके लोगोने कजाक-सुल्तान जानअलीको अपना खान घोषित किया। विद्रोहमे अकनजरके पुत्रो मुगाताई और दीनमुहम्मदने भी भाग लिया।

इन लडाइयोसे मालूम होगा, कि शैवानियोके प्रतापी खान अब्दुल्लाको उत्तरके घुमन्तू कितना परेशान किये रहते थे। १५९४ ई० मे तवक्कलने जार फ्योदोर इवान-पुत्रके पास अपना दूत भेजकर निवेदन किया, कि मै अपने उलुसके साथ जारकी प्रजा वनना चाहता हू, मेरे भतीजे उराज मोहमेतको मुक्त कर दिया जाय। मार्च १५९५ ई० मे जारने तवक्कलके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया, और कुछ वारूदी हथियार भेजकर उससे कहा, कि बुखाराके खान अब्दुल्लाके साथ शाति रखो, सिविरखान कूचुमको अधीन वनाओ। भतीजेको हम मुक्त कर रहे है। उसकी जगह दरबारमे अपने पुत्रको भेजो।

लेकिन, तवक्कल भला अन्तर्वेदकी लूटसे अपनेको क्यो वचित होने देता? १५९७ ई० मे अब्दुल्ला और उसके पुत्र अब्दुल मोमिनके बीचके झगडेकी खबर उसे तुर्किस्तानमे मिली। तवक्कल खान—अब वही खान था—वहुत-से कजाक अमीरो और सैनिकोके साथ ताश्कन्दकी ओर वढा। अब्दुल्लाने तवक्कलको कोई महत्त्व नही दिया, और उसके मुकाविलेके लिये कुछ सुल्तानो, शाहजादो और पडोसी अमीरोको थोडी सेना देकर भेजा। ताश्कन्द और समरकन्दके बीच सख्त लडाई हुई, जिसमे अब्दुल्लाकी सेना हारी, वहुतसे सेनापति मारे गये, वाकी बुखारा भाग गये। अब्दुल्ला मुकाविलेके लिये बुखारासे समरकन्दकी ओर चला, लेकिन वीच हीमे वीमार होकर मर गया। अब तवक्कलकी वन आई। उसने भारी सेना ले तुर्किस्तानसे अन्तर्वेदमे घुसकर अकसी, अन्दिजान, ताश्कन्द, समरकन्द तथा मियानकुल तकके प्रदेशपर अधिकार कर लिया। फिर अपने भाई इशिम सुल्तानको वीस हजार सेना दे समरकन्दमे छोड सत्तर-अस्सी हजार सेनाके साथ बुखारापर चढा। पीर मुहम्मद पद्रह हजार सैनिकोके साथ बुखाराकी रक्षापर नियुक्त था। उसने शहरके दरवाजोको बन्द कर लिया, और बीच-बीचमे निकल कर कजाकोके ऊपर ग्यारह दिनोतक वह छापा मारता रहा। बारहवे दिन सारी सेना शहरसे वाहर निकल आई। शाम तक भयकर युद्ध हुआ। कजाक हारकर तितर-वितर हो गये। धोखा देनेके लिये डेरोमे आग जली छोड तवक्कल रातको ही चला गया था। इस हारकी खवर समरकन्दमे इशिमको मिली। उसने अपने भाईके पास सदेश भेजा—"तुम्हे वहुत लज्जा आनी चाहिये, कि मुट्ठीभर बुखारियोने इतनी भारी सेनाको हरा दिया। अगर तुम यहा आये, तो हो सकता है, समरकन्दके लोग तुम्हारा स्वागत नही करे। खानको देश लौटना चाहिये, और मैं भी अपनी सेना लेकर उसके साथ मिलनेके लिये आ रहा हू।" तवक्कल अपने भाईके साथ लौटा। मियानकुल प्रदेशके उजुनसुकाल स्थानमे पीर मुहम्मद पीछा करते हुये सामने आया। एक महीने तक दोनोकी झडप होती रही, इसके वाद तवक्कल ने धावा बोल दिया। पीर मुहम्मदके सवधी सैयद मुहम्मद सुल्तान और दूसरा अफसर मुहम्मद वाकी अतालीक काम आये। तवक्कल भी लडाईमे घायल हुआ, और लौटते समय १५९८ ई० मे ताश्कन्दमे मर गया। उज्वेको और कजाकोके युद्धका कोई फैसला नही हुआ।

११ इशिम, शिगाई-पुत्र (१५९८—१६३५ ई०)

भाईके मरनेपर इशिमने कजाकोका नेतृत्व ग्रहण किया। उसने पहले बुखाराके विरुद्ध कोई भारी कदम उठाना नही चाहा। १६११ ई० मे बुखाराके अधिकारच्युत खान वली मुहम्मद और उसके भतीजे इमामकुल्लीके झगडेमे इशिम पाच हजार कजाकोके साथ शामिल हुआ। वली मुहम्मद मारा गया। इस सघर्पमे इशिमका भाई सैयदवी भी शामिल हुआ था। उरगज (ख्वारेज्म)से भागा अवुलगाजी १६२५ ई० मे इशिम खानके पास तुर्किस्तान शहरमे आकर तीन मास तक रहा। ताशकन्द का तुरसुन खान (अकनजर-पुत्र) जब तुर्किस्तानमे आया था, तो इशिमने अवुलगाजीका यह कहकर उससे परिचय कराया—"यह यादगार-खानके वशज अवुलगाजी हैं। इनसे पहले हमारे यहा ऐसे राजकुमारने शरण नही ली, यद्यपि दूसरे वहुत-से राजकुमारोने शरण ली थी।" तुरसुन खान अवुलगाजीको अपने साथ ताश्कन्द ले गया। दो साल वाद १६२७ ई० मे इशिमने तुरसुनको मार दिया, लेकिन अवुलगाजीको इमामकुल्ली खानके पास बुखारा जानेकी इजाजत दे दी। कजाको और बुखाराके खान इमामकुल्लीके वीच झगडा-लडाई चलती रही। कजाकोने दो वार १६२१ ई० में बुखारियोको हराया था। अकनजर खानके पुत्र तुरसुन मुहम्मदने वीचमे पडकर समझौता करवाया।

अब कजाकोंके भारी शत्रु पूर्वमें जुगारियाके कल्मक़ (मगोल) थे, जिनके आक्रमण उनके ऊपर बराबर हो रहे थे। १६३५ ई० में इशिम खानने कल्मक राजा बातुर खुङ तैशीके साथ लडाई मोल लेकर कजाकोंके ऊपर आफतका पहाड ढा दिया। कजाक सेनाका सेनापति इशिम-पुत्र यमगीर (जहागीर) सुल्तान कल्मकोंके हाथमें बंदी बना। इसीके आसपास इशिम मर गया।

१२ यमगीर, जहागीर, इशिम-पुत्र (१६३५-९८ ई०)

मित्रताका वादा करके जहागीर मुक्त हो गया, लेकिन कजाकोंका खान बननेके बाद उसने फिर जुगरों (कल्मकों) से छेडखानी शुरू की। अन्तमें १६४३ ई० में पचास हजार सेना लेकर बातुर खुङ-तैशी उसके ऊपर पडा, और अलतन किर्गिजों और तोकमक कबीलोंको पकडकर अपने साथ ले गया। इस लडाईमें जुगरोंने कजाक सेनाका इतना सत्यानाश कर दिया, कि जहागीरके पास सिर्फ छ सौ आदमी रह गये। वह दो पहाडोंके बीच ताकमें छिपा हुआ था, जब कि कल्मकोंने आक्रमण किया। जहागीरने पीछेसे कल्मकोंपर आक्रमण किया। उसके बारूदी हथियारोंने कल्मकोंके बीचमें गजब ढाया। दस हजार कल्मक मारे गये। फिर जल्दी ही बीस हजार सेना जमा करके जहागीर यलानतुश पहुंचा। बातुरको असफल लौटना पडा। अगले साल १६४४ ई० में बातुरने फिर अपने आदमियोंको कजाकोंके साथ लडनेके लिये जमा किया, लेकिन जहागीरका मित्र खोसोत मगोल कबीलेके सरदार कुर्देलिंग ताईशी बीचमें पडा। इस प्रकार कल्मकों और कजाकोंका युद्ध उस समय बच गया, और जहागीर तुर्किस्तान चला गया।

१३ तौफीक, तवका, तिअवका, जहागीर-पुत्र (१६९८-१७१८ ई०)

कजाक खानोंमें यह अत्यन्त प्रसिद्ध और जनप्रिय खान था। घुमन्तुओंके झगडोंको शांतिपूर्वक मिटानेमें इसने बडी सफलता पाई। कमजोर कबीलोंको वह सहानुभूतिसे अपनी ओर मिला लेता, शक्तिशाली कबीलोंको इज्जत करना सिखलाता। इसीने कजाकोंको तीन ओर्दुओंमें बाटा। एक तरह यह बटवारा बहुत प्राचीन समयसे चला आता था, जब कि इनके पूर्वज आगूज-तुर्क कहे जाते थे। तिअवकाने उनकी जगहपर तीन विभाग किये, और महाओर्दूके लिये तिबोल, मध्यओर्दूके लिये कज्बेक और लघुओर्दूके लिये एतियकको केन्द्र बनाया। तौफीकके जीवनभर कजाक एकताबद्ध रहे। तुर्किस्तान शहर उसकी राजधानी थी।

१६९८ ई० में जुगर राजा छेवङ-अरावनने कजाकोंके साथ हुये संघर्षोंके बारेमें चीन-सम्राट्के पास लिखा था—'दूसरे कल्मक राजा गदनने तौफीकके पुत्रको पकडकर दलाई लामाके पास भेज दलाई लामाके बीचमें पडनेके लिये कहा, इस पर पुत्रको पाच सौ आदमियोंके साथ छोड दिया गया। उस (तौफीक-पुत्र)ने विश्वासघात करके मेरे आदमियोंको मार डाला, और सरदार, उसकी बीबी, उसके बच्चोंको एक सौ किबितका (परिवारों) के साथ छीन लिया। यह घटना हुलियान हान (संभवत कल्मकोंका ग्रीष्म वासस्थान उलुगताग-पर्वतमाला)में हुई। तवकाने इसके बाद अपनी बहिनके साथ बापके पास जाते तोरगुत राजा आयुकापर रास्तेमें हमला किया। फिर हमारे देश से अपने देश लौटकर जाते एक रूसी करवाको लूटा।" यह सब दोष कल्मकोंने तवका (तौफीक) और उसके कजाकों पर लगाया। कल्मकोंके साथ लडाई लडकर कजाकोंने अपना भारी अनिष्ट किया। इसीके कारण वह अपनी पुरानी भूमिसे भागनेके लिये मजबूर हुये, और उनके कबीले भी छिन्न-भिन्न हो गये। अन्तिम दिनोंमें तवका खानका भी जोर कम हो गया। उसके सरदार अपने-अपने कबीलोंको ले स्वतन्त्र हो गये। कजाकोंके तीनों ओर्दू अपने स्वतन्त्र अमीरोंके शासनमें रहने लगे, जिनमें मध्य-ओर्दू बहुसंख्यक और अधिक शक्तिशाली था, यही अपनेको श्वेत-ओर्दूका असली उत्तराधिकारी मानता था। १७१८ ई० में कल्मकोंके आक्रमणमें परेशान होकर तौफीक खान, खायेप खान और अब्दुलखैर खानने साइबेरियामें जार पीतर I के राज्यपाल राजुल गगारिनके सामने जाकर अपनेको रूसके अधीन कर दिया। तवका १७१८ ई० में मरा।

३ (२ श्वेत-ओर्दू-वंशवृक्ष)
(१४२५-१७२८ ई०)
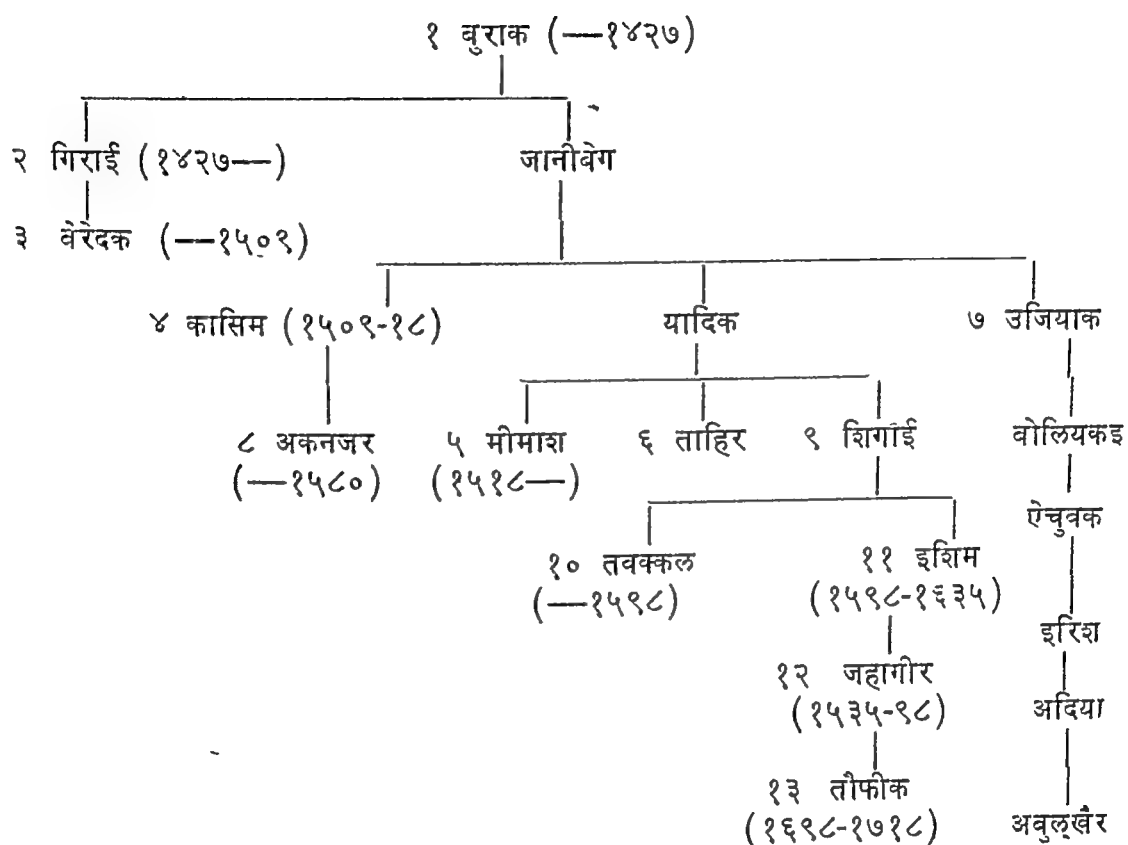
स्रोत ग्रन्थ

१ तारीखे-रशीदी (मिर्जा मुहम्मद हैदर)
2. History of Mongol (H H. Howorth)

अध्याय ३

नोगाई

(१३००-१७२४ ई०)

१ नोगाई (–१२९९ ई०)

किपचक भूमिमें प्राचीन समयसे ही वहाके तुर्क कबीलोंको अपने सामन्तोंके नामपर नया नाम लेते देखा जाता है, इसलिये नोगाई नाम होनेका यह अर्थ नही, कि उनका आरम्भ जू-छि-प्रपौत्र तेवल-पुत्र तारतार-पुत्र नोगाईके समयसे होता है। ईसाकी आरम्भिक सदियोंमें हूणोंको हमने बल्काशसे कास्पियनके उत्तरी तट तक फैलते देखा, उनसे पहले यह भूमि शकोकी थी। एक तरह मगोलायित जातिका इस भूभागमें निवास इसी समयसे आरभ होता है। तुर्कोंकी मारसे जब पूर्वके अवार भागे, तो इनमेंसे कितनोंने अवारका नाम कायम रक्खा और कितने ही अपनी बैल-गाडियोंपर घुमन्तू-जीवन बितानेके कारण कङ या कङ-ली कहे गये। अवारोंने ठप्पा प्राचीन हूणोंके इन वशजोंपर अपने नामका नही लगाया, लेकिन अवारोंके प्रतिद्वद्वी और उत्तराधिकारी तुर्कोंने जब चीनकी सीमासे कास्पियनके उत्तर तक अपना प्रभुत्व स्थापित किया, तबसे इन्हे तुर्क कहा जाने लगा—आज भी इस भूमिके उनके वशज कजाक तुर्कोंकी एक शाखा माने जाते हैं। मगोलोंके समयमे इन असख्य मगोलायित ओर्दुओंमेंसे एकका नाम खानजादा नोगाईके नामसे नोगाई पडा। उससे पहले नोगाई कहे जानेवाले कबीले वोल्गासे पश्चिममें दुनियेपरके पार तक दक्षिणी रूसमें पेचेनगाके नामसे चरवाहीका जीवन बिताते थे। पेचेनगा जू-छिके पुत्र तेवल या तारतारको जागीरमे दिये गये थे, जो पीछे उसके पुत्र नोगाईके हाथमे आये। नोगाई सुवर्ण-ओर्दूके प्रतापी खान बरकाके समय प्रधान-सेनापति था। उसने ईरानके हुलाकू-वशी खानोंको कई बार काकेशसकी भूमिमे हराया था, यह हम बतला आये हैं। इसने कान्स्तन्तिनोपलके सम्राट् मिखाइल पलियोलोगस् (१२००-६१ ई०) की लडकी यूफियोसिनेसे ब्याह किया था। मिखाइलकी दूसरी लडकी मरिया हुलाकू खानसे व्याही थी। नोगाई बहुत प्रभावशाली मगोल राजकुमार था, यह भी हम बतला चुके है। दोनसे दन्यूब तककी भूमिका वह स्वामी था, और बुल-गारी (वोल्गा) का राजा भी उसके अधीन था। १२९९ ई० के आसपास सुवर्ण-ओर्दूके खान तोकताईने दुनियेपर पार हो ओर्जीमें जिस तरह बूढे नोगाईको घायल किया, और आखिरमे वह मर गया, यह बतला आये हैं। इसीके समयसे पुराने पेचेनगा नोगाई कहे जाने लगे। आगे चलकर इनके दो भाग हुये, जिनमे महानोगाई यायिक (उराल) और यम्बा नदियोंके बीचके प्रदेशके दक्षिणी भागमे रहते थे, ये पूरी तौरसे मुसलमान हो गये थे। इनका दूसरा भाग बाश्किरोंके सीमातपर रहता था, जो बहुत कुछ पुराने मगोलोंके धर्म और रीति-रवाजोंका पालन करते थे। इन्हींमें सिबेरियाके खान थे।

२ चुके, चुको, नोगाई-पुत्र (१३०० ई०)

नोगाईके मरनेपर उसके लडके चुकेको पकडनेके लिये तोकताई खानके आदमियोंने बहुत कोशिश की, मगर वह हाथ नही आया। पहले वह आस (उबान) मे गया, फिर वहासे बुलारियामें अपने बहनोईके पास चला गया, किन्तु १३०० ई० के आसपास उसका शिर काटकर खानके पास भेज दिया गया।

३ बुरी, नोगाई-पुत्र (—१३०१ ई०)

यह इलखान (ईरानी) अवकाका दामाद था। इसने पिताकी हत्याका वदला लेना चाहा, लेकिन तोकताई खानको षड्यत्रका पता लग गया, और यह १३०१ ई० मे मारा गया।

४ कराकिजिक, चुके-पुत्र

नोगाईका खानदान एक-एक करके सुवर्ण-ओदूके खानोकी कोपाग्निमे भस्म हो रहा था, लेकिन राजकुमार नोगाईके प्रताप और दीर्घकालीन शासनके कारण उसके उलुसका समय-समयपर विखराव-जमाव होता रहता था, जिसके ही कारण नोगाई कवीलेका नाम इतने समय तक वना रहा।
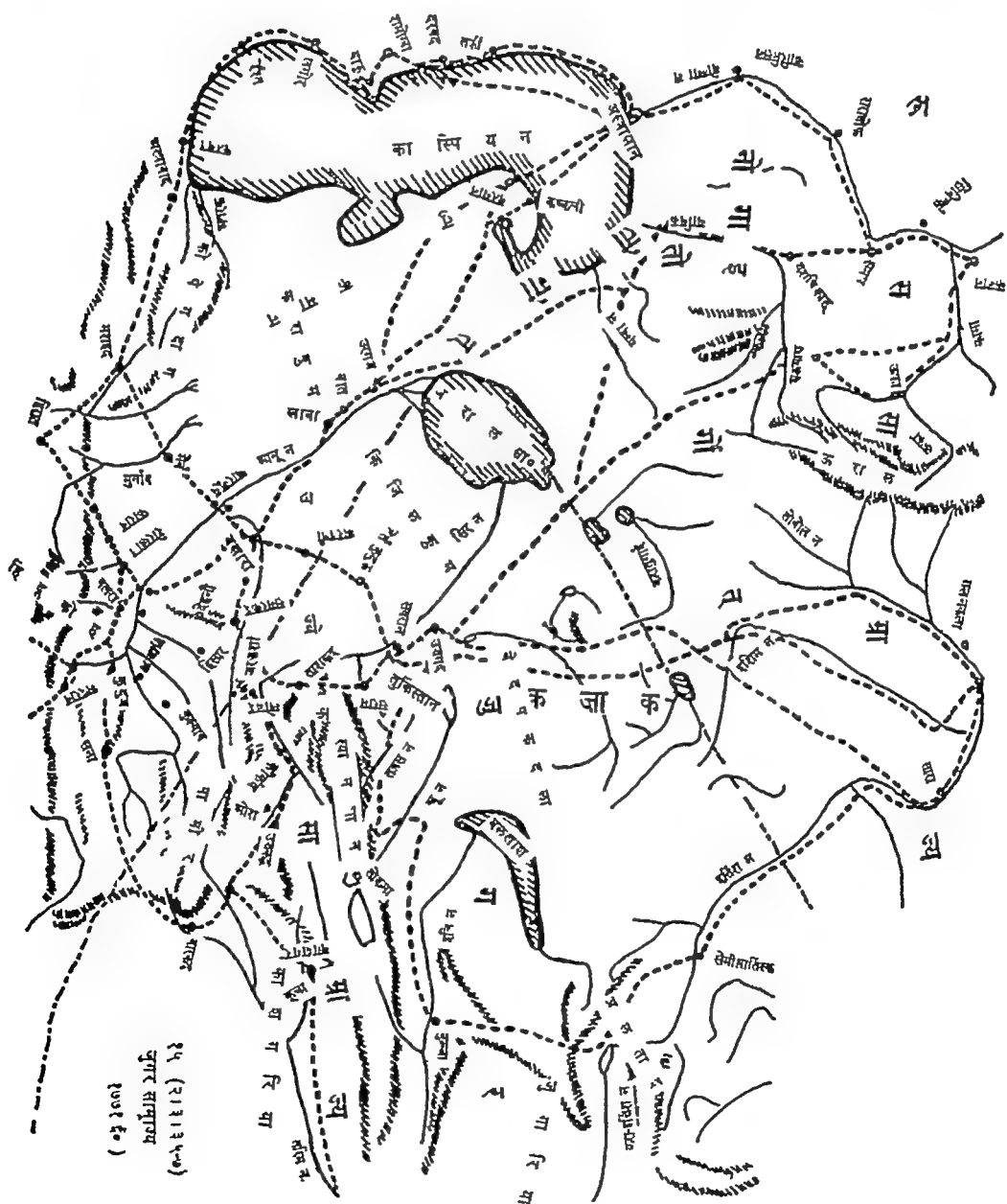
अपने वाप और चचाके मारे जानेके वाद कराकिजिक अपने दो मत्रियो तथा तीन हजार अनुयायियोके साथ साइबेरियाके शमसमान देशके अवादुल स्थानमे गया, जहामे वह तोकताके राज्यमे जव-तव लूट-मार करता रहा। शमसमान लोगोने कराकिजिक और उसके अनुयायियोको वडे सम्मानके साथ रक्खा, और वह गुइउक या यायिक (उराल) नदीकी उपत्यकामे वस गये।

जब बा-तू-वंश निर्वंश हो गया, तो अमीरोंने लाकर शैबानी-वंशज खिजिर खानको सुवर्ण-ओर्दूका खान बनाया, जिसे हटाकर जेक्रियाने अपने पुत्र करा नोगाईको खान बना दिया।

५ करा नोगाई, जेक्रिया-पुत्र

करा नोगाईको करा तोगाई भी कहते हैं। इसके अधीन वोल्गाके पूर्वी इलाकेमें नोगाइयोंके कई कबीले थे। करा नोगाईके बाद फिर नोगाइयोंके खानोंका सूत्र विलुप्त हो जाता है, और तेमूर-लंगके समकालीन इदिकूके समयमें फिर हम उन्हें प्रभावशाली कबीलेके रूपमें देखते हैं।

§२ महानोगाई (१४३१ ई०)

१ नूरुद्दीन, इदिकू-पुत्र (१४३१ ई०)

इदिकूको मगुतोंका बेग कहा गया है, और मगुत नोगाई ही थे, इसमें संदेह नहीं। इदिकू तेमूर-लंगके प्रभावशाली अमीरोंमेंसे था। तोकतामिशके विरुद्ध तेमूरके अभियानमें यह उसका प्रधान-पथप्रदर्शक रहा। तोकतामिशकी हारके बाद इदिकू तेमूरसे छुट्टी लेकर अपने कबीलेमें चला गया। तेमूर कुतुलुक किपचक-खानोंकी गद्दी चाहता था, और इदिकू उसका चाणक्य था। १३९९ ई० में तेमूर कुतुलुकके मरनेपर किपचकके सिंहासनपर इदिकूने तेमूरके भाई सादीबेगको बैठाया। फिर १४०७ ई० में उसे हटाकर पुलादबेगको खान बनाया। १४३१ ई० में तोकतामिश-पुत्र कादिरबर्दीसे जो संघर्ष हुआ, शायद उसीमें इदिकू मारा गया। इदिकूके मरनेपर उसके पुत्र गाजी नौरोज और मंसूरने रूसमें शरण ली, तथा उसके दूसरे पुत्र कैकुबाद और नूरुद्दीन तूरान (तुर्किस्तान) की ओर भाग गये।

इदिकूके समय तक पुराने नोगाइयोंकी परंपरा जारी रही, और आदिम राजकुमार नोगाई, और अन्तिम इदिकूके कालोंमें नोगाई कबीला शक्तिशाली और बहुसंख्यक रहा। पुराने कबीलेके पतनके बाद उसका अधिकांश भाग यायिक (उराल) और यम्बा नदियोंके बीचमें रहता था। इदिकू-पुत्र नूरुद्दीन उनका खान बना। यही महानोगाई कबीलेका संस्थापक था।

नूरुद्दीनको अपने पिताका उलुस बहुत क्षीण रूपमें मिला था, जिसके अस्तित्वको वह कायम भर रख सका।

२ ओकस, नूरुद्दीन-पुत्र (१४८७ ई०)

१५ वीं सदीके मध्यमें कजाक खानोंके भीतर नोगाइयोंका अब काफी असर बढ़ चुका था। उनके दोनों भाइयों मुहम्मद अमीन और अलीखानके झगड़ोंमें नोगाई अलीके समर्थक थे। लेकिन, अलीको रूसी पसंद नहीं करते थे। १४८७ ई० में रूसियोंने अली पर आक्रमण करके उसे पकड़ लिया। दो साल बाद १४८९ ई० में त्यूमनके शासक तजार ईवक, मिर्जा ओकास, या तत्पुत्र हसन, मूसा, और यमागुरचीने जारके पास अलीको छोड़ देनेके लिये चिट्ठी लिखी थी।

३ यमागुरची, ओकस-पुत्र (१४९९ ई०)

अब नोगाइयोंका प्रभाव यही था, कि वह कजाक खानोंके आपसी प्रतिद्वंद्वितामें किसी पक्षके सहायक होते रहें। यमागुरची और मूसाने कजाक खान अब्दुल लतीफके ऊपर उसके भाई मुहम्मद अमीनकी ओरसे हमला किया, लेकिन अब्दुल लतीफकी पीठपर रूसी थे, इसलिये उन्हें हारना पड़ा। शायद इसी समय यमागुरची मर गया। १५०५ ई० में हम कजाक खान मुहम्मद अमीनको चालीस हजार कजाकों और बीस हजार नोगाइयोंके साथ रूसी सीमातपर आक्रमण करते देखते हैं। इसी युद्धमें मुहम्मद अमीन खानका साला मूसा मारा गया।

१५१७ ई० से १५२६ ई० तक वोल्गापारके नोगाई यायिक (उराल) और कास्पियनके तट पर तीन भाइयोमे विभक्त थे, जिनमे (१) सिदियक खान सेरायचुक नगरका स्वामी था, यायिक-उपत्यका इसीके हाथमे थी, (२) हसन (गसन) को कामा-वोल्गा और यायिक नदीके बीचका इलाका मिला था, और (३) शेख ममाईको सिविरवाला भाग तथा पास-पडोसका इलाका।

४ शेख ममाई, मूसा-पुत्र (१५२६ ई०)

इसके बारेमे हमे ज्यादा मालूम नही।

५. युसुफ मिर्जा, मूसा-पुत्र

इसका पता भी इसके पुत्र अली मिर्जाके कारण लगता है।

६ अली मिर्जा, युसुफ-पुत्र (१५५१ ई०)

पासमे होनेके कारण नोगाई रूसके सीमातमे हर वक्त खतरा पैदा किये रहते थे, जिसके लिये रूसियोको अपने सीमातको किलाबद करनेकी वडी जरूरत पडती। अली मिर्जाने १५५१ ई० मे क्रिमियाके खान साहेव गिराईके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन खानने उसे हरा दिया। वोल्गा और दोन पार करके क्रिमियाके पास पहुचना, यही बतलाता है कि अभी सोलहवी सदीके मध्यमे वहा कोई ऐसी शक्ति नही पैदा हुई थी, जो कि अली मिर्जाके रास्तेमे रुकावट पैदा करती। अली मिर्जा कजानमे रहता था। उसके कवीलेने नाराज होकर उसे निकाल यादगारको गद्दीपर बैठानेके लिये बुलाया। मास्कोके जारने इसे पसद नही किया, और अक्तूबर १५५२ ई० मे उसने आक्रमण करके कजानको ले लिया।

७ इस्माईल मिर्जा, मूसा-पुत्र (१५६४ ई०)

इसीके समयमे १५५८ ई० मे अग्रेज व्यापारी जेन्किन्सन अस्त्राखान पहुचा था। वह लिखता है कि वोल्गाके बाये तटकी सारी भूमि—अस्त्राखानसे कास्पियन-तट होते तुर्कमानोकी भूमि तकका प्रदेश—मगुतो (नोगाइयो)का प्रदेश कहा जाता है। यहाके लोग मुसलमान है। १५५८ ई०मे जो भयकर गृहयुद्ध हुआ था, जिसके साथ ही अकाल-महामारीने आक्रमण किया, उससे उनके एक लाख आदमी मर गये। जेकिन्सन लिखता है—"इस तरहकी महामारी इस भूभागमे कभी नही देखी गई। नोगाइयोकी भूमि चरागाहोकी भूमि है। इस महामारीके बाद वह उजाड हो गई, जिससे रूसियोको सतोष हुआ, क्योकि उनके साथ उन्हे बहुत दिनोसे भयकर लडाइया लडनी पड रही थी। जब नोगाई कवीला अच्छी अवस्थामे था, उस समय वह कई भागोमे विभक्त था, जिन्हे होर्द (ओर्दू या उर्दू) कहते है। हरेक ओर्दूका अपना एक राजा होता है, जिसे मुर्जा (मिर्जा) कहा जाता है। सारा ओर्दू उसकी आज्ञा मानता है। इनके न घर है न नगर, बल्कि यह खुली जगहोमे रहते है। हरएक मिर्जा (राजा) अपने ओर्दू या लोगोको आसपास लिये हुये रहता है, जहा उनकी बीबिया, बच्चे और पशु भी रहते है। एक चरागाहकी घासके खतम हो जानेके बाद, वह दूसरी जगह चले जाते है। जब वह चलते है, तो ऊटोसे खीची जानेवाली गाडियोपर उनके घरकी तरहके तम्बू भी चलते है। इन्ही गाडियोमे उनके बीबी-बच्चे तथा सारी सम्पत्ति लदी रहती है। हरेक अमीरके पास दासियोके अतिरिक्त चार-पाच बीबिया होती है। नोगाई सिक्केका इस्तेमाल नही करते, बल्कि कपडा और दूसरी चीजे अपने पशुओ मे बदलते है। उन्हे युद्ध छोड और किसी विद्या और कलासे प्रेम नही और युद्धमे वह सिद्धहस्त है, अधिकतर पशुपालका जीवन बिताते है। उनके पास पशु-धन बहुत अधिक है—वस्तुत पशु ही उनकी सम्पत्ति है। वह मास अधिक खाते है, जो विशेषकर घोडेका होना है। घोडीका दूध पीते है, उसका मद्य (कूमिस) भी बनाते है। विद्रोह, चोरी, डकैती और हत्या इनके स्वभावमे है। न वह

अनाज खाते है और न रोटी, इसके लिये ईसाइयोका वह उपहास करते हुये कहते है—"तुम सरकडेकी फुन्गी खाते हो और वर्षाका पानी पीते हो, फिर क्यो न कमजोर रहोगे ? हम खूब मास खाते है, दूध पीते है, इसीलिये हम ताकतवर है ।" जेन्किन्सन जब पेरे-वोलोग (प्राग्-वोल्गा) मे पहुचा, तो वहा उसे एक नोगाई ओर्दू मिला । पेरे-वोलोग पीछे जारित्सिन और आजकल स्तालिनग्रादके नामसे पुकारा जाता है । यहीपर वोल्गा और दोनके बीचमे नावोको स्थल-मार्गसे पार कराया जाता था । आज वोल्गा-दोन-नहरके हो जानेसे उसकी कोई अवश्यकता नही है । पेरेवोलोगमे मिले नोगाई-ओर्दूके बारेमे जेन्किन्सनने लिखा है—"इसमे घरके आकारवाली गाडियोको करीब एक हजार ऊट खीच रहे थे । यह घर एक विचित्र तरहके तम्बू थे, और चलते समय दूरसे नगर जैसे मालूम होते थे ।" यह ओर्दू नोगाइयोके राजा (मिर्जा) इस्माईलका था, जो कि जेन्किन्सनके अनुसार "सभी नोगाइयोमे सबसे बडा राजा है । उसने बाकी सभीको मार डाला या भगा दिया, अपने भाइयो और बच्चो तकको भी नही छोडा । रूसके सम्राट्के साथ सुलह करके अब वह नोगाइयोपर शासन करता है, और रूसी भी नोगाइयोके साथ शाति पा रहे है ।" अस्त्राखानमे महामारी और अकालका क्या असर हुआ, इसके बारेमे जेन्किन्सन लिखता है—"वहा बहुत-से लोग भूखसे मर गये । सारे द्वीप (अस्त्राखान) मे मुर्दोका ढेर मिलता है, जो बिना जलाये हुये जानवर जैसे मालूम होते है । देखकर बडी जुगुप्सा होती है । इन अस्त्राखानी नोगाइयोमेसे बहुतोको रूसियोने बेच डाला, और दूसरोको द्वीप (अस्त्राखान) से निर्वासित कर दिया । अगर मेरे पास एक हजार मुद्रा होती, तो मै सुदर-सुदर तारतार बच्चोको उनके माबापोसे खरीद सकता था । इगलैडमे जो रोटी छ पेन्समे मिलती है, उसमे मै एक लडके या तरुणीको खरीद सकता था । लेकिन उस समय इस तरहके सौदेसे हमे अधिक अवश्यकता थी खाद्य पदार्थकी ।"

इस्माईलके समयमे नोगाइयोकी यह हालत थी । अस्त्राखानपर रूसियोने अपनी दृढ प्रभुता जमा ली थी । नोगाइयोको उनके सामने सिर झुकानेके लिये मजबूर होना पडा था । इस्माईल १५६३ ई० के अन्त या १५६४ ई०के आरम्भमे मरा, अर्थात् उसी समय, जब कि अतितरुण अकबरने भारतमें अपने राज्यको सभाला था ।

८ दीनमुहम्मद, इस्माईल-पुत्र (१५६४ ई०)

यह सिबिरके कुचुम खानका समकालीन था । इसने अपने पुत्र अलीकी शादी दीनमुहम्मदकी लडकीसे की थी । वोल्गा और दोनके पास अभी रूसियोकी बस्तिया नही आबाद हुई थी, और नोगाई कबीलेका ही यहापर निवास था । उनके पडोसमे क्रिमियाके तारतार थे । वह रूसी ईसाइयोको मुसलमान तारतारोके ऊपर इस तरह हावी होते देखना नही पसद करते थे । दोनोने मेल करके अपनी सयुक्त सेना ले ७ मई १५८० ई०मे अस्त्राखानको घेर लिया, किन्तु चद दिनोके असफल मुहासिरेके अतिरिक्त उन्हे कुछ हाथ नही आया । इस समयतक उराल (यायिक) उपत्यकामे कसाक रूसी जैसे लडाकू लोग आ बसे थे, जिनका नोगाइयोमे झगडा होता रहता था । दोनके ऊपरी भागमे भी रूसी कसाक रहते थे । उन्होने पहुचकर अस्त्राखानपर अधिकार करके सीमाती इलाकोमे लूट-मार शुरू की । व्यापारियोको ही नही, जारके दूतमडलको भी उन्होने नही छोडा । इस प्रकार हम देखते है, कि इस समय निम्न-वोल्गाकी भूमि नोगाइयो, रूसी कसाको तथा इवान IV के सवर्योकी भूमि बनी हुई थी । इवानने एक बडी सेना जेनरल इवान मुरश्किनकी अधीनतामे भेजी, जिसने शत्रुओको हराकर अस्त्राखानको मुक्त किया । इन्ही दोन-कसाकोका एक नायक येरमक था, जिसने सिबिर विजय किया, और जिसके बारेमे हम पहले कह चुके है । मुरश्किन द्वारा भगाये हुये कसाकोका एक भागने कास्पियनके पश्चिमी-तटपर तेरेक नदीकी ओर जा वहा अपना उपनिवेश बसाया । एक और भागने कास्पियन-तटसे होते यायिक (उराल) नदीके मुहानेपर जाकर डेरा डाला । १५८० ई०मे इन कसाकोने अपने नदियोम नोगाइयोकी राजधानी सरायचुकके बारेमे सुना, और वह उस पर चढ दौडे । शहरपर अधिकार कर

उन्होने मकानोमे आग लगा दी। जीते नोगाइयोपर ही उन्होने अत्याचार नही किया, बल्कि कब्रोमेसे उनके मुर्दोको भी निकालकर बाहर फेक दिया।

९ उरुस, इस्माईल-पुत्र (१५८० ई०)

उरुसके पूर्वी सीमातपर सिबिरके खान कुचुमका राज्य था, और पश्चिममे क्रिमियाके खान मुहम्मद गिराई का। इसके सीमातपर रूसके अधीन प्रदेश थे, जिनमे कही-कही रूसियोकी भी बस्तिया बसती जा रही थी। उरुसने १५८३ ई०मे मुहम्मद गिराई ओर कुचुम खानकी शहसे कामा-तटके इलाके-मे लूट-मार मचाई, लेकिन, इन जगहोमे बसनेवाले रूसी हिम्मतवाले कसाक थे। उन्होने १५८४ ई० मे अपने लिये उराल्स्क नगर बसाया। नोगाइयोके आक्रमणका हर वक्त डर लगा रहता था, इसलिये उन्होने नगरके चारो ओर मिट्टीके धुस खडे कर दिये। पूर्वकी ओर रूसियोके विस्तारमे सबसे पहली और बडी बाधाके रूपमे नोगाई मौजूद थे।

१० अल्ता, उलिशाइन और यान अरसलन, उरुस-पुत्र (१६०१ ई०)

१६०१ ई०मे नोगाइयोके दो भाग हो गये थे, जिनमेसे एकका नाम उरुस था, और दूसरेका कस्साई (छोटा)। अल्ता और उलिशाइन दोनो भाई अपने चचा या मामा कस्साईके ऊपर आक्रमण करना चाहते थे। दोनो कबीलोंके आपसी सघर्षके मारे ओर्दूके दो भाग हो गये। १६०८ ई०में उरुस कबीलेने कस्साईके त्यूमन इलाकेमे घुसकर पिशमा-तटकी बस्तियोको लूटा, लेकिन अन्तमे उन्हे हारकर भागना पडा। १६१३ ई० मे अभी भी नोगाई इतने शक्तिशाली थे, कि उन्होने इश्तेराकके नेतृत्वमे सारे उक्रइनको ही नही लूटा, बल्कि ओका नदी पार हो उत्तरमे कलोम्ना, सेरपुकोफ और मास्कोके पास तकके गावोको भी नही छोडा। ये घुमन्तू कबीले स्थायी निवासी रूसियोके लिये उस समय भी बडे खतरेकी चीज थे, जब कि भारतमे जहागीरका राज्य था।

नोगाइयोमे एक तरहकी आनुवशिक बीमारी थी, जोकि इसी भूमिमे प्राचीनकालमे रहनेवाले शको (सिथियनो) मे भी पाई जाती थी—जिसका कारण सिरियाकी उरानिया देवीका मदिर लूटनेके लिये देवीका शाप समझा जाता था। ग्रीक लेखक हिप्पोक्रातने सिथियनोके बारेमे लिखा है—"सिथियनोके भीतर कुछ ऐसे लोग है, जो कि हिजडे होते है, और स्त्रियोके सभी काम करते है। इसी-लिये उन्हे इनारी (नारी-समान, स्त्रैण) कहा जाता है।" नोगाइयोमे इस बीमारीका पता आधुनिक कालमे वेइनेग्स नामक एक विद्वान्ने लगाया। कल्परोतने यह भी लिखा है—"यह एक तरहकी अचि-कित्स्य बीमारी है, जोकि किसी साधारण रोग या अधिक उमरके कारण होती है। उस समय मर्दोके चमडेमे झुरिया पड जाती है, और उनकी जो चद बालोकी दाढी होती है, वह भी गिर जाती है। फिर आदमी बिलकुल स्त्रीका रूप ले लेता है। वह बिलकुल स्त्रीका-सा मालूम होता है, और स्त्रियोंसे ही मेल-जोल रखता है।"

१८वी सदीके पूर्वार्धमे पहुचकर नोगाइयोकी शक्ति एक प्रभुताशाली कबीलेके तौरपर खतम हो जाती है, और पीछे इनका नाम भी लुप्त होने लगता है। बुखाराका आखिरी राजवश मगीत नोगा-इयोमेंसे ही था, लेकिन अब उनके लिये भी नोगाई शब्द अपरिचित-सा होता जा रहा था। अजोफ सागरके पास रहनेवाले नोगाई कसाई (कसबुलाद)के ओर्दूसे सबधित थे। कसाईको लघु ओर्दूका सस्थापक माना जाता था। कसाईके वशज अरसलनबेग, मुर्जाबेग, मूमाबेग, तोगानबेग, कसबुला, आदि लघु नोगाईके सरदार थे।

३ (३ नोगाई-वंशवृक्ष)
१३००-१७२४ ई०

- जूछि
  - तार्तार
    - ओर्दा
    - वातू
    - १ नोगाई (—१२९९)
      - २ चुके (—१३००)
        - ८ कराकिजिक
      - जेक्रिया
        - करानोगाइ तोगाइ (महानोगाई) (—१४३१)
      - ३ धुरी (—१३०१)
    - शैवान

- इदिकू
  - १ नूरुद्दीन (१४३१—)
    - २ ओकस (१४८७)
      - ३ यामागुरची (१४९९)
      - मूसा
        - ४ ममाई (१५२६)
        - ५ युसुफ
          - ६ अली (१५५१)
        - ७ इस्माईल (—१५६८)
          - ८ दीनमुहम्मद (१५६४—)
          - ९ उरुस (१५८०)
            - १० अल्ता (१६०१)
    - तेमूर
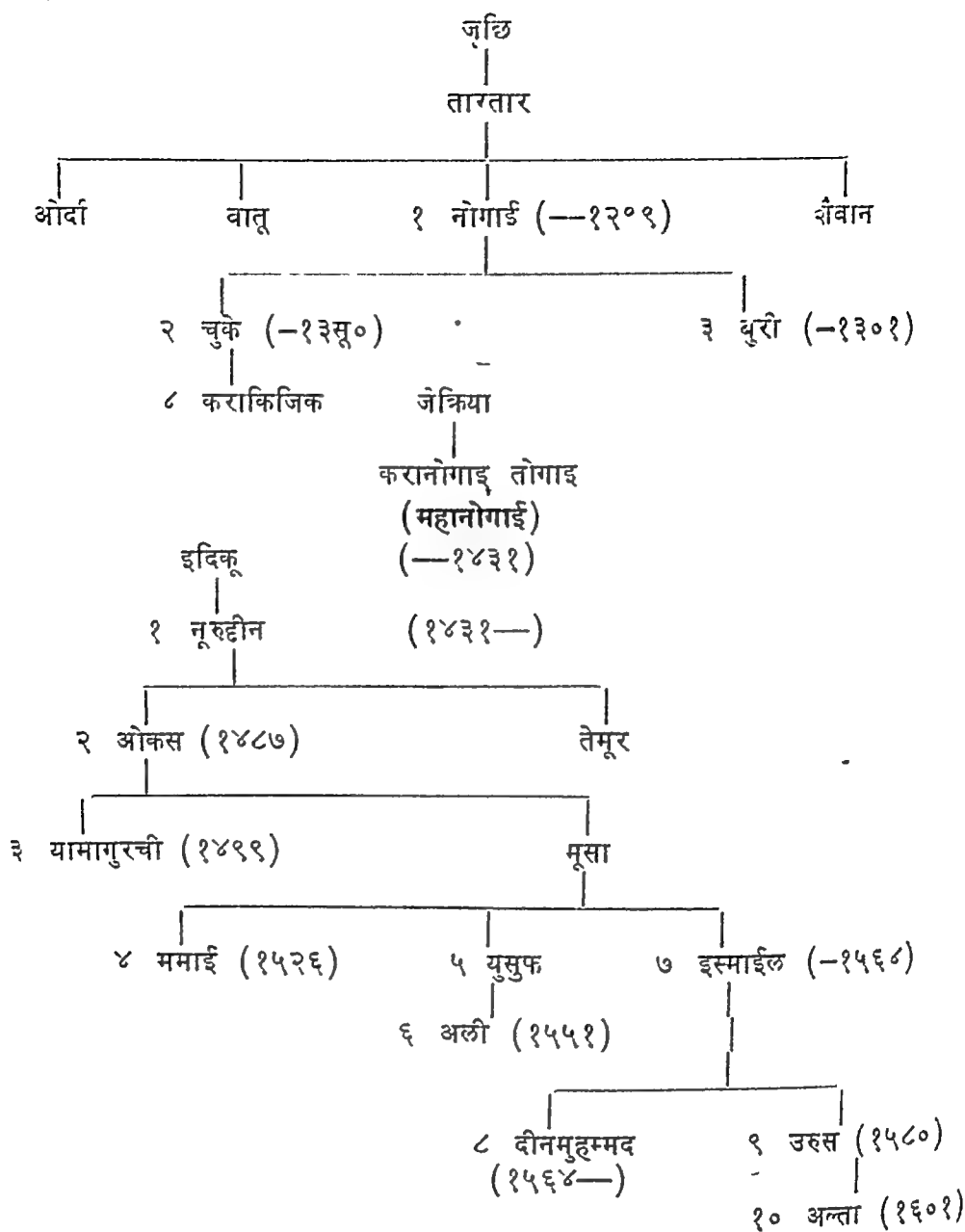
§ ३ कराकल्पक

कराकल्पक आजकल निम्न वक्षु-उपत्यका और अराल सागरके तटपर रहते हैं, जहापर उनका सोवियत स्वायत्त गणराज्य स्थापित है। यह भी नोगाई ओर्दूकी ही शाखा थे, इसलिये यहापर उनके इतिहासपर भी एक सरसरी नजर डालना आवश्यक है।

कराकल्पक अराल-समुद्रके पासके मैदानोमें तथा बुखारा और खीवाके सीमातक आकर बस गये। शायद यह महानोगाइयोंके मुर्जा उरुसके पुत्र अल्ताके साथ सबधित थे। इनके पडोसी इन्हें मदगू (चिप्टी नाकवाला) कहा करते थे। परपरा बतलाती है, कि जब अमीर तेमूर-लगने उनकी राजधानी वोल्गार नगरको नष्ट कर दिया, तो वह सिर-दरियाके मुहानेपर भाग आये। सूर्यकी धूपसे बचने या शोक प्रकट करनेके लिये इन्होंने काली टोपी पहिननी शुरू की, जिसके कारण करा-कल्पक (काली-टोपी) इनका नाम पड गया। एक दूसरी भी परपरा है, जिसे कराकल्पकोंके दूत मुरादशे

और दूसरोने ओरेनबुर्गके रूसी वोयवोदके पास कही थी कराकल्पक लोग एक समय अस्त्राखान और कजानके बीच वोल्गाके पहाडी किनारोपर रहा करते थे। जब रूसियोने कजान (१५५२ ई०) और अस्त्राखान (१५५६ ई९) के राज्योको खतम कर दिया, तो यह कबीला वहासे भाग आया। वह अपने को कराकिपचक कहा करते थे, और अपना उद्‌गम नोगाइयोके अल्ता-ओर्दूसे बतलाते थे, लेकिन पडोसियोने उन्हे काली टोपीके कारण कराकल्पक कहना शुरू किया। मगुत या मगित नामकी सार्थकता अब भी उनकी चिप्टी नाकसे है।

१७१५ ई०मे यात्री बेल वोल्गाके किनारेपर आया था। वह समाराके बारेमे लिखते हुये करा-कल्पकोका भी उल्लेख करता है समारा (वर्तमान कुइबिशियेफ) को एक खाई और धुस्सोसे किलाबद किया गया है, जिसमे थोडे-थोडे फासलेपर तोपोके रखनेके लिये लकडीके मीनार बने हुये है। यहा पूर्वके रेगिस्तानमे रहनेवाले कराकल्पको (काली टोपियो)के आक्रमणका डर रहता ह, इसीलिये यह सावधानी रखी गई।

कराकल्पकोके पहले दो भाग हुये—

(१) **ऊपरी कराकल्पक**—यह सिरके मुहानेसे ताशकन्द तक पाये जाते थे। जाडोमे इनके युर्त (डेरे) किसी निश्चित जगहपर होते, लेकिन गर्मियोमे ये चरवाही करते घूमते-फिरते है। इनमे खानोकी उतनी नही चल्ती थी, जितनी कि खोजो (सत-महतो) की। इनमेंसे अधिकाश १८वी सदीके अन्तमे लडाकूपन छोडकर कुछ-कुछ खेती करने लगे। कजाक इन्हे बहुत सताया करते थे, इसलिये तुर्किस्तान शहर और ताशकन्दके पासवाले कराकल्पकोने जुगारियोके कल्मकोकी अधीनता स्वीकार कर ली थी।

(२) **निचले कराकल्पक**—कराकल्पकोके कुछ कबीले अराल-समुद्रके तट तथा कुवान नदीके दक्षिणके प्रदेशमे रहते थे। १८वी सदीके आरम्भमे रूसियोके साथ इनका सम्पर्क हुआ। १७३२ ई०मे कजाकखान अबुल्खैरने अपने डेरेको सिरदरियाकी उपत्यकामे परिवर्तित कर दिया, और रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली। उसने अपनेको इस तरह मजबूत करके निम्न-सिर-उपत्यकापर भी दावा किया। रूसी प्रतिनिधि दिमित्री ग्लादिश्येफ समारासे चलकर १७४१ ई०के अप्रल मे अबुल्खैरके डेरेमे पहुचा था। उसी यात्रामे उसकी सिर और अदामतके बीचकी भूमिमे घूमनेवाले कराकल्पकोके मुखिया उवैदुल्ला, मुरादशेख, उरसनाक बातिर, तोकुम्बेतबी, उबिलाई सुल्तान और खोजा मरसेनसे मुलाकात हुई। उन्होने निम्न-कराकल्पक ओर्दूके तीस हजार परिवारोकी ओरसे सदाके लिये रूसकी अधीनता स्वीकार करते हुये कसम खाकर कुरानको चूमा। १७४२ ई० मे ओरेनबुर्गमे जाकर उन्होने अपनी शपथ दुहराई। कराकल्पक अब इतने विनम्र और आज्ञाकारी साबित हुये, कि ओरेनबुर्गसे ग्लादिश्येफको उन्हे ओरेनबुर्गके पडोसमे आकर बसनेके लिये समझानेको भेजा गया। ग्लादिश्येफको वहा काइपखान और उसके तीन पुत्र मिले, जिन्होने जारकी राजभक्तिकी शपथ ली। लेकिन इसका यह अर्थ नही कि अब वह अबुल्खैरके कजाकोकी अधीनतासे बिल्कुल मुक्त हो गये थे।

१७४३ ई०मे फिलात गोर्देयेफको दुभाषिया देलनोईके साथ ओरेनबुर्गसे कराकल्पकोके पास भेजा गया—गोर्देयेफ कराकल्पकोकी भाषा जानता था। देलनोईको रास्तेमे ही नवम्बरमे काइपखान और उरुजकुलके दूत मिले। उसने उन्हे पीतरबुर्ग भेजा, जहा दरबारमे उनकी बडी खातिर हुई और रानी एलिजाबेतने खुद दरबारमे उनसे मुलाकातकर अधीनता स्वीकारकी शपथ स्वीकार कर शत्रुओसे रक्षा करनेका वचन दिया। लौटती यात्रामे भी ग्लादिश्येफ उनके साथ था। अबुल्खैरने स्वय रूसकी अधीनता स्वीकार की थी, लेकिन वह यह नही पसद करता था, कि कराकल्पक सीधे रूसको अपना स्वामी माने। इसी बीचमे उसने अचानक हमला करके कितने ही कराकल्पकोको मार डाला, और उनके एक खान उरुजकुलको उसके बीबी-बच्चो के साथ पकड ले गया। इस तरह कजाक तबतक कराकल्पकोको सताते रहे, जबतक कि १७४८ ई० में अबुल्खैर मर नही गया। कजाकोकी इन लूटपाटोके कारण निम्न-सिर-उपत्यकामे कराकल्पकोकी बहुत सी बस्तिया उजड गई, जहा उन्होने

नहरे बनाकर अपने खेत आबाद किये थे। कराकल्पकोंके भागनेसे यह सारी बस्तिया उजड गईं, और नहरे भी बंद हो गईं। १७४२ ई०मे ग्लादिश्येफने उजडे यागीकन्तकी कुछ पत्थरकी दीवारो और मीनारोको अच्छी हालतमे देखा था।

बातिरखान, काइप—बातिरखानका भी अबुल्खैरके वशसे सघर्ष होता रहा। बातिरके पुत्र काइपको खीवावालोने अपना खान बनाया था, जिसके बारेमे हम आगे कहनेवाले है। उसीके साथ बहुत भारी सख्यामें कराकल्पक भी खीवाके राज्यमे जा निम्न वक्षु-उपत्यकामे बसने लगे, और धीरे-धीरे वहा उन्हीकी अधिकता हो गई, जिसके कारण आज वहा कराकल्पक स्वायत्त गणराज्यकी स्थापना हो सकी।

१७५० ई०मे अबुल्खैरके पुत्र एरलीने कराकल्पकोंपर आक्रमण किया, लेकिन वह अपने बहुतसे साथियोंके साथ मारा गया। अगले कितने ही वर्षोतक बातिर और उसके पुत्र काइपका कजाकोंके लघु-ओर्दूके खान मूरलीके साथ सघर्ष होता रहा, इसी कारण कराकल्पक काफी सख्यामें निम्न सिर-उपत्यका छोडकर ताशकन्दके पास कजाकोंके महाओर्दूकी शरणमें चले गये। कजाकोंकी लूटमारके कारण १८वीं सदीके अन्ततक कराकल्पकोंने निम्न-सिरको बिल्कुल छोड दिया, और वह ऊपरकी ओर बढते हुये यानी दरियाके पास चले गये। वहा उन्होंने अपने परिश्रमसे एक बडी नहर खोदी, जो पीछे सिर नदीकी एक शाखा बन आजकल यानी दरिया (नवीन नदी) के नामसे मशहूर है। कराकल्पकोंके हट जानेपर निम्न-सिर-उपत्यकामें कजाक आबाद हो गये।

हमने घुमन्तुओंके जीवनके ढगको देखा। मधु-मक्खियोंकी तरह वह सारे कबीलेके साथ एक स्थानसे दूसरे स्थानपर थोडे समयमे पहुच जाते, और कितनी ही बार अपने नामोंको भी भुलाकर कोई दूसरे नाम ले लेते। कराकल्पकोंके बारेमे १९वी सदीके मध्यमे बम्बेरीने लिखा था—

"वह वक्षुके परले तटपर गोरलानेके सामने और कुंग्रादके पासतक रहते हैं। वहा पडोसमें बहुत जगल हैं। जगलोमे उनके पशुओके गोठ होते हैं। उनके पास बहुत थोडे से घोडे होते है, और भेड तो मुश्किलसे होती हैं। कराकल्पक तुर्किस्तानमें अपनी अत्यन्त सुदरी स्त्रियोके लिये प्रसिद्ध है, लेकिन दूसरी ओर वह सबसे बडे मूर्ख भी कहे जाते हैं। उनके तम्बुओ (परिवारो) की सख्या दस हजार है। चालीस साल पहले उन्होंने कून्ग्रतोंके खिलाफ विद्रोह किया था, जिसमें मुहम्मद रहीमखाने उन्हें दबा दिया। आठ साल बाद १८५५ ई०मे फिर उन्होंने जरन्गिके नेतृत्वमें बीस हजार सवारोके साथ विद्रोह किया, लेकिन कुतुलुक मुरादने उन्हे पूरी तौरसे हरा दिया।" कुइलवाइन १५५८-५९ ई० में खीवामें गया था। उसके समय पद्रह हजार कराकल्पक अर्द्ध-घुमन्तू जीवन बिताते हुये रहते थे। राज्यने उनके ऊपर सबसे ज्यादा कर लगा रक्खा था, अतएव बिचारे बहुत गरीब थे।

रूसियोंने जब वक्षुके मुहानेको ले लिया। उस समय कराकल्पकोंके विद्रोहकी अफवाह सुनकर कर्नेल इवानोफने उनके बी (सरदार) लोगोको बुलाया, जिनमें चिमबाई भी था। जब इवानोफने अपने लोगोंकी सख्या-सूची देनेके लिये कहा, तो वह डर गये। इसपर रूसी कसाकोने घेरकर बहुतोंको गिरफ्तार कर लिया। इस बर्तावसे रूसियोंने कराकल्पकोंके मनमें बुरा भाव पैदा कर दिया, क्योंकि वह अपने बी लोगोको बहुत आदरकी दृष्टिसे देखते थे।"

स्रोत ग्रन्थ

1. History of Mongol I-III (H. H. Howorth)
2. Bambery

अध्याय ८

मुगोलिस्तानके खान

(१३२१-१५६५ ई०)

चगताई-वंशसे किस तरह मुगोलिस्तानके खानोका अलग वंश स्थापित हुआ, इसके बारेमे हम बतला चुके है। मुगोलिस्तान मुगलोका स्थान था, यह तो इसके नामसे ही पता लग जाता है, लेकिन वस्तुत जिस भूमिको मुगोलिस्तान कहा जाने लगा, वहा मुगल तो दालमे नमकके बराबर कुछ खान और अमीर परिवारोके रूपमे ही रह गये थे, जो भी बडी तेजीसे तुर्क बनते जा रहे थे। बाकी साधारण जनता तो तुर्क थी ही। पहिले इसी प्रदेशका नाम कराखिताई भी था, जो कि करा-खिताई राजवंश (११२५-१२१८ ई०)का सूचक था। यूनसखानके शासनके आरम्भ ८८९ हि० (३०I–२०XII १४८४ ई०) मे जब नगरो और खेतीको प्रोत्साहन दिया जाने लगा, तो वहा पुराने समयके कितने ही नगरो और बस्तियोके ध्वसावशेष मौजूद थे। ऊपरी मुगोलिस्तान पहाडी नदियो और झीलोका प्रदेश था। इसके मैदानी इलाकोमे बहुत अच्छी चरागाहे थी, और पहाडी इलाके जगलो और वृक्षोसे ढकी उपत्यकाये थी। पहाड बहुत ऊचे नही थे, इसलिये सर्दी अपनी चरम सीमा तक नही पहुचती थी, और आबोहवा बडी अच्छी थी। असली रेगिस्तान यहा वस्तुत थे ही नही, सिवाय उत्तर-पश्चिमी छोरके। इस भूमिमे नगर या गाव नही, बल्कि खुले मैदान (दश्त) थे। मुगोलिस्तान पहले किर्गिजो और बादमे कजाकोका देश बन गया, तो भी उनके ऊपर मुगोलिस्तानके खान काशगरसे शासन करते थे। १४ वी सदीके पूर्वार्धके एक इतिहास-लेखकने इस प्रदेशके बारेमे लिखा है—"जबसे इस प्रदेशको तातारो (मगोलो)की तलवारोने उजाड दिया, तबसे यहा बहुत कम बाशिंदे रह गये। ध्वसावशेषो और करीब-करीब विलुप्त-सी बस्तियोके सिवा यहा कुछ नही दिखाई पडता। दूरसे आदमीको एक अच्छा बसा हुआ नगर दिखाई पडता है, जिसके चारो तरफ सुदर हरियाली छाई हुई है, लेकिन जब पास जाते है, तो वहा बाशिंदे नही बल्कि पूरी तरहसे खाली मकान मिलते है। यहाके सारे ही बाशिंदे घुमन्तू भेडपाल और चरवाहे है, जिनको खेती या फसल उगानेमे कोई वास्ता नही।"*

कराखिताइयोने अपने समय इस भूमिमे बहुतसे नगर बसाये थे, जिन नगरोमेसे कुछ बालुका-भूमिमे अब भी हो, तो कोई आश्चर्य नही। महारेगिस्तानके पासमे बसे हुये नगरोको यदि मगोलोने उजाड दिया, तो कभी-कभी बालुका-वृष्टिसे भी उनका सर्वनाश हुआ। स्वेन्-चाङने भी एक बालुका-वृष्टि का वर्णन किया है, जिसके कारण हो-लो-लो-कि-या नगर बालूके नीचे दब गया। डाक्टर बेल्लोने मुगो-लिस्तानकी भूमिमे बालुका-वृष्टि द्वारा एक नगरके ध्वस होनेका वर्णन निम्न प्रकार किया है "मजार हजरत बेगमके पासमे बालुका एक पूरा समुद्र है, जो कि उत्तर-पूर्वसे दक्षिण-पूर्वकी ओर बाकायदा लहरोमे आगे बढ रहा है। बालूके टीले अधिकतर दससे बीस फुट तक ऊचे है, लेकिन कुछ पूरे सौ फुटकी छोटी पहाडीसे दिखाई पडते है, कुछ तो और भी ऊचे है। वह एक ऐसे मैदानको ढाके हुये है, जहा नीचे जहा-तहा कठोर मिट्टी दिखाई पडती है। यह टीले दो या तीनके समूहमे एकके पीछे एक चले गये है। लहरे वैसी ही मालूम होती है, जैसे बालुकामय तटपर समुद्रके पानीके हट जानेपर मालूम होती है। दक्षिण-पूर्वकी ओर इन टीलोकी शकल चद्राकार तथा कुछ खाली ढलानकी तरह होती है।

*"मस्ल-उल्-अबसार" (शहाबुद्दीन)।

रूसी यात्री प्रेजेवाल्स्कीने मुगोलिस्तानकी इसी भूमिको १९ वी सदीमें देखकर लिखा था "इन निर्जन और निष्ठुर पीली पहाड़ियोंको देखकर दर्शकके मनमें बड़ी उदासी पैदा होती है। वहां आकाश और बालू छोड़कर और कुछ नहीं दिखलाई पड़ता—एक भी वनस्पति, एक भी प्राणीका कहीं पता नहीं है। पीले रंग लिये हुये खाकी रंगके गिरगिट कहीं-कहीं दिखाई पड़ते हैं, जिनके चलनेका चिह्न बालूके ऊपर पड़ जाता है। इस निर्जन बालुका-समुद्रको देखकर दिल भारी हो जाता है, कहींसे कोई आवाज नहीं सुनाई देती . ।"

१६. (२।३।४) मुग़ोलिस्तान (१३२१-१५६५ ई०)

लेकिन, कभी इस निर्जन भूमिमे हरे-भरे नगर और गाव बसे थे। उन्हीके ध्वसावशेषोमे भारतीय सस्कृतिके चिह्न और भारतीय इतिहासपर प्रकाश डालनेवाली बहुत-सी महत्त्वपूर्ण सामग्री मिली है।

चगताई खानका राज्य बहुत विस्तृत था। १३२१ ई० मे जब तुर्क और मगोल प्रधानताके पक्षपातियोमे झगडा बहुत बढ गया, तो मगोल-दलने चगताई-वशके पूर्वोत्तरीय भागको अपने हाथमें कर लिया। मुगोलिस्तानका प्रथम खान तुगलक तेमूर था, जो कि सयुक्त चगताई राज्यके खान ईसान-बुगाका पुत्र था। मुगोलिस्तानके खानोकी नामावली निम्न प्रकार है —

१.	तुगलक तेमूर, ईसानबुगा-पुत्र	–१३६२ ई०
२	इलियास, तुगलक-पुत्र	१३६२-८९ „
३	खिजिर मुहम्मद, तुगलक-पुत्र	१३८९-९९ „
४	शमाजहान, खिजिर-पुत्र	१३९९-१४०८ „
५	मुहम्मद, खिजिर-पुत्र	१४०८-१६ „
६	नक्शेजहान, शमाजहान-पुत्र	१४१६-१८ „
७	शेरमुहम्मद, मुहम्मद-पुत्र	१४१८ „
८	वेइस, शेरअली-पुत्र	१४१८-२८ „
९	शातुक, शेरअली-पुत्र	१४२८-३४ „
१०	ईसानबुगा, वेइस-पुत्र	१४३४-६२ „
११	दोस्तमुहम्मद, ईसानबुगा-पुत्र	१४६२-६८ „
१२	यूनस, वेइस-पुत्र	१४६८-८७ „
१३	महमूद, यूनस-पुत्र	१४८७-१५०८ „
१४	मन्सूर, महमूद-पुत्र	१५०८ „
१५	सईद, अहमद-पुत्र	१५०८-३३ „
१६	रशीद, सईद-पुत्र	१५३३-५६ „
१७	अब्दुल करीम, रशीद-पुत्र	१५९३ „
१८	महमूद	
१९	इस्माईल	

१ तुगलक तेमूर, ईसानबुगा-पुत्र (–१३६२ ई०)

चगताई-वशके इतिहासमे हम पढ चुके है, कि किस तरह मगोल सरदारोने अपनी प्रभुता और अलग अस्तित्व कायम रखनेके लिये कोशिश करके असफल होनेपर चगताई राज्यके एक भाग को अलग कर अपना अलग खान चुना। इस भागको मगलई-सूबे या मगोलिस्तान कहते थे—मगलाका अर्थ सेनाका हरावल भी है। इस भूभागमें कुल्जा, सप्तनद, इस्सिकुल, दक्षिणी सप्तनद तथा काशगरसे कूचा तक सारा पूर्वी तुर्किस्तान शामिल था। मुगोलिस्तानी-वशके सस्थापनमे सबसे अधिक हाथ अमीर पूलादचीका था। यद्यपि मगोल-अमगोलके साथ मुसलमान और अ-मुसलमानका सवाल भी उठाया गया था, लेकिन उनका पहला खान तुगलुक तेमूर भी अधिक दिनो तक अपनेको रोक नही सका, और अपनी प्रजा और अमीरोकी हमदर्दी प्राप्त करनेके लिये उसे मुसलमान बनना पडा। तुगलक तेमूरके जन्मके बारेमे कहा जाता है, कि उसकी मा अपने पतिके मरनेके बाद एमिल खोजा दुवा-पुत्रकी पत्नी बनी। वही तुगलक तेमूर पैदा हुआ। वहासे उसे लाया गया। दूसरी कहावतके अनुसार पुलादचीने उसे पहले खानके वशसे प्राप्त किया। ईसानबुगाकी प्रिया भार्या सातिलमिश थी, और दूसरी बीबीका नाम मनलिक था। मनलिकको गर्भिणी देखकर उसकी बडी सौतके दिलमे ईर्ष्या पैदा हुई। इसी समय ईसानबुगा मर गया, और मनलिक एमिलखोजाकी पत्नी बन गई। अमीर पुलादची दोगलतको अब एक खानकी जरूरत पडी। उसने मनलिक और उसके पुत्रको ढूढनेके लिये ताश तेमूरको कहा। ताशने कहा—"यह बडी लम्बी और कठिन यात्रा होगी, इसलिये यात्राकी अच्छी तरह तैयारी करनी पडेगी। मैं प्रार्थना करूगा, कि हमे छ सौ बकरिया मिले, जिसमे कि पहले हम उनका दूध

पीते रहें, पीछे एक-एकको मारकर खाते अपनी यात्रा जारी रखें।" ताश तेमूर अभियानमें सफल हुआ और वह मनलिकके बच्चेको चुरा लाया। फिर वह अक्सू गया, जहाँपर अमीर पुलादचीने बच्चे तुगलक तेमूरको खान घोषित किया। तुगलक तेमूर केवल मगलाई-सूबेका ही नहीं, बल्कि चगताई राज्यके कुछ और भागोंका भी शासक था। कहते हैं, जब वह कन्सक (जुगारिया) देशमें लाया गया, तो उसकी उमर सोलह सालकी थी। अठारह वर्षकी उमरमें वह खान बनाया गया। जन्म उसका ७३० हि० (२५ X १३२९–१५ IX १३३०) में हुआ था। चौबीस वर्षकी उमरमें वह मुसलमान बना।

शेख जमालुद्दीन नामक एक सूफी-सन्त कतकमें रहता था। उसने जुमा (शुक्र) के दिन भविष्यद्-वाणी की थी—"मैं तुमसे छुट्टी लेता हूँ, दूसरी बार हम कयामतके दिन मिलेंगे।" उसने मस्जिदके मुअज्जनको भी साथ चलनेके लिये कहा। तीन फरसख जानेपर मुअज्जन किसी कामके लिये लौटा, और अजानके लिये मीनारपर चढ़कर उतरा, तो देखा मीनार चारों ओरसे छिप गया है, बालुका-वृष्टि हो रही थी, और इतने जोरकी कि सारा नगर उससे ढक गया। थोड़ी देरमें धरतीके ऊपर उठे मीनारका थोड़ा ही सा भाग ऊपर निकला था। मुअज्जन मीनारपरसे बालूपर कूदकर भाग निकला। शेख अक्सूके पटोससे बाइबुलमें पहुँचा। खान तुगलक तेमूरकी शिकार-पार्टी थी, जिसमें उसे जाना जरूरी था। न जानेके कारण उसे पकड़कर खानके पास ले गये। अनजान होनेसे उस ताजिकको सजा नहीं दी गई। उस समय खान अपने कुत्तोंको सूअरका मास खिला रहा था। वह शेखसे बोला—"क्या तू इस कुत्तेसे अच्छा है, या यह कुत्ता तुझसे अच्छा है?"

शेखने जवाब दिया—"अगर मेरे भीतर ईमान है, तो मैं इस कुत्तेसे बेहतर हूँ, यदि मेरेमें ईमान (इस्लाम) नहीं है, तो यह कुत्ता मुझसे बेहतर है।"

इस बातको सुनकर तुगलक बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने शेखको घोड़ेपर चढ़ाकर लौटाया। शेखकी यही करामात थी, जो कि उसके प्रभावमें आकर खानने इस्लामको स्वीकार किया।

मगोलोंके समयसे पहले ही इतिश-एमिलसे त्यान्‌शान तक और बरकुलसे फरगाना और बलकाश तकके प्रदेशको कुकचा-तेङगिज कहा जाता था। इस भूमिमें मगोलोंके आनेसे पहले अच्छी आबादी थी, लेकिन १४ वीं सदीके उत्तरार्धमें बस्तीवासी और घुमन्तू संस्कृतियोंका द्वंद्व चल रहा था। तुगलक तेमूरने इस्लामी सस्कृतिको स्वीकार कर मगोलोंकी घुमन्तू संस्कृतिको छोड़ दिया। लेकिन उससे दो शताब्दियों पहले यहाँके वासी मुसलमान नहीं, बल्कि बहुत कुछ बौद्ध और कुछ-कुछ नस्तोरी ईसाई थे। चगताईकी एक शाखाके उत्तराधिकारी तेमूरियोंका मुगोलिस्तानी खानोंके साथ बराबर झगड़ा रहता रहा। तेमूरी इन्हें चिढ़ानेके लिये जे-ते (प्रांतवासी) कहा करते थे।

१३६० ई० में तुगलक तेमूरका अपने तुर्क-अमीरोंके साथ अच्छा सबंध था। तुगलक तेमूरने ७६२ हि० (११ XI १३६०—२ X १३६१ ई०) में अन्तर्वेदपर आक्रमण किया था। उसकी मृत्युके (७६४ हि० २१ X १३६२—११ IX १३६३ ई०) बाद ही उसके पुत्र इलियास खोजाकी सेना अन्तर्वेदसे हटाई गई। तुगलक तेमूरकी कब्र अलमालिकसे अलिमतूसे आठ वेर्स्त (१½ फरसख) और तरानचिन (तगनचिन्स्की) गाँव खारिनसजारसे एक वेर्स्त पर अब भी मौजूद है।

तुगलक तेमूर मृत्युसे पहले ही पुलादची मर गया था। उसका स्थान उसके अल्पवयस्क पुत्र खुदादादने लिया।

२. इलियास खोजा, तुगलक-पुत्र (१३६२–८९ ई०)

समरकंदका उपराज रहकर बापकी मृत्युपर कैसे मुगोलिस्तान भागकर इलियासने गद्दी सभाली, इसे हम बतला चुके हैं। अमीर पुलादचीका भाई कमरुद्दीन इसके समय सर्वेसर्वा था।

इलियास खोजाने मीराके युद्धमें तेमूरी-सेनापर विजय पाई। एक बार उसने समरकन्दको भी जा घेरा, लेकिन घोड़ोंकी महामारीके कारण उसे वहाँसे हटना पड़ा। अमीर पुलादचीके भाई अमीर कमरुद्दीनने शक्तिको अपने हाथमें रखनेके लिये एक दिन तुगलक तेमूरके अठारह पुत्रोंको मरवा

डाला। कमरुद्दीनका भतीजा अमीर खुदादाद अपने पिताके लगाये वशके साथ सहानुभूति रखता था। उसने तुगलकके एक पुत्र खिजिर (?) खोजाको काशगर-वदख्शाके पहाडोमे भेजकर छिपा दिया।

इलियासने चीनके विरुद्ध भी धर्मयुद्ध छेडा, और कराखोजा तथा तुरफानपर अधिकार कर वहाके लोगोको मुसलमान बननेके लिये मजबूर किया। इन युद्धोके समय इलियासको अनाजकी महिमा मालूम हुई, और उसने अपने भाई खिजिरसे पूछा—"क्या सेनाके लिये खाद्य-सामग्री जमा करनेके वास्ते मुगोलिस्तानमे खेती की जा सकती है?"

तेमूर-लग ७७२ हि० (२६VII१३७०–१६VI१३७१ ई०) मे कोचकर तक चढ आया था, लेकिन उस समय वह मुगोलिस्तानमे और भीतर बढकर आक्रमण नही कर सका। १३७५ ई०के आरम्भमे वह सैरामसे प्रस्थानकर चारिनतक पहुचा। उस समय कमरुद्दीनका डेरा कोकतेपे पर्वतमे था। तेमूर-लगके साथ सीधे लडना उसने पसद नही किया, और वेरकेई गुरयानकी तरफ हटा, जिसके बीच मे तीन बडी-बडी नदिया पडती थी। इन्हीमेसे एकके किनारे पीछा करके तेमूरने उसे हराया और आगे बढते वाइतकमे पहुचा। अपने तीन अमीरोको उसने इलीके तटपर दड दिया। तेमूर वाइतकमे ५३ दिन रहा। इस समय उसके पुत्र जहागीरने पहाडोमे पीछा करके कमरुद्दीन और मगोल सेनाको उगफेरमर (पूर्वी तुर्किस्तान) मे हराया। वाइतकसे तेमूर करा-कसमक (कस्तेक) डाडा होते हुये अतवाश पहुचा। वहासे अरपाकी द्रोणीमें जा कमरुद्दीनकी लडकीसे अपना व्याह कर यासी (जासी) डाडेसे होकर उजगेन्दको लौट गया। ख्वारेज्मकी चढाईमे तेमूरको फसा जानकर कमरुद्दीनने १३७६ ई०में उसपर चढाई की, और अतवाश पहुचा। कमरुद्दीनने रास्तेमे उसे जा घेरा, लेकिन सेकिज-इगाचेमे बडी बुरी तरहसे हारकर घायल हुआ। इस विजयके बाद तेमूर-लग अताकुर होते सिर-दरिया लौटा, जहासे वह समरकन्द चला गया। १३७७ ई०मे तेमूरने कमरुद्दीनके विरुद्ध फिर सेना भेजी, जिसने कुरातमे उसे हराया। तेमूर बडी सेनाके साथ स्वय सप्तनदमे पहुचा था। उसके हरावलने कमरुद्दीनको वुम्सकमे पाया। तेमूर कोचकर तक गया, जहासे ओईनोग होते उजगन्द लौटा।

१३८३ ई०मे तेमूरने फिर मुगोलिस्तानपर चढाई की। सप्तनदमे उसने अपनी कुछ सेना भेजी। उसकी सेना अताकुममे थी, जहा हरावल भी शत्रुको छिन्न-भिन्न करके लौट आया। अब दोनो सेनाओको लेकर तेमूर इस्सिककुल महासरोवर होते कोकतेपे पर्वतमे पहुचा, लेकिन कमरुद्दीनका वहा कोई पता नही था, इसलिये समरकन्द लौट गया।

३ खिजिर मुहम्मद, तुगलक-पुत्र (१३८९–९८)

बापके मरनेके समय खिजिर खोजा बारह वर्षका था। कमरुद्दीनके शासनकालमे खुदादादने उसे काशगर और बदख्शाके बीचके पहाडोमे छिपा रक्खा। फिर बारह वर्षतक वह दक्षिण-पूर्वके सीमातपर लोव्नोर झीलके पास रहा। जिस तरह उसके बापको खोजकर लाया गया था, उसी तरह खिजिरको भी लोवनोरसे लाकर १३८९ ई०के आसपास खान बनाया गया। इलियास और खिजिर दोनो भाई थे। दोनोकी बाल्य-कथाये एक दूसरेसे इतनी मिला दी गई है, कि उनके बारेमे कुछ निश्चयपूर्वक कहना मुश्किल है। तो भी इतना मालूम होता है, कि इलियास शायद बहुत दिनो तक कमरुद्दीनके हाथो नही बच पाया। खिजिरसे मुगोलिस्तानकी चरागाहोमे खेती करनेके बारेमे सलाह लेनेसे पता लगता है, कि इलियास और खिजिर दोनो भाई उस समय साथ रहते थे।

जिस साल खिजिरने गद्दी सभाली, उसी साल तेमूरने फिर मुगोलिस्तानपर चढाई की। वह अल्कोशिदनासे बुरीवाश और त्यूपेलिक करक होते ओरनाक (ओजनाक या ओरतक) की ओर बढा। अतकानसूरीमे जब पहुचा, तो गर्मियोके दिनोमे अब भी वहा बर्फ मौजूद थी। ताउरा-अतलस और अईगिरके मैदान, उलागचारलिग होते आगे बढ चापरऐगिरमे उसने मुगोलिस्तानी सेनाको पूरी तौरमे हरा दिया। खिजिर खानने अगा-त्यूरीके नेतृत्वमे तेमूरके खिलाफ सेना भेजी। अगा-त्यूरी जब उरेगयारमे पहुचा, तो तेमूरने उसके विरुद्ध अपनी हरावल सेनाको भेज अपनी सेनाको कई टुकडियों मे करके भिन्न-भिन्न दिशाओमे उसे घेरनेके लिये भेज दिया। तेमूर-लग स्वय करागुचुर तरबगताई डाडेके पश्चिमी भागकी ओर चला। तेमूर-पुत्र उमरशेख दूसरी सेनाके साथ अगा-त्यूरीके पीछे कोबुक

डाडेकी ओर जा उसे हरानेमे सफल हुआ। अगा-त्यूरी भागकर ककमा-त्रुरूजीमे पहुचा। तेमूरने करागुचुरमे डेरा डालकर अपनी एक सेनाको इर्तिश-उपत्यकाकी ओर भेजा, और वदियोको वहासे समरकन्द भेज दिया। फिर वह एमिलगूचुरमे खानकी एक चरागाह सराय-ओर्दामे पहुचा। एमिल-गूचूरमे वह सरायओर्दामे ठहरा। एमिलसे तेमूरने अपनी सेनाको दक्षिणी मुगोलिस्तानपर आक्रमण करनेका हुक्म दिया। सभी सेनाको आगे युल्दुजमे इकट्ठा होना था। युलदुजसे खिजिर खोजाके पीछे उसने उमरशेखके नेतृत्वमे एक सेना चालिश (करासर)मे भेजी। फिर पूर्वी तुर्किस्तान हो ८-९ अगस्त १३८९ ई०को युलदुज लौट ३० अगस्तको समरकन्द पहुचा। इस रास्तेसे कारवा दो महीनेमे गुजरता था।

१३९० ई०मे फिर तेमूरने मुगोलिस्तानपर आक्रमण किया। ताशकन्दसे वह कमरुद्दीनका पीछा करते इर्तिशतक पहुचा। उसकी सेना ताशकन्दसे इस्सिककुल (सरोवर), कोकतेपे (पर्वत) फिर पहाडी-दुर्ग अराजातू होते निश्चय ही वर्तमान अल्माअता नगरकी भूमिसे गुजरी। अलमालिक फिर इली नदी और काराताल होते, इचनीवुचनी, उकुर-कितचीके मैदानमेंसे जव तेमूर-लग इर्तिशके तटपर पहुचा, तो कमरुद्दीन वहासे उत्तरकी ओर भागकर त्यूलेस देशमे चला गया। इस देशमे समूरी छालवाले जानवर वहुत होते है। लौटते वक्त तेमूर अलतुन-क्युरगे और अरतक-कुल (वलखाश) सरोवरके रास्ते आया। कमरुद्दीन अपने अन्तिम जीवनमे लकवाकी वीमारीसे वेकार हो गया, और लोगोने उसे कुछ रखेलियो और थोडे दिनोका खाना देकर जगलमें छोड दिया।

तेमूर-लगको इन सारे अभियानोसे वहुत फायदा नही हुआ। उसके प्रतिद्वद्वी घुमन्तुओको अपने नगरो और गावोका मोह नही था, इसलिये वह तेमूरी-सेनाके सामने भागकर अपनी रक्षा कर लेते, और उनके हटते ही फिर एकत्रित हो तेमूरको परेशान करनेके लिये तैयार हो जाते। इसलिये तेमूरने अव मुगोलिस्तानके साथ अपनी नीति वदलनी चाही। इसकी खवर पाकर १३९७ ई०मे खिजिर खोजाने अपने ज्येष्ठ पुत्र शमाजहानको दूत वनाकर तेमूरके दरवारमे भेजा। तेमूर-लगने उसके द्वारा उसकी वहिन तवक्कल आगासे व्याह किया। नई रानीके आनेपर तेमूरने उसका नाम किचिक खानिम (छोटी रानी) रक्खा।

खिजिर खानके समय मुगोलिस्तानके अधिकाश कवीले मुसलमान थे।

खिजिरखान १३९९ ई०मे मरा। उसके वाद उसके चार पुत्रो शमाजहान, मुहम्मद ओगलान, शेरअली और शाहजहानके वीचमे उत्तराधिकारके लिये सघर्ष शुरू हुआ। इस समय उमरशेखका पुत्र मिर्जा अस्कन्दर मुगोलिस्तानकी सीमापर अवस्थित फरगानाका राज्यपाल था। इस झगडेसे फायदा उठाकर मिर्जा अस्कन्दरने अक्सू शहरको घेर लिया, जो कि चीनके व्यापारका वहुत वडा केन्द्र था। कुछ समयके लिये व्यापारके रास्ते अस्कन्दरके हाथमे आ गये। खिजिरके मरनेपर (१३९९ ई०) मुगोलिस्तानका कुछ भाग तेमूरके राज्यमे सम्मिलित कर लिया गया, जिसमें इस्सिककुल सरोवर-वाला प्रदेश भी था। तेमूर-लगने क्षुद्र-एसिया (वर्तमान तुर्की)से लाकर काले तातारोको इस्सिककुलके किनारे वसाया।

४ शमाजहान, खिजिर-पुत्र (१३९९–१४०८ ई०)

भाइयोके सघर्षमे शमाजहानको सफलता मिली। यह तेमूरके जीवनका अन्तिम समय था। तेमूरके मरनेके साथ ही उसके लडकोमे जो झगडा पैदा हुआ, उमसे फायदा उठा शमाजहानने १४०७ ई०मे चीनकी मदद लेकर अन्तर्वेदपर चढाई की, किन्तु १४०८ ई०मे उसका देहान्त हो गया।

५ मुहम्मद, खिजिर-पुत्र (१४०८–१६ ई०)

मुहम्मद इस्लामका वहुत पक्षपाती था। इसीके शासनकालमें अधिकाश मुगल-कवीले मुसलमान हो गये। इसने शाहरुखके पास दूत भेजा था। १४१६ ई०मे यह काशगरमें था। चादिरकुलके उत्तरकी ओरकी पहाडियोमे इसकी वनवाई एक रवात (पाथशाला)मे वडे-वडे पत्थर इस्तेमाल किये गये हैं। इतिहासकार हैदरका कहना है, कि ऐसे पत्थर कश्मीरके मदिरोमे मिलते है. रवातका फाटक

चालीस हाथ ऊंचा है। फाटकके भीतर घुसकर दाहिनी ओर घूमनेपर साठ हाथ लम्बा एक रास्ता मिलता है। फिर चालीस हाथका एक गुम्बद है, जो बडा ही सुदर और सुडौल है। गुम्बदके चारो ओर चलनेका स्थान है, जिसके चारो तरफ और रास्तेमे भी कितने ही सुदर कमरे बने हुये हैं। पश्चिम ओर तीस हाथ ऊंची एक मस्जिद है, जिसमे बीससे अधिक द्वार हैं। सारी इमारत पत्थरकी है। दरवाजोंके ऊपर विशाल शिलाखड रखे हैं, जिन्हे कश्मीरके मदिरके देखनेसे पहले हैदर अद्भुत चीज समझता था।

डाक्टर लेंडसेलने शायद हैदरलिखित इतिहास 'तारीखे-रशीदी' से उद्धृत डाक्टर बेलोका उद्धरण देते हुये लिखा है—असली बात यह है, कि महमूदखानने "ताश-रबाद" नामक एक प्राचीन हिंदू-मदिरको मस्जिद बना दिया, जो कि चादरकुलवाले डाडेके रास्तेपर काशगर राजधानीको किर्गिजोंसे बचानेके लिये बने दुर्गमें बना था। हैदर ('तारीखे-रशीदी' कार)का कहना है, कि वस्तुत महमूदखानने बडे-बडे पत्थरोकी यह रबात बनवाई।

यह रबात चादरकुलसे थोडी दूर अलमाती, बेरनीसे काशगरको नारिनसे होकर जानेवाले मुख्य रास्तेपर अवस्थित है, जिसे बहुतसे युरोपीय यात्रियोने देखा है। डाक्टर सीलेंडने लिखा है—"यात्रीको भारी पत्थरोसे बनी हुई अडतालीस कदम लम्बी और छत्तीस कदम चौडी इमारतको देखकर आश्चर्य हुये बिना नही रहता। इसकी छत समतल है, जिसके बीचसे पच्चीस फुट ऊंचा आधा नष्टसा गुम्बद उठा हुआ है। दरवाजा काफी ऊंचा और मेहराबी है, जिसके द्वारा भीतर जाया जा सकता है। भीतर खिडकिया नही हैं। गुम्बदके नीचे एक कमरा या शाला है, जिसकी बगलमे नौ फुट ऊंचाईवाली कोठरिया चारो दिशाओमे लातिनी (रोमन) सलेबकी शकलमे हैं। . .कोठरिया नीचे वर्गाकार और ऊपर गोल हैं। उनके भीतर पूरा अधेरा छाया रहता है, सिवाय उन कोठरियोके जिनकी छते गिर पडी है। इनके द्वार इतने नीचे है, कि आदमीको बहुत झुककर भीतर जाना पडता है। कोठरियोके भीतर किसी गवाक्ष या सोने-बैठनेकी जगह नही है। इस इमारतमे रसोईघर या चूल्हेका कही पता नही। इमारत पास-पडोसमे पाये जानेवाले पत्थरोकी बनी हुई है। बीचके हॉलमें पलस्तरका थोडा-थोडा चिह्न मिलता है, लेकिन किसी तरहकी सजावट नही है।" यह यात्री लिखता है, कि मध्य-एसियाके कारवा-सरायो या रबातोसे इस इमारतका कोई सादृश्य नही है। कोई-कोई इसे ईसाई-मठ बतलाते है, और कोई-कोई हिंदू (बौद्ध)-विहार। दोनो ही एक समय इस भूमिपर बहुत प्रभावशाली धर्म थे, इसलिये इसका बौद्ध-विहार या नेस्तोरीमठ होना आश्चर्यकी बात नही है। महमूदखानने ऐसी विचित्र इमारत स्वय बनाई हो, यह विश्वासकी बात नही जचती।

६ नक्शेजहान, शमाजहान-पुत्र (१४१६–१८ ई०)

१४१६ ई०मे खान बननेपर इसके पास चीन-सम्राट् और शाहरुखके दूत आये। इसका शासन-काल थोडा रहा, और १४१८ ई०के आरम्भमे शेरअलीके पुत्र वेइस ओगलानने इसे खतम करके गद्दी सभाल ली।

७ शेरमुहम्मद, मुहम्मद-पुत्र (१४१० ई०)

शेर मुहम्मद शाहरुख मिर्जाका समकालीन था। इसका भतीजा वेइस विद्रोही बनकर कजाको (लुटेरो) का जीवन बिता स्वतत्र खान बन गया। वेइसके लूट-मारमे बहुतसे मगोल तरुण भी शामिल थे, जिनमे इतिहासकार हैदरका दादा मीर सैयदअली भी था। हैदरने बडे अभिमानके साथ लिखा है—"मैं वेइसखानका नाती हू, और बापकी तरफ अमीर खुदादाद-पौत्र सैयद अहमद मिर्जा-पुत्र अमीर सैयदअली मेरा दादा था। अमीर खुदादादने अपने पुत्र सयद अहमदको काशगरका राज्यपाल बनाकर भेजा था। उस समय वहा खोजा शरीफकी बहुत चलती थी। उसने अधिकार छिन जानेमे नाराज होकर काशगरको उलुगबेगके हाथमे दे दिया। इसपर सैयद अहमद मिर्जाको अपने बेटे अमीर सैयदअलीके साथ काशगर छोडकर मुगोलिस्तानकी तरफ भागना पडा, जहा अहमद जल्दी ही मर गया।"

८ वेइस, शेरअली-पुत्र (१४१८–२८ ई०)

शेरमुहम्मदके समय यह अलग खान बन बैठा पर चैनसे रहनेका मौका नही मिला। १८२० ई० मे मुहम्मदखान-पुत्र शेरमुहम्मदसे इसका संघर्ष हुआ, और अन्तमें शेरमुहम्मदको समरकन्द भाग जाना पडा। जहा कुछ समय बंदी रखकर उलुगवेगने उसे मुक्त कर दिया और १८२१ ई० मे वह मुगोलिस्तान लौटा। वेइसने अपनेको पक्का मुसलमान साबित करनेके लिये मुसलमानो के ऊपर आक्रमण करनेकी मनाही कर दी थी। लेकिन घुमन्तुओंके लिये लूट-मारका कोई रास्ता तो चाहिये, इसलिये उसने बौद्ध कलमकोंको अपनी जहादका शिकार बनाया। पर, कलमक भी बहुत तगडे थे। कई बार उन्होंने वेइसको हराया। मिंगलकके युद्धमें पकडकर उन्होंने उसे अपने राजा ईसन थैंमीके पास भेज दिया। उसने घोडेसे उतरकर थैंसीको सलाम नहीं किया, तो भी मगोलोको छिङ्-गिस्के पवित्र वशका ख्याल था, इसलिये उन्होंने वेइसको छोड दिया। दूसरा युद्ध उसका कबाकाके पास मुगोलिस्तानमे हुआ, जिसमे मुश्किलसे जान बचाकर वह भाग पाया। एक और युद्ध उसने तुर्फानके पास ईसन थैंमीसे किया, जिसमे वेइस बंदी हुआ, और उसने अपनी बहिन मखदूम खानिमको देकर छुट्टी पाई। वेइसने कलमकोंके साथ छोटे-बडे एकसठ युद्ध किये, जिसमें सिर्फ एकमें सफल हुआ। वेइस शरीरसे बहुत बलवान् था। हर साल वह तुर्फान, तरिम-उपत्यका, लोब और कातकके प्रदेशोंमें जगली ऊंटोंके शिकारके लिये जाता। "खान स्वय गर्मियोमे अपने दासोंकी मददसे घडोमे पानी निकालकर जमीनकी सिंचाई करता।"

अमीर खुदादाद अब बानवे सालका हो गया था। वह हज करनेके लिये जाना चाहता था, लेकिन मौका नही पा रहा था। इसपर बूढेने उलुगवेगको बुलाया, लेकिन उलुगवेगको मगोलोंके हाथो बडी मुसीबत उठानी पडी। जब वह मुगोलिस्तानके प्रसिद्ध नगर चूमे पहुचा, तो अमीर खुदादाद सेना छोडकर मिर्जा उलुगवेगसे जा मिला। मुगोल हराकर तितर-बितर कर दिये गये। खुदादाद उलुगवेगके साथ समरकन्द पहुचा। तेमूरियोको छिङ्-गिस् खानके तूरा (यासाक)के जाननेकी बडी उत्सुकता थी। शायद उनको मालूम नही था, कि छिङ्-गिस्के आदेशो (यासाक)को चीनी और मगोल भाषाओंमे लिखकर पहिले हीसे सुरक्षित रक्खा गया है। उस समय समझा जाता था, कि छिङ्-गिस्का तूरा कुछ बडे-बूढोने अपनी स्मृतियोमें सुरक्षित रख छोडा है। अमीर खुदादाद छिङ्-गिस्के तूराका नही, बल्कि इस्लामका पक्षपाती था। उसने उलुगवेगसे कहा—"हमने कुख्यात छिङ्गिसी तूराको बिल्कुल छोड शरीयतको स्वीकार किया है, लेकिन, यदि मिर्जा उलुगवेग तूराको पसद करते है, तो मैं उन्हें ऐसे सिखलाऊगा, जिसमे कि वह शरीयतको छोडकर तूराको स्वीकार करे।" मिर्जा उलुगवेगने शायद अपनी वैज्ञानिक-बुद्धिसे बूढेको परख लिया हो, इसलिये उसने तूरा सीखनेका ख्याल छोड दिया।

उलुगवेग अपने इस आक्रमणमे चू, और चारिनके रास्ते गया था। खुदादाद जहा उसे आकर मिला, उसी स्थान पर मई १४२५ ई०मे शेरमुहम्मदकी हार हुई। उलुगकी सेनाने शेरमुहम्मदका पीछा इली नदीतक किया, यद्यपि स्वय उलुगवेग युलदुजमे रहा। वहासे लौटते वक्त रास्तेमें कश्ची स्थानमें उसने प्रसिद्ध कोक-ताश (नील-पाषाण)को पाया। तेमूर भी इस कोक-ताश (नीलपाषाण)को समरकन्द ले जानेकी बडी इच्छा रखता था, जिसको पूर्ण करनेका अवसर उसके पोतेको मिला।

शेरमुहम्मद वस्तुत वेइसका समकालीन खान था। मुगोलिस्तानका कुछ भाग इसके हाथमें था। उसके मरनेपर उसका राज्य भी वेइसके हाथमें चला गया। वेइस खानको १४२८ ई०मे इस्सिककुल्के तटपर शातुककी राहमे कत्ल कर दिया गया। उलुगवेग शातुकको खान बनाना चाहता था, इसलिये वेइसके विनाशमें उसकी भी सम्मति थी। यह भी कहा जाता है कि वेइस घोडा कुदाते हुये स्वय गिर गया, और गलतीसे अपने ही आदमियोंके तीरका शिकार हुआ।

वेइसके जमानेमे काफिर (बौद्ध) मगोलो—चोरोस, खोशोत, तोरगोत और खाइत—का पूर्वसे मुगोलिस्तानपर आक्रमण शुरू हुआ। १३९९ ई०में ओइरोत राजा उगेची खासागने मगोलोंके खान

एलवेकको मार डाला। उसके वाद ओइरोतोकी प्रधानता शुरू हुई। १४०८ ई०मे उन्होने उलजई-तिमूरको विशबालिकमें कआनकी गद्दीपर बैठाया। इसी समय मुगोलिस्तानके कुछ हिस्सेपर पूर्वी-मगोलोने अधिकार कर लिया। इन्ही ओइरोतोको मुसलमान लेखक कलमख (कलमक) कहते हैं। मुहम्मदखान उनसे लडनेके लिये तैयार हुआ, और उसका प्रतिद्वद्वी वेइस चीनी लेखकोके अनुसार पूर्वी तुर्किस्तानसे अपनी मुख्य सेना ले पश्चिममे सप्तनदमें इली-तटपर ईलीबालिक पहुचा।

१५ वी सदीके यात्रियोके अनुसार मुगोलिस्तान उस समय मुख्यत घुमन्तुओका देश था, जो तम्बुओ मे रहते और घोडोके मास और कूमिसपर गुजारा करते। उनमेसे कुछ बौद्ध ओइरोतोकी तरफ थे, और कुछ मुसलमानोकी तरफ। इलीके तटपर ही वेइस खानको कई वार ओइरोतोके सरदार ईसन थैसीसे लडना पडा।

९ शातुक, शेरअली-पुत्र (१४२८–३४ ई०)

शातुक समरकन्दमे रहता था, जहासे उलुगवेगने उसे वेइससे लडनेके लिये मुगोलिस्तान भेजा। मुगोलिस्तानमे शातुकके पक्षपाती अमीर कम थे, इसलिये वह काशगर गया, जहापर खुदादादके पौत्र कराकुल अहमद मिर्जाने उसे हराकर मार डाला। इसपर उलुगवेगने एक सेना भेजी, जो अहमद मिर्जाको पकडकर समरकन्द ले गई, जहा उसके दो टुकडे कर दिये गये।

शातुकके मरनेके बाद मगोल अमीरोके दो दल हो गये थे, एक वेइसके वडे लडके यूनसको खान बनाना चाहता था, और दूसरा बेइसके दूसरे पुत्र एसेनबुकाको। दोनो ही अल्पवयस्क थे। एसेनवुकाकी पार्टी ज्यादा मजबूत थी, इसलिये वह गद्दीपर बैठा। यूनस अपने आदमियोके साथ उलुगवेगके दरबारमें चला गया, जिसने उसे ईरान भेज दिया। वावरके अनुसार यह घटना जून १४३४ ई०की है।

१० एसेनबुगा, ईसनबुगा, बेइस-पुत्र (१४३४–६२ ई०)

एसेनवुगा अमीरोके हाथका खिलौना था। उसके प्रभावशाली अमीरोमे खुदादाद-पुत्र मीर मुहम्मदशाह (अतवाश) और मीर करिमवेर्दी थे। करिमवेर्दीने अपने लिये अलावुगमे एक दुर्ग बनवाया, जहासे वह उलुगवेगशासित फरगानामें लूट-मार किया करता था। तीसरा अमीर मीर हकबेर्दी वेकिचेक था, जिसने इस्सिककुल सरोवरके एक द्वीप कोइसुइमे अपना गढ बनाया था। कलमकोका भी उत्तर-पूर्वसे वरावर आक्रमण होता रहता था। एसेन एक वार स्वय तुर्किस्तान शहर और सैरामपर आक्रमण करने गया।

मुगोलिस्तानी उधर अन्तर्वेदपर लूट-मार करने जाते, तो कलमक उन्हे लूटते-पाटते इस्सिकुलतक पहुचते—कुछ साल पीछे तो वह सिर नदीतक पहुचने लगे।

ईसानवुगाके खान वननेके वाद यूनस तीस हजार परिवारोवाले ओर्दू और ईराजान तथा मीरक-तुर्कमानके साथ उलुगवेगके पास पहुचा था। उलुगबेगने उसे अपने पिता शाहरुखके पास भेज दिया, जिसने यूनसके साथ पुत्रवत् व्यवहार किया। यूनस वारह सालका था, जब कि यज्द (ईरान)में उसने मौलाना शरफुद्दीन यज्दीसे पढना शुरू किया। मौलानाके मरनेके समय वह चौवीस सालका था। फिर वह यज्द छोडकर यात्रापर निकला, और इराक, अरव, आजुर्वाइजान होकर शीराजमे रहने लगा। एकतीस सालकी उमर तक वह मुगोलिस्तानसे वाहर रहा।

यूनसके चले जानेपर ईसनवुगा सारे मुगोलिस्तानका खान था। शासन मजबूत हो जानेपर अमीर सैयद अलीने काशगर आनेकी आज्ञा मागी। यह कह ही चुके हैं, कि काशगरको खोजा शरीफ काशगरीने उलुगवेगको दे दिया था, जिसकी ओरसे अमीर सुल्तान मलिक दुलादाई राज्यपाल नियुक्त हुआ, उसके वाद हाजी मुहम्मद शाइस्ता फिर पीर मुहम्मद वरलस राज्यपाल हुये। सैयद अलीने खानसे कहा—"मै देखना चाहता हू, कि क्या मै अपने परिवारके पुराने इलाकेपर फिरसे अधिकार स्थापित कर सकता हू, जिसमे कि चालीस वर्षसे हम वचित है। यदि मै सफल नही हुआ, तो आप मुझे धिक्कार सकते है।" एसनवुकाने अपनी सहमति दे दी।

इस समय मुगलाई सूयाह (काशगरिया) का अधिकाश भाग दोगलतोंके हाथमे था, लेकिन अन्दिजान और काशगरपर समरकन्दके शासक उलुगवेगका अधिकार था। इस्सिक्कुलका पहाडी इलाका संघर्षोका अखाडा बन गया था। बाकी इलाके दोगलत अमीरोंके हाथमे थे। अमीर सैयद अली अक्सूमे अपने भाइयोको भगा वहा अपने परिवारको रख सात हजार सेना लेकर काशगरके ऊपर चढा। पहली ही भिडन्तमे हाजी मुहम्मद शाइस्ता भाग निकला। मुगोलिस्तानियोने चगताइयो (उलुगवेगकी सेना) का पीछा किया, लेकिन अभी भी काशगरके किलेमे दुश्मन मौजूद था—शाइस्ताने वहा मोर्चाबदी कर रक्खी थी। अमीर सैयद अलीने नगरपर अधिकार पा आसपासके इलाकोको उजाडना शुरू किया। उलुगवेगके पास समरकन्द गुहार गई, लेकिन वह ऐसी स्थितिमें नही था, कि सेनाकी मदद भेजता। अमीर सैयद अलीने जब तीसरे वर्ष काशगरपर चढाई की, तो लोगोने तग आकर खोजा शरीफसे कहा—"हमने लगातार तीन वर्षतक फसल गवा दी। अगर इस सालकी फसल भी हाथसे चली गई, तो देशमे भारी अकाल पडेगा।" लोगोने पीर मुहम्मद बरलसको पकडकर अमीर सैयद अलीके हाथमें दे दिया, जिसने उसे मारकर काशगरके भीतर प्रवेश किया, और चौबीस सालतक वहा राज्य किया। हैदरके अनुसार उसने कृषि और पशु-पालनके ऊपर बहुत ध्यान दिया। वह तीन पुत्र और दो लडकिया छोडकर मरा। इन्ही पुत्रोमेंसे एक "तारीखे-रशीदी" का लेखक मुहम्मद हैदर मिर्जा था।

ईसानबुगाकी तरुणाईके कारण अमीर उसका बहुत मान-सम्मान नही करते थे। उस समय तुर्फानके उइगुरोके अमीर तेमूरका बहुत मान था, जिससे दूसरे अमीर डाह करने लगे, और एक दिन खानके सामने ही उन्होने पकडकर तेमूरकी चोटी काट डाली। अमीर सैयद अलीने जब यह खबर सुनी, तो उसने ईसानबुगा खानको अकबासमे ले आकर अक्सूका राज्यपाल बना दिया। चोटी काटनेसे यह मालूम होगा, कि अभी उइगुरोमे गैर-मुस्लिम (बौद्ध) भी थे। जान पडता है, मुस्लिमोंसे अलग करनेके लिये चुटियाका चिह्न समकालीन भारतमे ही नही, बल्कि मध्य-एसियामें भी था। चीनियोमे जबर्दस्ती मचूओने-चोटी रखवाई थी, किन्तु मगोल गृहस्थोकी चोटी तो मैंने अपनी आखो १९३५ ई० मे खैल्परके पास देखी। जब उक्रइनके लोग तुर्की सुल्तानके अधीन थे, उस समय वहा भी चोटी ईसाइयो का और दाढी मुसलमानोका चिह्न था।

ईसानबुगाके समय अमीरोकी मनमानी चलती रही। दुगलत कबीलेके मीर करीमबर्दीने मुगोलिस्तानकी सीमातपर अलाबुगाकी पहाडीपर अपने किले बनाये थे, जहासे वह फरगना अन्दिजानकी ओर मुसलमानोको लूटने जाता। दूसरा अमीर मीर हकबेर्दी बेगजिकने इस्सिक्कुलके टापू कुई-सुईमे किला बनाकर कलमखोसे बचनेके लिये वहा अपने परिवारको रक्खा था। जारा और बारिनप कबीलोके अमीर ईमान थैशीके पुत्र अमासाजी थैशीका साथ देते थे। ईसान थैशी कल्मक-भूमिका स्वामी था। कालूजी, बल्गाजी और दूसरे कितने ही कबीले कजाक-खान अबुल्खैर (तुर्किस्तान) के साथ हो गये थे।

ईसानबुगाके अक्सूमे जम जानेपर धीरे-धीरे उसके अमीर भी उसके पास जमा होने लगे। खान भी उनके साथ अच्छा वर्ताव करता था। जब शक्ति मजबूत हो गई, तो ईसानबुगाने ८५५ हि० (१४५४ ई०) मे एक साथ ही आक्रमण करके सैराम, तुर्किस्तान शहर और ताशकन्दको लूट-मारकर बरबाद कर दिया। इस समय बाबरका दादा सुल्तान अबूसईद मिर्जा अन्तर्वेद (पश्चिमी तुर्किस्तान) का बादशाह था। अबूसईदने खानका पीछा किया, और उसे यगी—जिसे इतिहासकी पुस्तकोमे तराज कहा जाता है—में जा पकडा। मुगल बिना युद्ध किये ही भाग गये। अबूसईद अन्तर्वेद लौट गया, लेकिन जब वह खुरासानकी ओर गया, तो फिर मुगोलिस्तानियोने हमला कर दिया। ईसानबुगाके अन्दिजानमें पहुचनेकी बात सुनकर अबूसईदके सेनापति मिर्जा अली कूचुकने भीतरी किलेको मजबूत कर दिया था, लेकिन बाहरी किले पर ईसानबुगाका अधिकार हो गया। अन्तमे सुलह हुई। खान सारे अन्दिजान इलाकेपर अधिकार करके लौट गया। सुल्तान अबूसईदको बडी परेशानी थी। यदि वह मुगोलिस्तान पर चढाई करता, तो खान अपने देशके दूसरे छोरपर चला जाता, जहापर उसका पीछा करना समरकन्दकी सेनाके लिये बहुत मुश्किल था। जब अबूसईदकी सेना लौटती, तो खान उनकी पीठपर होता।

हर समय मुकाविलेके लिये सेना भेजना सम्भव नही था। अबूसईदकी जैसी परेशानी घुमन्तुओके साथ उससे डेढ सहस्राब्दी पहलेके दूसरे राजाओके सामने भी आती रही।

मुगोलिस्तानमे फसे होनेके कारण अबूसईद इराकपर चढाई नही कर पाता था। अन्तमे अबूसईदको एक ही रास्ता दिखलाई पडा, कि यूनसको ईरानसे वुलाकर उसके भाईके खिलाफ भिडा दिया जाय। उसने ऐसा ही किया। इस समय दश्तेकिपचकपर अबुल्खैर खानका मजवूत शासन था। इस कजाक खानसे हारकर जू-छि-वशज जानीवेग खान और गिराई खान मुगोलिस्तानमे चले गये। अवुल्खैरके मरनेके बाद उसका उज्वेक-कजाक उलुस आपसी झगडोके कारण छिन्न-भिन्न हो गया, और उनमेसे अधिकाश जाकर गिराई और जानीवेग खानके ओर्दूमे मिल गये। अब इनकी सख्या दो लाख थी। इसी समय उनके ओर्दूको उज्वेक-कजाकका नाम दिया गया, यह कह आये है। कजाक-सुल्तान ८७० हि० (२४ VIII १४६५- १५ VII १४६६ ई०) से शासन करने लगे, और ९४० हि० (२३ VII १५३३–१३ VI १५३४ ई०) तक उज्वेकिस्तान (किपचक-भूमि)के अधिकाश हिस्सेपर उनका पूर्ण प्रभुत्व था। गिराई खानके वाद वेरेदक-पुत्र फिर जानीवेग खानके पुत्र कासिम खान हुआ। कासिम खानने सारे दश्ते-किपचकको जीत लिया, यह हम पहले वतला चुके है। हैदरके अनुसार उसकी सेना हजार-हजार (दस लाख) से ज्यादा थी, और जू-छि खान छोडकर इतना बडा खान उस भूमिमे और कोई नही हुआ। कासिमके वाद उसका पुत्र मिमेश खान फिर उसका पुत्र ताहिर खान हुये। ताहिरके समयसे कजाकोकी शक्ति कमजोर होने लगी। ताहिरके वाद उसका भाई बिरलस था, जिसके समय उसका उलुस वीस हजार कजाकोका रह गया था। ९४० हि० (१५३३-३४ ई०) मे बिरलसके मरनेपर कजाक बिल्कुल लुप्त हो गये। ईसानवुगाके समयसे रशीद खानके समय (१५३३-६५ ई०)तक कजाकोे और मुगलोके वीच अच्छा सबध रहा।

हैदरकी तरह मध्य-एसियाके किसी कबीलेके लुप्त होनेकी वातका अर्थ यही है, कि उनमे फिर नई गुटबदी हो गई।

अमासची थैची (थैशी) और उजतिमूर थैचीने १४५२ ई० और १४५५ ई० के बीच (दूसरी परपराके अनुसार १४३७ ई० मे) सिर-दरियाके तटपर उज्वेक-कजाकोको बुरी तरहसे हराया। इस प्रकार अल्ताईके पासवाले कल्मक अब सिर-दरियाके तटतक पहुचने लगे। १४५९ ई०के अन्तमें सुल्तान अबूसईदने हिरातमें कल्मक-दूतसे भेट की। मगोलोके आक्रमणका उत्तर देनेके लिये अबूसईदने मुगोलिस्तानपर चढाई कर उन्हे अशपारमे हराया।

१४५६ ई० मे अबूसईदने यूनसको मुगोलिस्तानमे लाकर वैठाया, किन्तु उसे हारकर फरगाना और सप्तनदकी सीमापर अवस्थित जीतीकेदमें भागना पडा, जिसे कि अबूसईदने यूनसको दिया था।

एसेनबुगा १४६२ ई०मे मरा।

११ दोस्तमुहम्मद, ईसानबुगा-पुत्र (१४६२–६८ ई०)

ईसानवुगाके मरनेके वाद सत्रह वर्षकी अवस्थामे उसका पुत्र दोस्तमुहम्मद अक्सूमे वापकी गद्दी पर वैठा। यह वडा ही सनकी-सा तरुण था। इसने यारकन्द और काशगरपर चढाई की, और काशगरको लूटकर अक्सू लौट गया। मुहम्मद हैदर मिर्जा (इतिहासकार) इससे नाराज होकर यूनस खानसे जा मिला। थोडे ही समय वाद दोस्तमुहम्मदने अपनी सौतेली मापर आशिक हो मुल्लोसे व्याह करनेके अनुकूल फतवा मागा। इन्कार करनेपर सात मौलवियोको उसने मरवा डाला। आठवे मौलवी मुहम्मद अत्तारकी वारी आई। शरावमे मदहोश और हाथमे तलवार लिये हुये उसने मौलवीसे पूछा—"मै अपनी मासे व्याह करना चाहता हू। यह विहित है या नही?" अत्तार अपने समयके पूर्वी तुर्किस्तानका वहुत ही धार्मिक और अत्यन्त विद्वान दरवेश था, उसने खानसे कहा—"तुम्हारे जैसोके लिये यह विहित है।" खानने तुरत व्याहकी तैयारी कर दी। हैदरके अनुसार स्वप्नमे उसके पिताने उसे फटकारते हुये कहा—"ओ अभागे, एक सौ वर्ष तक मुसलमान रहनेके वाद तू काफिर वनना चाहता है।" मगोलोमे सौतेली माको मा नही मानते थे, और उनमे ऐसा व्याह होता रहता था। शायद यही समझकर दोस्तमुहम्मदको सौतेली माके व्याहको शरीयतसे विहित करानेकी इच्छा हुई।

चिरागकुश (दीपबुझाव) सम्प्रदाय—दोस्तमुहम्मद खान (१४६१–६८ ई०) की लम्पटताके बारेमें सुनते वक्त यह भी याद रखना चाहिये, कि हैदरके अनुसार दोस्तमुहम्मदसे सौ वर्ष पीछे भी बदख्शामें एक धार्मिक सम्प्रदाय था, जिसे 'चिरागकुश' कहते थे—"इस मतका बदख्शामें संस्थापक शाह रजीउद्दीन था। उसके अनुयायी जिस किसी अजनबीको पा उसे मार डालनेको मुक्तिका रास्ता मानते थे। कोहिस्तान (पामीर)के विधर्मियोंमें राजा बड़ा ही पापी था। बदख्शाके अधिकांश लोग इसके ही अनुयायी हैं। उनके लिये अपने नजदीकी सम्बन्धियोंमें व्यभिचार करना वैध है, उनके लिये विवाह करनेकी भी कोई अवश्यकता नहीं। अगर कोई किसीके साथ यौन-सम्बंध करना चाहता, तो बेटा या मा किसीसे भी प्रसंग करना बिल्कुल वैध है। उनमें यह नियम है, कि एक दूसरेकी स्त्री और सम्पत्तिका उपभोग करें।" हैदरका यहां अभिप्राय शायद बदख्शाके इस्माइलियोंसे है। इस्माइली शीयोंका एक सम्प्रदाय हैं। ये लोग छठें इमाम जाफर सादिकके ज्येष्ठ पुत्र इस्माईलको वास्तविक उत्तराधिकारी तथा अन्तिम इमाम मानते हैं, जब कि दूसरे शीया इस्माईलके भाई मूसा तथा पाच और पीछेके दूसरे—कुल बारह इमामोंको मानते हैं। इन्हीं इस्माइलियोंके गुरु आगा खां हैं। सोवियत शासनकी स्थापना (१९१८ ई०) से पहिले तक पामीरके इस इलाकेमें 'चिरागकुश' इस्माइलियोंकी काफी संख्या थी—अफगानिस्तानके इलाकेमें शायद वह अब भी है।

चालीस सालकी उमरमें छ दिन बीमार रहकर ८७३ हि० (२२ VII १४६८–१२ VI १४६९ ई०) में दोस्तमुहम्मद मर गया। उसके पुत्र सुल्तान ओगलानको पकड़कर तुर्फान और चालिश (करासर) ले गये। इस समय यूनसको मौका मिला और उसने आकर अक्सूको ले लिया।

१२ यूनस, वेइस-पुत्र (१४६८–८७ ई०)

एसन (ईसन) बुगाके मरनेके बाद वस्तुतः मुगोलिस्तानका राज्य दो भागोंमें विभक्त हो गया था। ८७३ हि० (१४६८-६९ ई०) तक अक्सू और पूर्ववाले प्रदेशमें एसनबुगाके पुत्र दोस्तमुहम्मदका शासन था, और पश्चिमी भाग पर यूनसका। दोस्तमुहम्मदके बाद केबेक-सुल्तान चार साल पीछे तक राज्य करता रहा, जिसके सिरको काटकर उसके ही आदमियोंने यूनसके पास भेज दिया। इस प्रकार १४७२ ई०में यूनस सारे राज्यका स्वामी बन गया।

यूनसका जन्म ८१८ या ८१९ हि० (१४१५ या १४१७ ई०) में हुआ था, और जैसा कि पहले बतलाया, बचपनमें ही वह ईरान चला गया, जहां उसे शरफुद्दीन यज्दी जैसे प्रसिद्ध इतिहासलेखक और विद्वान्के पास शिक्षा प्राप्त करनेका अवसर मिला। उसे घुमन्तू-जीवन पसंद नहीं था। दोस्त मुहम्मद खानके मरनेपर यूनसको मैदान खाली मिला। वह अक्सूपर अधिकार करके वहीं रहना चाहता था। शायद वह केबेक-सुल्तान ओगलानके साथ झगड़ा न करता, यदि उसे डर न होता, कि उसके ओर्दूके लोगोंमेंसे कितने ही केबेककी ओर चले जायेंगे।

८ फर्वरी १४६० ई०में तैमूरी सुल्तान अबूसईदके मरनेपर उसका राज्य अलग-अलग शाहजादोंमें बट गया—खुरासानका शासक सुल्तान हुसेन मिर्जा हुआ, समरकन्दका अहमद मिर्जा, हिसार-कुंदुज-बदख्शाका सुल्तान महमूद और अन्दिजान-फरगानाका वली (राज्यपाल) बाबरका पिता उमर शेख मिर्जा। यूनसने मुगोलिस्तान लौटनेपर तीनोंको अपना दामाद बनाया। अपनी लड़की मेहर-निगार खानम अहमद मिर्जाको दी, कुतुलुग निगार उमरशेख मिर्जाको। इसी कुतुलुग निगार खानमसे बाबर पैदा हुआ। ताशकन्दका वली (राज्यपाल) शेख जमाल सुल्तान अहमद मिर्जा समरकन्दके अधीन रहा।

यूनसको कजकोंका झगड़ा उत्तराधिकारमें मिला था। १४७२ ई०में कलमक-सेनापति अमासाजी (उस्मनपुत्र) पैशीने मुगोलिस्तानमें आकर इली-तटपर यूनसको हराया, जिसपर यूनसकी सेना तुर्किस्तान प्रदेश (सिर-दरिया)की ओर भागी, और वहीं उसने जाड़ा बिताया। मगोल करातुकाई सिर-तटतक पहुंचे। उस समय कजाक खान गिराई (कराई) और जानीबेगको भगाकर अबुल्खैरका पुत्र बुरुज ओगलान तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका) का शासक था। वह यूनससे लड़ने गया था। उस समय उसे गिरारमें अनुपस्थित पा उसके ओर्दूके साठ हजार परिवारोंको पकड़ लिया। डेरेमें कोई

नही था, इसलिये बिना विरोध ही के वूरुज ओगलानने सवपर अधिकार कर लिया। जब यह खवर यूनसको मिली, तो वह सीग वजवाकर जल्दी-जल्दी लौटा, और जमी हुई सिर नदीके पार हो गया। वूरुजने जब आवाज सुनी, तो उसने भी जल्दीसे घोडेपर चढना चाहा, लेकिन उसकी नौकरानियोने उसके घोडे और साईस (अखताची) को पकडे रक्खा। कुछ औरते अपने घोडोसे उतरकर आई, और उन्होने वूरुज ओगलानको पकड लिया। इसी समय यूनस खानने आकर अपनी नौकरानीको वूरुजका सिर काट लेनेका हुक्म दिया। उसने तुरत सिर काट लिया। बिना रानीकी मधुमक्खियोकी तरह विना सरदारका उज्वेक-कजाक ओर्दू क्या कर सकता था? बीस हजार घुमन्तुओमे वहुत कम जान बचाकर भाग पाये।

ताशकदका वली जमाल सुल्तान यूनसको सिर-उपत्यकामे नही देख सकता था। उसने आक्रमण करके यूनस खानको पकडकर सालभर वदी रक्खा, जिसपर सारा मुगोलिस्तानी उलुस शेख जमालके अधीन रहनेके लिये मजबूर हुआ। शेख जमालने यूनसकी वेगम और बाबरकी नानी ईसान दौलान वेगमको अपने एक अफसर ख्वाजा कलानको दे दिया। वेगमने वाहरसे स्वीकृति दे दी थी, लेकिन रातको पास आनेपर उसने ख्वाजा कलानको मार डाला। सालभर वाद अमीर करीमवेर्दी दोगलातके भतीजे अमीर अब्दुल कुद्दुजने शेख जमालको मारकर यूनस खानको मुक्त किया। अब ताशकन्द और शाहरुखिया भी बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाके हाथमे थे। मुगोलिस्तानी अमीर फिर यूनसके पास लौट आये। उन्होने खानसे शिकायत की––"खानने हमेशा हमे कृषिवाले प्रदेशके नगरोमे वसानेकी कोशिश की, जिसे हम लोग घृणाकी दृष्टिसे देखते है।" खानने अफसोस प्रकट करते हुये कहा––"अबसे मै नगरो और खेतीवाले स्थानोमे रहनेका विचार छोड देता हू।"

इस वक्त कलमक अपने युर्त (ओर्दूवाले देश) को लौट गये थे, इसलिये यूनस खानको मुगोलिस्तानमे मुगलोके साथ रहनेकी हिम्मत हुई। इसके वाद कई सालो तक खानने घर या नगरमे रहनेका नाम नही लिया। काशगरके शासक मुहम्मद रेहर मिर्जाने यूनसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

अपने एक दामाद वाबरके पिता उमरशेख मिर्जाके साथ यूनसका विशेष स्नेह था। भाई अहमद मिर्जा (समरकन्दके सुल्तान) के आक्रमणका भय होनेपर उमरने यूनसको वुलाया। यूनसने फरगानाके सबसे बडे शहर अक्सीमे आकर डेरा डाला। अहमद मिर्जाने खानसे तीकासगरुरकूके पुलपर लडाई की, जिसमे वह खानका वदी बना, लेकिन खानने अपने दामादको बहुतसी भेटे देकर छोड दिया। कुछ समय वाद फिर उसने चढाई की, और उमरशेखकी सहायताके लिये खान मर्गिलान पहुचा। इतिहासकार हैदरने मौलाना मुहम्मद काजीके मुहसे सुना था––"एक वार मै मर्गिलान गया। मैने सुन रक्खा था, कि यूनस खान मुगल है, और समझा था, कि वह दूसरे रेगिस्तानी तुर्कोकी तरह बिना दाढी-मूछका (मगोलायित) आदमी होगा। मैने उसको देखा, वह वडा ही खुवसूरता था। उसका चेहरा ताजिकोकी तरह दाढीसे भरा हुआ था। वातचीत और व्यहारमे वह वडा ही सस्कृत था, जैसे कि ताजिकोमे भी बहुत कम पाये जाते है।" मौलानाने सभी सुल्तानोको पत्र लिखा––"मैने यूनस खान और मुगलोको देखा। ऐसे वादशाहकी प्रजाको वदी वनाकर नही ले जाना चाहिये। वह इस्लामके अनुयायी है।" इसके वादसे मुगलोको अन्तर्वेद और खुरासानमे ले जाकर दासके तौरपर बेचना वद हो गया। इससे पहले मुगलोको भी दूसरे काफिरोकी तरह दास बनाकर वेच दिया जाता था। यह मालूम ही है, कि इस्लामी शरीयतके अनुसार मुसलमानको दास नही वनाया जा सकता।

अहमद मिर्जा और उमरशेख मिर्जा अर्थात् समरकन्द और फरगानाका झगडा वरावर ही चलता रहा, और उमरशेखकी मददके लिये यूनसको भी वरावर जाना पडता था। ऐसे ही एक समयमे यूनसके आनेपर उमरशेखने उसे ओश दे दिया। खानने वही जाडा विताया। मुगोलिस्तानकी ओर लौटते समय उसने अपने दूसरे नाती इतिहासकार मुहम्मद-हैदर मिर्जाको ओश (ऊश) का शासक वना दिया। शेख जमालकी मृत्युके वाद ताशकन्दको उमरशेखने ले लिया। समरकन्द-शासक अहमद मिर्जा इसे वर्दाश्त नही कर सकता था। खान उमरशेख और अहमद मिर्जाकी सेनाये फिर लडनेके लिये सिर-उपत्यकामे पहुची, लेकिन हजरत नासिरुद्दीन उवैदुल्ला सूफी (नत)ने बीचमे पडकर

विवादग्रस्त ताशकन्दको खानके हाथमे देकर झगडा शात करा दिया। अभी यूनस ताशकन्दमे ही था, कि उसे लकवा मार गया। दो साल तक इस बीमारीमे पडे रहकर ७४ वर्ष की उमरमे ८९२ हि० (२८ XII १४८६–१८ XI १४८७ ई०)मे यूनस मर गया। चगताई खानोमे अधिकाश चालीस वर्षसे अधिक नही जी पाये, और उनमेसे कितने ही स्वाभाविक मौतसे नही मरे, लेकिन यूनस इसका अपवाद था। यूनसकी कब्र ताशकन्दमे ही पूरानवार शेख खावन्दि-तुहूरकी समाधिके पास है।

१३ महमूद, यूनस-पुत्र (१४८७–१५०८ ई०)

बापके मरनेपर ज्येष्ठ पुत्र महमूद* को मगोलोकी रीतिके अनुसार सफेद नम्देपर बैठा कधेपर उठा खान घोषित किया गया। लेकिन महमूदका अधिकार पूर्वी मुगोलिस्तानपर ही रहा। वह बापकी तरह ही सस्कृत और सुशिक्षित था। वह कविता भी करता था, जो बुरी नही होती थी। अन्तर्वेद लेनेकी उसकी बडी इच्छा थी, जिसमे कमजोर तेमूरी-सुल्तानोके मुकाबिलेमे पहिले इसे सफलता भी मिली, लेकिन १५०० ई० मे जब उज्बेक खान मुहम्मद शैबानीने अन्तर्वेदको अपने पजेमे कर लिया, तो उसके लिये फिर मौका नही रह गया। १४८८ ई० मे कुछ सफलता मिली थी। उमरशेखने असलमे महमूदसे ताशकन्द छीननेके लिये सेना भेजी थी। खानने सफलता प्राप्त कर मिर्जाके सभी अनुयायियोको पकडकर मरवा डाला। इसी समयसे बाबरके पिता और मामाका सघर्ष शुरू हुआ, जिससे मिर्जाकी शक्ति बहुत क्षीण हो गई, और अतमे वह बिल्कुल हार गया। इसपर अहमद मिर्जा डेढ लाख सेना लेकर आया। अहमद मिर्जाके साथ कजाक अबुलखैरका पौत्र और शाहबुदागका पुत्र शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) भी अपने तीन हजार आदमियोको लेकर गया था। हम पहले बतला चुके है, कि कैसे युद्धके समय शाहीबेग अपने तीन हजार आदमियो के साथ युद्धक्षेत्रसे निकल गया, और मिर्जाकी परताल (रसद) पर टूटकर उसे लूट लिया। इसके कारण अहमद मिर्जाकी सेना भागनेपर मजबूर हुई, लेकिन उसके सामने चिर नदी—जिसे ताशकन्दवाले पराक कहते है—थी, जिसमे बहुतसे सिपाही डूबकर मर गये और अहमद मिर्जा किसी तरह जान बचाकर समरकन्द पहुचा। इतिहासकार हैदरका पिता मुहम्मदहुसेन गूरगानसे महमूद खानका बडा प्रेम था। वह सदा एक ही डेरे या कमरेमे रहते थे। उनके घर बगल-बगलमे होते। वह अपने निजी घरेलू बातो को भी एक दूसरेसे नि सकोच कहते थे। महमूद खानने अपनी बहिन यूनस-पुत्री खूबनिगारसे महमूद हुसेनकी शादी कर दी थी। जब अहमद मिर्जा, उमरशेख मिर्जा और महमूद मिर्जा मर गये, तो उरातेपा भी महमूद खानके हाथमे चला गया, जिसे उसने अपने मित्र और बहनोई मुहम्मद हुसेनको दे दिया।

शाहीबेगने धोखा देकर ताशकन्द विजय करनेमे महमूद खानकी सहायता की थी। अब वह खानका सेवक था। उसकी सहायताके बदलेमे खानने तुर्किस्तान-शहरका इलाका उसे दे दिया, जिसे गिराई खान और जानीबेग दोनो भाई अपना समझते थे। इसके कारण खानसे उनका बिगाड हो गया। उन्होने कहा—हमारे दुश्मन शाहीबेगको क्यो तुर्किस्तान दिया? इसके बाद उज्बेक-कजाको और महमूद खानमे लडाईकी नौबत आगई। दो बडी-बडी लडाइया हुई, और दोनोमे महमूद खानकी हार हुई। महमूद खानका बर्ताव अच्छा न देख यूनस खानके समयके कितने ही सेनापति उसे छोड गये। खानने पाच अमीरोको मरवाकर एक नीच कुलके आदमीको अपना सेनापति बनाया।

८९९ हि० (१२X१४९३–२IX १४९४ ई०)मे बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाकी मौत घरके नीचे दबकर हुई। अमीरोने उसके पुत्र जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबरको फरगानाके तख्तपर बैठाया। अन्दिजानपर कही मुगल हाथ न फेर दे, इसलिये अहमद मिर्जा अपनी सेनाके साथ आया, लेकिन मर्गिलानमे पहुचकर बीमार हो जानेसे उसे पीछे लौटना पडा, और उमरशेखकी मृत्युके चालीस दिन बाद वह भी चल बसा। सुल्तान महमूद मिर्जाने अब हिसार (ताजिकिस्तान)से आकर समरकन्दकी गद्दी सभाली। छ महीने बाद वह भी मर गया, फिर उसका पुत्र मिर्जा बैसुकर गद्दीपर बैठा। महमूद खानने इस स्थितिसे उत्साहित हो समरकन्दकी ओर हाथ बढाया, लेकिन हैदरके अनुसार नीच-कुलीन

*जन्म ८६८ हि० (१५ XI १४६३—५ VIII १४६४ ई०)

सेनापतियोके कारण कामयाबीकी लडाईमे खानको हार खानी पडी । ताशकन्द लौटनेपर अमीरोने उसे समरकन्द और बुखारा लेनेमे शाहीबेग खानकी सहायता करनेकी सलाह दी, जिसमे वह आराममे ताशकन्दमे रहे । खानको उनकी राय पसद आई । इतिहासकार हैदरके पिता मुहम्मद हुसेनने बहुत रोका, लेकिन शाहीबेगको सहायता दी जाती रही । शाहीबेगके पास पचास हजार सेना हो गई, जिससे उसने समरकन्द और बुखारापर पूरी तौरसे अधिकार कर लिया । उसकी सफलता और लूटके लोभमे चारो ओरसे उज्बेक उसके झडेके नीचे आ गये थे ।

पिताके ताशकन्दमे रहनेपर यूनसका दूसरा पुत्र सुल्तान अहमद [जन्म ८७० हि० (२४ VIII १४६५–१५ VII १४६६ ई०] मुगोलिस्तानमे अपने मुगलो और पशुओकी चरवाही करता था । पहले दस सालके सघर्षमे उसने इरलातके अमीरोको दबाया । अहमद अपने भाई महमूदकी तरह ही सस्कृत नही था । बाबरके अनुसार वह सचमुच ही रेगिस्तानका पुत्र था—शरीरसे हट्टा-कट्टा और बडी हिम्मतवाला । वह मगोलो जैसी वेष-भूषा रखता था । अहमदने दो लडाइयोमे कलमक-थैची एसेनकी सेनाको हराया, जिससे कल्मकोपर इसका बहुत रोब था । वह इसे अलाची (बहादुर) कहते थे । अहमदने कजाकोको भी तीन बार हराया । सिर्फ काशगर और यारकन्दमे वह अपने मनसूबेमे सफल नही रहा । मुहम्मद शैबानी (शाहीबेग) ने जब अपने पहिले सरक्षक महमूद खानपर हाथ साफ करना चाहा, तो खानने अपने भाई अहमदको बुला भेजा । भाईका कहना मानकर इसने अपने पुत्र मन्सूरको मुगोलिस्तानमे रक्खा, और दूसरे दो पुत्रोसहित ताशकन्द आया । १५०३ ई० मे मुहम्मद शैबानीने अकसीकी लडाईमे दोनो भाइयोको हराया । अहमद अकेले मुगोलिस्तान भागा । शैबानीने महमूदसे ताशकन्द और सैराम छीन लिया । फिर दोनो भाइयोने अक्सू (पूर्वी तुर्किस्तान) मे इकट्ठा जाडा बिताया, जहा ही अहमद लकवाकी बीमारीसे मर गया । महमूदने अक्सू और पूर्वी मुगोलिस्तानको ले लिया । अक्सूमे अपने भाई खलील सुल्तानसे हारकर वह सप्तनदके किर्गिजोके पास पहुचा । शाहीबेगने महमूद खानपर विजय प्राप्त की, उसी समय अकसीमे दोनो खान-भाई बदी बने, और मुक्त कर देनेपर अहमद खान ९०९ हि० (२६ VI १५०३–१६ V १५०४ ई०) लकवासे मर गया ।

महमूद खानकी हालत् अतमे बहुत बुरी हो गई । वह शाहीबेगके दरबारमे दयाकी भिक्षा मागनेके लिये मजबूर हुआ । शाहीबेग (शैबानी)ने जवाब दिया—"एक बार मैने तुमपर दया दिखला दी, अब दूसरी बार दया दिखलानेपर मेरी हकूमत खतरेमे पड जायेगी ।" उसने जरा भी दया न कर महमूद खान तथा उसके छोटे-बडे सभी बच्चोको खोजन्द नदीके किनारे ९१४ हि० (२ V १५०८–२३ III १५०९ ई०) मे मरवा डाला । अबतक अन्तर्वेद शैबानियोका हो चुका था, यह हमे मालूम है ।

१४ मन्सूर, महमूद-पुत्र (१५०८ ई०)

इसी समय किर्गिजोका नाम पहलेपहल मुगोलिस्तानमे सुनाई पडता है । शायद किर्गिज १०वी शताब्दीमे ही यहा पहुच गये थे । हैदर किर्गिजोको मगोलोसे विभिन्न नही समझता । मगोलिस्तानी मगोलो और किर्गिजोके झगडेका कारण वह उनका मुसलमान और काफिर होना बतलाता है । खलीलसे जल्दी ही उसका भाई सईद (जन्म १४९० ई०) आ मिला, जो कि अबतक बापके साथ अन्तर्वेदमे उज्बेकोका बदी था । सईदकी उमर उस समय तेरह-चौदह सालकी थी । दोनो भाई चार सालतक एक साथ रहे । इसी बीचमे चचामे झगडा हो उठा, और मन्सूर उनसे लडने मुगोलिस्तान गया । यही समय था, जब कि १५०८ ई०मे शैबानीके हुक्मसे महमूद खान और उसके बेटोको खोजन्द नदी (सिर-दरिया) के तटपर कत्ल किया गया । इसके पश्चात् चारनचलाक या चारिन (आधुनिक अलमाअताके पास) मे मन्सूरने अपने भाइयोको परास्त किया । खलील भागकर फरगाना चला गया, जहा उज्बेक शासक जानीबेगने उसे कत्ल करवा दिया । सईद कुछ महीनो नरिनके जगलोमे छिपा रहा, फिर उज्बेकोके हाथमे पडकर फरगानामे बद रहा, जहासे भागकर काबुलमे जा१५०८ ई०के अन्ततक बाबरका मेहमान रहा ।

पिताके मरनेपर अक्सूके खान चचा महमूद खानके साथ मन्सूरका झगडा था । मन्सूरने काशगरसे मुगोलिस्तान लेनेके लिये महमूद खानके खिलाफ जाकर अक्सूमे डेरा डाला । वहा मीर जब्बारबर्दीसे मन्सूरका झगडा हो गया । जब्बारने काशगरके हाकिम अबूबकरको बुला भेजा । मन्सूरको अक्सू छोड-कर भागना पडा । उसकी स्थिति बहुत बुरी हो गई । इसपर उसने अपने मामा जब्बारबर्दीसे शपथ-

पूर्वक क्षमा मागी। जब्बारने मन्सूरके साथ बडी उदारता दिखलाई, जिससे उसकी स्थिति अपने बाप सुल्तान अहमद खानसे भी बेहतर हो गई। इसी समय उसे खबर मिली, कि मुगोलिस्तान (सप्तनद) मे सुल्तान महमूद, सुल्तान सईद और सुल्तान खलीलमे झगडा हो गया है। मन्सूरने मुगोलिस्तान पहुच अपने चचा महमूदसे भेट की। वही उसकी अपने छोटे भाइयो—सईदखा और खलील सुल्तान—से भी मुलाकात हुई। उसके बाद ही महमूदखान अन्तर्वेदकी ओर लौटा, जहा मुहम्मद शैवानीसे हारकर उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा। अब मन्सूरने अपने भाइयोपर आक्रमण किया, जो कि मुगोलिस्तानमे मुगलो और किर्गिजोके साथ रहते थे। चारुनचलाकमे लडाई हुई, जिसमे हारकर मन्सूरके दोनो भाई विलायत (अन्तर्वेद) भाग गये। वहाके वलीने सुल्तान खलीलको मरवा डाला, और सुल्तान सईद भागकर काबुलमे बाबरके पास पहुचा। मन्सूर मुगोलिस्तानमे हाथमे लगे किर्गिजो और मुगलोको अपने साथ चालिश (कराशर) और तुर्फान ले गया। पीछे उसने कल्मकोपर सफल आक्रमण किया।

इसी बीच काबुलसे लौटकर सुल्तान सईदने काशगरको जीत लिया। मन्सूरको भारी भय लगने लगा। लेकिन शायद सईदको अन्तर्वेदमे शैवानियोकी शक्तिको देखकर कुछ अकल आई। उसने समझौता करनेके लिये ९२२ हि० (५ II–२६ XII १५१६ ई०) मे अक्सू और कुसानके बीचमे मन्सूरसे भेट की, और खानकी अधीनता घोषित करते हुये उसके नामसे खुतबा पढे जानेका हुक्म दिया। इसके बाद बीस सालतक देशमे शाति रही। चीनमे कामिल (हामी) से लेकर अन्दिजान तक बिना रोक-टोक आदमी यात्रा कर सकते थे, रास्तेमे कोई कर नही लिया जाता था। यात्री हरेक रातको किसी घरमे मेहमान रह सकता था। यह बतलाते हुये इतिहासकार हैदर लिखता है—"अल्लाह दोनो धर्मात्मा भाइयोको स्वर्गोद्यान प्रदान करे।" मन्सूरके हाथमें पूर्वी तुर्किस्तानका पूर्वी भाग था, जिसकी सीमा चीनसे लगती थी। वह अपनेको इस्लामका गाजी साबित करना चाहता था। इसमें मुख्य कारण लूट-मारका प्रलोभन था, जिसके लिये मिङ सम्राट् शी-चुङ (१५२१-६६ ई०) की सेनाओमे बराबर उसका धर्मयुद्ध होता रहा। मन्सूरने अरिग (मुगोलिस्तान) मे उज्बेक-कजाकोंके साथ जमकर लडाई की, जिसमे उसकी हार हुई।

काशगरी अबूबकरकी सेना अमीर वेलीकी अधीनतामे सप्तनद गई, जहा उसे कुछ सफलता हुई। आखिरमे मन्सूरने अपने बडे पुत्र शाह खानको खान बनाया और स्वय अल्लाकी भक्तिमे लग गया। हैदरके समय ९५१ हि० (१५४५ ई०) मे शाहखान तुरफान और चालिशपर शासन कर रहा था। इसी समय बाबरका बेटा हुमायू हिन्दुस्तानसे भागकर मारा-मारा फिर रहा था। शाहखानका चाल-चलन हैदरको पसद नही था। उसने लिखा है—"इतिहासकारका धर्म है, कि ठीक या बेठीक जो भी उसे मालूम हो, उसका उल्लेख करे।"

यद्यपि सईदने १५०८ ई० मे ही पूर्वी तुर्किस्तानके पश्चिमी हिस्सेका शासन सभाल लिया था, लेकिन उसने बहुत सालो तक मन्सूरको अपना प्रभु माना था। इतिहासकार हैदर सईदका सम-कालीन था। उसने "तारीखे-रशीदी"मे इसके बारेमे बहुतसी बाते लिखी है। रशीद खान, जिसके नाममे हैदरने अपने इतिहासको लिखा है, सईद खानका ही पुत्र था। सईद अहमद खानके आठ पुत्रोमेसे एक था। अपने भाई महमूद खानकी सहायताके लिये जिस वक्त अहमद खान जा रहा था, उस वक्त चौदह सालका सईद भी अपने बापके साथ था। अकसीकी लडाईमे एक तीरके लगनेसे उसकी जाघकी हड्डी टूट गई, और वह घायल हो अकसीके वली शेख बायजीदके जेलमे बन्द रहा। दूसरे साल शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) ने शेख बायजीद, सुल्तान अहमद तम्बालको उसके सारे भाइयोके साथ मारकर फरगानाको ले लिया। शाहीबेग सईदको पुत्रवत् मान अपने साथ समर-कन्द ले गया। जिस वक्त शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) ख्वारेज्मपर आक्रमण करने गया था, उसी समय सईद निकल भागा और यतीकन्दमे अपने चचा महमूद खानके यहा जाकर कुछ दिन रहा। फिर वहासे अपने भाई खलील सुल्तानके पास गया, जो कि उस समय किर्गिजोके ऊपर राज्यपाल था। चार सालतक वह अपने भाईके साथ वहा रहा। जब महमूद खान विलायत (अन्तर्वेद) गया, तब भी दोनो भाई किर्गिजोमे ही रहे। मन्सूर तुर्फान और चालिशसे सेना लेकर किर्गिजोके ऊपर चढा, तो दोनो भाई अपने अनुयायियो (मुगलो-किर्गिजो)के साथ मिलकर उससे चारुनचलाकमे लडे,

और हार खा भागकर अकसी गये, जहा शाहीवेग (मुहम्मद शैवानी)के चचेरे भाई जानीवेगने सुल्तान खलीलको मरवा दिया । सुल्तान सईद कुछ समयतक अब लूट-मारका जीवन विताता रहा, फिर मुगोलिस्तान छोडनेपर मजबूर हो अन्दिजान होते बावर बादशाहके पास काबुल पहुचा । बाबरने उसे बडे आदर और प्रेमसे रक्खा—छिङ-गिस् खानकी औलाद और मुगोलिस्तानके खानका बेटा था, इसलिये मुगलोके नामपर बावला बावर क्यो न उसका सत्कार करता ? सईद काबुलमे तीन सालतक बावरका मेहमान रहा । जब शाह इस्माईल (ईरान) ने मेर्वमे शाहीवेग (मुहम्मद शैवानी) को मार डाला, तो बावर काबुलसे कुदुज पहुचा । सईद भी इस वक्त बावरके साथ था। इसी समय इतिहासकार हैदरके पिता सैयद मुहम्मद मिर्जाने शैवानी जानीबेग सुल्तानको अन्दिजानसे भगाकर उसपर अधिकार कर लिया था । बाबर बादशाहको इसकी खबर लगी, तो उसने सईद और कुछ मुगल अमीरोको अन्दिजान भेजा । सैयद मुहम्मद मिर्जाने जीते देशको उनके हाथमे दे दिया । सईदने खान मुहम्मद मिर्जाको "उलुस-बेगी" (कबीलोका सरदार) की उपाधि प्रदान की । लेकिन काशगरी मिर्जा अबूबकर भी अन्दिजानपर आख गडाये था । दोनोमे लडाई हुई । हैदरके अनुसार सईदने अपनी पन्द्रह सौ सेनासे अबूबकरकी बीस हजार सेनाको हरा दिया ।

इस समय सप्तनदके उत्तरी भागमे कजाकोके खान कासिम [मृत्यु ९२८ हि० (१३I–८XII १५१८ ई०)] का राज्य था, जो जाडोमे करातालमे रहता था । कासिमने १५१० ई० के करीब मुहम्मद शैवानीको हराया, और १५१२ ई०मे तलस और सैरामपर अधिकार कर ताशकन्दके किलेको नष्ट कर दिया । हैदरके अनुसार उसके कजाकोकी सख्या दस लाख थी, लेकिन बावरके अनुसार तीन लाख । १५१३ ई० के वसन्तमे चू नदीके तटपर सईदने कासिम खानसे मुलाकात की । कासिमकी उमर उस समय तिरसठ सालकी थी । उसने सईदकी बडी खातिर की । सईद इस वक्त बावरकी सेवामे था ।

बावरकी इन सफलताओको शैवानी उज्बेक देख नही सकते थे । उन्होने ताशकन्द और समरकन्दके सीमान्तपर भारी सेना जमा की । बावरने इसी समय (जून या जुलाई १५११ ई०) उन्हे हराकर थोडे दिनोके लिये समरकन्दके सिंहासनपर बैठनेमे सफलता पाई थी, लेकिन उसी सालके वसन्तके आरम्भमे उबैदुल्ला खानने बावरको हराकर उसे परिवारसहित हिसारकी ओर भगा दिया । अन्तर्वेद उज्बेकोका हो गया, तो भी अन्दिजानपर सईद खानका अधिकार बना रहा । शाह इस्माईलकी कुमकसे साठ हजार सेना लेकर जब बावरने समरकन्दपर चढाई की, उस समय सईद खान भी अन्दिजानसे उसकी मददके लिये आया था । ताशकन्दके पास शैवानी सूयुनजी (ख्वाजा) खानने सईदको हराकर अन्दिजानसे भागनेके लिये मजबूर किया । इसी समय इतिहासकार हैदर बावरसे छुट्टी ले सईद खानकी सेवामे चला गया, और वसन्तमे दश्तेकिपचक (किर्गिज-कजाक) के खान कासिमसे मिला, जिसके पास बावरके अनुसार तीन लाख सेना थी ।

९२० हि० (२६ II १५१४–१७ I १५१५ ई०) मे उज्बेकोकी भारी सेनाने अन्दिजानपर आक्रमण किया । खानने भागकर काशगरियापर चढाई की, मिर्जा अबूबकर काशगरमे किलेबन्द हो गया । यगी-हिसारपर तीन मास घेरा डाल सईदने उसपर अधिकार कर लिया । मिर्जा अबूबकर दक्षिणकी ओर भागा । उसका पीछा करते सईद खानकी सेना तिब्बत (लदाख) के पहाडोके भीतरतक गई । इस प्रकार मई-जून १५१३ ई० (९२० हि०) मे सईद खान काशगर-प्रदेशका स्वामी था, और ९२२ हि० (१५१६ ई०) मे, जैसा कि पहिले कहा, उसने बडी दूरदर्शिता दिखलाते हुये मन्सूर खानको अपना प्रभु मान लिया ।

शैवानियोसे अन्तर्वेद छीननेका मनसूबा सईदने बावरसे उधार लिया था, इसीलिये उनसे उसने छेडखानी जारी रक्खी । सप्तनदसे तोर्गुत डाडेसे होकर काशगरियामे सैतालीस सौ सेनाके साथ घुसकर अबूबकरको भगानेमे उसने पूरी तोरसे सफलता प्राप्त की । काशगर और यारकन्द को लेकर वहा पूरी तौरसे शाति-स्थापन कर १५१६ ई० मे उसने अक्सू और कुचेईके बीच अरबात स्थानमे मन्सूरसे भेट की । जैसा कि पहिले कहा, दोनोमे पूर्ण मैत्री स्थापित हुई, सईद ने मन्सूरको अधिराज माना, लेकिन शासित प्रदेशोका बटवारा ना करना ही था । मन्सूरको तुर्फान, कराशर और पूर्वी तुर्किस्तानका सारा ऊपरी भाग मिला, दूसरे भाई एमिन खोजाको

तुर्फान और अक्सू, तीसरे भाई बाबा सुल्तानको बाई और कूची मिले। काशगर और दक्षिणी सप्तनद सईदके हाथमें रहे। हामी (चीन)से अन्दिजान (फरगाना) तकका वणिक्पथ मुक्त हो गया। अबूबकरसे लडते वक्त किर्गिज मुहम्मदने सईदकी बडी सहायता की थी, इसलिये उसे किर्गिजोंका सरदार बना दिया गया। १५१६ ई० के वसन्तमें फरगानामें उज्बेकोंसे लडनेकी तैयारी करनेके लिये सईद मुगोलिस्तान गया। उसने चातिर-कुलके तटपर अपने भाई बाबा अचकसे भेंट की। अरपा-उपत्यकामें मन्सूरको छोडकर सारे भाई मिले, उन्होंने साथ ही शिकार खेला और जाडा बिताया। इसमें सईद अभियानकी बात भूल गया। इसी समय उसके अमीर मुहम्मदकी अधीनतामें किर्गिजोंने जाकर तुर्किस्तान-शहर, ताशकन्द और सैराममें लूटमार की, और शैबानी खानके सौतेले भाई तुर्किस्तान-शासक अब्दुल्लाको बन्दी बनाया। लेकिन मुहम्मदने उसे बहुत-सी भेंट देकर छोड दिया, जिसके कारण उसका सईदसे मन-मुटाव हो गया। १५१७ ई० के वसन्तमें सईद अपनी सेना ले काशगरसे चला। एमिल खोजा भी अक्सूसे मारिग-अत्-आखुरी डाँडेसे होते आगे बढा। दोनों सेनायें काफिर-यारिगमें मिल गईं, जहाँसे सईद बेसकाउन-द्रोणी और एमिल खोजा चू-द्रोणीसे आगे बढा। किर्गिज मुहम्मद बेसकाउनके मुहानेके पास डेरा डाले पडा था। दोनों भाइयोंके आनेकी खबर पाकर वह तुर्किस्तानकी ओर भागा, और उसके घोडे, भेंडें तथा सारी चीजें शत्रुओंने ले लीं। सईदने किर्गिजों को बन्दी नहीं बनाया। वहाँसे वह हिसार लौट गया।

१५१७ ई०में मुहम्मद किर्गिजने तुर्किस्तान और फरगानापर आक्रमण करके मुसलमानोंको लूटा, जिसके लिये सईदने चढाई करके मुहम्मद किर्गिजको पकडकर जेलमें डाल दिया, जहाँ वह पन्द्रह सालतक पडा रहा। इसी साल सईद अपने पुत्र रशीदको लेकर मुगोलिस्तानमें गया। उसने किर्गिजोंको दबाकर सारे मुगोलिस्तनपर अधिकार कर लिया। पीछे सगितोंकी शक्तिके कारण उज्बेक-कजाक दश्तेकिपचकमें रहनेकी हिम्मत नहीं कर सकते थे, इसलिये वह दो लाखकी सख्यामें मुगोलिस्तान में चले आये। उनके साथ लडना असभव समझकर रशीद सुल्तान—जिसे बापने मुगोलिस्तानमें छोड रक्खा था—अपने आदमियोंको ले काशगर भाग गया। १५१९ ई० (९२५ हि०) और १५२९-३० ई० (९३६ हि०)में दो बार सईदने बदख्शापर चढाई कर उसका आधा हिस्सा ले लिया।

१५२२ ई० में मुसलमानोंपर आक्रमण करनेका कारण बतलाकर सईदने अपने बेटे रशीद के सेनापतित्वमें फिर किर्गिजोंपर आक्रमण करनेके लिये सेना भेजते समय जेलसे छोडकर मुहम्मद किर्गिजको भी उसके साथ कर दिया था। रशीदने कोचकरकी उपत्यकामें डेरा डाला। अधिकांश किर्गिजोंने मुहम्मदकी अधीनता स्वीकार की, लेकिन उनमेंसे कुछ भाग गये। उस जाडेमें रशीद खान कोचकर ही में रहा। इसके बाद वह हर साल कुछ समय कोचकर-उपत्यकामें बिताता था। १५२४ ई०में जब खान कोचकरमें था, उसी समय उसके पास उत्तरी सप्तनदके कजाकोंके खान कासिम-पुत्र ताहिरका आदमी आया। वह मुगोलिस्तानियोंके साथ मिलकर उज्बेकों और नोगाइयों (मगितों) से लडना चाहता था। उसने अपनी बहिन भी रशीद खानको प्रदान की। इसके बाद अधिकांश किर्गिज ताहिरके अधीन हो गये। १५२५ ई० में खान इस्सिक्कुलके तटपर था, जब कि मुगोलिस्तानके सीमान्तपर कल्मकोंके चढ आनेकी खबर मिली। इससे पहले १५२७-२८ ई० में रशीद कल्मकोंके ऊपर सफल अभियान कर चुका था, जिससे उसे गाजीकी उपाधि मिली थी। अपने परिवारको इस्सिक्कुलके किसी द्वीपमें छोडकर रशीद कल्मकोंके विरुद्ध चलकर दस दिनमें कबीकलर (कबिलककला) पहुँचा। इसी समय ताशकन्दके शैबानी खान सू-युन-चुकके मरनेकी खबर मिली। उज्बेकोंके साथ लडनेका यह अच्छा मौका था, इसलिये वह जल्दीसे लौटकर इस्सिक्कुल पहुँचा, और वहाँसे कोनुर-उलेनके रास्ते फरगाना गया, लेकिन उसे जल्दी ही असफल हो उलुक (मुगोलिस्तान) लौटना पडा, जहाँसे जल्दी ही काशगर गया।

अगले जाडोंमें ताहिरका डेरा कोचकरके पास था। आधे किर्गिज उसकी ओर थे। रशीद अतबाससे पडा था। १५२६ ई० के आरम्भमें रशीदने किर्गिजोंके साथ मेल किया, इसपर कितने ही कजाक सारे कारा और कुनगेजतक सप्तनदसे हट गये। किर्गिजोंके डेरे कोचकर और जुमलके पास

पडे हुये थे। ताहिरसे वातचीत करनके लिये उसकी सौतेली मा (यूनस की पुत्री) को भेजा, जो कि काशगरमे सईदके पास रहती थी। सईद लौटकर अकसाई पहुचा था, जब कि कजाको और किर्गिजो के वीच समझौतेकी वातका उसे पता लगा। दोनो घुमन्तू जातियोके मिल जानेका खतरा सईदको साफ़ मालूम होने लगा, इसलिये वह वहासे वावाचककी कूचीसेनाको भी ले अककुयाश होते अरिक्ष-लारके रास्ते चला। उसने सप्तनदसे किर्गिजोको भगाकर उनकी एक लाख भेडे पकड ली, जिससे उस स्थानका नाम कोई-चरीकी (भेडोवाला) पडा।

१५२७ ई०के वसन्तके आरम्भमे ताहिर अतवासपर चढ आया, और वहासे उसने किर्गिजोके साथ मिलकर मुगलोको मार भगाया। मुगलोके हट जानेपर अव सप्तनद कजाको ओर किर्गिजोके हाथमे चला गया, लेकिन दोनो जातियोकी मित्रता अधिक दिनोतक नही निभी। १५२६ ई० मे ताहिरने अपने भाई अव्दुल कासिमको मार डाला, जिसपर कजाकोने उसका साथ छोड दिया। १५२९ ई० मे अभी ताहिरके पास वीस या तीस हजार कजाक थे। हैदरके अनुसार ताहिर अन्तमे वडी वुरी अवस्थामे मरा। उसके वाद उसका उत्तराधिकारी उसका भाई वुईदश हुआ।

(**तिव्वतपर जहाद**)—हैदर कलमका ही नही तलवारका भी धनी था। 'गाजी' वनने की उसकी वडी इच्छा थी, जिसके लिये उसने तिव्वतके भीतरतक आक्रमण किया। अपने इतिहासमे वह लिखता है ९३४ हि० (२७ IV १५२७–१७८ VIII १५२८ ई०)मे सईद खानने मुझे अपने वेटे रशीद सुल्तानके साथ वालूर (वदरूशा और कश्मीरके बीचमे काफिरोके देश काफिरिस्तान) पर आक्रमण करनेके लिये भेजा। यहा हमने सफलतापूर्वक 'धर्मयुद्ध' किया, और विजयी हो वहुत भारी लूटके मालके साथ लौटे। ..९३८ हि० (१५ VIII १५३१—५ VII १५३२ ई०) के अन्तमे खान सईदने तिव्वतके काफिरिस्तान (लदाख) के साथ 'धर्मयुद्ध' किया, और मुझे पहले ही सेना देकर भेजा। मैंने वहुतसे किलोको लेकर तिव्वत (लदाख) देशके अधिक भागको अपने अधिकारमे कर लिया था, जब कि खान हमारे पास पहुचा। दोनोकी सेनामे पाच हजार आदमी थे। यह सख्या इतनी अधिक थी, जिसे सारा तिव्वत मिलकर जाडोमे खिला-पिला नही सकता था। खानने चार हजार सेना और इस्कन्दर मुल्तानके साथ मुझे कश्मीर भेजा, और खुद वल्ती-बालूर और तिव्वत (लदाख)के बीचमे जाडा विताया। (हैदरका यह वालूर गिलगितका इलाका है, और तिव्वतसे उसका मतलव लदाखसे है)। खान वल्तीमे 'धर्मयुद्ध' मे लगा रहा, फिर वसन्तमे वह तिव्वत (लदाख) लौटा। हैदरने कश्मीरमे पहुचकर वहाकी सेनाको हराया। कश्मीरके राजा मुहम्मदशाहने अपनी लडकी इस्कन्दर सुल्तानको व्याह दी, और सईद खानके नामसे खुतवा और सिक्का चलाना मजूर किया। कश्मीरसे लूटकी भारी सम्पत्ति ले हैदर वसन्तमे तिव्वत (लदाख) मे खानके पास पहुचा।"

अवकी खानने हैदरको उर-साग (वू-चाङ) की ओर भेजा, अर्थात् हैदर अव मुख्य तिव्वत-की ओर चला। खान उसे इस तरफ रवाना करके काशगर लौट गया। हैदर तिव्वतकी ओर वढते हुए ऐसी जगहपर पहुचा, जहापर साम रुकनेका रोग होता है (अर्थात् अधिक ऊचाईके कारण हवाके क्षीण होनेसे सास अधिक फूलने लगती है)। शायद वह लदाखसे यारकन्दकी ओर जानेवाले वडे डाडोपर जा रहा था। इसी समय ९३९ हि० (३ VIII १५३२–२४ VI १५३३ ई०) मे ४५ सालकी उमरमे सईद खान मर गया और हैदरके अनुसार इस इस्लामके 'गाजी'को अल्ला-मियाने स्वर्गमे पहुचाया। हैदरके अनुसार सईदने अपने अभियानोसे राज्यकी सम्पत्ति वहुत वढाई। मुगल, उज्वेक और चगताई तीनो उलुसोमे उसके समान वाण चलानेवाला कोई नही था। वह एकके वाद एक सात-आठ तीर छोड सकता था और सभी लक्ष्यपर जाकर लगते थे। वह वडे ही सुन्दर नस्तालीक अक्षर लिखता था। उसकी तुर्की और फारसी लिखावटोमे कोई गलती निकाल नही सकता था। वह तुर्कीमे गद्य-पद्य दोनो लिखता था। हैदरने सिर्फ एक वार उसे फारसीमे कविता करते देखा था। वह सेहतारा और चारतारा अच्छी तरह वजा सकता था—चारतारापर उसका हाथ ज्यादा खुला हुआ था। वह वाण वनानेमे वडा चतुर था, और हड्डीकी दस्तकारीका भी अच्छा ज्ञान रखता था। वह वडा उदार था।

१६ रशीद, अब्दुर् रशीद, सईद पुत्र (१५३३–५६ ई०)

सईद जब अन्दिजानमें बन्दीखानेमें पड़ा था, उस समय रशीद माके गर्भमें सात मासका था। वह ९१५ हि० (२१ IV १५०९—१२ III १५१० ई०) मे पैदा हुआ। बाबरके अनुसार उसका पूरा नाम अब्दुर्रशीद था। जिस समय खलील सुल्तानको शैबानी जानीवेगने अकसीमें मरवाया, उस समय खलील-पुत्र बाबा सुल्तान दूधपीता बच्चा था। सईद बाबाको अपने पुत्रसे भी ज्यादा मानता था, और ख्वाजा अलीबहादुरको उसने उसका अतावेग (अध्यापक-सरक्षक) बना दिया था। ख्वाजाका मुगोलिस्तानसे बहुत प्रेम था। उसने सईद खानसे प्रार्थना की, कि मुगोलिस्तान और किर्गिज प्रदेशको बाबा सुल्तानको दे दो, मैं स्वय बाबाको अपने साथ ले वहाका सारा प्रबन्ध ठीक-ठाक करूगा। खान राजी हो गया। बाबा सुल्तानके ससुरने मना किया—"अगर बाबा सुल्तानने एक बार उस देशपर अपना अधिकार स्थापित कर लिया, तो यहासे सभी मुगल मुगोलिस्तान चले जायेंगे, और खानको हानि पहुचेगी, इसलिये यही अच्छा है, कि बाबाकी जगह रशीदको मुगोलिस्तान भेजा जाय।" इतिहासकार हैदरका चचा बाबाका ससुर था, लेकिन वह रशीदका ज्यादा पक्षपाती था। सईद खानने अपने अधिकृत इलाकोका एक-तिहाई रशीद सुल्तानको देकर मुगोलिस्तान भेज दिया। ९४४ हि० (१० VI १५३७—१ V १५३८ ई०)में सुल्तानके मुगोलिस्तान पहुचनेपर मुहम्मद किर्गिजने सभी किर्गिजोंके साथ आकर सारे मुगोलिस्तानको अधीनता न स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। उज्बेकोने भी विरोध किया। उज्बेको और किर्गिजोंके विरोधके मारे रशीदको काशगर लौटनेके लिये मजबूर होना पडा। अपने सम्मिलित शत्रुओंके साथ लड़नेमें हानि देखकर रशीदको पीछे उज्बकोंके साथ समझौता करना पडा।

बाप (सईद खान)के मरनेके बाद रशीद मुगोलिस्तानका खान बना। सबसे पहले जो काम उसने किया, वह था अपने पिताके खैरखाहोका वध। २ अगस्त १५३३ (१० मुहर्रम ९४० हि०) को रशीद सुल्तानके आनेपर हैदरका चचा पिताकी मृत्युपर अफसोस प्रकट करने गया। आते ही रशीदने उसे तथा उसके मित्र अली सैयद दोनोको मरवा दिया, और हैदरके चचाकी जगहपर मिर्जा अली तगाईको नियुक्त कर यह हुक्म दे काशगर भेज दिया, कि हैदरके चचाके बच्चो और सबधियोको बिना कोई दया-माया दिखलाये बडी क्रूरतासे मारनेमें कोई कसर उठा न रखना। यह खबर सुनकर पूबसे मन्सूर खान भी रशीदके ऊपर चढ दौड़ा, लेकिन उसे खाली हाथ लौटना पडा। मन्सूरने रशीदको दबानेके लिये और भी प्रयत्न किये, पर उसे सफलता नही मिली। रशीदके अत्याचारोंसे भयभीत हो उसके अमीरोने विद्रोह किया, किन्तु रशीदने उनका दमन कर दिया। उसने अपनी सौतेली माताओ, चचाओ और बहिनोको भी निर्वासित कर दिया, जिनमे उसके बापकी चहेती बीबी जैनब सुल्तान खानम् भी थी। इधर जब उसने अपनोंमें इतना झगडा कर रखा था, उसी समय उत्तरमें उज्बेक-कजाक भी उसके दुश्मन थे, फिर अन्तर्वेदके उज्बेक-शैबानियोंसे मेल करनेके सिवा रशीदके लिये और कोई चारा नहीं था।

८७७ हि० (८ VI १४७२–२९ IV १४७३ ई०)मे यूनस खानने करातुकाईमे उज्बेक-कजाकोको हराया था। लेकिन उसके बाद मुगल उनसे बराबर हार रहे थे, केवल रशीद खानने एक बार उनको हराया। उस समय अन्तर्वेदके मगोलवशियोको चगताई कहा जाता था, और मुगोलिस्तानके चगेजवशियोको मोगल, लेकिन चगताई मोगलोके प्रति घृणा प्रदर्शित करते हुए उन्हे जाना (सीमान्ती) कहते थे, और मोगल चगताइयोको करावाना। १६वीं सदीके मध्यमें लिखते हुए हैदरने कहा है—"वर्तमान कालमे बादशाहोको छोडकर कोई चगताई नही रह गया है। और ये बादशाह है बाबर बादशाहके पुत्र। चगताइयोका स्थान (अब) कुछ दूसरे सभ्य लोगोने लिया है।" लेकिन रशीदका यह कहना गलत है। तैमूर-वशज बाबर माकी तरफसे अर्धमगोलोंसे सबध रखते भी बापकी ओरसे तुर्क था, मगोल या मोगल हरगिज नही। लेकिन भारतमे नवस्थापित बाबरका वश अपनेको मगोल (मुगल) कहनेके लिये तुला हुआ था, जिसका दुहराना

बाबर और हुमायू का कृपापात्र हैदर अपना फर्ज समझता था। हैदरके लिखनसे मालूम होता है, तुर्फान और काशगरके आसपासमे अब भी तीस हजार मुगल (मगोल) रहते थे, लेकिन मुगोलिस्तानको उज्बेको (कजाको) तथा किर्गिजोने ले लिया था। मगोल (मुगल) शब्दका कितना अनिश्चित प्रयोग उस समय हो रहा था, यह इसीसे मालूम होगा, कि हैदर किर्गिजोको भी मुगल-कबीलेमेंसे बतलाता है, जो कि "खाकानके साथ बराबर विद्रोह करते रहनेके कारण मुगलोसे अलग हो गये।" हैदरके समय सभी मुगल मुसलमान हो चुके थे, लेकिन किर्गिज अब भी काफिर (बौद्ध) थे। "इसीलिये उनका मुगलोसे झगडा रहता है।" साथ-साथ इस्लामके गाजीका यह भी कहना है—"जो मुगल मुसलमान नही हैं, उनका हमने अधिक नामोल्लेख नही किया है, क्योकि काफिर चाहे जमशेद और जोहाबके प्रतापको भी पा जाये, तो भी उसका जीवन याद रखने लायक नही होता।"*

९४४ हि० (१० VI १५३७–१ V १५३८ ई०)में रशीदने उज्बेक-कजाकोको करारी हार दी थी, जिसमे उनके खान ताहिरका भाई तुगुम और सैतीस सुल्तान मारे गये। कजाकोका उसने सप्तनदमे उच्छेद-सा कर दिया। अपने बापका अनुकरण करते हुये रशीदने भी अपने बेटे अब्दुल्लतीफ को सप्तनदमें बैठाया, और शैबानी-उज्बेकोसे मित्रता जारी रक्खी। ९५१ हि० (१५४४-१५४५ ई०) मे इस्सिक्कुलके तटपर ताशकन्दके खान नौरोज अहमद (बराक)से मुलाकात की। इसके कुछ समय ही बाद उज्बेक-कजाकोने फिर सप्तनदपर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। यह याद रखना चाहिये, कि अभीतक उज्बेक शब्द कजाक और शैबानी दोनोके लिए प्रयुक्त होता था, जो कि पीछे स्वय केवल अन्तर्वेदके शैबानी-अस्त्राखानी-मगीती खानोकी तुर्क प्रजाके लिये रूढ हो गया, और कजाक आधुनिक कजाकिस्तानमें रहनेवाले तुर्कोंको कहा जाने लगा। किर्गिज भी उस समयतक किर्गिज-कजाक कहे जाते थे, जो अन्तमे किर्गिजके नामसे मशहूर हुये।

रशीदका ज्येष्ठ पुत्र अब्दुल्लतीफ बापके जीवन हीमें कासिम खानके पुत्र अकनजरके साथ लडाई करते मारा गया। अकनजर किर्गिजो और कजाकोका खान था। अंग्रेज यात्री जेन्किन्सनके अनुसार १५५८ ई०के आसपास कजाको और किर्गिजोने ताशकन्द और काशगरमें बडी लूट-मार की, और चीनसे पश्चिमी-एसियाकी ओर जानेवाले वणिक्पथको काट दिया।

रशीद मुगोलिस्तानी खानोमे अन्तिम शक्तिशाली खान था।

१७. अब्दुल करीम, रशीद-पुत्र (–१५९३ ई०)

यह अकबरका समकालीन था और १५९३ ई०मे काशगरपर शासन करता था। अब्दुर्रशीदका तीसरा पुत्र अब्दुर्रहीम पिताकी आज्ञाके बिना ही तिब्बतमे जहाद करने गया, जहा वह मारा गया। कश्मीरपर कितने ही समयतक मुगोलिस्तानके खानोका अधिकार रहा, फिर १५८७ ई० के आसपास अकबरने कश्मीरको ले लिया।

१८ मुहम्मद खान (१६०३ ई०)

ईसाई साधु गोयेज आगरासे लाहौर, काबुल, बदख्शा होते १७०३ ई०मे यारकन्द पहुचा। उस वक्त मुहम्मद खान वहाका राजा था। गोयेज सालभर यारकन्दमे रहा। उस समय काशगर राज्यकी राजधानी यारकन्द थी। गोयेज सूचाव (चीन)मे अप्रैल १६०७ ई०में मर गया।

१९ इस्माईल खान

यारकन्दकी गद्दीपर पीछे इस्माईल बैठा।

बाबर और हैदरकी पलटनमें मुगल नामसे प्रसिद्ध तुर्क भी काफी सख्यामे आये थे। दिल्लीके पास-पडोस और रावलपिंडीके इलाकेमे इन मुगलोकी सख्या काफी थी। पश्चिमोत्तर प्रदेशके रास्तेपर भी वह जहा-तहा बस गये थे, इनमें चगताई (बाबरके अपने भाई-बंधो)की सख्या २३५९३ थी, और बरलसोकी १२१७३।

---

*इसी जगह हैदरने अपने ग्रथके बारेमे लिखा है—"यह तारीखे-रशीदी ९५३ हि० के जुल्हेजा महीनेके अन्त (फरवरी १५४७ ई०) में कश्मीरके नगरमे लिखी गई, जब कि मुझ मुहम्मद गुरगान-पुत्र हैदर मिर्जाको कश्मीरके सिंहासनपर बैठे पाच वर्ष हो गये थे।"

३ (४ मुगोलिस्तानी खान-वृक्ष)
(१३२१–१५६५ ई०)

स्रोत-ग्रन्थ

१. तारीख रशीदी (मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत्, लन्दन १८८८)
२ „ (Tr. E. D Ross, London 1895)
३ ओचर्क इस्तोरिइ सेमिरेच्या (व व वर्तोल्द)

अध्याय ५

सिबिरखान

(१५००—१६५९ ई०)

येरमकके सिबिर नगरके ध्वस और पश्चिमी साइबेरियापर रूसके शासनके स्थापित होनेकी बात कहते हुये हमने सिबिरके खान कूचुमका जिक्र किया था। १७ वी सदीमें साइबेरियामे बसनेवाली जातियोके बारेमे भी हम बतला चुके है।

सिबिरके खान भी अपना सबध छिङ्-गिस्-पुत्र जू-छिके पुत्र शैबान खानसे जोडते है, जो कि बा-तू खानका भाई था। शैबानके बाद उसके पुत्र बा-तू खान, तत्पुत्र जूजीबुका, तत्पुत्र बादाकुल, तत्पुत्र मगू तेमूर, तत्पुत्र तुकाबेक, तत्पुत्र अलीओगलान, तत्पुत्र हाजी मुहम्मद खान, तत्पुत्र इलबक (या ईबक), तत्पुत्र मुर्तजा, तत्पुत्र कूचुमखानके पास पहुचकर हम येरमकके समकालमे आ जाते है। ७ नवम्बर १५८१ ई० मे कूचुमको ही हराकर येरमकने उसकी राजधानी सिबिरको दखल किया था। कूचुमके बाद उसके पुत्रो अली और इशिमने कुछ समय तक शासन किया। इशिमका पुत्र अबले गिराई और उसके बाद इशिमके भाई चुवाकके पुत्र दौलात गिराईने शासन किया। साइबेरिया जैसे सभ्यताके छोरपर बसे देशके बाकायदा इतिहास लिखनेकी सम्भावना नही हो सकती थी, इसलिये इन खानोके बारेमे बहुत बाते हमे मालूम नही है। वस्तुत कबीलेशाही-धर्ममे इतिहास द्वारा अमर होनेकी सभावना न देख शासकोका सामन्तशाही-धर्मकी तरफ झुकनेका एक कारण यह भी है, कि सामन्तशाही पुरोहित अपने इतिहास-ग्रथो या पुराणो द्वारा अपने यजमानोको अमर कर देनेकी क्षमता रखते थे। सिबिरतक इस्लाम पहुचा तो था, लेकिन अभी वहाके लोगोपर उसका गहरा प्रभाव नही पडा था। बा-तूके वशके खतम होनेपर सुवर्ण-ओर्दूके सिंहासनपर शैबानी-वशज खिजिरखा बैठा, जो कि मङ्-गू तेमूरका सबधी था। खिजिरखाका सिक्का ख्वारेज्ममें भी मिला है, जिससे जान पडता है, शायद ख्वारेज्मपर भी उसका अधिकार था। मङ्-गू तेमूरके छ पुत्रोमे किपचकका खान पुलाद या पोलाद-तेमूर है। इसने किपचक खान अजीजको १३६७ ई० के आसपास मार डाला। पोलादके दो पुत्रोमे अरबशाहके वशजोने ख्वारेज्मपर शासन किया, और इब्राहिमके वशजोने बुखारापर, यह हम बतला आये है। मेङ-गू तेमूरके पौत्र हाजी मुहम्मद खानके पुत्र ईबकसे हम सिबिरके खानोपर पहुचते है।

१ इबक, हाजी मुहम्मद-पुत्र (१४९३ ई०)

ईबक या इलबक उस समय हुआ, जब कि जू-छि-उलुस विशृखलित-सा हो चुका था। साइबेरिया और बश्किरोके छोटे-छोटे राजा इसे अपना अधिराज मानते थे। पुराने पवाडोमे इसे कजानका जार उपक कहा गया है। इसने अपनी बहिनका व्याह साइबेरियाके शासक मारसे किया था, जिसे झगडा हो जानेके कारण पीछे इसने मार डाला। उसके बाद वह त्यूमेन (प० साइबेरिया) प्रदेशका राजा हुआ। ईबक १४९३ ई० के बाद किसी समय मरा।

२ मुर्त्तुजा, ईबक-पुत्र

इसके शासनकालमे उज्बेक-उलुसका अधिकाश भाग मुहम्मद शैबानी और इल्बसंके नेतृत्वमे अन्तर्वेद और ख्वारेज्ममे चला गया। जिसका कारण था पूरबमे मगोल राजा अलतन खानके

नेतृत्वमे मगोलो द्वारा कल्मकोपर भारी प्रहार पडनेसे उनका पश्चिमकी ओर भागने हुए उज्बेकोके ऊपर पडना। उन्हे कल्मकोकी वाढने डुवाना चाहा, और उवर तेमूरी साम्राज्यके नष्ट-भ्रष्ट होनेके कारण दक्षिणसे न्यौता आया। उज्बेक-उलुसमेंसे जो यहा रह गये, वह मुर्त्तुजाको अपना खान मानते रहे। मुर्त्तुजाने नोगाइयोपर वडा अत्याचार किया, जिसका वदला पीछे उन्होने उसके पुत्र कूचुमको मारकर लिया।

३ कूचुम, मुर्त्तुजा-पुत्र (१५५५–९५ ई०)

१५५६ ई० में सिवरके खान यादगारने रूमी जारके पास कर न भेजनेका यह कारण वतलाया था, कि शवानी राजकुमार हमारे देशमे लूट-मार कर रहा है। यह शैवानी राजकुमार कूचुम खान था, जो उस समय सिविरसे पश्चिमके त्यूमन प्रदेशका शासक था। १५६३ ई० के आसपास कूचुमने यादगारको हटाकर सिविर राजवानी दखल कर ली। १५६९ ई० मे रूसी उसे सिविरका जार (राजा) कहते थे, जिसे रूसी जारने एक सधि द्वारा अपने सरक्षणमें ले लिया था। सरक्षणकी एक शर्त यह थी, कि सिविर खान हर साल सेवलकी हजार छाले और स्क्वाइरलो (गिलहरी) की हजार छाले प्रतिवर्ष भेजा करेगा। इस सोनेके मुहर लगे सधि-पत्रको चावुकोफ साइवेरिया ले गया। कूचुमकी एक वीवी कजानके किसी छोटे खानकी लडकी थी, जिसके साथ कितने ही रूसी और चुवाश गुलाम भी सिविर गये थे। उसकी दूसरी दो वीवियां मिर्जा दौलतवेगकी लडकियां थीं। इस प्रकार सभ्यताके सीमान्तपर वसे होनेपर भी सिविर नगरीमे सभ्यताके सदेशवाहक स्त्री-पुरुष पहुच चुके थे। लेकिन कूचुमकी प्रजामे अभी वर्वर अवस्थामे रहनेवाली कितनी ही जातियां थीं। इर्तिश और तोवोलके कितने ही तारतार ओर्दू तथा वारावीनके तारतार भी इसे अपना खान मानने थे। इसीके समय त्यूमनमें रूसियोंके साथ मिला हुआ एक अर्ध-स्वतत्र राजा रहता था। इस तरह कूचुमका राज्य तूराके मुहानेसे अधिक पश्चिम नही था। तरखनके तारतार इसकी अन्तिम प्रजा थे। तोवोलके सबसे नजदीकवाले वश्किर और ओस्तियाक कवीले भी कूचुमके अधीन थे। कहते हैं, कूचुम पहला खान था, जिसने साइवेरियामें इस्लामका प्रवेश कराया, लेकिन अभी वह वहुत फैला नहीं था। उसने अपने पिता मुर्त्तुजाको लिखा, जिसपर उसने एक आखुन (वडे मुल्ला) और कई मुल्लाओंके साथ अपने पुत्र अहमद गिराईको कजानसे इस्लामके प्रचारके लिये कूचुमके पास भेजा। कूचुमने प्रजाको जवर्दस्ती मुसलमान वनानेकी कोशिश की, तो भी वह अभी तारतारोको पूरी तौरसे मुसलमान वनानेमे सफल नहीं हुआ था। इर्तिश-उपत्यकाके तारतार अब भी मूर्तिपूजक थे। रूसी यात्री मुलरसे यालीनिश तारतारोंके एक सरदार (वी) ने कहा था अपनी जवानीसे ही हम अपने मा-वाप, अपनी प्रजा तथा पडोसियोंके साथ सदा मूर्तिपूजक रहे। तोवोल्स्क और देमियान्स्कोयके वीचके निवासी लेवाउज्की ओर्दूके तारतार तथा तूरिन्स्कके पडोसवाले तारतार भी तवतक मूर्तिपूजक रहे, जवतक ओस्तियाकोके साथमे उन्हे ईसाई नहीं वना लिया गया। वारविन्स्की कवीलेके वहुतसे लोग १८वीं सदीतक मूर्तिपूजक रहे, यद्यपि उनके इलाकेमे वहुत पहले कूचुमके समयमें ही मुसलमान पहुच चुके थे। एक दूसरे रूसी लेखक फिशरके अनुसार निजार-उपत्यकाके तूरिन्स्क तारतारोंके कितने ही परिवार १६३९ ई० तक मूर्तिपूजक रहे।

७ नवम्बर १५८१ ई० को येरमकने किस तरह कूचुमकी राजवानी सिविरपर अधिकार किया, यह हम वतला चुके हैं। १७ या १८ अगस्त १५८४ ई० को येरमक लडाईमें हारकर अपने कवचके भारी वोझके कारण नदीमे डूवकर मर गया, लेकिन उससे रूसी अधिकारको साइवेरियामे क्षति नहीं पहुची। येरमक और उसके साथियोका स्थान दूसरे रूसी वरावर लेते रहे। येरमककी मृत्युके दो साल वाद १५९६ ई० के वसन्तमे वोयवोद वासिली वोरिस-पुत्र सूकिन और इवान म्यास्नोईके साथ तीन सौ रूसी सैनिक आये—उन्होने युगुरके पहाडो और ओव नदीके रास्ते चढाई की। १० जुलाई १५८६ ई० को सूकिन तारतारोंके एक पुराने किले चिंगीपर पहुचा, जो कि तुरा नदीके तटपर था। वहा उसने

त्यूमनके नामसे एक नगर बसाया, जो आजकल पश्चिमी साइबेरियाका एक जिला है । त्यूमन तुरा नदीके दक्षिण तटपर बसा उरालसे पूर्व रूसियोंकी प्रथम स्थायी वस्ती थी । रूसियोंने बहुत आसानीसे तुरा, पिशिमा, इसेत, तोदा और तबोलकी उपत्यकाओंके तारतारोंको अपना करद बना लिया और कुछ ही समय बाद सैदिक खानको भी अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। सैदिक कूचुमसे पहलेके सिबिर-खानोंका वंशज था।

कूचुम अब भी हाथमें नहीं आया था। वह भागकर नोगाइयोंके भीतर बराबिनके मैदानोंमें चला गया, जहांसे १५९० ई०में उसने तोबोल्स्कके पासवाले इलाकेपर आक्रमण किया, और रूसी प्रजा बननेके कारण कौरदक और सालिन्स्कके तारतारोंको लूटा। इसपर तोबोल्स्कके नये वोयवोद राजुल (क्न्याज) कोल्जोफ-मोसाल्स्कीने कुछ रूसी और तारतार सैनिकोंके साथ अगले साल जुलाई १५९१ ई०में कूचुमके विरुद्ध अभियान किया, और वह चिलिकू झीलके पास इशिमके तटपर कूचुमको हराकर उसकी दो बेगमों, एक पुत्र (अब्दुल्खैर) और बहुतसी लूटी हुई सम्पत्तिको लेकर वह लौटा। १५९४ ई० मे रूसियोंने तारानगरका निर्माण किया, जिसके लिये जारने राजुल अन्द्रेइ वासिली-पुत्र लेन्कोइको वोयवोद नियुक्त किया। वह मास्कोसे एक सौ पैंतालीस स्त्रेलत्सी, सौ कजान-तारतार, तीन सौ बाश्किर, पचास पोल और पचास पोडकसाक भटोंको साथ लेकर आया था। त्यूमनसे भी उसके साथ कितने ही लोग आये थे, जिनमें लियुवानी, चेरकासी, निर्वासित-कसाक, तथा कुछ साइबेरियाके तारतार थे। इस सेनामें अधिकांश सवार थे। उनके पास तोपखाना और काफी गोला-बारूद था। पहले नगरको तारा नदीके तटपर बसानेका ख्याल था, किन्तु पीछे विचार बदलकर उसे इर्तिशकी शाखा अगरकापर बसाया गया, पर नाम तारा ही रहा। रूसी अब कूचुमको दबानेके लिये उतारू थे। कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये कहा गया, और यह भी वचन दिया गया, कि छोटे पुत्रोंमेंसे एक तथा दो-तीन प्रमुख तारतारोंको जामिनके तौरपर मास्को भेज देनेपर बड़े लड़के अबुल्खैर तथा दूसरे सभ्रान्त बंदियोंको लौटा दिया जायगा। अबुल्खैरने भी जार फ्योदोरकी उदारताकी प्रशंसा करते हुये बापको चिट्ठी लिखी। कूचुमने जवाब दिया—"मैंने येरमकको सिबिर नहीं दिया, यद्यपि उसने उसे जीत लिया। मैं शांतिसे रहना चाहता हूं, यदि इर्तिशके किनारेको सीमान्त मान लिया जाय।"

१५९५ ई० में फ्योदोर येलिज्की नया वोयवोद होकर आया। उसने तुरन्त कूचुम और उसके मित्र नोगाई खान अलीके ऊपर चढ़ाई करनी चाही। तोबोल्स्क और त्यूमनसे भी मदद आई, जिसमें पांच तोपें भी थीं। पहले जाड़ोंमें ९० कसाक-सैनिक भेजे गये, जो अयालिन्स्कके अट्ठाईस तारतारोंके साथ लौटे। कूचुम इन कसाकोंको अपने रहनेकी जगह ऊपरी इर्तिशमें ले जाना चाहता था। इस समय वह ओबके जलप्रपातसे दो दिन आगे गाडिया-नगरमें डेरा डाले पड़ा था। फिर वोयवोदने नया अभियान भेजा, जो कूचुमके रहनेकी जगहको नष्ट करके तारा लौट गया। लेकिन कूचुम अभी दबा नहीं था। १५९६ ई० के वसन्तमें दोमोशेरोफके अधीन तेतालीस सैनिकोंका अभियान भेजा गया वह २९ मार्चको बरफानी जूतोंपर रवाना हुये। मामूली संघर्षके बाद रास्तेके चमगुल, लुगुई, लुवा, केलेमा, तुराश, बरमा (उलुकबरमा), किरकिपी आदि गांवोंने अधीनता स्वीकार की। इसी समय नोगाई मिर्जा चिन, और कितनोंने भी अधीनता स्वीकार की, लेकिन कूचुम अब भी प्रतिरोधके लिये तैयार था। अगस्त १५९८ ई० में ३९७ रूसी सैनिकोंके साथ अन्द्रेइ बोयेकोफ कूचुमके विरुद्ध ओब नदीकी ओर चला। चारों ओर फसलें खड़े खेतोंके बीचमें कूचुम अपने परिवार तथा पांचसौ अनुयायियोंके साथ छिपा हुआ था। २ सितम्बरको सूर्यास्तसे पहले रूसियोंने आक्रमण कर दिया। सारे दिन लड़ाई होती रही, जिसमें कूचुमका एक भाई, एक पुत्र, राजकुमार इलितन और पांच-छ अमीर, दस मिर्जा और एक सौ पचास सैनिक मारे गये। शामके वक्त नदीकी ओर शत्रु भगे। उनमें एक सौसे ज्यादा नदीमें डूब गये, पचास बन्दी बने, और कुछ लोग नावों द्वारा भागनेमें सफल हुये। बोयकोफको बहुतसे लूटके माल के अतिरिक्त आठ बेगमें, पांच कुमारियां और पांच राजकुमार हाथ लगे। बोयकोफने तारा

लौटकर जार बोरिस गदुनोफको अपनी सफलताके बारेमे लिखा—"कूचुम खान दो आदमियोके साथ ओबके किनारे-किनारे चाता प्रदेशमे चला गया।" वोयकोफने समझा-बुझाकर कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार करना चाहा। उसने इसके लिये मुल्ला तूल मेहमतको भेजा। उस वक्त ओब नदीके तटके एक जगलमें रूसियो द्वारा मारे गये अपने तारतारोंकी लाशोंके बीचमे अधा-बूढा कूचुम खान तीन बेटो और तीस अनुचरोके साथ एक पेडके नीचे बैठा था। मुल्लाने कहा—"अधीनता स्वीकार कर लो, फिर तुम मास्कोमें जाकर अपने परिवारके साथ आरामसे रह सकते हो। जार तुम्हारे साथ बहुत अच्छा बर्ताव करेगा।" बूढेका जवाब था—"जब मेरे दिन भले थे, मै समृद्ध और सबल था, तब मैं नही गया, तो क्या इस समय मै अपमानपूर्ण मृत्युके लिये वहा जाऊ? मै अन्धा और बहरा हू, गरीब और बेचारा हू। मै अपनी सम्पत्तिके विनाशके लिये अफसोस नही करता, लेकिन मै अपने प्यारे पुत्र असमानकके लिये अफसोस करता हू, जिसे रूसी पकड ले गये। राज्यके बिना भी मै उसके साथ सतोपमे रह सकता था, चाहे मेरी दूसरी बीबिया और बच्चे न भी होते। अब मैं अपने बचे-खुचे परिवारको बुखारा भेज दूगा और स्वय नोगा-इयोमे चला जाऊगा।" कूचुमके पास उस समय न गरम कपडे थे, और न घोडे ही। उसने अपनी पुरानी प्रजा चातोसे कुछ चीजे भीखके तौरपर मागी। इसके बाद वह युद्धक्षेत्रमें पहुचा। फिर दो दिनतक मुर्दोंको दफनानेमे लगा रहा। इसके बाद एक घोडेपर चढकर वह रूसी इतिहासकार करमजिनके अनुसार "इतिहाससे विलुप्त हो गया।"

कूचुम इर्तिशके रास्ते सइसान झील (नोर) की ओर जा कलमकोंके देशमे कुछ समय ठहरा, फिर उनके कितने ही घोडोको लूट कर इशिमके जिलेमे गया। कलमकोने पीछा करके इशिम नदीके पास करगालचेन झीलपर उसपर आक्रमण किया। उसके कितने ही अनुचर मारे गये, और कूचुम नोगाइयो (मगुतो) मे भाग गया। लेकिन, नोगाइयोको कूचुमके बाप मुर्तुजाके हाथो बहुत कष्ट उठाना पडा था, इसलिये उन्होंने बूढे कूचुमको मारकर उसका बदला लिया। कूचुमके परिवारके जो लोग रूसियोके हाथमे पडे थे, वह जनवरी १५९९ ई० मे मास्को पहुचे। खानके पुत्रो और पुत्रियोको अमीरो और धनी व्यापारियोके घरोमे रखकर जारने उनके लिये मामूली पेंशन निश्चित कर दी। महमेतकुल रूसी सेनामे शामिल हुआ, और १५९० ई० में रूसकी तरफ से स्वीडनके विरुद्ध लडा। १५९८ ई० में क्रिमियाके तारतारोके विरुद्ध भी वह जार बोरिस गदुनोफके साथ गया था। कूचुमका पुत्र अबुल्खैर १५९१ ई० में ईसाई बनकर अन्द्रेई नामसे प्रसिद्ध हुआ, और कूचुमके पुत्र अलीका लडका अल्पअर्सलन पीछे कासिमोफका खान बना।

४ अली, कूचुम-पुत्र (—१५९८ ई०)

१५९८ ई० की लडाईमे बापके साथ अली भी था। इस पराजयके बाद वह जहा-तहा घुमन्तू जीवन बिताता घूमता रहा। अभी रूसियोंके शासनके आरम्भिक दिन थे। अली अपने अनुयायियोको जमा करके वह इर्तिश, इशिम और तबोलकी उपत्यकाओमे लूट-मार करते यायिक नदी तथा कूफा तक धावा करने लगा। १६०३ ई० मे वह लगातार रूसियोके साथ छेडखानी करता रहा। १६०६ ई० मे पहली बार उसके आदमी ताराके जिलेमे दिखलाई पडे, जहा उन्होंने रूसी बस्तियोको लूटा। रूसियोने पीछा करके अलीकी माको पकड लिया, जिसे वह त्यूमन ले गये। १६०७ ई० मे कूचुमके पुत्र असिम, इशिम और कचुवार कलमकोके झडेके नीचे हो, त्यूमन जिलेपर आक्रमण कर वहासे रूसी बच्चो और औरतोको पकड ले गये। फिर एक नोगाई मुर्जा कनाईके साथ दो सौ आदमियोको ले उन्होंने तोबोल्स्कके आसपास लूट-मार की। पीछा करके शमशीके जगलोमे अलीकी स्त्री दो पुत्र, असिमकी दो बीबियो और दो लड-कियो, तथा अलीकी एक बहिनको पकडकर रूसी त्यूमन ले गये। आखिरमे किबिरली झीलके पास दो दिनके युद्धमे जो बन्दी पकडे गये, उनमे अली भी था। उसे बन्दी बनाकर मास्को भेज दिया गया। वहा कुछ समय रहनेके बाद उसे यारोस्लाव्ल नगरमे नजरबन्द कर दिया गया, जहा १६३८ ई० के बाद वह किसी समय मरा।

५ इशिम, कूचुम-पुत्र (––१६१६ ई०)

१६१६ ई० मे इशिम सलवर और कोशुर दो कलमक राजकुमारोके साथ ऊपरी इर्तिशमे सेमीप्लातिन्स्कमे रहता था। वहासे वह साइबेरियाके नगरोमे ऊफा तक लूट-मार करता था। अलीके पकडे जानेके बाद इसने अपनेको खान घोषित किया था। १६१८ ई० में कलमकोके साथ मिलकर इसने रूसियोपर आक्रमण किया, जिसमे इर्तिशके मैदानो और तोब्रोलके बीचमे उसे बहुत बुरी तरहसे हारना पडा। इस लडाईमे इसके बहुत-से आदमी काम आये। १६२० ई० मे इशिम कल्कम सेचक थैशीके साथ मिल कर शूचिये झीलकी ओर जा खबर लाया, कि पूर्वी मगोलोने कलमकोको बुरी तरह हराया है, और वह पश्चिमकी ओर भागे जा रहे है। इसके बाद इशिम तोरगुत राजा उरलुककी लडकीसे ब्याह करके अपने ससुरके साथ रहता रहा। उरलुक वोल्गा-कलमकोका प्रथम सरदार था। इस समय कलमक पश्चिमी साइबेरियाके स्तेपीमे रूसी सीमाके दक्षिणकी भूमिमें रह रहे थे। १६२२ ई० मे इशिम त्यूमनसे सात दिनके रास्तेपर तोबोल-तटपर अवस्थित खामा करागाईमे रहता था। इसके बाद वह ऊफा शहरके पास चला गया।

६. अबलइ गिराई, इशिम-पुत्र (१६३५–१६५० ई०)

अबलइ गिराई भी कलमकोके साथ मिलकर लूट-पाट करता था। कल्मक सरदार कोकशुल, उरलुक और बाइबेगिश इसके दोस्त थे, जिनकी सहायतासे इशिमने बराबिनके तारतारोको कल्मकोका करद बनाया। इस प्रकार सहायता करके अबलइ गिराईने कलमकोके थैशियो (राजाओ) तेलेगुत राजा ओबक, कुरचाकिश सैची केशेसके साथ मित्रता बढाई। अबलइ अपनी लूट-मार जारी रखखे रहा। १६३२ ई० मे वह इसेतके तटपर अलीवयेफ यूर्ति नामक गावमे था। १६३५ ई० मे इसेत-तट, वेर्ख्ने-निजिन्सकया और चूबावोफामे था। इसी साल रूसियोने इसके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन कुछ कलमकोके मारे जानेके सिवा उसका कोई फल नही हुआ। १६३६ ई० मे ऊफासे अभियान भेजा गया। बहुतसे कलमक मारे गये। अबलइ ५४ कलमकोके साथ पकड़कर ऊफा लाया गया, जहासे उसे मास्को भेज दिया गया। पीछे वहासे उसके चचेरे भाई दौलत गिराईको उसके मरनेकी खबर भेज दी गई।

७ दौलत गिराई, चुवाक-पुत्र (१६३७ ई०)

१६३७ ई० में तारामे बुखाराके बाईस व्यापारी आये, जिनके साथ दौलतका दूत भी था। १६४० ई० में कलमकोको साथ ले दौलतने तरखन्स्कोये ओस्त्रोग (राजकुमार द्वीप) को लूटा। इसपर १६४१ ई० मे रूसियोने दो सौ बहत्तर सैनिक भेजे, जिन्होने उनमेंसे बहुतोको मारा और कितनो को बदी बनाया। बदियोमे तोरगुत-सरदार उरलुकका एक भतीजा और एक भतीजी भी थी। १६४६, १६४८, १६४९, १६५१ और १६५५ ई० मे कूचुमवशी राजकुमारोकी लूट-मारकी खबर लगती रही। १६५९ ई० मे बुगई, कुचुक, कचुवार और चूचेलेईने एक हजार आदमियोके साथ कितने ही कलमक थैशियोंसे मिलकर बहुत-सी रूसी बस्तियोको लूटा, और ३५८ पुरुषो और ३७५ स्त्रियोको बन्दी बनाकर ले गये। पीछे इन बदियोमेंसे बहुतोको जुगारियाके खुन थैशीके बीचमे पडनेपर छोड दिया। अब वस्तुत सिबिरके खानोकी प्रभुता खतम हो चुकी थी, और यायिक (उराल) नदीके पूरबवाले प्रदेशके स्वामी कलमक थे। उन्हीमे सिबिर खानके आदमी विलीन हो गये, और आगे इतिहासमे उनका नाम नहीं मिलता।

३ (५ सिविरखान-वंशवृक्ष)
(१५००-१६५९ ई०)
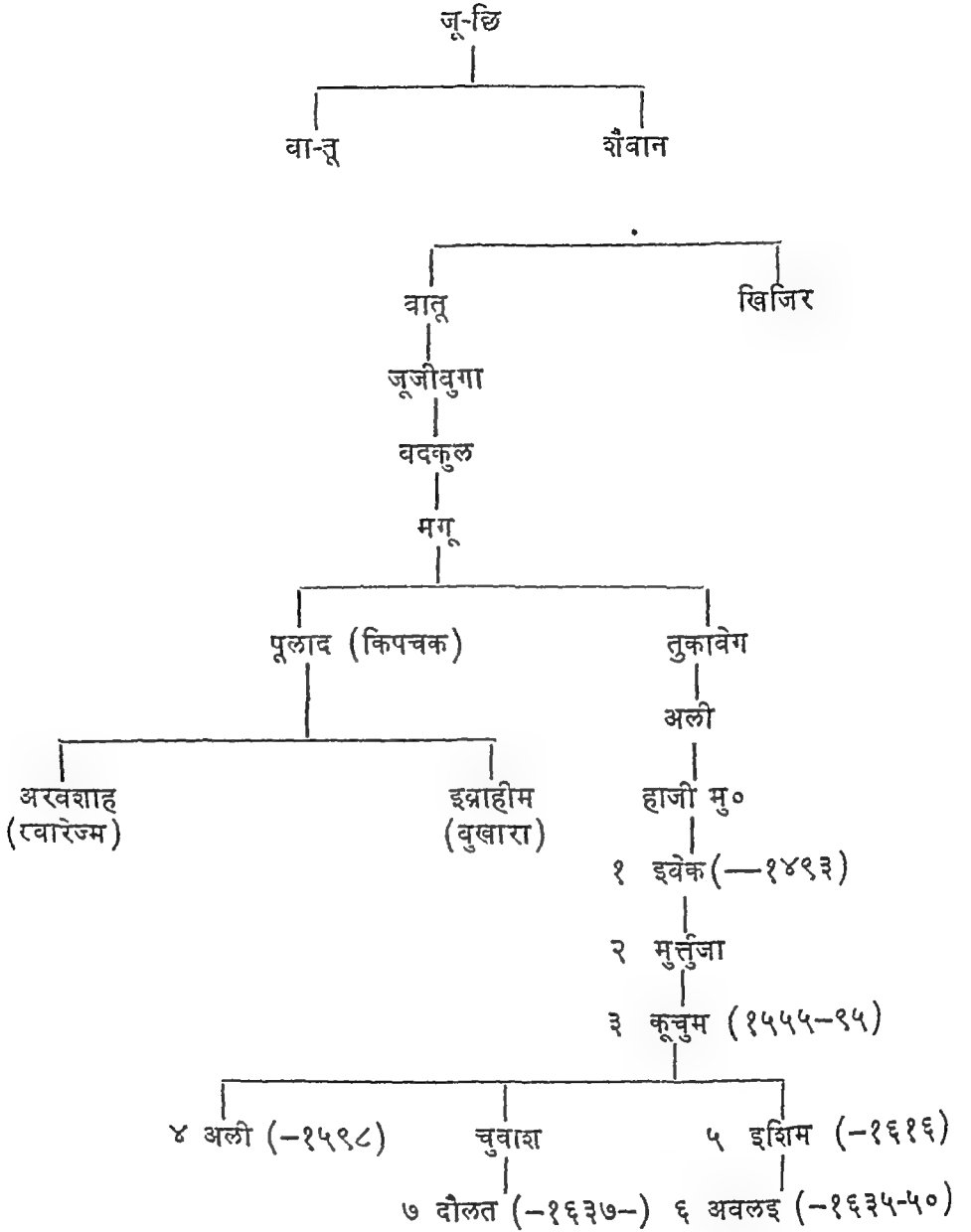
स्रोत ग्रन्थ

१ ओचेर्क पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सि इ सिविरि (मास्को १९४६)
२. History of Mongol (H H. Howorth)

अध्याय ६

जुङ्गर-साम्राज्य

(१५८२–१७५७ ई०)

कल्मक-मंगोल—मगोलोकी एक शाखाका नाम कल्मक था। इनका मगोल नाम तोरगुत था, लेकिन मुसलमान और रूसी लेखक इन्हे अधिकतर कल्मकके नामसे पुकारते है। १६०० ई० (अर्थात् अकवरकी मृत्युसे पाच साल पूर्व) के पहले अल्ताई पर्वतमालाके पश्चिममे कल्मक नही थे। पूर्वी मगोलोके शक्तिशाली राजा अल्तन खानने जव १६२० ई० मे तोरगुतोको बुरी तरहसे हराया, तो वह अपने सरदारो खराखुला, दालय और मेरेगनके नेतृत्वमे पश्चिमकी ओर भागने लगे और फिर यम्वा नदी, उराल पर्वतमालासे पूर्व और अल्ताई पर्वतमालाके पश्चिममें छा गये। १६वी सदी तक यह भूभाग उज्वेक-कजाको (शैवानी और कजाक) से नोगाइयोंके हाथमें चला गया था। वह इस भूमिमे अपना घुमन्तू-जीवन विताते थे। कल्मकोका उनसे सघर्ष होने लगा। कल्मक लगातार पश्चिमकी ओर वढते वश्किरोंके देशमे पहुचे। कल्मक राजा उरुसलन थैशीने वश्किरोंसे कर मागा—वश्किर अभी तक नोगाइयोंके अधीन थे, जिससे नोगा-इयोसे झगडेकी नौवत आ गई। इस्माईल-पुत्र दीनवेइका पुत्र कनाई उस वक्त नोगाइयोका राजा था। तोरगुत (कल्मक) सरदार उरलुक और उसके पुत्र दाइशिंगने नोगाई खानके विद्रोही सलतानियासे मिलकर १६३३ ई०में कनाईपर चढाई की। कनाई रूसके अधीन था, इसलिये जारकी सरकारने तोवोल्स्क, त्यूमन और तुराके रूसी सेनापतियोको उसकी मदद करनेके लिये हुक्म दिया।

१६४३ ई०में रूसियोने आक्रमण करके उरलुक और उसके कुछ पुत्र-पौत्रोको भी मार डाला। इसके वाद उरलुक-पुत्र येलदेङ और लोब्जाङने यायिक पार कर वोल्गाके मैदानोमे प्रवेश किया, और नोगाइयोको किताई-किपचक, मैलवाश और येदिस्सन (एतिसन) के तीन भागोमे वाट दिया। साथ ही उन्होने उलाङतुमान (लाल ऊटवाले ओर्दू)के तुर्कमानोको भी उनकी भूमि येम्वाके दक्षिणी भागसे हटा दिया। अव वोल्गाके दोनो पारका इलाका नोगाइयोंके हाथसे निकलकर कल्मकोंके हाथमें चला गया। इस प्रकार नोगाई अपनी मूल-भूमिसे वचित हुये। करीव डेढ शताब्दियो तक कल्मक इस भूमिमे छाये जरूर रहे, लेकिन अन्तमें फिर कजाक आकर आवाद हो गये, जिसके ही कारण आज यह भूमि कजाकस्तानके नामसे मशहूर है। पश्चिमी मगोलोको तोरगुत या कल्मक कहा जाता था, जव कि पूर्वी मगोल खलखा नामसे प्रसिद्ध थे।

(१) कल्मकोके भीतर ओइरोद, कुरी, तुला, तुमेत, वरगुत, कुरतुतके कवीले थे, जो अगारा नदी और वैकाल सरोवरके पश्चिममे रहते थे। हो सकता है, पश्चिमी मगोलोका कोई मुख्य सरदार कल्मक रहा हो, जिसके नामपर कवीलेका यह नाम पडा।

(२) उरियानकुत मगोल कोस्सागोल (झील)के पास रहते थे।

(३) सुवाइत (सूनित) कवतेरून (कैरून) भी मगोलोका कवीला था।

तायनखान (१४७०-१५४४ ई०) के पुत्रोंने आपसमे मगोलोका वटवारा किया था।

कल्मकोंके वाद ज्यादा शक्तिशाली खलखा मगोल थे। आज भी वाह्य-मगोलिया इन्हींकी है। खलखाके उन्चास झडे थे, अर्थात् ये उन्चास छोटे-छोटे कवीलोमे विभक्त था। इनके चार मुख्य भेद थे—(१) जस्सक्तुखानके पश्चिमी खलखा, (२) तूशीयेतूखानके उत्तरी खलखा, जो कि तुला और केरुलोन-उपत्यकाओमें रहते थे, (३) साइननोयनके मध्य खलखा, और (४) सेतजेनखानके पूर्वी खलखा।

मंगोलराजावलि—चीनसे मगोल-शासनके उठनेके बाद मगोलोकी शक्ति तितर-वितर हो गई थी, जिसको एक बार फिर एकत्रित करके १८७० ई० मे तायनखान सारे मगोलियाका शासक बना। तायनखानका वंश-वृक्ष निम्न प्रकार है—

३. (६ क. मंगोलिया-वंशवृक्ष)
(१३३२-१६०३ ई०)

छिङ-गिस् (१२०६–२७)
|
तूलुइ
|
कुविले (१२६०–९४)
|
छिङ-गेम् (चिङ-किन्)
|
धर्मपाल
|
बोयन्थू (१३११–२०)
|
युग-थेमूर
|
१ येगेन थेमूर (१३३३–६८–७०) अंतिम चीन-सम्राट

- २ विलिकतू (१३७०–७८)
- ३ उस्साखल (१३७८–८८)
  - ४ एङ्क के सोरिकतू (१३८८–९२)
  - ५ एल्वेक (१३९२–१४००)
    - ६ गुनथेमूर (१४००–३)
    - ७ उलशैथेमूर (१४०३–११)
      - ८ देल्वेक (१४११–१५)
  - खरगोत्सोक
    - १० अदसै (१४३४–३९)
      - ११ तैस्सोङ (१४३९–५२)
        - १३ केतकू (१४५३)
        - १४ मोलोन (१४५३–६३)
      - १२ अकवर्शी (१४५२-५३)
        - खर्गोतक्षोक
          - वोलखो पजनोङ
            - १६ तायन (१४७०–१५४८)
              - वरसावोल
                - गुनविलिक
                - अलतन (१५०७–८३)
              - नोरोवोलोद
                - १७ वोदी (१५४८–४७)
                - १८ कुतङ (१५४७–५७)
                - १९ सस्मकतू (१५५७–९२)
                - २० मेत्जेन (१५९२–१६०३)
      - १५ मदगोल (१४६३–७०)

उत्सुकेन
⋮
९ अदै (१४१५–३४)

तायनखान बहुत शक्तिशाली शासक था, लेकिन उसने बडी गलती यह की, कि राज्यको अपने ग्यारह पुत्रोमें बाट दिया। इसके ग्यारह पुत्र थे—(१) तोरोवोलोद, जिसका पुत्र वोदी तायनकी गद्दीपर बैठा, (२) उलुस बैशी, (३) वुर्सबोल, (४) अरसू, (५) अल्लिशान, (६) वतुशिर, (७) अरा, (८) गेरेबोल, (९) गेरेसजा, (१०) वुशिगुन, (११) गेरेतू। इस विभाजनके बाद मगोल शक्ति फिर दुर्बल हो गई, और छिङ्-गिस्के वशके दावेदार बहुतसे छोटे-छोटे खान हो गये।

अन्तर्-मंगोलिया—यह तायनखानके बडे पुत्रोंके हाथमें गई। अन्तर्-मगोलिया मचूरियाके पडोस मे थी, इसलिये दोनोकी घनिष्ठता बढ़ी, और अन्तमे मगोलोकी मददसे मचू नूर-हाचू या (ताई-चू) ने १५८३ ई०में अपने मचू (छिङ्)-वश (१५८३-१९१२ ई०)की स्थापना की, जिसके द्वारा मगोल सम्राटोंके स्थानपर स्थापित मिङ्-वश (१३६८–१६४४ ई०)का उच्छेद हो गया। चीनके ऊपर अधिकार करके मचुओने कलके अपने सहायक मगोलोंके ऊपर हाथ फेरा, और उन्हे अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। इस प्रकार अन्तर्-मगोलिया चीनका भाग बन गई।

बाह्य-मंगोलिया—इसे खलखा भी कहते है। यह तायनखानके छोटे लडकोंके हाथमे गई। १६८९ ई०में उनमें और उनके पश्चिमी पडोसी ओइरोद—कलमक—कबीलोंके बीचमें लडाई छिड गई। अन्तमे खलखा (बाह्य-मगोलियावालो)को ओइरोदोसे हारकर अपने कितने ही भूभागको गवाना पडा। कलमकोंके प्रहारसे मजबूर होनेपर खलखोने रूसकी अधीनता स्वीकार करके अपना बचाव करना चाहा, लेकिन इस समय मगोलियामें तिब्बतके दलाई लामाकी तरह एक बौद्ध संघराज—हु-तुक्-तू—का बहुत प्रभाव था। उसने यह कहकर रूसकी अधीनता स्वीकार करनेसे मना कर दिया, कि वह बौद्ध देश नही है। इसपर खलखोने चीनकी सहायता चाही। इस समय मचू-सम्राट् खाङ-सी (शेङ-चू १६६१-१७२३ ई०) चीनकी गद्दीपर था। उसने खलखोकी मदद की, और ओइरोदो (ओलिओतो)को असानीमे दबा दिया। १६९१ ई०में खाङ-सीने दोलोन-नोर (दक्षिणी मगोलिया) में खलखोकी एक बड़ी परिषद् बुलाई, जहापर एकत्रित होकर बाह्य-मगोलियाके राजुलोने चीन की अधीनता स्वीकार करते हुये अभय वर प्राप्त किया। तबसे प्राय मचू-वशके अतिम समय (१९११ ई०) तक बाह्य-मगोलियाने चीनकी अधीनता स्वीकार कर रक्खी, और प्रतिवर्ष आठ सफेद घोडे, और एक सफेद ऊट—नौ श्वेत—करके रूपमें चीन सम्राट्के पास भेजे जाते रहे, और चीनका 'अम्बन' (महामात्य) बाह्य-मगोलियाकी राजधानी उरगा (ताहुरे, आधुनिक उलानबातुर) मे रहता रहा। उसके अतिरिक्त कोब्दो (पश्चिमी मगोलिया) और उलियस्सुतैमें सैनिक राज्यपाल रहते थे।

कलमक (जुगर), ओइरोद (ओलियोत) खलखा मगोलोके प्रतिद्वद्वी थे, इसे हमने अभी देखा। यद्यपि चीनकी सहायतासे खलखोकी रक्षा हो गई, और कलमकोने खलखोके हाथ बडी बुरी तरहसे हार खाई, लेकिन तो भी कलमकोकी शक्ति अपनी पश्चिमी और दक्षिणी पडोसियोंपर बढती ही गई। पूर्वकी तरफ बढावके रुक जानेपर वह अपने सरदारो खराखुल, ताले और मेरेगनके नेतृत्वमे छू-मिश, ओब और तोबोलकी उपत्यकाओमे रहने लगे। कलमक पशुपाल थे, इसलिये चरागाहोके लिये उनका नोगाइयोंसे झगडा हो गया। नोगाइयोंके अधीनस्थ बाश्किरोंसे कर मागनेपर नोगाइयोंसे सघर्ष हुआ, यह हम बतला चुके है।

कलमकोकी शक्तिका सस्थापक तूमेतवशी अल्तन खान (१५०७–८३ ई०) को माना जाता है। इसने १५५२ ई० मे ओइरोतोंके नेताके तौरपर कजाकोंके खान तवक्कल शिगाई-पुत्र तथा ताहिर खानके वशजोको लडकर भगा दिया। तवक्कल ताशकन्द पहुचा, जहाका खान नौरोज अहमद (मृत्यु १५५६ ई०) था। तवक्कलने मगोलोंके विरुद्ध उससे मिलकर लडनेकी बात की, तो उसने जवाब दिया हमारे जैसे दस खान भी कलमकोका कुछ नही बिगाड सकते।

इस समय सप्तनद और उसके आसपासकी भूमिमें किर्गिज और कजाक दो घुमन्तू जातिया रहती थीं। ९९० हि० (१५८२ ई०) अर्थात् अकबरके समकालीन एक अज्ञात लेखकके अनुसार किर्गिज मगोलोंके वशके है, और उनके यहा कोई राजा नही होता—उसकी जगह उनके नेता बेक होते है, जो कि काफिर है। वह पहाडोमे रहते है। यदि कोई उनके ऊपर अभियान करता,

तो वह अपने परिवारको पहाडोमे छिपा देते, फिर शत्रुका मुकाबिला करते है। उनकी भूमि वहुत ठडी होनेसे सहायक होती है, जिसके कारण सफल विजेता भी उन्हे हाथमे नही रख सकता।

कजाक—काफिर किर्गिजोके पडोसी कजाक थे, जिनकी सख्या दो लाख परिवार थी। यह मुसलमान तथा केवल इमाम अबू-हनीफाके अनुयायी (हनफी) थे। इनके पास बहुतसे ऊट थे। यह अपने तम्बुओको गाडियोपर ले चलते थे। मुसलमान होनेकी वजहसे इनका सबध बुखारासे बहुत घनिष्ठ था। कजाकोके खान तवक्कलने १५९४ ई० मे जार फ्योदोरके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये अपने दूत मास्को भेजे। उस समय रूसी तवक्कलकको 'कजाको और कल्मकोका राजा' कहते थे, जिससे यह पता लगता है, कि १६वी सदीके अन्तमें उसने कल्मकोके विरुद्ध कोई सफलता प्राप्त की थी। अपनी मृत्युके समय तवक्कल तुर्किस्तान-शहर (निम्न सिर-उपत्यका) और काशगरका शासक था। ये दोनो नगर कजाकोके हाथमे प्राय १७२३ ई० तक रहे। १७ वी सदीमे कजाकोकी शक्ति बहुत मजबूत थी। उस वक्त वह सप्तनदपर भी अधिकार रखते थे, और उनका केन्द्र तुर्किस्तान और ताश्कन्दके नगर थे। उसी शताब्दीके अन्तमे ख्वारेज्म और वोल्गातट तक उनका प्रभुत्व फैला था। लेकिन इसी समय कजाकोके प्रतिद्वद्वी कल्मको (जुगरो)की शक्ति बढी। कल्मकोके राजा निम्न प्रकार थे—

जुंगर-(कल्मक) राजावलि— —१६३४ ई०

१	खराखुल या कराकुल	१६३४—५३ "
२	बातुर थैंची, खराखुल-पुत्र	१६५३—७१ "
३	सेङ्-गे, बातुर-पुत्र	१६७१—९७ "
४	गल्दन, गन्दन, बातुर-पुत्र	१६९७—१७२७ "
५	छेवङ्-रब्तन, सेङ्-गे-पुत्र	१७२७—४५ "
६	गल्दन, छेरिङ्-छेवङ्-पुत्र	१७४५—५० "
७	छेवङ्-दोर्जे, गल्दन छेरिङ्-पुत्र	—१७५५ "
८	दावा छेरिङ्, सेङ्-गे-वशज	१७५०—५७ "
९	अमुरसना, बातुर-थैंची-वशज	

१ खराखुल, कुतुगैतू अबूदा अबलई-पुत्र, ओनगोजो-पौत्र, अरखान चिङ्-सेन-प्रपौत्र (—१६३४ ई०)

तायन खानके समय (१४७०—१५४४ ई०), कल्मको [१ करइत (केरगुदी), २ जुगर, ३ देरवेत, ४ खोरोत (चोरोस)] की भूमि त्यानशान-पर्वतमालाके उत्तर तथा वोग्दोउला-पर्वतके पडोसमें थी। सोलहवी सदीमे इनका केन्द्र कुल्जाके आसपास इलि-उपत्यकामे था। खराखुल (चोरोस) मगोलोके खान खराखुलने १६३४ ई०के आसपास (शाहजहाके समय) ओइरोतोको एकताबद्ध करके अपनी शक्तिको बढानेकी कोशिश की, लेकिन उसमे सफलता उसके पुत्र बातुर थैंची (तैंची, तैंसी, थैंशी) को हुई।

२ बातुर थैंची, खराखुल-पुत्र (१६३४—५३ ई०)

१६३४ ई० मे बातुर (बहादुर) ने अपने बापका राज्य पा खुन-थैंचीकी उपाधि धारण की। इसके समय ओइरोतो या जुगरो (वामदल) का राज्य दृढ हुआ। इसने १६४० ई०मे कूरिल्ताई (महापरिषद्) बुलाई, जिसमें रूसके राज्यमे रहनेवाले कल्मकोके भी प्रतिनिधि आये थे। यहा पर बातुरको खुन-थैंची (सारे कल्मकोका सरदार) बनाया गया। बातुर ऊपरी इर्तिश-उपत्यका तथा जाइसन सरोवरके पासकी भूमिमे चारण करता था। इसने तवक्कल खानके भाई और उत्तराधिकारी कजाकोंके खान इशिमसे सफल लडाइया की। १६५३ ई०में बातुरके मरनेके समय कल्मक एकताबद्ध हो चुके थे।

अल्ताईके उत्तरमें रहनेके कारण वातुरके कल्मकोको उत्तरी एलिथोत (ओइरोत) भी कहा जाता था, और दाहिनेकी ओर प्रवास करनेके कारण जुगर—सेगोनगर—या वामपक्ष भी। वातुरने तोर्गुतोके राजा उर्लुककी लडकी व्याही थी, लेकिन पीछे उर्लुकसे झगडा हो गया, जिसके कारण भी तोर्गुत पश्चिमकी ओर प्रयाण करनेके लिये मजबूर हुये। करा-ईर्तिशकी उपत्यकामें वातुरके रूसी तथा खलखा पडोसी हुये। रूसी अवतक साइवेरियाके खानोकी शक्तिको छिप-भिन्न कर चुके थे। ताराके आसपासके वरावित्स्की तथा दूसरे तुर्की कवीलोपर वातुर थैंचीका दावा था। उसके आदमी १६०६ ई० मे कर उगाहनेके लिये इस इलाकेमे गये, तो रूसियोने विरोध किया, लेकिन वह उन्हे वहासे भगा नही सके। अगले साल कल्मकोने कुचुमके पुत्रोको साथ ले तारासे पश्चिमकी ओर वढते हुए तोवोल्स्क, त्यूमन आदि जिलोपर भी हमला किया। तारा-उपत्यकाके निवासी ईर्तिशके मैदानोसे नमक लाकर सारे देशमे वेंचते थे। १६१० ई० मे कल्मकोने नमककी खानोको दखल कर लिया। इसपर तारतारो और दूसरे कवीलोने लडनेकी तैयारी की, लेकिन जब १६१३ ई० मे नमककी खानें उन्हे मिल गईं, तो झगडा खतम हो गया। १६१५ ई० में वातुर थैंची (खराखुल तैंची ?) के दूत तारा गये। और अगले साल थैंची, वातुर और कई दूसरे थैंचियोने तोवोल्स्कसे आये रूसी कसाकोके सामने जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली, लेकिन यह शपथ नाममात्रकी थी। कल्मकोने छेड-छाड जारी रक्खी, और १६१८ ई०में ईर्तिश और तोवोलकी वीचकी भूमिमे सिविर खानके पुत्रोके साथ आये कल्मकोको रूसियोने हराकर उनके सत्तर ऊंट और एक वक्सी (भिक्षु)को पकड लिया, जिसे पचास घोडा देनेपर छोडा गया।

१६२० ई० मे वातुर तैंची (?) खराखुलने अल्तन खान खलखाकी राजधानीको दखल किया, जो कि उवसा सरोवरके ऊपर थी, लेकिन खलखोने जल्दी ही कल्मकोके ऊपर आक्रमण करके उन्हे हरा दिया। कल्मक तैंचीको अपने एक पुत्रके साथ ओवकी ओर भागनेके लिये मजबूर होना पडा। कल्मक तैंचीने चूमिश नदीके तटपर एक दुर्ग वनाया। उसके दूसरे जुगर-कल्मक ईर्तिश, तोवोल आदिकी उपत्यकाओमे चले गये। इसी समय देरवेत-मगोल भी भागकर साइवेरियामे गये।

धीरे-धीरे वातुरका राज्य वढा। किर्गिज और कजाक खास तौरसे अधीनता स्वीकार करने के लिये मजवूर हुये। कुछ कल्मकोने किर्गिज और कजाक वंदियोको रूसियोके पास भेजकर उनसे अपने वन्दी छुडाये। १६२३ ई०मे खलखोने फिर कल्मकोको हराया। अवतक पिछले चालीस सालोंमे खलखोमे लामाओका जोर वहुत वढ गया था। इसके वाद उनका प्रभाव जागन नोमेन खान द्वारा कल्मकोपर भी पडने लगा, और जुगर खान खराखुल, दरवेतोंके थैंची तालेई और तोर्गुतोके सरदार उर्लुकने अपने एक-एक वेटेको भिक्षु वनाया। इसका एक अच्छा परिणाम यह हुआ, कि खलखो और कल्मकोके वीच चला आता झगडा शात हो गया।

१६३४ ई० मे रूसियोको नमक न ले जाने देनेके लिये कल्मकोने दो हजार सेना वैठा दी। रूसी डरके मारे नही गये, तो उन्होने तारापर चढाई कर दी, लेकिन वहासे मार भगाये गये। १६३८ ई० मे रूसी कसाक यामिश सरोवरपर पहुचे, जहा कल्मकोके साथ उनकी पचायत वैठी, जिसमे निम्न शर्तोंपर सुलह हुई—(१) हम रूसी वस्तियोपर आक्रमण नही करेंगे, (२) शिकार और मछलीके लिये गये रूसियोंके साथ छेड-छाड नही करेंगे, (३) नमक ले जानेमें कोई रुकावट नही पैदा करें, उसके ढोनेके लिये अपने पशु भी देगे। यह एकतरफा शर्तोंकी सुलह थी, जिसमे रूसियोका ही पलडा भारी था। लेकिन कल्मक घुमन्तू ऐसी शर्तोंको माननेके लिये क्यो तैयार होने लगे? सीमान्तपर उनकी लूट-मार वरावर जारी रही।

वातुर थैंचीका डेरा अपनी पुरानी जगह इली नदीके तटपर पडा था, जहासे उसने सन् १६३८ ई० मे त्यानशानके दक्षिणके नगरोपर आक्रमण किया। वातुरकी धर्मभक्तिसे प्रसन्न होकर १६३५ ई०में दलाई लामाने उसे खुङ्-थैंशी और एर्दंन-वआतुरकी उपाधि प्रदान की। उसकी रूसियोसे भी दोस्ती थी। उसने अल्ताईके उत्तर ओव-ईर्तिशके वीचकी भूमिके अपने उपराज कुला थैंचीको हुक्म दिया, कि तारा (रूसी नगर)से पकड लाये परिवारोको लौटा दो। सौ परिवार—जिसमे रूसी भगोडे भी शामिल थे—हजार घोडोंके साथ रूसियोके पास लौटा दिये गये। अव रूसियो और वातुर थैंचीमे दूतोका

दानादान होने लगा। इस समय वातुर एक बौद्ध विहार वनवा रहा था। निश्चय ही विहार अवतक तम्बुओमे रहे होगे, लेकिन तम्बुओ वाले विहारोसे तो कीर्ति स्थायी नही हो सकती थी, इसलिये तिब्बतके विहारोके अनुकरणपर वह एक भव्य इमारत खडी कर रहा था। उसने यह भी देखा, कि घुमन्तूगिरीसे जीविकाका स्थायी प्रवन्ध नही हो सकता, इसलिये वह चाहता था, कि कलमक खेती करे। कलमकोकी एक प्रधान बस्ती थी कुबकसरी। बातुर अपना अधिक समय दे अपने देशको सुन्दर तथा खेती द्वारा समृद्ध करनेमें लगा था। १६४० ई०मे नौ सौ रूवल (चादी)के रेशम और दूसरे कपडे मास्कोसे उसके लिये भेजे गये। थैंचीके कहनेके अनुसार वोयवोदको हुक्म मिला था, कि साइबेरियासे सूअर, मुर्गे और कुत्ते भी भेजे जाय। इससे मालूम होता है, कि बातुर अपने लोगोके आर्थिक ढाचेमे परिवर्तन करना चाहता था।

रूसियोके कारण वातुर थैंचीका बढाव उत्तर (साइबेरिया) मे नही हो सकता था, और पूर्वमे चीनके कारण भी आगे बढनेकी गुजाइश नही थी, इसलिये उसका ध्यान अपने पश्चिमके किर्गिज-कजाकोपर ही जाना स्वाभाविक था। १६४५ ई० मे उसने कजाकोके सबसे बडे खान इशिम खानको हराया, और उसका पुत्र यगिर सुल्तान कलमकोंके हाथमे पडा। लेकिन वह जल्दी ही उनके हाथसे निकल भागा और शक्ति सचय करके १६४३ ई० मे उसने वातुरको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। पर इस हारका कोई स्थायी प्रभाव नही पडा। इसी समय वातुरका प्रधान शिविर इमिल नदीके तटपर कुबकसरीमें था। यहीपर रूसी राजदूत इलिन उससे मिला। लौटते समय वातुरने पत्र देकर इलिनके साथ अपने दो दूत कर दिये। वातुरके पत्रमे लिखा था —

"परमभट्टारक महाराज (जार)को वगतिर खुङ थैंची अभिनन्दन करता है। हम अच्छी तरह है, और जानना चाहते है कि आप कैसे है। आप महाराज, और मै खुङ थैंची अबतक शातिके साथ रहे है। आप मेरे पिता है और मै आपका पुत्र। दूरतम देशोके लोग हम दोनोके पारस्परिक अच्छे वर्ताव और सौहार्दको सुन चुके है। मेरे और आपके लोग साथमें व्यापार करते है, और एक दूसरेको नही लूटते, न एक दूसरेसे लडते है, वल्कि दोनोके वीचमे शाति है। लेकिन आपके लोगोने हमारी प्रजापर करसागलेनमे तोम नदीके तटपर आक्रमण किया, और उनमेंसे कुछको बन्दी बनाया। अगर महाराज, आपको यह बात मालम है, या आपकी आज्ञासे ऐसा किया गया, तो बिना मुक्ति-धन लिये वदियोको लौटा दो। अगर ऐसा नही हो, तो अपराधीको हमारे पास जुरमाना देनेके लिये मजबूर करो। आपके आदमी हमारे हरएक वदीके लिये चार सौ सवले (समूरी छाल) मागते है, चाहे वह दस सालका वच्चा ही क्यो न हो। यदि आप कृपा करके उन्हे विना मुक्ति-धनके छोडनेको आज्ञा नही देगे, तो हमारी मित्रता खतरेमे पड जायेगी। हम आपके पास २ पातरके छालें, ६ रुत्थी (धनुर्धरोके कामका मोटा चमडा), और दो घोडे भेज रहे है, जिनके बदलेमे हम एक कवच, एक बन्दूक, चार लडनेवाले मुर्गे, आठ लडने-वाली मुर्गिया चाहते है। यदि परमभट्टारक, आपको किसी चीजकी जरूरत हो, तो पत्रमे लिखें। हमारे दूतोको मास्को जानेकी इजाजत मिले, जिसमे वह अपने घोडोको साथ ले जा सके।" इस समय जुगारियामे अकाल पडा हुआ था, जिसके कारण वहुतसे कलमक वरेवास्तेपीमें साइस्सननोर (श्रेष्ठ सरोवर)मे मछली मारकर गुजारा कर रहे थे। इसके पहले इस सरोवरका नाम कीसलपू-नोर था।

शिकायतोका कुछ भी फल न देखकर १६४९ ई० मे खुङ थैंचीके प्रतिनिधि कुला थैंची-पुत्र सकिलने तोम्स्क जिलेपर आक्रमण करके सगर्स्का गावको उजाड दिया। अगले साल रूसियोने कप्तान क्लपकोफको शिकायत करनेके लिये वातुरके पास कुवकसरीमें भेजा। उस समय वातुर वहा पत्थरोकी इमारतोवाले एक नगरके वनानेमे लगा हुआ था। वातचीत करनेपर मालूम हुआ, कि पहले रूसियोने आक्रमण किया था। क्लपकोफके साथ फिर वातुरने अपने दूतोको भेजकर दो वढई, दो राजगीर, दो लोहार, दो बन्दूक वनानेवाले मिस्त्री, एक तोप, कुछ सोनेके आभूषण, वीस सुअरिया, पाच सूअर, पाच लडाई के मुर्गे, दस लडाईवाली मुर्गिया और एक घटा मागा था।

वातुर थैंची बिखरे कलमकोको एकतावद्ध करके कलमक साम्राज्यका सस्थापक तथा जवर्दस्त विजेता ही नही था, वल्कि उसकी जैसी प्रतिभा घुमन्तुओमे मुश्किलसे पाई जाती थी। अकालोंके

भयसे त्राण पाने और दूसरे अभावोको हटानेके लिये उसने अपने लोगोको स्थायी तौरसे वस जाने की प्रेरणा दी, जिसके लिये जुगारिया (कलमक भूमि) मे जगह-जगह वौद्ध विहार वनवाये। वातुर थैंचीकी भारी मददसे कोकोनोरके खोसोतोके सरदार गूशी (गूश्री) खानने तिव्वतके छोटे-छोटे राजाओ को खतम करके सारे तिव्वतको एकतावद्ध कर १६४३ ई०मे पाचवे दलाई लामाको प्रदान करके लामा-राज्यकी स्थापना की। वातुर थैंची १६५३ ई०मे मरा।

३ सेङ-गे, वातुर-पुत्र (१६५३–७१ ई०)

वातुरका वडा लडका सेत्सेन खान या सेङगे इरशि ऊपरी इर्तिश-उपत्यकामे चारण करता था। वह सेङगेका सलाहकार था। सेङगेका वापके साथ अच्छा सवध नही था। उसने कई वार पिताके रास्तेमें रुकावट डालनी चाही। पिताके मरनेके वाद यह कलमकोका थैंची वना, तो भी सौतेले भाइयोंसे इसका झगडा वरावर चलता रहा, जिसमे ही वह १६७१ ई०मे मारा गया।

४ गलदन, वातुर-पुत्र (१६७१–९७ ई०)

सेंगेके वाद उसका भाई गल्दन वोशोक्तू (वुश्तू) खान गद्दीपर वैठा। गल्दन पहले वौद्ध भिक्षु वन तिव्वतमे अध्ययनके लिये गया हुआ था। लौटकर देश आनेपर भाई सेङगे (सेत्सेन खान) से अनवन हो गई। दोनोमे लडाई हुई, और १६७६ ई० के अन्तमे सेत्सेनको ताल्की डाडे और सेइराम झीलके पास हारकर भागना पडा। गन्दनका कजाको और किर्गिजोंसे भी झगडा रहा।

तिव्वतमे लूट-मार करनेके कारण गन्दनने अपने चचा शूकेरको किजिलपू सइस्सन (झील)के तटपर हराया। भिक्षुके तौरपर तिव्वतमे रहते समय इसका दलाई लामासे घनिष्ठ सवध था, इसलिये उसका प्रभाव कलमकोपर वहुत जल्दी वढा—जुगर ही नही खोशोत आदि दूसरे कलमक कवीलोने भी इसकी अधीनता स्वीकार की, और १६७६ ई०मे वापकी तरह इसने भी खुङ-थैंचीकी उपाधि धारण की। इसके समय त्यान्शानके दक्षिण (पूर्वी तुर्किस्तान)के शासक खोजा (पीर) थे, जिनमें आपसमे झगडा लगा हुआ था। काले पहाडियोका नेता काशगरका खान इस्माईल था। उसने सफेद पहाडियोके नेता अप्पक खोजाको देशसे भगा दिया था। अप्पक खोजा पहले कश्मीर गया। औरगजेवको अपने धर्म-वधुकी मदद करनेकी फुर्सत नही थी। फिर वह तिव्वतमे दलाई लामाके पास पहुचा। दलाई लामाने खोजाको काशगर और यारकन्द दिलानेमे मदद करनेके लिये गन्दनके पास लिखा। १६७८ ई०मे गन्दनने पूर्वी तुर्किस्तानको जीतकर अप्पकको अपना उपराज वना यारकन्दमे वैठा दिया, और काशगरके खानके परिवारको ले जाकर इली-उपत्यकाके मुसलमान नगर कुल्जामे वसा दिया। तवसे जवतक (१७५५ ई०मे) कि चीनियोका पूर्वी तुर्किस्तानपर अधिकार नही हो गया—अर्थात् ७७ वर्षोके लिये—एक वार फिर पूर्वी तुर्किस्तानकी प्राचीन वौद्ध-भूमि कलमक वौद्धोंके हाथमे जा जुगर-साम्राज्य-का अग वन गई। वहाके प्रवन्धका काम गन्दनने खोजाके हाथमें दे रक्खा था, जो प्रतिमास चार लाख तका कर भेजता था। इसी समय गन्दनने तुर्फान और खामिलको भी जीत लिया, और वुश्तू खान (वोधिसत्व राजा) की उपाधि धारण की, जिसे कि अवतक छिङ-गिस्की सन्तान ही धारण करती थी। गन्दनने चीन-सम्राट्के पास भेट भेजी, जिसके लिये सम्राट्ने प्रति-भेटके साथ-साथ राजमुद्रा प्रदान की। १६८२ ई०मे सम्राट् खाङ-सी गन्दन (गल्दन) के पास भारी भेट भेजते हुये उसके प्रतिद्वद्वी खलखा राजा तुशियेतूको भी भेंट भेजना नही भूला। १६८८ ई०में गन्दनने खलखोंके तुशियेतू खानपर चढाई की। खलखोमे भगदड मच गई, और तूशियेतूकी वीवी और वच्चे भी तीन सौ आदमियोंके साथ जान लेकर भागे। गन्दनको मालूम हुआ, कि उसके भाई सेङ-गेके मरवानेमे तूशीयेतूका भी हाथ था, इसीलिये उसने दलाई लामाके दूतसे कहा था—"यदि मै तूशियेतू खानसे सुलह कर लू, तो मेरे भाईके खूनका वदला कौन लेगा ? मैंने निश्चय किया है, कि अपनी सारी सेनाको ले उसके साथ चार-पाच वर्षतक लडाई करू। मै खलखोको नष्ट करना चाहता हू और तवतक सतोष नही लूगा, जवतक कि तूशियेतूके भाई चुपसुन तम्पा*को हथकडियो-वेडियोमे अपने पैरोमें पडा नही देखूगा।"

लेकिन अब गन्दन दूसरे झगडेमे फसा। उसका भतीजा सेङ-पुत्र छेवड अर्वतन वापके सिंहासनका दावेदार था। उसने १६८९ ई०मे चचाको हराया। इस लडाईमे गन्दनके लोगोकी हालत इतनी बुरी हो गई, कि कुछने तो जीवन-रक्षाके लिये आदमीका मासतक खाया। लेकिन यह अवस्था देरतक नही रही। गन्दन यदि अपने पूर्वी पडोसी खलखोसे लोहा ले रहा था, तो साथही उसने रूसके साथ खूब मित्रता स्थापित की थी। रूसी व्यापारी बरावर उसके राज्य (जुगारिया) मे जाते रहते थे। १६८८ ई० मे गन्दनने दरखन (तरखन, राजकुमार) सइस्सनको दूत बना पत्र और भेटके साथ इर्कुत्स्क भेजा।

चीन चुपचाप यह कैसे देखता रहता, कि उसके अधीन खलखोंसे कल्मकोकी ताकत अधिक बढ जाये? इसीलिये वह बीचमे कूद पडा। रूसी अभी दूर थे, इसलिये वह अपने मित्र कल्मकोकी अधिक मदद नही कर सकते थे। चीन-सम्राट् खाङ सीने वडी सैनिक तैयारी की। पहले वह स्वय सेनाका सचालक बनकर आना चाहता था, लेकिन कहने-सुननेपर अपने वडे भाई ऊ-हो-चे-यू चिङ-वाङको प्रधान सेनापति बनाया। गन्दन भी कोई ऐसा-वैसा प्रतिद्वद्वी नही था। उसने चीनकी राजधानी पेकिङसे अस्सी योजन (लीग) पर जाकर लडाई छेडी। उसके पास चीनके बराबर सेना नही थी और न तोपे ही। पहले उसके हरावलको वहुत हानि उठानी पडी, लेकिन उसकी सेना दलदलके पीछे थी, जहा चीनी सेनाके लिये पहुचना बहुत कठिन था। लडाई रात तक होती रही, और किसी निर्णयपर पहुचे विना ही दोनो सेनाये लौट गईं। चीनने इस शर्तपर समझौता किया, कि यदि गन्दन इस वातकी शपथ खाये, कि मैं सम्राट् और उसके मित्रोकी भूमिपर आक्रमण नही करूगा, तो वह अपनी सेनाके साथ लौट जा सकता है।

गन्दनकी शक्तिको कमजोर करनेके लिये चीनियोने उसके भतीजे अर्वतनको उसकाया। गन्दनका राज्य इस समय उत्तरमे केरुलोन नदीसे दक्षिणमे कोकोनोर सरोवरतक, और पूर्वमे खलखाकी सीमासे पश्चिममे किर्गिज-कजाकोकी सीमातक फैला हुआ था। चीनी इतिहासकारो के अनुसार—"वह (गन्दन) कजाको और तुर्कोंको प्रसन्न करनेके लिये अपनेको इस्लामका भक्त बताता था, और तूशियेतू खानके भाई *जेचुन तन्पाके प्रतिद्वद्वी दलाई लामाके पक्षका समर्थन करते हुये मगोलोके वीचमे झगडा पैदा किये हुये था।" गन्दनने मचू सम्राट्के भक्त कोरचिन मगोलोके सरदारके पास लिखा था—"हमारे लिये इससे बढकर अयुक्त बात क्या हो सकती है, कि जिनके ऊपर एक बार हमने शासन किया, आज उनके ही हम दास वने? हम मगोल है, (बौद्ध) धर्मके नीचे एकताबद्ध है, इसलिये आओ हम अपनी शक्तियोको मिलकर उस साम्राज्यको फिर प्राप्त कर ले, जो कि हमारा है, और हमे पूर्वजोसे उत्तराधिकारमे मिला है। मै अपने विजयके लाभ, यश और आनन्दमेंसे उनको अपना भागीदार बनाऊगा, जो कि विपद्मे भागीदार बननेके लिये तैयार है। लेकिन अगर कोई भी मगोल राजा—और मै समझता हू, कि ऐसे कोई नही है—ऐसे है, जो हमारे सबके एकसे दुश्मन मचुओका दास रहना चाहते है, तो सबसे पहले मेरे क्रोधके भाजन वही होगे, चीनको जीतनेसे पहले मै उनका सत्यानाश करके रहूगा।"

अप्रैल १६९६ ई०मे एक बहुत जवर्दस्त चीनी सेनाने गन्दनके विरुद्ध प्रस्थान किया। इस सेनाके साथ जेसुइत (ईसाई) साधु गेर्विलोन भी था। सम्राट् खाङ-सी भी सेनाके साथ था। दरवारियोने सम्राट्को रास्तेसे लौटनेके लिये बहुत जोर दिया, लेकिन उसका उत्तर था—"मै यह बात विल्कुल नही करूगा। क्या मैने अपने पूर्वजोके सामने शपथपूर्वक अपने अभिप्रायको प्रकट नही किया? क्या हरएक सिपाही यह नही जानता, कि प्रस्थान करनेसे मेरा क्या मतलब था? क्या मेरे पूर्वजोने खतरे और कठिनाइयोका मुकाबिला करके सिहासनको नही प्राप्त किया? शक्तिशाली वीरोकी सतान होकर खतरेके डरसे औरतकी तरह मै कैसे भाग सकता हू? ऐसा आचरण करके मै कौनसा मुह लेकर अपने पितरोसे भेट कर सकूगा?"

---

* जे-चुन् तन्-पा=भट्टारक शासन(धर) उर्गाके महालामाकी उपाधि थी।

आगे जानेपर पता लगा, कि गन्दन तुला नदीके तटपर था, जहासे वह केरुलोन नदीके किनारे-किनारे लौट गया। चीनी मुख्य-सेना सम्राट्‌के नेतृत्वमें केरुलोनके किनारे-किनारे पश्चिम की ओर बढती दोनो ओर मूइलहितु तक गई। लेकिन, अब आदमियोंके लिये रसद और जानवरोंके लिये चारा मिलना मुश्किल हो गया, इसलिये चीनी सेनाको मुडकर तोइरिनके उपजाऊ इलाकेमे जाना पडा। गन्दनका पीछा करनेके लिये पाच-छ हजार सैनिक छोड दिये गये थे। चीनी सेनापति चे-ताइने गन्दनको बहुत मजबूत पाया, इसलिये कुछ गोलिया दागकर वह लौट पडा। गन्दनने उसका पीछा किया, और यह ख्याल नही किया, कि दूसरा सेनापति तेयेन्कू काफी सेना लेकर उसकी ताकमे है। तो भी बडा जबर्दस्त मुकाबिला किया। यदि तोपचियो और बन्दूकचियोने गोले-गोलियोकी वर्षा न की होती, तो गन्दन पराजित न होता। अन्तमे कलमक पीछेकी तरफ भागे। तीस ली (८ मील) तक चीनी सैनिकोने उनका पीछा किया। गन्दनकी रानी गोलीकी शिकार हुई। गन्दन अपनी लडकियो, एक लडके तथा कुछ अनुचरोंके साथ भागकर पश्चिमकी ओर चला। उसके सैनिकोंने चीनी जेनरलके पास आत्म-समर्पण किया। उसके बाद गन्दनके दूतने चीन-सम्राट्‌के पास पहुचकर कहा—"जल्दी ही मेरा स्वामी भी खल्खोकी तरह साम्राजी सिहासनके पास आ शातिपूर्वक अधीनता स्वीकार करेगा।" खाङ-सीने चिट्ठी लिखकर गन्दनको अस्सी दिनका अवकाश दिया। लेकिन चीनी दूतोमेंसे केवल एक गन्दनके सामने जाने पाया। उस समय गन्दन खुली जगहमे पत्थरोके ढेरपर बैठा हुआ था। उसने पोची (दूत) को अपने पास आने नही दिया। सम्राट्‌की शुभेच्छाके लिये धन्यवाद दे अपनी इच्छा प्रकट करनेके लिये दूत भेजनेकी बात कही। कुछ क्षणोकी भेटके बाद गन्दन घोडेपर चढकर चला गया। चीनी दूतने देरतक प्रतीक्षा की। वह कुछ सैनिक कार्रवाई करना चाहता था, किन्तु असफलतासे निराश और भतीजेके विद्रोहसे हताश हो गन्दनने ५ जून १६९७ ई० को आत्महत्या कर ली। कहते है, छ सप्ताह पहले वह सूर्योदयके समय बीमार पडा, और उसी रातको मर गया। यह खबर छ सप्ताह बाद चीन-दरबार को मिली।

गन्दनकी योग्यताके कायल उसके शत्रु भी थे। सम्राट् खाङ-सीने स्वय लिखा था—

"गन्दन एक बडा ही दुर्धर्ष शत्रु था। उसने समरकन्द, बुखारा, बुरुत (किर्गिज), उरगज, काशगर, मूइरमान (? सैराम), तुर्फान और खामिलको मुसलमानोंसे ले लिया, और बारह सौसे अधिक नगरोपर अधिकार किया, जो बतलाता है, कि उसकी बाह कितनी लम्बी थी। साती झडोंके खलखोंने व्यर्थ ही अपने एक लाख जवानोंको जमा करके उसका विरोध किया। उन्हे तितर-बितर करनेके लिये गन्दनके वास्ते एक वर्ष पर्याप्त था।"

यदि अपने प्रतिद्वद्वियोकी तरह गन्दनके पास भी बारूदके शक्तिशाली हथियार होते, या उदीयमान मचू-शक्तिके यह आरम्भिक दिन न होते, तो कौन जानता है, उसने फिर छिङ-गिस्‌का अनुसरण करते हुये चीनके ऊपर मगोलोंकी विजय-ध्वजा न गाडी होती?

१६८१-८३ ई०मे गन्दन सैरामपर आक्रमण कर रहा था। १६८३, १६८४ और १६८५ ई० मे किर्गिजो और फरगानियोंके ऊपर उसने प्रहार किया। गन्दन प्रथम खुङ-थैची था, जिसने इलीकी उपत्यकामें चारण किया। जाडोमें वह कभी-कभी इसिकके तटपर रहता था। तुर्क जातियोमेंसे केवल बुरुत (किर्गिज) १८ वी सदीमे इस्सिककुलके पास विचरण करते थे। गन्दनके भतीजे छेवङ-रबतनने १६७८ ई० मे चचाका मगोलियामें अभियान करनेके लिये गया देखकर आक्रमण किया था।

५. छेवङ-रब्तन, सेङ-गे-पुत्र (१६९७–१७२७ ई०)

छेवङ आरगजेके शासनके अन्तिम दस सालोंके साथ-साथ और भी बीस वर्षतक मध्य-एसियाका शासक रहा। इसने अपने चचा और दादाकी सफलताओको अक्षुण्ण रखते हुये अपने राज्यमे एकता स्थापित की। चीनको अपने रास्तेमे बाधक देखकर थोडे ही समयमे छेवङ भी चचाकी तरह उसका शत्रु हो गया। तो भी पहले सत्रह सालोतक वह चीनके साथ शातिपूर्ण बर्ताव करता रहा। १७१४ ई०मे उसने चीन-अधिकृत हामीपर आक्रमण किया। चीनने आलक (अल्ताउ) तकके इलाकेका उससे मागा, जिसे छेवङने देनेसे इन्कार कर दिया। चीनके जैसे बलिष्ठ शत्रुका विरोध करनेसे पहले

छेवङ्ने जरूरी समझा, कि रूसियोको अपना प्रभु मान ले। इसी संबंधमें बात करनेके लिये कलमकोके पास इवान चेरेदोफ १७१९ ई०मे भेजा गया इससे पहले १७१७ ई०मे छोटी सी नदी खर्किरपर मूजार्तके पास रहते हुये छेवङ्ने तोबोल्स्कके रूसी राज्यपाल वेल्यानोफके पास अपना दूत भेजा था। १७२२ ई० मे रूसी कप्तान उन्कोव्स्कीने इलीके दक्षिणी तटपर खुङ-थैचीके शिविरमे मुलाकात की। जिस स्थानपर मुलाकात हुई, वह चारिनसे कुछ वेर्स्तपर था। उन्कोव्स्की सितम्बर १७२३ ई०तक छेवङके दरबार मे उसके ओर्दूके साथ ल्यूप और जरगलानकी उपत्यकाओमे घूमता रहा, लेकिन इसका कोई अधिक फल नही हुआ, क्योकि १७२२ ई० मे मंचू-सम्राट् खाङ-सीके मर जानेके कारण अब छेवङको चीनियोंसे उतना डर नही रह गया।

१७२३ ई० मे कलमकोने कजाकोपर भारी विजय प्राप्त करके सैराम, तुर्किस्तान-शहर और ताशकन्दको ले लिया। कप्तान उन्कोव्स्कीके अनुसार छेवङके पास एक लाख सैनिक थे। वह बहुत ही जनप्रिय था। वह बिना अपने सेनापतियो और सरदारोकी सम्मतिके कोई निर्णय नही करता था। खुङ थैचीका सौतेला भाई छेरिङ-दोण्डुब (दीर्घायु सिद्धार्थ) उसका एक बडा सरदार और सलाहकार था, जो कि लेप्सा और करातलाके तटपर चारण करता था। इस समय कितने ही कल्मक भी खेती करने लगे थे। खरगोशके मुहानेके नजदीक सरतो (ताजिको) की कई बस्तिया थी। शांतिकालमे चीनियोके साथ कल्मक व्यापार करते थे, रूसियो, नगुतो (अम्दुओ), अन्तर्वेदियो और भारतीयोके साथ तो वह बराबर व्यापार करते रहते थे।

१७१५-१६ ई०के जाडोमे एक कारवाके साथ स्वीडन-निवासी रेनाड कल्मकोके हाथमे पड गया। वह प्राय सत्रह साल (१७३३ ई० तक) उनके देशमे रहा। उसने उन्हे युरोपकी कितनी ही बातें सिखलाई, और उनके बारेमे भी जानकारी प्राप्त की। कल्मक-भूमिकी स्थिति और विचार के बारेमे उसने लिखा है—(१) सप्तनदका (अलाताउ), तेकुशचिख नदी तथा बल्खाशकी तटभूमि, (२) उत्तरमे इलीसे कोकताल् और कोकतेरेकके बीच अलतिन-एमेल और कोइबिनके बीचकी भूमि, (३) उत्तरमे केगेनके किनारेसे और चारिनसे पूर्वमे केतनेन पहाडतक, (४) ऊपरी चिलिक-उपत्यका और उसकी पासकी भूमि, (५) त्यूपाके तटसे इस्सिक्कुलके दक्षिणी तट तक पश्चिमी छोरसे उत्तरमे कोइसू और अक्सूके बीच तक, (६) महाकेबिन-उपत्यका चूके संगम करातालतक।

चचाके साथ विरोधका कारण एक यह भी बतलाया जाता है, कि उसे पश्चिमी जुगारियामे अधिकार न देकर उसके भतीजेको नियुक्त किया गया था, तथा त्यान्‌शानके पासवाले नगरोमे भी उसे कुछ अधिकार-वंचित किया गया। १६९६ ई० मे अर्वतन (रब्-तन) * के पाच सौ सैनिक तुर्फानमे थे। खामिल और आसपासका शासक उस समय अब्दुल्ला तरखनबेग था। १६९७ ई० मे अब्दुल्लाने चीनसम्राट्से यह कहकर मदद मागी, कि खुङ-थैची हमारे ऊपर आक्रमण करना चाहता है। अर्वतनने उसके ऊपर दोषारोप किया, कि अब्दुल्ला कल्मकोकी सीमाके भीतर घुसकर गन्दनके पुत्र छेर्तन पल्जोर † (सेप्तेन बल्जुर) तथा दूसरे जुगरोको भी पकड ले गया, और हमारे दूतोको रोके रक्खा। चीनने अब्दुल्लासे माग की, कि गन्दनके पुत्रको दिखलाओ और हमारे दूत तथा बंदियोको तुर्फान लौटा दो। अब्दुल्लाने कैदियोको चीन भेज दिया, जिनमेंसे सत्तर आदमियोको वहा जेलमे डाल दिया गया।

रब्तन कैसे पसन्द करता कि चचाके समयसे उसके करद लोग चीनकी छत्रछायामे चले जाय? बहुतसे छोटे-छोटे राजाओने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। अर्वतनने तत्सीलाको हराया, जिसमे उसे चेरेन सन्लुप (छेरिङ नम्डुब्) गन्दन-पुत्र, चोनसी हाई (गन्दन-पुत्री), गन्दनकी स्त्री कुलीन और गन्दनकी चिताभस्म भी मिली। चीन-सम्राट् देख रहा था, कि छेवङ फिर चचाकी तरह जुगरोको एकताबद्ध करनेमे सफल हो रहा है। उसने रब्तनको रोकना चाहा, और पहले रब्तन को विजयमे प्राप्त वस्तुओको अपने पास भेजनेके लिये लिखा। रब्तनका जवाब था:— "लडाई अब समाप्त हो गई, इसलिये घावोको भूल जाना चाहिये। हमे पराजितोपर दया करनी

* रब्-तन=प्रशासन (तिब्बती)

† महाशासन श्रीयोगी (तिब्बती)

चाहिये । उन्हे नष्ट करनेका ख्याल बर्बरोचित होगा, मानवताका यह प्रथम विधान है, जिसे कि एलियोतो (ओइरोतो) ने सदा पवित्र मानकर पाला है।" रब्तनने गन्दनके लडके और पत्नीको भेज दिया, लेकिन लडकीके बारेमे कहा—'ओइरोतोमे कायदा नही है, कि अपने शत्रुओकी लडकीमे बदला ले। और गन्दनकी चिताभस्ममे सम्राट्के विजयमे कोई वृद्धि नही होगी।' इसके बाद चीनसे कई दूत आते-जाते रहे। बहुत दबाव पडनेपर उसने गन्दनकी चिताभस्म और उसकी पुत्रीको चीन भेज दिया। सम्राट्ने भी अपने पुराने शत्रुकी सतानके साथ बडी उदारता दिखलाई, और दोनो बहिन-भाइयोको क्षमा कर दरबारमे उन्हे ऊचे पद दिये।

अपने पश्चिमी पडोसियो किर्गिज-कजाकोके साथ रब्तनने भयकर युद्ध जारी रखा। १६८८ ई० के अपने एक पत्रमे रब्तनने सम्राट् खाङ्-सीको लिखा था, कि मैने गन्दनने तवक्कल तुर्कके पुत्रको पकडकर दलाई लामाके पास भेज दिया था। लेकिन मैने उसके बापकी प्रार्थनापर पाच सौ आदमियोके साथ उसे लौटा दिया, और केवल पाच सौ कृतघ्नोको ही मारा। लेकिन ये कृतघ्न मेरे प्रदेश हुलीजन हानपर चढाई करके सौ परिवारोको पकड ले गये। मेरे ससुर आयुका खानने मेरी बीबीको मेरे साले सन्त्सित-चापूके साथ जब मेरे पास भेजा, तो तवक्कलने उन्हे पकड़नेकी कोशिश की। उसने रूससे लौटते वक्त हमारे कारवाको भी लूटना चाहा। रब्तनके पास कजाकोके खिलाफ कार्रवाई करनेके कई कारण हो सकते थे, लेकिन सबसे बडा कारण था चचाकी तरह उसकी राज्य-विस्तारकी अभिलाषा। उसने किर्गिज-कजाकोके मध्य-ओर्दूके बहुत बडे भागको अपने अधीन कर लिया, और इस्सिक्कुल-सरोवरके पास रहनेवाले बुरुतो (काले किर्गिजो) को भी जीत लिया।

उस समय तिब्बतका गद्दीधारी (छठा दलाई लामा) उसके चचा गन्दनका आदमी था। खोशोत ल्हचन खानने उसे मार भगाया और तिब्बतमे जुगरोके प्रभावको खतम कर दिया। ल्हचनकी सफलतामे अब तिब्बतमे चीनके प्रभावके जमनेकी सभावना हो गई। इसपर रब्तनने कोकोनोरके पासवाले खोशोत मगोलोसे मिलकर दो सेनाये भेजी, जिनमेसे एक सीनिङ्-फू शहर पर पड़ी, जहापर कि दलाई लामा नजरबन्द था, और दूसरी सेना पोतलाके विरुद्ध गई। पहली सेना को सफलता नही प्रप्त हुई, लेकिन दूसरीने जाकर ल्हासाको ले लिया। ल्हचन खानने पोतला-प्रासादमे शरण ली, लेकिन उसे पकडकर मार डाला गया। तिब्बतके बहुतसे नगर और गाव उजाड दिये गये, मदिर लूट लिये गये, स्वय दलाई लामाके महल (पोतला) मे बहुत सालोसे जमा होती सम्पत्तिको भी जुगरोने लूट लिया। कितने ही विरोधी लामा थैलोमे बन्द करके ऊटोपर लादकर जुगारिया भेज दिये गये। तिब्बतकी मददके लिये आती एक सेनाको एक दुर्गम डाडेपर जुगरोने मारकर भगा दिया। १७१७ ई० या १७२२ ई० मे जुगरोकी सेनाने तिब्बतमे आकर जो ध्वसलीला की थी, उसके चिह्नस्वरूप अब भी मध्य-तिब्बतमे बहुतसे उजडे हुये गावोकी दीवारे खडी मिलती है, जिनकी जुडाई और दूसरी स्थितिके देखनेसे पता लगता है, कि जुगरोके इस भयकर प्रवाहके बाद फिर तिब्बतकी वास्तुकला अपनी पूर्व-स्थितिमे नही पहुची। चचा गन्दनने जहा तिब्बतकी समृद्धि बढानेकी कोशिश की, वहा उसके भतीजे रब्तनने उसके नाशमे हाथ बटाया।

रब्तनकी यह कार्रवाई चीनको पसन्द नही थी। दो साल बाद चीनने उसे दड देनेके लिये सेना भेजी, लेकिन वह उसके हाथमे केवल तुर्फानको ही छीन पाई। इससे पहिले १७१७ ई० मे करासर नदीतक चीनी सेना पहुची थी, जहापर उसे कलमकोसे हारना पडा। १७१९ ई० मे एक दूसरी चीनी सेनाने साइसन सरोवर तक धावा मारा। सम्राट् खाङ्-सीके शासनकालके अन्त (१७२३ ई०) तक चीन और जुगरोका सघर्ष जारी रहा। उसके उत्तराधिकारी युङ्-चेन (शी-चुङ् १७२३–३५ ई०) ने सीधे लडाईमे भाग लेनेकी जगह अपनी सेनाको हटाकर रेगिस्तानी कबीलोको आपसमे लडनेके लिये छोड़ दिया।

रब्तनके शासनके अधिक समयतक पूर्वी तुर्किस्तानपर उसका वैसा ही प्रभुत्व रहा। एक बार वहाके मुसलमानोने विद्रोह किया, जिसपर बडी सख्यामे जुगर-सेना यारकन्द पहुची, जिसका साथ काले-पहाडी नेता खोजा दानियलने भी दिया। काशगरियोको नगरका द्वार खोलनेके लिये मजबूर होना पड़ा। लोगोके मनोनीत हाकिमबेगको कलमकोने भी अपना हाकिमबेग बनाया, और

वह काशगरके खोजा अहमद तथा अपने सहयोगी दानियल खोजाको उनके परिवारोको बन्दी बनाकर इली ले गये । १७२० ई०मे रब्तनने दानियलको छ नगरोका शासक बनाकर भेजा । दानियलने अपने लिये एक लाख तका कर निश्चित किया, जब कि अप्पकके लिये हजार तका मिलना निश्चित था ।

रब्तन जुगर-वशका सबसे शक्तिशाली राजा था । उसकी प्रजा उसे बहुत पसन्द करती थी, क्योकि उसका वर्ताव उनके साथ बहुत अच्छा था । दलाई लामाने उसे "एर्देनी सूरिक्तू बआतुर खुङ-थैशी" की उपाधि प्रदान की थी ।

रूसी अठारहवी सदीके शुरूमे साइबेरियाके एक छोरसे दूसरे छोरतक पहुच गये थे । मध्य-एसियाके भी कितने ही खान उनकी अधीनता स्वीकार किये हुये थे, इसलिये इस देशके बारेमे उनको बहुत-सी झूठी-सच्ची खबरे मिली थी । किसीने उन्हे बतलाया था, कि पूर्वी तुर्किस्तानमे सोनकी खाने है । इसपर १७१४ ई०में साइबेरियाके रूसी राज्यपाल राजुल गगरिनने खुङ-थैचीके पास इस प्रदेशको लेनेके लिये इर्तिशसे यारकन्दतक किला बनानेका प्रस्ताव किया । साथ ही तोब्रोल्स्कमे वहासे आई सोनेकी कुछ धूल भी भेजी । जारने इस कामके लिये इवान बुखोल्जको भेजा, जो २९३२ सेनाके साथ जुलाई १७१५ ई०मे तोबोल्स्कसे ताराके रास्ते रवाना हुआ, और इर्तिशसे साढे छ वेर्स्त (१ फर्सख) पर अवस्थित यामिशकी नमकवाली झीलपर पहुचा । इस झील तथा इर्तिशके बीचमे एक छोटी-सी मीठे जलकी झील प्रयाज्नोये ओजेरो थी, जिससे एक छोटी नदी प्रयाज्नुखा निकलकर इर्तिशमे गिरती थी । इसी नदीके मुहके पास कुछ ऊची भूमिपर रूसी यामीशेफका मिट्टीका छोटा-सा किला बनाने लगे । इसकी खबर पाकर, रब्तनके भाई छेरिङ दोङ्‌दुब्‌ने आक्रमण किया, और रसदके कारवाको भी लूट लिया । रूसियोंके पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र थे, तो भी उन्हे बहुत हानि उठानी पडी । उनके पास जब सात सौ आदमी रह गये, तो वह किला तोडकर उत्तरकी ओर लौट गये । तारासे दो सौ सतहत्तर वेर्स्त (१३ फर्सख) पर ओब नदीके मुहानेपर उन्होने ओम्स्कया-क्रेपोस्त नामक किला बनाया । उसी साल १७१६ ई०मे बुखोल्जको बुला मगाया गया, और पीतर I ने मरिगोरोफकी मातहत दूसरा अभियान यामीसेफको लेनेके लिये भेजा । पीतर I इस योजनामे विशेष तौरसे दिलचस्पी रखता था । १७१७ ई० मे स्तूपिनकी अधीनतामे दूसरा अभियान भेजा गया । उसने यामीशेफमे पहुचकर बाकायदा एक मजबूत किला तैयार किया । १७१८ ई० के वसन्तमे विलियनोफने रब्तनके पास पहुच-कर उसे पीतरका पत्र किया । रब्तनने धमकी देते हुए किला तोड देनेके लिये कहा । किलेके तोडनेकी बात तो दूर रही, स्तूपिनने १६१८ ई०मे यामीशेफसे भी दो सौ अट्ठाईस वेर्स्त (३४ फर्सख) आगे इर्तिशपर एक नया किला सेमीप्लातिन्स्क (सप्तप्रासाद) बनाया । यह किला एक बौद्ध विहारके ध्वसपर बना, जिसकी नीव खोदते समय बहुतसे तिब्बती हस्तलेख मिले थे, जो युरोपमे जानेवाले सबसे पहले तिब्बती हस्तलेख थे ।

पीतरको गति मन्द मालूम हुई, इसलिये १७१९ ई०के आरम्भमे उसने इस कामकी देख-भालके लिये जेनरल लिखारेफको नियुक्त किया, जो भारी सख्यामे अफसरोको लेकर मई १७२० ई० में तोबोल्स्क पहुचा, फिर सेमीप्लातिन्स्क होते ४४० आदमियोके साथ नावोपर सैसन झीलकी ओर बढा । रूसियोकी इस गतिविधिसे कल्मकोको सदेह होना स्वाभाविक था । रब्तनके पुत्र और उत्तरा-धिकारी गन्दन छेरिङके नेतृत्वमे बीस हजार कल्मक प्रतिरोधके लिये जमा हुये । दोनो पक्षोकी सख्यामे बहुत अन्तर था, लेकिन रूसी आधुनिक हथियारोसे सज्जित थे । उनके पास बहुतसी छोटी-छोटी तोपे थी, जब कि कल्मकोके पास सिर्फ तलवार और तीर-धनुप थे । तीन दिनकी लडाईमे एक रूसी मरा और तीन घायल हुये, जब कि कल्मकोकी भारी क्षति हुई । अन्तमे दोनोमे समझौता हो गया । सेमीप्लातिन्स्कसे १८१ वेर्स्त (३० फर्सख) पर एक झीलके पास ऊची जगहपर लिखारेफने उस्तका-मेन्नेगोर्स्कया नामका किला बनाया । लेकिन, यारकन्द की सोनेकी भूमिमे पहुचनेका यह प्रयत्न यही खतम हो गया । पीतर I के बाद फिर किसीको उसके लिये दिलचस्पी नही हुई ।

शासन-व्यवस्था—रूसी दूत उन्कोस्कीने १७२२ ई०मे कल्मकोकी शासन-व्यवस्थाको देखा था । उसने लिखा है, कि खुङ-थैची (महाराजा) के बाद सबसे बडा दर्जा मडस्सनका था, जिस पदपर उस समय राजकुमार छेरिङ दोण्डुब् था । इसके बाद एक परिषद् (सर्गा) थी, जिसके सदस्य

थे—मइस्मन, सम्डुव बआतुर, शरातञ्जिन, सद-जी फुनछोक, सोद्वो, वतुमसी, जिम्बिल, सनजक, वसुन, ववसीगिर तथा पारिषत्क नमिग्का तर्वेन जाइक्तू और खुरुनैयोना सचिव सोलम्दर्को। इसके देखनेसे मालूम होगा, कि कल्मकोंके ऊपरी शासन-यंत्रमें बहुसंख्यक मुसलमान प्रजाका कोई आदमी नहीं था।

उपज—पिछले तीस वर्षोंमें जुंगारियामें खेतीमें बहुत प्रगति हुई थी। सदाके घुमन्तू ये मंगोल अपने एक हूण पूर्वजकी तरह अब खेतीकी महिमा अनुभव करने लगे थे। अकालोंने बतला दिया, कि ऐसे समयमें अधिक समयतक जमा रक्खे जा सकनेवाले अनाज ही अधिक सहायक होते हैं। उस समय भी यहां गेहूं, जौ, चावल और बाजरा प्रधान फसलें थीं। फलोंमें सेव, लाल-सफेद अंगूर, खूबानी, तर्बूजा-खरबूजा, बड़े कुम्हड़े आदि होते थे। अल्मा-अता (सेवका बाप) के नामसे प्रसिद्ध आजका नगर इसी भूमिमें है, जहांके सेव अच्छे होते थे। इली और चूकी उपत्यकायें बहुत पहलेसे ही कृषि और बागवानीमें प्रधानता रखती थीं, इसे हम शकोंके कालमें भी देख चुके हैं।

ग्राम्य पशुओंमें घोड़ा, ऊंट, बैल, बड़ी भेड़ें, बकरियां और खच्चर मुख्य थे, जो अभी भी कल्मकोंके सबसे बड़े धन थे, क्योंकि किसानी-जीवनकी अपेक्षा अभी भी वह पशुपालोंके जीवनसे अधिक प्रेम रखते थे।

दस्तकारियोंमें ऊनी कपड़े और चमड़ेका काम कल्मक जानते थे, जिसमें पिछले दो पीढ़ियोंके शासनमें बाहरके दस्तकारोंने आकर अधिक उन्नति कराई। कल्मकोंकी भूमिमें लोहा-तांबा प्रचुर परिमाणमें मिलता था,। यहांकी तांबे और सोनेकी खानोंमें तो नव-ताम्र-युगमें भी काम होता था, यह हम बतला आए हैं। अब लड़ाइयोंमें तोपों और बारूदी हथियारोंने मालूम हो गया था, कि उनके तीर-धनुष आजकलके हथियारोंके सामने बेकार हैं, और कुछ सौ रूसी-कसाक बीस हजार कल्मक बहादुरोंको घास-मूलीकी तरह काटके रख सकते हैं, इसलिये वह लोहेकी उपजकी ओर भी विशेष ध्यान देने लगे थे। वस्तुतः कल्मक यदि मध्य-एसियामें साइबेरियासे तिब्बतलक् पामीरके पर्वतों, तथा आमू और कास्पियनतक पहुंचकर भी वहांपर अपना एक स्थायी साम्राज्य नहीं स्थापित कर सके, तो उसका कारण यही था, कि वह उस तरहके हथियार नहीं तैयार कर सकते थे, जैसे कि रूसियों और चीनियोंके पास थे। उन्होंने अगर लोहेके बनानेकी ओर ध्यान भी दिया, तो वह भी कुटीर-शिल्पके तौरपर ही उपजको संगठित करके। कल्मक-साम्राज्य घुमन्तुओं का अन्तिम साम्राज्य था, जिसे और सब योग्यता रहनेपर भी निर्बल हथियारोंके कारण सफलता नहीं प्राप्त हुई। रब्तन और गल्दन दोनोंने अपने लोगोंको पशुपालन-युगसे कृषि-युगमें ला रखनेकी कोशिश की, लेकिन वह अपने समसामयिकोंकी तरह लौह-युगमें नहीं आ सके।

कहते हैं, उसकी जुंगर-सेनाने तिब्बतमें लामाओं और मठोंके साथ जो अत्याचार किये थे, उन्हींके कारण कितने ही लोग असंतुष्ट हो गये थे, और रब्तन उन्हींके षड्यंत्रका शिकार हो १७२७ ई०में मारा गया।

६. गल्दन (गल्दन) II छेरिङ, रब्तन-पुत्र (१७२७–४५ ई०)

रब्तनके बाद उसका पुत्र गल्दन (गल्दन) छेरिङ गद्दीपर बैठा। इसके समयमें भी कई रूसी राजदूत आये, जिनमें उग्रिङमोफ उसके साथ-साथ १७३२-३३ ई०में जहां-तहां घूमता रहा। अप्रैल और मईमें छेरिङका ओर्दू निम्न इली उपत्यकामें कोजिनेरमें था। मईके अन्तसे सारी गर्मियोंमें वह तेमिरलिग, चेगेन, करकर और तेकेससे घूमता रहा। सितम्बरसे मार्चके अन्ततक सारे जाड़ोंमें वह इली तटपर रहा। छेरिङकी भी खल्खा-मंगोलोंसे लड़ाई जारी रही, लेकिन दलाई लामाने अपने दोनों धर्मानुयायियोंमें इस खून-खराबीको पसन्द नहीं किया, और १७३८ ई०में उनके बीचमें पड़नेसे लड़ाई बन्द हो गई। छेरिङने मंचू-सम्राट् चिन्-येन-लुङ (काउ-चुङ १७३५-९५ ई०) की अधीनता स्वीकार की, यह जुंगर-साम्राज्यके लिये अच्छा ही हुआ। १७४५ ई०में छेरिङके मरनेके साथ जुंगर-साम्राज्यकी समृद्धिका समय खतम हो गया।

७. बायन बीजिगन, अदसान खान, छेरिङ-पुत्र (१७४५ ई०)

बायन १७३३ ई०मे पैदा हुआ था, और अभी बारह ही सालका था, जब कि उसे बापकी गद्दी मिली। इस अवस्थामे भी वह भारी अत्याचारी, जिससे जनतामे अप्रिय हो गया, इसका कोई अर्थ नही है। हा, उसका चचा दोर्जे (दर्गा) लामा गद्दीका अभिलाषी था, लेकिन रखेलीका पुत्र होनेके कारण उसे वचित कर दिया गया था। दोर्जेको बुखारा और किर्गिजोके इलाकोमे बडी जागीर मिली थी। उसने सरदारोको मिलाकर षड्यत्र किया और बायनको पकडकर उसकी आखे निकलवा पूर्वी तुर्किस्तान (सिङक्याङ) के एक नगरमे कैद कर दिया। सभी सैसन (राजकुमार) तथा बहुतसे जुगर तथा लामा दोर्जेके साथ थे।

८. छेवङ दोर्जे, दरशा लामा, गन्दन छेरिङ-पुत्र (१७४५–५० ई०)

दोर्जे लामाके गद्दीपर बैठनेसे तिब्बतके दलाई लामा भी बहुत प्रसन्न थे। उन्होने इसे "एरदेनी लामा बातुर खुङ_थैंची" की पदवी प्रदान की। दोर्जे लामाकी बातुरी (बहादुरी) थी अपने वशके सभी राजकुमारोको मारकर सिंहासनके सारे खतरोको खतम कर देना। वैसे जुगर राजवशमे बुढापेके लक्षण पहले हीसे दिखलाई पडने लगे थे, लेकिन दोर्जेने राज्यके सर्वनाशकी घडीको जल्दी लानेमे बहुत काम किया।

९ दावा छेरिङ, सेङ-गे-वंशज (१७५०–५५ ई०)

जुगर राजाओके नाम प्राय सभी तिब्बती भाषाके बौद्ध है। दावा छेरिङका अर्थ है, 'चन्द्र दीर्घायु'। इसे कहनेकी अवश्यकता नही, कि आजकलकी तरह उस समय भी खलखा, जुगर (कल्मक) और दूसरे मगोल बौद्ध-धर्मको अपना जातीय धर्म मानने लगे थे, और तिब्बतके महन्तराज दलाई लामा का इनके ऊपर बहुत प्रभाव था।

दावा रब्तनके भाईका पोता था। अधिकाश जुगरोने दोर्जे लामाको नही माना था। रब्तनके वशको दोर्जेने मारकर खतम कर दिया था, लेकिन उसके भाई छेरिङ दोण्डुब्की सताने अभी मौजूद थी। दावाने तिब्बत आदिके अभियानोमें सेनाका सचालन किया था, इसलिये अपनेको गद्दीके योग्य समझता था। खोयेत कबीलेके सरदार अमुरसनाने भी दावाके पक्षका समर्थन किया, लेकिन दोर्जे लामा बहुत मजबूत था। उससे हारकर दावा और अमुरसानको कजाकोके भीतर भागना पडा, लेकिन जुगरोमे उनके समर्थक कम नही थे। जुगरो और कजाकोकी मददसे अचानक एक रातको दावाने हमला कर दिया। लडाईमे दोर्जे लामा मारा गया, और दावाने गद्दी सभाल ली। अमुरसना अपनी दूसरी ही योजनाये रखता था। वह गर्मियोमे इली-तटपर तम्बुओ और राजकीय झडेको गाडकर दरबार करता। दावा एक म्यानमे दो तलवारोको कैसे पसन्द करता? उसके आक्रमण करनेपर अमुरसना चीन भाग गया, और कुछ समयके लिये दावा सारी जुगारिया और पूर्वी तुर्किस्तानका भी खान हो गया। दावाने छेरिङ द्वारा नियुक्त काश्गरके शासकको इली प्रदेशमे रहनेके लिये मजबूर किया, लेकिन वह बहाना बनाकर काश्गर पहुच वहा लडाईकी तैयारी करने लगा। उधर काशगरी नेता यूसुफने काफिरोका जूवा उतार फेकनेके लिये लोगोको उस्काया—"इलाकेके नगरद्वारोपर बाजे बजे, और अपने देशकी स्वतत्रताको फिरसे प्राप्त करनेके निश्चयके लिये लोगोने शपथ खाई।" खोजा यूसुफ एक कट्टर मुसलमान था। उसने लोगोके सामने सुझाव रखा, कि नगरके पडोसमे डेरा डालकर पडे हुये तीन सौ कलमक व्यापारियोको मुसलमान बना लेना चाहिये। अगर वह इन्कार करे, तो उन्हे मार डालना चाहिये। उन्होने उनके साथ ऐसा ही किया, और कसाकान (पुलिस अफसर) के तौर पर काम करनेवाले जुगरोको खानके पास भेज दिया। यारकन्दमे कलमकोकी तरफसे नियुक्त शासक हाजीबेगने आखोमे आसू और सिरपर कुरान रखकर क्षमा मागी, और लोगोने उसे क्षमादान दे दिया। जब लोगोने उसे जुगरोके दूत और अनुचरोको मार डालनेको बात कही, तो उसने जवाब दिया—"काफिरको सिर्फ युद्धमे मारा जा सकता है।" एक मजबूत पहरेमे कल्मकोको शहरसे बाहर

भेजकर उसने हुक्म दिया, कि तुम फिर इस देशमे न आना। खोजा यूसुफने अन्तर्वेदके नगरो—खोकन्द, बुखारा, समरकन्द आदि—से काशगरियाके स्वतत्र होनेकी खबर देते हुए सहायता मागी, अन्दिजानके किर्गिज सरदार किवत मिर्जासे भी मुसलमानोकी सहायता करनेके लिये कहा।

दावासे हारकर भागा अमुरसना चीन-दरबारमे पहुचा था। उसने अपनेको सिंहासनका वास्तविक अधिकारी प्रमाणित किया। सम्राट्ने उसे च्वाङ-चिन्-वाङ (प्रथम श्रेणीके राजकुमार)की उपाधि प्रदान कर लफ्टनेन्ट-जेनरल (उपमहासेनापति) नियुक्त किया। १७५५ ई०मे चीनी सेना लेकर अमुरसना प्रस्थान किया। सेनाको मुश्किलसे कही धनुष खीचनेकी अवश्यकता पडी होगी। सभी जगह लोग अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार थे। दावा अपने तीन सौ अनुचरोंके साथ मुजार्त डाडेसे होकर उश-तुर्फानकी ओर भागा, लेकिन शहरके हाकिम हाजिमबेगने उसे पकडकर चीनियोंके हाथमे दे दिया, जिसके लिये हाजिमबेगको "वाङ" (राजकुमार) की उपाधि प्राप्त हुई।

१०. अमुरसना, बातुर-बगज (१७५५–५७)

दावाके गद्दीपर बैठनेके समय भी अमुरसना अपनेको कल्मकोका राजा समझता था। १७३४ ई० मे वह कजाकोकी मददसे, एमिल और ऊपरी ईर्तिशकी भूमिको लेनेमें सफल हुआ था।

चीनी सेनाके साथ आकर अमुरसनाने समझा, कि जुगारियाको जीतकर चीनी उसे सारा अधिकार सौंप देंगे। लेकिन उसकी यह आशा सफल नही हुई। दावा और छेरिङको पकडकर पेकिंग भेज दिया गया था। अमुरसनाको पता लगा, कि उसके साथ भी मचू-सम्राट् मेरे ही जैसा वर्ताव कर रहा है। असलमे चीनने दावाको अपने हाथमे एक बडा हथियार बनाकर रख छोडा था, जिसमें कि अमुरसनाके जरा भी विरोध प्रकट करनेपर उसे इस्तेमाल किया जाय। लेकिन दावा बहुत दिनोतक नही जिया। हाथसे निकल गये पूर्वी तुर्किस्तानको अमुरसनाने फिरसे लेना चाहा और थोडेसे सघर्षके बाद उसके कितनेही भागोको फिर अपने हाथमे कर लिया। चीनी अमुरसनाको कठपुतली बनाकर रखना चाहते थे। इसका विरोध करते इलीमे पडी हुई छोटी-सी चीनी सेना और उसके जेनरलको अमुरसनाने मार डाला। इसपर चीनसे नई सेना आई। एकाध बार झडप हुई। अमुरसनाने देख लिया, कि उसके लिये चीनी सेनाका सामना करना आसान नही है। १७५७ ई०में—जिस सालमें अंग्रेजोने पलासीकी लडाई जीतकर भारतमें अपने राज्यकी दृढ नीव रक्खी—दो चीनी सेनाओने आकर जुगर-साम्राज्यको खतम कर दिया। इनमेंसे एक उत्तरके रास्ते आई, और दूसरी दक्षिणके रास्ते। कल्मकोमे उस वक्त आपसमे भारी फूट थी, तो भी अमुरसना हिम्मत करके इलीकी ओर बढा। लोगोको बडी सख्यामे अपने झडेके नीचे आते देखकर उसे बहुत उत्साह मिला, लेकिन जब चीनकी अपार सेनाको देखा, तो उसके होश उड गये, और वह कजाकोकी ओर भागा। जेनरल चाउ-ह्वेइने कुछ सैनिकोको पीछा करनेके लिये छोड जुगारियापर चीनी शासनको व्यवस्थापित करना शुरू किया। दूसरा चीनी सेनापति फू-ते अमुरसनाका पीछा करते हुये कजाकोमे पहुचा। कजाकोने चीनकी अधीनता स्वीकार की। कजाक-खान अबले उसे पकडकर चीनको देना चाहता था, इसलिये अमुरसना वहांसे तोबा (साबेरिया)की ओर भागा। एक बार चीन-सम्राट्को दरबारियोने कहा—"इली प्रान्तको बिल्कुल छोड दिया जाय। हमसे यह बहुत दूर है। वहा जाकर शासन करना आसान नही है, इसलिये जिसकी इच्छा हो वह उसे ले ले।" चीन-सम्राट्ने इस सलाहको नही माना, और चाउ-ह्वेइ तथा फू-तेको युद्ध जारी रखते शासनको दृढ करनेका हुक्म दिया। अमुरसना अन्तमें साइबेरियामे कुछ समयतक मारा-मारा फिरा, लेकिन इस आफतसे चेचकने उसे जल्दी ही (१७५७ ई०)में छुटकारा दे दिया। हम बतला आये हैं, कि अमुरसना और उसके अनुयायियोको साइबेरियामें शरण देनेके कारण रूस और चीनके सबधमे खिचाव पैदा हो गया था। जब रूसियोने कहा, कि अमुरसना मर गया, तो चीनने उसके शवको मागा, शव न होनेपर चिताभस्मको भेजनेके लिये कहा। रूसियोने चीनी अमात्यको अमुरसनाके चिताभस्मको दिखला दिया, किन्तु उसे अपमानपूर्वक बिखेरनेके लिये देनेसे इन्कार कर दिया—"हरएक जातिके अपने रीति-रवाज होते हैं, जिन्हे वह पवित्र मानती है। जिस अभागे व्यक्तिने हमारे पास शरण ली, वह तुम्हारा दुश्मन मर चुका है। हमने उसके शरीरा-

वशेपको दिखला दिया, इससे अधिक हम कुछ नही कर सकते।" रूसकी भूमिमें पहुचनेसे पहलेही अमुरसनाकी वीवी वीतेइ—जो गन्दन छेरिङकी पुत्री भी थी—पतिसे आ मिली थी। पतिके मरनेके बाद उसे पीतरवुर्ग भेज दिया गया।

मचू सैनिकोने बडी निष्ठुरतापूर्वक कल्मकोका सहार किया। उनके अत्याचारोंके कारण इलीकी सुन्दर उपत्यका उजड गई, जहा चीनियोने अपने कैदियोके लिये कालापानी स्थापित किया। पाच लाखके करीब ओइरोत (कल्मक) चीनियोके हाथो मारे गये। उनका तहस-नहस करनेके वाद चीनो सेनाने आगे भी अपनी दिग्विजय जारी रक्खी। १७५६-५८ और १७६० ई०में चीनी सेना कजाकोके मध्य-आर्दूकी भूमिमे घुसी। अवलै खानने चीनियोके सामने अधीनता स्वीकार की। उसके वाद लघु-ओर्दूके सरदार नूरअलीने भी चीनियोको अपना प्रभु माना। वूरुत (किर्गिज) सरदारोने भी उनके सामने सिर झुकाया। १७६६ ई०मे चीनने अवलैको वाङ (राजा)की उपाधि दी। अब मध्य-एसियामे सव जगह चीनियोकी जय-दुदुभी वजने लगी। नूरअलीने भेटके साथ अपने दूतमडलको पेकिंग भेजा। खोकन्दके खान एदेनिया वीने भी १७५८ ई०में वही काम किया।

जुगर-साम्राज्यके विच्छिन्न होने और चीनियोद्वारा पाच लाख कल्मकोंके मारे जानेपर जनशून्य सप्तनद भूमिमे फिर कजाक और किर्गिज लौट आये, और कुछ समयतक वह चीनकी प्रजा वने रहे। पीछे सप्तनदका बहुत भाग रूसियोने ले लिया, और सिर्फ ऊपरी इली-उपत्यका चीनके भीतर वनी रही।

३ (६ ख जुंगर-वंशवृक्ष)
(१५८२-१७५७ ई०)
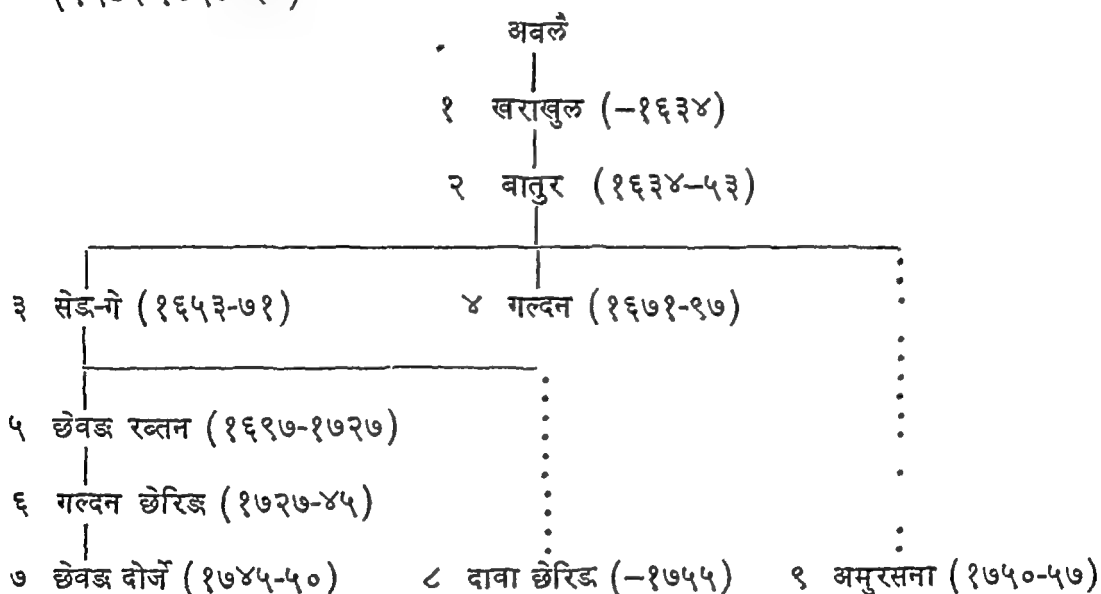
स्रोत ग्रन्थ

१ ओचेर्क इस्तोरिइ सेमिरेच्या (व व वर्तोल्द)
२ History of Mongol (H. H. Howorth)

अध्याय ७

वोलगा-कल्मक

(१६१६–१७७१ ई०)

हम कह आये हैं कि कैसे १६२० ई०में कलमकोंने खलखा मगोलोके हाथो भयकर हार खाई, और उन्हे पश्चिमकी ओर भागनेके लिये मजबूर होना पडा। उन्हीका एक भाग नोगाइयोंकी भूमि होते पश्चिमकी ओर बढा। इनके नेता उर्लुक (तोर्गुत राजा), और उसके पुत्र दै-शिङने १६३३ ई०में नोगाई-विद्रोही सल्तानियासे मिलकर कन्हाईगर चढाई की, जिसपर मास्कोने तोवोल्स्क, त्यूमन और तुराके रूसी कमाडरोंको कलमकोंके दबानेके लिये हुक्म दिया। इस प्रकार कलमकोंको साइवेरियासे हटना पडा। यही उर्लुक वोलगा-कलमको या तोर्गुत-मगोलोंका प्रथम शासक था। वोलाके कलमकोंकी राजावली निम्न प्रकार है—

१	खुड यैची उर्लुक, सुलसेगा-पुत्र	१६१६–४३ ई०
२	दै-शिङ, उर्लुक-पुत्र	१६४३–५६ "
३	फुन्-छोग्, दै-शिङ-पुत्र	–१६७२ "
४	आयुका, फुन्-छोग्-पुत्र	१६७२–१७२४ "
५	छेरिङ-दोण्डुब्, आयुका-पुत्र	१७२४–३५ "
६	दोण्डुब् अम्बो, आयुका-पुत्र	१७३५–४१ "
७	दोण्डुब् यैची, छग्दोर-पुत्र	१७४१–६१ "
८	उबासा, दोण्डुब् यैची-पुत्र	१७६१–७१ "

१ खुड थैची उर्लुक (१६१६–४३) ई०

वोल्गा-कलमक राजवशका वास्तविक सस्थापक सुलमेगा उर्लुकका ज्येष्ठपुत्र खुड-यैशी (यैची) उर्लुक था। १५६२ ई०में अल्तन खानके भतीजेके लडके खुतकताई सेसेनने एर्चिश (इर्तिश) नदीके तट पर चार ओइरोत (कलमक) कवीलोंको करारी हार दी, जिसके कारण तोर्गुतोंकी शक्ति क्षीण हो गई, और जुगरो (कलमको) की ताकत बढने लगी। १६०६ ई०मे जुगरोका बडा सरदार बातुर बापसे अलग हो इर्तिशपर चला आया। यहापर उसका मुकाबिला तोर्गुतोंके साथ हुआ, जिसके कारण तोर्गुतोंको पश्चिमकी ओर भागना पडा। पहले उन्होने कूचुम खानके बेटोंके साथ मिलकर साइवेरियामे अपनी जड जमानी चाही, लेकिन रूसियोने उनकी एक भी नही चलने दी। फिर कलमक अरब मुहम्मदके समय ख्वारेज्मके इलाकेकी ओर बढे, और उनका जब-तब ख्वारेज्मी उज्बेकोंके साथ झगडा होता रहा—इसके बारेमें हम पहले कह चुके हैं। १६३२ ई०में वह अपने यैची उर्लुककी अधीनतामें अस्त्राखानके आसपासमें रहते रूसी प्रतिनिधिका स्वागत करते रहे। १६३९ ई०में तोर्गुतोंने मगिशल्कके तुर्कमानोंको लूटा। १६४३ ई०में उर्लुकके अधीन पचास हजार किबित्का (तम्बू, परिवार) थे। १६४३ ई०मे उर्लुकके खतरेको समझकर रूसियोने हमला किया, और वह लडाईमें मारा गया। उर्लुकके तीन पुत्र थे—दैशिङ, येल्दिङ और लोब्जङ। बापके मरनेपर भाइयोमें भी झगडा हो गया।

२ दै-शिङ, उर्लुक-पुत्र (१६४३–५६ ई०)

उर्लुकके मरनेके बाद उसके लोग पूरबकी ओर भागे, लेकिन कुछ ही समय बाद एल्देर और लोब्जाङ यायिक (उराल) नदी पार हो वोलगाके मैदानोमें चले आये। उन्होने तीन

कबीलो—किताई-किपचक, मँलेवाश और एतीसनको अपने आधीन किया, साथ ही उलान-तुमान (लाल ऊट कवीला) के तुर्कमानोने भी इनकी अधीनता स्वीकार की, जो कि उस समय येम्बाके दक्षिणमे रहते थे। अब नोगाइयोका अधिक भाग कल्मकोकी प्रजा था। १६५६ ई०मे ही दै-शिङ और उसके पुत्र फुन-छोगने जारको अपना प्रभु स्वीकार किया।

३ फुन-छोग्, दै-शिङ-पुत्र (–१६७२ ई०)

इसके वारेमे इतना ही मालूम है, कि १६७० ई०में अधिकाश वोल्गा-कल्मक इसके अधीन थे और वह ख्वा रेज्मके भीतरतक लूट-मार किया करते थे।

४ आयुका थैची, फुन-छोग्-पुत्र (१६७२–१७२४ ई०)

वोल्गा-कल्मकोका यह सबसे अधिक शक्तिशाली राजा था। पीतर का समकालीन रहते हुये इतनी शक्ति सचय करना इसकी दूरदर्शिता और राजनीतिक चातुरीका परिचायक है।

१६७२ ई०मे यह प्रतापी तोर्गुत (कल्मक) राजा आयुका गद्दीपर बैठा। उसके समय लघु-ओर्दूके नोगाई तथा पहाडी चिरकासी क्रिमियाके खानके अधीन थे। आयुकाने उन्हे क्रिमिया-के अधिकारसे छीन लिया, साथ ही नोगाइयोके दूसरे दो ओर्दू कसाई और येदिसनको भी अपने यहा जामिन भजने के लिये मजबूर किया। आयुका जानता था, कि अपने पडोसी मुसलमान कबीलोकी शत्रुता मोल लेनेके साथ-साथ रूससे भी बिगाड करना अच्छा नही होगा, इसीलिये उसने २६ फर्वरी १६३९ ई०मे अस्त्राखानमे जाकर रूसियोको अधीनता स्वीकार करनेका वचन दिया। लेकिन तव भी उसका वर्ताव बहुत स्वतत्रतापूर्वक होता था। रूसी डरते थे, कि तोर्गुतोंके अतिरिक्त, नोगाइयोके भिन्न-भिन्न ओर्दू भी लूट-मारमे आयुकाके साथ सम्मिलिति हो सकते हैं, इसलिये उन्होने अधिकतर साम और दानसे ही आयुकापर अकुश रखना चाहा। आयुकाने १६९३ ई०में रूसियोकी ओरसे जाकर वाश्किरोंको जीता। आयुकाका डेरा अधिकतर कुवनस्तेपीके करातेपे स्थानमें रहा करता था। महानोगाईके थोडेसे लोगोको छोडकर वाकी सभी नोगाई आयुकाके अधीन थे, और उनमेंसे अधिकाशने यायिक और वोल्गाकी स्तेपियोको छोड कुवान और कुमामें डेरा डाला था—महानोगाई अब भी अस्त्राखानके आसपास रहा करते थे। १७२४ ई०मे आयुकाके मरनेके समयतक नोगाइयोकी यही हालत थी। नोगाइयोके तम्बू मुर्गियोके वडे टोकरेकी तरह होते थे, जिनमे नीचे गोल ढाचा होता, जिसे बीचमे धुआ निकलनेके लिये छेद छोडकर ऊटके वालोके नम्देसे छा दिया जाता। कच्चे चमडेके टुकडोको भी कभी-कभी नम्देकी जगह इस्तेमाल किया जाता था।

१६१३ ई०मे आयुकाने छग्दोरको अपना युवराज घोषित किया। १७२२ ई०मे जव पीतर I ईरानके विरुद्ध अभियान लेकर गया था, तो उसने अपने जहाजपर आयुका और उसकी पत्नीका सत्कार-सम्मान एक स्वतत्र राजाके तौरपर किया। १७२४ ई०मे मरनेके समय आयुका ८३ वर्षका था।

५ छेरिङ दोण्डुब्, आयुका-पुत्र (१७२४–३५ ई०, १७४१–६५ ई०)

आयुकाके वाद धर्मपाल-पुत्र छेरिङ गद्दीपर वैठा। यह बहुत ही कमजोर स्वभावका आदमी था। रूसियोकी कृपा प्राप्त करनेके लिये ईसाई वनकर इसने अपने लोगोकी सहानुभूति खो दी।

१७३५ ई०में यह मर गया।

६ दोण्डुब् अम्बो, आयुका-पुत्र (१७३५–४१ई०) और ७ दोण्डुब् थैची छग्दोर-पुत्र (१७४१–६१ई०)

इनके समय कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी।

८ उवासा, दोण्डुव् थैंची-पुत्र (१७६१–७१ ई०

यह एक लाख कलमक-परिवारोंका राजा था। तुर्कोंके युद्धोंमे इसके नेतृत्वमें कलमक वडी वहादुरीके साथ रूसियोंकी ओरसे लडे थे, लेकिन उसके वदलेमें रूसियोंका वर्ताव रूखा देखकर इसने पचास वर्षसे चले आते "स्वदेश चलो"के आन्दोलनका समर्थन किया और वोल्गाके दक्षिण तटके पन्द्रह हजार तम्बुओंको छोडकर वाकी कलमक इसके नेतृत्वमे इली उपत्यकाकी ओर चले गये।

कलमकोंका भागना—१७०३ ई०मे आयुका खान और जुगर थैंची छेवङ्-रब्तनसे लडाई हुई। वर्तमान कजाकस्तानके पूर्वी भागके स्वामी जुगर थे, और पश्चिमी भागके तोर्गुत (वोल्गा-कलमक)। दोनोकी सीमा मिलती थी, इसलिये इस तरहकी लडाई स्वाभाविक थी। वोल्गाके कलमक भी उसी तरहके कट्टर वौद्ध थे, जिस तरह उनके भाई जुगर। वह तिव्वत तथा ल्हासाको अपनी धर्म-भूमि समझकर तीर्थयात्राके लिये जाया करते थे। आयुकाका भाजा या भतीजा करा-कुचिन छेरिङ् अपनी माके साथ तीर्थयात्राके लिये तिव्वत गया हुआ था। लडाईके कारण देश लौटनेका रास्ता न मिलनेसे वह चीन चला गया। चीन-दरवारमें उसका वडा स्वागत हुआ। इस समय मचुओंका सबसे अधिक प्रभावशाली सम्राट् खाङ्-सी (१६६१-१७२३ ई०)का शासन था। सम्राट्ने राजकुमार कराकुचिनको उसके अनुयायियोंके साथ शेन्शी प्रदेशके पश्चिमी सीमान्तपर वसा दिया। इसी वीचमें सम्राट्ने निश्चय किया, कि वोल्गाके तटपर भागे हुये मगोलो (तोर्गुतों)को फिर देशमें वुलाया जाय। कराकुचिनसे वढकर इस कामके योग्य और कौन हो सकता था? नौ साल रहनेके वाद १७१२ ई०मे सम्राट्के दूतके साथ वह वोल्गातटपर लौटा। उसने अपने लोगोंके सामने जन्मभूमिमे लौट चलनेका प्रस्ताव रक्खा। यद्यपि इसी समय वह लौटनेके लिये तैयार नहीं हुये, लेकिन यह आन्दोलन कलमकोंके भीतर चलता रहा। चीन इस काममे तिव्वतके लामाओंसे भी सहायता लेने लगा। अन्तमें वोल्गाके तोर्गुत ओर्दूका मुख्य लामा लोव्जाङ् जाजेर अरन्त शिम्वा जैसा योग्य व्यक्ति चीनको इस कामके लिये मिल गया। वह राजकुमार वम्वरका पुत्र था जिसका तोर्गुतोंपर उसका वहुत प्रभाव था। पन्द्रह भिक्षु और साथ ही एक टुल्कू (अवतारी) लामा (जिसके शरीरमें किसी वडे महापुरुषने अवतार धारण किया) के साथ उसने अपने आदमियोंमे वाह्य-धर्मियो (रूसियो) के देशसे स्वधर्मियोंके देश और अपने पूर्वजोंकी जन्मभूमिमें लौट चलनेके लिये प्रचार करना शुरू किया। इस समय आयुकाका पौत्र उवासा तोर्गुतोंका खान था। उसने १७६९-७० ई०के तुर्की-युद्धमें रूसकी ओरसे अपने तीस हजार आदमियोंके साथ भाग ले अपनी वहादुरीका परिचय दिया था, और तुर्कोंको कई जगहोंमे करारी हार दी थी। इन सफल-ताओंके कारण उवासाका आत्मविश्वास और वढ गया था, और वह हर वातमें रूसियोंकी नाजवरदारी करनेके लिये तैयार नही था। जव रूसियोंने दवानेकी कोशिश की, तो स्वदेश लौटनेकी वातको जोर मिलने लगा। उस समय अस्त्राखानमें रूसी राज्यपाल ख्रिस्तोफ किशिन्स्की था। उसको भनक लग गई, कि तोर्गुत चले जानेकी तैयारीमें है, लेकिन उसने उन्हे समझाने-बुझानेकी जगह कडे शब्दोंका इस्तेमाल किया—"तुम अपनेको समझते हो, कि हम वहुत भाग्यशाली होकर अपना काम-काज करेंगे, लेकिन तुमको समझ रखना चाहिये, कि तुम जजीरमे वधे भालूसे अधिक कुछ नही हो। जजीर पकडकर तुम्हे जहा ले जाया जाये, वही जा सकते हो।" तोर्गुतोंको सचमुच ही एक घेरेमें डाल रक्खा गया था। उनके पूर्वमें यायिक नदीकी उपत्यकामें कितने ही रूसी किले थे, जिनमें कसाक सैनिक थे। पीतर I के वादके रूसी जारोंके जर्मन होनेका एक फल यह हुआ था, कि वहुत काफी सख्यामे जर्मनोंको लाकर वोल्गाके दाहिने तटपर वसा दिया गया था। यह जर्मन-उपनिवेश तोर्गुतोंके उत्तरमें पडते थे। पश्चिममें क्रिमियाके तारतारोंकी चोट भी कलमकोंको ही वर्दाश्त करनी पडी थी। पिछले सालोंमे कुछ अकाल भी पड गया था, इन सव कारणोंसे 'स्वदेश चलो' आन्दोलनको वडी मदद मिली। वोल्गाके दाहिने तटके देर्वेत कवीलेने इस योजनाको पसन्द नही किया, और प्रयाणके लिये जो दिन निश्चित हुआ था, उस दिन वोल्गाके न जमनेका वहाना करके उन्होंने साथ नही दिया। सारी तैयारी इधर हो रही थी, लेकिन ख्रिस्तोफ जैसे अयोग्य शासकके कारण रूसियोंने उन्हे रोकनेके लिये

कोई तैयारी नही की। कलमकोके पास दो रूसी तोपें भी थी, जिनको वह पूर्वकी ओर जाते समय अपने कजाक विरोधियोके विरुद्ध इस्तेमाल कर सकते थे। यह मालूम ही है, कि १७५७ ई०के विजयके वाद त्यान्शान-सप्तनद चीनियोके हाथमे था, इसलिये तोर्गुतोको सीमान्ततक पहुचनेकी ही दिक्कत थी। आगेके लिये उन्हे वहुत-बहुत-से प्रलोभन दिये गये थे।

बडे लामाने ५ जनवरी १७७१ ई०को प्रयाणका दिन निश्चित किया था। उसी दिन उवासा सत्तर हजार परिवारोके साथ चल पडा। उस समय अधिकाश कलमक वोल्गाके बायें तटके मैदानोमे जमा थे। सब उवासाके पीछे-पीछे चलने लगे, केवल वोल्गाके दक्षिण तटके पन्द्रह हजार परिवार रूसमे रह गये। यह पन्द्रह हजार परिवार १९४१ ई० तक सख्यामे कई लाख हो गये थे, और उनका एक स्वायत्त प्रजातत्र भी स्थापित हो गया था, लेकिन जर्मनोके प्रहारके कारण द्वितीय युद्धके समय इन्हे वोल्गातट छोडकर पूर्वमे अपने पूर्वजोकी भूमिमे जानेके लिये मजबूर होना पडा, जहासे वह फिर लौटकर नही आये। द्वितीय विश्वयुद्धने इस भूभागमे जो परिवर्तन किये, उनसे वोल्गाके जर्मन-उपनिवेश सारे रूसमें बिखर गया, और क्रिमियाके तारतार साइबेरियाकी ओर चले गये।

तोर्गुत (कल्मक) हल्की चीजे ही अपने साथ ले जा रहे थे। जब आगे यात्राकी कठिनाइया मालूम हुई, तो उन्होने रूसी तावेके सिक्कोको भी फेक दिया, जिन्हे वर्षो वाद पाया गया। तोर्गुतोको कजाकोकी भूमिमेंसे जाना था, जो उनके पुराने दुश्मन थे और जो हर जगह लूट-मार करनेकी कोशिश करते थे। कलमकोने स्त्री-वच्चो और अपने पशुओको बीचमे रक्खा था। चारो ओर हथियारवन्द पुरुष प्रतिरक्षाके लिये तैयार होकर चलते थे। उवासा स्वय पन्द्रह हजार आदमियोके साथ यायिकके किनारे पहुचा, जिसमे कि रूसी कसाकोसे अपने लोगोकी रक्षा कर सके। आठ दिनमे तोर्गुत वोल्गासे यायिकके स्तेपीमे पहुचे। उस समय यायिकके कसाक (रूसी) कास्पियनमें मछली मारने गये हुये थे, इसलिये तोर्गुत असानीसे यायिक पार कर गये। फिर किर्गिजोकी भूमिमें वर्फपर चलना पडा। अभी नदी पार करके वहुत दूर नही गये थे, कि मित्रासोफकी अधीनतामे दो हजार कसाकोने उनका पीछा किया, और वह येका-जुखोरके एक हजार तम्वुओको लौटानेमे सफल हुये। आगे कल्मकोकी कठिनाइया और वढी। वर्फ पिघलनेके कारण कीचडमे घोडो, ऊटो, पशुओका चलना मुश्किल था, ऊपरसे घास-चारेकी कमीके कारण वह वहुत दुर्वल होने लगे। गरीव लोगोको पैदल चलना पडता था, जब कि धनी मगोल सवारियोपर चल रहे थे। इस विषमताने भी लोगोके हृदय में जलन पैदा की। लेकिन जैसे भी हो, अव तो उनके लिये आगे वढनेके सिवा और कोई रास्ता नही था। दो मासकी यात्राके वाद वह इर्गिच नदी पार हुये। अव उनकी यात्रा सवसे कठिन थी। वसन्तके कारण वर्फ पिघलनेसे सभी नदी-नाले भरे हुये थे, जिन्हे पार करनेके लिये उन्होने नरकटके मुट्ठोको वाधकर तैरते पुल तैयार किये थे। इर्गिच और तुरगाई नदियोके वीचमे तोर्गुतोके सवसे अधिक आदमी मरे। तुरगाई पार होकर उन्होने दोनो तोपोको छोड दिया। इसी समय रूसी सेनाके साथ जेनरल त्राउवेन्वर्ग ओर्स्कसे चला, किर्गिज-कजाक लघु-ओर्दूका खान नूरअली भी कलमकोके पीछे पडा। वह तुरगाईसे आगे होकर उन्हें रोकना चाहते थे, लेकिन तोर्गुत दस दिन पहले ही आगे जा चुके थे। उन्होने दूत भेजकर कलमकोको लौटनेके लिये कहा, लेकिन कलमकोने आगे जानेका निश्चय नही छोडा। इशिम नदीके तटपर पहुचनेपर उनकी अवस्था कुछ वेहतर हुई, लेकिन यहापर किर्गिज-कजाकोसे दो वार सघर्ष हुआ। अब कगरवेइन, शर्रा-उसुनकी १५० वेर्स्त (२५ फर्सख) चौडी स्तेपी जैसी भयकर भूमि मिली, जिसमें वह तीन दिन चले। यहा पीले रगका दुस्स्वादु पानी मिला। प्याससे मजबूर होकर उन्होने उसे पिया, जिसके कारण वीमार होकर कई सौ आदमी मर गये। इस स्तेपीको पार करते ही नूर अली (लघु-ओर्दू) और अवलाई (मध्य-ओर्दू) के कजाकोने आक्रमण कर दिया। दो दिनतक भयकर लडाई हुई। इसके वाद तोर्गुत वलखासके किनारे पहुचे, जहा फिर कजाकोसे युद्ध हुये। आठ महीनेकी भयकर यात्राके वाद १७७१ ई०के मध्यमे इली नदीसे नातिदूर चरापेन स्थानमे वह चीनी सीमाके भीतर घुसे। एक रूसी इतिहासकारने लिखा है—"इस प्रकार आधुनिक

कालकी एक अत्यन्त असाधारण प्रवास-यात्रा समाप्त हुई, रूसी साम्राज्य एकाएक एक ऐसी योद्धा जातिसे वंचित हो गया, जिसका जीवन कास्पियन तटकी स्तेपीके बिल्कुल अनुकूल था, और जिसे घुमन्तू हजारों परिवारोंने अपने असंख्य पशुओंका चारण करके आबाद रखा था, लेकिन अब वह बहुत वर्षोंके लिये निर्जन हो गया।

चीनकी ओरसे उनके स्वागतकी भारी तैयारी की गई थी। एक सालके खाने-कपड़ेका इंतिजाम था। चीनने उन्हें इलीपर बसानेका प्रबन्ध किया था, जहाँ खेती और पशुचारणके लिये बहुतसी जमीन पड़ी हुई थी और जिसे १४ ही साल पहले उनके जुंगर भाइयोंने खाली कर दिया था। खाने-कपड़ेके अतिरिक्त बहुतसी नकद चाँदी भी कल्मकोंको चीनने दी। चीन-सम्राट्ने इस यात्राके स्मारक के तौरपर तोर्गुतोंकी नई भूमिमें इली-तटपर चार भाषाओंमें अभिलेख लिखकर पत्थरपर खुदवाया, जिसके कुछ वाक्य है—"यदि वह अपनी इच्छाओंको सीमित रख सके, तो किसी को क्षुब्ध होनेकी अवश्यकता नहीं, किसीको डरनेकी अवश्यकता नहीं, यदि वह अपनेको ठीक समयपर रोक सकता है। ये भाव है, जिन्होंने कि मुझे इस काममें लगाया। आकाशके नीचे सभी जगहोंमें समुद्रसे पार दूरतम कोनोंमें ऐसे आदमी है, जो कि दास या प्रजाके नामपर आज्ञा पालन करते है। क्या मैं यह मान लूँ, कि वह सब मेरे अधीन हैं, और वह मेरे करद हैं ? यह गलत बात होगी। मैं अपने मनमें यही समझता हूँ, जो कि बिल्कुल सच है, कि तोर्गुत लोग बिना मेरी ओरसे दबाव डाले अपने आप अबमें मेरे कानूनोंके अधीन रहनेके लिये चले आये हैं। निःसंदेह दैवने उन्हें ऐसा करनेकी प्रेरणा दी। उन्होंने ऐसा करके दैवी आज्ञाका पालन किया। मेरे लिये यह ठीक नहीं होगा, यदि इस घटनाका एक प्रामाणिक रूपसे स्मारक तैयार न करूँ।"

वोल्गातटसे चले सत्तर हजार परिवारोंमेंसे केवल पच्चीस हजार परिवार (तीन लाख व्यक्ति) इलीके तटपर पहुँच पाये थे। इनमेंसे कितने ही इली-उपत्यकामें बस गये, और कितने ही जाकर गोबीके पश्चिमी भागमें रहने लगे।

स्रोत ग्रन्थ

१ History of Mongol (H. H. Howorth)

अध्याय ८
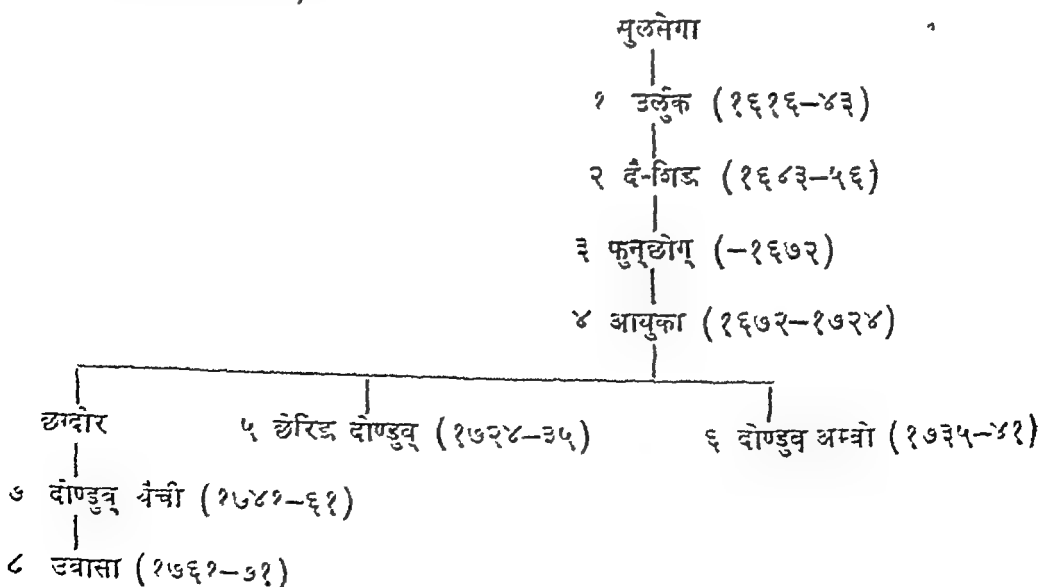
कजाक-ओर्दू

(१७१८–१८१२ ई०)

१८ वी सदीमे जिस तरह किपचको (जू-छि-उलुस) का एक भाग मध्य-ओर्दू, महाओर्दू और लघु-ओर्दूके रूपमे बट गया, इसके बारेमे हम कह चुके है। इन्ही तीनो ओर्दुओसे वर्तमान कजाक जातिका विकास हुआ।

क. मध्य-ओर्दू (१७१८–१८१८ ई०

श्वेत-ओर्दू जू-छिके दूसरे पुत्र ओर्दाका उलुस था, इसे हम बतला आये हैं। सुवर्ण-ओर्दूके प्रभुत्व के समय श्वेत-ओर्दू उसके अधीन रहा, लेकिन बा-तू-वशके उच्छेदके बाद श्वेत-ओर्दूके खानोने प्रधानता प्राप्त की। इसी श्वेत-ओर्दूकी एक शाखा मध्य-ओर्दू था, जिससे इनके खान भी जू-छिके पुत्र ओर्दासे अपना सबध जोडते है। श्वेत-ओर्दूको विच्छिन्न करनेमे नोगाइयोका भी खास हाथ था, यह भी हम बतला चुके है। मध्य-ओर्दूका प्रथम खान पुलाद (बुलात) श्वेत-ओर्दूका सीधा उत्तराधिकारी था, जिसके वशके मुख्य खान निम्न प्रकार हुये—

१ पुलाद, बुलात, शेमीअका खान	१७१८–३४ ई०
२ अबुल मोहम्मद, पुलाद-पुत्र	१७३४–४८ ,,
३ अबलइ, शिगाईवशज	१७४८-८१ ,,
४ वली, अबलइ-पुत्र	१७८१–१८१८ ,,

१ पुलाद, बुलात, शेमीअका खान (१७१८–३४ ई०)

श्वेत-ओर्दूकी शक्तिको चूर्ण करनेमे काफी हाथ जुगर-कलमकोका था। पुलादके समय इसका ओर्दू अपने चरम उत्कर्षपर पहुचा हुआ था। जुगरोने मध्य-ओर्दूके कजाकोको उनकी अपनी भूमिसे भगा दिया। कजाको (उज्बेक-कजाको) को केवल सप्तनद ही छोडकर नही भागना पडा, बल्कि १७२३ ई० में जुगरोने कजाक खानोकी पुरानी राजधानी तुर्किस्तान-शहरको भी दखल कर लिया, जहापर कि उनके कितने ही खानोकी समाधिया बनी थीं। जुगरोने ताशकन्द और सैरामको भी लेकर मध्य-ओर्दूको बहुत क्षीण हालतमे छोडा। उनमेंसे अधिकाश कजाक समरकन्दकी ओर भागे, महा-ओर्दू तथा मध्य-ओर्दूका कुछ भाग खोजन्दकी ओर और लघु-ओर्दू बुखारा और खीवाकी तरफ शरण लेने गया। अभागे भगोडोका अकाल और महामारीने पीछा किया। इस तरहकी भारी आफतने पडनेपर उज्बेक-कजाकोने कुछ समयके लिये अपने भीतरी वैरको भुला दिया, और एक बडी सभामे जमा होकर उन्होने अपनी पितृभूमिको काफिरोसे मुक्त करनेका निश्चय करते हुये लघु-ओर्दूके सरदार अबुल्खैरको अपना प्रधान सेनापति बनाया, और अपनी शपथको पक्का करनेके लिये हूणोंके समयसे चली आती प्रथाके अनुसार एक सफेद घोडेकी कुर्बानी की। कुछ लडाइयोमे सफलता जरूर मिली, लेकिन जुगर थैंची गन्दन छेरिङने उन्हे हराकर भयकर बदला लिया। कजाकोने अब पितृभूमिका ख्याल छोडकर भागनेमे ही कल्याण समझा। लघु-ओर्दूने पश्चिमकी ओर बोल्गा-कलमको (तोर्गुतो) को भगाते जाकर येम्बा तथा यायिक (उराल)की उपत्यकाओमे विचरण करना शुरू किया। मध्य-ओर्दूने उत्तरकी ओर भागकर पहले ओरी और उई नदियोकी उपत्यकाओमे जा वहासे बाश्किरोको भारी

सख्यामे भगा दिया। पीछे वाश्किर उरालके कसाको (रूसियों)से मिलकर इनके वगलमे काटे वन गये। चारो ओरसे खतरा ही खतरा दिखलाई देनेपर मध्य-ओर्दूने रूसियोकी अधीनता स्वीकार करनेमे खैरियत समझी १७३२ ई०मे शेमीअकाने रानी अन्नाकी वफादारीकी शपथ ली, लेकिन कसाकोने इसे पसन्द नही किया, जिसके कारण मध्य-ओर्दूमे झगडा हो गया। वाश्किरोपर इन्होंने असफल आक्रमण किया। जिस समय अपनी मूलभूमिको कसाक छोडकर भाग रहे थे, उस समय महा-ओर्दू अपनी पुरानी भूमिमे जुगरोकी अधीनता स्वीकार कर किसी तरह रह गया।

जिस समय शमीअका रूसकी अधीनता स्वीकार करके अपनी रक्षा करनेकी कोशिश कर रहा था, उस समय सारे कजाकोका सवसे वडा नेता तथा लघु-ओर्दूका खान अवुल्खैर भी रूसका खैरखाह था। मध्य-ओर्दूको रूसकी अधीनता स्वीकार करानेमे उसका काफी हाथ था। १७३४ ई०मे रूसी सीमान्त (ओरेनवुर्ग) के राज्यपाल किरिलोफको शेमिअकाको खानकी पदवी-दानके लिये नियुक्त किया गया था, लेकिन पदवी प्राप्त करनेसे पहले ही शेमीअका मर गया। इस पदवीके साथ जो पत्र रूसी रानीने भेजा था, उसमे लिखा था—"हमारी प्रजा शेमीअका खान और मध्य-ओर्दूके किर्गिज-कजाकोकी सेनाके मुखियोको।"

१८. (३।८।क१) मध्य-ओर्दू (१७२८-१७३८ ई०)

२. अवुल् मुहम्मद, पुलाद-पुत्र (१७३४–४८ ई०)

शेमीअका (पुलाद) खानके मरनेके वाद मध्य-ओर्दूके अवुल् मुहम्मद और उसके वाद अवलइ खान हुये। किसी-किसीके मतमे अवुल् मुहम्मद पुलाद खानका पुत्र था। इस समय किरिलोफकी जगह तातिश्चेफ १७३० ई०मे ओरेनवुर्गका राज्यपाल था। उसने अवुल् और अवलइ दोनोको ओरेनवुर्गमे वुलाया। स्वय न आकर उन्होने अगस्त १७३८ ई०मे सदेश भेजा, कि हम वहुत दूर इर्तिशके किनारे है, इसलिये अगले साल आकर राजभक्तिकी शपथ लेगे।

लेकिन यह भी वात उन्होने पूरी नही की। इसी वीचमे १७३९ ई०के आरम्भमें राजुल उरुसोफ ओरेनवुर्गका राज्यपाल होकर आया। मध्य-ओर्दूका अभीतक कोई पक्का खान नही चुना गया था, लेकिन अवुल् मुहम्मद उसका सवसे वडा प्रभावशाली नेता था। लघु-ओर्दूका खान अवुल्खैर दावा करता था, कि वह हमारे अधीन है। इसके कारण दोनोमे झगडा खडा हो गया। १७४० ई०में अवुल् मुहम्मद, अवलइ सुल्तान और दूसरे कितने ही सरदारो और साधारण कजाक मुखियोके साथ ओरेनवुर्ग पहुचा। राजुल उरुसोफने उसका उसी तरह सम्मान किया, जैसा कि अवुल्खैरके साथ किया था। उन्होने राजभक्तिका पत्र अर्पित किया, जिसे एक दुभाषियेने पढा। इसके वाद अवुल् मुहम्मद और अवलइने, एक जरदोजीके खडपर घुटने टेककर शपथ ली, कुरानको अपने माथेपर लगाया, और शपथपत्रकी मुहरको सिरसे छू कुरानको चूमा। पासके ही तम्वूमे मध्य-ओर्दूके १२८ अमीरोने उसी तरह जारके प्रति शपथ ली। रस्मकी समाप्ति होनेपर तोपे दागी गई, और अन्तमें भोज हुआ। वहाके सेनापतिने दूसरे दिन भेट करते समय मध्य-ओर्दूके नेताओंसे कहा, कि अपने देशसे गुजरते समय रूसी कारवाकी रक्षा करना, और मूलरके कारवाकी जो वस्तुए महा-ओर्दूने लूट ली है, उन्हे लौटवानेका प्रयत्न करना। उसने कजाको ओर वोल्गा-कलमकोंके साथ शाति स्थापन करनेकी कोशिश की। लेकिन यदि लूटके मालको लौटाना या लूट-मार वन्द करना हो सकता, तो वह कजाक ही क्यो होते? जिस समय यह कार्रवाई हो रही थी, उसी समय ओरेनवुर्गमें अवुल्खैरके दो पुत्र नूरअली और एरअली मौजूद थे, लेकिन उनको डर लगा, कि अवुल् मुहम्मद कही रूसियोंसे चुगली करके हमे कैद न करा दे, इसलिये वह जल्दी-जल्दी वहासे चले गये।

१७४१ ई० मे वाश्किर विद्रोहियोके नेता कराशक्काल (काली दाढी) ने भागकर कजाकोमें पनाह ली, और उसने मध्य-ओर्दूकी एक टोलीको लेकर जुगरोको लूटा। जुगर उनका पीछा करते आ रहे थे, कि रास्तेमे कजाकोके डेरोको पा उन्होने उन्हे लूट लिया। राजुल उरुसोफने जुगर-राजा और रूसके वीचमें हुई सुलहका हवाला देकर ऐसा न करनेके लिये कहा। इसपर जुगरो ने जवाव दिया—"हम नही जानते, कि कजाक रूसी प्रजा है।" अवुल् मुहम्मदने देशमें जुगरोंसे प्रतिरक्षार्थ एक मजवूत किला वनानेके लिये रूसियोको लिखा। उधर कजाकोका आक्रमण जुगारियाकी सीमान्तपर जारी रहा। १७४१ ई०में जुगर-राजा गल्दन छेरिङने मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूको दड देनेके लिये दो सेनायें भेजी, जिन्होने अवलइको वदी वनाकर अपने साथ ले जानेमें सफलता पाई। अवलइ रूसी प्रजा था, इसलिये उसे छुडानेके लिये रूससे १७४२ ई०में मेजर मूलरको जुगरोंके पास भेजा गया। मुहम्मदने भी दूतमडलके साथ अपने पुत्रको जामिनके तौरपर भेजा। रूसियोको यह वात पसन्द नही आई, कि हमारी प्रजा होते हुये कजाक कल्मकोसे सीधे वातचीत करे। कजाकोने जुगरोसे वहुत कहा, कि अव हम लूट-मार नही होने देगे, लेकिन जुगर कजाकोंके स्वभावसे अच्छी तरह परिचित थे, इसलिये वह जामिन रखनेपर जोर देते रहे। अवुल् मुहम्मदको अपने लोगोपर नियत्रण रखनेके लिये सावधान किया गया, और मामला उस समयके लिये सुधर गया।

अवुल् मुहम्मद यद्यपि अधिकाश कजाकोके लिये मध्य-ओर्दूका खान था, लेकिन उनकी भारी सख्या तुरसुनखान-पुत्र वुर्राकको अपना खान मानती थी, जिसने भी इसी समय रूसियोंके जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली थी। १७४३ ई०मे उसने अपना दूतमडलन भेज साधारण सदेशवाहक द्वारा पत्र और सुनहरी समूरी खाल भेजी, जिसे लौटानेपर उसने रूखासा जवाव दिया। उधर मेजर मूलरके प्रयत्नसे १७४२ ई०मे जुगरोने अवलेई सुल्तानको छोड दिया था।

१७४४ ई०में जुगरोने साइबेरियामे रूसी सीमाके पास शक्ति प्रदर्शन किया । अबुल्-मुहम्मद और उसके लोग तुर्किस्तानकी ओर खिसक गये, और उन्होने गन्दन छेरिङके साथ घनिष्ठ मित्रता करनी चाही—अबुल् मुहम्मदका लडका अब भी गन्दनके पास जामिनके तौरपर था । अबुल् मुहम्मदको आशा थी, कि इस तरह वह गन्दनसे मध्य-ओर्दूकी पुरानी राजधानी तुर्किस्तान-शहरको पा लेगा । लेकिन उसका प्रतिद्वंद्वी बुर्राक सुल्तान भी अपने पुत्रको जुगरोंके पास जामिन दे मध्य-ओर्दूको अपनी ओर करनेकी चेष्टा कर रहा था । इस्लाम और बौद्ध धर्मको लेकर कजाको और जुगरोका झगडा बहुत पुराना था, जिसके कारण यदि रूसियो और जगरो (कल्मको) मे लडाई छिडती, तो कजाक जरूर रूसियोंकी ओर हो जाते । खैर, रूसी सीमान्तके पास प्रदर्शन करके ही जुगर लौट गये, और लडाई नही हो पाई । इस शातिसे लाभ उठाकर दो सालके बाद फिर मध्य-ओर्दू रूसी सीमान्तपर पहुचा, और अबुल् मुहम्मद तथा बुर्राक दोनोने पुन जार-भक्तिकी शपथ ली । १७४६ ई०मे जुगर आक्रमण करके कजाकोंके बहुत-से घोडे छीन ले गये । यह वही साल था, जिस साल कि जुगर-राजा गन्दन छेरिङ मरा ।

१७४८ ई०मे बुर्राकने लघु-ओर्दूके खान अबुल्खैरको हराया । पीछे रूसी प्रजा करा-कल्पकोंको लूटा । जिसके लिये रूसी दड देते, इसलिये डरके मारे पूर्वकी ओर बढ बुर्राकने ईकान, ओतरार और सिगनकपर अधिकार कर वहा डेरा डाला । अगले साल एक खोजाके साथ-रहते बुर्राक और उसके दो पुत्रोको जहर खिलाकर मार डाला गया । शायद अबुल्खैर-पुत्र न्‌रअलीने पिताकी हत्याकी शिकायत जुगरोंमे की । इस समय (१८वी सदीके मध्यमे) मध्य-ओर्दू के अधिकाश सुल्तानो और सरदारोंने जुगरोंके यहा अपने जामिन दे रक्खे, थे, इसीलिये जुगर मध्य-ओर्दूको अपनी प्रजा मानते थे । इसी समय अबुल् मुहम्मद तुर्किस्तानकी ओर गया, जहापर वह अपनी मृत्युके समयतक रहा ।

३ अवलइ, शिगाई-वंशज (१७४८–८१ ई०)

अबुल् मुहम्मदके दक्षिणकी ओर, चले जानेपर मध्य-ओर्दूके कुछ सरदारोने मृत बुर्राकखान के भाई सुल्तान कूचुकको अपना खान चुना, लेकिन रूसियोने उसे स्वीकार नही किया । इस पर वह जुगरोकी ओर झुके । शिगाई खानके वशज अवलइकी दूसरी ही नीति थी । उसका कबीला अधिकतर रूसी सीमाके पास रहता था, इसलिये वह रूसियोंका अधिक पक्षपाती था—खासकरके तबसे, जब कि मध्य-ओर्दूने १७५१ ई०मे उलुकतागमे जुगरोंसे करारी हार खाई । १७५४ ई०मे उनके ऊपर जुगरोका इतना अधिक दबाव था, कि बहुत-से अमीरोने रूसियोसे आज्ञा मागी, कि हमारे बीबी-बच्चोको अपने यहा शरण दो, और सीमान्तपर जमीन दो, तो हम खेती करके अपने गाव बसा लेगे । इसपर कितने ही कजाकोको उइस्कके पास बस जानेकी इजाजत मिली, और उचित जामिन दे देनेपर कितनो हीको हटकर रूसी सीमान्त रेखाके पीछे आनेकी भी इजाजत मिल गई । लेकिन इसी समय जुगर-साम्राज्यको चीनियोने नष्ट कर दिया, जिसमे अवलइका भी काफी हाथ था । साम्राज्यके पतनमे अमुरसना और दावा छेरिङ (१७५०–५५ ई०) का झगडा मुख्य कारण था, इसे हम पहले बतला आये हैं । चीनियोकी सहायतासे अमुरसना खान बना था, लेकिन वह चीनियोके हाथकी गुडिया नही बनना चाहता था, इसलिये विद्रोही बना, और भारी चीनी सेना आनेपर उसने कजाकोमे भागकर शरण ली । अवलइ खानने घोडे और सरक्षक दिये, और गिरफ्तार करनेके लिये वचन देकर चीनी सेनापतियोके पता पूछनेपर बहाना कर दिया, कि अमुरसना रूसियोके पास भाग गया । इसपर नाराज हो चीनी जेनरल तलतगा कजाकोंके देशमे घुसा । फिर कजाकोने उसे भुलावेमे डाला । उधर मगोलो और मचू सैनिकोको अपने जेनरलका आचरण बुरा लगा, इसलिये उनमेंसे बहुतेरे साथ छोडकर चले गये, और जेनरलको पीछे हटना पडा । इन लडाइयोमें सबसे बहादुर चीनी सेनापति हो मारा गया, और वही हालत करमक सेनानायको—नीमा, पयार, सीला और मगलिक आदिकी हुई, जो कि अमुरसनाके विरुद्ध हो चीनकी ओरसे लडे थे । इस हारकी खबर मिलनेपर चीनसे एक

नई सेना आई, जिसने कजाकोको हरा उनके बहुत-से मुखियोको पकडकर पेकिंग भेज दिया, जहा उन्हे प्राणदड दिया गया।

जुगरो जैसी अजेय शक्तिको इतनी आसानीसे खतम करते चीनियोको कोई दिक्कत नही मालूम हुई, यह देखकर अबलई रूसका पक्ष छोड चीनकी ओर झुका, और कुछ समय बाद उसने चीनी सम्राट् चियान-लुङ (काउ-चुङ १७३५—९५ ई) की अधीनता स्वीकार की। सम्राट्ने इतने प्रभावशाली खानको अपना सामन्त बनते देखकर उसे राजा (वाङ) की उपाधि भेजी। अगले साल १७५७ ई० मे जब उसे अपने ओर्दूके साथ चीनी प्रजा घोषित करनेकी आज्ञा आई, तो अबलइने टालमटोल कर दिया।

१७५८ ई०मे मध्य-ओर्दूके एक भागके कजाक रूसी सीमापर आक्रमण कर दोनो ओरके करद २२० तारतारोको पकड ले गये, और इनका दूसरा भाग पूर्वकी ओर बढकर जुगर उच्छेद-से खाली पडी भूमिको आबाद किया। अबलइ जहा एक ओर चीनियोको विश्वास दिलाता था, कि मै सम्राट् का करद सामन्त हू, वहा दूसरी ओर उसने रूसको भी विश्वास दे रक्खा था, कि मै यह सब कुछ ऊपरी मनसे कर रहा हू, समय आनेपर मै रूसकी ओरसे चीनके साथ लड़ूगा। रूसी रानीने बडी प्रशसा करते हुये उसके लिये एक बहुमूल्य समूरी छाल भेजी। मध्य-ओर्दूका अधिकाश अबलइको अपना खान मानता था। रूसी नही चाहते थे, कि अबलइका प्रभाव और शक्ति अधिक बढे। उन्होने तब भी कूटनीतिसे ही काम लेना चाहा, और कहा, कि लघु-ओर्दूके नूरअली खानकी तरह तुम भी अपने पुत्रको जारके दरबारमे जामिन भेजकर सम्मान प्राप्त करनेकी प्रार्थना भेजो। अबलइने इसे पसन्द नही किया।

१७६० ई० मे मध्य-ओर्दूके कजाकोने चीनकी प्रजा बुरूतो (जगली किर्गिजो) पर आक्रमण किया। चीनियोने इसपर विरोध प्रकट करते हुए अपनी सेना अबलइको दड देनेके लिये भेजी। तीन ही वर्ष पहले जुगरोकी क्या दशा हुई, यह कजाक देख चुके थे, इसलिये उन्होने तुरन्त चीनियोकी अधीनता स्वीकार कर ली, लेकिन साथ ही रूसको प्रसन्न रखनेके लिये भी कितने ही बाश्किर और बराबिन तारतार बदियोको उनके पास लौटा दिया। रूसी चाहते थ कि अबलइका सबध चीनसे न हो। १७६२ ई० मे उन्होने हुक्म दिया, कि कजाक बडोमे भेट बाटनी है, सीमान्तके पास घोडोके लिये अस्तबल, गाडियोके रखनेके लिये गाडीखाने, चारो ओर प्राकार और दूकानसे घिरा एक छोटा महल खासकरके खानके लिये बनाना है। वह महल पेत्रोपावलोव्स्कके सामने बना भी दिया गया है। रानी एकातेरिना II की गद्दीके समय अबलइ, ऐचुवक और लघु-ओर्दूके नूरअलीने भी राजभक्तिकी शपथ ली, यद्यपि अबलइ अब भी चीनियोकी अधीनताको मानता था। इस प्रकार उसकी चाल दोरगी थी।

चीनी सेना जुगरोको हरानेके बाद पश्चिमकी ओर बढती गई। उसने खोकन्द और ताशकन्दपर आक्रमण किया। इसपर वहाके शासकोने अफगानिस्तानके अमीर अहमदसे इस्लामके नामपर मदद मागी। काश्गर और यारकन्द आदिके लोगोने भी जाकर काबुलपतिके पास गुहार की। अहमदशाह अब्दाली भारतमे भारी विजय (१७५६ ई०) प्राप्त करके काफी नाम कमा चुका था, इसलिये वह उत्तरसे आई गुहारको ठुकरा कैसे सकता था ? उसने काफी सेना अन्तर्वेद की ओर भेजी। ताशकन्द और खोकन्दके बीचमे चीनी सेनासे बातचीत चलती रही, फिर सारे मध्य-एसियामे जहाद (धर्मयुद्ध) की घोषणा कर दी गई। उधर चीनियोने अबलइको सनद देकर इलीपर बसनेकी इजाजत देते हुये, दुश्मनोसे रक्षाका भार अपने ऊपर ले लिया। अबलइने अपने ससुर सुल्तान अहमद, कुछ कजाक अमीरो और उनके लडकोको जामिन बनाकर चीनियोके हाथमे दिया, और इस प्रकार अबलइ मुसलमानोके जहादमे शामिल नही हुआ।

रूसियोने कोल्चबली नदीपर १७६४ ई०मे एक छोटासा किला सेमीप्लातिन्स्क बनाया था, जो कजाकोके साथ व्यापार करनेका केन्द्र था। अबुल्मोहम्मद-पुत्र अबुल्फैज, तथा तुर्किस्तानके पुलाद खानके भाई अबुल्फैजके कहनेपर ही रूसियोने यह किया था। अबुल्फैज मध्यओर्दूके सबमे अधिक शक्तिशाली कबीले नैमनका मुखिया था। जुगारियामे रहनेके कारण अब वह चीनियोपर अधिक

निर्भर करता था। रूसियोंने अवलइको सेमीप्लातिन्स्कमें व्यापार करनेकी आज्ञा दे दी। कजाकोंने खेती सीखनेकी इच्छा प्रकट की, तो समुचित जामिन लेकर दस खेनी सिखानेवालोको भी रूसियोंने भेज दिया। इतिहासके आदिकालसे अवतक खेतीसे अछूते कजाक जुगरोंकी भांति अव खेतीके महत्त्वको समझने लगे।

अव हम उस समयमें पहुचते है, जव कि १७७० ई०मे वोलगा-नटसे तोर्गुत (कल्मक) भगे थे। कल्मकोका रास्ता अपने पुराने दुश्मन कजाकोंकी भूमिके वीचमे था। रूसियोंने भी उन्हे भडका रखा था, इसलिये अवलइ और उसके आदमियोंने सुल्तान अवुल्फ़ैजकी तरह कल्मकोंपर आक्रमण करके वहुत लूट-मार की, और उनमेंसे भारी सख्याको अपना वन्दी वनाया।

१७७५ ई०में अवुल्फ़ैज तथा मध्य-ओर्दूके और कितने ही सरदारोंने साइवेरियाकी सीमापर जाकर रूसी प्रजा होनेकी आज्ञा मागी—प्रजा होनेका मतलव था वार्षिक पेंशन और भेंट-इनाम-की प्राप्ति। रूसियोंने कहा—"तुम तो पहले हीसे हमारी प्रजा हो।"

अवलइ अपनी चालाकी-चतुराईके वलपर वहुत शक्तिशाली वन गया, और वरावर रूस और चीनके वीचमे अपने दावपेच चलाता रहा। तो भी चीनकी ओर उसका झुकाव अधिक था, वह चीनी भाषा वोल भी सकता था। अपनी शक्तिको १७७१ ई०के वाद उसने अपनेको देश खुल्लमखुल्ला खान (राजा) कहना शुरू किया। कहासे यह पदवी मिली, पूछनेपर वह वडे अभिमानके साथ जवाव देता—तोर्गुतोंपर विजय प्राप्त करनेसे अवुल्मुहम्मदके मरनेपर तुर्किस्तान और ताशकन्दके कजाकोंने मुझे अपना खान निर्वाचित किया। अपने पूर्वजोंकी भांति वह भी चाहता था, कि मैं भी कजाकोंके सवसे वडे सत खोजा अहमदकी समाधिके पास रहू। रूसियोंने दवाव दिया, कि अपने पुत्रको जामिन भेजकर जारसे खानकी पदवी प्राप्त करो। इसपर १७७७ ई०मे उसने अपने पुत्र तोगुमको खान-पदवी प्राप्त करनेकी प्रार्थनाके साथ पीतरवुर्ग भेजा। दरवारमे उसका अच्छा स्वागत हुआ, और २२ अक्टूवर १७७८ ई०को कुछ और भेंटोके साथ खानकी उपाधिका शासनपत्र ओरेनवुर्ग के राज्यपालके पास भेज दिया गया। अवलइको सूचित किया गया, कि उपाधि प्राप्त करनेके लिये त्रोइतस्क या साइवेरियाके किसी दूसरे रूसी नगरमे आओ। अवलइने ऐसा करनेमे इन्कार कर दिया। इसपर उसे उसके डेरेमे एक रूमी अफसरके सामन शपथ दी गई। लेकिन अवलइ चीनियोको नाराज नही करना चाहता था, इसलिये, उसने रूसी रानीकी भेजी हुई भेंटको स्वीकार नही किया। चूंकि रूसियोंने वुल्तो (जगली किर्गिजो)के विरुद्ध मदद देनेसे इन्कार कर दिया था, इसलिये अवलइने अपने पासके रूसी वदियोको वही लौटा दिया, और उन तुर्कमानोको भी, जिन्हे कि तोर्गुत अपने साथ ला महायात्रामें कजाकोंके देशमें छोड गये थे। इसपर रूसियोंने नाराज हो अवलइकी पेंशन वन्द कर दी, और कुछ कजाक सुल्तानोको भी उसके विरुद्ध उकसाया, जिन्होंने उसे पकडकर रूस ले जानेका असफल प्रयत्न किया। अवलइ वुरूतोंके विरुद्ध सफल अभियान करके तुर्किस्तान-शहर लौटा। उसने अपने लडके हादिलके लिये तलस नदीके तटपर एक प्राकारवद्ध महल वनवाया। पास हीमे महाओर्दूके कजाकों—जो कि इस समय अवलइकी प्रजा थे—के कहनेपर एक शहर भी वसाया, जहा कराकल्पक किसान आकर आवाद हो गये। वन्दी वनाकर लाये वुरूतोको वह मध्य-ओर्दूके देशके उत्तरमें ले गया, जहा वह पीछे यानी-किर्गिज (नये किर्गिज)के नामसे प्रसिद्ध हुये। १७८१ ई०में अवलइ रूसी सीमान्तकी ओर जा रहा था, इसी समय ७० वर्षकी उमरमे उसका देहान्त हो गया। उसकी कब्र तुर्किस्तान शहरमे वनाई गई। चीनमे खवर मिली, तो वहासे एक विशेष अफसर भेजा गया, जिसने परिवारको जमाकर राजसी ढगसे अवलइकी अन्त्येष्टि-क्रिया कराई।

४ वली, अवलइ-पुत्र (१७८१—१८१८ ई०)

अवलइके मरनेपर मध्य-ओर्दूको महा-ओर्दूवाले वुरी तौरसे हराकर भारी सख्यामे उनके पशुओ को छीन ले गये। मध्य-ओर्दूकी शक्ति अव विखरने लगी। उसके उत्तरी भागने अवलइ-पुत्र वलीको अपना खान चुना, और प्रार्थना करनेपर रूसने उसे स्वीकार भी कर लिया। १७८२ ई०में लेफ्टेनेन्ट-जेनरल याकोवने वडी धूमधूमसे पेत्रोपावलोव्स्कमें वलीको खान घोपित किया, लेकिन मध्य-ओर्दूके

सबसे प्रभावशाली कबीले नैमनने वलीको न मजूर कर अबुल्मुहम्मद-पुत्र अबुल्फज (मृत्यु १७८३ ई०) को अपना खान चुना, जिसे चीनने मजूर कर लिया। लेकिन नैमनोमें भी सब एकराय नही थे। अबुल्फैजका पुत्र बुपू और दामाद खान खोजा बुर्राक-पुत्र इससे सहमत नही हुये। नैमनोमे काफी सख्या खान खोजाकी पक्षपाती थी, जिसे स्वीकार करते हुये चीनियोने अपना शासनपत्र भेजा। वलीको छोडकर अबलइके सारे सबधी रूस नही, वल्कि चीनके पक्षपाती थे। वलीके एक भाई जिंगिसने १७८४ ई०मे सेना ले जाकर ताशकन्दमे एक विद्रोहको दवाया। उसके दूसरे भाई सुल्तान तीजकी बुरूतोंसे भारी दुश्मनी थी। बुरूत लडाकू चीनी सेनाको भी अनेक बार पराजित कर चुके थे। सुल्तान तीजको भी उन्होने एक बार हराकर पकड लिया, और उसने अपने कई गुलामोको देकर छुट्टी पाई। वलीका बडा भाई वेर्दी खोजा चीनी सीमान्तपर रहनेवाले मध्य-ओर्दूके कजाको का शासक था। इसे भी लडाकू बुरूतोसे पाला पडा था, और इसने उन्हे कई बार हराया। १७८५ ई०में ऐयागुज नदीके तटपर इसने बुरूतो (जगली किर्गिजो)के विरुद्ध अपनी सबसे बडी और अतिम विजय प्राप्त की। लेकिन उस समय वह चीनी सेनाके सहायकके तौरपर लड रहा था, जिससे उत्साहित हो अपनी छोटी सेनाके साथ जब वह यिदिस्से नदीके तटपर पहुचकर कुमक आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, इसी समय बुरूतोने आक्रमण करके उसे पकड लिया। तीजको अब प्राणो की आशा क्या हो सकती थी ? उसने एक रक्षरक्षीको मार डाला, जिसपर बाकी टूट पडे, और उन्होने उसे हाथ-पैर अलग-अलग काट, पेटको चीरकर उसीके भीतर हाथो-पैरोको डालके मारा। पीछे तीजके भाई अककियक और उसके पुत्रो लेपेस तथा चोकाने युद्धमे हराकर बुरूत सरदारके पुत्रको पकडा, और उसे घर ले जाकर वेर्दी खोजाकी स्त्रियोको दे दिया, जिन्होने उसे पीट-पीटकर मार डाला।

१७८६ ई०मे रूसियोने अबुलखैर-पुत्र नूरअलीको लघु-ओर्दूका खान बनाया।

इस समय मध्य-ओर्दूके उत्तरी भागमे शाति छाई हुई थी। इनके पडोसी थे महा-ओर्दू, लघु-ओर्दूके कजाक, रूसी, ताश्कन्द-तुर्किस्तान राज्यके शातिप्रिय निवासी। दूसरे पडोसी लडाकू वाश्किर, त्रोइत्स्कके पासमें रहते थे। दूसरी ओर बुरूत भी चैनसे रहने देना नही चाहते थे। मध्य-ओर्दूकी स्थिति इस समय दूसरे दोनो ओर्दुओसे कुछ बेहतर थी। महा-ओर्दू और लघु-ओर्दूकी अपेक्षा वह अधिक सस्कृत और स्थायी जीवन बिता रहा था, तथा अपने खानो और सुल्तानोकी बात मानते थे। वलीने भी अपने पिताकी तरह शक्ति-सचय करनेमे सफलता प्राप्त की। अस्त्राखानसे तोर्गुतोद्वारा छीने गये तुर्कमानोको लौटानेसे इन्कार करके उसने रूसियोको नाराज कर लिया। रूस-पक्षपाती अमीरोका भी वह दमन करता था। १७८९ ई०मे महा-ओर्दूके एक सुल्तान तुगुमके साथ वलीके ओर्दूके भी कितने ही लोग रूसमे चले गये, और रूसियोने उन्हे उस्त-कामेन्नोगोर्स्कके किलेके पास जगह देकर बसा दिया। १७९३ ई०मे जेनरल स्त्रान्दमानने जबर्दस्ती तुर्कमानोको वलीके हाथसे छुडाया, जिसकी शिकायत कजाक खानने रूसी रानीके पास की। बापकी तरह यह भी दुरगी चाल चल रहा था। १७९५ ई० मे इसने एक पुत्रको चीनमे अधीनता स्वीकार करनेके लिये भेजा था। प्रजाको इसने अपने जुल्मोसे इतना नाराज कर दिया था, कि १७९५ ई०मे मध्य-ओर्दूके दो सुल्तान, उन्नीस जेठे, ४३३०८ अनुचरो तथा ७९००० दूसरे कजाकोने रानी एकातेरिनाIIसे प्रार्थना की, कि हमे वलीके पजेसे छुडाकर रूसी प्रजा बना लो। खानने इसपर क्षमा मागी। १७९५ ई०मे वाश्किरोके पडोसी मध्य-ओर्दूके एक दलने चेलियाबिन्स्क और व्रेख्ने उरालस्कमे जाकर लूट-मार की।

१७९८ ई०में पावलके शासनकालमे कजाकोके आपसी झगडोके मिटानेके लिये पेत्रो-पालोव्स्कमे रूसियो और कजाकोकी एक सम्मिलित अदालत बैठी, लेकिन उसने अपना काम १८०६ ई०मे शुरु किया। वली १८१८ ई०मे मरा। अन्तिम वर्षोमे कजाकोमे उसकी चलती नही थी, और कितने ही अमीर उसकी आज्ञा माननेसे इन्कार करते थे। इसपर जार अलेक्सान्द्र I (१८०१-२५ ई०)ने बोराक-पुत्र बूकेइको मध्य-ओर्दूका द्वितीय खान १८१६ ई०मे नियुक्त किया। बूकेइ भी १८१८ ई०मे मर गया, जिसके साथ ओर्दूके खानोकी परम्परा खतम हो गई, और उनके कजाक सीधे रूसी प्रजा हो गये, जिनके शासनके लिये रूसियोने एक विशेष प्रवन्ध कर रक्खा था।

ख. लघु-ओर्दू (१७४४–१८१२ ई०)

तेअवका, तौफीक या तवक्कल खान (१६९८-१७१८ ई०)के वाद श्वेत-ओर्दू तीन भागोमें विभक्त हो गया था, जिनमे लघु-ओर्दूके अमीर थे—यादिक खानके भाई उजियक सुल्तानके वशज। तेअवकाने अदिया (आइतिक)को लघु-ओर्दूके शासनका भार सौंपा। इस प्रकार अदिया लघु-ओर्दूका प्रथम खान था। लघु-ओर्दूके खानोंके नाम निम्न प्रकार हैं —

१	अदिया, जानीवेग वशज, ईरिश-पुत्र	—१७१७ ई०
२	अवुल्खैर, अदिया-पुत्र	१७१७–४९ "
३	नूरअली, अवुल्खैर-पुत्र	१७४९–९० "
४	एरअली, अवुल्खैर-पुत्र	१७९०–९४ "
५	इशिम, नूरअली-पुत्र	१७९४–९७ "
६	एचुवक, अवुल्खैर-पुत्र	१७९७–१८०५ "
७	जन्ती उरा, एचुवक-पुत्र	१८०५–९ "
८	शेरगाजी, एचुवक-पुत्र	–१८१२ "

१ अदिया, एतीयक, इरिश-पुत्र (–१७१७ ई०)

श्वेत-ओर्दूके अन्तिम खान तेअवका (तौफीक)ने इसे लघु-ओर्दूका शासक वनाया था, लेकिन अदियाके समय अभी लघु-ओर्दू अपने स्वतत्र अस्तित्वको कायम नही कर पाया था। यह काम उसके पुत्र अवुल्खैरने किया।

२ अवुल्खैर, अदिया-पुत्र (१७१७–४९ ई०)

१७१७ ई०में अवुल्खैर भी तौफीक और काइपके साथ जुगरोंके विरुद्ध सहायता मागनेके लिये रूस गया था। वापके मरनेपर काइपके साथ अवुल्खैरकी प्रतिद्वद्विता शुरू हो गई। १७१७ ई०मे रूसियोसे भी उसका झगडा हो गया, उसने कजान प्रदेशमे नवोशेश्मिन्स्कतक लूट-मारकरके वहुतसे वन्दी पकड लिये। जुगरोने भी लघु-ओर्दूकी लूट-मारोंसे तग आकर १७२३ ई० में उन्हे तुर्किस्तान-ताश्कन्द-सैरामसे भगा दिया। तवतक अवुल्खैरने तुर्किस्तान शहरमें रहते अपनी शक्ति भी वहुत वढा ली थी। आपसी झगडोंसे जुगरोको लाभ और अपने वशका नाश देखकर उसने एक महापरिपद् वुलाकर फैसला कराना चाहा, जिसने अवुल्खैरको अपना मुखिया चुनकर सफेद घोडेकी कुर्वानी दी। लघु-ओर्दूने उसके नेतृत्वमे कई वार जुगरोको छोटी-मोटी हार दी, लेकिन इससे उनके राजा छेवङ अर्पचन (रत्तन)का कुछ विगडनेवाला नही था। जव जुगरोने जोरका प्रहार किया, तो लघु-ओर्दूको पश्चिमकी ओर भागना पडा, और उन्होने यम्वा नदीको पार हो तोर्गुतो (वोल्गा-कल्मको)को भगाकर यायिक(उराल)तक की भूमिको ले लिया। अव तोर्गुत उनके विरोधी हो गये और वादमे उरालके कसाक भी दुश्मन वन गये। इन दोनोंके प्रहारसे इन्हे इतनी हानि उठानी पडी, कि १७२६ ई०मे इनके प्रतिनिधियोने जाकर रूसमे सरक्षण पानेकी प्रार्थना की, लेकिन उसमे वह सफल नही हुये। यद्यपि ओर्दूका वहुमत तैयार नही था, तो भी अवुल्खैरने इसीमे खैरियत समझकर १७३० ई०मे ऊफाके वोयवोद वूर्तुलिनके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र भेजा। दूत जुलाई १७३० ई०को ऊफा पहुचे, जहासे उन्हे पीतरवुर्ग भेज दिया गया। दूतोने दरवारमे कल्मको (तोर्गुतो) वाश्किरो और उरा-कसाकोंके साथ लडाई करनेका वचन दिया—हम रूसके शत्रुओंसे लडनेके लिये सदा तैयार हैं, और यदि खीवा, कराकल्पक तथा अरवी कवीलोको दवानेके लिये हमे सैनिक दिये जाय, तो हम उनपर अभियान कर सकते हैं। उन्होने अपने ओर्दूकी ओरसे रूसी प्रजा होनेको स्वीकार किया, पीतरवुर्गमें इसके लिये वडी खुशी मनाई गई, क्योकि विना एक गोली दागे रूसको इतने नये प्रजाजन मिल गये। वाश्किर जव-तव रूसियोके विरुद्ध विद्रोह कर देते थे।

खीवावालोने हाल हीमे रूसी राजदूत राजुल बेकोविच-चेरकास्कीको मार डाला था, उसको भी बदला लेनेका मौका मिल रहा था। रानी अन्नाने सहायता और सरक्षण देनेका वचन-पत्र दिया। दूत जब अपने देशको लौटे, तो कजाक भूमिका नक्शा बनानेके लिये दो इजीनियर अफसर भी साथ कर दिये गये। सारा ओर्दू विरोधके लिये खडा हो गया। फिर एक बडी परिषद् बुलाई गई, और किसी तरह झगडा शात हुआ। १७३२ ई०म लघु-ओर्दूके अबुल्खैर और मध्य-ओर्दूके शेमीअका खान दोनोने राजभक्तिकी शपथ ली। अबुल्खैरने दश्तकिपचकको छोड सिर-दरियाके मुहानेपर अपना डेरा डाला वहाके कराकल्पकोको भी अपने अधीन करके रूसकी प्रजा बनाया।

जनवरी १७३४ ई०में अबुल्खैरका पुत्र एरली सुल्तान और भी कितने ही कजाक-मुखियोके साथ पीतरबुर्ग गया। रानीने उसका स्वागत करके बहुत इनाम दिया। एरलीने अबुल्खैर-परिवारमे खानकी पदवी पानेकी प्रार्थना की, और यह भी कहा, कि ओरी और उराल नदियोके सगमपर रूसी किला बनाया जाय, अपने आसपाससे जानेवाले कारवाकी रक्षाका भार अबुल्खैरको मिले, तथा सैनिक सहायताके लिय कल्मको और बाश्किरोकी तरह समूरी छालके रूपमे भेट दी जाय। शर्तें मानना आसान था, लेकिन कजाक-जैसे कबीलोके लिये उनका पालन करना बहुत मुश्किल था। एक और भी बात थी कजाकोमे मुखिया या खानकी उतनी चलती नही थी। लोग जनतत्रताके अत्यन्त पक्षपाती थे, इसलिये खान द्वारा स्वीकृत शर्त-को माननेके लिये मजबूर नही थे। प्रसिद्ध भौगोलिक किरिलोफको कुछ इजीनियरोके साथ किला बनाने तथा नक्शा तैयार करनेके लिये भूमापक बनाकर भेजा गया। तीन अफसर, कुछ मिस्त्री और नाविक नाव बनानेके लिये, एक खनिज इजीनियर, कुछ तोपची-अफसर, एक वनस्पतिशास्त्री, एक चित्रकार, एक डाक्टर, कजाकोकी भाषा सीखनेके लिये कुछ तरुण विद्यार्थी किरिलोफके नेतृत्वमे भेजे गये। कजान पहुचनेपर एक रेजिमेट पैदल सेना, कुछ तोपखाना भी साथ हुआ। ऊफामे कसाकोकी एक पैदल बटालियन साथ हो गई। तेवकेलेफ नामक एक बाश्किरको कर्नलका दर्जा दे दुभाषिया नियुक्त किया गया। ऊफाकी आमदनी इस अभियानके खर्चके लिये निश्चित कर दी गई। किरिलोफको आज्ञा दी गई थी, कि ओरीके मुहानेपर नगर बसाकर लोगोको वहा बसनेके लिये आकृष्ट करे, तथा अबुल्खैरको खान उपाधिका शासन-पत्र प्रदान करे। शेमीअका, महा-ओर्दूके दूसरे मुखियो और कराकल्पकोके मुखियोको किरिलोफसे मिलनेके लिये हुक्म दिया गया था। यह भी हुक्म था, कि मध्य-ओर्दू और महा-ओर्दूके मुखियोको राजभक्तिकी शपथ लेनेके लिये कहे, एरलीको अच्छे रक्षियोके साथ उसके बापके पास भेजे, कजाकोको भेट-रिश्वत या कडे हाथोसे शान्त रक्खे, नये नगरमें उनके अमीरोको घर और मस्जिद बनाने और आसपासमे उनके पशुओके चरनेकी इजाजत दे, उराल (यायिक) नदीको सीमा मानकर कजाकोको उसके पार होनेसे मना करे, झगडोको तै करनेके लिये रूसियो और कजाक-बडोकी सम्मिलिति अदालत स्थापित करके देशके रीति-रवाजके अनुसार फैसला कराये। किरिलोफ १७ जुलाई १७३४ ई०को पीतरबुर्गसे चला।

उसी साल अबुल्खैरने अपने पुत्र एरलीको फिर भेजा। किरिलोफ आगेके कामके लिये नेता था। १५ अगस्त १७३५ ई०मे ओरी और उराल नदियोके सगमपर उसने कोरेनबुर्गकी नीव डाली। रूसके इस प्रकार लगातार आगे बढनेको देखकर इस भूमिके घुमन्तू कबीले कैसे सतुष्ट रह सकते थे ? उनमेंसे कुछने विद्रोह भी किया, लेकिन तोपो और बन्दूकोके सामने उनका क्या बस चलता ? दीवारोके तैयार हो जानेपर १७३६ ई०के वसन्तमे अबुल्खैरको आनेके लिये निमत्रण दिया गया, और ताशकन्दके व्यापारियोको भी ओरेनबुर्गकी मडीमे व्यापार करनेकी सलाह दी गई। इस समय सबसे ज्यादा विद्रोही थे बाश्किर, जिनके विरुद्ध रूसियोको सेना भेजनी पडी, और नये किले भी बनाने पडे, जिनमे उराल नदीके तटपर गुर्लिन्स्क, ओजेर्नया, स्रेदनी, ब्रेर्दस्कोइ और किरिलोफ थे। समारा नदीके ऊपर भी कुछ किले बनाये गये, लेकिन रूसियोको अपने हितके लिये इससे भी ज्यादा आवश्यक यह था, कि वोल्गा-कल्मको, बाश्किरो और कजाकोंके आपसी झगडे बराबर बने रहे।

किरिलोफ अप्रैल १७३७ ई०मे मर गया। इसी समय रूसी व्यापारियोका एक कारवा ताशकन्द जानेवाला था, जिसके साथ कप्तान येल्तन गया, जो पीछे भारतपर आक्रमण करने-

वाले नादिरशाहका नौकर हो गया। रूसकी ओरसे येल्तनको अराल समुद्रमे नौसचालन तथा सिरके मुहानेपर कैदियोंके लिये नगर वसानेके वारेमे विवरण देनेके लिये भेजा गया था। किरिलोफके मरनेके वाद उसकी जगह तातीशेफ नियुक्त किया गया। वाश्किर विद्रोहियोंको दवानेके लिये अवुल्खैरको उनपर मनमानी करनेकी छूट दे दी गई थी। उसने वाश्किरोंमें विद्रोही और और अविद्रोही का फर्क किये विना सवके ऊपर भारी अत्याचार किये। उसीके वाद वही काम कजाकोंने कल्मकोंपर आक्रमण करके किया, और वह कल्मकोंको ही नहीं, वल्कि रूसियोंको भी वन्दी वनाकर ले गये। वन्दी वनाकर ले जानेका मतलव था अन्तर्वेदमे उन्हे दासोंके वाजारमे वेच डालना। इसके कारण रूसी नाराज हो गये, और अवुल्खैरको, नूरअलीको जामिन वनाकर हटनेका हुक्म दिया। डरके मारे अवुल्खैर नही आया। अगस्त १७३८ ई०मे वह आनेको राजी हुआ। उसके आनेपर रास्तेकी दोनो तरफ पाती वाघे सेना खडी थी। जव वह उस तम्बूमे आया, जिसमे रूसी रानी अन्नाका चित्र रखा हुआ था, तो नौ तोपे दागकर उसके लिये सलामी दी गई। तातीशेफको सम्वोधित करते हुये उसने कहा—"परम-भट्टारिका महारानी उसी तरह दूसरे राजाओंमे श्रेष्ठ है, जैसे सूर्यका प्रकाश तारोंमे। यद्यपि दूर होनेसे मै उन्हे नही देख सकता, लेकिन उनके हितकारी प्रतापको मै अपने दिलमें महसूस करता हू। उनके प्रकाशद्वारा रोशनी पाकर मै रानीकी अधीनता और एक राजभक्त प्रजाकी तरह अपनी आज्ञाकारि-ताको घोषित करता हू। मै अपने परिवार और अपने ओर्दूको परमभट्टारिकाके सरक्षणमे एक शक्ति-शाली वाजके पखके नीचे जैसे रखता हू, और सदाके लिये अधीन रहनेकी प्रतिज्ञा करता हू। साथ ही महान् जेनरल मै तुम्हारी ओर भी अपनी मित्रताका हाथ फैलाता हू।" फिर अवुल्खैरने हाथमें कुरान लेकर वफादारीकी कसम खाई, और रूसी वदियोंको लौटानेका वादा किया। यही नही, उसने अपनी स्त्री पपाइको भी दरवारमे भेंट-स्वरूप भेजनेकी इच्छा प्रकट की। इस प्रकार अवुल्खैर जैसे शक्तिशाली घुमन्तू खानको अपने अधीन पाकर रूसियोंको भारी प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी।

१७३९ ई०में तातीशेफकी जगह राजुल उरुसोफ वोयवोद होकर आया। आते ही उसने सुना, कि लघु-ओर्दूवालोने दो रूसी कारवानोको लूट लिया। १७४० ई०मे अवुल्खैरने अपने तीन हजार कजाकोंको वोल्गा-कल्मकोंको लूटनेके लिये भेजा। इसी वीचमे कुछ समयके लिये अवुल्खैर खीवाका खान भी वन गया था, लेकिन नादिरशाहने उसे वहा टिकने नही दिया। इस समय उसकी पूर्वी सीमान्तपर जुगरोंका प्रताप छाया हुआ था। अवुल्खैर उन्हे भी खुश रखना चाहता था। जुगर कजाकोंके वार-वारके आक्रमणसे तग आ गये। उन्होने दो वडी-वडी सेनायें मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूके विरुद्ध भेजी, और अवुल्खैरसे जामिन भेजनेके लिये कहा।

रूसी राज्यपाल नेप्लुयेफने इसे उचित नही समझा, कि रूसी प्रजा होते हुये अवुल्खैर जुगरोंके पास जामिन भेजे। १७४२ ई०मे शपथ लेते वक्त अवुल्खैर और दूसरोने यह वचन दिया था, कि हम जुगरोंसे छेडछाड नही करेंगे। अवुल्खैरने अपने पुत्रके स्थानपर किसी दूसरेको रूसी राज्यपालके यहा जामिन रखना चाहा, लेकिन रूसियोंने इसे नही माना। इसपर उसने कजाकोंको भडकाया, और १७४३ ई०मे दो हजार कजाक आकर नये वसे शहर ओरेनवुर्गको लूट वहाके निवासियोंको पकड ले गये। इन कजाकोंका नेता अवुल्खैरका सवधी दरवेशअली सुल्तान था।

अभीतक अवुल्खैर पर्देकी आडमे शिकार खेल रहा था, लेकिन १७४४ ई०मे उसने नकाव उठा फेंका। अव उसके आदमी खुलकर रूसी कारवाको लूटने लगे। अन्तमे २४ अप्रैल १७४४ ई०को रूसियोंने कल्मक राजा दोण्डुव् यैचीको वारूद और शीशाके साथ पत्र लिखकर हुक्म भेजा, कि तुम अपने आदमियोंको जमा करके कजाकोंपर हमला करो, जो भी लूटमे हाथ आये, वह तुम्हारा होगा। लेकिन यह पत्र भेजा नही जा सका, क्योकि इसी समय जुगर-कल्मकोका साइवेरियापर आक्रमण होनेवाला था, जिसमे अवुल्खैरके कजाकोंकी सहायता आवश्यक थी। अव भी अवुल्खैरकी लूट-मार वन्द नही हुई। उसके आदमी फर्वरी १७४६ ई० और जनवरी १७४७ ई०में जमे हुये कास्पियनपरसे होकर वोल्गा-कल्मकोंको लूटने गये। वहुत इधर-उधर करनेके वाद १७४८ ई०की गर्मियोमें अवुल्खैरने खोजा अहमदकी जगहपर अपने पुत्र ऐचुवक तथा कुछ दूसरे कजाक अमीरोंके लडकोंको जामिन देना स्वीकार किया, और यह भी वचन दिया, कि मै अपने पासके रूसी वदियोंको लौटा दूगा, और मेरे

आदमी फिर साम्राज्यपर आक्रमण नही करेगे । इधर वह रूससे इस तरहकी प्रतिज्ञाये कर रहा था, और उधर चुपचाप जुगरोके खुङ-थैंचीको अपनी लडकी देनेकी वात चला रहा था ।

अपने स्थानपर लौटनेके वाद लोगोको जमाकर अवुल्खैरने कराकल्पकोपर चढाई की, लेकिन मध्य-ओर्दूके शक्तिशाली कवीले नैमनका एक अत्यन्त प्रभावशाली खान बुर्राक कराकल्पकोको अपनी प्रजा कहता था। अवुल्खैरकी रूसने जो आवभगत की थी, उससे भी वुर्राक जल-भुन गया था। दोनोकी लडाई हुई, जिसमे अवुल्खैरको हारकर भागना पडा । बुर्राक-पुत्र शिगाईने दौडकर उसे घोडेसे उतार भाला घुसेड दिया, इसी समय वुर्राक आ पहुचा, जिसने अपने हाथो अवुल्खैरको खतम किया । फिर वह कराकल्पकोको लूटने गया, लेकिन कराकल्पकोके रक्षक अव रूसी थे जिनके डरके मारे उसने तुर्किस्तान लौट इकान, सिगनक और ओतरारपर अधिकार किया । पर जैसा कि पहले कहा, अगले ही साल १७४९ ई०में दो पुत्रो सहित उसे जहर देकर मार डाला गया—कहते हैं, इसमे जुगर खुङ-थैंशी छेवङ दोर्जेका भी हाथ था, जिसके पास अवुल्खैर-पुत्र नूरअलीने वापकी निर्मम हत्याकी शिकायत की थी । अवुल्खैरकी कब्र उत्किया नदीकी शाखा कादिर नदीके पास अक्षाश ५०° ३० देशान्तर ८६°-०१० मे मौजूद है ।

३ नूरअली, अबुल्खैर-पुत्र (१७४९–९० ई०)

अवुल्खैरके मरनेके वाद राज्यपाल नेप्लुयेफके प्रयत्नसे अवुल्खैर-पुत्र नूर अलीको खान चुना गया। वह लघु-ओर्दू और मध्य-ओर्दू दोनोका खान वनना चाहता था, पर रूसियोने २६ फरवरी १७३९ ई० को शासनपत्र भेज उसे किर्गिज-कजाकोका खान वनाया। नूरअलीकी मा पपाईका प्रभाव कजाको और पीतरवुर्ग दोनोमे था । ओरेनवुर्गमें नूरअलीको वडे ठाट-वाटके साथ खान घोषित करनेकी रसम अदा हुई। उसे दरवारी खिलअत, टोपी और तलवार दी गई, फिर घुटने टेककर उसने राजभक्तिकी शपथ ली । ओर्दूमे लौटनेपर जुगर खुङ-थैंचीका दूत आ मिला, जिसने उसकी वागदत्ता वहिनको मागा। उसने यह भी कहा, कि खुङ-थैंची तुर्किस्तान शहरको तुम्हे देनेके लिये तैयार है, जहापर तुम्हारे वाप-दादोकी हड्डिया कलिममें गडी हुई है। लेकिन नूरअलीके सुल्तान और ओर्दूके मुखिया रूसियोको नाराज नही करना चाहते । रूसी जुगरोकी ताक़तको समझते थे, जिनके प्रभुत्वको महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दू मानता था, और दोनो मध्य-एसियाई उनके हाथोसे वाहर जानेकी शक्ति नही रखते थे । इसलिये उन्होने खुङ-थैंचीको नूरअलीका वहनोई वननेसे रोका । १७५० ई०मे वहिन मर गई, सदेह था, वह स्वाभाविक मौतसे नही मरी । अबुल्खैर और काइपमे प्रतिद्वद्विता चलती रही । काइप-पुत्र वातिर (वहादुर)को लघु-ओर्दूके एक भागने अपना खान चुना । फिर वातिर-पुत्र काइप II खीवाका शासक चुना गया । वातिरने खीवासे बुखारा जानेवाले कारवाकी रक्षाका भार अपने ऊपर लेनेकी माग की, जिसे कुछ अशमें रूसियोने मजूर भी कर लिया, इसपर नूरअली नाराज हो गया । नूरअलीके भाई ऐव्रुवकने १७५० ई० के वसन्तमे शातिप्रिय कवीला अरालीपर आक्रमण किया, जो कि खीवाके खानके अधीन था । इसका वदला लेनेके लिये खीवा-खान काइपने खीवामें व्यापारके लिये गये नूरअलीके लोगो तथा उसके दूतको वन्दी वना लिया, और लूटे माल तथा वन्दी अरालियोको लौटा दिया । एव्रुवकके दूसरे भाई एरलीने कराकल्पकोपर हाथ मारा, लेकिन यहा मुकाविला निर्वलोसे नही था, इसलिये एरलीके अधिकाश आदमी मारे गये, और स्वय एरली भी कितने ही महीनोतक कराकल्पकोका वन्दी रहा ।

नूरअली नही पसद करता था, कि खीवाके कारवासे वातिर छेड-छाड करे । १७५३ ई० मे उसने एक रूसी कारवाको खीवा जाते वक्त लुटवा लिया, ऐसी ही और भी कितनी ही मनमानिया की, जिसकी शिकायत करनेपर उसने जवाव दिया—"वातिर और उसके पुत्र काइपने जो अत्याचार किये, उन्हीके कारण ऐसा हुआ। वह रूसके इलाकेपर हमला करना चाहते है, यदि मुझे दस हजार सेना और तोपखाना मिले, तो मै चन्द दिनोमे उन्हे दवा सकता हू । रूसियोने इसे स्वीकार नही किया। खीवावालोके साथ झगडा होनेपर रूसियोने नूरअलीको खीवापर आक्रमण

४५

करनेके लिये उकसाया। नूरअलीने अपने ओर्दूके मुखियोंको राय लेनेके लिये बुलाया, लेकिन दुआ देनेवाले खोजा (सैयद)के बीचमें पड जानेपर सीवा और लघु-ओर्दूका झगडा रुक गया।

१७५५ ई०मे वाश्किरोने रूसियोंके खिलाफ विद्रोह कर दिया। मुल्ला बातिर शाहने उन्हे काफिरो (रूसियो)के विरुद्ध भडकाया, और कजानके तातारो तथा कजाक-ओर्दूमे भी जहाद करनेके लिये कहा। उनमेंसे कुछने रूसी बस्तियोंको लूटा-मारा। इसपर राज्यपाल तथा कमाडर नेप्लुइयेफने कजाकोंके शत्रुओ—दोन-कमाक, कलमक, मेश्चेरियक, तेपियर आदि कबीलोंमे महायता ली। ओरेनबुर्गके अखुन (जिलेके अमीर शरियत या धर्माचार्य)ने फतवा दिया, कि रूसियोंके मार भगानेके बाद कजाकोंको वाश्किर खतम कर डालेंगे, इसलिये रूमके खिलाफ नही लडना चाहिये। रूसी राज्यपालने फतवाको कजाकोमे बटवाया। रूमी दरबारकी सहमतिके साथ उसने कजाक खान और सुल्तानोंको वचन दिया, कि उनके बीचमें रहनेवाले सभी वाश्किर औरतो और बच्चोंको हम इस शर्तपर तुम्हारे हवाले कर देगे कि तुम उनके पुरुषोंको सीमान्तसे बाहर भगा दो। इस समय विद्रोहके कारण बहुत भारी सख्यामे बाश्किर भागकर यायिक (उराल) नदीके पार चले गये थे। लोभी कजाक ऐसे मौकेसे फायदा उठाये बिना कैसे रह सकते थे, उन्होने इन सभी अभागे लोगोंको पकड लिया। बाश्किर मरदोंमे प्रतिरोध करनेकी शक्ति नहीं थी, उनमेंसे कितने ही मारे गये, और कितनों हीको कजाकोंने पकडकर रूसियोंके हाथमे दे दिया, और कुछ देश लौट बदला लेनेकी तैयारी करने लगे। रूसियोंने उन्हे भीतर-भीतर सहायता दी। फिर बाश्किर बडी सख्यामे यायिक पार हो कजाकोंके ऊपर पडे। रूसी दोनों जातियोंमे दुश्मनीकी आग भडकाकर चैनकी वशी बजाने लगे। बश्किरो और कजाकोंका झगडा अब ‍पीढियोंके लिये जारी हो गया। अपनी सीमान्तकी रक्षाके लिये जारशाहीने क्या-क्या तरीके इस्तेमाल किये, इसका एक उदाहरण देखिये—अभी रूसी इतने साधन-सम्पन्न नहीं थे कि सीमान्तपर अपने बलपर शाति स्थापन कर सकते। नूरअलीने इसकी शिकायत जब रूसियोंके पास की, तो उन्होंने जवाब दिया—"बाश्किर भगोडोंको शरण देनेका यह फल है।" जब बाश्किरो और कजाकोंका खूनी सघर्ष काफी हो चुका, और दोनो जातिया खूब कमजोर हो गईं, तो नेप्लुइयेफने यायिक नदीको दोनोंके बीचमे सीमा निश्चित करके उसे पार करना निषिद्ध कर दिया। थोडे दिनोंके लिये झगडा रुक गया, लेकिन कबीलोंकी बदला लेनेकी प्रवृत्ति कितने दिनोंतक रुक सकती थी? फिर वह एक दूसरेके इलाकेमे घुसकर लूट-मार करने लगे, यदि सरदार रोकना चाहता, तो उसे काफिर रूसियोका आदमी कहकर बदनाम करते। इसी बीचमें प्रुशिया (जर्मनी) के साथ रूसका सप्तवर्षीय युद्ध छिड गया, इसलिये रूसियोका सारा ध्यान उधर खिच गया।

१७५७ ई०मे कलमक शासक दोण्डुब्-थैचीने नूरअली और क्रिमियाके खानसे कहा, कि आओ मिलकर रूसियोंके ऊपर हमला करे। लेकिन इसी समय चीनियोंने आक्रमण करके जुगर-साम्राज्यको खतम कर दिया, और विजयी चीनी सेनाके कारण रूमी सीमान्त खतरेमे पड गया। नूरअली रूसियोंकी शहपर चीनियोंसे लडनेके लिये तैयार था, लेकिन चीनी सेना जुगरोंके प्रभावक्षेत्रसे आगे नहीं बढी।

१७५९ ई०मे ओरेनबुर्गमे नया रूमी राज्यपाल था, जिसने नूरअलीके साथ उचित शिष्टाचार नहीं दिखलाया, जिसपर कजाकोंने फिर लूट-मार शुरू कर दी, और रूमी भी बदला लेने लगे। एचुवकने जुगारियामे चले चलनेका प्रस्ताव किया। इसकी भनक मिलनेपर रूसियोंने वार्षिक पेशन और दूसरे माम-दानके हथियारोंसे कजाकोंको ठडा कर दिया, और ओरेनबुर्गके हाकिमोको हिदायत दी, कि कजाकोंके साथ बहुत अच्छी तरह बर्ताव किया जाय, उनमे उदारताके साथ भेंटें बाटी जाय, जाडोंमे उनके ढोरो और घोडोंके रहनेके लिये गोशालाये और अस्तबल बना दिये जाय। रूमी समझ रहे थे, कि ऐसा न करनेपर कजाक चीनियोंकी सीमान्तकी ओर चले जायेगे, और लघु-ओर्दूका यह इलाका तथा मध्य-एसियाका वणिक्पथ निर्जन और उजाड हो जायेगा।

१७६२ ई० में एकातेरिना II जब गद्दीपर बैठी, तो उस समय नूरअली, एचुवक तथा मध्य-ओर्दूके अवलड खानने भेंटे भेजी, लेकिन उसी समय नूरअलीने पेकिगमे भी एक दूतमडल भेजा, जिसका

वहा अच्छा स्वागत हुआ। इसपर फूलकर नूरअलीने रूसियोके साथ अपने लोगोकी छेडछाडको नही रोका। इसके बाद उसने वोल्गा-कलमकोपर भी आक्रमण किये। उस समय जाडोमे उत्तरी कास्पियन समुद्र जम गया था, इसलिये बर्फपरसे होकर आक्रमण करनेमे उसको सुभीता था। रूसियोने यायिक नदीकी सीमा निश्चित की थी, लेकिन अब नूरअली उसके पश्चिममें जाडा वितानेकी माग करने लगा। जुगरोके ऊपर विजय प्राप्त करके चीनी सेनाको सामने खडी देखकर मध्य-एसियाके मुस्लिम राज्य अपने घरू झगडोको भूलकर थोडे समयके लिये एक हो गये। नूरअली भी उनके साथ था। १७६४ ई०मे नूरअलीने रानी एकतेरिनाको लिखा, कि मध्य-एसियाके मुसलमानोने मुझे निमन्त्रित किया है। साथ ही उसने रूसी इलाकेमे लूट-मार भी जारी रक्खी। १७६५, १७६६ और १७६७ई०में इस तरहके कई हमले किये। इसके बाद १७७० ई० का वह समय आया, जब कि तोर्गुत-मगोल वोल्गाके तटको छोडकर पूर्वकी ओर भागने लगे। तोर्गुतोके भागनेमे जहा चीन-सम्राट् और दलाई लामाकी प्रेरणा काम कर रही थी, वहा कजाकोके वार-बारके आक्रमणसे भी वह तग आ गये थे। रूसियोने तोर्गुतोको रोकनेके लिये नूरअली और उसके कजाकोको कहा। काफिर तोर्गुतोकी लूट-मार मुसलमान कजाकोके लिये पुण्य-अर्जनकी बात थी। नूरअली, उसका भाई एचुवक, खीवा का भूतपूर्व और अब लघु-ओर्दूका एक खान काइप अपने आदमियोके साथ अभागे प्रवासियोपर टूट पडे। इन भयकर दुश्मनोने चीनी सीमान्ततक उनका पीछा किया। कभी-कभी कलमकोने भी उन्हे हराया—सागिजके पास कजाकोको भारी हार खानी पडी, लेकिन मुगजर पहाड और इशिम नदी के तटपर कजाकोने अधिक सफलता पाई।

१७७३-७४ ई०मे पुगाचेफके नेतृत्वमे वोल्गाके किसानोने विद्रोह कर रक्खा था, यायिकके कसाक और वाश्किर भी उसके साथ थे। दोनो ही कजाकोके शत्रु थे, इसलिये वह विद्रोहमे शामिल नही हुये, हा, देशकी गडबडीसे लाभ उठाकर रूसी बस्तियोको लूटनेमे वह पीछे नही रहे, जिसके लिये १७७४ ई०मे रूसियोने भी इनकी खूब मरम्मत की। इसी समय नूरअलीके पुत्र पीरअलीको खीवा और सराइचुकके बीचके तुर्कमानोने अपना खान चुना, और उसने खीवा जानवाले कारवासे कर लेना शुरू किया। कजाकोने जो लूट-मार की थी, उसका बदला लेनेके लिये १७८४ ई०में ३४६२ रूसी सैनिकोने यायिक पार हो असली लुटेरोको न पा दूसरे ४३ कजाकोको पकड लिया, जिसपर सिरिमके नेतृत्वमे कजाकोने भी जवाब दिया। अगले साल (१७८५ ई०) मे दो डिवीजन रूसी सेना यम्वाकी ओर बढी, जिसने २३० औरत बच्चोको पकड लिया, और कजाकोने मजबूर होकर उनके बदलेमे रूसी बदियोको लौटाया। कजाकोके साथके झगडेको मिटानेके लिये १६ आदमियोकी एक विशेष अदालत बैठाई गई, जिसमे ओरेनबुर्गका सेनापति, दो सरकारी, दो व्यापारी, दो किसान इस प्रकार सात रूसी और एक सुल्तान तथा छ मुखिया—सात कजाक, एक वाश्किर और एक मेशकेरी प्रतिनिधि थे। इस अदालतने शाति स्थापित करनेका प्रयत्न किया। रूसियोने यह भी देखा, कि लडाकू कजाकोको केवल तलवारके बलपर नही दवाया जा सकता, इसलिये १७८५ ई०मे ओरेनबुर्ग और त्रोइत्स्कमे कजाकोके लिये मदरसा, मस्जिदे और कारवासराय बनानेका हुक्म दिया। रूसियोके सामने वही समस्या थी, जो कि हिन्दुस्तान छोडकर जानेतक पश्चिमोत्तर सीमान्तपर अग्रजोके सामने।

१७८५ ई०मे नये राज्यपाल बैरन इगेल्स्त्रोमने कजाकोको दवानेके लिय एक नया तरीका इस्तेमाल किया। उसने लघु-ओर्दूके तीन टुकडे—सेमीरोद्सक, वेउलिन और अलीमुल—करके उनपर अलग-अलग खान नियुक्त किये, और लघु-ओर्दूके खान पदको उठा देना चाहा। साथ ही कजाकोकी महापरिषद् बुलानेका अधिकार खानके हाथमे न रख सुल्तानो और जेठोके हाथमे दे दिया। लेकिन इस तरह महापरिषद् बुलानेपर अपमान समझकर कोई कजाक सुल्तान उसमे शामिल नही हुआ, तो भी परिषद् जमा हुई, और उसका सभापति डाकू नेता सिरिम बातिर बना, जो कि आनुवशिक कुलीनताका विरोधी था। उसने जोर देकर कहा—हमे खानकी जरूरत नही। कुल नही योग्यताको देखना चाहिये। रूसियोकी अधीनता स्वीकार करना ही हमारी भलाईका एकमात्र रास्ता है। उसने रूसियोमे माग की, कि अबुल्खैरके वशको खान-पदसे वचित कर दो। रूसियोने आशिक रूपसे उसकी बात मान भी ली। १७८६ ई०मे उसका अच्छा परिणाम भी दिखाई पडा, जब कि पहलेकी अपेक्षा अधिक पशु

सीमान्तके मेलोमें विकनेके लिये आये और १७८६ और १७८७ ई०मे पहलेकी अपेक्षा कम रूसी कजाकोके वन्दी वने। कजाकोने पहलेके रूसी वदियोको भी भारी सख्यामे छोड दिया। १७८४ ई०में यायिक (उराल) नदीके पश्चिममें पैंतालीस हजार कजाक परिवारोने आरामसे जाडा विताया। वातिर (सिरिम) ओरेनवुर्गके राज्यपालका वडा ही विश्वासपात्र आदमी हो गया। नूरअलीने उसे विश्वास-घाती वनानेकी वहुत कोशिश की, लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ। नूरअली इसपर ठडा पड गया। उसने रूसी वदियोको लौटा दिया। अन्तमें रूसियोने उसे परिवार-सहित ऊफामें और एचुवकको उराल्स्कमें भेज दिया।

नूरअलीके ज्येष्ठ पुत्र एरलीको १७८१ ई०में कराकल्पकोंने अपना खान वनाया था। वह उनके साथ निम्न सिर-उपत्यकामे रहता था। वह थोडी-सी सेना लेकर अपने पिताके दुश्मन सिरिम वातिरके ऊपर चढा। इसी समय लघु-ओर्दूके कुछ कवीलोने भूतपूर्व खीवा-खान काइपको अपना खान वना लिया था, कुछने नूरअली या दूसरेके लिये राज्यपाल इगेल्स्त्रोमके पास आवेदनपत्र दिया था, लेकिन इगेल्स्त्रोम काइपके पक्षमे था, जिससे रानी एकातरिना सहमत नहीं हुई। वह चाहती थी, कि खानका पद उठा दिया जाय। मध्य-ओर्दूका आग्रह था, कि नूरअलीको फिर खान वना दिया जाय। वेउलिन कवीलेका मुखिया सिरिम वातिर दो सहायकोंके साथ ओर्दूके एक भागका नेता था। रूसियोने इन्हे सरकारी पदाधिकारी-सा वनाकर नक्द और अनाजके रूपमें वेतन मुकर्रर कर दिया। कजाक-ओर्दूमे यह सव होते देख पीढियोंसे चले आते खान्दानी अमीर अधिकार-वचित होनेके कारण भीतर ही भीतर जले-भुने हुये थे। इसी समय तुर्कोंके साथ रूसियोंकी लडाई छिड गई, वुखाराने अपने खलीफा और धर्मभाइयोका साथ दिया और कजाकोको भी रूसियोंके खिलाफ भडकानेकी पूरी कोशिश की—"वहादुर योद्धा, वेग और मुखिया सरतइवेग, सिरिम वातिर, शुकुरअली वेग, सादिरवेग, वोर्राक वातिर, देदाने वातिर आदिको मालूम हो, कि हम ने तुर्कोंके वादशाह, और अल्लाके खलीफासे सुना है, कि सात ईसाई राज्योंके साथ काफिर रूसी तुर्कोंके विरुद्ध एक हो गये हैं। कजाकोंको चाहिये, कि उन्हे दड देनेके लिये सच्चे मुसलमानोका साथ दे।" वुखारा सारे मध्य-एसियाकी काशी थी, जहाके मदरसोंमें पढनेके लिये कजाक-कवीलोंके तरुण भी आया करते थे। सिरिमने जवाव दिया, कि मै और मेरे लोग इस वातकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि कव वुखारा और दूसरे मध्य-एसियाई लोग रूसियोंपर आक्रमण करें, तो हम उनका साथ दे। कजाकोंके भीतर क्या हो रहा है, इसका पता रूसियोको भी था। कजाकोने फिर लूट-मार शुरू की। उन्होंने अपने जेठोंकी वात नहीं मानी। जेठोका काम था ओरेनवुर्ग जाकर अपनी तनखा ले आना। रूसियोकी परेशानीसे फायदा उठाकर कितने कजाको और उनके सुल्तानोने फिरसे खानके नियुक्त करनेके लिये कहा। १७९० ई० मे नूरअली ऊफामें रहते हुये मर गया, तवतक रूसी रानी खानके पदको फिरसे कायम करनेके पक्षमें हो चुकी थी।

४. एरली, अवुल्खैर-पुत्र (१७९०–९४ ई०)

जनवरी १७९० ई०मे रानीके हुक्मसे नूरअलीके भाई एरलीको लघु-ओर्दूका खान वनाया गया। १७९१ ई० मे सिरिम वातिरने यम्वाके मुहानेपर सारे लघु-ओर्दूकी परिषद् वुलाई, जिसमें यह प्रस्ताव रक्खा, कि सभी कजाक एक होकर रूसियोपर आक्रमण करे, लेकिन अवुल्खैरके वशजोने अपने खान्दानके दुश्मन सिरिमकी वातको विफल करनेकी पूरी कोशिश की। ६ सितम्वरको उसी साल नूरअलीके पुत्र तुर्किस्तान-खान पीरअलीने रूसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये अर्जी दी। काइप-पुत्र अवुल्गाजीने उसे यह कहकर वहुत भडकाया, कि तुम्हे न चुनकर एरलीको खान वनाना अन्याय है। उसने कुरानके वाक्यको उद्धृत करते हुए यह भी समझानेकी कोशिश की, कि किसी मुसलमानका हिजरत कर ईसाईकी प्रजा होना धर्मविरुद्ध है, इसलिये हमे रूसी प्रदेश छोड देना चाहिये। वुखाराका खान मेरा दोस्त है, वहा हमें रहनेको जगह मिल जायगी। इस सवका परिणाम यही हुआ, कि कजाकोने लूट-मार वढा दी। एरली खानने रूससे सेनाकी मदद चाही, लेकिन वह न मिली। जून १७९४ ई०में एरली मर गया।

५. इशिम, नूरअली-पुत्र (१७९४–९७ ई०)

लघु-ओर्दूके अधिकाश जेठे सहमत नही थे, तो भी रूसियोने इशिम सुल्तानको खान वनाया। सिरिम वातिरने एकाएक नवम्बर १७९७ ई०में क्रास्नोयार्स्कके दुर्गपर आक्रमण करके इशिमको मार डाला और उसकी सम्पत्ति लूट ली। सिरिमके अनुयायी कजाक वरावर ऐसा ही करने लगे, जिसका वदला यायिकके कसाकोने १७९७ ई० और १७९८ ई० मे आक्रमण करके उनके बहुतेरे आदमियोको मार हजारो घोडोको लूट कर लिया। कुछ ही समय वाद वाश्किरोने भी कजाकोको लूटना-मारना शुरू किया।

६ ऐचुवक, अबुल्खैर-पुत्र (१७९७–१८०५ ई०)

इशिमके मारे जानेके वाद लघु-ओर्दूके शासनका भार एक परिषद्के हाथमे दिया गया, जिसका प्रधान ऐचुवकको वनाया गया। इस परिषद्मे ओर्दूके प्रत्येक कवीलेके दो-दो प्रतिनिधि थे। इस समय वैरन इगेल्स्त्रोम फिर राज्यपाल होकर आया था। लघु-ओर्दूकी सरकारका केंद्र खोब्दा नदीपर रखना निश्चित हुआ। ओर्दू इस प्रवधसे सतुष्ट नही था। उन्होनें फिर अपने लिये खानकी माग की। रूसियो ने ऐचुवकका समर्थन किया, रूपये-पैसोके वलपर ऐचुवक खान निर्वाचित हो गया और जार पावलने भी स्वीकृतिकी मुहर लगा दी। ऐचुवक वूढा था। वह कजाकोको कावूमें नही रख सकता था। ओर्दूमे अव विखराव शुरू हुआ। उनमेंसे कुछ कवीले मध्य-ओर्दूमें मिल गये, कुछने सिर नदीके तटपर जा कराकल्पकोको दवाकर काइप-पुत्र अवुलगाजीको अपना खान चुना। कुछने उस्तउर्तके अधिकाश भागपर अधिकार करके वहासे तुर्कमानोको भगा दिया। नूरअली-पुत्र वकेइ ऐचुवकके परिषद्का सभापति था। उसने गुर्जी-अस्त्राखानके महाराज्यपाल क्नोरिंगके पास प्रार्थनापत्र भेजा, कि हमें कलमकोद्वारा परित्यक्त भूमि (यायिक-वोल्गाके वीचके इलाके रिन्पेस्की) मे रहनेकी इजाजत दी जाय। उनमे व्यवस्था कायम रखनेके लिये सौ कसाक नियुक्त कर ११ मार्च १८०१ ई०के उकाज (राजादेश) द्वारा सरकारने मजूरी दे दी। ये कजाक मुख्यत वाउलिन कवीलेके थे, जिनकी सख्या दस हजार थी। नई भूमिमे आकर वह खूव फलने-फूलने लगे, और सात-आठ सालके भीतर ही उनके पास पहलेसे दस गुना पशु हो गये, जब कि यायिक पारवाले उनके भाई फूट और भूखकी मारसे अपने वच्चोको रूसियोके हाथ वेच रहे थे।

१८०५ ई० मे वुढापेके कारण ऐचुवकने अपने पदको छोड दिया।

७ जन्ती उरा, ऐचुवक-पुत्र (१८०५–९ ई०)

नया खान थोडे ही समयतक रहा, जिसके वाद नूरअलीके एक पुत्रने उसे कत्ल कर दिया। दो सालतक लघु-ओर्दूका कोई खान नही वनाया गया। इसी समय १८१०ई०मे ओरेनवुर्ग प्रदेशके इलेत्स्क इलाकेमे—जहापर कि नमककी वडी अच्छी खाने थी—लाकर वहुत भारी सख्यामे रूसी वसा दिये गये। कजाकोंके वीचमे रूसियोकी वस्तियोको वसा-वसाकर जारशाही अपने शासनको दृढ करती थी, यह हम प्रशान्त महासागरतक फैली हुई रूसी वस्तियोसे जानते है। इस वातमें उनकी नीति, भारतमे अग्रेजोसे भिन्न थी। अग्रेज हिन्दुस्तानमे केवल अपने शासको, सैनिको और कुछ व्यापारियोको रखकर शासन और शोपण जारी रखना चाहते थे, जव कि रूसी अपने अधीन पूर्वी देशोमे भारी सख्यामें रूसी किसानो और मजदूरोको लाकर वसाते जाते थे।

८ शेरगाजी, ऐचुवक-पुत्र (१८१२–४४ ई०)

भाईकी जगहपर शेरगाजी लघु-ओर्दूका खान वना। इसी समय यायिक और वोल्गाके वीचमे वसे वुकेई-कवीलेका भी एक खान वुकेई था। १८२४ ई०में उसके मर जानेपर वुकेईके ज्येष्ठ पुत्र जहागीरको खान नियुक्त किया गया। शेरगाजीके ओर्दूके भी तीन टुकडे हो गये थे, जिनपर

तीन सुल्तान शासन करते थे। किर्गिज लोगोमें अपने राजवशके प्रति वहुत सम्मान था, और वह काली हड्डीवाले (सावारण जनता) सफेद हड्डी (पुराने राजवश) के जूयेंको वडी खुशीसे उठानेके लिये तैयार थे।

अव कास्पियनके पूर्वी तटपर भी रूसने हाथ-पैर फैलाना शुरू किया था। १८३३ ई०मे वहा उन्होने नवोअलेक्सान्द्रोव्स्की, फिर मगुश्लक (मगिश्लक) किलोको वनाया। १८३५ ई०मे यायिक (उराल) और उई नदियोके वीचमें एक नई दुर्ग-पक्ति वनाई, और इसके वीचमे पडनेवाली भूमि ओरेनवुर्गके कसाकोंके इलाकेमें मिला दी गई। कुछ ही साल वाद मध्य-ओर्दूके प्रसिद्ध खान केनीसर कासिमोफने साइवेरियाके कजाकोमे भारी विद्रोह फैलाया, और लघु-ओर्दूके भी कुछ कजाक विद्रोहियोमे जा मिले। इस विद्रोहने छ सालतक रूसी सरकारको परेशान रक्खा। १८४४ ई०में रूसी सेनाने कासिमोफका पीछा करके उसे वुरुतो (करा-किर्गिजो)मे भागनेके लिये मजबूर किया, जहा उनसे लडते हुये कासिमोफ मारा गया। इस विद्रोहके दवानेके प्रयत्नके फलस्वरूप तुरगाई नदीपर ओरेनवुर्ग-इर्गिजपर उरालके किले १८४७ ई०मे वने। अगले साल करावुलात-तटपर उसी नामका एक रूसी किला वनाया गया। रूसी सीमाके भीतर रहनेवाले कजाकोपर खोकन्दी और खीवावाले लूट-मार किया करते थे, जिसके प्रतिरोवके लिये रूसियोने १८४७ ई०मे ही निम्न-सिरपर अराल्स्क (भूतपूर्व राइम्स्क)का किला वनाया। इस प्रकार रूस कदम-कदम आगे वढता जा रहा था, फिर भला कजाकोके भीतर शाति कैसे कायम हो सकती थी? जवतक इजत कुतवेरोफको भगा नही दिया गया, और प्रसिद्ध वातिर जान खोजा मारा नही गया, तवतक दश्त (स्तेपी)मे रूसियो और कजाकोका सघर्ष जारी रहा, फिर कजाक पूरीतौरसे रूसियोके सरक्षणमे आ गये।

१८६९ ई०मे ओरेनवुर्गके दश्तमे नया शासन-सुधार हुआ, जिसके अनुसार सारे लघु-ओर्दूको उराल्स्क और तुरगाई दो जिलोमें वाट दिया गया। हरएक जिलेमे एक रूसी सैनिक कमाडर रहता था, जिसके अधीन कजाकोद्वारा निर्वाचित कुछ औल-जेठे (डेरेके मुखिया) शासन-प्रवधमें सहायता देते थे। कजाकोमें इसका भारी असतोप था, कि उनके ऊपर रूसी कसाक शासन करनेके लिये नियुक्त किये गये है। खीवाके खान कजाकोके खान-वशके ही होते थे और उनका रूसियोंसे अच्छा सवव नही था। खीवाके खानने कजाकोंके असतोपसे फायदा उठाकर उन्हे भडकाया, जिसके कारण १८६९-७० ई०में सारे दश्तमे विद्रोहकी आग भडक उठी, डाकके रास्ते नद हो गये। कजाकोने डाककी चौकियोको नष्ट कर दिया, मुसाफिरोमेंसे पकड़कर कुछको मार दिया और कुछको दास वनाकर वेच दिया। इसके लिये रूसियोने घोर दमन किया, और कवीलोको जवर्दस्ती जहा-तहा भेज दिया। लेखक श्माइलर १८७३ ई०में तुर्किस्तानमे कजाक राजुल छिङ्-गिस्के साथ रहा, जो कि वुकेइयेफ ओर्दूके अन्तिम खानका पुत्र था। पिताके मरनेपर जारने उसे राजुलकी रूसी उपाधि प्रदान की थी, लेकिन वह पक्का मुसलमान था, और हाल हीमे मक्कासे लौटकर आया था। समारा जिलेमे उसे जमीदारी मिली थी। श्माइलरके अनुसार वह वडा ही सस्कृत, भद्र पुरुप था। उसका अविक समय फ्रेंच उपन्यासोके पढनेमे लगता था। लघु-ओर्दू १९वी सदीके चतुर्थ पादतक पहुचते-पहुचते अपने स्वभावमें कितना परिवर्तन कर चुका था, इसका उदाहरण यह राजुल था। लेकिन यह परिवर्तन अमीरो और राजवशियोतक हीमे सीमित था, अभी सावारण कजाक-जनता वहुत-कुछ पुरानी दुनियामे रहनेकी कोशिश कर रही थी और वोल्शेविक क्रातिके वाद ही उसमे वास्तविक सामाजिक क्राति हुई।

ग महा-ओर्दू (१७४०–६० ई०)

मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दू रूसी सीमातके पास रहते थे, इसलिये उनका सवव वहुत पहले ही से रूसियोके साथ हो गया था, लेकिन महा-ओर्दू वहुत दूर रहता था, इसीलिये रूसियोके साथ सवव वहुत कम रहनेके कारण उनके इतिहासके वारेमें भी हमे वहुत अविक मालूम नही है। महा-ओर्दूके कई कवीले थे, जो अपने अलग-अलग सुल्तान, वेग या खानके अवीन रहते थे। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि सारे कजाक-ओर्दुओकी तरह यहापर भी छिङ्-गिस् खानके खूनसे सवध रखनेवाले ही शासकके तौरपर पसद किये जाते। महा-ओर्दू पहले जुगरोके अधीन था, पीछे उन्होने चीनियोकी

३. (८ कजाक लघु-ओर्दू-वंशवृक्ष)

(१७१८—१८१८ ई०) जानीवेग
|
उजियक
|
वोलियकइ
|
ऐचुवक
|
इरिश
|
१ अदिया (–१७१७)
|
२ अबुलखैर (१७१७-४९)

- ३ नूरअली (१७४९-९०)
  - ५ इशिम (१७९४-९७)
- ४ एरली (१७९०-९४)
- ६ ऐचुवक (१७९७-१८०५)
  - ७ जन्तिउरा (१८०५-९)
  - ८ शेरगाजी (१८१२)

अधीनता स्वीकार की। यद्यपि नाम महा-ओर्दू था, लेकिन सख्या और प्रभाव दोनोमे यह श्वेत-ओर्दूके मध्य और लघु-ओर्दूसे निर्वल था। तौफीक (तियाअवका) खानने श्वेत-ओर्दूको तीन हिस्सोमें बाटकर तिउलको महा-ओर्दूका शासक नियुक्त किया था। १७२३ ई०मे जब जुगरोने कजाकोकी भूमि और तुर्किस्तान शहरको ले महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दूके कितने ही कबीलोको अपने अधीन किया, तो वाकी बचा हुआ महाओर्दू और मध्य-ओर्दूका कुछ भाग खोजन्दकी ओर चला गया। पीछे कितने ही कजाक उत्तरकी ओर चले गये, लेकिन महा-ओर्दूवाले जुगरोकी प्रजा बनकर अपने पुराने देशमे बने रहे। महा-ओर्दूके निम्न खानोका पता है —

१	यलवर्स, इलवर्स	१७४० ई०
२	तिउल बी	१७४०–ई०
३	कुसियन बी	१७४२–ई०

१. एलबर्स (–१७४० ई०)

१७३८ ई०मे महा-ओर्दूके खान एल्वर्सने रूसियोसे उनकी प्रजा बनकर व्यापार करने की इजाजत मागी, जब कि मालूम हुआ, कि ओरी नदीपर किलावद नगर बन गया है, और मध्य तथा लघु-ओर्दूके लोग व्यापार करके बडे मौजमें रह रहे हैं। एलवर्स इस प्रकार ओरेनवुर्गके साथ व्यापार करनेके लाभको देखकर ही रूसी प्रजा बननेके लिये तैयार हुआ। पीछे राजादेश तैयार हो ओरेनवुर्गके अभिलेख-गृहमे आकर यो ही पडा रहा। इसी समय जुगर-राजा गन्दनने महा-ओर्दूके प्रत्येक कजाकपर एक छाल कर लगाया। १७३९ ई०मे मूलरके नेतृत्वमे एक रूसी कारवा जा रहा था, जिसे महा-ओर्दूके कजाकोने लूटा। मूलरने ९ नवम्बर १७३९ ई०को ताशकन्द पहुचकर एलवर्ससे इसकी शिकायत की, और लूटे मालको लौटानेके लिये कहा। खानने जवाब दिया—"मैने दुर्घटनाकी खबर पहले ही सुनी थी, अल्लाका शुक्र करो, जो कि जिन्दा बच गये। मैने गिरोहके नेता कोगिलदेसे माल लौटानेके लिये कहा है, और माल न लौटानेपर उसे दड देनेकी धमकी दी है। लेकिन मुझे मालके लौटनेकी बहुत कम आशा है।" उस समय ताशकन्दका शासक सईद सुल्तान था, लेकिन कजाक और उनका खान करीब-करीब स्थायी तौरसे ताशकन्दके इलाकेमे डेरा डाले ताशकन्दियोको मनमाना लूटा करते थे। मूलरके

कारवाके प्रस्थान करनेके चौथे अप्रैल १७४० ई०मे दिन सरत नागरिकोने एलवर्मको पकडकर मार डाला, जिसका बदला कजाकोंने शहरको लूटकर लिया। एलवर्सके मरनेके बाद उसका साथी तिउल वी सारे ओर्दूका शासक बना।

२. तिउल वी (१७४०—ई०)

तिउल वीको शायद तौफीक खानने नियुक्त किया था। उसे अधिक दिनोतक शासन करनेका मौका नही मिला, और उसे भगाकर गन्दन कुसियन वी छेरिङ की ओरसे शासन करने लगा। १७३९ ई०में तिउल वीने रूसियोकी अधीनता स्वीकार करके अपने खोये अधिकारको प्राप्त करनेका असफल प्रयत्न किया।

३ कुसियन वी, कुसियक वी (—१७४२—ई०)

१७४२ ई०में कुसियन वी अब जुगरोंके राज्यपालके तौरपर ताशकन्दपर शासन कर रहा था। इस समय यद्यपि कजाकोकी राजनीतिक प्रधानता नही थी, लेकिन शहरके चारो ओर जिस तरह वह डेरा डाले पडे थे, उससे जान पडता था, कि मानो नगरका मुहासिरा किये हुये है और किसी वक्त भी टूट पडनेके लिये तैयार है। तुर्किस्तान शहरकी भी हालत कुछ समयतक ऐसी ही रही, लेकिन जुगरोकी शक्ति इतनी मजबूत थी, कि वह उनके व्यापारमे कोई बाधा नही डालते थे। तुर्किस्तान और ताशकन्द नगरोंके बीचके दीहाती इलाकेपर महा-ओर्दूके कजाकोंका स्थायी अधिकार था। जुगरोंके दबानेपर कजाक भागकर फरगानामे चले गये, जहा वह वहाके पुराने बाशिन्दोपर प्रभुत्व जमाने लगे, यद्यपि उन्हें बराबर जुगरोका भय बना रहता था। जुगरोंके अतिम संघर्षके समय कजाकोंने भी हाथ साफ किया और अमुरसनाके विद्रोह करनेपर ये भी उसके पक्षमे रहे। १७५६-५७ ई०में जुगर-राज्यके पतनके बाद कजाकोंकी बन आई, और वह जुगरोकी छोडी हुई भूमि सप्तनदमे चले गये। चीनियोंने १७५८ ई०में ताशकन्द लेकर जुगरोकी भूमिमे कजाकोंके बसनेके लिये प्रोत्साहन दिया।

इस समयतक महा-ओर्दूके कई टुकडे हो चुके थे, इनमेंसे जो जुगारिया लौटे, उनमेंसे कुछ चीनकी प्रजा बने हुये थे, और कुछ चीनके विरोधी। दोनो पक्षोमे बराबर लडाई होती रहती थी, फिर इनके पडोसी बुरुत (करा-किर्गिज) भी इन्हें चैनसे रहने देना नही चाहते थे। १७७१ ई०में जब तोर्गुत वोल्गा छोडकर पूर्वकी ओर भाग रहे थे, उस समय अपने दूसरे कजाक भाइयोकी तरह इन्होंने भी उन्हे खूब लूटा। एरली सुल्तानने तोर्गुत थैची उवासा (उपासक)को बहुत तग किया, और इनके कारण उसे अठारह दिनतक एक जगह डेरा डालके पडा रहना पडा। इसी बीच एरलीने कलमकोंके धन और सुदर स्त्रियोका लोभ देकर भारी सख्यामे जहादी जमाकर उन्हें चढाया। कजाकोकी शक्तिको देखकर उवासा डर गया। एरलीने उन्हे इली-उपत्यकामें चले जानेकी इजाजत दी। तोर्गुत जब निश्चित हो किसी जगह डेरा डाले हुये थे, उसी समय एरलीने आक्रमण करके भारी सख्यामें मगोलोंकी निर्मम हत्या की, और कजाक बहुतसा लूटका माल और स्त्री-बच्चे पकड ले गये।

ताशकन्द इलाकेमे कुछ कजाक अब स्थायी तौरसे रहने लगे थे, ताशकन्द-शहर तो उनकी दयाका भिखारी था। वह पास-पडोसके लोगोको भी लूटते-उजाडते थे, जिसके कारण उनकी प्रजा न होनेपर भी वहाके लोग कर देनेके लिये मजबूर थे। १७६० ई०में लघु-ओर्दूद्वारा सिर नदीके मुहानेसे भगाया कराक्ल्पकोंका एक समूह इनके साथ आ मिला। सालो अत्याचार बर्दाश्त करते-करते १७९८ ई०में ताशकन्दके नागरिक अपने शासक यूनस खोजाके अधीन उठ खडे हुये, और उन्होने कजाकोंसे घोर बदला लिया—कजाकोंके सामने उनके भाइयोका शिर काटकर मीनार (स्तूप) बनवाया। यूनस खानने उन्हें पूरी तौरसे दबाकर ताशकन्दकी क्षतिपूर्तिको भी भरनेके लिये मजबूर किया। हर सौ भेड पर एक भेड कर वसूलकर उन्हे सेनामें भर्ती होनेके लिये भी मजबूर किया। १८१४ ई०मे जब ताशकन्द खोकन्दके खानके हाथमें चला गया, तो ये कजाक भी खोकन्दकी प्रजा हो गये, लेकिन चिमकन्दके पास रहनेवाले कजाकोंमेंसे कितनो हीने अपने घरो और बागोको छोड़कर चीनी सीमाके भीतर जाना पसद किया। कुछ अपने स्थायी निवासके जीवनको न पसदकर मध्य-ओर्दूके पास इर्तिश-तटपर चले

गये, और कुछ अकताग पहाडकी ओर। उनका एक भाग कितने ही समयतक सेमेरेक (सप्तनद), कुम्म्, और करातालके इलाकोमे स्वतत्र विचरता रह १८१९ ई०मे रूसके अधीन बना। इस समय उनका शासक मध्य-ओर्दूके खान अवलइका पुत्र सिउक था, जिसकी राजधानी अल्माअता थी, इसे रूसियोने वेर्नोय (श्रद्धा) नाम दिया था—जो बोल्शेविक क्रातिके बाद फिर अलमाअता बन आजकल कजाकिस्तान गणराज्यकी राजधानी तथा एक समृद्ध नगरी है। सिउक सुल्तान महा-ओर्दूके सबसे बडे कबीले दोगलत (दूलत) का शासक था। रूसी उसे ३५० रूबल पेन्शन देते थे। रूसी अफसर वेर्नीउ-कोफने एक बार सुल्तानसे कहा—"मै नही समझता, तुम्हारे लोग तुम्हे अपना शासक पाकर खुश है?" इसपर बूढेने जवाब दिया—"ऐसा मत कहो, मै तो पादिशाह (जार)की आज्ञाके अनुसार अपने लोगोपर शासन करता हू, अल्ला जारकी रक्षा करे।"

रूसी अफसरने फिर कहा—"तुम बडे नम्र हो सुल्तान? हम सभी सम्राट् (जार)की इच्छाका अनुसरण करना चाहते है, और वेर्नोयेके हरएक आदमीको वैसा करना चाहिये, लेकिन सुल्तान तुम्हारा ओर्दू तुम्हारी बात मानता है, इसलिये उनका बादशाहका भक्त होना तुम्हारे ऊपर निर्भर करता है।"

"मेरे लोगोको बादशाहका हुक्म मानना छोडकर और कुछ नही करना चाहिये। जिन्हे बादशाहने हमारे ऊपर नियुक्त किया है, वह उनकी आज्ञा मानते है। हम यहा दो हाथोकी तरह साथ-साथ रहते है—तुम रूसी लोग दाहिने हाथ हो, हम बाये, और राज्यपाल फ्रिस्तोफ हमारा सिर है। यह बुरा होगा, यदि बाया हाथ दाहिनेकी आज्ञा नही माने, या दोनो ही सिरके कहेको न मानें।"

महा-ओर्दूके कुछ कजाक-परिवार रानी एकातेरिनाके उकाजे (राजादेश)के अनुसार अपने सुल्तान चुरिगेइके साथ चार हजार परिवारोको ले १७८९ ई०मे उस्तकामेन्नोगोर्स्कमे बस गये, और १७९३ ई०मे महा-ओर्दूके कितने ही कजाक अपने सुल्तान तुगुमके साथ साइबेरियाके सीमातपर जा बसे। कजाकोको अपनी ओर खीचनेके लिए चीनी नाममात्रका कर लगाते थे। भेडोपर प्रति-हजार एक और ढोरोपर प्रतिशत एक कर लेते थे। कजाक कितनी ही बार पेकिङ जाते, और उन्हे सम्राट्-की ओरसे बहुत-बहुत इनाम मिलते। रूसी भी उनको अपनी ओर खीचना चाहते थे। कजाक अब भी अपने अक्खडपनको छोडनेके लिये तैयार नही थे। सीमातपर कर मागनेपर एक चीनी अफसरको एक कजाकने कहा था—"घास और पानी अल्लाने बनाये है, और पशु उसीका दान है। हम उनकी चरवाही करते है, फिर हम क्यो किसीको कर दे?"

लेकिन कजाक बहुत दिनोतक अपना अक्खडपन नही चला सकते थे। रूसी गोले-गोलियोके सामने उन्हे सिर नवाना ही पडा। अवलइ-जैसे साहित्य और संस्कृतिके नेताओने रूसियोंसे सीखकर अपनी कजाक जातिमे प्रकाश फैलानेकी कोशिश की, लेकिन उसमे सफलता १९१८ ई०के बाद ही हुई, जब कि बोल्शेविक क्रातिने उन्हे समानताका अधिकार दे नये भविष्यके निर्माणमे हाथ बटानेके लिये निमंत्रित किया।

स्रोत ग्रन्थ

१. History of Mongol (H H. Howorth)
२ Medieval Researches from Eastern Asiatic Sources
(E Bretschneider, London 1888)

भाग ४

दक्षिणापथ

अध्याय १

जारशाहीका अन्तिम प्रसार

(१८०१–१९१७ ई०)

पावल I के शासनके बारेमें कहते हुये हम बतला चुके है, कि १८ वी सदीके अन्तमे रूस अब युरोपकी एक सबसे बडी शक्ति माना जाता था। पावलकी हत्याके बाद उसका लडका अलेक्सान्द्र गद्दीपर बैठा।

१ अलेक्सान्द्र I, पावल I-पुत्र (१८०१–२५ ई०)

अलेक्सान्द्र अपनी दादी एकातेरिना II की देख-रेखमे युरोपीय शिक्षा-दीक्षामे पला था। एकातेरिनाने एक गणतत्री स्विस-विद्वान् लहार्पको अलेक्सान्द्रका अध्यापक नियुक्त किया था, जो उसके साथ गणतत्रताकी बातें किया करता था। उधर प्रशिया (जर्मनी) की सैनिक-कला उसके खूनमे थी। पीतर-वशके समाप्त होनेपर जर्मनीसे लाकर जो जार और उनकी सताने रूसी सिहासन पर बैठाये गये थे, वह अपने जर्मन होनेका अभिमान करते रूसियोको हीन दृष्टिसे देखते थे। अलेक्सान्द्रकी घनिष्ठता जेनरल अरक्चेयेफसे भी पहले ही स्थापित हो गई थी, जो कि किसानोकी अर्ध-दासताका जबर्दस्त पक्षपाती था। नये जारके बारेमे लोगोका कहना था—"वह आधा स्विटजर्लैंडका नागरिक और आधा प्रशियाका जमादार है।" लेकिन अरक्चेयेफ जैसे अर्ध-दासताके पक्षपाती चाहे कितना ही चीखें-चिल्लाये, १९ वी सदीके आरम्भके साथ रूसमें पूजीवादका प्रभाव और कारखानोका विस्तार जोरसे होने लगा, जिससे खेतीके अर्ध-दासोकी नही, बल्कि कारखानोंके मजदूरोकी अवश्यकता बढी। व्यापारने नदियो और समुद्रोके सस्ते जलपथोके महत्त्वको बतलाया, जिसके लिये कृत्रिम जलपथोके बनानेकी ओर ध्यान जाना जरूरी था। १८०३ ई०मे उत्तरी-एकातेरिना-नहर बनाकर कामा और उत्तरी द्वीना नदियोको मिला दिया गया। अब उत्तरी द्वीनासे नौकाये वोल्गामे आने-जाने लगी। १८०४ ई०मे ओगिन्स्की नहर बनाई गई, जिसने बाल्तिक और काला सागरको मिला दिया। अलेक्सान्द्रके शासनकालके प्रथम दस वर्षोंमे मारीइन्स्क और तिखविनकी नहर-प्रणाली बनकर तैयार हो गई, जिनके द्वारा रूसके भीतरी भागोका सबध बाल्तिक समुद्रसे हो गया। नहरोके साथ-साथ व्यापारके सुभीतेके लिये बकोकी भी स्थापना होने लगी। १७८६ ई०मे पीतरबुगमें राजकीय ऋण-बक स्थापित हुआ था। इससे सरकार और जमीदारोको फायदा था। १८०७ ई०में मास्कोमें व्यापारिक बककी स्थापना हुई। अब मास्को, आर्खागेल्स्क, तगनरोग और पयोदोसिया (क्रिमिया) में कितने ही बक-केद्र स्थापित हो गय। मालकी माग अधिक होनेसे उद्योग-धन्धोको बढनेका मौका मिला। १८०४ ई०में चुकदरकी चीनीके सात कारखाने काम कर रहे थे, जब कि १८१२ ई०मे उनकी सख्या तीस हो गई। १८०८ ई० मे पहली सूती कताई मिल स्थापित हुई। १८१२ ई०में जितने कारखाने चल रहे थे, उनमेंसे बासठ प्रतिशत व्यापारियोके थे, और केवल सोलह प्रतिशत के स्वामी जमीदार थे। इस प्रकार अब औद्योगिक पूजीवाद रूसमें पैर बढाता जा रहा था।

शासन-सुधार—१८वी सदीके अन्तमे फ्रासीसी क्राति हो चुकी थी, जिसके प्रभावको दबानेके लिये जार पावलने बडी कोशिश की थी। उसके पुत्रको मालूम हो गया था, कि शासनमें बिना सुधार किये क्रातिको रोका नही जा सकता। जब अलेक्सान्द्र अभी युवराज ही था, तभी उसने

लाहार्पको एक पत्रमे लिखा था--"देशको स्वतत्रता दूगा, और इस प्रकार मै उसे पागलोंके हाथका खिलौना नहीं बनने दूगा।" गद्दीपर बैठते ही अलेक्सान्द्रने घोषित किया, कि मैं अपनी दादी एकातेरिना II के विधानो और उसके भावोके अनुसार शासन करूंगा। उसने जो सुधार किये, उनके द्वारा दो सौमेसे एक किसान अर्ध-दास-को फायदा हुआ। इन अर्ध-दासोंको मुक्ति पानेके लिये पाच हजार रूबल जमीदारको क्षति-पूर्ति देनी थी। भला इतना पैसा गरीब किसान कहांसे लाते ?

अलेक्सान्द्रके सुधारोंमेसे एक था १८०२ ई०मे आठ मत्रालयोंकी स्थापना। इसके पहले एकातेरिनाके शासकीय विभाग काम कर रहे थे। शिक्षाकी ओर भी नये जारने कुछ ध्यान दिया। १९ वी सदीके आरम्भमे मास्को और दोरपतमे दो विश्वविद्यालय मौजूद थे, १८०५ ई०मे खरकोफ और कजानमे नये विश्वविद्यालय स्थापित हुये, और १८१९ ई०मे पहलेसे मौजूद केन्द्रीय-शिक्षण-प्रतिष्ठानको फिरसे सगठित करके पेतर्बुर्ग (लेनिनग्राद) विश्वविद्यालय स्थापित किया गया। इसी समय शिक्षा-मत्रालयकी स्थापना हुई। लेकिन साथ ही अलेक्सान्द्र शिक्षाके खतरेको भी समझता था, इसीलिये मुद्रणपर अकुश रखनेके लिये पुस्तकोंको छापनेसे पहिले उनके हस्तलेख सेसर को दिखला लेनेका नियम बनाया।

नेपोलियनसे युद्ध (१८०५-७ ई०)--अलेक्सान्द्र उस समय जार हुआ, जब कि १७९२-९३ ई०की फ्रेंच-क्राति समाप्त हो गई थी, और उसके बाद नेपोलियनने मौकेसे फायदा उठाकर अपनी विजय-यात्रा शुरू कर दी थी। वाणिज्य और बाजारके सबधमे इगलैड और फ्रासकी उस समय बडी प्रतिद्वद्विता थी, जिसका प्रभाव तत्कालीन भारतमे भी देखा जा सकता था। रूसका व्यापार अधिकतर इगलैडके साथ था, इसलिये अलेक्सान्द्रने गद्दी सभालते ही इगलैडसे मित्रताकी सधि कर ली, और बापके समयमे जो अग्रेजी जहाज रोक रक्खे गये थे, उन्हे मुक्त कर दिया। लेकिन नेपोलियनकी शक्ति उस वक्त बहुत जबर्दस्त थी। यदि बीचमे ब्रिटिश चैनलकी खाडी न होती, तो नेपोलियनके चगुलसे इगलैड नहीं बच सकता था। इसपर भी १८०२ ई०मे आमिनकी सधिद्वारा इगलैडने नेपोलियनसे त्राण पानेकी कोशिश की। लेकिन यह मित्रता या युद्धविराम अधिक समयतक नहीं टिक सकेगा, यह इगलैड भी जानता था, इसलिये उसने आस्ट्रिया, रूस और स्वीडनसे शत्रुके खिलाफ सैनिक मित्रताकी सधि कर ली। इगलैडको भारत-जैसी धनकी खान और दुनियाका व्यापार मिला था, इसलिये चादीके भरोसे वह अपनी युद्ध लडनेके लिये दूसरोको तैयार कर रहा था, जैसे कि, आजकलका अमेरिका। इगलैड और रूसकी इस सधिका एक मतलब यह भी था, कि नेपोलियनको हराकर फ्रासके पुराने राजवश बूरबू को फिर गद्दीनशीन किया जाय, और सामन्तवादियोंके शासनको फिरसे स्थापित करके पूजीवादियोंकी सफलताको खतम किया जाय।

अगस्त १८०५ ई० मे रूसी सेनापति कुतुजोफकी अधीनतामें एक बडी सेना युरोपमे नेपोलियनके विरुद्ध भेजी गई। उस समय नेपोलियन अपनी डेढ लाख सेनाके साथ इगलैडपर आक्रमण करनेके लिये तैयार था। कुतुजोफ जिस वक्त जर्मनी (बवेरिया) के नगर ब्रौनौसे पहुचा, तो मालूम हुआ, कि आस्ट्रियाकी मुख्य सेनाने हथियार रख दिये है। नेपोलियनकी विशाल सेनाके पाचवे ही भागके बराबर कुतुजोफकी सेना थी, इसलिये लौटनेके सिवा उसके लिये और कोई चारा नहीं था। लौटनेमे भी जो कौशल रूसी सेनापतियोने दिखाया, वह अद्वितीय था। रूसी सेनापति बगरातियोनके पास छ हजार सेना थी, जिसे तीस हजार फ्रेच सैनिकोने शोनग्राबेनमे घेर रक्खा था। बगरातियोनकी सेना बडी बहादुरीसे लडी और फ्रेच-पक्ति तोडकर निकलनेमे सफल हुई। इस वीरताके उपलक्षमे उन सारे सैनिकोको "पाचके प्रति एक"के अभिलेखके साथ बाहोपर फीता प्रदान किया गया। सबसे बडी लडाई आस्टर्लित्ज (बोहीमिया) मे २ दिसम्बर १८०६ ई० को हुई, जिसमे एक ओर नेपोलियनकी नब्बे हजार सेना थे, और दूसरी ओर रूस और आस्ट्रियाके छियासी हजार। सेनापति इस समय और स्थानको युद्धके लिये उचित नहीं समझते थे, लेकिन आस्ट्रियाके सम्राट् फासिस I ने तुरत युद्ध आरम्भ करनेके लिये जोर दिया। २ दिसम्बर १८०५ ई० को सबेरे कुहरा पड रहा था, जब कि रूसी फौजोने फ्रेंच सेनाके दाहिने पक्षपर असफल आक्रमण किया। रूसी और आस्ट्रियन सेनाये दूर तक बिखरी हुई थीं, इसलिये नेपोलियनके प्रत्याक्रमणको वह बर्दास्त नहीं कर सकी, तो भी रूसी

सैनिकोंने लडाईमे जो वहादुरी दिखाई थी, उसके बारेमे नेपोलियनने खुद कहा—"ऑस्टर्लिज (चेकोस्लावाकिया) मे रूसियोंने जैसा भारी पराक्रम दिखलाया, वैसा मेरे विरुद्ध दूसरे किसी युद्धमे नही दिखलाया गया ।"

१८०६ ई० के शरद्मे अलेक्सान्द्रने अपने मित्र प्रुशिया (जर्मनी) की महायताके लिये सेना भेजी, लेकिन नेपोलियनने सेनामे आक्रमण करके प्रुशियन सेनाको तितर-वितर कर दिया । बर्लिनने विना लडाईके ही अपनेको नेपोलियनके हाथमे समर्पित कर दिया, और १८०६-८ ई० मे दो वर्षो तक वह नेपोलियनके सैनिकोके हाथ मे रही । जनवरी १८०७ ई० मे नेपोलियन वरसावा (पोलद) मे दाखिल हुआ । रूसी-सेनाको भी उसने दो जगह् जवर्दस्त हार दी, जिसमे १८०७ ई० के ग्रीष्ममे फ्रीड-लैंडकी लडाईमे रूसी सेनाका पचमाश नष्ट हो गया । जून १८०७ ई० मे जारके वास्ते इसके सिवा कोई चारा नही था, कि नेपोलियनकी विजय और उसके सम्राट् पदको तिलजितकी सधिद्वारा स्वीकार करे ।

नेपोलियन चाहता था, कि इगलैंड युरोपकी दूसरी शक्तियोंसे सहायता न पा सके। इसके लिये उसने दूसरे देशोंका इगलैंडके साथ व्यापार करना मना कर दिया । रूस तकने नेपोलियनकी निषेध-आज्ञाको मानते हुये इगलैंडको अपना अनाज भेजना बद कर दिया, लेकिन इससे इगलैंडको नही, वल्कि स्वय रूसके वडे जमीदारोको अनाजके न विकने या सस्ता हो जानेमे भारी क्षति उठानी पड रही थी, जिससे रूसमे आर्थिक सकट पैदा हो गया। तो भी रूस नेपोलियनको नाराज करनेकी हिम्मत कैसे कर सकता था ?

इसी वीच (१८०८-९ ई०) रूस और स्वीडनमे लडाई छिड गई । नेपोलियन रूसकी शक्ति को अपने फायदेके लिये इस्तेमाल करना चाहता था । उसके कहनेपर रूसने इगलैंडके साथ अपना कूटनीतिक सबध तोड लिया था, और उसीके शह देनेपर रूसने स्वीडनके खिलाफ यह युद्ध घोषित किया । स्वीडनका यही कसूर था, कि उसने नेपोलियनकी आज्ञा न मानकर इगलैंडके साथ मित्रताका सबध कायम रक्खा। फरवरी १८०८ ई० मे रूसी सेनाने सीमात पार किया । उस समय फिनलन्द स्वीडनके हाथमे था । १८०८ ई०के अन्त तक फिनलन्दको लेकर रूसी सेना स्वीडनकी भूमिमे दाखिल हो गई। १६ मार्च १८०६ ई० को, जव कि स्वीडनके साथ घनघोर युद्ध हो रहा था, अलेक्सान्द्रने फिन्-ससद्को वोर्गो नगर ने बुलाकर वचन दिया, कि फिनलन्दके विधानको हम पूरी तौरसे मानेगे । इसी समय फिनलन्द रूसका एक प्रदेश घोषित हुआ, और तबसे वोल्शेविक-क्रातिके समय (१९१७ ई०) तक वैसा ही रहा । ५ सितम्बर १८०९ ई० को सधि करके स्वीडनने फिनलन्दपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया । नेपोलियनके आदेशानुसार इगलैंडके घिरावेमे युरोपके दूसरे देशोंने साथ देना स्वीकार किया ।

नेपोलियन जानता था, जव तक रूसको अपने हाथमे नही किया जाता, तब तक उसकी विजय अधूरी रहेगी । बीचके समयमे नेपोलियनने रूसके बारेमे वहुतसी जानकारी प्राप्त की, और आक्रमण करनेके लिये पोलन्दको आधार-भूमिके तौरपर तैयार करता रहा । इसपर जारने नेपोलियनसे माग की, कि पोल-राज्यको फिरसे जीवित करनेकी कोशिश न करे, और दरेदानियाल तथा कान्स्तन्तिनोपलपर रूसके अधिकार करनेके साथ सहमत हो । नेपोलियनने इसे स्वीकार नही किया । सुलहके लिये नेपोलियन और जारने आपसमे मुलाकात करके भी वातचीत की, लेकिन उसका कोई फल नही हुआ । नेपोलियनने मोल्दाविया और वलाचियाको रूसके हाथमे जाने देना स्वीकार किया । इसी बीच १८१० ई०मे उसने हालैंडको अपने राज्यमे मिला लिया, और रूसके विरोधकी कोई पर्वाह नही की । रूस समझने लगा, कि नेपोलियन मौकेकी ताकमे है, इसलिये उसने १८०६ ई०से चली आती तुर्कीकी छेडछाडको आगे वढाना चाहा । युरोपके युद्धक्षेत्रमे रूसियोंके हारकी वात सुनकर तुर्कीकी भी हिम्मत बढी, और उसने अपने छिने हुये कालासागर-तटवर्ती पश्चिमी काकेशस-प्रदेशको रूससे ले लेना चाहा । शाति और सुलहकी वात वेकार गई, क्योंकि तुर्की जानता था, कि इस समय रूसकी प्रधान सेना युरोपमे फसी हुई है । तव भी रूसी सेनाने नवम्बर १८०६ ई० मे दन्यूबकी ओर आक्रमण करके वेसराविया, मोल्दाविया और वलाचियाके तुर्की प्रदेशोको ले लिया । रूसी प्रगतिको दन्यूव तटवर्ती तुर्की किलोने नही रोक पाया । ८ मई १८२२ ई०को बुखारेस्तकी सधिके अनुसार

तुर्कोंने बेसराबियाके ऊपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया, और साथ ही खोतिन, बन्दर, अकरमान और इस्माइलके किलोंको भी उसके हवाले कर दिया। रूसने पोती और अखल्कल्काको तुर्कोंको लौटा दिये। तुर्कोंसे इस तरह छुट्टी पाकर रूस अब नेपोलियनके आक्रमणका जवाब दे सकता था।

नेपोलियन रूसको विश्राम लेने देना नहीं चाहता था। वह रूसकी ओर अपनी सेना भेजकर मई १८१२ ई०में स्वयं भी ड्रेसडनसे नीमन नदीकी ओर चल पड़ा। २४ जून (पुराना १२ जून) १८१२ ई० को नेपोलियनने हिटलरकी तरह बिना युद्ध-घोषणाके ही रूसपर आक्रमण कर दिया। नेपोलियनके पास जहां पांच लाख सेना थे, वहां रूसकी कुल सेना एक लाख अस्सी हजार थी। हिटलरकी सेनाकी तरह नेपोलियनकी सेनामें जर्मन, इतालियन, स्वीस, क्रोवात, स्पेनिश आदि युरोपकी सभी जातियोंके सैनिक थे। इतनी बड़ी सेनाके साथ सामने होकर लड़ना बेवकूफी थी, इसलिये रूसी सेनाने कमसे कम संघर्ष करते हुये पीछे हटने को पसंद किया। नेपोलियनकी सेना आगे बढ़ती अगस्तमें स्मोलेन्स्क पहुंची। उसकी तोपोंने शहरपर तेरह घंटे गोलाबारी की, सारा नगर जलने लगा। नेपोलियनके विरुद्ध रूसियोंने उसी नीतिका पालन किया, जिसे एक सौ तीस वर्ष बाद उन्होंने हिटलरी आक्रमणके समय किया। आक्रमणकी गतिको धीमी करनेके लिये कहीं-कहीं लड़ते रूसी पीछेकी ओर हटते गये, और साथ ही नेपोलियनको परित्यक्त भूमिमें खाने-पीने-रहनेकी कोई चीज न मिल सके, इसके लिये अपने घरोंमें अपने हाथसे आग लगाते गये। स्मोलेन्स्कके निवासी भी अपने घरों और सम्पत्तिमें अपने हाथों आग लगाकर वहांसे चल दिये। उस समयके रूसमें प्रतिभाशाली पुरुषोंकी कदर बहुत कम होती थी, क्योंकि जार-वंश एक विदेशी वंश था, जो रूसियोंसे अधिक अपने जर्मन सबंधियोंको मानता था। सुवारोफकी उपेक्षाके बारेमें हम कह चुके हैं। कतुजोफकी प्रतिभाकी भी उतनी कदर नहीं की गई, लेकिन नेपोलियनके इस भयंकर आक्रमणके समय जार अलेक्सान्द्रको मजबूर होकर ६७ वर्षके बूढ़े कतुजोफको सारी रूसी सेनाका महासेनापति नियुक्त करना पड़ा।

राजुलवंशी मिखाइल ईलारियोन-पुत्र कतुजोफ सुवारोफका योग्य शिष्य था। २९ वर्षकी उमरमें क्रिमियामें तुर्कोंके साथ लड़ते हुये उसकी एक आंख जाती रही। वह सुशिक्षित था, बहुत-सी विदेशी भाषाओंको जानता था, और युद्ध-विद्यापर युरोपकी भिन्न-भिन्न भाषाओंमें जितनी पुस्तकें प्राप्य थीं, उनका उसने गम्भीर अध्ययन किया था। १८१२ ई० में महासेनापति नियुक्त करते हुये भी जार अलेक्सान्द्रने अपने एक दरबारीसे कहा था—"लोग उसकी नियुक्ति चाहते थे, इसलिये मैंने नियुक्त कर दिया, लेकिन व्यक्तिगत तौरसे मैंने उससे अपना हाथ धो लिया।" नेपोलियनकी सेनायें अब मास्कोकी ओर बढ़ रही थीं। मास्को उस समय रूसकी राजधानी नहीं था, लेकिन उसका महत्व पीतरबुर्ग राजधानीसे भी अधिक था, क्योंकि वही व्यापारका सबसे बड़ा केंद्र था। कतुजोफको बग्रातियान जैसे दूसरे योग्य सेनापति मिले थे। बग्रातियोनने युद्धके बारेमें कहा था—"यह साधारण युद्ध नहीं बल्कि लोक-युद्ध है।" सचमुच ही सारी रूसी जनता उस वक्त अपने देशके लिये सब कुछकी बाजी लगाकर नेपोलियनके आदमियोंसे लड़ रही थी। रूसी ही नहीं, बल्कि बाश्किर, कल्मक, तातार आदि जातियोंके सैनिक भी साथ-साथ बहादुरी दिखला रहे थे। लड़नेसे भी ज्यादा नेपोलियनकी कठिनाइयां इसलिये बहुत बढ़ गई थीं, कि रूसी रास्तेके गांवों, नगरों या खड़ी फसलोंमेंसे कोई चीज उसके लिये नहीं छोड़ते थे। २३ सितम्बर १८१२ ई० में नेपोलियनने रूसी सेनापतिके पास इस तरहके "बर्बरतापूर्ण और असाधारण" युद्धके तरीकेका विरोध करते हुये शांति करनेका प्रस्ताव किया। उसने जब इस बातपर जोर दिया, कि "लड़ाईमें युद्धके सर्वस्वीकृत नियमोंको पालन करना चाहिये," तो कतुजोफने जवाब दिया—"लोग तुम्हारे इस युद्धको तातार (मंगोल) आक्रमण जैसा समझते हैं। इसीलिये वह प्रतिरोधके सभी तरीकोंको इस्तेमाल कर रहे हैं।" जार और दरबारी चाहते थे, कि नेपोलियनसे जमकर लड़ाई हो, लेकिन कतुजोफका कहना था, काल और देश (दूरी) की सहायतासे ही हम दुश्मनको हरा सकते हैं। यदि मास्को भी शत्रुके हाथमें चला जाय, तो उसके लिये भी हमें तैयार रहना चाहिये, क्योंकि हमें मास्को नहीं रूसकी रक्षा करनी है। नेपोलियनकी सेनाकी भारी क्षति हो रही थी। वह चाहता था, कि कतुजोफ लड़नेके लिये तैयार हो, ताकि युद्धक्षेत्रमें रूसी सेनाकी रीढ़ तोड़ दी जाय, लेकिन कतुजोफ अपनी निश्चित की हुई जगहपर ही लड़ना चाहता

था। ५ सितम्बर (२३ अगस्त) की रातको सेवर्दिनो गावमे एक छोटीसी रूसी सेनाने डटकर लडाई करके उस युद्धका आरम्भ किया, जो कि ८ सितम्बर (२६ अगस्त) के प्रात काल मास्कोसे ९० किलोमीतरपर अवस्थित वोरोदिनो गावके ऐतिहासिक युद्धके रूपमें हुआ। युद्धक्षेत्रमे ११२ हजार रूसी सैनिक थे, जिनके अतिरिक्त सात हजार कसाक और दस हजार नागरिक सैनिक भी शामिल हुये थे। नेपोलियनके पास अब एक लाख तीस हजार सेना और ५८७ तोपे रह गई थी। युद्धमे वगरातियोन घायल होकर अन्तमे मर गया। वेहोश होनेसे पहले उसके मुहसे अन्तिम शब्द निकले थे—"हमारे आदमी कैसे है ?" उसने "डटे हुये है" जवाव सुनकर प्राण छोडा। पीतर इवान-पुत्र वगरातियोन एक गुर्जी-वशका सैनिक था, जिसे सुवारोफ़के चरणोमे वैठकर युद्धविद्या सीखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यद्यपि वोरोदिनो में रूसी नेपोलियनकी सेनाको हरा नही सके, लेकिन उसके सालो वाद अपने मृत्युसे जरा सा पहले नेपालियनने स्वीकार किया था—"मैने जितनी लडाइया लडी, उनमे सवसे भयकर लडाई वह थी, जो मास्कोके पास हुई। फासीसियोने अपनेको विजयके योग्य यदि सावित किया, तो रूसियोको भी अजेय होनेका अधिकार वही प्राप्त हुआ।" रूसी महान् कवि लेर्मन्तोफने वोरोदिनोके वारेमें लिखा था —

"उस दिन शत्रुने अच्छी तरह समझा
कि हम रूसी सिपाही कैसे लडते है—
भयकर हाथसे हाथ
घोडे और आदमी एक साथ लडते,
और तो भी तोपोकी गडगडाहट।
हमारी छातिया वैसे ही काप रही थी,
जैसे वहा धरती कापती थी।
फिर पहाडों और मैदानोमे अधकार छाया,
तो भी हमें अभी फिर लडना था।"

वोरोदिनोमें रूसी सेनामें पराजितकी तरह भगदड नही मची, वल्कि वह सुव्यवस्थित रीतिसे मौजाइस्क होते मास्को पहुची। १४ सितम्वर १८१२ ई० को मास्कोके पास फिली गावमे कतुजोफने युद्धपरिपद् की। सेनापति लडनेके पक्षमे थे, लेकिन कतुजोफने यह घोपित करते हटनेका हुक्म दिया——"मास्कोका हाथसे जाना रूसका हाथसे जाना नही है।" १४ (२) सितम्वरके सवेरे रूसी सेना मास्को छोडकर वाहर जाने लगा। मास्कोके नागरिक भी जो कुछ साथ ले जा सकते थे, उसे लेकर पैदल या गाडियोपर नगरसे निकल पडे। रातको मास्कोमें आग लग गई। हवा तेज थी, जिसने लकडीके मकानोमें चिनगारी फेक-फेककर सारे नगरको जला दिया, जिससे फ्रेच सैनिकोको खुलकर लूटनेका मौका नही मिला। आग छ दिनोतक जलती रहीं। मास्को नेपोलियनके हाथमें था। लेकिन जला-भुना आश्रयहीन मास्को जल्दी ही शुरू होनेवाले जाडेसे उसकी सेनाको कैसे वचा सकता था ? नेपोलियनने वहुत कोशिश की, वहुत वार जार अलेक्सान्द्रको सधि करनेके लिये लिखा, लेकिन जारने उसका जवाव भी देना पसद नही किया। जाडा भयकर रूप लेता जा रहा था, उसके कारण सैनिकोकी हालत खराव होती जा रही थी। नेपोलियनको अव कतुजोफके युद्ध कौशलका पता लगा, और उसने मास्को छोडनेका निश्चय कर लिया।

१८ (६) अक्तूवरके सवेरे सात वजे नेपोलियनने मास्कोसे हटना शुरू किया। उसने क्रेमलिनको वारूदसे उडा देनेका हुक्म दिया, लेकिन वर्पाके कारण कितने ही पलीते भीग गये थे, इसलिये क्रेमलिनका एक मीनार तथा दीवारका कुछ भाग ही नष्ट हो पाया। नेपोलियनको लौटते समय अव कतुजोफकी सेनाका मुकाविला करना था, जो वीच-वीचमें फ्रेंच सेनापर भयकर प्रहार कर रही थी। रास्तेके नगर और गाव विल्कुल उजाड थे। घोडोको मारकर खानेके सिवा नेपोलियनकी सेनाके लिये प्राण वचानेका कोई उपाय नही था। भुखमरीके साथ-साथ वीमारीने भी अपना आक्रमण कर दिया था। रास्तेपर पडी आदमियो और घोडोकी लाशे नेपोलियनके लौटनेका परिचय दे रही थीं।

सैनिकोंके अतिरिक्त रूसी गोरिल्लोंने नेपोलियनकी सेनाके नाकमें दम कर दिया था। सर्दी अब इतनी बढ़ गई थी, कि भूखे फ्रेंच सिपाही गाड़ियों, घरोंके सामानों या मकानोंमें आग लगाकर उनमें बचनेकी कोशिश करते थे। लेकिन यह केवल रूसी जाड़ा नहीं था, जिसने कि १८१२ ई० में शत्रुकी सेनाको नष्ट किया। उस सालका जाड़ा अपेक्षाकृत नरम था, १२ सेंटिग्रेड हिमबिन्दुसे नीचे तक ही चार-पांच दिन तापमान गया था। इससे कहीं अधिक सर्दी १७९५ ई० और १८०७ ई० में हुई थी, जिसको कि सहते हुये नेपोलियनकी सेनाने हालैंड आदिके युद्ध लड़े थे। दिसम्बरके अन्ततक जब वह बेरेजिना नदीको पार हुई, तो नेपोलियनकी महासेना अब तीस हजार रह गई थी। नेपोलियन अपनी सेनाको वहीं छोड़ जल्दी-जल्दी पेरिसकी ओर दौड़ा। अभी उसे अपने अन्तिम दिन देखने थे। १८१३ ई०की शरद्‌में लाइपजिकमें मित्र-शक्तियोंने नेपोलियनको हराया, फिर मित्र-सेनायें जार अलेक्सान्द्र I के नेतृत्वमें मार्च १८१४ ई० में पेरिसके भीतर दाखिल हुईं। क्रांति द्वारा अपसारित बूरबों राजवंशको फिरसे फ्रांसमें प्रतिष्ठापित किया गया, नेपोलियनको एल्ब द्वीपमें निर्वासित कर दिया गया। आगेकी बातोंका फैसला करनेके लिये मई १८१५ ई० में वीना की कांग्रेस हुई, जिसमें पोलन्दके बहुत बड़े भागको "सदाके लिये" रूसके हाथमें दे दिया गया। अभी कांग्रेस चल ही रही थी, कि नेपोलियन एल्बसे भागकर पेरिस पहुंचा, और वह फिरसे अपनी खोई शक्तिको हाथमें करने लगा, लेकिन सौ दिन बीतते-बीतते अंग्रेज और जर्मन सेनाओंने वाटरलूके मैदानमें उसे अन्तिम तौरसे हराकर हेलेना द्वीपमें भेज दिया, जहां वह १८२१ ई० में मर गया। फ्रांसके सिंहासनपर अठारहवां लुई बैठाया गया। फ्रेंच-क्रांतिने मुकुट-धारियोंकी जो दुर्दशा की थी, उससे युरोपके सभी राजाओंमें आतंक छा गया था। जार अलेक्सान्द्रने फिर ऐसा मौका न देनेके लिये आस्ट्रिया और प्रुशियाके राजाओंके साथ मिलकर १८१५ ई० में पवित्र-सधिके नामसे एक समझौता किया। नेपोलियनके हारनेके बाद अब युरोपमें सब जगह रूसी जारकी तूती बोल रही थी। कार्ल मार्क्सने पवित्र-सधिके बारेमें कहा था—"यह युरोपके सभी राज्योंपर जारकी प्रधानताका ही दूसरा नाम था।"

सुधार—यह बतला आये हैं, कि तरुणाईमें जारको लाहार्प जैसे प्रगतिशील विचारोंवाले अध्यापकके सम्पर्कमें आनेका मौका मिला था। इसके अतिरिक्त अपने शासनके आरम्भिक दिनोंमें जारपर स्पेरन्स्की जैसे एक प्रतिभाशाली व्यक्तिका भी प्रभाव पड़ा था। स्पेरन्स्की एक गांवके ईसाई पुरोहितका लड़का था। उसकी शिक्षा पीतरबुर्गकी एक धार्मिक पाठशालामें हुई थी। अपनी असाधारण प्रतिभाके कारण वह एक मामूली क्लर्कसे बढ़ते-बढ़ते राज्यसचिव हो गया। तिल्जितकी सधिके बाद स्पेरन्स्की जारका प्रधान सलाहकार था। रूसकी शक्तिको दृढ़ करनेके लिये उसने यह जरूरी समझा, कि शासनमें सुधार किया जाय। १८०९ ई०में स्पेरन्स्कीने "राज्य-विधानोंका संहितीकरण" के नामसे एक सुधार मसौदा तैयार किया। इन सुधार द्वारा वह चाहता था कि सामन्तशाही राजतंत्रकी जगह बूर्ज्वा राजतंत्र स्थापित हो, तथा "विज्ञान, व्यापार और उद्योग" की रक्षा की जाय। उसने कहा—"दुनियाके इतिहासमें ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिलता, कि नव-शिक्षित और व्यापारप्रधान जाति अधिक दिनोंतक दासतामें रहे।" स्पेरन्स्कीने सुझाव पेश किया था, कि सभी सम्पत्ति रखनेवाले लोगोंकी एक राज्यदूमा (संसद्) बुलाई जाय, जिसके लिये हरएक वोलोस्त (पर्गना) के सम्पत्तिवाले चुनकर एक वोलोस्त-दूमा बनायें, फिर वोलोस्त-दूमाओंके सदस्य ओकुग (जिले) की दूमाके सदस्योंका चुनाव करें, फिर ओकुग-दूमाओंके सदस्य गुर्बनिया (प्रदेश) की दूमाओं-का निर्वाचन करें, और गुर्बनियाकी दूमायें राज्य-दूमाके सदस्योंको निर्वाचित करें। इस प्रकार चार जगहोंसे होकर चुनाव किया जाय। बिना राज्यदूमा और राज्यपरिषद्‌की स्वीकृतिके कोई विधान पास न किया जाय। शासन-प्रबंध मंत्रियोंके हाथमें रहे, जो दूमाके सामने जवाबदेह हों। इसमें शक नहीं, आजसे सवा सौ वर्ष पहलेके लिये स्पेरन्स्कीका कानूनी मसौदा प्रगतिशील था। लेकिन सत्ताधारी जमींदार इसे क्यों पसंद करने लगे? वह स्पेरेन्स्कीको "बदमाश", "क्रांतिकारी" और "फ्रांसचेला" कहकर बदनाम करने। उनके विरोधके कारण मजबूर हो अलेक्सान्द्रने मसौदेको अस्वीकार कर दिया, और उसकी जगह अपने नियुक्त किये सदस्योंकी एक राज्य-परिषद् १८१० ई०में स्थापित की। राज्यपरिषद् का काम जारको केवल सलाह देना भर था। यह राज्यपरिषद् १८१० ई० से १९०६ ई० तक बनी रही।

मन्त्रियोकी सख्या अबसे आठकी जगह ग्यारह कर दी गई थी—पुलिस, सचार और राज्य-नियत्रण के तीन और मत्रालय स्थापित किये गये। राजुलो और जमीदारोने प्रसिद्ध इतिहासकार तथा भारी जमीदार न० म० करमजिनके नेतृत्वमे माग की, कि स्पेरन्स्कीसे इस्तीफा लिया जाय। करमजिनने इन सुधारोकी जगह "पचास अच्छे राज्यपालो" को नियुक्त करनेकी सलाह दी। स्पेरन्स्कीके प्रयत्नके असफल होनेपर तुर्की और नेपोलियनके वडे युद्धोके भीतरसे रूसको गुजरना पडा।

नेपोलियनके पतनके वाद जार समझता था—युरोपके भाग्य और व्यवस्थाकी जिम्मेवारी मेरे ऊपर है। देशके भीतर अरक्चेयेफकी सलाहको मानकर जार सारा काम करता था। लोग अरक्चेयेफको कितनी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, यह पुश्किनकी निम्न कवितासे मालूम होगा —

वह सारे रूसको अपनी एडीके नीचे पीस रहा है,
ढाचेपर बैठा वह चक्का चलाना जानता है।
जारका राज्यपाल और मुद्राघर स्वामी,
उसका मित्र और बिल्कुल जमुआ भाई,
बदला लेनेके लिये, घृणाके लिये भरा,
मस्तिष्कहीन, हृदयहीन और बिल्कुल सम्मानहीन,
कौन है यह "सच्चा अनतिशियोक्तिपूर्ण, वीर" ?
एक सिपाही, नही वह तो उसे छू भी नही गया।

उसने सैनिक बस्तिया बसाई थी। किसानोको जबर्दस्ती इन बस्तियोमे रहकर जन्मजात सिपाहीका काम करना पडता था। रूसके पश्चिमी सीमातपर १८२० ई०के आसपास ३७५ हजार सैनिक किसानोकी बस्तिया बसी थी। किसान इस जबर्दस्तीको बर्दाश्त नही करते थे, जिसके कारण कितने ही विद्रोह हुये। अरक्चेयेफने इन विद्रोहोको बडी निष्ठुरतापूर्वक दबाया। अलेक्सान्द्र I को जब इन बस्तियोको अनावश्यक कहकर रोकनेके लिये कहा गया, तो उसने जवाब दिया—"हर हालतमें सैनिक बस्तिया मौजूद रहेगी, चाहे इसके लिये हमे पीतरबुर्गसे चूदवा तकके सारे रास्ते (७० किलोमीतर ५० मीलसे ऊपर) लाशोसे भी ढाक देना पडे।"

काकेशस-विजय—१८०१ ई०मे पूर्वी गुर्जीको रूसने ले लिया था। इसके बाद जारको सारे काकेशस-प्रदेशपर हाथ साफ करनेका ख्याल आया। इस काममें एक गुर्जी (जार्जियन) अमीर राजुल त्सित्सियानोफ जारका भारी सहायक था। १८०२ ई०मे अलेक्सान्द्रने उसे उधरकी सेनाका मुख्य-सेनापति नियुक्त किया। उसने काकेशसके छोटे-छोटे राजाओको जीतकर रूसमे मिलाना शुरू किया। १८०४ ई०मे त्सित्सियानोफने येरेवान (अरमनी)के राज्यपर चढाई की। दो महीनेतक येरेवानके दुर्गको घेर रखनेके बाद उसे असफल लौटना पडा। १८०५ ई० के अन्तमे उसने बाकूके खानके विरुद्ध अभियान किया। बाकूका महत्त्व इसलिये भी ज्यादा था, कि उसे आधार बनाकर ईरानके विरुद्ध सैनिक कार्रवाई की जा सकती थी। खानसे उसने किलेकी चाभी मागी, लेकिन खानने धोखेसे मारकर गुर्जी राजुलका सिर ईरानके युवराजके पास भेज दिया। पर बाकू बच नही सका, और १८०६ ई० की शरद्मे वह रूसका अग बन गया। इसके बाद उसी समय पडोसी कूबाके खानको भी रूसियोने जीता। रूसियोने इन जीते हुये छोटे-छोटे राज्योका दो प्रदेश—एलिजाबेतापोल और बाकू—बना दिया। जारके रास्तेमे ईरान और तुर्की बाधा दे रहे थे, रुपये-पैसे दे इगलैड और फ्रास उनकी पीठ ठोक रहे थे। ईरानने रूसके विरुद्ध १८०५ ई०मे युद्ध-घोषणा की, और तुर्कीने १८०६ ई० के अन्तमें। यह युद्ध कई सालो तक चलते रहे। ईरानी और तुर्की सेनाने कई बार करारी हारे खाई। ईरानने अतमे दागिस्तान और गुर्जीको रूसके हाथमे देना स्वीकार किया, और कास्पियन समुद्रमे सैनिक जहाज न रखनेका भी वचन दिया। तुर्कीके साथकी लडाई मई १८१२ ई० मे बुखारेस्तकी सधिके साथ समाप्त हुई, इसे हम बतला आये है। तुर्कीने पश्चिमी गुर्जीपरसे अपने दावेको हटा लिया, जो रूसकी कुतैसी गुबर्निया बन गई। ईरानके साथका युद्ध १८१३ ई०में खतम हुआ, जिसमें इगलैडने भी तत्परता दिखलाई, क्योकि वह चाहता था, कि हम इधरसे मुक्त होकर दोनोके दुश्मन

नेपोलियनके खिलाफ अपनी सारी शक्ति लगाये। १८१३ ई० की गुलिस्तान-संधि के अनुसार आजकल-के रूसी आजुर्बाइजानको ईरानने सदाके लिये जारके हाथमें दे दिया।

वोल्गाके लोग——वोल्गाके बाश्किर, चुवाश, मोर्द्वी, तारतार आदि जातिया लडाकू स्वभाव-की थीं, इसलिये उन्होंने आसानीसे रूसी जूयेको अपने कंधेपर नही रक्खा। रूसियोंने उनके भीतर अपने शासनको दृढ करनेके लिये कई तरीके इस्तेमाल किये। इन इलाकोंकी उर्वर भूमिको रूसी जमींदार अपने हाथमे करके उनपर अपना रोब कायम करते, कही-कही रूसी किसानोंको भी ले जाकर उनके भीतर बसाते, जो कि किसानीके साथ-साथ सैनिकका भी काम देते। इसके अतिरिक्त ईसाई पादरियों-को जबर्दस्ती ईसाई बनानेकी भी छूट थी। नये बने ईसाइयोंको काफी प्रलोभन भी दिया जाता था। कितनी ही जगहोंपर प्रत्येक नवईसाईको एक सलेब, एक रूबल और एक सफेद कमीज दी जाती थी। तारतारो और दूसरोंके सरदारो और सुल्तानोंको ईसाई-धर्म न स्वीकार करनेपर कितनी ही बार अपने असामियोंसे वंचित कर दिया जाता था। इनके अतिरिक्त निम्न-वोल्गाके किनारे ले जाकर जर्मन किसानोंको बसा दिया गया। रूसी जार ऊपरसे रूसी थे, नही तो उनकी सारी मनोवृत्ति जर्मन थी, इसीलिये जर्मन शिक्षितो, सैनिकों और दरबारियोंके प्रति ही नहीं, बल्कि साधारण जर्मनोंके प्रति भी उनका विशेष पक्षपात था। १८ वी सदीके उत्तरार्धमे वोल्गाके दोनों किनारोंपर सरातोफमे और दक्षिण तक जगह-जगह जर्मन प्रवासियोंके गाव बसने लगे थे। १७६३ ई०में एकातेरिना II ने विशेष राजघोषणा निकालकर बाहरसे रूसमें लोगोंको आनेका निमंत्रण दिया था, जिसके अनुसार बीस हजारसे अधिक विदेशी——अधिकांश जर्मन आकर वोल्गाके किनारे बस गये। इन प्रवासियोंको प्रति परिवार तीस देस्यातिन (अस्सी एकड) जमीन तथा कुछ नकद ऋण भी दिया जाता था। कजाकों और कल्मक घुमन्तुओंको रोकनेके लिये उक्रे-इनसे लाकर बहुतसे कसाकोंको वोल्गाके पूर्वमे बसा दिया गया था। इस प्रकार हम देख रहे है, कि वोल्गा और उसके पूर्वकी एसियाई जातियोंपर अपने शासनको मजबूत करनेके लिये जारशाहीने रूसी ही नही, युरोपके दूसरे देशोंके साधारण लोगोंको भी लाकर बसाना जरूरी समझा। इसपर भी बाश्किर, तारतार, चुवाश आदि जातिया हथियार रखनेके लिये जल्दी तैयार नही हुई।

साइबेरियाके लोगोंको जमींदारी या अर्ध-दासता प्रथा क्या है, इसका पता नही था। उनके पडोसी कजाक और दूसरी जातिया मौका पाकर उनके आदमियोंको पकडकर दास बनाकर बेंच देती थीं। रूसियोंने उनके भीतर भी पहुचकर अपने शोषणके नये तरीकेको जारी किया। १८१२ ई० से स्पेरेन्स्की जारके मनसे उतर गया था, लेकिन १८१९ ई०मे जारने उसे साइबेरियाका महाराज्यपाल बनाकर भेजा। स्पेरन्स्कीने वहा जाकर कुछ सुधार किये, लेकिन इसी समय साइबेरियाके लोगोंको जबर्दस्ती ईसाई बनानेका काम भी आरम्भ हुआ, जिसमें मिशनरियोंने लोभ, धमकी हर तरहमे काम लिया।

भौगोलिक अभियान—नेपोलियनके युद्धोंमें सम्मिलित होकर रूस और बातोंमें भी दूसरे देशोंसे क्यों पीछे रहने लगा? अब उसने भी अपने भौगोलिक अभियान भेजने शुरू किये। १८०३-६ ई० में आदम क्रूजेन्स्तनें जहाज द्वारा पृथिवी-प्रदक्षिणा की। उस समय रूस अपने समूरी छालोंका व्यापार चीनके साथ स्थलमार्गसे क्याखता होकर करता था। क्रूजेन्स्तने सोचा, जलमार्गसे इसे और सस्तेमें किया जा सकता है, इसके लिये १८०३ ई०के ग्रीष्ममें उसने एक सामुद्रिक अभियानकी योजना बनाई और वह अतलान्तिक समुद्र पार हो दक्षिणी अमेरिकाका चक्कर काटते प्रशान्त महासागरमें पहुचा। फिर काम्चत्का और जापानके तटसे वह एसिया और अफ्रीकाके बाहर-बाहर होते अतला-न्तिकमें लौटा। इस अभियानने सखालिन, काम्चत्का, कूरिल और एलूतियान द्वीपोंके किनारोंकी खोज-पडताल की, और उत्तरी अमेरिकाके उत्तर-पश्चिमी किनारेको भी देखा-भाला। अपनी पुस्तकमें क्रूजेन्स्तने इस यात्रा का वर्णन किया। १८०९-११ ई० में एक दूसरे अभियानने हेदेनस्त्रोमके नेतृत्वमें ध्रुवीय समुद्र के बीचमें नवसिबेरीय द्वीपोंकी जाच-पडताल की। १८१० ई० में इसी अभियानके एक सदस्य सन्निकोफने इन द्वीपोंके सबसे उत्तरवाले द्वीपका पता लगाया, और यह भी दावा किया, कि वहा स्थलमार्ग है, जिसे सोवियतकालीन अभियानोंने गलत बतलाया। १८१५-१८ ई० में "रूरिक"

जहाजने काम्चत्का, चुकोतस्क और बेरिंग जलडमरूमध्यके बारेमे विशेष खोज-पडताल की। १८२१-२४ ई०में प्रसिद्ध रूसी नाविक लित्केने कम्चत्का और चुकोत्स्कका पहला नक्शा बनाया। १८२०-२४ ई०मे रेंगलके नेतृत्वमे एक अभियान गया, जिसने साइबेरियाके उत्तरी तटकी लेनासे बेरिंग जलडमरूमध्य तक जाच-पडताल की।

दिसम्बरी-विद्रोह (१८२६ ई०)—नेपोलियनकी पराजयके बाद जारका प्रभुत्व और प्रभाव बहुत बढ गया। जारने यद्यपि फ्रेंच-क्रातिके रूपमे ऊपर आनेवाली नई शक्तियोको दबानेकी जिम्मे-वारी अपने ऊपर ले रक्खी थी, लेकिन वह विचारोको कैसे रोक सकता था? अब रूसमे कल-कारखाने भी खुलने लगे थे। १८०४ ई० मे जहा रूस मे २४२७ कारखाने और ९५००० मजदूर थे, वहा १८२५ ई० मे ५२६१ कारखाने और २११ हजार मजदूर हो गये थे। पुराने हस्तशिल्प और कुटीरशिल्पकी जगह अब कारखानोकी चीजे बाजारोमे आ रही थी। उधर १८ वी सदीके मध्यसे ही रूसी कुलीन घरानोमें फ्रेंच भाषा और साहित्यका जोर हो चला था, और फ्रेंच साहित्यके साथ फ्रेंच-क्रातिके विचार देनेवाले साहित्यिकोकी कृतियोका भी प्रचार हो रहा था। जार साधारण रूसी जनताका ही देवता नही था, बल्कि उसके सामने राजुलो और अमीरोंको भी घुटने टेककर दडवत् करनी पडती थी। शिक्षित अमीर तरुण जब फ्रेंच प्रगतिशील साहित्यके प्रकाशमें देखते, तो उन्हें यह असह्य मालूम होता। उनमेसे कितने ही पश्चिमके देशोको घूमने जाते, और वहाके जीवनके सम्पर्कमे आते, जिससे उन्हे रूसकी पुरानी जारशाही बुरी लगती। फ्रेंच-क्रातिने फ्रासमे ही एक नये भावको पैदा नही किया, बल्कि उससे बल्कान, इताली और स्पेन सब जगह जातीय स्वतत्रताकी लहर फैली। दिसम्बरी विद्रो-हियोके नेता पेस्तेलने लिखा था—"युरोपके एक छोरसे दूसरे छोरतक वही एक बात घटित हो रही है, पोर्तगालसे रूसतक सभी देशोमे—जिसके अपवाद इगलैंड या तुर्की भी नही है। सुधारकी शक्तिया, कालकी मागें चारो ओर आदमीके दिमागको उत्तेजित कर रही है।" चूकि शिक्षाका प्रसार अभी अमीरो और कुलीनोमे ही था, इसलिये नये विचारोके वाहक भी वही थे। इन्ही क्रातिकारी कुलीनोने रूसमें परिवर्तन लानेके लिये गुप्त राजनीतिक समितिया सगठित की। ऐसी पहली समिति १८१६ ई० में स्थापित की गई, जिसका नाम था "पितृभूमिके सच्चे और भक्त पुत्रोकी सभा", अथवा "मुक्ति-सघ"। कर्नल अलेक्सान्द्र मुरावयोफ इस समितिका सस्थापक था। इसके बीस और सदस्य थे। इसका उद्देश्य था—किसानो को अर्ध-दासतासे मुक्त करना और रूसमें वैधानिक राजतत्रकी स्थापना। इसके जल्दी ही दो दल हो गये, जिनमे एक दल नरम था और दूसरा गरम। गरम दलवालोका नेता कर्नल पावल इवान-पुत्र पेस्तेल (१७९३–१८२६ ई०) था। दो साल बाद (१८१८-२१ ई०) "समृद्धि-सघ" के नामसे एक और सभा स्थापित हुई, जिसकी कितनी ही शाखायें जगह-जगह खोली गईं। इनमे सबसे अधिक क्रातिकारी दक्षिणी शाखा थी, जिसे कर्नल पेस्तेलने उक्रइनके तुलचिन नगरमे सगठित किया था। समृद्धि-सघने पेस्तेलके प्रभावमे आकर अपनेको गणराज्यके पक्षमे घोषित किया। मास्कोमे जनवरी १८२१ ई० मे सघका सम्मेलन हुआ, जिसमे नरमदली सदस्योने डरकर सघको बद कर देनेकी घोषणा की, लेकिन पेस्तेलने इसे नही स्वीकार किया और उसने "दक्षिणी सम्मिलनी" (१८२१-२५ ई०) के नामसे एक नया सगठन स्थापित किया, जिसमे पेस्तेल, दाविदोफ आदि कई प्रमुख व्यक्ति शामिल थे। पेस्तेल सुशिक्षित तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति था। समकालीन महाकवि पुश्किनने उसके बारेमे लिखा था—"पेस्तेल पूरे अर्थोमें चतुर पुरुष है। जहा तक मै जानता हू, वह सबसे मौलिक विचारोका आदमी है।" पेस्तेल १८१२ ई०में नेपोलियनकी सेनासे लडते बोरोदिनोके युद्ध-क्षेत्रमें घायल हुआ था। १८१३-१५ ई०के विदेशी अभियाने में भी पेस्तेल रूसी सेनाके साथ था। वोल्तेर, दिदेरो, रूसो जैसे बहुत से युरोपीय विचारकोंके ग्रथोका उसने गम्भीर अध्ययन किया था। पेस्तेलने रूसके वैधानिक सुधारका एक प्रोग्राम "रुस्कया प्रा दा" (रूसी सत्य अधिकार) के नामसे बनाया था, जिसके अनुसार सशस्त्र क्राति द्वारा रूसका एक अखड गणराज्य कायम करना था। उसका प्रस्ताव था राजवशके सभी आदमियोको मार डाला जाय, इसके बाद एक कामचालू सरकार घोषित की जाय। शासनके लिये उसने तीन उच्च सस्थाओका निर्माण होना आवश्यक समझा था विधान-सस्था—नरोदनये वेचे (लोकसभा), प्रशासन-सस्था—देर्झाव्नया दुमा

(राज्यदूमा) और निरीक्षक संस्था—वेर्खोन्नी सबोर (उच्चतम सभा)। वोटका अधिकार सम्पत्ति और शिक्षा दोनोंपर निर्भर है। सभी नागरिकोंको समान अधिकार और समान स्वतंत्रताको देते हुये समाजके भीतरके विभाजनको बंद किया जाये। "रुस्कया प्राव्दा" ने घोषित किया था, कि जमींदारोंको बिना क्षति-पूर्तिके दिये किसानों और उनकी जमीनको मुक्त कर दिया जाय। पेस्तेलने जो बात १८२० ई० मे घोषित की थी, वहा तक अभी १९५५ ई० के भारतीय भूमिसुधारक भी जानेके लिये तैयार नही है।

१८२२ ई० मे पीतरबुर्गमे भी एक क्रांतिकारी संस्था "उत्तरी सम्मिलनी" स्थापित की गई, जो कि १८२५ ई० तक मौजूद रही। इस सम्मिलनीका मुखिया निकिता मुरावयोफ (१७९८-१८२३ ई०) था, जो कि जारकी गारदका एक अफसर था। १८१२ ई० मे तरुण मुरावयोफ घरसे भागकर सेनामे भर्ती हो रूसी सेनाके साथ दूसरे देशोमे लड़ाई लड़ता रहा। इसने नेपोलियनके खिलाफ लड़ाइयोमे भाग लिया था। पेरिसमे रहते उसने निर्वाचन होते देखा। वही उसने क्रांतिकारी पुस्तकोंका भी एक संग्रह किया। देश लौटनेपर वह क्रांतिके संगठनमे जुट गया। "उत्तरी सम्मिलनी" के सदस्योंमे कवि कोन्द्राती फ्योदोर-पुत्र रिलेयेफ (१७९५-१८२६ ई०) भी था। १८२३ ई०मे "उत्तर तारा" नामसे एक पत्रिका निकाली, जिसने उसने जारके कृपापात्र अरक्चेयेफके अत्याचारोंकी खूब खबर ली। जल्दी ही वह और उसका पत्र जनप्रिय हो गया। १८२३ ई० मे वह "उत्तरी सम्मिलनी"में शामिल हो १४ दिसम्बर १८२५ ई० के विद्रोहकी तैयारीमे पूरी तौरसे जुट पड़ा। वह कहता था—"मै कवि नही, बल्कि एक नागरिक हूं।"

नवम्बर १८२५ ई० मे जार अलेक्सान्द्र I एकाएक तगन्रूगमे मर गया। इस प्रकार दिसम्बरी विद्रोहकी तैयारी हो जानेपर भी वह अलेक्सान्द्रके समय नही हो सका। अलेक्सान्द्रका कोई पुत्र नही था, इसलिये उसके भाई कन्स्तन्तिनको सिंहासन मिलना चाहिये था, लेकिन उसने अलेक्सान्द्रके जीवन-काल ही मे अपने अधिकारको त्याग दिया था, इसलिये जारके तीसरे भाई निकोलाइ I को गद्दी मिली।

चीनसे सपर्क—अलेक्सान्द्रको यूरोपका ही नही बल्कि पूर्वमे प्रशान्त महासागर तक फैले अपने साम्राज्यका भी ख्याल था। उसने गोलोउकिनके नेतृत्वमे १८०५ ई०मे एक बड़ा दूतमडल पेकिङ् भेजा। सीमानपर चीनियों ने बहाना बनाकर देर तक दूतमडलको रोके रक्खा। आगे बढनेके पहले रूसी राजदूतसे माग पेश की, कि चीन-सम्राट्के चित्रके सामने साष्टांग दडवत् (कोतो) करो। राजदूतने यह कहकर उसे माननेसे इन्कार कर दिया, कि हाल हीमे अग्रेज राजदूतको कोता (साष्टाग दडवत्) करनेसे मुक्त कर दिया गया है। इस बहानेसे उन्होने रूसी दूतमडलको आगे बढने नही दिया और उसे वहीसे लौट जाना पडा। अगले साल १८०६ ई० मे क्रुजेन्स्तर्नकी अधीनतामे दो रूसी जहाजोंने कान्तन पहुच अपने मालको वहा उतारा। इसकी खबर पाकर राजधानीसे हुक्म आया, कि रूसियोंको स्थलमार्गसे ही व्यापार करनेका अधिकार है, उन्हे सामुद्रिक मार्गसे व्यापार नही करने दिया जा सकता, इसलिये उनके जहाजोको रोक लिया जाये। लेकिन पेकिङकी आज्ञाके आनेसे पहले ही रूसी जहाज वहांसे विदा हो चुके थे।

रूसके एसियाके विस्तारमे येरमक (१५७२-८४) और खबारोफ (१६५८) दो प्रमुख व्यक्तियोंके बारेमें हम बतला चुके है। १९ वी सदीमे रूसके प्रभावको साइबेरियामे दृढ करनेका काम मुरावियफने किया।

२ निकोलाइ I, पावल I-पुत्र (१८२५–५५ ई०)

एगल्सने "रूसी जारशाहीकी वैदेशिक नीति" पर लिखते हुये १८९० ई० में इस जारके बारेमें कहा था—"एक क्षुद्र मिथ्याभिमानी आदमी था, जिसका दृष्टिक्षेत्र एक जमादार (कम्पनीके अफसर) से अधिक दूर तक नही जाता था। वह ऐसा आदमी था, जो कि क्रूरताको शक्ति, हठधर्मीको मनोबल समझता था। सबसे अधिक जो चीज उसको पसद थी, वह था शक्तिका प्रदर्शन।" निरंकुश रूसियाके सैनिकवादका सभी जारोसे अधिक पक्षपाती था। उसकी बीवी चार्लोतका बाप

प्रुशियाका राजा फ्रेद्रिक विल्हेल्म III था, जिसका भी उमे और उसकी वीर्वाको बहुत अभिमान था। सिपाहियोको निष्ठुरतापूर्वक कवायद-परेड कराके कठपुतली बना देनेको वह सैनिक विज्ञानका बहुत भारी कौशल मानता था। उस क्रूर, मदवृद्धि और अभिमानी आदमीने कभी पुस्तक नही पढी। उसने अरक्चेयेफकी शासन-व्यवस्थाको पूरी तौरसे कायम रक्खा। लेकिन, निकोलाइके लिये सर मुडाते ही ओले पडे। उसे बापके समयसे भीतर ही भीतर पकती क्रातिका मुकाबिला करना पडा। वह इसके बारेमे कहता था—"षड्यन्त्रियो और षड्यन्त्री नेताओ के विरुद्ध (मेरा) युद्ध अत्यन्त क्रूर और निर्दयता-पूर्ण होगा। मै उसके लिये कोई बात उठा नही रखूगा। मेरा कर्तव्य है, कि रूस और युरोपको इसके बारेमे शिक्षा दू।"

उसने क्रातिकारियोको निर्मम होकर शिक्षा दी भी, जिसमे उसे इस बातका सुभीता था, कि क्रातिकारी अभी नौसिखिये थे, अभी वह दृढतापूर्वक अपने कामपर डटे नही थे। क्रातिकारियोने २६ (१४) दिसम्बरको विद्रोह करनेका दिन निश्चित कर रक्खा था, जिस दिन कि नये जारके प्रति शपथ लेनी थी। उस दिन (२६ दिसम्बर १८२५) सबेरे दिसम्बरी अफसरो द्वारा सचालित रेजिमेट सीनेटके मैदानमे एकत्रित हुई, तीन हजारसे ऊपर विद्रोही सैनिक और नौसैनिक पीतर I के स्मारकके चारो ओर जमा हुये, लेकिन वह निष्क्रिय रहे, क्योकि अभी विद्रोहके बारेमे क्रातिके नेता अनिश्चित-से मालूम होते थे। अन्तिम क्षणमे क्रातिका अधिनायक सेर्गेइ त्रूबेत्स्की मैदानमे नही आया और विद्रोही बिना नेताके रह गये, जिसके कारण उनका सगठित बल खतम हो गया। निकोलाइ I कायर तो था ही, पहले वह हिचकिचाता रहा, लेकिन जब उसको विद्रोहियोकी अवस्थाका पता लगा, तो अपने विश्वास-पात्र सैनिको और तोपचियोको बारह बजे मैदानमे भेजा। तमाशा देखनेके लिये कितने ही मजदूर, कारीगर और नगरके गरीब मैदानमे जमा हो गये थे। उस समय रूसका सबसे बडा गिर्जा ईसाइकी मबोर बन रहा था। मजदूरोमे भी इतना जोश आ गया था, कि उन्होने जारके सैनिकोको अपने पास पडे लकडीके कुदो और डडोसे मारा। लेकिन मालूम हो गया, विद्रोही आक्रमण करनेके लिये तैयार नही है। किसी भी विद्रोहमे आक्रमणकी नीति सबसे लाभदायक होती है, क्योकि उसमे थोडेसे भी आदमी बहुसख्यक शत्रुको घबराहटमे डाल सकते है। जारके हुक्मपर सवारोने आक्रमण किया। विद्रोही सैनिकोने गोलियोकी वर्षा करके उन्हे भगा दिया। गोलियोके अतिरिक्त समझा-बुझाकर भी शात करनेकी कोशिश की गई। आखिर किसी भी निरकुश शासनकी आधारशिला सैनिक अफसर है। जब उनमे विद्रोहकी भावना पैदा हो गई, तो भविष्यके लिये क्या विश्वास किया जा सकता है? ईसाई सघराजने समझानेकी कोशिश की, लेकिन विद्रोही सैनिक उसकी बातको माननेके लिये तैयार नही थे। फिर पीतरबुर्गके महाराज्यपाल मिलोरदोजिचने जाकर समझानेका प्रयत्न किया, जिसमे उसे विद्रोही अफसर कखोस्कीने मरणासन्न घायल कर दिया। जारको आता देख उसके ऊपर भी सैनिकोने बन्दूक दागी। जार बहुत घबरा गया और उसको डर लगा, कि देर करनेमें शायद नगरके गरीब भी इस झगडेमे शामिल होकर लूट-मार करने लगे, इसलिये उसने तोप छोडनेकी आज्ञा दी। सीनेट मैदान, नेवा नदीके बाध और सडकोमे चारो ओर लाशे बिछ गई। नेवा बर्फ बनी हुई थी। रातके वक्त बर्फमे छेद करके बहुतसे हत और आहत लोगोको उसके भीतर डालकर समुद्रकी ओर बहा दिया गया। विद्रोही नेताओको पकड लिया गया।

इस प्रकार पीतरबुर्गमे दिसम्बर की क्रातिको दबा दिया गया। उक्रइनमे चेर्निगोफकी रेजिमेटने भी १० जनवरी १८२६ ई० (पुराने पचागके अनुसार २९ दिसम्बर १८२५ ई०) को विद्रोह किया, लेकिन उसे भी दबा दिया गया। पेस्तेल्को किसी विश्वासघातीने पकडा दिया था। सेर्गेइ मुराव्योफ-अपोस्तोलने वहा विद्रोहका नेतृत्व किया, लेकिन चेर्निगोफने भी आक्रमण न करनेकी गलती की, जिससे वह जारशाहीको बहुत नुकसान नही पहुचा सके। "सयुक्त स्लाव सम्मिलनी" के कुछ दृढ सदस्य चाहते थे, कि एक विद्रोही रेजिमेट भेजकर कियेफ पर अधिकार कर लिया जाय। इसमे सुभीता भी था, क्योकि कियेफमे छावनीकी पलटनमे विद्रोहमे सहानुभूति रखनेवाले काफी आदमी थे, लेकिन यहा भी नेताओने ढिलमिल्यकीनीका प्रमाण दिया। निकोलाइ I ने विद्रोहको दबाकर विद्रोहियोके प्रति क्रूरतापूर्वक बदला लेनेका काम शुरू किया।

२५ (१३) जुलाई १८२६ ई०मे पांच विद्रोही नेताओं—पेस्तेल, कवि रिलेयेफ, काखोवस्की, मुराव्योफ-अपोस्तोल और वेस्तुजेफ-र्यूमिनको फांसी दे दी गई। फांसी देते वक्त रिलेयेफ, कखोवस्की और मुराव्योफ-अपोस्तोलके गलेकी रस्सी टूट गई, जिसपर उन्हे दुबारा फासी दी गई। बहुतसे विद्रोहियोंको कडी-कडी सजाये दी गईं, और कितनोको साइबेरियामे आजीवन कालापानीका दंड देकर भेज दिया गया। सिपाहियोंको कितनी यातनायें दी गईं, इसका उदाहरण अनोइचेंको था, जिसे अदालतने बारह हजार बेंत लगानेकी सजा दी और बेंत खाते-खाते वह मर गया।

दिसम्बरका विद्रोह उच्चवर्ग—अमीरों—का विद्रोह था, उसमे साधारण जनताको शामिल करनेकी कोशिश नहीं की गई, और न ऐसा कोई तरीका इख्तियार किया गया, जिससे जनसाधारण उस ओर खिंचना। भारतमे १८५७ ई०के विद्रोहमें भी कुछ ऐसाही हुआ था। इसीलिये विद्रोहके दबने देर नही हुई। लेनिनने उसके बारेमें लिखा था—"क्रातिकारियोंका घेरा बहुत छोटा था। जनसाधारणसे उनका कोई सबब नही था। लेकिन उनका काम व्यर्थ नही गया। दिसम्बरियोंकी असफलतासे पीछे रूसके क्रातिकारियोंने शिक्षा ली। उसने प्रगतिशील मस्तिष्कोंमे गर्मी पैदा की, जिसने हर क्षेत्रमें क्रातिके लिये जगह तैयार की।"

निकोलाइ I को राजकाज संभालते ही जिस तरहके खतरेका मुकाबिला करना पडा। वह दिलोदिमागसे कमजोर आदमी था। इसके कारण उसको हर जगह प्राणोंका भय मालूम होने लगा। उसने पुलिस-राज्य कायम करते हुये "तृतीय भाग" के नामसे एक राजनीतिक गुप्त पुलिसका संगठन किया। जैसे ही किसी सैनिक या असैनिक अफसर अथवा सरकारी नौकरपर संदेह होता, उसे नौकरीसे निकाल बाहर किया जाता। उसे शिक्षण-संस्थाओंसे भी भय था, क्योंकि सभी विद्रोही नेता नवशिक्षित थे। इसीलिये शिक्षण-संस्थाओंपर भी पुलिसकी निगाह रहने लगी।

पूंजीवादी विकास—चाहे इंगलैंड और फ्राससे पीछे ही क्यों न हो, किन्तु पूंजीवादी उत्पादनके साधनों—कल-कारखानों—के विस्तारको किये बिना रूस सैनिक तौरसे कैसे सबल रह सकता था? पूंजीवादी नफेको देखकर कितने ही रूसी इस तरफ झुके। इनमे काफी संख्या उनकी थी, जिन्होंने छोटे-छोटे व्यापारों या दस्तकारियों द्वारा पैसा जमा किया था। पूंजी कम रहनेके कारण अपने कारखानेको बढाने और पूंजी जमा करनेके लिये काम भी वह मजूरोंके भीषण शोषण द्वारा करना चाहते थे। निकोल्स्कया फैक्ट्रीका स्वामी मोरोजोफ पहिले अर्धदास किसान था, जिसने १८२० ई० में जमींदारको क्षति-पूर्ति देकर मुक्ति प्राप्त की थी। फिर वह पशुपाल (चरवाहा), बादमें कोचमैन (कोचवान), फिर मिलमजदूर और दर्जीका काम करता रहा। बादमे उसने दूकान खोली और अन्तमें अपनी फैक्ट्री स्थापित की। १९ वी शताब्दीके और भी कितने ही रूसी पूंजीपतियोंका यही इतिहास था। १९ वी शताब्दी के पूर्वार्धमें पूंजीवादी ढगके धातु-उद्योगका आरम्भ हुआ। यद्यपि उसकी प्रगति मंद रही। उक्रइनमें भी लोह-चून मिली, और वहा भी लोहा बनानेका काम शुरू हुआ था, पर मुख्य लौहकेंद्र एसिया सीमापर उराल रहा, जहापर मजदूर बहुत सस्ते मिलते थे। १८३० ई०के बाद साइबेरियाकी सोनेकी खानोंमे—पहले पूर्वी साइबेरिया, येनिसेइ-उपत्यका और फिर प्रसिद्ध लेनाके सुवर्ण-क्षेत्रमे—काम शुरू हुआ। १८१५ ई०में रूसकी ४१८९ फैक्ट्रियों और मिलोंमें १७३ हजार मजदूर काम कर रहे थे, जब कि १८५८ ई०में क्रमश उनकी संख्या १२२५९ और ५५९ हजार हो गई। १८८० ई०के बाद ही वाष्पचालित मशीनोंका उपयोग होने लगा, जिन्हें रूसी उद्योगपति इंगलैंड और दूसरे देशोंसे मगाते थे। १८३५ ई० में इस कामके लिये जितनी मशीने मगाई गई थीं, पचीस साल बाद १८६० ई०में वह उनसे पच्चीस गुना अधिक मगाई जाने लगीं। अभी तक किसानोंकी अर्धदासता बंद करनेका प्रयत्न आदर्शवादी भावुकतासे प्रेरित होकर किया जाता था, लेकिन अब अर्धदासताका सबसे बडा शत्रु औद्योगिक पूंजीवाद आ गया था, जिसको गैरजिम्मेवार अर्धदास मजूरों की नही, बल्कि मजूरीके लिये अपनेको बेचनेवाले कुशल कारीगरोंकी जरूरत थी। इसलिये अर्धदासताके विरुद्ध कानून पास करनेसे बहुत पहले ही अर्धदास किसान कारखानोंमें भाग-भागकर मजदूर बनते जा रहे थे।

यातायातका सुभीता पूंजीवादके लिये सबसे आवश्यक चीज है, क्योंकि तभी माल एक जगहसे दूसरी जगह सस्तेमें भेजा जा सकता है। अंग्रेज नहीं, बल्कि एक रूसीने सबसे पहले रेल-इंजन बनाया

था, लेकिन सामन्तशाही रूसमे उसकी कदर नही हुई। इगलैंडने पहले उससे फायदा उठाया। उसने १८२५ ई० मे अपनी पहली रेल बनाई, जिसके बीस वर्ष बाद कलकत्तासे पश्चिमकी ओर रेलकी पटरिया ही नही बिछी, बल्कि १८४५ ई० मे भारतमें रेलोके कामके लिये ईस्ट इडिया रेलवे कम्पनीकी स्थापना की गई, और १५ अगस्त १८५४ ई० में हवडा और हुगलीके बीच रेलका यातायात शुरू हो गया। रूसमें पीतरबुर्ग और जार्स्कोयेसेलो (आधुनिक पुश्किन) के बीच पहली रेलवे लाइन १८३७ ई० मे बनी, जिसके लिये सारा सामान इगलैंड से आया था। सबसे पहली महत्त्वपूर्ण रेलवे लाइन पीतरबुर्ग और मास्कोकी थी, जो नौ वर्षमे बनकर १८५१ ई० मे यात्राके लिये खोल दी गई। तब भी रूसमे रेलोंके प्रसारकी गति बहुत मद ही रही। १८५५ ई० में रूसी रेले फ्रासकी रेलवे लाइनो का पचमाश और जर्मन रेलोका षष्ठाश ही थी। अब भापके इजन और भापसे चलनेवाले जहाजो के महत्त्वको उपेक्षित नही किया जा सकता था, इसलिये रूसमे वाष्पचालित जहाजो के बनानेके कारखाने भी स्थापित हुये। सैनिक हथियार और शक्ति तो लोहेके ऊपर निर्भर करती है, इसलिये उसके उत्पादनकी तरफ जारशाहीका ध्यान जाना जरूरी था। १८ वी शताब्दीके अन्तमे रूस और इगलैंड दोनों ही अस्सी लाख पूद (१ पूद=३६ पौड=१८ सेर) लोहा पैदा करते थे, लेकिन १९वी सदीके पूर्वार्धमें जब कि रूसने अपनी लोहेकी उपजको दुगुना ही कर पाया था, इगलैंडमे १८५९ ई०में कच्चे लोहेकी उपज तीस गुना (२३४० लाख पूद) हो गई थी।

निकोलाइ I के शासनकालमे विद्रोहोकी कमी नही रही। पोलोने रूसी शासनके विरुद्ध १८३०-३१ ई०में विद्रोह किया था। वहासे विद्रोहकी लहर बेलोरूसिया, उक्रइन और लिथुवानियामे फैली। उक्रइनमें इस विद्रोहने किसानोके विद्रोहका रूप लिया। १८२६-३४ ई०में १४५ विद्रोह हुये थे, जब कि १८४५-५४ ई०मे उनकी सख्या ३४८ हो गई। जारशाही अत्याचारोके मारे कभी-कभी सारे किसान अपने गावको छोडकर भाग जाते थे।

ईरान (१८२६-२८ ई०) और तुर्की-युद्ध (१८२७-२९ ई०)—रूसके खिलाफ ईरान और तुर्कीको उकसाना इगलैड और फ्रासकी नीति हो गई थी, और उधर जारशाही भी अपने राज्य-विस्तारके लिये इन देशो की ओर हाथ बढा रही थी, इसलिये युद्ध होना स्वाभाविक ही था। १८२६ ई० की गर्मियोमें रूसके काकेशसमें बढावको देखकर ईराननने लडाई शुरू कर दी। ईरानी सेनाने आजुर्बाइजानको लेकर दागिस्तान और चेचनपर धावा किया, लेकिन १८२७ ई० के बसतमे रूसी सेनाने ईरानियोको हरा दिया। १८२८ ई० के जाडोंतक ईरानको नखचेवान और येरिवानके इलाकोसे भी हाथ धोकर सधि करनी पडी। इसी समय रूस पश्चिमी काकेशसके लिये तुर्कीसे भी लड रहा था। निकोलाइ I तो कान्स्तन्तिनोपल और दरेदानियलपर भी अपना झडा गाडना चाहता था। यद्यपि रूसके आक्रमणोका वह फल नही हुआ, जो कि निकोलाइ चाहता था, तब भी १८२९ ई०की सधिके अनुसार कालासागरके सारे काकेशस-तटको रूसने ले लिया, और केवल बातू अब तुर्कीके पास रह गया।

शामिलका विद्रोह—काकेशसमे यद्यपि ईरान और तुर्कीको रूसियोने दबा दिया, लेकिन वहाके वीर पहाडियोंने आसानीसे जारके शासनको नही स्वीकार किया। इमाम काजी मुल्लाने १८३२ ई०मे ईसाइयोके खिलाफ मुरीदवादके नामसे मशहूर एक सम्प्रदाय स्थापित किया। आरम्भमें यह एक धार्मिक सम्प्रदाय था, जिसने काफिरोके शासनके स्थापित होनेपर राजनीतिक रूप ले लिया। काजी मुल्लाने स्वय अपने अनुयायियोको लेकर रूसी सेनापर जहा-तहा आक्रमण किया। उसके मरनेपर उसका चेला शामिल नेता हुआ, जिसने १८३४ से १८५९ ई०के पच्चीस वर्षोमे काकेशसमें जारशाही अफसरोको नाको चने चबवाये। शामिल बडा ही बहादुर और चतुर नेता था। उसने मुरीदोका सगठन बहुत मजबूत किया। काकेशसकी दुर्गम पहाडियोसे लाभ उठाकर वह रूसियोके ऊपर आक्रमण करता रहा। पाच वर्षके सघर्षके बाद अगस्त १८३९ ई० में दागिस्तानके अपने केद्रको छोडकर उसने चेचनके दुर्गम पहाडियोका आश्रय लिया। काकेशसके बेग और खान पहले ही जारशाही-के गुलाम बन चुके थे, इसलिये शामिलने उनके खिलाफ भी लडाई जारी रखते साधारण पहाडियोको अपनी ओर खीचा। १८५९ ई० मे दागिस्तानके गूनिब किलेमे शामिलने अन्तिम बार रूसियोका मुका-

विला किया। २५ अगस्त १८५९ ई०को रूसी सेनापतिने खबर भेजी—"गूनिव हाथमें आ गया, शामिल वदी कर लिया गया।" शामिलको पकडकर पीतरवुर्ग भेज दिया गया, जहासे उसे ले जाकर कलुगामें वसा दिया गया। पीछे वह हजके लिये मदीना जा वही मरा। काकेशसके मुस्लिम-प्रधान इलाकोमे जारशाहीको चैनसे शासन करनेका मौका नही मिल सकता था, इसलिये एक ओर जहा जारशाही अत्याचारके कारण वाशिदे अपना गाव और देश छोडकर भागते जाते थे, या उन्हे खास-खास जगहो से हटाया जाता था, तो दूसरी ओर रूसी किसानो और कसाकोको ले जाकर उत्तरी काकेशसमें वसाया जाता था।

मध्य-एसियाकी रियासतें—आगे हम वतलायेंगे, कि कैसे १८ वी शताव्दीके अन्तमें पश्चिमी मध्य-एसियामे खीवा, वुखारा और खोकन्दकी तीन रियासतें कायम हो गईं। इन्ही तीनो रियासतोकी भूमिपर आगे चलकर उज्वेक, ताजिक, किर्गिज और तुर्कमान गणराज्य वने। तुर्कमानोकी भूमिको नादिरशाहके समयमें ही ईरानके अधीन माना जाता था। तुर्कमान घुमन्तू समय-समयपर वुखारा, अफगानिस्तान और ईरानके भीतर भी जाकर लूट-मार किया करते थे। ये तीनो रियासते भी आपसमे लडती रहती थी। १९ वी शताव्दीके आरम्भमे खोकन्दका खान ज्यादा शक्तिशाली हो गया था, जव कि उसने ताशकन्द जैसे एक वडे ही महत्त्वपूर्ण व्यापारिक और सैनिक केंद्रको अपने हाथमें कर लिया। ताशकन्दको ले लेनेके वाद कजाको और किर्गिजोकी वहुतसी भूमिको भी खोकन्दने ले लिया। खोकन्दियोने इस भूमिमें जहा वहुतसे सैनिक महत्त्वके किले वनवाये, वहा लोगोको पक्का मुसलमान वना अपनी ओर खीचनेके लिये भिन्न-भिन्न जगहोपर कितने ही मदरसे भी स्थापित किये। अकमेचेत (श्वेत-मस्जिद), औलियाअता विशेषकर इसी समय महत्त्वपूर्ण नगर वने। १९ वी सदीके दूसरे पादमे पहुचते-पहुचते खोकन्द मध्य-एसियाका सवसे वडा राज्य हो गया। वह पश्चिमी चीन और पामीरसे निम्न सिर-दरिया तक फैला हुआ था।

खीवाने भी खोकन्दकी तरह कजाको, तुर्कमानो और कराकल्पकोकी भूमिपर अधिकार करके १९ वी सदीके आरम्भमें अपनी सीमाका काफी विस्तार कर लिया था। खोकन्द और खीवाके वीचमे वुखाराका खान था, जिसके हाथमें पहले तुर्किस्तान (निम्न और मध्य सिर-उपत्यका) था, लेकिन खोकन्दने उसे छीन लिया। वुखाराके नीचे रहनेवाले तुर्कमानोमेंसे कितनोको खीवाने ले लिया था। इस प्रकार वुखारा उतना शक्तिशाली नही था, तो भी शताव्दियोसे वुखारा इस्लामिक सस्कृतिका केंद्र चला आया था, और वहाकी दस्तकारी और शिल्पकी वडी धाक थी, जिसके द्वारा उसे व्यापारमे काफी नफा रहता था। इन रियासतोके खान (राजा) और वडे अमीर अधिकतर उज्वेक थे, उनके वाद मुल्लाओ और खोजो (सतो) का प्रभाव ज्यादा था।

कजाकोके वारेमें लिखते हुये हम वतला चुके है, कि १९वी सदीके पूर्वार्धमें उनके लघु, मध्य और महा-ओर्दूके नामसे तीन ओर्दू थे। १८वी सदीके पूर्वार्धमें ही लघु और मध्य-ओर्दूने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी, और १८२० ई० के आसपास रूसी प्रवासी भी इनकी भूमिमे जगह-जगह वसने लगे थे। १८३५-३७ ई०में ओरेनवुर्गके महाराज्यपाल व० अ० पेरोव्स्कीने ओर्स्क और त्रोयत्स्कके वीचमें किलोकी पक्ति वना करके जगल और चरागाहकी दस हजार वर्ग किलोमीतर वडी अच्छी भूमि कजाकोंसे छीन ली, जिसके वाद कजाकोने विद्रोह किया, इसे हम पहले वतला चुके है।

१८४५ ई० में दश्तेकजाकके गर्भमे जारशाहीने नई किलावदिया तैयार की। कजाक लोग सुल्तान केनेसरी कासिमोफके नेतृत्वमे रूसी वस्तियोपर आक्रमण करते आगे-पीछे हटते जा रहे थे। कासिमोफका पीछा करते रूसी सेना इली नदीकी ओर वढी। अव रूसियोको उनका रास्ता अल्ताई और त्यान्-शानमें चीनी सीमाके पास ले जा रहा था। सवसे पहले रूसियोका ध्यान खीवाकी ओर गया। यह मालूम ही है, कि खीवा (ख्वारेज्म) वहुत पुराने समयसे रूसके व्यापारकी एक मुख्य शृखला थी। खीवामें भी १९ वी सदीके पूर्वार्धमें वडी अव्यवस्था थी, जिससे रूसियोको आगे वढनेका वहाना और सुभीता मिल गया। महाराज्यपाल पेरोव्स्कीने एक छोटीसी सेनाको लेकर १८३९ ई०की शरद्में ओरेनवुर्गसे खीवाके विरुद्ध अभियान किया। इस सेनामें कसाक, वाशकिर और कितने ही कजाक सवार भी थे। पद्रह हजार ऊटोपर सेनाके लिये रसद चल रही थी। पहला

अभियान सफल नही हुआ। वर्फानी तूफान और सख्त सर्दीने बहुतसे घोडो और ऊटोको मार डाला, जिसपर पेरोव्स्कीको पीछे हटना पडा। इस असफलताके बाद पेरोव्स्कीने अपने इरादेको छोडा नही, बल्कि दश्तेकिर्गिजकी तरफसे बढनेका निश्चय किया। भूमिके बारेमें पता लगाया, पानीके लिये कुये तैयार किये, जगह-जगह किले बनाये। इस तरह रास्तेको सुरक्षित करनेकी कोशिश की। सिर-दरियाके ऊपर अराल्स्काका किला बनाकर वहा (अराल समुद्रके तटपर) रूसी किसानोकी बस्तिया बसा दी गई। यही नहीं, बल्कि वाष्पचालित अग्निबोट भी अराल समुद्र और सिर-दरियाके भीतर चलने लगे। इस तरह ओरेनबुर्ग और अराल समुद्रके बीचके रास्तेको यातायातके लिये सुरक्षित कर दिया गया। इतनी तैयारीके बाद १८५३ ई०के वसतमें पेरोव्स्की एक वडी सेनाके साथ सिर-दरियाके द्वारा ऊपरकी ओर बढा, और खोकन्दकी राज्यसीमाके भीतर जाकर उसने अकमेचित किलेको घेर लिया। रूसियोके सामने खोकन्दी कितने दिनो तक ठहरते ? अकमेचित पेरोव्स्कीके हाथमे आई। उसने सिर-दरियाके ऊपर पाच नये किले बनवाये। रूसियोने पिशपेक, तोकमक आदि कितने ह. नगरोको ले लिया। ये किले किर्गिजिस्तानकी चूइस्क-उपत्यकोमे थी, जिनके शासक यद्यपि खोकन्दी थे, लेकिन निवासी किर्गिज थे। इसी समय किर्गिजोको पश्चिमके नये स्वामियोसे वास्ता पडा। तो भी वह १८७० ई०से पहले पूरी तौरसे रूसियोके अधीन नही हो पाये थे। उधर साइबेयिाकी तरफ बढते हुये १८५४ ई०में रूसी वेर्नोयेके किलेको बनानेमे सफल हुये, जहापर पीछे वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) नगर की स्थापना हुई।

इतना कर लेनेके बाद १८५४ ई०में अब फिर पेरोव्स्की खीवाके खिलाफ चला। खानको सधि के सिवा और कोई रास्ता नही दिखलाई पडा, और उसने रूसियोके पास अपना दूत भेजकर 'जारकी अधीनता स्वीकार कर खीवामे व्यापार करनेकी रियायतें प्रदान की। निकोलाइ I के शासनके अन्तिम वर्षोंतक कजाक और किर्गिजके दश्त (स्तेपी) पूर्णतया रूसियोके हाथमे हो गये, और सिर-दरियासे लेकर अल्ताइके उत्तरमे सेमीप्लातिन्स्क तक जगह-जगह रूसी किले बना दिये गये। खीवाका खान अब रूसके अधीन था तथा खोकन्द और बुखाराके खान अब खीवाका अनुसरण करनेके लिये प्रतीक्षा कर रहे थे।

निकोलाइ I के शासनकाल ही मे फर्वरी १८४८ ई०में पेरिसमे क्राति हुई। यद्यपि यह प्रथम क्राति जितनी सबल नही थी, लेकिन इसने जारके दिमागमे खलबली जरूर पैदा कर दी। निकोलाइ उस समय नाचमें था, जब कि उसे इसकी खबर मिली। वह गुस्सेमे पागल होकर अपने दरबारियोसे बोल उठा—"भद्र पुरुषो, अपने-अपने घोडोको कस लो, पेरिसमे क्राति हो गई है।" पेरिसकी इस क्रातिके समय ही बीना-आस्ट्रियामें भी क्राति हो गई। दूसरी जगहोपर भी उसका प्रभाव पड रहा था। निकोलाइने इतालीके राष्ट्रीय स्वतत्रता-आन्दोलनको दबानेके लिये साठ लाख रूबल दिये। लेकिन निकोलाइको क्या पता था, कि उसी समय एक ऐसी सबल ज्वाला तैयार की जा रही है, जिसका शिकार सबसे पहले रूस और उसका पोता निकोलाइ II होनेवाला है ? पेरिसकी इसी क्रातिके समय मार्क्स अपने क्रातिकारी कार्यक्षेत्रमे प्रविष्ट हो चुके थे। उन्होने उस सिद्धान्त और उस सैनिक कौशलका भी पता लगा लिया था, जिसके द्वारा विश्वमे सहस्राब्दियोसे चला आता मुट्ठीभर धनियोका राज्य खतम होकर उनकी जगह सर्वहारोके नेतृत्वमे बहुजनका शासन स्थापित होनेवाला था। कार्ल मार्क्सने पेरिसकी इस द्वितीय क्रातिके एक साल पहले १८४७ ई० मे प्रथम कम्युनिस्ट पार्टीको कम्युनिस्ट लीगके नाम से सगठित किया था। उसीके लिये मार्क्स और उनके साथी एगल्सने "कम्युनिस्ट पार्टीकी घोषणा" तैयार करके १८४८ ई० मे प्रकाशित की थी। निकोलाइको दुनियाके सबसे अधिक शक्तिशाली क्रातिके हथियार इस "घोषणाके" बारेका पता नही था। वह नही समझता था, कि उसके दरबारी घोडोको कितना ही कसे, वह घोषणाके पथको रोक नही सकेंगे। पेरिसकी द्वितीय क्रातिके बाद लायोस कोसुतके नेतृत्वमें मगयार (हुगरी) की जनताने आस्ट्रियाके सामन्ती शासनके विरुद्ध विद्रोह किया। निकोलाइने एक लाख चालीस हजार सेना लेकर अपने सेनापति पस्केविचको उसे दबानेके लिये भेजा, और १८४९ ई०मे विद्रोही मगयारोकी तेईस हजार सेनाने आत्म-समर्पण किया। रूस अब सिद्ध कर रहा था, कि प्रुशिया हो या आस्ट्रिया, फ्रास हो या इताली, सभी जगह क्रातिको दबानेका सबसे जबर्दस्त

साधन निरकुश जारशाही है, इसीलिये तो नही क्रातिने सबसे पहले रूसके जारको ही खतम किया ?

निकोलाइको अपने शासनके अन्तिम कालमें क्रिमियाका युद्ध (१८५३-५६ ई०) देखना पडा। इस युद्धके लिये भी फ्रान्स और इगलैंडने तुर्की सुल्तानको उकसाया था, लेकिन उसके आरम्भ करनेका मौका निकोलाइने दिया। फिलस्तीन उस समय तुर्कोंके हाथमे था, जिसके कारण ईसाइयोके येरोशिलम आदि तीर्थस्थान भी सुल्तानके अधीन थे। १८५३ ई०मे एक विशेष दूतमडल कान्स्तन्तिनोपल भेजकर निकोलाइने सुल्तानसे माग की, कि फिलस्तीनके बेतलहेमके मदिरकी कुजी रखनेका अधिकार रूसी चर्चको दिया जाय, लेकिन फ्रास और तुर्कोंके बीच जो सधि हुई थी, उसके अनुसार यह अधिकार कैथलिक चर्चको मिला था। सुल्तान जानता था, कि इस बातमें फ्रास और इगलैंड हमारे समर्थक होगे, इसलिये उसने रूसकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। दोनो देशोका दौत्य सबध तोड दिया गया, और जून १८५३ ई०में अस्सी हजार रूसी सेना तुर्कोंकी ओर अभियान करते मोल्दाविया और वलाचियामें दाखिल हुई। समझौतेकी कोशिश की गई, लेकिन उसमें सफलता नही हुई। तुर्की सेनाने कालासागरके पूर्वी और पश्चिमी तटोपरसे होकर आक्रमण शुरू किया। सबसे पहला जबर्दस्त सघर्ष कालासागरके दक्षिणी किनारेपर अवस्थित सीनोपमें हुआ। नवम्बर १८५३ ई०में रूसी नौसेनापति नखिमोफने एकाएक वहा आक्रमण करके तुर्कोंके जगी बेडेको नष्ट कर दिया। अब इगलैंड-फ्रास और अधिक पर्देकी आडमें शिकार नही कर सकते थे, इसलिये वह सीधे मैदानमे कूद पडे। प्रुशिया और आस्ट्रियाने भी गाढेके समय रूसका पक्ष छोड दिया। रूसको इगलैंड और फ्रासके मजबूत जगी बेडेका मुकाबिला करना था, जो उसकी अपेक्षा कही अधिक सबल था। १ अप्रैल १८५४ ई० को फ्रास और इगलैडके जगी बेडेने अदेस्सा नगरपर बम वर्षा की। यही नही, उन्होने उससे बहुत दूर उत्तर श्वेत-सागरके किनारेके रूसी नगर सोलोवेत्स्कपर जहा गोलाबारी की, वहा प्रशान्त महासागरके कामचत्का प्रायद्वीपमें पेत्रोपावलोव्स्क नगरको भी तोपोका निशाना बनाया। सबसे अधिक सघर्ष हुआ। कालासागरमे। सितम्बर १८५४ ई०के आरम्भमें अग्रेज और फ्रेंच नौसैनिक सेवस्तापोलको पीछेसे लेनेके लिये समुद्र-तटपर उतरे। सेवस्तापोलने बडा जबर्दस्त मुकाबिला किया। यद्यपि अन्तमे जीत उन्हीको हुई, लेकिन एक अग्रेज कमाडरने इस विजयके बारेमे कहा था—"यदि इस तरहकी एक और विजय प्राप्त हुई, तो इगलैंडके पास कोई सेना नही रह जायेगी।" सेवस्तापोलने ग्यारह महीनेतक बडा जबर्दस्त प्रतिरोध किया था। इसी समय फर्वरी १८५५ ई०में निकोलाइ I मर गया। सेवस्तापोलके प्रतिरोधमें भाग लेनेवाले रूसी अफसरोमे महान् साहित्यकार लेव ताल्स्ताेइ (ताल्स्ताय) भी था, जिसने "सेवस्तापोलकी कथायें" को लिखकर इस समयकी रूसियोंकी वीरताका बडा सुदर चित्र खीचा है। इसी समय दाशा सेवस्तापोल्स्कयाने दुनियामें पहिली बार युद्धके घायलोंमें नर्सका काम किया था। अग्रेज इसका श्रेय फ्लोरेन्स नाइटिंगलको देते हैं। इसी प्रतिरोधमें अदमिरल नखीमोफ मारा गया। ३४९ दिन तक भारी मुकाबिला करनेके बाद सेवस्तापोलकी सभी चीजोको नष्ट करने तथा अपने सभी पोतोको डुबाते रूसियोने सिर्फ खडहरोको शत्रुओंके हाथमें जाने दिया।

निकोलाइके मरनेके बाद १८५६ ई०मे पेरिसमें सधि हुई। अग्रेज और फ्रेंच विजयी हुये थे, लेकिन वहाके शासक भली प्रकार जानते थे, कि हमारे विरुद्ध होनेवाली जबर्दस्त क्रातियोंमे जार ही हमारा सबसे बडा सहायक होता आया है, इसलिये वह कब पसद करते, कि जारशाही रूसको अधिक निर्बल कर दिया जाय? तो भी रूसको कालासागरमे अपने जगी बेडे या तट-भूमिपर किले रखनेके अधिकारसे वचित कर दिया गया। तुर्की साम्राज्यकी रक्षाकी जिम्मेवारी ले ली गई, और रूस और तुर्कोंकी पुरानी सीमायें कायम रक्खी गईं। सर्बिया, मोल्दाविया और वलाचियाको युरोपियन शक्तियोंके सरक्षणमे दे दिया गया। दर्दानियल और कालासागरमें सभीको व्यापार करनेका समानाधिकार मिला। क्रिमियाके युद्धमें असफल होकर रूसने युरोपकी राजनीतिमें कायम की हुई अपनी प्रधानताको खो दिया, और अब उसका स्थान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमे वह नही रह गया, जो कि १८१५ ई०से १८५३ ई० तक था।

साइबेरिया में प्रसार—साइबेरियामे रूसी शक्तिके प्रधान प्रसारक और सस्थापक येर्मक और खबारोफके बारेमें हम पहले कह चुके है। मुराव्येफ तीसरा और अन्तिम पुरुष था, जिसने साइबे-

रियामे जारशाहीकी शक्तिको बढाने और मजबूत करनेमे काम किया। ६ सितम्बर १८४७ ई० को जार निकोलाइ तुलाकी ओर गया हुआ था, जहा उसने तरुण मुरावेफको साइबेरियाका राज्यपाल नियुक्त किया। इसके बादके कितने ही वर्षोका साइबेरियाका इतिहास मुरावेफके कामोका लेखा है। इस समय रूसी नौसेना-मत्रालय अखोत्स्क समुद्रके दक्षिणी छोरपर तुगरकी खाडीमें एक नया बदरगाह बनाना चाहता था। मुरावेफने उसे ठीक नही समझा और उसने सुझाव रक्खा, कि ऐसे बन्दरकी स्थापनाके लिये नेवेल्स्कीके नेतृत्वमे अमूरकी खोज-पडताल की जानी चाहिये। १८४९ ई० में इसपर विचार करनेके लिये जारने एक समिति नियुक्त की, लेकिन इससे पहले ही छ हथियारबद नौसेनिक, एक तोपके साथ एक नावपर आमूरकी जाच-पडतालके लिये चल पडे थे, जिन्होने आमूरके मुहानेसे २५ वर्स्त (४ फर्सख) पर जारके नामसे निकोलायेव्स्क नामका एक बन्दरगाह स्थापित किया, और ६ अगस्त १८४९ ई०को पडोसके गिलियक लोगोके सामने रूसी झडा गाडकर एक पौडवाली तोपका गोला दागा। नेवेल्स्कीने जल्दी-जल्दी स्वय पहुचकर इस बातकी सूचना मुरावेफको दी। मुरावेफने तुरत इसकी खबर राजधानीमें भेजी। जब इस कामके लिये नियुक्त समितिके सामने यह बात आई, तो उसने बिना आज्ञाके ऐसा करनेका बहुत विरोध किया, और नेवेल्स्कीको कठोर दड देनेपर जोर देते तुरत वहासे हट आनेकी सिफारिश की, लेकिन मुरावेफने इसका विरोध किया। जब यह बात जारके पास निर्णयके लिये पहुची, तो उसने समितिकी बात माननेसे इन्कार कर दिया, और कहा—"जब एक बार रूसी झडा गाड दिया गया, तो फिर उसे नीचे नही उतारा जा सकता।" युद्ध-मत्रालय पसद नही करता था, कि सुदूर-पूर्व साइबेरियामें बडी सेना रक्खी जाय। इस समस्याका हल मुरावेफने आसानीसे कर दिया। उसने नेर्चिन्स्कके रूसी किसानोको कसाक सैनिकोके रूपमे परिणत कर दिया, और इस प्रकार पूर्वी साइबेरियाके लिये एक सुसगठित सेना मिल गई। यदि साइबेरियामे जगह-जगह रूसियोकी बस्तिया कायम न हुई होती, तो मुरावेफको यह सुभीता न मिलता।

नेवेल्स्कीको दड क्यो मिलने लगा? वह फिर सुदूर-पूर्वमे अपना काम करने लगा। १८५२ ई० में प्रशान्त महासागरके भीतर सखालिन द्वीपकी उसने जाच-पडताल की, और सखालिनके देकास्त्री और किजी नामके द्वीपोको अपनी जिम्मेवारीपर दखल कर लिया। ये दोनो द्वीप तारतारी खाडीके लिये बडे सैनिक महत्त्वके थे। नेवेल्स्कीने पोयारकोफ या खबारोफकी नीतिको छोडकर देशवासियोको अपने अच्छे बर्तावसे जीतनेकी कोशिश की, जिसमे उसे बहुत सफलता मिली।

२२ अप्रैल १८५३ ई०को एक सम्मेलन हुआ, जिसमें मुरावेफने प्रस्ताव किया, कि आमूरके बारेमे चीनसे फैसला कर डालना चाहिये। अभी यह बात विचाराधीन ही थी, और इसमे मुरावेफके विरोधी कितने ही प्रभावशाली व्यक्ति थे, लेकिन इसी बीचमे रूस और तुर्कीके बीच १८५३ ई०में क्रिमियाका युद्ध छिड गया, जिससे सरकारका सारा ध्यान उधर हो गया, और मुरावेफको पूर्वमें खुल खेलनेका मौका मिल गया। तुर्कीके साथके युद्धमें युरोपमें रूसको बडी बुरी तरहसे हारना पडा, लेकिन इसी समय प्रशान्त महासागरके तटपर उसे भारी विजय प्राप्त हुई। इस सफलताकी खबर सुनकर निकोलाइ इतना प्रसन्न हुआ, कि ११ जून १८५४ ई०को उसने आदेश दिया, कि सुदूर-पूर्वके सीमातके सवालोके बारेमे मुरावेफ सीधे पेकिङ्ग सरकारसे बातचीत कर इन्हे हल करे। इस अधिकारको प्राप्त करके मुरावेफने अब फिर सुदूर-पूर्वमें अपने कामको नये जोशसे आरम्भ किया, जिसका ही परिणाम था, आमूरका प्रथम प्रसिद्ध अभियान। नावोके बेडेको लेकर आगे बढनेसे पहले मुरावेफने पेकिङ्ग-को इस बातकी सूचना दे दी थी, और उसने कारण बतलाते हुये कहा था, कि युरोपके युद्धके कारण प्रशान्त महासागरकी अपनी अधिकृत-भूमिकी रक्षाके लिये हमें ऐसा करना आवश्यक पड रहा है। १४ मई १८५४ ई० को मुरावेफ आठ सौ सैनिकोकी एक बटालियन, कुछ कसाक सैनिक, एक पहाडी तोपखाना, पचहत्तर नावोके बेडेके साथ नौसैनिक जहाज "अरगून" के साथ रवाना हुआ। अट्ठाइसवें दिन मुरावेफ चीनियोके दुर्गबद्ध नगर ऐगुनमे पहुचा। यहा उसने स्थानीय चीनी अधिकारियोसे यह पता लगानेके लिये अपने आदमी भेजे कि उनके पास पेकिङ्गसे कोई हुक्म आया है, या नही। वहा कोई हुक्म नही आया था, और न स्थानीय चीनी अधिकारीके पास इतनी शक्ति थी, कि मुरावेफको रोकता। मुरावेफ बिना किसी विरोधके आमूर नदीमे आगे बढता प्रशान्त महासागरमे पहुचा, फिर काम्स्चत्काके

पेत्रोपावलोव्स्कमें पहुचकर फ्रेंच और अग्रेजी नौसनासे सुरक्षित रखनेके लिये उसकी किलाबदी शुरू की। मुरावेफको इसमें सफलता हुई, और शत्रुओंको असफल लौट जाना पडा।

सास्कृतिक और साहित्यिक प्रगति—निकोलाइ जैसे अयोग्य और अल्पपठित अल्प-सस्कृत शासकके समय रूसको वडी-वडी प्रतिभाओंके पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी समय हेर्जन (१८१२-७० ई०), बेलिन्स्की (१८११-४८ ई०) जैसे विचारक, लोबाचेव्स्की (१७९३-१८५६ ई०) जैसे विज्ञानवेत्ता और रिलेयेफ, पुस्किन, ग्रिबोयदेफ, लेर्मन्तोफ (१८१४-४१), वेनेवितिनोफ, कोल्तसोफ, वेलिन्स्की, वरातिन्स्की जैसे प्रतिभाशाली कवि और साहित्यकार पैदा हुये, जिन्होंने उस पृष्ठभूमिको तैयार किया, जिसने रूसको बौद्धिक क्षेत्रमें महान् बनाया। यदि निकोलाइ क्रातिको फूटी आखो भी नही देखना चाहता था, तो उससे क्या, रूसकी इन प्रतिभाओंने क्रातिके मार्गको साफ करनेका काम शुरू किया। जहा रूसी शिक्षामत्री उवारोफ (१८३३-४९ ई०) इस बातका दावा कर रहा था, कि रूसी लोग स्वाभाविक तौरसे धार्मिक है, वह सदासे जारके भक्त रहते आये है और किसानोंकी अर्धदासताको वह बिल्कुल प्राकृतिक मानते है, वहा अलेक्सान्द्र इवान-पुत्र हेर्जन दूसरे ही विचारोंका प्रचार कर रहा था।

हेर्जन (१८१२–७० ई०)—हेर्जनने दिसम्बरी वीरोंकी कुर्बानीका प्रभाव अपने ऊपर स्वीकार करते हुये लिखा था—"पेस्तेल और उसके सहयोगियोंकी हत्याने अन्तमें अपनी बचपनकी नीदसे मेरी आत्माको जगा दिया।" हेर्जन १८१२ ई०में एक धनी रूसी जमीदारके घर पैदा हुआ था। उसके बापने एक जर्मन स्त्रीसे शादी की थी, लेकिन शादी वैधानिक नही हुई थी, इसलिये हेर्जनको बापका कुल-नाम कोवलेफ नहीं प्राप्त हुआ और उसे एक साधारण-सा नाम हेर्जन (हेर्ज, जर्मनमे हृदय) मिला। हेर्जन मस्तिष्कके साथ वडा ही सहृदय पुरुष था। हेर्जनके पिताके पास फ्रेंच और जर्मन पुस्तकोंका बहुत अच्छा सग्रह था। उसने अपने फ्रेंच अध्यापकसे फ्रेंच क्राति और गणराज्यके प्रति सम्मान करना सीखा। रिलेयेफकी कविता "ध्यान" से वह उसी वक्त प्रभावित हुआ था। वही रिलेयेफ जब फासीपर लटका दिया गया, तो हेर्जनके ऊपर उसकी सदाके लिये अमिट छाप पड गई। हेर्जन अपने क्रातिकारी विचारोंको लेकर ज्यादा दिनोंतक निकोलाइके राज्यमे नहीं रह सकता था। १८४७ ई०में वह देशसे बाहर गया, और क्रातिकारी फ्रास और इतालीको अपनी आखो देखा। १८४८ ई०की क्रातिके समय हेर्जन पेरिसमें था। पश्चिमी युरोपमे क्रातिकी असफलताको देखकर हेर्जन निराश हुआ, और उसे आशा बधी, कि शायद रूसी किसान क्रातिको सफल बनायें। इस प्रकार उसने किसानोंके समाजवादका स्वप्न देखना शुरू किया। हेर्जन कार्ल मार्क्सका समकालीन था। मार्क्सकी तरह ही उसे भी अपनी जन्मभूमिसे भागकर मारा-मारा फिरना पडा, और अन्तमे उन्हींकी तरह उसने लदनमे अपना डेरा डाला। १८५३ ई० मे उसने वहा "स्वतत्र रूसी प्रेस" की स्थापना की, जिससे अपनी क्रातिकारी पत्रिका "पोल्यार्नया ज्वेज्दा' (ध्रुवतारा) का प्रकाशन शुरू किया। इस पत्रिकाके मुख्य मुखपृष्ठपर दिसम्बरी शहीदोंकी तस्वीर रहती थी। १८५७ ई०से १८६७ ई०तक हेर्जनने "कोलोकोल" (कलकल) के नामसे एक और भी प्रसिद्ध पत्रिका प्रकाशित की। हेर्जनके विचारोंने रूसी तरुणोंकी समकालीन पीढीपर बहुत प्रभाव डाला, और उसी प्रभावमे आकर बोल्शेविकोंसे पहलेके क्रातिकारियोंने किसानोंमे क्रातिका सदेश पहुचानेके लिये भगीरथ प्रयत्न किये।

व ग वेलिन्स्की (१८११–४८ ई०)—वेलिन्स्की हेर्जनका समकालीन था। वह साहित्य-समालोचकके तौरपर लोगोंमें नया भाव पैदा करनेमें सफल हुआ। उसकी आलोचनाओंने रूसी साहित्यमें यथार्थवादकी स्थापना की। उस समय जारशाही सेंसरके कारण कोई भी स्वतत्रतापूर्वक कुछ लिख नहीं सकता था। वेलिन्स्कीने अपने मित्र प्रसिद्ध लेखक गोगलको लिखा था—"रूसकी मुक्ति उपदेश या प्रार्थनासे नही हो सकती, बल्कि वह अर्धदासताके उच्छेद तथा लोगोंमें मानवसम्मानके प्रति जागृति और सद्भाव स्थापित करनेसे हो सकती है। वेलिन्स्की अपनी लेखनीसे क्रातिका प्रसार कर रहा था, लेकिन उसके रास्तेमें सभी जगह रुकावटें थी। उसने अपनी इस विवशताको दिखलाते हुये लिखा था—"प्रकृतिने मुझे कुत्तेकी तरह भूकने, सियारकी तरह हुआ-हुआ करनेके लिये मजबूर किया है। कभी-कभी परिस्थितिया बिल्लीकी तरह म्याउ-म्याउ करने और लोमडीकी तरह पूछ हिलानेके

लिये भी मजबूर करती हैं।" लेकिन वह भविष्यके लिये बडा आशावादी था। उसने मरनेसे थोडा ही पहले लिखा था—"मुझे अपने उन पौत्रों और प्रपौत्रोंपर ईर्ष्या होती है, जो कि १९४० ई०में रूसको शिक्षित दुनियाका मुखिया बनते, विज्ञान और कलाके सिद्धांतोंको स्थापित करते, और ज्ञानवान् मानव-जातिसे सम्मानकी भेंट पाते देखेंगे।" वेलिन्स्कीका भविष्य-कथन सच निकला, इसमे क्या सदेह है? जारकी सरकार उसे जेलमें बद करने ही जा रही थी, कि ३७ वर्ष की अवस्थामे १८४८ ई०मे विसारियोन ग्रेगोरी-पुत्र वेलिन्स्की क्षयेदिकके हाथो मारा गया।

वैज्ञानिक—वासिली व्लादिमिर-पुत्र पेत्रोफ (१७६२-१८३४ ई०) प्रसिद्ध रूसी भौतिक शास्त्री था, जिसने दुनियामें सबसे पहले (१८०२-३ ई०मे) आधुनिक विद्युत्-रसायनके आधारभूत एलेक्ट्रोलीसिसका आविष्कार किया। उसने डेवीसे कितने ही वर्ष पहले वोल्ताइक आर्क (प्रदीप) का आविष्कार किया। १८३२ ई०मे पीतरबुर्गमे दुनियाका सबसे पहला तार शीलिंगने स्थापित करके सचार-मत्रालय और हेमन्त-प्रासादके बीचमें सदेश भेजकर दिखलाया, लेकिन सामन्तशाही रूसने इन आविष्कारोको आगे बढनेका मौका नही दिया। १८३८ ई०मे याकोवी (१८०१-७४ ई०)ने बिजली बनानेका पहला इजन तैयार किया, और उसकी बिजलीकी नावने नेवाके ऊपर यात्रियोको ढोया। यह आविष्कार इगलैंडमे आधी शताब्दी बादमे हुआ, और दुनियाने याकोवीको भूलकर अग्रेजको इसका आविष्कारक माना। आविष्कार और खोजके क्षेत्रमें रूसी प्रतिभायें इस प्रकार अपने चमत्कारको दिखानेके लिये तैयार थीं, लेकिन वहा अभी उनको सहारा देनेवाले नही थे।

साहित्यकार—निकोलाइके कालमें रूसी साहित्य-गगनमे बडे-बडे नक्षत्र उदित हुये, लेकिन उनमेंसे अधिकाश अकालमें ही कालकवलित हुये, जैसे—

रिलेयेफ (कवि)—जारने १८२६ ई०मे फासी दिलवा दी।
पुश्किन (कवि)—१८३७ ई० में ३८ वर्षकी आयुमे द्वद्व-युद्धमे मारा गया।
ग्रिबोयेदोफ (कवि)—तेहरानमे हत्यारेके हाथो मारा गया।
लेर्मन्तोफ (कवि)—द्वद्व-युद्धमे २७ वर्षकी उम्रमे १८४१ ई० मे मारा गया।
वेनेवितिनोफ (कवि)—२२ वर्षकी उम्रमें मारा गया।
कोल्त्सोफ (कवि)—३३ वर्षकी उम्रमे अपने परिवार द्वारा मारा गया।
वेलिन्स्की—३५ वर्षकी उम्रमे १८४८ ई०मे भूख और गरीबीकी बलि चढा।

अलेक्सान्द्र पुश्किन (१७९९-१८३७ ई०)—पुश्किन रूसी साहित्यका कालिदास है। वह "प्रतिभाशाली रूसका सबसे बडा कवि और विश्व-साहित्यका प्रतिभाशाली साहित्यकार रूसी यथार्थ-वादका सस्थापक, रूसी साहित्यिक भाषाका निर्माता, रूसी जनताका गर्व और कीर्ति" कहा जाता है। यद्यपि वह उच्चकुलमे पैदा हुआ था, किन्तु गोर्कीके अनुसार "उसके लिये कुलीन वर्गके हितसे ऊपर सारे राष्ट्रका हित था, और उसका व्यक्तिगत अनुभव कुलीनोके अनुभवसे (कही) विस्तृत और गम्भीर था।" पुश्किन (अलेक्सान्द्र सरगेइ-पुत्र) १७९९ ई०में मास्कोमे एक सामन्तवर्गमें पैदा हुआ था, जिसकी आर्थिक अवस्था उतनी अच्छी नही थी। कुलीन वर्गके लिये स्थापित जार्स्कोयसेलोके विशेष स्कूलमें वह भरती हुआ और १८१५ ई०मे जब कि वह अभी सोलह वर्ष ही का था, उसने परतन्त्रता और दासताके प्रति अपनी घृणा प्रकट की थी। १८१७ ई०मे अठारह वर्षकी अवस्थामें उसने स्कूलकी पढाई समाप्त की। जिस वर्गमें पैदा हुआ था, उसके अत्याचारोंसे वह कितना क्षुब्ध था, यह उसकी निम्न पक्तियोंसे मालूम होगा—

ओ दुष्कर्मी, स्वेच्छाचारी, सुन मेरी घृणाको
जो कि तेरे, राजदड और तेरे सिंहासनके प्रति है।
तेरे बच्चोकी मौत, तेरे अपने काले भाग्यको देख
मैं पत्थर जैसे कडे हृदयकी तरह हर्षित होता हू।

अपने उग्र विचारोंके लिये रूसी साहित्यके कालिदासको पहले दक्षिण (काकेशश) मे निर्वासित किया गया, फिर किशिनेफ और अदेस्सामे निर्वासित करके रखा गया। अदेस्सासे उसे अपने पिताकी जमीदारी मिखाइलोव्स्कयो गावमे भेज दिया गया और उसके बापको पुत्रपर निगाह रखनेके लिये हुक्म

दिया गया। यहींपर पुश्किनने अपना महान् काव्य 'यूगेनी-ओनेगिन" लिखा, और "बोरिस गदुनोफ" दुखान्त नाटकको भी यहीं उसने रचा। कई सालोंतक जारने "बोरिस गदुनोफ" को निषिद्ध कर दिया था। पुश्किन दिसम्ब्री क्रांतिकारियोंके साथ बड़ी सहानुभूति रखता था। दिसम्ब्रियोंको फांसीपर चढ़ानेके थोड़े ही समय बाद जार निकोलाइ Iने पुश्किनको बुलाकर पूछा—"यदि तुम १४ दिसम्बरको पीतरबुर्गमें होते, तो क्या करते ?" पुश्किनने साफ जवाब दिया—"मैं भी विद्रोहियोंमें शामिल हुआ होता।" इसके बादमें जारने पुश्किनकी रचनाओंके सेंसर करनेका भार अपने ऊपर लिया। जहांतक रूसी जाति का सबब था, पुश्किन निराशावादी नहीं था, लेकिन अपने लिये उसे प्राणोंका जरा भी मोह नहीं था। उसके ऊपर अत्याचार करनेवालोंमें जार निकोलाइ I वैसे बहुत अल्प-पठित था, लेकिन तब भी शायद वह महान् कविकी अमरताको जानता था, और इसीलिये वह उसके खूनसे अपने हाथको रंगना नहीं चाहता था, लेकिन और तरहसे उसने और उसके दरबारियोंने पुश्किनके जीवनको दूभर कर दिया था। पुश्किन अड़तीस वर्षका था, जब कि अपमान करनेका बदला लेनेके लिये उसने एक सरकारी अफसरको द्वंद्वयुद्धके लिये ललकारा और घायल होकर १८३७ ई०में मरा। पुश्किनकी प्रतिभा सर्वतोमुखीन थी। उसके काव्य और नाटक उतने ही सम्मान और दिलचस्पीके साथ पढ़े जाते हैं, जैसे कालिदासके। उसके नाटक आज भी रंगमंचपर बहुत जनप्रिय हैं। उसने कहानियां और लघुउपन्यास भी लिखे हैं, जिनमें भाषा और भावोंकी प्रौढ़ता, व्यंग, रसाप्लावन अद्वितीय है। उसके समयमें अभी फ्रांसीसी भाषा और साहित्यको रूसी लोग उसी दास-मनोवृत्तिसे अपनाये हुये थे, जैसे हमारे देशके नौकरशाह लोग। "कप्तानकी कन्या" में पुश्किनने उनकी खूब खबर ली है। वह अपनी रूसी जातिका परम भक्त था, लेकिन उस जातिको अपना जौहर पूरी तौरसे दिखानेमें जो बाधायें थीं, उनको साफ-साफ कहनेमें बाज नहीं आता था। साथ ही वह वर्ण और देशके भेदोंको माननेवाला नहीं था। भारतसे गये सिगानों (रोमनियों) पर उसकी मधुर कविता इसका प्रमाण है।

मिखाइल, यूरी-पुत्र लेर्मन्तोफ (१८१४–४१ ई०) पुश्किनका तरुण समकालीन और महान कवि था, जिसने भी द्वंद्व-युद्धमें सत्ताइस वर्षकी उमरमें अपने जीवनको समाप्त किया। अपनी प्रभावशाली कविता "एक कविकी मृत्यु" में पुश्किनकी प्रशंसा और उसके हत्या करनेवाले वर्गकी घृणाको बड़े कठोर शब्दोंमें प्रकट करनेके लिये उसे काकेशसमें निर्वासित कर दिया गया। पुश्किनके बाद रूसी कवियोंमें लेर्मन्तोफका दर्जा है। निकोलाइ I ने उसकी मृत्युकी खबर सुन बहुत खुश होकर कहा—"कुत्ता, कुत्तेकी मौत मरा।"

निकोलाइके समयका दूसरा महान् अमर साहित्यकार निकोलाइ वासिली-पुत्र गोगल (१८०९-५२ ई०) है। उसके उपन्यास "इन्सपेक्टर-जेनरल", "मृत आत्मायें" आदि विश्व-साहित्यके रत्न माने जाते हैं। "मृत आत्मायें" को पढ़कर हेर्जनके अनुसार सारा रूस कांप उठा। गोगल महान् कलाकार है। उसकी जैसी सशक्त लेखनी बहुत कम देखनेमें आती है। यह महान् साहित्यकार भी तेतालीस वर्षकी उमरमें मर गया।

इस समयके महान् कलाकारोंमें क० फ० ब्रूलोफ, अ० अ० इवानोफ अद्वितीय हैं। इवानोफने अपनी महान् कलाकृति "ईसाका लोगोंमें प्रकट होना" को अपने जीवनके तीस वर्ष लगाकर बनाया। यथार्थवादके साथ आदर्शवाद या अध्यात्मवादका कितना सुन्दर सम्मिश्रण हो सकता है, इसका यह सुन्दर नमूना है। इस चित्रको बनानेके लिये इवानोफने कई साल ईसाकी जन्मभूमि फिलस्तीनमें बिताये।

अभी तक रूसका संगीत लम्बी नाकवालों और गंदे ग्रामीणोंकी कलाके रूपमें विभक्त था। उच्च वर्गके लोग पश्चिमी संगीतको संगीत मानते थे, और समझते थे, कि रूसकी भूमिने संगीतके लिये कोई देन नहीं छोड़ी है। इसी समय प्रतिभाशाली संगीतकार (उस्ताद) म० ई० ग्लिन्का (१८०९–५७ ई०) पैदा हुआ, जिसने पश्चिमी संगीतका पारंगत आचार्य होते भी रूसी जनसंगीतको अपनाया, और घोषित किया, कि हमारी राष्ट्रीय संगीत-कला किसीसे कम नहीं है। ग्लिन्का पहिले ही से प्रसिद्ध संगीतकार हो चुका था, इसलिये उसे तुच्छ नहीं कहा जा सकता था, लेकिन उसकी कलाको तुच्छ करनेके लिये सम्भ्रान्त वर्गने कोई कसर नहीं उठा रक्खी। उसे "गाड़ीवानोंके गीत" का रचनेवाला कहते थे।

ग्लिन्काने इसकी पर्वाह नही की। "इवान सुसानिन" जैसे देशके लिये मरनेवाले वीरको चुनकर उसने अपने ओपेरा (पद्यनाटक) को रचा, जिसने जल्दी ही लोगोको अपनी तरफ खीच लिया। जिस तरह काव्य और साहित्यका पिता पुश्किन माना जाता है, वही स्थान सगीत और रगमचमे ग्लिन्काका है। मास्कोका वल्शोइ तियात्र (महानाट्यशाला) यद्यपि १७८० ई०मे स्थापित हुआ था, जब उसे पेत्रोफका तियात्र कहते थे। १८०५ ई०मे नाट्यशाला आगसे नष्ट हो गई, और बीस साल बाद (१८२५ ई०) मे उसे फिरसे बनाया गया। इसके बाद फिर एक बार आगसे नष्ट होनेपर १८५३ ई० मे उसका पुनर्निर्माण हुआ, जब कि "इवान सुसानिन"के निर्माता ग्लिन्काके मरनेमे चार सालकी देर थी। १८२४ ई० हीमे मास्कोमे "माली तियात्र" (लघु नाट्यशाला) की स्थापना हुई, और बडी जल्दी ही उसकी ख्याति चारो ओर फैल गई। पुश्किन, लेर्मन्तोफ, गोगल, इवानोफ और ग्लिन्का जैसी प्रतिभाओंको पैदा करनेवाला १९ वी सदीका पूर्वार्ध रूसकी कला और साहित्यका सुवर्ण-युग था, इसमें सदेह नही।

१६. अलेक्सान्द्र I, निकोलाइ I-पुत्र (१८५५–८१ ई०)

अलेक्सान्द्र जब अभी युवराज ही था, तभी उसने किसानोंकी अर्धदासताको कायम रखकर अमीरोके हितको अक्षुण्ण करनेकी प्रतिज्ञा की थी, लेकिन अब रूस १९वी सदीके मध्यको पार कर चुका था। औद्योगिक पूजीवाद बडे जोरसे अपने प्रभावको बढा रहा था, इसलिये सामन्तवादका अक्षुण्ण रहना सम्भव नही था। उसे मजबूर होकर किसानोकी अर्धदासताको खतम करते १८५६ ई० मे कहना पडा—"भूमिके स्वामित्वकी वर्तमान प्रथा बिना बदले नही रह सकती। यह बेहतर है, कि किसानी अर्धदासताको नीचेसे अपने आप खतम होने देनेकी जगह ऊपर (सरकारी ओर) से खतम कर दिया जाय।" अलेक्सान्द्रने यद्यपि "१९ फर्वरीके (१८६१ ई०) कानून" द्वारा अर्धदासता प्रथाको खतम किया, लेकिन जमीदारोके हितोका पूरी तौरसे ध्यान रखते। किसानोको पीढियोंसे अपने जोते खेतोके लिये भारी रकम देनी पडी। किसानोको जो जमीन मिली थी, उसका मूल्य पैंसठ करोड रूबल होता था, लेकिन उसके लिये उनसे नब्बे करोड दिलानेका निश्चय किया गया। यह रकम सरकारने देना स्वीकार किया, जिसे वह उन्चास सालकी किस्तोमे किसानोसे ले लेनेवाली थी। १९०५ ई०तक इस मदमें किसानोसे दो अरब रूबल लिये गये। १९ फर्वरी १८६१ ई०के भूमिसुधारके कानूनने बहुत महगे ढगसे एक करोड किसानोको जमीदारोकी दासतासे मुक्त किया। किसानी अर्धदासताका खतम करना रूसमे पूजीवादी व्यवस्थाके विजयकी घोषणा थी। लेकिन यह सुधार रूसके अधीन दूसरी जातिवाले प्रदेशोमें नही स्वीकार किया गया। कल्मकोके प्रदेशमें पुरानी अर्धदासता प्रथा १८९२ ई० तक रही, और मध्य-एसियामे तो वह बोल्शेविक-क्रातिसे पहले खतम ही नही हुई।

इतनी बडी रकमको क्षतिपूर्तिमे चुपचाप किसान कैसे दे सकते थे? इसके लिये किसानोका सघर्ष होना ही था। किसानोके पक्षको लेकर इसी समय एक खास आन्दोलन शुरू हो गया। चेर्नीशेव्स्कीने "सब्रेमेन्निक" (समकालीन)के नामसे एक पत्रिका निकाली, जो किसानोके पक्षका बहुत जोरदार ढगसे समर्थन करती थी। रूसी सिपाही किसानोमेंसे ही आते थे, इसीलिये चेर्नीशेव्स्कीके मित्र और सहकारी न० व० शेलगुनोफने "सिपाहियोंको" नामसे एक घोषणा लिखी थी। घोषणा छप नही पाई थी, कि उससे पहिले ही वह तृतीय विभाग (खुफिया विभाग) के हाथमे पड गई। लेकिन रूसी जनताको आगे बढनेसे रोका नही जा सका। १८६२ ई०के वसतमे "तरुण रूस"के नामसे एक घोषणा मारकोके क्राति-कारी विद्यार्थी जाइच्नेव्स्कीने प्रकाशित कर हथियार लेकर उठ खडे हो शासक-वर्गको नष्ट करनेका आह्वान किया। चेर्नीशेव्स्की इस कालके जन-आन्दोलनका सबसे बडा नेता था। उसकी कलममें अद्भुत ताकत थी। जारशाहीने उसे पकडकर दो साल तक पीतरबुर्गके पीतर-पावल-दुर्गमे बद रक्खा, फिर चौदह वर्षके लिये साइबेरिया-निर्वासन (कालापानी) का दड देनेसे पहले १९ मई १८६४ ई० को सार्व-जनिक तौरपर उसे नागरिक मृत्युका दड दिया। फासी देनेवालोने उसे पीतरबुर्गके मित्निन्स्काया चौरस्ते पर ले जाकर फासीवाले आदमीकी तरह उसे घुटने टिकवाया, और उसकी गर्दनपर एक तलवार रक्खी। जिस समय फासीकी टिकटीपर इस रसमको अदा करनेके बाद उसे ले जाया जा रहा था, उसी समय भीडमेंसे एक लड़कीने उस पर कुछ फूल फेंके, जिसके लिये उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

चेर्नीशेव्स्कीको नेचिन्स्कके जेलखानेमें रक्खा गया, जहा उसके दंडकालको आधा कर दिया गया, लेकिन कैदकी अवधि पूरा होनेके साथ ही अलेक्सान्द्र II ने उसे फिर सुदूर साइबेरियाके कस्बे विल्युइन्स्कमें बन्दी कर दिया। १८८३ ई०में वहासे लाकर उसे अस्त्राखानमें रखा गया, और गिरफ्तारीके सत्ताइस वर्ष बाद १८८९ ई०मे उसे अपने जन्मनगर सरातोफमें रहनेकी इजाजत मिली। अब वह साठ वर्षका हो चुका था। जेलमे उनका स्वास्थ्य बिल्कुल खराब हो गया था। अक्तूबर १८८९ ई०में सरातोफमें उसने अपने प्राण छोडे। चेर्नीशेव्स्कीकी तपस्या व्यर्थ गई, इसे कौन कह सकता है? आज उसका सम्मान रूसके घर-घरमें है, और सारे सोवियत सघके स्कूली विद्यार्थी पढते है—"न० ग० चेर्नीशेव्स्की महान् रूसी देशभक्त था, जिसने अपने सारे जीवनको अपने देश और जनताके लिये कुर्बान किया।" अभी चेर्नीशेव्स्की जब तरुण ही था, तभी उसने लिखा था—"अपने देशके अनन्त, और सनातन यशके लिये तथा मानवताकी भलाईके लिये काम करनेमे बढकर और कौन-सी बडी और सुन्दर बात हो सकती है?"

चेर्नीशेव्स्की महान् जनतंत्रतावादी और महान् विद्वान् ही नहीं था, बल्कि वैज्ञानिक ज्ञानका वह अदम्य प्रचारक था। उसके अर्थशास्त्र सबधी ग्रथोंके बारेमें मार्क्स और एगेल्सने लिखा था—"वह वस्तुत रूसके लिये सम्मानकी चीज है।"

तुर्की-युद्ध (१८७७-७८ ई०)—क्रिमियाके युद्धमें हारकर रूसने युरोपमें अपने प्रभावको खो दिया था, इसे हम बतला चुके है, लेकिन रूसने अपने प्रभावको विशेषकर कालासागर और भूमध्य-सागर तटपर बढानेकी कोशिश बराबर जारी रखी। अब रूसके हाथमें एक और हथियार आ गया था—बल्कानके लोग पिछली चार शताब्दियोंमें तुर्की-सुल्तानके स्वेच्छाचारी शासनके नीचे कराह रहे थे। उनमें जातीय स्वतत्रता की लहर फैली हुई थी, और वह नही चाहते थे, कि एसियाई मुस्लिम सुल्तान उनको जैसी युरोपीय जातियोंको अपना दास बनाकर रखे। इगलैड और फ्रास रूसके विरुद्ध तुर्कीकी पीठ ठोकना अपने हितके लिये आवश्यक समझते थे, इसलिये बल्कानकी जातियोंमें नवजागरणमें वह कैसे सहायक हो सकते थे? सयोगसे बल्कानकी यह अधिकाश जातिया रूसियोंकी भाति स्लाव थी, इसलिए वह अपने स्लाव-भाइयोंकी ओर आशाभरी दृष्टिसे देखती थीं। रूस भी उनका समर्थन कर रहा था। १८७५ ई० में बोसनिया और हेर्जेगोविना (आधुनिक युगोस्लाविया) मे लोगोंने सुल्तानके खिलाफ आन्दोलन शुरु कर दिया। अगले साल बुल्गारियोने विद्रोह कर दिया। तुर्कोने बडी कठोरता-पूर्वक विद्रोहका दमन किया, कही-कही तो उसने गावके गाव निर्जन बना दिये। तुर्की अपनी पुरानी सधिके कारण समझता था, कि रूस लडाईके मैदानमें नही कूदेगा, लेकिन रूसने सर्बिया (बोसनिया), हेर्जेगोविनाके निवासियो और मोन्तेनिग्रोको तुर्कीके विरुद्ध युद्ध घोषित करनेके समय १८६७ ई०के ग्रीष्ममें सहायता देना शुरू किया। रूसमें सब जगह तुर्कीके खिलाफ आन्दोलन ही नही किया जाने लगा, बल्कि एक रूसी जेनरल चेर्न्यायेफ सर्बियन सेनाका सचालन करने लगा। रूसकी सहायता होनेपर भी अक्तूबर १८७६ ई०में सर्बियन सेनाकी हार हुई। मोन्तेनिग्रोके लोगोंने तब भी अपने सघर्षको अकेले जारी रक्खा। अग्रेजोकी शहके कारण तुर्कीके सुल्तानने स्लाव विद्रोहियोंके साथ किसी तरहका समझौता करनेमे इन्कार कर दिया। आस्ट्रियाने तटस्थताकी नीतिको स्वीकार किया था। अन्तमें १८७७ ई०के वसतमें रूसने तुर्कीके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की। रूस अब भी क्रिमियाके युद्धके समयके हथियारो और सैनिक विज्ञानसे लड रहा था, जब कि जर्मन कल-कारखानोंसे नये तरहके हथियार तुर्की-को मिल रहे थे। तो भी अपनी बहादुरीके कारण १८७७ ई० के ग्रीष्ममें रूसी सेना दन्यूब पार करनेमें सफल हुई। मुकाबिला कठिन था, लेकिन जब रूसी सेनाका कान्स्तन्तिनोपलमे पहुचना निश्चितसा मालूम होने लगा, तो अग्रेज अपने नौसैनिक वेडेको मारमोरा समुद्रमें लाकर युद्ध घोषित करनेकी धमकी देने लगे। आस्ट्रिया और जर्मनीने भी रूसके खिलाफ रुख लिया। बल्कानमें युद्ध जारी रखते हुये रूसी सेनाने काकेशसमें भी तुर्कोंके खिलाफ लडाई जारी की थी, जहापर तुर्कोंको बुरी तरहसे हराकर रूसियोंने अर्दहान और कर्सके किलोंको ले लिया। अन्तमे फर्वरी १८७८ ई०में सानस्तेफानो (कान्स्तन्तिनोपलके नजदीक) की सधिके अनुसार लडाई बद हुई, और दन्यूबका मुहाना रूसको मिला, बल्कानमें बुल्गारियाकी एक रियासत कायम की गई, तुर्कोंको सर्बिया, मोन्तेनिग्रो और रुमानिया:

की स्वतन्त्रता स्वीकार करनेके लिये मजबूर होना पडा। काकेशसमे अर्दहान, कर्स, वायजिद और वातूम के नगर रूसको मिले, साथ ही तुर्कीने एकतीस करोड रूवल रूसको क्षतिपूर्ति देना स्वीकार किया। इस प्रकार रूसने अपने खोये हुये प्रभावको फिर सान्स्तेफानो-सधिके अनुसार प्राप्त किया। आस्ट्रिया और इगलैड इस सधिको पसद नहीं करते थे, इसलिये १८७१ ई०मे वर्लिन-काग्रेसमे उन्होने रूसकी जीती हुई जगहोमेंसे कितनोको छोडनेके लिये मजबूर किया। बुलगारियाके दक्षिणी भागको तुर्कीके हाथमे लौटा देना पडा, और उत्तरी भागको भी सुल्तानके अधीन एक रियासतका रूप दिया गया।

राजनीतिक आन्दोलन—चेर्नीशेव्स्कीके किसान-आदोलनके बारेमे पहले वतलाया जा चुका है। रूसमें मार्क्सवादके आनेसे पहले जिस राजनीतिक आन्दोलनने गरीव जनताके भीतर काम किया था, वह नरोद्निक (जनवादी) आन्दोलन था, जो कि इसी समय शुरू हुआ था। यह दल किसान और मजदूर दोनोमें काम करता था, लेकिन वह मजदूरोको उतना महत्त्व नही देता था। उसकी सबसे कमजोर बात यह थी, कि वह मार्क्सवादका विरोधी था। हमारे यहाके कितने ही वामपक्षियोकी तरह नरोद्निक जोर देकर कहते थे, कि (१) रूसके लिये पूजीवाद एक आकस्मिक घटना है, इसका यहा विकास नही होगा, इसलिये सर्वहारा यहा न वढ सकते न विकसित हो सकते है। (२) नरोद्निक मजूर-वर्गको क्रातिका सवसे अग्रणी वर्ग नही मानते थे। वह विश्वास करते थे, कि विना सर्वहाराकी सहायतासे ही समाजवाद स्थापित हो सकता है। वह मानते थे, कि वुद्धिजीवियोके नेतृत्वमें किसान ही क्रातिकारी शक्ति है, और किसानोका पचायती जीवन ही समाजवादका अकुर तथा नीव होगा। नरोद्निक नहीं मानते थे कि किसानोकी विखरी शक्ति सेना और पुलिस द्वारा सुरक्षित और मजवूत शासन-यन्त्रको नही उखाड़ फेक सकती। नरोद्निक तरुण-तरुणी वडी कुर्वानीके साथ गावमे किसान वनकर रहते अपने विचारोका प्रचार करते थे। उन्होने वहुत कोशिश की, कि किसानोको भडकाकर जमीदारोके खिलाफ खडा किया जाय, लेकिन वह उसमे सफल नही हुये। १८७४ ई० मे वहुतसे नरोद्निक किसानोमें पहुचे थे, लेकिन १८७६ ई० तक वह भारी सख्यामे पकड लिये गये, और वचे हुओने "जेम्ला-इ-वोल्या" (भूमि और स्वतन्त्रता) के नामसे एक गुप्त सगठन किया। इसके सस्थापक ग० व० प्लेखानोफ और उसके साथी थे। मार्क्सवादके विरुद्ध "जेम्ला-इ-वोल्या" सगठनने आगे चलकर वकुनिन (१८१४–७६ ई०) के अराजकतावादको अपनाया, जिसकी माग थी—सव तरहकी सरकारको तुरत वद कर दो। नरोद्निकोने वैयक्तिक हत्यापर भी वहुत जोर दिया, और रूसी जनतापर जुल्मके पहाड ढानेवाले जारको उन्होने अपना लक्ष्य वनाया। लेकिन यह काम नरोद्निकोके असफल होनेपर "नरोद्नया वोल्या" (जनता सकल्प) पार्टीने किया। वस्तुत जारके खूनी अत्याचारोने अव क्रातिकारियोके दिलमे भय नही रहने दिया था। "नरोद्नया वोल्या" ने जार अलेक्सान्द्र II की हत्याके लिये कई वार प्रत्यन किये। फर्वरी १८८० ई०मे हेमन्त प्रासादमे स्तेपान खलतुरिन नामक एक मजदूर-क्रातिकारीने वम रक्खा, लेकिन उससे जारको कोई चोट नही पहुची, और अव वह ज्यादा सावधान रहने लगा। हेमन्त प्रासादको भी खतरेका स्थान समझकर वह वहा अधिक नहीं रहता था। अन्तमे १ मार्च १८८१ ई०को "नरोद्-नया वोल्या"के सदस्योने अलक्सान्द्र II की हत्या करनेमें सफलता पाई, और इसी हत्यामे शामिल होनेके सदेहपर लेनिनके भाईको भी फासीपर चढना पडा।

मध्य-एसियामें प्रसार—निकोलाइ I के समयमे किस तरह अराल समुद्रसे अल्ताई तकके प्रदेशको रूस साम्राज्यमें मिला लिया गया, इसे हम वतला चुके है। खीवाके खानने जारको अपना प्रभु मान लिया था, लेकिन खोकन्द और वुखारा अभी जारशाही जूयेके नीचे नही आये थे। १८६५ ई०में जेनरल चेर्न्यायेफने खोकन्दके खानको हराया, और १८६५ ई०मे ताशकन्द जैसे मध्य-एसियाके आर्थिक केंद्रको अपने हाथमें ले लिया। इसके वाद महाराज्यपाल काफमानने १८६८ ई०मे वुखाराके विरुद्ध अभियान किया, और जारकी सेनाने अमीरको हराकर समरकन्दको ले लिया। इस पराजयके वाद अमीर वुखारा अव जारका एक सामन्त भर रह गया। १८७३ ई०के वसतमे रूसी सेनाको फिर खीवाके खानके विरुद्ध जाना पडा, लेकिन खानने विना लडाईके ही जारके अधीन होना स्वीकार कर लिया। अमीरो और खानोके ऐशोआराममे जारशाही उसी तरह कोई दखल नहीं देना चाहती थी, जैसे भारतके राजा और नवावोके मौज-मेलेमे अग्रेज वाधा नही डालते थे। लेकिन वहाकी जनता चुपचाप रूसियोके

शासन और शोपणको वर्दाश्त करनेके लिये तैयार नही थी—रूसी मध्य-एसियाको कच्चे मालकी खान मानते थे। १८७५-७६ ई०मे खोकन्दके मुल्लोने रूसके विरुद्ध जहाद घोपित की, जिसे क्रूरतापूर्वक दवा देनेमे रूसियोको देर नही लगी, और साथ ही उन्होने खोकन्दके खानको खतम करके फर्गानाके नामसे उसे रूसका एक प्रदेश वना दिया। अलेक्सान्द्र II के शासनके अन्तिम कालमें तुर्कमानोपर भी रूसने अपना हाथ फैलाना शुरू किया। १८८० ई०में जेनरल स्कोवेलेफने तेक्के तुर्कमानोको अपने अधीन किया, और अगले साल उसने ग्योकतेपेपर अधिकार करके अस्कावादको ले लिया। १८८४ ई० में अलेक्सान्द्र III के शासनकालमे मेर्वको भी लेकर सारे तुर्कमानोमे रूसियोका शासन स्थापित हो गया, और १८८५ ई०मे अफगानिस्तानके किले कुश्कको लेकर रूसने मध्य-एसियाके अपने सीमातको पूरा कर दिया। इस विजयके वाद अव मध्य-एसियामें रूसी डाक्टर, शिक्षक, विज्ञानवेत्ता और वडी सख्यामें मजदूर भी जाने लगे, जिनका प्रभाव मध्य-एसियाके लोगोपर पडने लगा।

साइवेरिया और चीन—आमूर-उपत्यकामें किस तरह मुरावेफने रूसी सीमाका विस्तार अपने प्रथम अभियान द्वारा किया, इसे हम वतला चुके है। निकोलाइ I मर चुका था, लेकिन मुरावेफने अगले जारके शासनकालमें भी अपने कामको जारी रक्खा। पहले अभियानसे भी वडे पैमानेपर अगस्त १८५६ ई०मे एक दूसरा अभियान आमूर नदीके साथ-साथ नीचेकी ओर भेजा गया, जिसमे स्त्री-पुरुप सव मिलाकर आठ हजार आदमी थे। अभियानको तीन भागो मे विभक्त करके अलग-अलग स्थानोमे प्रयाण करने का प्रवध किया गया था। चीनी समझने लगे कि अव रूसी निम्न आमूरको सदाके लिये अपने हाथमे कर लेना चाहते है, इसलिये उन्होने ऐगुनमें आनेपर विरोध प्रकट किया। ९ सितम्वर को मरुस्कमे एक सम्मेलन किया गया। मुरावेफ वीमार होनेसे शामिल नही हो सका, और उसने अद्मिरल ज्वोइकोको अपने स्थानपर भेजा। रूसियोका इसी वातपर वरावर जोर था, कि युरोपीय शत्रुओंसे प्रतिरक्षा करनेके लिये हमें आमूरके मुहानेकी अवश्यकता है, जिन स्थानोको हमने लिया है, अव वह रूसकी सम्पत्ति है, और आमूरके वायें तटपर हमे रूसी वस्तिया वसानी है, जिसमे नदीका रास्ता सुरक्षित रहे। रूसी विदेश-विभागने चीनसे वातचीत करनेमे कुछ नरमीसे काम लेना चाहा था, यह वात मुरावेफको पसद नही आई, और उसने स्वय पीतरवुर्ग जाकर चीनके साथ नये सधिके वारेमे वातचीत करनेके लिये अपनेको राजप्रतिनिधि नियुक्त करवाया। मई १८६५ ई० के मध्यमें कोर्साकोफके नेतृत्वमे तीसरा अभियान रवाना हुआ। रूसी जहाजोंके आमूरमें आने-जानेपर चीनी कोई रुकावट डालना नही चाहते थे, लेकिन आमूरके वायें तटपर रूसी वस्तियोका वसाना वह पसद नही करते थे। उन्हे यह देखकर भी वहुत वुरा लगा, कि चीन-अधिकृत नगर ऐगुनके सामने दूसरे तटपर जेया नदीके सगमपर पाच सौ रूसी डेरा डाले पडे है। तीसरे अभियानने भी विना किसी रुकावटके अपनी यात्रा समाप्त की।

१८५७ ई० में नये अधिकार प्राप्त कर मुरावेफ फिर साइवेरिया लौट एक और वडे अभियानकी तैयारी करने लगा। अवकी वार वह चाहता था, कि जगह-जगहपर रूसी वस्तिया वसा दी जाय, इसलिये वह अपने साथ अधिकसे अधिक प्रवासियोको ले आया था। आदमियोकी कमीको पूरा करनेके लिये उसने जेलोमे एक हजार कैदियोको मुक्त कर दिया, और वह नई वस्तियोमें जाकर खेती करनेके लिये तैयार कर दिये गये। उनमेसे जिनके पास वीविया थी, उन्हे उन्होने अपने साथ ले लिया। जिनके पास वीविया नही थी, उन्हे मुरावेफने शादी कर लेनेके लिये कहा। एक प्रसिद्ध क्रातिकारी प्रत्यक्षदर्शी राजुल क्रोपत्किन ने इसके वारेमें अपने सस्मरणोमें लिखा है—"मुरावेफने कठोर कैदमें पडी सभी कैदी स्त्रियोको—जिनकी सख्या करीव एक सौ थी—मुक्त करके पुरुप चुननेके लिये कहा। समय वीता जा रहा था, और नदीका पानी कम होता जा रहा था, वेडेको जल्दी प्रस्थान करना था, इसलिये मुरावेफने उन्हे जोडे-जोडे तटपर खडा होनेके लिये कहा, और फिर यह कहते हुये आशीर्वाद दिया—'वच्चो, मै तुम्हारा व्याह कराता हू, एक दूसरेके साथ मेहरवानीसे वर्ताव करना। पुरुपो, तुम अपनी वीवियोंसे वुरा वर्ताव नही करना। जाओ आनन्दमे रहो।"

फ्रास और इगलैड इस समय रूसके मुख्य प्रतिद्वद्वी थे। वह पेचिङ (पेकिङ) मे रूसके खिलाफ अपनी कार्रवाई निरावाव रूपसे करते जा रहे थे, इसलिये रूसको वहा अपने राजदूतके रखनेकी

अवश्यकता थी। जारने अद्‌मिरल पुतियातिनको चीन दरबारमें अपना दूत बनाकर भेजा। अंग्रेजोंकी तरह रूसियोंकी भी धारणा थी, कि पूर्वी लोग तडक-भडक से अधिक प्रभावित किये जा सकते हैं। मुरावेफने चीनियों पर प्रभाव डालनेके लिये रूसी राजदूतके आनेपर क्याखतामें भारी स्वागतकी तैयारी की, नगरमें दीपमाला जलाई गई, रूसी सेनाने कवायद-परेड की। लेकिन चीनियोंपर इसका कोई प्रभाव नहीं पडा। पेकिङसे हुक्म आनेका बहाना करके चीनियोंने राजदूतको आगे बढनेसे रोके रक्खा। पुतियातिनने इसपर आमूर द्वारा ऐगुन पहुंच और वहांसे पेकिङ जानेकी इजाजत मांगी, लेकिन वहां भी चीनियोंने रास्ता नहीं दिया। पुतियातिन जबर्दस्ती जाना चाहता था, लेकिन मास्कोकी आज्ञा विना ऐसा करना मुरावेफको पसंद नहीं था। इसपर पुतियातिनने समुद्रके रास्ते पेकिङ जानेका निश्चय किया। आमूरके द्वारा २४ जुलाई १८५७ ई० को वह उसके मुहानेपर पेइ होमें पहुंचा। वहां भी पेकिंग जानेके लिये चीनी अधिकारियोंसे बहुत माथापच्ची की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। वहांसे फिर वह शांघाई पहुंचा, और ब्रिटिश और फ्रेंच नौसेनासे मिलकर उन्हें पेइ-होके मुहानेपर घेरा डालनेका परामर्श दिया। चीन अभी फ्रांस और इंगलैंडको अपने विरुद्ध करके उनकी तोपोंकी मार खा चुका था, इसलिये वह रूसको भी अपना दुश्मन नहीं बनाना चाहता था।

११ मई १८५७ को मुरावेफ अपने मामूली अभियानोंके दौरानमें ऐगुनमें ठहरा। वहां उसने चीनी सेनापति राजकुमार शानसे भेंट करके अपनी मांग रक्खी। चीनियोंने कुछ आनाकानी करनेके बाद उसे मंजूर किया। छ दिनके भीतर ही बातचीत खतम हो गई, और १६ मई १८५८ ई०को ऐगुन-संधिपर हस्ताक्षर भी हो गया। इस संधि द्वारा चीनने आमूरके वाम तटपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया, और उसुरीके संगम तक दक्षिण तट चीनका माना गया। उसुरीके संगमसे आगे समुद्र तककी भूमिकी सीमाका निर्णय आगेके लिये छोड रक्खा गया। दोनोंने नदी द्वारा स्वतंत्रतापूर्वक व्यापार और यात्रा करनेके अधिकारको भी मंजूर किया। मुरावेफने कृपा दिखलाते हुये यह मंजूर किया, कि रूसी तटके ऊपर जेयाके पासमें रहनेवाले मंचू चीनकी प्रजा रहेंगे। इस बडी सेवाके लिये जार अलेक्सान्द्र II ने मुरावेफको "काउन्ट (ग्राफ) आमूर्स्की" की उपाधि प्रदान की। मुरावेफने रास्ता साफ कर दिया, इसलिये पुतियातिनको जून १८५८ ई०में तियान्त्सिनकी शांति-मित्रता-व्यापार नौचालन-संधि करनेमें कोई रुकावट नहीं हुई। लेकिन पुतियातिनको ऐगुन-संधिका पता नहीं था। तियान्त्सिनकी संधिने चीनके खुले बन्दरगाहोंमें रूसको व्यापार करनेकी इजाजत दी, और दूसरे राज्योंने जहां अपने वाणिज्य-दूत स्थापित किये हैं, वहां रूसियोंको भी वैसा करनेकी स्वीकृति दे दी। यदि कोई रूसी आदमी चीनमें रहते कोई अपराध करे, तो उसे सबसे समीपवाले रूसी वाणिज्य-दूतके पास या सीमातके बाहर भेजनेकी बात मानी गई। इस संधिने रूसी ईसाई-मिशनरियों और उनके चीनी अनुयायियोंके लिये भी रक्षाका विशेष अधिकार प्रदान किया। संधिपत्र रूसी, मंचूरी और चीनी तीन भाषाओंमें लिखा गया था और माना गया था, कि यदि किसी वाक्यके बारेमें विवाद हो, तो मंचूरी भाषाका अभिलेख सर्वोपरि प्रमाण माना जायगा।

चीनको नोचनेके लिये इस समय पश्चिमी युरोपके राज्य गिद्धकी तरह चिमटे हुये थे, वह हर तरहसे उसे दबाना चाहते थे। २६ जून १८६० ई०में एक बहाना करके उन्होंने अपनी सेनायें भेज दी, जो लडती हुई पेकिङतक पहुंच गईं और वहांके कला और सौन्दर्यके सुन्दर संग्रहालय युवान-मिङ-युवानके प्रासादको लूट लिया। मालूम हो रहा था, पश्चिमी शक्तियां चीनसे मंचू-वंशको खतम करके छोडेंगी, लेकिन निरंकुश राजतंत्रको कायम रखना जारशाहीने अपना कर्त्तव्य मान लिया था। इसी समय रूसी दूत इग्नतियेफ मंचू-वंशका संरक्षक बनकर पेकिङ पहुंचा, जिसने पश्चिमी राज्यों और मंचू-वंशके बीचमें संधि करा दी। इग्नतियेफने पश्चिमी सेनाओंके पेकिङ जानेमें पहले ही फ्रेंच दूतसे तियान्त्सिनमें सुन लिया था, कि पश्चिमी शक्तियां पेकिङमें बराबरके लिये अपनी सेना नहीं रखना चाहती। उसने चीनके महामंत्री कुङकोसे यह बात छिपाकर बतलाया, कि मैं कोशिश करूंगा, कि अंग्रेज और फ्रेंच सेनायें पेकिङ छोडकर चली जायें, लेकिन शर्त यह है, कि चीन ऐगुन-संधिको स्वीकार करे, और उसुरी-संगमसे समुद्र तकके भागको रूसको दे दे। पेकिङको शत्रु-सेनाओंसे मुक्त करानेके लिये चीन सब कुछ करनेको तैयार था। २४ अक्तूबरको इंगलैंडके साथ और २५ को फ्रांसके

साथ संधि करानेमें इग्नेतियेफने तत्परता दिखलाई। ५ नवम्बरको पश्चिमी सेनायें पेकिङ छोडकर चली गई। अब अपने इनामके रूपमे इग्नतियेफने १४ नवम्बरको हस्ताक्षरित होनेवाली चीन-रूस-संधिको करवाया, जिसके द्वारा प्रशान्त महासागरके तट तकका एक बहुत भारी भूभाग चीनके हाथसे निकल आया।

येर्मक और खबारोफके साइबेरियामे उठाये हुये कामको इस प्रकार मुराब्येफने पूरा किया। यही तीनों साइबेरियाके लिये जारशाही क्लाइव, हेस्टिग्स और वेल्जली थे।

१७ अलेक्सान्द्र III, अलेक्सान्द्र II-पुत्र (१८८१-९४ ई०)

बापकी हत्याके बाद अलेक्सान्द्र गद्दीपर बैठा। उसके समयमें घोर अत्याचारके मारे लोग कराहने लगे। अलेक्सान्द्रको हर वक्त मौतका डर लगा रहता था, इसलिये वह पीतरबुर्ग छोडकर गात्चिनामें रहता, जिससे उसके समसामयिक उसे "गात्चिनाका बंदी" कहा करते थे। शिक्षित लोग सबसे अधिक जारके निरंकुश शासनके प्रति घृणा रखते थे, इसलिये सार्वजनिक शिक्षाका वह सबसे बडा विरोधी था। तोबोलके राज्यपालने जब उसे सूचित किया, कि साइबेरियामें बहुत कम शिक्षित लोग हैं, तो उसने जवाबमें कहा—"इसके लिये हमें भगवान्‌को धन्यवाद देना चाहिये।" उसका कहना था—"गाडीवानों, कोचवानों, नौकरों, धोबियों, छोटे दूकानदारों आदिके बच्चोंको सिवाय विशेष प्रतिभाकी अवस्थाके उस स्थितिसे ऊँचे उठनेके लिये प्रोत्साहित नहीं करना चाहिये, जिस स्थितिमें कि वह पैदा हुये।" अभी तक रूसी विश्वविद्यालयोंको अपने कुलपति (रेक्तर) और प्रोफेसर निर्वाचित करनेका अधिकार था, लेकिन १८८४ ई०में नया कानून बनाकर जारने उनसे यह अधिकार छीन लिया। अच्छे-अच्छे प्रोफेसर निकाल दिये गये, और स्त्रियोंके लिये उच्च-शिक्षा एक तरहसे वर्जित कर दी गई।

रूस-भिन्न जातियोंका शोषण और कठोर शासन और बढ़ता गया। अलेक्सान्द्र III ने यहूदियोंको भूमि खरीदने और गाँवमे बसनेका निषेध कर दिया। १८८७ ई०में माध्यमिक और उच्च-शिक्षण संस्थाओंमें यहूदी विद्यार्थियोंके लिये उसने संख्या निश्चित कर दी। उदमूर्त जैसी कितनी ही जातियोंको ईसाई बनानेके लिये मिश्नरियोंको प्रोत्साहन दिया गया। जो उदमूर्त अपने बाप-दादोंके धर्मको छोडना नहीं चाहते थे, उन्हे देवताओंके सामने नर-बलि करनेका अपराध लगाकर कठोर दंड दिया जाता था।

जारशाहीका ध्यान अब मध्य-एसियाकी ओर विशेष तौरसे गया था। वहाँसे कपासकी गाँठें रूसके कारखानोंमें भेजी जाती थीं। पहले वह ऊँटोंपर लदकर आती थीं, अब उसके लिये रेलके बनानेकी आवश्यकता पडी। १८८० ई०के बाद समरकन्दको रेलद्वारा कास्पियन-तटसे मिला दिया गया। कास्पियनके दूसरे तटपर रूससे मिलानेवाली रेल इससे पहले ही तैयार हो गई थी। लेकिन रूस जिस तरह मध्य-एसियामें बढ रहा था, उसे अंग्रेज नहीं पसंद करते थे। रूस अब अफगानिस्तानका पडोसी था। हमे मालूम है, कि अंग्रेज सरकार रूसका ही डर बतलाकर भारतके वार्षिक बजटका बहुत भारी भाग पश्चिमोत्तर सीमांतकी सैनिक तैयारीपर खर्च करती थी। १८८५-८६ ई० में निश्चित मालूम हो रहा था, कि रूस और इंगलैंडमें लडाई छिड जायेगी, लेकिन १८८७ ई०में रूस और ईरानकी सीमा, और १८९५ ई० में रूस और अफगानिस्तानकी सीमाको ठीक कर देनेसे युद्धकी सम्भावना कम हो गई।

जिस वक्त इंगलैंडके साथ रूसके संबंध बिगड रहे थे, उसी समय फ्रांसके साथ उसके संबंध अच्छे हो रहे थे, जिसके कारण फ्रांसीसी पूँजी बहुत भारी परिमाणमें रूसमें लग रही थी, और फ्रांसीसी सरकारने जारशाहीकी बात मानकर रूसी क्रांतिकारियोंके ऊपर अपने यहाँ देख-रेख रखनेका वचन दिया। जर्मनी बिस्मार्कके नेतृत्वमें बहुत एकताबद्ध और शक्तिशाली हो चुकी थी। १८७० ई०में एक बार विजयिनी जर्मन सेना पेरिसमें पहुँच चुकी थी, इसलिये फ्रांस रूसके साथ घनिष्टता स्थापित करना चाहता था। १८९१-९३ ई० मे फ्रांस और रूसके बीच कई संधियाँ हुई, और जर्मनीके आक्रमण करनेपर आठ लाख सेना भेजनेका रूसने वचन दिया था।

प्रथम मजदूर आन्दोलन—यद्यपि बकुनिन-जैसे बुद्धिजीवी क्रांतिकारी मार्क्सकी अपेक्षा स्वाप्निक (उटोपियन) समाजवादकी तरफ अधिक आकृष्ट हुये थे, लेकिन रूसके मजदूरोंमें मार्क्सके विचार पहले ही पहुंच चुके थे, जैसा कि मार्च १८७० ई०में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय (इन्टर्नेशनल) महापरिषद्में प्रवासी रूसी क्रांतिकारियोंके कार्ल मार्क्सको रूसका प्रतिनिधि बनानेसे मालूम होता है। मार्क्सने उनकी बातको स्वीकार करते हुये जवाबमें लिखा था—"रूसमें जारशाहीका विनाश सिर्फ रूसी जनताके लिये ही आवश्यक नहीं है, बल्कि युरोपीय सर्वहाराकी मुक्ति भी उसीपर निर्भर करती है।" हम देख चुके है, कि युरोपकी जन-क्रांतियोंको दबानेके लिये रूसी जार हमेशा खुलकर अपनी सेना और पैसा देनेके लिये तैयार थे। १८७१ई०मे फ्रांसपर जर्मनीके विजय होनेके बाद पेरिसके कमकरोने "पेरिस कमून"के नामसे विश्वमे प्रथम कम्युनिस्ट सरकार कायम की, रूसी कमकरोने उसके साथ अपनी सम्मति और सहानुभूति दिखलाई। १८७८ ई०में पेरिस कमूनके वार्षिकोत्सवके समय अदेसाके मजदूरोने अपनी सद्भावनाके संदेश भेजे। १८७० ई०के बाद नरोद्निकोंके कार्यक्रमके असफल होनेपर क्रांतिका स्रोत वही सूख नहीं गया, बल्कि अब मजदूरोंने क्रांतिके झंडेको अपने हाथमे लिया। मई १८७० ई० में पीतरबुर्गकी नेवा कपड़ा मिलमे मजदूरोकी पहिली सबसे बड़ी हड़ताल हुई, जिसको तोड़ने और मजदूरोको दबानेमें जारशाहीको काफी दिक्कत उठानी पड़ी। यह पेरिस-कमूनकी स्थापनाके एक साल पहिलेकी घटना है। १८७५ ई० मे उक्रइनमें कारखानेके डेढ हजार मजदूरोने हड़ताल की। १८७७ ई०में अदेस्साके रेलवे मजदूरोंने साढे तीन सप्ताह तक अपनी हड़तालको चलाया। मजदूरोकी मांग थी—जुरमानोंका कम करना, बच्चोंसे कम घंटे काम लेना। इस तरह हम देखते है, कि १८७० ई० के बाद रूसके मजदूरोंमें सामूहिक वर्गचेतना प्रारम्भ हो गई थी। सबसे पहला मजदूर वासिली गेरासिमोफ था, जिसे सिपाहियों और मजदूरोंमे क्रांतिकारी प्रचारके अपराधमे नौ वर्षकी सजा हुई, और वह साइबेरिया (याकुतस्क) में १८९२ ई०में मरा। उस समयका दूसरा मजदूर क्रांतिकारी प्योत्र अलेक्सियेफ था। वह स्मोलेन्स्कके एक किसान घरमे पैदा हुआ था, पीछे नरोद्निक दलका सदस्य बना। प्योत्र अपनी शिक्षा और अनुभवसे समझ गया, कि नरोद्निक कार्यक्रमसे सफल क्रांति नहीं हो सकती, इसलिये वह समाजवादी बन कारखानोंके मजदूरोंमे प्रचार करता रहा। मास्कोके मजदूर उसे बहुत प्यार करते थे, और अपने असाधारण स्नेहको दिखलानेके लिये उसे पित्रुस्का कहकर पुकारते थे। प्योत्रको साइबेरिया (याकुतिया) में दस सालकी कालेपानीकी सजा हुई। १० मार्च १८७७ ई०मे अदालतमे भाषण देते हुये उसने कहा था—"मजबूत नसोंवाले लाखो मजदूरोंके हाथ उठेंगे, और सैनिकोंकी संगीनोसे सुरक्षित स्वेच्छाचारिताका जूआ चूर्ण-विचूर्ण हो जायेगा।" लेनिनने इसे "रूसी मजदूर क्रांतिकारीकी महान् भविष्यद्वाणी" कहा था। प्योत्र १९८१ ई०में साइबेरियामें डाकुओंके हाथो मारा गया।

प्रथम क्रांतिकारी मजदूर संगठन १८७५ ई०में अदेस्सामे "दक्षिणी रूसी मजदूर संघ" के नामसे युगेनी जास्लाव्स्की द्वारा स्थापित हुआ। इस संघने मार्क्सके प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय नियमोंको अपनाया था। इस संघके डेढ-दो-सौ धातु-कमकर सदस्य बने थे। इसकी कई शाखायें खुली, और करीब साल भर तक जीवित रहकर जारशाही अत्याचारोंने इसे छिन्न-भिन्न कर दिया। जास्लाव्स्कीको दस सालकी सजा दी गई, और वह थोड़े दिनों बाद जेल हीमें मर गया।

दक्षिणके मजदूरोंके संगठनको देखकर पुलिसके हाथों वहांसे भागकर एक मिस्त्री (फिटर) विक्तर अबनोर्स्की उत्तरकी ओर आया, और उसने उस समयके एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी स्तेपान खलतुरिनके साथ मिलकर १८७८ ई०में पीतरबुर्गमे "रूसी मजदूरोका उत्तरी संघ" स्थापित किया। इस संघने हड़तालोंके संचालनका काम भी अपने हाथमें लिया। वह अपना गुप्त प्रेस खोलकर मजदूर क्रांतिकारी पत्रिका "रबोचया जार्या" (कमकरोकी उषा) का प्रथम अंक निकालने जा रहा था, इसी समय पुलिसने आकर प्रेसको छीन लिया, और पत्रिका निकल नहीं सकी। १८८० ई०मे पुलिसने उत्तरी संघको छिन्न-भिन्न कर दिया। विक्तर अबनोर्स्कीको दस सालकी सजा हुई, स्तेपान खलतुरिन इधरसे निराश होकर नरोद्निकोंके आतंकवादमें भाग लेने लगा, और १८८२ ई०में अलेक्सान्द्र II को मारनेके प्रयत्न करनेमें उसे फांसीपर चढ़ा दिया गया।

शिक्षा और संस्कृति—जार शिक्षा और विज्ञानके प्रचारसे कितने डरते थे, इसके बारेमें हम पहले बतला आये हैं। लेकिन सरकारके सैनिक और असैनिक विशाल यंत्र को चलानेके लिये शिक्षितोंकी अवश्यकता थी, पर वह उसका कमसे कम प्रचार चाहते थे। लेकिन कालवली के सामने जारोंकी क्या चलती ? अब पूंजीवादी युग आरम्भ हो चुका था, जिसके लिये शिक्षाके अधिक व्यापक रूपमें फैलनेकी अवश्यकता थी। किसानोंकी अर्धदासताके उच्छेदके बाद गांवोंमें भी शिक्षाकी मांग हुई, और ऐसे ही ग्राम-स्कूलोंके संगठनमें विशेष भाग लेनेवाला लेनिनका पिता इलिया निकोलाइ-पुत्र उलियानोफ (१८३१-८६ ई०) था, जिसने सिंविर्स्ककी गुवर्निया (प्रदेश) में बहुत काम किया। अब १८६० ई०के बाद लड़कियोंके भी स्कूल कायम होने लगे, और पीतरवुर्गमें एक महिला विद्यालय और मेडिकल स्कूल (१८७० ई० के बाद ही) खोला गया।

रूसी सामन्तशाहीकी तरफसे यद्यपि विज्ञान-प्रचारके लिये वैसा कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता था, जैसा कि पश्चिमी युरोपमें देखा जाता था, लेकिन रूसी जातिके पास प्रतिभा मौजूद थी, इसलिये वह ऊपर आनेके लिये प्रयत्न किये बिना नहीं रह सकती थी। विश्वविख्यात रसायनशास्त्रवेत्ता दिमित्रि इवान-पुत्र मेन्देलेयेफ (१८३४-१९०७ ई०) इसी समय अपनी खोजों द्वारा दुनियाकी विद्वन्मंडलीको चकित कर रहा था। उसकी बनाई "रासायनिक तत्त्वोंकी युगक्रमिक पद्धति" को सारे संसारने स्वीकार किया। लेकिन अलेक्सान्द्र III ने इस विश्वविख्यात विज्ञानवेत्ताको उसके स्वतंत्र विचारोंके लिये पीतरवुर्ग विश्वविद्यालयसे निकाल दिया। इस कालके दूसरे विज्ञानवेत्ता शरीरशास्त्री इवान मिखाइल-पुत्र सेचेनोफ और वनस्पतिशास्त्रवेत्ता क० अ० तिमिरियाजोफ (१८४३-१९२० ई०) थे। तिमिरियाजोफकी खोजोंका सम्मान सारी दुनियाने उसके जीवनमें ही किया। लेकिन यह दोनों विज्ञानवेत्ता जारके कोपभाजन हुये। तिमिरियाजोफका यह सौभाग्य था, कि उसने बोल्शेविक-क्रान्तिको अपनी आंखोंके सामने सफल होते देखा, और कम्युनिस्ट सरकार और रूसी जनताके महान् सम्मानको प्राप्त किया।

साहित्य—इस कालके प्रगतिशील पत्रकारों और समालोचकोंमें दिमित्रि इवान-पुत्र पिसारोफ (१८४०-६८ ई०)का विशेष स्थान है। यह २८ ही वर्षकी उमरमें मर गया, लेकिन इतने ही कालमें उसने स्वेच्छाचारी शासकोंके दिलको दहला दिया। उन्होंने उसे पीतर-पावल-दुर्ग (लेनिनग्राद) में १८६२-६६ ई० में बंद रक्खा। जेलमें रहते हुये भी पिसारोफकी कलम बंद नहीं हुई।

कवि नेक्रासोफ और समालोचक सल्तिकोफ-श्चेद्रिनके सम्पादकत्वमें "अतेचेस्त्वेन्नीये जापिस्की" (मातृभूमिकी टिप्पणियां) एक प्रभावशाली जनतंत्रवादी पत्रिका निकलती थी, जिसका बहुत प्रचार था, विशेषकर नरोद्निक क्रांतिकारियोंमें। उसके बाद इस पत्रिकाका सम्पादक न० क० मिखाइलोव्स्की हुआ, जो क्रांतिका पक्षपाती होते हुये भी अपने अवैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रतिगामी दार्शनिक विचारोंके कारण लेनिनकी कड़ी समालोचनाका पात्र हुआ।

अब रूसके साहित्यकारोंने गोगल और पुश्किनकी कलमको इतना आगे बढ़ाया, कि प्रसिद्ध विचारक एंगल्सको लिखना पड़ा—"रूसी भाषा कितनी सुंदर है, इसमें भयंकर भद्देपन को छोड़कर जर्मन भाषाके सभी गुण मौजूद हैं।" इसी कालमें इवान सेर्गेइ-पुत्र तुर्गेनेफ (१८१८-८३ ई०) जैसा रूसका महान् लेखक पैदा हुआ। "एक शिकारीके पत्र" में उसने जमींदारोंके नीचे कराहते अर्धदास किसानोंके जीवनका चित्र खींचा था। "अमीरोंका घोंसला", "रुदिन", "सव्याकों", "पिता और पुत्र" उपन्यासोंमें उसने १८४० और १८६० ई०के आसपासके रूसके सामाजिक जीवनका स्पष्ट चित्र उपस्थित किया है। अपने "धुआं", "बंजर भूमि" में भी उसने उसी तरहसे अपनी लेखनीका चमत्कार दिखलाया है। तुर्गेनेफ किसानोंकी मुक्ति चाहता था, और अर्धदासताके उच्छेदको अवश्यम्भावी बनानेमें उसकी लेखनीने भी काम किया था। इसी समयका महान् साहित्यिक सूर्य फ० म० दोस्तोयेवेस्की (१८२१-८१ ई०) था, जिसका उपन्यास "गरीब लोग" १८४० ई०के बाद निकला और जल्दी ही प्रसिद्ध हो गया। उसके दूसरे कथाग्रंथ 'मृतक ग्रह के संस्मरण", "अपराध और दंड", "मूर्ख", "करमाजोफ भाई" जैसी रूसी साहित्यकी अमर कृतियां इसी समय लिखी गईं। लेव लेव तालस्त्वा (तालस्ताय १८२८-१९१० ई०) जैसी प्रतिभा इसी समय प्रकट हुई। उसके ग्रंथ १८५० ई०

के वाद ही प्रकाशित होने लगे। अपने "युद्ध और शाति", "अन्ना करेनिना" जैसे ग्रथोंमे रूसी जीवनका उसने अनुपम चित्र खीचा है। "युद्ध और शाति" मे १८१२ ई०मे रूसियोके वीरतापूर्ण सघर्षका बडा सजीव वर्णन है।

चित्रकला, नाट्यकला और सगीतकलामें भी इस कालमे चित्रकार ई० न० कराम्स्की (१८३७–८७ ई०), व० ग० पेरोफ (१८३३–८२ ई०), अद्भुत चित्रकार इलिया एफिम-पुत्र रेपिन (१८४४–१९३० ई०) हुये। सगीतकारोंमें म० अ० बलाकिरेफ (१८३६–१९१० ई०), व० व० स्तासोफ (१८२४–१९०६ ई०), अ० प० वोरोदिन (१८३३–८७ ई०) जैसे सगीतकार, और म० न० येर्मोलोवा, और ग० न० फेदोतोवा जैसी अभिनेत्रिया, और प० म० सदोव्स्की जैसे प्रतिभाशाली अभिनेता पैदा हुये।

मार्क्सवादका प्रचारारंभ—मार्क्सके महान् ग्रथ "पूजी" के प्रथम जिल्दका रूसी अनुवाद १८७२ ई० में प्रकाशित हुआ। उस समय अभी मजदूरोमे वर्गचेतनाका आरम्भ ही हुआ था। पहला मार्क्सवादी सगठन "मजदूरोकी मुक्ति" (श्रमिकमुक्ति) की स्थापना जनेवा (स्वीजलैंड) में १८८३ ई० मे प्लेखानोफने की, जिसमें कितने ही रूसी क्रातिकारी शामिल हुये थे। जार्ज वलेन्तिन-पुत्र प्लेखानोफ (१८५६–१९१८ ई०) पहले नरोद्निक क्रातिकारी था, पीछे प्रथम मार्क्सवादी महालेखक हुआ। जारशाही अत्याचारोने उसे देशसे बाहर जानेके लिये मजबूर किया, जहा उसने मार्क्सके ग्रथोको पढकर उसके सिद्धातोको स्वीकार किया। १८८३ ई०मे उसने "समाजवाद और राजनीतिक सघर्ष" पुस्तक प्रकाशित की। दो साल वाद "हमारे मतभेद" को प्रकाशित किया। प्लेखानोफने अपनी लेखनी द्वारा अच्छी तरह साफ कर दिया, कि नरोद्निकवादसे कुछ होने-जानेवाला नही है। रूसमे पूजीवाद आकस्मिक घटना नही है। रूसके विकासके लिये पूजीवादी मार्ग छोड दूसरा रास्ता नही है, और पूजीवादके विकासके साथ-साथ क्रातिकारी सर्वहारा वर्गको भी विकसित होनेसे रोका नही जा सकता। "मजदूर मुक्ति" सगठनने रूसमे समाजवादी विचारोको फैलानेका काम किया। इसीने मार्क्स और एगेल्सके "कम्युनिस्ट घोषणा", "श्रम-वेतन" और "पूजी" आदि ग्रथोको प्रकाशित किया, जिनसे एक पीढीके रूसी क्रातिकारियोंको शिक्षा मिली। मजदूरोमे भी अव इन विचारोका प्रचार होने लगा। पूजीवादके लिये समय-समयपर मालकी खपत कम हो जाने, मालकी उपज वढ जानेके कारण चीजोका दाम घट जानेसे समय-समयपर आर्थिक सकटका आना स्वाभाविक है। आर्थिक सकटके समय पूजीपति अपने कारखानोको वद करके लाखो मजदूरोको वाटका भिखारी वना देते हैं। नफा उठानेके समय वह दोनो हाथोसे लूटते हैं, लेकिन अव वह उनके लिये पैसा कमानेवाले मजदूरोको भूखा मारनेसे वाज नही आते। पर मजदूर चुपचाप कैसे भूखे मरना वर्दाश्त कर सकते हैं? १८८० ई० के वाद जो आर्थिक सकट आया, उसमें और मिलोकी तरह मोरोजोफ मिलने भी १८८२ ई० में अपने आठ हजार मजदूरोका वेतन घटाना शुरू किया, और १८८४ ई० तक मिलमालिकोने एकके वाद एक पाच वार मजूरी घटाई। इसके साथ-साथ मजदूरोको जरा-जरा-सी वातपर जुरमाना करना अथवा उन्हे कामसे निकाल देना मामूली वात थी। इस समय मजदूरोमे "उत्तरी सघ" द्वारा क्रातिकारी विचारोका प्रचार हो चला था। ७ जनवरी १८८५ ई०को सात वजे सवेरे ही पहले निश्चित सकेतके अनुसार चिल्लाकर कहा गया—"आज छुट्टी है, काम वद करो, गैस रोक दो, स्त्रियो, वाहर चली जाओ।" उसी समय सारी मिल वद हो गई। मजदूरोने उत्तेजित किये जानेपर मिलकी कितनी ही चीजोको तोड-फोड दिया, मनेजरके मकानको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इसपर जारशाही पुलिस और सेनाने धावा वोल दिया। वह वोल्कोफ आदि वहुतसे हडताली मजदूरोको पकडकर सीधे जारके सामने ले गये। अलेक्सान्द्र III ने पूछा—"क्या मैं सवके लिये हू, या तुम सव मेरे लिये हो?" मजदूरोने जवाव दिया—"हरएक आदमी तुम्हारे लिये है।" लोगोने कसाकोसे वोल्कोफको छुडानेकी कोशिश की, वहुत भारी प्रदर्शन किया। इसके वाद मजदूरोके सगठनको दवाने और उनकी हिम्मत तोडनेके लिये जारने पूरी कोशिश की। इस समयके हडताली नेताओंमें एक मजदूर प० अ० मोइसेयको भी था, जिसे जारशाही अदालतने छोड दिया था, लेकिन जार अलेक्सान्द्र III ने अपनी विशेष आज्ञासे उसे कालापानीका दड दिया। मोइसेयकोने १९१७ ई०को वोल्शेविक क्रातिमे भाग लिया, गृहयुद्ध-कालमे लाल सैनिक

वनकर लडा, और १९२३ ई० मे मरा। १८९१ ई० में पीतरबुर्गमें मार्क्सवादियोंने मई-दिवसके वहानेसे प्रथम गुप्त क्रांतिकारी बैठक बुलाई। इसमे एक बुनकर मजदूर अफनासेयेफने उपस्थित मजदूरोंसे पुकारकर कहा—"साथियो, हम जरूर सीखेंगे, जरूर सगठित होगे, और अपनेको एक मजबूत पार्टीके रूपमे सघवद्ध करेंगे।" लेनिनने पीतरबुर्गके मजदूरोंके इस पहले प्रयासके वारेमें लिखा था—"१८९१ ई०का साल शेलगुनोफकी श्मशानयात्राके प्रदर्शनमें पीतरबुर्गके मजदूरोंके भाग लेनेके लिये विशेष तौरसे उल्लेखनीय है, और वह पीतरबुर्गमें मई-दिवस मनानेके समय दिये गये राजनीतिक व्याख्यानोंके लिये भी विशेष तौरसे उल्लेखनीय है।" न० व० शेलगुनोफ सारे जीवनभर मजदूरों और गरीबोंकी स्वतत्रताके लिये काम करता रहा। मरनेके समय मजदूरोंने उसे अभिनन्दन-पत्र भेंट किया था।

अलेक्सान्द्र III के शासनकालमे पूजीवादी उद्योगका विस्तार वहुत हुआ, रेलोंका भी प्रसार वढा। लेकिन जारशाही कालमे रूसमें विदेशी पूजी सबसे अधिक लगी हुई थी, जिसमे भी फ्रेंच और वेल्जियन पूजीपतियोंका भाग अधिक था। किसानोंकी अर्धदासता खतम हो गई थी, लेकिन अव भी उनका शोषण कम नही हो रहा था।

१८. निकोलाइ II, अलेक्सान्द्र III-पुत्र (१८९४–१९१७ ई०)

रूसका यह अन्तिम जार वहुत कमजोर दिमागका, किंतु वडा ही घमडी और क्रूर था। प्रगतिशील विचारोंके प्रति घृणा उसने अपने बाप-दादोंके खूनसे पाई थी। १८९६ ई०में सिंहासनारोहणके समय मास्कोमें एक महामेलेका प्रवध किया गया था, जिसमें लाखो आदमी आये, किंतु सरकारकी ओरसे व्यवस्थाका कोई प्रवध नही किया गया, जिससे हजारो नर नारी और वच्चे पैरोंके नीचे दवकर मर गये। उस घटनाके दूसरे दिन सवेरे निकोलाइ II अपनी स्त्री और विदेशी अतिथियोंके साथ घटनास्थलपर आया। लाशोंको हटा लिया गया था और खूनके दागोंपर वालू डाला जा रहा था। इतनी वडी दुर्घटना हो जानेके वाद भी उस शामको निकोलाइ अपनी वीवी अलेक्सन्द्राके साथ मस्त होकर नाचता रहा, मानो कुछ हुआ ही नही। इसपर यदि रूसी जनता निकोलाइको "खूनी" की उपाधि दे, तो क्या आश्चर्य?

मध्य-एसियापर रूसके पूजीवादी विस्तारका खास तौरसे वडा प्रभाव पड रहा था, क्योंकि रूसी कपडामिलोंके लिये कपास वहींसे आती थी। खोकन्दके राज्यको अब फरगाना-उपत्यकाके नामसे कपासकी उपजका केंद्र बना दिया गया था। धनी खेत-मालिक अपने असामियोंसे खेती करवाकर नफा उडाते थे, और साधारण जनता भूखो मरती थी। ऊपरसे १८९० ई०के करीब सरकारी कर तिगुना वढ गया था। इन अत्याचारोंको वर्दाश्त करते-करते लोग तग आ गये, और मई १८९० ई० में अन्दिजान नगरमें वलवा हो गया। इसके लिये ईशान (सत, मुल्ला) मुहम्मद अली जैसा एक प्रभावशाली धार्मिक नेता अगुवा बना था। फरगानासे वाहर भी भीतर ही भीतर आन्दोलन और सगठन किया गया था। हथियारोंका भी सग्रह हुआ था, जिसमे अग्रेजी वन्दूकोंको अफगान व्यापारियोंने विद्रोहियोंके पास पहुचाया था। १८ मई १८९८ ई० की रातको दो हजार हथियारवद उज्वेक और किर्गिज अन्दिजानकी छावनीपर चढ आये, और उन्होने नगरपर अधिकार करना चाहा। "ग़जवा" (जहाद) की घोषणा पहिले हीसे हो गई थी, इसलिये मध्य-एसियाकी मुस्लिम जनता जारशाहीकी विरोधी तथा विद्रोहियोंकी पक्षपाती थी। लेकिन रूसकी सैनिक शक्तिके सामने ये थोडे-से लोग क्या कर सकते थे? मुहम्मद अली और उसके उन्नीस साथी फासीपर चढा दिये गये, ३४८ उज्वेकोंको लम्बी-लम्बी सजायें हुईं। जारशाही पुलिसने लोगोंपर गजव ढाया, तीन उज्वेक गावोंको उजाडकर वहा रूसियोंको लाकर वसा दिया, दूसरे गावोंपर भारी सामूहिक कर लगाये।

लेनिन—रूसकी इस राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमिमें व्लादिमिर इलिया-पुत्र उलियानोफका जन्म २२(१०) अप्रैल १८७० ई०को सिम्बिर्स्क (उलियानोव्स्क) नगरमे एक स्कूल-शिक्षकके घरमें हुआ। व्लादिमिर उलियानोफ लेनिनके नामसे सव समयके विश्वका महान् पुरुष स्वीकृत किया गया है। इलिया उलियानोफ प्रगतिशील विचारोंका वुद्धिजीवी पुरुष था।

उसके सभी बच्चोने क्रातिमे भाग लिया। लेनिनके सबसे बडे भाई अलेक्सान्द्रको जार अलेक्सान्द्र III को १८८७ ई०मे मारनेके प्रयत्नका सगठन करनेके लिये फासीपर चढा दिया गया। अपने प्रिय भाईकी हत्याका प्रभाव लेनिनके ऊपर सदाके लिये पडना ही चाहिये था, किन्तु उसकी पैनी बुद्धिने बतला दिया, कि नरोद्निकोंका आतकवाद सफल क्रातिका रास्ता नही है। बिना साधारण जनताके सहयोग और सहानुभूतिके मुट्ठी भर "वीर" दुनियाको नही बदल सकते। "नही, हम उस पथको नही लेगे, वह जानेका रास्ता नही है—" लेनिनने अपने १७ वर्षके भाई वोलोद्या उलियानोफके फासी-पर चढनेकी खबर सुनकर कहा था। १७ वर्षकी उमरमे लेनिन कजानके विश्वविद्यालयमे दाखिल हुआ, लेकिन विद्यार्थियोके राजनीतिक प्रदर्शनमे भाग लेनेके कारण उसे पकडकर एक गावमे निर्वासित कर दिया गया। पकडते वक्त पुलिस अफसरने लेनिनसे कहा था—"जवान, तुम क्यो विद्रोह कर रहे हो ? देख नही रहे हो, तुम्हारे सामने एक दीवार खडी है ?" व्लादिमिरने जवाब दिया—"दीवार, हा वह खडी है, लेकिन सडी हुई दीवार है, जरा-सा धक्का दो और यह गिर पडेगी।" अभी वह व्लादिमिर उलियानोफ ही था, पीछे अपने अन्तर्धान जीवनमें उसे लेनिनका छद्म नाम स्वीकार करना पडा। विश्वविद्यालयकी शिक्षासे यद्यपि लेनिन उस समय वचित हो गया, लेकिन उसने अपने अध्ययनको जारी रक्खा, और जब उसे फिर गाव लौट आनेका मौका मिला, तो उसने मार्क्स और एगेल्सके ग्रथोका बहुत गम्भीर अध्ययन किया। समारा जानेपर वहा उसने मार्क्सवादियोका प्रथम अध्ययन-चक्र सगठित किया। १८९३ ई०की शरद्में वह पीतरबुर्ग गया, जहाके मार्क्सवादियोने जल्दी ही उसे अपना नेता मान लिया। १८९४ ई०मे लेनिनने कई व्याख्यान तैयार करके पढे, जो पीछे "जनताके मित्र कौन है और वह कैसे समाजवादी जनतात्रिकोसे लडते है ?" के नामसे प्रकाशित हुये। इसे कहनेकी अवश्यकता नही, कि इसमें लेनिनने नरोद्निकोकी खबर ली थी। इस आरम्भिक पुस्तकमे ही लेनिनने भविष्यद्वाणी की थी—"जनतात्रिक तत्त्वोका मुखिया बनकर विद्रोह करके रूसी मजदूर स्वेच्छाचारिताका अन्त करेंगे और विजयी कम्युनिस्ट रूसी सर्वहाराको क्रातिके लिये खुले क्रातिकारी सघर्ष के सरल पथपर ले जायेगे।"

नरोद्निकोसे सघर्ष करते हुये पीतरबुर्गके मार्क्सवादियोने "मजदूर वर्गकी मुक्तिके लिये सघर्ष का सघ" के नामसे एक सगठन स्थापित किया था। लेनिन इस सघका जल्दी ही नेता हो गया, जिसने उस समय मार्क्सवादी क्रातिकारी विचारोके प्रचारके लिये बहुत काम किया और प्रचारक्षेत्रको बढाया। उसके कार्यमे बाबुश्किन, शेल्गुनोफ और दूसरे कर्मी साथ दे रहे थे। १८९५ ई०की शरद्से पीतरबुर्गके "सघर्ष सघ"ने मजदूरोको सगठित कर हडतालोका नेतृत्व करना शुरू किया। १८९६ ई० मे राजधानीके तीस हजार जुलाहोने जारके सिंहासनारोहणके महोत्सवके समय लेनिनद्वारा तैयार की हुई मागोके लिये हडताल कर दी। मजदूरोके दबावके कारण जारशाही सरकारको कामके घटोको कम करनेका वचन देना पडा। रूसके मजदूरोको अब क्रातिका क्रियात्मक पाठ मिलने लगा, वह अपनी शक्ति अनुभव करने लगे। इससे पहले ही दिसम्बर १८९५ ई०मे लेनिनको गिरफ्तार करके जेलमे बद कर दिया गया था। लेकिन जेलकी दीवारे लेनिनके प्रभाव और नेतृत्वको रोक नही सकती थी। १८९७ ई०में सरकारने लेनिनको तीन वर्षका कालापानी देकर पूर्वी साइबेरियामे (१८९७ ई०से १९०० ई०तक) येनिसेई गुबर्निया (प्रदेश) के मिनुसिन्स्की उयेज्द (जिले) के शुशेन्स्कोये गाव मे बद कर दिया। इसी समय १८९९ ई०मे उसने अपने महान् ग्रथ "रूसमे पूजीवादका विकास" को लिखकर समाप्त किया। जब लेनिन साइबेरियामे बद था, उसी समय मार्च १८९८ ई० में "रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजदूर पार्टी"की प्रथम काग्रेस मिन्स्क नगरमे हुई, जिसमे "रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजदूर पार्टी"की स्थापना घोषित की गई। सरकारने जल्दी ही पार्टीकी केद्रीय समितिके लोगो और कार्यमें भाग लेनेवालोको पकड़ लिया, तो भी वह क्रातिकारी आन्दोलनको बद नही कर सकी। मार्क्सवादी विचारोकी मजदूरो पर गहरी छाप पडती जा रही थी, और वह रूसी साम्राज्यके भिन्न-भिन्न प्रदेशोमे भी फैलने लगे। २० वी सदीके अन्ततक काकेशसको भी इनकी हवा लगी, जहा किसानोके विद्रोह अक्सर हुआ करते थे। इसी समय योसेफ विसारियोनोविच जुग-श्विली मार्क्सवादी क्रातिके प्रभावमे आया, जो कि २१ (९) दिसम्बर १८७९ ई०मे गुर्जीके एक

छोटे-से कस्बे गोरीके एक जूते बनानेवालेके घरमें पैदा हुआ था। तरुण योसेफ "होनहार विरवानके होत चीकने पात" के अनुसार संघर्षमें भाग लेनेके लिये छटपटाने लगा। स्वयं अशिक्षित होते हुये भी योसेफके माता-पिताने उसे शिक्षा देनेकी कोशिश की, और चाहा कि वह ईसाई-धर्मका पुरोहित बनकर सम्मानका जीवन बिताये। लेकिन ईसाई-धर्मकी पाठशालाके वातावरणमें भी मार्क्सवादने घुसकर उसे अनीश्वरवादी बना दिया। १८९८ ई०में ही योसेफ तिफलिसके समाजवादी जनतान्त्रिक संगठनमें सम्मिलित हो गया था, और इसी समय उसे लेनिनकी प्रथम पुस्तक पढनेका अवसर मिला। योसेफ जुगेदिवलीने अपने क्रांतिकारी जीवनमें स्तालिनका छद्म नाम स्वीकार किया था, जो कि उसके गुरु-की तरह ही उसका भी नाम बन गया।

संस्कृति, साहित्य और विज्ञान—१९ वी सदीके अन्त और २० वी सदीके आरम्भतक रूसी प्रतिभाका लोहा दुनियामें सर्वत्र माना जाने लगा, यद्यपि अंग्रेजोंके गुलाम भारतको रूस देशका तब तक पता नही लगा, जब तक कि १९१७ ई०की बोल्शेविक क्रांतिकी खबर बिजलीकी तरह दुनियामें दौडने नहीं लगी। इसी कालमें इलिया मेचनिकोफ (१८४५–१९१६ ई०) जैसा महान् प्राणिशास्त्री, इवान पीतर-पुत्र पावलोफ (१८४९–१९३६ ई०) जैसा अद्वितीय शरीरमनोविज्ञानशास्त्री हुये। बिजलीके प्रथम आर्क-लैम्पका आविष्कारक प० य० याब्लोचकोफ (१८४७–९४ ई०) भी इसी समय हुआ, जिसके बिजलीके लैम्पकी कदर देशमें नहीं हुई, तो वह पेरिस चला गया, जहा १८७६ ई०में उसने अपने आविष्कारको पेटेंट कराया, और पेरिसमें पहलेपहल उसकी बिजली-बत्ती जलाई गई। बाहरके लोग अभी भी नहीं जानते, कि बिजली-बत्तीका आविष्कारक अमेरिकन नहीं, एक रूसी था। एडिसनने बिजली-बत्तीके आविष्कारक होनेका दावा किया, लेकिन उससे पहले एक दूसरे रूसी आविष्कारक लादिगिनने उस तरह की बिजली बत्ती तैयार कर दी थी, इसलिये अमेरिकन अदालतने एडिसनके दावेको मंजूर नहीं किया। हा, लादिगिनके आविष्कारकी कदर उसकी मातृभूमिमें नहीं हुई और उसका विकास अमेरिकनोंने किया। अलेक्सान्द्र स्तेपान-पुत्र पापोफ (१८५९–१९०५ ई०) ने १८९५ ई०मे बेतारके तारका आविष्कार किया। बेतारके तारको इतालियन मार्कोनिका आविष्कार बतलाया जाता है, लेकिन उससे पहले रूसी पापोफ और भारतीय जगदीशचन्द्र बोस उसका आविष्कार कर चुके थे। इन दोनों देशोंकी सरकारोंकी जडता और पक्षपातके कारण उन्हें आगे बढनेका मौका नहीं मिला। पापोफने १८९५ ई०मे युद्धमंत्रीके पास अपने प्रयोगोंके लिये एक हजार रूबल अनुदान करनेके लिये प्रार्थना की थी, जिसका जवाब मिला था—"मै इस तरहके ख्याली पुलावके लिये पैसा देनेकी इजाजत नहीं दे सकता।"

साहित्य और कला—इस कालके साहित्य-गगनके महान् नक्षत्र है—अन्तोन पावल-पुत्र चेखोफ (१८६०–१९०४ ई०), और अ० म० गोर्की (१८६८–१९३६ ई०)। इन दोनों महान् लेखकोंकी कितनी ही कृतियोंसे भारतीय पाठक भी परिचित हैं। इन दोनों हीको जारशाहीका कोपभाजन बनना पडा था। चेखोफ ४४ वर्षकी उमरमें तपेदिकसे मर गया, गोर्कीने नवीन रूसको अपने सामने फलते-फूलते देखा, और उसके निर्माणमें भाग लिया।

इस कालके चित्रकारोंमें रूसी ऐतिहासिक चित्रकलाका सर्वश्रेष्ठ आचार्य व० ई० सुरकोफ (१८४८–१९१६ ई०), छवि-चित्रकलाका महान् निर्माता व० अ० सेरोफ (१८६५–१९११ ई०), प्रकृतिचित्रणका जादूगर ई० ई० लेवितन (१८६१–१९०० ई०) हुये। संगीतके अद्भुत कलाकार प्योत्र इलिया-पुत्र चेकोव्स्की (१८४०-९३ ई०) का समय भी यही है।

२० वी सदीके आरम्भ होते-होते सामन्तवादी जमीदारों और उनके स्वार्थोंकी रक्षाकी कोशिश करते हुये भी रूस पूँजीवादी युगमें पूरी तौरसे प्रविष्ट हो गया। लेकिन उद्योगीकरणमें पश्चिमी युरोपके पूँजीपतियोंका सबसे बडा हाथ था, फ्रांसीसी और जर्मन बक इसमें खास तौरसे भाग ले रहे थे। वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें पश्चिमी युरोपीय पूँजीपतियोंका एक अरब सुवर्ण रूबल रूसके उद्योग-धंधोंमें लगा हुआ था। यह सब किसी पुण्यके लिये नहीं किया जा रहा था, इसे कहनेकी जरूरत नहीं। १८९५ ई०से १९०४ ई० तक अपने इस व्यवसायसे विदेशी पूँजीपतियोंने तिरासी करोड सुवर्ण

रूबल नफा कमाया, जो कि उतने समयमे लगाई गई पूजीसे कही अधिक था। जारकी सरकारपर १९०३ ई०में तीन अरब सुवर्ण रूबलका विदेशी कर्ज था, जिसपर तेरह करोड रूबल प्रतिवर्ष सूद देना पडता था। रूसी सामन्त और जमीदार अपने पुराने स्व र्थोंको अक्षुण्ण रखनेमें इतने मस्त थे कि उन्हें अपनी पूजीको इकट्ठा करके उद्योग-धधोमे लगानेकी उतनी फिक्र नही थी, जितनी कि पेरिस और दूसरी युरोपकी विलासपुरियोमे गरीबं के गाढकी कमाईको उडानेमे।

लेकिन अब इस पुराने रूसको वदलनेके लिये एक ठोस क्रातिकारी शक्ति पैदा हो गई थी। १९०० ई०के दिसम्बरमे "इस्क्रा' (चिनगारी) के नामसे लेनिनने अपना पत्र निकाला, जिसके सम्पादनमे प्लेखानोफ और दूसरे समाजवादी जनत्रात्रिक भी सहायता करते थे। वाहर छपकर वह रूसमे गुप्त रीतिसे भेजा जाता था। अपने मुखपृष्ठपर छपे सूत्र "चिनगारी ज्वाला जलायेगी" के अनुसार सचमुच ही रूसमे ज्वाला ज लानेमें उसने वहुत काम किया। पीतरबुर्गके एक जुलाहे पाठक ने इसके वारेमे लिखा था—"जव तुम इस पत्रको पढते हो, तो तुम्हे मालूम होता है कि जारशाही सेना और पुलिस हम कमकरों और हमारे बुद्धिजीवी नेताओसे क्यो इतना डरते है ? पुराने समयमें प्रत्येक हडताल एक बडी घटना थी, किन्तु अव हरएक आदमी जानता है कि केवल हडताले कुछ नही है, हमे इनके लिये लडते हुये मुक्ति भी प्राप्त करनी है।" १९०० ई० और १९०१ ई०मे भी प्रथम राजनीतिक प्रदर्शन होने लगे, जिनके द्वारा समाजवादी क्रातिकारियोके वढते हुए प्रभावका पता लगने लगा। १९०० ई०के मई-दिवसमे खरकोफके मजदूरो और विद्यार्थियोने लाल झडेके साथ सडकोपर जलूस निकाला था, जिसमे वह नारा लगा रहे थे—"स्वेच्छाचारकी क्षय"। १९०१ ई० का मई-दिवस सारे देशमें हडतालो और प्रदर्शनोके साथ मनाया गया। १९०२ और १९०३ ई०मे और भी राजनीतिक हडताले और प्रदर्शन हुये। १९०२ ई०मे किसानोके भी कई आन्दोलन हुये और उनके पथप्रदर्शनके लिये लेनिनने "गावके गरीबोसे" नामकी एक छोटी किन्तु वहुत ही प्रभावशाली पुस्तक लिखी। इस तरह क्रातिकी शक्तिया वढ रही थी, लेकिन दूसरी तरफ इन शक्तियोंमें कमजोरी पैदा करने के लिये नरमदली क्रातिकारी फूट भी पैदा करने लगे थे। गरमदल के क्रातिकारी प्रोग्रामको लेनिन और उनके समर्थक मानते थे, जिनका समाजवादी जनतात्रिक पार्टीमे वहुमत था। इसीलिये लेनिन और उसके अनुयायी वोल्शेविक (वहुमतीय) कहे जाने लगे। नरमदली अल्पमतमे होनेके कारण मेन्शेविक (अल्पमतीय) कहे जाने लगे। १९०३ ई०की जुलाई और अगस्तमें ब्रुसेल्स और पीछे लन्दनमे पार्टीकी जो द्वितीय काग्रेस हुई थी, उसी समय उसके यह दो टुकडे हो गये। अपनी सूझ, तत्परता और त्यागसे वोल्शेविक मजदूरो और दूसरी शोषित जनतामें अपने प्रभावको वढाते गये, जव कि मेन्शेविक वुद्धि-जीवियोमें अपनी कलावाजी दिखानेतक ही अपने कामकी इतिश्री समझते थे।

रूस-जापान-युद्ध (१९०४ ई०)—रूसका प्रसार जिस तरह प्रशान्त महासागर तक हुआ, इसे हम वतला आये है। अभी तक उसका प्रतिद्वद्वी चीन था, जिसकी निर्वल और भ्रष्टाचारपूर्ण सरकार रूसके सामने वरावर दवती रही, अव पूर्वी एसियामें जापान-जैसी एक वडी शक्ति पैदा हो गई थी। १८९४-९५ ई० में जापानने चीनको हराकर अपनी शक्तिका परिचय दिया था, और क्षतिपूर्तिकी वहुत भारी रकम तथा कोरिया, पोर्ट आर्थर, ल्याउतुङ-प्रायद्वीपके साथ मचूरियाके सारे दक्षिणी समुद्रतटपर अपने अधिकारको चीनसे मनवाया था। "कटकेनैव कटकम्" की नीतिको अपनाते हुये चीन चाहता था, कि जापानको रूससे भिडा दिया जाय। १८९६ ई०मे जारके वित्तमत्रीने चीनी पूर्वी रेल वनवानेके लिये चीनके साथ एक सधि की। इससे पहले साइवेरियाकी रेलवे वन चुकी थी। इस रेलको वनाकर जारशाही रूस मचूरिया और कोरियापर हाथ साफ करना चाहता था। १८९८ ई० मे ल्याउतुङ प्रायद्वीप और उसके पोर्ट आर्थर वन्दरगाहको भी रूसने ठीकेपर ले लिया, और उसने जल्दी-जल्दी हर्बिनसे पोर्टआर्थर तक रेल वनानेका काम शुरू कर दिया। इस समय गिद्धकी तरह पश्चिमी युरोपकी शक्तिया चीनमे वन्दरवाट कर रही थी। जर्मन कैसरने क्याउ चाउके वन्दगाहको दखल कर लिया। इगलैडने हागकागको तो आधी शताब्दी पहले ही ले लिया था, अव उसने वेई-हाइ वेइ वन्दर-गाहपर भी अधिकार कर लिया। फ्रास क्या पीछे रहने लगा ? उसने भी अपने हिन्दचीन अधिकृत प्रदेशकी सीमाको चीनके भीतर वढाया। सयुक्त राष्ट्र अमरीकाने सवके लिये "खुला दरवाजा"

माग करके पूजीपति घडियालोको चीनमे खुल खेलनेकी माग रक्खी। पश्चिमी शक्तियोकी इस लूटके कारण चीनी जनतामे वहुत असतोष हुआ, और १९०० ई० में ववसरका भयकर विद्रोह हो गया, जिसके दवानेमें पश्चिमी शक्तिय.के साथ रूसने भी भाग लिया। निकोलाइ II की सरकारने कोरियाकी सीमात नदी यालू-उपत्यकाके जगलोकी लकडीका ठेका एक रूसी कम्पनीको दिलवाया, जिसक। अर्थ केवल यही था, कि उसके द्वारा रूसी सेनाको आसानीसे कोरियामें पहुचाया जा सके। पोर्टआर्थरको भी रूसी नौसैनिक अड्डेके रूपमे परिणत कर दिया गया। जापान यह सब देखते हुये चुप नही रह सकता था और न रूसके प्रतिद्वद्वी अग्रेज ही मौकेसे चूकनेवाले थे। दूसरोंको लडाकर अपना उल्लू सीधा करना अग्रेजोकी पुरानी नीति थी। उन्होने १९०२ ई० में रूसके विरुद्ध जापानसे सैनिक-सधि की, जिससे जापानको वहुत वल मिला।

रूसमें अव भी सामन्ती मनोवृत्ति काम कर रही थी, उद्योग-धन्धोको पश्चिमके पूजीपतियोंके सहारे खडा किया गया था, जो इस वातका पूरा ध्यान रखते थे, कि औद्योगिक वस्तुओके लिये रूस हमसे स्वतत्र न होने पाये। और तो और, सैनिक हथियारोंमें भी रूस परमुखापेक्षी था। शासक वर्गकी अदूरदर्शिता और अयोग्यताके कारण किसी क्षेत्रमें भी प्रतिभाये आगे नही वढने पाती थी। रूसी सेनापतियो और युद्ध-सचालकोको चुस्ती किसे कहते है, यह मालूम ही नही था। सुवारोफ, कतुजोफके समयसे सैनिक प्रतिभाओकी उपेक्षा करके खुशामदी ऐरे-गैरे नत्थूखैरे सामन्त-पुत्रो और जारके कृपापात्रोको आगे वढाया जाता था। रूस अभी युद्धके लिये तैयार नही है, यह जापानियोको पता था। सारे मचूरियामें उसके गुप्तचर फैले हुये थे, जिनसे जापानियोको सारे भेद मालूम थे। इसी समय २६ जनवरी १९०४ ई०की रातको विना युद्ध घोषित किये जापानी ध्वसक पोतोने अधेरेमें छिपकर पोर्ट-आर्थरपर आक्रमण कर दिया। इस समय मुख्य सेनापति अद्मिरल स्तार्ककी जयन्ती मनाते हुये रूसी नौसैनिक अफसर नाचमे मस्त थे। जापानियोने रूसके सर्वश्रेष्ठ तीन युद्धपोतोको डुवा दिया, और २७ के सवेरे वम-वर्षा करके उन्होने चार और युद्धपोतोको नुकसान पहुचाया। आरम्भ रूसियोके लिये वहुत वुरी तरह हुआ, और उसके वाद जारशाही सेना हारपर हार खाती गई। अपने हाथियारो और वीरताकी अपेक्षा ईसाकी मूर्तियोपर मुख्य सेनापति जेनरल कुरोपात्किनका अधिक विश्वास था। उसने गाडियोमें भर-भरकर युद्ध-क्षेत्रमें ले जा इन मूर्तियोको वटवाया। रूसी नौसैनिको और सैनिकोंने लडनेमें अपनी आनुवशिक वहादुरीको दिखलाया, लेकिन हथियारोके अभाव और सेनापतियोंकी अयोग्यताके कारण वह जापानियोके खिलाफ पासा नही पलट सकें। फर्वरी १९०४ ई० में रूसी ध्वसक "स्तेरेगुश्नीने" चार जापानी ध्वसको और क्रूजरोका मुकाविला किया, जिसमेंसे एकको उसने डुवा दिया। आत्मसमर्पण करनेके लिये कहनेपर रूसी नौसैनिकोने साफ इन्कार कर दिया। और जव उन्होने देखा, कि हमारा जहाज जापानियोके हाथमें जाना चाहता है, तो गोलोकी वर्षाके भीतर दो अज्ञात नौसैनिकोने नीचे जाकर पानी आनेके रास्तेको खोल दिया, और इस प्रकार अपने जहाजके साथ समुद्रतलमे वैठकर उन्होने अपनी वीरताका परिचय दिया। पोर्टआर्थरने कुछ समय तक जापानी घिरावेमे रहते हुये प्रतिरोध किया, लेकिन उसे अन्तमें आत्मसमर्पण करना पडा।

१९०५ ई०में जारशाही रूसने जापानके हाथो वुरी तौरसे हार खाई, लेकिन रूसकी सैनिक पराजयने क्रातिके आरम्भ करानेका काम दिया।

१९०५ ई० की क्राति——रूस जापान युद्धके कारण रूसकी आर्थिक अवस्था वहुत ही विगड गई। खर्चकी सीमा नही थी। वडे-वडे सूदपर विदेशसे कर्ज लेना पडा, जिसके लिये कर वढ़ाना जरूरी था, इस प्रकार जीवनोपयोगी सभी चीजोका दाम वढ गया। उधर भारी सख्यामे किसानोकी सेनामें भरती करनेके कारण खेतीको भी वहुत नुकसान पहुचा। कारखानोमें पूजीपतियोने मजूरी कम करनी चाही, जिसका परिणाम हुआ हडतालें। नवम्वर और दिसम्वर १९०४ ई०में ही पीतरवुर्ग, मास्को और दूसरे नगरोंमें वोल्शेविकोने सडकोमे जलूस सगठित किये, जिनका नारा था "स्वेच्छाचारिताका क्षय, युद्ध वद करो।" लोगोंके असतोषको शात करनेके लिये १२ दिसम्वर १९०४ ई०को घोषणा निकालकर जारने कुछ हलके-से अधिकारोको देनेका वचन दिया।

३ जनवरी १९०५ ई० को पुतिलोफ (आधुनिक किरोफ) कारखानेमें चार मजदूरोको निकाल दिया गया, जिसका परिणाम हुआ अगले ही दिन बारह हजार मजदूरोकी हडताल। पीतरबुर्गके दूसरे कारखानोंके मजदूरोने भी उनकी सहानुभूतिमे हडताल की और ८ जनवरीको डेढ लाख मजदूरोंने काम छोडकर उसे सार्वजनिक हडतालका रूप दे दिया। इतनी बडी सख्यामें उत्तेजित और बेकार मजदूर कोई और बडा कदम न उठा लें, इसके लिये ईसाई पादरी गपोनने सलाह दी, कि मजदूरोकी ओरसे जारके पास आवेदन-पत्र भेजा जाय। अभी भी जारके प्रति लोगोकी सद्‌भावना बनी हुई थी, और वह इसके लिये तैयार हो गये। उधर गपोनने इसकी सूचना खुफिया पुलिसको दे दी थी, और जारशाहीने खुलकर गोली चलानेकी तैयारी कर रक्खी थी। आवेदन-पत्रके कुछ वाक्य थे—"हम पीतरबुर्गके मजदूर, हमारी बीबिया, हमारे बच्चे और हमारे असहाय बूढे मा-बाप, हे प्रभु, तेरे पास सहायता और रक्षा पानेके लिये आये हैं। हम गरीबीसे पीडित, अत्याचारके मारे असह्य मेहनत के बोझसे दबे जा रहे हैं। हमें अपमान सहना पडता है। हमारे साथ मानवोचित वर्ताव नही होता। हमारा धैर्य टूट रहा है, हम गरीबीके दलदलमें और नीचे डूबते जा रहे हैं। हम अधिकार और ज्ञानसे वञ्चित हैं। स्वेच्छाचारिता और क्रूरताने हमारा गला घोट रक्खा है। हमारा धैर्य खतम हो रहा है। वह भयकर घडी आ गई है, जब कि इस असह्य पीडाको और अधिक सहनेकी जगह मरना हमारे लिये अच्छा है।" इसमें कुछ आर्थिक और राजनीतिक मागोके साथ सविधान सभाके बुलानेके लिये माग की गई थी। बोल्शेविकोने बहुत समझाया, कि जारके पास प्रार्थनापत्र देनेसे स्वतत्रता नही मिल सकती, लेकिन अब भी बहुत-से मजदूर कह रहे थे—"हम तजर्बा करके देखेगे। जार हमारी उचित मागोको अस्वीकार नही करेगा।"

२२ (९) जनवरी १९०५ ई० रविवारका दिन था, जब कि एक लाख चालीस हजार मजदूर जारके चित्र, झडे और ईसाई मूर्तिया लिये प्रार्थनाके गीत गाते हेमन्त प्रासादकी ओर चले। जारकी सरकारको मजदूरोका स्वागत गोलियो और सगीनोसे करना था। हेमन्त प्रासादकी सडकोपर जगह-जगह पलटन तैनात थी, लेकिन तो भी बहुत-से मजदूर प्रासादके मैदानमें पहुचनेमे सफल हुये। निहत्थी जनता पर गोलियोकी वर्षा होने लगी, एक हजार मजदूर मारे गये, दो हजार से अधिक घायल हुये। बोल्शेविकोने यद्यपि पहले मना करनेकी कोशिश की, लेकिन न माननेपर उन्होने मजदूरोका साथ नही छोडा, और वह भी साथमें जाकर गोलीके शिकार हुये। मजदूरोने ९ जनवरीके दिनको "खूनी-रविवार" का नाम दिया, उनके हृदयसे आवाज निकलने लगी—"हमारा कोई जार नही है।" उन्होने अपने घरोमें टागे हुये जारके चित्रोको फाडकर फेंक दिया, और उसके बाद जबतक बोल्शेविक क्राति नही हुई, "खूनी रविवार" मजदूरोके लिये शहीदोका स्मारक पर्व-दिन बन गया। बोल्शेविकोने पुस्तिकायें निकालकर कहा—"हथियार, साथियो।" इसपर मजदूर बन्दूककी दूकानो और मिस्त्री-खानोपर टूट पडे, वहासे उन्होने हथियार लेकर अपनेको हथियारबद किया। उसी ९ जनवरीके अपराह्नमें पीतरबुर्गके एक मुहल्ले वासिलियेव्स्की द्वीपमे लोगोने लडनेके लिये सडकपर बाडे खडी की। चारो ओर "स्वेच्छाचारिताकी क्षय" की आवाज गूजने लगी। सडकोपर कई जगह पुलिसके साथ जनताकी मुठभेड हुई। इस दिन जो पाठ रूसके मजदूरवर्गको पढाया गया, उसके बारेमे लेनिनने लिखा था—"अपने महीनो और वर्षोंके दरिद्र, दुखी और उदास जीवनमे जिसे नही सीख सकते थे, वैसी क्रातिकी शिक्षा सर्वहारोने एक दिनमें पाई।" "खूनी रविवार" जारशाहीके लिये जलियानवाला बाग सिद्ध हुआ। हडतालका जोर और बढा। जनवरी ११ (२४) १९०५ ई०को मास्कोमें भी हड-ताल हुई, और इसके बाद पोलन्द, फिनलन्द, उक्रइन, काकेशस और साइबेरिया सभी जगह हडतालो-का तूफान आ गया।

१९०५ ई०के ग्रीष्ममें सर्वहारोका क्रातिकारी सघर्ष चारो ओर फैल गया। प्रथम मईके महोत्सव में दो लाख बीस हजार मजदूरोने पीतरबुर्गमे काम छोड दिया। मजदूरोंके सघर्षने किसानोपर भी प्रभाव डाला और गावोमे आन्दोलन बढ चला। रूसके केद्रीय इलाको, गुर्जी और बाल्तिक प्रदेशोमे एक ही साथ किसानोने जबर्दस्त आन्दोलन शुरू किया। फर्वरी १९०५ ई०मे कितनी ही जगहोपर किसानोने जमीदारोके खुदकाश्त खेतोको छीनना शुरू किया, और उस सालके वसततक रूसकी

देहातमें सर्वत्र किसान-सघर्ष शुरू हो गया। किसानोंने जमीदारोंके महलों और मकानोंको नष्ट कर दिया, उनके खेतो और चरागाहोपर अधिकार करके मनमाना जोतना शुरू किया। इतने व्यापक पैमानेपर हो रहे विद्रोहको दवाना जारशाहीके लिये आसान काम नही था, पर अभी सेनामें उतना असतोष नहीं था।

अब उसमे भी लक्षण दिखलाई देने लगे। १९०५ ई०में ही, जब कि अभी जापानसे लडाई चल रही थी, कालासागरके नौसैनिक वेडेमें असतोष फैल गया, और १४ (२७) जून १९०५ ई०को युद्धपोत "पोतोम्किन" के नौसैनिकोंने विद्रोह कर दिया, जिसका तुरन्तका कारण था, सडे-गले कीडे पडे हुये अवपके मासको सिपाहियोंमे परोसना। नौसैनिकोंने उसे खानेसे इन्कार कर दिया। कमाडरने मुखियोंको गोली मारनेका हुक्म दिया, जिसके विरोधमें सारे जहाजके सिपाहियोंने विद्रोह कर दिया। यद्यपि बडे नौसैनिक अफसरोंने विद्रोही नेता वकुलिन्चुकको मार दिया, लेकिन तुरन्त मत्युशेंको नामक दूसरे नाविकने नेतृत्वको सभाला। नाविकोंने वहुतसे अफसरोंको मारकर युद्ध-पोतको अपने हाथमे कर लिया। लाल झडा उडाते हुये जब वह अदेस्सा शहरके सामने पहुचे, तो वहाके मजदूरोंमें बिजली दौड गई, लेकिन नरमदली समाजवादी मेन्शेविकोंने उल्टा समझा-बुझाकर लोगोंको रोका। "पोतम्किन" कितने ही दिनोंतक लाल झडा उडाते हुये कालासागरमें इधरसे उधर घूमता रहा, लेकिन जब तटके किसी नगरसे सहायता नहीं मिली, और उधर गोला-बारूद भी कम होने लगा, तो रूमानियाके तटपर जाकर नाविकोंने आत्मसमर्पण कर दिया। रूमानियन सरकारने पीछे १९०६ ई० में क्रातिकारियोंको जारकी सरकारके हाथमे दे दिया, जिसने उनमेंसे वहुतोंको फांसीपर चढाया और वहुतोंको कालापानीकी सजा दी। यह पहली बार था, जब कि एक विशाल युद्धपोतके सारे सैनिकोंने जारके खिलाफ खुल्लमखुल्ला विद्रोह किया। इतिहासमे हम दूसरे तरहके विद्रोह देख चुके हैं। प्रभुवर्गमें ही किसी एक व्यक्ति या दलके विरुद्धने दूसरे दलका हथियार उठाना पहले भी देखा गया था, लेकिन यह विद्रोह बिल्कुल नये तरहका था, जिसमे दरिद्र और निरीह वर्ग सहस्राब्दियोंसे शासक दलके खिलाफ खुल्लमखुल्ला उठ खडा हुआ, मानो जिन ईंटोंसे प्रासाद बना था, वही अब प्रासाद को ढानेके लिये हिलने-डुलने लगी।

जापानसे सधि—जारशाही सेनापतियोंकी अयोग्यता और रूसके पिछडेपनके कारण जापान हारपर हार दे रहा था। इसी बीच "खूनी रविवार" और मजदूरो, किसानो तथा नौसैनिकोंके विद्रोहोंने ऐसी हालत पैदा कर दी, कि जारशाहीके लिये और अधिक दिनतक जापानके साथ लडनेका मतलब था घरमें ही तख्ता उल्ट जाना। चूशिमाकी खाडीमें रूसी जगी वेडेका जब जापानियोंने सहार कर दिया, तो विदेशी पूजीवादियोंको भी भय लगने लगा, कि कही पेरिसकी आवृत्ति बडे पैमानेपर रूसमे न होने लगे, इसीलिये उन्होने जारकी सरकारपर युद्ध वद करके जापानके साथ सुलह कर लेनेके लिये जोर देना शुरू किया, और यह भी कि जारको भीतरी शाति बनानेके लिये कुछ वैधानिक सुधार देकर लोगोंको अपनी तरफ खीचना चाहिये। उधर जापानकी भी भीतरी हालत अच्छी नही थी, क्योंकि युद्धमे अपार धन और जनका सहार हो रहा था, जिससे वहाके लोगोंमें भी असतोष फैलनेका डर था। जापानके कहनेपर सयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके राष्ट्रपति थ्योडोर रूजवेल्टने वीचमे पडना स्वीकार किया। जारशाही युद्धपरिषद्ने ६ जून (२४ मई) १९०५ ई०को जारकी अध्यक्षतामे वहुमतसे शातिके पक्षमें फैसला किया, क्योंकि "हमारे लिये विजयसे भी अधिक महत्त्वकी चीज है घरेलू शाति हम असाधारण स्थितिमें आज पडे हुये हैं। हमे रूसके भीतर शातिको पुन स्थापित करना है।" जारशाहीने सुलह करना स्वीकार किया। जापानकी शर्तें वहुत कडी थी, लेकिन रूजवेल्टने भी दवाव डाला, और अन्तमें ५ सितम्बर (२३ अगस्त) १९०५ ई०को पोर्टस्मिथकी सधिपर हस्ताक्षर हुये। रूसने कोरियामें जापानके सैनिक, राजनीतिक तथा आर्थिक हितो और अधिकारोंको स्वीकार किया। पोर्ट-आर्थर और दलनीके अपने ठेकेवाले प्रदेशको उसने जापानके हाथमे सौंप दिया, सखालिन द्वीपका दक्षिणार्ध और पासके द्वीपोंको भी जापानके हाथमे दे दिया, एव पूर्वी चीनी रेलको केवल व्यापारिक दृष्टिसे चलाना स्वीकार किया।

जापानने जारशाही गर्वको चूर-चूर कर दिया। इस युद्धमे रूसके चार लाख आदमी हत, आहत

या बदी हुये और तीन अरब रूबल धनका नाश हुआ। रूसी जनतापर इसका बुरा प्रभाव पडना ही चाहिये था, लेकिन जारशाही अब पूरबके झगडेसे छुट्टी पाकर क्रांतिको कुचलनेमे समर्थ थी, तो भी संधिपर हस्ताक्षर होनेके सत्ताईस दिन बाद २ अक्तूबर (१९ सितम्बर) १९०५ ई०में मास्कोके प्रेसकर्मियोने आम हडताल कर दी, जिनका साथ वहाके रोटी बनानेवालो, तम्बाकू-मजदूरो तथा दूसरे कमकरोने दिया। पुलिस और कसाक सैनिकोने उनके प्रदर्शनोको बलपूर्वक छिन्न-भिन्न करना चाहा, इसपर मजदूरोने भी पुलिसके ऊपर तमचे चलाये। छ दिन बाद २५ सितम्बर (पुराना पचाग) को मास्को की एक सडकपर मजदूरो और जारके कसाकोमे बाकायदा लडाई हुई। दो मजदूर मारे गये, आठ घायल हुये और १९२ गिरफ्तार हुये। ७ अक्तूबरको मास्को-कजान्स्कया रेलवेके मजदूरोने हडताल कर दी, जिनका साथ ८ अक्तूबरको दूसरी रेलोके मजदूरोने भी दिया। ११ अक्तूबरको रेलवे हडतालने सारे राष्ट्रमे आम हडतालका रूप लिया, जिसमे स्कूलके अध्यापक, आफिसोके कर्मचारी, कानूनपेशा लोग, इजीनियर और विद्यार्थी भी सम्मिलित हुये। उन्होने सविधान-सभाके बुलानेकी माग की। जारने बहुत चाहा, कि गोलियोकी वर्षासे विद्रोहको दबा दिया जाय, लेकिन वह उसमें आसानीसे सफल कैसे हो सकता था? अक्तूबर महीनेकी इन हडतालोने सरकारी शासन-यत्रको अकर्मण्य बना दिया था।

इसी समय विद्रोहियोने अपने सगठन, सघर्ष और शासनको चलानेके लिये एक नये यत्रका आविष्कार किया, जिसने १९०५-६ ई०की क्रांतिमे ही बहुत काम नही किया, बल्कि १९१७ ई०की बोल्शेविक-क्रांतिकी सफलतामें भी उसका बहुत बडा हाथ था। यह सगठन था मजदूर-प्रतिनिधियोकी सोवियत। सोवियत शब्दका वही अर्थ है, जो हमारे यहा पचायतका, लेकिन शासन और सैनिक अधिकारोके भी हाथमें लेनेसे सोवियतको मामूली पचायत नही कहा जा सकता। १३ (२६) अक्तूबरको, जब कि हडताल चल रही थी, पीतरबुर्गके कमकरोने अपने कारखानोमे सभाये की, और हडतालका नेतृत्व करनेके लिये मजदूर-प्रतिनिधियोकी सोवियतके लिये अपने आदमी चुने। यद्यपि इसका आरम्भ हडतालकी सयुक्त समितिके रूपमे हुआ था, लेकिन क्रांतिने जल्दी ही उसे शक्तिको सभालनेके लिये मजबूर किया। पीतरबुर्गके मजदूरोकी देखादेखी रूसके सभी बडे-बडे नगरोमे मजदूर प्रतिनिधि सोवियते १९०५ ई० के अक्तूबरसे दिसम्बर तक कायम होती रही। मास्को सोवियत बोल्शेविको के प्रभावमे थी, इसलिये वह हथियारबद विद्रोहकी तैयारीका सगठन बन गई। काकेशस, लतविया और त्वेर एव मास्को गुर्बानिया जैसे कितने ही केंद्रीय रूसके इलाकोमें सैनिक प्रतिनिधि भी सोवियतके सदस्य बने।

रूसके भिन्न-भिन्न जगहोमें क्रांति और विद्रोहकी जो लहर फैली हुई थी, उसका प्रभाव वोल्गा-प्रदेश तथा दूसरे इलाकोकी एसियाई जातियोपर भी पडे बिना नही रहा। वोल्गासे अल्ताइ और अफगानिस्तानतक जारकी हुकूमत मुसलमानोके ऊपर थी। वहा अभी राजनीतिक जागृति इतनी नही हुई थी, कि वहाके लोग धर्म और साम्प्रदायिकतासे ऊपर उठते। वोल्गा-प्रदेश और बाशकिरियामे राष्ट्रीयतावादी मध्यमवर्गने मुस्लिम लीग कायम की। लीगने धीरे-धीरे मध्य-एसिया और काकेशस के मुसलमानोको भी प्रभावित करना शुरू किया। साम्प्रदायिकतापर निर्भर आन्दोलन और सगठनका नेतृत्व मुल्लोके हाथमे जाना जरूरी था, और मुल्ला रूसियोके खिलाफ जहाद करनेका ही तरीका पसद कर सकते थे, लेकिन बहुतसे एसियाई इलाकोमे रूसी उनके पडोसी किसान और मजदूर बनकर बस गये थे, जो विशाल दृष्टिपूर्वक सचलित राष्ट्रीय आन्दोलनमे एसियाई जातियोके स्वतत्रताके युद्धमे सहायक बन सकते थे। लेकिन अभी यह काम बारह साल बाद होनेवाला था। १९०५ ई०के अन्तमें तारतार मध्यमवर्गीय राजनीतिक नेताओने कजानमे प्रथम मुस्लिम काग्रेस बुलाई, जिसने हमारे यहा के पुराने काग्रेसियो की तरह जारसे भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, कि मुसलमानोको भी वही अधिकार मिलने चाहिये, जो कि बादशाहकी रूसी प्रजाको प्राप्य है। १९०५ ई०में चुवाशोमे भी राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू हुआ, लेकिन वह शुद्ध किसान आन्दोलन था, जो चाहता था, कि किसानोको धरती और मुक्ति मिले। चुवाश और मारी लोगोके भीतर हो रहे किसान आन्दोलनको अखिल रूसी किसान सघके सदस्योने सचालित किया था। किसानोने जमीदारोमे जमीन छीनने और अपनी भाषामे स्कूलोके खोलनेकी माग की। साइबेरियाके बुरियत मगोल भी जारशाही अफसरोके अत्याचारसे तग आ गये थे, उन्होने

साइवेरीय जातियोंकी लीग स्थापित की। १९०५ ई० ही में याकूतोंमें भी जागृति हुई, और उन्होंने याकूत लीग कायम की, जिसे जारशाहीने जल्दी ही दवा दिया।

दिसम्बरका विद्रोह—रूसी कमकर समझने लगे थे, कि केवल राजनीतिक हडतालोंसे काम नहीं चल सकता। अक्तूवरकी हडतालोंके वाद सबसे पहले हथियारवद विद्रोह करनेवाले थे क्रोन्स्तात् नौसैनिक अड्डेके नाविक और तोपची। २६ और २७ अक्तूबर (पुराना पचाग) के दो दिन और दो रातोंतक रूसका यह मशहूर नौसैनिक अड्डा विद्रोहियोंके हाथोमे रहा, लेकिन अभी उनका भीतर-वाहरका सगठन इतना मजवूत नहीं था, इसलिये २८ अक्तूवरको जारशाही सेनाने उसे दवा दिया। दो सौ विद्रोहियों तथा उनके नेताओंको फौजी अदालतद्वारा कडे दड दिये गये।

इस समय रूस-अधिकृत पोलन्दमें फौजी कानून घोषित किया गया था। उसके उठा लेने तथा क्रोन्स्तातके नाविकोंको मुक्त करानेके लिये १४(१) नवम्बर १९०५ ई०को पीतरवुर्गकी मजदूर-प्रतिनिधि-सोवियतने एक आम हडताल घोषित की। जारकी सरकारको मजवूर होकर उनकी मांगोंको स्वीकार करना पडा, पोलन्दमे मार्शल-ला (फौजी कानून) उठा दिया गया, और क्रोन्स्तातके नाविकों पर फौजी अदालतमे कोर्ट मार्शल द्वारा फासीका दड दिलानेकी जगह साधारण सैनिक अदालतमें मुकदमा चलाया गया, जिसने ८३ विद्रोहियोंको छोड दिया, १२३ को जेलकी और केवल नौ को कालापानीकी सजा दी। इसमें शक नहीं, पीतरवुर्गके कमकरोंकी हडतालने क्रोन्स्तातके वहुतसे विद्रोहियोंके प्राणोंकी रक्षा की। क्रातिकी इस दूसरी लहरने कालासागरके नौसैनिकोंको प्रभावित किया। २७ (१४) नवम्बरको क्रूजर "ओचाकोफ" के नाविकोंने विद्रोह किया। "पोतेम्किन"के नाविकोंकी जो गति हुई थी, उससे ये नाविक हताश नहीं हुये थे। २८ (१५) नवम्बरको दूसरे सैनिक पोतों और सेवस्तापोलके दुर्गमें काम करनेवाले सैनिकों और कमकरोंने ओचाकोफके विद्रोहियोंका साथ दिया। "पोतोम्किन" का नाम "पतेलेइमोन" रखकर जारशाहीने उसे सुरक्षित समझा था, लेकिन पोतेम्किनके ऊपर फिर लाल झडा फहराने लगा। अभी भी दूसरे युद्धपोत और सैनिक जारशाहीके भक्त थे। २८(१५)नवम्बरको ही तट और जहाजकी तोपोंने "ओचाकोफ" पर गोलावारी शुरू की, जिससे उसमें आग लग गई। नाविकोंने समुद्रमें कूदकर वचनेकी कोशिश की, लेकिन उन्हें मशीनगनोंकी गोलियोंसे भून दिया गया। विद्रोहियोंका नेता लफटेनेंट स्मिथ और दूसरे नेताओंको कोर्टमार्शल करके गोलीसे उडा दिया गया। इस प्रकार कालासागरका विद्रोह दवा दिया गया।

नवम्बर और दिसम्वरके महीनोंमें अवकी किसानोंके विद्रोहने और भी जोर पकडा। युरोपीय रूसके एक तिहाईसे अधिक इलाकोंमें किसान जमीदारोंको भगाकर उनसे खेतोंको छीन रहे थे, उनके मकानों और महलोंको लूटते वरवाद कर रहे थे।

क्रातिकी प्रगतिको लेनिन अपने निर्वासित स्थान (जेनेवा)से गम्भीरतापूर्वक वरावर देख रहे थे। नवम्वर (१९०५ ई०)मे क्रातिकारी सघर्षका नेतृत्व करनेके लिये उन्होने रूसमे आना जरूरी समझा। दिसम्बर १९०५ ई०में फिनलैंडमें तम्मेरफोर्स नगरमें वोल्शेविकोंका एक सम्मेलन हुआ। यहींपर स्तालिनको लेनिनको देखनेका सर्वप्रथम सौभाग्य प्राप्त हुआ। लेनिनके सुझावपर सम्मेलनने सदस्योंको अपने-अपने इलाकेमें विद्रोह-सचालन करनेका आदेश दिया। लेकिन दिसम्वरके आरम्भ तक जारशाहीने अपनी शक्तिको पहलेसे अधिक दृढ कर लिया था। मचूरियाके युद्धक्षेत्रसे कितनी ही सेनायें लौटकर युरोपीय रूसमें पहुच गई थीं। अवकी मास्कोका नम्वर पहला था। वहाकी सोवियतके नेता वोल्शेविक थे। उन्होंने हथियारवद विद्रोहकी तैयारी वडे जोर-शोरसे शुरू की। उनके प्रयत्नसे मास्कोकी छावनीमें भी विद्रोहकी लहर फैल गई, जिसमें रस्तोफ रेजिमेंट पहिले रही। १५ (२) दिसम्वरको सिपाहियोंने अपने अफसरोंको गिरफ्तार कर लिया, और रेजिमेटके कामके सचालनके लिये सिपाहियोंकी एक समिति निर्वाचित की। लेकिन मास्कोकी दूसरी रेजिमेंटोने उनका अनुसरण नहीं किया, इसलिये १७ (४) दिसम्वरको इन सैनिकोंको दवा दिया गया। अगले दिन मास्कोके वोल्शेविकोंने एक सम्मेलनमें मास्को सोवियतपर जोर दिया, कि वह हथियारवद विद्रोहको वढानेके लिये आम हड़ताल घोषित करे। २० (७) दिसम्वरके सवेरे आम हडताल शुरू हुई। वन्दूकें-पिस्तोल पर्याप्त नहीं थे, इसलिए मजदूरोंने अपने मिस्त्रीखानोंमें कामचलाऊ हथियार वनाये। दो हजार मजदूर-स्त्रिनमें करीव आधे

बोल्शेविक थे——लडनेवाले दलमे शामिल हुये। सडकोमे प्रदर्शन हुये, और मजदूर मुहल्लोमे पुलिसके साथ मुठभेड हुई। सारी अस्त्राखानी रेजिमेंट अपने पूरे सामानके साथ विद्रोहियोकी मददके लिये तैयार हो गई, लेकिन जारभक्त कसाकोने उन्हे घेरकर अपनी वारकोमे लौटनेके लिये मजवूर किया। दूसरी कितनी ही सदिग्ध रेजिमेंटोको भी अपनी वारकोमें ही रखा गया। सचमुच मास्को-स्थित उस समयके पन्द्रह हजार सिपाहियोमे तेरह सौ नब्बे ही ऐसे थे, जिनपर जारशाही विश्वास कर सकती थी। मास्कोके महाराज्यपालने राजधानीमे सेना भेजनेके लिये सदेशपर सदेश भेजे थे। लेकिन क्रातिकारी इस स्थितिसे पूरा फायदा नही उठा सके। २२ (९) दिसम्बरको सरकारी सेनाका पल्ला भारी हो गया, और उन्होने जगह-जगह आक्रमण करके विद्रोहियोको दवाना शुरू किया। स्थितिको प्रतिकूल देखकर मास्कोकी पार्टी कमीटी और मजदूर-प्रतिनिधि सोवियतने ३१ (१८) दिसम्बरकी रातको विद्रोहको वद करनेका निश्चय किया। सब जगह विद्रोहियोने लडाई बद कर दी। क्रातिकारियोको मौतसे कैसे वचाया जाय, इसका भार उख्तोम्स्की नामक इजन-ड्राइवरने अपने ऊपर लिया, और ट्रेनमे क्रातिकारियोको वैठाकर वह मशीनगनो और राइफलोकी गोलियोकी वर्षाके वीचसे ट्रेनको वडे वेगसे भगा ले गया। इस प्रकार उसने कितने ही क्रातिकारियोको फासी पानेसे वचा लिया। जारकी सेनाने मजदूरो और उनके परिवारके ऊपर भयकर अत्याचार किये, सैकडोको विना मुकदमा चलाये ही गोलियोसे ठडा कर दिया।

मास्कोके वाहर दूसरे कितने ही शहरोमे भी हथियारवद विद्रोह हुये। दक्षिणमे गोरलोवकामें विद्रोहियोने जारके राज्यको खतम करके मजदूर-प्रतिनिधियो का शासन आरम्भ कर दिया। मजदूरोके पास अपने हाथकी वनाई तलवारो, छुरो तथा थोडेसे तमचोके सिवा और हथियार नही थे, तो भी चार हजार क्रातिकारियोने जारके कसाकोके साथ पाच घटे तक वडी वहादुरीसे लडाई की, जिसमे उनके तीन सौ आदमी काम आये। दोनेत्स-उपत्यकामे सभी जगह पुलिस और सेनाके साथ विद्रोहियोकी लडाई हुई। लुगान्स्कमें सशस्त्र विद्रोह और हडतालका नेतृत्व क० ई० वोरोशिलोफने किया। १९०५ ई० के ग्रीष्ममे वोरोशिलोफको गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन दिसम्बरमे हजारो मजदूरोने जाकर "अपने लाल जेनरल" को जेलसे छुडा लिया। वोरोशिलोफकी सगठन शक्ति और सैनिक सूझ-वूझको देखकर एक सभामे एक मजदूरने कहा——"हम तुम्हें अपना लाल जेनरल नियुक्त करते है।" जिसका जवाव वोरोशिलोफने हसते हुये दिया——"तुम वहुत दूरकी वातकर रहे हो, मुझे सैनिक विद्याका कुछ भी पता नही है।" उस समय सचमुच ही किसको पता था, कि वोल्शेविक-क्रातिके समय वह अपनी सैनिक प्रतिभाका सुन्दर परिचय देगा, और अन्तमें रूस-जैसी दुनिया की एक शक्तिशाली सेनाका फील्ड-मार्शल और आज सोवियत सघ का राष्ट्रपति वनेगा।"

इसी प्रकार नवोरोसिस्कमे भी मजदूर-प्रतिनिधियोकी सोवियतने शासन अपने हाथमे सभाल लिया। कालासागर-तटवर्ती नगर सोचीमे भी यही वात हुई। साइवेरियाके क्रास्नोयार्स्क और चीता नगरोकी सेना विद्रोही मजदूरोसे मिल गई और यहा सिपाहियोके भी प्रतिनिधियोने मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियतोमें शामिल होकर विद्रोहका सचालन किया।

१९०५ ई०का विद्रोह खूनी हाथोसे दवा दिया गया। प्लेखानोफ अव नरमदली समाजवादी हो गया था। उसका कहना था–"उन्हे हथियार उठाना नही चाहिये था।" जिसका जवाव लेनिनने दिया–'इसके विरुद्ध हमें सारी शक्तिके साथ और दृढतापूर्वक आक्रमणात्मक रूपमें हथियार उठाना चाहिये था।" दिसम्वरकी क्रातिके असफल होनेके कारण थे–किसानोसे मदद नही मिलना, सेनाके भी अधिक भागका जारशाहीके साथ होना, विद्रोहियोका अच्छी तरह सगठित न होना और एक साथ उठनेकी जगह विद्रोह का भिन्न-भिन्न जगहोमे भिन्न-भिन्न समयोमे आरम्भ होना। विद्रोहियोके पास काफी हथियार नही थे, उन्होने आक्रमण करनेकी जगह प्रतिरोध करना पसद किया, तो भी इस क्रातिको असफल नहीं कहा जा सकता, क्योकि क्रातिकारियोने जो भूले इस समय की थी, अपनेमें जो कमिया पाई थी, उन्हे हटानेमे सफल होकर ही वह १९१७ ई०की क्रातिमे विजयी हुये। इसीलिये इस क्रातिको १९१७ ई० की क्रातिका रिहर्सल कहा जाना विलकुल ठीक है।

शासन-सुधार——जारशाहीने क्रातिको दवा दिया, लेकिन वह जानती थी, कि लोगोको सतुष्ट

करने या बोखेमें रखनेके लिये कुछ सुधार देना भी जरूरी है। ११ सितम्बर १९०५ ई०को इसीलिये राज्यदूमा (ससद)के चुनावकी घोषणा की गई। लेकिन यह पहिले ही निश्चय कर लिया गया, कि निर्वाचनमें राजभक्तोका ही पलडा भारी रहे, इसीलिये जहा जमीदारोको दो हजार मतदाताओं पर एक प्रतिनिधि और नगरोके सम्पत्तिवालोको सात हजार वोटरोपर एक प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार दिया गया था, वहा तीस हजार किसान और नब्बे हजार मजदूर वोटरोपर एक प्रतिनिधि भेजनेका नियम बनाया गया था। निर्वाचन भी सीधा नही था। प्रत्येक गावके वोटर वोलोस्त (जिले) के लिये निर्वाचक चुनते। ये निर्वाचक हरएक जिलेसे दो प्रतिनिधियोको कमिश्नरीके लिये चुनते। कमिश्नरियोके चुने हुये निर्वाचक गुवर्नियो (प्रदेशो)के लिये निर्वाचक चुनते, और गुवर्नियोके यह निर्वाचक दूमा (ससद) के लिये प्रतिनिधि चुनते। वोट भी गुप्त नही देने थे। जारकी सरकारने इस प्रकार समझ लिया था, कि हम ऐसे आदमियोको ही ससदमे आने देंगे, जो कि हमारी हामें हा मिलाये। मार्च और अप्रैल १९०६ ई०मे राज्यदूमाके लिये निर्वाचन हुये। उस समय पुलिसके अत्याचारोसे सब जगह त्राहि-त्राहि मची हुई थी। बोल्शेविकोने निर्वाचनके बायकाट करनेका निश्चय किया था। इसी समय १९०६ अप्रैलमें स्टाकहोममे समाजवादी जनतान्त्रिकोकी काग्रेस हुई। जारशाही अत्याचारोसे सबक सीखकर वोल्शेविक और मेन्शेविक दोनो इस काग्रेसमे सम्मिलित हुये, और समाजवादी जनतान्त्रिक पार्टीके भीतर अलग अलग दो गुटोको रखते हुये भी वह एक हो गये।

नवनिर्वाचित दूमाके उद्घाटनसे तीन दिन पहले अप्रैल १९०६ ई०के अन्तमे जारशाहीने "आधारिक राज्यविधान" प्रकाशित किये, जिसके द्वारा "सभी रूसोके सम्राट्में सर्वोच्च परमस्वतत्र राज्यशक्ति निहित है" को घोषित किया गया। साथ ही दूमापर अकुश रखनेके लिये एक राज्य परिषद् बनाई गई, जिसकी स्वीकृतिके बिना कोई भी कानून दूमा द्वारा पास होकर जारके पास भेजा नही जा सकता था। परिषद्में आधे सरकारी उच्च अधिकारी थे, जिनकी नियुक्ति जार करता, बाकी आधेमे स्थानीय बोर्डों (जेम्स्त्वो), अमीरो, पादरियो और विश्वविद्यालयोके प्रतिनिधि लिये जानेवाले थे।

इतने छद-बदके बाद निर्वाचित दूमा भी पूरी तौरसे जारशाहीके अनुकूल सिद्ध नही हुई। उसके ५२४ सदस्योमे २०४ किसान थे, जोकि वैसे किसान नही थे, जिन्हें जारका रूलाहकार प्रधानमत्री काउट वित्ते चाहता था। समाजवादी जनतान्त्रिक समूहके अठारह प्रतिनिधि दूमामें पहुँचे थे। वैधानिक जनतान्त्रिक या नरमदलियोकी सख्या १७९ थी।

यद्यपि विद्रोहका वेग दब गया था, लेकिन वह बिल्कुल खतम नही हुआ था। १९०६ ई०में मईसे अगस्ततक देशके आधे भागमे किसानोके आन्दोलन और बलवे चलते रहे। दूमा जनताके हितके लिये नही बनाई गई थी, इसलिये वह लोगोको शात करनेमें कैसे समर्थ होती? जब भूमि-सबधी समस्याके बारेमे किसान-प्रतिनिधियोने अपने अनुकूल प्रस्ताव पास करना चाहा, तो घबडाकर सरकारने ८ जुलाई १९०६ ई०को दूमाको खतम कर दिया।

उसी साल दूसरी दूमाका निर्वाचन हुआ। प्रथम दूमाका बोल्शेविकोने बायकाट किया था, लेकिन प्रथम दूमाके तजर्बेसे उन्हे पता लग गया, कि दूमाको अपने विचारोके प्रचारके लिये एक अच्छा प्रभावशाली भाषणमच बनाया जा सकता है, इसीलिये लेनिनके परामर्शके अनुसार बोल्शेविकोने अबके निर्वाचनमें भाग लेनेका निश्चय किया। वामपक्षी दलने भी भाग लिया, जिसके कारण द्वितीय दूमा जारशाहीके लिये प्रथमसे भी अधिक कडवी साबित हुई। नरमदली सवैधानिक जनतान्त्रिक पहलेकी अपेक्षा आधे ही (१७९ ९८) आ पाये। किसान गुट तथा नरम समाजवादी क्रान्तिकारी जहा पहली दूमामे ९४ थे, वहा अब उनकी सख्या बढकर १५७ हो गई। समाजवादी जनतान्त्रिक अब अठारहकी जगह पैसठ थे। यद्यपि द्वितीय दूमामें प्रगतिशील विचारोका प्रतिनिधित्व ज्यादा था, लेकिन अब क्रान्तिका वेग उतारपर था, इसलिये वह जनताके किसी भी हितको करनेमें असमर्थ थी, ३ जून १९०७ ई०को प्रतिगामी जारके पिट्ठुओंने कानूनके दिखावेको भी छोडकर चारो ओर अत्याचार करना शुरू किया। उसी साल १५९ मजदूर सभाओंको भग कर दिया गया, १९०८ ई०में नौ और १९०९ ई०में छानवे मजदूर-सगठन निषिद्ध कर दिये गये। द्वितीय दूमाको

खतम कर देनेके बाद भी निकोलाइ II अपनेमे इतनी शक्ति नही पाता था, कि दूमाके बिना ही शासनको जारी रखखे, इसीलिये वह तृतीय दूमाके निर्वाचन करनेकी घोषणा करनेके लिये मजबूर हुआ। अबकी बार जारशाहीने चुनावके नियम और भी अनुकूल बनाये जमीदार २३० वोटरोंपर एक, बूर्ज्वा (पूजीवादी) हजारपर एक, किसान साठ हजारपर एक और मजदूर सवा लाखपर एक प्रतिनिधि भेज सकते थे। रूसी प्रजाको जहा दूमामें अपना प्रतिनिधि भेजनेका इस प्रकार अधिकार प्राप्त था, वहा मध्य-एसियाके लोगोको एक भी प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार नही दिया गया था—युरोपीय रूसके जहा ४०३ थे, वहा सीमाती इलाकोके ३९ ही लिये जानेवाले थे, जिनमे बारह रूसी-पोलन्दके प्रतिनिधि थे। इस नियमके अनुसार जो निर्वाचन हुआ, उसमें २०२ अथवा ४६ प्रतिशत सदस्य जमीदारोके थे। वामपक्षी दलोको केवल ७ प्रतिशत जगहे मिली थी, लेकिन जारशाही तो दूमाको केवल दिखावेकी चीज रखना चाहती थी। वह दूसरी तरहसे भी विरोधी शक्तियोको कुचलनेके लिये तैयार थी। विद्रोही किसानोकी शक्तिको सर्वथा नष्ट कर देनेके लिये उसने यह तरीका निकाला था—गावकी पचायती सत्ताका नष्ट कर देना, देहातमे भूमिपर सामूहिक अधिकार रखनेकी जगह किसानोको वैयक्तिक तौरसे खेतोपर अधिकार देना, एव किसानोको विद्रोही गावो और इलाकोसे ले जाकर दूसरी जगह बसाना। इसकी वजहसे वह कुछ समयके लिये किसानोकी शक्तिको तोडनेमे सफल हुई। गावकी जमीनपर सामूहिक अधिकार होनेपर धनी और गरीब किसानोके बीच भारी भेद नही कायम किया जा सकता था, लेकिन अब गावोमे कुलक (धनी किसान) पैदा होने लगे।

जारशाही समझने लगी थी, कि लेनिनके रूपमें उसे एक बडे शत्रुसे मुकाबला पडा है। १९०७ ई०के जाडोमे सरकारने लेनिनकी गिरफ्तारीका हुक्म निकाला। लेनिन फिनलन्दमें गुप्त रीतिसे रहते थे। पार्टीकी सलाहपर लेनिनको देश छोड जाना पडा। गुप्त रीतिसे जिस जहाज द्वारा उन्हे बाहर जाना था, उसे पकडनेके लिये पुलिसकी आख बचाकर फिनलन्दकी बर्फ जमी खाडीके ऊपरसे चलना पडा। एक जगह कमजोर बर्फके कारण लेनिन मौतसे बाल-बाल बचे। आखिर वह जहाज द्वारा देश छोडकर प्राय दस सालके लिये विदेशमें जीवन बिताने चले गये। क्रातिके असफल होनेका एक प्रभाव यह हुआ, कि क्रातिके साथ सहानुभूति रखनेवाले बुद्धिजीवियोमें निराशा और उसीके कारण विचारोमे गडबडी पैदा हो गई। लेकिन तब भी बोल्शेविकोने अपनी पार्टीको नष्ट होनेसे बचानेके लिये पूरी कोशिश की। जनवरी १९१२ ई०मे बोल्शेविकोने स्वतत्र बोल्शेविक पार्टी स्थापित करनेके लिये प्राहा (चेकोस्लोवाकिया) मे अपना सम्मेलन किया, जिसका बहुत भारी ऐतिहासिक महत्त्व है, क्योकि इसीके निर्णय द्वारा स्थापित बोल्शेविक पार्टीने पाच वर्ष बाद रूसमे सफल क्राति की। इस वक्त जो केन्द्रीय समिति नियुक्ति की गई थी, उसमे लेनिन, स्तालिन और य० म० स्वेर्द्‌लोफ मुख्य थे। इसी समयसे पार्टीके पुराने नाम "रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजदूर पार्टी"के साथ-साथ ब्रेकेटमे "बोल्शेविक" भी लिखा जाने लगा। इसी सम्मेलनके समय मे बोल्शेविक नेताओने दृढतापूर्वक कार्य आरम्भ किया। इन नेताओमे लेनिन सर्वोपरि थे। उनके सहायकोमे याकोव मिखाइल-पुत्र स्वेर्द्‌लोफ भी एक प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता था, जिसने कजान और उरालमें बहुत काम किया और पीछे साइबेरियामे निर्वासित कर दिया गया था। सोवियत शासनकी स्थापनाके बाद यही रूसका प्रथम राष्ट्रपति हुआ। मिखाइल वासिली-पुत्र फ्रुजे दूसरा जबर्दस्त बोल्शेविक क्रातिकारी था, जिसने बोल्शेविक क्रातिके समय अपनी सैनिक सूझ और संगठनका बहुत अच्छा परिचय दिया। आज मध्य एसियाके किर्गिजिस्तान गणराज्यकी राजधानी फ्रुजेके नामपर मशहूर है। सेर्गेई मीरन-पुत्र किरोफ १८ वर्षकी उमरमे बोल्शेविक पार्टीमे शामिल हुआ, और १९०५ ई०की क्रातिमें उसने जबर्दस्त भाग लिया। क्रातिके सफल होनेके बाद उसने बहुत-से जवाबदेह पदोको सभाला, और द्वितीय पचवार्षिक योजनाके समय दुश्मनकी गोलीका शिकार हुआ। स्तालिनकी जन्मभूमि गुर्जीका ग्रिगोरी कान्स्तन्तिनो पुत्र ओर्जोनीकिद्‌जे १९०३ ई०में बोल्शेविक पार्टीमे शामिल हुआ। १९०५ ई० की क्रातिमें इसने बडी तत्परतासे भाग लिया। जब क्रातिके असफल होनेपर गिरफ्तारिया होने लगी, तो वह विदेशमें भाग जानेमे सफल हुआ। १९०९ ई०मे वह ईरानमें था, और वहाकी क्रातिमें भी

सुधार किये गये, जिन्हे विफल करनेके लिये पहला प्रहार था, आस्ट्रियाका बोसनिया और हेर्जेगोविनाको अपन राज्यमें मिलानेकी घोषणा। तरुण तुर्कोंके प्रयत्नोसे तुर्की शक्तिशाली बन जाय, इसे रूस भी पसद नही करता था, क्योकि तब तो दरेदानियालके लिये उसकी आशाओपर सदाके लिये पानी फिर जाता। रूसकी शह पा १९०९ ई०मे अफ्रीकाके तुर्कोंके दो प्रदेशो—सेरेनेडका और त्रिपोलितानियाको इतालीने अपने अधिकारमें कर लिया। रूसने फ्रास और इगलैण्डके अरबीभाषी अफ्रीकी प्रदेशोंपर हाथ साफ करनका भी समर्थन किया। इतनेसे भी तरुण तुर्कोंकी शक्तिको कमजोर न होते देख तुर्कोंसे लडनेके लिये रूसके नेतृत्वम बल्कान-लीगकी स्थापना हुई। इन परिस्थितियोमें तरुण तुर्कोंके लिये जर्मन साम्राज्यवादकी ओर मुह करनेके सिवा और कोई रास्ता नही रह गया। यह भी याद रखनेकी बात है, कि जिस वक्त पूर्वी युरोपमें यह घटनायें घट रही थी, उसी समय १९११ ई० में चीनकी महाक्राति हुई—चीनी सामन्तवादी शासकोंने पश्चिमी युरोपके साम्राज्यवादियोकी नोच-खसोटसे देशको बचानेमें असफल होकर अपनेको अयोग्य साबित कर दिया था, इसलिये वहाके मध्यमवर्गने राष्ट्रीय मुक्तिके लिये पुरान शासकोको हटाना जरूरी समझा। भला इतनी बडी बातको पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तिया कैसे सह सकती थी? उन्होने चीनका वित्तीय बायकाट कर क्रातिको निर्बल बना प्रति-क्रातिकारी राष्ट्रपति युवान-शि-काईको क्रातिका गला घोटनेमे सहायता दी—इस काममे इगलैण्ड, फ्रास, रूस, जर्मनी और युक्त राष्ट्र अमेरिकाके साथ जापान भी शामिल था।

आपसमे कही मेल और कही बिगाडके साथ ऐसी घटनाये हो ही रही थी। दुनियाके सबसे बडे साम्राज्यवादी देश इगलैण्ड और फ्रास देख रहे थे, कि अन्तमें हमें जर्मनीसे निबटना है, जिसके लिये रूसका हमारे साथ रहना आवश्यक है। १९११ ई०मे इन तीनो शक्तियोंके मुख्य सेना-सचालकों-का सम्मेलन हुआ, जिसमे फ्रासके प्रतिनिधिने कहा—"रूसी सेनाओका लक्ष्य यही होना चाहिये, कि जर्मनी अपनी सेनाके सबसे बडे भागको पूर्वी मोर्चेमें फसा रखनेके लिये मजबूर हो।" इसके लिये रूसी सेनाको उसी समय जर्मनीपर आक्रमण कर देना चाहिये, जिस वक्त कि इगलैण्ड और फ्रासकी सेनाये पश्चिममे आक्रमण शुरू करें। इतनेसे भी सतुष्ट न होकर १९१२ ई०मे तीनो शक्तियोंके सेना-सचालकोंका जो सम्मेलन हुआ, उसमें फ्रासने माग की, कि आठ लाखसे कम रूसी सैनिक आस्ट्रिया और जर्मनीके सीमान्तपर नही होने चाहिये, और पश्चिममे स्थिति चाहे जैसी भी हो, सेना-चालनके सोलहवे दिन, रूसको आस्ट्रिया और जर्मनीपर आक्रमण कर देना चाहिये। इसके लिये सैनिक रेलोंको बहुत भारी परिमाणमें बढानेकी अवश्यकता थी, जिसके लिये जारशाहीको कर्जा और सामग्री देनेके वास्ते पश्चिमी राष्ट्र तैयार थे। स्तालिनके शब्दोमें—"जारशाही रूस पश्चिमी साम्राज्यवादके लिये अपरिमित सरक्षित शक्ति थी, यही नही, कि वहा विदेशी पूजी लगानेका स्वतत्र अवसर मिला था, जिसके कारण रूसके आधारिक उद्योग-धधो तथा राष्ट्रीय अर्थनीतिपर साम्राज्यवादियोंका नियत्रण हो गया था—उदाहरणार्थ कोयला, तेल और धातुके उद्योग—बल्कि यह भी कि रूस अपने लाखो सैनिको द्वारा पश्चिमी साम्राज्यवादियो को मदद कर सकता था।"

औद्योगिक प्रगति—यद्यपि रूसी सामन्त अपने पुराने ढाचेको बनाये रखना चाहते थे, लेकिन बिल्कुल उल्टी गगा तो बहाई नही जा सकती। उद्योग-धधोको बढाये बिना सैनिक तौरसे जारशाही मजबूत कैसे हो सकती थी? जापानसे हारकर उसने देख लिया था, कि कमसे कम सैनिक उद्योग-धधोंको आगे बढाना अनिवार्य है। इससे पूजीपतियोको सबसे अधिक लाभ था—सेनाके ठेके बहती गगामें हाथ धोना था, नफा नही लूट थी, जिसे हरएक उच्च अधिकारी अपनोंमें बाटना चाहता था। १९०५-१३ ई० क बीच ढाई अरब रूबलका सैनिक ठेका दिया गया, और दो सालके भीतर साढे तीन हजार किलोमीतर रेलवे लाइनों तथा इजनो और डब्बोंके बनानेका ठेका भी पूजीपतियोको मिला। इस तरह बडे-बडे नफेके साथ बडे-बडे ठेके मिले, जिन्हे कार्यरूपमे परिणत करनेके लिये इजारादारीवाले बडे पूजीपति सगठनोकी अवश्यकता हुई, जिसके फलस्वरूप १९००-१० ई० के बीच पूजीपतियोंकी कुछ सेंडीकेटोंने खान और धातु-उद्योग अपने हाथमें कर लिये। बारहने पन्द्रह बडे-बडे धातु-कारखानोंने मिलकर प्रोदमेतके नामसे अपनी सेंडीकेट कायम की, जिसने देशके सम्पूर्ण धातु-उद्योगका दो-तिहाई अपने हाथमे कर लिया। १९०६ ई०में प्रोदुगोल नामसे सगठित

सेडीकेटने दोनेत्स-उपत्यकाकी साठ सैकडा कोयलेकी खानोको अपने हाथमे कर लिया। १९०८ई० में स्थापित प्रोद्रूद सेडीकेटके हाथमे दक्षिणी रूसकी खनिज धूनोका अस्सी सैकडा था। इसी तरह कपडेके कारखानोवालोकी एक सेडीकेट १९०८ ई०मे मास्कोमे कायम हुई, जिसके हाथमे सैतालीस कपडा मिलें थी। इन सेडीकेटोने उद्योग-धधोके अधिक भागको अपने हाथमें ले आपसी प्रतियोगिताको इतना कम कर दिया, कि वह चीजोके दामको मनमाना रख सकती थी। जिस समय सेंडीकेटे प्रबल रूप धारण कर रही थी, और नफेके कारण उनके द्वारा उद्योग-धधेको बढावा मिल रहा था, उसी समय बकोकी शक्तिका बढना स्वाभाविक था, जिन्होने बहुतसे औद्यागिक कारखानोको अपने हाथमे कर लिया। सेडीकेटोने अपने मत्स्य-न्यायसे जिस तरह छोटी कपनियोंके अस्तित्वको खतरेमे डाल दिया, उसी तरह अब छोटे बकोको निगलकर बडे बैकोने अपनी प्रधानता स्थापित की और दिवालिया बननेके डरसे छोटे-छोटे बक बडे-बडे बकोके पेटमें चले गये। १९०८ ई०मे पीतरबुर्ग-अजोफ-ओरेल और दक्षिणी बकोने मिलकर सयुक्त बकका रूप लिया। १९१० ई०में उत्तरी बक रूसी-चीनी और रूसी-एसियाई बकोसे मिलकर एक हो गया। अब सात बडे बकोके पास रूसकी बकमें लगी अधिकाश पूजी चली आई। लेकिन सेंडीकेटो और महाबकोका शक्तिशाली होना केवल रूसी पूजीपतियोके लाभकी ही बात नही थी, इनकी पूजीका बहुत अधिक भाग विदेशियोका था। १९१४ ई०मे रूसके अठारह प्रधान बकोमें ३३५५ लाख रूबलकी पूजी लगी हुई थी, जिसमें ४२ प्रतिशत (१८५५ लाख रूबल) विदेशी पूजी थी। विदेशी पूजीमे भी फ्रासकी २१.९ प्रतिशत, जर्मनीकी १७ प्रतिशत, और अग्रेजोकी ३ प्रतिशत थी। इगलैण्ड और फ्रास दोनोकी सम्मिलित पूजी विदेशी पूजीमे सबसे अधिक थी। पूजीके अनुसार ही रूसमे उनका प्रभाव भी होना आवश्यक था।

१९०५-७ ई०की क्रातिके देशमे असफल हो जानेपर घरके भीतर जारशाहीके लिये कोई भयकर खतरा नही था। पूंजीके विस्तार और उद्योग-धधोके प्रसारद्वारा पूजीपतियोकी पाचो घीमें थी, चाहे उसके कारण प्रथम विश्वयुद्धके पहले रूसका राष्ट्रीय ऋण ८८ अरब रूबल हो गया था, जिसमे सबसे अधिक वह फ्रासका कर्जदार था। अभी भी बिजली, इजीनियरी, तर्बाइन-निर्माण, मशीन-टूल-निर्माण, भारी इजीनियरी, मोटर-उद्योग और भारी रसायन-उद्योग जैसे आधारभूत उद्योगोका रूसमे अभाव था, और इन चीजोके लिये उसे पश्चिमका मुह देखना पडता था। तेल-उद्योग अवश्य आगे बढा था, लेकिन उसपर भी विदेशी पूजीका नियत्रण था। रूस बडी तेजीसे प्रथम विश्वयुद्धकी ओर बढता चला जा रहा था। रूसके राजनीतिक आकाशमें इस समय कोई राजनीतिक परिवर्तनके लिये बडी घटना घटनेकी सभावना नही थी, चारो ओर राजनीतिक अकर्मण्यता और उदासी छाई हुई थी। इसी समय चार ४ अप्रैल १९१२ ई० में लेनाकी सोनेकी खानोके मजदूरोपर गोलिया चलाई गई, जिसके बारेमे स्तालिनने "ज्वेज्दा" (तारा) नामक बोल्शेविक पत्रमें १९१२ ई० में लिखा था—"लेना-गोलीकाडने मौन रूपी बर्फको तोड दिया, और जनताके आन्दोलनकी नदी फिरसे बहने लगी।"

लेनाकी सोनेकी खाने एक कपनीके हाथमे थी, जिसकी स्थापना १९०८ ई०मे हुई थी, और जिसमे तीन-चौथाई पूजी अग्रेजोकी थी। कपनीको इस खानसे प्रतिवर्ष सत्तर लाख रूबलका फायदा होता था, और साइबेरियाके ध्रुवीय कक्षाके भीतर दूरके इस भूभागके मजदूरोका बहुत क्रूरतापूर्वक शोषण होता था। यह सोनेकी खाने रेलसे डेढ हजार मील (१७०० किलोमीतर) दूर अवस्थित थीं। ध्रुवीय कक्षाके भीतर होनेके कारण यहाकी नदिया सालके अधिक भागमे बर्फ बनी रहती, जिससे याता-यात थोडे-से महीनोके लिये खुलता, जब कि लेना नदी मुक्त-प्रवाह होती। मजदूर एक मर्तबे वहा जा अत्याचारोके मारे यदि भागना चाहते, तो आसानीसे भाग नही सकते थे। उनसे दससे साढे ग्यारह घटा रोज काम लिया जाता। लेना सुवर्ण-क्षेत्र कपनीकी तानाशाहीके मारे उनका नाको दम था। कपनीका मैनेजर बेलोजेरोफ लेनाका बिना मुकुटका राजा माना जाता था। अत्याचारोंसे तग आकर फर्वरी १९१२ ई०के अन्तमें खानके एक भागमे हडताल हो गई। इसकी खबरसे प्रोत्साहित हो १ मार्च तक और कितने ही भागोमे हडताल फैल गई, और सारे सुवर्ण-क्षेत्रमे आम हडताल सगठित कर ली गई। केंद्रीय हडताल कमेटीने कपनीके प्रबध-विभागमे बातचीत शुरू

५२

की। कपनीके स्थानीय इजीनियर तुल्चिन्स्कीने वडी अच्छी तरह वातचीत करके मेन्शेविक प्रतिनिधियोको हडताल उठा लेनेपर राजी किया, लेकिन हडताल कमेटीके वोल्शेविक विचार रखने-वाले सदस्योने हडतालके पक्षमे प्रचार जारी रखना चाहा। इसपर तै हुआ, कि हडतालके वारेमें गुप्त मतदान द्वारा कमकरोसे राय ली जाय। २५ मार्चके सवेरे दो वडे-वडे पीपे हरएक क्षेत्रमें रख दिये गये, जिनमेंसे एकपर लिखा था—"कामपर लौट जायेंगे", और दूसरेपर "कामपर नही लौटेंगे।" मजदूरोको एक-एक ककड अपने मतको प्रकट करनेके लिये पीपोमें डालना था। जल्दी ही "काम पर नही लौटेंगे" वाला पीपा पत्थरोसे भर गया, जब कि दूसरे पीपेमें केवल सत्रह पत्थर मिले। इसपर २७ मार्चको छ हजार कमकरोने आम हडताल कर दी।

१७ (४) अप्रैलको हडताली प्रदर्शन करते हुये जब नदेज्दिन्स्क सुवर्ण-क्षेत्रके पास पहुचे, तो सेनाने रास्ता रोक दिया। इजीनियर तुल्चिन्स्कीने कमकरोको विखर जानेके लिये कहा, जिसपर कुछ लोग रुक गये, लेकिन दूसरे एक छोटे रास्तेसे आगे वढे। इसी समय धडाधड गोलिया चलने लगी। दो सौ पचास कमकर निहत हुये और दो सौ सत्तर आहत। यहा भी "खूनी रविवार" की तरह जारशाही अत्याचारने मजदूरोमें भारी विद्रोहकी भावना पैदा कर दी, और सचमुच ही लेनाके गोलीकाडने अकर्मण्यताके वर्फको तोड दिया।

लेनाके गोलीकाडकी खबर सारे देशमें फैल गई। वोल्शेविकोने फिर अपनी तत्परता दिखलानी शुरू की। इसी समय वोल्शेविकोने अपने दैनिक "प्राव्दा" (अविकार, सत्य) के निकालनेकी तैयारी की। "प्राव्दा" रूसी मजदूरोका पत्र था। उसमें उन्हीकी भाषामें सरल लेख होते थे। यह कुछ मध्यमवर्गके शिक्षितोके लिये पराई भाषामे कठिन शब्दोके साथ अपनी मार्क्सवादकी पडिताई दिखलानेके लिये नही निकाला गया था। १९१२ ई०के जनवरीमें "प्राव्दा" के लिये चन्दा होने लगा, जिसमें रूसके सभी भागोके मजदूरोंने पैसा भेजे। चदेमें इतनी सफलता हुई, कि लेनिनने उसके वारेमे लिखा—"प्राव्दाका निर्माण रूसी कमकरोकी एकता, वर्गचेतना और शक्तिका सबसे वडा प्रमाण है।" "प्राव्दा"का प्रथम अक स्तालिनके सम्पादकत्वमें ५ मई (२२ अप्रैल) १९१२ ई० को निकला, इसीलिये आज भी रूसमें ५ मईको कमकर-प्रेस-दिवस मनाया जाता है।

चतुर्थ दूमाका चुनाव—१९१२ ई० में तृतीय राज्यदूमाका कार्यकाल समाप्त होनेपर उसे तोड दिया गया, और चतुर्थ दूमाके निर्वाचनका निश्चय हुआ। कई सालोसे स्तोलूपिनके हाथमें रूसी राज्यकी वागडोर थी। वह अपने अत्याचारोके कारण लोगोकी भारी घृणाका पात्र था। १९११ ई०मे उसकी हत्या हो जानेपर फिर सभी जगह पुलिस अत्यचार होने लगा। दूमाका निर्वाचन ऐसे ही वातावरणमे हो रहा था। वोल्शेविकोने दूमाके भाषणमचके फायदेको अच्छी तरह समझ लिया था, इसलिये उन्होने निर्वाचनका वायकाट नही किया। लेनिन उस समय पेरिसमें रहते रूसके भीतर राजनीतिक कार्यका सचालन कर रहे थे। उनको और नजदीक आनेकी जरूरत महसूस हुई, इसलिये १९१२ ई०के ग्रीष्ममे पेरिस छोडकर वह पोलन्दके नगर क्राकोमे चले आये। निर्वाचनके वाद १९१२ ई०के अन्तमें चतुर्थ राज्यदूमाकी पहली बैठक हुई। इसमे प्रतिगामियोकी सख्या और वल अधिक था—४१० सदस्योमें १७० दक्षिणपथी थे, अक्तूवरियोकी सख्या सौ थी, जो दक्षिणपथके अनुयायी थे। कादेतोकी सख्या पचास थी, इनमें और अक्तूवरियोमे इतना ही अन्तर था, कि कादेत वामपक्षकी वातोको इस्तेमाल करते थे, यद्यपि दूमाके भीतर उनका गठजोडा अक्तूवरियोसे था। निम्न मध्यमवर्गके सदस्योमे दस त्रुदोविकी और सात मेन्शेविक थे। मेन्शेविकोने वोल्शेविकोके साथ दूमाके भीतर एकता रखनेका प्रयत्न किया, लेकिन वोल्शेविक छ थे, इसलिये अपने एकके वहुमतका फायदा उठाकर मेन्शेविक वोल्शेविकोको दूमामें वोलनेसे रोका करते थे, इसपर वोल्शेविक अलग हो गये। ४१० सदस्योंमें ६ की सख्या नगण्य है, लेकिन वोल्शेविक जनताके हितोके पक्षपाती तथा जारशाही क्रूरताको नगा करनेके लिये वहा पहुचे थे, इसलिये उनके भाषणोका असर लोगोंपर वहुत पडता था। अपने प्रचारका यहा वहुत अच्छा अवसर था, और क्रातिसे पहलेके वर्षोमें लेनिनके दलने इसका खूब फायदा उठाते जनताके भीतर जारशाहीके विरुद्ध भारी घृणा पैदा करनेमे सफलता पाई। वोल्शेविक अपनी

जातिको केवल रूसियोके ही लाभके लिये नही चाहते थे, बल्कि उनका लक्ष्य था रूसके भीतर रहनेवाले सभी लोगोको शोषण और उत्पीडनसे मुक्त करना। ऐसी हालतमे अ-रूसी जातियोके बारेमे अपने रुखको स्पष्ट कर देना बहुत जरूरी था, इसीलिये १९१३ ई० में दो महत्त्वपूर्ण कृतिया प्रकाशित हुईं—लेनिनका "राष्ट्रीय प्रश्नपर समालोचनात्मक टिप्पणिया" और स्तालिनका "मार्क्सवाद और राष्ट्रीय प्रश्न"। इन दो ग्रथोने सारी जनताके सामने साफ कर दिया, कि साम्यवादी रूसमें "सभी जातियोको आत्मनिर्णयका पूरा अधिकार होगा, और वह अपनी इच्छानुसार चाहे तो रूसी सघसे बाहर भी जा सकेगी।"

विश्व-युद्धकी तैयारी—आनेवाले विश्व-युद्धमे रूसको अपनी ओर शामिल करनेके लिये पश्चिमी युरोपके दोनो गुटोने किस तरह कोशिश की, इसके बारेमे हम बतला चुके है। युद्ध कैसर विलियम (विल्हेल्म)की सनकके कारण नही हुआ, बल्कि उसका ठोस कारण परस्पर-विरोधी साम्राज्यवादी आर्थिक स्वार्थ थे। जर्मन साम्राज्यवादने तुर्कीकी ओर बढना चाहा। जर्मन बकने रेलो द्वारा जर्मनीको तुर्कीसे मिलाना चाहा। जर्मन सैनिक अफसर तुर्की सेनाको सगठित और शिक्षित करके उसे रूस और इगलैण्डके विरुद्ध तैयार कर रहे थे। जर्मनीके पास नाममात्रके थोडेसे उपनिवेश (अफ्रीकामें) थे। जर्मनीकी सामरिक शक्तिसे भयभीत इगलैण्ड नही चाहता था, कि उसके उपनिवेशोके बीचमें जर्मनीको कही भी पैर रखनेको मिले। वह चाहता था, कि जर्मनीकी नौसेना और व्यापारिक बेडेको नष्ट कर जर्मन उपनिवेशको अपने हाथमे कर ले। तुर्कीको मसोपोतामिया (इराक) और फिलस्तीनसे वचित करके मिस्रपर अधिकार करनेके लिये भी वह उतारू था। फ्रास जर्मनीकी सैनिक शक्तिको दबाकर अलसस्-लोरेन प्रदेशको जर्मनीसे छीनकर राइन नदीके बायें तटपर अधिकार करना चाहता था, और तुर्की-साम्राज्यकी बदरबाटमें इगलैण्डका सहभागी भी होना चाहता था। जारशाही रूसकी योजना थी बासफोरस और दरेदानियालपर अधिकार, तुर्कीके भीतरकी अर्मेनियापर हाथ साफ करना, तथा आस्ट्रिया-हगरी साम्राज्यको छिन्न-भिन्न करते हुये बल्कान प्रायद्वीपपर अपने प्रभावको स्थापित करना। जापान भी चीनमें अपनी मनमानी करनेके लिये एक ऐसे बडे मौकेकी खोजमे था। लेकिन विश्वयुद्धका पहले एक छोटे-से युद्धमे रिहर्सल हुआ, यह था बल्कान-युद्ध।

बल्कान-युद्ध (१९१२-१३ ई०)—बोस्निया और हेर्जेगोविनामे आगे बढकर आस्ट्रियाने रूसको बहुत क्रुद्ध कर दिया था। जारशाही सर्बिया, बुल्गारिया, मोन्तेनिग्रो और ग्रीसको बल्कान-सघके रूपमे एकताबद्ध करके उन्हे तुर्कीके विरुद्ध तैयार करना चाहती थी। फ्रास भी इसमे उसका पृष्ठपोषक था, क्योकि पश्चिमी देशोके सामने सबसे बडी समस्या थी जनबल या सिपाहियो-की सख्या। वह समझता था, कि इस प्रकार बल्कानकी दस लाख सगीने हमे आसानीसे मिल जायेंगी। जर्मनी और आस्ट्रिया तुर्कीकी पीठपर थे। प्रथम बल्कान-युद्ध १९१२ ई०के शरद्में आरम्भ हुआ। १९११ ई०से ही इतालीके साथ तुर्कीकी लडाई छिडी हुई थी, इसलिये बल्कान-सघ उसीको आगे बढाते हुये युद्धमे कूदा। तुर्क नये हथियारोसे सुसज्जित नवसगठित पूर्वी युरोपके सिपाहियोके सामने जल्दी ही परास्त हो गये, लेकिन फिर विजेताओमें आपसमे झगडा खडा हो गया, जिसके कारण अगले साल १९१३ ई०के ग्रीष्ममे दूसरा बल्कान-युद्ध विजेताओके भीतर हो गया। बुल्गारियाने सर्बियापर आक्रमण कर दिया, जिससे नाराज होकर दूसरे बल्कान राज्य बुल्गारियाके विरुद्ध हो गये। फलत बुल्गारियाकी हार हुई, और उसे अगस्त १९१३ ई० में बुखारेस्त-सधिपर हस्ताक्षर करनेके लिये मजबूर होना पडा। इस सधिके अनुसार बुल्गारियाके अपने कितने इलाके पडोसियोको देने पडे, और अद्रियानोपोल बुल्गारियाके हाथसे निकलकर फिरसे तुर्कीके हाथमे चला गया। इसी युद्धमे सर्बियाने अल्बानियापर अधिकार कर लिया, लेकिन जब आस्ट्रियाने मैदानमे आनेकी धमकी दी, तो उसे छोडना पडा।

इन युद्धोने बल्कानके स्लावोको तुर्कीकी अधीनतासे मुक्ति प्रदान की, लेकिन अब युरोपकी बडी शक्तिया उनपर प्रभाव डालनेके लिये कशमकश कर रही थीं। बर्लिन-बगदाद रेल्वेके लिये जर्मन और फ्रेंच दोनो पूजी लगा रहे थे, और इन विरोधी स्वार्थोके सघर्षने बल्कानको सचमुच ही

वारूदका ढेर वना दिया था, जिसमें एक चिनगारी पड जानेसे भीपण विस्फोटक हो जानेका भय था। सभी युरोपीय शक्तिया हथियार वढानेपर आख मूदकर खर्च कर रही थी। जारशाहीने १९१४ ई०में साढे सत्तानवे करोड स्वर्ण रुवल सेनाके लिये रक्खा था। १९०७ ई० से १९१३ ई० तक उसने इस मदमे चार अरव रुवल खर्च किये। इगलैण्ड भी अपनी शक्तिको इसी तरह वढानेमें लगा हुआ था। अपने नौसैनिक वलको वढानेके लिये १९०६ ई०में उसने प्रकाड ड्रेडनाट युद्धपोत वनाया, जिसका अनुकरण करते जर्मनी और फ्रासने भी अपने-अपने ड्रेडनाट वनाने शरू किये। फ्रासीसी पूजीकी मददसे जारशाहीने भी नौसैनिक निर्माणके लिये वहुत वडा प्रोग्राम रक्खा, लेकिन उसकी मद गतिके कारण अभी एक भी युद्धपोत तैयार नही हुआ था, जव कि १९१४ ई०का विश्वयुद्ध छिड गया। प्रोफेसर न० ई० जूकोव्स्की पहला आदमी था, जिसने विमान-विद्याका आविष्कार किया, लेकिन जारशाहीने उससे लाभ नही उठाया। प० न० नेस्तोरोफने पहिली वार कलैया मारकर अपने हवाई जहाजको उडाया, लेकिन जारशाही इसके महत्त्वको नही समझ पाई। यही नही, वैसा करनेमें एक छोटे-से पुर्जेके खो जानेके लिये नेस्तोरोफको "अनुशासनहीनता" के लिये जुरमानेका दड दिया गया।

जैसे-जैसे युद्ध-घोपणाके दिन नजदीक आ रहे थे, वैसे ही वैसे रूसके भीतर जनतामे असतोष भी फैलता जा रहा था। १९१४ ई० के आरम्भमे सर्वहारोके क्रातिकारी सघर्ष जगह-जगह होने लगे। ९ जनवरीको "खूनी रविवार"के वार्पिकोत्सवको ढाई लाख मजदूरोने हडताल करके मनाया। १९१४ ई० के पूर्वार्धमे पन्द्रह लाख मजदूरोने हडताल की। १९१४ ई० के ग्रीष्ममे वाकूके तैल क्षेत्रमें भी एक वडी राजनीतिक हडताल हुई, जिसे तोडनेकी जारशाहीने वहुत कोशिश की। वोल्शेविकोंके अपील करनेपर वाकूके हडतालियोंकी सहानुभूतिमे पीतरवुर्गके नव्वे हजार कमकरोने काम छोड दिया, और ११ जुलाई को तो राजधानीके दो लाख मजदूरोने हडताल करके अपनी सभाओंमें नारा लगाया—"वाकूके साथियो, हम तुम्हारे साथ है।" "वाकूके कमकरोकी विजय हमारी विजय है।"

प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४–१८ ई०)—वल्कानका वारूदका ढेर तैयार ही था। एक ओर जर्मनी और आस्ट्रिया, दूसरी ओर इगलैण्ड, फ्रास और रूस नखसे शिखतक हथियारोंसे लैस होकर खडे थे। सेराजिवामे आस्ट्रियाके युवराजकी हत्याने वारूदमे चिनगारी डालनेका काम किया, और जुलाई १९१४ ई० में जर्मनीके भडकनेपर महायुद्ध छिड गया। इस युद्धके दो दलोमें एक था चतुर्दलीय पक्ष, जिसमे जर्मनी, आस्ट्रिया-हगरी, वुल्गारिया और तुर्की शामिल थे, दूसरा त्रिदलीय पक्ष, जिसमें इगलैण्ड, फ्रास और रूसके साथ सर्विया और वेल्जियम भी सम्मिलित थे। १९१४ ई० मे ही जापान भी त्रिदलीय गुटमे शामिल हो गया, इताली १९१५ ई०में युद्धमे कूदा, और अन्तमें १९१७ ई०में युक्त राष्ट्र अमेरिकाने भी शामिल हो इसे विश्वयुद्ध वना दिया। प्रथम विश्वयुद्धमें छोटे-वडे तैंतीस देश शामिल हुये, ७४० लाख सैनिक युद्धके लिये चालित किये गये, जिनमें तीन करोड प्राणोंकी हानि हुई—इनमें लाखो भारतीय भी थे। पैसेके रूपमें इसमें तीन अरव रुवल धन स्वाहा हुआ।

त्रिदलीय गुटमे पहले ही निश्चय हो गया था, कि युद्ध छिडते ही रूसको पूर्वमे आस्ट्रिया और जर्मनीपर आक्रमण करना होगा। युद्धके आरम्भ होते ही युरोपमें तीन मोर्चे वन गये। पश्चिमी मोर्चा उत्तर समुद्रसे स्वीजर्लेण्ड तक फैला हुआ था, जिसपर इगलैण्ड और फ्रासकी सेनायें जर्मन सेनाओंका मुकाविला कर रही थी। पूर्वी मोर्चा वस्तुत रूसी मोर्चा था, जो वाल्तिक समुद्रसे रूमानिया तक फैला हुआ था। इनके अतिरिक्त एक वल्कान-मोर्चा था, जो दन्यूव नदीके किनारे-किनारे चला गया था। रूसी मोर्चा उत्तर-पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी दो भागोमें विभक्त था। उत्तर-पश्चिमी मोर्चा वाल्तिक समुद्रसे वुग नदीके निम्न भागतक चला गया था, और दक्षिणी-पश्चिमी मोर्चा रूस-आस्ट्रियाके सीमातको लेते रूमानिया तक फैला हुआ था। इन्ही दोनों मोर्चोमें रूसको आक्रमण करना था। वल्कान-मोर्चेपर आस्ट्रियाकी सेनाका मुकाविला सर्वियाकी सेनाको करना था। जर्मनीने अपने सुभीतेको देखकर फ्रासकी राजधानी पेरिसकी ओर जल्दी वढनेके लिये वेल्जियमकी तटस्थता भग कर दी, और इसके कारण फ्रास और इगलैण्डकी सेनाके लिये मुकाविला वहुत जवर्दस्त हो गया।

रूसी सेनाने जर्मन सेनाओंको पश्चिमकी ओर बढनेसे रोकनेके लिये उसके पूर्वी सीमांतपर आक्रमण किया। पश्चिममें प्रगति जारी रखते हुये जर्मनोंने इसी समय जेनेरल समसानोफकी रूसी सेनाको मसूरी झीलों—दलदली भूमिमें घेर लिया। लाखों रूसी मारे गये। समसानोफने लज्जाके मारे आत्म-हत्या कर ली। जारशाहीके लिये यह कोई अच्छा सगुन नही था। समसानोफकी सेनाको हरानेके बाद जर्मनोंने रेतेनकाम्फकी अधीनतामें लडती रूसी सेनापर आक्रमण किया, और वह भी एक लाख दस हजार आदमियोंको खोकर पीछे हटी। रूसियोंने इतनी भारी क्षति उठाई, लेकिन इसके लिये जर्मनीको अपनी सेनाका काफी भाग पूर्वकी ओर भेजना पडा, जिसके कारण पेरिस बच गई। पश्चिमी साम्राज्यवादियोंकी मनोकामना पूरी हुई, रूसने सारी चोटें अपने ऊपर लेकर फ्रांसको पराजित होनेसे बचा दिया।

उत्तर-पश्चिमी मोर्चेपर रूसी सेनाके असफल आक्रमण करते समय ही अगस्त १९१४ ई० में चार रूसी अक्षोहिणियोंने दक्षिण-पश्चिमी मोर्चेपर आस्ट्रियाके विरुद्ध आक्रमण किया। यहा सफलता मिली, और शत्रुओंको हराकर उन्होंने ल्वोफ और गोलिचपर अधिकार कर लिया, करीब-करीब सारी गलिसिया रूसी सेनाके हाथमें आ गई, लेकिन सितम्बरके अन्तमें जर्मन सेनायें आ धमकी, जिससे दिसम्बर १९१४ ई० के मध्य तक रूसी सेनाओंकी प्रगति रुक गई। अब दोनों ही पक्ष एक दूसरेको ढकेलनेमें असमर्थ थे। लेकिन १९१४ ई०के शरद्‌मे काकेशसका एक नया मोर्चा तैयार हो गया था। दो जर्मन युद्धपोत "गोयेबेन" और "ब्रेस्ला" भूमध्यसागरसे कालासागरमें घुस आये। तुर्क जर्मनीके पक्षमें थे, इसलिये उन्हे दरेदानियाल पार होनेमें कोई अडचन नही हुई। तुर्कोंने रूसके विरुद्ध जर्मनीसे संधि की थी, इसलिये उसने रूसके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। "गोयेबेन" और "ब्रेस्ला"ने अदेस्सा और फ्योदोसियापर बमवर्षा की, तुर्क सेनाने भी अपना प्रभुत्व दिखलाना चाहा, लेकिन दिसम्बर १९१४ ई०मे सरिकामिशके युद्धक्षेत्रमें उसे रूसियोंने बुरी तरह हराया। दक्षिण-पश्चिमी मोर्चेपर कितने ही समय तक दोनों पक्षोंकी प्रगति रुके रहनेके बाद १९१५ ई०के अप्रैलके अन्त और मईके आरम्भमें एक जर्मन सेना गोर्लिच और तरनोफके बीच रूसी मोर्चे-का भेदन करनेमें सफल हुई, जिसके कारण रूसी सेना जल्दीसे पीछे हटनेके लिये मजबूर हुई। अब सारे रूसी मोर्चेपर जर्मन छा गये। आस्ट्रियन सेनाने पर्जेमिसल और ल्वोफको ले लिया, जुलाईमें एक जर्मन सेनाने इवानगोरदके किलेपर अधिकार किया, जुलाईके अन्तमें वारसा (वरसावा) और ब्रेस्त-लितोव्स्क जर्मनोंके हाथमें चले गये, फिर आगे बढते हुए उन्होंने ग्रोद्नो और विल्नोसपर अधिकार किया। १९१५ ई०के शरद्‌में इस प्रकार पोलन्द, लिथु-वानिया और बाल्तिक प्रदेशोंके कितने ही भाग जर्मन और आस्ट्रियन सेनाके हाथमें चले गये। १९१५ ई० के मईसे अक्तूबरके छ महीनेमें डेढ लाख रूसी सैनिक मारे गये, और दस लाख आहत या बंदी हुये। इस प्रकार १९१४-१५ ई०मे पूर्वी मोर्चेपर रूसी सेनाकी भारी हार हुई। रूसके लिये अब कोई आशा नही थी। लोगोंमे युद्धके भीषण संहार, पराजय तथा जारशाही शासनके अत्याचारोंके विरुद्ध भारी असंतोषकी आग भडक उठी। बोल्शेविक पहलेसे ही युद्धके विरोधी थे। जिस वक्त युद्ध छिडा, उस वक्त लेनिन आस्ट्रियामें थे। आस्ट्रियनोंने लेनिनको पकडकर अपने देश से निकाल दिया, और वह स्वीजर्लैण्ड चले गये। बोल्शेविक इस युद्धको अनुचित युद्ध कहते थे, क्योंकि वह परतंत्र देशोंकी मुक्ति या स्वतंत्र देशोंकी प्रतिरक्षाके लिये नहीं लडा जा रहा था, बल्कि उसका उद्देश्य था विदेशी राज्यों और जातियोंको जीतकर गुलाम बनाना।

रूसमे चारों ओर आर्थिक अव्यवस्था फैली हुई थी। उसकी पिछडी हुई आर्थिक-व्यवस्था तथा उद्योग-धंधोंकी निर्बलताके कारण जर्मनोंसे हारनेके सिवा रूसकी सेनाओंके लिये और कोई रास्ता नही था। युद्धके कारण कोयलेका अभाव-सा हो गया, जिससे फैक्टरियों और मिलोंने कामको कम कर दिया। १९१६ ई०मे धौंकू भट्ठोंने लोहा तैयार करना बन्द कर दिया—फौलादके कारखाने देशके लिये आवश्यक धातुका आधा ही पैदा करते थे। रेलें युद्ध कालीन यातायातको ठीकसे कायम नही रख सकीं। सेनायें ऐसी अस्त-व्यस्त अवस्थामें पीछे हटीं, जिसके कारण बहुतसे इंजन और गाडियां दुश्मनोंके हाथोंमें जानेसे नही बचाई जा सकीं। सैनिकोंके सेनामें भर्ती होनेके कारण

कृपिकी उपज भी पहलेसे बहुत कम हो गई, वयस्क पुरुपोंमेंसे ४७ प्रतिशत (१४० लाख) सेनामें भर्ती किये गये थे। खेतोंके लिये उपयोगी घोडोंमें पचास लाखकी कमी हो गई थी, फिर कृपिकी उपज क्यों न कम होती? १९१६ ई०में १९०९ ई०की अपेक्षा पचासी प्रतिशत ही खेत बोये गये। लडाईके लिये सामान खरीदनेके वास्ते इंगलैण्ड, फ्रांस और युक्त राष्ट्र अमेरिकाको ७७६९० लाख रूवल देना था, यह चोट सबसे भयंकर थी। युद्धक्षेत्रमें घोर पराजय और देशके भीतर आर्थिक प्रलय दोनोंने मिलकर रूसी शासकों और पूंजीपतियोंका होश बिगाड दिया। रूसी सैनिकोंके खूनकी गिनती न करके जारशाहीके मित्र अपने कर्जोंको जल्दी उगाहना चाहते थे। इंगलैण्डका तीन अरब रूवल कर्जा हो गया था, जिसके बदलेमें उसने जारशाही सरकारसे उसकी सुरक्षित सुवर्ण-निधिको लंदन भेजनेके लिये मांग की, और साथ ही वह इसपर जोर दे रहा था, कि रूस और भी ताजी सेनायें युद्धक्षेत्रमें भेजे। १९१६ ई०में फ्रांसने अपने प्रतिनिधि भेज चार लाख रूसी सेना फ्रांसके भीतर लडनेके लिये मांगी। यदि क्रांति न हो गई होती, तो जारशाही रूस फ्रांसकी मांगको ठुकरा नहीं सकता था।

इस तरहकी आर्थिक अराजकता और संकटको बर्दाश्त करना जनताकी शक्तिके बाहर था। जनताके सबसे जागरूक भाग मजदूरोंने अपने मनोभावको १९१५ ई०के वसंतसे ही जगह-जगह हडताल करके प्रकट करना शुरू कर दिया था। ९ जनवरी १९१६ ई०का "खूनी रविवार" उन्होंने एक बडी राजनीतिक हडतालके रूपमें मनाया। अक्तूबर १९१६ ई०में ऐसी हडताल और प्रदर्शन बडे जोरदार होने लगे, और कमकरोंने नारा लगाना शुरू किया—"युद्ध बन्द करो", "स्वेच्छाचारिता की क्षय।"

सेनाका मनोभाव कैसा था, इसका पता सिपाहियोंके अपने घरोंमें भेजे पत्रों द्वारा मिलता था। एक सिपाहीने लिखा था—"आजके सिपाही वह सिपाही नहीं हैं, जो कि जापानी-युद्धके समय थे। दासताभरी आज्ञाकारिताके बाहरी परदेके भीतर उनके दिलोंमें भारी गुस्सेकी आग धधक रही है, एक छोटी-सी दियासलाई जलाने भरकी देर है, और वह भडक उठेगी।" और दियासलाई जलानेका काम बोल्शेविक बडी तत्परतासे कर रहे थे। उनमेंसे कितने ही सेनामें काम कर रहे थे। म० व० फ्रुंजे जैसा युद्धकौशल पटु क्रांतिकारी १९१५ ई०में जेलसे भाग निकला था। उसने मिन्स्क नगरमें एक बोल्शेविक संगठन कायम करके पश्चिमी मोर्चेके सिपाहियोंके साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किया। अ० अ० ज्दानोफ सेनाके लिये चालित किया गया था। वहां जाकर उसने सेनामें बोल्शेविक प्रचार शुरू किया। व० व० विवविशियेफ और स० म० किरोफ काकेशस और समारामें विद्रोह फैला रहे थे। ल० म० कगानोविच पहले कियेफ और बादमें एकातेरिनोस्लावमें मजदूरों और सैनिकोंके बीचमें प्रचार कर रहा था। इस प्रकार मालूम होगा, कि बोल्शेविक इस स्थितिसे फायदा उठानेके लिये तैयार थे।

मध्य-एसियामें युद्धका प्रभाव—युद्धके कारण जो आर्थिक कठिनाइयां युरोपीय रूसमें पैदा हुई थीं मध्य-एसिया उसके प्रभावसे मुक्त कैसे रह सकता था? चीजोंके दाम महंगे हो गये थे, करके भारसे लोग वैसे ही दबे हुये थे, और अब युद्धके कारण उसे और बढा दिया गया था। रूसी पूंजीपतियोंको कपासकी जरूरत थी, इसलिये मध्य-एसियाकी कृपि-भूमिमें कहीं-कहीं आधेसे ज्यादाको कपासके खेतोंमें परिणत कर दिया गया था, जिसके कारण पर्याप्त अनाज पैदा नहीं हो सकता था, और देशमें अन्नका अकाल फैला हुआ था। रूसी सरकार और उसके गोरे अफसर किर्गिज और कजाक घुमन्तुओंको उनकी चरागाहोंसे वंचित करके वहां रूसी किसानोंको बसा रहे थे। १९१५ ई०में पैंतालीस लाख एकड बढिया जमीन कजाकों और किर्गिजोंसे छीनकर रूसी जमींदारों, सरकारी अफसरों और कुलकों (धनी किसानों) को दे दी गई। युद्धके लिये रिसालोंके वास्ते घोडों और खानेके लिये पशुओंको छीन-छीनकर मध्य-एसिया और कजाकस्तानके चरवाहोंकी अवस्थाको और भी बुरा बना दिया गया। लोग पहलेहीसे "त्राहि मां, त्राहि मां" कर रहे थे। इसपर जून १९१६ ई०में राजाज्ञा निकली, कि १९ से ४३ वर्षके उमरवाले पुरुषोंको फौजमें भर्ती होना पडेगा, और उन्हें युद्धक्षेत्रमें खाइयां खोदने तथा दूसरे कामोंमें लगाया जायेगा। रूसके कानूनके अनुसार रूस-भिन्न जातियोंसे सैनिक सेवा नहीं ली जा सकती थी। भला जारशाही द्वारा शोपित और

नत्पीडित उज्बेक, कजाक, किर्गिज, तुर्कमान क्यो सैनिक सेवा करनेके लिये तैयार होते ? सो भी ऐसे समयमे, जब कि खेतमे फसल काटनेके लिये तैयार थी। उज्बेक और कजाक विद्रोह करनेमे पहले थे। ताशकन्द और समरकन्द जिलेके गावो और कस्बोमे उज्बेकोने सरकारी कचहरियों और दफ्तरोपर आक्रमण किया, और सैनिक भरतीकी सूचीको जला दिया। जुलाई १९१६ ई० के मध्यमे विद्रोह सारे फरगानामे फैल गया। समरकन्द जिलेमे जीजकके पास जारशाही सेनाके साथ बाकायदा लडाई हुई, जिसमें रूसी सेनाने तोपोका इस्तेमाल किया। विद्रोहियोने वेर्नो (आधुनिक अल्माअता) और ताशकन्दके बीचके यातायातको काट दिया, और अपने विरुद्ध भेजी गई हथियारोकी ट्रेन लूट ली। इन हथियारोसे हथियारबन्द होकर किसान रूसी सेनासे लडनेके लिये तैयार हो गये, और अक्तूबरसे पहले जारशाही उनके विद्रोहको दबा नही सकी। तुरगाई (आधुनिक अकत्यूबिन्स्क) जिलेके कजाकोका विद्रोह सितम्बर १९१६ ई० मे शुरू हुआ। उसके दबानेमे जारशाहीको काफी कठिनाई उठानी पडी। इस विद्रोहका नेता अमनगेल्दी ईमानोफ था। जब जिलेके कजाकोने सेनामे भरती होनेसे इन्कार कर दिया, तो रूसी राज्यपालने स्वय जाकर उन्हे समझाना चाहा, इसपर अमनगेल्दीने उससे पूछ दिया—"इजाजत दीजिये सरकार, एक प्रश्न पूछनेकी। अपने अज्ञानके कारण हमे समझमे नही आता, कि इस युद्धमे शामिल हो हम किसकी प्रतिरक्षा करेगे ?" राज्यपालने अमनगेल्दीको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया, लेकिन वह वहासे अन्तर्धान हो गया, और थोडे ही समयमे उसने काफी सख्यामे विद्रोहियोको सगठित कर जारशाही सेनाका मुकाबला पहलेपहल किजिलकुल (लाल सरोवर) मे किया। लडाई सारे दिन होती रही, सेनाको पीछे हटना पडा। अक्तूबर १९१६ ई०के अन्तमे अमनगेल्दी और उसके साथियोने तुरगई नगरको घेर लिया, लेकिन वह उसके ऊपर अधिकार नही कर सके। वहासे हटकर अमनगेल्दीने बतबकरा गावमे किलेबन्दी करके उसे अपना केंद्र बनाया। वहा उसने हथियारोंके बनानेके लिये एक मिस्त्रीखाना स्थापित किया, जिसमे कारीगर रात-दिन लगकर तलवार और दूसरे हथियार बनाने लगे। उसने कजाकोको बन्दूक चलाना और फौजी कवायद सिखाना भी शुरू किया। फर्वरी १९१७ ई०के मध्यमे एक काफी बडी सेना अमनगेल्दीके विरुद्ध भेजी गई, जिसने बतबकरापर अधिकार कर लिया, लेकिन विद्रोहियोको उनके बाप-दादोका दश्त (निर्जन भूमि) शरण देनेके लिये तैयार था। बोल्शेविक-क्रातिके अब आठ ही महीने रह गये थे। उतने दिनो तक किसी तरह लडते और आत्मरक्षा करते अमनगेल्दी और उसके आदमियोने बिताया। बोल्शेविक-क्रातिके समय अमनगेल्दी बोल्शेविकोमे शामिल हो गया, और बोल्शेविक पार्टीका सदस्य बन क्रातिके लिये लडते हुये उसने वीरगति प्राप्त की।

तुर्कमानोमे भी सघर्ष देरतक रहा। तुर्कमान प्राय सारे घुमन्तू थे, इसलिये अपने विरुद्ध भेजी सेनासे आसानीसे बचते हुये वह तुर्कमानिस्तानकी विस्तृत तथा बहुत कुछ निर्जन और रेगिस्तानी भूमिमें घूमते रहे, और कही-कही विद्रोही ईरानकी सीमाके भीतर भी चले गये। जारशाही सैनिकोने जहा भी मौका मिला, तुर्कमानोके डेरोको जला दिया, उनकी सम्पत्ति और पशुओको छीन लिया। इस अत्याचारके कारण कितने ही इलाकोमे जनसख्या आधी रह गई। महाराज्यपाल कुरोपत्किनने ३४७ विद्रोहियोपर मुकदमा चला ५१ को फासी दिलवा दी। जारशाहीने इस तरह अपने अन्तिम दिनोमे मध्य-एशियाके लोगोपर भीषण अत्याचार किये। जहा दक्षिणवाले अपने परिवारो और पशुओको लेकर ईरान और अफगानिस्तानमे भागनेके लिये मजबूर हुये, वहा कितने ही हजार किर्गिज और कजाक चीनी तुर्किस्तानके भीतर भाग गये। सोवियत शासनके स्थापित होनेके बाद उनमेंसे अधिकाश फिर अपनी जन्मभूमिमे लौट आये।

फर्वरी-क्रान्ति—अन्तिम दिनोमें जारशाही शासन सचमुच ही जिन्दा सडी लाश था। ऊपरसे नीचेतक सारे शासक आकठ भ्रष्टाचार और अत्याचारमें मग्न थे। मिथ्या विश्वासकी यह हालत थी, कि एक ढोगी बदमाश ग्रेगोरी रस्पुतिन जारका गुरु बन गया। रस्पुतिन साइबेरियाका एक किसान तथा भूतपूर्व घोडाचोर था। ईसाई साधु बनकर मठोमे इधर-उधर घूमते उसने देख लिया, कि लोगोकी अधश्रद्धासे बहुत फायदा उठाया जा सकता है, इसीलिये वह निकालस महात्मा बन गया।

देहातसे उसकी प्रसिद्धि जल्दी ही राजधानीमें पहुची। जारिना सतो और सिद्धोकी बडी भक्तिन थी। उसके इकलौते पुत्रको डाक्टरोने असाध्य रोगी बतला दिया था, इसलिये वह किसी सतकी करामातसे अपने पुत्रकी रक्षा कराना चाहती थी। रस्पुतिनके किसी गणने जारिनाके पास उसकी लम्बी-चौडी तारीफ की। जारिनाने उसे राजमहलमें बुला लिया, और घोडाचोरने ऐसा जादू चलाया, कि जारिना इस ढोगीको दूसरा ईसा मसीह समझने लगी। घरके काममें ही नही, बल्कि राजके कारबारमे भी रस्पुतिनकी राय ली जाती। उसकी कृपाके बलपर कितने ही लोग बडे-बडे दर्जोपर पहुचे। इस निरक्षरप्राय ढोगीके कहनेपर जार मत्रियो तकको नियुक्त और बर्खास्त करता था, जैसा अभी हाल ही में पजाबके एक मुख्यमत्रीके यहा देखा गया। जिस वक्त युद्धक्षेत्रमें रूसी सेनायें हारपर हार खा रही थीं, उस समय जार-परिवार रस्पुतिनकी भविष्यद्-वाणियोका तिनकेका सहारा ले रहा था। उसके हदसे ज्यादा बढे हुये प्रभावको देखकर जारवशी महाराजुल तथा उच्चकुलीन लोग भी रस्पुतिनको खतरेकी चीज समझने लगे। उनके ख्यालमें सारी बुराइयो और विपदाओका कारण वही बदमाश था। उसके विरुद्ध षड्यत्र करके जारके अपने सबधियो तथा दूसरोने १७ दिसम्बर १९१६ ई०को रस्पुतिनको मार डाला, और उसे बर्फ जमी हुई नेवा नदीमे छेद करके बहती धारामे डाल दिया। लेकिन जारशाहीके राजनीतिक और सैनिक ढाचोको निर्बल करनेका कारण रस्पुतिन नही था, और न उसकी वजहसे मजदूरो और किसानोमें देशव्यापी असतोष फैला था। पिछडा हुआ रूस एक आधुनिक महायुद्धके भारको उठाने योग्य नही था। बहुसख्यक सैनिक बिना बन्दूकोके थे। वह कैसे लडते ? रेलोका यातायात बन्द-सा हो गया था, कारखानोको कच्चा माल और ईंधन नही मिलता था। आहार मिलना मुश्किल हो गया था, फिर लोग क्यो न विद्रोह करनेके लिये तैयार होते, और उस अवस्थामे, जब कि सुसगठित क्रातिकारी व्यापक रूपसे उनमे प्रचार करते मुक्तिका रास्ता दिखला रहे थे ? ९ जनवरी १९१७ ई० को "खूनी रविवार"का पर्व-दिन पडा। उस दिन राजधानी पेत्रोग्रादमें युद्धके विरुद्ध भारी प्रदर्शन हुआ। मास्को, बाकू, निजनी-नवोगोरद तथा दूसरे नगरोमें भी लोगोने अपने विरोधी भावोको "खूनी रविवार"के विशाल जलूसोद्वारा प्रकट किया। मास्कोमें लाल झडा लेकर "युद्ध बन्द करो" का नारा लगाते हजारो कमकर सडकोपर निकल पडे, जिन्हे सवार-पुलिसने जबर्दस्ती तितर-बितर कर दिया। कितने ही नगरोमें हडताले हुईं। मेन्शेविक और समाजवादी क्रातिकारी शासनमे परिवर्तन करना चाहते थे, लेकिन इस समय युद्धके पक्षमे होना वह अपना राष्ट्रीय कर्त्तव्य मानते थे। १४ फर्वरी १९१७ ई० को दूमाके उद्घाटनके दिन बोल्शेविकोकी प्रेरणासे भारी सख्यामे मजदूर सडकोमे "स्वेच्छाचारिताकी क्षय", "युद्ध बन्द करो" के नारे लगाते निकल आये। फर्वरीके उत्तरार्धमें पेत्रोग्रादमे क्रातिकारी आन्दोलन बडी तेजीसे बढा। १८ फर्वरीको पुतिलोफके कारखानेमें तीस हजार मजदूरोने हडताल कर दी, और २३ फर्वरीके सवेरे जब उन्होने अपना जलूस निकाला, तो दूसरे कारखानोंके भी बहुतसे मजदूर शामिल हो गये।

पेत्रोग्रादकी बोल्शेविक पार्टीकी कमीटीने लोगोसे कहा, कि ८ मार्च (२३ फर्वरी)को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूरिनोका दिवस राजनीतिक हडताल और प्रदर्शनोके साथ मनाना चाहिये। उस दिन ९०००० स्त्री-पुरुषोंने काम छोड दिया। अगले दिन ९ मार्च (२४ फर्वरी) को दो लाख मजदूरोने हडताल कर दी, और नगरके सभी भागोमे क्रातिकारी सभाये होने लगी। पुलिसने सावधानी करते हुये नेवा नदीके सभी पुलोपर अधिकार कर रक्खा, लेकिन नेवा उस वक्त बर्फ बनी हुई थी, इसलिये मजदूरोको शहरमे आनेके लिये पुलोकी अवश्यकता नही थी। १० मार्च (२५ फर्वरी) को राजनीतिक हडतालने सार्वजनिक हडतालका रूप ले लिया। पेत्रोग्रादके सेनापतिको जारने हुक्म भेजा—"मै तुम्हे हुक्म देता हू, कि कलसे पहले ही राजधानीकी दुर्व्यवस्थाका अन्त कर दो।" इसपर पुलिसने प्रदर्शनकारियोकी छातीपर रखी मशीनगनोकी गोलियोंसे भूनना शुरू किया। सडको और चौरस्तोमे नगरके केन्द्रीय भागके सभी जगहोमे सैनिक बैठे हुये थे। मजदूरो और बोल्शेविकोंको पकड-पकडकर अधाधुन्ध जेलोमे बन्द किया जा रहा था। पेत्रोग्रादकी बोल्शेविक कमीटीके सदस्य जेलोमे बन्द कर दिये गये थे। इस समय मोलोतोफके

नेतृत्वमे केन्द्रीय कमीटीका ब्यूरो विद्रोहका सचालन कर रहा था। यहा यह याद रखना चाहिये, कि अभी तक रूसमे पुराना पचाग चल रहा था, जिसकी तारीख तेरह दिन बाद पडती थी——२३ फर्वरी वस्तुत ८ मार्च थी। प्रथम क्राति मार्चमे हुई थी, लेकिन पुराने पचागके अनुसार उसे फर्वरी-क्राति कहा जाता है। इसी तरह आठ मास बाद होनेवाली बोल्शेविक-क्राति वस्तुत. नवम्बरमे हुई थी, लेकिन पुराने पचागके अनुसार अक्तूबरमें होनेसे उसे तबसे आजतक अक्तूबर-क्राति कहा जाता है।

२७ फर्वरी (१२ मार्च)को पेत्रोग्रादमे सेनापर क्रातिका प्रभाव पडने लगा, सैनिक समझने लगे, कि उनका हित जारशाहीके साथ रहनेमे नही, बल्कि विद्रोहियोका साथ देनेमें है। इसी दिन दो रेजीमेटोने वीबोर्ग मुहल्लेमे कमकरोका साथ दिया। मजदूरोने एक हथियारखानेपर अधिकार करके वहासे चालीस हजार बन्दूके और दूसरे हथियार लेकर अपनेको हथियारबन्द किया। उन्होने जेलोसे राजनीतिक बदियोको छुडा लिया। इसी दिन जेनरल खबारोफने राजधानीमे मार्शल-ला घोषित कर दिया। लेकिन जब सेनामे ही विद्रोह फैल रहा हो, तो मार्शल-ला क्या कर सकता था? उस समय जार नगरसे बाहर डेरा डाले हुये थ, और जारिना राजधानीमे बैठी अपने पतिके पास बराबर आशापूर्ण सदेश भेज रही थी। उसने अपने एक पत्रमें लिखा——"यह गुण्डोका आन्दोलन है। तरुण लडके-लडकिया चारो ओर चिल्लाते फिर रहे है, कि रोटी नही है——यह केवल लोगोको भडकानेके लिये।" जारने युद्धक्षेत्रपर हुक्म भेजकर सेनाको पेत्रोग्राद भेजनेके लिए कहा। एक सेना भरी हुई ट्रेन जेनरल इवानोफके नेतृत्वमे मुश्किलसे जार्स्कोयेसेलो (पेत्रोग्रादके पास जारग्राम) मे पहुची भी, कितु सैनिकोने क्रातिकारी सिपाहियोसे मेल-मिलाप बढाकर अपने जेनरलको पकडवाना चाहा। जारने अब जार्स्कोयेसेलोको भी अरक्षित देखकर पेत्रोगादके लिये ट्रेनपर प्रस्थान किया, लेकिन वहा भी उसे खतरा मालूम हुआ, और ट्रेनको प्स्कोफकी ओर मोड दिया गया। सभी जगह सेना क्रातिकी ओर हो रही थी।

१९०५ ई०की क्रातिमें हम देख चुके है, कि किस तरह अपने आप मजदूरोने सगठित रूपसे जारशाहीका मुकाबिला करनेके लिये कमकर-प्रतिनिधि-सोवियते सगठित की। अब इस क्रातिमे भी उस तजर्बेसे फायदा उठाकर मजदूर सिपाही प्रतिनिधियोकी सोवियतें कायम हुईं, जिनमें सबसे पहले कायम हुई थी पेत्रोग्राद सोवियत। २७ फर्वरी (१२ मार्च) को क्रातिकी विजय हुई। हथियारबन्द मजदूरो और सैनिकोने राजनीतिक बदियोको जेलोसे छुडा लिया। इस प्रकार हम देखते है, कि जारशाही शासनयत्रका स्थान लेनेके लिये सोवियतका पहला तजर्बा तुरन्त काममें आया। अभी सडकोमे गोलिया चल रही थी, इस वक्त भी करखानोके मजदूर सोवियतके लिये अपने सदस्य निर्वाचित कर रहे थे। फर्वरी १९१७ ई० की सोवियतें केवल मजदूरो ही नही, बल्कि सैनिकोके प्रतिनिधियो द्वारा भी सगठित की गई थी। २७ फर्वरी (१२ मार्च) तक निर्वाचन हो गया था,। उसी शामको पेत्रोग्राद सोवियतकी प्रथम बैठक हुई। पेत्रोग्रादमे क्रातिके सफल होनेकी खबर मिलते ही सारे देशमें क्राति फैल गई। २७ फर्वरी (१२ मार्च) को ही मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीके सगठनोने वहाके मजदूरो और सैनिकोसे पेत्रोग्रादकी क्रातिका समर्थन करनेकी अपील की। अगले दिन बडे-बडे कारखानोके मजदूर हडताल करके सडकोपर निकल आये, और वहीपर मास्को छावनीके सैनिक उनमें आ मिले। १ मार्च (१४ मार्च)को मजदूरोने बोल्शेविक बदियोको मुक्त किया, जिनमे प्रसिद्ध क्रातिकारी तथा पीछे गृहमत्री फ० ई० जेजिन्स्की भी था। निजनी-नवोग्राद (आधुनिक गोर्की) में भी क्रातिकी विजय हुई। २ (१५) मार्च को तुलाके हथियारके कारखानोंके मजदूरोने विद्रोह कर दिया, और वहाके जारशाही अफसरोको पकडकर अपनी सोवियत (पचायत) स्थापित की। यद्यपि क्राति सफल हुई थी मजदूरो और सिपाहियोकी कुर्बानी और बलपर, लेकिन उससे प्रथम लाभ उठानेवाले थे अवसरवादी समाजवादी-क्रातिकारी और मेन्शेविक। १ मार्चकी रातको उन्होने बोल्शेविकोसे बिना पूछे ही दूमाके प्रतिगामी सदस्योंके साथ समझौता करके सरकार बनानेके लिये समझौता कर लिया। २ मार्चके सबेरे राजकुमार ल्वोफके नेतृत्वमे अस्थायी सरकार घोषित कर दी गई। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि अस्थायी सरकारके सभी सदस्य

पुरानी व्यवस्थाके समर्थक थे। ल्वाफ बहुत बडा जमींदार था। मिल्यूकोफको विदेश-मत्री बनाया गया। गुचकोफ अक्तूबरी दलका नेता तथा मिलमालिक और बैंकर था, जिसे युद्ध-उद्योग-समितिका युद्ध-मत्री बनाया गया था। प्रगतिशील पार्टीका सदस्य तथा कपडामिलका मालिक कोनोवलोफ व्यापार उद्योग-मत्री बनाया गया, और चीनी कारखानोका मालिक करोड़पति तेरेस्चेंको वित्त-मत्री नियुक्त किया गया। ग्यारह मत्रियोंमे केवल एक जनसमाजवादी दल (पीछे समाज-वादी क्रान्तिकारी दल) का सदस्य वकील केरेन्स्की था, जिसे न्याय-मत्री बनाकर टरका दिया
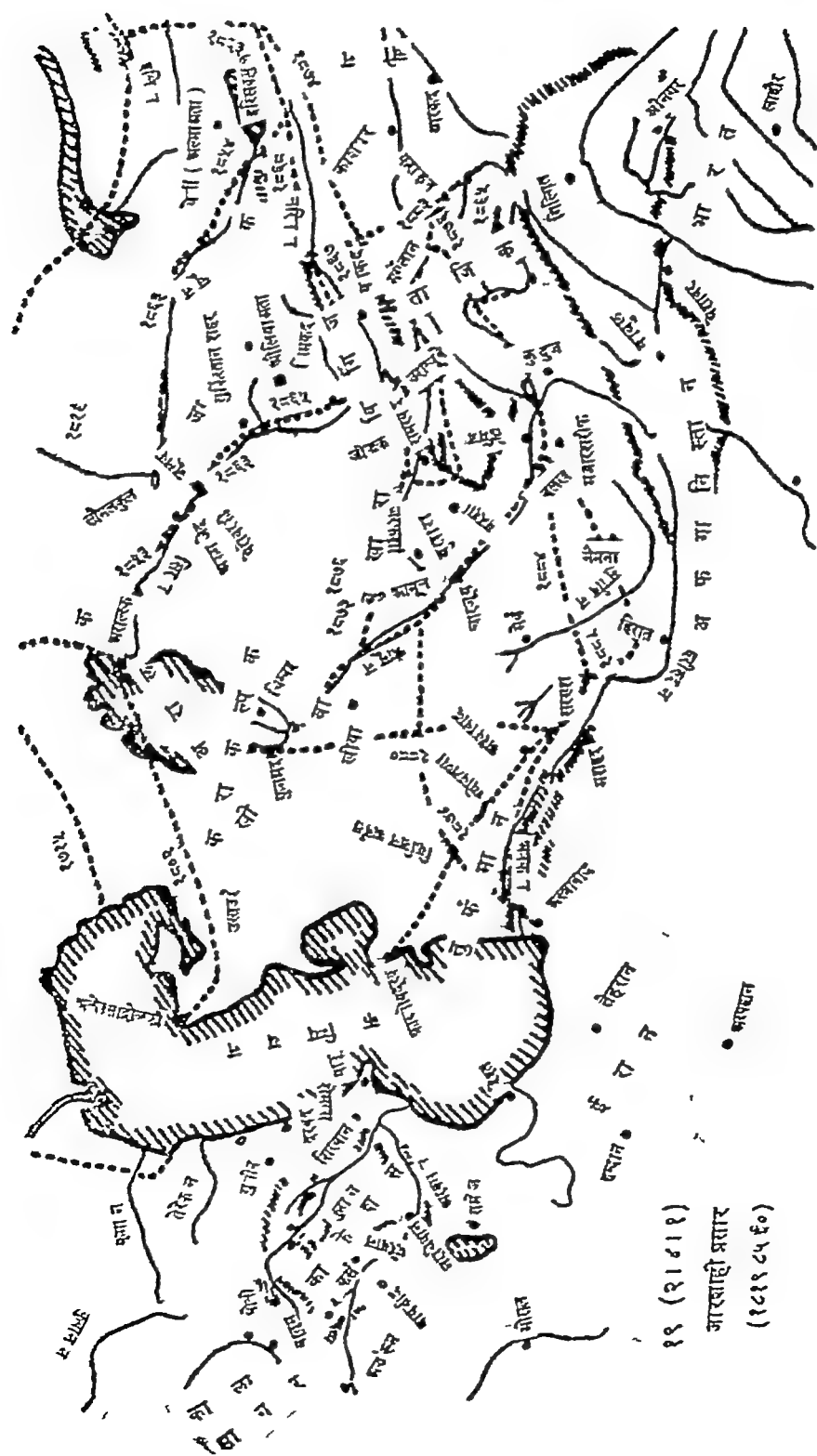
गया। इस मन्त्रिमंडलके बारेमें लेनिनने अपने एक पत्रमें लिखा था—"हितकारी व्यक्तियोंका समूह नहीं है यह सरकार। यह रूसमें राजनीतिक शक्ति हथियानेमें सफलता पानेवाले एक नये वर्गके प्रतिनिधि है। यह पूंजीपति जमींदारों और पूंजीवादियों (बूर्ज्वा वर्ग) के प्रतिनिधि है, जो कि लम्बे अर्सेसे हमारे देशका आर्थिक तौरसे शासन कर रहे थे।"

अस्थायी सरकारका पहला प्रयत्न यह हुआ, कि राजमुकुटकी रक्षा कैसे की जाय? जार पहले ही अधिकार वंचित होकर प्स्कोफमें बैठा हुआ था। गुचकोफ और शुलगिनने अस्थायी सरकार के नामसे वहां पहुंचकर जारपर जोर दिया, कि वह अपने पुत्र अलेक्सीके पक्षमें सिंहासन त्याग दे। लेकिन जारने अपने भाई मिखाइलके पक्षमें सिंहासन-त्याग करना स्वीकार किया। पेत्रोग्राद लौटनेपर दूमा सदस्य गुचकोफने मजदूरोंके सामने भाषण देते हुये निकोलाइ II के सिंहासन-त्यागको घोषित करते हुये अन्तमें "सम्राट् मिखाइल जिंदाबाद" के साथ अपने व्याख्यानको समाप्त किया। इसपर मजदूरोंने तुरन्त गुचकोफके गिरफ्तार करनेकी मांग पेश की। अस्थायी सरकारने बहुत जल्दी देख लिया, कि राजवंशकी रक्षा नहीं की जा सकती, और उसने एक प्रतिनिधिमंडल भेजकर मिखाइल रोमानोफसे सिंहासन त्यागकर सारी शक्ति अस्थायी सरकारके हाथमें दे देनेकी प्रार्थना की। ३ मार्च को मिखाइल रोमानोफने भी सिंहासनसे इस्तीफा देनेके पत्रपर हस्ताक्षर किया, और लोगोंको अस्थायी सरकारकी आज्ञा माननेके लिये कहा।

इस प्रकार रूसका अंतिम राजवंश खतम हो गया, लेकिन क्रांतिसे फायदा उठाकर प्रजाके नामसे जिस गुटने शासन अपने हाथमें लिया, वह साधारण जनताके हितोंकी पक्षपाती नहीं, बल्कि उसने पश्चिमी युरोपकी तरह सम्पत्तिशाली पूंजीवादी वर्गके लिये शासनयंत्रको अपने हाथमें संभाला था। लेकिन हिन्दीकी पुरानी कहावत क्या झूठी हो सकती है—"जो शालिग्रामको भूनकर खा गया, उसे बैंगन भूनकर खाते कितनी देर लगेगी?" जिन कारणोंने जारशाही जैसे शक्तिशाली शासन-यन्त्रको उखाड़कर फेंक दिया, वह अब भी मौजूद थे।

स्रोत ग्रन्थ

१ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ. क्रुवेर आदि मास्को १९१०)
२. पो गरामि पुस्तिन्याम् स्रेद्नेइ आजिइ (न. म. फेदोरोव्स्की, मास्को १९३७ ई०)
३ पुतेशेस्त्विये व् जापद्नीइ किताइ (ग. ये और म ये ग्रूझिमाइलो, पेतेरबुर्ग १९०१)
४. इस्तोरिया दिप्लोमातिइ (३ जिल्द, व प पोतेम्किन्, लेनिनग्राद १९४५)
५ यर्जीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरी (स ग विलिन्स्की आदि मास्को १९१४)
६ इस्तोरिया रोस्सिइ (२९ स सोलोवियेफ्, पेतेरबुर्ग, १८७९-८५)
७ तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (३ जिल्द १८८०)
८. History of U S. S R. (A. M. Pankratova)
९ Heart of Asia (E D Ross)
१० Manuel historique de politique etrengere (E Boureois, Paris 1927)
११ La rivalite anglo-russe on xix siecle on Asie (A M F Roure, Paris 1908)
१२ Europe and China (G F Hundson London 1931)
१३ Russo-Chinese Diplomacy (Ken Shen-Feigh, Shanghai 1928)
१४ Histoire de Russie (N Brian-Chaninov Paris 1929)

अध्याय २

खोकन्दके खान

(१७४७–१८७६ ई०)

अस्त्राखानियोंके शासनके निर्बल होनेपर उत्तरके कजाकोंने नोच-खसोट शुरू कर दी। इससे पहले जुगर-कल्मक अपने प्रभुत्वको बढाते चले आये थे। १७४० ई०तक ताशकन्द और तुर्किस्तान शहरके इलाकोंपर कजाकोंका पूरा अधिकार हो गया था, और पलासीके युद्धके समय (१७५७ ई०) चीनने जब जुगरोंकी शक्तिको खतम कर दिया, उसी समय अन्तर्वेदमें शक्तियोंका फिर बटवारा हुआ—मगितोंने बुखारा और अन्तर्वेदकी भूमिको अपने हाथमें किया, फरगाना और ताशकन्दपर एक नये वंशकी स्थापना हुई। इस इलाकेके नगरोंमें प्रभावशाली खोजा (सैयद) शासन कर रहे थे, जिन्होंने केंद्रके निर्बल होनेपर अपनेको स्वतंत्र शासक बना लिया। फरगानाका शासक यादगार खोजा भी ऐसा ही था, जिसकी लड़कीसे शाहरुख बेकने शादी की, जिसके वंशमें निम्न खान हुये थे—

१.	शाहरुख बेक, यादगार खोजा-दामाद	१७४७ ई०
२	रहीम बेक, शाहरुख-पुत्र	
३	अब्दुलकरीम बेक, शाहरुख-पुत्र	
४.	एर्दनी बेक, अब्दुलकरीम-पुत्र	—१७७० ,,
५	नरबुले, नरबुते, अब्दुलकरीम-दौहित्र	१७७०-१८०० ,,
६	आलम खान, नरबुले-पुत्र	१८००-९ ,,
७	उमर, नरबुले-पुत्र	१८०९-२२ ,,
८	मुहम्मद अली, मदली, उमर-पुत्र	१८२२-४२ ,,
९.	शेरअली, हाजिबी-पुत्र	१८४२ ,,
१०.	मुराद, आलिम-पुत्र	१८४२ ,,
११	खुदायार, शेरअली-पुत्र	१८४२-५७ ,,
१२	मुल्ला, शेरअली-पुत्र	१८५७-५९ ,,
१३	शाहमुराद, सरिसक-पुत्र	१८५९ ,,
	खुदायार (पुन)	१८५९ ,,
१४	सैयद सुल्तान, मुल्ला-पुत्र	१८५९-६५ ,,
	खुदायार (पुन)	१८६५-७५ ,,

१. शाहरुख बेक, यादगार खोजा-दामाद (१७४७ ई०)

जैसा कि कहा, अस्त्राखानियोंकी निर्बलतासे फायदा उठाकर इसने अपना वंश स्थापित किया। वोल्गाके पास रहनेवाले तुर्कोंके किसी कबीलेका यह एक अमीर किंतु राजवंशी नहीं था। १८ वीं सदीके आरंभमें यह वोल्गा-तटसे फरगाना पहुंचा, और खुर्रमसरायके शासक यादगार खोजाने इसे अपनी लड़की दे दी। वह अपने अनुयायियोंके साथ खोकन्दसे बारह मील पश्चिम, गूरगान (कूरकान) स्थानमें बस गया। शायद शाहरुख मगीती था और खोकन्दमें प्रधानता रखनेवाली शाखासे संबंध रखता था। शाहरुखने समुरको मारकर उसके राज्यको हाथमें कर उसे आगे बढ़ाया। चाहे वह छिङ-गिस् वंशका न भी रहा हो, लेकिन अपनी धाक जमानेके

लिये छिङ-गिस्‌के खूनका दावा करना फायदेकी बात थी, जैसा कि उससे एक सौ वर्ष पहले बाबर और उसके वशजोने भारतमें किया था।

२. रहीम बेक, शाहरुख-पुत्र

बापके मरनेपर बेटा उत्तराधिकारी हुआ, लेकिन अभी राज्य छोटा होनेसे वह खान न होकर बेक (अमीर) ही रहा।

३. अब्दुलकरीम बेक, शाहरुख-पुत्र

रहीम बेकके मरनेपर उसका भाई अब्दुलकरीम गद्दीपर बैठा, जिसके समयसे खोकन्दका प्रताप बढने लगा। इसीने वर्तमान खोकन्द नगरको आबाद करके उसे अपनी राजधानी बनाई।

४. एर्दनी बेक, अब्दुलकरीम-पुत्र (–१७७० ई०)

नही कहा जा सकता, एर्दनी बेक अब्दुल-करीमका पुत्र था या भाई। इसने फरगानाके सभी बेकोको अपने अधीन किया। १७५८ ई०में ताशकन्द चीनके हाथमे चला गया था। चीनी जेनरल चाउ-ह्वो-येइ ने खोजी जानका पीछा करते अपनी एक सैनिक टुकडीको बुरुतो (करा किर्गिजो) को दबानेके लिये भी भेजा। एर्दनी बेकने मास और शराबसे उनका सत्कार किया, और लौटते वक्त उनके साथ गया। उसने अपने एक अफसरको सम्राट् च्यान्-लुङ (काउ-चुङ १७३७–१७९५ ई०) के दरबारमे अधीनता स्वीकार करनेके लिये भेजा। अन्दिजानके शासक तुकतू मुहम्मद, मरगिलानके इलास पिङ्‌लीने भी बाज और दूसरी भेटोके साथ चीन-दरबारमे अपने दूत भेजे। १७६० ई०में तोकतू मुहम्मद स्वय पेकिङ्गमे उपस्थित हुआ। एर्दनीने ओश (अर्जीबी) के इलाकेपर आक्रमण किया, लेकिन चीनी जेनरलके हुक्मपर उसे लौट जाना पडा। १७६३ ई० में बुरुतोकी भूमिपर चीनियोने दूसरी बार आक्रमण किया। इस तरह १७७० ई० मे जब एर्दनी मरा, उस समय चीनका प्रभाव मध्य-एसियामें जोरोंपर था और उसकी इच्छाके विरुद्ध स्थानीय शासकोंको मनमानी करनेकी हिम्मत नही थी।

५. नरबुते, नरबुले, अब्दुलकरीम-दौहित्र (१७७०-१८०० ई०)

अब्दुलकरीम बेककी लडकी अर्थात् एर्दनी बेककी बहिनको बाबर-वशज अब्दुर्रहीम बेकने शादी की थी, जिससे नरबुते बी पैदा हुआ। इस प्रकार वह बाबरके प्रतापी वशका उत्तराधिकारी होनेका भी दावा कर सकता था, यद्यपि इस समय भारतमें इस वशकी भी दशा बहुत बुरी थी। नरबुतेके गद्दीपर बैठनेसे पहले सुलेमान बेक और शाहरुख बेक बारी-बारीसे कुछ महीनो तक खोकन्दकी गद्दीपर बैठ चुके थे। नरबुलेका बाप अब्दुर्रहीम बातिर (बहादुर) उज्बेकोके मिंग-कबीलेका और इसफाराके इलाकेका शासक था। दूसरी परम्परा यह भी है, कि यह यामच बी (बाबर)का वशज था। इसफारा लेनेके लिये एर्दनीने अब्दुर्रहमान (अब्दुर्रहीम) को धोखा देकर मार डाला, लेकिन उसके पुत्र नरबुतेको बच्चा समझकर छोड दिया। एर्दनीके उत्तराधिकारियोके भी विच्छिन्न या भाग जानेपर खोकन्दियोने नरबुतेको लाकर गद्दीपर बैठाया। यह बुखाराके अमीर शाह-मुरादका समकालीन था, और शायद उसकी अधीनता भी स्वीकार करता था। नरबुतेके पास पचास हजार सेना थी। चीन-सम्राट्ने उसे "पुत्र" की उपाधि प्रदान की थी। हर दूसरे साल घोडो, समूरी खालो आदिकी भेट लेकर खोकन्दका दूत चीन जाता था, और बदलेमें लाखो रुपयोकी बहुमूल्य चीजे इनाम मिलती थी। उस समय चीनी सीमातसे आगे सवारीके लिये सदूकनुमा घोडागाडी चढनेको मिलती, जिसमें दो घोडे जुतते। खाना-पीना सारा सामान इसी गाडीमे रक्खा जाता। जगह-जगह मुसाफिरोके लिये पडाव बने हुये थे, जहा पाच सौ चीनी सैनिक रहते थे, यात्री इन्ही पडावोमे रातको ठहरते। रास्ता ऐसे इलाकोसे जाता था, जहा आबादी बहुत कम थी। चीनकी सीमासे एक मासके करीब पेकिङ था। चीनी दरबारके अपने कायदे थे। दूतको काउ-ताउ

(दडवत्) करनी पडती, फिर प्रतिहार चीनी-तुर्कीमे कुछ बोलता, जिसका अर्थ था "सम्राट् श्रीमुख से पूछ रहे हैं, कि मेरा पुत्र नरबुते स्वस्थ और प्रसन्न तो है ?" दूत फिर दडवत् करता, और पहलेसे सिखलाये हुये वाक्योमे उत्तर देता—"नरबुतेको इसके सिवा और कोई इच्छा नही है, कि परमभट्टारककी आज्ञाका पालन करें।" भेंट-मुजरेके बाद सम्राट्ने दस लाख मूल्यका इनाम उसे दिया,जिसे घोडागाडियों में रख दिया गया। अफगान राजदूतने नरबुतेके बारेमें लिखा था—"नरबुतेने अपने लिये एक बडा ही सुन्दर महल बनाया है, जिसकी दीवारें चमकीली प्रोसलीन (चीनी मिट्टी)से ढकी हैं। वह दस हजार सिपाहियोंके साथ शुक्रवारकी नमाज पढता है।" उसके भोजनमें चावल भी सम्मिलित था। अफगान दूत मासूम खोजाके अनुसार नरबुतेने खोजन्द छोड़ सारे फरगानाको जीत लिया था, अन्दिजान, नमगान, ओश आदिके नगर उसके हाथमे थे। खोजन्दके शासक फाजिल बी और तत्पुत्र तथा उरातिप्पाके राज्यपाल खुदायारसे उसका झगडा रहता था। उसने अमीर बुखारासे मिलकर उरा-तिप्पापर अधिकार करना चाहा, लेकिन खुदायारने बुरी तरहसे हराकर भगा दिया। १७९९ ई०में नरबुतेने ताशकन्दके शासक यूनस खोजापर आक्रमण किया। कजाकोंके खान एलबर्सके मारे जानेके बाद १७४० ई०में ताशकन्द जुगर कल्मकोंके हाथमे चला गया था, जिनकी ओरसे कुसियक बी १७४९ ई० तक शासन करता रहा। जुगर साम्राज्यको नष्ट करके १७५० ई० में चीनियोंने ताशकन्दपर अधिकार कर लिया। कुछ दिनो छोटे छोटे अमीर जहा तहा राज्य करते रहे, फिर खलीफा अबूबकरके वशज यूनस खोजाने ताशकन्दको अपने हाथमे कर लिया, और इसने आसपासके इलाकेको दबाकर १७९८ ई०में महाओर्दूके कजाकोको भारी दड दिया। इसी यूनससे १७९७ ई०में नरबुतेकी पहली भिडत हुई। १८०० ई० में नरबुतेको यूनसने पकडकर मार डाला।

६ आलम खान, नरबुते-पुत्र (१८००-९ ई०)

नरबुतेके मारे जानेके बाद उसके बडे बेटे आलमने अपने भाई रुस्तम बेक और दूसरे सबधियोंको मारकर गद्दी सभाली। खोकन्दके खानोंमें पहलेपहल इसीने खानकी पदवी धारण की, और अपने नामका खुतबा तथा सिक्का चलाया। यूनस खोजा कजाकोंके साथ खोकन्दपर चढा, खुदायार-पुत्र बेक मुराद भी उसका सहायक था। सिर-दरियाके आर-पारसे दोनो सेनाओंने गोलाबारी की, किन्तु अन्तमें यूनसको खाली हाथ लौट जाना पडा। १८०३ या १८०५ ई०मे आलम खानने ताशकन्दको एक बार सर किया, लेकिन अन्तिम विजय उसके भाई उमर खानके हाथो हुई, जिसने यूनसके पुत्रको वहासे भगा दिया। आलमने कजाकोको हराकर बुखारासे उरातिप्पाको छीननेकी पहली बार असफल कोशिश की, दूसरी बार उसे सफलता मिली। तो भी खुदायारके भतीजे खानने उरातिप्पको फिर लौटा लिया।

चीनियोंके पूर्वी तुर्किस्तानके अल्ती शहरपर विजय प्राप्त करनेपर वहाका शासक खोजा सेरिसक बुखारा भाग गया। उसे काश्गर न लौटने देनेके लिये चीनने खोकन्दको हिदायत दे रक्खी थी, जिसके लिये खोकन्दको कुछ वार्षिक रुपये भी मिलते थे, जिसे लानेके लिये हर दूसरे-तीसरे साल चीनमें खोकन्दसे दूत जाता था। एक बार चीनने कारणवश रुपया नही दिया, जिसपर आलमने खोकन्दसे काश्गरकी ओर जानेवाले बुखाराके कारवाको रोक दिया। इसकी खबर मिलने-पर चीनने पेंशनकी बाकी रकमको भी देकर फिर खोकन्दको राजी कर लिया। आलम खान बडा ही स्वेच्छाचारी और दुराचारी था। अपनी प्रजाकी लडकिया उसके मारे सुरक्षित नही थीं। निरपराध लोगोंको भी मरवा डालनेका उसे व्यसन हो गया था। एक बार उसने अपने भाई उमरबेक और मामा तुगाईके सचालनमें भारी सेना देकर हुक्म दिया—कजाकोंके देशको जाकर बरबाद कर दो। हुक्मको न पूरा करना खानके क्रोधका भाजन होना था। मौसिम प्रतिकूल था, लेकिन तो भी खानके हुक्मको पूरा किया गया। कजाकोंने अधीनता स्वीकार की, और उमरने भाईको सूचना दी, कि मैंने कुछ कजाकोंको मार डाला और बाकियोंने अधीनता स्वीकार कर ली। ऐसी दया दिखलानेके लिये आलम खानने उसे गाली देकर फिर बड़ी क्रूरतासे नरसहार करनेके लिये लौटा दिया। उमरने

जाकर देखा, कि उसके पास दस हजार सेना है, जो इतने बडे कामके लिये पर्याप्त होगी, इसमें सदेह था। उसने तुगाई तथा दूसरे अफसरोसे सलाह ली। सबने कहा, कि हमारे घोडे लौटकर ताशकन्द जानेकी शक्ति नही रखते, ऊपरसे मौसिम भी बहुत खराब है, साथ ही कजाक मुसलमान और निरपराध है, उनका कत्ल-आम करना ठीक नही है, रेगिस्तानमे बिखरे हुये कजाकोको पकड पाना भी सभव नहीं है। उमरने पूछा--"फिर क्या करना चाहिये?" इसपर मामाने जवाब दिया--"उमरबेकको खान बनना होगा। हम आलम खान-जैसे अत्याचारीकी आज्ञा नही मान सकते।" वही उसने उमरके लिये राजभक्तिकी शपथ ली। सेनाने खोकन्दके भीतर पहुचकर उमरको खान घोषित किया। आलमके साथ तीन सौ आदमी रह गये थे। उसने अपने अनुयायियोमें खूब इनाम बाटे, और अपने खजाने, हरम, अन्त पुर, पुत्र शाहरुखके साथ ताशकन्दसे खोकन्दके लिये प्रस्थान किया। रास्तेमें एक किलेमें घिर गया, और आत्मसमर्पण करनेसे भी इन्कार कर दिया। रातको वहीं मुकाम रहा। सवेरे उठकर देखा, तो उसके तीन सौ अनुयायी भी साथ छोडकर खोकन्द चले गये थे। आखोमे आसू भरकर आलमने अपने पुत्रको हजार तिला (पाच सौ गिन्नी) दे अमीर हैदरके पास बुखारा भेज दिया। अपनी बेगमो तथा खजानोको गावके एक मुखियाके हाथमें सौंप बीस सवारो तथा अपने दीवानबेगी (वजीर) के साथ दर्राकोह चला गया। इस दर्रा (पहाडी डाडे) से खोकन्द नगर दिखलाई पडता था। दीवानबेगीने खानको खोजन्द चलनेकी सलाह दी, जहापर चार हजार खोकन्दी सैनिक रहते थे। लेकिन आलम खान अब भी अपनी राजधानीमे जानेका हठ कर रहा था। इसपर उसके और भी साथी हट गये और सिर्फ तीन आदमियोके साथ वह चला। शत्रु सैनिकोने उसका पीछा किया, और खानका घोडा दलदलमे फस गया। उसने दीवानबेगीसे घोडा मागा, किन्तु उसने उसे न दे स्वय दौडाते शहरका रास्ता लिया। उमरके सिपाहियोमेंसे किसीने खानकी पीठमें गोली माकर रातमें दफना दिया। यह १२२४ हि० (१६ II १८०९-७ I १८१० ई०) की बात है। पहले उमरने दीवानबेगी मुहम्मद जहूरका स्वागत किया, पीछे उससे सारा धन छीन लिया। जहूरका अन्तिम समय भक्ति-पूजामें बीता।

मध्य-एसियाके शासकोमे एक बडी कमजोरी यह थी, कि वह शेखो-खोजोंके बडे भक्त होते थे, उनकी दिव्य शक्तिपर बहुत विश्वास करते थे, लेकिन आलम इसे नही मानता था। खोकन्दमे एक बहुत बडा शेख रहता था, जिसके बहुत से मुरीद (चेले) थे, और जिसकी दिव्य शक्तिकी बडी प्रसिद्धि थी। आलमने एक बार उस शेखको बुलाया, और तालाबके किनारे रस्सी तानकर कहा--"ओ शेख, कयामतके दिन निश्चय ही तुम अपने चेलोको पुलेसिरात (स्वर्ग और नर्कके बीचकी पतली दीवार) को पार कराओगे, मैं चाहता हू, कि इस रस्सीसे जरा तुम इस तालाबको पार हो जाओ।" शेखने बहुत कहा, कि कुरानमें दिव्य शक्ति दिखलाना मना है। आखिर शेखको जबर्दस्ती रस्सीपर चढाया गया। गिरना तो था ही, इसपर लोगोने डडे मार-मारकर उस ढोगीके प्राण ले लिये। उसने बहुत-से दरवेशो और साधुओंको पकडकर ऊटवानी करनेके लिये मजबूर किया था। आलम खानके जारी किये हुये सिक्के चादी मिले हुये कासेके थे।

७ उमर खान, नरबुते-पुत्र (१८०९-२२ ई०)

आलम खानने अपने बेटे शाहरुखको बुखारा भेजा था, लेकिन वह वहा न जाकर ताशकन्द चला गया। पहले वहाके कुशबेगी (सेनापति) ने खानजादेका स्वागत किया, लेकिन आलम खानके मरनेकी खबर पाकर उसने उसे खोकन्द रवाना कर दिया, और चचाके पास पहुचनेसे पहले ही वह रास्तेमें मार डाला गया। उमर कमजोर दिलो-दिमागका आदमी था। शासन वस्तुत मामा मुहम्मद रजाबेक तुगाईके हाथमें था। उमरके शासनकालमें खोकन्द एक बहुत बडा व्यापार-केद्र बन गया। इसीके समय उरातिप्पा भी खोकन्दके हाथमे चला आया। यही नहीं, तुर्किस्तान-शहरको भी उसने छीन लिया और वहाके अन्तिम कजाक खान तोगाईने बुखाराम भागकर शरण ली, और वही मारा गया। मुहम्मद रजब कराजा बुखारामे भागकर ठहरा हुआ था। आलम खानके बाद वह खोकन्द लौटा। उस समय मामा मुहम्मद रजाबेक और उसके मित्र सेनापति कितकी कराकल्पक

में वैमनस्य हो उठा। एक दिन महलमें भोजनके लिये निमत्रित मुहम्मद रजाको पकडकर जेल में डालकर मार डाला गया। इसपर कितकीको भी बोटी-बोटी करके मरवाकर उसकी सपत्ति जब्त कर ली। मुहम्मद रजब कराजा अव खोकन्दका राज्यपाल तथा दरवारमे वहुत प्रभावशाली अमीर वन गया।

उमरने अपने दूत भेजकर रूसियोको खोकन्दमें अपने कारवा भेजनेके लिये कहा, और यह भी वचन दिया, कि यदि हमारी ओरके आधे रास्तेमें कारवाको लूटा गया, तो मै व्यापारियोकी क्षतिपूर्ति दूगा। इसपर कारवा आने-जाने लगा। किजिलजारमे एक खोकन्दी दूतका रूसी सैनिकसे झगडा हो गया, जिसे रूसी सिपाहीने मार डाला। रूसियोने एक हजार तिला (पाच हजार गिन्नी) जुरमानाके रूपमे दूतके मारे जानेके लिये दिया। १८१३-१४ ई० में कर्नल नजारोफने खोकन्दकी यात्रा की, और रूसी सीमातपर खोकन्दी दूतके मारे जानेके लिये अफसोस करते हुये वहुत समझाया। नजारोफ रक्षक सैनिको और वीस हजार रूबलके मालके साथ गया था। उसे महलके वगीचेमे ठहराया गया, आदमियो के लिये सफेद रोटी, चावल, चाय, खरवूजा आदि खानकी ओरसे मुफ्त दिया जाता था, और जानवरोको घास-चारा भी। वारह दिनकी प्रतीक्षाके वाद नजारोफसे खानने मुलाकात की। नजारोफ घोडेपर सवार था, लेकिन उसके कसाक पैदल थे। महलके पास जाकर नजारोफ घोडेसे उतर गया। रूसियोको देखनेके लिये सडको और मकानोकी छतोपर तमाशबीनोकी भीड थी। खान दर्शन देनेके लिये झरोखेपर वैठा था। नजारोफसे कहा गया, कि जैसे अपने वादशाहको सलाम करते हो, वैसे ही यहा भी करो। इसपर नजारोफने अपने सिरको नगा कर दिया, और सिरपर जारके पत्रको रखकर खानको प्रदान किया। खानकी ओरसे रूसी दूतको एक भोज दिया गया, जिसमे गुलावी रगका चावल और घोडेका मास भी सम्मिलित था। नजारोफने घोडेके मासको धर्मविरुद्ध कहकर नही खाया। उसके साथी कसाकोको खलअत और इनाम देकर लौटा दिया गया, लेकिन नजारोफको रोककर उससे माग की गई—या तो हमारे दूतकी मौतका हरजाना दो, या मुसलमान वनो, नही तो तुम्हे फासीपर चढाया जायगा। यह धमकी वस्तुत दिखावटी थी। नजारोफके साथ खानका वरताव वहुत अच्छा था, कितने ही भोजोमे निमन्त्रित कर उसकी नाच-गानेसे खातिर की जाती थी। सिर्फ यही खयाल रक्खा जाता था, कि वह भागने न पाये। खान उसे अपने साथ शिकारमें मरगिलान ले गया, जहापर काफिर होनेके कारण नजारोफको मुसलमानोने पत्थर भी मारा। कुछ समय वाद खानने नजारोफको छोड दिया, क्योकि रूसका व्यापार वडे नफे की चीज थी। उमर १८२२ ई० में अपनी मौत मरा, या शायद भाई मुहम्मद अलीने उसे मार डाला। उसके सिक्कोपर, "सैयद मुहम्मद उमर सुल्तान" और "मुहम्मद खान सैयद उमर" अकित रहता है।

८ मुहम्मदअली, मदली खान, उमर-पुत्र (१८२२–४२ ई०)

उमरके उत्तराधिकारी मदलीके वारेमे नही कहा जा सकता, कि वह उसका भाई था या वेटा। इसने अपने कई सबधियोको देशसे निकाल दिया, जिसमें उसके एक भाई महमूद सुल्तानने शहरसब्ज (किश) जाकर वहाकी राजकुमारीसे शादी की, पीछे वुखाराके अमीर नसरुल्लाका कृपापात्र वन खोजन्द और कुरमीतानका राज्यपाल भी रहा। शायद महमूदको शरण देनेके लिये वुखारासे मदलीका १८२५ ई० मे झगडा हो गया, और उसी समय जीजकको वुखारियोने ले लिया। १८२६ ई० में काश्गर-राजवशके जहागीर खोजाने चीनियोके विरुद्ध असफल विद्रोह कर दिया, फिर किर्गिजोमे भी झगडा कर लिया और अन्तमें भागकर मदलीके हाथमें पडा। मदलीने उसे कुछ दिनोतक नजरवन्द-सा रक्खा, फिर वह भागकर किर्गिजोमें चला गया। जहागीरने उन्हे चीनपर आक्रमण करनेके लिये राजी किया। चीनी काफिरोका जूआ मुसलमानो के ऊपर रहे, इसे पूर्वी-तुर्किस्तानके अमीर, जहागीर खोजा और खुद मदली कैसे पसद करते? मदलीने मुसलमानोके साथ बुरे वरताव करनेका वहाना लेकर एकाएक आक्रमण करके वहुतसे चीनियोंको मार डाला। जहागीर खोजा काश्गरपर चढा और मदली खानने सारे चीनी-तुर्किस्तानको

दबा लिया। मदली गाजीका झडा अब यारकन्द, अक्सू और खोतनपर फहराने लगा । जहागीर खोजा इसे क्यो पसद करने लगा ? लेकिन इसी बीच चीनी सेना आ गई, मदली भाग गया, और जहागीर खोजा पकडकर पेकिङ भेजा गया, जहा उसे फासी मिली। चीनियोने मदलीसे सुलह करके उसे यह अधिकार दिया, कि उसका प्रतिनिधि काश्गरके मुसलमानोंके धर्मकी देख-भाल और चीनको वहाके शासनमे सहायता करेगा ।

१८२८-२९ ई० में इतिहासकार मिर्जा शम्स खोकन्दमे था, जब कि जहागीर खोजाका भाई यूसुफ खोजा भी वहीपर रहता था। यूसुफ खोजाके मागनेपर मदलीने शाही खलअत और पच्चीस हजार आदमी देकर उसे काश्गरके लिये रवाना किया। वह खुद भी ओश तक साथ-साथ गया। ओशसे बीस दिनके रास्तेपर चीनी सीमातकी फौजी चौकी थी, जिसमें एक सौ पचास सैनिक रहते थे। लेकिन खोजाको भी विकट आदमियोसे मुकाबिला पडा था । चीनियोको निष्ठुर शत्रुओंसे दयाकी आशा कहा हो सकती थी ? उन्होने बढियासे बढिया कपडे पहन, खूब शराब पी और इसके बाद बारूदकी मेगजीनमे आग लगा दी। खोजन्दियोने पीछे वहा पचास साठ जली हुई लाशे पाईं। केवल पद्रह जीते बदी मिले, जिन्हे खोजाने मदलीके पास भेज दिया। पद्रह वर्स्त (२½ फर्सख) और आगे बढनेपर पाच सौ चीनी सैनिकोकी छावनी मिली, जिसके पास ही ७८०० सेना पडी थी। उनके साथ लडाई हुई, जिसमे खोकन्दी जीते। चीनी सैनिकोमेंसे एक-एक या तो मारे गये, या उन्होने आत्महत्या कर ली । अब यूसुफ खोजा मूसी और लिथागरके रास्ते काश्गरसे दस वर्स्त (१¾ फर्सख) पर पहुचा। वहापर उस समय काले और सफेद खोजोका झगडा चल रहा था । सफेद खोजे यूसुफके पक्षपाती थे और काले चीनियोके । सफेद खोजोने शहरसे निकलकर गाजियोका विजयीके तौरपर स्वागत करके बाजे-गाजेसे शहरके भीतर प्रवेश कराया। इस समय काले खोजोका नेता इसहाक बेक अपने तेरह सौ साथियोंके साथ गुलबागके किलेमे था। यूसुफ स्वय एक सौ पचास वर्स्त (८¾ फर्सख) आगे बढकर यगीहिसार पहुचा, फिर वहासे यारकन्द जा अपने पुत्र मिर्जा शम्सको शासक बना काश्गर भी छोडकर लौट गया। राजधानी काश्गर छोडनेके चार महीने बाद खबर आई, कि लाखो चीनी सेना फैजाबाद पहुच गई है। इसपर मिर्जा शम्स अपने बहुमूल्य खजानेको साठ सदूकोमें बन्द करके भागना चाहा, लेकिन काले खोजोने उसे लूट लिया, खोकन्दी चीनी-बाढके सामने बडी तेजीसे भागने लगे। उनके साथ उनके पक्षपाती सफेद खोजा भी भगे, जिनकी सख्या पचाससे साठ हजार तक बतलाई जाती है— स्त्री-पुरुष-बच्चे सभी पैदल, घोडो और गदहोपर सवार होकर खोकन्दकी ओर भाग रहे थे। उस समय मौसिम बहुत ठडा था, त्यान्‌शानके पहाडोमें बर्फ और सर्दीके मारे उनमेंसे बहुत तो रास्तेमें मर गये। पाच महीने बाद यूसुफ भी खोकन्दमें मर गया। पूर्वी-तुर्किस्तानसे भागे मुसलमान शरणार्थियोके लिये मदली खानने शेत्रीखाना नगर बसाया, तथा खोकन्दके नीचे सिर-दरियापर भी उनके बसनेका प्रबन्ध किर दिया।

खोकन्द बहुत दिनो तक चीनको नाराज नही रख सकता था। रूस अभी उसकी सीमासे बहुत दूर था, इसलिये उसकी अधीनता स्वीकार करके चीनको टरकाया नही जा सकता था। १८३१ ई० में खोकन्द और चीनके बीच सधि हुई, जिसके अनुसार "खोकन्दको अक्सू, ओश, तुर्फान, काश्गर, यगी हिसार, यारकन्द और खोतनमें आयात किये जानेवाले सभी विदेशी मालपर कर पानेका अधिकार मिला, और कर उगाहनेके लिये इन सभी नगरोमें अकसक्काल (शब्दार्थ श्वेत दाढी, अफसर) रखने तथा मुसलमानोकी रक्षा करनेका दायित्व मिला। इसके बदलेमें खोकन्दको चीनकी ओरसे यह सेवा करनी थी, कि खोजा राज्यको छोडने न पाये, और यदि कोई छोडना चाहे, तो उसे दड दे।" इससे मालूम होगा, कि १९ वी शताब्दीके पूर्वार्धके समाप्त होने समय काश्गरपर खोकन्दियोका काफी प्रभाव था।

उत्तरके कजाक विशेषकर महा-ओर्दूवाले अधिक सख्यामे इसी समय खोकन्दके भीतर भागे। इसपर सीमाके लिये रूसियोंके साथ खोकन्दका झगडा हो गया।

रूसियोसे झगडा—आपसी झगडेको बातचीतसे तै करनेके लिये १८२७ या १८२८ ई०में ओरेनबुर्गसे रूसी दूत भेजे गये, जो अपने साथ खानके लिये भेंटके तौरपर कितने ही बड़े-बड़े

दर्पण, एक भारी घडी, कुछ बदूकें और पिस्तौल ले आये थे। बातचीतके बाद निश्चय हुआ, कि कोक्सू नदी सीमा रहे, जिसके उत्तरकी भूमि रूसियोंकी और दक्षिणकी खोकन्दकी। सीमाकी पहिचानके लिये वहा चिह्न खडे किये गये, लेकिन रूसियोंने इस समझौतेको देरतक नहीं माना, और अपनी सीमामे दक्षिणमें भी किले बनाये। इसके विरोधमें खानने एक हाथी तथा कुछ चीनी गुलामोंकी भेंटके साथ अपना दूत सीधे राजधानी पीतरबुर्गमें भेजा।

यह ऐसा समय था, जिस वक्त अंग्रेजों और रूसियोंके संबंध अच्छे नहीं थे, और मध्य-एसियामें अपने प्रभाव को बढानेके लिये अंग्रेज हर तरहकी कोशिश कर रहे थे। इसके लिये उन्होंने कर्नल स्टुअर्टको बुखारा भेजा और कप्तान कोनोली खीवाके खानके पास पहुचा। कोनोलीको हुक्म दिया गया था, कि खीवासे वह खोकन्द जाये और दोनों राज्योंके रास्तेकी जाच-पड़ताल करे। कोनोली अल्तून-कला, अकमस्जिद, अचकियान हो छ सप्ताहके बाद खोकन्द पहुचा। रूसकी जबर्दस्तीसे मदली जला-भुना बैठा था, इसलिये उसे अपनी तरफ करना कोनोलीके लिये मुश्किल नहीं हुआ। कोनोली बहुत मूल्यवान् बन्दूकें और दूसरे हथियार कश्मीरी दुशाले तथा कीमती भेंटे, खान और प्रभावशाली दरबारियोंमें बाटी। अपने दबदबेको दिखलानेके लिये वह अस्सी नौकरोंके साथ यात्रा कर रहा था, और उसके पास बहुत भारी परिमाणमें असबाब था। जिस-जिस इलाकेसे वह गुजरा, वहाके मुखियों और सरकारी अफसरोंको उसने दिल खोलकर इनाम और भेंटे दी। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि यह सारा "परमुडे फलाहार" भारतके मत्थे हो रहा था। कोनोलीकी इस मुक्तहस्तताके कारण खोकन्दमें उसके बहुतसे समर्थक हो गये थे। लौटते वक्त अमीरने उसे मार्ग-पत्र दिया। लेकिन जीजक मे बुखाराका अमीर कोनोलीसे बडे रूखे तौरसे पेश आया, जिससे उसे पता लग गया होगा, कि खीवा और खोकन्दकी सफलताके बाद आगे उसे कैसे दिन देखने पडेंगे।

१८३९ ई०में रूसियों और चीनियोंके दबावके कारण मदलीने बुखाराके प्रभुत्वको स्वीकार कर लिया था, लेकिन कोनोलीकी चाटुकारितासे उसका दिमाग आसमानपर पहुच गया और उसने बुखारासे झगडा कर लिया। कोनोलीने दोनो खानोंमें थोडे दिनोंके लिये समझौता करानेमें सफलता पाई। अंग्रेज रूसके प्रभावको आगे बढनेसे रोकनेके लिये यही चाहते थे, कि खीवा-बुखारा-खोकन्द मेलसे रहे। कोनोलीको खोकन्दके मित्रोंने बुखारा जानेसे मना किया, लेकिन हिंदुस्तानके मालिकोंका हुक्म था, इसलिये वह बुखारा गया, और वहा कर्नल स्टुअर्टके साथ कैसे उसे अपने प्राणोंको खोना पडा, यह आगे बतलायेंगे।

अपनी तरुणाईके जमानेमें मदली सैनिक-जीवनको अधिक पसद करता था। उसने कोहिस्तानकी ओर अपनी सीमाको बढाया—करातगिन जीता, कूल्याब, दरवाज और शुगनानने उसकी अधीनता स्वीकार की। लेकिन १८४० ई०के करीब उसके स्वभावमें भारी परिवर्तन हुआ। अब वह मदिरा और मदिरेक्षणाके सेवनमें दिन-रात डूबा रहने लगा, जिसके कारण शासन-केंद्र कमजोर हो चला। ताशकन्दके कुशबेगी-लश्कर काजी कलिया, महासेनापति ईसा ख्वाजा आदिने खानके खिलाफ षड्यत्र शुरू किया और चाहा, कि उसको हटाकर आलम-पुत्र शेरअली, या नरबुतेके भाई हाजी बी पुत्र, मुराद बीको गद्दीपर बैठायें। शेरअली बहुत समयसे भागकर किपचक-कजाकोंमें रहता था, और मुरादबी खीवामें, जहा अल्ला कुल्लीखाने उसे अपनी लडकी व्याह दी थी। षड्यत्रकारियोंने मदलीके विरुद्ध बुखाराके अमीर नसरुल्लाको बुलाया। दूसरी बारके निमत्रणपर अप्रैल १८४२ ई० में वह अठारह हजार सेना ले खोकन्दसे पद्रह-सोलह मीलपर पहुचा। डरके मारे मदलीने अपने पुत्र मोहम्मद अमीन और कुशबेगी लश्कर (सेनापति) काजी कलियनको भेजकर अधीनता स्वीकार करते हुये नसरुल्लाके नामसे खुतबा और सिक्का चलाना मजूर किया। नसरुल्लाने मदलीके पुत्र और काजी कलियानको लौटाकर कुशबेगीसे एकानमें पूछा, तो मालूम हुआ, कि खोकन्दके लोग आत्म-समर्पण करनेके लिये तैयार हैं। इसपर नसरुल्लाके पास जानेका क्या परिणाम होगा, यह मदलीको मालूम था, इसलिये उसने बहुमूल्य वस्तुओं और खजानेको सौ गाडियोंपर लदवाकर हजार आदमियोंके साथ नमगानका रास्ता लिया। राजवानीके बडों द्वारा निमंत्रित हो नसरुल्ला बडे सज-धजके साथ खोकन्द नगरमें प्रविष्ट हुआ और नागरिकोंमें भय संचार तथा अपने सैनिकोंको सतुष्ट करनेके लिये नगरको चार घंटे लूटनेकी

आज्ञा दी। मुल्लोंकी किताव तक भी लुट विना नही रही, वच्चो और स्त्रियोपर अमानुषिक अत्याचार हुये। सोना-चादी छोडकर वाकी लुट मालको दूसरे दिन खोकन्दके नागरिकोमे वेच दिया गया।

उधर मदलीकी गाडियोको लेकर उसके अनुयायी चम्पत हो गये, और उसके पास सिर्फ तीन सेवक रह गये। मा, वीवियो, वेटो और भाईके साथ आत्म-समर्पण करनेके लिये वह आ रहा था, इसी समय रास्तेमें पकड लिया गया। चालीस गाडियोपर उसके हरम (अन्तःपुर) को सवार कर वुखारा रवाना कर नसरुल्ला अव मदलीके मरवानेकी सोच रहा था। इतना सव हो जानेके वाद कुशवेगी, काजीकला और एरन्दिचकी आखे खुली और उन्होने खोकन्द-वशके किसी राजकुमारको अपने हाथकी कठपुतली वना अमीर नियुक्त करनेके लिये नसरुल्लासे कहा। इसपर वुखाराके काजीकलाने विरोध करते हुये कहा—"मदलीने अपनी सास या नानी (उमर खानकी विधवा) को शरीयतके विरुद्ध व्याहा, इसलिये इस काफिरको उसके परिवारके साथ मृत्युदड मिलना चाहिये।" नसरुल्लाने मदली, उसकी मा, भाई तथा ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद अमीनको परिपद्के सामने उपस्थित करके कत्ल करवाया। खोकन्दी अमीर और प्रभावशाली मुखिया पड्यत्र करनेके लिये न रह जाये, इसलिये परिवार सहित उनमेसे ढाई सौ आदमियोको पकडकर वुखारा भेज दिया गया। खोकन्दके सारे राज्यमें नसरुल्लाके विजयकी घोषणा की गई। अमीर-वुखाराने छ सौ सैनिकोके साथ समरकन्दके राज्यपाल इब्राहीम दादखाको अपनी ओरसे खोकन्दका उपराज निक्युत किया।

९ शेरअली, हाजी बी-पुत्र (१८४२ ई०)

वुखारियोकी विजय देरतक नही रही। तीन ही महीने वाद खोकन्दियोने विद्रोह कर दिया, और शेरअलीको तख्तपर वैठानेके लिये किपचक-कजाकोको वुलाया, जिन्होने वुखारी-सैनिकोको मार डाला। इब्राहीम जान लेकर भागा, जिसपर नाराज होकर नसरुल्लाने उसे मरवा दिया। अव शेरअली खोकन्दकी गद्दीपर वैठा। नसरुल्ला फिर वीस हजार सेनाके साथ खोकन्दपर चढा। नसरुल्लाके हाथमें पडे खोकन्दियोमें मुसलमानकुल चूलाक (लुज) नामक एक व्यक्ति नसरुल्लाका विश्वासपात्र वन गया था। उसे खोकन्दके सैनिकोको समझानेके लिये भेजा गया, लेकिन वहा उसने उन्हे भडकाना शुरू किया और वुखारी अमीरोके नामसे जाली चिट्ठी भेजी, जिसे पढकर नसरुल्ला अपने अमीरोसे नाराज हो गया। इसी समय खीवावालोने वुखारापर चढाई की। नसरुल्लाको खवर मिली, कि वह हमारे वहुत-से आदमियोको पकड ले गये। इसपर नसरुल्ला दूसरे जामिनोको भी छोडकर वुखारा लौट गया।

शेरअलीने मदलीकी लाशको निकलवाकर उसे वडे सम्मानके साथ दफनाया, मुल्लोने शवक्रिया कराई। शेरअलीको किपचक-कजाकोकी सहायतासे तख्त मिला था। इससे पहले खोकन्दमें सर्त (फारसी-भाषी, ताजिक) वडा प्रभाव रखते थे। अव वहा किपचकोकी तूती वोलने लगी। उनका नेता यूसुफ मिगवाशी खोकन्दका हाकिम (राज्यपाल) वना और मुसलमानकुल चूलाक अन्दिजानका। किपचको और सर्तोका झगडा उठ खडा हुआ। सर्तोका मुखिया शादी था, जिसपर खानका विश्वास था। उसने यूसुफ मिगवाशीको मरवाकर उसके अनुयायियोको खतम करनेका हुक्म दिलवाया। फिर मुसलमानकुलको खोकन्द आनेके लिये सदेश भेजा। मुसलमानकुलने यूसुफ मिगवाशीके आदमियोको अपने पास जमा किया। शादीने कुछ हत्यारे भेजकर अन्दिजानमे चूलाकका काम खतम कराना चाहा, लेकिन चूलाक वहुत चालाक निकला। उसने शादीके आदमियोको पकडकर मरवा दिया। इसके वाद किपचको (तुर्को) और सर्तोका खुला युद्ध हुआ। सर्तोको हार खानी पडी। शादी मारा गया और उसका पृष्ठपोषक शेरअली खान किपचकोके हाथमे वन्दी वना। लेकिन किपचकोको तख्तके लिये दूसरा आदमी न मिला, इसलिये उन्होने शेरअलीको ही खान रहने दिया। यूसुफ मिगवाशी और शादीके पदको भी मुसलमानकुलने अपने हाथमे रक्खा। चारो ओर किपचकोकी तूती वोलने लगी। सर्तोके दो नेता रहमतुल्ला और मुहम्मद करीमने शहरसब्ज जा आलम खाके पुत्र मुरादको तख्तके लिये तैयार किया। वुखाराने भी सेनाकी सहायता दी। १८८५ ई० मे जव मुसलमानकुल सेना-सहित किर्गिजोमे कर उगाहने गया हुआ था, उसी समय सर्तोने चढाई कर दी और उन्हे खोकन्द

शहरपर अधिकार करनेमें बहुत दिक्कत नही हुई। मुरादने अपनेको बुखाराके उपराज घोषित किया।

१० मुराद, आलम-पुत्र (१८४२ ई०)

मुरादका शासन भी दृढ नही हो पाया, क्योंकि अमीर नसरुल्लाके अत्याचारोंके कारण खोकन्दी उससे बहुत घृणा करते थे। इसीलिये मुसलमानकुलने फिर बडी आसानीसे खोकन्दपर अधिकार कर लिया। मुराद शायद मारा गया या भाग गया।

शेरअलीके पाच पुत्र थे, जिनमे सिरम्सक किपचक-खान तोस्तानजरकी पुत्री जारकिनका बेटा बाईस सालका था। उसका दूसरा पुत्र खुदायार मर्गिलानका बेक तथा मुसलमानकुलका दामाद था। मुसलमानकुल सिरम्सकको पसद नही करता था और उसे खुदायारकी मुहरसे पत्र भेज बुलाकर मरवा डाला। फिर अपने सोलह सालके दामादको खोकन्दकी गद्दीपर बैठाया। इसे कहनेकी अवश्यकता नही, कि राज्यकी सारी शक्ति चूलाकके हाथमें थी। इसी समय किपचक-दलके भीतर भी झगडा उठ खडा हुआ। खासकर ताशकन्दका राज्यपाल नूर मुहम्मद मुसलमान कुलसे ईर्ष्या करने लगा था। चूलाकके विरुद्ध १८५१ ई०में किया गया पहला षड्यत्र विफल रहा। इसी समय खजानेसे भारी रकम गायब हो गई। खजाचीने उसे अपने मित्रो और नूर मुहम्मदमें भी बाटा था। जब मिगबाशी (वजीर) मुसलमानकुलने जवाब तलब किया, तो अपराधी अफसरोंने तलवार निकाल ली, फिर वह ताशकन्द भाग गये। मिगबाशीने ताशकन्दके राज्यपाल नूर मुहम्मदको उन्हे समर्पण करने तथा खुद आनेके लिये लिखा। उसके इन्कार करनेपर मुसलमानकुल चालीस हजार सेना ले ताशकन्दके ऊपर चढा, लेकिन मर्गिलानके बेकके विश्वासघात करनेसे उसे सफलता नही मिली। जून १८५२ ई० में उसने तीस हजार सेनाके साथ फिर चढाई की। उधर नूर मुहम्मदने भी पूरी तैयारी कर रक्खी थी, और आसपास के नगरोंमें अपने हाकिम नियुक्त कर दिये थे। इसलिये मिगबाशी मुसलमानकुलको नूर मुहम्मद नही, बल्कि औरोंसे भी लोहा लेना था। ताशकदपर जल्दी अधिकार न होते देख कुछ सेना वहा छोड मिगबाशी, ने तुर्किस्तानपर सेना भेजी, और स्वय कुछ सेनाके साथ चिरची नदीके उद्गमके पास बने नियाजबेग किलेको सर करने गया। उसकी मनशा थी, कि नियाजबेगको लेकर ताशकन्दकी ओर पानी लानेवाली नहरको तोड दिया जाय। नहर तोडनेमें सफल हो उसने ताशकन्दके उत्तर चिमकन्तके किलेको जाकर भी दखल कर लिया। इसी बीच ताशकन्दियोंने छापा मारकर नियाजबेगमें छोडी सेनाको हरा नहरको फिर जारी कर दिया। वह ताशकन्दियोंसे भिडनेके लिये लौट पडा, लेकिन युद्धके आरम्भमें ही खुदायारखा उसका साथ छोड दुश्मनोंमें जा मिला। खानके इस तरह हट जानेपर सेनामे भगदड मच गई। उनमेंसे कितने ही मारे गये, कितने ही चिरचिक नदीमें डूब मरे। मुसलमानकुल बडी मुश्किलसे भागकर कराकिर्गिजोमे पहुचा—उसकी मा कराकिर्गिजोकी लडकी थी।

इस समय खोकन्दमें तीन राजनीतिक दल थे, जो शक्ति हथियानेके लिये दूसरेसे मिलकर या अलग हो बराबर प्रयत्न करते रहते थे। किपचकोंमे मुसलमानकुल और नूर मुहम्मदकी दो पार्टिया थीं, तीसरी पार्टी थी सर्तोकी। उक्त घटनाके दो महीने बाद सर्तोंने किपचकोंके विरुद्ध एक सफल षड्यत्र किया। उतेनबी और दूसरे कितने ही किपचक नेता मारे गये, और उनका स्थान सर्तोंने लिया। खानने अपने भाई मुल्लाबेकको नूर मुहम्मदकी जगह ताशकन्दका हाकिम (राज्यपाल) नियुक्त किया। खुदायारने किपचकोंको बहुत नाराज कर लिया था, इसलिये उसे हमेशा उनसे डर लगा रहता था। उसने अपने राज्यमें अक्मस्जिद (पेरोव्स्की बन्दर)से खोकन्द और काश्गरको अलग करनेवाले पहाडोंतक सभी जगह किपचकोंको कत्लआम करनेका हुक्म दे दिया। किपचिक जहा भी, बाजारों, सडकों, गावों या मैदानोंमें मिले, मारे गये। १८५३ ई०में बीस हजार किपचिकोंको इस तरह तलवारके घाट उतारा गया। खुदायारकी मा स्वय किपचकानी थी, लेकिन उससे क्या ? अपने किपचक मुख्यसेनापति मुसलमानकुलको और भी सासत देकर मरवाया—पहले उसके हाथ-पैर तोड डाले गये, फिर उसके शरीर सीनेका इतना भारी भार रक्खा गया, कि आखें अपने गोलकसे बाहर निकल आई। फिर उसके शरीरपर रूई लपेटी गई, और ऊपरसे कडकडाता हुआ तेल डाला गया। अन्तमें उसकी बोटी-बोटी

काट गई। इसके बाद मुसलमानकुल भी गिरफ्तार करके खोकन्द लाया गया। एक खुली जगहमें सिरपर लबी टोपी पहिना उसे जजीरोमें जकड-बन्द करके लकड़ीके ऊचे चबूतरेपर रक्खा गया। तीन दिन तक उसी जगह रखकर उसके सामने छ सौ किपचक जबह किये गये, फिर उसे फासी दे दी गई। खोकन्दको दो बार बुखारियोसे बचानेवाले इस नीतिकुशल प्रसिद्ध उज्बेकके जीवनका इस प्रकार अन्त हुआ।

किपचको (उज्बेको) को इस तरह दबा देनेके बाद अब सर्तों और उसके नेता कासिम तथा मिर्जा अहमदका बोलाबाला हुआ। उनका मल्लाबेकसे झगडा हो गया। इसपर उससे ताशकन्दकी राज्यपालता छीन ली गई, और उसका पद मिर्जा अहमदको मिला। मल्ला भागकर बुखारा चला गया।

१८५७ ई० में नये राज्यपाल मिर्जा अहमदने चिमकन्द और औलियाआताके कजाकोंको अपना दुश्मन बना लिया, लेकिन पीछे अपनी कमजोरी देखकर उसने उनकी मागोको पूरा करके सुलह कर ली। उधर मल्लाने भी खोकन्दमें लौटकर किपचको (कजाकों) और कराकिर्गिजोको मिलाकर अपनी पार्टी बनाई। उज्बेक-नेता आलमकुल उसका सहायक था।

१२. मल्ला खान, शेरअली-पुत्र (१८५७–५९ ई०)

विद्रोहियोने आक्रमण किया। समचीके युद्धमें हारकर खुदायार बुखारा भाग गया और उसकी जगह मल्ला खान घोषित किया गया।

रूसी अभियान–१८१४ ई०मे खोकन्दियोने जब तुर्किस्तान शहरको जीता, तबसे वह इस इलाकेके कजाकोसे कर मागने लगे। लेकिन निम्न सिर-दरियाके कजाक अपनेको रूसकी प्रजा कहते थे, इसलिये रूसने खोकन्दियोका विरोध किया। खोकन्दियोने अपनेको मजबूत करनेके लिये तुर्किस्तान-शहरसे नीचे यानी कुर्गान, जूलेक, कूनिशकुर्गान, ताशकुर्गान, चिमकुर्गान आदि कई स्थानोमे अपने गढ बनाये, जिनमेंसे सबसे महत्त्वका था अकमस्जिदका गढ, जिसे खोकन्दियोने १८१७ ई०में पहलेपहल सिरनदीके बायें तटपर बनाया था, लेकिन अगले ही साल उसे दाहिने तटपर परिवर्तित कर दिया। अकमस्जिदमे खोकन्दियोका बेक (बडा हाकिम) रहता था, जिसके अधीन निम्न-सिरके दूसरे किले भी थे। बेक स्वय ताशकन्दके उपराजके अधीन माना जाता था। गढोको बना मजबूत हो खोकन्दियोने कजाकोपर भारी कर लगाये। प्रति किबित्का (तम्बू या परिवार) सालाना चार भेडे, जिसका तिहाई कर उगाहनेवाले (जकातची) को देना पडता। इसके अतिरिक्त लकडी-कोयले-भुसपर भी प्रति किबित्का चौबीस बोरा कोयला, चार बैल सखसौल (फरास ईंधन), हजार पूला नरकट देना पडता था। प्रत्येक किबित्काका एक आदमी अपने खर्चपर बेगार करनेके लिये जाता था। ये बेगारू खोकन्दियोके बगीचोमे काम करते, किलेकी मरम्मत या भीतरके अस्तबलोकी सफाई आदि करनेके लिये सालमे एक बार जाते। लडनेके समय हरएक हट्टे-कट्टे कजाकको अपने घोडे और हथियारके साथ सिपाही बनना पडता था। खोकन्दी कजाकोपर सचमुच ही बहुत पाशविक अत्याचार करते थे—बिना कलीम (भेंट) दिये वह कजाक औलो (गावो) से औरते ले जाते, और शरीयतके विरुद्ध उनकी बेइज्जती करते।

निम्न सिर-दरियापर खोकन्दियोके बहुत सैनिक नही थे, लेकिन तब भी उनकी धाक जमी हुई थी। अकमस्जिदमे सबसे बडा किला था, जहापर पचास सिपाही रहते थे। उनके अतिरिक्त वहा सौ बुखारी और खोकन्दी व्यापारी बसे हुये थे। कूनिशकुर्गानके गढमें पचीस सिपाही, खोशकुर्गानमें चार, जूलेक (१८५३ ई०) में चालीस, और यानीकुर्गानकी आयताकार चार-पाच फुट ऊची दीवारोके भीतर दो या तीन खोकन्दी सैनिक रहते थे।

अपनी प्रजा कजाकोके साथ ऐसा बरताव होते रूसी देख नही सकते थे। इसलिये १८४६ ई० मे कप्तान शूल्जको सिरके मुहानेकी पडतालकर वहा किला बनानेके लिये भेजा गया। अराल्स्क के नामसे मशहूर राइम्स्क किलेकी नीव अगले साल पडी। १८५० ई० में कजाकोका मन बिगडते देख खोकन्दियोने उन पर आक्रमण कर दिया, और पहली बार वह उनके छब्बीस हजार तथा दूसरी बार तीस हजार पशु और १८५१ ई० में पचहत्तर हजार पशु छीन ले गये। इसपर अराल्स्कके

रूसी कमाडरने कोशकुर्गानपर अधिकार कर लिया। रूसी आगे बढनेके लिये निश्चय कर चुके थे। अराल समुद्रमें गिरनेवाली सिर नदी हमारे यहा की गगा जैसी बडी नदी है। उसकी धाराको सैनिक यातायातके लिये इस्तेमाल किया जा सकता था। इसके लिये स्वीडनमें बने दो स्टीमरोको पुर्जे-पुर्जे अलग करके अराल समुद्रमे पहुचा जोडकर मई १८५२ ई०मे तैयार कर लिया गया। उसी सालकी गर्मियोंमें कर्नल ब्लारम्बेर्गने अकमस्जिद तक सिर दरियाकी सर्वे की, और वहासे फौजी चौकी हटानेके लिये खोकन्दियोको कहा। कर्नलके साथ चार सौ सैनिक और दो नौपौंडी तोपें अकमस्जिद आईं। टोकनेपर कर्नलने जवाब दिया, कि हम रूसी तटपर चल रहे है, और तुम सिर नदीके दाहिने किनारेपर अपने किलेको नही रख सकते। किलेके पास पहुचनेपर खोकन्दियोंने कर्नलसे चार दिनकी मोहलत मागी। उन्हे आशा थी, कि इसी बीच कुमक आ जायेगी, लेकिन वह नहीं आई। दिन पूरा होनेपर रूसियोंने ग्रेनेड (हथ-बम) फेंके। खोकन्दियोंने बन्दूकों और दीवारोंपर लगी तोपोंसे जवाब दिया। रूसियोंने उनकी तोपे जल्दी ही चुप कर दीं, लकडी-का फाटक तोड दिया, लेकिन किलेकी दीवार मजबूत साबित हुई। रूसियोंने भीतर पहुचकर आग लगा दी। इस लड़ाईमें पद्रह रूसी मारे गये और पचहत्तर घायल हुये। लौटते समय उन्होंने कूनिशकुर्गान, चिमकुर्गान और कोशकुर्गानकी चौकियोंको भी नष्ट कर दिया।

१८५३ ई०में रूसियोंका अभियान और भी बडी सेनाके साथ हुआ, जिसमे २१३८ सैनिक, २४४२ घोडे, २०३८ ऊट, और २२८० बैल, बारह तोपें और एक चलता-फिरता लकडीका पुल था। अरालस्कके किलेको छोडनेसे पहले ही रास्तेके चारेकी रक्षाके लिये अबकी गर्मियोंमें कजाकोंको वहा डेरा न डालनेका हुक्म दे दिया गया था। यात्रा बहुत रक्षित तौरसे होने लगी, मदद करनेके लिये स्टीमर "पेरोव्स्की" नदीमें साथ-साथ चल रहा था। कराउजियक होते २ जुलाईको रूसी सैनिक अकमस्जिद पहुचे। इस बीचमें खोकन्दियोंने किलेको काफी मजबूत कर लिया था। उसके चारो तरफ गहरी खाई खोद दी थी, महीने भरकी रसदके साथ तीन सौ खोकन्दी सैनिक वहा तैनात थे। दीवारोंपर उन्होंने तीन तोपें भी लगा रक्खी थीं। लेकिन रूसी सेना और तोपोंके सामने वह कितने दिन तक ठहरते? खोकदियोंने आत्मसमर्पण करनेके लिये पद्रह दिनकी मुहलत चाही। इसी बीच तीन दिनके बाद एक सैनिक टुकडी और आगे ताशकन्दकी ओर भेजी गई। जूलेकके सैनिक भाग गये और रूसी वहाके किलेको ध्वस्त कर बीस तोपो और बहुत-से गोला-बारूदके साथ अकमस्जिद लौट गये। अकमस्जिदवालोंको आनाकानी करते देख बारूदकी सुरगसे दीवारके एक भागको उडा दिया गया, किलेदार मुहम्मदअली अपने ढाई सौ आदमियोंके साथ मारा गया। रूसियोंके हाथमें घोडेकी पूछोंवाले दो झडे, दो भालेवाले झडे, दो कासेकी तोपें, ६६ छोटी और अधिकतर टूटी-फूटी तोपें, १५० तलवारें और दो कवच हाथ आये। रूसियोंने कजालाका ऊपरी धारपर पहला किला, कर्मकचीपर दूसरा, कूनिशकुर्गानमें तीसरा किला बनाया, और अकमस्जिदका नाम बदलकर पेरोव्स्की कर दिया।

रूसके इस खतरनाक अभियानके समय खोकन्दियोंमें घोर गृहयुद्ध चल रहा था। १८५३ ई० के शरद्में मवदान खोजाके नेतृत्वमें ७००० सेना ताशकन्दसे अकमस्जिदकी ओर भेजी गई, जिनके मुकाबिलेके लिये दो तोपें ले २७५ रूसी सैनिक गये, जो बडी बुरी तौरसे पिटे और बानवे ऊटोंपर घायलोंको लिये रातको १९३ लाशें पीछे छोड भाग आये। जाडा आनेपर फिर अभियान शुरू हुआ। १८ दिसबरको १२-१३ हजार सैनिको और सत्रह पीतलकी तोपोंके साथ खोकन्दियोंने आकर पेरोव्स्कीके सामने मुकाबिला किया। नवीन और प्राचीन हथियारोंका मुकाबिला क्या? दो हजार खोकन्दी मारे गये, जब कि रूसी अठारह हत और उन्चास आहत हुये।

अब तैयारी करना और आगे बढना जारशाही रूसका हर सालका काम हो गया। बडे परिश्रमके साथ १८५८ ई०में फिर रूसियोंके विरुद्ध खोकन्दियोंने भी तैयारी की। तुर्किस्तानमे तोप ढालनेवाले कारीगर लाये गये। ताशकन्दके बेकने लोगोंके घरोंसे सारे पीतलके बर्तन ले लिये। उधर रूसी जेनरल पेरोव्स्कीने अकमस्जिदके किलेको और मजबूत किया, और कमजोर अतएव बेकार समझकर किला नम्बर दोको छोड़ दिया। इसी समय उनपर बुखारावालोंने आक्रमण

कर दिया था, इसलिये खोकन्दी नही आये। उन्होने खीवाको भी अपनी ओर मिलानेकी कोशिश की, लेकिन काफिरोकी चपतपर चपत खाकर भी मध्य-एसियाके खानोको होश नही आया था, कि वह एक हो जायें।

यह मालूम ही है, कि मल्ला खानके गद्दी सभालते समय खुदायार खान भागकर बुखारा चला गया था। अमीर नसरुल्लाने पहले उसे समरकन्दमे फिर जीजकमें रक्खा। खुदायारको अपना खर्च चलानेके लिये माके भेजे पैसेसे व्यापार करना पडता था। दो सालके शासनके बाद उज्बेक (किपचक) अमीरोने मल्ला खानको मार डाला। बडा प्रभावशाली अमीर आलमकुल अन्दिजानका बेग नियुक्त हुआ था। उसकी अनुपस्थितिका फायदा उठाकर षड्यत्रियोने महलमें घुसकर मल्ला खानको सोतेमे मार डाला—षड्यत्रियोका नेता शादमान खोजा था।

१३ शाह मुराद, सरिन्सक-पुत्र (१८५९ ई०)

खुदायारको भगा षड्यत्रियोने पद्रह सालके लडके शाह मुरादको गद्दीपर बिठाया। निहत मल्ला खानका यह भतीजा था। मल्लाखान का पुत्र सैयद सुल्तान भागकर अन्दिजानके स्वामी आलमकुलकी शरणमें गया, और ऊपरसे शाहमुरादकी भक्तिका दिखावा किया। खोकन्दके भीतर पार्टियोका सघर्ष चल रहा ही था। तुर्किस्तानके बेग खनायत शाहने खुदायार खाको जीजकसे बुलाया। ताशकन्द उसके हाथमें चला गया। शाहमुराद सेनाके साथ आया, लेकिन एकतीस दिनके मुहासिरेके बाद खाली हाथ लौट रहा था, इसी बीच आलमकुलने अन्दिजानसे आकर चार षड्यत्रियोको मरवा डाला। खुदायार फिर गद्दीपर बिठाया गया, और आलमकुल उसका अभिभावक बना। खुदायारने भागती हुई सेनाका पीछा करके पहले खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) और फिर खोकन्द ले लिया। आलमकुल मर्गिलानके पीछेके पहाडोमे भाग गया। खुदायारने शाहमुरादको मार डाला।

खुदायार पुन (१८५९ ई०)

इस समय खोकन्दमे दो दलोमें खूनी सघर्ष चल रहा था। सर्त और नगरनिवासी खुदायार के समर्थक थे और किपचक (उज्बेक और कराकल्पक) आलमकुलके दोनो दलोमें सेना ही नही, बल्कि नागरिक भी मौका पाते एक दूसरेके ऊपर टूट पडते। उज्बेक दल अपने तीन उम्मीदवारो—शाहरुख, सादिक बेग और हाजीबेगमे बटा हुआ था। आलमकुलने तीनोको पकड-कर ओश नगरमे कत्ल करवा डाला, जहा ही तख्त-सुलेमान पहाडकी बगलमे तीनो की कब्रें है। इसके बाद आलमकुलने सुल्तान सईदको खान घोषित किया। मर्गिलान और अन्दिजानपर नये खानका अधिकार रहा। खुदायारकी सेना वहा दो बार हारी, इसपर खुदायारने बुखाराके अमीर मुजफ्फर खासे मदद मागी। मुजफ्फरके आनेपर आलमकुल कराकुल्जाकी पहाडियोमें हट गया। इसी बीच खुदायारसे मुजफ्फरका झगडा हो गया। आलमकुलको खुश करनेके लिये सोना मढी छडी, एक टोपी, एक सुनहला कमरबन्द और एक बहुत ही सुन्दर हस्तलिखित कुरान भेजकर वह बुखारा लौट गया। बुखाराके पीठपर न रहनेपर खुदायार कमजोर हो गया। आलमकुलने आकर खोकन्दपर आसानीसे अधिकार कर लिया और खुदायार फिर अन्तर्वेदकी ओर भागा।

१४. सैयद सुल्तान, मल्ला-पुत्र (१८५९-६५ ई०)

यह नाम का ही खान था, सारी ताकत आलमकुलके हाथमें थी। अपने विरोधियोपर आलमकुलने खूब हाथ साफ किया, और चार हजार आदमियोको मरवा डाला। लोगोमें असतोष पैदा होना ही था, अब उनकी नजर जीजकमे बैठे खुदायारपर थी।

रूसियोसे छेडछाड—१८५९ ई० में ओरेनबुर्गके राज्यपालकी रायमें पेरोव्स्कीका किला सुरक्षित नही था, इसलिये रूसियोने जूलेक किलेपर अधिकार करके दो साल बाद १८५१ ई० मे वहा एक मजबूत किला बनाया। उन्होने यानीकुर्गानके किलेको भी ध्वस्त कर दिया। निम्न सिर-दरियाके कजाक रूसी प्रजा थे, किन्तु मध्य सिरके कजाक खोकन्दियोके हाथमे थे। रूसियोने आगे

वढते खोकन्दियोके तोकमक, पिशपेक आदि किलोपर अधिकार कर लिया। अव उन्होंने खोकन्दकी भूमिपर दो तरफसे प्रहारकी योजना वनाई। एक सेना औलियाआता या तलसपर उत्तरकी ओरसे चढी और दूसरी पश्चिमसे तुर्किस्तान शहर (यस्सी) पर। इसी समय पो न्दमें विद्रोह हो गया और पश्चिमी युरोपमें युद्धकी आशका वढ गई थी, इसलिये खोकन्दपर चढाईकी योजना १८६४ ई० में स्थगित कर दी गई। तो भी कराताउ और वोरोलदाईताउकी पहाडियोंके खोकन्दी किले एकके वाद एक रूसी लेते गये। तुर्किस्तान शहर-और औलियाआताके रास्तेपर अवस्थित चिमकन्दके किलेको खोकन्दी मजवूत करने लगे, जिसकी खवर पाकर निम्न-सिरका रूसी कमाडर जेनरल चेर्नेयेफ सितम्वर १८६४ ई०में रवाना हुआ। चन्द दिनोंके मुहासिरेके वाद चिमकन्दपर उसने अधिकार कर लिया। दस हजार युद्धवदी और वहुत सा लूटका माल हाथ आया। चिमकन्दके हाथमें आ जानेपर अकमस्जिदसे वेर्नोये (अलमाआता) का रास्ता साफ हो गया, और खोकन्दका एक वहुत महत्त्वपूर्ण इलाका—चू-उपत्यका—खानके हाथसे निकल गया।

खोकन्दी चुप कैसे रह सकते थे? ९ मई १८६५ ई० को ताशकन्दके पास जेनरल चेर्नेयेफकी सेनासे लडते हुए आलमकुल घायल हुआ। डाक्टर असदुल्ला उसकी चिकित्सा कर रहा था। डाक्टर आलमकुलकी पोशाकको एकके वाद एक उतरवा रहा था, जिसमे कि मरणासन्न आहत पुरुषको कुछ स्वच्छ हवा मिले। उधर उतारे कपडोको उज्वेक लेकर चम्पत हो रहे थे। अलीकुलको विल्कुल नगा देख दूसरा कपडा न होनेसे डाक्टरने अपनी खलअतसे उसे ढाक दिया।

ताशकन्द प्राचीनकालसे ही भारी व्यापारिक महत्वका नगर था। यहीपर वुखारा, खीवा, खोकन्द और रूसके कारवा-पथ मिलते थे। अव वह अधिक देर तक रूसियोके हाथसे वाहर नहीं रह सकता था। रोज-रोजके खूनी सघर्ष और अशातिसे परेशान हो वहाके वनी व्यापारियोने रूसके दृढ शासनको ही पसद किया। अगस्त १८६५ ई० में शहरके रईसो और मुल्लाओने चादीकी तश्तरीमें नमक-रोटीकी भेंट जेनरल चेर्नियेफके सामने रखकर अभिनन्दनपत्र देते हुये अपनेको जारकी प्रजा घोपित किया—"तुम एक समुद्रको दो समुद्रमें नही विभक्त कर सकते, और न एक राज्यके भीतर दूसरा राज्य ही वना सकते।" रूसियोने तुर्किस्तानका एक नया प्रदेश (गुवर्निया) वना दिया, जिसका शासन-केंद्र ताशकन्द वना।

खुदायार खान पुन (१८६५-७५ ई०)

अभी भी खोकन्दका कितना ही भाग रूसियोके हाथमे नही था। खुदायार ताकमे था। ताशकन्दमे रूसियोके जम जानेपर उसने वुखारी सेना ले खोजन्दको जीतते खोकन्द पहुचकर अपनी गद्दी सभाल ली। वुखारियोने अपनी सेवाओंके वदलेमें १८६५ ई० मे खोजन्दको अपने अधिकारमें कर लिया। यही नही, वुखारी अमीर मुजफ्फरने रूसियोको हुक्म दिया, कि खोकन्दी इलाकेसे हट जाओ, नहीं तो हम जहाद घोपित करेगे। और भी आगे वढते हुये मुजफ्फरने वुखारामें रूसी व्यापारियोकी सम्पत्ति जब्त कर ली, जिसके वदले रूसियोने ओरेनवुर्गमें वुखारी व्यापारियोके साथ भी वैसा ही किया, और मुजफ्फरके दूतको ओरेनवुर्गमें रोककर उसे पीतरवुर्ग नही जाने दिया। सीमाके झगडोंके निर्णयके लिये मुजफ्फर खानके वुलानेपर जो रूसी अफसर स्त्रूवे तथा कितने ही इजीनियर आये थे, उन्हे अमीर-वुखाराने गिरफ्तार कर लिया। इस अपमानको रूसी कैसे वर्दाश्त करते? मुजफ्फरकी गोशमालीके लिये ११ फर्वरी १८६६ ई०को दो हजार सेना ले जेनरल चेर्नियेफ सिर पार हो सीधे समरकन्दकी ओर वढा। रेगिस्तानके रास्ते सात मजिलें पारकर वह जीजक पहुच गया, लेकिन वुखारियोंके सैनिक सख्यावलको देखकर उसने लौट जाना ही पसद किया। वुखारी इसे अपनी विजय समझकर रूसियोका पीछा करते हुए सिर दरिया पार कर गये। इसपर मेजर जेनरल रोमानोव्स्कीने आक्रमण कर ८ अप्रैलको वुखारियोंको हरा खोजन्दकी ओर भगा दिया। अव सिरपर रूसी स्टीमर सेना और रसद ढो रहे थे। मुजफ्फरने सारे अन्तर्वेदमें रूसियोंके विरुद्ध जहाद घोपित करके धार्मिक जोश पैदा कर दिया था, इसलिये गाजियोंकी कमी नहीं थी। वह चालीस हजार सेना ले ताशकन्दपर आक्रमण करने गया, जव कि वहा रूसियोंकी सख्या

३६०० थी। खोजन्दसे उत्तर-पश्चिम कुछ ही मीलोपर सिर-तटपर इरजारमे २२ मईको भयकर युद्ध हुआ। आधुनिक हथियारोंसे लैस रूसियोने बुखारियोंको घास-मूलीकी तरह काट डाला, और अमीर मुजफ्फर एक हजार सरबाजो (सैनिको) के साथ प्राण लेकर भागा। उसके डेरेमें "चूल्हेपर रक्खे खानेसे भाप निकल रही थी, और हुक्का पीनेके लिये तैयार था।" अमीरका डेरा, उसकी कितनी ही तोपे, बहुत भारी परिमाणमें गोलाबारूद और रसद रूसियोके हाथ आई। खुदायारने मनमें घृणा रखते हुये भी विजयके लिये रूसियोको बधाई दी।

बुखाराकी यह जबर्दस्त हार थी, और मध्य-एसियाकी उस समय बुखारा ही सबसे बडी शक्ति थी। रूस जैसे जबर्दस्त साम्राज्य के सिरपर पहुच जानेपर भी खुदायारकी अकल ठिकाने नही हुई। वह अपनी प्रजापर अत्याचार करता, मनमाना कर लगाता, या ऐसे ही उनकी सम्पत्तिको जब्त कर लेता। घुमन्तू कजाको और किपचकोके ऊपर उसने पहलेपहल खास कर लगाये। इस समयकी अवस्थाका वर्णन एक मध्य-एसियाई लेखकने निम्न शब्दोमें किया था—

'सडकोकी मरम्मत, राजमहलोंके निर्माण, खानके बागोके जोतने-खोदने और नहरोकी सफाईके लिये सारे देशसे आदमियोको पकडकर जबर्दस्ती काममे लगाया जा रहा है। मजूरी क्या उन्हे खाना भी नही दिया जाता। साथ ही यदि गावके आधे लोगोको कामपर लगाया गया है, तो दूसरे आधे से दो तका (बारह आना) जबर्दस्ती कर उगाहा जा रहा है। कामसे भागने या इन्कार करनेपर कोडोसे खबर ली जाती है। कभी-कभी कोडोसे मार-मारकर लोगोके प्राण ले लिये जाते है, और कितनोको प्राण रहते ही कामकी जगहमें ही दबा दिया जाता है। ऐसी बेगार पहले खानोके समय मे भी ली जाती थी, लेकिन उन्हे खाना तो मिल जाता था। पहले खानको बिना कर दिये लोग घास, नरकट और ईंधनकी लकडी जमा कर सकते थे, लेकिन अब उसमेंसे आधी खानको देनी पडती है, जिसे सरकार निश्चित दामपर बेच देती है। इसके साथ ही ईंधन या सरकडेकी गाडी जब शहरके फाटकपर पहुचती है, तो आधा तका वहा और फिर एक तका बाजारमे महसूल देना पडता है। पहले झाडियोंकी लकडी (लीच) कर-मुक्त थी, लेकिन अब खानने प्रत्येक पर चार चेका (दो पैसा) चुगी देनेके लिये मजबूर किया है। चुगीवाले जोकोके तालाबके पास रहते है। पशुओके बेचनेपर साधारण जकात (शुल्क) के अतिरिक्त खानके लिये प्रति ढोर एक तका, प्रति भेड आधा तका, प्रति ऊट दो तका और प्रति घोडा-गदहा एक तका महसूल देना पडता है—उस समय खोकन्दी सिक्का सोनेका तिला, जिसमें साठ चादीका तका होता और तकेमें चौवालीस चेका या तावेके पैसे होते। आयात मालपर मूल्यका चालीसवा भाग जकात और ऊपरसे बीसवा भाग और खानके लिये अमीनियाना देना पडता था। निर्यातके मालोमें रेशम और रूईपर प्रति ऊट दस तका देना पडता। बाजारमे बिकनेवाली स्त्री-पुरुषोकी पोशाक, तोशक, रेशमी कपडो तथा दूसरी मूल्यवान् चीजोपर एक तका एक थान, और कम कीमती मालपर आठवेंसे चौथाई तका कर देना पडता। दूकानोंकी हिफाजतके लिये पहरा देनेके लिये रातको सिपाही आते। उनके खर्चके लिये भी हर दूकानको हर चौथे महीने दोसे दस तका देना पडता। बाजारोंमें बिकनेवाले अनाजपर प्रति चारयक (दो मन दस सेर) पर चार चेका देन पडता। सब्जी, खरबूजा और अनाजपर प्रति बोझ एकसे तीन तका तक कर है, जिसे तेकजाई (बाजारमे बेचनेका हक) कहा जाता है। इनके अतिरिक्त खराज और तनाव (भूकर) अलग है। दूध, खट्टी मलाई आदिपर प्रति प्याला दो चेका कर है। बत्तक या तालकी चिडियोमें हर जोडेमें एक खानका होता, और पालतू मुर्गे-मुर्गियोमें प्रत्येकपर दो चेका, दस अडेपर एक चेका देना पडता।

भारतीय सिरकीवालोने शताब्दियो पहले भारतकी पश्चिमी सीमासे बाहर अपना घुमन्तू-जीवन बिताना शुरू किया, और धीरे-धीरे पश्चिमकी ओर मध्य-एसिया ही नही, युरोप तक फैल गये। इन्हे अंग्रेजीमें जिप्सी, रूसीमें सिगान और उनकी अपनी भाषामें रोमनी या रोम कहा जाता है। विद्वानोने निश्चित किया है, कि रोम वस्तुत हमारे डोम शब्दका ही अपभ्रश है। रोमनी लोगोकी भाषाको देखनेसे इसमें सदेह नही रह जाता, कि वह भारतीय है। ईरान और मध्य-एसियामे

रोमनी लोगोको लोली या ल्यूली कहते है। बहुत पुराने समयसे यह भारतके मदारियोंकी तरह बन्दर, भालू और बकरे लिये नगरो और गावोमे तमाशा दिखलाते अपनी जीविका करते थे। "खुदायारने इन गरीबोंको भी चैनसे नही रहने दिया। उसने उनके ऊपर भी अपने कारिन्दे नियुक्त किये, जिन्होंने उनके जानवरोकी सख्या बढाकर बतलाई। हर बाजारके दिन और बडे शहरोमे सप्ताहमें तीन बार लोली अपने पालतू भालुओं, भेडियो, बन्दरो, बकरियो, लोमडियो और सूअरोंके साथ बाजार होकर निकलते, और प्रत्येक दूकानको चार चेका उन्हे देना पडता। खानके विदूषक भी बाजारमें फिरते, और उन्हे भी दूकानदारोको पैसा देना पडता। यह पैसा खानके रसोईखानेके खर्चके लिये जाता। मजिस्दका इमाम नियुक्त करते वक्त उसे खानको दस तका देना पडता, सूफी (मुअज्जिन) को पाच तका। यदि खानको मालूम हो जाय, कि किसी परिवारमें दावत, शादी या खतना है, तो वह अपने गायकोंको भेज देता। गृहपतिको उनमेंसे हरएकको एक चोगा, और दोम पाच तिला (अशर्फी) तक खानके लिये देना पडत । प्रति वसत खोकन्द शहरसे बाहर दरवेश-खानाका भारी मेला लगा करता। उस समय हर एक पेशेवालेको खानके सामने अपनी क्षमता के अनुसार नजर भेंट करनी पडती, जो सौसे हजार तिला तक होती। अगर इसमे जरा भी गफलत होती, तो पच लोग पीटे जाते। अगर कोई आदमी किसी दूसरे आदमीसे जमीन या बगीचा लेना चाहता, तो खान उसे उसको मूल कीमतपर ही बेचनेके लिये मजबूर करता, और इसका जरा भी ध्यान नही रखता, कि नये मालिकने उसमे मेहनत और खाद-पानीसे कितनी तरक्की की है। खान अपने लिये सभी चीजें सस्तेमें लेना चाहता है। राज्यसे बाहर अगर कोई जाना चाहता, तो दो तकाके साथ आवेदनपत्र देना पडता। यह पत्र फिर महरम (एक अफसर) के सामने रक्खा जाता, जो उसके लिये एक तका लेता। जानेवालेकी जान इतनेसे ही नही बचती, उसे सडककी हर मजिलपर अलग कर देना पडता। घास, ईंधनके कर, प्रतिपशु प्रतिमास बारह चेका है। चराईका ठेका खानने सिदीक कुइचीको बीस हजार तिला सलानापर दे रक्खा है। खराज या फसलके महसूलके रूपमें दो लाख चारयक (एक चारयक=दो मन दस सेर) अनाज मिलता, जिसे बेंच दिया जाता। इसके प्रबधके लिये हर किलेमे विशेष अफसर नियुक्त है। गरिकाना जिलेसे नौ हजार चारयक अनाज मिलता है, बालीकिर्चीसे एक लाख, सोखसे चौदह हजार, मेरकेन्दसे बारह हजार चारयक। बगीचो और मेवाके बागोके करको तनाव कहते हैं, जिससे साठ हजार तिला आता। बालीकिर्ची और चिल महरमके बीचमें सिर नदीपर चुगी कर लगता। विवाहकी लिखाई-पढाईपर भी कर था, जो कि आधा तिला तक होता है। वरासत (उत्तराधिकार) पर सम्पत्तिका चालीसवा हिस्सा मृत्यु-करके रूपमें खान लेता है। नमक बनानेके लिये करसे खानको बीस हजार तिला प्राप्त होता। देहाती लोगों और घुमन्तू कबीलोपर अलग जकातका कर लगा, जिसका ठेका ग्यारह हजार तिलापर चेर्चीबाशीको दिया गया। व्यापारियोंसे जकात उगाहनेवाला मेहतर पैंतीस हजार तिला, खानकी कारवासरायों और हजार दूकानोका ठेकेदार ईसाइया तीस हजार तिला देता है। कपास-कर और दलाली-करसे दस हजार तिला राजकोषमें जाता। तेलके कोल्हू, अनाजमडी, रेशम बाजार, घासहट्टा, दूधहाटसे प्रति वर्ष पाच हजार तिला, व्याह और मुल्ला आदिकी नियुक्तिसे भी पाच हजार तिला प्रति वर्ष मिलता है।"

लेकिन डडेके सामने खानकी अकल ठीक रहती, इसलिये रूसियोको व्यापार करनेमे कोई बाधा नही दी जाती थी। इतने भारी करके बोझसे कराहते लोग कब तक चुपचाप रहते ? १८७१ ई० में लोगोंने विद्रोह कर दिया, लेकिन उसे जल्द ही दबा दिया गया। काले किर्गिजोपर प्रति परिवार एककी जगह तीन भेंडें तथा पहाड़पर जोते उनके खेतोपर खानने नया कर लगाना चाहा। किर्गिजोंने कर देनेसे इन्कार कर दिया और खानके तहसीलदारोको पीट भी दिया। सेनाके आनेपर वह पहाडोंपर भाग गये। इसी समय मुसलमानकुलका बेटा तथा खानका साला आफताबचा अब्दुर्रहमान हाजी मक्काकी हज करके खलीफाके नगर कान्स्तन्तिनोपल (कसतुन्तुनिया) होते लौटा था। वह स्वय भी किर्गिज था, लेकिन खानका सबधी होनेके कारण दूसरे वर्गसे सबध रखता था। खानने उसे सेना देकर किर्गिजोको दबानेके लिये भेजा। उसने किर्गिजोंसे कहा—अपनी

तकलीफको कहनेके लिये खानके पास अपने पचास प्रतिनिधि भेजो, हम उन्हे विना नुकसान पहुचाये जामिनके तौरपर रखेगे। लेकिन वहा आनेपर खुदायारने वडी क्रूरताके साथ किर्गिज प्रतिनिधियोको मरवा डाला। आफताबचाको इसके लिये वडी शर्म आई और वह किर्गिजोकी भूमि छोडकर खोकन्द लौट गया। किर्गिजोने वदला लेनेके लिये हथियार उठाया और उजकन्द तथा सुक्को ले लिया—सुकमें एक छोटा-सा किला था, जिसमें खानका खजाना रहता था। पहाडी इलाकोमें सफल होते ही मैदानी इलाकेमें जानेपर किर्गिज आक्रमणमें असफल रहे, उनके बहुत-से आदमी खानके हाथमें बदी बने, जिनमेंसे पाच सौको खोकन्दकी बाजारोमें फासीपर चढा दिया गया। किर्गिजोने मदलीखानके पुत्र मुजफ्फरको अपना खान वनाया था। खुदायारने उसकी जिदा खाल खिचवा ली। लेकिन विद्रोहियोकी शक्ति वढती गई, और उसकी क्षीण। इसपर खानने रूसियोसे मदद चाही, लेकिन वह इस नरराक्षसको क्यो मदद देने लगे? लोगोकी भी सहानुभूति विद्रोहियोके साथ थी। खुदायारको अपने बेटे तथा अन्दिजानके बेक (राज्यपाल) नासिरुद्दीनपर भी सदेह हुआ। चारो तरफसे आशाकी एक भी झलक न देखकर खुदायारने खजाने और परिवारको लेकर अपने पदको छोड दिया। विद्रोहियोने बहुत जल्दी ही ओश, अन्दिजान, सूजक, उचकुर्गान और बालिकचीको अपने हाथमे कर लिया। बालिकचीके वेगने विरोध करना चाहा, इसपर मुहके रास्ते डडा घुसेडकर उसे जमीनमें गाड दिया गया। खानके बहुतसे सिपाही विद्रोहियोकी ओर मिल गये और उनके कमाडर तथा खानके साले आफतावचाने नमगानके पास तुराकुर्गानके किलेमे अपनेको बद कर आगे कोई भी कार्रवाई करनेसे इन्कार कर दिया। १८७३ ई० के जाडोमे विद्रोहियोकी शक्ति कुछ निर्वल हुई, और कुछ शहर फिर खुदायारको मिल गये, लेकिन १८७४ ई० के वसतमें खुदायार पुत्र अमीनको आगे करके विद्रोहियोने फिर बगावतका झडा उठाया। अमीनकी बहुत अधिक बात करनेके स्वभावने परदा फाश कर दिया। उसके चचा वातिरखान तुरा सोलह और षड्यन्त्रियोके साथ राजमहलमें बुलाये गये, जहासे वह फिर नही लौटे। तरुण खानजादेको निगरानीमें रक्खा गया। मेहतर मुल्ला कामिलने सूचना देकर सावधान नही किया था, इसलिये खुदायारने उसे जहर देकर मरवाया। इसके बाद फिर दूसरा षड्यन्त्र खुदायारके चचा फाजिलबेगके पौत्र अब्दुल करीम वेकको खान बनानेके लिये किया गया। रूसियोने अब्दुल करीमको पकडकर ताशकन्दमें और उसके मुख्य सलाहकार अब्दुल करीमको चिमकन्दमें रख दिया। खानको अब हरएक आदमीपर सदेह होने लगा। उसे आखोके सामने मौत नाचती दिखाई पडती थी, इसलिये वह काफी समय तक महलसे वाहर नही निकला। हवशी गुलाम नसीम तोगा खानका बडा ही विश्वासपात्र सेवक था, जो हर वक्त महलके द्वारकी रक्षा करता। उसे भी अपने वीवी-बच्चोको भीतर न आने देनेका हुक्म था। जब शका और सदेहका इतना बाजार गर्म हो, तो हर जगह गुप्तचरोका जाल बिछना स्वाभाविक था।

रूसी खोकन्दकी सारी हालत बडे गौरसे देख रहे थे। १८७५ ई०मे तुर्किस्तान-प्रदेशका शासक जेनरल काफमान था। उसने खोकन्द होते रूसी सैनिक टुकडीको काश्गर भेजनेके लिये सहमति लेनेके वास्ते अब्दुल करीमको खोकन्द भेज दिया। इधर आफतावचा भी अपने पिता मुसलमान-कुलकी हत्याका बदला लेना चाहता था, इसलिये खुदायारके खिलाफ नये विद्रोहका अगुवा बना। सारी सेना उसकी तरफ हो गई। खुदायारके भाई और पुत्र भी उससे आ मिले। खान अपनी बेगमो और दस लाख गिन्नी खजाना लेकर ताशकन्द भागा। रूसियोने उसे बडी खुशीसे आश्रय दे नजरबन्द कर दिया। फिर थोडे समय बाद उसे ओरेनवुर्गमें रहनेके लिये भेज दिया।

१५ नासिरुद्दीन, खुदायार-पुत्र (१८७५ ई०)

खुदायारके भाग जानेपर विद्रोहियोने उसके पुत्र नासिरुद्दीनको खान घोषित किया। अब्दुर्रहमान आफतावचा मुखिया था—आफतावचाका अर्थ है हाथ धोनेके आफतावा या गडवेका उठानेवाला। मुल्ला ईसा औलिया और हाकिम नजर परमाचीने जेनरल काफमानके पास अनुनय-विनयके पत्र भेजे, और खुदायारकी गलतियोको दुरुस्त करनेका वचन देते हुये काफमानकी ओर मित्रताका हाथ

वढाया। काफमानने इस शर्तपर वात स्वीकार की, कि नासिरुद्दीन वापकी की हुई सधियोको स्वीकार करे, रूसी प्रजाके नुकसानोकी क्षतिपूर्ति दे। नये खानसे रूसी वहुत आशा करतेथे, क्योकि वह रूसियोकी चाल-ढालको पसद करता और रूसी जातीय पेय वोद्का (शराव) का वहुत प्रेमी था।

लेकिन खान अकेला क्या करता? खोकन्दी मुसलमान काफिर रूसियोंके विरुद्ध जहाद करनेकी तैयारी कर चुके थे। उन्होने राजवानीमें घोषणा की, कि सभी रूसी मुसलमान हो जाय, नही तो इसका नतीजा उनके लिये वुरा होगा। लेकिन यह कव होनेवाला था? अन्तमें विद्रोह उठ खडा हुआ। ताशकन्द और खोजन्दके वीचके तीन और खोजन्द तथा समरकन्दके वीचके कई रूसियोके डाक-स्टेशन लूटकर जला दिये गये। डाकमास्टर और मेल ढोनेवाले मारे या वन्दी वनाये गये। यात्रियोकी भी वही दशा हुई। कुछ समय तक खोजन्दके लिये भी भारी खतरा पैदा हो गया।

रूसियोंके लिये इससे सुनहला मौका और कव मिल सकता था? काफमानने भारी तैयारी की, और जेनरल गलवाचेफके नेतृत्वमें एक सेना भेजी, जिसने विद्रोहियोंको हराकर कुरामा जिलेको उनसे मुक्त कर लिया। ३१ अगस्तको वह खोजन्द पहुचा। विद्रोही वहासे हट चुके थे। रूसी सीमात और खोकन्दके वीचमें महरमका वडा किला था, जहा विद्रोहियोसे मुकावला हुआ। एक घटासे कम हीमें किला सर हो गया। ग्यारह सौ गाजियोंकी लाशें वही गाडी गईं। इस इलाके को भी रूसके तुर्किस्तान-प्रदेशमें मिला लिया गया। ७ सितवरको रूसी सेनाने खोकन्दकी ओर कूच किया। नासिरुद्दीनने मुल्ला ईसा औलियाको भेजकर क्षमा मागनी चाही। रूसियोने उसे पकडकर अपनी विजययात्रा जारी रखी। सर्वत्र रूसी सेनापतिके सामने लोग रोटी-नमक पेश करते अवीनता स्वीकार करते जा रहे थे। खानने अव एक दूसरा दूतमडल भेजा, जिसके साथ भेटके अतिरिक्त डाक-स्टेशनोंमें पकडे वदी भी थे। उन्होंने वतलाया कि हमारे सिरको मुडा दिया गया, लेकिन और तरहसे कोई वुरा वर्ताव नही किया गया। रूसी स्त्रियों और वच्चोको खानके अन्त पुरमें रखा गया था। विना प्रतिरोव किये ही अन्तमें खोकन्दने रूसियोके हाथमे आत्मसमर्पण किया। खान स्वय जेनरल काफमानसे मिलने के लिये आया। जेनरल काफमान अपने स्टाफके साथ कुछ दूर तक जाकर खानके साथ अपने डेरेमें लौट आया। रूसियोंने कुछ समयके लिये वहा डेरा डाल दिया। लोगोंपर धाक जमानेके लिये नगरमें वरावर रूसी सेनाका प्रदर्शन होता रहा। जेनरलने दूसरे स्थानोको भी आत्म-समर्पण करनेके लिये घोषणा निकाली। आफतावचाने मर्गिलानमें काफी सेना जमा कर रक्खी थी। यह सुनकर १७ सितम्वरको काफमान मर्गिलान पहुचा। आफतावचा किपचको (उज्वेको) के साथ वहासे खिसक गया और मर्गिलानने अवीनता स्वीकार की। आफतावचाका पीछा करते स्कोवेलेफ ओश तक गया—अन्दिजान, वलिकची, सरीखाना और ओशने उसके हाथमें आत्म-समर्पण किया, विद्रोहियोंके तीन नेताओमेंसे एक खालिक नजरने भी प्रतिरोवको वेकार समझकर आत्मसमर्पण कर दिया। नासिरुद्दीनको सधि करनेके लिये काफमानने मर्गिलान वुलाया। समझौतेके अनुसार सिर नदीसे उत्तरका इलाका नमगान रूसियोंके हाथमें चला गया, साथ ही नासिरुद्दीनने छ सालमें तीस लाख रूवल (चार लाख दस हजार पौड) हरजाना देना स्वीकार किया। और लोगोंको क्षमादान कर दिया गया, लेकिन विद्रोहियोंके जवर्दस्त नेताओं—ईसा औलिया, जुल्फेकार वी और मुहम्मदखान तुरा—को साइवेरियामें निर्वासित कर दिया गया।

लौटते समय नमगानकी नई वनी रूसी प्रजाने जेनरल काफमानके स्वागतार्थ एक वडा तम्वू गाडकर एक सौ वीस गाडी रसद और चालीस हजार रोटियोंकी भेंट पेश की। नदीसे तम्वू तक जेनरलके चलनेके लिये रेशमी पावडे विछाये गये, और उसके ऊपर चादीके सिक्के वरसाये गये।

लेकिन यह अवीनता स्थायी नही रही। थोडे दिनो वाद फिर विद्रोह हो गया और आठ तोपोंके साथ चौदह हजार आदमी विद्रोह दवानेके लिये अन्दिजान भेजे गये, जहा साठ-सत्तर हजार आदमियोंको आफतावचाने जमा कर रक्खा था। किर्गिजोने भी पूलादवेकको खान घोषित कर अपने पद्रह हजार योद्धा जमा किये थे। रूसियोंको जवर्दस्ती नगरपर अविकार करना पडा, और उनकी गोलावारीमें वाजार और वहुत से मकानोमें आग लग गई। शत्रुओंकी सख्या अविक होनेके कारण रूसी रास्तेके

गावोको जलाते नमगान लौटे। शत्रु उनका पीछा कर रहे थे। यद्यपि असफल होकर ही जनरल त्रोत्स्कीको लौटना पडा था, लेकिन फिर भी जारशाहीने उसे सम्मानित किया।

खान नासिरुद्दीनने रूसियोकी कडी शर्तोंको मानकर अपनी प्रजाको जल्दी ही असतुष्ट कर दिया और उसे उनके क्रोधके मारे भागना पडा। पूलादके समर्थक तथा उरातिप्पाके भूतपूर्व बेकने राजधानी (खोकन्द) पर अधिकार कर लिया। खोकन्दियोका पलडा भारी होते देख नमगानवालोने भी रूसियोके खिलाफ विद्रोहका झडा उठाया, और उसपर भी किपचको (उज्बेको) क अधिकार हो गया। इस विद्रोहको दबानेके लिये जेनरल स्कोबेलेफने बडी निष्ठुरताका परिचय देते अधाधुध तोपोसे गोलाबारी की। खोकन्द राज्यमे इस वक्त चारो ओर अराजकता फैली हुई थी, लेकिन रूसके विरुद्ध सभी एक थे। इस्लामके नामपर वह सर्वस्व-त्यागके लिये बेकरार थे। रूसी सेनाके खूनी अत्याचारोसे उनकी हिम्मत नही टूटी थी। सिर और नरिन नदियोके बीचमें उस समय लडाकू किपचक रहा करते थे। स्कोबेलेफको हुक्म हुआ, कि इस इलाकेको उजाड दे। जनवरी १८७६ ई०में उसने प्रस्थान किया। जाडेके कारण किपचक घुमन्तू इस समय अपने हेमन्त निवासोमें जमा थे। सिरके उत्तरी तटसे बढते हुये रूसियोंने किपचकोंकी मुख्य बस्ती पैताको नष्ट किया, और हराकर उन्हे भागनेके लिये मजबूर किया। आगे सरखावा तक हर चीजको जलाते बरबाद करते रूसी बढे। शत्रुको भयकर हत्या और हानि पहुचाकर अन्दिजान सर किया गया। दूसरी विजय थी अस्साकीकी, जहा शहरेखान और मर्गिलानके लोगोंने अधीनता स्वीकार की। अन्तमें पहली फर्वरीको आफताबचाने भी बिना शर्तके आत्म-समर्पण कर दिया। उसके साथ बातिर त्यूरा, इसफन्दियार और दूसरे सरदार भी थे।

रूसमें विलयन—खोकन्दवाले पूलादबेकसे उकता गये थे। उन्होने खोजन्दसे नासिरुद्दीनको बुला भेजा था। लेकिन पूलादके समर्थकोने उसपर आक्रमण कर दिया, और बडी मुश्किलसे नासिरुद्दीन जान बचाकर महरम भाग सका। फिर प्रहार करनेपर पूलादबेकने भागकर उच-कुर्गानके पास अलई पहाडमे जाकर शरण ली, उसके बहुत-से आदमी पकडे गये और नासिरुद्दीन अभियानमें सफल हो खोकन्द लौटा। लेकिन रूसी देख चुके थे, कि कैसे खान और मुल्ला आसानीसे लोगोमें जहादका प्रचारकर विद्रोह खडा कर सकते है, इसलिये अब और खानको कायम रखना वह अच्छा नही समझते थे। जेनरल स्कोबेलेफको हुक्म हुआ और उसने २० फर्वरी १८७६ ई०को खोकन्दपर अधिकार कर लिया। नासिरुद्दीन, आफताबचा और दूसरे नेता बन्दी बनाकर ताशकन्द भेज दिये गये। जारने अपने सिहासनारोहणके वार्षिकोत्सवके समय २ मार्च १८७६ ई० को एक उकाज़ (राजादेश) निकाला, जिसके अनुसार खोकन्दके राज्यको फरगानाके प्रदेशके नामसे रूसी साम्राज्यमें मिला लिया गया। पूलादबेक भागा-भागा फिरता रहा। उसे भी किर्गिजोने पकडकर दे दिया और बारह रूसी सिपाहियोकी हत्याके अपराधमें उसे मर्गिलानमें फासीपर चढा दिया गया। इस प्रकार बाबरकी प्रिय जन्मभूमि फरगाना जारके राज्यकी अग बन गई, और वहाकी प्रजा प्राय आधी शताब्दीके लिये निरीह बना दी गई।

४ (२ खोकन्द खान-वंशवृक्ष)
(१७४७–१८७६ ई०)
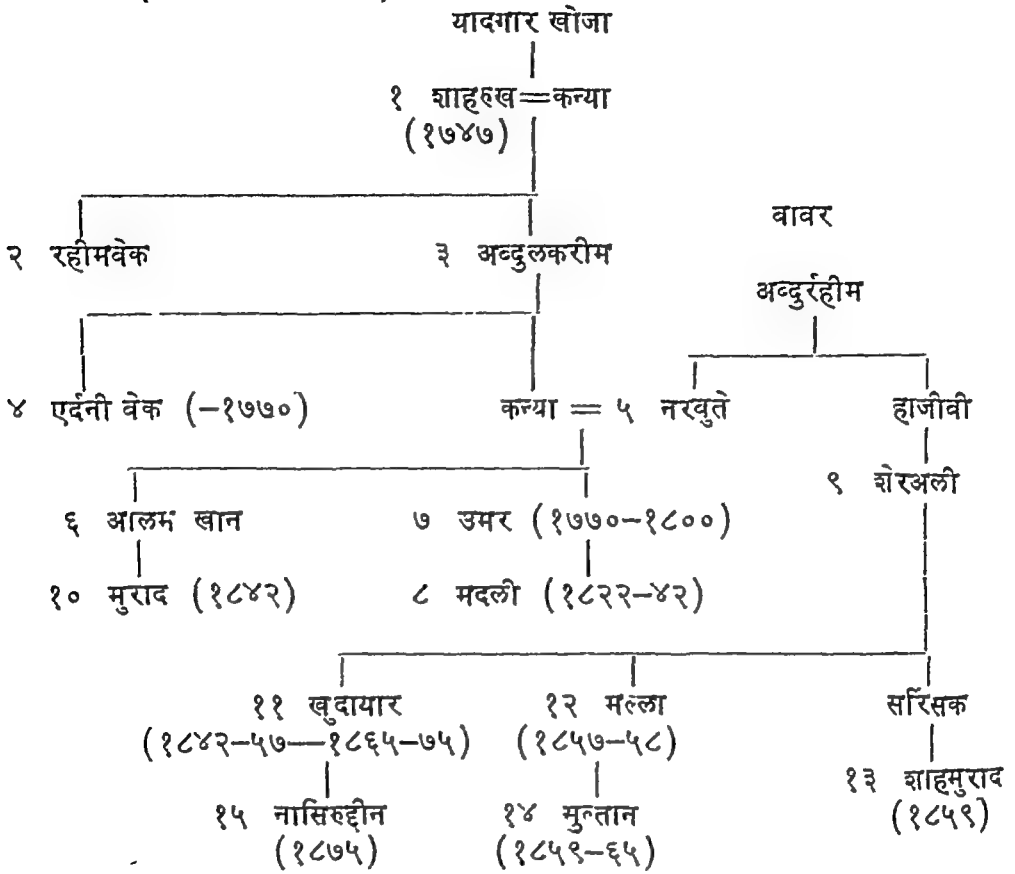
स्रोत ग्रन्थ

१ इस्तोरिया सममर (अ म ४ जिल्द, व इ रव्दोनिकस्)
२ History of U S S R (Ed A M Pankratova, Moscow 1947)
३ Heart of Asia (E D Ross)
४ History of Mongol (H H Howorth)
५ ओचेर्क पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिबिर (मास्को १९४६)
६ इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
७ इस्तोरिया रोस्सिइ (स सोलोवियेफ, पेतेरबुर्ग १८७९–८५)
८ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ क्वेर आदि, मास्को १९१०, पृ० २४९–५८)

अध्याय ३

बुखाराके अमीर

(१७४७–१९२० ई०)

अस्त्राखानी-वशका स्थान किस तरह अतालीकवशी मगीतोने लिया, इसका वर्णन हम पहले* कर चुके है। खुदायार अतालीकके पुत्र मुहम्मद रहीम और दानियाल वी थे। रहीम बी अस्त्राखानी अमीर सैयद अब्दुलफैजका दामाद था। सैयद अब्दुलफैजकी लडकी शम्सवान् आइम दानियाल बीके लडके शाह मुराद (अमीर मासूम बेगीखान) की बीबी थी, जिससे सैयद अमीर हैदर पैदा हुआ था। यद्यपि अब्दुर्रहीम बीके समयसे ही राज्यशासन नये खानदान (मगीत-वश) के हाथमे चला गया था, लेकिन अमीर हैदरके समय तक अस्त्राखानी-वशके खानको खतम नही किया गया। मगीती-वश बुखाराका अन्तिम राजवश था, जिसका उच्छेद बोल्शेविक-क्रातिकी सफलताके बाद १९२० ई० में हुआ।

राजावली—इस वशमे निम्न अमीर हुये—

१	मुहम्मद रहीम बहादुर, अतालीक खुदायार-पौत्र	१७४७ ई०
२	दानियाल बी, खुदायार-पुत्र	–१७७० "
३	शाहमुराद, अमीर मासूम, दानियाल-पुत्र	१७७०-९९ "
४	हैदर, शाहमुराद-पुत्र	१७९९-१८२६ "
५	हुसैन, हैदर-पुत्र	१८२६ "
६	उमर, हैदर-पुत्र	१८२६ "
७	नसरुल्ला, हैदर-पुत्र	१८२६-६० "
८	मुजफ्फरुद्दीन, नसरुल्ला-पुत्र	१८६०-६७ "
९	अब्दुल अहद, मुजफ्फर-पुत्र	—१८९४ "
१०	मीर आलम, अहद-पुत्र	—१९२० "

१ मुहम्मद रहीम बहादुर, अतालिक खुदायार-पौत्र (१७४७ ई०)

मगीत-कबीलोको छिङ-गि [खानने मगोलियाके उत्तर-पूर्वसे लाकर वक्षुके मुहाने और बुखारासे एक सौ चालीस मील दक्षिण-पूर्व करशीमे बसा दिया था। मूलत यह चाहे मगोलोंके बधु-बाधव रहे हो, लेकिन आगे तुर्कोंमे मिलकर ये उज्बेकोके मुखिया बन गये। अस्त्राखानियोकी प्रभुताके समय ये उनके बडे भक्त थे। अब्दुर्रहीम उज्बेकोके मगीत-कबीलेका मुखिया था। इसके दादा खुदायारने अतालीक (मुख्य परामर्शक) होकर अपनी शक्तिको बहुत बढा लिया था, लेकिन प्रभुताको पूरी तौरसे अपने हाथमे करनेमें उसके पोते मुहम्मद रहीमबीने ही सफलता पाई। इसने अपने चचा दानियालको समरकन्दका शासक बनाया। अस्त्राखानियोकी कमजोरीके कारण शहरसब्ज, हिसार (ताजिकिस्तान) और ताशकद बुखारियोके हाथसे निकल गये थे। अपने पक्षको मजबूत करनेके लिये रहीमको अफगान अहमदशाह अब्दालीसे मदद लेनेकी जरूरत पडी, जो दिल्ली तककी लूट-मार करके काफी प्रसिद्ध हो चुका था। इस मददके बदले उसे वक्षुके दक्षिणके

* यही जिल्द २।५।१३

भूभागको गिल्जइयो (अफगानो) के हाथमें देना पडा। अब्दुर्रहीमने अस्त्राखानी खानको मारकर ही सतोष नही किया, बल्कि उसके तरुण पुत्र तथा अपने दामाद अब्दुल मोमिनको एक महफिलमें दावत करके मनोरजनके लिये कुएके गहरे जलको देखते वक्त ढकेलकर मार दिया। अब्दुर्रहीम बुढापेमें ईरानी गुलाम तथा अपने वजीर दौलत बीके हाथमे खेलता रहा, जो अपने दुःशासनके लिये बदनाम था। रहीम इस वक्त बहुत विचित्र स्वभावका हो गया था। एक दिन वह दर्वेश बन ससारकी असारतापर व्याख्यान देता, और दूसरे दिन मौज-मेलेमें अपनेको भुलाना चाहता। इसी तरहके जीवनमें वह बीमार होकर मर गया। उसके कोई पुत्र नही, बल्कि दो लडकिया थी। मरते समय उसने अपने चचा दानियाल बीको अपना उत्तराधिकारी बनाया।

२ दानियाल बी खुदायार-पुत्र (–१७७० ई०)

रहीमके मरनेपर उसकी इच्छानुसार वजीर दौलतबीने दानियालको सिंहासन सभालनेके लिये बुलाया। दानियालने स्वय खान न बन अतालीक ही रहना चाहा, और गद्दीपर उसने अस्त्राखानी अबुल्गाजीको खान बनाकर बैठाया। दौलत बी अब भी राजकाज चलानेमें सर्वेसर्वा था। यही समय है, जब कि बुखाराके बाजारोमें कलियान (हुक्के) और तम्बाकूका प्रचार बढा, साथ ही काफिर-रबातमें रडीखाने खुले। दानियालका ज्येष्ठ पुत्र शाहमुराद इनके लिये बहुत अफसोस करता था, क्योकि वह कट्टर इस्लामका प्रचार करना चाहता था। उसने शाह सफर नामक एक सूफीके यहा जाकर शिक्षा लेनी चाही। शेखने उसे फटकारते हुये कहा—"अत्याचारीका पुत्र कैसे भले काम कर सकता है ?" फिर परीक्षा लेनेके लिये उसने कहा—"जाकर पल्लेदारी करते बोझ ढो।" मुराद गदे कपडे पहिनकर तुरन्त बाजारमे चला गया, और अपने गुरुकी आज्ञाके अनुसार कितने ही महीनो तक पल्लेदारी करता रहा। बापके टोकनेपर मुरादने जवाब दिया—"इल्म और धर्मकी खान बुखारा आज अन्याय और दुराचारमें कितना डूबा हुआ है ? जहा तुम्हारे पुत्र व्यसनमें पडे हुये है, जब कि दौलत कुशबेगी जैसा एक दास देशका स्वामी बन बैठा है।" यह कहते हुये मुरादने कहा, कि मै तो दर्वेश (साधु) बनूगा। एक साल तक हम्माली (पल्लेदारी) करनेके बाद शेख सफरने मुरादको अपना मुरीद (चेला) बनाया। अब वह अपना सारा समय आलिमो और दर्वेशोंकी सेवामें बिताने लगा। लेकिन-साथ ही खोकन्दके दूतकी स्वागतकी तैयारीके लिये उसने कुशबेगीको बुला चुपचाप जल्लादोको भेजकर उसका काम तमाम किया, और उसकी धन-सम्पत्तिको जब्त कर लिया। अब मुरादकी चलने लगी। उसने एक काजीको हुक्का पीनेके अपराधमें चाल सुधारनेके लिये साल भरका समय देकर उसे मरवा डाला। उसके डरके मारे भाइयोने भी अपनी चाल बदली। बुरे साथियोको मारनेमें उसने जरा भी आनाकानी नही की, और रडीखानेको भी जल्दी ही बन्द करवा दिया। बुखारा फिर "स्वर्ग" बन गया। दानियाल बीने शाह मुरादके आगे बढनेमें कोई रुकावट नही पैदा की, और बेटा भी अपने बापकी बडी इज्जत करता था। मृत्युके समय दानियालने शाह मुरादसे प्रतिज्ञा करवाई—"भाइयोको न मारना न निर्वासित करना, मेरी विधवाओको व्याह करनेके लिये मजबूर न करना, ख्वाजासरा खोजा सादिकके साथ अच्छा वर्ताव करना, भाइयो-बहनोको काफी धन देना और मुझे शाह नक्शबदकी कब्रके पास दफन करना।"

दानियालका शासन इस प्रकार बहुत कुछ उसके बेटे शाह मुरादका शासन था। उसने उरगज (खीवा), खोकन्द और मर्वके शासकोंके साथ मित्रता रक्खी। सिक्का और खुतबा उसने अपना नही चलाया। दानियालके मरनेके बाद भी अभी तख्तपर अबुलगाजी अस्त्राखानी ही रहा, यद्यपि शाह मुरादको यह पसद नही था।

३ शाह मुराद, अमीर मासूम बेगीखान, दानियाल-पुत्र (१७७०-९९ ई०)

शाह मुराद बडा ही ढोंगी था। वह अपनेको सत सूफी प्रकट करना चाहता था। बापके मरनेपर वह बुखाराके लोगोंसे पिताके दुष्कर्मों तथा कसूरोंके लिये क्षमा मागता फिरता रहा। बापकी

वरासतमे मिली सम्पत्तिको उसने स्वय न लेकर खैरातके कामोमे दे दिया। पहलेसे ही वह अपने पल्लेदारीके जीवन तथा दूसरे विचित्र कामोके कारण कट्टर मुसलमानोमें सर्वप्रिय हो चुका था, लेकिन उसका अपना भाई तस्लामिश उससे सख्त घृणा करता था, और चाहता था कि किसी तरह गद्दी अपने हाथमे ले ले। उसने शाह मुरादकी हत्याके लिये फरीदून नामक एक आदमी को नियुक्त किया। फरीदूनने शयनकक्षमे जाकर तलवार चलाई, जिससे मुहसे कानतक घाव लग गई, लेकिन इसी समय जागकर शाह मुरादने हत्यारेकी दाढी पकड ली, पर वह किसी तरह जान छुडाकर भागनेमें सफल हुआ। सवेरे उसी तरह घावपर पट्टी बाधे शाह मुराद दरबारमें आया। फरीदूनको मृत्युदड हुआ, भाईको उसके कसूरके लिये देशनिकाला मिला। बापको दिये हुये वचनपर ख्याल करके मुरादने उसको और कोई कठोर दड नही दिया। जब उसके दूसरे भाई सुल्तान मुराद—जो कि कर्मिनियाका हाकिम था—ने विद्रोह किया, तो उसे भी बन्दी बनाकर बुखारामें रख दिया।

मेर्व इस समय ईरानी काजार-वशके सस्थापक बहराम अली खाके हाथमें था, जिसने १७८१ ई०में इस महत्त्वपूर्ण प्राचीन नगरको लेकर उसे अपनी राजधानी बना पुराने मेर्वके ध्वसावशेषपर एक किला बनाया। बहराम स्वय भी तुर्कमान था, इसलिये तुर्कमानोपर सत्ता जमानेमें उसे बहुत कठिनाई नही हुई। शीया होनेसे धर्मांध शाह मुराद मेर्वपर काजार-शासनको फूटी आखो नही देख सकता था। उसके लिये यह धर्मयुद्धका अच्छा मौका था। दानियाल बीके मरनेपर बहराम अलीने अपनी भक्ति दिखाते हुये यद्यपि कुरान-पाठ करके दान-खैरात दी थी, लेकिन इसका सुन्नी दर्वेश शाह मुरादपर कोई असर नही हुआ। १७८५ ई०में शाह मुराद छ हजार सवारो के साथ मेर्वकी ओर चला। छापा मारकर पहले ही हल्लेमें उसने बहराम अलीको मार डाला। लेकिन उसकी राजधानी आत्म-समर्पण करनेके लिये तैयार नही थी। बहराम अलीने सुल्तान सजर सल्जूकी द्वारा बनवाये मुर्गाब नदीके बाध—जोकि मेर्वसे तीस मील ऊपर था—की सुरक्षाके लिये उसपर बने किलेको तोड दिया। बाधका हाकिम अपनी स्त्रीके लिये बहराम अलीके पुत्र मुहम्मद खानसे नाराज था। इसी कारण उसने किलाबन्द महलको शाह मुरादको अर्पित कर दिया। शाह मुरादने बन्दको तोडकर दुनियामे अत्यन्त उर्वर मेर्वकी हरितावली और नहरोको खराब करके बरबाद कर दिया। इससे भयकर अकाल पडा, जिसके कारण मर्ववाले आत्मसमर्पणके लिये मजबूर हुये। अधिकाश निवासियो—तेरह हजार परिवार—को गुलाम बनाकर शाह मुराद बुखारा ले गया। इसके बाद उसने खुरासानपर धावा करके लूटमार मचाई। शीया ईरानियोको मारना या गुलाम बनाना सुन्नी धर्मांध शाह मुरादके लिये पुण्यार्जनका सबसे अच्छा उपाय था। तारीफ यह कि इसपर भी इस समय क्रूरकर्मा शासकको अमीर मासूम (निष्पाप शासक) कहा जाता था। अपने सुन्नी धर्म-भाइयोकी दृष्टिमें वह ऐसी खून-खराबी और लाखो आदमियोको गुलाम बनाकर कोई पाप नही कर रहा था। उसके सालाना हमलोके कारण खुरासानके गाव और नगर उजड गये। ईरानी गुलामोकी अधिकताके कारण बुखाराकी बाजारोंमें गुलामोका दाम गिर गया।

मेर्व शहरको बहरामअलीके पुत्र मुहम्मद करीम खाने बड़ी बहादुरीसे बचाया था। उसके बाद उसके भाई मुहम्मद कुल्ली खाने भी शाह मुरादसे मेर्वकी रक्षा की थी। बाधके सरक्षकने एक वेश्याके प्रेममें अधे धोखा दिया। हुसेन खा मेर्वका राज्यपाल था, उसने जबर्दस्ती उसकी वेश्याको पकड मगवाया था।

अफगानिस्तानके अहमद शाह अब्दालीसे शाह मुरादके बापका अच्छा सबध था। सुन्नी होनेसे वह शाह मुरादकी सहायता करनेके लिये कुछ करना पुण्यकी बात समझता था। इस समय अहमदशाह अब्दालीका पुत्र तेमूरशाह काबुलकी गद्दीपर था। उसने लश्करीशाहके साथ एक सेना शाह मुरादकी सहायताके लिये भेजी। लश्करीशाहका पुत्र खजर खा मेर्वके राज्यपालकी बहिनके प्रेममें फस गया। हुसेन खाने उसे पकडकर घायल किया, और वह उसी घावसे मर गया। फिर उसने अपनी बहिनको भी मरवा दिया। लश्करीशाह दो हजार परिवारोंके साथ अपनी सेना ले हिरात लौट गया। हुसेनने दूत भेजकर बुखारासे शाति-भिक्षा मागी, और बादमें स्वय बुखारा गया। उसे चहारबागमें बडी अच्छी तरह ठहराया गया। उसके बाद उसका भाई मुहम्मद करीम खा भी मशहदसे शाह मुरादके

दरवारमें गया । करीम खाके परिवार तथा मेर्वसे लाये सत्रह हजार परिवारोमेंसे वहुतोको हुसेन खा, लौटा ले जानेमे सफल हुआ । अन्तमे मेर्वके तीन हजार सुन्नी और दो हजार शीया-परिवार वुखारामें रह गये । शाह मुरादकी उस चोटके बाद मेर्व तव तक नही सभल सका, जव तक कि वोल्शेविक-क्रातिने उसे एक आधुनिक ढगके उद्योगप्रधान नगरमें परिणत नही कर दिया ।

१७५१-५२ ई०से ही वक्षु (आमू-दरिया)के दक्षिणवाले इलाकेके स्वामी अफगान वन गये— यह वही इलाका है, जहा वलख, कुदुज जैसे महत्त्वपूर्ण नगर है, और जिसे पहले वाह्लीक, फिर दक्षिण तुखारदेश कहा जाता था और १८ वी सदीसे आजतक जहा के रहनेवाले अधिकतर उज्वेक है । शाह मुरादके वापने अपनी निर्वलताके कारण इस इलाकेको अफगानोके हाथमें दिया, लेकिन शाह मुरादको यह पसद नही था । अहमदशाह अब्दालीका पुत्र शाह तेमूर १७८६ ई०में सिधके अभियानमें फसा हुआ था। इसी समय उज्वेक सरदारोने लोगोंको भडकाकर वलख और अक्सी में विद्रोह कर दिया । शाह मुरादने भी सहायताके लिये सेना भेजी और इस इलाकेसे अफगान हाकिमोको मार भगाया गया । तेमूर अब्दालीने शाह मुरादको सख्त पत्र लिखकर कहा—"वाहरसे नम्रता दिखलाते हुये तुम इस तरह आक्रमण करते हो ? मेर्वमे हमसे यह कहकर सहायता ली, कि हम शीयोको सच्चे धर्ममें लायेंगे, और कहा था, कि मेर्वके शीयोको असली मुसलमान वनानेकी जिम्मेवारी हम ले लेंगे और इस प्रकार हिन्दुस्तानको हिन्दुओ, यहूदियो, ईसाइयो और दूसरे काफिरोसे मुक्त करनेके लिये अफगान स्वतत्र रहेगे । लेकिन, तुमने शहरसब्ज, खोजन्दके सुन्नियोको तग किया। अव हम तुर्किस्तानके लिये कूच करनेका निश्चय कर चुके है। हिम्मत हो, तो तुम मैदानमें आओ।

तेमूरशाह अब्दाली १७८९ ई०में एक लाख सेनाके साथ कावुलसे रवाना हुआ । हिन्दूकुश पार हो पहले उसने कुदुजपर अधिकार किया । फिर अक्सी गया । शाह मुराद भी तीस हजार सेनाके साथ किलिफमे वक्षु पार हुआ । लेकिन तेमूरशाहकी सेनाके सामने अपनी शक्तिको निर्वल देखकर उसने नम्रताकी नीतिसे काम लेना चाहा । मुल्ला वीचमें पडे और उन्होने कहा, कि दो सुन्नी वादशाहोको आपसमे लडकर अपनी शक्तिको वरवाद नही करना चाहिये । शाह मुरादने अपने पुत्रको तेमूरके डेरेमें भेजा और किसी तरह तेमूरशाहकी मृत्यु तकके लिये शाति स्थापित हो गई ।

१७९६ ई०में तुर्कमान सरदार आगा मुहम्मदने मशहदको नादिरशाहके पौत्र अधे शाहरुख से छीन लिया । काजार-वशका—जिसने ईरानपर २० वी सदीके प्रथमपाद तक शासन किया-- वास्तविक सस्थापक आगा मुहम्मद था । यह हिजडा था । मशहदसे वचित हो जानेपर शाहरुखका वड़ा वेटा नादिर कावुल-दरवारमें गया और उसने अपने भाइयो तथा सरदारोको मदद मागनेके लिये वुखारा भेजा । अवुलफैजने अस्त्राखानीकी लडकीके सवध और रहीमपर दिखलाई अपनी दया, तथा सुन्नी धर्मके नामपर सेना मागी । उसने शाह मुरादसे यह भी कहा, कि सफलता प्राप्त करनेपर हम वुखाराके अमीरके नामका खुतवा पढवायेंगे । १२ मार्च तक प्रतीक्षा करके कोई सफलता न देखकर वह हिरातकी ओर लौटे । नदीमें धोखेसे डुवानेके लिये पुरानी नावपर चढाया गया था, लेकिन राजकुमार किसी तरह नदी तैरकर चारजूइ पहुच गये । असफल होनेपर ख्वारेज्मके एल्वर्स खानके पौत्र तूरा कजाकको नादिरके दामादके मारनेका वदला लेनेके लिये भेजा गया । तुरा कजाक चारजूइके हाकिमके घर ठहरा । वात खुल गई, तो उसने वहुत गिडगिडाकर कहा, कि हम सुन्नी है, और तुम्हारे मेहमान है । लेकिन उनको क्षमा न करके तुरा कजाकने नादिरशाही राजकुमारोंको मार डाला ।

अवुलगाजीके जीवन भर उसीके नामका खुतवा और सिक्का वुखारामें जारी रहा । शाह मुरादने खानकी गद्दीपर वैठ अपनेको केवल "नवाव" या "वली-निअम" ही वनाकर रक्खा । शाह मुराद वडे ही नाटकीय ढगसे अपने त्याग और तपस्याको दिखलाता था । दरवारमे कितने ही वकरीके छाले रक्खे रहते थे, वह उन्हीमेंसे किसीपर वैठ जाता और अपनेको दूसरोंसे वडा नही समझता था । छोटे-से-छोटे कामोको भी वह अपने हाथसे करनेमें नही हिचकिचाता था । उसके रसोईघरमें एक लकडीका कटोरा, एक लोहे की कड़ाही और कुछ मिट्टीके वर्तन थे । वह स्वय वाजारसे चीजें खरीद लाता और अपने हाथसे खाना पकाता । मेहमानोका हाथ धुलानेके लिये स्वय पानी डालता

और उनके जूठे कटोरोमे खाता। एक बहुत सस्ते गदहेपर विना चारजामाके ही बैठकर बुखाराके बाजारोंमें चलता। वह अपनेको फकीर कहता था। अपने खर्चके लिये राजकोषसे प्रतिदिन एक तका लेता। अपने बावर्ची, चाकर और मुल्लाके लिये भी एक-एक तका देता। बीबी शाही खानदान की थी, इसलिये उसे प्रतिदिन तीन तका दे, ऊपरसे शिक्षा देता—"खातून थोडेसे सतोष करो, जिसमे कि अल्ला तुमपर सतुष्ट हो।" लेकिन जब खातूनको पुत्र पैदा हुआ, तो खुश होकर मा-बेटेके लिये पाच तिला (अशर्फी) प्रतिदिन देने लगा। दूसरे दो पुत्रोके पैदा होनेपर उतना ही और देता रहा। इस प्रकार अपने परिवारको यद्यपि उसने सुखपूर्वक रक्खा, लेकिन स्वय एक बिल्कुल बिना सजाई छोटी-सी कोठरीमें रहता, जहापर हर वर्गके आदमी उसके पास हर हमय जा सकते थे। फकीरोकी तरह उसकी पोशाक बडी मोटी-झोटी होती। न्यायालयमें उसने चालीस मुल्ला रक्खे थे, जिनका अध्यक्ष स्वय था। डाका डालनेके अपराधके लिये मृत्युदड, चोरीके लिये हाथ काटना, शराबीको खुलेआम कोडे लगाना, तमाकू पीनेके लिये भी कडी सजा होती थी। लोगोको नमाजमे भेजनेके लिये पुलिस डडा लिये तैयार रहती। विद्यार्थियोको राजकोषसे खर्च मिलता, जिससे बुखारा-के मदरसोमें एक समय तीस हजार विद्यार्थी रहते थे। विदेशी मालपर छोडकर और किसी तरहका शुल्क नही था। गैर-मुस्लिमोसे इस्लामी शरीयतके अनुसार जजिया ली जाती थी, और सिपाही शीयोको लूटकर जो माल लाते, उसका पचमाश शाही खजानेमें देते।

उज्बेक उसे सचमुच ही अल्लाका वली मानते। जब वह जहादियोकी सेना लेकर खुरासानपर लूटके लिये जाते, तो भारी रसदके सामानको कई मँजिल पीछे छोड देते, हरावलमें केवल सवार-सैनिक होते। गाजियोकी सेना इलाकेमें छा जाती, और लूटमार तथा लोगोको बदी बनानेका काम शुरू कर देती। हरएक जहादी (धर्मयोद्धा) को अपने और अपने घोडेके लिये सात दिनका आहार साथ ले जाना पडता। अभ्यासके साथ शाह मुरादके मुजाहिद (धर्मयोद्धा) इतने अभ्यस्त हो गये थे, कि बे-रोक-टोक एकाएक किसी किले, प्राकारबद्ध गाव, नगर या काफिलेपर टूट पडते। बदी बनाये हुये आदमियोंके लिये मुक्ति-धन मागते, जिसके न मिलनेपर उन्हे दास बनाकर बेच देते। शाह मुराद ईरानियोके विरुद्ध धर्म-युद्धोमें स्वय अपने आदमियोके आगे-आगे रहता। फकीरोकी पोशाक पहने एक छोटे-से टट्टूपर बैठा वह गाजियोका सचालन करता। उसके अनुशासन बडे कडे थे। नमाज, रोजा आदि धार्मिक कर्त्तव्योकी बडी कडाईसे पालन कराता। सभी इस्लामी देशोमें "रईस शरीयत" (धर्माधिकारी) पदको उठे बहुत दिन हो गये थे, लेकिन शाह मुरादने बुखारामे फिरसे इस पदकी स्थापना की। चोरो और वेश्याओको वह सीधे जल्लादके हाथमे दे देता, लेकिन इन सारी धार्मिक कडाइयोका परिणाम बुखारावालोके लिये उलटा ही पडा।

चिन्नरनके सरदार मएश खानने शाह मुरादके बहनोई तथा जीजकके हाकिम ईशान मखदूम-पुत्र ईशान नकीबके नाम चिट्ठी देकर दूत भेजा। दूतने अपने कामका इस प्रकार वर्णन लिखा है—"मुझे, ईशान नकीबके सामने पेश किया गया। वह एक बडे ही सुदर तम्बूके दूसरे छोरपर बैठा था। अभी हमे बैठे देर नही हुई थी, कि एक अफसर तम्बूमें आया और उसने ईशान नकीबको कहा, कि बेगीजान (शाह मुराद) की इच्छा है, कि आप अपने मेहमानके साथ आवे। हम खडे हो गये और अपने-अपने घोडोपर चढकर ईशान नकीबके साथ चले। कुछ दूर जानेके बाद हमें एक बासका तम्बू मिला, जिसकी शकल-सूरत और फटी हालतको देखकर मैंने समझा, कि किसी बावर्ची या भिस्तीका तम्बू होगा। एक बूढ़ा आदमी धूपसे बचनेके लिये उसीकी छायामें घासपर बैठा हुआ था। सब घोडेसे उतर पडे और हरे तथा अत्यन्त गदे कपडे पहने हुये बूढे आदमीकी तरफ बढे। उसके पास जाकर खडे हो सबने अपने दोनो हाथोको छातीपर रखकर आदरके साथ सलाम किया। उसने हरएक आदमीको सलामका जवाब दिया, और अपने सामने बैठनेके लिये कहा। वह ईशान नकीबके लिये बहुत मेहरबानी दिखलाता मालूम होता था, और उसे अपनी बातचीतमें उतखुर सूफीके नामसे सबोधित करता था।. मैंने अपना पत्र ईशान नकीबके हाथमें दिया। उसने उसे हरे कपडेवाले बूढेके हाथमे थमा दिया, जिसके बारेमे अब मुझे पता लगा, कि वह बेगीजान (शाह मुराद) है। उसने चिट्ठीको खोलकर पढा और फिर अपनी जेबमे डाल लिया।

.हमारी बातचीत होने लगी। इसी बीच बहुत-से दरबारी अमीर आये और मैं उनके असाधारण भडकीले, तथा मूल्यवान् हथियारो तथा पोशाकको देखता रहा। उनके आनेके थोडी देर बाद उनका सरदार (शाह मुराद) एक गहरे ध्यानमें डूब गया और जब तक कि शामके नमाजकी घोषणा नही हुई, तब तक वह उसी ध्यानमें लीन रहा। दूसरे दिन विदाईकी बात होते समय उसका रसोइया कमजोर आखोवाला एक नाटा आदमी तम्बूके भीतर आया। बेगीजानने कहा—"क्यो नही तुम खानेका प्रबध करते हो ? जल्दी ही नमाजका समय होनेवाला है।" नाटा रसोइया तुरन्त एक बडा काला बर्तन लाया और पत्थरोंको रखकर चूल्हा बना उसने चार-पाच तरहके अनाज और थोडासा सूखा मास डालकर उसे चूल्हेपर चढा बर्तनको पानीसे गले तक भरकर, आग जला उसे पकनेके लिये रख दिया। फिर वह तश्तरिया ठीक करने लगा। यह लकडीकी तश्तरिया वैसी ही थी, जैसी कि अत्यन्त गरीब लोग इस्तेमाल करते है। उसने तीन तश्तरी रखकर पकी हुई चीजको उसमें उडेल दिया। बेगीजान रसोइयेकी ओर नजर लगाये हुये था। उसकी नजर के सकेतसे रसोइया जानता था, कि कितना कमबेसी तश्तरीमें डालना चाहिये। जब सब ठीक हो गया। उसने एक गदे कपडेको लेकर फैला दिया, फिर उसके ऊपर एक पुरानी जौकी रोटीका टुकडा रख दिया, अल्ला ही जानता होगा, कि हिजरीके कौनसे सनमें उसे पकाया गया था। बेगीजान ने रोटीको पानीके प्यालेमें भिगोया। पहली तश्तरी उज्बेकोंके शासक (शाह मुराद) को दी गई, दूसरी तश्तरी मेरे और ईशान नकीबके बीचमें रक्खी गई, और तीसरीको रसोइया ले अपने स्वामीके सामने खानेके लिये बैठ गया। मैं पहले ही खा चुका था, इसलिये अपने सामने रखी चीजको सिर्फ चख भर लिया। बडी ही दुस्स्वादु थी, गोस्त तो करीब-करीब सडा हुआ था, लेकिन तो भी भीतर आये बहुत-से अमीरोने हमारे छोडे हुये खानेको खाकर खतम कर दिया, उनके देखनेसे मालूम होता था, कि वह भोजन उन्हे बहुत पसद आया, लेकिन शायद वह अपने पवित्र नेताको प्रसन्न करनेके लिये ही ऐसा कर रहे थे।

४ हैदर, शाह मुराद-पुत्र (१७९९–१८२६ ई०)

अब हम उस समयमें आ गये, जब कि अग्रेज कपनीका शासन भारतमें दृढ़ता पूर्वक स्थापित हो चुका था और १९ वी सदीका आरम्भ होनेवाला था। शाह मुरादने रहीम खानकी विधवा तथा अस्त्राखानी अबुलफैजकी लडकी शैम्सबानू आयमसे व्याह किया था। इसीसे शाह मुरादका सबसे बडा बेटा हैदर तुरा (कुमार हैदर) पैदा हुआ। मुरादके मरनेपर तख्तके लिये उमर बी, फाजिल बी, महमूद बीके बीच झगडा हुआ, लेकिन नागरिक अपने औलिया फकीर बादशाहके अधभक्त थे, वह क्यों चाहने लगे, कि तख्तसे औलियाके बेटेको वचित करके चचा शासन करे। बुखारावाले उमरके लोगोपर टूट पडे। उमर किसी तरह जान लेकर भागा, लेकिन लोगोने उसके घरको लूट लिया, बीबी-बच्चोको कपडा छीन नगा करके छोड दिया। शाह मुरादकी लाश तीन दिनसे महलमें पडी हुई थी। हैदर बडी तडक-भडकवाले अनुचरोके साथ गद्दीपर बैठा। पीछे बच्चों सहित उमर बी और फाजिल बी भी पकडकर मार डाले गये। महमूद बी भागकर खोकन्द चला गया। अभी सिंहासनपर बैठे देर नही हुई थी, कि भाई मुहम्मद हुसेनपर भी षड्यत्रमें शामिल होनेका सदेह हुआ। इसपर समरकन्द छीनकर ईरानी दौलतकुश बेगीको वहाका हाकिम बना, भाईको पेंशन दे नजरबन्द कर दिया। इसके बाद हैदरकी निगाह मेर्वके हाकिम हाजी मुहम्मद खा तथा उसके सबधी करीम खा और बहरामअली खापर पडी, और इन बारह राजकुमारोको पकडकर भेड-बकरियों की तरह मरवा डाला। उनकी बीवियो और बच्चोको भेंटके रूपमें लोगोमें बाट दिया। किस कसूरपर उन्हे यह दड मिला, इसे कोई नही जानता। हैदरकी हत्याओंसे डरकर उसका भाई नासिरुद्दीन परिवार-सहित मेर्वसे मशहद भाग गया।

अब हैदरने अपनी दिग्विजयोको शुरू किया। १८०४ ई०तक उरातिप्पा, खोजन्द और ताशकन्दको उसने ले लिया। इसी साल हैदरने अपना दूत रूसी जारके पास पीतरबुर्ग भेजा, जो मास्को, अस्त्राखान, खीवा और उरगजके रास्ते लौटा। खीवाके खान इल्तजारने बुखाराके इलाकेमें आकर

लूट-मार की, जिसपर नियाज बीके नेतृत्वमें तीस हजार बुखारी-सेनाने जाकर इल्तजारको हराया, और वक्षु पार हो जान बचानेके प्रयत्नमे डूबकर इल्तजारने अपने प्राण खोये। लूटके मालमें खीवावालोका बहुत-सा खजाना बुखारियोंके हाथमे आया, जिसके साथ एक तुर्क (घोडेकी पूछ वाला) झडा भी था। सेना बदियोके साथ लूटका माल लिये बुखारा लौटी। हैदरने हथियार छीनकर बदियोको छोड दिया और अफसरोको खलअत भी दी। इल्वर्सकी जगहपर उसके भाई कुतलीमुराद बेकको ईनककी पदवी देकर हैदरने खीवाका हाकिम नियुक्त किया, लेकिन वहा पहुचनेसे पहले ही उसके छोटे भाईको लोग खान बना चुके थे।

हैदरने यद्यपि आरम्भमें अपने सबधियो, और जिससे भी खतरेका डर मालूम हुआ, उसे बुरी तरहसे मारा और बरबाद किया, किन्तु पीछेके जीवनमे वह नरम स्वभावका, उदार, न्यायप्रिय आदमी बन गया। उसकी भी इस्लाम-भक्ति बापकी तरह धर्मान्धता तक पहुच गई थी। यद्यपि बापके इतना नही, तो भी वह सादगीसे रहता था। उसके कपडे सीधे-सादे तथा प्राय सफेद रगके होते थे। रोटी और सब्जी यही उसका भोजन था। अपने खर्चके लिये वह यहूदियोंपर लगाये करको इस्तेमाल करता था। उसका दरबार किसी दर्वेश या मुल्लाका दरबार था। वह मेम्बरपर खडा हो व्याख्यान देना बहुत पसद करता था। वह लम्बा और सुन्दर था, उसका रग कुछ पीला लिये हुये अधिक गोरा था। मूहपर भरी हुई दाढी थी। अपनेको सदाचारी दिखलानेका बहुत शौक था और इस्लामी शरीयतके अनुसार चारसे अधिक बीबिया नही रखता था। हा, यदि दूसरी कोई सुन्दरीको बीबी बनाना चाहता, तो एकको घर और पेंशन दे तलाक दे देता था। दासियोकी सख्यापर शरीयतने कोई प्रतिबध नही रक्खा है, इसलिये हर महीने कोई न कोई सुन्दरी दासी उसके हरममें दाखिल होती रहती। अपनी दासियोकी कन्याओको वह मुल्लाओ या सैनिकोको प्रदान करता।

शासन-प्रबध—बुखाराका राज्य उस समय सात तुमानोंमें बटा हुआ था। हरएक तुमान-का हाकिम नकीम और उसका सहायक वजीर होता, जिन्हे अमीर नियुक्त करता। हर तूमानमें बहुत-से गाव होते, जिनके लिये ग्रामकी जनता अपना अक्सक्काल (श्वेत दाढी) नामक ग्रामपति निर्वाचित करती। अक्सक्काल एक मर्तबे निर्वाचित होकर, यदि किसी अपराधके कारण हटाया न जाय, तो जिन्दगीभर अपने पदपर रहता, बल्कि अक्सर उसका पद पैतृक हो जाता। अक्सक्कालका काम था—आपसी झगडे तै करना, कर उगाहना और राज्यके लिये सिपाही देना। गावमें हर व्याहमें कुछ भेंट और भोजमें उसे निमत्रण मिलता, साथ ही फसलके अनाजमें भी उसका हिस्सा बधा था। जमीनपर कर दहयक (दशाश), गल्लेपर चालीसवा हिस्सा, और सौदेपर भी चालीसवा हिस्सा देना पडता। नायब नकीमके सहायक होते, जो अधिकतर मुल्ला थे। गावोके शासनमें उनका भी अधिकार था। धनी और प्रभावशाली उज्बेकोको बेग या बाय कहा जाता। बुखाराके पास चालीस हजार सेना थी, जिसे आवश्यकता पडनेपर नये रगरूटो-का भर्ती करके बढाया जा सकता था। सैनिकोके पास भाला, ढाल-तरवारके अतिरिक्त थोडी सख्यामें पलीतेवाली बन्दूकें भी थी।

वैदेशिक सबध—१८२० ई०में रूसका एक दूतमडल बुखारा आया। इसका नेता नेंगरी था, जिसके साथ बोरोन मेयेदोर्फ भी था। १८१६ ई० और १८२० ई०मे बुखाराके दूत दो बार जारके दरबारमें जा चुके थे, उसीके जवाबमें यह रूसी दूतमडल आया था। दूतमडलके साथ कुछ कसाक सैनिक भी थे। कई सौ ऊटोपर रसद और सामान ले दूतमडलने १०० अक्तूबर १८२० ई० को ओरेनबुर्ग छोडा। दश्त-कजाक (दश्ते किप्चक) पार हो अगतमामें पहुचा। बुखाराकी सीमापर उसका बडा स्वागत हुआ। बस्तियोमें उन्होंने बुखारियोंके बीचमें सफेद पगडीवाले रूसी गुलामोको भी अपनी आखो देखा। दूतमडल २० दिसम्बरको बुखारा नगरमें दाखिल हुआ। वह अमीरकी भेंटके लिये अपने साथ समूरी छाल, चीनी बर्तन, बढिया काचके बर्तन, घडिया और बन्दूकें लाये थे। शहरके एक दरवाजेसे सैनिक ढगसे दाखिल हो महलके पास पहुच रूसी घोड़ोंसे उतर पडे। वहा करीब चार सौ सैनिक बन्दूक लिये दो पातियोमे खडे थे, जिनके बीचसे

दूतमंडल आगे बढा। एक महलके आंगनमें तीन-चार सौ सफेद पगडीवाले बुखारी स्वागतके लिये खडे थे। अन्तमें वह दरबार-हाल में पहुचे। खान वहा एक सुनहली किनारेवाली लाल गद्दीपर बैठा था। उसकी बाईं ओर उसके दो पुत्र थे, जिनमें बडा पद्रह सालका था, दाहिनी ओर कुशबेगी (प्रधानसेनापति) था। रूसियोंने अपना प्रमाणपत्र पेश किया। इसके बाद अमीरने कसाक सैनिकोंको देखना चाहा। जब कसाक हालमें लाये गये, तो अमीर हैदर बच्चोंकी तरह खिलखिलाकर हसा।

बुखारामें यहूदी काफी सख्यामें रहते थे, लेकिन वह सिर्फ तीन महल्लोंमे ही बस सकते थे। अधिकतर उनमें दस्तकार, रगरेज और कुछ रेशमके व्यापारी थे। उनसे जजियाके रूपमें प्रतिवर्ष अस्सी हजार रूबल वसूल किया जाता। नगरके भीतर कोई यहूदी न घोडेपर चढकर निकल सकता था, न रेशमी पोशाक पहन सकता था। अपना परिचय देनेके लिये एक खास तरहकी चौडी टोपी काले मेमनेके चमडेकी पट्टी लगाकर उन्हें पहिननी पडती। वह अपने लिये नया मदिर नही बनवा सकते थे। बुखारा और रूसका व्यापार पुराने जमानेसे चला आता था। पहले इसके लिये एक बहुत भारी मेला मकरियेफमें लगता था, जिसे १८१८ ई०में निज्नीनवोगोरद (आधुनिक गोर्की) में बदल दिया गया। ओरेनबुर्ग और त्रोइत्स्कमें बुखारी व्यापारके लिये जाते, जिन्हे रास्तेमे कजाक अक्सर लूट लिया करते थे। रूसियोने अपनी यात्राका जो वर्णन लिख छोडा है, उससे मालूम होता है, कि वहा चारो तरफ लूट-खसूटका बाजार गर्म था, और कोई अपनी सम्पत्तिका दिखावा करनेसे डरता था। शौकीनी, और विलासिताके जीवनका भी आकर्षण काफी था, यद्यपि बाहरसे अपनेको बडा सदाचारी दिखलाया जाता। खान अपने निजी जीवनमें किसी तरहकी पाबन्दी नही रखता था। उसको डर था, कि कही कोई विष न दे दे, इसलिये उसके खानेको पहले बावर्ची चखता, फिर कुशबेगी भी चखकर उसे ढाककर अपनी मुहर लगा देता। शहर छोडते समय वह पुत्रको भी छोड जाता। रूसियोंके कथनानुसार हैदरके हरममें दो प्रकारकी स्त्रिया थी, जिनमें चार ब्याही थी—हिसारी, समरकन्दखोजाकी पुत्री, अफगानके शाहजमाकी पुत्री ।

हैदरका पुत्र नसरुल्ला करशीमें रहता था। १८२६ ई० में वह बेटेके पास गया, जहासे लौटते समय बीमार हो बुखारामें पहुच ६ अक्तूबर १८२६ ई० को मर गया।

इन दो पीढियोंमें लाठीके जोरसे लोगोंको जो सदाचारी बनानेका प्रयत्न किया गया था, उसका परिणाम अब अप्राकृतिक व्यभिचारके रूपमें बहुत बुरी तौरसे फैला। शराब और तम्बाकू वर्जित कर दिये गये थे, लेकिन उनका स्थान अब अफीम और भगने ले लिया था।

५ हुसेन, हैदर-पुत्र (१८२६ ई०)

पिताके मरनेपर हुसेन बुखारामे था, इसलिये वह झट गद्दीपर बैठ गया, लेकिन तीन मास बाद ही वह मर गया। फिर उसके भाई मीर उमरने गद्दी सभाली।

६ उमर, हैदर-पुत्र (१८२६ ई०)

मीर उमरने गद्दी सभाली, लेकिन नसरुल्ला ताकमें था। उसने २४ अप्रैल १८२७ ई० को आकर बुखारा ले लिया।

७ नसरुल्ला, हैदर-पुत्र (१८२६-६० ई०)

अपने शासनके आरम्भिक कालमें नसरुल्ला नेक और न्यायप्रिय था। उसे "अमीरुल् मोमिनीन" (मुसलमानों का अमीर), "हजरत" और "इस्लामके खलीफा (तुर्कीके सुल्तान) का धनुर्धर" कहा जाता। लेकिन पाच-छ वर्षसे अधिक वह इस जीवनको नही बिता सका। इसी समय १८३२ ई०के आस पास तब्रेजमें पैदा हुआ अब्दुसमद खा नामक ईरानी बुखारा दरबारमें पहुचा। उसने जेनरल कोर्ट (एक अग्रेज अफसर) के नीचे रहकर कुछ पश्चिमी सैनिक-विद्या सीखी थी। मुहम्मदअली

मिर्जाने उसे कुछ समय किरमानशाहका हाकिम बनाया था, जहा किसी कसूरमे उसके कान काटे गये। फिर भारत और पेशावरमे कितने ही समय रहकर वह कावुलके अमीर दोस्त मुहम्मद खाकी सेवामे रहा। तव अग्रेजोके प्रति भारी घृणा लेकर वह वुखारा पहुचा। कुशवेगी हाकिमवेग अब्दुस्समदसे वहुत प्रसन्न हुआ, और उसे अपना नायब बना सेनाको फिरसे सगठित करनेके काममें लगा दिया। अब्दुस्समद वुखारामें अग्रेजोकी कोई बात चलने नही देता था।

उबेज्क कहावतके अनुसार "राजा उस युगका दर्पण होता है" मान लिया जाय, तो नसरुल्लाके रूपमें बुखारा दुराचार और अत्याचारमे अपनी पराकाष्ठामें पहुचा था। नसरुल्ला हैदरका पुत्र था, लेकिन अपनी कुटिल नीतिमें अपने दूसरे भाइयोसे कही आगे वढा हुआ था। कुशवेगी (सेनापति) हाकिम वी और ससुर आयाज तोपची वाशी (तोपखानाका जेनरल अयाज) उसके पक्षमें थे। जव हैदरके मरनेपर वडा भाई हुसेनखा गद्दीपर वैठा, तो नसरुल्लाने अपनी वडी गर्मा-गर्म वफादारी दिखलाई, लेकिन साथ ही करशीसे वह आगेके लिये तैयारी भी करता रहा, जिसमें उसका प्रधान-सहायक मीर अमीन वेग दादखा था। तीन ही महीनेके शासनके बाद भाई मर गया—कहा जाता है कुशबेगीन उसे जहर दे दिया। करशीके प्रधान काजीने नसरुल्लाके पक्षमें अपना फैसला दे समरकन्दके काजीको भी वैसा ही करनेके लिये कहा, लेकिन इसी वीच दूसरे भाई उमरखाने वुखारापर अधिकारकर समरकद को किसी हालतमे भी न देनेके लिये हुक्म दिया। लेकिन नसरुल्लाके आनेपर दरवाजा खोल दिया गया, क्योकि समरकन्दके मुल्ला उसके पक्षमे थे। कोकताश (नील-पाषाण) के ऊपर तेमूरके जमानेसे ही गद्दी देनेकी रसम पूरी की जाती थी। वही नसरुल्लाके सिरपर ताज रक्खा गया। कत्ताकुर्गान, करमीना आदि नगरोंने उसका शासन स्वीकार किया, फिर वुखाराको उसने घेर लिया। घेरावेके कारण लोगोकी हालत वुरी हो गई। आध सेर मास चादीके सात तकेमे विकने लगा। वाहरसे कोई खानेकी चीज आने नही पाती थी। उन्हे लोग लाशोके साथ जनाजेमें छिपाकर लाते। नहरके पानीमे भी असह्य सडाद आने लगी थी। भीतरसे कुशवेगी और ससुर अयाज नसरुल्लाके पक्षमें थे ही। उनको वहाना मिल गया। वडी तोपको दागकर फोड दिया गया था। नसरुल्लाने २२ मार्च १८२६ ई० को दो तरफसे शहरपर आक्रमण कर दिया। चारो ओर विश्वासघात देखकर उमर जान लेकर भाग गया, लेकिन उसके तीन भाइयों और वहुत-से अनुयायियोको पकडकर नसरुल्लाने मरवा डाला। अपनेको काफी मजवूत कर लेनेपर अपने सहायक कुशवेगीको पहले करशी और फिर समरकन्दमे निर्वासित कर दिया। अपने ससुर तोपची वाशीको बुलाकर सुन्दर घोडेपर सवार कर समरकन्दका हाकिम वनाकर भेजा, लेकिन तुरन्त ही वुखारा लौटनेका हुक्म देकर उसे जेलमें कुशवेगीके साथ बन्द कर दिया। फिर जिनके विश्वासघातके वलपर उसे गद्दी मिली थी, उन दोनोको उसने १८४० ई०मे कत्ल करवा दिया। सैनिक अफसरोमेंसे भी उसने चुन-चुनकर बिना मुकदमा किये कितनोको मरवाया और कितनोको निर्वासित कर दिया। अन्तमे मुल्लोके ऊपर पडा और उन्हे हर तरहसे दवाकर शरीयतकी जगह अपने हुक्मको सर्वोपरि वनाया।

कुशबेगी तोपची वाशीको १८४० ई०के वसतमे मरवानेके वाद अव नसरुल्लाके सामने कोई वाधा देनेवाला नही रह गया। तुर्कमान रहीमवर्दी माजूमको हथियार वनाकर वह अपना काम लेता था। किसी समकालीन लेखकने उसके शासनके वारेमे लिखा है—"नमाज पढनेके लिये लोगोको डडोसे पीटा जाता, सिपाही जवह किये जाते या जान वचाकर भागनेके लिये मजवूर होते।"

लेकिन कुशवेगी और तोपची वाशीके मरनेसे पहले ही १८३९ ई०में माजूम तुर्कमानका समय वीत चुका था। अव सभी पदोको अमीरने अपने हाथमे रखना चाहा। वजीरके लिये कोई चाहिये, तो वह अपने प्रिय छोकरोमेंसे किसीको तीन-चार सालके लिये वैठा देता, उसके वाद फिर किसी दूसरेको लाता—हटाते वक्त उनके सारे धनको छीन लेता।

ऐसे अत्याचारी, क्रूर और पतित आदमीको सव जगहसे भय होना जरूरी था। इसके लिये उसने नगर, वाजारो, मदरसो, मस्जिदो, हम्मामोको अपने गुप्तचरोंसे भर रक्खा था।

पिशागरमें किलेको न ढानेसे नाराज होकर वह खोजन्दके खान वेगलर वेकके विरुद्ध

चढा। तीन सौ सरवाजो और नायव समदकी ढाली कुछ तोपोंके साथ जा अगस्त १८४० ई० में खोकन्दियोको हराया। १८४१ ई०की शरद्‌में खोकन्दियोकी लूट-मारका वदला लेनेके लिये वह फिर हजार सरवाजो (सिपाहियो), ग्यारह तोपो और दो मारतोलोके साथ गया। २१ सितम्बर को याम, और २७ को जमीनपर अधिकारकर वह उरातिप्पाको लूटते ८ अक्तूवरको खोजन्द नगरमें दाखिल हुआ। खोकन्दके खानने मजवूर होकर सुलह की और भारी हर्जानेके साथ खोजन्द तकका प्रदेश नसरुल्लाको देकर नसरुल्लासे सुलह् की, साथ ही अधीनता स्वीकार करते उसके नामका खुतवा और सिक्का चलाया। नसरुल्ला खोकन्दके खानके भाई तथा प्रतिद्वद्वी सुल्तान महमूदको खोजन्दका हाकिम वनाकर वुखारा लौट गया। लेकिन उसके लौटते ही सुल्तान महमूदने अपने भाईसे मेल कर लिया। जव इसकी खवर नसरुल्लाको लगी, तो वह फिर दड देनेके लिये आया, और २ अप्रैल १८४२ ई०को खोजन्दको हाथमें करके राजधानी खोकन्दको भी आसानीसे सर कर लिया। खोकन्दी खान मदली दस दिन वाद मर्गिलानमें पकडा गया, और अपनी खास माके साथ व्यभिचार करनेका अपराध लगाकर उसे, उसके भाई, स्त्री तथा दो पुत्रोंके साथ मरवा डाला गया—मदलीकी गर्भिणी स्त्रीके भी प्राणोको नही छोडा गया।

अग्रेजोकी चालें—१७ वी सदीमें पीतर I के समयसे ही रूसने वुखाराके साथ अपना सवध स्थापित किया था, और तवसे जव-तव दूतमडल आते-जाते रहे। १८३४ ई०में डाक्टर देमेसोन मुल्ला वनकर वुखारा गया। १८३५ ई०में वित्कोविच कजाकका भेष वनाकर पहुचा। १८ वी सदीमे ही पहला अग्रेज कप्तान वार्निस वुखारा गया। ओरेनवुर्ग वुखारी व्यापारियोंके लिये एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक नगर था, जिसके जरिये १९ वी सदीके पूर्वार्धसे रूस और वुखारामें व्यापार होने लगा था। उस समय खीवावालोसे रूसका सवध जितना विगडा हुआ था, उतना वुखारियोंसे नही। १८३४ ई०मे ओरेनवुर्गके राज्यपालने अमीर नसरुल्लाके पास पत्र लिखकर शिकायत की, कि खीवावाले रूसियोंके साथ वुरा वर्ताव करते है, और उन्होने कितने ही रूसियोको दास वना रक्खा है, खीवावाले रूसी प्रजा कजाकोपर लूटमार करते है, इसीलिये जारने हुक्म दिया है, कि जवतक खीवावाले रूसी प्रजाको नही छोडते, तवतक खीवाके व्यापारियोको रोक रक्खा जाय। १८३६ ई०में ही कुर्वान वेक अशुरवेक अमीर-वुखाराका वकील वनकर ओर्स्क होते पीतरवुर्ग पहुचा।

वुखारामे अपनी कार्रवाई शुरू करनेसे पहले कितने ही सालोसे ईरानी दरवारमे अग्रेज और रूसी अपने दाव-पेंच चला रहे थे। अग्रेजी राजदूतने वुखारासे सवध पैदा करनेके लिये १८३८ ई०में कर्नल स्टोडर्टको भेजा। इसी समय वुखाराके दूतमडलने वीस आदमियोंके साथ एक हाथी, कश्मीरी शाल और कुछ रूसी वन्दियोंको छुडाकर साथ लिये ओर्स्क होते हुये पीतरवुर्ग पहुच जारके दरवारमे कहा—"मेरे स्वामी रूसियोंके साथ मित्रतापूर्ण सवध स्थापित करना चाहते हैं। अग्रेजोने वुखारामें अपने एजेट भेजकर व्यापार करनेकी कोशिश की है। रनजीतसिंहके खतरेसे परेशान हो कावुलके अमीरने भी हमारे मालिकसे सधि करनेका प्रस्ताव किया है।"

इस प्रकार उसने जारकी मित्रता और सदिच्छा प्राप्त करनेकी कोशिश करते हुये सोना तथा दूसरे मूल्यवान् धातुओंका पता लगानेके लिये अपने यहा एक इजीनियर अफसरको भेजनेके लिये प्रार्थना की। वुखाराके राजदूतको लौटते वक्त जारकी ओरसे वहुत-सी भेंट मिली। अप्रैल १८३९ ई०में अमीरके वुलावेके अनुसार धातु-इजीनियर कप्तान कोवालेव्स्की और कप्तान हेर्नगियोस, एक दुभापिया, एक मुख्य खनक, चार कसाक सैनिको तथा कुछ और आदमियोंके साथ वुखाराकी ओर रवाना हुये। उनको यह भी भार दिया गया था, कि अमीरसे वुखारामें एक रूसी कोसल रखनेके लिये वातचीत करे। यद्यपि अभी पजावपर रणजीतसिंहका अधिकार था, लेकिन सिंध अग्रेजोंके हाथमे था, जहासे वह कावुलमें अपने प्रभावको वढानेकी कोशिश कर रहे थे। रूस भी वहा अपने प्रभावको वढाना चाहता था। इस प्रकार अफगानिस्तानमें दोनो साम्राज्योंकी जोरकी प्रतिद्वद्विता चल रही थी। दिसम्वर १८३७ ई० मे वित्कोविच कावुल पहुचा। अग्रेजोंके मनमें सदेह वैठ गया, कि अमीर दोस्त मुहम्मदको रूसियोंने अपनी ओर मिला लिया है। अग्रेजोने दोस्त मुहम्मदके विरुद्ध उसके प्रतिद्वद्वी शाह शुजाकी पीठ ठोकी, और रणजीतसिंहको भी

काबुल तक चढ दौडनेके लिये उभाडा। इतनेसे भी संतुष्ट न हो काबुलसे रूसियोंके प्रभावको बिल्कुल खतम करनेके लिये १८३९ ई०के वसंतमें अंग्रेजी सेना अफगानिस्तानकी सीमामें दाखिल हुई, और ७ अगस्तको काबुलमें पहुंचकर शाह शुजाको गद्दीपर बैठानेमें सफल हुई। दोस्त मुहम्मद अपने परिवार तथा तीन सौ पचास परिचारकोंके साथ भागकर बुखारामें नसरुल्लाके पास चला गया। नसरुल्लाने पहले उसका बडा स्वागत किया, लेकिन जब उस पतितने दोस्त मुहम्मदके सुन्दर पुत्र सुल्तान जानको अपनी कामुकताका शिकार बनाया, तो मनमुटाव हो गया। अब नसरुल्ला अंग्रेजोंसे मेल करना चाहता था, और शाह शुजासे भी मिलकर उसके भाई तथा अपने मेहमान दोस्त मुहम्मदको खतम करना चाहता था। इसपर दोस्त मुहम्मदकी ओरसे ईरानके शाहने धमकी दी, जिसके डरके मारे नसरुल्लाने दोस्त मुहम्मदको मक्का जानेकी इजाजत दे दी, साथ ही चुपके-चुपके मल्लाहोंको भी हुक्म दे दिया, कि वक्षुमें नावको डुबा देना। इसकी खबर पहले ही लग गई, इसलिये स्त्री-भेसमें दोस्त मुहम्मद पहले शहरसब्ज फिर खुल्म और अन्तमें काबुल लौट गया।

कर्नल स्टोडर्ट हिरातके हाकिमके परिचय-पत्रके साथ रमजानके आरम्भ होनेसे दो दिन पहले बुखारा पहुंचा। अफगानोंसे अच्छा संबंध न होनेके कारण पत्रने संदेहको और बढानेका काम किया। कर्नलको पैदल जाकर रेगिस्तान नामक मैदानमें अमीरसे भेंट करनेके लिये कहा गया, लेकिन उसने घोडेपर चढकर जानेकी जिद्द की। बुखारामें मुसलमान छोडकर कोई घोडेपर चढकर निकल नहीं सकता था, फिर इस ईसाईको कैसे वैसे करने दिया जाता? और रेगिस्तानके मैदानमें तो सिर्फ अमीर ही घोडेकी सवारी कर सकता था। कर्नल घोडेपर चढकर वहां पहुंचा और अमीरके आनेपर भी उसने घोडेपर चढे ही सैनिक सलाम दिया। अमीरने इसे अपना अपमान समझा। उसे महलमें बुलाया गया। प्रतिहारने "अर्ज बंदेगान" (सेवकोंका निवेदन) जब कहा, तो कर्नलने इसका भी विरोध करते कहा "परमभट्टारक" सिर्फ भगवान्के लिये कहा जाता है। "आपका अत्यन्त नम्र सेवक" कहनेपर भी उसने आपत्ति की। दरबारी प्रथाके अनुसार दो आदमियोंको बगलमें सहारा देकर चलनेसे भी इन्कार कर दिया। जब हथियारकी पडताल करनेकी रसम अदा करनेके लिये दरबारी अफसर आये, तो उन्हें भी कर्नलने मुक्का मारकर गिरा दिया। चुपचाप अर्ज करनेकी जगह स्टोडर्टने बडे ऊंचे स्वरसे फारसी भाषामें भगवान्के लिये प्रार्थना करनी शुरू की। अमीर उस समय अपने तख्तपर बैठा इस ढीठ विदेशीके प्रति अपार घृणासे जलता-भुनता दाढीपर हाथ फेर रहा था। अमीरने प्रमाणपत्र मांगा, तो उसने अंग्रेज राजदूत जान मेकनेलका पत्र दिया, जिसमें रूसियोंके भीतर न आने देनेपर ईस्ट इंडिया कंपनीकी ओरसे सहायतार्थ धन देनेका वचन दिया गया था। अमीरने उत्तरमें कहा—"बहुत खूब, मैं जानता हूं, तुम लोग मुझे अपना गुलाम बनाना चाहते हो। बहुत अच्छा, मैं तुम्हारी खिदमत करूंगा," और उठकर चला गया।

इसके दो दिन बाद कर्नलको वजीरके घरमें बुलवा कुछ आदमियोंने पकडकर उसके हाथ-पैर बांध दिये, फिर वजीरने उसकी गर्दनपर तलवार रखकर कहा—"अभागे भेदिया, काफिर कुत्ते, तू अपने अंग्रेज-स्वामियोंकी ओरसे आकर बुखाराको भी उसी तरह खरीदना चाहता है, जैसे कि काबुलको खरीदा? लेकिन यहां तुम सफल नहीं हो सकते। मैं तुझे मार डालूंगा।' इसके बाद वजीरके आदमी अमीरके समूरी चोगेके साथ लाशकी तरह स्टोडर्टको लिये शहरकी सुनसान सडकोंमेंसे गुजरे, और उन्होंने एक अंधेरे घरमें उसे ले जाकर बन्द कर दिया। नौकर साथमें रोशनी लिये थे। उनकी आंखें भर खुली थीं। "यदि ऐसा ही करना था, तो मुझे बुखारा न आने देना चाहिये था, अब मुझे जाने दो" —कर्नलने मीरशब (कोतवाल)से जब यह कहा, तो उसने इतना ही जवाब दिया, कि मैं अमीरसे कहूंगा। कर्नलके सारे कागजोंको लेकर उसके सामने जला दिया गया। उसके घोडेको भी बेंच दिया गया। इसके बाद उसे स्याहचाह (अंधकूप) नामक एक उन्नीस फुट गहरे गंदे गड्ढेमें रस्सीके सहारे डाल दिया गया। इसी कुएमें दो चोर और एक हत्यारा भी बन्द थे। कुएमें छिपकलियां, खटमल, पिस्सू भरे हुये थे। उसमें स्टोडर्ट दो महीने रहा। खानेके लिये रस्सीसे रोटियां लटका दी जाती थीं। इसके बाद उसे निकालकर कहा गया, कि अगर जान

वचाना चाहता है, तो मुसलमान हो जा। अक्खड कर्नलने अपने सारे गर्व और अभिमानको ताकपर रखकर भारी भीडके सामने कलमा पढा और एक चौरस्तेपर ले जाकर उसका खतना किया गया।

रूसियोंने कर्नलको मुक्त करानेकी वडी कोशिश की। अफगानिस्तानमे जव अग्रेजोकी सफलता हुई, तो कर्नलने हिम्मत करके इस्लामको छोड दिया, और अमीरसे भी कहा, कि तुम्हे अपनी भलाईके लिये मुझे अपने पास रखना चाहिये, जैसा कि रणजीतसिहने कितने ही अग्रेजोको अपने पास रक्खा है। अमीरकी ओरसे कर्नलको कहा गया, कि रूसी दूतमडलके साथ तुम पीतरवुर्ग चले जाओ, लेकिन उस वेवकूफने जानेसे इन्कार करते हुए कहा कि हमारी सरकारका हुक्म है, कि मै वुखारासे न जाऊ। इससे सदेह और वढ गया। इसी समय कर्नलने कुछ पत्र लिखकर खुरासानियो, कुर्दो, ईरानियो और यहूदियोके हाथ भेजे। इसके वाद फिर उसे वन्दीखानेमें वन्द कर दिया गया। तुर्कीके सुल्तान, खीवाके खान और जारने भी उसे छोडनेके लिये अमीरको वहुत लिखा। एक अग्रेज लेखकने कर्नल स्टोडर्टके वारेमे लिखा है—"वह अपनी शिक्षा और स्वभावसे किसी भी दौत्यकार्यके लिये विल्कुल अयोग्य था। उसके रूखे और ढिठाई भरे हुये व्यवहारने अमीरको वहुत ही अपमानित और कुपित कर दिया।" स्टोडर्टको दुवारा जेलमें वन्द करके उसे वहुत-वहुत यातनाये दी जाने लगी। १८४० ई०में कप्तान आर्थर कोनोली खीवा और खोकन्द होते वुखारा पहुचा। उसने वुखाराके अमीरको रूसके विरुद्ध हो अग्रेजोके साथ मैत्री करनेके लिये उभाडा। नसरुल्लाने कोनोलीको भी पकडकर उसकी सारी सम्पत्ति जव्त कर ली, और वन्दी वना स्टोडर्टके पास भेज दिया। इसी वीचमें नसरुल्लाको अपनी ओर करनेके लिये १८५० ई०में रूसने मेजर वतानियेफको व्यापार-मैत्री सधिके लिये भेजा। इससे पहले १८२० ई० में प्रथम रूसी दूत रेगनी गया था, और अग्रेज वार्नेसके जवावमें १८३४ ई०में वित्कोविच पहुचा था। मेजर वतानियेफ का अमीरकी ओरसे वडा गर्मागर्म स्वागत हुआ। जारने वहुमूल्य भेंट भेजी थी, उसने भी प्रभाव डाला, लेकिन सधिकी वात करनेपर अमीरने टाल-मटोल कर दिया। इस प्रकार १८४१ ई०में वतानियेफको खाली हाथ लौटना पडा।

प्रथम अफगान-युद्धके समय जनवरी १८४२ ई०में १६५०० अग्रेजी सेना कावुल पहुची थी, जिनमें अधिकाश हिन्दुस्तानी थे। लेकिन कावुलमें अफगानोने उन्हें घेरकर खतम कर दिया और सिर्फ उनका एक आदमी किसी तरह जान वचाकर खवर देनेके लिये जलालावाद पहुच सका। अग्रेजोंकी इस जवरदस्त हारसे नसरुल्लाकी हिम्मत वढी। उसके हुक्मसे १७ जून १८४२ ई०को स्टोडर्ट और कोनोलीको कैदखानेसे निकालकर वाहर लाया गया। स्टोडर्ट प्राण वचानेके लिये मुसलमान वन चुका था, लेकिन उसकी गर्दन पहले काटी गई, फिर कोनोलीको मुसलमान वन प्राण वचानेके लिये कहा गया, लेकिन उसने इन्कार कर दिया और उसे भी मार डाला गया। इसके वाद सात और अग्रेज कत्ल किये गये, लेकिन इनका वदला अग्रेज कभी न ले सके।

१८४४ ई० मे दोनो अग्रेज वन्दियोका हाल जाननेके लिये डाक्टर वोल्फ वडी कोशिशके वाद वुखारा गया। तव तक दोनो अग्रेज मारे जा चुके थे। वोल्फको भी लौटनेमें वडी मुश्किलका सामना करना पडा। उसने एक चिट्ठीमें लिखा था—"वदनाम नायव अव्दुस्समद खाके वगीचेमें उसके लुटेरे डाकुओंसे घिरा तथा मजवूर होकर छ हजार तिला देनेके लिये आपको यह नोट लिख रहा हू।"

पामीरसे लगे हुये पहाडोमें केश (शहरसव्ज) का एक छोटा-सा राज्य वहुत दिनोंसे अपनी स्वतत्रताको कायम रक्खे हुये था—यह वही शहरसव्ज था, जहा तेमूर लग पैदा हुआ। जव कभी भी वुखारावाले शहरसव्जपर आक्रमण करते, तो वहावाले वहादुरीसे लडते साथ-साथ वधोको तोड-कर आसपासकी भूमिको जलमग्न कर देते। वुखाराके पडोसी राज्य खोकन्दका शासक वावरकी वेटीकी सतानोंमेंसे था। खोकन्दी खान मदलीको नसरुल्लाने किस तरह मरवाया, इसके वारेमें हम अभी कह चुके है। नसरुल्लाका सवसे वडा सलाहकार अव्दुस्समद था।

नसरुल्लाका सवध खीवासे भी वहुत वुरा था। जव रूसी जेनरल पेरोव्स्कीने खीवापर अभियान किया, तो नसरुल्लाने भी उसपर हमला वोल दिया। अपने राज्यकी सीमाको वढ़ानेके लिये

नसरुल्लाने बहुत हाथ-पैर मारे, लेकिन बलख, अन्दखूय और मेमनाकी छोटी-छोटी रियासतो-पर कितनी ही बार आक्रमण करनेके बाद वह सफल हुआ और मरते वक्त ही १८२६ ई०में उसे खबर मिली, कि शहरसब्जपर बुखारियोंका अधिकार हो गया। उसने उसी समय वहाके अमीर तथा अपने सालेको स्त्री-बच्चों सहित अपने सामने कत्ल कर देनेको हुक्म दिया।

नसरुल्ला इन्सानियतसे गिरा हुआ निरा पशु था, तो भी उसकी धाक बुखारामें इतनी थी, कि जब वह अपने महलसे निकलता, तो पासमें कोई शरीर-रक्षक नही होता। बाजारोमे हफ्तेमें दो-तीन बार दर्वेशका कपडा पहने, केवल एक नौकरके साथ उसे घूमते देखा जा सकता था। उसने बनियोको कह रक्खा था, कि ऐसे समय कोई उसके लिये सम्मान प्रदर्शित न करे, और उसे एक साधारण आदमी-सा जाने। इसीलिये कोई उसके लिये रास्तेसे हटता भी नही था। वह एक दूकानसे दूसरी दूकानमें जा अनाज या दूसरे सौदेके भावके बारेमें पूछता और जहा-तहा कोई चीज भी खरीदता।

८ सैयद मुजफ्फरुद्दीन, नसरुल्ला-पुत्र (१८६० ई०)

मुजफ्फरुद्दीनकी जवानी करशीमें बीती थी। अपने बापसे वह अधिकतर अलग ही रहा। वह एक ईरानी दासीका पुत्र था। उसे चौदह सालकी उमरमें ही नसरुल्लाने करशीका हाकिम और अपना युवराज बना दिया। अडतीस सालकी उमरमें मुजफ्फर अमीर हुआ। बापके सारे दुर्गुण इसमें भी मौजूद थे। उसने पहले मुल्लोंको हाथमें करनेका प्रयत्न किया।

नसरुल्लाके मरते समय यद्यपि शहरसब्ज सर हो गया था, लेकिन इस दुर्गम पहाडी इलाकेके लोग अब भी बगावत किये हुये थे, इसलिये मुजफ्फरका ध्यान उधर जाना जरूरी था। उसके बाद उसने खोकन्दपर चढाई की, जहाका खान इस समय मदलीका पौत्र खुदायार था, और जिसकी सारी शिक्षा-दीक्षा नसरुल्लाके दरबारमें हुई थी। रूसने १८५३ ई०में अकमस्जिद (सफेद मस्जिद) पर, तथा ग्यारह साल बाद तुर्किस्तान और चिमकन्दपर भी अधिकार कर लिया। १८६४ ई०में ताशकन्दमें असफल होनेपर उसका बढाव रुका। खुदायारने चाहा, कि तुर्किस्तान शहरको भी लौटा ले, लेकिन उसमें विफल होकर उसे राजधानी लौटना पडा। किपचकोने वहा उसके छोटे भाई मुल्लाखाको गद्दीपर बैठा दिया था, इसपर अमीर खुदायार मदद लेने मुजफ्फरके पास आया। मुल्लाको कत्ल करवा मुजफ्फरने खोकन्दमें जा खुदायारको स्वय तख्तपर बिठाया। किपचक (उज्बेक) अब भी फरगानामें विरोध करते रहे, और उन्होने खुदायारके आधे राज्यको छीन भी लिया, लेकिन, रूसियोंने इसी समय उनके नेताको ताशकन्दमें मार डाला, जिसके कारण मुजफ्फरको १८६५ ई०में अपने आक्रमणके वक्त बहुत सुभीता हुआ। चेर्नियेफ ताशकन्दको ले चुका था, खोकन्द भी उसकी दयापर था। मुजफ्फर जहादके नामपर सारे मध्य-एसियाको शत्रु बनाकर एक करना चाहता था। खोकन्द, बुखारा और खीवाको राजनीतिक तौरसे एकताबद्ध करनेका यह अच्छा मौका था, क्योकि तीनो ही राज्य अपनेको रूसी राहुके मुखमें देख रहे थे। मुजफ्फर समझता था, कि धर्मान्ध मुल्ला मध्य-एसियाकी सबसे बडी शक्ति है। वह रूसके सबसे जबर्दस्त शत्रु भी थे, इसलिये मुजफ्फरने उनके ही हाथोमें खेलना पसद किया। तीनो राज्योके शहरो और बाजारोमे जहादका धुआधार प्रचार हो रहा था। इससे मुजफ्फरको एक भारी सेना तैयार करने में देर न हुई। उसके बलपर मुजफ्फरने अभियान करके समरकन्दसे उत्तर-पूर्व तथा रूसी तुर्किस्तानकी राजधानी ताशकन्दसे सिर्फ सौ मीलपर अवस्थित खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) को दखल कर जेनरल चेर्नेयेफको ताशकन्द खाली करनेके लिये अल्टीमेटम दे दिया।

रूससे युद्ध—चेर्नेयेफ चौदह पैदल कपनी, छ कसाक स्क्वाड्रेन और सोलह तोपोके साथ समरकन्द से साठ मीलपर अवस्थित जीजकके किलेपर चढ आया। प्रतिरोध जबर्दस्त हुआ और रसदकी भी कमी थी, इसलिये उसे लौटनेके लिये मजबूर होना पडा। इस सफलतासे प्रोत्साहित हो चालीस हजार सेना ले मुजफ्फर ताशकन्दपर चढा। चेर्नेयेफने रूसी सरकारके हुक्मके बिना ही ताशकन्दको

ले लिया था, इसलिये उसे हटा युद्ध बन्द करनेका हुक्म देकर जेनरल रोमानोव्स्कीको भेजा गया, लेकिन सैनिक परिस्थितिने उसे भी सरकारी हुक्मके विरुद्ध जानेके लिये मजबूर किया। ताशकन्दसे सिर्फ तीनी मंजिलपर बुखारी सेना रह गई थी, और सत्तर हजार आबादीका नगर रूसियोंको फूठी आखों भी नही देखना चाहता था। रोमानोव्स्की चौदह पैदल कपनी, पाच कसाक स्क्वाड्रेन और बीस तोपोंके साथ सिर नदीके बाये तटसे होते आगे बढा। जैसा कि पहले बतला चुके है, जीजक और खोजन्दके बीच इर्जइमें २० मई १८६६ ई०को मध्य-एसियाकी पलासीकी लडाई हुई, और ३६०० रूसियोंने बुखारियोंकी पाच हजार पैदल, ३५०० सवार और दो तोपोवाली सेनाको बुरी तरहसे हराया। हारी हुई सेना अस्त-व्यस्त होकर भगी। आठ दिनके मुहासिरेके बाद ६ जूनको खोजन्द भी रूसियोंके हाथमें चला गया। रूसी अल्टीमेटमकी पर्वाह न करके मुजफ्फरने युद्धकी तैयारी जारी रक्खी, जिससे रूसियोंको फिर आगे बढनेके लिये मजबूर होना पडा। अक्तूबर तक वह उरातिप्पा और जीजक ले जरफ्शा-उपत्यकाके ऊपरी भागके स्वामी बन गये। १८६७ ई०के बसतमें यानीकुर्गानपर भी रूसियोंका अधिकार हो गया, जिसे लौटानेके लिये ४५ हजार बुखारी सेनाने दो बार कोशिश की। इस प्रकार १८६७ ई० के मध्य तक सिर और जरफ्शाकी उपत्यकायें जारके साम्राज्यमें चली गईं। ओरेनबुर्ग शासन-केंद्र बहुत दूर पडता था, इसलिये २३(११) जुलाई १८६७ ई०के उकाज़ (राजादेश) के अनुसार तुर्किस्तानका एक अलग प्रदेश बना दिया गया, और ताशकन्दको तुर्किस्तानके महाराज्यपालकी राजधानी बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। तुर्किस्तान-सूबा (गुबर्निया)में सिर-दरिया, सप्तनद (सेमीरेचिन्स्क अर्थात् इस्सिकुल और बरकाशकी द्रोणिया) तथा जरफ्शाके इलाके थे। जेनरल काफमान प्रथम महाराज्यपाल नियुक्त हुआ। बुखारा अब भी जब-तब रूसी सीमात-चौकियोंसे छेडछाड करता था। काफमानने मुजफ्फरके सामने सुलहके लिये निम्न शर्तें पेश कीं—मौजूदा सीमातको स्वीकार किया जाय, व्यापारमें रूमी और बुखारी प्रजाके समान अधिकार हों, युद्धके हरजानास्वरूप सवा लाख तिला (पाच लाख रूबल या तिरपन हजार गिन्नी) रूसको मिले। मुजफ्फरने इसके जवाबमें खीवाकी ओरसे अपनी सेनाको बुलाकर जीजकपर आक्रमण करनेके लिये तैयारी की। रूमी अब समरकन्द लेनेके लिये तैयार हो गये। ३६०० सेनाके साथ १७ मई १८६८ ई०को उन्होने खीवा और बुखाराकी चालीस हजार सम्मिलित सेनापर धावा बोल दिया, और उथली नदी पार हो समरकन्दसे पन्द्रह मीलपर जरफ्शाके बायें किनारेकी ऊचाईपर एकत्रित शत्रु-सेनापर आक्रमण कर दिया। बुखारियोंकी भीषण पराजय हुई। अगले ही दिन समरकन्दने आत्मसमर्पण कर दिया, और नगरके सर्तो (ताजिको) ने विजेताओंका खूब स्वागत किया—आखिर उज्बेकोंके जूयेको वह प्रसन्नतापूर्वक नही ढो रहे थे। यहूदियोंने रूसियोका और भी अधिक विश्वास प्राप्त किया, और उन्होंने सर्तोंसे सजग रहनेकी सलाह दी। जेनरल काफमानने अपने घायलोंको नगरके बीचमें अवस्थित किलेमें साठ-बासठ गारदके साथ छोड शत्रुका पीछा किया। रूसियोंके कुछ ही दूर जानेपर शहरसब्जवाले बीस हजार सैनिक चुपकेसे भीतर घुस गये, उन्होने किलेको घेर लिया। एक सौ नवासी रूमी प्रतिरक्षक हताहत हुये और किला भारी विपद्में पड गया। काफमान शत्रुको फिर करारी हार दे चुका था, जब कि उसे समरकन्दकी खबर मिली, और उसने लौटकर बडी बुरी तरहसे नागरिकोंके साथ बदला लिया। एक अग्रेज लेखकके अनुसार—"जैसे गिलेस्पीने वेल्लोरके विद्रोहियोंके साथ बदला लिया था। उनके चूतडों और जाघोपर कोडे लगवाये, हजारोंको बडी निष्ठुरताके साथ मरवाया। सर्तोके विश्वासघातका बदला आत्मसमर्पणके बाद सेना द्वारा नगरको लगातार तीन दिन तक लुटवाकर लिया।"

मुजफ्फरका सारा अभिमान अब चूर-चूर हो चुका था। उसने रूसी जेनरलसे तख्त छोडकर मक्का जानेकी इजाजत मागी, लेकिन रूसी उसे अपनी गुडिया बनाकर बुखाराकी गद्दीपर रखना चाहते थे। आखिर वह रूसी लोहेको देख चुका था, और अपने जीवन भर फिर सिर उठानेकी हिम्मत नहीं रखता था। दूसरा अमीर उसकी जगहपर शायद फिर नया तजर्वा करना चाहता। रूसियोंने उसीको अमीर स्वीकृत किया, समरकन्दको तुर्किस्तानमें मिला वहांपर

उपराज्यपाल बनाकर अन्नामोफको भेजा। मुजफ्फरके बाद १७ सालके युवराज अब्दुल् अहदने बापसे बगावत करके करकीके किलेपर अधिकार कर लिया, लेकिन जनरल अन्नामोफने विद्रोह-को आसानीसे दबा दिया। यही नही, उसने मगीत-राजवशके मूल-स्थान करशीको भी ले लिया और करकीपर गोलाबारी की। युवराज बुखारा राज्यकी मध्य पहाडियोंमे भागा, जहासे भी उसे समरकन्दके पश्चिमी छोरपर भागनेके लिये मजबूर होना पडा। विद्रोहोमे सफलताकी तो आशा नही थी, ऊपरसे प्रजाको सारी आफत सहनी पड रही थी, इसलिये कोई आश्चर्य नही, यदि एक किसानने अहदको पकडवा दिया। मुजफ्फरके पास लाये जानेपर उसने उसके सिरको काटकर महलके दरवाजेपर लटकानेका हुक्म दिया। इस विद्रोहके समय अन्नामोफने पीढियोंसे स्वतत्रताकी लडाई लडनेके अभ्यस्त शहरसब्जवालोंको भी अपने अधीन कर लिया। मुजफ्फर अब परम जारभक्त था। हिन्दुस्तानमें रहते अग्रेज इसके लिये अफसोस कर रहे थे, कि मुजफ्फरने अपने पूर्वजोके भव्य दायभागको इतना जल्दी खो दिया। लेकिन मुजफ्फरने दस-दस पद्रह-पद्रह गुनी अधिक सेनाके साथ भी लडकर देख लिया था, कि आधुनिक हथियारोंके सामने उसके जहा-दियोकी भीड टिक नही सकती। जरफ्शाकी ऊपरी उपत्यका और ऐतिहासिक नगर समरकन्द रूसियोके हाथमें होनेसे बुखारा उनकी दयापर निर्भर करता था। रूसी जरफ्शाके पानीसे किसी समय भी वचित कर बिना एक गोली खर्च किये ही बुखारियोको मरनेके लिये मजबूर कर सकते थे। अपने जीवनभर मुजफ्फरको मौज करनेमें कोई बाधा नही थी, और हमारे रियासती राजाओकी तरह वह अपनी प्रजाके साथ चाहे जो भी कर सकता था।

९ अब्दुल अहद, मुजफ्फर-पुत्र (–१८९४ ई०)

मुजफ्फरके उत्तराधिकारी अहदने भी अपने बापका पदानुसरण किया। शरीरमें वह लबा हट्टा-कट्टा और बहुत सुन्दर था। हर साल वह काकेशसके गर्म चश्मोमे विहारके लिये जाता और अक्सर जाडे भी उसके क्रिमियामें बीतते थे, अर्थात् उसके जीवनका ढग और विलास-प्रेम वैसा ही था, जैसा कि हमारे यहा पिछली पीढीके राजा-नवाबोका।

१० मीर आलम, अहद-पुत्र (–१९२० ई०)

युवराजकी अवस्थामे इसे शिक्षाके लिये पीतरबुर्ग भेजा गया, जहा रहते अपनी शिक्षा-दीक्षासे वह बिल्कुल युरोपीय बन चुका था, लेकिन दुराचारमें वह अपने परदादा नसरुल्लाका भी कान काटता था। जबतक जारशाही मजबूत रही, तबतक वह उसका अनन्य भक्त बना रहा, और अपना काम केवल विलासमय जीवन बिताना समझता था, लेकिन बोल्शेविक-क्रातिके समय सब जगह अशाति मची देख एक बार फिर उसने बुखारामें अपनी तानाशाही शुरू की। शासन-सुधार चाहनेवाले अपने यहा के सुधारवादी जदीदो (नवीनतावादियो) के खूनसे इसने अपने हाथोको खूब रगा, लेकिन जैसा कि हम आगे देखेगे, क्रातिके सामने इसे देश छोडकर अफगानिस्तान भागना पडा। मुजफ्फरुद्दीनके समयसे बुखारा एक देशी रियासतके रूपमें चला आया था। क्रातिने उसे मिटाकर मध्य-एसियाकी जातियोको उनकी सीमाओके अनुसार उज्बेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, कजाकस्तान, किर्गिजिस्तान और ताजिकिस्तानके गणराज्योमे परिणत कर दिया।

शासन-प्रबध—बुखारा समुद्रतलसे १२०० फुट ऊपर मेर्वसे १४० मीलपर अवस्थित है। १९ वी सदीके चतुर्थ पाद हीमें रेल द्वारा इसका सबध हो गया था, यह हम आगे बतलायेंगे। बुखारा मुसलमानोके आनेसे पहले ही एक प्रसिद्ध सास्कृतिक नगर बन चुका था। सामानी बादशाहोके जमानेमे इसकी बहुत तरक्की हुई। इसकी जामा मस्जिदका २१० फुट ऊचा मीनार (मीनारकला) बहुत प्रसिद्ध है, जिसकी गोलाई नीचे छत्तीस फुट है।

बुखाराके शासकोमें सूबा (प्रदेश) के अधिकारीको बेक कहा जाता था, जिसके नीचे जिलेके अफसर होते थे, जिन्हे अमलाकदार कहते थे। किसानोंसे दशाश (दहयक) कर लिया जाता था, जिसे मिल्की-खराज कहते थे। कितने ही गाव मस्जिदो और मदरसोंकी देवोत्तर-सम्पत्ति (वक्फ)

थे। फसल तैयार होनेपर अमीरके अफसर खेतोंमें जाकर भूकरके लिये हरएक खेतका अलग-अलग कूत करते थे। बुखाराका काजी (न्यायाधीश) काजीकला था, जिसके दो नायब होते थे। अदालतकी मुहर मुफ्तीके हाथमें होती थी। धार्मिक बातोंका अधिकारी रईस था।

४. (३. बुखारा अमीर-वंशवृक्ष)
(१७४७–१९२० ई०)
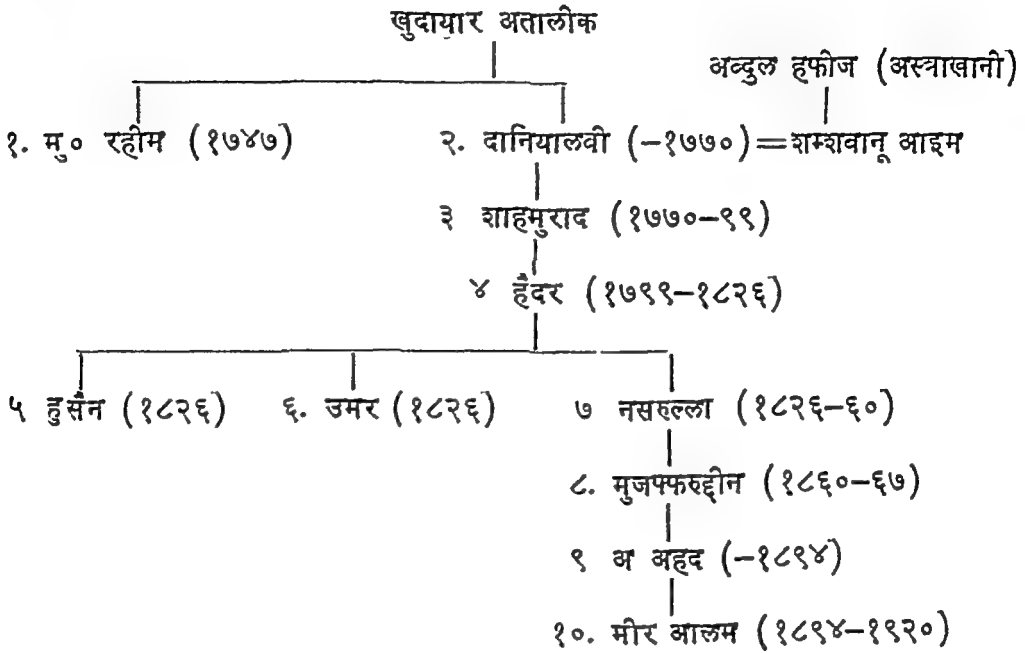
स्रोत ग्रन्थ

१ पो स्रेद्नेइ आज़िइ (ल ये द्मित्रियेफ-कव्काज्स्की, पेतेरबुर्ग १८९४)
२ ना ग्रानित्साख् स्रेद्नेइ आज़िइ (द न लोगोफेत्, पेतेरबुर्ग १९०९)
३ इस्कुस्स्त्वो स्रेद्नेइ आज़िइ (व व वेइमार्न, मास्को, १९४०)
४ रेगिस्तान इ येओ मेद्रेसे (म य मस्सोन्, ताशकन्द १९२६)
५ आज़ियात्स्कया रोस्सिया (अ कूत्रेर आदि, मास्को १९१०, पृष्ठ १७७–२२६, २९३–९९)
६ History of U S S R (Moscow 1947)
७ Heart of Asia (E D Ross, London 1899)
८ History of Mongol (3 Vols H H Howorth, London 1876–88)
९ History of Bokhara (A Vambery, London 1873)

अध्याय ४

छोटे-छोटे राज्य

१ उरातिप्पा और जीजक

उरातिप्पा—अस्त्राखानी-वंशकी समाप्तिपर बुखारामें वहुत-सी छोटी-वडी रियासतें अस्तित्वमें आईं, जिनमें उरातिप्पा भी था, जो समरकन्द, खोजन्द और खोकन्दके रास्तोंके सगम तथा जीजक, समरकन्द और ताशकन्दके रास्तेपर था। उज्वेकोंके उज कवीलेके लोग जीजकमें अपने डेरे डाला करते थे। फजल वी नामक उज-सरदारने १८ वी सदीमें उसपर अधिकार कर लिया। खोकन्दके नरवुते और वुखाराके रहीम वीने वहुत कोशिश की, लेकिन फजल वीने उन्हें सफल नही होने दिया, और शत्रुओके सिरोको काटकर उनका मीनार चुनवाया।

फजल वीके वाद उसका लडका खुदायार वी स्वामी हुआ, वह १७९४ ई०में एक लाख परिवारोंका शासक था। वुखाराके अमीर शाह मुरादने जव उसकी ओर कदम वढाया, तो खुदायार वीने उसे वुखाराके फाटकों तक खदेडा। वह दिन भर सोता और रातको जाग कर काम करता। शरीरसे पूरा देव था, और एक पूरी भेड अकेले ही खा जाता था, तव भी कहता कि भूख अभी पूरी तरह नही गई। उसका भाला इतना भारी था, कि किसी दूसरेके लिये उठाना भी मुश्किल था। लडाईमें वडा वहादुर होनेसे घुमन्तू-कवीलोंका वह आदर्श नेता था।

बाबा बेक, बेकमुराद—खुदायार वीके मरनेपर उसका भाई वावा उरातिप्पापर और वेटा वेकमुराद खोजन्दपर शासन करने लगे। उमरखान खोकन्दीकी मददसे वावाने अपने भतीजेको खोजन्दसे भगा पीछे उसे मरवा डाला। वापका वदला लेते हुये वावावेकके लडकेने समरकन्दमें मुरादको मार डाला और कुछ समयके लिये उरातिप्पा वुखारामे रहा। फिर खोकन्दके अमीर आलम खाने कुछ समय तक उसपर अधिकार रक्खा, लेकिन जल्दी ही खुदायार वेकके भान्जे तथा प्रसिद्ध खोजा हिरातके वशज खोजा महमूद खाने खोकन्दी हाकिमको भगा उरातिप्पाको वुखाराके नामसे अपने हाथमें कर लिया। १८१२ ई०में खोजा महमूद उरातिप्पाका शासक था। उमर खाने आक्रमण करके महमूदको पकड़ लिया, लेकिन तीन महीने वाद उसने फिर भागकर अपने सघर्षको जारी रक्खा। इसी समय जीजक वुखारामें और उरातिप्पा खोकन्दमें शामिल कर लिये गये, और इस प्रकार उरातिप्पाकी स्वतत्र सत्ता खतम हो गई। महमूदका पुत्र तुरावेक यिरुवाकी खोकन्द-दरवारके अमीरोंमेंसे था। जिस समय उरातिप्पाने अपनी स्वतत्रता खोई, उस समय यहाके उज कवीलेके वहुत-से लोग दक्षिणकी पहाडी काफिरनिहा-उपत्यकामें जाकर वस गये।

२. शहरसब्ज

किश या शहरसब्ज तेमूर लगकी जन्मभूमि थी। वुखारासे जानेपर रास्तेमें दुर्लंघ्य रेगिस्तान पडता था, और समरकन्दसे दुर्गम पहाडी, इस प्रकार उसे प्रकृतिने प्रतिरक्षाके सुन्दर साधन दे रक्खे थे। १८ वी सदीमें मगीत रहीम वी (१७४७ ई०) ने शहरसब्जपर अधिकार किया, लेकिन पाच ही साल तकके लिये। भारी लडाकू कैरोसली उज्वेक-कवीलेके डेरे इस इलाकेमें रहा करते थे। उनके सरदारने रहीम वीसे शहरसब्जको मुक्त करा लिया।

(१) **दानियाल अतालीक (१८११-३६ ई०)**—शहरसब्जके शासकोंमें यह वड़ा शक्तिशाली था। इसने अमीर हैदर और उसके पुत्र नसरुल्लाके सारे प्रयत्नोको निष्फल कर दिया।

दानियालने "वलीनिअम" की पदवी धारण की थी। उसके दो पुत्रोंमें खोजाकुल शहरसब्जमें और बाबा दादखाह् किताबमें शासन करते थे।

(२) खोजाकुल (१८३६-४६ ई०)—बापके मरनेपर दोनों भाई आपसमें झगड पडे, जिससे अमीर नसरुल्लाने फायदा उठाकर आक्रमण कर दिया। लेकिन नसरुल्लाके पहुचनेसे पहले ही खोजाकुलने अपने भाईको मार भगाया, इसलिये बुखारी सेनासे लडनेके लिये वह स्वतत्र था। उसने नसरुल्लाकी सेनाको बुरी तरहसे हराया। नसरुल्लाने अजेय शहरसब्जकी भूमिपर हथियारसे विजय पानेकी आशा नही देखी। इसके बाद वह सालमे दो बार वहाकी भूमिको तबाह करने लगा। सुलह क्षणिक ही हो पाती थी। अपनी मृत्युके समय (१८४६ ई०) तक खोजाकुल बुखारियोसे लडता रहा। उसने अपने भाई इस्कन्दरको किताब देकर सतुष्ट करना चाहा था।

(३) अशुर बेक (१८४६ ई०)—खोजाकुलके पुत्र अशुरबेकको बापकी गद्दीपर अधिक दिनोंतक बैठनेका अवसर नही मिला, और चचाने भतीजेको खदेडकर गद्दी सभाल ली।

(४) इस्कन्दर (१८४६-५६ ई०)—इस्कन्दर "वली-निअम" की उपाधि धारण कर, दस साल तक बराबर नसरुल्लासे लडता रहा, लेकिन अन्तमें घिरावा डाल तथा खेतों और गावोंको बरबाद करके भूखा मारकर नसरुल्लाने शहरसब्जको सर किया। इस्कन्दरने किताबमें जाकर अपना प्रतिरोध जारी रक्खा, और अन्तमे अनुकूल शर्त्तोंके साथ बुखाराकी अधीनता स्वीकार कर वह बुखारा चला गया, जहा कराकुलकी सारी आमदनी उसे जागीरमें मिली। इस्कन्दरकी बहिन केनिंगेज आइम अपने सौंदर्यके लिये बहुत मशहूर थी। वह ब्याही हुई थी। उसपर नसरुल्लाकी नजर पड़ गई। उसने पतिको चारजूइ भेज आइमको अपने हरममें डाल लिया और शहरसब्जके मुख्य-मुख्य खानदानोंको ले जाकर चारजूइ, करशी आदिमें बसा दिया। नसरुल्लाने मरनेसे पहले इस्कन्दर और उसकी बहिनके खूनसे अपने हाथको रगा। एक प्रत्यक्षदर्शीने इस घटनाके बारेमें लिखा है—

"इस्कन्दर और उसका भाई चुमचू खान रोज एक बार अमीरको सलाम करने जाते थे। उनके जानेके बाद अमीरने मुझे उन्हे बुला लानेके लिये कहा। लाकर उन्हे अलग कमरोंमें बैठाया गया। उन्होंने कहा—'बुखारामे किसीको पता नही, कल क्या होनेवाला है। आज तुम जिन्दा हो और कल तुम्हारा सिर कटा दिखाई पडे।' कुछ प्रतीक्षाके बाद एक बादाचा आया, जिसमें इस्कन्दर और वहा आनेवाली स्त्रीका गर्दन काट लेनेका हुकुमनामा लिखा हुआ था। बादाचा बादामके आकारकी एक मुहर हुआ करती थी। मृत्युदडका हुक्म देते समय अमीर इसी मुहरका इस्तेमाल करता था। दूसरे कामोंके लिये इस्तेमाल होनेवाली मुहर बडी होती थी। जैसे ही हमने हुकुमनामा पाया, तुरन्त इस्कन्दरको वधस्थानपर लानेको कहा। अमीरके किलेमें एक कूयें जैसी गहरी तथा तख्तोंसे ढकी जगह है। काटनेके बाद लाश इसी कुएमें फेक दी जाती है। वहा बहुत-सी लाशें पडी थी। वधिक हमारी प्रतीक्षामें था। हमारे आते ही उसने तुरन्त इस्कन्दरको जमीनपर पटक दिया। इस्कन्दरके दाढी नही थी। वधिकने अपनी अगुलियोंको उसके नथुनोंमें डाल सिरको पकडे गलेको काट दिया। इसके बाद लोग एक औरतको लाये। जैसे ही उसने इस्कन्दरके मृत शरीरको देखा, वह अमीरको बुरा-भला कहते रोने लगी। तब हमें मालूम हुआ, कि वह इस्कन्दरकी बहिन तथा अमीरकी बीबी आइम केनिंगेज है। वह केनिंगेज-परिवारकी लडकी थी, इसीलिये सभी उसे "मेरी केनिंगेज चाद" कहते थे। जल्लादने उसके हाथोंको बाध दिया, फिर पिस्तौलसे सिरके पीछेसे गोली चलाई—हमारे लोगोंमें स्त्रियोंका गला नहीं काटने, बल्कि उन्हे गोली मार देते है। एक ही गोलीमें वह उसे नही मार सका। वह गिरकर कुछ देर तक छटपटाती रही। वधिकने उसके स्तनों और पीठपर बारह बार ठोंकर लगाई, तब वह मरी।"

(५) बाबा बेक—केनिंगेज-परिवारका यह सरदार अमीरकी अरदलीमे था। नसरुल्लाके मरते समय वह शहरसब्ज लौटा। छ महीने बाद अमीर मुजफ्फर शहरसब्ज आया।

उसी समय उसने बाबा बेक से उसकी बहिन मागी, जो कि पहले ही उसके बापकी कामुकताको तृप्त कर चुकी थी। मुजफ्फरके ऐसी माग करनेपर बडा हल्ला मचा, और उसने बुखारा लौटकर बहुत बडे-बडे आदमियोको जेलमें डाल दिया। लेकिन लोगोने उन्हे बन्दीखानेसे मुक्त करके बाबा बेकको शहरसब्जका और जरा बेकको किताबका शासक नियुक्त किया। बुखाराके अफसर वहासे मार भगाये गये। मुजफ्फरने चढाई की, किंतु खोकन्दके झगडेके कारण मुहासिरा उठा लेना पडा। पीछे बाबा बेकने वार्षिक भेंट और सैनिक सहायता देकर मुजफ्फरकी अधीनता स्वीकार की, पर राज्यके भीतरी मामलोमें वह स्वतत्र था।

१८६६ ई०में रूसियो द्वारा मुजफ्फरके हराये जानेपर बुखारामें दो दल हो गये। मुजफ्फर-का पुत्र केत्तात्युरा विरोधी और मुजफ्फरका भतीजा सईद खान समर्थक था। समर्थकोका मुखिया जुरा बेक था, जो अमीरके रूसियोपर चढाई करके हारनेके बाद शहरसब्ज भाग गया। रूसियोने समरकन्दको लेकर अमीरसे बदला लिया। जब अमीर दुबारा रूसियोका विरोधी बना, तो उसकी सहायतार्थ शहरसब्जके बेकोने तीस हजार सेना लेकर समरकन्दपर चढाई की। इससे पहले वह जेनरल कॉफमानसे अलग समझौता करनेकी बातचीत कर रहे थे, लेकिन जब जेनरलने उन्हे मुलाकातके लिये बुलाया, तो उनके मनमें सदेह होने लगा, और मुजफ्फरकी ओर होकर लडनेके लिये तैयार हो गये। अमीरने विवादास्पद नगर चिरागचीको देनेका वचन दिया था, इसलिये भी शहरसब्जवाले उसके पक्षमे हुए। रूसी सैनिकोको समरकन्दके किलेके भीतर घेरकर शहरसब्जवालोने बडी विपदमे डाल दिया था, लेकिन इसी समय जुरा बेकको कॉफमानके आनेकी झूठी खबर लगी, और उसके एक अफसरने अपने आदमियोको हटा लिया। इसी सहायता देनेके लिये अमीर मुजफ्फरने जुरा बेकको "दादखाह"की उपाधि तथा दस हजार तका इनाम दिया था।

१८७० ई०में जेनरल अब्रामोफ इस्कन्दरकुलके खिलाफ चढा था। उस वक्त कर उगाहनेके लिये गये राजुल उरुसोफको कुछ विद्रोहियोने मार भगाया। ये आदमी जुरा बेकके पक्षपाती हैदरखोजाके अनुयायी बतलाये जाते थे। जुरा बेकको हैदरको समर्पण करनेका हुक्म हुआ, लेकिन उसने कहा कि हैदर कही दूसरी जगह है। इसपर जेनरल कॉफमानने शहरसब्जको खतम करनेका निश्चय कर लिया। जेनरल अब्रामोफने किताबको आक्रमण करके ले लिया, फिर शहरसब्जको आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर किया। बेक भागकर खोकन्द चला गया। रूसियोने शहरसब्ज-के इलाकेको अमीर-बुखाराके हाथमें दे दिया। विश्वासघाती कहकर खोकन्दके खानने शहरसब्ज-वाले बेकोको रूसियोके हाथमें दे दिया। कुछ समयतक वह ताशकन्दमें नजरबद रहे, फिर बुखारासे दो हजार रूबल पेंशन मिलने लगी। जुरा बेक इसके बाद रूसियोका बहुत जबर्दस्त पक्षपाती हो गया और वह उसे बहादुर, ईमानदार और निष्कपट कह कर तारीफ करते थे।

३ कोहिस्तान

समरकन्दसे पूर्वका पहाडी इलाका अर्थात् जरफशाकी ऊपरी उपत्यका कोहिस्तानके नामसे प्रसिद्ध थी। १८७० ई०में वहा फाराब, मागियान, कश्तुत, फान, यग्नान, माचा और फलगर-के छोटे-छोटे सात शासक (बेक) थे। ये पहाडी बेक (ठाकुर) कुछ गावोके शासक थे, और बुखाराको थोडा-सा कर दे अपने लोगोके ऊपर मनमाना शासन करते थे।

उरगुत—उरगुतका बेक खानदानी राजा था। मागियान, कश्तुत और फाराबके बेक अपनेको इसके अधीन मानते थे। १९वी शताब्दीके आरभमें अमीर हैदर उरगुतको जीतकर उसके बेक युल्दाश परमाचीको बदी बना बुखारा ले आया। बाकी तीनो बेकोने बुखाराकी अधीनता स्वीकार की, लेकिन कुछ समय बाद युल्दाशके पुत्र कत्ता बेकने उरगुतको फिर अपने हाथ-में कर लिया, और दूसरे बेकोसे नाराज होकर उसने अपने भाई सुल्तान बेकको मागियान और कश्तुतका शासक बनाया। अब बुखारासे झगडा छिड गया। पहाडियोने समरकन्दको खतरा पैदा कर दिया। लेकिन अमीर-बुखाराके सामने तलवार उठाकर खडे रहनेमें बहुत दिनो

तक लाभ नहीं था, इसलिय उरगुतका वेक नसरुल्लाखानको अपनी वेटी दे वुखाराके सरदारके तौरपर उरगुतोका शासक वना रहा। कत्ता वेकके मरनेके वाद उसके पुत्र आदिल परमाची उरगुतपर और उसका भाई अलायार दादखाह मागियानपर शासन करने लगे। मरनेसे थोडे ही समय पहले अमीर नसरुल्लाने उन्हें वुखारा वुलाकर सपरिवार चारजूयमें निर्वासित कर दिया। रूसियोके समरकन्द ले लेनेपर अमीर द्वारा नियुक्त अफसर उरगुत छोडकर भाग गया। इसपर चारजूयमें निर्वासित कुमारोमेसे एक हुसेन वेकने खोकन्द होते वहा पहुचकर उरगुतको ले लिया। रूसियोने जव वहासे भगाया, तो वह स्वय मागियानमें और अपने छोटे भाई शादीको कश्तुत और चचेरे भाई सईदको फारावपर नियुक्त करके शासन करने लगा। इन छोटी-छोटी पहाडी रियासतोका वुखारी कर उगाहनेवालोसे वरावर लडाई-झगडा होता रहता था। १९वी सदीके आरभमें ही फलगरके वेक अव्दुश्शकूर दादखाहने सारे पहाडी इलाकेको अपने अधीन कर कितने ही दुर्गम पहाडी स्थानोको सुगम वनानेके लिये रास्ते और पुल वनवाये। अमीर हैदर (१७९९-१८२६ ई०) के समय इन इलाकोमें वुखाराने अपने वेक नियुक्त किये और किले वनवाये। यही हालत नसरुल्लाके शासनके अन्ततक रही।

समरकन्दके रूसियोके हाथमें जानेपर वहासे वुखारी वेक (हाकिम) भाग गया। उसी समय वेक अव्दुल गफ्फारने उरातिप्पाके पूर्व उर्मितानको ले अपनेको फलगरका वेक घोषित किया, लेकिन माचाके लोगोने शासक मुजफ्फरशाहकी अधीनता स्वीकार की, जिसने अपने भतीजे रहीमखानको अपनी ओरसे शासक नियुक्त किया। रहीमखानने फलगरसे अव्दुल गफ्फारको मार भगाया और उसकी सहायताके लिये आये कश्तुतके शादीवेकको भी हराया। इसने यग्नान और फानको भी जीत हिसारपर चढाई की। रास्तेमें सेना विगड गई, और उसने रहीमको भगाकर पाचा खोजाको अपना नेता वनाया। ये पहाडी लोग वहुत पिछडे हुये थे, लेकिन फलगर-वाले अपनेको माचावालेसे अधिक सस्कृत समझते थे। उन्होने फिर अव्दुल गफ्फारको अपने यहा वुलाया, किन्तु उसने हार खाकर समरकन्दमें जा रूसियोकी अधीनता स्वीकार की। इस अशातिसे लाभ उठा मई १८७० ई०में जेनरल अव्रामोफ एक छोटी-सी सेना ले पहाड़ोके भीतर घुसा। १२ मईको उसने उर्मितान ले लिया, २१ को वरसामिनार भी उसके हाथमें चला गया। यह दोनो जगहे फलगरके वेकके अधीन थी। माचाका वेक पाचा खोजा वहुत जनप्रिय था। वह धमकीके पत्र लिखता रहा। अव्रामोफने माचाकी ओर वढकर २८ मईको आवुर्दनको ले लिया। पाचा खोजा भाग निकला। रूसियोने फलगरके किलेको तोड दिया, जिसे कि वुखारियोने पहाडी लोगोको दवा रखनेके लिये वनाया था। अव्रामोफ आगे वढते-वढते अलई पर्वतमालाकी उस हिमानीके पास पहुचा, जो कि जरफशा (प्राचीन सोग्द) नदीका उद्गम है। लौटकर उसने फान नदीपर अवस्थित मर्वदा, फिर यग्नान-उपत्यकाको जीतते इस्कन्दरकुल (महासरोवर)तक गया। वहासे पश्चिमी कोहिस्तानकी ओर घूमकर उसने दस हजार फुट ऊचे कश्तुतके डाडेको पार किया, जिसके पश्चिमी पहाडियोमें एक जवर्दस्त सघर्ष हुआ। कश्तुतको अपने हाथमें करके अव्रामोफ पजकन्द होते समरकन्द लौट गया।

शहरसव्जकी विजयके वाद रूसियोकी एक टुकडी कश्क-उपत्यकासे हो फाराव और मागियान-पर पडी। इन दोनो इलाकोके वेक रूसके विद्रोहियोंके साथ हो गये थे। रूसियोने यहाके दोनो किलोको तोड दिया और वहाके वेको—सईद और शादीवेक—ने आत्मसमर्पण किया। मागियानका वेक हुसेन कुछ महीनेतक हाथ नहीं आया। रूसियोने फाराव और मागियानको उरगुत जिलेमें मिला लिया। कितने ही समयतक वाकी पहाडी लोग रूसियोके साथ विद्रोही वने रहे, लेकिन कब तक इतनी वडी शक्तिका मुकावला करते ?

४ हिसारके इलाके

आजकल यह पहाड़ी इलाका ताजिकिस्तान गणराज्यका एक वडा भाग है। ऊपरी जरफशा-उपत्यकाकी तरह यहापर भी उस समय कितने ही छोटे-छोटे राजा थे, जैसे —

(१) **करातगिन**—वक्षु नदीकी मुख्य पहाडी शाखा सुरखाव करातगिनके इलाकेसे वहती है। यहाके शासक अपनेको ऐतिहासिक ग्रीक सम्राट् अलिकसुन्दरका वशज वतलाते थे। कोई आश्चर्यकी बात नही है, यदि ग्रीक या शक-शासनके पतनके बाद वहाके कुछ राजकुमारोने इन दुर्गम पहाडियोमे शरण लेकर अपने लिये स्थान बनाया हो। लेकिन यह साबित करना मुश्किल है, कि सचमुच ही ये छोटे-छोटे शाह और वेक यूनानी सम्राटोके वशज थे। दरवाजवालोने कुछ समयतक करातगिनको जीतकर उसे अपने हाथमे रक्खा, लेकिन जल्दी ही वह फिर स्वतत्र हो गया। १८३९ ई०में खोकन्दने करातगिनको जीतकर अपने अधीन कर लिया।

(२) **दरवाज**—करातगिनसे दक्षिणमें यह छोटा पहाडी राज्य था, जिसके शासक भी अपनेको सिकन्दरवशी कहते थे—यह उज्वेक नही ताजिक थे। खोकन्दके मदली खानने १८३९ ई०में करातगिनके साथ इसे भी अपने अधीन वना लिया था।

(३) **कुल्याब**, (४) **शगनान**—यह भी दो छोटी-छोटी पहाडी रियासतें थी, जो कि पीछे तवतक खोकन्दका अग वनकर रही, जवतक खोकन्दको रूसियोने हजम नही कर लिया।

(५) **हिसार**—करातगिन, दरवाज और शगनानकी पहाडी रियासतोके पश्चिममें हिसार और कुल्यावके इलाके है, जिनमें उज्वेकोके कवीले ककुरत और कतगन रहते थे। उन्होने इन इलाकोको अपने हाथमे करके वहुत-से पुराने वाशिदो—ताजिको—को भगा दिया था। वुखारावाले उस समय हिसारके इलाकेको उज्वेकिस्तान कहते थे। जान पडता है, १८वी सदीके मध्यमें हिसारका इलाका वुखाराके हाथसे निकल गया था।

हिसार और कुल्यावके पडोसमें कई और छोटे-छोटे उज्वेक राजा थे, जिनमें कुरगानका अल्लाबर्दी जौज १८वी सदीके अन्तमे पडोसियोके लिये काल वन गया था। उसने हिसारको घेरा था, जब कि वेक अल्लायार और करशीके राजुलने उसे मारकर हिसार और कुरगानपर अधिकार कर लिया। तव भी प्राचीन वशका शासक सईद हिसारका वेक, यदि कामके लिये नही तो नामके लिये, माना जाता था। बुखाराके अमीरने सईद वेककी लडकीसे व्याह किया था, और इस प्रकार वह अमीरका कृपापात्र था। कुरगानको हिसारमें मिला लिया गया था। इज्ज-तुल्लाके समय हिसारमें सईद वेक और कुरगानमें अल्लायार वेकका शासन था। पडोसी कवादियान इलाकेके वेक थे दोस्त मुहम्मद और मुराद अली। इन छोटी-छोटी रियासतोको हिसारने हजम कर लिया। १९वी सदीके उत्तरार्धमे कुल्याव हिसारका शासक कतगन अमीर सरीखान था, जिसके डरके मारे करातगिनके शासकको १८६९ ई०मे खोकन्दकी शरण लेनी पडी थी, लेकिन इसी समय वुखाराने उसे अपने अधीन कर लिया। १८७२ ई०मे हिसारमे सात जिले थे, जिनके अपने-अपने वेक थे, कुल्याबमें भी दो जिले थे। ये सभी वेक वुखारा द्वारा नियुक्त होते थे। इन जिलोंके नाम थे—शेरावाद, बाइसून, देहनौ, युर्ची, हिसार (कुर्गानत्यूवे, कवादियान), वल्जुवान और कूल्याव। इनके अतिरिक्त दरवन्द, सरेजूय और फैजावादपर अमीरका शासन स्थानीय वेको द्वारा नही वल्कि सीधे वुखारासे होता था।

५ तुखारिस्तान

प्राग्-मुस्लिम तुर्कोके शासनकाल तथा स्वेन्-चाड्की यात्राके समय पहाडोसे उतरकर पश्चिमी-भिमुख बहनेवाली पहाडोतक फैली वक्षुके दोनो तटकी समतल-सी मैदानी भूमिको तुषार या तुखार कहा जाता था। पीछे यह उज्वेकोकी भूमि हो आजतक है। यहाके निवासी अधिकतर उज्वेक है। वक्षुके उत्तरवाला तुखारिस्तान अव सोवियत उज्वेकिस्तानका अग है, पर दक्षिणी तुखारिस्तान उज्वेक होते हुये भी काबुलके शासनमें है। १८वीं सदीके मध्यमें ही, जब कि अफगानोका सितारा ऊचा होने लगा था, दक्षिण तुखारिस्तानमे कितनी ही छोटी-छोटी रियासतें थी —

(१) **खुल्म**—१७५१-५२ ई०में अफगानोने दक्षिणी वक्षु-उपत्यकाको वुखारासे छीन लिया।

१७८६ ई०में अमीर शाहमुरादने उसे लौटानेकी बहुत कोशिश की, किन्तु सफल नही हो सका। पीछे यहापर खिलिच अलीने अपनी प्रभुता जमाई।

खिलिच अली (—१८१७ ई०)—खुल्म बलखसे उत्तर-पूर्वमें है। यहाके उज-कबीलेका सरदार खिलिच अली धीरे-धीरे बहुत शक्तिशाली हो गया, और उसने अपने पड़ोसी इलाको ऐबक, गोरी, माजूर, दर्रागूजको अपने अधीन कर लिया, तथा कुरगानतेप्पाके उज्बेक सरदार अल्लावर्दी तौजको हजरत इमामसे मार भगाया। कुन्दुजका उज्बेक सरदार खिलिच अलीका ससुर था, जिससे उसने मित्रता स्थापित की। काबुलमें भी उसका प्रभाव बढा और वहासे उसे "अता-लीक"की उपाधि मिली। बलखके अफगान राज्यपाल हुकूमतखान-पुत्र सरदार नजीबुल्ला खानपर भी उसका काफी रोब था। तालिकान छोडकर बाकी सभी जगहोपर अफगान राज्यपाल नही, बल्कि खिलिच अलीकी तूती बोल रही थी। यहाके तीस हजार रुपयाके करमेंसे एक तिहाई काबुल जाता, बाकी पुराने नौकरो, मुल्लो और शासकोंके खर्चमें आता। खिलिच अपने प्रभावको बढा लेनेके बाद अफगानोका भक्त रहा। उसके पास बारह हजार सवार सैनिक थे; जिनमेंसे दो हजारका वेतन वह खुद देता, बाकीको उनकी सेवाओंके लिये भूमि और जागीर मिली हुई थी। कुन्दुजवाले भी उसे पाच सौ सैनिक दिया करते थे। सेनाका खर्च करनेके बाद उसकी आमदनी उन्नीस हजार गिन्नीके बराबर थी। खिलिच अलीके ज्येष्ठ पुत्रको नौ हजार गिन्नी वार्षिक वृत्ति मिलती। उसे काबुलसे "बलखका वली" (बलख-राज्यपाल)की उपाधि मिली हुई थी। खिलिच अलीका रहन-सहन बहुत सीधा-सादा था। वह १८१७ ई० के करीब मरा। इसके बाद उसके पुत्रोमें झगडा हो गया, जिसमें कुन्दुजके मुराद बीने आगमें घी डालने-का काम किया। खिलिचके दो पुत्रोमें एकको खुल्म और दूसरेको ऐबक मिला। बलख भी ऐबकवालेके हाथमें था, लेकिन अब दोनो भाई कुन्दुजके अधीन अमीरमात्र रह गये थे।

(२) कुन्दुज (क) मुराद बी (१८१२–४० ई०)—उज्बेकोंके कतगन कबीलेका कुन्दुज प्रधान नगर था। चिङ-गिम खानके समयमें भी नगरका यही नाम था। १८वी सदीके अन्तमें कतगन-अमीर खोकन्द बेक शक्तिशाली होकर बहुत कुछ स्वतत्र हो गया और उसने अपने पूर्वी इलाके बदख्शाको लूटमारकर उजाड दिया। उसके बाद उसका पुत्र मुराद बी उत्तराधिकारी बना। अपने समयमें यह मध्य-एसियाके बहुत शक्तिशाली शासकोमें था। इतिहासकार इज्जतुल्लाके समय यह कुन्दुजपर शासन करता था। खिलिचके जिन्दा रहनेतक यह अपनी शक्तिको बहुत आगे नहीं बढा सका, लेकिन इसके बाद बडी तेजीसे अपने राज्यको बढाया। अग्रेज यात्री मूरक्राफ्टने अपनी यात्राके प्रबन्धके लिये कुछ आदमी भेजे थे, जिनपर वहावालोने गुप्तचर होनेका सदेह किया—"अग्रेज एसियाके किसी भागमें इसके सिवा और किसी मतलबसे प्रवेश नही करते, कि अन्तमें वह वहाके स्वामी बन जाय।" पीछे मूरक्राफ्ट स्वय वहा गया। उस समय मुराद बी खुल्म, कुन्दुज, तालिकान, अन्दराब, बदख्शा और हजरत-इमामका स्वामी था। मूरक्राफ्टने ऐबकसे आगे पहाडोंके भीतर बहुत-से कस्बे उजडे देखे थे, जिसका कारण मुराद बी था। वहाके निवासियोको वह गुलाम बनाकर ले गया था। मुराद बीका वजीर आत्माराम दीवानबेगी मूलत पेशावरका निवासी था। आमतौरसे हिन्दुओको वहा बहुत नीची निगाहसे देखा जाता था, लेकिन आत्मारामने अपनी योग्यतासे मुराद बीका कृपापात्र बनकर ऐसे ऊचे पदको प्राप्त किया। उसके पास बहुत सम्पत्ति और चार सौके करीब दास-दासी थे।

मुराद बी बडा ही कर्मठ आदमी था। वह स्वय अपनी सेनाका सचालन करता और बलख तथा हजाराके शीयोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हे दास बनाकर बेंच देता था। चित्रालका मेहतर भी डरके मारे मुराद बीको करके रूपमे गुलाम देता। हिन्दूकुशकी पहाडियोमें सियापोश काफिर आज भी कुछ मुसलमान न बन अपने बाप-दादोंके धर्मको मानते चले आ रहे हैं। मुराद बीने १८३० ई०में दास-दासी बनाकर बेचनेके ख्यालसे उनपर आक्रमण किया, लेकिन उसे सफलता नही मिली, काफिरोने उसे आगे बढनेसे रोक दिया। इसी समय बर्फानी आधी आई, जिससे फायदा उठाकर सियापोशोने आक्रमण कर दिया, और बीके चार हजार सवार काम

आये। मुराद बीके कोपका भारी शिकार बदख्शाकी सुन्दर भूमि हुई, जहाके अधिकाश लोगोको पकडकर वह कुन्दुज ले गया, और वहाके सिकन्दर-वशी शासनको राज्यसे वचित कर दिया। १८२३ ई०में किला-अफगानमें मीरयार बेग खानने मुराद बीके दस हजार सवारोंसे नौ हजार सेनाके साथ मुकाबिला किया, लेकिन उसे हार खानी पडी। १८२९ ई०में यहाके बाशिन्दोको भी उसने कुन्दुज भेज दिया। वूड अपने यात्रा-ग्रथ (१८३८ ई०)में लिखता है—"इस प्रकार इस अस्वास्थ्यकर दलदली भूमिमे १८३० ई०से लेकर आज (१८३८ ई०) तक उज्वेकोने करीव-करीव पच्चीस हजार परिवार या प्राय एक लाख विदेशियोको लाकर बसा दिया है, इसमें सन्देह है, कि १८३८ ई०में उनमेंसे छ हजार परिवार भी जिन्दा है। इन पिछले आठ वर्षोंमें उनमेंसे बहुतेरे मर गये। कहावत है—'अगर तुम मरना चाहते हो, तो कुन्दुज जाओ।' हमारे वहा पहुचनेसे बारह महीने पहले कुल्याबके निवासी बहुत भारी सख्यामें अपने पहाडी इलाकेसे लाकर हजरत इमाममें बसाये गये। डाक्टर लार्ड और मै उस भूमिसे गुजरे, जहापर कि उनके घर थे, जिनमेंसे कुछ अब भी खडे थे, लेकिन चारो ओर नीरवता छाई हुई थी, और चारो ओर फैली बहुसख्यक कब्रें उनके बहुसख्यक निवासियोकी आपबीती बतला रही थी।" वक्षुके उत्तर कुल्याबसे लेकर दक्षिणमें सिगान (हिन्दूकुशके दो डाडोके परे तथा बामियानसे तीस मील भीतर) तक और बखान भी मुराद बीका था। मुराद बी १८४० ई०के आसपास मरा।

(ख) मुहम्मद अमीन, खिलिच-पुत्र, खुल्म (१८४०-४५ ई०)—मुराद बीके बाद उसका स्थान खिलिच अलीके पुत्र मुहम्मद अमीनने लिया, जिसको "मीरवली"की उपाधि मिली थी। वह १८४५ ई०में शासन कर रहा था। उसका पुत्र गजअलीबेग बदख्शाका शासक था। कुन्दुजमें मुराद बीका पुत्र मीर रुस्तम खान शासन करता था, किन्तु वह मुहम्मद मीरवलीके अधीन था। मीरवली बुखारा और काबुल दोनोको खुश रखता था। उसने अन्दखुदको भी अपने अधीन कर लिया था। १८४५ ई०में ऐबकमें उज्वेकोका कगली कबीला रहता था। मीरवलीका शासन सरीपुल, अन्दखुद, कुल्याब और बखानसे हिन्दूकुश और बलखतक फैला हुआ था। खिलिच अलीके समय ही तुखारिस्तानमें काबुलका नाममात्रका प्रभाव था, लेकिन अफगानोकी आखे इस ओर लगी हुई थी, जिसमे उन्हे १८५० ई०में जाकर सफलता प्राप्त हुई। काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने बुखाराके अमीर नसरुल्लाके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। मीरवलीको दोस्त मुहम्मदने राह देनेके लिये कहा, लेकिन मीरवलीके इजाजत देने या न देनेकी कोई बात नही थी। दोस्त मुहम्मदका पुत्र अकबर खान निर्वासित होकर खुलममे रहता था, जहासे वह मीरवलीकी एक दासीपर मुग्ध होकर उसे काबुल भगा ले गया। दासी किसी तरह भागकर खुल्म पहुच गई। काबुलसे भागकर आनेपर मीरवलीने उसे देनेसे इनकार कर दिया। इस प्रकार दोस्त मुहम्मदके लिये आक्रमण करनेका अच्छा बहाना मिल गया। १८४५ ई०मे अफगानोने चढ़ाई की, लेकिन लडाईमें तुरन्त सफलता नही मिली, जिसमे सबसे बडी बाधा हिन्दुकोह (हिन्दूकुश) की दुर्गम पहाडिया थी। १८५० ई०मे अफगानोने हिन्दूकुश पार करके बलखको जीत लिया। १८५९ ई०में कुन्दुजको भी लेकर वह दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके अपनी आजकी सीमाको स्थापित करनेमें सफल हुये—अफगान अपने इस इलाकेको तुखारिस्तान नही तुर्किस्तान कहते है।

दोस्त मुहम्मदके बाद उसके पुत्र अफजलखाने—जो बलखका राज्यपाल था—१८५४ ई०मे अपने भाई शेरअलीके विरुद्ध असफल विद्रोह किया। १८६४ ई०में फिर उसे अपने पदपर बहाल कर दिया गया। अफजलके पुत्रने बुखारा भागकर अमीरकी लडकीसे व्याह किया। फिर वह अपने ससुरकी सहायता तथा दूसरोकी मददसे विद्रोह करके १८६६ ई०में शेरअलीको हटा खुद काबुलकी गद्दीपर बैठा। शेरअलीका तब भी कन्दहार और हिरातपर अधिकार रहा। शेरअलीने फिर १८६८ ई०में तैयारी करके मुकाबिला किया, और अन्तमें सिहासन पानेमें सफल हुआ। अफ़जल-पुत्र अमीर अब्दुर्रहमान मशहद भागा, जहासे मार्च १८७० ई०मे ताशकन्दमें रूसियोके पास गया। उन्होने उसे पचीस हजार रूबल वार्षिक पेशन दे समरकन्दमें रख दिया।

अफगानिस्तान ब्रिटिश और जारशाही साम्राज्यके बीचमें था। उसपर दोनो महाशक्तिया अपना प्रभाव डालनेकी कोशिश करती थीं, इसलिये रूसियोका अब्दुर्रहमानको समरकन्दमें या अग्रेजोका अमीर याकूबको लाकर मसूरी (१८८३ ई०)मे रखना कोई व्यर्थका सिर-दर्द नही था। अफगानोने दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके वदख्शामे फिर एक स्थानीय शासकको नियुक्त किया।

(३) वदख्शा—१३वीं सदीमें प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो वदख्शाके रास्ते चीन गया था। उस समय वहाका शासक अपनेको ग्रीक-सम्राट् अलिकसुन्दरका वशज बतलाता था। बाबरके समय भी उनके बारेमें यही ख्याति थी। कोई आश्चर्य नही, यदि ग्रीक-बाख्तरी साम्राज्यके नष्ट होनेपर कोई राजकुमार वहा जाकर शासक बना हो, या कोई कुषाणवशी राजकुमार जाकर रहने लगा हो, जिसके उत्तराधिकारी ग्रीको और शकोमे भेद करना भूल गये हो। उज्बेकोने वदख्शाको जीतकर बुखाराके अधीन कर लिया था। बुखाराके शासनके निर्बल होनेपर १८वीं सदीमे वदख्शा स्वतत्र हो गया। अग्रेज यात्री मूरक्राफ्ट १८३२ ई०में इधरसे गुजरा था, उस समय तत्कालीन राजवशको स्थापित हुये सौ साल हो चुके थे।

सुल्तानशाह वदख्शाके राजवशका सस्थापक था, जिसकी राजधानी फैजाबादको भी उसीने बसाया था।

(क) सुल्तानशाह (१७६५ ई०)—जिस साल चीनने वहाके शासक खान खोजासे काश्गरको जीता, उस समय वदख्शाका शासक सुल्तानशाह था। खान खोजाने भागकर चालीस हजार आदमियो के साथ वदख्शामें शरण ली थी। उसके धन और बेगमोंके लोभसे सुल्तान शाहने उसपर आक्रमण कर दिया। खान खोजाने हार खाते समय शाप दिया, कि वदख्शा तीन बार निर्जन बनेगा, और वहा एक कुत्ता भी जिन्दा नही रह जायगा। कुछ साल बाद १७६५ ई०मे अफगान अमीर अहमदने वदख्शा जीत लिया, जिसमें सुल्तानशाह मारा गया। उस समय वदख्शामें पैगम्बर मुहम्मदका कुर्ता बडी पवित्रताकी चीज समझा जाता था, जिसे अफगान फैजाबादसे काबुल ले गये।

(ख) मीर मुहम्मद शाह (१७६५–१८१२ ई०)—सुल्तानकी जगहपर उसके पुत्र मीर मुहम्मदको बैठाया गया। १८१२ ई०में जब इज्जतुल्ला इधरसे गुजरा, तो यही वदख्शाका शासक था।

(ग) मीर यारबेक खान (१८२३ ई०)—मुराद बीने इसे १८२३ ई०में किला-अफगानमें हराया, और १८२९ ई०मे वदख्शा बिलकुल मुराद बीके हाथमे चला गया। वह यहाके बाशिन्दो-को कुन्दुज ले गया। मीरयार बेकका भाई मीर मुहम्मद रजाबेक तालिकानमे भाग गया।

(घ) जहादारशाह (१८५९–६१ ई०)—अफगानोने वदख्शापर अधिकार करके १८५९ ई० में पुराने वशके जहादारशाहको फिर अपनी ओरसे गद्दीपर बैठाया। चित्रालके मेहतरने इक्कीस दास-दासियोको भेजकर अपनी लडकीका व्याह जहादारके लडकेके साथ किया। १८६१ ई०में इसे गद्दीसे हटा दिया गया।

(ङ) महमूदशाह (१८६१ ई०)—जहादार अमीर शेरअलीके प्रतिद्वंद्वीका पक्षपाती था, इसीलिये उसे हटाकर उसके भतीजे महमूदशाहको गद्दीपर बैठाया गया। इस समय वदख्शा कई इलाकोमे बटा हुआ था, जिनमें फैजाबाद और गर्म सीधे महमूदशाहके शासनमें थे, और दराइम, शहरसब्ज (दक्षिणी), गुम्बज, फराखर, किश्म, रूस्तक, इशकासिन, वखान, जेबक, मिन्जान, राग, दौग और आसियाबीमें खानदानी अमीर महमूदशाहकी अधीनतामें शासन करते थे।

तुखारिस्तानके पश्चिमी भागमें कई और छोटे-छोटे राज्य थे, जो अन्तमे अफगानिस्तानके हाथमें चले गये थे।

(४) मेमना—नादिरशाहकी मृत्युके बाद वहाके राज्यपाल हाजीखानने अपनेको स्वतत्र घोषित कर दिया। उसके बाद उसका छोटा लडका अहमद १७९८ से १८०९ई० तक शासन करता रहा। फिर उसका चचेरा भाई अलायार खा १८१० से १८२६ ई०तक मेमनाका स्वामी रहा। इसके बाद मिजराब खान गद्दीपर बैठा, जिसे उसकी एक बीबीने जहर दे दिया। उसके पुत्रोमें उत्तराधिकारके लिये झगडे शुरू हो गये, जिनका फैसला हिरातके अफगान-राज्यपाल यारमुहम्मदने किया—बनियों और किमानोका शासक उकमेत और किलेकी सेनाका कमाडर शेरखाको

वनाया गया । शेर खा १८५३ ई०तक शासक रहा । उकमेत खानको उसके भाई मिर्जा याकूबने किलेकी दीवारसे गिराकर मार दिया, जिसके बाद उकमेतका पुत्र हुसेन खा गद्दीपर बैठा, किन्तु सारी शक्ति उसके चचा याकूबके हाथमें थी । याकूब जुरमानाकी जगह आदमियोको बुखारामे गुलाम बना बेचनेके लिये भेज देता था । हुसेन खा कावुलका नही, वल्कि बुखाराका पक्षपाती था । उसने लम्वे केशोवाली अफगानोकी तीन सौ खोपडियोसे अपने किलेके दरवाजेको सजाया था, और १८६३ ई०में काबुलपर चढाई करनेकी सोच रहा था, लेकिन इसके वाद ही उसके सरक्षक अमीर-बुखाराको भी रूसियोकी अधीनता स्वीकार करनी पडी ।

(५) **अन्दखुद (अन्दखोइ)**—यह बुखारा और हिरातके बीचमे खुरासानका एक भाग है जो देरतक अफगानिस्तानके हाथमे रहा। यहा अहमदशाह अव्दालीके पुत्र तेमूरशाहके नामका खुतवा और सिक्का चलता रहा। तेमूरशाहकी ओरसे अफशार कवीलेका सरदार रहमतुल्ला यहाका शासन करता था। बुखाराके अमीर शाह मुरादसे लडते वक्त वह मारा गया। इसके बाद इल्दुज खान शासक था। १८४० ई०में अन्दखुदको बुखाराने ले लिया। यहाके बाशिन्दे मुख्यत तुर्कमान हैं । अन्दखुदको वास्तविक नर्क कहा जाता था—यहाका पानी खारा और कडुवा है, रेगिस्तानमे बालू तपती है, और जहरीली मक्खिया और बिच्छू यहा वहुत मिलते थे। लेकिन अब तो वह कलका नर्क सोवियत तुर्कमानिस्तानका भाग वनकर वास्तविक स्वर्ग बननेके रास्तेमें है ।

(६) **शाविरगान**—१८१२ ई०मे यहा इरज खान फिर रुस्तम खान शासक रहा। १८५३ ई०मे इसे अफगानोने ले लिया, और तवसे अफगानिस्तानमे है ।

(७) **सरीपुल**—महमूद खान यहाका शासक था, लेकिन कावुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने १८५३ ई०में जव शाविरगानको लिया, उसी समयसे सरीपुल भी काबुलके हाथमे चला गया।

१९वी शताब्दीके उत्तरार्धमे एक अग्रेज लेखकने अफगानी तुर्किस्तानके वारेमें लिखा था—"इन उज्बेक रियासतोका अधिकाश, चाहे नामके लिये ही हो, अव अफगानोकी प्रजा है, लेकिन अभी हाल हीमें अफगानोने इन्हे जीता है, और वह अफगानी जूयेको खुशीसे उठानेके लिये तैयार नही है । यह अग्रेजोके लिये कहातक बुद्धिमानीकी बात है, जो कि वह आजतक इन रियासतोको अफगानिस्तानका अभिन्न अग माननेपर जोर दे रहे है। अग्रेजोका ऐसा करना राजनीतिक बात हो सकती है, लेकिन नृवश और इतिहासकी वह बात नही है । इसे असदिग्ध रूपसे कहा जा सकता है, कि नसल और इतिहास दोनोकी दृष्टिसे यहाके सबसे अधिक निवासी कावुल नही बुखारासे सबध रखते है ।"

अग्रेजोके बलपर अफगानोने इस शुद्ध उज्बेक इलाकेको अपने हाथमें वनाये रक्खा । पहले तो अमीरो-अमीरोका सवाल था, लेकिन अव वक्षु नदीके उत्तरमें मध्य-एसियाके वहुत शक्तिशाली, तथा विद्या और उद्योग-धधेमे आगे वढी उज्वेक जातिका अपना गणराज्य है । वक्षुके दक्षिण तटके उज्वेक परले पार तेर्मिज नगरीको रातको हजारों विजलीके चिरागोसे जगमगाते और दिनको कारखानोकी चिमनियोसे धुआ उगलते देखकर ठढी आह लेकर कहते हैं—"कवतक हम अपने उत्तरी भाइयोसे अलग रक्खे जायगे ?"

स्रोत-ग्रन्थ

१ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ क्रूवेर आदि, १९१० ई० पृष्ठ २३६–४८)
२ इस्तोरिया सससर (अ म र दोनिकन् ४ जिल्द)
३ तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (३ जिल्द, १८८०)
४ ओत्चेत् ओ कोमेन्दिरोव्के व् तुर्केस्ताने (व व वेर्तोल्द, "इज्वेस्तिया रोस्सिइस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी, जिल्द १ पृष्ठ १–२२)
५ La rivalite anglo-russie on XIX siecle en Asie (A M F Rouire, Paris 1908)
६ History of Mongol (H. H. Howorth, London (1876-88)

अध्याय ५

खीवाके खान (१७००--१८८१ ई०)

खीवा अर्थात् प्राचीन ख्वारेज्ममें किस तरह उज्वेकोंके खान शासन करन लगे, इसके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं। १८वीं सदीके आरम्भमें पहला उज्वेक-वंश खतम हो गया, लेकिन मध्य-एसियामें अब भी चिङ-गिस् खानवाले राजकुमारोंकी बडी माग थी, इसलिये उन्हे ढूढ-ढूढकर लाकर खान बनाया जाता था। ऐसे ही वाहरसे लाये हुये खानोंने प्राय सौ सालोंके लिये खीवाको अपने हाथमे रखा, जिसके बाद अन्तिम ककुरत-वशने शासन किया।

§१ बाहरी वश (१७००--१८०४ ई०)

अधिकारच्युत वशके राजकुमार अब भी ढूढनेसे मिल जाते, लेकिन अन्तिम खानोंके अत्याचारोंसे तग आकर खीवाके प्रभावशाली आदमियोंने उन्हे लेना पसद नहीं किया, और बुखाराके राजवश एव कजाकों और कलमकोंमें दूत भेजकर किसी राजकुमारको ढूढना चाहा। इस समय पुराने राजवशके कितने ही लोग अरालके एक द्वीपमें रहते थे। पहला खान अरक बनाया गया, जो कराकल्पकके खानोंसे सबध रखता था।

१ अरक, एवरक, अवरग खान

बादशाह औरगजेबका ही नाम इस खानका भी था, और शायद यह औरगजेबका अन्तिम समकालीन था। लेकिन यह या इसके वशने बहुत दिनोंतक शासन नहीं किया और लोगोंने इसके बाद शेरगाजीको खान बनाया।

२ शेरगाजी (--१७१३ ई०)

खीवाका खान बननेसे पहले शेरगाजी बुखारामे रहता था, वहींसे इसे लाया गया। १७१३ ई०में तुर्कमान सरदार खोजा नफस अस्त्राखान गया था। वहा वह राजुल समानोफसे मिला। समानोफ गेलानका निवासी था, लेकिन पीछे रूसमें ईसाई बनकर बस गया था। खोजाने उसे समझाया, कि तुर्कमानोंको मिलाकर निम्न-वक्षुके जिलोंको रूसियोंको ले लेना चाहिये, वहा बहुत सोना है। उसने यह भी बतलाया, कि उज्वेक-शासकोंने रूसियोंके भयसे ही बाध बाधकर वक्षुको कास्पियनसे हटा अराल समुद्रमें डाल दिया, उसे फिर कास्पियनमें डाला जा सकता है, उसके बाद आसानीसे वोल्गाके जहाज कास्पियन होकर वक्षुके भीतर जा सकेंगे। खोजाकी यह बात यद्यपि अब २०वी शताब्दीके उत्तरार्द्धमें सच्ची होने जा रही है, लेकिन उस समय उसने इसे रूसियोंको लोभमें डालनेके लिये कहा था। इसी समय राजुल गागरिनसे पीतर I को पता लगा, कि यारकन्दके पास सोनेकी खानें हैं। पीतरको अपने युद्धोंके लिये सोनेकी बडी अवश्यकता थी। ऐसे समय कितने ही शासक कीमियागरोंके जालमें पडते देखे गये हैं, इसलिये यदि सोनेकी खानोंकी ओर पीतर असाधारण रूपसे आकृष्ट हुआ हो, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। खोजाको अपने साथ ले राजुल समानोफ राजधानी पीतरबुर्ग गया। उस समय गारद-कप्तान तथा मुसलमानसे ईसाई बना राजुल बेकोविच चेर्कास्की सम्राट्का बहुत प्रिय दरबारी था। उसने दोनोंको जारसे मिलाया। पीतरबुर्गमें रहते खीवाके दूत अशुरबेक (१७१३-१५ ई०)

ने उनकी बातका समर्थन करते हुये कहा, कि रूसियोको वक्षुके कास्पियनमे गिरनेके पुराने स्थान (शायद क्रास्नोवोद्स्क)को दस हजार सैनिकोके रखने लायक बनाना चाहिये। यदि रूसी वक्षुको उसकी पुरानी धारमें डालना चाहेगे, तो हमारा खान (शेरगाजी) विरोध नही करेगा। अशुर-बेक बहुत-सा भेंट-उपहार पाकर १७१५ ई०में अपने खानके पास लौटा, लेकिन अरग और शेरगाजीके सिंहासनारोहणके समय हुई गडबडीके कारण वह अस्त्राखानमें रुक गया। इसी समय पीतरने अशुरबेकको भारत जा वहासे तोता और चीता लानेके लिये कहा। राजुल वेकोविच चेर्कास्की (चेरकास-राजकुमार) ने ईरानके शाह हुसेनके शासनकी गडबडियोके समय रूसमें शरण ली थी। उसके मरनेपर उसके पुत्र अलक्सान्द्रने ईसाई बन राजुल बोरिस अलक्सान्द्र-पुत्र गालितजिनकी लडकीसे व्याह किया, और पीतरका गारद-अफसर बना। इसी अलक्सान्द्रके नतत्वम पीतरने खीवाके लिये एक अभियान भेजा। उसके जिम्मे काम दिया गया था—वक्षुकी पुरानी धाराकी सर्वे करना, ख्वारेज्मके खानसे रूसकी अधीनता स्वीकार कराना, और उपयुक्त स्थानोपर किले बनवाना। यह सब काम कर लेने पर बुखारा के अमीरसे बातचीत करना, फिर लेफ्टिनेंट कोजिनको भेजकर स्थलमार्गसे भारत जानेके रास्ते-का पता लगाना, और एक दूसरे आदमीको यारकन्दक सोनेकी खानोके बारेमें जाननेके लिये भेजना।

पीतरने उज्बेक-खानो और दिल्लीके बादशाहके लिये चिट्ठिया दी थी। १७१६ ई०की गर्मियोमें राजुल बकोविच चार हजार आदमियोके साथ रवाना हुआ। उसने कास्पियन तटपर करागन, अलक्सन्द्रोवयेस्क और क्रास्नोवोद्स्कके किले बनाये, जिनमें अन्तिम उसी जगह बनाया गया, जहापर पहले वक्षु कास्पियनमे गिरती थी। इन किलोमें सैनिकोको रखकर वेकोविचने खीवाके खानको अपने आनेकी खबर देनेके लिये किरियक (ग्रीक) वोरानिनको भेजा। वोरानिन अस्त्राखानम बसे ग्रीकोमेंसे था। राजुल स्वय वोल्गाके तटपर लौट आया। कजानसे पाच सौ स्वीड युद्धबंदियोको भर्ती करके मेजर फ्राकेनवर्गको उनका अफसर बना वेकोविचने फिर वोल्गातटसे १ जुलाई १७१७ ई०को प्रस्थान किया। अबकी उसने ग्रेबेन्स्कके रूसी कसाको और नोगाइयोके इलाकेमें होते स्थलमार्गसे यात्रा की। वेकोविचके साथ अस्त्राखानके रहनेवाले तीन सौ तारतार, कितने ही और बुखारी कारीगर आदि भी थे। गुरियेफमें पहुचनेपर उरालके पद्रह सौ कसाक आ मिले। दो दिन बाद यम्बा नदीके तटपर पहुच बेडोका पुल बना उसे पार किया। वेकोविचने भारतका रास्ता ढूढनेके लिये मिर्जा तौकेलेफको भेजा, लेकिन उसे ईरानियोने अस्त्राबादमे रोक लिया, जहासे पीछे उसे अस्त्राखान भेज दिया गया। यद्यपि उस समय अस्त्राखान, बाकू, बुखारा, समरकन्द आदिमें काफी सख्यामे भारतीय व्यापारी रहते थ, जिनसे भारतका रास्ता आसानीसे मालूम हो सकता था, लेकिन पीतर सैनिक दृष्टिसे भी सुभीतेका कोई रास्ता ढूढना चाहता था।

यहा वेकोविचको कलमक थैची आयुका और पहले भेजे दूत वोरानिनने बतलाया, कि खीवावाले अभियानका विरोध करेंगे। यम्बा तटसे दो दिन चलनेके बाद वह बगचतोक और पाच दिन और चलकर इरकित्श-गिरि (उस्तउर्त या चिक) पहुचा। उस्तउर्तकी ऊची अधि-त्यकाको पार करक वह अराल समुद्रके तटपर गया। अब वह ऐसी भूमिमे थे, जहा इतने आदमियोके लिये पानी मिलना आसान नही था। इसके लिये उन्हे जगह-जगह नये कुए खोदने पडे, और कितने ही पुराने कुओकी मरम्मत करनी पडी। इस प्रकार पानीका प्रबन्ध करके वह सात सप्ताहतक चलते गये। जब खीवा चार दिन रह गया, तो खानके दूत घोडों, चोगो आदिकी भेट ले वकोविचके पास आये। यद्यपि उन्होने एक ओर बाहर से इस तरह शिष्टा-चार दिखलाया, दूसरी ओर खीवाके घुडसवार वेकोविचके ऊपर आक्रमण करते रहे। वेकोविचके आदमियोने भी अपने बारूदी हथियारोसे मुकाबिला किया, जिसपर लोग अपने कस्बो और गावोको छोडकर खीवाकी ओर भागने लगे। खानने शत्रुकी शक्तिका अदाजा लगा चाल चलते हुये कहा—"गलतीके लिये हम क्षमा मागते हुये आपका स्वागत करते

हैं, लेकिन आपकी सेनासे लोग भयभीत हैं। सेनाको वहीं रखकर आप मामूली आदमियोंके साथ पधारिये।" इसपर पाच सौ आदमियोंको साथ ले वेकोविच खीवा शहरमें पहुचा। खानने पीछे छोडे सैनिकोंके नाम वेकोविचसे जबर्दस्ती या जाली चिट्ठी लिखवाई, जिसमें कहा गया था कि अपने हथियारोंको खानके अफसरको दे दो और एक नगरमें जाकर डेरा डालो। रूसियोंको क्या पता था? उन्होंने चिट्ठीको सच्ची मानकर हथियार दे दिये, और भिन्न-भिन्न जगहोंमे जाकर डेरा डाला। इसी समय खीवावालोंने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया। जो मारे जानेसे बचे उन्हे उन्होने दास बना लिया। कुछ रूसी सैनिक और तोपखानेके आदमी डरके मारे खानकी सेनामें भी भर्ती हो गये। वेकोविचको लाल कपडा पहनाकर खानके तम्बूके सामने ला उसे सिज्दा करनेके लिये हुक्म दिया गया। इन्कार करनेपर पहले उसके पैर काट डाले गये, फिर बडी क्रूरतासे उसके प्राण लिये गये। उसकी खालमें भूसा भरकर बुखाराके खानके पास भेज दिया गया, लेकिन उसने उसे लेनेसे इन्कार कर दिया, और खीवाके दूतको यह कहकर भगा दिया, कि तुम मनुष्यका खून पीनेवाले नरभक्षक हो। राजुल समानोफ और दूसरे प्रमुख व्यक्तियोंके सिरोको काटकर खीवाके दरवाजोपर भालेसे लटका दिया गया, जो बहुत सालो तक वैसे ही लटकते रहे। तुर्कमानोने उस समय उज्बेकोंसे खरीदे दो रूसी गुलामोको हेन्बे नामक एक युरोपीय सरदारको बेचना चाहा। कहते हैं, वेकोविचके बच्चे और बीबी बोल्गामें डूब मरे थे, जिसके कारण भी उसका दिमाग ठीकसे काम नही कर रहा था, और वह इतनी बडी गलती कर बैठा।

पीतरने फिर भी मध्य-एसियाको छोडा नहीं। उसने तुर्की-फारसी जाननेवाले अपने एक इतालियन नौकर फ्लोरियो वेनेवेनीको भेजा, जो ईरानके रास्ते नवम्बर १७२१ ई०में बुखारा पहुचकर वहा चार साल रहा। अबुल्फैज मुहम्मद खाने वेनेवेनीकी बहुत खातिर की थी।

शेरगाजीको पहिले कितने ही उज्बेक बुखाराके तख्तपर बैठाना चाहते थे, लेकिन उसमें सफल न हो वह जब खीवाकी गद्दीपर बैठा, तो उसके आदमी बुखारामें लूटमार करने लगे। इसपर बुखारियोंने खीवाके पुराने वंश अरालियोका पक्ष लेना चाहा। उन्होंने १७०७ ई०में अबुलगाजीके वंशज तेमूर सुल्तानको शेरगाजीका प्रतिद्वंद्वी खडा किया—वह मूसाखानका पुत्र था, जो बापके मरनेपर बुखारामे रहता था। तेमूरका बडा भाई बलखका राज्यपाल था। बडे भाईको अरालियोंने अपना खान चुना था। बुखारियोंकी मददसे तेमूर सुल्तानने दो बार खीवापर आक्रमण किया। शेरगाजीको बुखारा और तेमूरसे ही मुकाबिला नही करना था, बल्कि उसे रूसियोंसे भी बहुत भय था। उसने पीतरको प्रसन्न करनेके लिए रूसी बंदियोको छोड दिया और वेनेवेनीको खीवा आनेके लिये बहुत आग्रह किया। इस समय बुखारामें बडी अराजकता फैली हुई थी। वहाके खान अबुल्फैजके खिलाफ यह भी इल्जाम लगाया जाता था, कि उसने एक काफिर (वेनेवेनी) को अपने पास रख रक्खा है। पीतरने ईरानपर जो सफल अभियान किया था, उसकी खबर पा उज्बेकोका दिमाग कुछ ठढा हुआ, लेकिन शेरगाजीकी परेशानी कम नही हुई। १६ मार्च १७२५ ई० को वेनेवेनीने अपनी सरकारके पास पत्र लिखा था, कि बुखाराकी हालत बहुत डावाडोल है, सारे रास्ते लुटेरोंके हाथमें है। बलखके पुराने शासकने तेमूरके भाईसे उस इलाकेको छीनकर उसे मार डाला। शेरगाजीके लिये दो साल बहुत मुसीबतके थे। तेमूर सुल्तान और उसके सहायक अरालियो और कराकल्पकियोंने दो बार खीवापर चढाई की। रजीम खानके समरकन्दसे आकर बुखारापर चढाई करनेकी खबर आई, जिससे लोगोमे बडी घबराहट मच गई। जिस समय बुखाराकी यह हालत थी, उसी समय वेनेवेनीने मशहदका रास्ता लेना चाहा। तब खीवाका पल्ला भारी हो गया था। १० फर्वरी १७२५ ई०को वेनेवेनी चुपकेसे निकल पडा और किसी तरह तुर्कमानोंके खतरेसे बचते खीवा पहुचा। लोग कहीं गुप्तचर न समझ लें, इसलिये उसने युरोपीय छोड एसियाई पोशाक पहिन दाढी रख ली थी। खीवा-खानने उसके साथ अच्छा बर्ताव किया, और गुलाम रूसियोंके छोड देनेका वचन दिया। वेनेवेनीके खीवा पहुचनेसे पहले ही तेमूर सुल्तान खीवापर आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहा था, इसलिये भी शेरगाजी बहुत परेशान था। पीतरका दूत खीवाके राजदूत सुभानकुलीको ले वहासे अगस्तमें रवाना हुआ,

और रूसकी सीमामें सुरक्षित पहुच गया। इस समय ख्वारेज्म मध्य-एसियामें गुलामोका सबसे बडा बाजार था। वहा दस हजार रूसी और ईरानी गुलाम खेतो और नहरोपर काम करते थे। रूसी तो ईसाई होनेके कारण काफिर थे ही, ईरानियोको शीया होनेकी वजहसे मुल्लोने काफिर होनेका फतवा दे दिया था, इसलिये उनके बेचने-खरीदनेमे कोई रुकावट नही थी। खीवाकी बाजारोसे इन अभागे गुलामोको कजाक, तुर्कमान और कल्मक खरीद ले जाते थे। १७२८ ई०मे रूसी और ईरानी गुलामोने शेरगाजीको मारकर तेमूर सुल्तानको खान बनानेकी योजना बनाई थी, लेकिन पहिले ही भडाफोड हो गया। बहुतसे षड्यन्त्रकारी मार डाले गये, और अरालके खानको दो दिन बाद आकर खाली हाथ लौटना पडा।

१७३१ ई०में रूसकी शासिका रानी अन्ना (१७३०-४० ई०) थी। उसने कर्नल एर्दबेर्गको दूत बनाकर खीवा भेजा, लेकिन रास्तेमे ही डाकू उसपर टूट पडे, और सब माल गवाकर उसे पीछे लौटनेके लिये मजबूर होना पडा।

३ इलबर्स (—१७४० ई०)

शेरगाजीके तुरन्त ही या कुछ साल बाद इलबर्स खीवाका खान बना। यह कजाकोके खानवशका था। १७३९ ई०मे दिल्लीकी सडकोपर खूनकी नदिया बहा नादिरशाह जब लौटा, तो बुखाराके अमीर अबुल्फैजने उसे स्वागतका न्यौता दिया। उसने इलबर्सको भी इसकी खबर दी, जिसपर उसने जवाब दिया—"एक पापी आत्माको जबर्दस्ती तुम स्वर्गमें नही प्रविष्ट करा सकते।" नादिर जिस वक्त भारतमे लूटमार करनेके लिये गया था, उसी समय मैदान खाली पाकर इलबर्सने खुरासानको लूटा। भारतसे लौटनेपर चारबेकरसे नादिरने इलबर्सको अपने पास आनेके लिये सदेश भेजा, लेकिन जाकर नादिरके सामने कोर्निश करनेकी जगह इलबर्सके तीन हजार यामूद चारजूयपर चढ़ आये, जिन्हे नादिरके हाथो पिटना पडा। अबुल्फैजने बीचमें पडकर क्षमादान दिलानेका प्रयत्न किया, और इसके लिये अपने तीन दूत इलबर्सके पास भेजे। इलबर्सने दो दूतोको मरवा दिया और तीसरेको नाक-कान काटकर लौटाया। नादिर भला खीवाके खानकी इस गुस्ताखीको कैसे सह सकता था? उसने अपनी सेनाको दो भागोमें बाटकर खीवापर चढाई की। एक सेना वक्षुके बायें तटसे बढी, और दूसरी दाहिनेसे। साथमें बहुत-सी नावोका बेडा भी चल रहा था। नादिरकी सेना जल्दी ही हजारास्प पहुच गई। इलबर्स भी तैयार था। नादिरने हजारास्पसे आगे बढकर एक सेनाको खानकाह जानेका हुक्म दिया—इलबर्स उस समय खानकाहमें था। नादिरने आत्म-समर्पण करनेके लिये तीन दिनकी मुहलत दी। इसपर इलबर्स गर्दनमें तलवार और रस्सी बाधे नादिरके सामने आया, जिसने उसे माफ कर दिया। लेकिन इलबर्सने किसी खोजा (सैयद)का सिर कटवा लिया था। खोजाके पुत्रोने खूनका बदला लेनेकी माग की, जिसपर नादिरके हुक्मसे इलबर्स और उसके बीस अफसर मारे गये। खीवा छोड ख्वारेज्मके बाकी शहरोने नादिरके सामने आत्म-समर्पण किया। इस सघर्षके समय इलबर्सने लघु-ओर्दूके प्रसिद्ध खान अबुल्खैरसे सहायता मागी थी, और उसने आकर खीवापर अधिकार कर लिया था। इसी समय अबुल्खैरके बुलानेपर रूसी सैनिक इजीनियर ग्लादिशेफ, मुराविन और नजिमोर सिर-दरियाके मुहानेपर रूसी किला बनाने आये थे। वह दश्ते-कजाककी सर्वे कर चुके थे। खानको उसके डेरेमें न पा वह भी खीवा गये। अबुल्खैरने कुछ सुल्तानोंके साथ मुराविनको नादिरके पास भेजा, जिसने उनका अच्छा स्वागत किया। उसने अबुल्खैरको बुला भेजा, लेकिन वह नादिरपर क्यो विश्वास करने लगा? नादिरकी कृपासे खीवाको हाथमे रखनेकी जगह अबुल्खैरने देश लौट जाना ही अच्छा समझा। खीवाके नागरिकोने चार दिनतक नादिरके आक्रमणको विफल करनेकी कोशिश की, लेकिन अन्तमें आत्म-समर्पण करना पड़ा। नादिरने चार हजार तरुण उज्बेकोको अपनी सेनामे भर्ती करके खुरासान, और बारह हजार रूसी तथा ईरानी गुलामोको मुक्त करके अपने घर भेज दिया। उन्हीके बसनेके लिये नादिरने अबीवर्दके पास एक नया शहर बसाया।

४ ताहिरखान (१७४०–४१ ई०)

इलवर्सके मारे जानेके वाद बुखारा-खानके सववी ताहिरको खीवाका खान वना नादिर चारजूयकी ओर लौट पडा। ताहिर वहुत समयतक राज्य नही कर पाया। अगस्त १७४१ ई०में नादिर कास्पियनके पश्चिमी तटवर्ती दागिस्तानमें लडाईमें फसा था। इसी समय उज्वेक अरालियोने अवुल्खैरके पुत्र नूरअलीको बुलाया, जिसने खीवा पहुचकर ताहिरको मार डाला। थोडी देरके लिये नूरअलीने शासन सभाला, लेकिन जव नादिरशाहके फिर आनेकी खवर मिली, तो वह कजाकोंमें भाग गया। नादिरकी सेना नसरुल्ला मिर्जाके नेतृत्वमें मेर्व पहुची। विद्रोही नेता एर्तुक ईनकने वहा जाकर क्षमा मागी, नादिरने उसे माफ कर दिया।

५ अवुल् मुहम्मद, इलबर्स-पुत्र (१७४१ ई०)

इलवर्सका पुत्र अवुल् मुहम्मद नादिरकी शरणमें था। नादिरने उसीको खीवाका खान और एर्तुकको उसका वजीर वनाया। एर्तुकको वहुत जल्दी उज्वेक और यामूद विद्रोहियोने मार डाला और खान अवुल् मुहम्मद भी खीवासे लुप्त हो गया।

६. अवुलगाजी II (१७४५ ई०)

विद्रोहियोने अव अवुलगाजीको अपना खान वनाया। इस समय उज्वेकोंके साथ-साथ तुर्कमान यामूद कवीलेका भी खीवा-राज्यमें वहुत जोर था। उधर ईरान नही चाहता था, कि खीवावाले उसके हाथसे निकल जाय। विद्रोह होते ही रहते थे। ईरानी जेनरल अलीकुल्लीने १७४५ ई०में ख्वारेज्मपर आक्रमणकर उरगजके पास यामूदोको हराकर वलखानकी पहाडियोकी ओर भगा दिया, और नये खानको नियुक्त करके ईरानका रास्ता लिया।

७ काइप, वातिर-पुत्र (१७५० ई०)

वातिर शायद कराकल्पकोका खान था। १७५० ई०मे इरवेक नामक एक दूतने रूसमें जाकर कहा था, कि खीवा जानेवाले कारवाको वातिरके राज्यके भीतरसे आना चाहिये, नूरअलीके राज्यके भीतरसे आना सुरक्षित नही है। इसी समय कजाक अरालियोपर आक्रमण करके उनके वहुतसे आदमी और पशु पकड ले गये। ये नूरअलीके आदमी थे, इसलिये खीवामें नूरअलीके प्रजाजनोको पकडकर उन्हे लूटका माल लौटानेके लिये मजवूर किया गया। वातिरका पुत्र काइप खीवामें आनेसे पहले लघु-ओर्दूके एक कवीलेका खान रह चुका था। काइपने नूरअलीके राज्यसे ओरेनवुर्ग जानेके रास्तेको वद कर दिया—रूसियोंके व्यापारका केंद्र होनेके कारण ओरेनवुर्गसे व्यापारियोको वहुत फायदा था। काइपके हुक्मका वदला लेनेके लिये १७५३ई०में नूरअलीने खीवाके कारवाको लूटा और रूससे कहा, कि यदि तोपखानेके साथ दस हजार सेना मिले, तो रूसके लिये हम खीवाको जीत सकते है। लेकिन रूसियोने उसे माननेसे इन्कार ही नही कर दिया, वल्कि हुक्म दिया, कि लूटे मालको उसके मालिकोको लौटा दो। रूस इस तरह खीवासे निरवाध व्यापार होने देना चाहता था, लेकिन मध्य-एसियाके शासको और अमीरोंके लिये लूट तो एक वैध आय थी। १७५४ ई०में काइपने खीवामें आये एक रूसी कारवाको रोक लिया, और साल भर वाद उसे छोडा। काइपके दूतने रूसमें जाकर कहा, कि उज्वेक हमारे खानको पसद नही करते, इसलिये उसकी मददके लिये रूसको हाथ वढाना चाहिये। रूसने इन्कार कर दिया,। नूरअली और उसके पुत्र एरलीके पकडे जानेपर मुक्ति-धन देकर छुडानेका वचन देते हुये सेना एकत्रित की। सेनाको आशीर्वाद देनेके वक्त खोजाने ऐसा करनेसे मना कर दिया।

काइप विद्वान् और साथ ही अत्यन्त क्रूर आदमी था। उसकी क्रूरताके कारण लोगोंने विद्रोह करके उसे लघु-ओर्दूके कजाकोंमें भागनेके लिए मजवूर किया, जिनके ही भीतर रहते

१७७० ई०में वोल्गा तटके तोरगूत मगोलोके प्रस्थानके समय उसने उनपर आक्रमण करके "गाजी" (धर्मयोद्धा)का नाम पाया। पीछे १७८६ ई०में लघु-ओर्दूके एक कवीलेने उसे अपना खान भी चुना। काइपने अमीर-बुखारा अबुल्फैज खाकी लडकी व्याही थी। उसकी मृत्यु १७९१ ई० के आसपास हुई।

८ अबुलगाजी III (--१७५५ ई०)

खीवामे अब वास्तविक शक्ति ईनको (प्रधान-मत्रियो)के हाथमें थी। उज्वेकोमे ककुरत (कुनगरद) कवीलेका प्रभाव छिङ्-गिस् (चिंगिस) खानके समयसे ही वहुत था, यह हम पहले वतला आये है। मूलत यह मगोल कवीला था, जो पीछे तुर्क वन गया। ककुरतोके वी (वेग या अमीर) वशानुवश क्रमसे ईनक (वजीर) तथा हजारास्पके राज्यपाल होते आये थे। १८वी सदीमे बुखारा और खीवा दोनोमे हालके नेपाल और पिछली सदी तकके जापानकी तरह दो राजा हुआ करते थे। खानको वस अच्छा-अच्छा खाना और सुनहला जामा पहनकर मौज करनेकी छुट्टी थी। उसके दरवारमें सलाम करनेके लिये प्रति दिन ईनक और वडे-वडे दरवारी जाते थे। राज्यका सारा काम ईनकके हाथमें था। प्रत्येक शुक्रवारको दरवारी महलमें जाते, जहा खानके पास ईनक वैठता। जव नमाजका वक्त आता, तो ईनक खानको उठनेमे सहारा देता, उसे मस्जिद ले जाता, और नमाजके वाद लौटा लाता। खीवाके खान इसी तरहके गुडिया खान थे, जिनका काम था ईनकोके हाथमे नाचना। इसी गुडिया-खानकी जगह लेनेके लिये कजाको या कराकल्पकोमेंसे किसी छिङ-गिस्-वशीको लाया जाता, और जवतक पसद आता, रखकर उसे निर्वासितकर किसी दूसरेको खान वनाया जाता। इशमद वी सवसे पुराने ईनकोमेंसे था। पता लगता है, कि उसके वाद उसका पुत्र मुहम्मद अमीन १७५५ ई०में ईनक वन सत्रह साल-तक शासन करता रहा। इसके शासनकालमे खीवाकी समृद्धि वढी। उस समय खीवाका अपना कोई सिक्का नही था, ईरान और बुखाराके सिक्के ही वहा भी चलते थे। शुक्रवारकी नमाजके खुतवेमें गुडिया-खानका नाम लिया जाता था। मुहम्मद अमीनकी मुहरपर खुदा हुआ था—"अल्लाह और पैगम्वरकी मेहरवानी, खानका एक दास, जिसपर वह विश्वास कर सकता है।" जिस तरह खीवामे ईनकोकी चलती थी, उसी तरह बुखारामे इसी समय अतालीकोकी चल रही थी। बुखाराका अतालीक दानियाल वी ईनक मुहम्मद अमीनका गहरा दोस्त था, जिसने हाथसे निकल गये अधिकारको पानेमें अमीनकी मदद की थी। मुहम्मद अमीनके वाद उसका पुत्र एवज ईनक वना। यह वडा ही समझदार और सादगीसे रहनेवाला आदमी था। इसके समय यामूदो (तुर्कमानो), मगिशलको (तुर्कमानो) और कजाकोने विद्रोह किया, जिसमे उसके अपने सवधी तथा अरालके ककुरतोके नेता तुरासूफीने भी विद्रोहियोका साथ दिया।

अक्तूवर १७९३ ई०में रूसी डाक्टर मेजर ब्लाकेन्नागेल् खीवा पहुचा। गुप्तचर समझकर उसे शहरके नजदीक एक घरमे नजरवन्द करके मारना चाहते थे, किन्तु ईनकके भाई, वुढापेके कारण अधे फाजिल वीको डाक्टरकी दवासे फायदा हुआ, जिससे उसका मान वढ गया। डाक्टरने वहुत समझाया, कि खीवावालोको मगिशलकमें जा रूसियोके साथ व्यापार करनेसे वहुत फायदा होगा, लेकिन आम एसियाइयोकी तरह खीवावाले भी यूरोपियोपर विश्वास नही करते थे। डाक्टरके लिखे-अनुसार उस समय खीवाके राज्यमे एक लाखसे अधिक आदमी नही थे, जिनमें उज्वेक ४१ प्रतिशत, सर्त (फारसीभाषी) १५ प्रतिशत, कराकल्पक १० प्रतिशत, यामूद ५ या ६ प्रतिशत थे। वाकी १८ या १९ प्रतिशत दास थ। खीवाकी सेनामें वारह या पद्रह हजार सिपाही थे, जिनमेंसे दो हजारके पास ही वन्दूकें थी, वाकी तलवार, भाला, तीर, कमानवाले थे। यामूद और करा-कल्पक सवसे अच्छे सिपाही माने जाते थे, जिनके वाद उज्वेकोका नम्वर आता था। उन समय काइपका पुत्र अवुलगाजी खान था, जो एकातमें रक्खा जाता, और साल भरमें तीन वार ही प्रजाके सामने आने पाता था।

१८०४ ई०मे ईनक एवज मर गया। भाइयो और दूसरे अमीरोने कुथमुराद वेकको ईनक

वनाया, लेकिन उसने अपने भाई इल्तजारके लिये पदको लेनेसे इन्कार कर दिया। इल्तजारने छ महीनेतक ईनकके तौरपर काम किया। वह रोज खान (कजाक)के पास मुजरा करने जाता। एक रात उसने अपने भाई कुतुलुक मुरादको वुलाकर कहा—"तैमूर लग, नादिरशाह और वुखारा-अमीर मुहम्मद रहीम कौनसे छिङ-गिस्-वशके खानोके पुत्र थे, उन्होने अपन भाग्यको अपने आप वनाया। अल्लाहकी मेहरवानी है, कि मेरे पास निर्णय करनेकी शक्ति, साहस और सिपाही हं। कवतक मैं इस गुडियाको सम्हाले वैठा रहूगा? मैं स्वय खान वनना चाहता हू। इसके वारेमे तुम्हारी क्या सलाह है? मै कजाक खानको कुछ पैसा देकर उसे उसके घर भेज दूगा, और फिर यामूदोसे पिंड छुडाऊगा।" भाईने उसकी वातका समर्थन करते हुये फातेहा पढा। दूसरे दिन इल्तिजारने गुडिया-खानको किलेसे निकालकर कजाकोमे भेज दिया और फिर अपने गद्दीपर वैठने हुये ककुरत राजवशकी स्थापना की।

§२ ककुरत-वश (१८०४-८१ ई०)

इस वशमें निम्न खान हुये—

१. इल्तजार, ईरज-पुत्र, एवज-पुत्र	१८०४-६ ई०
२ मुहम्मद रहीम, इल्तजार-पुत्र	१८०६-२५ "
३ अल्लाकुल, मुहम्मद रहीम-पुत्र	१८२५-४२ "
४ रहीमकुल, अल्लाकुल-पुत्र	१८४२-४५ "
५ मुहम्मद अमीन, अल्लाकुल-पुत्र	१८४५-५५ "
६. अब्दुल्ला, इवादुल्ला-पुत्र	१८५५ "
७ कुतुलुक मुराद, इवादुल्ला-पुत्र	१८५५ "
८ सैयद मुहम्मद, मुहम्मद रहीम-पुत्र	१८५५-६५ "
(मुहम्मद फना, तुरासूफी-भतीजा)	१८६५ "
९ सैयद मुहम्मद रहीम, मुहम्मद-पुत्र	१८६५ "

१ इल्तजार, इराज-पुत्र, एवज-पुत्र (१८०४-६ ई०)

जानेवाले खानसे इल्तजारने कहा था—मै दूसरे खानको वुला रहा हू। उसने अपनी सेना वढा दस हजार उज्वेकोको कवचवद्ध किया, फिर मौलवियो, दूसरे धार्मिक नेताओ, अतालीको, ईनकोको वुलाकर कहा, कि दूसरे कजाक-खानके वुलानेकी जरूरत नही। उइगुर अतालीक वेक फुलाद सहमत नही हुआ, वाकी सवने फातेहा पढकर दुआ मागी। इल्तजार उस समय चुप रहा। वडे दरवारियो, आलिमो और कवीलोंके अकसक्कालो (ज्येष्ठो)में उसने खलअत और इनाम वाटे, उसके नामसे खुतवा पढा गया। यामूदोको छोड उज्वेको, कराकल्पको और तुर्कमानोने नये खानको वधाई दी। इल्तजार जानता था, कि अन्तमें मेरे भाग्यका फैसला तलवार द्वारा होगा, इसलिये उसने अपना सारा ध्यान सेनाको वढाने और मजवूत करनेमें लगाया। तैयारी हो जानेपर वह सरकश यामूदोके ऊपर पडा, जो कि उस समय अस्त्रावाद (ईरान) और गूरगानके इलाकोमें रहते थे। उसने उनसे माग की—लूटपाटके जीवनको छोड दो, ऊट-भेड-फसलपर कर दो, नहीं तो हमारे राज्यमे निकल जाओ। उज्वकोको लूटनेवाली यामूदोकी एक टोलीके मुखियाको नाकमें रस्सी डालकर वाजारमें घुमाया गया, लेकिन यामूद घुमन्तुओका लूटना तो पीढियोसे व्यवसाय था, उसे वह भला कैसे छोडते? इल्तजार भी निश्चय कर चुका था। उसने एक वार आक्रमण करके पाच सौ यामूदोको मारा, पाच सौको कैदी वनाया, वाकी प्राण लेकर रेगिस्तानमें भाग गये। अराल द्वीपवाले भी लूट-मारमें तग कर रहे थे, इसलिये इल्तजार उनके नेता तुरासूफीके ऊपर पड़ा, पर उसे असफल होकर ही खीवा लौटना पडा। उसने वुखारामें लूट-मार करके धन जमा करना चाहा, लेकिन वेक पुलादने इसे वुद्धिमानीकी वात नही कही। इसपर वह पुलादसे नाराज हो गया, और दरवार छोडते समय उसे मरवा दिया। पुलादके

परिवार तथा कबीले (उइगुर)ने विद्रोह किया, इसपर इल्तजारने उइगुर-उज्बेकोका भीषण हत्याकाड किया। जो कत्ल होनेसे बचे, वे भाग गये, बाकियोने 'भेडिये द्वारा जबर्दस्ती लादी शाति'के सामने सिर नवाया। इल्तजारने अपने राज्यकी सीमाको बढानेकी कोशिश की। उस समय उरगजमे एक बडा पुराना खानदानी सैयद अब्लेखोजा रहता था। इल्तजारने विना बापकी मर्जीके उसकी लडकी ब्याह ली। इसपर खोजाने बुखारा भाग गये यामूदोको लूटका प्रलोभन देकर बुलाया, और उरगजमें उन्हे रहनेके लिये जमीन दी। अब खान लोगोपर पहलेसे भी ज्यादा खुलकर अत्याचार करने लगा। बाहर अब भी इल्तजारके अभियान चलते रहे। १८०५ ई०में वह बुखाराके ऊपर चढा। उस समय अमीर-बुखाराका दूत अब्दुल करीम जारके दरबारमे जाते हुये उरगज आया था। उसे जल्दी ही करशी पहुचकर राज्यपाल बननेका प्रलोभन दे तैयारी करनेके लिये कहा। महीने बाद इल्तजारने बुखाराके इलाकेमें घुसकर लूट-मार की, और वहासे पचास हजार भेडे तथा हजारो ऊट लूट लाया। अमीर-बुखाराने तैयारी करके मुहम्मद नियाज बीको तीस हजार सेना देकर रवाना किया। इधर इल्तजार भी तेक्के, यामूद, सलार, चन्दोर, अमीरअली, बूजेजी, कफुरत, ककली, मगित आदि तुर्कमान और उज्बेक कबीलोके बारह हजार जवानोको लिये वक्षुके किनारे-किनारे चला। उसने बुखाराकी पहली टुकडीपर अकस्मात आक्रमण कर बुखारी दादखाहके पुत्रको खतमकर पाच सौ आदमियोको मारा या पकड लिया। बदी रस्सीमे बधे इल्तजारके तम्बूपर लाये गये। खीवाकी सेनाने बुखारियोके लौटनेके रास्तेको भी काट दिया था, अत बुखारियोके लिये लडने-मरनेके सिवा कोई रास्ता नही था। वह खूब लडे। खीवावाले हार गये। उनके बहुतसे आदमी भागते वक्त नदीमे डूब गये। इल्तजारने नावमे बैठकर भागना चाहा। उसके बहुतसे साथी भी प्राण बचानेके लिये उसी नावपर सवार हो गये, और बोझके मारे नाव डूब गई—बहुतसे आदमियो-के साथ इल्तजार भी वक्षुमे डूब मरा। उसके भाई हसनमुराद और जानमुराद भी डूब मरे। मुहम्मद रहीम बुखारियोके हाथमे बन्दी बना और सिर्फ कुतुलुक मुराद बक बचकर खीवा पहुचा। यह घटना १८०६ ई०की है।

२. मुहम्मद रहीम, इल्तजार-पुत्र (१८०६—२५ ई०)

बुखारामे उस समय अमीर हैदरका शासन था। खीवावालोंसे निर्दयतापूर्वक व्यवहार करके खूनी झगडेको और बढाना उसने पसद नही किया, और बदियोको क्षमा करके उन्हे खलअत और इनाम दे मुक्त कर दिया। इस दयाके लिये कुतुलुक मुरादने अपने भावोको प्रकट करते हुये कहा—"मैं अमीर हैदरका कुत्ता, दास हू, उसका हुक्म माननेके लिये तैयार हू।" कुतुलुक मुरादको ईनककी पदवी देकर अमीर हैदरने खीवाका राज्यपाल नियुक्त किया था, लेकिन उसके आनेसे पहले ही ख्वारेजिमयोने उसके छोटे भाई मुहम्मद रहीमको खान बना दिया था। कुतुलुकने भी उसे स्वीकार किया, और बुखाराके अमीरके पास लिखकर अपनी मजबूरी प्रकट की। अरालियोने इसी समय उज्बेकोको लूटा-मारा। नये खानके चचा मुहम्मद रजाबेकने उइगुरोके विद्रोहके समय उनका साथ दिया था। उसने अब भी विद्रोह करना चाहा, लेकिन उसे हारना पडा। कजाकोके कई साल लूट-मार करनेका जवाब खानकी ओरसे था, जाडोमें रजाबेकका चेकली, तुर्तकारा (शेरगाजी), चूमेके, जलैर (बुल्की-सुल्तान)के कजाकोको लूटने जाना। कजाकोने मजबूर होकर सौ भेडोपर एक भेड खानको देना मजूर किया। शेरगाजी स्वय १८१९ ई०मे खीवा-दरबारमे आया, और वही मरा। उसके बाद रहीम खानने अपने बेटेको उसके स्थानपर नियुक्त किया, जिसे कजाकोने भी मान लिया। अगले साल तुर्तकारा और ओई कजाकोके ऊपर भी वैसी ही बीती। जाडोमे सरकश ककुरतोके अरालद्वीपपर बर्फके ऊपरसे चढाई की, लेकिन आक्रमण उतना सफल नही रहा, तो भी खीवाके एक शरणार्थी और उसके पुत्रने तुरासूफी मुरादके सिरको काटकर बोरेसे ला खानके सामने पेश किया। मुहम्मद रहीमने खुश होकर बाप-बटेको नौकर रख लिया। जब अराली ककुरतोको अपने नेताके मारे जानेकी खबर लगी, तो

उन्होने खीवाके सुल्तानकी अधीनता स्वीकार की । तुरामुरादके परिवार और खजानेको ले खानने खीवा लौटकर मुरादकी लडकीसे व्याह किया। पुराने खानके वशसे व्याह करनेके कारण अव वशका सम्मान वढ गया । रहीमने इल्तजारकी सैयद-पुत्री विधवाको भी व्याहा। अव्दुल्करीमने अव्दुर्रहीमको क्रूरतामें शैतान लिखा है। उसने गर्भिणी अराली स्त्रियोका पेट चीर गर्भके वच्चोको टुकडे-टुकडे करके अपनी पशुताका परिचय दिया था । रहीमने अपने विरोधियोको एक-एक करके मार डाला, या उन्हे देशसे वाहर निर्वासित कर दिया । उसके कठोर शासनके कारण यह फायदा जरूर हुआ, कि अव लूट-मार वन्द हो गई, और व्यापारी कारवासे कवीलोने मनमाना कर लेना छोड दिया । उसने कर की दर निश्चित कर दी, और कर उगाहनेके कस्टम (आयातकर) घर वनवाये । अपनी टकसाल स्थापित करके उसने खीवामें चादी-सोनेके सिक्के ढलवाये ।

ईरान शीया था । मध्य-एसियाके सुन्नी मुसलमान शीयोको काफिरसे भी वदतर समझ उनके ऊपर लूट-मार करना पुण्य कार्य समझते थे । १८१३ ई०में खीवावालोने खुरासानपर आक्रमण किया, लेकिन ईरानी सेनाने भी मुकाविला किया, और चार दिनकी झडपके वाद दोनो सेनायें पीछे हटी। लौटते समय रहीम खान गोकलान तुर्कमानोके ऊपर पडा, और उनमेंसे वहुतेरे वदी वनाये । फिर तेक्के तुर्कमानोके ऊपर धावा वोल उनके जीते हुये खेतोको छीनकर दक्षिणके नगे पहाडोमें खदेड दिया । इनमेंसे कुछ पीछे जाकर नहरके किनारेवाले इलाकेमें वस गये । रहीमने मगिशलकके इलाकेमें डेरा रखनेवाले चन्दोर तुर्कमानोको भी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजवूर किया। रहीमने तलवारके वलपर शाति स्थापित की। इससे खीवा और रूसके वीच कारवाका आना-जाना सुगम हो गया, और पूर्व तथा पश्चिमम व्यापार खूव वढा । रहीमको विना लडे चैन नही आता था। १८२० ई०में उसने वुखारापर चढाई की, और जाकर चारजूयको एक महीनेतक घेरे रखा । इसी वीच उसके सैनिक पडोसमें घुमक्कडी करनेवाले तेक्के तुर्कमानोको भी लूटते रहे । खीवावालोके पास रूसके साथ सवध होनेके कारण तोप भी थी, जिसने मदद अवश्य की, किन्तु विना फैसलेके ही दोनो सेनाओको लौट जाना पडा । रहीमका समकालीन अमीर हैदर भी वहुत मजवूत शासक था । अगले साल वह खुद सेनाके साथ आया। खीवाके नावोके वेडेको उसकी तोपोने रोक लिया। नदीमे पानी कम था, इसलिये दूर हटकर निकल भागनेका मौका नही मिला । रहीम खानके भाई कुतुलुक मुरादको हैदरने हराया। उसकी वहुतसी नावें नष्ट हो गयी, और खीवा-सेना पराजित हो पीछे लौटी । लेकिन १८२२ ई०में फिर कुतुलुक मुरादने वुखाराके राज्यमें कराकुल-तक लूट-मार की। मरते वक्त कुतुलुकने मुसलमान भाइयोपर वार करनेके लिये अमीर-वुखारासे क्षमा मागी—"सचमुच गाजीके लिये यह शोभा नही देता था।"

१९वी सदीके आरम्भमें काकेशसमें जारका शासन स्थापित हो चुका था, और अव पश्चिमी तटसे ही सतुष्ट न हो वह कास्पियनके पूर्वी तटपर भी अधिकार करनेके लिये व्यग्र था। उधर रहीम खानने पूर्वी तटपर रहनेवाले तुर्कमानोको वुरी तरहसे दवा रखा था, इसलिये रूस उससे फायदा उठाना चाहता था। १८१९ ई०में गुर्जी (जार्जिया)के राज्यपालने पूर्वी कास्पियनके तटपर रहनेवाले तुर्कमानो तथा खीवासे भी सवध स्थापित करनेके लिये मुरावेफको दूत वनाकर भेजा । मुरावेफ १९ सितम्वरको क्रास्नोवोद्स्कमें जहाजसे उतरा, और ६ अक्तूवरको खीवाके पास पहुचा । उस समय खान शिकारमें गया हुआ था । उसके आदमियोने मुरावेफको गुप्तचर समझ नजरवन्द कर खानने मुरावेफको मेहतर (वित्त-मत्री) आगा यूसुफके घरमें ठहरा दिया । फिर किसी तरह मुरावेफ खानके दरवारमें उपस्थित होनेमें सफल हुआ । मुरावेफने खानके वारेमें लिखा था—"वह अपने सफेद रगमे उज्वेकोसे अधिक रूसी-सा मालूम होता था ।" मुरावेफने राज्यपालका सदेश देते हुए कहा—"मगिशलककी जगह क्रास्नोवोद्स्क द्वारा व्यापार-सवध स्थापित करनेपर तीसकी जगह सत्रह दिनमें ही कारवा समुद्रतक पहुचने लगेंगे । लेकिन क्रास्नोवोद्स्कका इलाका उस वक्त ईरानी काजार-वशके हाथमें था, जव कि मगिशलक

खीवाका था, इसलिये खान कारवा-पथको कैसे वदल सकता था ? मुरावेफके लिखनेसे पता लगता है, कि उस समय खीवामें एक शासन-परिषद् थी, जिसका अध्यक्ष मेहतर यूसुफ आगा था। यूसुफ सर्त अर्थात् फारसी-भाषी ताजिक व्यापारीवर्गका प्रतिनिधि था। द्वितीय वजीर कुशवेगी उज्वेक, तीसरा खोजेश मेहरम खानके गुलामका पुत्र था, जो कस्टमका उच्चाधिकारी भी था । परिषद्के सबसे अधिक प्रभावशाली सदस्य थे—खानका भाई कुतुलुक मुराद और काजी (धर्माधिकारी) । परिषद्में चार प्रधान उज्वेक कबीलोके सरदार भी सम्मिलित थे ।

यह बतला आये है, कि खीवा उस वक्त गुलामोका बहुत भारी बाजार था, जिसमें रूसी गुलामोकी कीमत ज्यादा थी, लेकिन रूसी औरतोकी अपेक्षा ईरानी औरतें ज्यादा महगी विकती थी ।

मुहम्मद रहीम १२४१ हि०* मे मरा ।

३. अल्लाकुल, रहीम-पुत्र (१८२५-४२ ई०)

रहीमके मरनेपर उसका बडा बेटा गद्दीपर बैठा। इसने बापके जमा किये हुये खजानेको बरबाद करना शुरू किया । १८३२ ई०में मेर्वपर चढाई करके तेक्का तुर्कमानोपर कर लगाया, जिसके लिये खीवासे रेगिस्तान (कराकुम)के बीचसे मेर्व जाते रास्तेपर हर पडावपर कुआ खोदना पडा। सरख्शके सलोरोपर भी जबर्दस्ती कर लगाया। कर उगाहनेके लिये दोनो जगह कस्टम-गृह बनवाये । सरख्शसे लौटते समय अलमान्सके साथ बारनेस वहा आया था । उसने लिखा है—"नगरसे चद मीलपर लूटके मालको गिना गया—एक सौ पद्रह आदमी, दो सौ ऊट और उतन ही ढोर थे । उन्होने पहले ही लूटके मालको बाट लिया था, लेकिन पाचवा हिस्सा उरगजके खानको भी दिया ।" उस समय किजिलबासो (ईरानी शीयो)के ऊपर लूट करना धर्मयुद्ध माना जाता था, जसा कि स्पेनवाले मेक्सिको और पेरूमें अपने हाथोको खूनसे रगनको समझते थ, वह भी अपने लूटके मालका पाचवा हिस्सा स्पेनके राजाके पास भजते थे । इस प्रकार उससे कुछ ही शताब्दियो पहले स्पेनके युरोपीय भी उसी सिद्धातको मानते थे, जिसे १९वी सदीके आरम्भमे खीवाके सुन्नी मुसलमान ।

बापके समयसे ही लूटपाटके बन्द होनेके कारण ख्वारेज्ममें व्यापार चमक उठा था, और बुखारा उरगज-मगिशलकके बीच स्थलसे, फिर अस्त्राखानतक समुद्र-मार्गसे बराबर व्यापारिक कारवा आते-जाते रहते थे। अराल समुद्रके पूर्वी तटसे एक नया व्यापारमार्ग खोलनेके लिये रहीम खानके समय १८२० ई०में रूसियोने इस इलाकेकी सर्वे की । फिर पाच सौ सिपाहियो और दो तोपोंके साथ एक रूसी कारवा चला । खीवावाले क्यो पसद करते, कि उत्तरका मार्ग खुल जाय, जिससे उरगज और मगिशलकका समृद्ध वणिक्पथ उजड जाय। उनकी शहपर तुर्कमानोने रूसी काफिलेपर प्रहार किया, लेकिन उन्हे हारकर भागना पडा। तो भी काफिलेको अपने सौदेको जलाकर खाली हाथ पीछे लौटना पडा ।

पहली वार असफल होनेके बाद अब अल्लाकुलके शासनकालमे १८३५ ई०में रूसियोने मगिशलकके बन्दरगाहके पास अपना किला बना खीवावालोको डराना चाहा, लेकिन खानने उसकी परवाह नही की । इसी समय १२० रूसी इलाकेकी जाच-पडताल कर रहे थे, जिन्हे पकडकर खीवावालोने बुखाराके बाजारमें बेच दिया । इसपर १८३६ ई०मे जार निकोलाइ I के हुक्मसे ओरेनबुर्ग और अस्त्राखानमें खीवावाले व्यापारियोको पकड लिया गया । उसी साल अगस्तमे निज्नीनवोगोरदके मेलेसे लौटते खीवाके छियालीस व्यापारियोको भी जेलमे डाल दिया गया । यह स्मरण रहना चाहिये, कि बोल्शेविक-क्रातिसे पहलेतक निज्नीनवोगोरदका मेला दुनियाका सबसे बडा व्यापारिक मेला था। हमारे सोनपुर मेलेका नम्बर उसके बाद आता था । ओरेनबुर्गके रूसी राज्यपाल जेनरल पेरोव्स्कीने खानको कडे शब्दोमें लिखा—"तुम्हारी कार्रवाई बुरी है। बुरे बीजका बुरा फल पैदा होता है । तुम्हे चाहिये, कि रूसी बदियोको लौटा दो, और कजाकोंके भीतर दखल देने और लूट-मारको बन्द करो । ऐसा करनेसे रूसियोंके साथ

*१६ VIII १८२५–७VII १८२६ ई०

तुम्हारा-जैसा व्यवहार होगा, वैसी ही सुविधायें खीवावालोको रूसमे मिलेगी।" लिखा-पढी चलती रही, और दो सालमें सौ रूसी वदी लौटाये गये, लेकिन दूसरी ओर १८३९ ई०में ही खीवावाले दो सौ रूसी मछुओको कास्पियनसे पकड ले गये।

असफल रूसी अभियान (१८३९ ई०)—खीवाके खानकी गुस्ताखियोको शक्तिशाली रूस भला कवतक वर्दाश्त करता? और यह तो वह समय था, जव कि युरोपमे भी रूसकी धाक जमी हुई थी। जेनरल पेरोव्स्कीने २६ नवम्वर १८३९ ई०के जाडोमें छ हजार पैदल सेनाके साथ दस हजार ऊटोके ऊपर रसद ले ओरेनवुर्गसे प्रस्थान किया, लेकिन रास्तेमें उसे हिमविन्दुसे ४० डिग्री नीचेकी सर्दीका सामना करना पडा—नीचे वर्फकी ऊची ढेर थी, ऊपरसे भयकर हवा चलने लगी। हजारो सिपाहियोने हिम-आहत हो अपनी अगुलियो, पैरो और हाथोको गवाया, वहुतसे सर्दीमें मर गये। इस स्थितिका मुकाविला करते हुये जैसे-तैसे रूसी खीवाकी सीमा पर अकवुलाकमे पहुचे। खीवाका कुशवेगी (प्रधान-सेनापति) भी रूसियोंके मुकाविलेके लिये तैयार था। वर्फ आठ फुट मोटी थी। कजाकोने घोडोके झुडको दौडाकर वर्फमें रास्ता वनाया, जिसके दोनो तरफ वर्फकी दीवार खडी थी। सव कोशिश करनेपर भी आगे वढना सर्वनाशके मुहमें पडना समझ पेरोव्स्की लौट गया।

रूसियोको मध्य-एसियाकी ओर—अर्थात् भारतके सीमातके पास—पहुचनेकी कोशिश करते देख अग्रेज कैसे चुप रह सकते थे? मेजर टाड अग्रेजोके लिये अफगानिस्तान और वुखारामें अपना जाल विछा रहा था। उसने हेरातसे काजी मुहम्मद हसनको दूत वनाकर वुखाराके अमीरके पास भेजा। अमीरने मिलकर काजीको वहुत फटकारा, कि वह इस्लामकी भूमिमें काफिरोको घुसाना चाहता है। इसपर काजीने कहा—"अपने हथियारो, अनाज, सोना, खून और अपनी वुद्धिके साथ मुहम्मद शाहके हथियारोंसे ध्वस्त होते प्राचीरकी रक्षा करने अग्रेज आये। उन्होने काफिरोंसे सच्चे मुसलमानोकी रक्षा की।" और फिर अमीर वुखारासे पूछा— "काफिर कौन हैं? ईरानी किजिलवास हैं, जिनकी कि आपने रक्षा की, या अग्रेज जिन्होने कि सच्चे मोमिनोकी रक्षा की? वहुत समय नही वीतेगा, कि रूसके आक्रमणको रोकनेके लिये भी उनकी सहायताकी अवश्यकता होगी।" काजीने रूसका भय दिखलाकर वुखाराके अमीरको प्रभावित किया, और सफलताकी सूचना देत जरीके रेशमी थैलेके भीतर मेजर टाडके पास अपना पत्र भेजा।

वुखारामें सफलताकी आशा देखकर टाडने कप्तान एवटको खीवाके सुल्तानके पास भेजा। उसके हुक्मके मुताविक एवटने खानको रूसी कैदियोके छोड देने तथा स्वय अस्त्राखानमें जा वहा पकडे गये खीवाके व्यापारियोको छुडानेकी कोशिश की। एवट १८४० ई०के वसतमें चला था, जव कि अभी-अभी जेनरल पेरोव्स्कीका अभियान भयकर आफतमे पडनेके वाद नष्टप्राय होकर लौटा था। उस समय खान एक काले तम्वूमें वैठा था, जव कि एवट उससे मिलने गया। एवटने जूता निकाल परदा उठाकर भीतर प्रवेश किया, फिर अपने हाथोको अदवसे छातीपर रखकर "सलाम् अलेकुम्" कहकर वातचीत की। खानने उसके साथ वडा अच्छा वर्ताव किया। उसके आनेकी खवर सुनकर स्वागत करनेके लिये पहले ही सैनिक भेजे थे। नगरके वाहर वजीरके एक महलमें एवटको टिकाया गया था। एवटने पहलेसे खीवामे वन्दी अग्रेज गुप्तचर कर्नल स्टोडर्टको छोड देनेपर जोर दिया। एवटने यह भी कहा, कि खीवा यदि अग्रेजोंसे मदद पाना चाहता है, तो रूसी वदियोको छोडना जरूरी है। स्टोडर्ट वुखाराके अमीरके वदीखानेमें था। खीवा-खानने उसे छोडनेके लिये अपना दूत वुखारा भेजा। कास्पियन और ओरेनवुर्गकी ओरसे जिस तरह रूसका फौलादी पजा मध्य-एसियाकी ओर वढता आ रहा था, और जिस तरह हिन्दुस्तानमे मुस्लिम वादशाहतको खतम करके अग्रेजोने अपना राज्य कायम किया था, उसे देखते हुये मध्य-एसियाके शासकोकी नींद हराम हो गई थी। अग्रेजो और रूसियोको वह एक तरफ आग और दूसरी तरफ खड्ड-सा देखते थे, इसलिये किसी निश्चय पर पहुचना उनके लिये आसान नही था। तो भी रूसका खतरा विलकुल सामने था—पेरोव्स्की यद्यपि इस साल सफल नहीं हुआ था, लेकिन एक वारकी असफलतामे खीवावाले कैसे अपनेको सुरक्षित समझ लेते? इसीलिये अल्लाकुल

समझा-बुझाकर कर्नल स्टोडर्टको छोड देनेके लिये बुखाराके अमीरको तैयार करना चाहता था। एवटने अपनी एक मुलाकातमे फारसी अक्षरोमे लिखे एक नक्शेको अल्लाकुलके सामने रखकर वतलाया, कि इगलैडका स्वार्थ इसीमे है कि मध्य-एसिया रूसके हाथमे न जाय। हम मध्य-एसियाके राज्योको स्वतत्र और तटस्थ देखना चाहते है, और रूसके मनसूबेको असफल करनेमें सहायता देनेके लिये तैयार है। लेकिन खान रूसकी शक्तिको ज्यादा अच्छी तरह जानता था, इसलिये उससे बहुत भयभीत था। उसने चादीकी तरह सफेद चमकते तीन पौडके एक तोपके गोलेको दिखलाकर एवटको वतलाना चाहा, कि रूसी बहुत जवर्दस्त शक्ति रखते है। एवटने साफ देखा कि जवतक रूसी तोपका यह सफेद गोला खानके तम्बूमे रहेगा, तबतक उसे कुछ भी साहस नही होगा, और मुझे अपने काममे सफलता नही मिलेगी।

एवटके काममें सबसे वाधक मेहतर था, जो रूसी वदियोके छोड देनेपर जोर देनेके कारण एवटको रूसियोका गुप्तचर समझता था। एवटके बहुत कहनेपर मेहतरने कहा—अगर हमारे भाग्यमें यही लिखा होगा, तो फिर क्या चारा? इसपर एवटने कहा—तो इसका अर्थ है खीवाको रूसियोके हाथमे दे देना। मेहतरने गुस्सेमे आकर कहा—"आह! अगर हम काफिरोसे लडते मारे गये, तो सीधे स्वर्गमें जायगे।" इसपर एवटने जवाव दिया—"और तुम्हारी औरते? तुम्हारी बीविया और लडकिया रूसी सिपाहियोकी गोदमें जाकर किस तरहके स्वर्गको प्राप्त करेंगी?" ईरानसे आये हुये दूतने जव ईरानी गुलामोको छोडनेके लिए कहा, तो अल्लाकुलने जवाब दिया—"मुहम्मदशाहको कहो, कि अभी वह वच्चा है, अभी उसे दाढी भी नही आई है। वह क्यो नही पहले रूसियोको ईरानसे निकालता?" दरअसल खीवा ऐसी परिस्थितिमें था, कि उसके लिये इस समय कुछ भी निश्चय करना बहुत मुश्किल मालूम होता था। प्रस्थान करते वक्त एवटने खानसे कहा था—बडी सावधानीसे काम करनेकी जरूरत है। खानने जवाव दिया—"यह बहुत मुश्किल है। दुनिया भरमे मेरे राज्यको छोडकर रूसियोको कोई दूसरा युद्धक्षेत्र नही मिलता।"

एबट सुरक्षित तौरसे कास्पियनके तटपर गुयेदिकके वन्दरगाहमे पहुचा, लेकिन जले-भुने वजीरने ऐसी चाल चली, कि वन्दरगाहपर एवटको जहाज नही मिला। फिर वह वहासे चार दिनके रास्तेपर दक्षिणमे अवस्थित रूसियोकी फौजी चौकी दाशकलाकी ओर रवाना हुआ। चोकीपर पहुचनेमे दस घटेका रास्ता रह गया था, जव कि उज्वेकोने उसे लूट लिया। एवटकी दो अगुलिया टूटी, और सिर भी फूटा। फिर उन्होने उसे ले जाकर घुमन्तुओंके डेरेमें रखकर वहुत बुरा वर्ताव किया। टाडने अखुन्द-जादा नामक अफगानको भेजा, जिसने एवटको छुडाकर रूसकी ओर रवाना किया। हेरातमे टाडके पास एवटके मरनेकी खवर पहुची। जिसपर उसने लेफ्टिनेंट शेक्सपियरको खीवाके साथ फिर वातचीत करनेके लिये भेजा। लेकिन खानने उसकी वातोपर अविश्वास प्रकट करते हुये कहा—"यह क्या वात है, जो हमारेसे इतनी दूर रहनेवाला तुम्हारा देश हमारे देशके साथ मित्रता करनेके लिये इतना उतावला है?" शेक्सपियरने जवाव दिया—"हमारे पास भारत-जैसा एक विशाल उद्यान है, कही कोई उसपर टूट न पडे, इसलिये हम अपने वगीचेके चारो ओर दीवारे खडी करना चाहते है, और वे दीवारें है—खीवा, बुखारा, हिरात और कावुल।" याकूब मेहतरने काफिर कहकर जब ताना मारा, तो उसका जवाव शेक्सपियरने दिया—"हममेंसे कौन काफिर है? तुम, जो कि कभी न बुझनेवाली ईर्ष्याके कारण रोज गुलामोको सासत देते हो, वापसे लडकियोको, पतिसे पत्नीको जवर्दस्ती छीनकर अपनी वाजारोमें सबसे अधिक दाम देनेवालोके हाथ वेंच देते हो। या हम जो कहते है—ये अभागे लोग मुक्त कर दिये जाय। इन्हें इनके देश और परिवारमें भेजनेकी कोशिश करते है।"

शेक्सपियर कुछ सफलताके साथ विदा हुआ। ४२० रूसी वदियोको मुक्त करा पुराने उरगजसे रवाना हो वहा समुद्र तटपर पहुचा, फिर वहामे नाव पकडकर अस्त्राखान, आगे राजधानी पीतरवुर्ग-में गया। जारने उसकी सेवाओके लिये वहुत सम्मान करते, उसे रूसी 'सर'की उपाधि प्रदान की।

जुलाई १८४० ई०मे अल्लाकुल्लीने समझ लिया, कि रूसियोंके साथ झगडा मोल लेना अच्छा नही है। उसने घोषणा करके रूसी दासोंके व्यापारको वद कर दिया, और रूसके राज्यमें लूटपाट मचानेकी मनाही कर दी। लेकिन इसी समय ईरानी गुलामोको छोडनेके लिये जोर देनेसे झगडा

बढनेकी सम्भावना देख ईरानी शाहने अग्रेज कप्तान कोनोलीको खीवा भेजा । खानने ईरानी गुलामोको छोडनेसे इन्कार कर दिया। कोनोली खीवामें चार महीना रहा। इसी समय हिरातके राज्यपाल यार मुहम्मदने मेजर टाडके षड्यत्रोंसे परेशान होकर उसे हिरातसे निकाल दिया, और खीवाको भी लिखा, कि अग्रेज गुप्तचरको अपने पास न रक्खें। किन्तु खानने यार मुहम्मदकी बात न मान कोनोलीको खलअत दी, और उससे कहा—खीवाको अपना देश समझिये और इस महलको अपना घर। लेकिन याकूब मेहतरने कोनोलीको पसद नही किया। धीरे-धीरे उसने खानपर प्रभाव डाला, और अन्तमें कोनोलीको उसने कहा—"तुम हमारे रास्तेमे बाधक हो। अगर तुम यहासे विदा हो जाओ, तो मुझे इसके लिये दुख नहीं होगा।" खीवामे असफल हो कोनोली खोकन्दपर अग्रेजोका डोरा डालने गया, जहासे बुखारा जानेपर उसने अपने प्राण गवाये, यह हम बतला चुके है।

रूस भी मध्य-एसियाके खानको हर तरहसे अपनी ओर करनेकी कोशिश करता रहा । १८४० ई०में लेफ्टिनेंट आइतोफ मध्य-एसियाकी यात्रासे पीतरबुर्ग लौटा, फिर कप्तान निकिफोरोफ १८४२ ई०मे खीवा भेजा गया, जिसने रूस और खीवाके बीच पहली सधि करवानेमें सफलता पाई। अभी वह खीवा हीमें था, जब कि अल्लाकुल मर गया।

४ रहीमकुल, अल्लाकुल-पुत्र (१८४२-४५ ई०)

रहीमकुलके गद्दीपर बैठते ही जमशेदियोने विद्रोह कर दिया। जमशेदी ईरानी कबीला था, जो मुरगाबनदीके बायें तटपर रहते थे । उनमेंसे दस हजारको जबर्दस्ती ले जाकर ख्वारेज्मके इलाकेमें वक्षुतटपर किलिजबेके पास बसा दिया गया था। जमशेदियोंके विद्रोहसे प्रोत्साहित होकर मेर्वके पास डेरा रखनेवाले सारिक तुर्कमान भी बिगड उठे। रहीम खानने अपने छोटे भाई मुहम्मद अमीनको पद्रह हजार सेनाके साथ तुर्कमानोको दबानेके लिए भेजा, लेकिन रेगिस्तानमें उसको बहुत क्षति उठानी पडी। उधर अमीर-बुखाराने हजारास्पका मुहासिरा कर रक्खा था। खानके भाईने अमीरकी सेनापर टूटकर उसे हराके सधि की। तीन साल शासन करनेके बाद रहीमकुल मर गया।

५ अमीन, अल्लाकुल-पुत्र (१८४५-५५ ई०)

रहीमके मरनेके बाद उसका भाई गद्दीपर बैठा, जो कि वाम्बेरीके अनुसार आधुनिक कालके ख्वारेज्मके खानोंमें सबसे बडा था। अमीनने तख्तपर बैठते ही सारिकोको सर करनेके लिये अभियान किया, लेकिन वह छ चढाइयोंके बाद काबूमें आये। मेर्वके किले तथा पामके योलोतेन किलेको भी उसने ले लिया। उसके लौटनेपर सारिकोने खान द्वारा नियुक्त राज्यपाल और छावनीकी सेनाको मार डाला। लडाई फिर शुरू हो गई। अबकी बार सारिकोंके पुराने दुश्मन जमशेदी और उनका नेता पीर मुहम्मद भी अमीनके साथ थे। विजय करनेके बाद अमीनने बडी तडक-भडकके साथ खीवामें प्रवेश किया। उसने तेक्कोंके विद्रोहको भी दबानेमें सफलता पाई। निम्न सिर-उपत्यकामें कजाक डेरा डाले रहते थे, वह खोकन्दकी प्रजा थे। उनके लिये खोकन्दसे खीवाका झगडा हो गया। १८४६ ई०म खीवाने सीमातपर खोजा नियाज बी किला बनवाया। लेकिन कजाकोको खोकन्दका खान ही नहीं बल्कि रूमी भी अपनी प्रजा मानते थे, इसलिये दश्ते-कजाक पूरी तौरसे अपने हाथमें करनेके लिये १८४७ ई०में रूसियोंन दश्तमें कितने ही किले बनाये। इसी साल अराल समुद्रपर राइम्स्क या अरालस्क नामक रूसी किला बना। खीवावाले कजाकोंको दबाना चाहते थे। उनके दो हजार सैनिकोने आक्रमण करके हजारसे अधिक कजाक-परिवारोको पकड लिया, जिसके लिये रूसियोने आक्रमणकर कजाकोको छुडा खीवा-वालोंको दड दिया। १८४८ ई०मे इस इलाकेमें कई बार लूट-मार होती रही। निम्न-सिरमें अब खोकन्द, खीवा और रूस तीनोका झगडा चल रहा था। १८५३ ई०में जेनरल पेरोव्स्कीने आक्रमण करके निम्न-सिरपर बनाये गये खोकन्दियोंके किलोको तोड दिया।

दक्षिणमें तुर्कमान-भूमि अभी भी खीवाके लिये काटा बनी हुई थी । १८५५ ई०में अमीनने सरख्सके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन उधर ईरानी शाह भी निर्बल नही था। मशहदके राज्यपाल फरीदून मिर्जाने हमला किया । हारकर अमीन लौट रहा था, इसी समय धोखेसे पकड लिया गया। उसके साथके दो सौ ख्वारेज्मियोमेंसे कितने ही मारे गये और कितने ही भग गये। खानको वही काट

दिया गया, और उसके तथा २६९ दूसरे मुडोको शाहके पास तेहरान भेज दिया गया। इन सिरोके ऊपर पहले एक रौजा बनाया गया, लेकिन इमामजादाकी सतान होनेसे वहा पूजा चल निकली, जिसके डरके मारे ईरानियोने उसे तोड दिया। हम देख चुके है, कि अमीन और उसका वश सैयद-जादियोकी सतान था।

६ अबदुल्ला, इबादुल्ला-पुत्र (१८५५ई०)

ईरानियोके सामने भागकर लौटी सेनाने खाली गद्दीपर कुतुलुक मुरादके पौत्र तथा इबादुल्लाके पुत्र अब्दुल्लाको बैठाया। गद्दीके लिये आपसमे झगडा हो गया। इस गडबडीसे फायदा उठा पद्रह हजार यामूद तुर्कमानोने आक्रमण कर दिया। खान मुकाबिलेके लिये सेना लेकर गया। किजिलतेकेरमे लडाई हुई। खीवावाले बुरी तरहसे पिटे और उनका खान अवदुल्ला मारा गया।

७ कुतुलुक मुराद, इबादुल्ला-पुत्र (१८५५ई०)

मृत खानकी जगहपर उसका १८ वर्षका भाई २० जिल्हिजा १२७१ हि० (३ सितम्बर १८५५ ई०)को गद्दीपर बैठाया गया, जो हालके युद्धमें घायल हुआ था। यामूदोका विद्रोह चल रहा था। सारे राज्यमे अशाति फैली हुई थी। इसी समय उत्तरके कराकल्पकोने यारलिक तुराको अपना खान बनाकर विद्रोह कर दिया। कुतुलुकने सारे तुर्कमानोको मार डालनेका हुक्म दिया, लेकिन यामूदोका समर्थक नियाज बी मौजूद था, जिसने मुजरा करनेका वहाना करके महलमें जा खान और उसके सात वजीरोको मार डाला। मेहतरने किलेकी दीवारसे खबर दी, जिसपर तुर्कमानोका भी कत्लेआम शुरू हुआ, और वहुत कम तुर्कमान उज्वेकोकी तलवारसे बच पाये। खीवाकी सडकोपर इतनी लाशें पडी थी, कि उन्हें हटानेमें छ दिन लगे।

अमीन खानके वाद वहुत जल्दी-जल्दी दो खान हो गये। इस सारे समयमे खीवा राज्यमे विद्रोह और अशाति फैली हुई थी। यामूद, तुर्कमानोका सवसे शक्तिशाली कवीला था, जो खीवाके खान-वशके साथ सर्वस्वकी वाजी लगाकर लड रहा था। १८५५-५६ ई०में उत्तरके कराकल्पकोने भी विद्रोह कर दिया था। यामूदोने दक्षिणमे और कराकल्पकोने उत्तरमें खानके विरुद्ध वगावत करके उसकी स्थितिको वहुत खतरनाक वना दिया था। लेकिन, १२ दिसम्वर १८५५ ई० (८ रवि १२७२ हि०)को खीवावाले कराकल्पकोको हराकर वहुतसे लूटके मालके साथ राजधानी लौटे, जिसमे वहुतसे स्त्री-बच्चे भी थे।

८ सैयद मुहम्मद, रहीम-पुत्र (१८५५-६५ई०)

कुतुलुकके मरनेपर रहीमखानके वडे पुत्र सैयद महमूदको गद्दी दी गई, लेकिन अशात खीवाके इस तीसरे खानको भी अफीमची होनेके कारण गद्दीसे हटना पडा, और उसके छोटे भाई सैयद मुहम्मदने तीस वर्षकी अवस्थामें गद्दी सम्हाली। यामूद तुर्कमानो और कराकल्पकोके विद्रोह अव भी चल रहे थे। कराकल्पक यारलिकके साथ कुहना-उरगज (प्राचीन उरगज)पर चढ़े। मुहम्मद खानने उन्हें हरा-कर उनके उम्मीदवार यारलिकको मार डाला। अव कराकल्पकोका एक कवीला वुखाराकी प्रजा वन गया। गृहयुद्धने भयकर रूप लिया था—गाव उजाड दिये गये, कस्वो और नगरोका सत्यानाश हो गया। एक ओर यामूद और उज्वेक आपसमें कट-मर रहे थे, दूसरी ओर मुरगावसे वढते जमशेदियोने किल्सूसे फितनियेक तकके इलाकेको लूटा। लूटके मालके साथ वह दो हजार ईरानी गुलामोको भी छुडाकर ले गये। सीमाती किलेके राज्यपाल खोजा नियाजकी जगह उसका पुत्र इरजान वनाया गया था। वह १८५६ ई०में अपनी छावनीके ४० सिपाहियोके साथ खीवा गया। कजाकोने अफसरोको मार भगाया, और भयकर अत्याचार करते हुये खीवाकी वहुत-सी सम्पत्ति लूट ली। कजाकोने खीवाके भीतरकी ही लूटसे सतोप नही किया, वल्कि उन्होने रूसी सीमातके भीतर भी गडवडी मचाई। निम्न-सिर-उपत्यका-में खोकन्दी अपने किलोके लिये दावा कर रहे थे, और पिछले दस सालोमें उन्होने आक्रमण करके उनपर दो वार अधिकार भी कर लिया था। पिछली वार अकमस्जिदके राज्यपालने भारी सन्यामें

पशु देकर खीवियोको विदा किया। तीनो शक्तियोका सघर्ष निम्न-सिर भूमिके लिये चल रहा था। अब निम्न-सिरके खोकन्दी इलाकेपर रूसियोका दृढ अधिकार हो गया। खोकन्दियोने अपने किलोको लौटानेके लिये कहा। इन्कार करनेपर उन्होने सैनिक टुकडी भेजी, लेकिन वहा ईंधन-पानी आदिकी वडी कठिनाई थी, इसलिये किलोको तोड-फोडकर खोकदी सेना लौट गई।

खीवा राज्यमे भारी गडबडी मची हुई थी, जिसके कारण वहा अकाल पड गया फिर १८५७ ई०में हैजा भी फैल गया। इसी साल खानने अपने राज्यारोहणकी खबर देते, जार निकोलाइ I की मृत्युके लिये शोक-प्रकाशन करने तथा जार अलेक्सान्द्रके गद्दीपर बैठनेके समय बधाई देने के लिये शेखुल-इस्लाम फाजिल खोजाको दूत बना पीतरवुर्ग भेजा।

मई १८५८ ई०मे जेनरल इग्नातियेफने भी एक दूतमडल खीवा भेजा, जो ईलक येम्बा और अराल तटसे ऐवुगिरकी खाडी, उर्गा अन्तरीप तथा करालियोकी पुरानी राजधानी कुग्रद होते फिर नावसे दस मील प्रति दिनकी चालसे चलते खीवाकी राजधानीकी ओर बढा। गावो और शहरके लोग रूसियोके आनेकी खबर सुनकर वडे भयभीत थे। रूसियोने देखा, कि वक्षु नदीके दोनो तरफके गाव और शहर उजडे पडे हैं। कराकल्पकोके औलो (डेरो)में सिर्फ बूढे-बच्चे रह गये हैं, बाकियोको पकडकर खीवा या ईरानी सीमापर ले जाकर बेंच डाला गया था। कराकल्पकोसे किपचको और खोजे-इली कबीलोकी हालत बेहतर नही थी। रूसी दूतमडल जब नवीन उरगजमें पहुचा, जो कि खीवाका-दूसरा सबसे बडा शहर था, तो एक वजीरने आकर स्वागत किया। दूतमडलको शहरसे बाहर एक बागमे ठहराया गया। पहले मेहतरने स्वागत किया, राजमहलमें मेहतरके लिये अपना एक खास निवास स्थान था। रूसी खानके पास पहुचाये गये। खान एक ऊची गद्दी पर बैठा था। उसके सामने छुरा और पिस्तौल रक्खा था और पीछेकी ओर राजकीय झडा फहरा रहा था। प्रधान-सेनापति (कुश-बेगी), वित्तमत्री (मेहतर) और दीवानवेगी (प्रधान वजीर) खानके सामने बैठे हुये थे, और महा-प्रतिहार द्वारपर खडा था।

रूसी दूतमडलने खीवाकी हालतका अच्छी तरह अध्ययन किया, और समझा-बुझाकर खानको अपनी ओर करनेकी कोशिश की।

उस समय खीवाके अपने सिक्के चल रहे थे। दो तरहके सोनेके सिक्के (तिला) थे, जिनमें मे एकका मूल्य अग्रेजी गिन्नीसे थोडा कम और दूसरा उससे आधा था। चादीके सिक्केको 'तगा' कहा जाता था, जो अठन्नीके बराबर था। उसमे आधेसे कमका चादीका सिक्का 'शाही' था। ताबेके सिक्केको पूल या करापुल कहते थे, जो एक तकेमे अडतालीस होता था।

रूसी मिशनके खीवासे विदा होते ही कराकल्पको और कुग्रदोने तुर्कमान-सरदार अतामुरादके साथ मेल कर कुतुलुक मुरादको उसके कितने ही आदमियोके साथ मार डाला।

मुहम्मद खानके समयमे ही १८६३ ई०में पर्यटक वाम्बेरी कितने ही हाजियोंके साथ खीवा पहुचा था। उस समय चन्दोर तुर्कमान खुला विद्रोह किये हुये थे। उसने खीवाको बहुत सुदर नगर पाया। शहरके दरवाजेपर जय घोष करते तथा हाजियोके दामनको चूमते, सूखे मेवे और रोटीकी भेंटके साथ लोगोने स्वागत किया। लेकिन कारवासरायमें टिकानेके बाद बडे रूखेपनसे उनकी तलाशी ली गई। समझते थे, कि ये फिरगियो (अग्रेजो) या उरुसो (रूसियो)के जनसीज (गुप्तचर)है। वाम्बेरी यद्यपि एसियाई पोशाकमें हाजी बना हुआ था, लेकिन उसकी युरोपीय शकल-सूरत छिप नही सकती थी। तत्कालीन खानका दूत शुकरुल्ला बी कान्स्तन्तिनोपलमें इस्लामके खलीफाके दरबारमे हो आया था। वाम्बेरी उससे मिला। तुर्की भाषापर अधि-कार होनेके कारण वाम्बेरीको इस्ताम्बूलके आफन्दी (मुल्ला) बन जानेमे सफलता मिली। उसने बतलाया, कि अपने पीर (गुरु)के हुक्मसे मैं बुखारा-शरीफकी तीर्थयात्राके लिये जा रहा हू। शुकरुल्ला बीने विश्वास करके उसका स्वागत किया। उसने कान्स्तन्तिनोपलके अपने परिचितोके बारेमे पूछा, जिसका जवाब वाम्बेरीने सतोषजनक दिया। दूसरे दिन खानके बुलानेपर शुकरुल्ला बी वाम्बेरीको साथ लिये दरबारमें गया। वाम्बेरीने वहा सब उमर और सब तरहके बहुतसे आदमियोकी भीड देखी, जो कि खानके सामने अपना आवेदनपत्र

देनेके लिये आये थे। भी ने जब सुना, कि एक बडा दर्वेश (साधु) हमारे खानको दुआ देने आया है, तो उसने वाम्बेरीके लिये रास्ता दे दिया। मेहतरसे बातचीत करनेसे पहले उसने फातेहा पढा। वहाके दरबारी श्रोताओने 'आमीन' कहकर अपनी दाढियोपर हाथ फेरा। फिर वाम्बेरीने सुल्तानकी मुहर लगे अपने छपे हुये पासपोर्टको पेश किया। मेहतरने इस्लामके खलीफाके प्रति सम्मान दिखलाते हुये मुहरको चूमकर अपने सिरसे लगाया, और उठकर उसे खानके हाथमे दिया। लौटकर फिर वह दर्वेशको दरबार हालमे ले गया। खान ऊची मखमलकी गद्दीपर रेशमी मसनदके सहारे बैठा था। उसके हाथमे एक छोटा-सा सोनेका राजचिन्ह था। वाम्बेरीने उसकी शकलको बिलकुल निस्तेज और सब तरहसे एक बर्बर अत्याचारी खूसट-जैसी बतलाया है। दर्वेशने सलाम करनेके लिये अपना हाथ उठाया, जिसका जवाब वैसा ही करके खान और उसके दरबारियोने भी दिया। इसके बाद दर्वेशने कुरानके एक छोटे सूरा (अध्याय)का पाठ किया, और 'अल्लाहुम्मा रव्बेना' कहते अन्तमे जोर-की आवाजमें आमीन कहते हुये पाठको समाप्त किया। इसपर चारो ओर 'आमीन' कह-कर लोग अपनी-अपनी दाढियोपर हाथ फेरने लगे। अमीन खान अपनी दाढीपर हाथ फेर ही रहा था, कि प्रत्येक दरबारीने 'कबूल बोलगुय' (तुम्हारी दुआ स्वीकृत हो)की आवाज लगाई। खानने वाम्बेरीसे यात्राके कुशल-मगलके बारेमें पूछा। दर्वेशने अपना नाम जमाल बतलाया। हजरत जमालको देखकर सब लोग अपनेको कृतकृत्य समझ रहे थे। खानने उसके साथ मुसाफा (हाथ मिलाने)के द्वारा अपनेको धन्य-धन्य समझा। दर्वेशके लिये लोगोने एक सौ सत्तर साल जीनेकी कामना प्रकट की। वाम्बेरीने खानसे खीवाके सुन्नी सतोकी दरगाहोकी जियारत करके जल्दी बुखारा शरीफ जानेकी इजाजत मागी। खानने पैसा देना चाहा, तो दर्वेशने उसे लेनेसे इन्कार कर दिया, किन्तु तीर्थयात्राके लिये सफेद गदहा लेना स्वीकार किया। रास्तेमें भीडके स्वागत-घोषके साथ वाम्बेरी अपने डेरेपर लौटा। उसने अपनी यात्रामें साथी दर्वेशके बारेमें लिखा है—"उनमेंसे हरएकने सेर-सेर भर चावल, दुम्बेकी पूछकी आध सेर चर्बीके अतिरिक्त रोटिया, मूली, गाजर चट किये और पद्रहसे बीस बडे-बडे शोरवाके प्यालोको गलेके नीचे उतारा। प्यालोमें हरी चाय डाली जा रही थी।" वाम्बेरीके पास जिज्ञा-सुओकी भीड लगी रहती थी। लोग इस्लामकी राजधानी इस्ताम्बुल (कान्स्तन्तिनोपल)के सतोके बारेमें जानना चाहते थे। कभी-कभी लोग बीमारीसे छूटनेके लिये झाडफूक करानेके लिये भी आते थे। वाम्बेरीने अपनी आखो देखा—खानसे इनाम पानेके लिये बहादुर लोग कटे हुये सिरोको बोरोमें भरे ले आते थे, जो कभी-कभी आलुओकी तरह रास्तेमे गिर पडते थे। हरएक आदमीको मुडोकी सख्याके अनुसार इनाम मिलता था। खीवा छोडनेसे पहले एक बार फिर वाम्बेरीने जाकर खानको आशीर्वाद दिया।

(मुहम्मद फना, तूरासूफी-भतीजा, १८६५ ई०)

मुहम्मद खानको मारकर विद्रोहियोने मृत तूरासूफीके भतीजे मुहम्मद फनाको गद्दीपर बैठाया। लेकिन अरालियोकी यह सफलता देरतक नही चली। फनाको रूसियोका समर्थन प्राप्त होनेपर भी साल भर हीमे मार डाला गया, और अरालियोको खीवाकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर होना पडा। फनाने ख्वारेज्मका खान बनकर अपना सिक्का चलाया था।

९ सैयद मुहम्मद रहीम, मुहम्मद-पुत्र (१८६५ ई०)

गद्दीपर बैठते समय सैयद मुहम्मद बीस सालका तरुण था। उसे शासनसे भी ज्यादा बाघके शिकारका शौक था। पैतृक सिहासनके साथ-साथ उसे लूटमारसे बाजार गर्मवाला राज्य मिला था, और ऊपरसे रूस-जैसी शक्ति सिरपर पहुच गई थी। १८६७ ई०मे कॉफमान तुर्किस्तानका राज्यपाल बनकर आया। उसने आते ही अपनी नियुक्तिकी सूचना देते हुये खानको लिखा—सिर-दरियाके पार लुटेरे हमारी भूमिमें बडी गडबडी मचा रहे हैं, इनलिये उनके विरुद्ध हम

अपनी सेना भेजनेका अधिकार रखते हैं। खानने जवाब दिया—सिर-दरियाके दोनो तट हमारे हैं। लेकिन जवानी दावेको कौन मानता है? उधर रूसी-प्रजा घुमन्तू कजाक जाडोमें बहुत भारी सख्यामें सिरके दक्षिणमें तथा कुवान और यानी-दरियामें अपने डेरे डालते थे। खानकी पर्वाह न करके रूसी सैनिक सिर पार हो डाकुओको दड देने लगे। एक ओर इधर सिरसे दक्षिणकी ओर उन्होंने पैर बढाना शुरू किया, और दूसरी ओर कास्पियनके पूर्व तटपर भी रूसी अपने प्रभावको बढाते जा रहे थे। नवम्बर १८६९ ई०में एक रूसी सैनिक टुकडी क्रास्नोवोद्स्कमें उतरकर वहा किला बनाने लगी। उसके बाद उन्होंने दूसरा किला चिकिस्लरमें बनाया। इसी समय वोल्गाकी उपत्यका और उरालभूमिमें दोनकसाको, कल्मको तथा कजाकोंके विद्रोह और उनका घोर दमन हो रहा था। भयके मारे लोग अपने गावोको छोडकर भाग रहे थे, जिसके कारण १८७० ई०की गर्मियोतक कोई व्यापारी कारवा नही गया। रूसी सेना जब दड देने आई, तो पता लगा कि इस विद्रोहमें खीवाके खानका हाथ था। क्रास्नोवोद्स्क किला बनानेके विरुद्ध खानने कुओंमें मुर्दे कुत्तोको फेककर पानीको विषैला बनाना चाहा था। खीवावाले जानते थे, कि उनकी इस कार्रवाईका जवाब रूसी किस तरह देंगे, इसलिये राजधानी खीवाकी किलाबन्दी कर प्राकारपर बीस तोपें लगा दी गईं। खीवाने तलदिक धाराको रोककर वक्षुके प्रवाहको कई धाराओंमें बदल दिया, जिसमे कि उथली हो जानेके कारण रूसी जहाज अराल समुद्रसे वक्षु दरियाके भीतर होकर आगे न बढ़ सकें।

१८७० ई०में जेनरल कॉफमानने कडा पत्र लिखकर धमकी दी, कि अगर बात ठीक-ठाक नही की गई, तो हम कडी कारवाई करनेके लिये मजबूर है। खीवाके कुशबेगी (प्रधान-सेनापति) और दीवानबेगी (वजीर)ने उत्तरमें लिखा—"जहा भी उसकी प्रजा है, वहा रूसी सम्राट्का शासन, इसलिये यानी-दरिया अकचाक् झीलतक—जहापर कि रूसी कजाक घूमते हैं—सम्राट्का है, साथ ही बुकान पहाड, और किजिलकुमसे इकिबई तकके यानी-दरियाके ऊपरका सारा रास्ता बुखाराके साथ की गई सधिके अनुसार सदासे रूसका माना गया है।" लेकिन इस जवाबसे रूसी क्यो सतुष्ट होनेवाले थे? उन्हें तो आगे बढना था, जिसके लिये खीवावाले अपने लूटपाटकी आदतसे मौका देनेको तैयार थे। दश्त (स्तेपी)के विद्रोहको दबानेके लिये रूसियोने उस्तउर्तमें अपनी सेना भेजी, और तुर्किस्तानके बडे अभियानके लिये सैनिक तैयारी होने लगी। खीवाने रूसियोको कडा देखकर बुखाराको साथ मिलानेके लिये दूत भेजा, जिसे अमीर-बुखाराने रूसियोके इशारेपर जेलमें डाल दिया। खीवाके आदमियोंको भी अमीर-बुखाराने बहुत समझाया, कि रूसी बदियोंको छोड दो, लूट-मार बद करो और जेनरल कॉफमानके साथ बातचीत करनेके लिये अपने प्रतिनिधि ताशकन्द भेजो। लेकिन, तरुण खान और दरबारी अपनी अकडमें थे। उन्होंने अमीर-बुखाराकी सीख नही मानी।

रूसी अभियान (१८७२ ई०)—१८७२ ई०के बसतमें कर्नल मर्कोजोफके नेतृत्वमें एक मजबूत सैनिक टुकडी कास्पियनमें गिरनेवाली वक्षुकी पुरानी धार—उज्बोइ—की जाच-पडताल करनेके लिये क्रास्नोवोद्स्क बदरगाहसे रवाना हुई। वह आगे बढते हुए बल्खान पर्वतके तीन सौ वेर्स्त पूर्वमें अवस्थित ओर्तकू चश्मेपर पहुची। फिर वहासे दक्षिणकी ओर मुह करके उशामला इलाकेके सर्कस-तुर्कमानोको दड देते किजिल-अर्वत किलेपर पहुची। तुर्कमान घुमन्तुओने आक्रमण किया, लेकिन इसमे रूसी सेनाको कोई भारी नुकसान नही हुआ। इतनी जाच-पडतालके बाद रूसी पीछे लौट गये। जिस वक्त रूसी सेना कास्पियन तटसे जाकर कराकुम रेगिस्तानके एक भागपर खोज-पडताल कर रही थी, इसी समय वक्षु और सिर-दरियाके बीचवाले महान् रेगिस्तान—किजिलकुम—की भी जाच-पडताल करनेके लिये एक रूसी सेना तुर्किस्तान-शहरसे भेजी गई थी, जिसने मिगबुलाक और बुकान पर्वतोकी सर्वे की। दोनो तरफसे रूसियोकी इस कार्रवाईको देखकर सैयद मुहम्मद घबडा उठा। उसने महाराज्यपाल कॉफमानकी उपेक्षा करते अपना एक दूत ओरेनबुर्गके महाराज्यपाल और दूसरा तिफलिसके महाराज्यपालके पास भेजा, साथ ही महाराजुल मिखाइलको भी लिखा—"कई रूसी अभियान मेरे देशपर चढाई कर रहे है। मेरे पास ग्यारह रूसी बदी हैं, जिन्हें मैं

भेजनेके लिये तैयार है। यदि यह कारवाई रोकी न गई, तो मैं न बंदियोंको भेजूंगा, न लूट-मार बंद होगी। अगर ये बंदी तुम्हारे लिये मेरे विरुद्ध युद्ध करनेका बहानामात्र हैं, और तुम अपने राज्यको बढानेपर तुले हुए हो, तो अल्लाहकी जो मर्जी होगी, वही होगा।" खीवाके दूतोंको बंद करके रूसी राज्यपालोंने कहा, कि हम कोई चिट्ठी नही लेगे, जबतक कि रूसी बंदी नहीं छोडे जाते, और दूतको ताशकन्दके महाराज्यपालके पास नही भेजा जाता। रूसियोंसे इस प्रकार निराश होनेके बाद खीवाके खानने अंग्रेजोकी ओर हाथ बढाया और अपने एक प्रतिनिधिको भारतके उप-राज नार्थबुकके पास भेजकर रूसके विरुद्ध सैनिक सहायता मांगी। लेकिन अंग्रेज क्या भांग खाये हुए थे, कि खीवाकी रक्षाके लिये एक महायुद्ध सिरपर लाते। उपराज (वाइसराय)का जवाब था—"रूसके साथ शांति करो, उनकी मांगोको पूरा करो, और उन्हें नाराज होनेका मौका मत दो।"

यद्यपि इस प्रकार खीवाका कोई धनी-धोरी नही था, और केवल अपने बलपर वह रूसियोंका मुकाबिला नही कर सकता था, लेकिन खीवा (ख्वारेज्म) इतिहासके आरम्भिक कालसे ही अपने पडोसके दो महान् रेगिस्तानो किजिलकुम और कराकुम, तथा निर्जन अधित्यका उस्तउर्त एवं उत्तर-के जनशून्य दश्त-किपचकके कारण बडे-बडे विजेताओंके मनोरथको अनेक बार भग करता आया था। अभी भी रूसके लिये अभियान भेजनेमें सबसे कठिनाई इन्ही रेगिस्तानो और निर्जन भूमियोंके कारण थी। वस्तुत ख्वारेज्म एक विशाल रेगिस्तानसे घिरी हुई हरितावली है। ताशकन्द-से ६०० मील, ओरेनबुर्गसे ९३० मील और क्रास्नोवोद्स्कमे ५०० मीलकी यात्रा तै करके खीवा कैसे पहुचा जाय, रूसियोंके लिये यह सबसे बडी कठिनाई थी। यद्यपि अरालमें रूसियोंने अपने जहाज तैरा दिये थे, लेकिन उनका बेडा काफी शक्तिशाली नही था, और वक्षुकी धार भी उथली थी, जिसमें जहाज नही चलाया जा सकता था। लेकिन खीवाको दड देना आवश्यक था। रूसियोंने तीन सेना-स्तम्भ भेजनेका निश्चय किया—(१)प्रधान स्तम्भ तुर्किस्तान शहरसे जेनरल कॉफमानके सचालनमें अपने साथ ३४२० पैदल, ११५० सवार, ६७७ तोपची, बीस तोपें, दो हलकी तोपे, आठ राकेट लिये भेजा गया। इसके दो विभाग थे, जिनमेंसे एक विभागका सचालक जनरल गोलोवात्शोफ जीजकसे चला, और दूसरा विभाग कर्नल गोलोफके नेतृत्वमें कजालिन्स्कसे रवाना हुआ। रसद ढोनेके लिये आठ हजार ऊट—ऊटके मालिको कजाकोको एक ऊटके मरनेपर पचास रूबल देना तै हुआ था, चार स्टीमर भी और इसी सेनाकी सहायता करनेके लिये लकडीके बेडोंके साथ वक्षुके ऊपरकी ओर बढ रहे थे।

(२) दूसरा सेना-स्तम्भ कसाक जेनरल आतमन वेरेफ्किनके अधीन ओरेनबुर्ग रवाना हुआ, जो यम्बा पहुचकर अराल समुद्रके पश्चिमी तटपर गया। इस स्तम्भमें ३४६१ सैनिक, १७९९ घोडे, और सात तोपें थी।

(३) तृतीय सेना-स्तम्भके तीन विभाग थे, जिसमेसे एक विभागको कर्नल लोमाकिनके नेतृत्व मे मंगिशलकमे वीशअक्ति, इल्तेइजे, तबिनम्रू होते अड्बुगिरकी खाडीमें पहुच ओरेनबुर्गवाले स्तम्भसे मिलना था। बाकी दो विभागोंके दो हजार सैनिक कर्नल मार्कोजोफके सचालनमें क्रास्नो-वोद्स्क और चिकिस्लरसे रवाना हुए थे।

कजालिन्स्कवाला स्तम्भ पहले रवाना हुआ, जो बारह दिनमें यानी-दरियापर अवस्थित इर्किबइमें पहुचा। रास्तेमें इसके कुछ ऊटोंको नुकसान हुआ। वहांपर यह सेना ब्लागोवेश्श्चेन्स्क किलेको बना फिर तीन दिन चलकर किजिलकाकमें पहुची। मौसम खराब हो गया, दोपहरको सूर्यने बरफ-को गला दिया, जिससे ऊटोंके लिये चलना मुश्किल हो गया। इस वनस्पतिहीन निर्जन भूमिमें ईंधन-का कही पता नही था। इस मुसीबतमें दो दिन और दक्षिणकी ओर बढनेपर सेना बुकन्दकी पहाडियों-में जा, आगे युसकुदुक कोकपताश, कोपकन्ताश और मिंगबुलाक होते तम्दी जा पहुची।

जीजकसे चला प्रधान सेनाग उचमा, फरिश, सिन्ताब, तिमुरकबुक, बल्तासऊदिर चश्मा हो बुखारा सीमापर करातट पर्वतश्रेणीकी ओरसे नूरताउ पहाडोके उत्तरमें प्रदक्षिणा करते आगे बढा। सर्दी बहुत तेज थी, जिससे इस सेनाके भी कितने ही ऊट रास्तेमें मर गये। पानीकी कमीके कारण तेमूरबेकसे जीजकवाली सेनाको दो भागोंमें बाटकर आगे बढनेके लिये हुक्म हुआ, इनमेंसे एक भाग विशचगन, यानीकसगन और किदेरीके चश्मोंसे होते आगे बढा, और दूसरे भागने कोशबेगी,

वैमनतती, मर्स्ची और अरिस्तन्वेल कुदुकका रास्ता लिया। १२ अप्रैलको कुदुकमें दोनो सेनायें मिल गयी। खानने घबडाकर इक्कीस रूसी गुलामोके साथ पत्र लिखकर कजाला भेजा, लेकिन अब तो 'चिडिया चुग गई खेत' वाली बात थी। इतने खर्च और परिश्रमके साथ भेजा गया महाभियान बातो-बातोंसे कैसे लौट सकता था? रूसी गुलामोंसे पता लगा, कि उनसे बगीचेमें काम लिया जाता और ईरानी गुलामो-जैसा बर्ताव किया जाता था। खानेके लिये उन्हे फल-चावल और कभी-कभी गोश्त और चर्वी भी मिल जाती थी। मिंगबुलाक और शूरखानासे अच्छा और छोटा समझ मेनाने खलता और उच्उचकका रास्ता पकडा। लेकिन आगे अरिस्तान-वेलकुदुकमें एक पखवारा रुकना पडा। यहीं रूसियोने ईस्टरके त्योहारको मनाया। किजिलकुमके कजाकोने ८०० नये ऊट दिये, फिर रवाना होकर ६ मईको सेना खलता पहुची। यही कजालासे आनेवाली सेना भी मिल गई। रास्तेमे टूटे-फूटे बुखारी किलोकी मरम्मत करके उसका नाम सत-जार्ज किला रक्खा गया।

खलता और आमूके बीच ८० मीलका फासला था, लेकिन रास्ता अच्छा नही था। १२० मील-तक फैली हुई हवाके झोकेपर इधरसे उधर चलनेवाली बालू सबसे कडी समस्या थी, और पानी भी केवल आदमक्रिलान (मनुष्यमार) कूओका था, जो खलतासे २४ मीलपर थे। चारो ओर रेगिस्तान-ही-रेगिस्तान था, जिसमें कही वनस्पतिका नाम नही था—लाल रग-जैसी बालू थी, जिसके कारण इस रेगिस्तानका नाम किजिलकुम (लाल बालू) पडा। रास्तेमें एकाध ही सो भी बुरे कुए थ, जिनसे सेना और उसके पशुओका काम नही चल सकता था। पौने सात घटेके कूचके बाद प्रत्येकको आमू-दरियाके ऊपर उच्उचकमें भेजनेका निश्चय किया गया। लेकिन बालूमें चलना भारी परिश्रमका काम था। ऊपरसे असह्य धूप पड रही थी, इसलिये हरावल सेना १३ मीलसे आगे नही बढ सकी, और उसके लिये आदमक्रिलगनसे मीठा पानी भेजना पडा। एक रूसी लेखकके अनुसार "अवस्था बहुत भयकर हो गई। आगे बढना असम्भव मालूम होता था, और पीछे लौटना भारी शरमकी बात होती। आदमक्रिलानमें पानी थोडा था, और मशकोमें भरकर साथ लाया पानी खतम हो चुका था।" अन्तमें सुरक्षाकी एकमात्र आशा वह चिथडाधारी किर्गिज दिखलाई पडा जो कि इर्किबइसे कजालाकी वाहिनीके साथ हो लिया था, और जिसके महत्त्व और गुणका पता जनरल निकोलस और कर्नल द्रेश्वेर्नने पहलेपहल लगाया। किर्गिजने बतलाया, कि रास्तेसे कुछ ही मील दाहिने अल्तीकुदुकके कुए है। जेनरल कॉफमानने अपनी जेबी पानीकी कुप्पी देकर कहा, कि यदि इसमें पानी भर लाओ, तो तुम्हे सौ रूबल इनाम दिया जायगा। किर्गिजने वैसा कर दिखलाया, और सेनाकी एक टुकडी अल्तीकुदुक भेजी गई। कुओकी सख्या कम थी, वह बहुत गहरे नही थे, लेकिन उनमे काफी पानी था। पानी निकालकर घोडो और ऊटोको पिलाया गया, सेनाने भी प्यास बुझाई, फिर कई दिनोतक यहा डेरा डाल दिया गया, और छोटी-छोटी टुकडियोमें दो की जगह ग्यारह दिनमें कॉफमानकी वाहिनी २३ मईको वक्षु (आमू-दरिया)के तटपर पहुची। यात्राकी भीषणताका पता इसीसे लगेगा, कि दस हजार ऊटोमें सिर्फ बारह सौ बच रहे। खलतासे आगे सारे रास्तेमें रसदकी चीजें, अफसरोके असबाब, और गोलाबारूदका सामान बिखरा हुआ था। कई जगहोपर युद्ध-सामग्रीको इस आशासे बालूके नीचे दबा दिया गया था, कि अवश्यकता पडनेपर सैनिकोको लानेके लिये भेज दिया जायगा। कुछ सप्ताह बाद एक रूसी अफसर इस रास्ते गुजरा, जिसने इसके बारेमें लिखा था—"सारे रास्ते भर ऊटो और घोडोकी ककाल तथा सडते हुए शरीर फैले थे। दुर्गन्धसे नाक फटी जाती थी। पडे हुये सामानोके देखनेसे मालूम होता था कि कोई बाजार लगी हुई है।"

खीवावालोंने भी लडनेकी तैयारी की थी, और जबर्दस्ती लोगोकी भर्ती करके सैनिकोकी सख्या बढाई थी। इन सेनाका एक भाग कुग्रादकी ओर उर्गा खाडीके पास यानीकलामें गया, जिसका काम था, उस्तउर्तसे आनेवाली रूसी सेनाका प्रतिरोध करना। छ-सात हजार सैनिक अरालके पूर्वी तटसे आनेवाली सेनाके मुकाबिलेके लिये दौकरामे थे। खीवावालोंने इन्ही दो जगहोंसे खतरेकी सम्भावना समझी थी। जेनरल कॉफमानके आ जानेकी खबर पा ३५०० तुर्कमानो और कजाकोको उच्उचकमें भेजा गया, जिनमेंसे पद्रह सौका कमाडर दीवानबेगी मुहम्मद नियाज था, और दो हजारका

दीवानवेगी मुहम्मद वुराद। यह सेनाये उच्उचकसे पूर्वमें सरदावाकुल (झील) के परे जाकर जम गयी, लेकिन पहली ही झडपमे थोडेसे गोले-गोलियोकी वौछारसे इनके पैर उखड़ गये। शूरखानसे वक्षुके दाहिने तटसे रूसी सेना चली, और चौथे दिन अककामिश पहुची। वक्षुपार शेखआरिक किलापर थोडेसे गोलोके छोडनेकी जरूरत पडी, और शत्रु वहासे भी भाग गया। नदी उथली थी, केवल छाती भर पानी था। कितने लोग पैदल ही नदीमे घुसकर पार हो गये, और कुछने दुश्मनसे पकडी नावोसे या साथ लाये वेडेको वाघकर परले पार जा खीवावालोके डेरेपर अधिकार कर लिया। वहा उन्हे चावल और नमक भर मिल पाया। रूसियोके केवल दो घोडे मारे गये, जिन्हे भूखे सिपाहियोने तुरन्त पकाकर खा लिया।

२८ मईको शूरखानाके आदमियोके एक प्रतिनिधि-मडलने रूसी सेनापतिसे मिलकर तुर्कमानो और खीवावालोंके अत्याचारकी शिकायत की। व्यवस्था कायम करनेके लिये कसाक सैनिकोकी एक टुकड़ी भेजी गई, जो वहा चार दिनतक रही। रूसियोने अभयदानकी घोपणा करके निवासियोमे ऐसा विश्वास पैदा कर दिया, कि लोग सेनाके खानेके लिए ढोर, अगूर आदि फल, तथा जानवरोंके लिये चारा लाने लगे।

आगे शेखआरिकमे थोडीसी झडप हुई। यहीपर खानका पत्र मिला, जिसमे कहा गया था, कि मै जेनरलकी आज्ञा-पालन करनेके लिए तैयार हू। लेकिन जेनरल कॉफमानने कहा, कि अव वात खीवामे ही होगी। ५ जूनको फिर सेना आगे रवाना हुई, और शेखआरिकसे चन्द घटा चलनेपर हजारास्प पहुच गई। यहा भी कुछ गोले छोडने पडे, और खीवावाले सैनिक भाग खडे हुये। खीवाका यह सवसे मजवूत किला था। इतिहास वतलाता है, कि हजारास्प (सहस्राश्व) ने कितने ही विश्वविजयी शत्रुओंके दात खट्टे कर कितनी ही वार ख्वारेज्मको वचाया था। लेकिन अव हम वारूदके युगमें आ गये थे, जव कि हजारास्प अपनी करामातको तीर-धनुपके युग हीमें दिखला सकता था। खीवाके छोटेसे राज्यके हाथमे शक्तिशाली आधुनिक हथियार नही थे, इसलिये वह रूसियोका कैसे मुकाविला करता? हजारास्पके किलेके तीन तरफ पानीसे भरी गहरी खाई थी, और एक तरफ तीन फैदम (३ × ६ = १८ फुट) मोटी दीवार। यहा अवश्य कडा प्रतिरोध किया जा सकता था, लेकिन नागरिकोने सर्वनाशके डरसे किलेको समर्पण कर दिया। रूसियोने वहा कासे-पीतलकी चार अच्छी तोपें, कुछ गाडिया, गोला-वारूदके एक वडे ढेरके साथ हजार पूद (४०० मन) गेहू, ६०० पूद (२७२ मन) चावल और घोडोंके लिये ८०० पूद (३२० मन) वाजरा पाया।*

६ जूनको जेनरल कॉफमानको खवर मिली, कि ओरेनवुर्गकी वाहिनी भी आ गई। अगले दिन अमीर-वुखाराने कॉफमानके पास वधाई भेजी। ९ जूनको फिर सेना कूचकर अगले दिन यगीआरिक झीलके तटपर पहुच गई।

कर्नल मार्कोजोफको वुगदैली और ऐदिनके रास्ते उज्वोइ (कास्पियनकी ओर जानेवाली वक्षुकी सूखी धार) मे होते तोपियातान, इगदी, ओर्ताकुया, ददुरसे आनेपर जामुकदिरका ध्वस्त किला मिला, जो कि खीवासे चालीस मील पश्चिम है। यहा पहुचकर मार्कोजोफको तुर्किस्तानसे आनेवाले सेना-स्तम्भकी प्रतीक्षा करनी थी। कर्नल मार्कोजोफकी सेना करीव आधे रास्तेपर इगदी-तक सुरक्षित पहुची, और तेक्के-तुर्कमानोको हराकर उसे वहुतसा लूटका सामान मिला। लेकिन इगदी और ओर्ताकुयाके वीचमे भयकर वालुकाराशिसे मुकाविला पडा। इस दुर्गम रास्तेसे गुजरकर सवसे पहले पहुच खीवा जीतनेकी जल्दी थी, जिसका श्रेय काकेशनकी सेनाको मिला, जो कि कास्पियनके पूर्वी किनारेकी वन्दरगाहोसे रवाना हुई थी। लेकिन वीचकी रेगिस्तानी भूमिकी भयकर धूप और जलके अभावने सेनाके वढावको रोक दिया। ओर्ताकुयामे आगेके रेगिस्तानकी भीषणताको जानकर सेनाको क्रास्नोवोद्स्क लौटनेके लिये मजवूर होना पडा। उस समय सैनिक भारी सख्यामें वीमार होकर ऊटोपर ढोये जा रहे थे, और उधर तेक्के-तुर्कमानोने हमला शुरू कर दिया। सारे सैनिक किसी-न-किसी वीमारीमे फसे थे, जिनमें साठ तो लूसे मर गये। सेना

* २॥ पूद = १ मन

विना हथियारके समुद्र तटपर लौटी। ऊटोको तुर्कमान लूट ले गये, और रसदका बोझा हलका करनेके लिये रेगिस्तानमे फेंक दिया गया था। काकेशसकी सेनाकी क्या दशा हुई थी, यह इसीसे मालूम होगा, कि एक स्टाफ-अफसरने अपने सारे चादीके प्लेटोंके सेटको फेक दिया था। कुछ तोपोको वालूके नीचे गाड दिया गया। वन्दूकोमेंसे कितनी ही पीछे कजाको और तुर्कमानोने लौटाई। यद्यपि यह अभियान असफल रहा, लेकिन वुखाराकी सेनापर अपनी धाक जमाकर इसने उसे खीवाकी मददके लिये जानेसे रोक दिया।

कास्पियन तटसे कर्नल लोमाकिनने उस्तउर्तके रास्ते कूच किया। यह सेना कास्पियन तटपर अवस्थित किंद्रेली किलेसे तीन भागमें वटकर आगे-पीछे २७, २८ और २९ अप्रैलको रवाना हुई। धूप और पानीकी इसे और भी तकलीफ हुई। इसका रास्ता कौनदी, सेनेकसे, विश्अक्ति, कमिस्ती, करस्तृचिक, सड्कुयु, वुस्साग, कराकिन, किनिर, अल्पइमास, अकमेचेत, इल्तेइजी, वाइलियर, किजिलअगिर, वैचगिर, मेन्दली, अलान, इलिवइ (ऐवुगिर खाडीके दक्षिण-पश्चिम)से था। विशअक्तिमे कजाकोको आक्रमण करके पिटना पडा। अलानके पास सेना रॉजुल वेकोविचके वनवाये किलेके ध्वसावशेपके पाससे गुजरी। जेनरल वेरेर्तिकन ओरेनवुर्गसे अपनी सेना लेकर आ रहा था। उससे वातचीत करके ऐवुगिरसे आगे वढ कुग्राद पहुची, और चन्द घटो वाद ओरेनवुर्गकी सेना आ मिली। इस सेनाको उस्तउर्तकी चार सौ मील लम्वी रेगिस्तानी अधित्यकाको रसद-पानीकी कमीके साथ पार करना पडा, लेकिन उन्तीस दिनोमें उसने यह यात्रा पूरी कर ली।

ओरेनवुर्गकी वाहिनी ११ अप्रैलको वहासे रवाना हुई थी। ओरेनवुर्गसे अराल-समुद्र तकका रास्ता अव रूसियोकी भूमिमे होनेके कारण सुपरिचित था, इसलिए इस सेनाको अपनी यात्रा पूरी करनेमें कम तकलीफ हुई। पहले यह पूर्वकी ओर वढ़ती वरसुककी वालुकाराशितक गई, फिर वहासे मुडकर अरालके पश्चिम उर्गाकी खाडीपर पहुची। जेनरल वेरेव्किनने घोषणा निकाल दी थी, कि कराकल्पक और तुर्कमान घुमन्तू अपन-अपने डेरो और घरोमें रहे, तथा सेनाके साथ केवल रूसी कसाक शरणार्थी ही चलें। कवीलोके कितने ही सरदार रूसी सेनाके साथ आ मिले थे, जिन्होंने यात्रामें वडी सहायता की। जेनरल वेरेव्किनकी सेना ऐवुगिर पार हो यानीकलाको सर और ध्वस्तकर कुग्रादमें पहुची। यहा खीवावालोकी काफी सेना थी, लेकिन रूसियोंके आते ही वह भाग खडी हुई, और शहरपर निर्विरोध अधिकार हो गया। शहरके प्राकार और घर पहले हीके सघर्पमें ध्वस्त हो चुके थे। रूसी जेनरलने खानके प्रासाद और जेसाउल मामितके घरको तुडवा दिया। शहरमे सिर्फ एक हजार पूद (४०० मन) चावल और ज्वारकी रोटिया मिली। लोग पहले ही भाग गये थे, लेकिन रूसियोंके अच्छे वर्तावकी खवर पाकर वह जल्दी ही लौट आये।

यहीपर जेनरलको रूसी वेडेके वारेमें वुरी खवर मिली। २९ अप्रैलको वेडेने सिरके मुहानेको छोड दो दिन वाद तकमकअता द्वीपके आगे ऐवुगी खाडीमे पहुच लगर डाला। कुछ दिन ठहरनेके वाद ९ मईको वह उलकुम-दरियाकी पश्चिमी शाखा किचकिन-दरियामें घुसा, और अककला नामक एक छोटेसे किलेके सामने आया। जहाजी तोपोंने वमवर्पा करके किलेके भीतर रहनेवाली सेनाको भगा दिया। फिर वेडा उलकुन-दरियामें होकर ऊपरकी ओर चला। कुग्राद नगर ५० वेर्स्त (८७ फर्सख) के करीव था, किन्तु नदीमें पर्याप्त पानी नहीं था, इसलिए वहीं लगर डालना पडा। कुछ आदमी जहाजोंसे उतरकर आसपासकी भूमिके वारेमे पता लगानेके लिये भेजे गये, जिन्हे दुश्मनोने धोखेसे पकडकर मार दिया। इनकी लाशें पीछे कुग्रादमे दफनाई गयीं। अव फिर वेडा आगे चला। कुग्रादसे ३० वेर्स्त पहले ही नोजेइलीमें खीवाके चार-पाच हजार सैनिकोंके साथ मामूली झडप हुई। आगे मगितसे पहले यामूद तुर्कमानोंसे लडाई हुई। रूसी शहरपर अधिकार करके शत्रुओको पीछा करते ही रहे। एक टुकडी कित्ताई (करागोसकी नहर)की ओर वढी, और दूसरीने कर्नल स्कोवेलेफके नेतृत्वमें किप्चिज-नियाजर्वाकी ओर पीछा किया। आगे वढनेपर गुरलान आया। यहीं खानकी मुख्य

सेना थी, जिसपर खीवावालोकी सारी आशाये केंद्रित थी। लेकिन इस सेनाने भी रूसियोका नाममात्र ही प्रतिरोध किया। खानने जेनरल वेरेव्किनके पास चिट्ठी भेजकर तीन-चार दिनकी विराम-सधिकी बात करते हुये कहा, कि हमने जेनरल कॉफमानके पास भी इसके वारेमे निवेदन किया है। लेकिन जेनरलने अपने बढावको जारी रक्खा। कात और काशकुपिरके रास्ते वह आगे बढा। वहा कितनी ही वार दुश्मनसे झडप करते बहुत-सी नहरोको पार करना पडा। रूसियोने चौबीस घटेके भीतर किलिज नियाजवी नहरपर १८९ फुटका बेडेवाला पुल तैयार किया। ७ जूनको खीवा तीन मीलसे भी कम रह गया था। वहा खानके वागमें जेनरल बेरेव्किनने डेरा डाला। किलेसे तोपें दगने लगी। एक फटे गोलेसे जेनरलके सिरमे भारी चोट आई। रूसी तोपखानेने भी जवाब दिया। नागरिकोका प्रतिनिधिमडल रूसी सेनापतिसे मिलने आया। उसने वतलाया, कि खान भाग गया है, नगरमें वडी वदअमनी फैली हुई है। बेरेव्किनने तुरन्त गोलाबारी बन्द कर दी, तथा दूतमडलको कहा, कि जेनरल कॉफमान ही शाति दे सकते है, उन्हीके पास जाओ। साथ ही यह भी धमकी दी, कि किलेकी तोपोको बन्द करो, नही तो दो घटेके भीतर हम नगरपर गोलावारी करने लगेंगे। दूसरे नागरिक-मडलने आकर कहा, कि तुर्कमान सैनिक हमारी बात माननेके लिये तैयार नही है। दस वजे राततक गोलवारी होती रही। उधर कॉफमानका पत्र आया, कि हम खीवासे सिर्फ १६ वेर्स्त (२·७ फर्सख) पर यगीआरिकपर है, पूर्वद्वारसे तीन मीलपर अवस्थित पुलपर आकर मिलो।

जेनरल कॉफमानने ६ जूनको ही ओरेनबुर्गकी सेनाके आनेकी खवर सुन ली थी। यगीआरिकमें उसके पास खानका चचेरा भाई ईनक इरताश अली खानका पत्र लेकर आया, जिसमे कहा गया था, कि मैं जारकी प्रजा हू, यामूद मेरे हाथमें नही है, कल मै स्वय सेवामें आ रहा हू।

शहरमे सचमुच ही अराजकता फैली हुई थी। प्रतिरोध और समर्पणके लिये तैयार लोगोके दो दल हो गये थे, जिनके बीच भीषण सघर्ष हो रहा था। ईनकके लौटकर आनेसे पहले ही खान राजधानी छोडकर भाग गया था। दीवानवेगी मतमुराद प्रतिरोध-पार्टीका अगुवा था। खानका भाई अताजान तिमूर, जो सात महीनेसे बदीखानेमे पडा था, अब खान वनाया गया था। उसका चचा सैयद अमीरुलउमरा सयुक्त शासकके तौरपर काम कर रहा था। दोनो चचा-भतीजे समर्पण-पक्षपातियोके मुखिया थे। अगले दिन सवेरे ईनक इर्तसली और दूसरे अमीरोने जेनरल कॉफमानके पास जाकर अधीनता स्वीकार की।

जेनरल बेरेव्किनने अपनी सेनाके एक बडे भागको तुर्किस्तानी सेनासे मिल जानेके लिये भेजा, वाकियोंके ऊपर किलेसे गोलावारी होने लगी। रूसियोने भी तोपोको छोडकर उसका जवाव दिया। वह खीवाके उत्तरी दरवाजे शाहवादको तोडकर नगरके भीतर घुस गये। कर्नल स्कोबेलेफ सडकसे महलकी ओर चला। उधर जेनरल कॉफमानने हजारास्प दरवाजेपर पहुचकर विजयीके तौरपर नगरमे प्रवेश किया। उस समय नगरमे झडे-पताके फहरा रहे थे, बाजे बज रहे थे। खानके अन्त पुर (हरम) और सम्पत्तिकी रक्षाके लिये रूसियोंने गारद नियुक्त कर दिया और सैनिकोने नगर-प्राकारपर अधिकार कर लिया। जेनरलके हुक्मपर लोगोंके हथियार छीने जाने लग। नगरके बडे मैदानमें रूसी सेनाने जमा होकर सम्राट्के लिये दुआ और धन्यवादकी रसम अदा की। कॉफमान खानके दरवार-हालमें पहुचा, जहा नागरिकोंके कितने ही प्रतिनिधि वधाई देनेके लिये आये। सैयद मुहम्मद खान भागकर यामूदोमे चला गया था, इसलिये रूसी जेनरलने अताजान त्युराको अस्थायी खान वनाया। उसने सैयद मुहम्मदके पास सदेश भेजा, कि मैं तुम्हे खान पदपर पुन स्थापित करनेके लिये तैयार हू, इसपर चन्द घटो बाद खान आ मौजूद हुआ।

खान जडाऊ जीन लगे घोडेपर चढकर अपने महलके वगीचेतक आ जेनरल कॉफमानके तम्बूकी ओर जानेवाले रास्तेके छोरपर उतर पडा। फिर अपनी टोपी उतार पासमें पहुचकर उसने कॉफमानके सामन घुटने टेक दिये। कॉफमान उस वक्त एक कुर्सीपर बैठा रहा। उसने अपने पराजित शत्रुके साथ वीरोचित बर्ताव नही किया। खान घुटना टेके कालीनपर बैठ गया। वह तीन वर्दका

तरुण था। उसका चेहरा असुन्दर नही था। चौडे चेहरेपर मगोलायित आखें कुछ तिर्छी थी, लेकिन नाक तोते-जैसी थी। वड मुखपर छोटी पतलीसी काली दाढी-मूछ थी। कदमें वह छ फुटका लम्बा-तगडा जवान था। उसके सीधे-सादे-जीवनका बुखाराके अमीरसे मुकाबिला करनेपर आश्चर्य होता था। उसका सबसे बडा शौक था—सुन्दर तुर्कमान घोडोसे अपने अस्तबलको भरे रखना, और कभी-कभी नई बीबी लाना। एक सौ रखेलियोंके अतिरिक्त इस्लामी शरीयतके अनुसार उसकी चार बीबिया राज्यकी चारो जातियोकी थी। खानके राज्यकी आमदनी उस समय नब्बे हजार रुबल (पैंतालीस लाख पौंड) थी। किजिलकुमके घुमन्तुओको छोडकर उसके राज्यमें पाच लाख आदमी बसते थे। उसे पढने-लिखनेका भी शौक था, और उसके पुस्तकालयमें तीन सौ जिल्द हस्तलिखित ग्रथोके थे, जिनमेंसे अधिक इतिहासपर, सो भी फारसीसे तुर्कीमें अनुवादित थे।

जेनरल कॉफमानने खानकी सहायताके लिये एक शासन-परिषद् कायम कर दी, जिसमें तीन रूसी (लेफ्टिनेंट-कर्नल इवानोफ, लेफ्टिनेंट-कर्नल पोशारोफ, लेफ्टिनेंट-कर्नल खोरोशिन) और तीन खीवावाले सदस्य (दीवानवेगी मतनियाज, ईनक इर्तसअली और मेहतर अब्दुल्ला बी) थे। मतनियाज इनमें सबसे योग्य था। इस परिषद्का अध्यक्ष नामके लिये खान था, नही तो असली अध्यक्ष कर्नल इवानोफ था। इस्लामी शरीयत और स्थानीय राज्यपालोकी नियुक्तिका अधिकार खानको दिया गया था। रूस-विरोधी मतमुराद और रहमतुल्लाको बदी बनाकर पहले कजाला, फिर रूस भेज दिया गया। अताजान रूसी सेनामें शामिल हो गया।

रूमियोने खीवापर विजय प्राप्त करके वहाके तीस हजार गुलामोको मुक्त कर दिया। उन्हे पाच-छ सौके दलमें क्रास्नोवोद्स्क भेजकर वहासे जहाजोपर ईरान भेज दिया जाता। पहले जो दो दल भेजे गये थे, उनमेंसे एकपर तुर्कमानोने प्रहार करके कितनो हीको मारा और कितनोको पकडकर फिर गुलाम बना लिया। रूसियोके खीवा छोडनेपर मुक्त होकर वहा रहते सैकडो गुलाम मार डाले गये।

अन्तमें खीवाने सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर किया, जिसमें खानने अपनेको जारका वफादार सेवक रहनेका वचन दिया और यह भी स्वीकार किया, कि मैं किसी भी दूसरी विदेशी-शक्तिसे व्यापार आदिकी सधि नही करूगा, न रूसियोकी स्वीकृति या जानकारीके विना कोई सैनिक अभियान सगठित करूगा।

राज्यकी सीमा निर्धारित हुई थी—अराल समुद्रतक वक्षुकी सबसे पश्चिमी धारा। अरालके तटसे होते उर्गा अन्तरीप तथा उस्तउर्तके उत्तरी छोरतक—वक्षुकी पुरानी धारासे दाहिने तटकी सारी भूमि रूसको मिली, जिसके कुछ भागको इच्छा होनेपर रूस बुखाराको दे सकता था। वक्षुमें नौसचालनका अधिकार सिर्फ रूसको था, व्यापार और कारखाना बनानेकी भी उसे पूरी स्वतत्रता थी। रूससे भागे हुये अपराधीको लौटा देना खीवाने स्वीकार किया। दासता-प्रथा बन्द कर दी गई। हरजानेमें बाईस लाख रुबल (दो लाख चौहत्तर हजार पौंड) देना तै हुआ, जिसमें पहले दो सालोतक लाख-लाख रुबल, फिर १८८१ ई०तक क्रमश बढाते हुये दो लाख सालाना अदा करना था।

खीवाके साथ जो सधि हुई थी, उसे पीतरबुर्गमें प्रकाशित होनेसे पहले ही जेनरल कॉफमानने "तुर्किस्तान गजेत" मे प्रकाशित कर दिया था। इससे मालूम होगा, कि रूसके दूर-दूरके महाराज्यपालोको कितने विशेष अधिकार प्राप्त थे।

इस प्रकार १८७२ ई०में खीवाकी स्वतत्रता समाप्त हुई। खीवाके राज्यमें सर्त, उज्बेक, कराकल्पक और तुर्कमान चार जातिया रहती थी, जिनमेंसे सर्त (फारसीभाषी) अधिकतर व्यापारजीवी थे, और सैनिक तौरसे उनका कोई विशेष महत्त्व नही था। बाकी तीन जातिया लडाकू और बहुत कुछ घुमन्तू थी। वही उज्बेक यहा भी थे, जो कि बुखारा और खोकन्दके राज्योमें रहते थे। कराकल्पक निम्न-वक्षु-उपत्यकामें अराल समुद्रतक फैले हुये थे। बोल्शेविक-क्रातिके बाद जब जातियोंके अनुसार राजनीतिक इकाइया बनने लगी, तो सभी उज्बेकोकी भूमिको मिलाकर उज्बेकिस्तान गणराज्य बना दिया गया, जिसकी राजधानी ताशकन्द हुई। कराकल्पकोकी सख्या

थोडी थी, लेकिन उन्हे भी उज्बेकिस्तान गणराज्यमें कराकल्पकियाके नामसे अपना स्वायत्त गणराज्य बनानेका मौका मिला। ईरानकी सीमातक तुर्कमान––यामूद, तेक्के आदि––कबीले रहते थे, जिन्होंने पीछे अपना तुर्कमानिस्तान गणराज्य स्थापित किया, लेकिन खीवाके सर होनेके बाद ही तुर्कमानोंने रूसकी अधीनता स्वीकार नहीं की।
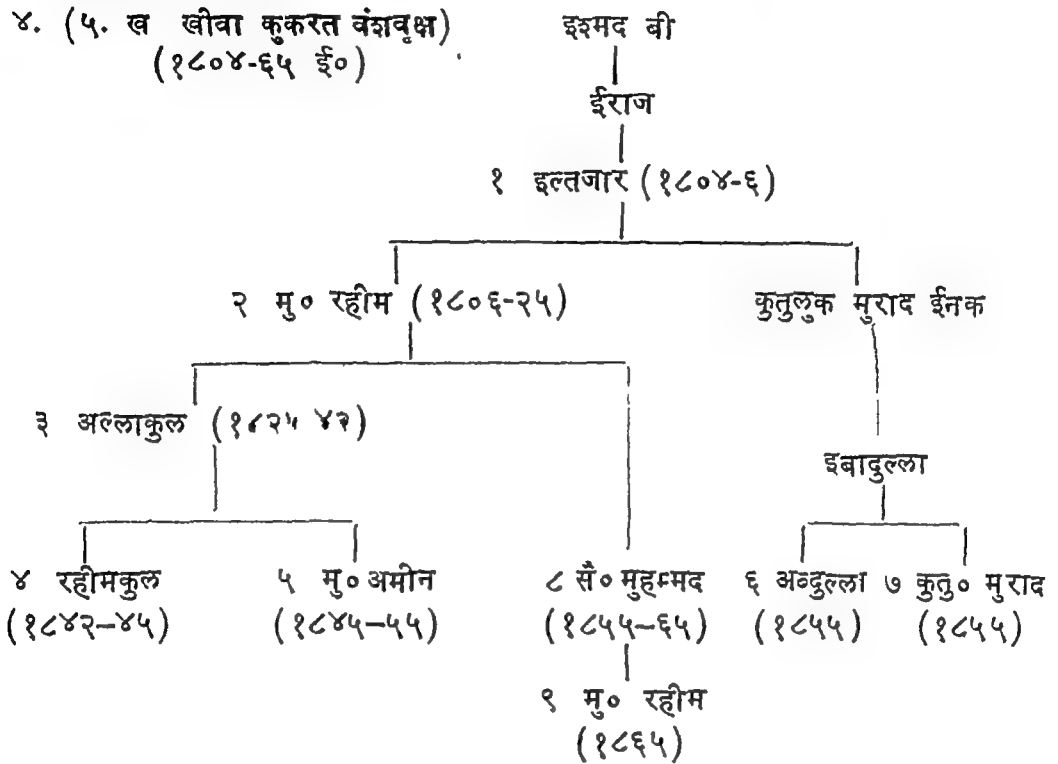
स्रोत-ग्रंथ

१ ओत्चेत ओ कोमन्दिरोव्के व् तुर्केस्तने (व. व. व वर्तोल्द, "ज० रोस्० अकद० इस्त० मतेरि० कुल्तुरी" जिल्द २, पृष्ठ २०)

२ History of Mongol (3 vols, H H Howorth, London 1876-88)

३ Heart of Asia (E D Ross, London 1899)

४ La rivalite anglo-russie an xix siecle en Asie (A M F Rouire, Paris 1908)

अध्याय ६

तुर्कमान

१ तुर्कमान-भूमि

१८७३ ई०में खीवाने जारकी अधीनता स्वीकार कर ली, इससे चार साल पहले १८६९ ई०में कास्पियनके पूर्वी तटपर क्रास्नोवोदस्कका प्रसिद्ध बन्दर स्थापित हुआ था। जारशाहीने क्रास्नोवोदस्कसे मगिशलक प्रायद्वीपतक वीच-वीचमें रूसियोकी वस्तिया और किलेवदिया कायम कर दी थी। खीवाके पतनके वाद मध्य-एसियामें रूसी साम्राज्यकी सीमा वक्षुकी धाराके साथ-साथ थी। लेकिन कास्पियन और वक्षुके वीचकी भूमिपर अभी भी रूसियोका अधिकार नही हुआ था। वहा अधिकतर घूमन्तू-जीवन वितानेवाले तुर्कमान रहते थे। यह भूमि एक त्रिकोणकी शकलमें है, जिसके सिरेपर खीवा है, और दो भुजाओमें एक कास्पियन तट और दूसरी वक्षुकी धारा। इस त्रिकोणका आधार वलखसे दक्षिण-पश्चिमसे लेकर कास्पियनके कोनेतक चला गया है। यह सारी भूमि दो लाख चालीस हजार वर्गमील होनेके कारण वहुत विशाल है, लेकिन इसके उत्तरी भागकी सवसे अधिक धरती कराकुमका रेगिस्तान है। यद्यपि इस भूमिको विलकुल वालूकी भूमि नही कह सकते, क्योकि कही-कहीपर इसकी वज्र-जैसी भूमिपर घोडोकी टाप पडनेपर जोरकी आवाज सुनाई देती है, हा दूसरी जगहोपर केवल वालू-ही-वालू है, जिसका कराकुम या कालावालू नाम रगकी समानताकी वजहसे पडा। वसतमे वर्षा होनेपर इस भूमिमें जगह-जगह हरियाली, लम्बी घास तथा तरह-तरहके फूल दिखाई पडते है। इस भूमिको इस अवस्थामें केवल पानीके अभावने पहुचाया है। यदि पानी होता, तो यहा की चरागाहोमें असख्य भेडें और दूसरे जानवर पल सकते थे। यह रेगिस्तान किसी समय मध्य-एसियाके विशाल समुद्रके भीतर था। उस समय आसपासके पहाडोसे निकलनेवाली नदिया इस महासागरमें गिरती थी, लेकिन अव वह हमारी पुरानी सरस्वतीकी तरह सूखे वालूमें विलीन हो जाती हैं। मुर्गाव और ताजन्दकी नदिया अफगानिस्तानके पहाडोसे निकलकर उत्तरकी ओर वहते कराकुमके रेगिस्तानमे गायव हो जाती हैं। कितनी ही और भी छोटी-छोटी नदिया इसी तरह अपने अस्तित्वको खोती हैं। पुराने समयमें इस मरुभूमिके पश्चिमी भागको वक्षुकी धारा सिंचित करती थी, जव कि वह कास्पियनकी मिखाइलोव्स्की खाडीमें गिरती थी। हम जानते है, चिङ्गिस् के हमलेके समय १३वी सदीमें वक्षुकी एक शाखा कास्पियनमें गिरने लगी। वसतके थोडेसे समयको छोडकर यह सारी भूमि प्राय वनस्पतिहीन हो जाती है, और केवल थोडेसे कटीले वृक्ष, ऊटोके खाने लायक कुछ छोटी-छोटी झाडिया और फरास (झाऊ)के कितने ही वृक्ष जहा-तहा दिखलाई पडते है। जगली जानवरोमें यहा क्याग (जगली गदहे), कई तरहके हरिन, जिनमें कुछ भेडोंके वरावर छोटे-छोटे मिलते है।

रेगिस्तानमें कारवाके रास्तोपर जहा-तहा कुयें है, या यो कहिये कि कुओके जलके सुभीतेके कारण उधरसे कारवा पथ जाता है। ऐसे ही पानीके स्थानोपर कितने ही पक्षी उडते और चहचहाते मिलते हैं, नही तो चारो ओर असह्य नीरवता छाई रहती है। वालूके न उडते समय आकाश शुद्ध रहता है, और दूरका क्षितिज नजदीक दिखलाई पडता है। गर्मीमे मृगतृष्णाकी हिलती हुई लहरें पथिकको मृत्युकी ओर आह्वान करती है। कराकुममें दिसम्वर और जनवरीमें सख्त सर्दी पडती हैं, जव कि तापमान हिमविन्दुसे ५०° से० नीचे चला जाता है। गर्मी भी वहा हद

दर्जेकी होती है—लू आदमियोंकी जान ले लेती है, और बालूके अवडमे पडनेपर सास लेना मुश्किल हो जाता है। इस मरुभूमिमे मनुष्यके लिये बहुत प्राचीन कालसे जीवनका रास्ता रुका हुआ है। यदि इससे कोई फायदा था, तो यही, कि ख्वारेज्म बहुत दिनोतक बाहरी शत्रुओके आक्रमणसे बचा रहा। लेकिन जान पडता है, अब कराकुममें विराजती मृत्युकी नीरवता अधिक दिनोतक नही रह सकेगी। खीवाके पास वक्षुसे उज्बोई होते कास्पियनमें मिलनेवाली नहरके बनानेमें आधुनिकतम यत्रोका उपयोग किया जा रहा है, और कुछ ही वर्षोंमे वक्षुका बहुतसा पानी कराकुमके एक बहुत बडे भागको सरसब्ज बनानेमे सफल होगा। लेकिन सोवियत रूस इतने हीसे सतुष्ट नही है, बल्कि जैसा कि पहले हम बतला चुके हैं, वह चार सौ फुट ऊचे बाधको बना कर ओब और येनिसेइके अधिकाश पानीको ध्रुवीयमहासागरमें जानेसे रोककर कजाकस्तान और कास्पियन तटतक फैले एक समुद्रके रूपमें बदलना चाहता है। बलकाश, और अराल समुद्रको अपने गर्भमें लेते यह महासमुद्र कास्पियनतक जब फैल जायगा, तो मध्य-एसियाके विशाल रेगिस्तानो-का पता भी नही रहेगा। इस योजना से पहले ही सोवियत कालमें कराकुमके कुछ भागोको अच्छी चरागाहोमें बदल दिया गया। जाडेके महीनोमे तापमानका हिमबिन्दुसे दर्जनो डिग्री नीचे जाना इसमें सहायक हुआ। कराकुमके रेगिस्तानमें जहा-तहा उगनेवाले वनस्पति और घासें बतलाती हैं, कि धरतीके नीचे वहा पानी भी है। लेकिन पानी अधिकतर बहुत खारा है, जिसे पशु और प्राणी पी नही सकते। रूसी वैज्ञानिकोने इस खारे पानीको मीठे पानीमे बदलनेके लिये जगह-जगह कूओपर सीमेंट किये हुये बडे-बडे तालाब बनाये, और जाडोमें बर्फ जमा कर मीठे पानीको नमकसे अलग करके पशुओ और प्राणियोके लिये जमीनदोज तालाब स्थापित किये, इस प्रकार वहा लाखो पशु पलने लगे।

लेकिन, तुर्कमानोकी भूमिका कुछ दक्षिणी भाग ऐसा भी है, जहा रेगिस्तान नही है। कास्पियनके दक्षिण-पूर्वमे गूरगान और अतरक नदियो द्वारा सिंचित भूमि है, जो यद्यपि समुद्रके पास दलदली है, लेकिन ऊपरकी ओर बडी सुन्दर उपत्यकाये हैं। एक पश्चिमी यात्रीने इस भूमिमे चलते हुये लिखा था—"*हमारा मार्ग हरे-भरे खेतो और सुन्दर स्वाभाविक चरागाहोके भीतरसे था, जिनकी* पहाडियोमें बडे कोमल रगके बाज (ओक)के किसलय शोभा दे रहे थे। जहा-तहा हरा मखमली फर्शसा बिछा मालूम होता था।" कराकुमकी नीरव और निर्जीव भूमिके अतिरिक्त ऐसी भूमि भी थी, जिसमें तुर्कमान घूमा करते थे। ईरान और तुर्कमानिस्तानकी सीमापर कोपेकदाग पर्वतमाला है, जिससे निकलनेवाली नदियोंने किजिल अरबतसे लेकर गियाउर-तककी एक सौ सत्तासी मील लम्बी और पद्रहसे पचीस मील चौडी भूमिको बहुत ही उर्वर बना दिया है। इस प्रदेशको अक्कलकी हरितावल (ओसी) कहा जाता है। जहासे मुर्गाव पहाडोको छोडकर रेगिस्तान ओर बढती है, वहींपर मेर्वकी प्रसिद्ध हरितावल है, जिसे दुनियाकी अत्यन्त उर्वर भूमियोमे माना जाता है। ऐतिहासिक कालमे मेर्वके महत्त्वको हम देख चुके है। बुखाराके अमीर मुरादकी सेनाने १७८४ ई०में जब आक्रमण करके मेर्वके इलाकेको बरबाद कर दिया, तबसे इस उजडी भूमिके स्वामी तुर्कमान हो गये। मेर्व-हरितावल ईरानकी उत्तरी सीमासे बहुत थोडी ही दूरपर है, दोनोके बीचमे एक छोटी-सी पर्वतश्रृखला है, जिसको पार करनेमें कभी किसी आक्रमणकारीको रुकावट नही हुई। इस पहाडकी चढाई इतनी धीरे-धीरे है, कि आदमीको ऊपर पहुचनेमें वह नही-सी मालूम होती।

२ तुर्कमान कबीले

पीछे हम बतला चुके है, कि तुर्कमानोके मूल पुरुष गूज या आगुज बहुत पुराने समयमे अल्ताईकी तरफसे अराल और कास्पियन समुद्रकी ओर आये थे। सल्जूकियोके नेतृत्वमें इनका प्रभाव बहुत बढा और ये उत्तरी ईरान तथा मेर्वसे कास्पियनतक फैल गये। १९वी सदीके आरम्भमे भी इनमेंसे अधिकाश अभी घुमन्तू ही थे। करा और येल्नी इन्ही तुर्कमानोके पूर्वज थे, जिन्होंने सुल्तान सजरको ११५३ ई०में अन्दखूय और मेमनामें हराकर वन्दी बनाया

था। पिछली शताब्दियोंमें इनके कुछ कबीले मंगिशलक प्रायद्वीपमें घूमा करते थे। अपने घुमन्तू और लड़ाकू जीवनके कारण ये बाहरी प्रभावसे बहुत कम प्रभावित हुये। कभी इन्होंने ईरानी शाहोंकी अधीनता स्वीकार की, और कभी खीवाके खानोंकी। शाह अब्बास (१५८५-१६२६ ई०) ने इन्हें कोपेतदागकी उर्वर उपत्यकासे भगाकर वहाँ पंद्रह हजार लड़ाकू कुर्दोको ला बसाया, जिसमें कि वह तुर्कमानोंको घुसने न दें। लेकिन तुर्कमान अपने स्वभावसे लाचार थे। नादिरशाह खूनसे स्वयं तुर्कमान था। २०वीं सदीके आरम्भतक चले आये ईरानके काजार राजवंशका संस्थापक आगा मुहम्मद (१७९६ ई०) स्वयं तुर्कमान था। उसने सभ्यताके महत्त्वको समझकर तुर्कमानोंको भी उस रास्ते ले जाना चाहा, लेकिन उसमें सफल नहीं हुआ। उसके उत्तराधिकारी फतेहअलीने १८१३ ई०में जब उन्हें दबाना चाहा, तो तुर्कमानोंने रूसकी अधीनता स्वीकार करनी चाही, लेकिन नेपोलियनके आक्रमणसे रूसको कहाँ होश था, कि इस अधीनता-स्वीकृतिसे लाभ उठाता। १८३१ ई०में अंग्रेज यात्री बार्नेस मध्य-एसियामें गया था। उसने अपनी पुस्तक "बुखाराकी यात्रायें"में तुर्कमानोंका जिक्र किया है। बार्नेसके समय सबसे अधिक संख्या उनमें तेक्के कबीलेकी थी, यद्यपि अभी तुर्कमानोंमें उसको प्रधानता नहीं मिली थी। अपने इतिहासके आरम्भमें तेक्के लोग कास्पियनके पूर्वी तटपर मंगिशलक प्रायद्वीपमें रहते थे। १७१८ ई०में जब कलमक-मंगोलोंका इनपर बार-बार आक्रमण हुआ, तो तेक्कोंने किजिल अरबतसे यामूदो और कोपेतदागकी उर्वर उपत्यकावाली अक्कल हरितावलीसे कुर्दों और येलियोंको भगाकर वहाँ अपना अधिकार जमाया। तेक्केका अर्थ तुर्कमानी भाषामें है पहाड़ी बकरी, जो कि सिद्धहस्त पहाड़ी घुड़सवार होनेके कारण इनके लिये उपयुक्त नाम था। खीवाके खानको यह मानते थे और प्रत्येक ग्राम (तम्बुओंका झुंड) सालमें एक ऊँट कर देता था। नादिरशाहने भी इन्हें अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया था। जबतक इनकी संख्या बहुत बड़ी नहीं थी, तबतक ये किजिल अरबत और अक्कलमें रहते रहे। संख्या बढ़नेपर १८३० ई०में इनके दस हजार परिवार पूर्वकी ओर जा ताजन्द-उपत्यकामें बस गये, और वहाँपर अपने सरदारके नामसे उन्होंने अराज खानकला बनाया। बार्नेसके समय (१८३१ ई०में) तेक्कोंके चालीस हजार परिवार (तम्बू) थे। इस समय ऊपरी मध्य-वक्षुपर सारिकोंके बीस हजार तम्बू थे, जो कि मर्वपर हाल हीमें अधिकार करनेवाले खीवियोंसे लड़ रहे थे। संख्यामें उन्हींके बराबर यामूद कबीला खीवा और अस्त्राबादके बीच चरवाही जीवन बिताता था। गोखलान तुर्कमानोंकी एक शाखा थी, जो कि अतरक और गुरगानके बीच ईरानी प्रजा होकर रहती थी। सलोर कबीला भी लड़नेमें बहुत बहादुर था, किन्तु उसकी संख्या अपेक्षाकृत अधिक नहीं थी। सलोर सरख्शके नजदीक ऊपरी ताजन्द-उपत्यकामें रहते थे। इनकी बार-बारके लूट-मारसे तंग आकर ईरानी शाह फतहअलीके पुत्र अब्बास मिर्जाने भारी सेनाके साथ १८३२ ई०में इनपर आक्रमण किया। बहुत खून-खराबीके बाद सरख्शपर ईरानियोंने अधिकार कर लिया, और मारे जानेसे बचे हुये सलोर भागकर मेर्वके दक्षिण योलेतानकी हरितावली में बस गये।

ताजन्दके ऊपरी भागमें बसे हुये तेक्के उत्तरी-ईरानमें बराबर लूट-मार किया करते थे ईरान बराबर प्रतिरोध करता था, लेकिन कास्पियनसे हिरातके पासतक फैली अपनी सारी उत्तरी सीमाको तुर्कमानोंसे सुरक्षित रखना सम्भव नहीं हुआ। १८४८ ई०में खुरासानके ईरानी राज्यपाल आसफुद्दौलाने तेक्कोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हें बरबाद कर दिया, किन्तु घुमन्तुओंका इतनी जल्दी सर्वनाश नहीं किया जा सकता। बचे-खुचे तेक्कोंने अपने भाई-बन्दोंके पास अक्कलकी हरितावलीमें शरण लेनी चाही, लेकिन वहाँ पहले हीसे जनसंख्या अधिक थी, इसलिये जगह न मिली और फिर वह आसफुद्दौलाकी शरणमें गये, जिसने उन्हें सरख्शके उजड़े हुये इलाकेमें रहनेकी इजाजत दी। यह इलाका तेरह साल पहले सलोरोंके हाथसे निकलकर वीरान हो गया था। अब तेक्के खीवाके इलाकेमें लूट-मार करने लगे, इसलिये खीवाके खान मुहम्मद अमीनने सरख्शको जीत वहाँ राज्यपाल नियुक्त-कर छावनी बैठा दी। लेकिन खानके हटते ही तेक्कोंने उन्हें तलवारके घाट उतार दिया। खानने फिर लौटकर चढ़ाई की, लेकिन एक टेकरीपर तुर्कमानोंने घेरकर उसका काम तमाम करके

उसके मुडको काटकर ईरानी शाहके पास भेज दिया, केवल धड ले जाकर खीवामें दफनाया गया। तेक्कोने अब ईरानके भीतर भी लूट-मार शुरू की। जिस खुरासान-राज्यपालने इन्हे इस भूमिमे बसाया था, उसीने सरख्शको जलाकर तेक्कोको उत्तरमें मेर्वकी ओर भगा दिया। १७८४ ई०के पहलेसे मेर्वमे सारिक कबीला रहता आया था। अब सारिको और तेक्कोका खूनी संघर्ष चला। सारिकोने अपने पक्षको कमजोर देखकर खुरासानके ईरानी राज्यपालको बुलाया, जो अठारह बटालियन पैदल और सात हजार सवार सेनाके साथ आया। तेक्कोने अन्तमें ईरानकी अधीनता स्वीकार करके राज्यपालको बहुत मूल्यवान् भेंटें दी। फिर वह अपने शत्रु सारिकोके ऊपर टूट पडे, और उन्हे मेर्वकी हरितावलीसे निकालकर ऊपरी मुर्गाब-उपत्यकामे योलेतान और पजदेहकी ओर खदेड दिया, जहासे जाकर उन्होने ईरानके हुक्मसे हरीरूद नदीके बायें तटपर जराबादसे सलोरोको बेदखल किया।

कई शताब्दियो बाद मुर्गाबकी उर्वर उपत्यकाके स्वामी अब सारिक थे। उनकी शक्ति इतनी अधिक थी, कि इन्होने खीवाकी सेनाको हरा दिया। तेक्कोने खेतीके फायदेको भी समझकर उसके प्रचार-की कोशिश की, लेकिन सिंचाई यहाकी सबसे बडी समस्या थी। इसके लिये पुराने समयमे बडे-बडे बाध बना जल-निधिया स्थापित की गई थी, जो कि लडाइयोमें बनती-बिगडती रही। मेर्वके स्वामी बनकर तेक्कोने मेर्व नगरसे पचीस मील ऊपर एक ऊबड-खाबड-सा बाध बना पचीस मील लम्बी नहर खोदी, जिसके सहारे अडतालीस हजार परिवार खेती करने लगे। बाध और नहरकी मरम्मतके लिये हर पचीस परिवार एक आदमी देता। १८८० ई०मे अंग्रेज यात्री ओडोनोवेन इधरसे गुजरा था। उसने इस बाधके बारेमें लिखा था—"नदी-तटके दोनो तरफ बीस गजतक बडे-बडे नरकटोकी घनी पंक्ति है। पानीकी धाराके लिये मुश्किलसे दस फुट चौडी जगह छोडी गई है। इस सकरे मार्गसे पानी जोरसे आवाज करता बहता है। पचास गजतक यह पानीका रास्ता चला जाता है। इस दूरीमें भी नरकटोके बाधको और समेटकर पानीको रोकनेकी कोशिश की गई है।"* लेकिन कृषि-जीवनके लिये जैसी शातिकी आवश्यकता थी, अभी वह तेक्कोमे नही आ पाई थी। दक्षिणमें सारा खुरासान उनके शिकारकी जगह बना हुआ था, फिर वह क्यो लूट-मारसे हाथ खीचते? वह मशहदसे साढे चार सौ मील दक्षिणतक धावा मारते। उनसे प्रतिरोध करनेके लिये १८६० ई०मे ईरानने नवीन सरख्शमे एक किला बनाया, फिर अगले साल ईरानी मुख्य-सेनापतिने बारह हजार पैदल, दस हजार घुडसवार सेना तथा तेतीस तोपोके साथ चढाई की। तेक्कोने सुलह करनी चाही, लेकिन इन लडाकुओकी सुलहकी बातपर कौन विश्वास करता? तेक्के भी जानपर खेलकर लडे, और सारी ईरानी पैदल-सेना मारी या उनके हाथमें बदी बनी, केवल सवार अपने कायर सेनापतिके साथ भागनेमे सफल हुये। इस लडाईमे इतने अधिक ईरानी गुलाम तेक्कोके हाथ आये, कि मध्य-एसियाके बाजारोमे गुलामोकी कीमत एक गिन्नी कम हो गई। तेक्कोको अपने अधीन बनानेका ईरानका यह अन्तिम प्रयास था। अपनी इस सफलताके बाद तेक्के अक्कल और मेर्वमे जम गये, जहासे वह बराबर ईरानमे लूट-मार किया करते। मेर्व हरितावलके पूर्वी भागमे तेक्कोकी तोकतामिश-शाखा रहती और पश्चिममे ओतामिश पूर्वी छोरपर बेक रहते। इन शाखाओके अतिरिक्त उनके कुछ और भी छोटे-छोटे विभाग थे।

३ तेक्कोका शासन

तेक्के घुमन्तू कबीलेशाही अवस्थामे थे, इसलिये उनका शासन जन-सत्ताको छोड और हो ही क्या सकता था? अंग्रेज यात्री वोल्फने × इनके बारेमे लिखा है—"इन लुटेरे कबीलोमे रहनेके बाद मैं इस निश्चयपर पहुचा हू, कि भीडकी इतनी बुरी स्वेच्छा-चारिता कही नही हो सकती। इससे बढकर बुरी बात क्या हो सकती है, कि अपने पागलपनके ही कारण यह अशिक्षित और असभ्य भीड अपनी शान दिखलाती है।" लेकिन वोल्फ यह

* मेर्वकी कहानी। × बुखारा

एकतरफा फैसला था। राजकाजकी बातोपर निर्णय करनेके लिये सारी जनताकी सभामें वह बहस करते। इन्ही सभाओमें वह अपना खान चुनते, जो कि शासनका उच्च पदाधिकारी होता। लेकिन जबतक जनता उसे स्वीकार करती, तभीतक वह खान रहता। इस पदके लिये कोई आकर्षण नही था, क्योंकि खानको शिष्टाचार और सम्मान पानेके अतिरिक्त कोई लाभ या अधिकार नही था। उसके पास चालीस जिगित (बहादुर) रहते, जो सरकारी आज्ञाको पालन करवाते, लेकिन खजाना खानके हाथमें नही था। कोई विशेष काम आनेपर कबीला इख्तियार नामक एक विशेष प्रतिनिधि चुनता। सम्मतिदाता कबीलेके सारे लोग होते। १८८१ ई०मे ओडोनोवेनके मेर्वमे जानेपर उसे वहा एक 'इख्तियार' मिला था, जिसे तेहरानमे शाहके पास सुलहकी बातचीतके लिये भेजा गया था। ओडोनोवेनके अनुसार पिछले कुछ समयसे तेक्के अब एक साधारण राज्यपद्धतिकी ओर बढ रहे थे, जिसमे जनतंत्रताका स्थान खानदानी राजतंत्र लेने जा रहा था। यह परिवर्तन नूरवर्दी खानके समयसे होने लगा, जो कि खीवा, ईरान और सारिकोके युद्धोकी विजयोंमें नेता रहा—सफल नेता राजा बन जाता है। उसने अपने पुत्र मखदूम कुलीको अवकलके तेक्कोका मुखिया बनाया, और वह स्वय मेर्वका खान रहा। उसे इतना आगे बढनेमें रूसकी ओरसे पैदा हुये खतरेने भी सहायता की। अगर इतना भय न होता, तो शायद घुमन्तू इतनी एकतंत्रताके लिये भी तैयार न होते। तेक्के खीवामें रूसकी प्रभुता स्थापित होते देख चुके थे, उन्हे अपने भविष्यके लिये डर मालूम होने लगा था।

सभी तुर्कमानोकी तरह तेक्के सुन्नी मुसलमान थे, लेकिन वह धर्ममे कट्टर नही थे, और न मुल्लोकी पर्वाह करते थे। वोल्फके समय (१८४३ ई०में) खलीफा अब्दुर्रहमान नामक मुल्लाकी बडी इज्जत थी। अपनी बहादुरी और बुद्धिके लिये प्रसिद्ध आदमियोके हाथमे सैनिक जिम्मेवारी दी जाती थी। वह ऐसे आदमीको अपना सरदार (सेनापति) बनाते, जिसे कि आक्रमण की जाने-वाली धरतीका सूक्ष्म ज्ञान होता। इस लूटमे उन्हे जहा माल हाथ आता, वहा बहुतसे नर-नारी भी मिलते। यदि मुक्ति-धन चुकानेके लिये कोई तैयार होता, तो तुर्कमान अपने बंदियोको छोड देते, नहीं तो खीवा या बुखाराके बाजारोमे उन्हें गुलाम बनाकर बेच देते। तुर्कमान बहादुर होने-के लिये तीन बातोकी अवश्यकता थी—अच्छा घोडा, हथियार और मृत्युसे निर्भयता। कहावत मशहूर थी—"जिसने अपनी तलवारकी मुट्ठीपर हाथ रख दिया, उसे और किसी तर्ककी अवश्यकता नही।" और "घोडेकी पीठपर सवार तेक्का न बापको समझता, न माको।" युद्धका निश्चय हो जानेपर स्वाभाविक नेता अपने किबित्का (तम्बू)के सामने झडा गाडता, और अल्ला और रसूलके नामपर भले मुसलमानोको शीया काफिरोके ऊपर हमला करनेके लिये बुलाता। थोडे ही समयमें उनके तम्बूके चारो ओर सैकडो योद्धा जमा हो जाते, जो अपने सरदारके हुक्मपर आगमें कूदनेके लिये तैयार रहते। निश्चित दिनपर अनुचर सुशिक्षित घोडेपर सवार हो रसद लिये सरदारके पास पहुचते। यदि अभियान खुरासानकी ओर करना होता, तो कोपेतदाग पर्वत श्रेणीके तीन डाडोमें-से किसी एकसे पार होते। पहाड पार करके दूसरी ओरके पर्वतसानुपर चन्द सवारोकी रक्षामे रसदको छोड, गाजी (धर्मयोद्धा) सारे दिन आगेकी तैयारीमें लगे रहते। दूर उपत्यकामे ईरानके शात गाव बसे हुये हैं शाम नजदीक आ रही है। दरख्तोके बीच सफेद घरोंसे चूल्हेका धुआ निकलकर आकाशमें मडरा रहा है। बूढे गप कर रहे हैं, तरुणिया चरागाहोंसे अपने पशुओको ला रही हैं। यह समय है, तेक्कोंके शिकारका। चन्द मिनटोमें ही गावकी गलियोमे तुर्कमान छा जाते। वे अपने धनुष-बाणो और तलवारोको आख मूदकर दाहिने-बाये चलाते, कितनोको मारते और सारे गावको भयभीत कर देते। फिर बचे-खुचे लोगो, उनके ढोरो और कीमती चीजोको इकट्ठा करके जितनी जल्दी आये थे, उतनी ही जल्दी अन्तर्धान हो जाते। यदि पीछा किये जानेका डर होता, तो बिना लगामको रोके सौ-सवा-सौ मीलतक भागते चला जाना उनके लिये साधारणसी बात थी। लडके और बच्चे ज्यादा कीमती समझे जाते, जिन्हे सवार चारजामोसे बाधकर दूसरे घोडोपर लाद लेते। ये घोडे तुर्कमान सवारके घोडेसे बधे होते, इसलिये पीछे-पीछे भगते जाते। दौड सकने-वाले आदमियोको कभी-कभी जंजीरोमे बाधकर घोडोंके साथ भगाया जाता। यदि वह थककर

न चल पाते, तो तुर्कमानकी तलवार उनके दु खोका अन्त करनेके लिये तैयार थी । कारवापर जब आक्रमण करना होता, तो वह किसी रेगिस्तानी कुयेंके आसपास छिपे रहते, और जब कारवा विश्राम करने लगता, तो चारो ओरसे उसके ऊपर टूट पडते । यदि तुर्कमान अपनी सख्या पर्याप्त नही देखते, तो यात्रामे पीछे रह गये ऊटोपर हमला करते । तुर्कमानोकी सफलताकी कुजी थी, उनके तेज और मजबूत घोडे, तथा यकायक फुर्तीसे आक्रमण ।

कितनी ही वार अपने दासो और दासियोको बेचनेके लिये तेक्के स्वय खीवा और बुखारा जाते । लेकिन इसकी उन्हे इतनी जरूरत नही थी, क्योकि गुलामोके सौदागर उनकी वस्तियोमें आकर गुलामोको थोक दरपर खरीद ले जाते । रूसियोने जबतक मध्य-एसियामे अपना प्रभुत्व नही जमाया, तबतक वहा गुलामोकी यह लूट और बेच ऐन इस्लामी शरीयतके अनुसार मानी जाती थी । पीतर I को इतालियन यात्री फ्लोरियो ब्रेनेवेनीने सूचित किया था, कि बुखारामे तीन हजार रूसी गुलाम है, और उतने ही खीवामे भी । अग्रेज-यात्री वोल्फके अनुसार बुखारामें दो लाख ईरानी गुलाम थे, और उसी समय गये मेजर एवटके अनुसार खीवामे सात लाख थे, जिनमे बच्चो और तरुण लडकियोका मूल्य सयानोसे दुगुना था ।

तेक्के अपने घोडेका महत्त्व सरदारसे भी बढकर मानते थे । उनके घोडे बहुत समयसे अच्छी जातिके माने जाते थे । कहा जाता है, तेमूर लगने पाच हजार अरब घोडोको लाकर तेक्के घोडो-की नसलको बढिया बनाया था । शाह नासिरुद्दीनने पिछली शताब्दीमे पाच सौ अरब घोडे तेक्कोके पास भेजे । लेकिन जान पडता है, तुर्कमान घोडोके लिए अरबी प्रभावकी अवश्यकता नही थी, और न वह अपने रूप और ढाचेमें अरब घोडो-जैसे होते है । वह कदमें बडे, लबे पैर, सकरी छाती, और लम्बे सिरवाले होते है । प्रशिक्षित तथा खास चारेपर रक्खे तुर्कमान घोडे एक दिनमें साठ मीलका रास्ता तै करते, इस तरहकी यात्रा वह बहुत दिनोतक जारी रख सकते थे । तेक्के-सवारो-को भी इतना अभ्यास था, कि वह चौबीस घटा घोडेकी पीठपर बिता सकते थे । तेक्कोके घोडोका चारजामा वही था, जो कि चीनी दीवारके उत्तरके मगोल घुमन्तुओमे पाया जाता है । तुर्कमान अपने घोडोसे इतना प्यार करते, कि वह अपने पीनेके पानी, या जौकी आखिरी रोटीको भी घोडेको दिये विना नही खाते । उनके हाथोमे चाबुक केवल शोभाके लिए रहता, नही तो घोडोके लिये लगामका इशारा काफी था । सोवियत शासनने तुर्कमान घोडोकी इस वढिया नसलको सुरक्षित रखते हुये उसको बहुत बढाया, और अश्काबादसे मास्कोतककी दौड करके देख लिया, कि उनकी प्रसिद्धि झूठ नही है । तेक्कोके ईरानमें जा लोगोको लूटकर गुलाम बनानेका बडा ही सजीव चित्रण मध्य-एसियाके महान् उपन्यासकार सदरुद्दीन एलीने अपने ग्रथ 'गुलामानमे' किया है ।*

१९वी सदीके उत्तरार्धमें तुर्कमानोमें वस्तीवासी भी काफी हो गये । वस्तीवासियोको 'चरवा' और घुमन्तुओको 'चोमरी' कहा जाता था । चोमरी तीन दिनसे अधिक शायद ही कभी एक जगह रहते । उनका धन केवल पशु थे । चोमरी-तुर्कमान सालके कुछ भागमे 'कला' (दुर्ग)मे एक स्थान पर रहते, लेकिन इस किलेका साधारण किलेसे कोई सबध नही । एक खुली जगहमें तुर्क-मानोके तम्बू खडे होते, जिसके चारो तरफ कच्ची मिट्टीकी दीवार होती, जिसमे खतरेके देखनेके लिए सतरीके वास्ते मीनार बने होते । 'चरवा'के अपने औल (ग्राम) होते, जिनकी चारो ओर गाव-वालोके खेत और बाग रहते । वहा जौ, ज्वार और चावलकी खेती ही ज्यादा थी । फलोमे अगूर, सेब और सबसे अधिक तरबूज होते । तुर्कमानोके 'कला'मे सिर्फ एक दरवाजा होता । पश्चिमके किजिल अरवतसे पूर्वमे अश्काबादतकके औलोमे प्रसिद्ध 'कला' ग्योक-तेप्पेकी उपत्यकाके सबसे चौडे भागमे अश्काबाद था, जिसमे आठ औल सम्मिलित थे ।

४ पोशाक और रूपरेखा

तुर्कमान शरीरमें मझोले कदके होते । उनका रग गेहुआ तथा गालकी हड्डी मगोलायितोकी तरह उभडी हुई होती । आखे भी उसी तरह बादामी, नाक चौडी—जो मिरे-

*"जो दास थे" (राहुल)

पर उठी, होंठ मोटा, मूछ-दाढी नाममात्र, कान बहुत बडे—इस प्रकार पता लगेगा कि तुर्कमानोने शताब्दियोसे मध्य-एसियामें रहके भी अपने मगोलायित-खूनको बहुत कुछ शुद्ध रक्खा। ईरानकी लूटी हुई गुलाम स्त्रियोको अपने पास रखनेकी जगह वह बेंच देना ही ज्यादा पसद करते थे। लेकिन तो भी पिछली शताब्दियोंके यात्रियोका कहना था, कि तुर्कमान स्त्रियोकी रूपरेखा मगोलायित कम होती है। उनके बाल छोटे, मोटे और रूखे होते हैं। तरुणाईमें वह लम्बी और सुगठित दीख पडती है। मोजेरने लिखा था—"मध्य-एसियामें तेक्के ही ऐसी स्त्री है, जो कि जानती है कि कैसे चलना चाहिये। जब कोई तेक्के-लडकी पानी भरनेके लिये अपने कधेपर पानीका कूजा लिये कुयेंपर जा रही हो, तो उससे सुन्दर दृश्य देखनेको नही मिलेगा।" तरुणाईमें इनके गाल गुलाबी होते हैं, लेकिन मध्यवयके शुरू होते ही मुहपर झुरिया पड जाती है।

तुर्कमान पुरुषोके सिरपर एक बहुत ऊची और देखनेमे भारी काली भेडके खालकी टोपी (कल्पक) होती है। टोपीके नीचे आधा सिर ढका होता है। देखनेसे तो मालूम होता है, कि कल्पक पाच सेरसे कमकी न होगी, लेकिन वह बहुत हलकी होती है। लाल रगका पायजामा और ऊपरसे एडी-तक लटका हुआ काले रगका जब्बा (चोगा) तुर्कमानोकी पोशाक है। गर्मियोमें वह सूती कपडेका व्यवहार करते और जाडोमे ऊटके ऊनके बने हुये कपडोका। पैर जूते और मोजेमे ढका रहता। औरतोकी पोशाक लम्बे-चौडे घाघरेकी होती, जिसका रग लाल या नीला और कपडा कभी-कभी रेशमका भी होता। उनकी छातीपर चादीके सिक्को या दूसरी चीजोका हमेल पडा रहता। व्याहता स्त्रिया जूडा बाधती, कुमारियोंके बाल कधेपर लटकते रहते। मुह ढाकनेके लिये वरजक वह बहुत कम इस्तेमाल करती। तुर्कमानिया अपरिचित आदमीसे भी बातचीत करती। उनके हाथका बनाया कालीन बहुत प्रसिद्ध था। बहु-विवाह यद्यपि विहितथा, लेकिन व्यवहारमें बहुत थोडे ही आदमी अनेक बीबिया रखते। तुर्कमान वैसे लुटेरे थे, लेकिन अपने पूर्वजोके वक्तसे चले आते अतिथि-सेवाधर्मको वह बहुत मानते थे। कोई भी परदेशी तेक्केके बुर्ये भरे किबित्कामे पहुचने-पर तन्दूरी रोटी, मट्ठा, चाय, हुक्का, पनीर, मट्ठेमें पके चावलमें भागीदार बन जाता। स्वागतके बाद फिर वह शतरज और बासुरीसे मनोरजन कर सकता। तेक्के डाकू थे, लेकिन चोर नही। वह गाली देना नही जानते थे, उनके यहा सबसे बडी गाली थी 'कायर' कहना।

५ रूससे युद्ध

खीवाको रूस दबा चुका था, लेकिन तुर्कमान घुमन्तू अपनी शानमें मस्त थे। १८७३ ई०मे जब रूसी सेनायें खीवामे आई, तो यामूद-तुर्कमानोने रूसियोका जबर्दस्त मुकाबिला किया था, इसे हम देख आये हैं। कॉफमानने यामूदोको पाठ पढाना चाहा, और इसके लिये सारी दक्षिणी मरुभूमिमे सर्वनाशका युद्ध छेड दिया, क्रूरतामें जारशाही घुमन्तुओको भी मात करने लगी। ईरानी राज्यपालने १८६९ ई०में अतरक नदीकी उपत्यकामें रहनेवाले गोखलान-तुर्कमानोको दबाना चाहा। कास्पियन समुद्रमे नावो और जहाजोको लूटनेवाले गोखलानोको रूसी नौसेनाने दबा दिया। खीवा-विजयके बाद १८७६ ई०में कास्पियनका पूर्वी तट काकेशसके महाराज्यपालके अधीन रहा, जिसकी सेना यहा रक्षाका काम करती थी। तेक्कोने अपनी उत्तर-पूर्वी सीमातमें इस प्रकार रूसियोकी जबर्दस्त दीवार देखी। यही हालत पूर्व दिशामें भी थी। खीवा और बुखाराने सधि करके रूसकी बातको मान अपने यहा दासताको निषिद्ध कर दिया था, इसलिये तेक्कोंके लाये गुलामोंके बेचनेके लिये अब मध्य-एसियाके बाजार बन्द हो गये थे। उन्होने रूसियोसे भी छेडखानी जारी रक्खी। १८७५ ई०मे एक रूसी-कारवा क्रास्नोवोद्स्कसे खीवाकी ओर जा रहा था, जिसे उन्होंने बीचमें लूट लिया। इसी तरह १८७७ ई०में अतरकके उत्तरमें भी एक कारवाको लूटा। रूसी इसका बडी कठोरतासे जवाब देने लगे। तेक्कोको मालूम होने लगा, कि अब हमारी भी वही हालत होनेवाली है, जो कि खीवाकी चार साल पहले हुई। १८७७ ई०मे उन्होंने ईरानकी अधीनता स्वीकार करनी चाही, लेकिन अब रूस उसकी इजाजत नही दे सकता था। तुर्कमानोकी लूटमारके कारण इधर तुर्कमान-मरुभूमिसे खीवा-बुखाराका

व्यापार बन्द हो गया, और सुरक्षित समझकर ओरेनबुर्गके बहुत फेरवाले रास्तेसे कारवा जाने लगे। पीतरके समयसे ही रूसियोके दिमागमें समाया था, कि वक्षुको कास्पियनमे मिलाकर वोल्गा-उपत्यकासे जलमार्ग द्वारा व्यापार करे, लेकिन यह काम जारशाही नही कर सकी।

खीवाके विजयके बादके तीन-चार वर्षोंमे तेक्कोने अपनी लूट-मारसे रूसियोको वहानेका रास्ता दे दिया, और १८७७ ई०में जेनरल लोमाकिनको हुक्म हुआ, कि तेक्कोके किले किजिल अरबतपर अधिकार कर लो। किजिलअरबत कास्पियन तटपर अवस्थित क्रास्नोवोद्स्क बन्दरगाहसे दो सौ मील पूर्व था। जेनरल लोमाकिन १२ अप्रैलको नौ कपनी पैदल, दो स्क्वाड्रेन कसाक और आठ तोपे लेकर रवाना हुआ। भला आधुनिक हथियारोके सामने तेक्के कैसे डटते? वह पहली ही मुठभेडमें भाग गये। इसके बाद अक्कर-उपत्यकाके प्रत्येक औल (गाव)के प्रतिनिधि रूसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये आये, लेकिन लोमाकिन इससे पहले ही डरकर पीछे हट गया था। इसी बीच तुर्कीसे सका युद्ध (१८७७—७८ ई०) छिड गया, जिसके कारण तुर्कमानोके साथ युद्धको स्थगित करना पडा। १८७८ ई०मे तुर्कीके युद्धके खतम होते ही फिर जारशाहीने तेक्कोकी ओर ध्यान दिया। १८७८ ई०में एक रूसी सेना अतरक नदीके मुहानेके पास अवस्थित चिकिस्ल्यरसे चली। वेन्देसेन डाडेसे कोपेतदाग पर्वतश्रेणीको पारकर ९ सितम्बरको उसने दगिल-तेप्पेपर आक्रमण किया। वहा पद्रह हजार तेक्के योद्धा अपने पाच हजार स्त्री-बच्चोंके साथ मिट्टीकी दीवारसे घिरे स्थानमें लडनेके लिये तैयार थे। तोपके सामने यह मिट्टी-की दीवारें क्या बचाव करती? वह प्राण बचाकर भाग निकले। रूसी सवार उन्हे पीछे पडकर घेरने लगे। चारो ओरसे उन्हे मौत-ही-मौत दिखलाई पड रही थी। अपने स्त्री-बच्चोंको दुश्मन-के हाथमे पडते देख "मरता क्या न करता" पर उतर आये, और उन्होने शैतानकी तरह लडाई लडी। लोमाकिनका मनोरथ भग हुआ, साढे चार सौ रूसी हताहत हुये, और बाकी सेनाको लेकर उसे चिकिस्ल्यर लौट जाना पडा। इस विजयकी खबरसे सारे मध्य-एसियामे आशाकी किरण दौड पडी। अब और भी लूट-मार होने लगी। १८८० ई०मे तीन हजार तुर्कमानोने वक्षु-तटपर बुखाराकी भूमिमे अवस्थित चारजूय-किलेके पासतकके कितने ही गावोको लूटा। मध्य-एसियासे जारका रोब उठते देखकर जेनरल स्कोबेलेफने पीतरबुर्ग लिखा था—"यदि हम अपनी पिछले पाच सालकी स्थितिपर विचार करते है, तो सामने भयकर खतरा दिखलाई दिये विना नही रहता, क्योकि वह साम्राज्यकी आर्थिक और राजनीतिक स्थितिको अस्त-व्यस्त कर सकता है। अग्रेजोने एसिया-इयोको विश्वास दिलाना चाहा है, कि उन्होने कान्स्तन्तिनोपलके सामने रूसियोको रोक दिया, और उन्हे वल्कान प्रायद्वीप छोडनेके लिये मजबूर किया। वर्लिनकी सधि जो हमारे अनुकूल नही हुई, उसकी भी खबर उन्होने सारे एसियामें फैलाई है।"

जनवरी १८८० ई०मे जार अलेक्सान्द्र II ने पीतरबुर्गमें युद्ध-परिषद्की। सबसे कठिन समस्या थी यातायातकी। और देरतक रुका नही जा सकता था, इसलिए उसी साल तेक्को (तुर्कमानो)के विरुद्ध अभियान भेजा गया। बारह हजार ऊट रसद ढोनेके लिये रक्खे गये, जिनमे हजारो रास्तेमें मर गये। रेगिस्तानमे रसद पहुचाना बहुत मुश्किल था, इसीलिये ग्योक-तेप्पेका मुहासिरा हटाना पडा था, लेकिन अब रेलोके प्रचारसे यातायातकी समस्या उतनी मुश्किल नही थी, यद्यपि उसपर खर्च बहुत पडता था। रूसियोने रेलवे लाइन बनानेके लिये एक खास बटालियन सगठित की, और १८८० ई०के अन्ततक कास्पियनके पूर्व उजुनअदासे मुल्लाकारीतक तेरह मीलकी रेलकी सडक बना दी। काकेशसके सेनानायकके अधीन जेनरल स्कोबेलेफ अभियानका मुख्य-सचालक था। दगिल-तेप्पेके तजर्वेसे मालूम हो चुका था, कि तुर्कमानोंके नमदेके तम्बुओपर आग जल्दी असर नही करती। इसके लिये स्कोबेलेफने पेट्रोल भरे गोले तैयार किये। क्रास्नोवोद्स्कमें यद्यपि पासमे समुद्र लहरें मार रहा था, लेकिन उसके खारे समुद्रपर पशु-प्राणी गुजारा नही कर सकते थे। इसके लिये वहापर एक बहुत बडा कारखाना बनाया गया, जिसका काम था पानीको भाप बना फिर जलके रूपमें परिणत करके प्रतिदिन साढे सात लाख गैलनके मीठा पानी देना। स्कोबेलेफ

मई १८८० ई०में ही क्रास्नोवोद्स्क पहुचकर तैयारी करने लगा। काकेशससे वारह हजार सेना और सौ तोपे आयी। सितम्बर १८८० ई०के आरम्भतक तैयारी प्राय पूरी हो गई।

रूसियोने १८ दिसम्वरको वामिर, एगमनवातिर (समुर्स्क) पर अधिकार किया। पता लगा, कि शत्रुका मुख्य जमाव दगिल-तेप्पेमें है। दगिल-तेप्पा प्राय एक वर्गमीलमें फैली आयताकार भूमि थी, जिसके चारो ओर अठारह फुट मोटी और दस फुट ऊची दीवार थी, जो वाहरसे दस फुट होते हुये भी भीतरसे पद्रह फुट ऊची थी। दीवारके वाहर चार फुट गहरी खाई थी। तेप्पेके पश्चिमोत्तरमे गोल टीला था, जिसे तुर्की भाषामे "दगिल-तेप्पा" कहते हैं, उसीके कारण इस स्थान-का यह नाम पडा। इसी गोल टीलेपर ईरानियोसे पकडी पुराने ढगकी एक तोप रक्खी हुई थी। तीस हजार तेक्के योद्धा अपनी स्वतत्रताके लिये प्राण देनेको तैयार थे। पानीका यहा कोई दुख नही था, क्योकि पाससे एक नदी वहती थी। रूसी पानीकी वारको चाहत, तो वदल सकते थे, लेकिन तव उन्हे इतनी भारी सख्यामे शिकार एक जगह नही मिलता। एक सप्ताहतक आगे वढना रोककर २४ दिसम्बरको रूसियोंने जाच-पडताल भर की। १८८१ ई०के नववर्षके दिन यगीकलापर भीषण आक्रमण शुरू हुआ। कला एक पहाडीकी जडमें था। आठ हजार रूसी सैनिक तीन स्तम्भोमें विभक्त हो वावन तोपो और ग्यारह मशीनगनोको लिये आगे वढे। दक्षिणवाले स्तम्भने पीछे और सामने दो ओरसे भयकर गोलावारी की, जिससे तेक्के यगीकला छोड दगिल-तेप्पेकी सेनामें जाकर मिलनेके लिये मजबूर हुये। उन्होने रातको फिर यगीकलाको लेनेका प्रयत्न किया, लेकिन रूसी तोपोने उन्हे मार भगाया। ३ जनवरीको रूसियोन अपने कैम्पको यगमनवातिरसे यगीकलामें परिवर्तित कर दिया। अगले दिन शत्रुओके सामने आठ सौ गजपर रूसियोकी पक्ति खडी थी। रूसियोंके घिरावेको तोडनेके लिये मेर्वसे पाच हजार और तुर्कमान आये, जिन्होने रूसियोकी पक्तिपर छापा मारा। पागलकी तरह वह रूसी सनिकोपर पडे और गोलियोंसे जलते-भुनते भी कितनोने एक हाथसे रूसी सैनिकोकी वन्दूकोको पकडा और दूसरे हाथसे अपनी तेज तलवारो द्वारा शत्रुओकी गर्दनें काटी। सारी भूमि लोगोके मुडो और कटे हुये अगोंसे ढक गई। चारो तरफ "अल्लाह"की आवाज या रूसियोका "उरा" सुनाई पडता था। रूसियोंके दाहिने पक्षपर तीन सौ तेक्के वहादुरोकी लाशे पडी थी। लेकिन, आधुनिक हथियारोके सामने अल्ला या यह वीरता क्या कर सकती थी?

४ जनवरी १८८१ ई०को दूसरी पक्ति तैयार की गई, जिसमें छव्वीस सौ सैनिक थे। सध्या-के ममय तेक्कोने छापा मारा तथा वाहरी खाइयोपर अधिकार कर लिया, और तोपचियोको काट-कर चार पहाडी तोपे, और रेजिमेटके तीन झडे भी अपने साथ ले गये। लेकिन, तुरन्त ही यगीकलासे कुमक आ गई, और तोप छोड वाकी चीजोपर फिर रूसियोने अधिकार कर लिया। झडप इसी तरह चलती रही। १० जनवरीको रूसी सेना तेक्कोकी वाहरी चौकियोपर अधिकार करनेमें मफल हुई। लेकिन आव घटे वाद ही तेक्कोने जवर्दस्त प्रत्याक्रमण किया। तोपचियोकी एक कपनीके टुकडे-टुकडे करके वह दो तोपोको खाइयोकी ओर खीच ले गये। रूसियोने भी नई कुमक पाकर उनके आक्रमणको निष्फल कर दिया। रातके अधेरेमें तेक्के रूसियोपर आक्रमण करते। १६ जनवरीकी रातको उन्होने अपना अन्तिम जवर्दस्त आक्रमण किया, जिसे रूसियोंने वेकार कर दिया। १६ जनवरीको अपनी किलावन्दीके पूर्वी छोर-पर चौवीस गजके पासतक तेक्के ढकेल दिये गये। २० जनवरीसे उनका किला तोडा जाने लगा। किलेके भीतर नमदेके किवितकोपर पेट्रोलके गोले फेंके जा रहे थे। इन्ही तम्बुओमें सात हजार वच्चे और स्त्रिया थी। तव भी वहादुर तेक्के तीन सप्ताहतक डटकर लडते रहे। अन्तिम आक्रमणके दिन जेनरल स्कोवेलेफने अपने सैनिकोको आदेश देते हुये कहा था—"हमें एक वडे ही वहादुर और भारी आत्मसम्मानवाले लोगोंसे मुकाविला करना पड रहा है।" अतिम प्रहारके समय रूसियोने औरतो और वच्चोको हटानेके लिये कहा। तेक्कोने समझा, ये हमारी स्त्रियो और वच्चोको अपने लिये लेना चाहते है, इसलिये उनका जवाव था—"अगर तुम हमारी स्त्रियो और वच्चोको लेना चाहते हो, तो हमारी लाशोपरसे होकर ही उन्हें पा सकते हो।" २४ जनवरीके ७ वजे

सवेरे किलेपर चारो तरफसे टूट पडनेके लिये रूसियोके चार सेना-स्तम्भ वनाये गये। सकेत पाते ही एक भारी धडाका हुआ, और तीन सौ फुटकी दीवार गिर गई। अब तेक्कोको पता लग गया, कि प्रतिरोध करना असम्भव है। दूसरे ही क्षण सेना-स्तम्भ भी उनपर टूट पडे और जरा ही देरमे भागते हुए घोडोके टापोकी धूल दिखलाई पडने लगी, जिनके पीछे-पीछे कुछ दूसरे भी शरणार्थी जा रहे थे। रूसियोकी आठ हजार सेनामेंसे वारह सौ मारे गये, लेकिन दगिल-तेप्पेपर जार-शाही झडा गड गया। रूसी सवारोने दस मीलतक तेक्कोका पीछा किया। तीस हजार तेक्कोमेंसे दस हजार काम आये। बच्चो और स्त्रियोपर रूसियोने हाथ नही छोडा। रूसी जेनरल जिन तेक्कोको वहादुर और भारी आत्मसम्मानी जाति मानता था, उन्हीके वारेमे एक पेंशन प्राप्त आई० सी० एस० अग्रेज एफ० एच० स्क्रीन लिखता है—"अलावके पास वैठके राजनीति वघारनेवाले लोग ग्योक-तेप्पेकी खून-खरावी और ओम्दुर्मानके घायल शत्रुओके कत्लको सभ्यताके खिलाफ कहेंगे, लेकिन एसियाइयोके स्वभावका यदि थोडा भी परिचय हो, तो उन्हे मानना पडेगा, कि एसियाई वर्वरता और धर्मान्धताकी शक्तियोके ऊपर प्रहारका सबसे अच्छा उपाय क्रूरताकी नीति है।"

ग्योक-तेप्पामे मध्य-एसियाकी स्वतत्रताकी अन्तिम लडाई लडी गई। उसकी विजयके साथ मध्य-एसियापर जारशाहीका अखड शासन और शोषण स्थापित हुआ, जिसका अन्त वोल्शेविक-क्रातिके साथ हुआ, और उसके वाद तेक्के और दूसरे तुर्कमान अपने स्वतत्र तुर्कमानिस्तान गणराज्यके स्वामी वनकर एक आधुनिक सुसस्कृत जातिके रूपमे अपने समाज और देशका नव-निर्माण करते हुये आगे वढने लगे।

तुर्कमानोके सघर्षके वाद ईरानके शाहकी आखे खुली, और उसने रूसियोको हटानेकी कोशिश की, जिसका परिणाम हुआ अतरक नदीके वाये तट और मेर्वसे हाथ धोना।

६ अग्रेजोसे तनातनी

ग्योक-तेप्पेकी लडाईके वाद रूसियोको फिर हथियार इस्तेमाल करनेकी जरूरत नही पडी। दिसम्बर १८८ई०मे उन्होने एक सैनिक प्रदर्शन किया। ३१ जनवरी १८८८ ई०को मेर्वकी भिन्न-भिन्न वस्तियोके एक सौ चौवीस प्रतिनिधियोने अपने चार कवीलोके चार सरदारोकी प्रधानतामें एकत्रित हो महाराज्यपाल कमारोफके सामने जारके प्रति भक्तिकी शपथ ली। एक अफगान साहसीने तुर्कमानोमे विद्रोह फैलाना चाहा, जिसे ३ मार्चको रूसियोने दवा दिया। अगली मईमे काकेशसके महाराज्यपालने जीते हुये इलाकेका निरीक्षण किया। फिर थोडे ही दिनो वाद मेर्वसे ३६ मील दक्षिण योलतन-उपत्यकाके पचास हजार सारिकोने अधीनता स्वीकर की और उसके वाद गियाउर और सरख्शके बीचके कवीले भी रूसी-प्रजा वन गये। रूसकी दक्षिणी सीमा इस तरह आगे वढ अफगानिस्तानसे मिल गई। हिरातमे अग्रेजोने अफगानोको एक मजवूत किला वनानेमें मदद दी थी। वह कैसे रूसके इस वढावको पसद करते? एक अग्रेजी लेखकने रूस और इगलैण्डके इस समयके सघर्पके वारेमें लिखा है*—

"भारतीय प्रायद्वीपकी ऐसी भौगोलिक स्थिति है, कि कोई भी युरोपीय शक्ति तवतक इसपर अधिकार नही कर सकती, जवतक वह समुद्रपर प्रभुत्व न रखे। हमारी प्रतिष्ठाके लिये यह जरूरी है, कि हम ऐसे साम्राज्यपर अधिकार रक्खें, जो दुनियाके लिये आश्चर्य और ईर्प्याकी चीज है। उसपर अधिकार करके हम नफा भी खूव उठा रहे है, हमारे कारखानोके लिये वहा वाजार है, और हमारे मध्यवर्गकी वेकार शक्तिके लिये वहा काम रक्खा है।

"इगलैण्डने रूसके कान्स्तन्तिनोपलके रास्तेको रोका। १८८४ ई०मे दुनियाकी कुजी दरे-दानियालको तुर्कोंके हाथोमे रखनेके लिये इगलैण्डने रूसके खिलाफ तलवार उठाई और उसके एक-चौथाई शताव्दी वाद, जव कि रूसियोके हाथमें यह भव्य शिकार जाने ही वाला था, जारकी विजयिनी सेनाको इगलैण्डने पीछे हटा दिया। मानवता (?) का हरएक मित्र 'इगलैण्ड और रूस'की दो शक्तियोके वीचमे विरोधकी भारी खाईको देखकर अफसोस किये विना नही रहेगा।

*"जार और इगलैण्ड मित्र या शत्रु"

यदि दोनों एक हो जाय, तो वह एसियाको सभ्यता और दुनियाको शांति प्रदान कर सकते हैं।

"एसियाके लोग कास्पियनसे चीनतक, और साइबेरियासे ईरान तथा अफगानिस्तानकी सीमा-तक उससे कहीं अधिक सुख और स्वतंत्रताको भोग रहे हैं, जितना कि भारतीय राज्यके किसी भागके लोग। लेकिन वहाँ (रूसी एसियामें) अब भी २०वीं सदीके आरम्भमें, भारी रक्षात्मक आयकर, अंग्रेजी व्यापारकी रक्षाके लिये वाणिज्य-दूतोंकी नियुक्ति, तथा युरोपियनोंके आने-जानेके ऊपर भारी रुकावट मौजूद है। सिवाय मशीनोंके बलपर हम सदा भारतके स्वामी नहीं रह सकते हैं, उसीपर हमारा सिंहासन खड़ा है। हमारा राज्य यहाँ (भारतमें) कभी गहरी जड़ नहीं जमा सकता। मशीनोंके बिना हमारे पूर्वगामियोंकी तरह हमारा भी शासन खतम हुये बिना नहीं रहेगा। लेकिन मध्य-एसिया उतना घना नहीं बसा है, और वहाँके लोगोंका जीवनतल 'भारत'की अपेक्षा अधिक ऊँचा है।

"हमें विश्वास है, कि यदि 'हमारे इंगलैण्ड और रूस'—एसियाकी दोनों महाशक्तियों—के बीच खुले दिलसे कोई समझौता हो जाय, तो इससे सभ्यताको आगे बढ़नेमें सहायता मिलेगी।"

इन उद्धरणोंसे मालूम होगा, कि अंग्रेज रूसियोंके दक्षिणी बढ़ावको पसंद नहीं करते थे, लेकिन साथ ही वह जानते थे, कि दोनोंके संघर्षके कारण एसियामें कहीं युरोपियनोंका शासन खतम न हो जाय, इसीलिये सीमाके निश्चित करनेके लिये दोनोंकी ओरसे जुलाई १८८४ ई०में एक संयुक्त कमीशन नियुक्त हुआ। रूसियोंने पचदेहके मारिकोंके रूसी-अधीनता स्वीकार करनेका हवाला दे माँग पेश की, कि तुर्क जातिकी सीमा हमारी सीमा है, और अफगान-बस्तियोंसे अंग्रेजोंका प्रभावक्षेत्र माना जाय। लेकिन अंग्रेज इसे माननेके लिये तैयार नहीं थे। अपने दावेको मजबूत करनेके लिए अंग्रेजोंके शहपर इसी बीच अफगानोंने आक्रमण करके बालामुर्गाब और पचदेह दोनों वादियों (उप-त्यकाओं)को दखल कर लिया। इसके जवाबमें जेनरल कमारोफने पुले-खातून, जुल्फिकार डाँडा और अक-रबातपर रूसी अड्डा गाड़ दिया, और फर्वरी १८८५ ई०में पचदेह-वादीके छोरपर पुले-कर्तीको भी ले लिया। इंगलैंडमें इसपर बड़ा गुस्सा प्रकट किया जाने लगा, और हिरातके किले-को मजबूत करनेके लिये अंग्रेज इंजीनियर भेजे गये, अफगानिस्तानमें हथियार और गोला-बारूद बड़े परिमाणमें भेजा जाने लगा, और भारतके पश्चिमोत्तर सीमांतपर जेनरल राबर्टकी अधीनता-में भारी सेना जमा की गई। पार्लयामेंटने एक करोड़ दस लाख पौंड सैनिक तैयारीके लिए मंजूर किये। उधर रूसने भी एक भारी नौ-सेना जमा की, और चाहा कि भूमध्यसागरके अंग्रेजी-व्यापार-मार्गको नष्ट कर दे। लेकिन दोनों साम्राज्योंको यह समझनेमें देर नहीं लगी, कि आपसकी लड़ाई-से उनमें भारी क्षति उठानी पड़ेगी। अंग्रेजोंने अफगानिस्तानको रोका, और अप्रैल १८८६ ई०में दोनों देशोंके प्रतिनिधि पीतरबुर्गमें जमा हुए। रूसियोंको हरीरूदका दाहिना किनारा जुल्फिकार डाँड़ेतक और पचदेहसे दक्षिण वागी-उपत्यका, जिसमें पचदेह हरितावली भी शामिल थी, मिली। इस प्रकार रूसी सीमा हिरातसे ५३ मीलपर पहुँच गई, जिसके और हिरातके बीचमें कोई प्राकृतिक बाधा नहीं थी। लेकिन दूसरी तरफ रूसको अमीर-बुखाराके हाथमें वक्षुके बायें तटपर अवस्थित ख्वाजासालेके दक्षिणके सुन्दर चरागाहोंको अफगानिस्तानको दिलवाना पड़ा। संयुक्त कमीशनने जितनी सफलतापूर्वक अपना काम किया था, उससे उत्साहित होकर १८९५ ई०में दूसरा सीमांत-कमीशन नियुक्त किया गया, जिसने पामीरमें अंग्रेजी और रूसी प्रभावक्षेत्रोंकी सीमा निर्धारित की। यह सीमा विक्टोरिया (जोर कुल) झीलके दक्षिणी किनारेसे शुरू होकर सरिकोल पर्वत-मालाके मेरुदण्डपर होते चीनी सीमांततक पहुँच सारिकोल पर्वतमालाकी एक ऊभड़-खाभड़ और दुर्गम बाहीसे ६ मीलपर सनातन हिमवाले प्रदेशमें जाती है, जहाँपर कि कई पर्वतश्रेणियाँ आकर मिलती हैं। "इसी निर्जन एकांत स्थानमें समुद्र तटसे बीस हजार फुटके ऊपर मनुष्योंकी पहुँचसे बिल्कुल बाहर तीन साम्राज्य—भारत (अंग्रेजी), चीन और रूस मिलते हैं।"

२५ नवम्बर १८९० ई०में जनरल कोपत्किनने अश्कावादमें अंग्रेज यात्रियोंके सामने भाषण करते हुए कहा था—"भीतरी उठाई-झगड़ेकी संभावनाको खतम करनेके लिए हमने देशियोंको बिना हथियारकर उन्हें शांतिपूर्ण जीवन स्वीकार करनेके लिए मजबूर करनेमें कोई

कसर नही उठा रक्खी है। ···अब एक अकेला यात्री भी कास्पियन तटसे साइबेरियाके सीमाततक, बिना जरा भी भयके यात्रा कर सकता है। · (यहाका) व्यापारीवर्ग सरकारका सबसे बडा समर्थक है, जिसके बाद कृपक है। ...विरोध अब मुल्लाओके पड्यत्र हीका रह गया है।''

७ रेल-निर्माण

तेक्कोके साथ युद्ध करनेके लिए तेरह मीलकी रेलवे लाइन बनकर कास्पियन तटसे रेलोका जाल शुरू हुआ। रेल-निर्माणके लिए खास तौरसे सगठित बटालियनने १८८३ ई०के अततक उसे कास्पियनसे १३५ मीलपर किजिल अरबततक बना दिया। मेर्वके ऊपर अधिकार हो जानेपर रेल बनानेमे और भी उत्साह हुआ, और अप्रैल १८८५ ई०के उकाजे (राजादेश) द्वारा रेलको आगे बढानेकी स्वीकृति दी गई। ३० जूनको काम शुरू हुआ। इस रेलवे लाइनके बनानेमे बाईस हजार तेक्के मजदूर काम करते रहे, और चौदह महीनेके भीतर रेल किजिल अरबतसे ३५२ मील मेर्वतक पहुच गई। मेर्वसे चारजूयकी लाइनपर काम अगस्त १८८६ ई०मे आरभ हुआ। इस लाइनको साठ मील रेगिस्तानमेसे जाना था। चार मासमे यह एक सौ एकतालीस मील लबी रेल भी तैयार हो गई। कास्पियन तटसे वक्षुके बाये किनारेपर अवस्थित चारजूय-तक अब ६६४ मील लबी रेल बनकर तैयार हो गई। वक्षु हमारी गगाकी तरह एक बडी नदी है, जिसका पाट चारज्यमे सवा मीलका है। नदीमे थोडा ही हटकर दोनो किनारोपर रेगि-स्तान है, जो कि कराकुम और किजिलकुमके महान् रेगिस्तानके भाग है। आमू (वक्षु)पर पुल बनानेके लिए लकडियोके ३३३० बेडे रूससे लाये गये। पहला पाया जून १८८७ ई०मे बैठाया गया और काम इतनी तत्परतासे हुआ, कि छ महीनेके बाद जनवरी १८८८ ई०में वक्षुका पुल यातायातके लिये खोल दिया गया। यह पुल ४६००गज लबा था, जिससे २२७० गज चौडी जल-धारा बहती थी। सितबर १८८७ ई०मे वक्षु तटसे २१६ मीलपर अवस्थित समरकदतककी लाइन-पर काम शुरू हो गया, जिसे २८ मीलका रेगिस्तान पार करके कराकुलमे जरफशा-सिंचित उपत्यका मे पहुचना था। अतमे मई १८८८ ई०मे कास्पियनसे समरकदतक ८७९ मीलकी रेल तैयार हो गई। इस रेलवे लाइनपर प्रति मील औसत खर्च ६१४४ पौड (अस्सी हजार रुपया) आया था, जब कि हिंदुस्तानमे अग्रेजी कपनियोने रेलोपर प्रति मील अठारहसे बीस हजार पौंड खर्च किये। १८९५ ई०में समरकन्द और ताशकदके बीच रेल बननी शुरू हुई। उसके बाद अदिजान (फरगाना)की लाइन भी तैयार की गई। मेर्वसे अफगानिस्तानकी सीमाके पास कुश्क तक १९२ मीलकी रेल बनी। कुश्कसे हिरात, गीरिश्क, कधार और चमन होते मध्य-एसियाकी रेलोको क्वेटामे पाकिस्तानी रेलोसे आसानीसे मिलाया जा सकता था, इस रास्ते कुश्क और चमनके बीच सिर्फ ६५० मीलकी लाइन बनानी थी। इस सारे रास्तेमे कोई दुर्लंघ्य बाधा नही है सिर्फ सुम्बान (चश्मेसब्ज) डाडेको पार करते लाइनको समुद्र तलसे ३४०० फुट ऊपर उठना पडता। चश्मेसब्जके डाडेसे तीस मीलपर ही सब्जवार है।

८ अश्काबाद

कास्पियन तटपर अवस्थित क्रास्नोवोद्स्कसे ३२२ २५ मीलपर अवस्थित अश्काबादको रूसियोने अपना शासन-केंद्र बनाया, जिसकी स्थापना १८८३ ई०मे अखल हरितावलीके सबसे चौडे तथा कोपेतदाग पर्वतमालाके सानुपर है। १८९९ ई०मे इसकी जनसख्या सोलह हजार थी, जिसमे दस हजार सैनिक थे। अश्कावादसे नातिदूर कोपेतदागके पहाडोमे २६०० फुटकी ऊचाईपर फीरोजा और ३००० फुटकी ऊचाईपर खैराबाद मसूरी-शिमला-जैसे ठडे पहाडी नगर है, जहापर रूसी अफसर अपनी गर्मिया बिताया करते थे। अश्काबादका अर्थ आनुओकी नगरी या इश्काबादसे प्रेमनगरी भी हो सकता है।

९ मेर्व

यद्यपि यह ऐतिहासिक नगरी, ध्वसावशेषके रूपमे ही नही, मौजूद थी, लेकिन इसके पहले ही इश्कावादको शासन-केंद्र बनाया जा चुका था, इसलिये मेर्व एक छोटा-सा कस्बा ही रह गया, और उसे बोल्शेविक-क्रांतिके बाद ही आगे बढनेका मौका मिला।

स्रोत-ग्रन्थ

१ ओचेर्क इस्तोरिइ तुर्कमान्स्कओ नरोदा (व. व. बर्तोल्द, १९२८)
२ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ क्वेर आदि, मास्को १९१०, पृष्ठ १७२-७७)
३. तुर्कमानिया इ येये कुरोर्त् नया बगात्स्वा (व अ अलेक्सन्द्रोफ, मास्को, १९१०)
४. Heart of Asia (E. D Ross, London 1899)
५ History of Mongol (H. H. Howorth, London, 1876-88)
६. La rivalite anglo-russie en xxi siecle en Asie (A. M. F Rouire, Paris, 1908)

भाग ५

बोल्शेविक-क्रांति

अध्याय १

रूसमें क्रांति

१. लेनिन रूसमे (१९१७ई०)

यद्यपि जार अब तख्तसे उतार दिया गया था, और लोग बडी-बडी आशा कर रहे थे, लेकिन फर्वरी-क्रातिके परिणामस्वरूप जिन लोगोके हाथमे शासन गया, वह अब पुराने स्वार्थोको उसी तरह सुरक्षित रखना चाहते थे, जिस तरह जारशाही करती आ रही थी। औद्योगिक पूजीवादकी स्थापनाके वाद भी रूसमें अभीतक सामन्तशाही स्वार्थोके हाथमे ही सैनिक और असैनिक शक्ति थी। फर्वरी-क्रातिने पूजीपतियो और मध्यवर्गको ऊपर आनेका मौका दिया, जो पश्चिमी युरोपकी तरह शुद्ध पूजीका शासन मजवूत करना चाहते थे। लडाईने लोगोकी जैसी आर्थिक अवस्था कर डाली थी, और किसानो और मजदूरोके सघर्षोंने जो भावनाये पैदा कर दी थी, उनके लिये अस्थायी सरकारने कुछ नही किया। लेनिनके अनुसार अस्थायी सरकार "रूसके लोगोको न शाति दे सकी, न रोटी, न पूर्ण स्वतत्रता", वलिक जारशाहीके हट जानेसे पश्चिमी दोस्त कही कोई दूसरा अर्थ न लगाने लगे, इसलिये अस्थायी सरकारने युद्धको पहले हीकी तरह सरगर्मीके साथ चालू रखनेका विश्वास दिलाया। यही नही, वलिक उसीके लिये छ अरब रूवलके 'स्वतत्रता-ऋण'के उठानेका प्रयत्न किया। भूमि अव भी जमीदारोके हाथमे अछूती रही, पूजीपतियोके हाथसे कारखानोको जरा भी इधर-उधर करनेकी कोशिश नही की गई। कुर्स मोगिलेफ और पेर्मकी गुवर्नियो (प्रदेशो)में किसानोने कुछ करना चाहा, तो मार्चमें उनके ऊपर सेना भेजी गई। जारशाही अफसर और पुराना शासन-यत्र वैसा ही अक्षुण्ण रक्खा गया, जिस तरह भारतसे अग्रेजोके जानेके वाद हिन्दुस्तानमे। वडे-वडे जमीदार और पक्के राजभक्त अव भी सर्वेसर्वा थे, समाजवादी क्रातिकारी दलका वकील करेन्स्की न्यायमत्री वना था। उसने जारशाही समयके सरकारी वकीलोको अपनी जगहपर कायम रक्खा। और तो और, पुरानी उपाधियो—राजा, कौण्ट, वारोन आदि—को भी जैसे-का-तैसा ही वनाये रक्खा। नई सरकारने जारके परिवारको सुरक्षित रखनेके लिये उसे इगलैड भेजनेकी कोशिश की, लेकिन जवर्दस्त विरोध देख वैसा नही कर पायी। फर्वरी-क्रातिके वाद जो मूर्तिया सामने आईं और उन्होने जो रवैया अख्तियार किया, उसने वतला दिया, कि इनसे साधारण जनता-का कोई हित नही हो सकता।

लेनिनको जैसे ही फर्वरी-क्रातिकी खवर मिली, वैसे ही वह रूस पहुचनेके लिये वेकरार हो गये। लेकिन उनका नाम मित्रशक्तियोके खुफिया-विभागकी काली-सूचीमे दर्ज था। अग्रेज अपने प्रदेशमे होकर जानेकी आज्ञा देनेके लिये तैयार नही थे। सोवियतोकी मागसे मजवूर होकर अस्थायी सरकारके वैदेशिक विभागने सभी निर्वासित रूसियोको देश लौटनेके लिये मित्रशक्तियोको लिखा, लेकिन साथ ही यह भी कह दिया, कि अन्तर्राष्ट्रीयता-वादियोको न आने दिया जाय। इस प्रकार लेनिनका लौटनेका रास्ता वन्द था। वह लौटनेका कोई उपाय सोच रहे थे। उनको यह भी ख्याल आया, कि स्वीडनका पासपोर्ट लेकर जर्मनी-के रास्ते जाय, लेकिन उन्हे स्वीडिश भाषाका एक शब्द भी मालूम नही था। तव उन्होने गूगा वननेकी भी सोची। सव देखकर अन्तमे उन्हे यह साफ मालूम होने लगा, कि जर्मनीके रास्तेसे ही लौटा जा सकता है। रूसी निर्वासितो—विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीयतावादी समाजवादियो

—के रूसमे लौटनेमे जर्मन अपना नुकसान नही समझते थे। इसीलिये स्वीजरलैंडके समाजवादी प्लातेनके बहुत लिखा-पढी करनेपर जर्मनीने इस शर्तपर अपने देशके भीतरसे लेनिनको जानेकी आज्ञा दी, कि वह उसी खास ट्रेनमे जाय, जिससे दूसरे निर्वासित रूसी जायगे। वह न रास्तेमे उतरें, और न किसीसे बातचीत करें। लेनिनको तो रूसमे पहुचनेसे मतलब था, उन्होने इस शर्तको स्वीकार कर लिया और मुहरबन्द ट्रेनपर बैठ गये। जब फिनलैंड और रूसकी सीमापर उनकी ट्रेन पहुची, तो बोल्शेविक नेताओने उन्हे देशकी परिस्थिति समझाई। पेत्रोग्रादके पास बेलोअस्त्रोफ स्टेशनपर १६ (३) अप्रैल १९१७ ई०को उन्हे उनके साथियोने देशकी परिस्थिति समझाई। जब वह पेत्रोग्रादके फिनलैंड रेलवे स्टेशनपर पहुचे, तो हजारो फौजी सिपाही अपने प्रिय नेताके स्वागतके लिये पातीसे खडे सलामी दे रहे थे, सैकडो लाल झडे फहरा रहे थे। पताकोपर बडे-बडे अक्षरोमे "स्वागत लेनिन" लिखा था। एक हथियारबन्द गाडीपर खडे होकर लेनिनने एक छोटा-सा भाषण दिया, जिसको समाप्त करते हुये "समाजवादी क्राति जिन्दाबाद"का नारा लगाया। १७ (४) अप्रैलको बोल्शेविकोकी एक बैठकमे लेनिनने अपने प्रसिद्ध निबन्ध "वर्तमान क्रातिमे सर्वहारोके सामने काम" को रक्खा, जिसमे लेनिनने बतलाया, कि यह सक्रातिकी अवस्था है, जिसके द्वारा शक्ति पूजीवादियोके हाथमे चली गई है। अब शक्तिको सर्वहारो और गरीब किसानोके हाथमें करते क्रातिकी दूसरी सीढीको पार करना है। लेनिनने यह भी कहा, कि लडाईसे हमे अपना हाथ एकदम हटा लेना चाहिये। इसे उनके सहयोगियोमेंसे भी कितनोने पसन्द नही किया। उनका कहना था—तब तो जर्मन बेधडक सारे रूसको दखल कर लेंगे और हम जारशाहीके फदेसे निकलकर जर्मनशाहीके हाथमे चले जायगे। लेकिन लेनिन अपने निश्चयपर दृढ थे—"अब जब कि रूसमे भाषण और लेखनकी पूर्ण स्वतत्रता प्राप्त है, तो हमारा सबसे पहला काम है, शासनको कमकरो और गरीब किसानोके हाथमे लानेकी कोशिश करना। अस्थायी सरकारको हमे कोई मदद नही करनी चाहिये। यह पूजीवादियोकी सरकार साम्राज्यवादी छोड और हो ही क्या सकती है? . सोवियतोको भी कमकरो और किसानोके हाथमे होना चाहिये। जमीदारोकी जमीदारीको छीनकर किसानोको दे देना चाहिये। अलग-अलग बैंकोका मिलाकर एक राष्ट्रीय बैंक बना देना चाहिये। यद्यपि समाजवादकी स्थापना तुरन्त नही हो सकती, लेकिन राष्ट्रकी उपज और उसके वितरणके साधनोको सोवियतो (पचायतो)के हाथमे होना चाहिये। जनतात्रिक समाजवादी (बोल्शेविक) पार्टीका नाम कम्युनिस्ट (साम्यवादी) कर देना चाहिये, जिससे मालूम हो कि हम पैरिसकम्यून (साम्यवादी समाज)के नमूनेपर साम्यवादी राष्ट्रकी स्थापना करना चाहते है।" लेनिनके यह विचार रूसके तत्कालीन राजनीतिज्ञोके ऊपर बमकी तरह पडे। बोल्शेविक नेता भी घबडा उठे—"यह शेखचिल्लीका महल है। वास्तविकतासे इसका कोई सबध नही है। लेनिन दस सालतक रूसको नही देख पाये, इसीलिये वह इस तरहकी ऊल-जलूल बाते करते है।"

लेकिन लेनिनकी बाते ऊल-जलूल नही थीं, और न वह रूसी जनताकी नब्ज पहचाननेमे गलती कर सकते थे। उन्हे जितना ही अधिक जनतासे मिलनेका मौका मिल रहा था, उतना ही वह उन्हे अच्छी तरह समझानेमें सफल हो रहे थे। उस समय बोल्शेविक पार्टीका केन्द्र क्शेस्की भवनमे था, जिसकी सामनेकी सडकपर लेनिन रोज व्याख्यान देते थे। तीन महीनेतक लगातार उनकी कलम और जबान चलती रही। कुछ ही समयमें लेनिन अपनी बातोको मनवानेमें समर्थ हुये। पेत्रोग्रादके कमकर तो पहले हीसे उनपर अद्भुत विश्वास रखते थे, अब बोल्शेविक पार्टीके नेता भी उनसे सहमत हुये। वह देख रहे थे, कि अस्थायी सरकारके जोर देनेपर भी सैनिक मैदान छोडकर भागते जा रहे है, जर्मन फौजे आगे बढती आ रही है। ऐसी अवस्थामे अच्छी शर्तोंपर जर्मनीसे सुलह कर लेना ही अच्छा है। अप्रैलमे बोल्शेविक पार्टीकी सातवी अखिल रूसी काग्रेस हुई, जिसमें भी एक प्रस्ताव पास करके माग की गई, कि जमीदारोंसे जमीन छीनकर किसान-कमेटियोके हाथमें दे दी

जानी चाहिये। इसी कांफ्रेसमे स्तालिनने जातियोकी समस्यापर प्रकाश डालते हुए कहा था, कि सभी जातियोको आत्म-निर्णयका अधिकार मिलना चाहिये, यदि वह रूससे अलग होना चाहे, तो उसके लिये भी उन्हे स्वतत्रता मिलनी चाहिये। ३ और ४ मई (२० और २१ अप्रैल)को अस्थायी सरकारकी साम्राज्यवादी नीतिके विरुद्ध पेत्रोग्रादमे एक लाख आदमियोने प्रदर्शन किया। इसके विरुद्ध पूजीवादियोने सैनिक अफसरो, विद्यार्थियो, दूकानदारोका जलूस निकाला, जिसका नारा था "अस्थायी सरकारमे विश्वास"। पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्रके कमाडर जेनरल कोर्निलोफने हुक्म दिया था, कि मजदूरोके प्रदर्शन पर सेना गोली चलाये, लेकिन सिपाहियोने वैसा करनेसे साफ इन्कार कर दिया।

२ करेन्स्की सरकार

१५ (२) मईको अस्थायी सरकारमे कुछ परिवर्तन हुआ, और अब मत्रिमडलमे मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारियोकी प्रधानता थी। समाजवादी क्रातिकारी नेता करेन्स्की अब युद्धमत्री था। उसने जर्मनीके खिलाफ युद्धको और भी जोरसे चलानेका प्रयत्न किया, लेकिन रूसी जनता इसके लिये तैयार नही थी, प्राचीनपथी अत्याचारी जारशाही गुलामोकी बातोमे पडकर वह और लडनेके लिये सन्नद्ध नही थे। बोल्शेविक इस वक्त वही कर रहे थे, जिसे रूसी जनता चाहती थी। अबतक बोल्शेविकोका प्रभाव पेत्रोग्रादके मजदूर-सगठनोमें बहुत बढ गया था। इसका परिणाम यह हुआ, कि मजदूरोने सोवियतोके नये चुनावमे मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारी प्रतिनिधियोको हटाकर बोल्शेविकोको निर्वाचित किया। सोवियतोमे ही नही, मजदूर सभाओमें भी, विशेषकर फैक्ट्री कमेटियोमे, बोल्शेविकोकी प्रधानता हो गई। १२ जून (३० मई) को पेत्रोग्रादमे फैक्ट्री कमेटियोकी पहली काग्रेस हुई, जिसके तीन चौथाई प्रतिनिधियोने बोल्शेविको-के पक्षमे अपनी राय दी। गावो और शहरोसे लेनिन और बोल्शेविक पत्रिका 'प्रावदा'के पास हजारो पत्र आते रहते थे। सिपाहियोने अपने एक पत्रमे लिखा था—"साथी, मित्र लेनिन, याद रक्खो, कि हममेसे एक-एक आदमी जहा है, वहा तुम्हारा अनुगमन करनेके लिये तैयार है। तुम्हारे विचार ठीक किसानो और मजदूरोके सकल्पको प्रकट करते है। सोवियतोकी प्रथम अखिल रूसी काग्रेस जून १७ मे हुई, जिसके हजार प्रतिनिधियोमे एक सौ पाच ही बोल्शेविक थे, लेकिन अब वह इतने प्रभावित हो गये थे, कि उन्होने बोल्शेविकोकी नीतिका समर्थन किया। जिस समय काग्रेस हो रही थी, इसी समय बोल्शेविक पेत्रोग्रादके मजदूरो और सैनिकोके एक भारी प्रदर्शनकी तैयारी कर रहे थे। इसके नारे थे—"सभी शक्ति सोवियतोको", "पूजीवादी दसो मत्री मुर्दाबाद", "रोटी, शाति और स्वतत्रता"। मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारियोको भय लगा, कि इससे बोल्शेविको-का प्रभाव और भी बढ जायगा, इसलिये उन्होने तीन दिनतक सभी तरहके प्रदर्शनोको बद रखने-का प्रस्ताव पास कराया, साथ ही पेत्रोग्राद सोवियतकी कार्यकारिणी समितिने १ जुलाई (१८ जून) को एक साधारण प्रदर्शन करनेका प्रस्ताव पास किया, जिसके द्वारा वह "अस्थायी सरकारमे विश्वास"का नारा लगवाना चाहते थे। बोल्शेविकोने प्रदर्शन करना मजूर किया, लेकिन उसमे उन्होने अपने नारे लगवाये। उस दिनके प्रदर्शनमे चार लाखसे अधिक कमकरोने भाग लिया। मेन्शेविक और समाजवादी-क्रातिकारी जो चाहते थे, वह नही हुआ और प्रदर्शनने अस्थायी सरकारमे अविश्वासके जलूसका रूप ले लिया।

अप्रैल १९१७ ई०में युक्त राष्ट्र अमेरिका भी युद्धमे शामिल हो गया था, लेकिन तबतक इगलैड और अमेरिकाकी हालत बुरी हो गई थी। यदि पूर्वी मोर्चेपर रूसी भी प्रतिरोध बन्द कर देते, तो वह कुछ नही कर सकते थे। इसीलिये वह करेन्स्कीपर जोर दे रहे थे। जुलाईमे मत्रिमडलमे परिवर्तन होकर करेन्स्की प्रधान-मत्री बन गया। करेन्स्कीने जोर देकर आक्रमण करवाया, लेकिन रूसी सेनाको तार्नोपोलमे बुरी तरहमे हारकर जल्दी ही हटनेके लिये मजबूर होना पडा। दस दिनके आक्रमणमे साठ हजार रूसी हताहत हुये। लेकिन इससे क्या? रूसी पूजीवादी अपने पश्चिमी भाई-बन्दोके दामनको पकडे रहना चाहते थे। अभीतक अस्थायी

मन्त्रिमंडलका काम बहुत कुछ मेल-जोलके साथ चल रहा था, लेकिन अब प्रधान-सेनापति कोर्निलोफ और प्रधान-मंत्री करेन्स्कीमें झगडा हो गया। सितम्बरके आरम्भमें कोर्निलोफ कई दूसरे सेनापतियो-की सहायतासे करेन्स्कीको अल्टीमेटम दे सेना ले पेत्रोग्रादपर कब्जा करनेके लिये चल भी पडा। करेन्स्की जनतामे डरता था, लेकिन अब उसकी मदद लिये विना कोई चारा नही था। कोर्नि-लोफसे मुकाबिला करनेके लिये सबसे आगे थे बोल्शेविक। करेन्स्कीने अपना नया मन्त्रिमंडल बनाया, इसमें भी नरमदली ही अधिक थे, जिनमें जेनरल वेर्खोव्स्की और एडमिरल वेर्देव्स्की भी थे। यह दोनो समाजवादी नहीं थे, तो भी उन्होने अपने साथी मंत्रियोसे कहा, कि सेना और नही लड सकती, इसलिए लडाई बन्द कर देनी चाहिये और सैनिकोको युद्धक्षेत्रसे हटा लेना चाहिये। लेकिन मित्रशक्तियोके पिट्ठू करेन्स्की और उसके साथियोने उनकी बात नही मानी।

युद्धसे प्रति दिन चार करोड रूबलका खर्च देशके मत्थे पड रहा था। यह पैसा कहासे आये? सरकारने अन्धाधुन्ध कागजके नोट छापकर उसे पूरा करना चाहा, जिसका परिणाम हुआ सभी चीजोके दामका अप्रत्याशित रूपसे बढना--मुद्रास्फीति। लोग अपने वेतनसे जीविका नही चला सकते थे। साथ ही कारखानोके लिये कच्चा माल और ईंधन तथा मजदूरोंके लिये रोटी मिलनी मुश्किल हो गई। रेल और यातायातके दूसरे साधन भी ठप हो गये। मिले और कारखाने बेकार हो गये। मईमें १०८ कारखाने जिनमें ८७०० मजदूर काम कर रहे थे, जूनमें १२५ कारखाने (३८४५५ आदमी), जुलाईमें २०६ कारखाने जिनमे ४७७५४ मजदूर काम करते थे, बन्द हो गये। इस प्रकार मईमें जहा कारखानोके बद होनेसे ८७०० मजदूर बेकार थे, वहा जूनमें ३८४५५ और जुलाईमे ४७७५४ मजदूर बेकार हो गये। इस बेकारीने अस्थायी सरकारके विरुद्ध लोगोके भावोको और भडका दिया। इसीलिये कोई आश्चर्य नही, यदि १७ (४) जुलाईको पाच लाख मजदूरोने अस्थायी सरकारके विरुद्ध जब-र्दस्त प्रदर्शन किया। मेन्शेविक और समाजवादी क्रांतिकारी देख रहे थे, कि वह लोगोपर अपने प्रभावको खोते जा रहे है, और अधिक समयतक वह शासनको अपने हाथमें नहीं रख सकेंगे। इसलिये उन्होने गोलीसे लोगोकी हिम्मत तोडनेकी कोशिश की। १७ (४) जुलाईको युद्धक्षेत्रसे लौटाकर मगाये गये सैनिक अफसरो और कसाकोने प्रदर्शनकारियोपर गोलिया चलाई, अगले दिन भी वह गोलिया चलाते रहे। उन्होने बोल्शेविक पत्रिका 'प्रवदा'के कार्यालयपर आक्रमण करके उसे तोड-फोड दिया। वह लेनिनको पकडनेके लिये उनकी जगहपर भी पहुचे, लेकिन तबतक लेनिनको वहासे हटा दिया गया था। वह पेत्रोग्रादसे दूर एक जगलमें झोपडीके भीतर रहते थे। बोल्शेविक पार्टी अब आधी गैरकानूनी हो चुकी थी। करेन्स्कीकी सरकार लेनिनपर 'देशद्रोह'का अपराध लगा रही थी। रूइकोफ, कामेनेफ और त्रोत्स्की-जैसे ढिलमिलयकीन क्रांतिकारियोने जोर दिया, कि लेनिनको आकर अदालतमे अपनी पैरवी करनी चाहिये, लेकिन बोल्शेविकोने इसका विरोध करते हुये कहा—"वह लेनिनको पकडकर जेल नहीं ले जायगे, बल्कि रास्तेमे ही मार डालेंगे।" इस दूर-दर्शिताका समर्थन इतिहासने किया। बोल्शेविक-क्रांति लेनिनके बिना बहुत निर्बल हो जाती, उन महान् प्रतिभाके प्राणोकी रक्षा उस समय इसी दूरदर्शितासे हो सकी। ८ अगस्त (२६ जुलाई)को बोल्शेविक पार्टीकी छठी काग्रेस पेत्रोग्रादमें शुरू हुई। पुलिसके डरके मारे काग्रेस गुप्त रीतिसे हो रही थी, तब भी लेनिनका उसमें आना खतरेसे खाली नहीं था, इसलिये वह नहीं आ सके। इसी काग्रेसने स्तालिनके प्रस्तावको स्वीकार करते हुये बोल्शेविकोके आर्थिक प्रोग्रामका समर्थन किया—जमींदारोंकी जमीदारियोको जब्त किया जाय, सभी भूमिको राष्ट्रीय, सभी बैंको और बडे-बडे उद्योग-धधोको राष्ट्रीय बना दिया जाय, और उत्पादन और वितरणपर कमकरोका अकुश हो। इसी काग्रेसने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारीका काम किया।

२५ (१३) अगस्त १९१७ ई०को राज्यपरिषद्की बैठक मास्कोमे बुलाते हुये करेन्स्कीने चाहा कि उनके द्वारा सैनिक अधिनायकत्व कायम करके अपने शासनको मजबूत कर दिया

जाय। बोल्शेविक भी कच्चे गुइये नही थे। मास्को बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिने उसी दिन चार लाख मजदूरोका प्रदर्शन सगठित किया, सभी जगह मजदूरोने हड़ताल कर दी। राज्यपरिषद्को बिजलीकी रोशनी बिना अपनी बैठक करनी पडी। अगले दिन जेनरल कोर्निलोफ मास्कोमे आया। वहाके पूजीपतियोने उसका सरकारी तौरसे स्वागत करनेका प्रबन्ध किया, लेकिन राज्यपरिषद्वालोने खतरेको समझ लिया, इसलिये सैनिक अधिनायकत्वकी घोषणा करनेकी उन्हे हिम्मत नही हुई, और कोर्निलोफको खाली ही हाथ लौट जाना पडा।

रूसकी इस स्थितिको देखकर मित्रशक्तिया घबरा रही थी। वह कभी करेन्स्कीकी पीठ ठोकती, और कभी प्रधान-सेनापति कोर्निलोफकी। उन्होने कोर्निलोफको पाच अरब रूबल कर्ज देनेका वचन इस शर्त पर दिया, कि रूसमे एक मजबूत सरकार कायम हो जाय। लेकिन मजबूत सरकार कायम करना कोर्निलोफके बसकी बात नही थी। कोर्निलोफने जब पेत्रोग्रादको हाथसे बाहर जाते देखा, तो १ सितम्बर (१९ अगस्त)को उसने रीगाको जर्मनोके हाथमें समर्पण कर दिया, जिसमे कि उनकी सेनाये सीधे पेत्रोग्राद पहुच जाय। करेन्स्कीसे कोर्निलोफने यह भी माग की, कि सारी सैनिक और असैनिक शक्ति हमारे हाथमे दे दो, फिर हम पेत्रोग्रादके कमकरोको ठीक कर लेंगे। करेन्स्कीको अब जनताके गुस्सेका भी ख्याल करके और अपने लिये उपस्थित डरकी वजहसे भी कोर्निलोफको प्रधान-सेनापतिके पदसे हटाना पडा, लेकिन कोर्निलोफने आज्ञा माननेसे इन्कार कर दिया और ७ सितम्बर (२५ अगस्त)को उसने पेत्रोग्रादके विरुद्ध एक सेना जेनरल क्रीमोफकी अधीनतामे भेजी। अब घबराये हुये करेन्स्की और उसके सहयोगियोको बोल्शेविकोके सामने सहायताके लिये हाथ पसारनेके सिवा कोई रास्ता नही रह गया। बोल्शेविकोने इस वक्त अपनी सूझ और सगठनका परिचय दिया, जिसके कारण कोर्निलोफकी बुरी हार हुई। जेनरल क्रीमोफने आत्म-हत्या कर ली। कोर्निलोफ, देनिकिन और कितने ही दूसरे जेनरल गिरफ्तार कर लिये गये, लेकिन करेन्स्की बोल्शेविकोसे और भी ज्यादा डरता था, इसलिये इन देशद्रोही जेनरलोके भाग जानेमे कोई दिक्कत नही हुई। कोर्निलोफके पराजयके बाद बोल्शेविकोका लोहा शत्रु, मित्र और उदासीन सभी मानने लगे। मजदूरो और गरीबोमे उनका प्रभाव बहुत बढ गया। सोवियतोके सगठन उनके हाथमें आने लगे। १३ सितम्बर (३१ अगस्त)को पेत्रोग्रादके कम-करो और सैनिकोके प्रतिनिधियोकी सोवियतने बहुमतके साथ बोल्शेविक प्रस्तावको पास किया। १८ (५) सितम्बरको मास्कोकी सोवियतने भी वैसा ही किया। इस प्रकार राजनीतिक राजधानी पेत्रोग्राद और औद्योगिक राजधानी मास्को दोनोकी सोवियते बोल्शेविकोके हाथमे आ गई। सितम्बर-अक्तूबरके बीचमे सदस्योकी सख्या और प्रभाव दोनोमे लेनिनकी पार्टी दिन-दूनी रात-चौगुनी जनताके विश्वासको पाती गई। अप्रैल १९१७ ई०मे जहा उसके सदस्योकी सख्या अस्सी हजार थी, वहा अगस्तके अन्तमे वह ढाई लाख और अक्तू-बरके मध्यमे चार लाख हो गई। कही भी हडताल करा देना या बडे-बडे प्रदर्शन निकाल देना उनके बाये हाथका खेल था। देशमे जो क्राति मची हुई थी, उसमे सैनिक भी शामिल थे। वह अपने गावोमे सबधियोको उसके बारेमे चिटठी लिखते, जिससे किसानोने जमी-दारीके खेतोको छीनना शुरू कर दिया। करेन्स्कीकी सरकारने जमीदारोकी रक्षाके लिए अपने कमजोर हाथोको बढाते हुये किसान-समितियोके सदस्योको गिरफ्तार करनेकी कोशिश की, लेकिन उसके पास इतनी शक्ति कहा थी?

विद्रोहकी तैयारिया—सितम्बरमे लेनिन हेलसिकी (फिनलैंड)मे छिपकर रहे थे, जहासे वह बराबर बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिके पास अपने सुझाव भेजा करते थे। २५ (१२) और २७ (१४) सितम्बरको लेनिनने केन्द्रीय समितिको दो बडे ही महत्वपूर्ण पत्र भेजे थे—"बोल्शेविकोको अवश्य अधिकार हाथमे लेना चाहिये" और "मार्क्सवाद और विद्रोह"। पहले पत्रमें लेनिनने बतलाया था, कि पेत्रोग्राद और मास्कोकी सोवियतोमे अपना बहुमत

स्थापित हो जानेपर वोल्शेविकोंके लिये अधिकार हाथमें लेना मुश्किल नहीं है। "पार्टीके कर्तव्यको अच्छी तरह साफ कर देना चाहिये। पेत्रोग्राद और मास्कोमें सशस्त्र विद्रोह, अधिकारको हाथमें लेना, और सरकारको निकाल बाहर करना—यह काम आजका हमारा प्रोग्राम होना चाहिये।" लेकिन अभी भी बोल्शेविक नेताओंमें कुछ ऐसे लोग थे, जो इतने बडे कदमको उठानेमें भारी खतरा समझते थे। लेकिन खतरा लिये विना क्या कभी कोई वडा काम किया जा सकता है? केन्द्रीय समितिने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारियां वडी तेजीसे शुरू कर दीं। पेत्रोग्राद-सोवियतकी एक क्रांतिकारी सैनिक समिति स्थापित की गई, जो विद्रोह-का सचालन-केन्द्र थी। पेत्रोग्रादमें उस समय बारह हजार हथियारवन्द लाल गारद मौजूद थे। निश्चय हुआ, कि उनकी सहायताके लिये हेल्सिंकीसे बाल्तिक नौसैनिक वेडेके नाविकोंको भी वुलाया जाय। सिर्फ पेत्रोग्राद हीमें नहीं, दूसरी जगहोंपर भी विद्रोहकी तैयारियां करना जरूरी समझा गया। दोनेत्स-उपत्यकामें वोरोशिलोफ, खार्कोफमें अर्त्योम सेर्गेयफ, वोल्गा-प्रदेशमें कुइविशियेफ, उरालमें ज्दानोफ, पोलेसिये इलाकेमें कगानोविच, इवानोवो-वोज्नेसेन्स्कमें म० व० फ्रुन्जे, उत्तरी काकेशसमें स० म० किरोफ सशस्त्र विद्रोहके सचालक-नियुक्त हुये।

जिस समय इस तरह जबर्दस्त तैयारी की जा रही थी, उसी समय त्रोत्स्की और कुछ दूसरे ढिलमिलयकीन वोल्शेविक-नेताओंने अस्थायी सरकारको यह जाननेका मौका दे दिया, कि ७ नवम्वर (२५ अक्तूवर) १९१७ ई०को—जिस दिन कि सोवियतोंकी दूसरी कांग्रेस शुरू होनेवाली थी—विद्रोह शुरू होनेवाला है। करेन्स्की सरकारने उसे दवा देनेका निश्चय किया। वोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिका केन्द्र स्मोल्नी प्रतिष्ठान था। प्रति-क्रांतिके सचालकोंने योजना वनाई, कि स्मोल्नीपर अधिकार करके वोल्शेविक नेताओंको पकड लिया जाय।

३. राजधानीपर अधिकार

६ नवम्वर (२४ अक्तूवर)को एक खुली मोटर लारीपर सरकारपक्षी कादेतोंकी टुकडी 'रवोची-पुत' (कमकरपथ)की नई कापीको जब्त करनेके लिये उसके आफिसमें पहुंची—'प्रावदा' इस समय इसी नामसे निकल रही थी। खबर लगते ही क्रांतिकारी सैनिक एक सशस्त्र कारमें वहां पहुंच गये, और उन्होंने कादेतोंको भागनेके लिये मजबूर किया। 'रवोची-पुतमें' उस दिन "हमें क्या चाहिये"के हेडिंगसे स्तालिनका एक लेख छपा था, जिसमें कहा गया था—"अव वह समय आ गया है, जव कि और देरी करना क्रांतिके लिये खतरनाक होगा। जमींदारों और पूंजीपतियोंकी वर्तमान सरकारकी जगह हमें मजदूरों और किसानोंकी सरकारको अवश्य कायम करना है।" अगले दिन सोवियतोंकी कांग्रेसके उद्घाटनके शुरू होते ही कार्रवाई करनेका निश्चय करके क्रांतिकारी सैनिकोंको तुरन्त विद्रोह करनेकी हिदायत दी गई। ६ नवम्वर (२४ अक्तूवर)के सवेरे क्रांतिकारी सैनिक समितिने अपनी सैनिक टुकडियोंको कार्रवाईकी तैयारीके लिये आज्ञा दे दी, और यह भी, कि राजधानीकी ओर आनेवाली हरएक सैनिक टुकडीपर निगाह रक्खी जाय। उसने बाल्तिक नौसैनिक वेडेके युद्धपोतों और नौसैनिकोंको मददके लिये वुलानेका भी निश्चय कर लिया, और हेल्सिंकीसे बाल्तिक नौसैनिक वेडेकी सोवियतोंकी केन्द्रीय समितियोंको पुराने सकेतके अनुसार तार दे दिया—"नियमावली भेजो", जिसका अर्थ था विद्रोह आरम्भ हो गया, पोतों और आदमियोंको भेजो। ६ नवम्वरको ही एक और भी जबर्दस्त सैनिक शक्ति क्रांतिकी सहायताके लिये राजधानीके भीतर प्रविष्ट हुई, जव कि लेनिन मजदूरके भेसमें चेहरा बांधे, एक साथीके साथ स्मोल्नीमें पहुंचे। स्मोल्नीकी रक्षाके लिये पूरा इन्तिजाम कर लिया गया था, क्योंकि वही क्रांतिका प्रधान सचालकमडल, क्रांतिके दिमागका केन्द्र था।

उसी दिन पीतर-और-पालके किलेके हथियारखानेसे हथियार लेकर कितने ही सैनिक वोल्शे-

विकोकी तरफ चले आये थे। आधी रातसे थोडी देर बाद केन्द्रीय टेलीफोन-आफिस, राज्यबैंक, बडा डाकखाना, सभी रेलवे-स्टेशन और मुख्य सरकारी कार्यालय बोल्शेविक क्रातिकारियोके हाथमें थे। क्रातिकारी सैनिक समितिने आज्ञा दी, कि सैनिकपोत (क्रूजर) आरोरा नेवामे ऊपरकी ओर बढकर हेमन्त-प्रासादके पास जाये। आरोराके कमाडरने यह कहकर हुक्म माननेसे इन्कार किया, कि नेवा नदीमें पानी पर्याप्त नही है। इसपर नौसैनिकोने थाह लिया, तो पानी काफी गहरा देखा। उन्होने कमाडरको गिरफ्तार कर लिया और वह युद्धपोतको अस्थायी सरकारके अतिम शरण-स्थान जारके भव्य महल हेमन्त-प्रासादके पास ले गये। आरोराकी तोपें अब उस प्रासादकी ओर मुह किये तैयार थी। विद्रोह पहलेसे बनाई हुई सूक्ष्म योजनाके अनुसार चल रहा था। ७ नवम्बर (२५ अक्तूबर)के ९ बजे सवेरे विद्रोही पलटनोने हेमन्त प्रासादकी ओर जानेवाले सभी रास्तोपर अधिकार कर लिया। अस्थायी सरकारका मत्रि-मडल उस वक्त प्रासादमे अपनी बैठक कर रहा था। अब साफ मालूम हो गया, कि अस्थायी सरकारकी मददके लिये एक भी सैनिक टुकडी नही है। करेन्स्कीको कसाकोने सहायता देनेका वचन दिया, किन्तु वह रेडक्रासकी नर्सका भेस बना उसी दिन सवेरे युक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी झडेवाली एक मोटरपर बैठकर राजधानीसे भाग गया।

७ नवम्बर (२५ अक्तूबर)के १० बजे क्रातिकारी सैनिक समितिने अस्थायी सरकारके उलट देनेकी घोषणा की। यह घोषणा लेनिनने तैयार की थी, जिसमे लिखा था—

"अस्थायी सरकार उलट दी गई। राज्यशक्ति पेत्रोग्रादके कमकर-सैनिक-प्रतिनिधियोकी सोवियत और क्रातिकारी सैनिक समितिके हाथमे चली गई। वही पेत्रोग्रादके सर्वहारो और सैनिकोकी मुखिया है।

"जनताके इस सघर्षके उद्देश्य निम्न है—तुरन्त ही जनतात्रिक-सधिका प्रस्ताव रखना, जमीदारीको खतम करना, उत्पादनपर कमकरोका अकुश स्थापित करना और सोवियत सरकारका निर्माण करना।

"मजदूरो, सिपाहियो और किसानोकी क्राति जिन्दाबाद।"

उसी दिन पेत्रोग्राद सोवियतकी एक खास बैठक हुई, जिसमे लेनिन भी उपस्थित थे। लोगोने बडी गर्मागर्म तालिया बजाकर अपने नेताका स्वागत किया। लेनिनने इस बैठकमे भाषण देते हुए कहा—"साथियो! बोल्शेविक जिसकी अवश्यकताके बारेमे बराबर कहते थे, वह मजदूरो और किसानोकी क्राति हो गई। अबसे रूसके इतिहासमे एक नया अध्याय शुरू हो रहा है। यह क्राति, तीसरी रूसी क्राति, अन्तमे समाजवादके विजयकी ओर ले जायगी।"

पेत्रोग्राद सोवियतने प्रस्ताव पासकर क्रातिका स्वागत किया। इस समयतक हेमन्त प्रासाद छोडकर सारा पेत्रोग्राद-नगर बोल्शेविकोके हाथमे था। आज ही सोवियतोकी काग्रेस शुरू होनेवाली थी, लेकिन उसके शुरू होनेसे पहले ही हेमन्त-प्रासाद पर अधिकार करनेके लिए लेनिनने हुक्म दिया था। अस्थायी सरकारको तुरत आत्मसमर्पण करनेके लिए अल्टीमेटम दिया गया, लेकिन उसने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया। इसपर ९ बजे शामको हेमन्त-प्रासादपर आक्रमण शुरू कर दिया गया। पूर्व सकेतके अनुसार पीतर-और-पाल किलेसे एक तोप दागी गई। आरोराने कुछ गोले चलाये। इसके बाद बोल्शेविकोके नेतृत्वमे नौसैनिको और सैनिकोने जारके हेमन्त-प्रासादपर हल्ला बोल दिया। अस्थायी सरकारको बाहरसे मदद मिलनेकी आशा थी, लेकिन वह कहा आनेवाली थी?

सोवियतोकी द्वितीय काग्रेस स्मोल्नीमे उस दिन (७ नवम्बर) पौने ११ बजे रातको शुरू हुई। हेमन्त-प्रासादके ऊपर इस वक्त भी हमला हो रहा था। काग्रेसमें भाग लेनेवाले कितने ही प्रतिनिधि सघर्षमे भाग लेकर यहा आये थे। काग्रेस शुरू होते समय मेन्शेविको, दक्षिणपक्षी समजवादी क्रातिकारियो और कुछ दूसरे प्रतिनिधियोने कहा, कि सैनिक और बिना पार्टीवाले प्रतिनिधि काग्रेस छोडकर चले चले, लेकिन उनका साथ देनेवाले मुट्ठीभर आदमी थे। उनके हाल छोडनेके समय रोष प्रकट करते हुए प्रतिनिधियोने चिल्लाकर कहा—'कोर्निलोफी', 'भगोडे'। बारहवी सेनाके एक प्रतिनिधिने उठकर

कहा—"हमें अधिकार अपने हाथमें लेना है। जाने दो इन्हें। सेना उनके साथ नहीं है।"

रातके २ बजकर १० मिनटपर हेमन्त प्रासादको बोल्शेविकोंने दखल कर लिया और अस्थायी सरकारके मंत्रियोंको गिरफ्तार करके पीतर-और-पालके किलेमें बंद कर दिया।

आधी रातके बाद (अब ८ नवम्बरकी तारीख हो गई थी) ५ बजे सोवियतोंकी काग्रेसने घोषित किया, कि सारी शक्ति सोवियतोंके हाथमें आ गई। तेरह दिन पीछे होनेके कारण पुराने रूसी पंचांगके अनुसार उस दिन २५ अक्तूबरका महीना था, इसलिए इसे अक्तूबर-क्रांति कहते हैं। ८ नवम्बरकी शामको ८ बजकर ४० मिनटपर काग्रेसकी दूसरी बैठक हुई, जिसमें लेनिनने शांति-घोषणा, भूमि-घोषणा पढ़ी। शांतिकी घोषणामें कहा गया था—युद्धमें पड़ी सभी जनता और उनकी सरकारें न्यायोचित जनतान्त्रिक सुलहनामा करें, न किसीकी जमीन छीनी जाय, न किसीसे हरजाना मांगा जाय, और सभी उत्पीडित जातियोंको आत्म-निर्णयका अधिकार मिले। भूमिकी घोषणा द्वारा किसानोंको पंद्रह करोड़ हेक्तर (प्राय चालीस करोड़ एकड़) जमीन दी गई और पचास करोड़ सुवर्ण-रूबल वार्षिक मालगुजारीसे मुक्त कर दिया गया। इस घोषणाने किसानोंको बतलाया, "गांवोंमें अब कोई जमींदार नहीं रह गया"। उसी दिन ढाई बजे सवेरे काग्रेसने प्रथम सोवियत सरकार जन-कमीसरोंकी परिषदके कायम होनेकी सूचना दी, जिसके अध्यक्ष व्लादिमिर इलिच (उलियानोफ) लेनिन बनाये गये और जातियोंके जनकमीसर (मंत्री) का पद योसेफ विसारियोन-पुत्र स्तालिन हुए। सोवियतमें दूसरे विश्वयुद्धके कुछ समय बादतक भी मंत्रियोंको जनकमीसर कहा जाता था। पहली सोवियत सरकारके सभी सदस्य बोल्शेविक थे, दूसरोंको अभी उतना साहस भी नहीं था, कि उसमें शामिल हों, लेकिन पीछे वामपक्षी समाजवादी क्रांतिकारी भी मंत्रिमंडलमें सम्मिलित हुए। ९ नवम्बर (२७ अक्तूबर) को ५ बजे सवेरे काग्रेसकी बैठक समाप्त हुई, और लोगोंने "क्रांति चिरजीव", "समाजवाद चिरजीव" के गगनभेदी नारे लगाये।

करेन्स्कीने हेमन्त-प्रासादमें भागकर कसाक-जेनरल क्रास्नोफसे मिलकर फिर अधिकार प्राप्त करनेकी कोशिश की। क्रास्नोफने १० नवम्बर (२८ अक्तूबर) को पेत्रोग्रादके नजदीक जार्स्कोयेसेलो (आधुनिक पुश्किन) पर अधिकार कर लिया, लेकिन राजधानीके कमकर भला यह क्यों होने देने लगे। वह बड़ी तादादमें क्रांतिकारी सैनिकोंके साथ लड़नेके लिए गये। जिस समय क्रांतिकारी उधर फंसे हुए थे, उसी समय १० नवम्बरकी रातको क्रांति-विरोधियोंने तख्ता उलटनेके लिए षड्यंत्र किया। लेकिन उन्हें सफलता नहीं हुई। १३ नवम्बरको क्रास्नोफके कसाकोंको पुलकोवोके पास क्रांतिकारियोंने बुरी तरहसे हराया, और उससे भी ज्यादा वह कसाक सैनिकोंको समझानेमें सफल हुए, कि क्रांतिका विरोध करना अपने हितोंका विरोध करना है। कसाकोंने अपने जेनरलकी आज्ञा माननेसे इन्कार कर दिया। गत्चिनामें सोवियत नौसैनिकोंके प्रतिनिधिने कसाकोंसे मिलकर उन्हें कहा, कि अगर तुम सोवियतोंसे लड़ना बंद कर दो, तो तुम्हें घर जानेकी छुट्टी मिल जायगी।

पेत्रोग्रादके विद्रोहकी खबर सुनकर ७ नवम्बरको ही मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीकी कमेटीने भी विद्रोह आरम्भ कर दिया। उसी रातको क्रेमलिनके विद्रोही सैनिकोंको विद्रोह कर देनेकी आज्ञा देनेकी जगह वहांकी क्रांतिकारी सैनिक समितिके नेताओंने क्रांति-विरोधी सैनिक हेडक्वार्टरसे समझौता करनेकी बातचीत शुरू की। ८ नवम्बरकी शामको मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीकी कमेटीने समझौतेकी बातचीत बंद करनेकी मांग की। इस सुस्तीके कारण क्रांति-विरोधियोंको मौका मिल गया और उन्होंने ९ नवम्बरको मास्को नदीके ऊपरके सभी पुलोंको अपने अधिकारमें कर लिया। इसके बाद क्रेमलिनको भी उन्होंने घेर लिया। देरी करना गलती थी। क्रांतिकारी शक्तियां मास्कोमें भी संगठित और सशक्त थीं। १३ नवम्बरको मास्कोके बड़े डाकखाने, केन्द्रीय तारघर और रेल्वे स्टेशनोंपर क्रांतिकारियोंका अधिकार हो गया। दो दिन बाद उन्होंने क्रेमलिनपर गोलाबारी शुरू की। १५ नवम्बरको ९ बजे शामको ६ दिनकी लड़ाईके बाद क्रांति-विरोधियोंने हार खाकर आत्मसमर्पण किया और उसी दिन सारी शक्ति मास्को सोवियतकी क्रांतिकारी सैनिक समितिके हाथमें चली आई।

मास्को और पेत्रोग्रादमे बोल्शेविक सरकारके स्थापित हो जानेपर अब और जगहोमे भी क्रातिका वेग जोरसे फैला। क्राति-विरोधी हजार कोशिश करते रह गये, लेकिन वह बोल्शेविकोकी बाढ रोक न सके। फर्वरी-क्रातिकी तरह पुराने शासनयत्रके बलपर बोल्शेविक शासन नही कर सकते थे, इसलिए उन्होने सबसे पहले उस यत्रमें परिवर्तन किया। पुराने शासन-सबधी बडे-बडे अफसरोका स्थान सोवियतो और उनके द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियोने लिया, और शासनयत्रके भीतर रहकर षड्यत्र करनेका मौका पुराने स्वार्थोके लिए नही रह गया। १२ नवम्बरको सोवियत सरकारने घोषित करके मजदूरोके लिए आठ घटेका कामका दिन निश्चित कर दिया। २७ दिसम्बरको सभी निजी बैंकोको राष्ट्रीय बनाकर उन्हे राज्यबैंकमे मिला देनेकी सरकारी घोषणा निकली।

सशस्त्र विद्रोहके समय स्मोल्नी पार्टीका तथा सैनिक-असैनिक शासनका केन्द्र रही। अब मत्रालयोको अपने-अपने कामको और सुव्यवस्थित रीतिसे करनेके लिए पुराने कार्यालयोमे परिवर्तित कर दिया गया। २८ नवम्बरको जनकमीसर परिषद् (मत्रिमडल)ने आज्ञा दी, कि सभी मत्रालय अपनी-अपनी इमारतोमे चले जाय और मत्री केवल शामके वक्त स्मोल्नीमे एकत्रित हो।

१५ नवम्बर १९१७ ई०को वह महत्त्वपूर्ण घोषणा की गई, जिसके द्वारा जारके राज्यमें रहनेवाली सभी जातियोको बिना किसी भेदभावके समानाधिकार दिया गया —

(१) रूसमे रहनेवाली सभी जातिया समानता और पूर्ण प्रभुत्व रखती हैं, (२) रूसकी जातियोको स्वतत्रतापूर्वक आत्मनिर्णय तथा अलग होकर अपना स्वतत्र राज्य कायम करनेका अधिकार है, (३) किसी जाति या जातीय धर्मके विशेषाधिकार या हस्तक्षेपको उठा दिया जाता है, (४) रूसकी भूमिमें रहनेवाली अल्पसख्यक जातियो और वशिक समूहोको स्वतत्र विकासका अधिकार है।

इस घोषणाने जारशाही साम्राज्यकी सभी जातियोको एक सूत्रमे बाध दिया, उनके भीतर फूट पैदा करनेके सारे प्रयत्न सदाके लिये निकम्मे हो गये।

४ दास जातियोकी मुक्ति

मध्य-एसियामे क्रातिके बारेमें आगे हम कहनेवाले हैं। यहा इतना जान लेना चाहिये, कि जिस समय पेत्रोग्रादमें सशस्त्र विद्रोहकी सफलता और उसके बादके विरोधोको हटानेके लिये सघर्ष हो रहा था, उस समय ताशकन्दके बोल्शेविक भी चुप नही थे। हमें मालूम ही है, कि जारशाही मध्य-एसियाका शासनकेन्द्र ताशकन्द था। १० नवम्बर १९१७ ई०को बोल्शेविकोको दबानेके लिये कसाक और कादेतोने ताशकन्द सोवियतको घेरकर वहाकी क्रातिकारी समितिके सदस्योको पकड लिया। इसकी सूचना कारखानेके भोपूको बजाकर दी गई, इसपर तीन हजार हथियारबन्द रूसी और उज्बेक मजदूरोने बोल्शेविक बदियोको छुडानेके लिये युद्ध छेड दिया। कसाक और कादेत ताशकन्दके किलेमें जमा थे, जहासे नगरपर प्रहार करनेके लिये वह हथियारबन्द मोटरें भेजते थे। क्रातिकारी कमकरोने रास्तेको रोकनेके लिये जगह-जगह बाडें खडी कर दी थी। चार दिनतक लडाई होती रही। खबर मिलनेपर आसपासके गावोके उज्बेक और किर्गिज मजदूर भी मदद करनेके लिये आ गये। जबर्दस्त सघर्षके बाद १३ नवम्बरको राजशक्ति सोवियतोके हाथमे चली गई, क्रातिकारी समितिके सदस्य जेलसे निकाल लिये गये, और उसी दिन तुर्किस्तानकी सोवियत सरकार ताशकन्दमें स्थापित हुई। सोवियत शक्तिको मध्य-एसियासे खतम करनेके लिये पूजीवादके पक्षपाती, राष्ट्रीयतावादी मध्य-एसियाई तथा रूसी क्राति-विरोधी एक हो गये। अग्रेजोने भी उन्हे मदद पहुचाई। राष्ट्रीयतावादियोने नवम्बर १९१७ ई०में खोकन्दमें अपनी सरकार कायम की। उनका नाम रक्खा "खोकन्द स्वशासन"। इसीने मध्य-एसियामें गृहयुद्ध आरम्भ किया। फर्वरी १९१८ ई०मे खोकन्दकी सरकारको तुर्किस्तानके लाल गारदने खतम कर दिया। लाल गारदमें जहा नगरके रेलवे और कारखानोके रूसी मजदूर थे, वहा बहुत-से उज्बेक, किर्गिज, कजाक और तुर्कमान कारीगर और किसान भी थे।

बोल्शेविक-क्रांतिने जारशाही रूसके भीतर ही अपने प्रभावको नहीं दिखलाया, बल्कि सुदूर बाह्य मंगोलियाके लोगोंको भी समाजवादके पथपर आरूढ़ किया। जारशाही सेनाके भगोड़े जेनरलोंने वहाँपर अड्डा जमाकर क्रांतिका विरोध करनेका मनसूबा बाँधा था, लेकिन उन्हें उसमें विफल होना पड़ा।

दूसरे पूँजीवादी और सामन्तशाही सरकारोंकी तरह जारशाहीके भी शासनका स्रोत नीचे नहीं ऊपर था। जार सर्वेसर्वा था। वह अपनी ओरसे महाराज्यपाल और राज्यपाल नियुक्त करता, जो अपने प्रदेशके छोटे ज़ार होते। इसकी जगह बोल्शेविक-क्रांतिने शासनयंत्रके ढाँचेको सोवियतोंपर आधारित किया। सोवियतका अर्थ वही है, जो हमारे यहाँ पंचायतका, यदि अन्तर है, तो यही कि सोवियत प्रभुत्व-सम्पन्न पंचायत हैं। ग्रामोंके शासनका काम ग्राम-सोवियतोंने लिया, और जिलोंके शासनका काम वयस्क मताधिकार द्वारा निर्वाचित जिलाकी सोवियतोंने, इसी तरह प्रदेशोंके शासनका काम वहाँकी सोवियतोंने। अपने कामोंको सफलतापूर्वक करनेके लिये, तथा जनताको क्रियात्मकरूपसे यह दिखलानेके लिये, कि सरकार उनकी है, अब जारशाही गुबर्नियोंका अनुकरण नहीं किया जा सकता था। उसकी जगह क्रांतिके दो साल ही बाद १९२० ई०के आरम्भमें रूसका विभाजन जातियोंके अनुसार हुआ, और १९२०-२२ ई०के बीचमें इस तरहके कितने ही स्वायत्त सोवियत समाजवादी गणराज्य कायम किये गये, जिनके सबको रूसी सोवियत संयुक्त समाजवादी गणराज्य कहा जाने लगा। इन स्वायत्त गणराज्योंमें बाश्किर भी था, जिसकी स्थापना मार्च १९१९ ई०में हुई थी। रूसी जमींदारों और कुलकोंने जारशाहीके जमानेमें बाश्किर-किसानोंसे जो जमीन छीन ली थी, अब उसके मालिक बाश्किर किसान हो गये। अभीतक बाश्किर अधिकतर घुमन्तू थे, लेकिन अपना खेत मिल जानेपर अब वह अपने गाँव बसाने लगे। उनमें शिक्षाका प्रचार भी बढ़ने लगा। बोल्शेविकोंने अच्छी तरह समझ लिया, कि सोवियत शासनकी मजबूतीके लिये यह जरूरी है, कि लोग लिखना-पढ़ना जानें। तभी वह बोल्शेविकोंके उद्देश्यको समझ पायेंगे, और मुल्लों तथा क्रांतिविरोधी सत्ताधारियोंके हाथमें नहीं खेलेंगे। इसीलिये उन्होंने मातृभाषाको शिक्षाका माध्यम स्वीकार करके उसीमें लोगोंको जल्दी-से-जल्दी शिक्षित बनानेका प्रयत्न किया। अपनी भाषाको सीखनेकी अवश्यकता नहीं थी, उसके लिये जरूरत थी लिपिकी। सोवियत रूसके भीतरकी अधिकांश भाषायें अभी न अपनी लिपि रखती थीं, न लिखित साहित्य। ऐसी भाषाओंको रोमन लिपिमें पहले लिखा जाने लगा, पीछे (१९४१ ई० में) लोगोंने रूसी लिपि अपना ली। शिक्षाकी वृद्धि कितनी जल्दी हुई, इसके लिये इतना ही कहना काफी है, कि प्रायः पचीस लाखकी आबादीवाले बाश्किर गणराज्यमें १९२४ ई०में ही दो हजार स्कूल खुल चुके थे।

१९२० ई०के बसन्तमें बाश्किरोंके पड़ोसमें तारतारोंका स्वायत्त सोवियत गणराज्य कायम हुआ। अक्तूबर १९२० ई०में कजाकस्तानकी सोवियतोंकी प्रथम कांग्रेसमें किर्गिज स्वायत्त गणराज्यकी स्थापनाकी घोषणा हुई। इस प्रकार सोवियत रूस सोवियत गणराज्यों-के संघका रूप धारण करने लगा। पहले रूसके अतिरिक्त उक्रइन-जैसे गणराज्य कायम हुये थे। दिसम्बर १९२० ई०में उक्रइन सोवियत समाजवादी गणराज्य और रूसी सोवियत संयुक्त समाजवादी गणराज्यने आपसमें एक सैनिक और आर्थिक मित्रताकी संधि की। इसी तरहकी संधि बेलोरूसिया, आजुर्बाइजान, अर्मनिया और गुर्जीके गणराज्योंमें भी हुई। तबतक निम्न की सात स्वतंत्र सोवियत गणराज्य बन चुके थे —

(१) रूसी सोवियत संयुक्त समाजवादी गणराज्य, (२) उक्रइनी सोवियत समाजवादी गणराज्य, (३) बेलोरूसी सोवियत समाजवादी गणराज्य, (४) आजुर्बाइजान सोवियत समाजवादी गणराज्य, (५) अर्मनियन सोवियत समाजवादी गणराज्य, (६) गुर्जी सोवियत समाजवादी गणराज्य, और (७) तुर्किस्तान सो० स० ग०। इस प्रकार सात गणराज्य और कितने ही स्वायत्त गणराज्य, पाँच वर्ष बादतक चलते आये। ३० दिसम्बर १९२२ ई०को सोवियतोंकी प्रथम

काग्रेस हुई, जिसने निश्चय किया, कि अबसे सारे बहुजातिक राज्यका नाम सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ रखकर उसे एक केन्द्रीय राष्ट्रका रूप दिया जाय। सभी जातियोकी समानताको अक्षुण्ण रखनेके लिये यह विधान स्वीकार किया गया, कि सोवियत ससद्के "प्रतिनिधि-सदन"में जहा सख्याके अनुसार प्रतिनिधि भेजे जाय, वहा "जातिक सदन"मे सभी स्वतत्र गणराज्योको उनकी सख्याका कोई भी ख्याल किये बिना बराबर सख्यामे प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार है।

इस प्रकार सफल क्राति और सफल सोवियत शासनकी स्थापनाके बाद २१ जनवरी १९२४ ई०को लेनिनका देहान्त हुआ।

स्रोत-ग्रन्थ

१ History of Civil War in U S. S R. (2 vols., G F Alexandrov and others, Moscow 1946)
२. History of U. S S R. (Ed A M. Pankratova, Moscow 1947)
३ La Revolution russie (4 vols , Cloude Anet, Paris 1918-20)
४ La reign de Raspoutine (Rodzianko, Paris 1928)
५ La revolution russie (Al Ular, Paris 1905)
६ इस्तोरिया ससर (अ म रव्दोनिकस्, ४ जिल्द)

अध्याय २

उज्वेकिस्तानमें क्रांति

१ उज्वेक जाति

उज्वेक गणराज्यका क्षेत्रफल १८८००० वर्गमील, तथा आवादी वासठ लाखसे ऊपर है। उज्वेक जाति तुर्कोंकी ही एक शाखा है। सुवर्ण-ओर्दू के मगोल खान उज्वेकके नामपर तुर्कोंके वहुत से कवीलोने यह नाम धारण किया। उज्वेक कवीलोमें कितने ही कजाकोमें भी मिलते है, इसलिए उज्वेको और कजाकोका पहले एक होना सिद्ध है। उज्वेकोके सवसे वडे चार विभाग है—(१) उइगुर-नैमन, (२) कगली-किपचक, (३) कियात-कुग्राद, (४) नोकुस-मगित। और छोटे-छोटे विभाग मिलकर उज्वेक कवीलोंकी सख्या ९७ होती है, जिनके नाम निम्न प्रकार है —

उज्वेक कवीले—

१. मगुत (मगित)(करशी-वुखारा, जुक मगुत, जुकअकरा)
२. मिंग
३ युज
४. किर्क
५. उग
६. उगाचित
७. जर्नर
८ सराय (समरकन्द और करशीके रास्तेपर)
९. कुग्राद (करशी और शहरसब्जमे)
१० येलचिन
११. अरगन
१२. नैमन
१३. किपचक (कत्ताकुर्गान और समरकन्दके वीच)
१४. चीचक
१५ यअवरत
१६. कल्पक
१७. कर्नू
१८. वरलस
१९. वमठक
२०. मैमारचिम
२१. कतगन
२२. कलेचा
२३. कुनेगज
२४. वतरेक
२५. उजोय
२६. कवात
२७. खिताई (वुखारा और करमीनाम)
२८ कगली
२९. उज
३०. चपलेनी
३१. चपची
३२. उतार्ची
३३. उपुलेची
३४. जूलून
३५. जिद (आमू-दरियापर)
३६. जुयुत
३७. चिलजूयन
३८. वुइमौत
३९. उएमौत
४०. अरलत
४१. किरेइत
४२. उगुत
४३. कगित
४४. खलेउअत
४५. मसद
४६ मेरकत
४७. वेकूत
४८. कुरालस
४९. उगलान
५०. करी
५१. अरबत (करशी और वुखारामें)

५२. उलेची
५३. जूलेगन
५४. किशलिक
५५. गेदोई
५६ तुर्कमान (आमू-दरिया)
५७. दुर्मेन
५८. ताविन
५९. तामा
६०. रिनदान
६१. मूमिन
६२. उइशुन
६३. वेरोई
६४ हाफिज
६५ किनगिज
६६. उइरुची
६७. जुइरेत
६८ व्जाची
६९ सिहतियान
७० वेताग (वुखारा)
७१. यागरिनी
७२. शुल्दुर
७३ तुमाई
७४. तलेउ
७५. किरदार
७६ किरकिन
७७. उलगान
७८. गुरलेत
७९. इगलान
८०. चिलकेस
८१. उइगुर
८२ अगिर
८३ यावू
(वुखारा और मियानकुलमें)
८४. नरगिल
८५. यूजक
८६ कहेत
८७. नचार
८८ कूजालिक
८९ वूजन
९०. शीरिन
९१. वखरिन
९२. तूमे
९३. नीकुज
९४ मुगुल
९५. कयान
९६. तारतार

किमी-किसीके अनुसार उज्वेकोंके पाच विभागोमें निम्न कवीले हैं —

I उइगुर चौवह—

१ उरुस
२ कराकुरसक
३. चुल्लिक
४. उयान
५. कुल्दौली
६. मिल्तेक
७. कुरतुगी
८ गाले
९. तुपकारा
१०. कारा
११. करावुरा
१२. नोगाई
१३. विलकेलिक
१४. दुमतनिक

II ओमली नौ —

१ अखताना
२ कारा
३ चुरान
४ तुर्कमान
५ कुउक
६. विसवाला
७. कराकल्पक
८. कचाई
९. हजवेचा

III. कुश्तमगली नौ —

१ कुलअत्री
२. वरमक
३ कुजहुर
४. कुल
५. चुवुरगान
६ कराकल्पक-कुश्तमगली
७. मफरवीज
८ दिलवेरी

९. चचकली

IV. यकतमगली सात —

१. तर्तुगू
२. अगामइली
३ इशिक्ली
४. किजिनजिली
५ उयुगली
६ बूकजली
७. कैंगली

V. किर पाच —

१. जुजिली
२ कूमउली
३. तिर्स
४. वलिकली
५. कूवा

इतिहासकार वाम्बेरीने उज्बेकोंके बत्तीस कबीलोंको मुख्य माना है, जो कि निम्न प्रकार है —

१ अकबेत
२. अचमइली
३ अलचिन
४. अज
५. इशकिली
६ उइगुर
७. उशुन
८ कनली
९ कराकुरनक
१० कजिगली
११. किपचक
१२. कुग्राद कोयेत
१३ कूलन
१४ केंतेकेमेर
१५ केनेगुज
१६. खिताई
१७ जगताई
१८ जेलेर
१९. ताज
२०. इशकिली
२१. तिर्किश
२२. दुर्मेन
२३. नैमन
२४. नोक्स
२५. नोगाई
२६. वागुर्ल
२७ वलगली
२८ विरकुलक
२९. मगित (ओगुत)
३०. मिग
३१ मितन
३२. सायत

इन कबीलोंके नामोंको देखनेसे मालूम होगा, कि इनमें उसुन-जैसे शक कबीले, कुग्राद-जैसे मगोल, किपचक-जैसे पुराने तुर्क, खिताई-जैसे चीनी, बर्मक-जैसे खुरासानी कबीलो और जातियोंका भी नाम हैं। इसीलिये तुर्की जनकी प्रधानता रहते भी उज्बेक जातिमें बहुतसी दूसरी जातियोंका सम्मिश्रण है। उनकी भाषामें व्याकरणका ढाचा तुर्की होते भी शब्दकोष और मुहावरे अधिकतर ईरानी (फार्सी) हैं।

उज्बेक जातिका निर्माण—उज्बेकों, तुर्कमानों तथा किर्गिजों का ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ —

काल		सिर-उपत्यका	सोग्द	तुखार	ख्वारेज्म
ई० पू० १०००००			मुस्तेर	मुस्तेर	
,, ५००००			मदलेन		
,, ८०००		फिनो-द्रविड	फिनो	फिनो-द्रविड	फिनो-द्रविड
,, ३५००		,,	,,	,,	,,
,, ३०००	नवपाषाण	शक-आर्य-द्रविड	शकार्य-द्र०	शकार्य-द्र०	शकार्य-द्र०
,, २५००		शक	आर्य	आर्य	आर्य
ई० पू० १५००	पित्तल	शक	सोग्दी	ईरानी	ईरानी
,, ७००		शक	सोग्दी	ईरा०	शक

ई०पू०	५५०	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
”	३२६	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
”	२०६	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
”	१३०	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०	शक
”	१००	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०	शक
ईसवी	१०० कुषाण	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०-शक	शक
”	४२५ हेफ्ताल	हूण-कंगली	सो०-शक	ईरा०-शक	हेफ्ताल-कंग
”	५५७ तुर्क	तुर्क-कंगली	सो०-तुर्क	ईरा०-शक	सो०-तुर्क
”	६७३ अरब	तुर्क	सो०-तुर्क	ईरा०-तुर्क	सो०-तुर्क
”	८९२ सामानी	तुर्क	ईरानी-तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क
”	१२२० मंगोल	तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क
”	१५००	तुर्क (उज्बेक)	उज्बेक-ईरा०	ईरा०-उज्बेक	उज्बेक-ईरा०
”	१७४७	उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०
”	१८६५	उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०
”	१९१७	उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०

२ उज्बेकभूमि

वर्तमान उज्बेकिस्तान खोकन्द, खीवा (ख्वारेज्म), और बुखारा रियासतोंकी भाग सम्मिलित है, जिनमे बुखाराका तो करीब-करीब सारा ही भाग उज्बेकिस्तानमे है। उज्बेकोंकी वर्तमान राजधानी ताशकन्द बिलकुल एक छोरपर कजाकोंकी भूमिके पास पडती है, लेकिन रुसियोंके आनेसे पहले ही वह प्रसिद्ध नगर उज्बेकोंकी भूमिके साथ सबद्ध था। तुर्किस्तानकी राजधानी बननेपर जहा वहा रूसी काफी सख्यामें आये, वहा एसियाइयोमे सबसे अधिक उज्बेकोंकी आबादी थी, इसलिये वह पहले तुर्किस्तान गणराज्य, फिर उज्बेकिस्तान और ताजकिस्तानके सम्मिलित उज्बेक गणराज्य और अन्तमे उज्बेकिस्तानकी राजधानी रह गया। मध्य-एसियाके समरकन्द और बुखारा-जैसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर भी उज्बेकिस्तानमें ही पडते हैं।

३ क्रांतिकी लपट

रूसमें फर्वरी-क्रांति होनेपर भी उस समय बूर्ज्वा रूसी शासकोंने मध्य-एसियाकी जातियो—उज्बेको, कजाको, किर्गिजो, ताजिको, तुर्कमानो—के ऊपर होते आये जारशाही शासनमे कोई परिवर्तन करनेकी अवश्यकता नही समझी। अप्रैल १९१७ ई०मे शचेप्किनकी अध्यक्षतामे एक तुर्किस्तान समिति बनाकर भेजी गई, जिसको तुर्किस्तानके सूबेके शासनका पूरा अधिकार दे दिया गया था। जब पेत्रोग्रादमे अस्थायी सरकारमे थोडा और परिवर्तन हुआ, और वैधानिक जनतांत्रिकोंकी जगहपर मेन्शेविकोंकी प्रधानता हुई, तब तुर्किस्तान कमेटीमें नाममात्रका ही परिवर्तन किया गया। यह कमेटी पुराने जारशाही अफसरो और सफेद क्रांति-विरोधियोंके प्रभावको कम करना नही चाहती थी। क्रांतिका एक फल यह हुआ, कि मार्च १९१७ ई०से मध्य-एसियाइयोमें शूरा-इस्लामिया और शूरा-उलेमा जैसे धार्मिक या अर्धधार्मिक राजनीतिक सगठन अस्तित्वमें आये। उज्बेक राष्ट्रीयतावादी मध्यवर्गने शूरा-इस्लामिया नामकी पार्टी स्थापित की थी, और मुल्लाओने हमारे यहाकी जमायतुल-उलमाकी तरह उलमाओं (धर्माचार्यों) की एक पार्टी खडी की थी, जिसके पोषक बडे-बडे जमींदार और दूसरे सामन्त थे। दोनों सस्थाओंने अस्थायी सरकारके प्रति अपनी भक्ति कई बार प्रकट की थी।

तुर्किस्तान-कमेटी क्रांतिके और युद्धके कारण उठ खडी हुई समस्याओंमेंसे किसीको भी हल करनेमे समर्थ नही हुई। एसियाई जातियोंके ऊपर पहलेकी तरह ही शासन और अत्याचार होता रहा। किसानोंकी अवस्था वैसी ही रही। कारखानेके मजदूरोंकी ओर भी ध्यान नहीं दिया

गया। १९१७ ई०के सितम्बरमें तुर्किस्तानके मजदूरोको अब भी बारह घंटे काम करना पडता था, जब कि रूसमें वह आठ घंटेका कर दिया गया था। तुर्किस्तान-कमेटीको आगे बढनेकी कोई जरूरत नही थी, क्योंकि इस इलाकेमे १९१७ ई०के अन्ततक बोल्शेविकोंके अपने स्वतंत्र संगठन नही थे। ताशकन्द, समरकन्द, पेरोव्स्की (किजिल ओर्दा), नवीन-बुखारा आदिमें जो बोल्शेविकोंके भिन्न-भिन्न गिरोह थे, वह रूसी समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टीसे सम्बद्ध थे। इस पार्टीकी द्वितीय स्थानीय काग्रेस २१-२७ जूनको ताशकन्दमे हुई थी, जिसमे मेन्शेविकोकी प्रधानता थी, जिसके कारण काग्रेसने अस्थायी सरकारमे अपना विश्वास प्रकट किया। ताशकन्दमें बोल्शेविकोका अपना कोई पत्र नही था, इसलिये समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टीके अखबार "रबोचेये देलो" (मजदूरोका कार्य) पत्रमें ही उन्हे भी अपने विचारोको प्रकट करना पडता था, जिन्हे मेन्शेविक कितनी ही बार छापनेसे इन्कार कर देते थे। बोल्शेविक-नेता स्वेर्दलोफने ओरेनबुर्गके बोल्शेविको द्वारा तुर्किस्तानके बोल्शेविकोके पास कभी-कभी संबंध स्थापित करनेकी कोशिश की, लेकिन उसमें बहुत सफलता नही हुई। लेकिन जब मध्य-एसियाके लोगोको मालूम हुआ, कि रूसमे बोल्शेविक क्या कर रहे हैं, तो वहाके लोगोमें भी बोल्शेविकोका प्रभाव जल्दीसे बढने लगा। ई० प० बाबुश्किनके नेतृत्वमे खोकन्दमें बोल्शेविकोकी एक मजबूत जमात कायम हो गई—बाबुश्किन १९०३ ई०मे ही बोल्शेविक था, और खोकन्दके मजदूर-सैनिक प्रतिनिधियोकी सोवियतका उस समय अध्यक्ष था। समरकन्दमे समाजवादी जनतांत्रिकोंके भीतर रहते हुये बोल्शेविक बडी तत्परतासे काम करने लगे। अक्तूबर (बोल्शेविक) क्रांतिके समय नवीन बुखारामे पोल्तरोत्स्कीके नेतृत्वमे एक बोल्शेविक गिरोह काम करने लगा था। पोल्तरोत्स्की १९१८ ई०में समाजवादी क्रांतिकारियोंके हाथ मारा गया, जिनका मुखिया करेन्स्की था।

ताशकन्दके बोल्शेविकोका नेता अ० पेशिन रेलवे मजदूर, और न० शूमिलोफ कारखानेमें मिस्त्री था। शूमिलोफ १९१८ ई०में ताशकन्द सोवियतका अध्यक्ष बनाया गया।

इस प्रकार हम देख रहे हैं, कि तुर्किस्तानके बोल्शेविक अधिकतर रूसी थे, लेकिन उनको वहाके मुसलमान मजदूरोके "इत्तिफाक" (लीग)का सहयोग प्राप्त था। स्कोबेलेफमे मार्च १९१७ ई०में फरगानाके मुसलमानोका प्रथम मजदूर संगठन स्थापित हुआ था—मध्य-एसियाई लोगोको रूसी मुसलमान कहा करते थे। फरगानाके बाद इस तरहके संगठन ताशकन्द, समरकन्द, खोकन्द, नमंगान, कत्ताकुर्गान, खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) तथा दूसरे नगरोमे भी स्थापित हुये। १९१६ ई०मे जारशाहीने बहुतसे एसियाइयोको मजदूर-सेनामे भर्ती करके युद्धपंक्तिके पीछे काम करनेके लिये भेजा था। यही मजदूर जब लौटकर तुर्किस्तान आये, तो रूसमे बोल्शेविकोका काम देखे होनेके कारण उन्होने यहा भी "मजदूर-इत्तिफाक" (मजदूर लीग)को संगठित करनेकी घोषणा करते हुये अपने उद्देश्यके बारेमे कहा—"तातार (मंगोलायित) और सर्त (ताजिक) गरीब किसानो और मजदूरोका एक परिवार बनाना है, जो कि पूंजीवादके खिलाफके संघर्षमें मजदूरवर्गका समर्थन करेगा और सच्चे जनतांत्रिक सिद्धान्तोंके आधारपर नये समाजके निर्माणमे सहायता करेगा।" इस उद्देश्यसे ही मालूम हो जायगा, कि मध्य-एसियाके देहकान (किसान) और मजदूर रूसमे रहते वक्त बोल्शेविक पार्टी और वहाके मजदूरोंके सम्पर्कमें आकर कितने प्रभावित हुये थे। आरम्भमें इत्तिफाकी दलवाले मेन्शेविकोंके जबर्दस्त प्रभावमे रहे, लेकिन जल्दी ही उन्हे मालूम हो गया, कि मेन्शेविको और जारशाही साम्राज्यवादियोमे बहुत अन्तर नही है, इसलिये वह बोल्शेविकोंके नजदीक आने लगे। स्थानीय सरकारी संस्थाओं और संविधान-सभाके चुनावोंके समय उन्होने बोल्शेविकोंसे मिलकर अपने उम्मीदवार खडे किये। शूरा-इस्लामिया और उलमाके साथ इत्तिफाकियोका संघर्ष दिन-पर-दिन बढता गया। मुल्ला और मुस्लिम साम्प्रदायिक नेताओंने हर तरहसे लोगोंको यह समझानेकी कोशिश की, कि मुसलमान-मुसलमानमे कोई अन्तर नहीं, सभी मुसलमानोको एक हो जाना चाहिये। लेकिन मध्य-एसियाके मजदूर-किसानोको यह समझनेमें देर नही लगी, कि उनकी भलाई इस्लामके नारा लगानेवालोंके साथ रहनेमें नही, बल्कि बोल्शेविकोका साथ देनेमें है। सितम्बर १९१७ ई०मे मजदूरी बढाने और आठ घंटा काम करनेकी मांगके लिये

ताशकन्द, समरकन्द, नमगान, अन्दिजान, कत्ताकुर्गान और नवीन-बुखाराके मजदूरोने हडताले की। देहातमे किसानोने भी जमीदारोके विरुद्ध सघर्ष छेड दिया ।

रूसमे फर्वरी-क्रातिके होनेके बाद तुर्किस्तान-प्रदेशमे उतना भी परिवर्तन नही किया गया, जितना कि रूसके पासवाले इलाकोमे। सेना और शासनमे अब भी यहा जारशाही जमानेके ही अफसर थे। जब करेन्स्की प्रधान-मत्री हो गया, तो एस्-एर् (समाजवादी क्रातिकारी) दल अपनेको सरकारी दल समझने लगा, और उसकी यहा प्रधानता हो गई। लेकिन इससे पहिले १९१६ ई०मे जो विद्रोह मध्य-एसियाके लोगोने किया था, यद्यपि उसे दबा दिया गया था, तो भी उसके प्रभावमे लोगोके हृदयोमें शासनके प्रति विद्वेषका भाव अब भी कम नही हुआ था। बल्कि अब उसने एक नया रूप लिया था, जिसमें उज्बेक मध्यवर्गने अपने पुराने खोये हुये राज्य खोकन्दके नाम-पर "खोकन्द स्वायत्तता"की माग पेश की। अभीतक बुखाराका अमीर अपनी जगहपर बना हुआ था। जारशाही अफसरो और पूजीपतियोने भी स्वायत्ततावादियोके पक्षका समर्थन करना आरम्भ कर दिया, और जब रूसमे बोल्शेविक-क्राति हो गई, तो उन्होने खुल्लमखुल्ला उनका साथ देना शुरू किया। यद्यपि स्वायत्ततावादियोने अपना काम ताशकन्दमे शुरू किया था, लेकिन वहा उनको उतनी सफलता नही हुई, इसलिये उन्होने खोकन्दको अपना केन्द्र बनाया।

४ बोल्शेविक-प्रभाव-वृद्धि

ताशकन्दमे पहले मेन्शेविको और एस्-एर्-दलका ही जोर रहा। ताशकन्द एसियाका सबसे बडा औद्योगिक केन्द्र था। वहाके कारखानोमे रूसी मजदूर बडी सख्यामे काम करते थे। इनके ऊपर पहले नरमदली समाजवादियोका प्रभाव होना स्वाभाविक था, क्योकि रूसी मजदूरोको एसियाई मजदूरोकी अपेक्षा ज्यादा रियायते मिली हुई थी, लेकिन धीरे-धीरे मजदूरोकी आखे खुलने लगी, जब कि उन्होने देखा कि यह दक्षिणपक्षी दल उनका हित-साधन नही कर सकता। वामपक्षकी ओर झुकाव देखकर एस्-एर् (समाजवादी क्रातिकारी) दलमे फूट पड गई। वामपक्षी उनसे अलग हो गये, जो कितने ही समयतक बोल्शेविकोके साथ मिलकर काम करते रहे। जून (१९१८ ई०)के अन्तमे बोल्शेविकोकी पहली काग्रेस हुई, जिसमे चालीस-पचास प्रतिनिधि शामिल हुये थे, लेकिन जब १९-२९ दिसम्बर (१-१० जनवरी) १९१९ ई०को द्वितीय काग्रेस हुई, तो उसमे एक सौ अस्सी प्रतिनिधि थे। इस समयतक अग्रेजोकी मददसे वर्तमान तुर्क-मानिस्तानपर क्राति-विरोधी रूसियोकी प्रभुता कायम हो गई थी, इसलिये वहाके प्रतिनिधि इस काग्रेसमे शामिल नही हो सके, लेकिन सप्तनदके प्रतिनिधि आये थे। इस काग्रेसके प्रधानमडलमें जूराबयेफ, वेदीलोफ जैसे स्थानीय (एसियाई) बोल्शेविक भी निर्वाचित हुये थे, जिससे मालूम होगा, कि मध्य-एसियामे रूसी बोल्शेविक कहातक अपनेको एसियाइयोके साथ एकताबद्ध करनेमे सफल हो चुके थे। नरम समाजवादियो और बोल्शेविकोके बीच किसका साथ देना चाहिये, इसका निर्णय करनेमे एसियाई कमकरोको दिक्कत नही हुई, जिसका पता काग्रेसमे एसियाई बोल्शेविकोकी सख्याकी वृद्धिसे मालूम है।

ताशकन्द—पहली काग्रेसतक बोल्शेविक पार्टीके २६१ सदस्य थे, जिनमे २८ स्थानीय (प्राय उज्बेक) थे। इनके अतिरिक्त पुराने ताशकदमे भी १२५ व्यक्ति पार्टीके साथ थे। दूसरी पार्टीके समयतक बोल्शेविक पार्टीमे २००० सदस्य हो गये थे, जिनमे ९०० स्थानीय, ७०० रूसी और ४०० विदेशी कमकर थे। विदेशियोमे लत्वियन, उक्रइनी, ईरानी, तारतार और किर्गिज जातियो-के भी लोग थे। १२ अक्तूबर १९१८ ई०मे सारे ताशकद नगरकी पार्टी-कान्फ्रेस हुई।

समरकद—१९१७ ई०के सितबरके अतमे यहा बोल्शेविककी पहली जिला-कान्फ्रेन्स हुई थी। अक्तूबरके मध्यतक समरकन्द जिलेमे अटठाइस शाखाये और पैतीस सौ सदस्य थे।

खोकद—१९१७ ई०के अक्तूबरमे यहा बोल्शेविकोकी तीस-पैतीस जमातें थी। पहली काग्रेस-तक सदस्योकी सख्या दो सौ हो गई और रूसियोसे बाहरके कमकरोमें भी काम होने लगा था। १९१८ ई०के अततक पार्टीके सदस्योकी सख्या ७५० थी। आगे हम देखेंगे, कि मध्य-एसियाके

पूंजीवादियोंकी संगठित शक्तिका मुकाबला सबसे ज्यादा खोकन्दके बोल्शेविकोंको करना पड़ा था। यहांके ७५० सदस्योंमें २५० स्थानीय लोगोंमें से थे।

खोजन्द (लेनिनाबाद)—सिर नदीके तटपर अवस्थित इस ऐतिहासिक नगरमें भी बोल्शेविकों और नरम-दलियोंका संघर्ष रहा। १९१८ ई०के अप्रैलतक यहां बोल्शेविकोंका संगठन हो गया था, और उनकी प्रथम कांग्रेसमें यहांसे बीस प्रतिनिधि शामिल हुए थे। खोजन्दमें पार्टी-मेम्बरोंकी संख्या २४६ थी, और इलाकेके दूसरी जगहोंमें भी बोल्शेविक थे, जिनमेंसे २१६ खोजन्द नगरमें, पचीस खोजन्द रेल स्टेशनमें, छत्तीस द्रागोमिरोफ स्टेशनमें, तीस कोपीमें, अस्सी पर्लोविकामें, ८०० सरी-दुगानमें, ३१२ उरालके जिले (बोलोस्त)में, पैंतीस चपकुल जिलेमें, पच्चीस बोकल बेदर्गनमें, साठ इसफान इलाकेमें थे। १९१८ ई०के जून और दिसंबरके छ महीनोंमें बड़ी तेजीसे बोल्शेविकोंकी शक्ति और संख्या बढ़ी। उन्होंने तबतक अपनी लाल सेना भी संगठित कर ली। पीछे प्रतिगामी हो गया शेख एरगस, एक समय बोल्शेविकोंके साथ था।

अन्दिजान—फरगानाका मशहूर औद्योगिक केंद्र होनेके कारण यह बोल्शेविकोंका भी गढ़ था। दूसरी कांग्रेसके समय (१९१८ ई०के अंत)तक यहां दो सौ पार्टी-मेम्बर थे। लेकिन यहांपर जनतांत्रिक संगठन औरोंकी अपेक्षा बहुत पीछे हुआ था और १९१८ ई०के अंतमें ही नगर-दूमाकी स्थापना हुई।

फरगाना—फरगाना-उपत्यका रूसी कारखानोंके लिये कपास पैदा करती थी। इसके कारण वहां अन्दिजान, फरगाना तथा दूसरे शहरोंमें छोटे-छोटे कारखाने खुल गये थे, जिनमें रूसी मजदूर भी काम करते थे। १९२८ ई०की जुलाईमें अर्थात् रूसमें बोल्शेविकोंके राज्य संभालनेके नौ महीने बाद यहां पार्टीका संगठन हुआ और इस सालके अंततक २३७ पार्टी-सदस्य हो गये।

नमगान—यहां १९१७ ई०के दिसंबरमें सात पार्टी-सदस्य थे। अप्रैल १९१८ ई०में १८० और द्वितीय कांग्रेसके समय सदस्योंकी संख्या छ सौ थी, जिनमें दो तिहाई स्थानीय और केवल दो सौ रूसी थे।

किजिलकिया—१९१८ ई०की फर्वरीमें सात सदस्योंको लेकर बोल्शेविकोंका यहां काम शुरू हुआ, लेकिन दिसंबरतक उनकी संख्या ४५१ हो गई।

मर्गेलान—यहां १९१८ ई०के अगस्तमें पार्टीकी टुकड़ी स्थापित हो गई, और द्वितीय कांग्रेसके समयतक बोल्शेविकोंकी संख्या १७० पहुंच चुकी थी।

कत्ताकुर्गान—१९१८ ई०के अंतमें द्वितीय कांग्रेसके समय यहां सदस्योंकी संख्या करीब तीन सौतक पहुंच गई थी, और यहांके तीन प्रतिनिधि द्वितीय कांग्रेसमें शामिल हुए थे।

जीजक—यहां १२६ सदस्य १९१८ ई०के अंततक हो गए थे।

चारजय—आमू-दरियाके बायें तटपर अवस्थित इस महत्त्वपूर्ण स्थानमें १९१८ ई०के दिसंबरमें बोल्शेविकोंका संगठन हो चुका था और द्वितीय तुर्किस्तान पार्टी कांग्रेस जब ताशकन्दमें हुई, तो यहांके बोल्शेविक सदस्योंकी संख्या सौतक पहुंच चुकी थी। लेकिन इस इलाकेमें अंग्रेजोंकी मददसे क्रांति-विरोधियोंका बल बढ़ गया, इसलिये यहांके बोल्शेविकोंको उनका सख्त सामना करना पड़ा।

इन आंकड़ोंसे मालूम होगा, कि मध्य-एसियामें बोल्शेविकोंका प्रभाव कितनी जल्दी बढ़ा। इस समय तुर्किस्तान-प्रदेशकी आर्थिक स्थिति बड़ी खतरनाक हो गई, तेल और कोयला मिलना मुश्किल हो गया, रेलका यातायात बिगड़ गया था। कपासका उद्योग मध्य-एसियाकी आयका सबसे बड़ा साधन था और उसको कोई पूछनेवाला नहीं था। ऊपरसे अन्नका अकाल पड़ा हुआ था। साथ ही क्रांतिके कारण संघर्ष बहुत उग्र हो रहा था। मेन्शेविको और दक्षिणपंथी एस्-एर्. इन कठिनाइयोंके लिये कोई रास्ता निकालनेमें असमर्थ थे। ऊपरसे काशगर, ईरान, अफगानिस्तान आदिके रास्ते क्रांति-विरोधी शक्तियोंको अंग्रेज पूरी तौरसे मदद दे रहे थे।

५. खोकन्द स्वायत्ततावादियोंका अन्त

प्रथम विश्व-युद्धके समय एसियाकी बहुतसी पिछड़ी जातियोंमें राजनीतिक स्वतंत्रताके भाव

जगे। मध्य-एसियामे तो १९१६ ई०मे उसने खूनी विद्रोहका रूप लिया था। इसी समय भारतमे प्रथम विश्वयुद्धके बाद देशकी परतत्रताको और भी कडा करनेके लिये अग्रेज रोलेट-कानून बनाने जा रहे थे। अग्रेज मध्य-एसियामे 'खोकन्द स्वायत्तता'को सहायता देनेके लिये पूरी कोशिश कर रहे थे। जारशाहीके उच्छेद, क्रातिकारियोकी निर्बलता और अग्रेजोकी शहसे मध्य-एसियाके मध्यवर्ग-ने इस आदोलनको खडा करके नवबर १९१७ ई०मे खोकन्दमे अपनी सरकार भी कायम कर ली, जो तीन महीने बाद (फर्वरी १९१८ ई०)तक शासन करती रही। जिस समय ताशकन्दमें ग्यारह दिन (११ जनवरी १९१९ ई०)तक बोल्शेविकोकी पार्टी काग्रेस होती रही, उसी समय खोकन्दके क्राति-विरोधी अपने शासनको कायम करके आगेके लिये बडे-बडे स्वप्न देख रहे थे। लेकिन खोकन्दके इस आदोलनमे खोकन्दसे बाहर सारे तुर्किस्तानके मध्यमवर्गकी सहानुभूति रहने भी उनसे सहायता उतनी नही मिल सकी। नवबर १९१७ ई०मे बोलशेविक-क्राति रूसमे सफल हो चुकी थी, इसलिए मध्य-एसियामे कारबार करनेवाले रूसी पूजीपति बदहवास हो गये थे। अन्दिजानका सबसे बडा रूसी पूजीपति खोकन्द-स्वायत्तताका सबसे जबर्दस्त समर्थक था, और वहाका एक बडा रूसी वकील नेन्सबेर्ग उसमें खास तौरसे भाग ले रहा था। लेकिन सभी जगहके क्राति-विरोधी बूर्ज्वाजीके भीतर एकता नही थी, नमगानवाले खोकन्दियोके साथ नही हुये। खोकन्दके इस आन्दोलनमे सबसे बडा हाथ फरगानाकी बूर्ज्वाजीका था, जिन्हे ताशकन्दके देशी और रूसी बूर्ज्वाजीसे भी पूरी सहायता मिली। ताशकन्द तो वस्तुत इस आन्दोलनका उद्‌गम स्थान ही था, और पहले वही उसका केन्द्र भी रहा। लेकिन सबसे पिछले खानकी राजधानी खोकन्द थी, इसलिये वहा सामन्तशाही तत्त्वोकी अब भी कमी नही थी। खोकन्दके नामपर राष्ट्रीय भावनाके जगानेमे आसानी थी, इससे भी लाभ उठानेके लिये इसी नगरको प्रतिगामियोने अपना अड्डा बनाया।

खोकन्द स्वायत्तताका आन्दोलन समरकन्दके मध्यवर्गमे भी बढा, और वहा उन्होने 'इत्तिफाक' के नामसे अपना सगठन मजबूत किया। किर्गिज-मध्यवर्गने भी इस आन्दोलनमे अपने लाभकी आशा देखी, और वह भी इसमे क्रियात्मक रूपसे भाग लेनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। यही नही, वर्तमान तुर्क-मानिस्तानमे कास्पियन तटतक खोकन्दकी 'स्वायत्तता'की गूज सुनाई देने लगी। सब होते हुए भी इस आन्दोलनका केन्द्र ताशकन्द या समरकन्द न होकर खोकन्द रहा। खोकन्द फर-गानाका सबसे बडा नगर होनेके कारण आर्थिक केन्द्र भी था, लेकिन वह औद्योगिक केन्द्र नही था। कमकरोकी कमजोरीके कारण खोकन्द क्राति-विरोधी स्वायत्ततावादी इसे अपना केन्द्र बना सके। यहापर जहा मिले और फैक्टरिया बहुत ही कम थी, वहा सैनिक महत्त्वका स्थान न होनेसे रूसी सैनिकोकी सख्या कुछ दर्जनोसे अधिक नही थी, जो भी घर लौटनेमे सफल न होनेके कारण खोकन्दके किलेमें रह गये थे। प्रतिगामियोने इस्लाम धर्मकी भी आड लेकर जहादका प्रचार शुरू कर दिया था। यद्यपि इससे उनके पृष्ठपोषक रूसियोको खतरा था, लेकिन तब भी वह इस समय बोल्शेविकोके खिलाफ उनकी सहायता करनेके लिये तैयार थे। स्वायत्तता-वादियोका नेता मुस्तफा चोकायेफ था। लेकिन जैसा कि ऊपरकी बातोसे मालूम होगा, असली सूत्रधार रूसी पूजीपति और अफसर थे, जिनमे पीछे मेन्शेविक और दक्षिणपन्थी समाजवादी क्रातिकारी भी शामिल हो गये। खोकन्द स्वायत्तता-विधानके निर्माणमे नेसबेर्ग-जैसे कितने ही रूसी वकीलोका मुख्य हाथ था। कजखोफ स्वायत्ततावादियोकी सेनाका मुख्य शिक्षक था। करेन्स्कीकी पार्टी (समाजवादी क्रातिकारी)का खोकन्दके आन्दोलनमे खास हाथ था। ताश-कन्दके शिक्षकोके सघने भी प्रस्ताव द्वारा १० (२३) दिसम्बर १९१७ ई०के अपने सम्मेलनमे स्वायत्तताका समर्थन किया था। खोकन्दकी स्वायत्ततावादी सरकारने गाववालोको अपने हाथमे करनेके लिये शिक्षितो और मुल्लोको तैनात किया था। मदरसो, मस्जिदो, चायखानो, बाजारोमे जहा देखो तहा 'स्वायत्तता'का घनघोर प्रचार हो रहा था, उसी तरह जैसे कि इसके साल-डेढ साल बाद भारतमे असहयोग आन्दोलन देशके कोने-कोनेमें। लेकिन जहा हमारी राष्ट्रीयताको अग्रेजोकी सडी-गली व्यवस्थासे भिडना था, वहा मध्य-एसियामे वहाके नब्बे प्रतिशत लोगोके

हितोंके जबर्दस्त समर्थक वोल्शेविकोंके साथ सघर्ष जारी हुआ था। इसलिये मध्य-एसियाके मुल्ला और शिक्षित बहुत दिनोतक लोगोंको धोखेमे नहीं रख सकते थे। वह प्रचारके साधनके तौरपर लोगोंकी भुखमरीका उदाहरण दे रहे थे, लेकिन उसके कारण वोल्शेविक नहीं थे। वह वोल्शेविकोंके अत्याचारोंकी मनगढन्त बाते सुनाते थे, लेकिन मध्य-एसियामें जो थोडे-से वोल्शेविक देखे जाते थे, वह गरीबोंके सबसे गहरे मित्र छोड और कुछ नही थे। यह भी कहा जाता था, कि वोल्शेविक काफिर इस्लाम और अल्लाहको यहासे उखाड फेंकना चाहते है, लेकिन इस झूठको वह तभीतक लोगोमे फैला सकते थे, जबतक कि रक्त-बीजकी तरह बढकर वोल्शेविक अपने उद्देश्योके प्रचारके लिये सब जगह फैल नही गये। वोल्शेविक भी दूसरे रूसियोकी तरह साम्राज्यवादी हैं, इस प्रचारको वहाके लोग अपनी आखो देखकर झूठा समझ सकते थे, जब कि स्वायत्ततावादी नेताओको जारशाहीके बडे-बडे अफसरो और पूजीपतियोके साथ घुलते-मिलते देख रहे थे।

ओरेनबुर्गमे आतमन दूतोफके विद्रोहके कारण उधरमे रूसका मध्य-एसियाके साथ सबध कट गया था, और इधर कास्पियनके पूर्वी तटमे अग्रेजी षड्यत्रने कुछ समयके लिये सफलता प्राप्त की थी। ताशकन्दपर वोल्शेविकोका अधिकार हो जानेसे उनका विरोधी दूतोफ ओरेनबुर्गसे अनाज आने देनेके लिये कैसे तैयार हो सकता? सारे झूठे प्रचारके होनेपर भी मध्य-एसियाके कमकर-किसान वोल्शेविकोंके कामको देख रहे थे। उन्होंने किसानोको अपनी जोती जमीन देकर अपनी तरफ कर लिया था। मजदूरोमे काले-गोरे दोनोको मिलाकर कल-कारखानोके प्रबन्धमे भागीदार बना दिया था। धीरे-धीरे स्वायत्ततावादियो और वोल्शेविकोंके कामोकी तुलना करनेसे इस्लाम और जातीय स्वतत्रताके नाम पर होते हुये प्रचारका प्रभाव घटने लगा, और समझदारोको यह समझनमे दिक्कत नही हुई, कि खोकन्दके स्वायत्ततावादकी आडमे बडे-बडे रूसी स्वामी, पूजीपति और पुराने शासक शिकार खेल रहे हैं।

फर्वरीतक फरगानामे भी वर्ग-सघर्ष उग्र रूप ले चुका था और खोकन्दमे अब क्रांति-विरोधियोका प्रभाव बहुत घट चुका था। उनका शासन केवल पुराने नगरमे रह गया था। नये शहरमे वोल्शेविकोने सोवियत-शासन स्थापित कर दिया था। किलेमें जो १६ रूसी सैनिक रह गये थे, वह भी वोल्शेविकोंके साथ हो गये थे। खोकन्द सोवियतका अध्यक्ष बाबुश्किन था। क्रांति-विरोधियों (जिनमें सफेद रूसी भी थे)ने पहरेदारको मारकर बाबुश्किनके घरपर आक्रमण किया। उसके बीबी-बच्चे भी साथ थे, लेकिन बाबुश्किन पिस्तौलसे लडता रहा। क्रांतिविरोधियोंने योजना बनाई कि पहले किलेको हाथमे किया जाय, फिर टेलीफोनके स्टेशनको, और अन्तमें सोवियत-अध्यक्ष बाबुश्किनको। लेकिन इसी समय फरगानाके पूर्वी भागमे वोल्शेविकोंने सफलता पाई। उन्होंने अन्दिजानको लेकर सारे फरगानापर वोल्शेविक-शासन स्थापित कर लिया।

खोकन्दके पुराने नगरमे सजोनोफ और निकोलायेको खोकन्द स्वायत्त-सरकारके साथ बात-चीत करने गये। १२ फर्वरीके सबेरे दिन बहुत अच्छा था। वोल्शेविकोका सगठन मजबूत था। १३ फर्वरीको सबेरे स्कोबेलेफ और अन्दिजानसे १२० आदमियोकी सहायता आ गई। स्वायत्ततावादियोंने वोल्शेविकोकी बढी हुई शक्तिको देखकर अपनी योजनाको आगे बढानेकी हिम्मत नहीं की, बल्कि लडनेकी जगह सुलहकी बातचीत करनेको ही ठीक समझा। १७ फर्वरी (२ मार्च)को दोनो ओरके प्रतिनिधि बात करनेके लिये जमा हुये, जिसमे सोवियतके सत्ताइस और स्वायत्तियोंके चौबीस प्रतिनिधि थे। लेकिन स्वायत्ती अपनी इच्छासे कैसे अपना खातमा कर देते? इसपर वोल्शेविकोने उन्हे अल्टीमेटम दे दिया। समझौतेमे सबसे बाधक एर्गास और तानीशेफ थे। समझौता होते न देखकर उस दिन १० बजकर ३० मिनटको बैठककी कारर्वाई रोक दी गई, और तानीशेफके पाससे उत्तरके आनेकी प्रतीक्षा की जाने लगी। अगले दिन तानीशेफने अपनी सहमति दे दी, लेकिन एर्गास मुल्लाओंके बलपर कूद रहा था। जिस समय समझौतेके लिए बातचीत हो रही थी, उसी समय खोकन्दकी सभी

मस्जिदोमे मुल्ला जहादपर व्याख्यान दे रहे थे। समझौता न होनेपर अव शक्ति मुल्लोके हाथमे चली गई थी, जो कि किसी तरहके सुधारको माननेके लिये तैयार नही थे। उनके लिये सुधारवादी उज्वेक भी काफिर थे, इसलिये उनके एक भागको मुल्लोने गिरफ्तार कर लिया, और दूसरा भाग भागनेके लिये मजबूर हुआ। खोकन्दके सेठोमेंसे कुछ तटस्थ हो गये और कुछने एर्गस तथा मुल्लोका पक्ष लिया। जहातक देहकानो (किसानो)का सबध था, वह समूहरूपेण सोवियत-सरकारके पक्षपाती हो गये थे। इस प्रकार एर्गसको भारी जनसख्याका वल प्राप्त नही हो सका। खोकन्दमे मजदूरोकी भी स्थिति डावाडोल रही, उनकी सभा (इत्तिफाक) एक वार मुल्लोके प्रचारके प्रभावमे इतनी आ गई थी, कि उसने सोवियतके विरुद्ध प्रस्ताव पास करके अपनेको स्वायत्तियोके पक्षमे घोषित किया, लेकिन जव एर्गस और मुल्लोकी सरकारका मजा चखा, तो उनकी आखे खुली। उन्होने "मुसलमान कमकर सघ" नामक वोल्शेविक-पक्षपाती सघ बनाया, फिर 'इत्तिफाक' भी सोवियत शासनका समर्थक वन गया। व्यापारियोमे जरूर काफी भाग ऐसा था, जो मुल्लोकी तरफ था।

खोकन्दकी ऐसी स्थिति थी, जव कि वोल्शेविकोने स्वायत्ततावादियोको खतम करनेका निश्चय किया। अवतक ताशकन्दसे भी उन्हे सहायता मिलने लगी थी। सोवियत कमाडरने १९ फर्वरी (४ मार्च) १९१८ ई०के १० वजकर १५ मिनटपर एर्गसको अल्टीमेटम दिया। दिनके १ बजे अल्टीमेटमका समय बीतनेवाला था। पौन वजे एर्गसका जवाव मिला। उसने सोवियत-कमाडरकी माग पूरा करनेसे इन्कार कर दिया। १ वजेसे बीचमे कभी-कभी रुककर शामके अधेरेतक तोपे पुराने नगरपर गोला-वर्षा करती रही। २० फर्वरीको सवेरे लाल सैनिकोने पुराने नगरपर धावा वोल दिया। एर्गस अपने आदमियोको लेकर पहली ही झडपमे भाग खडा हुआ, इसलिये नगरपर अधिकार करनेमे अधिक प्रतिरोधका सामना नही करना पडा। एर्गसके भाग जानेपर अव पुराने खोकन्दके प्रतिनिधि सुलह करनेके लिये आये। सुलह-सम्मेलन २१-२२ फर्वरी (८-९ मार्च) १९१८ ई०को रूसी-एसियाई वैंकके मकानमे हुआ। सुलहकी शर्तोंके अनुसार हथियारोको सोवियत कमाडरके हाथमे दे देना पडा, खोकन्दमे स्वायत्ती सरकार तोडकर प्रादेशिक सोवियत जनकमीसर मडलके शासनको स्वीकार किया गया। इस प्रकार खोकन्दपर किसानो-मजदूरोका राज्य स्थापित हुआ। एर्गसने यद्यपि यहा असफलता पाई, लेकिन आगे वासमची (डाकुओ) वन अपनी निष्ठुर खून-खराबियो द्वारा उसने तथा मध्य-एसियाके और भी कितने ही अधिकारच्युत धनियो और अमीरोने वोल्शेविकोको हटाकर अपनी तानाशाही स्थापित करनेका असफल प्रयत्न किया।

खोकन्द स्वायत्तीय आन्दोलन और सरकारके जीवनका चिट्ठा पुराने रूसी पचागकी तारीखो (जो कि तेरह दिन पहले पडती थी)के अनुसार निम्न प्रकार है —

दिसम्वर	६-७,	१८१८ ई०	फरगाना जिलेकी सोवियतोकी काग्रेस
,,	९-११,	,,	मुसलमानोकी काग्रेस
,,	११,	,,	खोकन्द स्वायत्तताका आरम्भ
,,	२१-२४,	,,	खोकन्दमे अखिल तुर्किस्तान समाजवादी क्रातिकारी काग्रेस
दिसम्वर	२७,	१९१८ ई०	ताशकन्दमे वोल्शेविकोका प्रदर्शन
फर्वरी	१२,	१९१९ ई०	खोकन्द दुर्ग वोल्शेविकोंके हाथमे और खोकन्दमे सैनिक क्राति-समितिका सगठन
,,	१३,	,,	स्कोवेलेफ और अन्दिजानमे खोकन्दमे कुमक आई, खोकन्द स्वायत्ती सरकारसे प्रथम वातचीत
,,	१४,	,,	स्वायत्ती सरकारसे द्वितीय वातचीत
,,	१४-१६,	,,	एर्गसका किलेपर आक्रमण करनेका प्रयत्न
,,	१५,	,,	स्कोवेलेफ नगरकी दूमाका खोकन्दके शान्ति-

	सम्मेलनोंमें एक प्रतिनिधि भेजनेका निश्चय
	जाति-सम्मेलनका उद्घाटन
फर्वरी १७, „	मुल्लोका स्वायत्ती सरकारको अपने हाथमें ले लेना
„ १८, „	ताशकन्दसे खोकन्दमें सेना आनेपर सोवियत कमाडरने अल्टिमेटम भेजा, पुराने नगरपर गोला-बारी शुरू
„ १९, „	
„ २०, „	एर्गाश खोकन्द छोडकर भागा
„ २२, „	सुलहनामेपर हस्ताक्षर

६ समरकन्द-विजय

खोकन्द स्वायत्तियोंपर विजय प्राप्त करना मध्य-एसियामें साम्यवादकी जबर्दस्त विजय थी। उनके बाद यह निश्चय-सा हो गया, कि नगरोंसे बोल्शेविकोंको हटाना बहुत मुश्किल है। १९१८ ई०में बोल्शेविकोंका शासन सिर्फ नगरोंपर था। नगरोंके आसपासके कुछ किसान भी उनके प्रभावमें आये थे। खासकर सिर्-दरियाके आसपासवाले इलाके, फरगाना जिला और समरकन्दके जिलोंके किसानोंपर बोल्शेविकोंका प्रभाव बढ़ता जा रहा था, लेकिन उधर मुल्लाओंका सगठन "शूरा-इस्लामिया" (इस्लामी लीग) भी काफिरोंके विरुद्ध धुआधार प्रचार करके मुस्लिम-जनसाधारण-को रूसियोंके, खासकर बोल्शेविकोंके, विरुद्ध खूब भडका रहा था। दिसम्बर १९१७ ई०के अन्त और जनवरी १९१८ ई०के शुरूमें समरकन्दमें क्रातिकारियोंने विरोधियोंको दबा दिया। वहा बोल्शेविकोंका सगठन भी हो गया और रेव-कम (रेव्यूल्यूशनरी कमेटी, क्राति-समिति)ने बोल्शेविक सेनाके सगठनका भी सूत्रपात कर दिया। लेकिन इसी समय कजाकोंने समरकन्दको खतरेमें डाल दिया। मध्य-एसियाकी जातियोंमें कजाक सबसे ज्यादा लडाकू और अभी भी बहुत कुछ घुमन्तू जीवन बिताते थे। साइबेरियामें क्राति-विरोधियोंने अपने पक्षको मजबूत किया था, और इन कजाकोंका उनसे सीधा सबध था। समरकन्दके आसपासको घेरनेवाले कजाकोंके साथ बात करनेके लिये बोल्शेविकोंने अपना प्रतिनिधि-मडल भेजा। किजिल-तेपमें दोनों ओरके प्रतिनिधियोंने बातचीत की। फिर क्राति-सरकारके नामसे अल्टीमेटम दिया गया, जिस कुछ अफसरो और प्रतिगामी कजाकोंको छोड सबके हथियार ले लिये गये।

अक्तूबर-क्रातिके तुरन्त ही बाद समरकन्द-जैसे मध्य-एसियाके महत्त्वपूर्ण नगरमें क्रातिकी सशस्त्र सेना तैयार करनेमें कैसे ढिलाई की जा सकती थी? इस सेनामें रूसी और एसियाई दोनों ही जातियोंके आदमी थे। जारकी सेनामें काम किये हुये सिपाहियोंके अतिरिक्त काफी सख्यामें नये आदमी भर्ती हुये। इस प्रकार जनवरी १९१८ ई०में लाल सेनाका प्रथम सगठन यहा हो चुका था। समरकन्दकी इसी गैरिसनके सिपाही पहलेसे सैनिक शिक्षा पाये हुये थे, नये क्रातिके सिपाहियोंने भी सैनिक-शिक्षा तेजीसे ली। साथ ही पुराने सिपाहियोंमें राज-नीतिक चेतना लानेके लिये पूरी कोशिश की गई। कजाक कत्ताकुर्गान शहरपर अधिकार किये हुये थे। अभी भी उनसे खतरा दूर नहीं हुआ था। प्रदेश (क्राइ)की सरकारने पोल्तरा-त्स्कीको उनसे बात करनेके लिये नियुक्त किया। कजाकोंके भी प्रतिनिधि आये। समरकन्दमें दोनोंकी बातचीत होते समय क्रातिकारी कमेटीने उनसे हथियार रखनेकी माग की, लेकिन कोई निश्चय नहीं हो सका। फिर बोल्शेविक-प्रतिनिधि सीधे कजाक सैनिकोंसे बात करनेके लिये समरकन्दसे दस वर्स्त (६ फरसख)पर अवस्थित जूमा रेलवे स्टेशनपर गये, लेकिन कजाक किसी बातको सुननेके लिये तैयार नहीं थे। वह समरकन्दपर आक्रमण करनेके लिये उतारू थे। समरकन्दमें भी कमकरोंने बडी तेजीसे सैनिक तैयारी की। मजदूरोंने अपने परिवारको छोड-कर बन्दूक उठाई और कजाकोंको जीजख स्टेशनमें ही रोकनेका प्रयत्न किया। बोल्शेविक पार्टी-का एक भाग सेनाके लिये सामग्री तैयारीपर नियुक्त हुआ। बहुतसे पार्टी-मेम्बर किलेदारी

रक्षामे लगे और कितने ही युद्धक्षेत्रमे गये। एसियाई और युरोपीय दोनो ही मजदूर और बोल्शेविक-कर्मी एक-दूसरेसे मिलकर कजाकोसे समरकन्दको बचानेके लिये बडी तत्परतासे काम कर रहे थे। कजाक अपनेको करेन्स्की की अस्थायी सरकारका सैनिक बतलाते थे, जब कि वह सरकार रूसमे खतम हो चुकी थी। सारा प्रयत्न करनेपर भी कजाक सफल हुये। वह मुक्ति-दाताके तौरपर समरकन्द शहरमे दाखिल हुये। रूसी और एसियाई बूर्ज्वाजीने उनका भारी स्वागत किया, बढिया शराब पिलाई, भोज और उत्सव मनाया। क्रातिकारियोमेसे जो भी हाथ आये, उन्हे कजाकोने बडी निष्ठुरतासे मारा। लेकिन अधिकाश बोल्शेविक अन्तर्धान हो चुके थे। उनका सगठन भी नष्ट न हो, अन्तर्हित हो गया था। इस समय कमजोर दिलवाले अपने आप पार्टीमे अलग हो गये, लेकिन पक्के बोल्शेविक और मजबूतीके साथ अपने सगठनको चलाते रहे। बोल्शे-विकोकी कार्य-तत्परता, कुर्बानी और बर्तावने एसियाई गरीबो और मजदूरोके दिलमे और भी उनके प्रति विश्वास पैदा कर दिया।

लेकिन, समरकन्द थोडे ही दिनोके लिये बोल्शेविकोके हाथसे गया। ताशकन्दमें बोल्शे-विक शासन मजबूत हो गया था। खोकन्दमे भी शत्रुओको दबा दिया गया था। अब समरकन्दको फिरसे लेनेके लिये उन्होने तैयारी शुरू की। ताशकन्दने भी सेना भेजी, समरकन्दके मजदूरो-ने भी बहुतसे सैनिक दिये। समरकन्दके पुराने सैनिकोमेंसे बहुतमे उनके साथ थे, और कुछ ओरेनबुर्गमे क्रातिविरोधियोसे लडकर अभी लौटे थे। बोल्शेविकोके सब मिलाकर तीन हजार पैदल और सवार दोनो ही तरहके सैनिक कजाकोके मुकाबिलेके लिये तैयार थे, लेकिन इनके पास एक ही मैदानी तोप थी। उधर क्राति-विरोधियोके पास २७०० सैनिक थे, जिनमें ईरान और खीवाके युद्धक्षेत्रसे आये हुए भी कितने ही थे। उनके पास दो मैदानी तोपें और दो दूसरी तोपे थी। यह बतला चुके हैं, कि ओरेनबुर्गमे आतमन दूतोफ साइबेरियाके क्राति-विरोधी जेनरलोके साथ था, और उसका प्रभाव खीवा होते कास्पियनके पूर्वी तट तथा ईरानकी सीमातक पहुच रहा था। बुखाराका अमीर यद्यपि अभी सीधे तौरसे बोल्शेविकोके विरुद्ध होनेकी हिम्मत नही रखता था, लेकिन उसके अफसर वहाके पूजीपति क्राति-विरोधियोकी हर तरहसे सहायता कर रहे थे। युद्धके दो दिन पहलेतक कजाकोके साथ उनकी बराबर बैठके होती रही। अन्तिम आक्रमणके पहले जीजक स्टेशनके पास एक बहुत बडी सभा हुई, जिसमें एसियाई मजदूर बडी सख्यामे शामिल हुये थे। तुर्किस्तान गणराज्य सोवियत जनकमीसर-परिषद्के अध्यक्ष कोलेसोफने अपने भाषणमे गणराज्यकी सारी स्थितिपर प्रकाश डाला। इसी सभाके बाद योजना बनाई गई। फिर क्रातिकी सेना दक्षिणवाले रास्तेसे रेलवेके साथ-साथ लाइनसे दाहिने और बाये होते आगे बढी। रोस्तोव्त्सेवो स्टेशनोमे पहुचनेपर गोलाबारी शुरू हुई। कजाक समर-कन्दकी ओर पीछे हटे। बोल्शेविक आगे बढते गये। अन्तमे सोवियतकी क्राति-विरोधियोपर विजय हुई, और लाल सेनाके हाथमे बहुतसा गोला-बारूद और दूसरे हथियार आये। पेरफिल्येफ लाल सेनाका कमाडर था। दूसरे अफसर थे——फेदोर कोलेसोफ, पोल्तरात्स्की, फ्रोलोफ, पोनोमारेफ, पेन्दो, दूनायेफ, मिखाइलोफ, पेस्पेलोफ, एसाउलेको, बेर्ग, शुस्तोफ, बारकुस, ओर्लोफ, इसायेफ आदि। क्राति-विरोधियोकी तरफ थे——कजाची, कर्नल जायित्सेफ, स्लिको, सिवको, स्तेपानोफ, गिंजबुर्ग, सियानोफ, तोकारेफ, गोरेलोफ, गपेयेफ आदि जारशाहीके पुराने सैनिक अफसर तथा दूसरे।

जनवरी १९१८ ई०के आरम्भमे हुई समरकन्दकी इस विजयने फरगाना, समरकन्द और ताश-कन्दके बीचकी भूमिको बोल्शेविकोका एक दृढ केन्द्र बना दिया।

लेकिन, अभी भी बोल्शेविक निश्चित नही बैठ सकते थे, क्योकि अफगानिस्तान और ईरानके रूसी सीमान्तपर अग्रेजोका षड्यत्र बडे जोरसे चल रहा था, और चर्चिल सारी शक्ति लगाकर रूससे बोल्शेविकोको उखाड फेकनेके लिये तैयार था।

७ बुखारा-अमीर भगा (१९२०ई०)

मध्य-एसियामें रूसका शासन स्थापित हो जानेके बाद भी बुखाराके अमीरका शासन हमारे यहाकी बडी रियासतोके ढगपर हो रहा था। मध्य-एसियाके लोग भी तुर्क है, और

तुर्कीके लोग भी। मध्य-एसियाके तुर्क सुन्नी होनेसे तुर्कीके खलीफाको अपना सबसे बड़ा धर्माचार्य मानते हैं। इस प्रकार भाषा और धर्मके घनिष्ठ सबधके कारण मध्य-एसियाके शिक्षितोका तुर्कीके साथ घनिष्ठता होनी स्वाभाविक थी। इसीलिये जिस तरहके आन्दोलन तुर्कीमे होते, उसका कोई-न-कोई रूप मध्य-एसियामे उठ खडा होता। तुर्कीमे नवीन-तुर्क दलने सुधारके लिये बहुत जद्दो-जहद की, और वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें उसने इतनी सफलता पाई, कि तुर्कीके सुल्तानको अनवर पाशा और दूसरे नवीन तुर्क-नेताओको शासनमें साझीदार बनानेके लिये मजबूर होना पडा। नवीन-तुर्क पुराने जमानेकी कितनी ही बातोको हटाकर तुर्कीको सामन्तशाहीसे पूंजी-वादी समाजमें लाना चाहते थे। इन्ही नवीन-तुर्कोंकी नकलपर मध्य-एसियामे 'जदीद' (नवीन) आन्दोलन शुरू हुआ, जिसका केन्द्र बुखारा था। रूसी इलाकेमे अक्तूबर-क्रातिके बाद खोकन्दी स्वायत्तियोने शक्तिको अपने हाथमे लेना चाहा, लेकिन जदीदोने इतना जोर नही दिखलाया। जदीद मुल्लाशाहीके भी खिलाफ थे, इसलिये मुल्ला उन्हे फूटी आखो देखना नही चाहते थे। वर्तमान शताब्दीके आरम्भसे ही जदीदवादका प्रचार बुखारामें होने लगा था। १९१७ ई०के मार्च-अप्रैलमे जदीदोका नारा 'हुर्रियत' (स्वतत्रता) बडे जोरोपर था। फर्वरी-क्रान्ति द्वारा जारके सिहासनसे हटा दिये जानेके बाद बुखाराका अमीर आलमखान भी डर गया, और उसने एक बार तुर्कीके सुल्तानका अनुगमन करते हुये जदीदोकी बहुतसी मागे मान ली। लोगोको मालूम होने लगा, कि यहापर भी अब जदीदोका शासन स्थापित होगा। लेकिन सालभर बीतते-बीतते अमीरको फिर इतनी हिम्मत हो गई, कि मार्च १९१८ ई०से उसने जदीदोका कत्लेआम शुरू कर दिया। चारो ओर मुल्लोका जोर था। बडे-बडे पगडवाले मुल्ला जदीदोके खूनकी नदी बहते देखकर दाढी फटफडाते कह रहे थे—"देखा न शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)की ताकत!" बुखारामे सैकडो आदमी बुरी तरहसे पकड-धकडकर तलवारके घाट उतारे जा रहे थे, खूनसे भरी खाइयोके पास चीमो मुर्दे दम तोड रहे थे।

जदीदोके प्रभावके जमानेमे नसरुल्ला कुशबेगीने जदीदोके साथ सहानुभूति दिखलाई थी, जिसके लिये उसे अपने बीबी-बच्चो और सबधियोके साथ बुखारासे निर्वासित करके करमीनामें नजरबन्द कर दिया गया, और उसकी जगहपर मिर्जा उरगज महामत्री बनाया गया। जदीदोने पुराने ढगके मकतबोकी जगहपर लडकोंके पढनेके लिये नये ढगके स्कूल स्थापित करना चाहा। मुफ्ती हाजी अकरामने उनके कामका समर्थन किया था, इसलिये उसे भी गुजारमें निर्वासित कर दिया गया। बुखारा-शरीफका रईस अब्दुस्समद खा जदीद होनेके कारण पदच्युत कर दिया गया। इसी तरह मिर्जा शहबाई और हाजी दादखाह-जैसे प्रभावशाली दर-बारी जदीद होनेके इल्जाममें निर्वासित करके कबादियान भेज दिये गये। जिस तरह खोकन्दमें मुल्लोने अन्तमें सारी शक्ति अपने हाथमें ले ली थी, वही बात अब १९२० ई०मे बुखारामे दुहराई जा रही थी। चारो तरफ जहाद (धर्मयुद्ध)का नारा घोषित हो रहा था। मुल्लोने फतवा दे रखा था, कि जदीदोका खून हलाल और उनकी जोरू हलाल।

लेकिन अमीर और मुल्लोंकी यह धीगा-धीगी छ महीने भी नही चल पाई। २० अगस्त १९२० ई०को बुखाराकी हालत परेशान देखी जाने लगी। बुखाराके आर्क (किले)से अमीरका सामान घोडा-गाडियोपर ढोया जा रहा था, और उधर बोल्शेविक तोपें समय-समयपर भूमिको कपाते हुये गुम्-गुमकी आवाज कर रही थी। अमीर आर्क छोडकर सितारामुखासा नामक बागमे ठहरा हुआ था, जहापर उसकी बेगमे और उसकी कामुकताके शिकार छोकरे गाडियोपर चढा-चढा करके भेजे जा रहे थे। बोल्शेविक केवल तोपके गोले ही नही छोड रहे थे, बल्कि उनके कागजी गोले और भी शक्तिशाली रूपमे लोगोंके बीचमे फेंके जा रहे थे, जिनकी आखिरी पक्तियाँ—"बुखाराके मेहनतकश जिन्दाबाद, बोल्शेविक पार्टी जिन्दाबाद, सोवियत-सरकार जिन्दाबाद, अमीर और उसकी सरकार नेस्तबाद" को पढ-सुनकर बुखाराके गरीब बडे उत्साहके साथ नये दिनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, और उधर जनाब आली अमीर-बुखारा मीर आलम खान भागनेकी फिक्रमें परेशान थे।

३०-३१ अगस्त और १ सितम्बर (१९२० ई०)के सोमवार, मगल और बुधके तीन दिनोमे सारा बुखारा उलट-पलट गया। नगरमे आग लगी हुई थी। आर्क (किले)के अन्दर हर जगह, खासकर अमीरके गद्दीघर और रनिवासमे, आगकी ज्वालाये लपलपा रही थी।

अमीरके लिये अब सुरक्षित जगह अपने देशके भीतर नही रह गई थी। जब उसकी प्रजामे सबसे अधिक सख्या रखनेवाले गरीब किसान और मजदूर बोल्शेविकोंके फेरमे पड गये थे, तो उसे कैसे त्राण मिल सकता था? उसे अब अफगानिस्तानके भीतर ही जान बचानेकी जगह दिखलाई पडने लगी। लेकिन, वह उज्बेकोके मैदानी इलाकोमे गुजरना खतरेकी बात समझता था, इसलिये उसने पहाडी रास्ता लिया। बाइसूनमे जाकर उसने डेरा डाला। मुल्लोके धुआधार जहादी व्याख्यानोसे, और उससे भी अधिक लूटके लोभसे पूर्वी बुखारावाले हिसार, कुल्याब, बलजुवान, दरवाज और करातगिनके इलाकोसे बहुतसे गाजी आये थे, लेकिन आधुनिक हथियारोसे सुसज्जित और सुशिक्षित बोल्शेविकोंके सामने भला यह शिवजीकी पलटन क्या कर सकती थी? अमीरको बाइसूनसे भी भागकर दुशाम्बा जाना पडा। वहापर एक ही यूरोपीय ढगकी इमारत 'दोस्तरखाना' थी, जिसे अमीरने अपना महल बनाया। जब लुटेरोकी पलटन उसके आसपास आकर जमा होने लगी, तो अमीरको विश्वास हो गया, कि अब बुखारा तो गया, दुशाम्बा (आधुनिक स्तालिनाबाद) राजधानीमें ही शायद मै मगीतोके शासनको मजबूत करनेमे सफल होऊ। लेकिन फर्वरी १९२१ ई०में फिर अमीरका पैर कापने लगा। पासके खजानेको कही गाजीके नामसे इकट्ठा हुये यह डाकू न छीन लें, यह भी उसका डर था। इसलिये निराश हो कुल्याब होता वह कुछ समय बाद पज (वक्षुकी ऊपरी शाखा)के किनारे पहुच दरकदके घाटसे वक्षु पार हो अफगानिस्तान चला गया। जाते-जाते वह डाकुओ (बासमचियो)के सरदारोको अपना प्रतिनिधि बनाकर छोड गया, जिन्होने १९२१ से १९२६ ई० तकके पाच वर्षोंतक पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान)में बहुत लूट-पाट मचाई, गरीबोके खूनसे हाथ रगा, लेकिन अन्तमे उन्हे सोवियत-शासनने खतम कर दिया। बोल्शेविक क्रातिके बाद सारा रूसी मध्य-एसिया तुर्किस्तान गणराज्यके नामसे सगठित हुआ था। इसके बाद उज्बेकिस्तानका गणराज्य स्थापित हुआ, जिससे १९२४ ई०मे ताजिकिस्तान पहले स्वायत्त गणराज्य फिर पाच साल बाद १९२९ ई०में स्वतत्र गणराज्य होकर अलग हो गया।

स्रोत-ग्रन्थ

१ स्पिसोक् नरोद्नोस्तेइ तुर्केस्तान्स्कओ क्राया (इ इ जारुबिन्, लेनिनग्राद १९२५)
२. रेवोल्युत्सिया व् स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
३ "वोस्तोको वेदेनिया" (१९४५/३, पृष्ठ ५९-७९, लेनिनग्राद)
४. नसेलेनिये समरस्कन्द्स्कोड ओब्लास्ति (इ इ जारुबिन्, लेनिनग्राद, १९२६)
५ दाखुन्दा (उपन्यास, सदरुद्दीन ऐनी, अनु० राहुल साकृत्यायन, प्रयाग, १९४८)
६. जो दास थे (उपन्यास, सदरुद्दीन ऐनी, अनु० राहुल साकृत्यायन, प्रयाग, १९४९)
७ बुखारा (सस्मरण, सदरुद्दीन ऐनी, अनुवादक स बोरोदिन्, मास्को, १९५२)

अध्याय ३

कजाकस्तानमें क्रांति

१ कजाक-जाति

इतिहासके आरम्भसे वर्तमान कजाकस्तानकी भूमिमें किस तरह मानव जातियोंका आगमन, निस्सरण और सम्मिश्रण होता रहा, इसे हम जगह-जगह कह चुके हैं। आज जो विशाल भूमि कजाकस्तान गणराज्यके नामसे प्रसिद्ध है, वह भौगोलिक तौरसे इतिहासकी दृष्टिसे साइबेरिया, किपचकभूमि, अल्ताई और सप्तनदके भिन्न-भिन्न भागोंमें विभक्त रही। मध्य-पाषाण-युग (ई० पू० ८०००)से पहलेकी पुरापाषाणयुगीन मुस्तेर आदि जातियोंमें से कौन इस भूमिमें रही, इसके बारेमें हमारे पास पुरातात्विक प्रमाण नहीं है। तुलनात्मक नृवंश-तत्त्व और भाषा-तत्त्वके अध्ययनसे हम यह कह सकते हैं, कि मध्य-पाषाणयुगमें दश्तकिपचकमें फिनो-द्रविड थे और वही जाति सप्तनदमें भी थी, अर्थात् तुर्किस्तान शहर और जम्बुल जिलेके इलाकोंमें किसी समय वही फिनो-द्रविड जाति रहती थी, जिसके अवशेष भारतमें द्रविड तथा सोवियतमें कोमी स्वायत्त गणराज्य, और एस्तोनिया तथा फिनलैंडके लोगोंके रूपमें अब भी मौजूद है। लेकिन उससे हजार वर्ष बाद नव-पाषाण-युगमें हम यहां विशेषकर अराल और निम्न-सिर-दरियाकी उपत्यकाओंमें आर्य घुमन्तुओंके आनेका पता पाते हैं। २५०० ई० पू०में फिर किपचक-भूमि और अल्ताईमें उनका स्थान उन्हींके भाई-बन्द शक लेते हैं। सारे पित्तल-युग और लौह-युगमें घुमन्तू पशुपाल और कुछ थोड़ेसे खानोंमें काम करनेवाले शक, किपचक, सप्तनद और अल्ताईके निवासी थे। हम देख चुके हैं, कि ई० पू० ५वीं शताब्दीमें भी, जब कि दुनियाके बहुतसे भागोंमें लोहेका प्रचार हो चुका था, अभी ये शक पीतलके हथियारोंका ही इस्तेमाल करते थे। ई० पू० ४थी सदीमें कजाकस्तान (उस समय शक-भूमि)के पूर्वी भाग अर्थात् अल्ताई-प्रदेशके पड़ोसी हूण थे, जो ई० पू० २री शताब्दीमें शक-भूमिके ऊपर टूट पड़े, और उन्होंने शकोंकी प्रभुता वहांसे खतम कर दी। उस समयसे शक-आर्य शरीराकृतिका स्थान मंगोलायित आकृतिने लेना शुरू किया। जो शक इस भूमिमें रह गये, वह मंगोलायितोंमें मिल गये। ईसाकी ५वीं सदीके पूर्वार्धमें किपचक-सप्तनद-अल्ताईकी भूमिमें रहनेवाले हूण-वंशज मंगोलायित अपनी सामान ढोनेवाली गाड़ियोंके कारण कंगली कहे जाते—वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें पश्चिमसे आनेवाले घुमन्तू सिरकी वालोंको पूर्वी उत्तरप्रदेशमें कंगड़ा कहा जाता था। ६ठी सदीके उत्तरार्धमें फिर तुर्कोंका प्रभुत्व स्थापित होनेके बाद इस भूमिके निवासी तुर्क नामसे प्रसिद्ध होने लगे। तबसे मध्य-एसियाके और भागोंकी तरह आज भी तुर्क जाति यहां रहती है, जो भाषाके थोड़े भेदके कारण कहीं कजाक, कहीं किर्गिज, कहीं उज्बेक और कहीं तुर्कमानके नामसे पुकारी जाती है। यदि हम आजकी कजाक जातिके ऐतिहासिक विकासको देखते हैं, तो हमें उनके भीतर निम्न क्रमसे जातियोंके स्तर मिलते हैं —

कजाक जातिका निर्माण —

काल	किपचकभूमि	सप्तनद	अल्ताई
ई० पू० ८००० (मध्य-पाषाण)	फिनो-द्रविड (अराल-सिर)	फिनो-द्रविड (जम्बुल)	
,, ३५००	,,	,,	.
,, ३००० (नवपाषाण)	शकार्य	,,	...

" २५००	शक	शक	शक
" १५०० (ताम्र-युग)	श०	श०	श०
" ७००	श०	श०	श०
" ५५०	श०	श०	श०
" ३२६	श०	श०	श०-हूण
" २०६	श०	श०	श०-हूण
" १३०	हूण	हूण-श०	हूण
" १००	हूण	हूण-श०	हूण
ईसवी १००	हूण	हूण-श०	हूण
" ४२५	कगली	कगली	कगली
" ५५७	तुर्क	तुर्क	तुर्क
" ६७३	तुर्क	तुर्क	तु०-किर्गिज
" ८९२	तुर्क	तुर्क	किर्गिज
" १२२०	तुर्क	तुर्क	किर्०-मगोल
" १५००	तु० (कजाक)	तु० (कजाक-किर्०)	किर्०-मगोल
" १७५७	कजाक	कज-किर्०-मगोल	किर्०-मगोल
" १८६५	कजाक	कज०-रूस	कज०-रूस
" १९१७	कज०-रूस	कज०	कज०-रूस

कजाक

अक्तूबर-क्रातितक कजाक लोग अब भी बहुत कुछ घुमन्तू पशुपाल थे। हम यह देख चुके है, कि इन घुमन्तू जातियोका पशुपाल-अवस्थामे रहना उनके सामन्ती समाजके विकसित होनेमे बाधक नही था। इस प्रकार वर्गके तौरपर कजाकोके मुखिया और शासक सामन्ती जीवन व्यतीत करते सामन्ती सस्कृतिसे भी परिचित थे। घुमन्तू जातियोमे दूसरी घुमन्तू जातियोका हजम होना बहुत आसान है, और अपने सरदारो या वीरोके नाम स्वीकार करनेके कारण उनके प्राचीन नामोका पता लगाना भी मुश्किल है। कजाकोके बारेमें हम देख चुके है, कि पहले इन्हे उज्बेक या उज्बेक-कजाक कहा जाता था। सुवर्ण-ओर्दूका नाम एक शक्तिशाली उज्बेक खान (१३१३-४० ई०)के अधीन होनेके कारण पडा। कजाकका शब्दार्थ चाहे अरबी भाषामें डाकू हो, लेकिन यहापर तुर्कोंने इसका इस्तेमाल साहसी लोगोके लिये किया। किर्गिज-कजाक और उज्बेक-कजाक नामके अन्तके कजाक और किर्गिज नाम अब रह गये, जो अपनी-अपनी जातिके परिचायक है। कजाक कबीलोके नामोके देखनेसे हमे पता लगता है, कि पुराने कौन-कौन-से कबीले या जातिया आकर इस भूमिमें मिश्रित हो एक जातिके रूपमें परिवर्तित हुई। कबीलोके ये नाम कजाको और उज्बेको मे बहुत-कुछ एक-से मिलते है, जिससे इस बातकी पुष्टि होती है, कि मूलत कजाक और उज्बेक एक ही कबीलेके अग थे। दोनो जातियोके कुछ कबीले है —

कजाक	उज्बेक	आनका काल
कुग्राद (सुवर्ण-ओर्दू)	कुग्राद	मगोल-काल
किपचक (मध्य-ओर्दू)	किपचक	तुर्क-काल
किताई (लघु-ओर्दू)	खिताई	
नैमान (मध्य-ओर्दू)	नैमान	मगोल-काल
उजुन (मध्य-ओर्दू)	ओशुन	शक-काल
उसिउन (सुवर्ण-ओर्दू)	"	
तजलर (लघु-ओर्दू)	ताज	
तरी-उइगुर (मध्य-ओर्दू)	उइगुर	मगोल-काल

कजीगली (मध्य-ओर्दू)	कजीगली	मगोल-काल
जलैर (सुवर्ण-ओर्दू)	जलैर	
कगली (सुवर्ण-ओर्दू)	इचकिली	
अलचिन (लघु-ओर्दू)	अलचिन	

इतिहासमें इन कवीलोमेंसे कितनोका हमे पता लगता है। कगली (ककली, कग) वहुत पुराना नाम है, जो यहा आये हूणोके पुराने वशजोको दिया गया। नैमन किसी समय इर्तिशसे मगोलियाकी पुरानी राजधानी कराकोरमतक—अर्थात् पीछेकी उत्तरी जुगारियामें वसते थे, जहासे मगोल-विजेताओंके ओर्दूका भाग वनकर यह मध्य-एसियामे आये।

जलैर वैकाल-प्रदेश तथा दौरियाके वीचमे किसी समय रहते थे, जहासे ये मगोलोके साथी वने।

उइगुर लोगोका केन्द्र भी किमी समय विशवालिग था। एक वार तुर्कोके स्थानमे इन्होने अपनी प्रभुता स्थापित की थी, फिर मगोलोके अनुयायी हो उनकी विजयोमे शामिल हो गये।

कुकुर्द या कुग्राद मगोलोका एक वहुत प्रतिष्ठित कवीला था, जो किसी समय दोलेनोर सरोवर, निम्न केरलोन तथा अर्गुनकी उपत्यकाओमे रहता था।

अलचिन पहले खिगन पर्वतमालाके वासी थे।

कजाक कवीलोको आजके कजाकस्तानके भिन्न-भिन्न भागोमे हम निम्न प्रकार वितरित देखते है—

(१) **महा-ओर्दू**—इसके उइसुन और सीखिम कवीले ताशकन्दके जिलेमे मिलते है। औलि-याअता (जम्वुल)में इसके जानी, तेमिर, चीमिर और वोतपाई (खित्तन) कवीले रहते है। तुर्किस्तान-शहरके पास और चू-उपत्यकामे सिरगिली, उस्ती, ओतकची, जलैर, चपराच कवीले वसते हैं। कगली ताशकन्दके पासमे रहते है।

(२) **मध्य-ओर्दू**—इस ओर्दूका किपचक कवीला ताशकदके पास रहता है। कुग्राद भी वहीं वसते है। इनके अतिरिक्त ताशकन्दके आसपास मध्य-ओर्दूके अल्तीअता, कोकतुनगुलू अल्तीअता, कोकतुनचुई, अर्गुन, नैमन भी वसते है।

२ १९१६ ई० का विद्रोह
(जारशाहीसे)

जारशाहीके प्रसारके वारेमें लिखते वक्त हम यह वतला चुके हैं, कि किस तरह अपने शासनको दृढ करनेके लिये साइवेरिया और दूसरी जगहोपर रूसी किसानो और व्यापारियोकी औपनिवेशिक वस्तिया वसानेकी कोशिश की गई। कजाकस्तानकी भूमिमे ये वस्तिया अधिकतर उसके उत्तर तथा उत्तर-पूर्वमें है। लेकिन, आगे चलकर वह ओरेनवुर्गसे सिर-दरियाके किनारे ताश-कन्द, और फिर समरकद तथा अल्ताई होते साइवेरियाके ओम्स्क आदि नगरोतक चली गईं। पीछे ओरेनवुर्गसे अराल समुद्रके तटतक और फिर ताशकन्द होते वेर्नीतक रेल वन गई। तुर्किस्तानको साइवेरियासे मिलानेवाली रेलवे लाइन वोल्शेविक-क्रातिके वाद वनी, लेकिन इससे पहले भी ओरेनवुर्ग, अरालस्क, अरिस, चिमकन्द, वेर्नी (अल्माअता), वुर्ल्युत्युवे, आयागुज, सेमीप्लातिन्स्क, वर्नोल, नवोसिविर्स्कके आधुनिक रेल-मार्गपर जहा-तहा रूसियोकी वस्तिया वस चुकी थीं। जार शाहीने पूरी कोशिश की, कि गोरोके साथ विशेष रियायत करके उन्हे किर्गिजोसे अलग रखा जाय। भारतमे अग्रेजोके लिये ऐसा करनेमे सुभीता था, क्योकि यहापर अग्रेज किसान और मजदूर आकर वसने नहीं पाते थे, और भारतीयोके लिये सभी अग्रेज साहेव (स्वामी) थे, लेकिन कजाकभूमिके लोग साहेव-रूसियोको ही अपने पास नही, वल्कि लाखोकी सख्यामें रूसी मजिको (गरीव किसानो)को भी देखते थे। उपनिवेशोमें आकर वसे रूसियोकी हालत कुछ वेहतर जरूर थी, और मूजिक या मजदूरकी शकलमें आये रूसी भी कुलक (धनी किसान) वननेमें

सफल हो जाते थे, इसलिये भी वह स्थानीय कजाकोंके साथ भाईचारा स्थापित नही कर सके। घुमन्तू पशुपाल कजाकोको कृषि-भूमिकी उतनी अवश्यकता नही थी जितनी कि गोचर-भूमिकी, इसलिए वह अपनी भूमिके साथ उतनी घनिष्ठताका भाव नही रख सकते थे, जितना कि किसान। जारशाही सरकारकी बराबर कोशिश रहती थी, कि खेतीके लिये उपयुक्त भूमि कजाकोसे छीनकर रूसियोको दे दी जाय। ९ नवम्बर १९०६ ई०को इसके बारेमें बल्कि भूमि-सबधी एक नया कानून बनाकर कजाकोको उनकी भूमिसे वचित करनेका भारी उपक्रम किया गया। कजाकोकी जमीनपर रूसी कुलकोके पनपनेकी यही कथा है।

कजाकोकी सास्कृतिक अवस्था बडी हीन थी। उनमे निरक्षरताका अखड राज्य था, और केवल उनके बाय (सामन्त) और मुल्ला पढ-लिख सकते थे। स्त्रियोकी अवस्था तो इस्लाम-की रुकावटोके कारण और बुरी थी। कजाक अपने पूर्वजोके स्वतत्रता-सघर्षको बहुत-कुछ भूल चुके थे। अगर उनमे कोई सघर्ष होता था, तो आपसी कबीलोका, जिसको जाग्रत रखनेके लिये जारशाही शासक पूरी कोशिश करते थे। एक प्रकारसे कजाक गहरी नीदमे सोये थे, या किस्मत-की बदनसीबी समझकर निष्क्रिय-से हो गये थे। इसी समय १९०६ ई०का अन्यायपूर्ण भूमि-सबधी कानून जारी हुआ, और उधर १९०५-६ ई०की रूसी-क्रातिकी प्रतिध्वनि कजाकस्तानके रूसी मूजिकोद्वारा कजाकोमें भी पहुची। यहा आकर बसे रूसी सरकारी अफसरो, व्यापारियो या कुलकोको उस क्रातिसे कोई सहानुभूति नही थी, लेकिन तो भी उसकी चर्चा तो होनी ही थी, इसलिये रूसकी सुनी-सुनाई खबरोंने कजाकोने फिर कुछ चेतना पैदा की। ऊपरसे जारशाहीकी न तृप्त होनेवाली लालचने थप्पड लगाकर उन्हे जगानेकी कोशिश की। १९१३ ई०मे सप्तनदके राज्यपाल फोलबौमने लिखा था—रूसी सरकारके प्रति कजाक गरीबोमे शत्रुताके भाव देखे जाते हैं।

प्रथम विश्वयुद्धमे कजाकोके ऊपर और भी सकट पैदा हुआ। उनसे बडी भारी सख्यामे घोडे, ऊट ले लिये गये, फौजोके खानेके लिये बकरी, भेंड और दूसरे जानवरोका मास लाखो टन भेजा जाने लगा। अनाज भी ढो-ढो कर सेनाके खानेके लिये भेजा गया। जीवनोपयोगी सभी चीजो-का अभाव तो होना ही था, ऊपरसे जारशाही अफसरो, देशी-विदेशी व्यापारियो और जमीदारोने चीजोके दाम को मनमानी और सट्टेबाजीसे बहुत चढा दिया, जिसके कारण कजाक जन-साधारणकी अवस्था दुस्सह हो गई। फिर २५ जून १९१६ ई०को जार निकोलाइ II का उकाज़ (राजादेश) निकला, जिसके अनुसार १९ से ४३ वर्षके पुरुषोको जबर्दस्ती भर्ती करके युद्ध-पक्तियोके पीछे काम करनेके लिये भेजा जाने लगा। कितने ही वर्षोंसे भीतर-ही-भीतर सुलगती हुई असतोषकी आग १९१६ ई०के विद्रोहके रूपमे भडक उठी, और सप्तनद तथा तुरगाईके जिलोमें सब जगह बगावत फैल गई। ३ अगस्तको पहलेपहल वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) के उयेज़्द (जिले)के किजिल बुरकोव्स्की मडलमे विद्रोह शुरू हुआ, और १० अगस्ततक वह सारे इलाकेमे फैल गया। १९१६ ई०के सितम्बरके उत्तरार्धमें तुरगाई ओब्लास्त (तहसील)मे विद्रोह शुरू हुआ। इस विद्रोहका नेता एक गरीब मा-बापका लडका अमनगेल्दी इमानोफ था, जिसने अपनी वीरता और सूझ-बूझसे विद्रोहियोका इतना अच्छा नेतृत्व किया, कि जारशाही सरकार वर्षो-तक उससे परेशान रही और केवल अपने खातमेके साथ ही उसे उससे छुट्टी मिली, यह पहिले बतला चुके हैं। १९१६ ई०के अक्तूबरमे हजारो विद्रोही जत्थे जारशाहीसे लोहा ले रहे थे, जिनमे कभी-कभी पन्द्रह हजारतक आदमी शामिल थे। उनको दबानेके लिये जेनरल लावरे-न्तेफके अधीन सैनिक अभियान भेजा गया लेकिन विद्रोह दबनेकी जगह, उस सालके नवम्बर महीनेतक सभी कजाकोमे फैल गया, तुरगाई ओब्लास्तके पचास हजार आदमी उनमे शामिल थे। यह विद्रोह गरीबोके विद्रोहका रूप ले चुका था, जिसके कारण कजाक बनियो और सामन्तोको, उससे डर लगा और वह जारशाहीको विद्रोह दबानेमे पूरी तौरसे मदद करने लगे। बाइतुरसुनोफ, दुलातोफ आदि ऊपरी वर्गके कजाक-नेताओने उस समय रूसी सरकारके प्रति अपनी क्रियात्मक राजभक्ति दिखलानेमे कोई कसर उठा नही रक्खी। नवम्बरके उत्तरार्धमें रूसी सेनाओंके प्रहारके कारण अमनगेल्दी इमानोफको तुरगाईसे भागकर बतपक-कराके इलाकेमे जाना पडा।

पड़ी, और खुली लड़ाईकी जगह उसने छापामारी स्वीकार की । १९१७ ई०की जनवरीमें इमानोफने फिर तुरगाईमे आकर विद्रोहको भडकाया । जेनरल लावरेन्त्येफने फर्वरी १९१७ ई०मे वतपक-करापर चढाई करके इमानोफकी शक्तिको खतम करनेका निश्चय किया, और २४ फर्वरीको उसने इमानोफके प्रतिरोव-केन्द्र वतपक-करापर अधिकार कर लिया। इमानोफ अपने वहुतसे सहकारियोंके साथ दश्त (स्तेपी)की ओर भाग गया। विद्रोहको दमन करनेमें जारशाहीने वडी क्रूरताका परिचय दिया। सप्तनदके निवासियोंमेंसे एक-चौथाई--तीन लाख स्त्री-पुरुष--भागकर चीनके इलाकेमें चले गये, कितने ही गाव-के-गाव उजड गये। १९१६ ई०के विद्रोहको यद्यपि जारशाहीने दवा दिया, किन्तु उससे कजाकोको जो शिक्षा मिली थी, उनके मनमें जारशाहीके विरुद्ध जो घृणा पैदा हुई थी, उसने बोल्शेविक-क्रातिको मदद पहुचाई। अपने सघर्षमें उन्होंने निम्न श्रेणियोंके रूसियोको उतना क्रूर नही पाया था । उनका नेता इमानोफ जल्दी ही समझ गया, कि अव सभी गरीवों और कमकरोंकी भलाई बोल्शेविक-क्रांतिमें ही है । वह अन्तमे बोल्शेविक पार्टीमें शामिल हो क्रातिके लिये लडा। आज अमनगेल्दी इमानोफ कजाकस्तानका सवसे वडा यशस्वी वीर है ।

फर्वरी-क्रातिके हो जानेके बाद १९१७ ई०की मईके अन्तमें भी तुरगाईमे अभी पूरी तरहसे शाति स्थापित नहीं हुई थी । अस्थायी सरकारने तुरगाई ओब्लास्तके लिये अलीखान वुकेइखानोफकी सहायतासे वहुत-से कजाक-विद्रोहियोंको गिरफ्तार किया, जिनमें इमानोफ भी था । अक्तूवर-क्राति सिरपर आई, जिसने सप्तनदमें भी रूसियोंको क्रातिकारी और क्राति-विरोधी दो दलोंमें विभक्त कर दिया। उधर बोल्शेविक सरकारने जातियोंके आत्म-निर्णयका अधिकार देकर कजाकोंके हृदयमें अपने प्रति विश्वास और भक्ति भर दी, जिसके लिये १९१६ ई०के विद्रोही अव क्रातिके सिपाही वन गये । इसी समय दूतोफके नेतृत्वमें ऊपरी वर्गके कजाकोने ओरेनवुर्गमे अपनी सरकार कायम करके लोगोंकी आखोंमें धूल झोककर अपनी ओर करना चाहा, लेकिन उसमें उन्हें सफलता नही हुई। नवम्बर १९१७ ई०से मार्च १९१८ ई०तक क्राति और प्रतिक्रातिका सघर्ष होकर अन्तमे सारा कजाकस्तान जारशाहीके अवशेषोंसे मुक्त हो गया ।

कजाकस्तान उस समय जारशाही नीतिके कारण एसियाई और यूरोपीय दो प्रकारकी जमातोंमें वटा हुआ था, इसलिये क्रातिके लिये सघर्ष भी दोनो जमातोंमें अपने-अपने तौरसे हुआ । सप्तनदके क्रातिके रूसी नेताओंमें से एक ग० फेदेरोफ भी था। उसने वहाके वारेमें लिखते हुये बतलाया है, कि फर्वरी-क्रातिके होनेतक वेर्नी (आधुनिक अल्मा-अता) में सिर्फ एक तरुण सगठन था, जिसके सदस्य रूसी सरकारी अफसरों और व्यापारियों-पूजीपतियोंके लडके-लडकिया होते थे, और जिनका नेतृत्व जारभक्त अध्यापकोंके हाथमे था। फर्वरीके वाद अल्मा-अताके स्कूलके विद्यार्थियोंने "नौजवान विद्यार्थी सघ"के नामसे एक सगठन कायम किया । लेकिन, फर्वरी-क्रातिके पक्षपाती जारको हटा कर भी जारशाहीकी हरएक वातको कायम रखना चाहते थे, इसलिये इस विद्यार्थी सघका काम था वनभोज, नाच-गान और पान-गोष्ठियो द्वारा मनोरजन करना--आखिर, उसके सदस्योंमेंसे ९९ फीसदी अफसरों, सेठों और कुलकोंकी सताने ही तो थीं।

३ क्राति-सघर्ष

अक्तूवर-क्रातिके होते समय यहापर क्राति-विरोधियोंका बोलवाला था। वह हर तरहसे कोशिश करते, कि यहा सोवियतका प्रभाव स्थापित न होने पावे । लेकिन अव समाजवादकी वातें अल्मा-अतामें भी पहुचने लगी थीं। मार्च-अप्रैल (१९१८ ई०) तक तरुणोंने अपने कितने ही अध्ययनचक्र तथा दूसरे सगठन कायम कर लिये। अव गृहयुद्ध साफ दिखलाई पड रहा था, इसलिये कमकरों और तरुणोंके जबर्दस्त सगठनकी जरूरत पडी। फेदेरोफने लिखा है--एक दिन मैं अपने एक साथीसे मिला। उसने इर्कुत्स्कके छपे एक समाचारपत्रको दिया। मैंने उसे पढकर देखा, कि साइबेरियाके तरुण क्रातिके लिये कितना काम कर रहे हैं। इसके वाद हमने इर्कुत्स्कके नमूनेपर तरुणोंका सगठन करना शुरू किया । इस प्रकार तरुण-विद्यार्थी समाजवादी-

सघ अस्तित्वमे आया। फेदेरोफ और उसके साथियोने जब अपने सगठनको मजबूत करते प्रचार करना शुरू किया, तो उनके एक सहकारी अध्यापकने कहा—"हम बोल्शेविकोंके साथ काम नही करना चाहते। लेकिन अब प्रवाहको रोका नही जा सकता था।" लाल सेनाकी सफलताओंकी खबरे भी क्राति-पक्षियोमे उत्साह और क्राति-विरोधियोमें निराशा पैदा कर रही थी। फेदेरोफने एक दिन अपने क्लासमे कहा—क्राति-विरोधी पथ सेठोंके हितका पथ है, हमको क्रातिका पथ लेना चाहिये। इसपर अल्माअताके एक रूसी सेठके पुत्रने उसे मार डालनेकी धमकी दी। सघर्ष और ज्यादा बढता गया। फेदेरोफ-जैसोको गुप्त गुटोका सगठन करना पडा। जनवरी १९१९ ई०तक अभी सप्तनदमे क्राति-विरोधियोका ही पल्ला भारी था, लेकिन जब ताशकन्दपर कमकरोकी विजय हो गई, तो अल्माअतामे भी उसका प्रभाव बढा, और वहा बोल्शेविक विद्यार्थी सघ स्थापित हुआ, जिसका निर्वाचन करनेके लिये २५ जनवरी १९१९ ई०को सौ सदस्य एकत्रित हुये।

इस प्रकार हम देखते है, कि अक्तूबर १९१७ ई०तक अल्माअतामें कोई राजनीतिक पार्टी नही थी। मार्क्सवादी साहित्यका वहा मिलना भी मुश्किल था, और कुछ तरुण गुपचुप केवल क्रातिके बारेमें विचार-विनिमय भर कर लिया करते थे। कजाको और रूसियोको इस तरह अलग-अलग रक्खा गया था कि वह एक-दूसरेके साथ अभी विचारों द्वारा भी सहयोग नही कर पाते थे। लेकिन, ताशकन्दमे लालझडा गड जानेपर सप्तनदमे भी क्रातिके लिये रास्ता साफ था। जून १९१९ ई०मे पार्टीके सबधमें लोगोको शिक्षा देनेके स्तेलमाशेस्की लिये आया। इससे पहल वह लाल सेनामें राजनीतिक प्रचारका काम कर चुका था। फेदेरोफ १९१९ ई०मे साइबेरियाके क्राति-विरोधियोके साथ लडनेके लिये युद्धक्षेत्रमे चला गया था, लेकिन जब वह नवम्बर १९१९ ई०मे वहासे लौटा, तो उस समयतक सप्तनदके क्रातिकारियोने बहुत बडा सगठन खडा कर दिया था, और किसानो और मजदूरोमें से तीन सौसे अधिक तरुण क्रातिके प्रचारमें पूरा भाग ले रहे थे। इस सगठनका नाम "लाल समाजवादी तरुण-सघ" था। इसके प्रचारक अब रूसी गावो और कजाक औलोमे भी पहुच चुके थे। इस समयतक कराकोल, पिशपेक (आधुनिक फ्रुंजे) और जारकेन्द आदि नगरोमें भी सगठन हो चुका था। "यूनी कम्युनिस्त" (युवक कम्युनिस्ट) पत्र भी निकलने लगा था, जिससे और जगहोमे क्रातिके लिये क्या हो रहा है, इसकी खबरे मिलने लगी, और अल्माअता तथा सप्तनदके तरुण समझने लगे थे, हम अकेले नही है, क्राति सब जगह सफलतापूर्वक आगे बढ रही है। इसके कारण लोगो में उत्साह बढना जरूरी था। दिसम्बर १९१९ ई०मे एक सम्मेलन हुआ, जिसमे रूसी और कजाक दोनो जातियोके तरुण रायन (जिले) के भिन्न-भिन्न भागोसे आकर शामिल हुये। इसीमे ताशकन्दमें होनेवाली तुर्किस्तान-प्रदेश-तरुण-कम्युनिस्ट काग्रेसके लिये प्रतिनिधि चुने गये। प्रदेश कमेटीके अब्दुर्रहमानोफ, जीय-कुलोफ जैसे कजाक तरुण भी मेम्बर चुने गये। कजाको और रूसियोके बीचमे खडी की गई दीवार ढह गई थी, इसलिये दोनो एक होकर काम करने लगे। यमम्मोफ, खुदायेफ, वेन्युकोफ, यार मुहम्मदोफ, इसायेफ-जैसे तरुण कजाक आगे बढे। उस समय लेनिनग्राद और मास्कोमे गृहयुद्धके कारण खाद्यका अकाल पडा हुआ था, जिसमें सहायता देनेके लिये तरुणोने अन्न जमा करना शुरू किया। पिशपेककी तरुण कम्युनिस्ट कमेटीने अपने कार्यालयकी छतको अन्नसे भर दिया था।

अप्रैल १९२० ई०के अन्तमे प्रथम सप्तनद तरुण कम्युनिस्ट काग्रेस हुई, जिसमें अल्माअता, पिशपेक, फ्रुंजे, जारकेन्द और कराकुलके प्रतिनिधि शामिल हुये। इन प्रतिनिधियोमे दस कजाक थे। एक सालके भीतर ही दूसरी काग्रेस हुई, जिसमे सभी तहसीलो तथा बहुतसे औलोंके भी एक सौ पचास तरुण शामिल हुये।

अल्माअताके अतिरिक्त कजाक भूमिमे किजिलओर्दा (भूतपूर्व पेरोव्स्की), कजालिन, तुर्किस्तान शहर, औलियाअता आदिमे क्रातिके पक्षपातियोने सबसे पहले अपने सगठन मजबूत किये। १९१८ ई०मे ताशकन्दमे जो काग्रेस हुई थी, उसमे किजिलओर्दाके तीन प्रतिनिधि शामिल हुये थे। १९१८ ई०में यहाके अधिकाश पार्टी-मेम्बर बन्दूकें लेकर युद्धक्षेत्रमे क्राति-विरोधियोंसे लडने चले

गये थे। १९१८ ई०के अन्ततक किजिलओर्दाकी पार्टीमे चार सौ मेम्बर थे, जिनमें दो सौ रूसी और दो सौ कजाक थे। राजनीतिक जागृतिके साथ-साथ कजाकोमे पढनेके लिये ज्यादा उत्साह होना स्वाभाविक था, जिसके लिये कजाक भाषामें पुस्तकें और पत्र छापे जाने लगे।

कजालिनमें बोल्शेविकोका पहला सगठन जून १९१८ ई०में हुआ। यहाके लोगोको भी क्राति-विरोधियोके साथ लडकर अपनी निष्ठाका परिचय देना पडा।

तुर्किस्तान शहरमें नगरकी कम्युनिस्ट पार्टीका सगठन पहलेपहल अप्रैल १९१८ ई०में हुआ, और औलियाअतामे वह उसी सालके अगस्तमें। औलियाअताकी पार्टीमें सालके अन्ततक एक हजार कजाक मेम्बर थे। वामपक्षी क्रातिकारी समाजवादी पहले पार्टीके साथ सहयोग देते रहे, लेकिन पीछे उन्होने विरोध शुरू कर दिया, और इस प्रकार वह क्रातिसे भी दूर हो गये।

अल्माअताके बारेमे हम पहले कह चुके हैं। तरुणोके सगठनके बाद जनवरी १९१८ ई०में वहा पार्टीका सगठन हुआ। अगस्तमे कराकुल, जुलाईमे जारकेन्दमें भी सगठन हुये।

४ सोवियत-शासनकी स्थापना

१९१८ ई०मे मध्य-एसियामें सोवियतका शासन स्थापित हो चुका था, और उसी सालके अप्रैल-मे ताशकन्दमे प्रदेश-सोवियतोका सम्मेलन हुआ। इसीमें तुर्किस्तान स्वायत्त सोवियत गणराज्य-का निर्माण हुआ, जिसमे अल्माअता, औलियाअता (जम्बुल), दक्षिण-कजाकस्तान, और किजिल-ओर्दाके जिलोको मिलाकर कजाक-सोवियत-समाजवादी-गणराज्यकी स्थापना हुई, और कजाक भाषाको गणराज्यकी मुख्य भाषाके तौरपर स्वीकार किया गया। वसन्त १९१८ ई०से १९१९ ई०की समाप्तितक कजाकस्तानमें भीषण गृहयुद्ध होता रहा। क्राति-विरोधी रूसी और कजाक दोनो ही तरुण सोवियत सरकारको उखाड फेंकनेके लिये हर तरहकी कोशिश कर रहे थे, लेकिन उनका सघर्ष जितना ही सख्त होता गया, उतना ही रूसी सर्वहारोका कजाक सर्वहारोंसे भ्रातृभाव दृढ होता गया, और रूसी क्रातिकारियोने अपने आचरणसे दिखला दिया, कि सर्वहाराके राज्यमे काले-गोरेका कोई भेद नही है। गृहयुद्धके समय १९१८ ई०की जुलाईके आरम्भमें कई भागोको क्राति-विरोधियोने छीन लिया था, तो भी अल्माअता, जम्बुल, दक्षिण-कजाकस्तान, किजिलओर्दा, अक्त्युबिन्स्कके जिले सोवियत शासनमे रहे। १९१९ ई०में क्राति-विरोधी जेनरल कोलचकसे आखिरी लडाई हुई, जिसमे कजाकस्तानके क्रातिकारियोने पूरी तौरसे भाग लिया। कोलचकके हारनेके बाद ४ अप्रैल १९१९ ई०को कजाकस्तानकी सोवियतोकी काग्रेस हुई, जिसमें किर्गिजोके बारेमे भी विचार करके किर्गिज क्रातिकारी कमेटी सगठित की गई। अभीतक किर्गिज और कजाक दोनो एक ही गणराज्यमे थे, बल्कि यह कहना चाहिये, कि मध्य-एसिया-की सभी जातिया अभी एक तुर्किस्तान स्वायत्त गणराज्यमे मानी जाती थी। लेकिन आगे जातियोके आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार किर्गिजोको भी अपने स्वतत्र गणराज्यके कायम करनेका अव-सर मिला। बोल्शेविक-क्रातिने सोवियत सघके क्षेत्रफलमें दूसरे नबरके सबसे बडे गणराज्य कजाकस्तानको स्थापित किया। अनेक पचवर्षीय योजनाओने कजाकोके आर्थिक और सास्कृतिक तलको बहुत ऊचा कर दिया। इर्तिश नदीके जलको ध्रुवीय समुद्रसे हटाकर दक्षिणकी ओर मोडनेकी जो विशाल योजना बनाई जा रही है, उसके कारण तो मनुष्य अपनी महान शक्तिका उपयोग करके इस भूमिको एक-दूसरा ही रूप देने जा रहा है।

स्रोत-ग्रथ

१ History of Civil War in U S S R (2 vols , G F Alexandrov and others, Moscow 1946)
२ History of U S S R (Ed A M Pankratova, Moscow 1947)
३ [illegible] (ताशकन्द, १९२९)
४ [illegible] (लेनिनग्राद १९४०, पृष्ठ ७–१५)

अध्याय ४

किर्गिजिस्तानमें क्रांति

१. किर्गिज

किर्गिजिस्तान मध्य-एसियाके सबसे ऊंचे पहाडो त्यानशान्‌का देश है। यहीपर सात हजार मीतरसे भी अधिक ऊंचे लेनिन्स्क और खानतिगरीके सनातन हिमाच्छादित पर्वतशिखर है। इसकी कितनी ही हिमानिया ८० किलोमीतर (६० मीलसे ऊपर) लम्बी है, और मध्य-एसियाकी सबसे बडी नदिया सिर-दरिया, आमू-दरिया (वक्षु), चू, तलस और जरफशा यहीसे निकलती है। हमारे यहाके हिमालयके सबसे अधिक सुन्दर दृश्य यहा देखे जा सकते है। प्राकृतिक सौदर्यके अतिरिक्त किर्गिजिस्तान (किर्गिजिया)मे कोयला, पेट्रोल, रागा, सुरमा, सोना, चादी आदि धातुओकी बडी-बडी खानें है। चू-उपत्यका, फरगाना, तलस-उपत्यका और इस्सिक्कुलकी द्रोणी-जैसी खेती और बागबानीके लिये बहुत ही उर्वर भूमि यहापर मौजूद है। प्रकृतिने इतना समृद्ध इस भूमिको बनाया था, लेकिन यहाके निवासी किर्गिज बोल्शेविक-क्रातिसे पहले मध्य-एसियाकी सबसे पिछडी हुई जातियोमेंसे थे, और घुमन्तू तथा अर्ध-घुमन्तू रहते अपने भेड-बकरियो तथा घोडो-ऊटोको लिये जगह-जगह चराते फिरना ही उनकी जीविकाका साधन रखते थे। जारशाही शासन यद्यपि १९वी शताब्दीके उत्तरार्धके शुरू हीमे स्थापित हो गया था, लेकिन उसने यहाके लोगोको चूसना छोड और कोई काम नही किया।

किर्गिज साइबेरियासे मध्य-एसियामें सबसे पीछे आनेवाली जातियोमेसे है। घुमन्तू होनेकी वजहसे उनके लिये पूर्वमे इर्तिश और पश्चिममे वोल्गाको भी अपनी विचरणभूमि बनाना कोई मुश्किल नही था। लेकिन मूलत यह अल्ताईके उत्तर-पूर्वके रहनेवाले थे, जहापर उनके भाई-बन्द खकाश अब भी रहते है। अलाताउ १७१६-१९ ई०में ओब और इर्तिशके बीचकी भूमिके रूसके हाथमे चले जानेके समय इनको अपनी मूलभूमिसे हटना पडा, नही तो पन्द्रह सौ मीलतक साइबेरियाकी दक्षिणी सीमा किर्गिजोकी भूमिसे मिलती थी। घुमन्तू किर्गिज लूट-मार किया करते थे, जिसके कारण रूसी बस्तियोको खतरा रहता था, इसलिये रूसियोने इन्हे तितर-बितर करना आवश्यक समझा। किर्गिजोकी परम्पराके अनुसार इनके किसी पौराणिक खान अलशने इन्हे तीन ओर्दुओमे बाटा था, जिनमें महा-ओर्दू बल्काश महामगोवरके आसपास सप्तनद और चीनी तुर्किस्तानमें घूमा करता था, मध्यओर्दू अरालके उत्तर-पूर्वी तटपर और लघु-ओर्दू तोबोल नदी और अरालके बीचमे पशुचारण करता था। रानी अन्ना (१७३०-४० ई०)के शासनकालमे मध्य-, लघु-ओर्दूका महा-ओर्दूके साथ-झगडा हुआ। बाकी दोनो ओर्दुओने महा-ओर्दूसे अपनी रक्षाके लिये १७३२ ई०में रूससे अधीनताके लिये प्रार्थना की। इससे बढकर जारशाहीके लिये और अवसर क्या मिलता? ओरेनबुर्गका व्यापारिक नगर इस वक्ततक स्थापित हो चुका था। मध्य और लघु-ओर्दके हाथमे आ जानेपर साम्राज्यके बढानेमें बडी सहायता मिली, और इसके बाद मध्य-एसिया और ईरानकी सीमातक पहुचना रूसके लिये आसान हो गया। १८२२ ई०के राजादेशके अनुसार किर्गिज लघु-ओर्दूको ओरेनबुर्गकी सरकारमे डाल दिया गया, और मध्य-ओर्दू या पश्चिमी किर्गिजोकी भूमिको पश्चिमी साइबेरियाके प्रदेशमे। किर्गिजोको रूसका बल मिलनेसे, अब वह बुखारा, खीवा या खोकन्दकी पर्वाह नही करते थे, और उनके कारवाको लूटा करते थे। यही नही, वह रूसी कारवाको भी लूटनेसे बाज नही आते थे। इसके लिये इनको कई

सैनिक गढ़िया बनानी पड़ीं। किर्गिज रूसियोंको लूटते तो दक्षिणवाले खान उनकी सहायता करते और खानोंमे झगडा होनेपर वह रूसकी शरण लेते। वह रूसी नर-नारियोंको भी गुलाम बना कर मध्य-एसियाके बाजारोमे बेच दिया करते थे।

किर्गिज जातिका निर्माण—किर्गिजोका ऐतिहासिक विकास—निम्न प्रकार हुआ

काल	त्वानशान	पामीर
ई०पू० २५००	शक	आर्य
" १५००	शक	सोग्दी
" ७००	शक	सोग्दी
" ५५०	शक	सोग्दी
" २०६	शक	सोग्दी
" १३०	शक-हूण	सोग्दी
ईसवी १००	हूण-शक	सोग्दी
" ५५७ तुर्क	तुर्क	सोग्दी
" ६७३ अरब	तुर्क	ताजिक
" ८९२	तुर्क	"
" १२२०	तुर्क	"
" १५००	किर्गिज	"
" १७४७	किर्गिज	किर्गिज-ताजिक
" १८६५	किर्गिज-रूसी	किर्गिज-ताजिक
" १९१७	किर्गिज	किर्गिज-ईरा०
" १९४७	किर्गिज	

२ १९१६ ई०का विद्रोह

वर्तमान कजाकस्तानकी भूमिमे कई जगह बिखरे हुये किर्गिज कजाकोमें मिल गये, बाकी भी बोल्शेविक-क्रांतिके बाद कितने ही दिनोंतक कजाकोमें सम्मिलित थे। जब पता लगा, कि किर्गिजोकी संस्कृतिमे कुछ अपनी विशेषताए है, इस पर जातियोके आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार उनका गणराज्य बना। १९१६ ई०मे कजाकोमे भी जबर्दस्त विद्रोह हुआ था, लेकिन किर्गिजोका विद्रोह उनमे भी बढा हुआ था, जिसके कारण पहले जहा जारशाहीको बहुत क्षति उठानी पडी, वहा बादमें किर्गिजोको भी जारशाहीके भयंकर अत्याचारोका सामना करना पडा।

विद्रोहके कारण—एसियामे अपने राज्यका विस्तार अग्रेजो और रूसियो दोनोंने किया, लेकिन दोनोके ढगमें अन्तर था। अग्रेज हिन्दुस्तानसे बहुत दूरके वासी थे, वह अपनी जन्मभूमिसे समुद्रके रास्ते ही संबध स्थापित रख सकते थे। पर, एसियासे रूसकी भूमि मिली हुई है। रूसी झडेके आगे बढनेके साथ-साथ जहा रूसी सैनिक-असैनिक अफसर, व्यापारी और जमीदार आगे बढकर अच्छे-अच्छे पदो और भूमिपर अधिकार करते थे, वहा रूसी किसान और मजदूर भी अपने-अपने गाव बसानेमे लग जाते थे। यह रूसी गाव आत्मरक्षाके लिये रूसकी सेनाका एक अग बने हुये थे। रूसी अफसर अपने किसानो-मजदूरोका सब तरहसे विशेष ख्याल रखते थे, और स्थानीय लोगोकी उपयुक्त जमीनको किसी-न-किसी बहाने छीनकर रूसियोको दे देते थे। १८७४ ई०मे पहिले पहिल सप्तनद और पामकी भूमि (पिशपेक, औलियाअता, चिमकेन्द आदि जिलो)मे रूसियोके गाव बसने शुरू हुये, जो तेजीके साथ आगे बढते स्थानीय लोगोकी पैतृक-भूमियोपर हाथ साफ करने रहे। वर्तमान शताब्दीमे १९१५ ई०तक १८ लाख एकड (७१२०८९ हेक्तर) भूमि केवल पिशपेकके जिलेमें किर्गिजोके हाथसे छिन गई। उसी साल किर्गिजोवाले फरगानाके इलाकेमें ८०००० हेक्तर जमीन छीनकर रूसी किसानोको दे दी गई। पर इतनेमे भी संतोष नही हुआ, और

९ जुलाई (२५ जून) १९१६ ई०को (प्रथम विश्वयुद्धके समय) जारने जलेपर नमक छिडकते हुए एक राजादेश निकाला, जिसके अनुसार किर्गिजो और दूसरी एसियाई जातियोको जवर्दस्ती सैनिक सेनाके पीछे काम करनेके लिये भर्ती किया जाने लगा। किर्गिजोने कौन-सा सुख जारशाही शासनमें पाया था, कि वह सेनाके पीछे कुलीका काम करनेके लिये अपनी जन्मभूमि छोड दूर देशमे जाते? उन्हे यह भी क्या विश्वास था, कि वहा जाकर कुलीका काम करना पडेगा या सिपाही बनकर मरना पडेगा। इस राजादेशके निकलनेपर मध्य-एसियाकी सभी जातियोमे तहलका मच गया। किर्गिज सबसे ज्यादा शोषित, थे क्योकि ये सबसे पिछडे हुये घुमन्तू पशुपाल थे, लेकिन जारने इनके मनापो (सरदारो)को अपने हाथमें कर रक्खा था। धनी मनाप जारशाही-का विरोध करके पहले देख चुके थे, कि इससे वह रूसके जूयेको हटा नही सकते। इस समय सारा तुर्किस्तान एक रूसी प्रदेश था, जिसमे त्यानशान्के पहाडो—सप्तनदसे ताशकन्द लेते अराल समुद्र तकके इलाके भी सम्मिलित थे। तुर्किस्तानका महाराज्यपाल करोपत्किन था और सेना अध्यक्ष फोलबौम बेर्नी (अल्माअता)का सैनिक सेनापति था।

राजादेश निकलते ही लोगोने उसके प्रतिरोधके बारेमें सोचना शुरू किया। ११ (२४) जुलाईको जारकेन्तके किर्गिजो और कजाकोने इसके प्रतिरोधके लिये अपनी सभाये की। किर्गिजो-कजाकोके भीतर दुगान (चीनी मुसलमान) भी रहते थे, जो अधिकतर धनी बनिये और महाजन थे। किर्गिजो-कजाकोमे अशातिके लक्षणको देखकर सबसे पहले २६ (१३) जुलाईको उन्होने चीनी इलाकेकी ओर भागना शुरू किया। ५ अगस्त (३० जुलाई)को पिशपेक जिलेके किर्गिजो-ने विरोध-प्रदर्शन किया।

६ (१९) अगस्तको पिशपेक जिलेके अतेकिन इलाकेमें किर्गिजोने पहले पहल सशस्त्र विद्रोह आरम्भ किया। उसी दिन बतबयेफ इलाकेके किर्गिजोने भी विद्रोह कर दिया।

७ (२०) अगस्तको तोकमकके किर्गिजोने हथियार उठाया, उसी दिन सगीबागिसेफ इलाके-वालोने भी विद्रोहका झडा फहरा दिया।

९ (२२) अगस्तको कराकेचिन, जम्वल्, उरमान जोजिन, पोचकर, आबेलदिनके इलाकोमे विद्रोह फैल गया।

१० (२३) अगस्तको पिशपेक जिलेके बेलोवद्स्क इलाकेके किर्गिज विद्रोही हुये। उसी दिन जमानसरतोफ, तलेउबेर्दिन, बाकिन, तलदीबुलाकके इलाकोमें बगावत हो गई, और औलिया-अताके करालतिन इलाकेके किर्गिज भी विद्रोहमे शामिल हो गये।

११ (२४) अगस्तको प्रझेवाल्स्क जिलेके मारिन्स्क गावके दुगान (चीनी, मुसलमान) भी विद्रोहमे शामिल हुये।

१२ (२५) अगस्तको प्रझेवाल्स्कके जेलखानेमे वदियोपर रूसियोने गोली चलाई, जिसमें उनसठ किर्गिज मारे गये और बहुतसे घायल हुये।

१३ (२६) अगस्तको तोकमकमे किर्गिजोपर रूसी सेनाने प्रहार किया, उसी दिन बेलोवद्स्कमे भी विद्रोहियोको सैनिकोने दबानेका प्रयत्न किया, और १३८ किर्गिज मारे गये।

१४ (२७) अगस्तको किर्गिजोने तोकमकको घेर लिया।

२२ अगस्त (४ सितम्बर) को रूसियोने तोकमकमे किर्गिजोपर प्रहार करके उन्हे तितर-बितर कर दिया।

१६ (२९) अक्तूबरतक रूसी विद्रोहपर काबू पा सके।

इस विद्रोहमे किर्गिजोके मनाप (धनी) अधिकतर जारशाहीके साथ रहे और सबसे ज्यादा आगे किर्गिज जनसाधारण थे। कितना भीषण जनसहार हुआ, यह इसीसे मालूम होगा, कि विद्रोहसे पहले जहा ६२३४० किर्गिज रहते थे, उसी जगह जनवरी १९१७ ई०में उनकी सख्या २०३६५ रह गई, अर्थात् ४१९७५ आदमी मारे गये, कितने ही जगहोंपर ६६% किर्गिज मारे गये। इस अत्याचारके मारे यदि बहुत भारी सख्यामे किर्गिज भागकर चीनी इलाकेमें चले गये, तो इसमे आश्चर्य क्या? कुरोपत्किनने इस मौकेसे फायदा उठाते हुये चाहा था, कि किर्गिजोकी छोडी भूमिमें

रूसियोंको बसा दिया जाय। लेकिन, किर्गिजोंके विद्रोहको दबाते देर नही हुई, कि जारशाही ही खतम हो गई। यद्यपि उसका स्थान लेनेवाली पूजीपतियोकी करेन्स्की-सरकारने पुरानी नीतिको जारी रखना चाहा, लेकिन उसे भी सात महीनेके भीतर ही खतम हो जाना पडा।

जैसा कि अभी बतलाया, उस समय किर्गिज कजाकोसे अलग नही समझे जाते थे, और सप्तनद तथा सिर-उपत्यकाके कजाकोकी तरह किर्गिज भी तुर्किस्तान-प्रदेशके माने जाते थे। इसलिये विद्रोहके बाद जो घटनाये घटी और स्थितियोमें जिस तरह परिवर्तन हुआ, वह वही था, जो कजाकस्तान-उज्वेकिस्तानमें हुआ। जब बोल्शेविक-क्रातिने किर्गिज भूमिमें कदम रक्खा, उस समय वहाके किर्गिज धनी पहले हीसे धनी रूसियोंके समर्थक हो चुके थे।

किर्गिज शिक्षा और सस्कृतिमे बहुत पिछडे हुये थे, जिसके कारण राजनीतिक तौरसे भी उनका पिछडा होना स्वाभाविक था। इनकी भूमिमे ओश, उज्गेंद, पिशपेक, प्रभेवाल्स्क जैसे कुछ नगर थे, लेकिन वहापर भी किर्गिजोकी अपेक्षा दूसरोकी सख्या या प्रभाव अधिक था। ताशकन्दमें बोल्शेविकोके आ जानेके बाद किर्गिज भूमिके कस्बोमे भी क्राति फैलने लगी। यहाके रूसियोमें अधिकतर मेन्शेविक और एस्.एर्. (समाजवादी क्रातिकारी) ही जारशाहीके विरोधी थे, और वह पुराने आर्थिक ढाचेमें नाममात्रका परिवर्तन करना चाहते थे, तथा एसियाइयोको समानताका अधिकार देनेके पक्षपाती नही थे। ओशमें दिसम्बर १९१७ ई०में दो सौसे अधिक एस् एर् के सदस्य थे, जब कि बोल्शेविकोको अगुलियोपर गिना जा सकता था। पिशपेक (आधुनिक किर्गिज-राजधानी फ्रुजे) में मार्च १९१८ ई०में अब भी एस् एर्.का प्रभाव था। लेकिन जब बोल्शेविकोके उद्देश्यका पता लगा, तो गरीब किर्गिजोने बडी तेजीके साथ आगे बढ़कर उनका साथ देना शुरू किया। वह देखते थे, कि बोल्शेविक दिलसे और व्यवहारसे भी समानताके पक्षपाती है, सचमुच वह गरीबोके राज्यको कायम करना चाहते है। क्राति सफल हुई। आगे १९२६ ई०में किर्गिजोकी भूमिका अलग स्वायत्त गणराज्य कायम हुआ, जिसे १९३६ ई०में स्वतत्र गणराज्यके तौरपर सोवियत सघका अग बननेका मौका मिला।

किर्गिजिस्तानका क्षेत्रफल ७८००० वर्गमील तथा जनसख्या इस वक्त पन्द्रह लाखसे ऊपर है। आज वह मध्य-एसियाकी सबसे पिछडी जाति नही है, बल्कि रूसियोकी तरह आगे बढ़ी हुई जाति है।

स्रोत-ग्रथ

१ रेवोल्युत्सिया व्स्रेद्नेइ आज़िइ (ताशकन्द १९२९)
२ किर्गिजिया (व वित्कोविच, १९३८)
३ वोस्तानिये १९१६ गदा व् किर्गिजिस्ताने (ल व लेस्नोइ, मास्को १९३७)
४ किर्गिजिया (त्रुदी पेर्वोइ कान्फ्रेन्त्सिइ, लेनिनग्राद १९३४)
५. तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (जिल्द १, पृष्ठ ३३८-५१)
६. तेमिर (उपन्यास, तो तुगेल्बाइ सिदिकबेकोफ् अनु० व. रोझ्देस्त्वेन्स्की, लेनिनग्राद, १९४७)
७ History of civil war in U S S. R. (2 vol. G. F. Alexandrov and others, Moscow 1946)

अध्याय ५

ताजिकिस्तानमें क्रांति

१. सोग्दियोके वंशज

हम देख चुके है, कि किसी समय सिर-दरियासे वक्षु-दरियातक, पामीरसे कास्पियन तटतक सोग्द और ख्वारेज्मकी ईरानी जातिया वसती थी, जिनके समयमें यहाका सामाजिक और सास्कृतिक विकास बहुत हुआ। ईसाकी पाचवी सदीतक यद्यपि शक और हेफ्ताल-जैसी जातिया वाहरसे आकर इस भूमिमें वसती गई, किन्तु वह हिन्दी-यूरोपीय जातिकी होनेकी वजहसे इनके भीतर आसानीसे घुल-मिल गई और पुरानी सास्कृतिक परम्पराके आगे चलते रहनेमें वाधक नही हुई । छठी शताब्दीमें तुर्क मगोलायित भाषा और मुखमुद्रा लिये यहा आये, जिन्होने भी यद्यपि मुखमुद्रामें कुछ परिवर्तन किया, लेकिन सास्कृतिक तौरसे वहुत भेद नही पैदा किया। ७वी सदीका अन्त होते-होते अरव इस भूमिमें छा गये, और कुछ ही समयमे यहाके सभी लोग मुसलमान हो गये। लेकिन पुराने सोग्दियोने अपने सघर्षको जारी रक्खा, इसका परिणाम यह हुआ, कि अरब-शासको और उनके अनुचर खुरासानी मुसलमानो ने सोग्दी वीरो और उनकी भाषाको दुर्गम पहाडोमें शरण लेनेके लिये मजबूर किया। १९वी सदीसे वहुत पहले ही पुराने अन्तर्वेदकी भाषा तुर्की हो गई, केवल शहरो और कुछ गावोके रहनेवाले सर्त या ताजिक ईरानी भापा वोलते थे, लेकिन यह ईरानी भाषा सोग्दी नही, वल्कि खुरासानी मुसलमानोके साथ आई उनकी फारसी थी। पहाडोमें भाग गये सोग्दियोंके पीछे एकके वाद एक दूसरे भी फारसीभाषी शरणार्थी आते रहे, जिनके कारण धीरे-धीरे सोग्दी भाषाका स्थान वहा भी फारसीकी स्थानीय वोली ताजिकी लेती गई । आज तो पुरानी सोग्दी भाषाकी बोली गलचा या यग्नावी केवल जरफ्शाकी एक शाखा यग्नाव नदीके किनारेके कुछ थोडेसे गावोमें रह गई है । वहापर भी ताजिकी भाषा कितनी घुस गई है, यह १९३४ई०के वहाके गावोके आकडोंसे मालूम होगा —

ग्राम	यग्नावी	ताजिक
नवावाद	१५१८	६३४
यग्नाव	६४०	१७७०
दोनो गावोमे	२१५८	२४०४

इस प्रकार पुराने सोग्दियोकी भाषा और उनके प्राचीन समाजके कुछ अवशेष वर्तमान ताजिकिस्तान गणराज्यमें जरफ्शा नदीकी शाखा यग्नाव और वरजावके किनारेके कुछ गावोमें अब मौजूद हैं। सोवियत शासनके स्थापित होनेके वाद इन प्राचीन सास्कृतिक अवशेषोके जाच-पडतालकी काफी कोशिश की गई। रूसी वैज्ञानिकोने वहापर प्राचीन सघवादी पारिवारिक जीवनके चिह्न पाये । कितने ही गावोमें कई परिवारोंके रहने लायक एक-एक घर उन्हे मिले, जिनकी वडी-वडी शालायें केवल यग्नावियोमे ही मिलती । कोकतेपा, जूमान, गराव, आवेसफेद-जैसे कितने ही गावोको उन्होने देखा । देहवुलन्द ऊपरी यग्नावमे सामूहिक परिवारोका आलाखाना और मेहमानखाना इस वातका प्रमाण था ।

यग्नावी भाषा—यग्नावी भाषाको कोई-कोई ईरानी और भारतीय आर्यभाषा-वशोंसे अलग वतलाते हैं, लेकिन यह वात सही नही मालूम होती। वस्तुत सोग्दीकी पुत्री यग्नावी ताजिकी और फारसीसे कितनी ही वातोमें अन्तर रखते भी ईरानी-भाषावशकी ही है । सोवियतके भाषा-शास्त्रियोंने यग्नावी भाषाके वहुतसे नमूने कहानियो आदिके रूपमे जमा किये है । वाइस वर्षीय इब्राहिम मफर

द्वारा कही गई एक जनकथाका कुछ अश हम यहापर देते है। गावके 'मेहमानखाने' (सामूहिक घर) मे जमा हो ऐसी कहानियोंके कहनेका यग्नावियोंमे वहुत रवाज है* —

इकम्पिरओइ । ईकल् ज् तश् ओइ । के ई मेत् कलि व अवोफ—"अने दॉदो-त् विसियार पैदागर खोइ। यक् तग अवारिश्त् सत् तगा अकुन अउर्।" के कल् यक् तगा अनोस् अनीज अतेर अशो इयो-कइ इ मूसफ दे तीरक् अस्त् खरे वोरा ई वुज चि खरे दुम् वस्तगी। कल् अॉस्ताक् अशो वीत पक्क अकुन् वूज अनोस् अवोउ वूज अउर कोये अखश् । तिक् अमोन अतेर अशो मूसफ दे अवियोर अवोव ये वॉवो वीत जाम् कुन्। अख् अगोर अवोव अने वीत-म् ई वुज ओइ वुज् नख। खरे अवोव् इगुम् चक् दॉर मन सोउम वूज कोवॉम्। कल् अवोव बॉवो दर वॉउ खरे लॉइ ग्वस्चे। मूसफ द अतेर। कल खरे गूश दुम्-श पक्क अकुन् अवार ई कोये अखश् गूश दुम्-श अउर लोइ नुत् अनीदोन् के अवोव ए वॉवों वॉऊ खरे लोइ अखश् ।

(एक वुढिया थी। उसका एक दुष्ट लडका था। एक दिन उसने अपने दुष्ट लडकेको कहा—"तेरा वाप वहुत पैदा करनेवाला था। एक तगा ले जाता और अभी सौ तगा ले आता।" फिर दुष्ट लडका एक तगा लेकर वाहर गया। एक जगह एक गदहेके ऊपर सवार एक श्वेतकेश (वूढे)को आते देखा, गदहेकी दुममें एक वकरी वधी हुई थी। दुष्ट लडका आहिस्तेसे गया, और रस्सीको काटकर वकरीको ले गया। 'पीछे वूढेको आकर कहा —"हे वावा, रस्सी समेट लो।" उसने देखकर कहा—'मेरी रस्सीमें वकरी थी, किन्तु वकरी नहीं है।" दुष्ट लडकेने कहा—"जल्दी जाओ वावा · · ।" वूढा चला गया। दुष्ट लडकेने गदहेके दुम और कानको काट लिये। फिर आकर उसने वूढेसे कहा—"हे वावा, चलो, गदहा कीचडमे फस रहा है।" वूढा चला गया।)

इस भाषाको देखनेसे मालूम होगा, कि फारसी समझनेवालेके लिये भी इसका समझना मुश्किल है। एकके लिये यहा ई और यीके लिये आई शब्दका प्रयोग हुआ है। दिनके लिये मेरका शब्द पुरानी सोग्दीमें 'मुद' था, जिसका फारसीमे कही पता नही । इसी प्रकार गदहेकी पूछके लिये दुमे-खरकी जगह खरे-दुम (खर-पुच्छ) आया है। हिन्दीकी समीपता देखनेके लिये यग्नावी भाषाके गरीव ताजिक "करके" (करके) रोद्-के (रोकर) शब्दोको भी देखें। †

वुखारा और खोकन्दके पिछले इतिहासके वारेमे लिखते हुये हम वतला चुके हैं, कि ताजिकिस्तानका पहाडी प्रदेश कभी अलग-अलग छोटे-छोटे सामन्तोके स्वतत्र राज्योमे वटा रहता और कभी उसे खोकन्दके मदली खान-जैसे वाहरी शासकोके अधीन वनना पडता। यह पहाडी इलाका अपनी खनिज और दूसरी सम्पत्तियोको रखते हुये भी उस समय वहुत गरीव था। यहाके लोग सुन्नी मुसलमान थे, इसलिये उनके लडके-लडकियोको गुलाम वनाकर वेंचा नही जा सकता था। तो भी अपने सौंदर्यके लिये प्रसिद्ध यहाकी लडकियोकी अमीर और उसके सामन्तोके हरमोंमे वडी माग थी। यहाके पुरुष मजदूरी करनेके लिये वुखारा, समरकन्द, खोकन्द आदि शहरोंमें चले जाते। पुरुष जव वर्षोके वास्ते रोटीके लिये धक्का खाने चले जाते, तो उनकी स्त्रिया वेचारी घर और खेतीको सभाले वाट जोहा करती । इस समयकी अवस्थाका वर्णन वहुतसे लोकगीतोंमें पाया जाता है। एक लोकगीतमें कहा गया है :—

> वुलवुल वागमें रोती हुई आई,
> गुलावकी सूखी डालीपर जाकर वैठी।
> वुलवुल अपने मुहसे वोली—
> "यह वियोगका घाव कितनोंके दिलपर है।"

× × ×

---

*"श्रुदि ताजिकिस्तान्स्कोइ वाग", इस्तोरिया-यज़ीक लितेरातुरा (अकदमी नाउक ससर १९४० मस्क्वा)

† मिनर्नी हीं वातोंमे फारसी या ताजिकीमे विलक्षण है, यह उसके गाउ(गाय) कुतर (कुत्ता) और आर्ता (आटा) शब्द भी वतलाते है।

जगत्के कर्ता ते ी विचित्र महिमा,
तेरे बन्दे सोये और तू खुद जागा ।
अमृत-भोजन दुनियाके सामने फेंककर,
चुगने और जानेका तू तमाशा देखता,

× × ×

अपने सफेदेके लिये अपनी हरनीको खोया,
लोगोंके द्वारपर अपनेको फेका ।
लोग कहते कि तू दीवाना हुआ,
दीवाना हू, क्योकि मैंने अपनी प्रियाको खोया ।

× × ×

हे पथिक, किसीके साथ मैं नही हसी,
न केश धोया न कुर्ता पहना ।
बहुतेरे कारवा आये, पूछनेपर
उन्होने कहा— "मैंने न देखा न जाना ।"

इसी अवस्थामे ताजिकिस्तानके पहाडी लोग अमीर-बुखाराके पूर्वी इलाके (पूर्वी बुखारा)मे रह रहे थे, जब कि बोल्शेविक-क्राति हुई ।

ताजिकिस्तान भाषाके तौरपर पुराने सोग्दियोंकी विस्तृत भूमिका अवशेषमात्र है, जिसके दक्षिणी सीमात वक्षु नदी और उत्तरी टेढा-मेढा होता सिर-दरियाके उत्तरतक पहुच गया है। आजकल इसका क्षेत्रफल पचपन हजार वर्गमील और जन- सख्या पन्द्रह लाख है। ताजिक भाषा-भाषियोकी बस्तिया वैसे वक्षुसे बहुत दक्षिण काबुल नगरके पासतक चली आई है, लेकिन अभी अफगानिस्तानमे रहनेवाले ताजिक उतने सौभाग्यशाली नही है, जितने कि क्रातिकी अग्निमे तपकर निकले उत्तरी ताजिक । मध्य-एसियाकी और किसी जातिको क्रातिके समय नरपिशाच बासमचियो की निष्ठुरताका उतना शिकार नही होना पडा, जितना कि कश्मीरके उत्तरी-पूर्वी सीमान्तके पासके इन पहाडियोको ।

ताजिक जातिका निर्माण—ताजिकोका ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ.—

काल			पामीर	सिर-उपत्यका
ई० पू०	४०००	(मध्य-पाषाण)		फिनो-द्रविड
"	३५००			शकार्य-द्रविड
"	३०००	(नव-पाषाण)		"
"	२५००		आर्य	शक
"	१५००	(पित्तल-युग)	ईरानी	श०
"	७००		ईरा०	श०
"	५५०		ईरा०	श०
"	३२६		ईरा०	श०
"	२०६		ईरा०	श०
"	१३०		ईरा०	हूण-श०
"	१००		ईरा०	हू०-श०
ईसवी	१००	(कुषाण)	ईरा०	हू०-श०
"	४२५	(हेफ्ताल)	ईरा०	हूण-कगली
"	५५७	(तुर्क	ईरा०	कगली-तुर्क
"	६७३	(अरब)	ईरा०	तुर्क
"	८९२	(सामानी)	ईरा०	तुर्क
"	१२२०	(मगोल)	ईरा०	तुर्क

ईसवी	१५००	ईरा०	तुर्क (उज्बेक)
"	१७४७	तुर्क-ईरा०	तुर्क-उज्०
"	१८६५	ईरा०तुर्क	उज्०-ईरा०
"	१९१७	ईरा०-तुर्क	उज्०-ईरा०
"	१९४७	ताजिक	

२ वासमची-उत्पीडन

खोकन्दके स्वायत्तियोंके हार खानेके बाद वासमचियो (जहादी डाकुओ)ने जोर पकडा। १९१९ ई०के वसन्तमे ओश नगर और पामीरके बीचका रास्ता सफेद रूसियो और वासमचियोके हाथमे था, जिनका मुखिया मुखानोफ और एरगेशताम थे। पीछे कर्नल तिमोफियेफ नामक एक शाही अफसरने यहा नेतृत्व करना शुरू किया। बुखारा की कमजोरियो को देखकर अब यहाके पहाडी सामन्त स्वय बादशाह बननेका स्वप्न देखने लगे। जब १९२१ ई०के फर्वरीमें आलम खान (बुखारा-अमीर) दुशाम्बे होकर अफगानिस्तानकी ओर भाग गया, तो यहाके कुछ लोगोने अफगानिस्तानके अमीरको भी राज्य सभालनेके लिये लिखा, लेकिन ताजिकिस्तानके पहाडोके लिये काबुलको न उतना प्रलोभन हो सकता था, न उसमे उतनी शक्ति ही थी। हा, मीर आलम खान ताजिकिस्तानमें लूट-मार मचानेवाले वासमचियोंसे पैसा पाता और उसके बदलेमें कुछ हथियार जरूर भेज देता था। जब-तब अंग्रेजोने भी हथियारसे मदद की, लेकिन उस वक्त असहयोग का आन्दोलन सारे भारतमे चल रहा था, जिससे अंग्रेजोका दिमाग बहुत परेशान था, और वह वासमचियोको खुलकर मदद देनेके लिये तैयार नही हो सकते थे।

(१) अनवर पाशा—अमीरके जानेके बाद एक तरफ वासमची भिन्न-भिन्न गिरोहोमें बटे लूट-मार मचा रहे थे, दूसरी तरफ क्रातिकारियोने भी गरीबोको सगठित करनेका काम शुरू किया। लेकिन, बुखारा अभी पूरी तौरसे बोल्शेविकोके हाथमे नही आया था। उनकी ओरसे जो आदमी शासनका भार देकर भेजे गये थे, वह उच्चवर्गके होनेसे अपने पुराने स्वार्थोंको छोडनेके लिये तैयार नही थे, इसीलिये उन्होने क्रातिके साथ विश्वासघात किया। वासमचियोमें जिस तरहके पत्र-व्यवहार हो रहे थे, उनसे उस समयकी स्थितिका कुछ पता लगेगा। एक पत्रमे मुल्लोने लिखा था—

अमीरुल्-मोमिनीन् हफ्जल्लाह तआला
वह महाविजयी

रक्षक प्रभु सम्माननीय मीर-बी-बावखाह, लश्करबाशीको दुआ और सलामके उपायनके बाद मालूम हो, कि हम आपके दुआ-वाचक परमभक्त आलिम (पडित) लोगोने सुल्तानाबादमें पुण्य ईद पर्वके समय इकट्ठा हो आपसमें मत्रणा की। कुछ लोगोके बारेमें हमने सुना, कि वह जनाबआली (अमीर-बुखारा) और श्रीमान्के विरोधी और बागी हैं। श्रीमान उनके बारेमें हमें सूचित करें। जो कोई अनवरका अनुयायी हैं, उसे कुरान और हदीस (स्मृति)के अनुसार काफिर सिद्ध कर सभी यहा एकत्र हुये हम आलिम-फाजिल शरीअतके अनुसार कत्ल करा देंगे। जो लके (किर्गिज) ताजिक या कर्लुक अनवरका अनुसरण करते हैं, उनके बारेमें सूचित कीजिये। उनको भी शरीअतके अनुसार हम आलिम-फाजिल लोग एकत्र हो कत्ल करायेंगे। हम लोग शरीअतके अनुसार काम करेंगे। यह सब (काम) हम लोगोके सिरपर हैं, यदि वह श्रीमानको उचित जान पडे। आगे आप स्वय भली भाति जानते हैं। अस्सलाम् व अलेकुम्।

पत्र भेजनेवालो की मुहर और हस्ताक्षर

मुल्ला अहमद नसीमी मुदर्रिस मुल्ला अली महमदी मुदर्रिस

खलीफा मुल्ला अल अजर मखदूम   मुल्ला अस्मतुल्ला मखदूम
मुल्ला तुगाय मुरादो मुदर्रिस   मुल्ला अब्दुर्रहमान मखदूम
मखदूम महमदो तुकसाबा

इस पत्रसे मालूम है, कि उस समय अनवरपाशा इन पहाडोमें अपनी भाग्य-परीक्षाके लिये आया हुआ था। प्रथम विश्व-युद्धके बाद जर्मनोके पक्षपाती अनवरका प्रभाव तुर्कीमे उड गया, जब कि मुस्तफा कमाल नवीन तुर्कीका नेता हुआ। इसके कारण अनवरको तुर्की छोडकर भागना पडा। कुछ समयतक वह बुखारामे रहा, फिर वहासे भी भागकर इन पहाडोमें आ गया। अनवर नवीन तुर्कीका नेता था, जिससे बुखाराके जदीदोको भी प्रेरणा मिली थी। लेकिन बुखाराके मुल्ले जदीदोके खूनके प्यासे थे, इसीलिये वहा अनवर और उसके अनुयायी कुछ नही कर सकते थे।

इन पहाडोके सभी लोग क्राति-विरोधी मुल्लोकी तरह अन्धे नही थे, वह अनवरकी योग्यता और प्रभावसे पूरा फायदा उठाना चाहते थे। इसीलिये अनवरको यहापर काफी समर्थन प्राप्त हुआ। लेकिन तो भी महत्त्वाकाक्षी बासमची तथा दूसरे सरदार अनवरकी सैनिक योग्यताको अपने मतलबके लिये इस्तेमाल करना चाहते थे, इसलिये स्वनिर्वाचित 'अमीर-लश्कर-इस्लाम, नायब-अमीर-बुखारा व दामाद खलीफा-मुसलमीन अनवर" को सफलता प्राप्त करनेका मौका नही मिला और अगस्त १९२२ ई०मे बल्जुवान इलाकेके एक गावमें ४२ वर्षकी उम्रमें वह मरा। और चगन गावमे दफनाया गया।

(२) ईशान सुल्तान*--ताजिकिस्तानमे क्रातिका एक और जबर्दस्त विरोधी ईशान सुल्तान था। ईशान मध्य एसियामें पीर या गुरुको कहते हैं, जिनका कई शताब्दियोसे वहापर जबर्दस्त प्रभाव रहा है। १९वी सदीमे दरवाज कला-खुम्बके शाहोका बहुत प्रभाव था। यह अपने खानदानको सिकन्दर और दूसरे पुराने राजाओसे मिलाते थे। सीधे-सादे पहाडी लोगोमे राजवशके होनेसे इनका बहुत मान था। इन्हीके इलाकेमे १८वी सदीके अन्तमें सागिद दश्तसे डेढ मीलपर अवस्थित सैदान गावमें सैयद-वशमें एक आदमी पैदा हुआ, जो कि आगे ईशान औलिया (मृत्यु १८६७ ई०)के नामसे प्रसिद्ध हुआ। ईशान औलिया या मिर्जा रहीम पहले कन्दहारमें जाकर किसी पीर ईशान आखुनसाहेबकी सेवामे रहा, जहा उसने ईशानोके सभी हथकडे सीखे। फिर लौटकर कुछ दिनो वह अपने गाव सैदानमे रहा, फिर सफेदारान और बादमे दराजमें रहने लगा। उसकी ख्याति दिन-पर-दिन बढती गई और बहुतसे लोग उसके मुरीद हो गये। ईशानके लिये अमीरो और सामन्तोकी तरह बीबी-बच्चोके रखनेमें कोई दिक्कत नही थी। ईशान औलियाकी कई बीबिया थी, जिनसे उसके सात पुत्र हुये। उनमें शेख मिर्जाको दरवाजके शाह याकूब खाने अपनी लडकी दी थी। ईशान औलियाको कई गाव विर्त-बधानमे मिले थे। औलियाके मरने (१८६७ ई०)के बाद उसके सातो पुत्र भी ईशानगिरीसे धन और सम्पत्ति जमा करने लगे। उनमे ईशान शेख अपने समयमें इन पहाडोमें बडा ही सम्पत्तिमान तथा प्रभावशाली आदमी था। उसके मुरीदो (चेलो)की सख्या बहुत थी, और बहुतसे गाव भी उसे मिले थे। चिहकाका, सैदानके अतिरिक्त ईशान शेखकी हवेलिया सफेदारान, याहकपस्ते, याजगद और दरा-जूमे भी थी। इसीका लडका ईशान सुल्तान था, जो पूर्वी बुखाराका सबसे बडा धनी सामन्त था। इसका जन्म याहकपस्तेमें हुआ था, जहा दस सालकी उमरतक रहा। इसके बाद याजगन्द चला गया। जिस वक्त १९१७-१८ ई०मे क्रातिकी लहर पहाडोमे पहुची, उस समय ईशान ४५ वर्षका बहुत तजुर्बेकार और शक्तिशाली आदमी था। बापके बाकी भाइयोमे सबसे बडा होनेसे उसका प्रभाव सबसे ज्यादा था। उसकी जागीरमे याजगन्द, याहकपस्त, यानकुर्गान आदि बहुतसे गाव थे। अमीर-बुखाराकी तरफसे वह अपने इलाकेका 'हाकिम' (सरकारी अफसर) था। ईशान सुल्तानकी धनसे भी ज्यादा धार्मिक प्रभुता थी। आसपासके इलाकोके लोग उसकी

---

*"अुदि ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजि (९), इस्तोरिया-यजीक-लितेरा तुरा" (अकदमी, नाउक १९४०, पृष्ठ ३-२७)

आज्ञाको खुदाकी आज्ञा मानते थे। भूमिका मालिक और बहुत बडा जमीदार होनेकी वजहसे प्रजाको भी कष्ट हुये विना नही रहता था। याहकपस्तेके एक किसान परिवारको इसने बुरी तौरसे सताया था। जब वह लोग दुशाम्बेमे फरियाद करने लगे, तो काजी मुल्ला कामिलकी इतनी हिम्मत कहा थी, कि प्रभावशाली ईशान सुल्तानके विरुद्ध फैसला देता। वहासे बुखारा दाद-फरियाद करने गया, तो वहापर भी वही हालत हुई। फिर रूसियोंके पास ताशकन्द-तक पहुचा, लेकिन कही सुनवाई नही हुई। ईशान सुल्तानकी जागीरदारीमें लोगोसे बेगारमें काम लिया जाता था। उसके लगरखानेमे भक्तो और मुरीदोके खानेके लिये दरवाजा खुला था, बराबर सत्सग और ज्ञान-ध्यान चलता रहता था। ईशानको कई स्त्रिया थी, जिनमेंसे एक याजगन्दमे, दूसरी याहकपस्तेमें, तीसरी हिमारने, बाकी और जगहोपर रहती थी, लेकिन सतानोंमें उसे सिर्फ एक लडकी थी।

जब बोल्शेविकोंने फरगाना और ताशकन्दमे सफलता पाई, और क्रातिकी लपट पूर्वी बुखाराके पहाडोमे भी पहुचने लगी, तो ईशान सुल्तानको अपनी जागीर और धनके लिये डर पैदा हो गया। १९२१ ई०के जाडोमें बुखारा-अमीर सैयद आलम खा जब भागकर दुशाम्बे आया, तो उसने यहाके पहाडी सामन्तोको सगठित करनेका प्रयत्न किया, और ईशान सुल्तानको 'सुदूर' (अध्यक्ष) की पदवी प्रदान की। २१ फर्वरी १९२१ ई०को जब अमीर दुशाम्बेसे अफगानिस्तान भागा, तो ईशान सुल्तान बोल्शेविकोसे लडनेकी तैयारी करनेके लिये याजगन्द चला आया। दुशाम्बे (आधुनिक स्तालिनाबाद) मे ईशानको कुछ हथियार मिले। तविलदरा और चिहलदराके इलाको मे काजी कुर्गान, नियाज तुकसावा, अकबर तुकसावा, सैयद अली उराक आदि स्थानीय अफसरोको इकट्ठा करके उसने 'गजा" (धर्मयुद्ध) करनेका निश्चय किया। अपने मुरीदोमेंसे उसने पचासको हथियारबन्द 'गाजी' बनाया। दुशाम्बा और गरमपर अधिकार हो जानेके बाद मेर्कुलोफकी अधीनतामे ओरेनबुर्गसे सवार-सेना आ गई, जिसके कारण बोल्शेविकोका पलडा इन पहाडोमे भारी हो गया। लेकिन सुरखाबकी उपत्यका और गरम उस समय बासमची-सरदार फुजैल मखदूम और लायकपसदके हाथमें थे, और पीतर दर्रेसे वखियातक को ईशान सुल्तानने अपने हाथमे किया था। लाल सेनाने ईशान सुल्तानको तबील दर्रासे भागनेके लिये मजबूर किया, तो वह सागिरदश्त चला गया। जब फुजैल मखदूम हारकर अफगानिस्तान भाग गया, तो ईशान सुल्तानने बोल्शेविकोके साथ सुलह करने हीमे अपनी भलाई समझी। इसपर वह इस्लामके गाजियोंमें बदनाम हो गया, जैसा कि अपनेको अनवरका उत्तराधिकारी बतलानेवाले एक तुर्की अफसर सामी पाशाके १९ नवम्बर १९२२ ई०के निम्न पत्रसे मालूम होगा—

"ईशान सुल्तान खोजा सूबा दरवाजके हाकिम और अस्कर बागी सेनानायकका विश्वासघात

"अफगानिस्तानकी भूमिमें विराजमान जनाबअली अमीर बुखाराशरीफ सैयद अमीर आलमकी सेवामें अभिवादनके बाद मालूम हो, कि ईशान सुल्तानने दरवाजपर अपना अधिकार जमानेके लिये सेना जमा की और इलाकेको जुवान, आक्सु अधिकृतकर चक्कानीनिला और कुलाबदराको दबाकर तरह-तरहके झगडे फसाद और अत्याचार किये। जनाबआलीकी ओरसे नियुक्त नायब और राजप्रतिनिधि दिवगत शहीद अनवरपाशाके सैनिक और नागरिक शासनके खतम करनेके लिये ईशान सुल्तानने इस्लामके मुजाहिदोके भीतर उक्त सेनापतिके सामने फूट डाल दी, जिसके परिणामस्वरूप मुजाहिदो की छ हजार सेना बायसून इलाकेसे घबडाकर भागी और दुश्मनसे लडनेकी जगह परस्पर हल्ला-गुल्ला मचाया, जिसमें सैकडो मुसलमान कुर्बान हुये। ईशानकी मददसे फरगानावालोने उसके प्रतिद्वद्वियोकी कत्ल किया, जिससे देशवासियोको भारी क्षोभ हुआ। बुखारावालो और दूसरे कबीलोंके आपसी झगडेसे फायदा उठा (ईशानने) उजबेकों और ताजिकोंको

एक दूसरेसे लडा अपने विश्वासघातका परिचय दिया, साथ ही इस्लामके मुजाहिदोंसे तीन सौ बन्दुको और दो सौ मशीनगनें देकर रूसियोंके साथ सुलह की, जिसके कि कागज-पत्र हमारे हाथ लगे।

"फरगानियो और किर्गिजोमें झगड़ा डालकर इस्लामी मुजाहिदोकी शक्तिको निर्बल करनेकी मशासे उसने रूसियोंके साथ मेल किया। इस तरह इस्लामी उद्देश्यको हानि पहुंचाने और लोगोंके युद्ध करनेके उत्साहको दबानेके लिये वहाके प्रबन्धालयोंको खतम कर दिया, और इस तरह निराशा फैल गई । अल्लाके रास्तेमें लड़नेवाले मुहम्मद अकबर तुकसाबाको (ईशानन) अपने घरमें ले जा दस्तरखानपर बैठाकर उसे कत्ल करवा दिया, उसके मालको ले बाल-बच्चोंको नंगा कर बाटका भिखारी बना दिया। इसके अतिरिक्त (उसने) कितने ही मातबर सेनानायकोंको कत्ल कराया । फिर फरगानावाले शेरमहम्मद (शेरमत) बेकोको खबर दे तुर्की और करातगिनके स्वामी फुजैलुद्दीन मखदूमको पराजित करनेका निश्चय किया। हमारे ऊपर भी उसने आक्रमण किया, लेकिन हमने सैनिक तरीकेके अनुसार उसके हमलेका मुकाबिला किया और ईशान सुल्तानकी फौजको भागना पडा । पहले हमने शेरमहम्मदको रोकनेके लिये चहलदरकि रास्तेको खराब किया था। ईशानने खराब रास्तेको फिरसे तैयारकर शेरमहम्मदको फौजको रास्ता दिया और हमारी फौजको न जाने देनेके लिये रास्तेको खराब कर दिया। फिर अपने भाई ईशान सुलेमानको हमारे मुकाबिलेके लिये भेजा, इस प्रकार शेरमुहम्मदको दरवाजके रास्ते निकल जाने दिया। इसके अतिरिक्त दरवाजवाले गैरतशाह बी दादखाह, दिलावरशाह बी लश्करबाशी और कितने ही दूसरोको कत्ल करवाया। हमारी फौजोका पीछा करते हुये ईशान सुलेमान तवीलदर्रा और सगीरदश्तमें बन्दूकवाले सैनिकोको जमाकर शेरमुहम्मदकी सेनासे मिलकर हमारे ऊपर हमला किया । जब हम दरवाजमें थे, उसी समय दर्रासे होकर उसने कूलाबवाले महम्मद अशुरबेक बी दादखाह लश्करबाशीको कत्ल कराया। अब हमारी फौजको आगेसे घेरकर दरवाजे-में भूखे मार आत्म-समर्पण करने या अफगानिस्तान भागनेके लिये मजबूर करना चाहता है। उसकी इसतरहकी योजनायें और पत्र हमारेहाथमें आये हैं, ...इसलिये उसके इन कामों, अपराधों और विश्वासघातोंके लिये शरीयत और सैनिक कानूनके अनुसार उसे मृत्युदंड देनेका निश्चय किया गया है....।

२८ माह रबीउल अव्वल सन् १३४१ (२१ नवबर १९२२ ई०)

मुहर सेनापति मुसलमान जन-सेना सामीपाशा"

लेकिन ईशान सुल्तान अनवरपाशाका बहुत कदरदान दोस्त था। अगस्तको अनवरपाशा जब मारा गया, तो इसका ईशानको बहुत भारी दुख हुआ । अनवरके सहायक सामीपाशा (खाजा सलीम बी)का भी वह बहुत सहायक रहा। सामीपाशा १९२२ ई०के शरदमें सीमान्तपर गया, तो कलाखुमके पास उसे दरवाजके बासमची नेताओ दिलावरशाह और हैरतशाहने पकड लिया। पता लगते ही ईशान सुल्तान स्वय वहा गया और सामीपाशाको छुडाकर अपने साथ याजगन्द ले आया। ईशानने और भी घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये याजगन्दकी एक ७-८ वर्षकी लडकीसे सामीपाशाका व्याह करवाया—लडकी पहले ही किसी दूसरेको दी जा चुकी थी। लडकीके बापने इसका विरोध किया, तो उसे गिरफ्तार करवा लिया।

बोल्शेविकोके साथ प्रतिरोधको बेकार तथा बासमची सरदारोंके आपसके विश्वासघातोंके कारण जब ईशान सुल्तानका विचार बदलने लगा, तो फुजैल और सामीपाशाने अफगानिस्तान भागनेसे थोडा पहले ईशानको मारनेका निश्चय किया, जैसा कि उपर्युक्त पत्रसे मालूम होगा। फिर सामीपाशाने ईशान सुल्तानको गिरफ्तार कर लिया और फुजैलके आदमियोने उनके भाई ईशान सुलेमानको भी पकड लिया। यही नहीं सामीके आदमियोने याजगन्दमे ईशानोंके घरोको ध्वस्त कर दिया, वहाकी सभी कीमती चीजें तथा स्त्रियोको लूट लिया और ईशानके तीसरे भाई

शाह रहमतुल्लाको भी पकड लिया। इसके बाद वासमची सरदारो मामीपाशा, फुजैल और दानियाल ने तवील दर्राके सभी अफसरों, मुल्लो, काजियो, मुफ्तियोको जमा करके शरीयतके अनुसार अभियोग लगाया कि ये ईशान लाल वोल्शेविकोंसे मिले हैं, इन्होंने एक वासमची सरदार अकबरको मारा। इसपर उन्हें मृत्युकी सजा हुई, और दोनों भाइयोको १९२२ ई०की शरदमें मौतके घाट उतारा गया।

(३) फजैल मकसूम—वासमचियोंके सरदार फुजैल मकसूमने १९२३ ई०में उत्तरी ताजिकिस्तानके पहाड़ोंमें लूट-पाट करते अपना दृढ शासन स्थापित कर लिया था। गरमका इलाका अच्छे समयमें भी जीविकाके लिये स्वावलम्बी नहीं था। वहाके वहुतसे लोग नेपालियोंकी तरह फरगानामें जाकर मजदूरी किया करते थे। वासमचियोंके उपद्रवके कारण अव वह रोजी कमाने वाहर नहीं जा सकते थे, इसलिए सारे इलाकेमें भुखमरी फैली हुई थी, जिससे गरीबोंमें वोल्शेविकोका प्रभाव वढ रहा था। इसी साल लाल सेनाने वहा पहुचकर फुजैलको बुरी तरहसे हराया, जिसके वाद फुजैल फिर नहीं सभल सका। मजार गावमें एक वार फिर उसने मुकाविला करनेकी कोशिश की, लेकिन उसका घोडा मारा गया, फिर दूसरा घोडा लेकर वह सीधे अपने गाव मोतीनान गया, और सव तरफसे निराश होकर नकद और मालको ले उसने अपने हाथसे घरमें आग लगा दी, फिर चोपचाकके रास्ते वखेया इलाकेमें होते पज (वक्षु) नदीके किनारे पहुचा। रक्षियोंने पकडना चाहा, लेकिन वह अपने दो-तीन आदमियोंके साथ नदी पार हो अफगानिस्तान निकल जानेमें सफल हुआ।

वोल्शेविकोंने कुछ ही महीनोमें करातेगिन, दरवाज और वखेयासे वासमचियोका उच्छेद कर दिया। १८ जुलाई १९२३ ई०को गरम वोल्शेविकोंके हाथमें आ गया, ११ अगस्तको कला-खुम्ब (दरवाज) पर भी अधिकार हो गया, इस प्रकार ताजिकिस्तानपर क्रातिकी विजय हुई। लेकिन अभी भी ताजिक जन निश्चित नहीं हो पाये।

(४) इब्राहीम गल्लू—वासमचियोंके सरदार पुराने डाकू इब्राहीम गल्लूने वहुत सालोंतक ताजिकिस्तानके पहाडोंमें लूट-पाट मचाकर लोगोंको तग किया, लेकिन अन्तमें जून १९२६ ई० में उसे भागकर अमीरकी तरह अफगानिस्तानमें शरण लेनेके लिये मजवूर होना पडा। उस समयतक वह "मुल्ला मुहम्मद इब्राहीमवेक, दीवानवेगी, तोपचीवाशी, लश्करवाशी, चक्कवे, तुकसावा-पुत्र"की वडी-वडी उपाधियोंसे विभूषित तथा अमीर-बुखाराका नायव था।

३ ताजिकिस्तान गणराज्य

पूर्वी बुखारा या ताजिकिस्तान पहले तुर्किस्तान गणराज्यका अग था। १९२४ ई०में वह स्वायत्त गणराज्य बना और १९२९ ई०में सघ गणराज्य वनकर सोवियत सघके स्वतन्त्र गणराज्योंमें से एक हो गया।

स्रोत-ग्रथ

१. History of civil war in U S.S.R. (2 vols , G.F. Alexandrov and others, Moscow 1946)
२ रेवोलुत्सिया व् स्रेदनेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
३ युर्दो तानिकिस्तान्स्कोइ वाजी इस्तोरिया यजीक–लितेरातुरा (लेनिनग्राद १९४९)
४. सोवियत्स्कया एत्नोग्रफ़िया (लेनिनग्राद १९३६/६, पृ० १११)
५. दाखुन्दा (उपन्यास, स० ऐनी, अनु० राहुल, प्रयाग १९४८)
६. गुलामान (उपन्यास, स० ऐनी, अनुवाद "जो दास थे" राहुल, प्रयाग १९४९)

अध्याय ६

तुर्कमानिस्तानमें क्रांति

१. तुर्कमान कबीले

तुर्कमान कबीलोने किस तरह अपनी स्वतंत्रता कायम रखनेके लिये रूसियोंसे अंतिम लडाई लडी, इसके बारेमें हम पहले बतला आये हैं। तुर्कमानोके मुख्य-मुख्य कबीले थे :—

१	चौदार	उस्त-उर्तमें
२	यामूद	चौदारोके दक्षिण कास्पियन और निम्न वक्षुके बीचमें
३.	गोकलान	ईरानकी सीमापर
४.	तेक्के	सबसे अधिक शक्तिशाली मुर्गाव-उपत्यका और पासके रेगिस्तानोमें
५.	सरिक	मेर्वमे
६	सलार	मशहदके पूर्व बुखाराके रास्तेमें
७	एरसारी	
८	करदाखली	बुखारा-राज्यकी सीमापर वक्षुके किनारे

आठ सौ वर्ष पहले महमूद काश्गरीने और इतिहासकार रशीदुद्दीनने भी तुर्कमान कबीलोंके बारेमें लिखा है। उनके कथनानुसार पौराणिक आगूज खानके छ लडके थे, जिनमेंसे प्रत्येकके चार-चार लडकोके अनुसार तुर्कमानोके चौबीस कबीले बने । इन दोनो लेखकोंके अनुसार वह कबीले निम्न प्रकार हैं —

	महमूद काश्गरी	रशीदुद्दीन
१	कीनिक	कीनिन
२	काईइग	काईई
३	बायोन्दुर	बायोन्दुर
४	ईवे	ईइवे
५	सल्गुर	सल्गुर
६	अफशर	अवशा
७	बेकतिली	केबदिली
८	व्युकद्युज	व्युकयुज
९	बयात	बयात
१०.	याजगिर	याजिर
११.	येएम्युर	येइम्युर
१२	करायुल्युक	कराएवली
१३	इगदेर	ईइगदेर
१४.	यूरेकी, यूरेकिर	यूरेकिर
१५.	तूतिरगा	दूदुरगा

१६ उला-इओन्दलुग	उला-इओन्तली
१७ त्युकेर	द्युकेर
१८ पेचेनेत	बीजने
१९ जूवाल्दर	जावुल्दुर
२० जेवनी	चेवनी
२१ जारुकलुग	•
	याचिर ली
	कारिक
	कार्किन
	तमगी

दोनों सूचियोंका एक-दूसरेसे न मिलना, यही बतलाता है, कि कितने ही पुराने तुर्कमान कबीलोंने नये नाम धारण किये और कुछ दूसरे तुर्कोंमें विलीन हो गये ।

तुर्की भाषाएं उराल-अल्ताई भाषा-जातिसे संबंध रखती हैं, जिसके भेद हैं --

१ तुंगुस--जिसमें मंचू भाषा भी सम्मिलित है।

२ समोयद--उत्तरी साइबेरियावालोंकी भाषा ।

३ फिन्नी--फिन (सूओमी) तथा मगयार (हुंगरी) भाषा ।

४ मंगोल--इसमें खल्खा, कल्मक और बुरयत मंगोलोंकी भाषाएं सम्मिलित हैं ।

५. तुर्की--इसकी एक शाखा (क) चगताई, जिसकी शाखायें उइगुर, तुर्कमान, उज्बेक, कजानकी तारतारी भाषाएं हैं, (ख) शुद्ध तारतार-भाषा, जिसमें किर्गिज, बाश्किर और कराकल्पक भाषाएं हैं, (ग) शुद्ध तुर्क-भाषा, जिसमें ईरानी और उस्मानी तुर्कोंकी भाषायें सम्मिलित हैं। भाषाकी दृष्टिसे तुर्कमानी भाषा पश्चिमी तुर्की अर्थात् तुर्की और आजुर्बाइजानकी भाषाके समीप है।

तुर्कमान जाति-निर्माण--तुर्कमानोंका ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ --

काल		ख्वारेज्म	मेर्व	कास्पियन-तट
ई०पू०	५००००			मदलेन
"	४००० (मध्य-पाषाण)	फिनो-द्रविड		फिनो-द्रविड
"	३५००	द्र०		द्रविड
"	३००० (नव-पाषाण)	आर्य-द्र०	आर्य-द्र०	आर्य-द्र०
"	२५००	आर्य	आर्य	आर्य
"	१५००	ईरानी	ईरानी	ईरानी
"	७००	शक	ईरानी	ईरानी
"	५५०	शक	ईरानी	शक
"	३२६	शक	ईरानी	शक
"	२०६	शक	ईरानी	शक
"	१३०	शक	ईरानी-शक	शक
ईसवी	१०० कुषाण	शक	ईरा०-श०	शक
"	४२५ हेफ्ताल	ईरानी-हूण	ईरा०-श०	श०-कग
"	५५७ तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०	ईरा० तुर्क
"	६७३ अरब	ईरा०-तु०	ईरा०	तुर्क
"	८९२	तु०-ईरा०	ईरा०-तुर्क	तुर्क
"	१२२० मंगोल	तु०-ईरा०	ईरा०-तु०	तुर्क
"	१५००	तुर्क	तुर्क	तुर्क

ईसवी	१७००	तु०-उज्बेक	तुर्कमान	तुर्कमान
"	१७४७	उज्बे०-तुर्क	तुर्कमान	तुर्कमान

तुर्कमान

२ लालसेना-निर्माण

करेन्स्कीकी अस्थायी सरकारको रूसी गरीबो और मजदूर-किसानोके बलपर निकाल फेंकना आसान था, क्योकि रूसमें क्राति-विरोधियोके साथ लोहा लेनेवालोकी सख्या और शक्ति कम नही थी, लेकिन मध्य-एसिया और उसमें भी तुर्कमानिया बहुत पिछडा देश था, जहाके लोगोमे शिक्षा एक प्रकारसे नही-सी थी । जो साक्षर और शिक्षित भी थे, वह मुल्लोके मक्तबोमें पढे और उन्हीके प्रभावमें थे, इसलिए अपने द्वेष और असतोषको वह गैर-मुस्लिमोको काफिर कहकर ही निकालना जानते थे । तुर्कमानोमे साम्यवादका सदेश और आन्दोलन पहलेसे बिलकुल ही नही था। क्रातिके बाद वह पहिले मध्य-एसियामें रहनेवाले रूसी मजदूरो-में फैला, जिसके बाद एसियाई लोगोमे भी घर बनाने लगा । करेन्स्कीकी सरकारको हराकर जब बोल्शेविकोने शासन-सूत्र अपने हाथमे लिया, तो मध्य-एसियामें भी उन्हे पुराने शासको-का स्थान ग्रहण करनेमें पहले अधिक कठिनाईका सामना नही करना पडा, तो भी बोल्शेविक आनेवाले खतरेको समझते थे। ताशकन्दमें अक्तूबर-क्रातिसे महीना भर पहले (सितम्बर १९१७ई०में)ही रेलवे मजदूरोने अपनेको हथियारबन्द कर लाल-गारदका सगठन कर लिया। लेकिन सैनिक के तौरपर उनका सगठन अक्तूबर-क्रातिके सघर्षके समय ही हुआ, जब कि ताशकन्द-के बहुतसे मजदूर लाल-गारदमें भर्ती हो गये । लालगारदके सैनिक ओरेनबुर्गके मोर्चेपर सफेद-जेनरल दूतोफकी सेनासे भी लडने गये थे, जिसने लडाक् कजाकोको भी अपने साथ मिला लिया था।

ताशकन्दका अनुकरण करते हुये मध्य-एसियाके दूसरे शहरोमे भी लाल-गारदका सगठन हुआ। उस समय तुर्कमानियाको पारे-कास्पियान (जाकास्पिइ) कहा करते थे । पारेकास्पिया-के नगरोमे लाल-गारदका पूरी तौरसे सगठन फर्वरी १९१८ ई०में शुरू हुआ, जब कि सोवियत शासनको उखाड फेंकनेके लिये उत्तरसे कजाक और दक्षिणमें ईरानसे अग्रेजोके भाडेके सैनिक सफेद-रूसियोके मददके लिये आ पहुचे। चारजूय, तथा दूसरे पारे-कास्पियाके नगरो और स्टेशनोके मजदूर लाल-गारदमे धडाधड भर्ती होने लगे, और वह फर्वरीके अन्त (मार्चके मध्य) तक काफी शक्तिशाली हो गये। गारदने क्राति-विरोधी कजाकोको दबानेमें बडा काम किया। जब विदेशी शक्तियोका जोर भी इस प्रदेशमें देखा जाने लगा, तो ताशकन्द और दूसरे नगरो से भी लाल-गारदके सगठनकर्ता भेज गये । त० कज्लोफके अनुसार पारेकास्पियामें २० (७) दिसम्बर १९१७ ई०को बोल्शेविक पार्टीके सदस्योको सम्मिलित करके लाल-गारदकी स्थापना हुई। गारदमे यूरोपीय मजदूरोके अतिरिक्त उज्बेक, तुर्कमान, कजाक आदि स्थानीय (एसियाई) जातियोके भी मजदूर सम्मिलित थे। जनवरी १९१८ ई०मे जब मुल्लोने शासन हाथमें लेनेका प्रयत्न किया, तो उस समय ताशकन्दके एक लाल-गारदमे केवल उज्बेक स्वयसेवक सैनिक दो सौ थे। तुर्कमानियाम अवेज बेर्दी कुलियेफ-जैसे बोल्शेविकोने लाल-गारदके सगठनको आग बढाया, और दिसम्बर १९१७ ई०तक उसमें १७५ सवार तैयार हो गये। ६ दिसम्बर (२३ नवम्बर) १९१८ ई०तक तुर्कमानियाके हर नगर, हर बडे स्टेशनपर लाल-गारदके सगठन थे । इनका काम था तुर्कमान मजदूरवर्गको हथियारबन्द कर क्राति-विरोधियोसे लोहा लेना और पूजी-वादियोसे मजदूरोके हितोकी रक्षा करना। पहलेपहल उन्हे ईरानसे आये क्राति-विरोधी सैनिको और खीवाकी ओरसे आये कजाकोंसे मुकाबिला करना पडा । लाल-गारद दूतोफके कजाकोके मनोरथको भी विफल करनेमें सफल हुआ।

१९१८ई०के अन्तमें मध्य-एसियामें बोल्शेविकोकी अवस्था वहुत खतरनाक हो गई थी। रूससे यातायातका सवध टूट गया था। उस समय पारे-कास्पियामें (समाजवादी क्रातिकारी) दलका जोर था और वोल्शेविक निर्वल थे। क्राति-विरोधियोके नेता जारशाहीके पुराने सैनिक और असैनिक अफसर थे। खोकन्दके स्वायत्तियोके खतम कर देनेपर वहा वासमचियो (जहादी डाकुओ)का जोर वढा, जिसके कारण वोल्शेविक उनको दवानेमें लग पड़े, और महीनो कहीसे कोई सहायता नही मिली। यहाके कम्युनिस्तोमें अभी न उतना तजर्वा था, न अनुशासन और उनमे निम्न-मध्यमवर्गके अराजकतावादी भाव ज्यादा दिखाई पड़ते थे। लेकिन तो भी उच्च आदर्शके प्रति प्रेम और सर्वस्व-त्यागका भाव उनमें काम कर रहा था, जिसके बलपर शत्रुके कितने ही शक्तिशाली होनेपर भी वह लडनेके लिये तैयार थे। १९१८ ई०के अन्तमें मास्कोसे रेडियोग्राम आया, कि सारी पूजीवादी दुनिया—फ्रास, इगलैंड, अमेरिका आदि—ने सफेद (क्राति-विरोधी)-रूसियोकी सेनाको सक्रियरूपसे मदद देनेका निश्चय कर लिया है। वह और हथियार ही नही देगे, वल्कि अपनी सेना भी भेजेंगे। इस वेतारके तारने जहा अवस्था-की भीषणताको स्पष्ट करके सामने रख दिया, वहा यह भी वतला दिया, कि पूरी तौरसे अनुशासनकी पावदी करते हुये हथियारवन्द होकर लडना ही एकमात्र रास्ता रह गया है। उस समय वोल्शेविकोकी काग्रेस हो रही थी, जिसने निश्चय किया, कि सफेद-गारदोंसे हमें ऊपरका अनुशासन मानते हुये लडना है। अन्नका अभाव था, कारखाने वन्द थे। खैर इसका एक फायदा यह भी था, कि मजदूरोको काम नही करना था। रेलवे लाइनें भी वेकार पडी थी।

३. केर्की-काड (१९१९ ई०)

मध्य-एसिया पहुचनेके यातायातके वडे रास्तोमें एक स्थल-मार्ग ओरेनवुर्गसे होकर था, और दूसरा वाकूसे जहाज द्वारा कास्पियन पारकर वर्तमान तुर्कमानिस्तान होकर। ओरेनवुर्गको दूतोफ-ने लेकर उधरका रास्ता वन्द कर दिया था, और कास्पियनके पूर्वी और पश्चिमी दोनो तटोंपर अग्रेज आ गये थे। इस प्रकार मध्य-एसियाके वोल्शेविक केन्द्रसे विलकुल अलग-अलग अपनी लडाई लड रहे थे। उनका मुकाविला भी केवल सफेद (क्राति-विरोधी) रूसियो और स्थानीय उच्च और मध्यवर्गसे ही नही था, वल्कि अन्तर्राष्ट्रीय पूजीपतियोकी दुनिया भी उनकी शक्तिकी परीक्षा कर रही थी। वोल्शेविकोका सवसे ज्यादा वल था—स्थानीय गरीव और मजदूर जनता, जिसके हितोंके लिये वह सव तरहकी कुर्वानिया दे रहे थे। १९१९ ई०के वसन्तके आनेतक अव अमीर-वुखारा भी ज्यादा हिम्मतके साथ क्राति-विरोधियोकी सहायता करने लगा था। कास्पियनके पूर्वी तटसे आगे वढते हुये सफेद-रूसियोने आमू-दरियाके किनारे तथा वुखारासे नातिदूर चारजूयके महत्त्वपूर्ण स्टेशनको अपने हाथमें कर लिया था। लेकिन उनकी हिम्मत नहीं हुई, कि आमू (वक्षु) दरिया पारकर सीधे वोल्शेविकोपर प्रहार करें। वुखारा राज्यके भीतर वुखारा नगरसे कुछ ही मीलपर कगानका रेलवे-जकशन जारशाहीने अपने हाथमें कर रक्खा था, जो अव वोलशेविकोंके हाथमें था। सफेद रूसियोंने सीधे वुखाराकी ओर वढनेकी जगह पहले केर्कीको लेनेका निश्चय किया था, जिसके वाद वह वुखाराके अमीरसे मिलकर तुर्किस्तान-प्रदेशसे वोलशेविकोको खतम करना चाहते थे। मेर्व (वैराम अली)में कुछ उच्च अमरीकी अधिकारियोने सफेद रूसियोंने मिलकर योजना वनाई। १९१९ ई०की मईके मध्यतक उन्होने अलग-अलग टोलियों-को वनाकर उनके लिये काम निश्चित किया। ऐरापेतोफ एक टोलीका कमाडर नियुक्त किया गया, जिसे केर्कीपर अधिकार करनेका काम दिया गया। वह खर्कोफसे आकर वाकूमें सेनाके साथ शिक्षक-का काम करता रहा। इसमे पहले वह जारकी सेनामें अफसर रह चुका था, लेकिन इससे पहले कभी उसने सैनिक अभियानमें नेतृत्व नही किया था।

२४-२५ अप्रैलको कप्तान ऐरापेतोफने अपनी सैनिक टुकडी सगठित की। पैसेकी कमी थी। पैसे होके लिये तो क्राति-विरोधियोंको सिपाही मिल रहे थे। यदि केर्कीपर अधिकार

कर ले, तो अमीर-बुखारा तीस हजार रूबल देनेके लिये तैयार है, कहकर उसने लोभ-लालच दिखला पैंसठ आदमियोको इकट्ठा किया, जिनमें चार रूसी, तीन ईरानी और कुछ आर्मेनियन भी थे। अंग्रेजोंके दिये हुये हथियारोकी कमी नहीं थी। उनके साथ दो सौ बन्दूकें, काफी गोली-बारूद भी थी, इनके अतिरिक्त कुछ मशीनगनें भी थी, लेकिन तोप नही थी।

सैनिक टुकडीने सगठित हो जानेके बाद बैराम अलीसे कूच किया। पहले वह ताशके-परी फिर तख्तबाजार पहुचे। मेर्वसे अफगानिस्तानकी सीमाके पास कुश्कतक आई रूसी रेलवे लाइन पकडकर वह पहले दक्षिणकी ओर चले। तख्तबाजारसे ८ (२१) मईको, वह उत्तर-पूर्वकी तरफ केर्कीकी ओर बढने लगे। रास्ता रेगिस्तानका था। यदि ऐरापेतोफके सनिकोको रास्तेके बारेम अच्छी तरह मालूम होता, तो शायद उनमेंसे कितनोकी हिम्मत टूट जाती, लेकिन एक बार जब रेगिस्तानमें पड गये, तो पीछे हटनेका सवाल कहा था? ऐरापेतोफने उन्हे बतलाया था, कि तख्तबाजारसे केर्की दूर नही, सिर्फ तीन दिनका रास्ता है। वह नौ दिन बाद १४ (२७) मईको रेगिस्तानी रास्ता खतमकर केर्कीसे चार फर्सखपर एक बागमें ठहरे। कुछ ही समय बाद अमीर-बुखाराका अफसर नूरुद्दीन निराखुर और नासिरुद्दीन कराउलबेगी मिलने आये। केर्कीके बेग (राज्यपाल)ने सौ हथियारबन्द स्थानीय तुर्कमान ऐरापेतोफकी सेनाके लिये भेजे, और जल्दी ही सैनिक कार्रवाई करनेके लिये जोर दिया। रेगिस्तानके रास्तेसे आकर थके-मादे पडे ऐरापेतोफके आदमी अभी उसके लिये तैयार नही थे। इसपर बुखारी अफसरोकी सलाहसे ऐरापेतोफ अपने सैनिकोको लिये केर्कीसे चालीस फर्सख दूर किजिलअयाकमे चला गया। यहा डेढ़ सौ तुर्कमान सवार और आ मिले, इस प्रकार ऐरापेतोफकी सारी सेना अब तीन सौ पैंतालीस थी। केर्कीका बेग बराबर ऐरापेतोफसे लिखा-पढ़ी कर रहा था। कपासका बहुत बडा व्यापारी मलिक-कपामेंस समसोन क्राति-विरोधियोकी सहायता कर रहा था। फर्वरी (१९१७)ई० क्रातिके समय वह नगरके आर्थिक कमीशनका अध्यक्ष था, लेकिन अक्तूबरकी क्रातिके बाद वह बोल्शेविकोके साथ सहानुभूति पैदा करके अपनेको सोवियत सगठनका सदस्य बनानेमें सफल हुआ। उसने एक पत्र केर्कीके बेगके पत्रके साथ ऐरापेतोफके पास भेजा। पत्र पकडा गया, फिर समसोन भी गिरफ्तार कर लिया गया।

केर्की अफगान-सीमाके नातिदूर वक्षु नदीके तटपर व्यापारिक और राजनीतिक महत्त्वका स्थान था, जहा १८८९ ई०में जारशाहीने एक किला बनाया था। इसके व्यापारिक महत्त्वका पता इसीसे लग जायगा, कि १९१० ई०मे यहा बाइस लाख रूबलका व्यापार हुआ था। बुखाराके पासके कगान जक्शनसे करशीको एक रेलवे लाइन लाई गई थी। यह कपासकी बहुत बडी मडी तो थी ही, साथ ही अफगानिस्तानके साथके आयात और निर्यात का भी यह बहुत बडा द्वार था। यहापर दो कपास ओटनेकी मिलें भी थी। अक्तूबर-क्राति द्वारा जब ताशकन्दपर सोवियत-शासन कायम हो गया, तो यहाके गैरिसनके सिपाहियोने भी लाल झडा फहराया। मजूर और निम्नमध्यम-वर्गके लोग सोवियत-शासनके पक्षमे थे। ऐरापेतोफके आक्रमणसे पहले यहा बोल्शेविक पार्टीके सौ मेम्बर बन चुके थे।

१२ (२५) मईको केर्कीकी सोवियतको खबर मिली, कि सफेद-गारदके तीन हजार सैनिक आठ तोपो और सोलह मशीनगनोके साथ आ गये है। अगले दिन यह भी पता लगा, कि सफेद-गारदका कुछ भाग किजिलअयाकमें पहुच गया है। इसी दिन शामको सोवियतकी एक खास बैठक हुई, जिसमें प्रतिरक्षाके लिये तैयारी करनेका निश्चय किया गया। इसके लिये एक परिषद् (कलेगियो) बनाई गई, जिसका अध्यक्ष नस्तेरोफ और सदस्योमें शीरियानेत्स (सोवियत-अध्यक्ष), बवायेफ, वासिलेव्स्की और बर्जानोफ थे। बर्जानोफ युद्धके विशेषज्ञके तौरपर लिया गया। १३ (२६) मईके १० बजे अमीरके पास रहनेवाले सोवियतके रेजीडेंटके पास केर्कीसे शीरियानेत्स, नेस्तेरोफ, और लादोगोने खबर भेजी, कि अश्कावादियोकी पलटन यहासे अट्ठाईस वेर्स्तपर आ पहुची है। हो सकता है, हम आपके साथ यह अन्तिम वार्तालाप कर रहे है। जो हो सके, मदद हमारे पास भेजें। आज ही शामको युद्ध शुरू होनेकी सभावना है। बेग और

उसके अफसर उनके साथ हैं। उनकी सेनामें ७५० सैनिक, आठ तोपें और सोलह मशीनगनोंके साथ शामिल हैं। एक अंग्रेज कर्नल सेनाका कमांडर है। इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि हम विशेष सहायताकी अवश्यकता है। यदि सहायता न पहुंची, तो हम बच नहीं सकते, तो भी हम अंतिम समयतक लड़ेंगे।

उस समय केर्किके गैरिसन (छावनी)में किलेके एक सौ पचास सैनिक—सौ सवार थे। इनके अतिरिक्त नगरमें भी करीब अस्सी लाल स्वयंसेवक थे। समासोनोफ स्टेशनमें भी रेलरक्षक पचहत्तर हथियारबन्द सैनिक थे। इस प्रकार सब मिलाकर तीन सौसे कुछ ऊपर आदमी उनके पास थे।

१५ (२८) मईको सफेद-गारदकी ओरसे सोवियतको अल्टिमेटम मिला, जो जेनरल देनिकिनकी सेनाकी ओरसे भेजा गया था "भाईके खून बहानेसे परहेज करनेके लिये हम चाहते हैं, कि तुम केर्कीको समर्पण कर दो। अल्टिमेटमके बाद दो घंटेतक हम प्रतीक्षा करेंगे। जिसके बाद किलेपर गोलाबारी शुरू हो जायगी। अल्टिमेटमपर निम्न अफसरोंके हस्ताक्षर थे :—

अंग्रेजी सेनाका कमांडर कर्नल लोमकार्ट,
फ्रेंच सैनिक मिशनका अध्यक्ष कर्नल वाल्तेर,
रूसी सेनाका संचालक मेजर-जेनरल युदेनिच,
तुर्कमानी सेनाका संचालक कर्नल गर-सरदार।

अल्टिमेटमके हस्ताक्षरों और सफेद गारदकी सेनाकी बढ़ा-चढ़ाकर बतलाई संख्याको देखकर केर्कीकी सोवियतको भारी डर लगता ही था, लेकिन चाहे कुछ भी हो, बोल्शेविक किलेको क्रांति-विरोधियोंके हाथमें देनेके लिये तैयार नहीं थे। परिषद्ने हर तरहसे नगरकी रक्षा करनेका निश्चय किया, और अल्टिमेटमका जवाब देते हुये कहा—"आत्मसमर्पणकी जगह निष्कलुष रूपसे मृत्यु प्राप्त करना बेहतर है।" परिषद्ने शिनिकोफ और श्वास्कीके द्वारा पत्र भेजा। सवेरे दूकानें अभी बन्द ही थीं, तभी सोवियतके प्रतिनिधि नगरसे बाहर हो गये। उन्होंने ऐरापेतोफसे कारवासरायमें मिलने जाते ढाई सौ हथियारबन्द तुर्कमानोंको देखा। किसीने बात करते हुये बतलाया, कि सेना-संचालक लोमकर्ट है। आदमीने प्रतिनिधियोंसे बात करते ऐरापेतोफको बतलाया, कि केर्की घिर गई है, बुखारासे तारका सबध कट गया है, केर्की और करशीके बीचकी रेलवे लाइन भी काट दी गई है। तेरमिजके ऊपर पाच सौ सैनिक भेजे जा चुके हैं। हमारी भारी सेनामें अंग्रेज, तुर्कमानी, रूसी आदि बहुत-सी जातियोंके लोग हैं। जब बातें हो रही थीं, उसी समय किसी आदमीने आकर ऐरापेतोफसे कहा, कि अंग्रेज तोपखाना-अफसर सिगरेट माग रहा है। ऐरापेतोफने प्रतिनिधियोंसे बतलाया, कि सिगरेटका मतलब है सिपाही। इस प्रकार उसने प्रतिनिधियोंपर बहुत रोब डालना चाहा। उसने और बात करनेके लिये अपनी ओरसे स्तेपानोफ, उराल्स्की और मूजातिचको शीनिकोफके साथ भेजा, लेकिन श्वास्कीको जामिनके तौरपर अपने पास रख लिया। शीनिकोफने आकर बतलाया, कि सब झोंपड़ी हैं, कहीं तोप-ताप नहीं हैं। हा, अमीर-बुखाराके आदमी उनके साथ हैं। युद्ध-समितिने श्वास्कीको लौटाने तकके लिए ऐरापेतोफके दो प्रतिनिधियोंको रख लिया, फिर अल्टीमेटमका उत्तर दिया—"हम अमर प्रोलेतारियोंके पुत्र, तुम्हें सूचित करते हैं, कि सोवियत रूस और तुर्किस्तानके राज्यके सिवा हम किसी राज्यको स्वीकार नहीं करते। हम सिर्फ सोवियतकी शक्तिको स्वीकार करते, उसीकी आज्ञा मानते, और उसके लिये हम अपने खूनकी अंतिम बूंदतक देनेके लिये तैयार हैं।

केर्कीके वेगकी बहुत-सी कार्रवाइयां पकड़ी गई थीं, इसलिये १६ (२९) मईकी शामको नवा छ बजे युद्ध-परिषद्ने उसे अल्टीमेटम दे दिये, कि अफगानवादके विद्रोहियोंकी तुमने मदद दी है, और शहरके पुराने भाग तथा किलेको उनके हाथमें देनेकी कोशिश करते १५ (२८) मईकी शामको मीर आन्नुर कादिरकुलोफको पत्र देकर भेजा। दो घंटेका समय देकर बर्जानोफने तोप चलानेका हुक्म दिया। किलेकी तोपें आग बरसाने लगीं। पुराने नगरपर सत्रह गोले छोड़े गये। इसपर बुखारा राज्यपालने अपने प्रतिनिधि भेजे। तुरन्त दो तोपों, दो मशीनगनों

और तीन सौ रूसी बन्दूकोंको देना स्वीकार किया। फिर भी बेगके किलेपर चार और गोले छोडे गये, जिसपर उसने अपनी दो तोपो, दो सौ बन्दूकोको भी बोल्शेविकोके हाथमे दिया। बाकी हथियारोके बारेमें उसने कहा, कि लोगोने डरके मारे आमू-दरियामे फेंक दिया है ।

अब स्वयसेवकोकी बडी तेजीसे भर्ती होने लगी। बेगको स्वतत्र रखना खतरेकी बात समझ उसे और उसके आदमियोको गिरफ्तार करनेका निश्चय किया गया। अमीरके बहुतसे अफसर, तथा बडे-बडे व्यापारी अपने धन और परिवारको नगरमे ही छोड गावोकी ओर भागे, जिससे आसपासके तुर्कमानोको लूटका प्रलोभन हुआ। उन्होने लूटके लिये अपने दल सगठित करने शुरू किये, जिसमें सबसे पहले चाकिर, तराजा और खोजा हैरान गावोके लोग शामिल हुये। उन्होने १९ मई (१ जून)को लूट-मार शुरू कर दी। रूसी इसे क्यो बर्दाश्त करने लगे, इसपर तुर्कमानो और रूसियोमें जग छिड गई, जो दो महीनेतक चलती रही। आसपासके गावोसे चीजोका आना-जाना बन्द हो गया, नगरके लोग दिन-पर-दिन भूखे मरने लगे, न बच्चोके लिये दूध था, न लोगोके लिये खानेका सामान। तुर्कमानोने काफी रूसियोको मारा, और खुद भी उनकी काफी क्षति हुई। ३१ मई (१३ जून)को ३ बजे सवेरे तुर्कमानोपर आगे बढ कर आक्रमण करनेके लिये बोल्शेविकोकी टुकडी भेजी गई, जिसने उनको काफी नुकसान पहुचाया। अन्तमे १ (१४) जुलाईको सुलह करानेके लिये बुखाराके अमीरने ईशान सद्दूर तथा दूसरों के साथ अपने आदमी काजीबेकको बातचीत करनेके वास्ते भेजा, लेकिन उसका कोई परिणाम नही निकला। इसके बाद ४, ५, ६ (१७, १८, १९) जुलाईको तुर्कमानोने आक्रमण करके नगरपर अधिकार करना चाहा, लेकिन सोवियतकी तोपो और मशीनगनोने उन्हे मार भगाया। जुलाईके मध्य (अन्त)मे स्टीमरसे एक दूत-मडल ताशकन्द भेजा गया, जिसे बुर्दालिक गावमें तुर्कमानोने रोक लिया। फिर केर्कीमें बातचीत हुई, अन्तमे तुर्कमानोने स्टीमरको जाने दिया। अमीरबुखारा उस समय करमीनामे था। केर्कीमें बोल्शेविकोके इतने जबर्दस्त प्रतिरोध और तुर्कमानोकी हानि देखकर अमीर बुखाराके आदमी सुलह करानेके लिये १० जुलाईके १२ बजे दोपहरको केर्की पहुचे। १२ (२५) जुलाईके ७ बजे सबेरे तुर्कमानोके साथ सधिकी बातचीत शुरू हुई। इस बातचीतमें बुखाराके प्रतिनिधि थे—तोकसावा मिर्जा खोजा, मीर अखुर कारी उसमानबेक और कराउलबेगी जाहिरोफ, और तुर्कमानोके प्रतिनिधि—ईशान सदुर, ईशान उराक, मुल्ला वलीनियाज, मुल्ला बाबा और मुल्ला जूराकुल तोकसावा। १९ जुलाई (अगस्त) सधिके ऊपर हस्ताक्षर भी हो गया। तुर्कमानोने केर्कीके घेरेको हटा लिया। ३० जुलाई (१२ अगस्त)को केर्कीका बाजार खुल गया, गावोसे सब तरहकी खानेकी चीजे आने लगी।

इस प्रकार ऐरापेतोफकी बदर-घुडकीको खतमकर तुर्कमानोके खतरेसे भी अपनेको मुक्त करके केर्कीमें बोल्शेविकोने अपनी शक्ति मजबूत कर ली। २२ सितम्बर (५ अक्तूबर) को स्टीमर द्वारा चारजूयसे नई कम्युनिस्त सेना केर्की आ रही थी, लेकिन केर्कीसे पच्चीस वेर्स्तपर तुर्कमानोन फिर स्टीमरको रोक लिया। लेकिन चार घटेके बाद उन्होने उसे छोड देनेम ही खैरियत समझी। इसी साल ताशकन्दसे कुछ लाल सैनिकोके साथ तीस लाख रूबल खजाना लेकर लगोदा और शीर्निकोफ आ रहे थे, जिन्हे २५ अक्तूबर (८ नवम्बर)को उसी गाव खोजम्बाजमें तुर्कमानोने फिर रोक लिया। उन्होने हथियार और खजाना छीन बोल्शेविकोको मौतका दड दिया। चार दिन इसी स्थितिमे रहे। केर्कीके बेगपर दबाव पडा, तो तुर्कमानोने उन्हे छोड दिया। केर्कीकी क्रातिकारी समितिने इस बातका बहुत विरोध किया, कि ईरानी, जर्मन, अफगान या दूसरे आदमियोको न रोक तुर्कमान केवल रूसियोको रोकते है।

केर्की-काड (१९१९ ई०) की तारीखवार घटनायें निम्न प्रकार थी —

२४ अप्रैल (७ मई) केर्कीपर चढाईके लिये ऐरापेतोफने सिपाही जमा करने शुरू किये।
५ (१८ ") तख्तबाजारसे ऐरापेतोफकी सेना रवाना हुई।
१२ (२५ ") केर्की-सोवियतको शत्रुके आनेकी सूचना मिली।

१३ (२६ ") युद्ध-परिषद्का संगठन, और नगरकी प्रतिरक्षाकी तैयारी।
१४ (२७ ") ऐरापेतोफकी सेना केर्कीके नजदीक पहुंची।
१५ (२८ ") ऐरापेतोफने अल्टीमेटम दिया, स्वास्की और ग्रिनिकोफ बात करने गये। परिषद्ने अल्टीमेटम स्वीकार नहीं किया।
१६ (२९ ") युद्ध-परिषद्ने केर्कीवगको हथियार रख देनेके लिये अल्टीमेटम दे पुराने नगरपर गोलाबारी की।
१७ (३० ") पुराने नगरके प्रतिनिधि बात करने आये। वेग और उसके अफसरोंको गिरफ्तार करके पुराने केर्की नगरको बोल्शेविकोंने ले लिया।
१९ मई (१ जून) कजानकी सोवियत सेना समसोनोफ स्टेशनपर आई। तुर्कमानोंने केर्कीका मुहासिरा शुरू कर दिया।
२-३ (१५-१६") तुर्कमान नेताओंके साथ प्रथम बातचीत।
३ (१६ ") केर्की-सोवियतने अपनेको खतम करके सारी शक्ति युद्ध-परिषद्के हाथमें दे दी।
४-६ (१७-१८") तुर्कमानोंने आक्रमण करके केर्की नगरको लेना चाहा।
१० (२३ ") बुखारासे वोइत्केविच तथा अमीरके आदमी सुलह करानेके लिये केर्की पहुंचे।
१२ (२५ ") तुर्कमानोंके साथ सुलहकी बात शुरू हुई।
१९ जून (२ जुलाई) सुलहनामे पर हस्ताक्षर।
२८ सितम्बर (११ अक्तूबर) अपने अपराधोंके लिये बजानोफ शिरियानेत्स् और नेतेरोफको गिरफ्तार किया गया।

४. ईरानका दावा

१९०७ ई०में इंगलैंड और जारशाही रूसका जो समझौता हुआ था, उसमें दोनों राज्योंने बीचके थोड़ेसे स्थानको छोड़कर ईरानको अपने प्रभावक्षेत्रमें बांट लिया था, और बहुतसे राजनीतिक और आर्थिक सुभीते अपने लिये प्राप्त किये थे। क्रांतिके बाद सोवियत सरकारने इस तरहके साम्राज्यवादी सन्धिपत्रोंको फाड़कर फेंक दिया। २६ फर्वरी १९२१ ई०को मास्कोमें ईरानके साथ नये सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर करते हुए सोवियतने ईरानके साथ हुई अन्यायपूर्ण शर्तोंको खतम कर दिया धातु-चूनो, पेट्रोल आदिके सम्बन्धमें जो रियायतें ईरानसे जारशाहीने ली थीं, उन्हें छोड़ दिया। जुल्फा तब्रेज और दूसरी जगहोंमें जारशाहीने जो रेल्वे लाइनें बनाई थीं, उन्हें ईरानको दे दिया। उरमिया (रजाइया) महासरोवरमें चलनेवाले रूसी स्टीमरोंको ईरानके हवाले कर दिया। तेलीग्राफ, बिजली-स्टेशन, बैंकोंकी इमारतों आदिपर से भी अपना अधिकार छोड़ दिया। कुल मिलाकर प्राय सात करोड़ सुवर्ण रूबलकी अपनी सम्पत्तिको देते रूसियोंके बाह्य-राज्यमें विशेष अधिकार-को भी छोड़ दिया। एक ओर रूसके नये शासक इस तरहकी उदारता दिखला रहे थे, दूसरी तरफ बख्तियारी सामन्त समसामुस्सल्तनतके नेतृत्वमें ईरान सरकार मार्च १९१९ ई०में पेरिसके अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसमें कौरोस और दारयोशके समयकी ईरानी सीमाको फिरसे कायम करना चाहती थी। समसामुस्सल्तनत उन्हीं बख्तियारी कबीलेका सरदार था, जिसने १९१६ ई०में इंगलैंडके साथ समझौता करके ईरानके प्रसिद्ध तेल-क्षेत्रको अंग्रेजोंके हवाले किया था। इसीके शासनके समय इंगलैंडने ईरानपर पूरी तौरसे अपना अधिकार जमाया, इसलिये अंग्रेजोंकी सम्मतिके बिना वह ऐसी मांगोंको रखनेकी हिम्मत नहीं कर सकता था। उस समय एक ओर अंग्रेज जेनरल डेन्स्टरविल्की सेना बगदादसे बाकू पहुंची थी, वहां दूसरी सेनाका कर्नल रौलिसनके अधीन अश्काबाद आई थी। अंग्रेजी सेनाओंके बलपर ईरानकी मांगें यदि लंबी हो जायें, तो आश्चर्य क्या? वस्तुतः यह नई सीमा ईरानकी नहीं, बल्कि अंग्रेजी साम्राज्यकी होती। ईरान सरकारने अपने स्मारक पत्रमें मांग की—बाकू नगरके साथ सारा आजुर्बाइजान, एरेवान, नखचेवान, कराबख आदि नगरोंको साथ रूसी आर्मेनिया, दरबेंदके साथ दागिस्तान (अर्थात् प्राय सारा काकेशस) ईरानको मिलना

चाहिए। पारे-कास्पियाको लेते हुये ईरानकी सीमा आमू-दरिया, अराल समुद्र और पूर्वी कास्पियन-तट माना जाय, अर्थात् अश्काबाद, मेर्व, ग्वीवा आदिपर ईरानका अधिकार होना चाहिये। कुल मिला पाच लाख सत्तर हजार वर्ग किलोमीतर सोवियतकी भूमिपर ईरानका दावा था। ईरानने बोल्शेविकोको इतना कमजोर समझा था, और अपने सहायक पश्चिमी साम्राज्यवादियोंको इतना मजबूत, कि उसने सोवियत-शासकोके सात करोड स्वर्ण रूबलके स्वार्थ-त्यागको उनकी कमजोरी समझा ।

लेकिन ईरान और उसकी पीठ ठोकनेवाले ब्रिटिश साम्राज्यवादियोके सारे मनसूबोको मध्य-एसियाके बोल्शेविको, उनके लाल-गारद और लाल-सेनाने विफल कर दिया । रूसियोके दात खट्टे करनेवाले तुर्कमानोको यह समझनेमे दिक्कत नही हुई, कि उनके भाग्यका सितारा बोल्शेविको के साथ फिर उगनेवाला है। दूसरी जगहोकी तरह तुर्कमानोमें भी उच्चवर्ग और मुल्ला क्रांति-विरोधी सफेद-गारदोके साथ हुये, और अधिकाश गरीब जनता बोल्शेविकोके साथ । इसी जनशक्ति-के बलपर तुर्कमानियामें १९२४ ई०मे किसान-मजदूर-राज्य जातियोके आत्मनिर्णयके अनुसार एक लाख सत्तासी हजार वर्गमील भूमिपर कायम हुआ। यद्यपि इस भूमिका अस्सी सैकडा कराकुम (कालाबालू)का महारेगिस्तान है, लेकिन तेरह लाखके आबादी के लिये बाकी बीस सैकडा भूमि भी कम नही है। अब तो वक्षु (आमू दरया)को कास्पियनसे मिलानेके लिये ग्यारह सौ कलोमीतरकी जो नहर खोदी जा रही है, उसके कारण इस रेगिस्तान- का बहुत बडा भाग उर्वर भूमिमे परिणत हो जायगा। तुर्कमान घुमन्तू कबीले, और उनके लूट-पाट और लडते-भिडते रहनेके जीवनका अत हो चुका है, उनमे शत-प्रतिशत आधुनिक शिक्षा से शिक्षित नर-नारी हैं। वह जीवनके हर क्षेत्रमे बडी तेजीसे आगे बढे है।

स्रोत-ग्रंथ

१ रेवोल्युत्सिया स्रेद्नेइ आज़िइ (ताशकन्द १९२९)
२ History of civil war in U S S R (2 vols, G F Alexandrov and others, Moscow 1947)
३ La revolution russe (4 vols, C Anet, Paris 1918-20)
४ La revolution russe (Al Ular, Paris 1905)

नहीं है। फारसी भाषा अंग्रेजीसे तुलना करनेपर संस्कृतकी सगी वहन-भतीजी मालूम होती है, उसी तरह युरोपकी दूसरी भाषाओंसे तुलना करनेपर रूसी और उसकी स्लाव वहनें संस्कृतकी बिलकुल भागिनेयी और प्रभागिनेयी सिद्ध होती है। वस्तुत रूसी भाषा युरोपीय भाषाओके वर्गकी नही है, वल्कि वह संस्कृत-ईरानी भाषा-वर्गसे सबंध रखती है। १८वी सदीके आरंभतक रूसी भी अपने का युरोपसे अलग समझते थे। आज भी उनके मुखसे जब-तब अपनेसे पश्चिमके देशोको 'युरोपा' कहकर पृथक् करनेकी प्रवृत्ति देखी जाती है।

ईरानियो और हिन्दी-आर्योंका घनिष्ठ संपर्क भाषाके अतिरिक्त उनकी देवावली और पूजा-प्रकारसे भी सिद्ध होता है। रूसी भाषाका संस्कृतसे कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसके वारेमें हजारो उदाहरण हम यहा देने जा रहे हैं, इसलिये वहुत लिखनेकी अवश्यकता नही है। लेकिन मूल-भाषा और उसके बोलनेवालोंसे इतिहास-शृंखला कैसे जुडती है, इसे यहा संक्षेपमे दिखलानेकी जरूरत है।

हम आसानीके लिये उस भाषाको "प्राक्हिन्दी-युरोपीय भाषा" मान लेते है, जिसे भारत और ईरानके आर्यों और रूसी तथा युरोपीय जातियोके पूर्वज एक कवीला होनेके वक्त बोला करते थे। यहा यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है, कि भाषा बोलनेसे यह मतलव नही, कि वह अपने पूर्वजोके विशुद्ध वंशज है। मानव-जातिया स्थावर नही, जंगम हैं। कभी वह स्वयं दूसरी जातियोंके देशोंमे गई और कभी दूसरी जातिया उनके देशोमें आई। यदि भिन्न-भिन्न भागोमें भारतीय आर्योंके रक्तमे द्राविड, किरात और मंगोल जातियोका प्रचुर रुधिर है, तो युरोपकी जातिया भी प्राचीन भूमध्यीय जातियो, और रूसी जाति हूणो, तुर्कों और मंगोलोके रक्तसे वची नही है। हा, यह कहा जा सकता है, कि हिन्दी-युरोपीय-भाषा-भाषी जातियोमे उनके प्राक्-हिन्दी-युरोपीय पूर्वजोका रक्त अधिक है, परन्तु पश्चिममें यह वात केवल युरोपमें रहनेवालोपर ही लागू है।

प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जातिके निवास और कालको ढूढते-ढूढते हम नवपाषाण-युगतक पहुचते हैं। उनके आधुनिक वंशधरोकी शब्दावलीसे तुलना करनेपर इतना पता लगता है, कि अभी वह कृषिको नही जानते थे। इसका अर्थ यह भी हुआ, कि वह नवपाषाण-युगके आरंभिक कालमें थे। यह समय ईसा-पूर्व तीसरी-चौथी सहस्राब्दी या कुछ आगे-पीछे हो सकता है। मानव-तत्त्ववेत्ताओंमें इस सम्बन्धमें मतभेद है, कि प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति एसियाकी रहनेवाली थी या युरोपकी। वहुतसे विद्वान् कहते हैं, कि अंतिम हिम-युगकी समाप्तिके वहुत देर वाद एसियाकी एक जातिने युरोपपर धावा वोला और वही प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति थी। दूसरी तरफ ऐसे भी विद्वान् है, जिनका कहना है कि हिम-युगके वाद जिन जातियोका युरोपमें पता लगा है, उन्हीकी वंशज यह प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति थी।* हमे अभी इस विवादमे नही पडना है। यदि प्राक्-हिन्दी युरोपीय जाति एसिया—मध्य-एसिया—से यूरोपमें गई, तो उसकी पूर्वी शाखा गोवीकी मरुभूमिसे कार्पाथीय पर्वतमालातक फैली हुई थी। पीछे इसके विभाग हुये—आर्य और शक। आसानीके लिये हम पूर्वी शाखाको 'शत वंश' या 'शकाऽऽर्य' कह लेते है। पश्चिमी शाखा 'केन्ट' या पश्चिमी युरोपीय जातियोके पूर्वज थे। लेकिन यहा हम यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि हालकी ख्वारेज्म (निम्नवक्षुनदी)की खोजोने वतलाया है, कि वहाकी संस्कृति सिन्धु-उपत्यकाकी संस्कृतिसे सम्बद्ध थी, अर्थात् सिन्धु-उपत्यकाकी जाति और प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जातिकी सीमा अराल-समुद्र और सिर-दरिया थी।

यदि हम यह मान ले, और जिसकी संभावना भी अधिक है, कि प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति हिम-युगके वादकी युरोपीय जातियोसे निकली थी, तो उसके विचरण-स्थानकी सीमा वोल्गा या एम्वा नदी रही होगी, अर्थात् विशाल 'भूम्वे बयावान' (कजाकस्तान)से पश्चिम ही। इसी विशाल

* 'स्केलेटेन रिमेन्स आफ अर्ली मैन' (हर्द्लिच्का), स्मिथसोनियन् मिसलेनियस् पब्लिकेशन जिल्द ८३ (१९३०) पृष्ठ ३४७-४९

भू-भागके पूर्वीय अशमें पूर्वी शाखावाले शकार्य रहते थे। शकार्य-काल में भी सस्कृतिके तलमे बहुत अन्तर नही पडा था। कृपिकी सभावना कम है। शिकारके साथ पशुपालन भी वह करते थे। समाज जन-सत्ताक था, यानी व्यक्तिकी जगह जनकी प्रधानता थी।

शकार्य जातिका सम्मिलित वासस्थान कार्पाथीय पर्वतमालासे पूरब रहा होगा, जिसके पूर्वमे आर्य रहा करते थे और पश्चिममें शक। जनसख्याकी वृद्धि या प्राकृतिक विपत्तिके कारण शको और आर्योमे सघर्ष हुआ। परिणामत आर्योंको अपना मूल स्थान छोडना पडा। उनका एक भाग कास्पियनके पश्चिम काकेशस पर्वत-मालासे होते क्षुद्र-एसिया (तुर्की) और उत्तरी ईरानके तरफ बढते असीरियाके सभ्य देशकी सीमापर पहुचा, और दूसरा भाग कास्पियनसे पूरबकी तरफ अराल समुद्रके किनारे होते ख्वारेज्मकी भूमिमें पहुच वहाकी सभ्यताके सम्पर्कमे आया। काकेशससे होकर जानेवाले आर्योंका पता हमें ईसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दीमे वोगजकुई (अकराके पास)मे मितन्नी आर्योके अभिलेखसे मिलता है। यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि इसी सहस्राब्दी में हिन्दी-युरोपीय ग्रीक ग्रीस देशमें दाखिल हुए।

अराल-समूद्र और ख्वारेज्ममें पहुचे आर्योंका वहाकी सस्कृत जातिसे सघर्प हुआ होगा, इसमें सदेह नही। ख्वारेज्मकी सभ्य जाति उसी तरह घुमन्तू आर्योंके समक्ष नतमस्तक हुई, जिस तरह हजार वर्ष बाद ईसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दीमे हिन्दी आर्योंके सामने सिन्धु-उपत्यकाकी सस्कृत जाति परास्त हुई, और वहा आर्योंका अधिकार जमा। शकोसे आर्योंके प्रथम अलग होनेका काल ईसा-पूर्व ३००० वर्षके आसपास था। आगे मध्य-एसियामे आर्य कस्पियनसे पामीर तक फैल गये। वक्षु (ख्वारेज्म) सभ्यताने उन्हें कृषि और सस्कृतिकी दूसरी बातें सिखलाईं। आगेके लिये यह भूमि आर्यो का बीजस्थान (आर्याना बेइजा) बन गई। ईसा-पूर्व २५०० के आसपास आर्योंके भाई—शक सख्या-वृद्धि, दैवी उत्पात या अच्छी चरागाहोकी भनक पा पूरबकी ओर बढे। सभव है, अराल-समुद्र और सिर-दरियाके उत्तरके पशुपाल आर्य-जनोसे उन्हें लडना पडा हो। कुछ भी हो, वह धीरे-धीरे पूरबमें बढते त्यानशान् और अल्ताईकी उपत्यकाओको लेते गोबी और क्विनलुन् पर्वतमालातक पहुच गये।

ईसा-पूर्व १५०० मे तरिम, इली और चूकी समृद्ध उपत्यकायें शकोके निवासस्थान थे। सभव है, वहा वे कुछ खेती भी करते हो, अल्ताईकी खानोसे सोना तो वह जरूर निकालते थे। लेकिन शक अपनी जीविकाके लिये मुख्यतया निर्भर थे पशुओपर—घोडा, गाय और भेडे उनके मुख्य धन थे, ऊटोसे उनका प्रेम न था। इस प्रकार ईसा-पूर्व १५ वी सदीमें गोबीसे कारपाथीय-पर्वतमालातक शक-जातिका वासस्थान था। ईसा-पूर्व ६ठी सदीमें ग्रीक इतिहासकार दुनाइ (डैन्यूब)के उत्तर तथा अराल-तटपर शको (स्कुथ, सिथ)के होनेकी बात करते हैं। ईसा-पूर्व ६ठी सदीमें ईरानी शाहशाह कोरोसको शकोसे बचनेके लिये दरवन्द (बाकूसे उत्तर)की किलाबदी करनी पडी थी। सिर-दरियाके किनारे भी उसे शकोसे लडना पडा था और एक शक योद्धाके हाथ ही घायल होकर उसे मरना पडा। ईसा-पूर्व ४थी सदीमें अलिकसुन्दरको दुनाइ और सिरदरियाके तटपर फिर शकोंसे मुकाबला करना पडा। इस तरह स्पष्ट है, कि ईसा-पूर्व २००० से अलिकसुन्दर (सिकन्दर)के समयतक कारपाथीय पर्वतमालासे गोबीतककी भूमि शक घुमतुओकी विचरण-भूमि रही, और यही महाशक-द्वीप था। यह भी स्मरण रखना चाहिए, कि अराल समुद्रके पास मगेसगेत् (महाशक) नामकी एक शक जाति का वर्णन हेरोदोतने किया है। ई० पू० २०६ मे जब कि ग्रीक-बाल्हीक राजा युथिदेमोने सिर-दरियापर चढाई की थी, उस वक्त भी वहा शक लोगो हीका निवास था। कितने ही पश्चिमी विद्वानोका विचार है, कि वहा (महाशकद्वीपमें) रहनेवाली शक जाति वस्तुत एक जाति नही थी, अर्थात् वह भिन्न-भिन्न भाषाए बोलते थे, और उनके रक्तमे भी भिन्नता थी। भिन्न-भिन्न भाषाका मतलब यदि यह है, कि उनमे कई बोलिया थी, शब्दोके उच्चारणमे कुछ अतर था, तो इसमे किसीको आपत्ति नही। किन्तु यदि इसका यह अर्थ है, कि वहा 'शतम्' वशकी भाषासे बिलकुल ही अलग, अथवा हिन्दी-युरोपीय भाषासे भी बिलकुल अलग भाषा बोलनेवाले कबीले रहते थे, और रक्तसे भी वे शकार्य या हिन्दी-युरोपीय जातिसे भिन्नता रखते थे, तो इसके लिये कोई आधार नही है। वस्तुत भाषाके

मामूली स्थानीय भेदके साथ भी इस सारे महाशक-द्वीपमें शक जातिका अक्षुण्ण आधिपत्य १७२ ई० पू० तक रहा।

गोबीसे उत्तर, और पूरबमें मगोल-वशीय जातिया निवास करती थी, जिनमें सिन् (चीनी) और हूणका इतिहासमे सबसे पहले नाम आता है। २५० ई० पू०मे तूमन् शन्-यूके नेतृत्वमें हूण बहुत प्रवल हुये और चीनको उनके सामने झुकना पडा। ये हूण—जिनके ही वशज पीछे चिंगिज खाके मगोल थे—आधुनिक मगोलियामें रहा करते थे। इनके आतक और आक्रमणोंके मारे चीनी परेशान थे और इसीलिये उनसे बचनेके लिये विश्वविख्यात चीनकी दीवार बनी। हूणोके पश्चिमी पडोसी शक थे। तूमन शन्-यूके बाद उसका पुत्र माउ-दुन् हूणोका राजा हुआ, और वह १८३ ई० पू०में मौजूद था। इसने चीनको कई बार बुरी तरह परास्त किया, और उससे अपनी शर्तें मनवाईं। इसके समय हूण राज्य पश्चिममें अल्ताईतक पहुच गया, और पूर्वमें कोरियातक। अल्ताई और बलखाश्से पूर्वके शकोने माउ-दुन्की अधीनता स्वीकार की, और शायद इससे पहले ही बापके समयमें ही अल्ताईके उत्तरकी सोनेकी खानें हूणोके हाथमें चली गई थी। सभव है, अब भी वहा काम करनेवाले शक ही रहे हो। जो भी हो, माउ-दुन्ने शकद्वीपके कुछ भागपर अधिकार करके भी उसने अपनी तरहके घुमतू शकोंके उच्छेद करनेकी अवश्यकता नही समझी। उसके पुत्र ची-युइ (मृत्यु १६२ ई० पू०)ने शकोके साथ पिता जैसा बर्ताव नही करना चाहा और उसने १७२ ई० पू०में शकोके उच्छेदका काम शुरू किया। उसने तरिम्-उपत्यकामे बस गये शको (यू-ची)के राजाको मारकर उसकी खोपडीका मद्य-चपक बनाया। इस समयसे शको और हूणोका सघर्ष शुरू हुआ, और शकद्वीपके पूर्वी भागमें खलबली मच गई। शक अपने पुराने स्थानको छोडकर दक्खिनकी तरफ भागने लगे। दक्खिनकी तरफ भागनेवालोंमें सबसे पहले थे यू-ची, जिन्होने ई० पू० १३० में बाख्तर (बलख)मे ग्रीक-बाल्हीक राज्यको समाप्त कर अपने राज्यकी स्थापना की, और इस तरह हिंदुकुशतकका भूभाग शकोके हाथमें चला गया।

हूणोके दक्षिणी पडोसी चीनी उनसे तग आये हुये थे। हूण उन्हे दुधार गाय समझते थे, और चीनी किसान एव शिल्पी जो कुछ धन जमा करते, हूण सवार आक्रमण कर लूट ले जाते। जब हूणोका शकोसे भी सघर्ष हो गया, तो उनसे मिलकर एक साथ हूणोपर आक्रमण करनेके लिये चीनने अपने एक सेनापति और महापर्यटक चाङ-क्यान्को १३८ ई० पू०में शकोके पास दूत बनाकर भेजा। चाङ रास्तेमें हूणोके हाथमे पड गया और दस सालतक उनका बदी रहा। इस वक्त त्यान्-शाङ और अल्ताई पर्वत-मालाओके बीच इली-उपत्यकामें वू-सुन् शक रहा करते थे। किन्ही-किन्ही विद्वानोका कहना है, कि वू-सुन् कुषाण शब्द हीका चीनी रूपान्तर है। जब वू-सुनोने १२८ ई० पू० में हूणोसे अपनेको स्वतत्र कर लिया, तो चाङ-क्यान्को मुक्ति मिली और वह फर्गानाके रास्ते सिर-तटपर खोकद नगरमें पहुचा। वह पहला चीनी यात्री था, जिसने इन देशो और निवासियोका सुदर वर्णन किया, जिसका पीछेके दूसरे चीनी यात्रियोने अनुकरण किया। चीनने यू-ची सरदारोंसे मिलकर उन्हें चीनके सहयोगसे पश्चिमकी तरफसे हूणोपर हमला करनेके लिये प्रेरित किया। लेकिन यू-ची इसके लिये तैयार नहीं हुये। उन्हें अपना देश छोडे ३० सालसे अधिक हो गया था। यद्यपि वह अब भी सोग्द, तुषार और बाख्तरमें घुमतू जीवन ही बिता रहे थे, लेकिन उनके लिये नगरो और गावोंके रहनेवाले सोग्दी (ताजिक) सारी भोग-सामग्री जुटाते थे। यद्यपि चाङ शकोको हूणोके विरुद्ध नही कर सका, तो भी चीनने अपने ही बलपर एक विशाल सेना हूणोके विरुद्ध १२१ ई० पू०में उनकी भूमि (आधुनिक मगोलिया)पर भेजी। चीनियोकी भारी विजय हुई, लेकिन घुमतू जातियोपर विजय टिकाऊ नही हुआ करती। पीछे फिर हूण लूट मार करने लगे। लौटते वक्त चाङ-क्यान् फिर एक साल हूणोका बदी रहा। उसने चीन-सम्राट्से सारी बात सुनाते हुये जे-चुआनके रास्ते भारतसे सबध स्थापित करनेके लिये कहा। चीन-सम्राट्ने फिर उसे इली-उपत्यकाके वू-सुन् शकोके पास साथ मिलकर हूणोपर आक्रमण करनेकी बात करनेके लिये १२१ ई० पू०में भेजा।*

*देखो जिल्द १, हूण भी।

साथ-साथ यू-चियोने भी अतमे (चाङ-क्यान्) की मृत्युके दो वर्ष बाद) चीनकी अधीनता स्वीकार की। यही समय है, जब कि शक-राजाओने चीनी उपाधि 'देवपुत्र' धारण की ।

माउ-दुन्से परास्त यू-चियोने लोबनोरके तटको छोड भागकर बाख्तरके ग्रीक-राज्यको हाथमे ले लिया था, लेकिन वह उतने हीसे सतुष्ट नही हुये । सीस्तान (उन्हीके नामसे शकस्तान) और बिलोचिस्तान होते ११० ई० पू०में सिंध पहुचे, फिर धीरे-धीरे समुद्र-तटके भागपर अधिकार करते ई० पू० ८० मे तक्षशिला और गाधारके स्वामी बन गये, और उन्होने एक शताब्दीसे जड जमाये यवन-राज्यका उच्छेद कर दिया। इससे पहले ८७ ई० पू० मे यू-ची काबुलको भी ले चुके थे । यु-ची सरदार मोग भारतका प्रथम शक राजा था। ११०-८०ई०तक गुजरातभी शकोके हाथमें चला गया था। ६० ई० पू०तक मथुरामे भी शक-छत्रपी कायम हो गई। मोग (Maus) की मृत्यु ५८ ई० पू०मे हुई, जिसके बाद शकोके भिन्न-भिन्न कबीलोमे झगडा हो गया और राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। तब शकोके कुषाण कबीलेके यवगू (सरदार) कजुल कद्फिस् I की शक्ति बढी । उसने हिंदुकुश पार हो बाख्तर और तुषारपर भी अधिकार कर लिया। कजुलके पुत्र वीम कद्फिस् द्वितीय (७५-७८ ई०), ने सारे उत्तर भारतको जीता ।इसीका पुत्र 'वसीलेउस् वसीलेउन् कनेर् कोस्'(राजाधिराज कनिष्क)हुआ जिसने शक-सवत् चलाया और ७८-१०३ ईसवीतक राज किया। इसके सिक्के अराल-समुद्रसे बिहार तक मिलते हैं। शकोमे यह सबसे बडा राजा था। इसे बौद्ध धर्ममे नये तौरसे दीक्षित होनेकी अवश्यकता नही थी, क्योकि यू-ची शकोकी मूल-भूमि तरिम्-उपत्यकामें ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीमें ही बौद्ध धर्म पहुच चुका था और शक ही नही, हूण सामन्तोमें भी बौद्ध धर्मके माननेवाले थे।

शकोके भिन्न-भिन्न कबीले ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीमे इस प्रकार थे–(१) लोब्नोरके आसपास यू-ची, (२) इली-उपत्यकामें वू-सुन्, (३) इस्सिक्कुल् झीलके तटपर सइ-वाङ, (४) ऊपरी तरिम्-उपत्यकामें—जहा आजकल काशगर्-यारकन्द् नगर है,—मे कस या खश, (५) मध्य सिर-दरिया तटपर शक, (६) सिर-दरियाके मुहाने तथा अरालके पश्चिमी किनारेपर भी मसगेत (महाशक) रहते थे। जान पडता है, काशगरवाले कश नामी शकोका ही एक उपनिवेश काश्मीरमें था, जिससे उसका यह नाम पडा। उधर हूण और चीनका द्वन्द्व जारी रहा। अतमें ईसवी प्रथम शताब्दीके मध्यमें हूण चीनके प्रहारसे जर्जर होकर उसकी अधीनता स्वीकार करनेको मजबूर हुए। इसपर सारा हूण-जन उत्तरी और दक्षिणी दो भागोमे विभक्त हो गया। यद्यपि विभाजन अधीनता स्वीकार करनेके विरुद्ध ही हुआ था, किन्तु स्वतत्रतावादियोके लिए वह बहुत महगा पडा। चीन और अपने भाइयोकी सम्मिलित शक्तिके सामने अब निर्बल हो गये और ७३ ई०मे उत्तरी हूणोका पश्चिमाभिमुख महा-अभियान आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे शकद्वीपसे शकोको हटाकर वह उनकी जगह लेने लगे, लेकिन सिर-दरियाके दक्खिन उन्होने हाथ नही बढाया। ३७० ई० मे अराल और काम्पियन-तटपर रहनेवाले आलानोका उन्होने ध्वस किया—यह भी शकोका ही एक कबीला था। ३७५ ई०में अपने सरदार बालामेरके नेतृत्वमे दोन–तटपर पहुच उन्होने माओस्त-गत (जाट)को छिन्न-भिन्न किया। फिर दनियेपर पहुच गाथोका ध्वस किया। आगे भी उनका प्रभुत्व बढता ही गया और हूण-सरदार अत्तिला (मृत्यु ४५३ ई०)के समय मध्य-दुनाइ (डैन्यूब) तक हूणो के हाथमें आ गया।

मगोलियासे आरम्भ हो मध्य-दुनाइतक पहुच गये पौने पाच सौ सालके इस भयकर हूण-तूफानने सबसे अधिक क्षति शकोको पहुचाई, और वोल्गासे गोबीतकके शकद्वीपको शकोसे खाली करवा लिया। सबसे आखिरमे शकद्वीप छोडकर भागनेवाले शक हेफ्ताल थे, जिन्हें गलतीसे भारतमें हूण और पश्चिममें श्वेत-हूण कहा जाता है। ३६० ई०मे हूणोके एक कबीले अवार (ज्वेन्-ज्वेन्)ने शक्ति सम्पन्न हो पश्चिमकी ओर बढना शुरू किया। इन्हीके प्रहार से उत्पीडित हो हेफ्ताल भगे और धीरे-धीरे ४२५ ई०में उन्होने सारे मध्य-एसियाको सिर-दरियासे हिन्दुकुशतक लेकर अपने पूर्ववर्ती कुषाण-राज्यका उच्छेद किया। इनका सगठन कबीलाशाही था, किन्तु सरदारोका बहुत प्रभाव था। किदार इनका प्रथम महान् नेता था। इसीके नामसे

हेफ्तालोका दूसरा नाम किदारीय हूण पडा। यहा यह स्पष्ट हो जाता है कि हेफ्तालो (किदारियो) का नाम हूण इसीलिये पडा, कि वह हूणोके शासनमें चिरनिवासके बाद वहासे भागकर आये थे। किदारका पुत्र ४५५ ई०में श्वेत हूणोका राजा था। सभवत इसीका पुत्र तोरमान था, जिसने ग्वालियर और सागर-दमोहतकको जीत लिया था। ५०२ ई०में इसकी मृत्युके बाद इसका पुत्र मिहिरकुल राजा बना। मिहिर मित्र(सूर्य)का ही प्राचीन फारसी रूप है मित्र—मित्र > मिथ्र > मिहिर। पीछे शकद्वीपियोंके प्रयाससे मिहिर भी उसी प्रकार शुद्ध सस्कृत बन गया, जिस प्रकार शक-द्वीपीय ब्राह्मण शुद्ध भारतीय ब्राह्मण बन गये। कुल—यह हूणी शब्द गुल या ग्युलका अपभ्रंश है, जिसका अर्थ राजकुमार या दास होता है। तोरमान ने ग्वालियरमें सूर्य-मन्दिर बनवाया था, यह उसके शिलालेखसे पता चलता है। मिहिरकुलने मगधपर आक्रमण किया था, किन्तु मगधराज बालादित्यने उसे बुरी तरह हराया। ५३२-३३ ई०के आसपास मालवाके विजयी राजा यशोधर्मा विक्रमादित्यने मिहिरकुलको हराकर उसे कश्मीरकी ओर खदेड दिया। हूण नामसे प्रसिद्ध, किन्तु वस्तुत शक मिहिरकुल अतिम शक राजा था, जिसे भारतीय इतिहास जानता है। हेफ्तालोकी राजधानी बुखाराके पास वरख्शा में थी, जहा हालकी खुदाईमें कितने ही भारतीय शैलीपर बने भित्तिचित्र मिले है।

हमने शकोको ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीके आरम्भमें गोबीसे कारपाथीय-पर्वतमालातक अपने महाशकद्वीपमे बसे देखा। फिर उनकी एक शाखा यू-चीको मध्य-एसिया, तुषार, सीस्तान, सिन्ध, काबुल, तक्षशिला होते मथुरा और उज्जैनतक फैलते देखा। फिर यू-चीकी एक शाखा कुषाणोको कनिष्कके रूपमें अराल-समुद्रसे बिहारतक राज करते पाया और अतमे फिर तोरमान और मिहिरकुलके रूपमे शकद्वीपसे सबसे पश्चात् निकले 'श्वेतहूण' नामधारी शकोको मगधतक धावा मारते देखा। शकोके सबसे प्रबल जातीय देवता सूर्य थे। मिहिरकुल (सूर्यदास')का नाम भी इसी बातका परिचायक है।

शकद्वीपीय ब्राह्मणोके उद्गमके बारेमे यह सर्वमान्य कथा है, कि वह शकद्वीपसे आये और सूर्यपूजा उनका मुख्य कार्य था। शकद्वीप कहा था, इसे ऊपरके वर्णनसे अच्छी तरह समझा जा सकता है—अर्थात् वह गोबीसे वोल्गा और, पश्चिम कारपाथियातक फैला शकोका-मुख्य निवास था। दक्षिणकी ओर भारततक भागकर आनेवाले शक पूर्वीय-शकद्वीपके थे।

शकद्वीपी ब्राह्मण और सूर्य-पूजाका घनिष्ठ सम्बन्ध है, इससे शक-द्वीपियोकी सारी परम्परा सहमत है। शकद्वीपी-प्रधानतावाले इलाकोंमें अधिकाश सूर्य-मूर्तिया द्विभुज मिलती है। इनके कन्धेके ऊपर सिरकी दोनो तरफ सूर्यमुखीके फूल कुछ असाधारणसे जरूर मालूम होते हैं, क्योकि भारतीय परम्परामें सूर्यमुखी फूलका कोई स्थान नही। लेकिन आश्चर्यकी बात तो यह है, कि सूर्यके पैरोमें दो बूट होते है—बूटधारी हिन्दू देवता दूसरा कोई नही, और, यह बूट भी घुटनोतक पहुचते है। इसकी व्याख्या करते पडित लोग कहते है, सूर्यके चरणके दर्शनसे आदमीका अमगल होता है, इसीलिये सूर्यके पैरोको ढाक दिया गया है। परन्तु उसे बूटसे ही ढाकनेकी क्या अवश्यकता ? और, फिर वही बूट हमें मथुरासे मिली कनिष्क-प्रतिमाके पैरोमें दिखाई पडता है। यहा कनिष्क, शक, सूर्यमूर्ति और सूर्यपूजक शकद्वीपी ब्राह्मणोका पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। साथ ही यह भी जानना कुतूहलजनक होगा, कि आज भी रूसी लोग जाडोमें उसी तरहके घुटनेतकके बूटों को पहनते है, जिन्हे कि हम कनिष्क और सूर्यकी प्रतिमाओंके पैरोमें देखते है।

इस समानताका क्या कारण है ? इसके लिये आइये, हम शकद्वीपमे रह गये शकोकी सुध लें। हूणोंने वोल्गासे पूरबके शकद्वीपको शकोंसे खाली करा लिया और वोल्गासे मध्य-दुनाइ (डैन्यूब) तक भी वह अपनी एक चौडी पट्टी खीचते चले गये। इन्ही हूणोके वशज तुर्क, उइगुर और पीछे मगोल हुए। फिर ५५७ ई०के लगभग तुर्कोंने मध्य-एसियासे अवारों (हेफ्तालो)का राज्य खतमकर वहा अपना अधिकार जमाया और पीछे तो मध्य-एसियामें न शकोका नाम रहा, न आर्यवशी सोग्दो (थोडेसे ताजिकोको छोडकर) का।

लेकिन, वोल्गासे पश्चिमकी कहानी दूसरी है। दोन और द्नियेपर तटपर जिन जातियोंका हूणोने ध्वस किया, वह शक-वशकी थी। ईसाकी ४थी-५वी सदीमे-मध्य द्नियेपर और क्रिमिया-मे शकोके बहुत-से पुराने नगर-ध्वस मिले हैं। यद्यपि उत्तरके घने जगलोमें अब भी घुमन्तू शक पशुपाल रहा करते थे, लेकिन द्नियेपर और क्रिमियाके तटपर वह गावो और शहरोमे रहने लगे थे, और ग्रीक सभ्यतासे बहुत प्रभावित हुए थे। हूणोने अपनी ध्वस-लीला मचाकर सभ्यताकी इस प्रगतिमें वाधा डाली। ६ठी सदीमें हम पश्चिमी शकोके कबीलोमे वेन्द (वेनेत्), अन्त, स्लाव, और सरमात् नामके कबीले पाते हैं। अकदमिक् देर्झाविनके अनुसार इनमे पहले तीन एक ही जातिके नाम थे, और सरमात् भी शकोकी ही जाति थी। आगे चलकर पश्चिमी शकद्वीपके ये सारे शक स्लावके नामसे मशहूर हुए।

शकोकी पुरानी नगरियोकी खुदाईमे निकली चीजें भी बतलाती है, कि आधुनिक स्लाव उन्हीके वशज हैं। शकोके रेखाचित्र, दीवार और पात्रोके अलकरण अभीतक उक्रइनके गावोमे प्रचलित हैं। उनके आभूषण रूसी किसानोमें तबतक प्रचलित थे, जबतक कि उनमे पश्चिमी सभ्यता भीतरतक नहीं घुस गई। उनके गोखरूवाले सोनेके कुडल और हसलिया तो आजके भारतमे भी देखी जाती है। लेकिन जैसा कि ऊपर कहा, हूणोंके तूफानने काकेशस और कालासागर तटसे शकोका सबध तोड दिया। अब वहा हूण कबीले पशु-चारण करने लगे। यही हूण कबीले पीछे पेचेनगा अथवा वोल्गा-तटपर बोल्गार, काकेशसके पास खजार (काजार) आदि नामसे मशहूर हुए। हूण-उपद्रवके कारण शक अपनी दक्षिणी भूमिसे ही वचित नही हुए, बल्कि उनका उन्मुक्त सभ्यता-प्रवाह भी रुद्ध हो गया, और एक बार फिर वे केवल घुमन्तू-जीवन वितानेपर मजबूर हुए। इतना ही नही, इसी परिवर्तनके साथ शक या स्किफ नाम भी इतिहाससे लुप्त हो गया और आगे हम अन्त, वेन्द नामवाले कबीलोको पाते है। अरबोके प्रभावसे जिस तरह ८वी शताब्दीमें पहुचते-पहुचते सारा ईरान और मध्य-एसिया मुसलमान हो गया, इसी तरह खजार, बुल्गार आदि हूण-जातियोने भी इस्लाम स्वीकार किया (बुल्गार आजकल चुवाश के नामसे पुकारे जाते हैं, उनका आजकलके बुल्गारिया देशसे कोई सबध नही। बुलगारियावाले स्लाव है, जब कि वोल्गावाले बुल्गार हूण-वशज)।

अभी भी रूसी ईसाई नही हुए थे, और बहुतसे पुराने देवी-देवताओको मानते थे, जिनमे सूर्य सबसे बडा देवता था। सूर्यके एक खास पर्वपर वे लोग घीमें पके लाल चीले उसी तरह खाते थे, जैसे बिहारमें आज भी कार्तिककी सूर्य-षष्ठीके दिन लाल ठकुआ खाया जाता है। आज भी यद्यपि उस दिन रूसी लोग मीठे चीले खाते हैं, पर अब उनमे पुराने धर्मका माननेवाला कोई नही है। ९वी शताब्दीके एक अरब पर्यटकने वोल्गाके किनारे खरीद-बेचके लिये आये रूसियोको देखा था। वहा एक रूसी मर गया। लोगोने लकडीकी चिता बनाई और पतिके साथ पत्नी भी सती हो गई।

आगे चलकर इन सभी शक कबीलोका स्लाव (स्क्लाव <शकल) या श्रव नाम पड गया। जिस तरह हमारे यहा उपनिषद्-कालमे सोमश्रवा आदि श्रवान्त नाम बहुत होते थे, उसी तरह स्लावोमें स्लावान्त (स्वेत-स्लाव, व्याचिस्लाव) नाम अब भी होते है—मोलोतोफका नाम व्याचिस्लाव है। स्लाव जाति आज दो भागोमे विभक्त है—(१) पश्चिमी स्लाव जिनमे पोल, चेक और स्लावक है, और (२) पूर्वी स्लाव, जो दक्षिणी और उत्तरी दो भागोमें विभक्त हैं। दक्षिणी स्लावोमें बुलगर, सर्ब और क्रोवात (क्रोत) सम्मिलित है और उत्तरी स्लावोमे रूसी, उक्रइनी तथा वेलोरूसी हैं। पोल-चेक् भाषाओका रूसीसे उतना ही अतर है, जितना अवधीका बगलासे। दोनो एक-दूसरेकी भाषाको कुछ कठिनाईसे समझ सकते है। रूसी-उक्रइनी भाषाए भोजपुरी और मैथिलीकी तरहकी है, और रूसी-बुलगारीमे उतना ही अतर है, जितना मैथिली और अवधीमें। सारे पूर्वी स्लाव एक-दूसरेकी भाषा समझ सकते हैं। पश्चिमी स्लावोके उच्चारणमें अतर कुछ अधिक हो गया है, जिससे वे एक-दूसरेकी भाषाको सुगमतासे नही समझ सकते।

स्लावोमें सबसे पहले बुलगारोने सभ्यतामे सबध स्थापित किया और ग्रीसके ईसाइयोके सपर्क में आ ईसाई-धर्मको स्वीकार किया। छठी-सातवीं सदीमें हुगर या मजार (अत्तिलाके हूणोके वशज)

के वलको तोडनेमे बुलगारोने बहुत काम किया, और वे बढते-बढते ग्रीसके पडोसी बन गये । यद्यपि उन्होंने ग्रीसको सास लेनेकी फुर्सत दी, किन्तु स्वय काटेकी तरह चुभने लगे । लडाकू घुमन्तुओको पालतू बनानेके लिय सस्कृतिमें उन्नत धर्म बहुत अच्छे साधन होते है । बुलगारोपर भी ग्रीसने वही शस्त्र चलाया । स्लाव जातिओका सबसे प्राचीन लिखित साहित्य बलगारियाकी भाषामे ही मिलता है । उस वक्त पश्चिममें ईसाई-धर्म रोम और ग्रीक दो सम्प्रदायोमें विभक्त हो चुका था । दोनो सम्प्रदायोमें जहा क्रिया-कलाप और मतमतातरका कितना ही अतर था, वहा दोनोकी लिपिया भी अलग थी । लिपिहीन असभ्य जातिया जिस चर्च (सम्प्रदाय)से धर्मकी दीक्षा लेती, उसीकी लिपिको स्वीकार करती है । स्लाव-जातियोमें पोल, चेक, स्लावक यानी सारे पश्चिमी स्लाव तथा पूर्वी स्लावोमे क्रोवात रोमन-चर्च द्वारा ईसाई बनाये गये, इसलिये उन्होंने रोमन-लिपि स्वीकार की । वाकीने ग्रीक चर्चका अनुयायी बन ग्रीक-लिपि स्वीकार की ।

बुलगारियाके ईसाई होनेका यह मतलब नही था, कि सारे पूर्वी स्लाव भी जल्दी ही ईसाई बन गये । स्लावो की मूल भूमिमें अब भी पुराने देवी-देवताओका जोर था । ये उस समय बहुत लडाके भी थे । हूणी कबीलोका जब-जब प्रहार ग्रीसपर होता, तो वह स्लावोसे मदद मागता । क्रिमियामें ग्रीक लोगो की बहुत-सी व्यापारिक बस्तिया थीं और यहा हर वक्त उनका हूण-वशज पेचेनगोसे झगडा रहता था । अभी इन स्लावोमे राजा नही थे, कबीलाशाहीका जोर था । सारा काम जन-सभा (वेचे) कबीले का जिर्गा करता था । लेकिन जैसे-जैसे बाहरके राज्योसे लडने-भिडने और लूट-पाटकी प्रवृत्ति बढती गई, वैसे-ही-वैसे सरदारोका अधिकार बढा ।

९वी सदीके अन्तमे एक स्वीडिश राजकुमार रूरिक् आकर उनका शासक बन गया । रूरिक्के पुत्र ओलेग (९११ ई०) और ईगर (९११-५७ ई०)ने अपनी लडाकू प्रजाको खूब सगठित किया और दूर-दूरतक विजय-यात्राए की । ईगरने काकेशसके खजारोके खान और ग्रीस (बिजन्तीन)के सम्राट दोनोको नतमस्तक किया । ग्रीकोने उसे एक किला और बहुत सा धन क्षतिपूर्तिके तौरपर दिया, साथ ही सन्धिद्वारा ईगरको वचनबद्ध किया, कि तुर्की घुमन्तुओके आक्रमणके वक्त वह ग्रीक-साम्राज्यकी रक्षा करेगा । ईगरने अपनी शक्ति बहुत बढाई । उसका पडोसियोपर बहुत आतक रहा । ईगर के पुत्र स्व्यातोस्लाव (९५७-७३ ई०)ने पिताकी शक्तिको और आगे बढाया । उसने हूणी बुल्गारोके वोल्गा-तटवर्ती तथा उनके मधवर्ती चेर्कासोके कूबन-तटीय नगरोको लूटा, और अपने पूर्वज शकोके खोये काला-सागर-तटपर फिर प्रभुत्व जमाते हुए किर्चको एक शक्तिशाली राज्यकी राजधानीमें परिणत कर दिया । स्व्यातोस्लाव जब विजय-यात्रा करते (९६९-७१-ई०) दूनाइ (डैन्यूब)के तटपर पहुचा, तो ग्रीस-सम्राट् घबडा उठा और उसने कालासागरके उत्तरी तटके बयाबानके निवासी पेचेनेगा घुमन्तुओ और दुनाइ-तटवर्ती बुलगारोको मिलाकर स्व्यातोस्लावका मुकाबला करना चाहा । लेकिन ग्रीसको स्व्यातोस्लावके साथ सधि करनेको मजबूर होना पडा । स्व्यातोस्लाव अपने समयका महान विजेता था । ग्रीक ऐतिहासिक उसके आकार-प्रकारके बारेमे कहते है—‘उसका आकार मझोला, नाक उभडी हुई, दाढी भरी और लबी, शिर बिलकुल नगा, सिर्फ एक ओर कुछ छुटा बाल (शिखा) था, जो कि कुलीनताका परिचायक था । उसकी गर्दन मोटी, कधे चौडे, सर्वाग सतुलित शरीर । उसके एक कानमे दो मोतियो और पद्मराग-जटित सोनेका कुडल था ।” स्व्यातोस्लावने विजयीके तौरपर गर्वके साथ बिजन्तिन (ग्रीस)की राजधानी कस्तन्तिनोपोलमें प्रवेश किया । लौटनेपर पेचेनेगा घुमन्तुओने दनिपेरके जल-प्रपातोके पास धोकेमे उसे मार डाला ।

स्व्यातोस्लावका पुत्र व्लादिमिर (९७८–१०१५ ई०) पिताकी ही तरह बहादुर निकला और नतमस्तक शत्रुओको उसने शिर उठानेका मौका नही दिया । उसने अपने राज्यका विस्तार पश्चिममें बाल्तिक समुद्रतक किया और पोलो तथा लिथुवानियोके कितने ही नगरोको छीन लिया । बिजतिन्का तो वह सरक्षक ही था । जब ग्रीक सेनाने विद्रोह किया, तो सम्राट्की पुकारपर व्लादिमिर ने जाकर उसे दबाया । सम्राट्ने पारितोषिकमें अपनी बहनसे व्लादिमिरका व्याह कर दिया । बिजतिन् दरबारकी तडक-भडक, उसके शानदार विलास, कला, सगीतने व्लादिमिरको मुग्ध कर दिया, और

९८८ ई०मे उसने ईसाई-धर्म स्वीकार करनेका निश्चय किया। उसने अपनी प्रजाको हुक्म दिया, कि कल द्नियेपरजो धर्माभि-षेक (बप्तिस्मा)के लिये नही पहुचेगा, वह मेरी कृपाका पात्र नही होगा। किसकी मजाल थी, राजाकी कृपाका अभाजन हो। इस तरह प्राय सारी राजधानी एक दिनमे ईसाई बन गई। ईसाई-पुरोहितोने परामर्श दिया और व्लादिमिरकी आज्ञासे कियेफके सारे देवालय स्लावोके पुराने देवताओसे खाली हो गये। लेकिन इसका यह अर्थ नही, कि लोगोने अपने हजारो वर्षोंसे चले आये धर्म और देवताओको असानीसे छोड दिया। उसके लिये कितनी ही जगह विद्रोह हुए।

कियेफके रूसोने इस तरह अपनी प्राचीन सस्कृतिकी बहुतसी निधियोको खोया। पुराने देवताओ-की मूर्तियो और पूजा-प्रकारोके साथ उनके हजारो शब्द भी लुप्त हो गये। लेकिन अब उसकी जगह उन्हें एक उन्नत सस्कृतिसे सपर्क स्थापित करनेका मौका मिला, अपनी भाषाके लिए लिपि मिली, ग्रीक-साहित्य, ग्रीक-कलाके सीखनेका रास्ता खुल गया।

१०१५ ई०मे व्लादिमिरके मरनेपर उसके लडकोमें झगडा हो गया और तीन पुश्तोके परिश्रमसे एकताबद्ध कियेफ-रूस-राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। इसमे सदेह नही, कि प्राचीन परम्परासे अत्यत विच्छेद होना भी इसका एक कारण हुआ। ग्यारहवी सदीसे रूस बहुतसे राजुलोमें विभक्त हो गया। तेरहवी सदीके मध्यमे पहुचनेतक छिङ्गिस् खानके मगोल उसके पौत्र बातूखानके नेतृत्वमें पहुचे और फिर प्राय डेढ सौ वर्षोंतक रूसियोको शिर उठानेका मौका नही मिला। हा, मगोलोके शक्तिशाली शासनसे लाभ उठाकर मास्कोके राजुलने अपने प्रभावको बढाया—मगोलखानके कृपापात्रके तौरपर ही। तेमूरने दिल्ली लूटने (१३९८ई०)से तीन साल पहले जब (१३९५ई०) मास्कोके पास तकका धावा करके मगोल-खान तोक्तामिश्की शक्तिको क्षीण कर दिया, तो मास्कोके महाराजुलोको रूसको एकताबद्ध करनेका मौका मिला। यह काम वासिली प्रथम (१३८९-१४२५ई०)के कालमें आरम्भ हुआ, और उसे पाचवे उत्तराधिकारी तथा प्रपौत्र महाराजुल (पीछे जार) क्रूर ईवान चतुर्थ (१५३३-ई०) ने पूर्णताको पहुचाया। उसके पुत्र फेदोर (१५८४-९८ई०) के साथ रूरिक-वशकी समाप्ति हो जाती है। लेकिन, वह अपने कर्तव्यको पूरा कर चुका था। अब रूसी रियासतें मिलकर एक ही नही हो गई थी, बल्कि रूसी राज्य कास्पियनके तटपर पहुचकर वोल्गा और उरालसे भी पूरबकी तरफ पैर बढा चुका था। यह अकबरका समय था, जबकि भारतने भी देशकी एकतामे कम सफलता नही प्राप्त की थी।

हमने देखा, हूणोके प्रहारके बावजूद भी पश्चिमी शक-द्वीपके रहनेवाले शक एक बार जगलो की तरफ भागे। फिर स्लावोके रूपमें प्रगट हो अतमें आधुनिक रूसियो और दूसरी स्लाव जातियोकी शक्लमें अस्तित्वमे आये, और आज भी मौजूद है। शकद्वीपसे भागकर पूर्वी शक दूसरे कितने ही देशोमे बिखरने भारतके शकद्वीपी ब्राह्मणो, कितने ही राजपूतो, गूजरो, जाटो आदिके रूपमें हिन्दुओमें मिल गये। इस सारे इतिहासपर गौर करनेसे स्पष्ट हो जायेगा, कि क्यो रूसी भाषासे सस्कृतका इतना घनिष्ठ सबध है। यह इसीलिए कि रूसी उन्हीं शकोके वशज है, जिनके भाई-बद आर्य पुराने कालमे आकर हिन्दुस्तान और ईरानमे बस गये, और उनका पारस्परिक सबध वही नही टूट गया, बल्कि सहस्राब्दिया बीतनेपर फिर बहुतसे शक हिन्दुस्तानमें आये। सस्कृत और रूसी भाषाओमें जो घनिष्ठ सबध मालूम होता है, वह उसी पुराने सबध ही के कारण।

स्लाव भाषा—रूसी भाषाकी सस्कृतसे कितनी समीपता है, इसके लिये शब्दकोष और शब्द-विश्लेपणको देनेसे पहिले यहा दो शब्द कहनेकी अवश्यकता है। यह एक मान्यता बन गई है, कि लिथुवानी भाषा सस्कृतके बहुत समीप है। रामानद और कबीरके समयतक लिथुवानी लोग ईसाई धर्ममें दीक्षित न हो अपने प्राचीन धर्मपर आरूढ थे, उनके कितने ही देवता वैदिक देवताओमेंसे थे। उनकी भाषाका विकास भी बहुत मद गतिसे हुआ था। किन्तु इसका यह अर्थ नही, कि लिथुवानी भाषा रूसीकी अपेक्षा सस्कृतके बहुत समीप है। हिन्दी-युरोपीय भाषाओके 'शतम्' और 'केन्तम्' दोनो भाषा-समुदायोमे स्लाव-भाषायें सस्कृत और ईरानीके साथ 'शतम्' वशकी है, जब कि लिथुवानीकी समीपता 'केन्तम'

से ह। उच्चारण भी उसके रूसीकी अपेक्षा सस्कृतसे कितन दूर हैं, इसे निम्न तालिका में देखिये —

लिथुवानी	प्राचीन स्लाव	रूसी	संस्कृत
केतुरि	चेतुरे	चेतीरे	चतुर्
केत्विर्तम्	चेत्वरेते	चेत्वेर्त	चतुर्थ
ब्रोतेरेलिम्	ब्राते	ब्रात्	मातृ
मोते	माति	मात्	मातृ
गुवम्	झिवे्	झिव्	जीव

रूसी भाषा स्लाव-भाषा-वंशकी पूर्वी शाखाकी एक भाषा है। पूर्वी स्लाव-भाषायें है—रूसी, बोलगारी और सेर्वी। उक्रइनी और वेलोरूसी भाषायें यद्यपि अब स्वतंत्र साहित्यिक भ षायें हैं, किन्तु वह रूसीके अत्यत समीप हैं। इसलिये तालिकामें उनके शब्द पृथक् नही दिये जा रहे हैं। पूर्वी और पश्चिमी स्लाव-भाषाओंका आपसका सम्बन्ध निम्न तालिकासे मालूम होगा —

पूर्वी स्लाव				पश्चिमी स्लाव		
प्राचीन स्लाव	रूसी	बोलगारी	सेर्वी	स्लोवानी	चेकी	पोली
वेल् (या)	विल्	विल्	वियेल्	वेल्	वेलु	इयलु
दिम् (धूम)	दिम्	दिम्	दिम्	दिम्	दूम्	दूम्
द्न् (दिन)	देन्	देन्	दन	दन	देन्	जिएन्
स्न (सूनु)	सोन,सिन्	सन्	सन	सन्ज	सेन्	सेन्
म्लेको (दूध)	मोलोको	म्लाकु	म्येिको	म्लेको	म्लेको	म्लेको
ग्लवा (गल)	गोलोवा	ग्लवा	ग्लवा	ग्लव	ग्लव	ग्लोवा
स्म्रन् (मृत्यु)	स्मेर्त्	स्म्रत्	स्म्रत्	स्म्रत	स्म्रत्	श्मिएरे
मृत्व (मृत्यु)	मेर्त्विइ	म्रत्व्	म्रत्	म्रतेव	म्रत्नु	मर्त्वु
प्ल.न् (पूर्ण)	पोल्न	प्लन्	पुन्	पोल्न	प्ल् न	पेल्नु
पन् (पच)	प्यत्	पेत्	पेत्	पेत्	पे[illegible]	पिएत्स
रउका (कर)	रुका	(रका)	रुका	रोका	रुका	रेका
मेभ्दा (मध्य)	मेझा	मेभ्दा	मेह	मेया	मेज़े	मिएउजा
ज़ेम्ल्य् (ज्मा)	ज़ेम्ल्या	जेम्या	जेम्ला	ज़ेम्ल्या	ज़ेमे	जिएमिए

हम रूसी शब्दों* को नागरी अक्षरमें दे रहे है, जिसमें कुछ नये संकेतोंकी अवश्यकता है। ओ का उच्चारण रूसीमें कभी ओ और कभी अ होता है, किन्तु सन्देह उत्पन्न हो जानेके डर से हमने यहा उच्चारणका विचार न कर लिखे जानेवाले अक्षर (ओ)का ध्यान रखा है। रूसी स्वरोंका ह्रस्व-दीर्घ उच्चारण ऐच्छिक है, इसलिए नागरी स्वरोंमें ह्रस्व-दीर्घको ध्रुव नहीं समझना चाहिये। रूसीमें उदात्त संकेत लगानेकी प्रथा है, जिससे उच्चारणमें ही अन्तर नही हो जाता, बल्कि अर्थमें भी भेद हो जाता है। हम यहा उदात्त संकेतको विस्तार और दुरूहताके कारण नहीं दे सके।

*रूसी शब्दोंके संग्रहमें हमने व क म्युलर, स क बोयानुस्के कोश (रुस्को-आंग्लिइ-स्किइ स्लोवार, मास्को १९३५) के ६०,००० शब्द, तथा व फ गेतश्नाइनके कोश (मास्को १९३८)का उपयोग किया है।

परिशिष्ट (१)

रूसी शब्द-कोश

(१) शब्द

अ—अ (निवार्य)
अजर्त—आज्वाल, ताप
आ—आह !
वेग्—वेग (दौड)
वेगत् —वेजति (दौडना)
वेग्लेत्स—वेगक (भगेलू)
वेग्स्त्व—वेगकत्व (भगेलुत्व)
वेगून्— वेगकत्व (भागून, भग्ग्)
वेजात् —वेजति (भागना)
वेज्—विना (विना)
वेज्-वोज्निक्—वि-भगक (आनीश्वरवादी)
वेज्-वेत्रेन्निइ—वि-वातीय (विना (वायुका)
वेज्-वोलोसिइ—वि-वाल, (केशरहित)
वेज्-गलविइ—वि-गल (शिर बिना)
वेज्-गोलोविइ-वि-ग्रीव (शिर विना)
वेज्-दोज्दिए—विदुह (वर्षा विना)
वेज्-दिम्निइ—वि-धूम (धूम-रहित)
वेज्-जिज्नेविइ—वि-न-जीवन (जीव विना)
वेज्-नोसिइ—वि-नास, (नासिका विना)
वेजो—वि (विना)
वेज्-रोगिइ—विश्रृंग (श्रृंग बिना)
वेर्योजा—भुर्ज (वृक्ष)
वेस्—वि (विना)
वेस्-प्रि-मेस्नि—वि-प्र-मिश्रण (मिश्रण-रहित)
वेस्-सेर्देच्नोस्त् —वि-हृदयत्व (हृदयहीनता, श्रद्-हीनत्व)
वेस्-स्लाविये—वि-श्रवी (कीर्त्तिहीन)
वेस्-स्लावेस्निइ—वि-श्रवणक (वाणी-हीन)
वेस्-स्मेर्तिये—वि-म र्यता (अमरत्व)
वेस्-स्नेज्निइ—वि-स्नेही (हिम-हीन), स्नेह-स्नेज (वर्फ)
वेस्-सो-ज्नातेल्-निइ—वि-स-ज्ञातर् (चेतना-हीन)
वेस्-सोन्नित्सा—वि-स्वप्नता (निद्राहीनता)
वेस्-स्त्राश्निइ—वि-त्रास्नु (त्रास-हीनता)
विर्युक—वृक (भेडिया)
विस्—द्विस् (फिरसे)
वित् —भिद् (तोडना, ताडना)
वित् स्या—भिद् (ताडना, भिडना)
वत् यो—भिद् (तोडना, भिडना)
व्लागो—भर्ग (अच्छा, आशी)
व्लागो-दात् —भर्गदाति (आशी-र्दान)
व्लागो-देतेल्.—भर्गदात (उपकारक)
व्लागो-देयानिये—भर्गदान (आशीदान)
व्लागोइ—भर्ग (अच्छा, सुखी, उपयोगी)
व्लागो-प्रियात्निइ—भर्गप्रियत्नु, (प्रिय)
व्लागो—रोद्निइ—भर्गरोव्नु (सुजात)
व्लागो-स्लोवेनिये—र्गभ-श्रवण। (मगल सुनना, आशीर्वचन)
व्लागो-त्वोरीतेल्—भर्गत्वष्टर् (उपकारक)
वोग्—भग (भगवान्)
वोगातेइ—भगत (धनी पुरुष)
वोगात्स्त्वो—भगत्व (धनाढ्-यता)
वोगाच्—भगक (धनाढ्य)
वोगी-निया—भगिनी (भगवती)
वोगो-मातेर्.—भगमातर् (भगवान्की मा, मरियम)
वोगो-पोची-नियेभग-पूजा
वोगो-रोदित्सा—भग-रोहिणी (मरियम)
वोगो-स्लाविये—भगश्रवणा (भगवान्की भक्ति, धर्म-शास्त्र)
वोगो-स्लुज्रेनिये—भगश्रूपणा (भगवान्की सेवा)
वोज्ञे मोइ—भग मे ! (मेरे भग वान्)
वोज्रेस्त्वो—भगत्व (भगवत्-तत्त्व)
वोक्—पक्ष, वक्षशरीर-पार्श्व)
वोकोवाइ—पक्षत (शरीर-पार्श्वसे)
वोकोम्—पक्षेण (शरीरपार्श्वसे)
वोले—भूरि (वहु, अधिक)
वोलेये—भूरि (वहु अधिक)
वोल्लात् —वोल्लति (वोलना)
वोल्तोव्न्या—वोल्लति (वोलना)
वोल्तिइ—वोल्लन्त (वोलक्कड)
वोल्तून्—वोलतू (वोलक्कड)
वोल्शे—भरिश (वहुत—सा) कुस्क्या
वोल्शेविक—भरिक (वहुमतिक)

वोल्‌गिइ—भूरिश (अधिकतर)
वोल् शे—भूरिश (अधिकतर)
वोल् शिन्स्त्वो—भूरित्व (बहुमत)
वोल् शोइ—भूरिश (बहुतर)
वोयाज्न—भयान (भय, आतंक)
ब्रात्—भ्रातृ
ब्रतानिये—भ्रातृना (भाई बनना)
ब्रात्वा—भ्रातक (भैयवा)
ब्रात्स्किइ—भ्रातृकीय (भाई-चारा)
ब्रात् —भरति, हरति (लेजाना)
ब्रात् स्या—भ(ह)रति (ले जाया जाना)
ब्रेम्या—भर (भार)
ब्रोवि—भ्रू (भौं)
ब्रोव् —भ्रू (भौं)
ब्रोदित—ब्रवेति (उठना, हटाना)
ब्रोम(सि)त् (स्या)—भ्रशति (फेंकना, फिकाना)
बुदुचि—भूति (होना)
बुदुश्चिइ—भविष्यति (होने वाला)
बुद्-भूति (हो सकना)
विवात् —भवति (हो जाना)
विक्—वृष (बैल)
विलो—भूत (भइल, भोजपुरी)
वित् —भूति (होना)
वाम्—वा (तुमको)
वामि—वा (तुम्हारे द्वारा)
वम्—व (तुम, तुम्हारा)
वश्—व
व्-वेगात् —वि-वेजति (भीतर भागना)
व्-वेदेनिये—वि-वेदना (निवेदना, नमिका)
ब्-वेस्ति—विविशति (भीतर लाना)
व्-व्यज्रगात्.-वि-वयति (भीतर बाचना)
व-ग्लवइ—वि-गर्भ (हृदयमें)
व-दलेके—विदीर्घ (दूर)

व्-द्वोये—द्वि (दो बार)
व्दोवो—विधवा
व्दोव्स्त्वो—विधवात्व
वेदत् —वेत्ति (जनाना)
वेदेनिये—वेदना (जाना, विद्या)
वेलीकान्—वरक (वडका)
वेलीकिइ—वरक (वडा)
वेलिचाइशिइ—वरेण्य (सवसे वडा)
वेर्नुत्—वर्तयति (लौटाना)
वेर्तेत् —वर्तयति (घुमाना)
वेर्तूश्का—वर्तक, (लट्टू, परेता)
वेसेन्निइ—वासतिक
वेस्ना—वमत
वेस् —स्वे (सारे)
वेतेर—वात (हवा)
वेतेरोक्—वातक (हवा)
वृज्-वेगात्—विवेजति (दौड जाना)
वेशात् —विशति (लटकना)
वयात्—वयति (फूक लगाना, फटकना, बनना)
विवात्.—भवति (वो, दीर्घ जीयो)
विद्—विदि (देखना, प्रकट होना)
विदेनिये—वेदना (दर्शन)
वीदेत् —वेत्ति (देखना)
विद्नेत स्या—वेद्यते (दिखाई देना)
व्-लेतात् —वि-डयति (उडना)
व्-ल्युवित् —वि-लोभति (प्रेम में पडना)
व्-ल्युवन्योन्नोस्त्—विलोभित्व (प्रेम-परायणता)
व्-ल्युव्ल्यत्—विलोभति (प्रेम करना)
व्-ल्यपत् स्या—वि-लिपति (चिपकाना)
व्-माज़त्—विमःपति (चिपकाना)
व्-मेशातेल—विमिश्रयितर् (बीचमें पडनेवाला)

व्-मेशिवात् —विमिश्रति (मिलाना)
व्-नीज़—वि-नीचैः (नीचे)
व्-नीज़ु—नीचैस् (नीचेकी जगह)
व्-निकात्- (निगाह करना)
व्-नोवे- वि-नव (नया)
व्-नोसित् —वि-नेपति (भीतर लाना)
व्-नुत्रि—अन्तरीय (भीतरमें)
वोदा—उद (पानी)
वोदापाद्—उदपात
वोद्निक—उदनिक (जलकल)
वोज़्—वाह (गाडीका बोझ)
वोज़् —वुदित् } वि-बोधिति
वोज़्-बुदात् } (जगाना, तेज करना, बढाना)
वोज़्-वेदेनिये—विबोधना (यशोगान करना)
वोज़्-व्रात् —वर्तति (लौटाना)
वोज़्-विसित्—वि-विशति (उठाना)
वोज़ित्—वहति, वोहित (लेजाना)
वोज़्का—वाहक (गाडी ढोना)
वोज़ोक्—वाहक (ढोनेवाले)
वोज़ोपित् —वि-हवति (पुकारना)
वोज़्-रादोवात स्या—वि-राधति (आनन्द मनाना)
वोल्—वैल (बैल)
वोल्क—वृक (भेडिया)
वोलोस्—वाल (केश)
वोलचोनोक—वृक शाव (भेडियेका बच्चा)
वोप्रोस्—वि-प्रश्न (प्रश्न)
वो-प्रोसित् } वि-पृच्छति
वो-प्रोसात् } (पूछना)
वोर—हार (चोर)
वोसेम् —अष्ट (आठ)
वोसेम-न-देस्यत्—अष्टादश (अठारह)
वोसेम-देस्यत—अशीति. (अस्सी)

वोम्-पोल्नित्–विपूर्णयति (अदर भरना)
वोस्-सेदात्.–वि-सीदति (बैठना)
वोस्-स्तवात्–वि-स्थाति (विद्रोह में उठ खडा होना)
वोस्-ख्वलेनिये–वि-स्वरति (प्रशसा करना)
वोत्–वत् (यहा, हा)
व्-पदात् –विपतति (गिरना)
व्-पिवत्.–विपिवति (पीना)
व्-प्लाव्. - वि-प्लाव (तैरना)
व्-प्लिवात्. -वि-प्लवति, -(भीतर तैरना, नौयात्रा करना)
व्-पोल्ने- वि-पूर्ण (पूर्णतया, सारा)
व्रात्.–भ(ह)रति (लेटना)
व्-रेज़ात्.–विरेजति (रेज़ीदन्-फारसी)
व्-रेज़क–वि-रेजक (काटना, भीतरी काट)
व्-सदीत्–विशातयति (भीतर कुतरना)
व्-साद्निक–वि-सादनिक (घोडे पर बैठने वाला, सवार)
व्स्यो–स्वे (सारे)
व्स्-क्रिचात्.–वि-क्रोशति (चिल्लाना)
व्-स्लुख्–वि-श्रू (जोरसे बोलना)
व्-स्लूश्(इव)त्.स्या–वि-श्रूपति (सुनना)
व्स् -पाचेइवात्–विपाययति
व्स्-पोइत् (पिलाना)
व्स्-प्लि (वा) त्.–विप्लवति (उतराना, तिरना)
व्स्-पो-म्नित्.–विप्र-मनुति (सोचना, स्मरण करना)
व्–स्तवानिये-स्थापना (उठना)
व्-स्ताव्का–वि-स्थापका (अदर रखना)

व-स्तव्ल्यात्–वि-स्थापयति (भीतर डालना)
व्स्-व्याखिवात्.–वि-श्वासयति (हिलाना)
व्-तिकात् –वि-टीकति (टिकाना भीतर डालना)
व्-शि(वा) त्–वि-सीव्यति (सीना)
वि–व (तुम
वि-बेगात् वि-वेजति (दौडना)
वि-वेजात्
वि-बिवात्.–वि-भवति (मार गिराना)
वि-बिरात्.–वि-वरति (चुनना)
वि-बोर–वि-वर (चुनाव)
वि-बोर्का -विवरक। (चुनना)
वि-ब्रासिवात्–वि-भ्र शयति (फेंक देना)
वि-ब्रोसित्–वि-भ्र शति (फेंक देना)
वि-वारिवात्. -वि-वालति (उबालना)
वि-वेदिवात्.–वि-विदति (पाजाना)
वि-वेज़्ति ⎫ –वि-वहनि (बाहर
वि-वोज़ित् ⎭ ले जाना)
वि-व्यजात्.–वि-वधति (बाधना, गूथना)
वि-इग्रात्.–वि-क्रीडति (जीतना, खेलना)
वि-गोवारिवात् –वि-गवति (बोलना)
वि-दवित् –वि-दावति (दाबना)
वि-दिरात् –वि-दारयति (विदारना, फाडना)
वि-ज़ितात् –वि-छिनत्ति (काटना)
वि-ज़ोव् –वि-हवि (पुकारना)
वि-कज़ात् –वि-काशवति खिलाना)
वि -कपिवात्–वि-कल्पि (खोदना)
वि-क्लिकात्.–वि-किलकति (चिल्लाना)

वि-मिरानिये.–वि-मरण (मरना)
वि-नुदित्.–विनोदयति (जोर-डालना)
वि-पाद्–वि-पात (भीतर डालना घुसेडना)
वि-पदेनिये–वि-पतना (गिरना)
वि-पिलिवानिये–वि-पीडना (चीरना)
वि-पिसात्–वि-पिंशति
वि-पिसिवात्– ,, (लिखना)
वि-पोल्नेनिये–वि-पूर्णना (पूरना)
वि-रेज़ेनिये–वि-राजना (प्रकाशन)
वि-रुगात् –(रिगाना, गाली-देना, चिढाना)
वि-स्लुशात्.–वि-श्रूषति (खूब सुनना)
वि-स्तवका-वि. स्थापका (प्रदर्शन)
वि-स्तुपात् –विस्तोति (बोलना)
वि- सुशिवात्–वि-शुष्यति (सुखाना)
वि-सिपात् स्या–वि-स्वपिति (खूब सोना)
वि-सिखात्.–वि-शुष्यति (सूखना)
वि-तिरात्.–वि-तिरति (झाडना पोछना)
वि-त्योचिपात्- वि-तक्षति (आकार काटना)
वि-तोपित्–वितपति (गर्मकरना)
वि-त्यसात्-वि श्रासयति (हिला देना)
वि- श्रिखात्–तृप
वित्.–भिद् (काट गिराना)
वि-त्यनुत्स्या–वि-तनोति (फैलाना)
वि-व्रेनिक्–श्रि -आवनिक'
वि-उचान् (शिक्षित)

वि-चितात् –वि-चितयति (पढना)
वि-श्चुपात् –वि-च्छुवति (छूना)
व्यज न्का–वचका (बोझवावना)
व्यजात् –वचति (वावना)
गदाल्का–गदका (भाग्य भाखना)
गदानिये–गदना (भाग्यभाखना)
गलेरा } -(गली, गलियारा)
गलेर्का }
गर्–ज्वर (जलन)
गल्-स्तुक्–गल-ववनी (टाई)
ग्दे–कुत्र (कहा)
गेइ–हे (सबोधनार्थ)
गिर्या- गुरु (भार)
ग्लवा–गल (शिर)
ग्लवान्–गलक (सरदार)
ग्लोतात् –गिलति (निगलना)
ग्लोत्का–गल (कठ)
ग्लुवीना–गर्भीणा (गहराई)
ग्लुवोकिइ–गर्भिक, गभीरक (गहरा)
गोवोर् (गवार्)–गवति (वोलना)
गोवोरित् (गवरित्)–गवति (वोलना)
गोव्यादिना (गव्यादिना)–गव्यादनीय (गोमास)
गोलोवा (गलवा)–गल (शिर)
गोलोम्-गलक–(स्वर)
गोलिइ–नग्न (नगल)
गोरा (गरा)–गिरि (पहाड)
गोरेल्का ज्वरक (ज्वालक, वर्नर)
गोरेनिये (गरनिये)–ज्वरणा (जलना)
गोर्ल्लो (गर्ल्लो)–गल्ल (कठ)
गोर्किइ (गर्की)–ज्वर (जलन-वाला, कडआ)
गोर्युचिये (गर्युचिये) ज्वरक (जारन, ईंवन)
गोर्याचिइ (गर्याची)–ज्वलक (गर्म)
ग्रग्योज्–ग्राम(ह्)क (लूटनेवाला)
ग्रबीतेल्–गृभी(ही) तर् (लुठक)
ग्रेत्–ज्वलन (गर्माना, तपाना
ग्रीवा-ग्रीवा (गर्दन)
ग्रोजित्.–कुप्यति (धमकाना)
गुवा –जिह्वा (ओठ)
गुवित् –क्षुभति (नप्ट करना)
दवात्.–दाति (देता)
दविलो. (दावल, भार, दवाव)
दवित् – (दावत, दवाना)
दव्का–दावक (दवाव)
दालेये–दूर
दाल्योकिइ–दीर्घक (दूरका)
दालेको–दीर्घक (दूरका)
दाल् –दीर्घ (दूर)
दाल् नि–दीर्घ (दूर)
दाल्नो-विदेनिये–दीर्घवेदना (दूरदर्शक)
दाम्का–दामा (राजा, रुद्र-दामा)
दन्निइ–दान (भेंट, दिया)
दात्.–दान (भेंट)
दार्–दान
दरेनिये–दान (दान देना)
दरोवानिये–दान (दान देना)
दरोवोइ–दान (भेंट)
दात्.–दाति (देन)
दावा–दान
दयानिये–देय
द्वा–द्वौ (दो)
द्व-द्त्सत् –द्वाविशति (वीस)
द्वाज्दि–द्वि (दोवार)
द्वे-ना-द्त्सत्.–द्वादश (बारह)
द्वेर्नोइ–द्वारीय (द्वार)
द्वेर् –द्वार
द्वे-स्ति–द्विशत (दो सौ)
द्विगात् –वेगति (चलना)
द्वोये–द्वौ (दो)
द्वोइत्.–द्वितयति (दूना करना)
द्वोइका–द्विक (जोडा)
द्वोर्–द्वार (आगन)
द्वोर्त्स–द्वारक (महल, दर्वार)
द्वोर्यानि–द्वारीय (राजावावू)
द्वोयु-रोद्निइ–द्विरोधनीय (चचेरा भाई)
देवेर्–देवर
देवा–देवी (कुमारी)
देवित्सा–देविका (कन्या, चेरी)
देव्का–देविका (कन्या,षोडशी, श्यामा)
देवोमातेर्.–देवमातर् (कुमारी मरियम्)
देवोच्का–देविका (वच्ची)
देवस्त्वेन्निक्–देवत्विक (ब्रम्ह चारी)
देव्चका–देविका (कन्या)
देयुश्का–देविका (कन्या, कुमारी)
देव्चाता–देविका (कन्या,कुमारी)
देद्–पितामह (दादा)
देद्,-प्रे-,–प्रपितामह (परदादा)
देदुश्का–पितामह (दादा)
देदुश्का,-प्रे-,–प्रपितामह (परदादा)
देका-द्निक–दश-दिनक
देलत्.–दारयति (करना)
देलित्.–दरति (विभाजित करना)
देलो–दर, धर, वर्म (काम)
देन्.–दिन
देरेवा–दारु (वृक्ष)
देरेवत्सो–दारुक (छोटा वृक्ष)
देर्झाव्–दृहति (शक्ति)
देर्झानिये–दृहना (रोकना, थामना)
देर्झा तेल् –दृहितर् (थामने-वाला)
देर्झात्.–दृहति (थामना)
देस्यत् –दश (दस)
देस्यातिइ–दशम (दसवा)
देस्यत्का–दशक (दस)
दे(वा)त् –धाति (रखना)
देयातेल् –धातर् (कर्त्ता, चाकर)
द्लिन्ना–दीर्घ (लवाई)
द्लिन्निइ–दीर्घ (लवा)

दनेव्निक्–दैनिक (डायरी)
दो–तावत् (तक)
दो-वावित्.–तावद् भवति (जोडना)
दो-बूदित्.–तावद्-बुध्यति (जागना)
दो-गोवोर् (दगवार्)–(समझौता)
दोदात्.–ददाति (जोडना, बढाना)
दो-एदात्.–तावद् अत्ति (खा डालना)
दोएनिये–दुहति (दूहना)
दोझ्द–दुहति (बरसना)
दो-झि (वा) त्.–तावद् जीवति (तवतक जीना)
दो-ज्वोनित्.स्या–तावद् ध्वनति (द्वार पर ध्वनि करना)
दो-ज्न (वा) त्स्या.–तावद् जानाति (जानना, चाहना)
दोइत्.–दु हति (दूहना)
दोइनिक्–दुहनिक (दूहनीवर्तन)
दो-कज्ञात्.–तावत् काशति (प्रकाशना)
दो-कुदा–कुत्र यावत् (कहातक)
दोल्गिइ–दीर्घ (दूर)
दोलेये–द्राघीय (दीर्घतर)
दोलिना (दलिना)–द्रोणी, (उपत्यका, दून)
दोल्-शे–द्राधीयस् (दूरतर)
दोम्–दम (घर)
दोम्ना–धूमक (भट्ठा)
दोच्. (का)–दुहितर् (पुत्री)
द्राज्नित्–त्रासयति (चिढाना)
दात्.–दरति (चीरना)
द्रात्.स्या–दरति (लडना)
द्रोवा–दारु (ईंधन, लकडी)
दुनुत्–ध्नोति (फूकना, हवा देना)
दुर्नेत.–दुर् नीति (कुरूप होना)
दुर्-नोइ–दुर् (बुरा)

दिम्–धूम (धुआ)
दिरा–दरी (छिद्र, चीर)
द्याद्या–दादा (चाचा, मामा)
द्यादेन् का–(चाचा, मामा)
एदा–अद (भोजन)
एदोक् (एदक्)–आदक (भक्षक)
एझे-गोद्निक्–एकवार्षिक (वर्षपत्र)
एझे-देकाद्नो–एकैकदशदिन (प्रतिदशाह)
एझे-नेदेल् निक्–एकैकसप्ताह (साप्ताहिक)
एस्त्–अस्ति (है)
एस्त्–अश्नोति (खाना)
एस्म्.–अस्मि (मैं हू)
एस्तेस्त्वो–अस्तित्व, (स्वभाव,) द्रव्य)
एस्त्.-अत्ति (खाना)
एखात्. -एजति (हटाना, चढना, जाना)
झार–ज्वल (जलन, तपन)
झारा–ज्वाला (तपन, गर्म)
झरेनिये–ज्वलन (जारना, भूजना, तलना)
झरेन्निइ–ज्वलित (जारी, भुनी, तली)
झार्किइ–ज्वालक (गरम, मुस्तैद)
झे–हि (किंतु, और)
झे वानिये–चर्वणा (चवाना, जेंवना)
झ्योल्तेन्किइ–हरितक (पीला-सा)
झे ल्तेत्–हरितामति (पीला करना)
झे ल्तोक्–हरितक (अडे का पीला)
झे ल्तिइ–हरित (पीला, जर्द)
झे ना–जनि (स्त्री)
झे नित्. (स्या)–जनीयति (व्याहना)
झे नित्वा.–जनितव्य (व्याह)
झे निख्–जनिक (वर)
झे योन्का–जनिका (वधू)

झे नोल्युविविइ–जनिलोभी (स्त्रीप्रेमी)
झे न्स्किइ–जनिका (स्त्री)
झे न्श्का–जनिका (मेहरिया)
झे न्श्चिना–जनि (स्त्री)
झे र्त्वा–ज्वलत्व (यज्ञ)
झे च्.–दह, धक्ष, दाग (जलाना)
झिव्–जीव (जीता, जिंदा),
झिवितेल् निइ–जीवयितर् (जीता)
झिवोइ–जीव (सजीव)
झिवोनये–जीवन्त (प्राणी, पशु),
झिवुश्चिइ–जीवक (जीता)
झिव्चिक्–जीवन (जीवटवाला)
झिव्-योम–जीवक (जीता)
झिज्न–जीवन (ज़िंदगी)
झिलित्स–जीवस्थ (निवास-स्थान)
झिलोइ–जीवल (वसल, वसा)
झितेल्–जीवितर् (रहनेवाला)
झितिये–जीवन (जीवन-चरित्र, जीवन)
झिनु.–जीवति-(जीना, रहना)
ज़ा–पश्चात्, आ, ता (बाद, आगे)
ज़ा–विरात्.–आ-भ (ह) रति (ले जाना)
ज़ा-व्रोल्तात्–आ-व्रोल्लति (बहुत बोलना)
ज़ा-व्रसिवात्–आ-भ्रशति (फेंकना)
ज़ा-व्रात् (स्या)–आभ (ह) रति (ले जाना)
ज़ा-व्रोसत्.–आ-भ्रशति (फेंकना)
ज़ा-विवात् आ–भवति (भूलना)
ज़ा-वर्नोइ–आ-वारित (उबाला)
ज़ा-वेदेनये–आ-वेदना (उच्च-शिक्षणालय)
ज़ा-वेर्तेत्. (स्या)–आवर्तति (घूमना, फिरकना)
ज़ा-विदेत्.–आ-विदति (देखना)
ज़ा-वाझ्नि्–आ-वहति (ले जाना, खींच ले जाना)

ज़ा-व्यक्का–आ-वचक (वचन)
ज़ा-व्रज्ञिवात्.–आ-ववति (बाचना)
ज़ा-गार्–आ-ज्वल (धूपमें जला)
ज़ा-ज्लावियें–अ-गल (उपाधि, पदवी)
ज़ा-गोरानिये–आ-ज्वालन (आतपतप्त, भरा)
ज़ा-गोरेन्निइ–आ-ज्वल (धूपमें जला)
ज़ा-दाचा–आ-दन (समस्या)
ज़ा-दोनोक्–आदत्त, आवत्त (रखना, निधि)
ज़ा-द्रात्–आ-दरति (भेडियेका भेड खा जाना)
ज़ा-एदात्–पश्चाद् अत्ति (पीछे खाना)
ज़ा-झिवानिये–पश्चाद् जीवन (बाद पूरना)
ज़ा-झिवो–यावद्जीव (जीवन-भर)
ज़ा-झिगाल्का–जाज्वलक (सिगरेट जलावक)
ज़ा-काज्–आ-काश (आज्ञा)
ज़ा-कोनो-दातेल्–०धातर्–दातर् (विधाता, दाता, कर्ता)
ज़ाल्–शाल, हाल
ज़ाला–शाला
ज़ा-लिझात्–जालिहति (चाटना)
ज़ानिमात्–आ-जानाति (पढना)
ज़ा-मेर्त–मृत (मरा)
ज़ा-मोरित्–मरति (भूखा मरना)
ज़ा-ओब्लाचृनिद–आ-अभ्रक (बादलोंसे परे)
ज़ा-पद्–पश्चान्-पद (पश्चिम)
ज़ापिस्–ज़ापिश (अभिलेख)
ज़ा-प्रो-वेद्–आ-प्र-वेद (आज्ञा, विधि)

ज़ा-प्रोस्–आपृच्छ (पूछना)
ज़ा-रेज़् (इव) त्–आ-रिहति, आ-रेतति (हनन करना)
ज़ा-रेकात् स्या–आ-रेचति (त्यागना)
ज़ा-रुबात्–आ-रुभति (कुठार से गढना)
ज़ा-सद्का–आ-सीदना (बैठाना, बीज बोना)
ज़ा-स्वेतित्–आ-श्वेतति (प्रकाश करना)
ज़ा-सुख़ा–सूखा (जल-अकाल, सूखापन)
ज़ा-सुखेन्नेइ–सुखान (सूख गया)
ज़ा-सिखात्–आ-शोपयति (सूख जाना)
ज़ा-तप्लिवात्–आतपति (आग जलाना)
ज़ा-तेम्नेनिये–आ-तमना (अंधकार करना)
ज़ा-तिखात्–आतुष्यति (शांत होना)
ज़ा-तोपित्–तोपना (जहाज डुबाना)
ज़ा-तुमानित् स्या–आ-धूमति (अंधेरा होना)
ज़ा तुखानिये–आ-तोपयति (बुझाना)
ज़ा-शिपेत्–आ-शपति (सिसकारना)
ज़्वानिइ–ध्वनीय (पुकारा गया)
ज़्वेनेत् } –ध्वनति
ज़्वोनित् } (घंटी बजाना)
ज़्वोनोक्–ध्वनक (घंटी)
ज़ेवात्–जभति (जम्हाई लेना)
ज़ेलेनेत्–हरितायति (हरित होना)
ज़ेलेन्नोइ–हिरण्य (हरा)
ज़ेलेनिइ–हरित (हरा)
ज़ेलेन्–हरित (जर्द, हरा)
ज़ेम्लेवेदेनिये–ज्मावेदना (भूविद्या, भू-गोल)
ज़ेम्ल्या–ज्मा (भूमि)

ज़ेम्ल्याक–ज्माक (देश-भाई)
ज़ेम्ल्यानिका } –ज्मालिका
ज़ेम्ल्यान्का } (स्ट्राबरी)
ज़ेम्नोवोद्निइ–ज्मोदकीय (जल-थलका जीव)
ज़ेम्नोइ–ज्मानीय (भूमीय)
ज़िमा–हिम (जाडाऋतु)
ज़िमोवानिये } –हिमानना
ज़िमोव्का } (जाडा बिताना)
ज़िमोइ-हिमीय (जाडा, हेमन्त)
ज़्लातो–हरित (सोना)
ज़्लित्–ह्रेति (सिहराना, चिढना)
ज़्नाकवात्–जानाति (जानना)
ज़्नाक–ज्ञानक (चिह्न)
ज़्नाकोमित्–जानापेति (परिचय करना)
ज़्नाकोमस्त्वो–जानकत्व (परिचय, ज्ञान)
ज़्नाकोमया–जानक (परिचय)
ज़्नामेनिये–जानना (चिह्न)
ज़्नामेनितोस्त्–ज्ञानित्व (प्रसिद्धि)
ज़्नामेनोवात्–जानापेति (दिखलाना, सिद्ध करना)
ज़्नात् निइ–ज्ञान (प्रसिद्ध)
ज़्नात्नोस्त्–जातीयत्व (कुलीनता, सामन्तता)
ज़्नातोक्–ज्ञाता (जज, विशेषज्ञ)
ज़्नात्–जानाति (जानना)
ज़्नाचेनिय–जानना (महत्व, अर्थ)
ज़्नाचितेल्–ज्ञातर् (जानने-वाला)
ज़्नाचितेल् नोस्त्–ज्ञातृत्व (महत्त्व)
ज़्नाचित्–जानाति (जानना, अर्थ लेना)
ज़ोव्–हव (पुकार, निमंत्रण)
ज़ोलोता–हरित, ज़र्द (सोना)
ज़ोलोतोइ–हरितीय (स्वर्ण-मुद्रा)
ज़ुब्–जिह्वा, जबान (दांत)
ज़ुबोक्–जिभक (छोटा दांत)
ज़्यात्–जामाता, दामाद

इ—च, अ (और, अपि)
इवो—इव (जैसे, लिये)
इगो—युग (जुआ)
इद्ति-एति (जाना, आना)
इज—अत्, अज् (से)
इज्-ब्रानिये—आ-वरणा (चुनाव)
इज्-ब्रात्.—आवरति (चुनना)
इज्-दवात्— (प्रकाशन)
इज् दानिये—(संस्करण)
इकात्—हिक्कति (हिचकियाना)
इस्-पोल्नेनिये—आपूर्णना (पूरा करना)
इस्-पोल्नितेल्—आ-पूर्णयितर् (पूरा करनेवाला)
इस्-प्राझ्नेनिये—अपराजयना (दोष, खाली करना)
इस्-प्राशिवात्.-आपृच्छति (मागना, पूछना)
इस्-स्यकात्.—··· (सेंकना, सुखा देना)
इस्-तोपित्.— ··(तोपना)
इतक्—इतिक (ऐसे, तैसे, और)
इत्ति-एति (जाना, चलना)
इख्— . (इसका)
क—, को, से, लिये, प्रति)
कज़ात् स्या.-काश्यते (प्रकाशित होना, दिखाई पडना)
काक्-कथ (कैसे, जैसे, यथा)
ककोर्—कथ (किस भांतिका)
कनाव—खनुवा, कदन् (खाई)
करात्.—कारयति (दड देना, सासत देना)
केमु—केन (किसके द्वारा)
कोये—कहा (कहीपर)
कोझा—कोश (चमडा)
कोइ—क: (कौन)
कोमु (कमू)—कम् (किसको)
कोलेसो—चक्र, चर्ख (पहिया)
कपानिये—कापना (खोदना)
कोपित् (कपित्) -गोपायति (रक्षा)
कोरोचे—क्षुद्र, खुर्द (जटा)
कोचान्—गुच्छ (गोभी फूल)
क्रसित्—कृपति (अलकार करना, रगना, चित्रित करना)
क्रस्नेत्.—कृ-णोति (लाल करना)
क्रस्त्—ग्रसति (चुराना)
क्रिचात्—क्रोशति (चिल्लाना)
क्रोव्.—कुभा (गुहा, छत, घर)
क्रोव्—क्रव्य (रुधिर)
क्रोइका—कृन्तन (काट डालना)
क्रोइत्—कृत् (कटाना)
क्रुग्—चक्र (चर्खं—फारसी),गोल
क्रुझित्.स्या—चक्रीयते (चक्कर काटना)
क्रुझोक्—चक्रक (वृत्त)
क्रित्—कृनी (ढाकना)
क्तो—कतर (कौन)
कुब्झोक्—कुभक, कुप्पक (प्याला, गिलास)
कुव्शिइ—कूपिका (लोटा)
कुदा—कदा (कहा)
कुर्नका—कुर्ना
कुसात्—कुस (काटना)
कुचा—गुच्छा (समूह, ढेर)
कुचका—गुच्छक (छोटी ढेरी)
कुशात.—ग्रसति, घसति (खाना)
लजित्—लघति (लाघना)
ल्योग्किइ- लघुक (हल्का, आसान)
लेग्को—लघुक (हल्का, आसान)
लेग्चे—लघीयस् (आसानतर)
लेझात्—लेटना
लेन्त्यइका -लेक (आलसी)
ल्योत्—डयन (उडन)
लेतात्—डयति (उडना)
लेतो—ऋतु (ग्रीष्म)
लिज़ानिये—(चाटना)
लिझात्.—लिहना (चाटना)
लिप् किइ—लेपकी (चिपकना, उलझना)
लिप्नुत्—लिपति (लगाना, चिपकाना)
लोब्ज़ानिये—लोभना (चूमना)
लोबिज़ात्—लोभति (चूमना)
लोवित् (लवित्) -लोभति (लुब्धक, फसाना, शिकार करना)
लोव्ल्या—लोभाना (शिकार करना)
लोवुश्का—लोभका (जाल, फसाव)
लोव्चिइ—लोभिक, लुब्धक (शिकारी)
लोद्का—रोधका (नाव)
लोदि - रुद्र (लदभेसर, आलसी)
लोझित्. स्या—लोटत (लोटना, गिरना)
लोपन्स्या (लोप्नुत्)—लोपत (तोडना, फोडना)
लुच्—रोचि (किरण)
लुच्शे—रोचीय (बेहतर)
ल्युबितेल्—लोभितर् (कुत्ता शिकारी)
ल्युबित्—लोभति (प्यार करना)
ल्युबोव्—लोभ, लभ (प्यार)
ल्युब्वोव्निक्—लोभिक (प्रिय, प्रेमी)
ल्युब्यास्चिइ—लोभीय (प्रेमी)
ल्युद्—रोव (लोग, जनता)
माज़त् (माज़ुत्)—मापत (माखना, माजना)
मज़्न्या—मापना (तेल माखना, माजना)
मज्.—माप (माखना, माजना)
मस्लो—ममका (मक्खन)
मात्का—मातृका (माता)
मातुश्का—मातृका (माता)

म.त्.—मातृ (माता)
मखात्—महति, म्हिहृति (माखन, हिलाना)
म्योद्—मधु (शहद)
म्योद्वेद्—मध्वद (भालू)
मेद्निइ—(तावेका)
मेदोव्निक्—माध्वीक(अमृतीय, मधुर)
मदोक्—मधूक(अमृत, मदिरा)
मेद्—मधु (तावा)
मेझ्, मेझ्दु —मध्य (बीचमे)
मेन्या—मे (मुझे)
मेरेन्—मरति (मरन)
म्योर्-त्विइ—मृत (मरा)
मेस्यत्स—मास (महीना चद्र)
मेतित्—मति (चिहुन करना, लक्ष्य करना)
मेशात्—मिश्रयति (मिश्रित करना)
मिगानिये—मलकाना
मीलोस्त्—मेल(कृपा, अनुकपा)
मीलोच्का—मिलक (मेली, प्रिय)
मीलिइ—मेली(मधुर, दयालु)
म्ने—मे (मुझे)
म्नेनिये—मनन (विचार, मनन)
म्नित्—मनुते (सोचना)
म्नोगो—महा (बहुत, बडा)
म्नोइ, म्नोयु—मया(मेरे द्वारा)
मोगूवेस्त्—महत्व, महिष्ट (शक्ति)
मोगूचिइ—महान्(शक्तिशाली)
मोयो, मोइ—मे (मेरा)
मोइका—मोइत (भोजपुरी) (धोना)
मोल्निया (मल्निया)—विद्युत् (मेघकी)
मोलोत्—मर्दति (पीसना)
मोलोत्वा—मर्दन (दबना)
मोरित्—मरत (भूवे मरना, मारना)
मोचा—मूच (पेशाब)
मोचित्—मेहति (भिगोना, नम करना)
मूझ—(मनुष्य, पति)
मुराव्येद—मूर(फारसी),चीटी भक्षक
मुखा—मक्षी, मगस् (फा०) (मक्खी)
मुश्का—मगस् (मक्खी)
मी—हम
मित्—मोइत् (धोना)
मिश्का—मूषक (चूहा)
मिश्—मूषक(चूहा)
म्यासो (म्यास)—मास
म्यत्.—मथति (मथना)
न—नि, परि(ऊपर, द्वार)
न-बेग्—निर्वेग(दौड, आक्रमण)
न-बेलो—न-अविल (परिशुद्ध साफ)
न-वोर-नि-हार (एकत्रित करना)
न-वेश् (इवात्)—नि-वेशयति (टागना)
न-विसात्.—निवेशयति (टागना)
न-वोजित्—नि वहति(ले आना ले जाना)
न-व्यज्(इव)ात्—निबधति (बाधना)
नगिशोम्, नगोइ —नग्न (नगा)
नगोलो—नग्नल (नगा)
न गोवर् (रेत)—नि ज्वलति (जलना)
न-रेगो—नि गिरि (गिरि पर.)
न-ग्रवित्—नि-गृभीति (लूट लेना)
नाद्—परि, उपरि (ऊपर)
ना-दोल्गो—नि-दीर्घ (चिर-कालसे)
ना-एखात्—नि-एषति (आना)
न-झिनात्—नि-छिनत्ति (फसल काटना)
न-काज्—नि-काश (शासन-पत्र, आज्ञा)
न-लगात्—नि-लगत (ऊपर रखना, लागू करना)
न-लेगात्—निलगत (आश्रित होना)
न-लेपित्—निर्लिपति (चिपकाना, लेपना)
नामि—न (हमारे द्वारा)
न-पदेनिये—निपातना (आक्रमण करना)
न-पेकात्—नि-पचति (पकाना, भूनना)
न-पिवात् स्या—नि-पिवति (पीना)
न-पिरात्—नि-पीडयति (दवाना)
ना-पितोक—निपीतक (पान)
न-पोकाज—नि-प्रकाश (दिखाने के लिये)
न-पोल्नेनिये—नि-पूर्णना (पूरा करना)
न-पोस्लेदोक् (न-पस्लेदक्)—नि-पश्चात्तन(पीछे, अतमें)
न-रोद्—नि-रोध (जनता)
नोस् (नस्)—नासिका, नासा
न-सादित्—नि-सादयति(रोपना)
न-झदात्—नि-सादयति(रोपना)
न-सेदानिये—निपीदका (बहु-सख्यकोका बैठना)
न-सेद्का—निपीदका (बैठकी)
न-स्लिशका—नि-श्रूपका (सुनना)
न-स्मेखात् स्या—निस्मयति (हसना)
न-स्तावित्—नि-स्थापयति (रखना)
ना-सुख—नि-शुष्क (सूखा)
नश्—न (हमारा)

ने—न (नही)
ने-ब्लागो-प्रियत्निइ—न-भर्ग-प्रियत्नु (अशुभ, अननुकूल)
ने-वेदेनिये—न-वेदना (अविद्या, अज्ञान)
ने-वीदल्—न-वित्त (अनदेखा, अद्भुत)
ने-ग्दा—नकुत्र (कही नही)
ने-पोच्तेनिये—न-पूजना (असम्मान)
ने-प्रियातेल्—नप्रियतर् (शत्रु, अमित्र)
ने-प्रियत्न—न-प्रिय (अप्रिय)
ने-प्रोवद्निक्—न-प्रबोधक (बिजली-रोधक)
ने-प्रोशेन्निइ—न-प्रश्नीय (बिना पूछा)
ने-स-वेदुश्चिइ—न-सवेदीय (अज्ञ)
ने-सो-ज्नातेल्.—न-स-ज्ञातर् (अचेतन, अनभिज्ञ)
नेस्ति—नेपति (लेजाना, ढोना)
नेत् } —नेति (नही)
नेत्तो }
ने-उच्—अन्—अनूचान (अपठित)
ने-चेगो—न-किं (कुछ नही)
ने-याव्का—न-आयान (अप्रकाशन)
नि—न (नही)
नि-ग्दे—नकुत्र (कही नही)
निझइशिइ—नीचीयस् (बहुत छोटा, बहुत नीच)
निझे—नीचैस् (नीचे)
निझ्—नीच (सबसे नीचे)
निझ किइ—नीच (नीचे)
झनि निइ—नीचीय (नीचेका)
निज्—नीच (सबसे नीचे)
निज्ञात्—नहति (बाधना)
निजीना—नीचीय (निम्नस्थान, नीचा)
निज्किइ—नीचक (नीचा, छोटा, तुच्छ)
निज्रोस्त्.—नीचत्व (नीचता)
निज्शिइ—नीचीयस् (बहुत नीचा)
नि-काक्—न कथ (किसी तरह नही)
नि-ककोइ—न क (कोई नही)
नि-कोग्दा—न कदा (कभी नही)
नि-क्तो—न क (कोई नही)
नि-कुदा—न कुत्र (कही नही)
निस्—निस् (नही)
निस्-पदात्.—नि-पतति (गिरना)
नो—नु (किंतु)
नोवेइशिइ—नवीयस् (नवीनतम)
नोवो (नवो)—नव (आधुनिक)
नोवोस्त्—नवत्व (समाचार)
नोगोत्—नख (नर)
नोस् (नस्)—नासा (नाक)
नोसिक—नासिका (नाक)
नोसितेल्—नेष्टर् (ले जानेवाला)
नोसित्.—नेपति (लेजाना, ढोना)
नोसो-रोग—नासा-शृग (गैडा)
नोचेव्का—निशीयिका (रात को रहना)
नोच्.—निशा (रात)
नु—नु (सचमुच, हा, क्यो ?)
नुत्रो—अन्तर, अदर (फारसी) (भीतर)
ओ—अ (निषेध)
ओबा—उभौ (दोनो), अभि (उपसर्ग)
ओव्-वि-नितेल्—अभि-वि-नेतर् (अपराध लगानेवाला)
ओब्-वि-नित्—अभि-वि-नेति (दोषारोपण करने वाला)
ओब-विसात्.—अभि विशति (लटकाना)
ओबे—उभे (दोनो)
ओव्-एद्—अभि-अद (भोजन)
ओब्-झिगानिये—अभिजागरण (जगाना, बालना)
ओब्लक—अभ्रक, अब्र (फारसी) (बादल)
ओबो-रोना—अभि-रण (रक्षार्थ युद्ध)
ओबो-रोन्यत्.—अभि-रुजति (फटकारना, रिगाना, गाली देना)
ओब्-रुगात्.—अभि-रुजति (रिगाना)
ओब्-ससिवात्—अभि-चूषति (स्तन पीना)
ओब्-स्लुझिवात्—अभि-श्रूषति (सेवा करना)
ओवेन्—अवि (मेष, भेड)
ओवचिइ—अविक (भेडक)
ओव्का—अविका (भेडी)
ओग्ने—अग्नि (आग)
ओग्ने-विद्निइ—अग्निविध (आग-जैसा)
ओग्ने-स्लुझे नियें—अग्नि-श्रूपण (अग्नि-पूजा)
ओग्ने-तुशीतेल्—अग्नि-तोष्टर् (आग-बुझावक)
ओगो—अहो!
ओगोन्योक्—अग्निक (प्रकाश)
ओदिन् (अदिन्)—(एक)
ओद्नो—आदि (एक बार)
ओ-झिवात्—आ-जीवति (फिर जिलाना)
ओ-झ ोग्—आ-ज्योति (जलन)
ओझ ार—आज्वर, अजोर (जलाना)
ओको—अक्षि (आख)
ओलेन्.—हरिण
ओन्—एपत् }
ओना—एपा } यह
ओनो—एनत् }
ओ-पिवात् स्या—आ-पीयते (पी-पीकर अपनेको मारना)
ओप्यत् (अपेत्)—अपि

ओ-प्.यामेनिये—आ-पीवना (शराब पीना)
ओमादा—आ-साद (दुर्गन्ध करना)
ओ-स्वेतित्—आ-श्वेतति (प्रकाश करना)
ओ-स्लुशानिये—अवश्रूपणा (आज्ञा न मानना)
ओ-स्लिशात् स्या—अवश्रूयति (ठीक न सुनना)
ओ-स्मेनिवात्—आ-स्मयत (परिहास करना)
ओम्—अक्ष (धुरा)
ओस्मि-नोग्—अष्टनख (अठपैरा)
ओत्—आत् (से)
अत्-वेचात्—उद्-वचति (उत्तर देना)
ओत्-व्यजात्.—उद्-बधति (बंधन खोलना)
ओत्-दानिये—उद्-दान (प्रति-दान)
ओ-त्योसिवात्—आ-तक्षति (गढ़ना, पत्थर छाटना)
ओत्-झिवात्—अ-जीवति (मरजाना)
ओत्-कजात्.—प्रति-कथयति (इन्कार करना)
ओत्-कुदा (अत्-कुदा)—कुत (कहाँसे)
ओत्-मिरानिये—उत-मरण (मर जाना)
ओतो—आत् (से)
ओत्-पदात्.—आ-पतति (गिर जाना)
ओत्-रझात्—आ-राजते (प्रतिबिंबन करना)
ओत्-तोचित्—उत्-तीक्ष्णति (तेज करना)
ओत्-तुदा—तत (वहाँसे)
ओख्—आह !
ओखोता—आखेट (शिकार)
ओचरोवानिये—आश्चर्य करना, जादूमें होना

ओचि—अक्षि (आँख)
पा—पाद (पग)
पदात्.—पतति (गिरना)
पदेनिये—पतना (गिरावट)
पाइ—पाद (भाग)
पल्का—फलक (डंडा)
पार—वाष्पर (भाप)
परेनिये—परायणा (पलाना)
पास्तुख—पातुक (मेषपाल, चरवाहा)
पतेर्—पितर् (पिता)
पखात्—(जुती भूमि)
पेना—फेन
पेर्विइ—पूर्व (पहिला)
पेरे—प्र, परि, प्राग्
पेरे-विरा(ब्रा)त्.—परि-भ (ह) रति (हटाना)
पेरे-वोजित्.—परिवहति
पेरे-व्यज्का—परिबंध
पेरे-ग्रिजात्—परि-ग्रसति (काट डालना)
पेरे-देल्—परिदार (पुनर्विभाजन)
पेरे-एदात्.—प्र-अत्ति (बहुत खाना)
पेरे-झिवानिये—परि-जीवना (अनुभव)
पेरे-झोग्—प्रजाग (बहुत गरमाना, दीप सजाना)
पेरे-लेझात्—प्र-ऋधते (ऊपर चढ़ना)
पेरे-पइवात्—प्र-पिबति (पान-मत्त होना)
पेरे-पिवात्—प्र-पिबति (पान-मत्त होना)
पेरे-प्लिवात्—परि-प्लवति (तैर जाना)
पेरे-पोइत्—प्र-पिबति (पान-मत्त होना)
पेरे-पुत् ये—प्रपथ (चौरस्ता)
पेरे-रोदित्—प्र-रोहति (पुन-रुज्जीवन करना)
पेरे-रुबात्—प्र-रभति (मारना, काटना)

पेरे-सीदेत्—प्रसीदति (बैठ जाना)
पेरो—पक्ष, पर (फारसी), पख (लेखनी)
पेचेनि(न्)ये—पचना (पकाना)
पेच्का—पचक (चूल्हा)
पेचुर्का—पचक (छोटा चूल्हा)
पेच्.—पच (भूनना, तलना, झुलसना)
पिव्नया—पिवनिया (मद्यशाला)
पीवा—पान (हलकी शराब)
पीला—पीडा (आरा)
पीलित्—पीडयति (चीरना)
पिसानिये—पिशना (लिखना)
पिसातेल्—पिशयितर् (लेखक)
पिसात्—पिशति (लिखना)
पित्—पीति (पीना)
प्लवानिये—प्लवना (तैराकी)
प्लाव(वि)त्.—प्लवति (तैरना)
प्लावेत्स्—प्लावक (तैराक)
प्लोद—फल (संतान)
पो—प्र, परि (द्वारा, ऊपर, भीतर, को)
पो-बेग—प्र-वेग (भागना)
पो-बेझात्—प्रवेजति (भागना)
पो-ब्(वि)रात्—प्रभ (ह) रति (ले जाना)
पो-बुदीतेल्—प्र-बोधितर (भड़कानेवाला)
पो-बुदीत्—प्र-बोधति (भड़-काना, उठाना, उत्तेजित करना)
पो-वेदेनिये—प्र-वेदना (प्रवृत्ति, चाल-चलन)
पो-वेसित्—प्रविशति
पो-व्योर्त्तिवानिये—प्र-वर्त्तना (घुमाना)
पो-वोज्का—प्रवहका (प्रवहण, यान)
पो-व्यज्का—प्र-बधक (सिर बंद)

पो-गोलोव्निइ—प्र-गल (सरदार जेनरल)
पोद्—पद (अन्तर, नीचे)
पो-दवात्—प्रदाति (देना, भेट देना)
पो-दारित्—प्रदाति (देना, भेट देना)
पो-दारोक—प्रदारक (भेट)
पो-दात्—प्रदाति (कर देना)
पो-दाचा—प्रदाक (देना, सेवा)
पोद्-वोद्नया—पद्-उदीय
पोद्-व्यज्का—पद्-वधक
पोद्-झारित्—पजारत (तलना)
पो-दिरात्—प्र-दरति (चीरना, फाडना)
पोद्-तचिवात्—प्र-तीक्ष्णति (तेज करना, धार लगाना)
पो-दुर्नेत्—प्रदुर्नेति (कुरूप होना)
पो-एज्द्—प्र-एत् (ट्रेन)
पो-एज्दित्—प्र-एति (चलना, फिरना)
पो-झार—प्रज्वार (आग लगना)
पो-झार्निइ—प्रज्वारनिक (आग-बुझावक)
पो-झिरात्—प्र-जीर्यति (खा डालना)
पो-ज्योविवात्—प्र-जम्भति (जम्हाई लेते रहना)
पोजझे—प्रहि
पो-ज्न (वा) निये—प्रजानना (ज्ञान, प्रज्ञान)
पोइत्—पिबति (पीना)
पो-इती—प्र-एति (जाना)
पो-काज्—प्रकाश (दिखलाना)
पो-कज़ानिये—प्रकाशना (गवाही)
पो-कुशात्—कोशीदन् (फारसी—कोशिश करना, यत्न करना)
पोल्नेत्—पूर्णति (भरना, पूरा करना)
पोल्नो—पूर्ण (पूर्णतया, भरा)

पोल्नो-वोद्निइ—पूर्णोदिनी (गहरी नदी)
पोल्नोस्त् यु—पूर्णत्व (पूर्णता)
पोल्नोता—पूर्णता
पो-मज़ात्—प्र-माखत (तेल लगाना)
पो-माज़ोक्—प्र-मार्जक (झाड, ब्रुश)
पो-मेस्यच्नो—प्रतिमास
पो-नीझे—प्र-नीचै (कुछ नीचे)
पो-पदानिये—प्र-पतना (गिरना)
पो-प्लवोक्—प्रप्लावक (तिरने-वाला, काग्)
पो-पोइत्—प्र-पाययति (घोडो को पिलाना)
पो-पोइका—प्रपायिका (प्रपा, नौका)
पो-प्रोसित्—प्र-पृच्छति (पूछना)
पो-राझे निये—पराजयना (पराजय)
पो-रझात्—पराजयत
पो-रेज्—प्र-रिंह, रेज़ (फारसी-काटना, घायल करना)
पो-रोदा—प्ररोह (सतान, जाति, रुधिर)
पो-रोझ दात्—प्र-रोहति (जन्म देना)
पो-सादित्—प्र-सादयति (बैठाना)
पो-सीदेत्—प्र-सीदति (थोडा बैठना)
पोस्ले—पश्चात्, पस् (फारसी)
पोस्लेद्निइ—पाश्चात्तन (पिछला)
पोस्ले-दोवातेल्—पश्चाद्-धावितर् (अनुगामी)
पो-स्लुशानिये—प्रश्रूपणा (आज्ञाकारिता, तपस्या)
पोस्-मेर्त निइ—पश्चात्-मृत्यु (पोस्टमार्टम्)
पो-स्मेशित्—प्र-स्मयत (हसाना)
पो स्पात्—प्र-स्वपिति (थोड़ा सोना)

पो-स्तावित्—प्रस्तावयति (रखना, उपस्थित करना)
पो सुखु—प्र-शुष्क, खुश्क (फारसी,-सूखे मार्गसे)
पो-तुखानिये—प्र-तोपण (बुझाना)
पो-तुशित्—प्र-तुषति (बुझाना)
पोचितात्—पूजति (सम्मान करना)
पो-चिनित्—प्रचिनोति (मरम्मत करना)
पोच्तेन्निइ—पूजनीय (माननीय)
पो-शिव्का—प्र-सीव्यक (सिलाई)
प्—प्र
प्र— प्र (महा)
प्राविलो—प्रभत्
प्रावितेल्—प्र-भवितर (शासक)
प्रावितेल् स्त्वो—प्र-भवितृत्व (सरकार, राज्य)
प्रावो—प्रभु (कानून, अधिकार)
प्रावो-वेद—प्रभु-वेद (कानूनदा)
प्र-देद्, प्र-देदुच्का —परदादा
प्र-मातेर्—प्र-मातर् (जगन्माता)
प्र-रोदितेल्—प्र-रोधितर् (पुरुखा), वश-पिता,
प्रेदो—प्रति (सामने, सम्मुखे)
प्रेद् (पेरेद्)—प्रति, प्राग् (सम्मुख, सामने)
प्रे-दातेल्—प्रति-धातर् (विश्वास-घाती, देशद्रोही)
प्रेद्-वे (वि) देनिये—प्राग्वेदना (पहिले जानना, भविष्य-दर्शिता)
प्रेद्-गोर् ये—प्रति-गिरि (पहाडको जड, सानु)
प्रेद्-सेदातेल्—प्र-सीदितर् (प्रेसीडेंट, प्रसीदन्त)

प्रेद्-स्कजानिये–प्राक्-कथना (भविष्यद्-वाणी)
प्रेद्-गदात्–प्राग्-गदति (भाखना, दूर-दर्शिता)
प्रेभ्र्दे–प्रागदा (पूर्वत)
प्रि–प्र
प्रि-वेगात्–प्र-वेजति (लेजाना, करने जाना)
प्रि वेभात्–प्र-वेजति (दौडना)
प्रि-वोज्–प्र-वह (लाना)
प्रि–ज्नाक–प्र-ज्ञक (चिह्न, सूचन)
प्र-ज्नानिये–प्र-जानना (स्वीकारना)
प्रि–काज्–प्र-काय (आज्ञा)
प्रि-नदित्–प्र-नुदति
प्रि-न्यातिये–प्र-नीति (स्वीकार, स्वागत)
प्रि-पादोक्–प्र-पातक (आक्रमण)
प्रि-रोद–प्र-रोह (प्रकृति)
प्रि-रोस्त्–प्र-रोह (उगना, बढना)
प्रि-रुचात्–प्र-रोचति (पालतू बनाना)
प्रि सोस्का–प्र-चू (शो) षक (चूसनेवाला)
प्रिसिलात्.–प्रेपयति
प्रि-त्यनुत्–प्र-तनोति (तानना)
प्रि-चितानिये–प्र-चितना (शोक करना)
प्रियातेल्–प्रियतर् (मित्र)
प्रियत्निइ–प्रियत्नु (प्रिय)
प्रो–प्र (लिये, के)
प्रोवेग्–प्रवेग (दौडना)
प्रो-व्लेस्क–प्र-भ्राज (प्रकाश)
प्रो-वुदित्–प्र-बुध्यति (जागना, उठाना)
प्रो-वोज्–प्र-वह (शकट, ढोने का साधन)
प्रो-दवात्–प्र-दापयति (बेंचना)
प्रो-दाश–प्र-दाक (बेंची, विक्रय)
प्रो-दान्निइ–प्रदत्त (बिका)
प्रो-दिरात्–प्र-दरति (चीरना)
प्रो-प्रो-वेदिनक–प्र-प्र-वेदनिक (उपदेशक)
प्रोमित्–पृच्छति (पूछना, मागना)
प्रो-सिपात् स्या–प्र-स्वपिति (जगाना)
प्रो-स्पात्–प्र-स्वपिति (सो जाना)
प्रोस् वा–प्र-श्न (मागना)
प्रोतिव्–प्रतीप (विरुद्ध)
प्रो-चितात्.प्र-चितयति (पढना)
प्रोच्–प्राच् (दूर, दूर जाना)
प्रो-शि (वा) त्–प्र-सीव्यति (सीना, टाकना)
प्रोश्लोये–पश्चा (पिछला)
पुत्निक–पथिक (यात्री)
पुत्योव्का–पथीयिका (यात्रा)
पुतेशेस्त्विये–पथिकत्व (यात्रा)
पुत्–पथ (मार्ग, सड़क)
पुन् यानित्सा–पानका (मदिरामत्ता)
प्यानिस्त्वो–पानकत्व (मत्तता)
पिशात्–पिशति (प्रकाशना)
प्यातोक्–पचक (पाच)
प्यत्-ना-द्त्सत्–पच-दश (पाच ऊपर दस)
प्यातो–पच (पाच)
प्यातया-पचतय (पाचवा)
प्यत्–पच (पाच)
प्यत्-देस्यत्–पचाशद् (पाच-दस, पचास)
राब्–लाभ (दास)
रबोता–लाभता (काम, श्रम)
राद्–राध, ह्लाद (प्रसन्न, खुश)
रादोवात्–ह्लादति (हर्षित होना)
रादोस्त्–ह्लादित्व (खुशी)
राझ्–राग (क्रोध)
राज्, रास् –प्रति, –वि (विना, दूर)
रज्-वेग्–वेग (दौडना)
रज्-बोर–वर (चुनना, बाटना)
रज्-बुदित्–बुध्यति (जागना)
रज्-वेद्का–वेदका (खोजना)
रज्-वेद्-चिक्–वेदक (ढूढने वाला, स्काउट)
रइ–रै (स्वर्ग)
रन्–रण (घाव)
रस्ति–रोहति (उगना, बढना)
रत्-निक्–राति (योद्धा)
रत्–व्रात (सेना)
रुदेनिये–रोहणता (लालपन)
रेब्योनक्–ऋभुक (लडका)
र्योव्–रव (शोर, गर्जन)
रेवेत्.–रवति. (शोर करना)
रेज़त्–रिहति, रेतति (काटना)
रेज़्निक–रेतक, रिहक (कसाई)
रेका–रेखा, लेखा (नदी)
रेच्.–ऋक् (भाषण)
रिसोव्का–लेख, रेख (रेखाकन)
रोग्–शृग (सीग)
रोद्–रोध (परिवार, वश)
रोदिना–रोधिनी, रोहिणी (जन्मभूमि)
रोदितेलि–रोदितर (माता-पिता)
रोदित्.–रोहति (पैदा करना, जन्म देना, फारसी, रोईदन्)
रोझात्, रोझ दात्., रोदित् स्या–– —रोधति (प्रसव करना)
रोझ देनिये–रोहणा (जन्म)
रोझोक्–शृगक (छोटी सीग)
रोस्त्–रोह (वृद्धि)
रुब्का– रुभका (काटना)

रुगात्.—(रिगाना, गालीदेना, शाप देना, चिढना)
रुगान्.—(गाली देना, शाप देना, चिढ़ना)
रुसिइ—ऋषि (पिंगल, श्वेत)
रिदात्.—रोदति (रोना-सिसकना)
रिझिइ—रोह, लोह (लाल)
रिचात्.—ऋचति (शोर करना, चिल्लाना)
स्—स, सम् (सह, लिये, से, ऊपर)
सद्—सद् (उद्यान)
सदित् स्या / सझात्. —सीदति (बैठना)
साम्—स्वय
सामो—वार्-स्व वाल (समावार चूल्हा)
सामो-लेत्—स्वयडयन (विमान)
सामिइ—स्वय
साखर—शर्करा
स्-वेगात्—स-वेगति (दौडजाना)
स्-बोर—स-वृर, स-भर (सभा)
स्-वेदेनिये—सवेदना (ज्ञप्त, सूचना)
स्-वेदुश्चिइ—स-विद्वस् (विद्वान्, निपुण)
स्व्योकोर—श्वगुर (ससुर)
स्वेक्रोवि—श्वश्रू (सास)
स्-वेर्ख—स्वर्ग (ऊपर)
स्वेत्—श्वेत (सफेद, ससार, प्रकाश)
स्वेतत् / स्वेतित् —श्वेतति (प्रकाशना)
स्वेत्लो—श्वेतल (प्रकाशमान)
स्वेतोच्—श्वेतक (मशाल, दीपक)
स्-विदानिये—स-विदना (मिलना)
स्-विदेतेल्—स-वेत्तर् (गवाह)
स्वोयो / स्वोइ —स्वीय (अपना)

स्वोइस्त्वो—स्वीयत्व (गुण)
स्वोयाक्—स्वीयक (बहनोई)
स्-व्यज्का—स-बधक (मुट्ठा)
स-व्यज्.—स-वध (बधन)
स्-देर्झात्—स-दृहति (पकडना)
सेबे / सेबे / सेब्या —स्वीये (अपने लिये)
सेगो-द्नया—स्वक-दिन (आज)
सेदेत्—श्वेतति (बाल सफेद होना)
सेदोइ—श्वेत (सफेद बालवाला)
सेइ / सिया / सिओ —स (यह)
सेमि-सोतिइ—सप्त-शती (सात सौ)
सेम्-ना-द्त्सत्.—सप्त-दश (सात ऊपर दस, सत्रह)
सेम्—सप्त (सात)
सेम्—देस्यत्—सप्त—दशन् (सत्तासी)
सेम्-सोत्—सप्त-शत (सात सौ)
सेर्द्त्से—श्रद, हृत् (हृदय)
सेस्त्रा—स्वसर् (बहिन)
सेस्त्—सीदति (बैठना)
सिदेत्—सीदना (घर बैठना)
सिदेत्—सीदति (बैठना)
सीला—शील (बल)
स्-कज्—स-कथा (कहानी)
स्-कजात्—स-कथयति (कहना)
स्-कज्का—स-कथका (कहानी)
स्-कुचात्.—स-कुचति (उदास होना)
स्लव.—श्रव (यश)
स्लाविन्.—श्रवति (यश बखानना, श्लोक करना)
स्लाव्निइ—श्रवणीय (यशस्वी)

स्ले.ग्का—स-लघुक (हल्का)
स्लुगा—श्रूपक (सेवक)
स्लुझान्का—श्रूषणिका (सेविका)
स्लुझ्वा—श्रूपा (सेवा)
स्लुझेनिये—श्रूषणा (सेवा करना, काम करना)
स्लुझित्—श्रूषति (सेवना, काम करना)
स्लुख्—श्रूपा (सुनना, कान)
स्लुशानिये—श्रूपणा (सुनना)
स्लु (स्लि) शात्—श्रृपति (सुनना)
स्-मेझा (झि) त्—स-मेचति (आख मीचना)
स्-मेर्त्—स-मर्त (मृत्यु)
स्-मेस्—स-मिश् (मिश्रण करना)
स्मेख्—स्मय (हसना)
स्मेयात् स्या—स्मयति (हसना, मुसकराना)
स्नेग्—स्नेह (हिम, वर्फ)
स्नोवा—स-नव (नया, ताज़ा)
स्नोखा—स्नुपा (नोह, पुत्रवधू)
सो—सम्, स
सोबाका—श्वक (कुत्ता)
सो-विरानिये—स-हरणा (सभा एकत्रित होना)
सो-विरात्—स-हरति (एकत्रित करना)
सो-वेत्—सवेत (सभा, मत्रणा)
सोवेत्निक्—सवेतक (कौंसलर, परामर्शदाता)
सोव्-पदत्—स-पतति (सपात, एक साथ पडना)
सो-ज्नानिये—सजानना (चेतना, ज्ञान, स्वीकार)
सो-ज्नातेल्—स-ज्ञातर् (जानने वाला)
सो-इति—स-एति (जाना)
सोल्न्त्से—सूर्य

सो-म्नेनिये–स-मनना (सदेह)
सोन्–स्वप्न
सोन्निक्–स्वप्नक (स्वप्न, जोतिसी)
सो-रात्निक्–स-अरातिक (सह-योद्धा)
सोसानिये–चूपणा (चूसना)
सो-सेद्–स-सद् (पडोसी, फारसी–हम्सद)
सोसोक्–चूपक((स्तनमुख)
सो-स्ताव्–स-स्ताव (जोडना, गुफना)
सो-स्तोयानिये–स-स्थाना (स्थिति, अवस्था)
सोसून् (रोक्)–चपण (चूसना, स्तन पीना)
सोत्–शत (सौ)
सोतिया–शती (सौ)
सोतिइ–शतीय (सौवा)
सोखनुत्–शुष्णति (सूखना)
स्-पदानिये–स-पतना (गिरावट, पतन)
स्-पोइवात्–स-पाययति (मदिरामत्त बनाना)
स्पाल्-न्या–स्वापालय (शयन-गृह, शयन-यान)
स्पानियो–स्वपना (सुलाई)
स्पात्–स्वपिति (सोना)
स्-स्का–स्वपका (नींद)
स्रम्–(शर्म फारसी, लज्जा)
स्रेदे–श्रद्, हृद् (मध्य)
स्रेद्स्त्वो–हृत्त्व (मध्यता)
स्तवित्–स्थापयति (रखना)
स्तान्–स्थान (कैप, आकार)
स्तानोवित्–स्थानयति (रखना)
स्तानोक्–स्थानक (बेंच)
स्तानित्स्या–स्थानका (स्टे-शन)
स्-स्ताजिवात्–स-स्तजनि (राटना)
स्तो–सत (सौ)
स्तोयत्–स्थिति (ठहरना)

स्तोइ–स्थाहि (ठहर)
स्तोइकिइ–स्थायुकीय (दृढ)
स्तोल्–(टेबुल)
स्तोल्–स्थाल (स्थाणु, खम्भा)
स्तोयानियो–स्थानि (खडा होना)
स्तोयात्–स्थायति (खडा होना)
स्-त्राख्–स-त्रास (भय, लडाई)
स्-त्राशित्–स-त्रस्यति (भय-खाना, आतंकित होना)
स्-त्रगानिये–स-त्रासना (डराना)
सु-दार्न्या–सु-दाना (महिला)
सु-दर्–सु-दान (भद्र पुरुष)
सुत्–सत् (सत्त, सार)
सुखो–शुष्क (सूखा)
सुखोवेइ–शुष्कीय (सूखा, सूखी हवा)
सुखो-पुत्निइ–शुष्क-पथ (खुश्की का मार्ग, स्थल-पथ)
सुखोस्त्.–शुष्कत्व (सूखाई, सूखा-मा)
सुशा–शुष्क (सूखी भूमि)
सुशे–शुष्कीयम् (अधिकतर सूखा)
सुशेनिये–शोपणा (सुखाई)
सुशित्–शुष्यति (सूखना)
सुश्का–शुष्का (सूखना)
सूप्–सूप (मास-रस)
स्-चितात्–स-चिनति (गिनना)
सिन्–सूनु (पुत्र)
स्-युदा–इह (पाली– इध, यहा)
स्-यक–एतादृक् (ऐसा)
स्-यम्–तत्र (यहा)
ता–सा (वह)
तोन्–स (वह)
तो–तद् (वह)
तइन्–तायति (छिपाना, शरण देना)
तइना–तायना (रहस्य, भेद)

ताक्–तादृक् (ऐसा)
ताक्-झे–तादृक हि (भी, ही)
त्वोइ
त्वोया } –त्वदीय (तेरा)
त्वोयो
तेम्नेत्–तमस्यति (अंधेरा करना)
तेम्नो–तमस् (अंधेरा, अस्पष्ट)
तेप्लेत्–तप (ल) ति (गर्म होना)
तेप्लो–तपल (गर्म)
तेप्लोता–तपल्ता (फैलती आच)
तेर्ज़ानिये–तर्जना (सताना, चीरना)
तेर्ज़ान्–तर्जति (चीरना, छिन्न करना)
तेसानिये–तक्षणा (काटना, फाडना)
तेसात्–तक्षति (काटना)
तेस्नित्–तीक्ष्णोति (दबाना, गारना)
तेतिवा–ततुव (धनुषकी ज्या)
त्योत्का–ताती (चाची, बुआ)
त्योत्या–ताती (चाची, बुआ)
तिखिइ–तुषी (शात, नीरव)
तो–तद् (वह, नपुंसक)
तोग्दा–तदा (तब)
तो-एस्त्–स अस्ति (वह है, अर्थात्)
तोनिन्का
तोन्किइ } –तनुका, तन्वी (पतली)
तोपित्–तपति (तपाना, पिघलाना)
तोप्का–तपका (लालटेन की बत्ती, गर्मीना)
तोन्–स (वह, पुंलिंग)
तोचेनिये–तक्षणा, तीक्ष्णना (घिसना, तेज करना)
तोच्योनिइ–तीक्ष्ण (छेनी किया)
तोचिल्का–तक्षलिका (घिसने का पत्थर)

तोचिल्नया—तक्षलका (घिसने की चक्की)
तोचित्—तक्षति (घिसना, तेज करना)
त्रवा—दूर्वा, तृण (घास, बूटी)
त्राव्का—दूर्वका (पत्ती, घास)
त्रेतिइ | त्रेत् —तृतीय (तीसरा)
त्र्योख्—त्रिक (तिन-)
त्रिअदा—त्रिधा (त्रिप्रकार)
त्रि-द्त्सत्—त्रि-शत् (तीस)
त्रिझ्दि—त्रिधा (तीन बार)
त्रि-ना-द्त्सत्—त्रयोदश (तीन ऊपर दस, तेरह)
त्रि-स्ता—त्रि-शत (तीन सौ)
त्रोइका—त्रिका (तीनवाली)
त्रुसित्—त्रस्यति (भय खाना)
त्र्यसेनिये—त्रसना (कापना, हिलना)
त्र्यस्ति—त्रस्यति (कापना, डोलना)
तुदा—तत्र (वहा)
तुमान्—धूमन् (भाप, कुहरा, धुआ; फारसी—दूदमान्)
तुशित्.—तुषति (बुझाना)
ति—ते (तू)
त्मा—तम (अधकार)
त्फु—थू (थूकना)
त्यानुत्—तनोति (तानना, खींचना)
उ—उद्, अव, वि
उ-बेगात्—उद्-वेजति (भाग जाना)
उ-वेदित्—उद्-वेदयति (समझाना)
उ-वित्—उद्-भिदति (मार डालना)
उ-वितोक्—उद्-भित्क (क्षति, हानि)
उ-वझात्—उद्-भजति (सम्मान करना)
उगोल्—इगाल, अगार (कोयला)
उ-दाल्—उद्-दार (साहस)
उ-दार—उद्-दार, विदार (चोट, आघात, फारसी—दरीदन्)
उ-दारित्—उद्-दारयति (मारना, चोट करना)
उ-झे—उद्हि (पहिले ही)
उ-इति—एति (जाता है)
उ-काज—उत्-कथ (आज्ञा)
उ-लेतात्—उद्-डयति (उडता है)
उ-निझे नियां—अव-नीचना (नीचा दिखाना)
उस्त—उत्स (मुह, ओठ)
उस्त्.यें—ओष्ठ (मुह, ओठ)
उख्—(उह, ओह, आह)
उचेनिये—ऊचना (पढाना, सिखाना)
उचीतल—ऊचितर् (शिक्षक)
उचित्—ऊचति, वक्ति (सीखना, सिखाना)
फु (इ)—थू (धिक्कारना)
ख्वाला—स्वर (प्रशसा,)
ख्वालित्—स्वरति (प्रशसा करना)
खोलोद्—शरद (सर्दी)
खुदेनिये—क्षुद्रणा (पतला होना)
खुदोइ—क्षुद्र (बुरा)
खुदिश्का—क्षुद्रिका (पतली तरुणी)
त्स्वे त्—श्वेत (रग, फूल)
त्सेलो—सकल (सारा, सियल)
त्सेन्त्र—केन्द्र
चशा—चष (प्याला)
चशेच्का—चपक (प्याली)
चश्का—चपक (प्याली)
चेइ—कस्य (किसका, जिसका)
चेरेप्—कर्प (र) (खोपडी)
चेत्वेरो—चत्वारि (चार)
चेत्वेर्—चतुर्थ (चौथाई)
चेतिर्—चत्वारि (चार)
चेतिरेझ्द्—चतुर्धा (चार बार)
चेतिरे-स्त—चतु शत (चार सौ)
चेतिर्-ना-द्त्सत्—चतुर्दश (चौदह)
चिनित्—चिनोति (मरम्मत करना, पेवद लगाना)
चितातेल्—चितयितर् (पाठक)
चितात्—चितयति (पढना)
चिखानिये—छिक्कणा (छीकना)
चिखात्—छिक्कति (छीकना)
च्मोकात्—चुबति (चूमना)
च्तो—कति (कि) (क्या, फारसी, चि)
शकाल्—शृगाल (गीदड, फारसी, शगाल)
शेप्तात्—शपति (पुकारना)
शेस्ति-द्नेव्का—पट्-दिनक (पडह)
शेस्तोइ—पष्ट (छठा)
शेस्त्—षट् (छ)
एइ—अयि
एता—एता (यह, वह)
एतत्—एप (यह, पुल्लिग)
युनोस्त्—युवत्व (जवानी)
युनिइ—यून (जवान)
यावित् } याव्ल्यात् } —आयाति (दिखलाना)
याव्का—(आवक, वर्तमान)
याव्लेनिये—(आवना, प्रकट होना)

(२) शब्दानुकरण

मर्गात्—आख मलकाना
आख्—आह
खाखा—हाहा
चप्कात्.—चप्चप् (खाना)
इकात्—हिक्कति (हिचकी लेना)
चिखात्—छिक्कति (छीकना)
त्फु—थू
फु—फू
कश्ल्यात्—खासना
गेइ—हे (सबोधन)

(३) उपसर्ग

रूसी भाषामें उपसर्गोंका महत्त्व बहुत अधिक है। समाजके विकासके साथ नये शब्दोंकी अवश्यकता होती है। नये शब्दोके निर्माणमें उपसर्गोंको जोडनेका जितना अधिक प्रयोग रूसी भाषामें हुआ है, उतना किसी दूसरी हिन्दी-यूरोपीय भाषामें नही देखा जाता। वैसे संस्कृतमें भी माना गया है—"उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहार-सहार-विहार-परिहार-वत।" किन्तु इस बारेमें रूसी भाषा बहुत दूरतक गई है।

रूसी उपसर्ग (अव्यय भी)

अ—अ (निषेधार्थ)
वेज़्, वेज़ो, वेस् —वि (बिना)
व्—(अन्तर्)
वो, वोज, वोस्, वि —वि
दो—तावत् (फारसी—ता, तक)
दुर् (नोइ)—दुर् (बुरा)
ज़ा—आ, पश्चा (पीछे, परे)
इज़्, इस् —अत्, आ (से, फारसी—अज़्)
क्—(के, लिये, प्रति)
ना—नि (ऊपर, द्वार)
ने, नि —निर्, न (निषेधार्थ)
निस्—निस् (निषेधार्थ)
ओ—आ, अ (निषेधार्थ), अव
ओव्—अभि (चारो ओर)
ओवेज़्, ओवेस् —वि (बिना)
ओत्—आ, आत्, उत् (से, के, परे, लिये)
ओतो—अत्
पेरे—प्र, परि, प्राग्, पुनर्
पो—परि, प्र (ऊपर, द्वारा, अतर्, को)
पोद्—पद (नीचे)
पोरा—परा (पोराझे नियें-परा-जय)
पोस्ले—पश्चात् (फारसी—पस्)
प्रा—प्र (बडा)
प्रे—प्र
प्रेद, प्रेदो —प्रति, प्राक् (सामने)
प्रि, प्रो —प्र
राज़्, रास् —(प्रति, पुनर्, वि, दुर्, अभाव, विकार)
स, सो —म, स (द्वारा, लिये, से, ऊपर, फारसी—हम्)
उ—उत्, अव

(४) रूसी धातु

पसावेत्., पो,—प्रभवति (जोडना)
वेदित्, उ-, वेझ्दात् उ-, —वेदयति (जतलाना)
वेगत्—, वेगत, उ- वेगति (भागना)
त्रिवात्, दो—भवति, तावद् (मारना)
विरात्—चुनना,
विरात्, वि-,—चुनना,
विरात् इज़्-,—चुनना,
विरत्, ज़ा-, —भ(ह) रति, फ्यीमक् (लेजाना)
विरात्, ना-, —हरति, नी—(सचय करना)
विरान्-, मो, —हरति, म—(सचय करना)
विरात्, उ-, —हरति, अव—(हटाना)
वित्—भिद् (मारना)
वित्, उ-, —√भिद्, उद् (मार डालना)
वीवात्, प्रो-, —प्रभवति—(परीक्षण करना, जाचना)
वोल्तात्—वोल्लति (वोलना)
वोयात् स्या—भय (डरना)
व्रसि (वा) त्—भ्रश (फेंकना)
व्रसि, वि—वि + √भ्रश (फेंकना)
व्रात् स्या—भर्, √हर (लेजाना)
व्रदित्— √वर्ध (उठना, उभडना)
व्रोस (सिवा) त् (स्या)— √भ्रश (फेंकना)
वुदित्, व्रुदित्, वोज़्-, वुदित्., पो-, —वि + √ वुध (उत्तजित करना, भडकाना। (प्र √ वुध् (भडकाना)
वझ दात् विज़्-, —वि + √वुध (भडकाना)
विवात्—√भव (आना)
वि्—√भव (होना)
वझत्., उ,—प्र + √भज (भजन करना, सम्मान करना)
वरित्—√वल् (उबालना पकाना)
वरित्, प्रद्-, —प्रति + √वल् (खबरदार करना)
वेदि (व) त्—√विद् (जानना)
वेदि, वि—√ विद् (पाना, ढूढ़ना)
वेदोमित्, उ-, —अव + √विद

णिज् (सूचित करना)

वेर्ज़ नियेे, ओत्-, –अव + √वर्ज (अस्वीकार करना, फेंक देना)

वेर्तत् – √वृत् (मोडना, लौटना)

वेशिवात्, प्रे-, –प्र + √विश् (जोडना, लटकाना)

विवात्–√भव् (होना, दीर्घ-जीवी होना)

विदत्, प-, –प्र + √विद् (देखना)

विदेत् – √विद् (देखना)

विद्नेत् स्या–√विद्+य (दिखाई देना)

विनित्, ओव्-, –अव + √नी (अपराध लगाना)

विसत्.,पो-, – प + √ विश् (लटकाना)

वोज़ित् –√वह (ढोना, लेजाना)

वोजित् ,ना-, – ति + √ वह (लेजाना)

वोचत् ,ओत्-, –उत् + √वच् (उत्तर देना)

व्रतित् ,प्रो-, –प्र + √ वर्त (लौटाना)

व्रात्.–√हृर, भर (रखना)

व्रात्.,वोज़., वि + √वर्त (काटना)

विसित् , प्रो-, –प्र + √विश् (उठाना)

व्यज़ात् –√वध (बाधना)

गोवोरित् – √गो (बोलना, फारसी–गोईदन्)

गोरत्.,वि-, –वि+√गर् (जलाना)

गोरत्.,ना-, –
नि + √ गर
नि + √ज्वल } जलना, गर्म करना

गोरेत् –√गर, √ज्वल (जलाना)

ग्रेत्–√गर, √ज्वर (गर्म करना)

ग्रोवित्– √गृभ

ग्रोबित्, उ-, –उद् + √गृभ (गार डालना, नष्ट करना)

ग्रोज़ात्., उ-, –उद्+ √गर्ह (धमकाना, खतरेमें डालना)

ग्रिज़ात् , वि-, –वि + √ग्रस् (छिकोड खाना, चबाना)

ग्रिजात् , पेरे, –परि + √ग्रस (फाडखाना)

गुवित् – √क्षुभ, √ खुभ (खोभना, नष्ट करना)

दवात्.– √ दा (देना)

दवात्.,जा-, –आ + √ धा (रखना, सवाल पूछना).

दवात्., प्रो-, –प्र + √दा (बेचना)

दावित्.– √ दाव (दाबना)

दावित् , ज़ा-, –आ + √ दाव (चढ दौडना, चूर्ण करना, आ दाबना)

दावित्., प्रो.-, –प्र + √ दाव (दबाना)

दारित्.,पो.-, –प्र + √ दार (देना)

दारित्. स्या,उ-, –उद् + √दार (मारना, प्रहार करना)

दात् ,– √ दा (देना)

दात्.,पो-, –प्र + √ दा (भेंट देना)

दात्. (स्या), जा-, –पा + √धा (रखना)

दे (वा) त् – √ धा (रखना)

देलत्. (स्या)– √ दर् (करना)

देलित्.– √ दार् (बाटना)

देलयत्., ओत्-, –उद् + √दार (बाटना, अलग करना)

देर्ज़ात् – √ दृह (थाम्हना, रोकना)

दिरत्., वि-, –वि + √ दर् (चीरना, फाडना)

दिरत् , प्रो-, –प्र + √ दर (चीरना, जीर्ण करना)

दोज़्दत्.स्या– √ दुह् (पाना)

दोज़्दित्.– √ दुह (बरसना)

दोइत् – √ दुह (दूध दूहना)

द्रात्. (स्या)– √ दर् (चीरना, लडना)

द्रात्.,जा–; आ + √ दर (फाडखाना)

दुवात्.-वि,–; –वि + √ धूम (धौंकना, फूकना)

दुनूत्.–वि + √ धून् (धौंकना)

येदत्.,–वि–,वि + √अद् (खा डालना)

येत्त्.– √ अष (खाना)

येत्त्.– √ अस् (होना, है)

येखात्.–√एष (हाकना, चढाना, जाना)

झरित्., – √ ज्वर (जारना, तलना)

झेवत्.–√ चर्व (चीभना, कूचना जीमना)

झेल्तेत्.– √ हरित (पीला करना, फारसी–जर्दीदन्)

झ नियेे., परा-, –परा + √जिन (हराना, पराजय करना)

झेनित्. (स्या) – √ जनो (व्याह करना)

झच्.––√ धक्ष (जलाना)

.झीवित्,ओत्––अव √ जीव (मर जाना)

.झीवित्.––√ जीव (जिलाना)

झिगात्, ओव्–– √ अभि

झिगात्., पेरे-, –प्र √ जग (जलाना)

झिनेत्., वि-; –वि √ छिद (फसल काटना)

झितत्. न, – नि √ छिद (फसल काटना)

झित्.–√ जीव (बसना, रहना)

झित्.,– ओत्-, ––अव √ जीव (मर जाना)

ज्वइवात्, वि., ––वि √ ध्वन (घटी बजाना)

ज्वत्.– √ ह्व (पुकारना, –बुलाना)

ज्वेनेत्–– √ ध्वन (घटी

वजाना)
ज्योमित्—v घटी वजाना)
ज़्वेवत् — v जृभ (जभाई लेना)
ज़्वेवत्. पो, ओ —प्र v जह (त्यागना, छोड देना)
ज्योविवात्., पो-, — प्र v जृभ (जभाई लेते रहना)
ज़्लेलेनेत् — v हरित (हरा होना)
ज्नात् } v ज्ञा (जानना
ज्नवात्. }
ज्नवात् सो-, —स v ज्ञा (पहिचानाना, स्वीकार करना)
ज़्नाकोमित्.– v ज्ञाप् (परिचय कराना)
ज्नामेनोवात् — v ज्ञाप् (दिखलाना, सिद्ध करना)
ज़्नोचित् —v ज्ञा (समझना, नेमिक, जताना)
ज़्लोतित्. वि ,–वि-, v हरित (सोना लगाना, मुलम्मा करना)
ज़्यब्नुत् -इज्-आ,, v हिम (बर्फ बनना, ठिठुरना)
इद्ति—v एत् (जाना, आना)
इक़ात् – v हिक्क (हिचकी लेना)
इत्ति–v एत (आना, जाना, टहलना)
कज़ात्(स्या)—v काश (प्रकट होना, जान पडना)
कज़ात्. विम्-,–वि v कथ }
वि v काश }
(प्रकट करा)
कज़ात्.न्—म v कथ (कहना)
कजिवात्—कथ,
कहना, दिखलाना, इगित करना)
कज़ान्, ना –नि v कथ (काश) (इगित करना) -
कज़ात्, प्रि,–प्र vकथ (काश) इगित करना
क्लिकात्., वि-, –दि vकिलक (क्रुश) (पुकारना)
क्लिकनुत् –वि v क्लिक क्रुश (पुकारना)
करत्.– v कार (दड देना)
क्रसी(शी)वत् ,प्रिज्ञ क्रुप (पुन रगना, मोमियाना)
क्रसित्.,पेरे-;–परि v कर्ष (पुन रगना)
क्रशात्., उ-;–उत् v कर्ष (सजाना, अलकृत करना)
क्रिकिवात्.,व्स्-,–वि v क्रुश् (चिल्लाना, हल्ला करना)
क्रिसात् , व्स्-, –वि v क्रुश (चिल्ला उठना)
कोपात्.— v कल्प (कापना, खोदना)
क्रोडत्.–v कृत् (काटना)
क्रुशात्.,स्-, – स v क्रूप (तोडना, विचूर्ण करना)
क्रित् –v कृत (ढाकना)
कुचात् ,स्-.–स v कुच (थूकना)
कुचित्, प्रिम्-, – प्र v कुच् (थकना)
क्रुशात्. पो-, –प्र v कुश (कोशिश करना)
लगात् ,ना-, –नि v लग (लगाना)
लदत्, स्-, स v ह्लद (ह्लादित होना)
लगात् –v लग (लेजाना)
लेगात् -ना,–नि vलग(लेजाना)
लेझात्— v लेट (लेटना, विश्राम करना)
लेज़ात्—v लघ (१) चढना,
लेज़ात्-, पेरे.–परि लघ v (चढ जाना)
लेपित् वि.,–वि v लिप (लेपना, चिपकाना)
,, - , जा, —आ v लिप (चिपकाना)
लेतात्.– v डय (उडना)
लिज़ात्.– v लिह् (चाटना)
लिपात्.– v लिप् (चिपकाना)
लोविज़ात्.– v लुभ (चूमना)
लोवित्.–v लुभ् (लुब्धकी करना, फसाना, आहत करना)
लोगत्., पो-, –प्र v लग् (रखना, लगाना)
लोझित्. (स्या)– v लोट (लेटना, गिरना)
लोपन्.स्या–v लोप (फटना, टूटना) -
लुपित्.,ओत्-, उत् v लोप् (मारना)
लुचत्., इज़्-, —आ v रोच् (प्रकाशित होना)
लुचत् , ओत्–अव v रोच् (वहिष्कृत करना)
लुच्शात् ,उस-, –उद् रोच् (धारना, बेहतर बनाना)
ल्युवित् – v लोभ (प्यार करना)
ल्युवित् , रज़-, –वि vलोभ (प्यार करना)
मज़ात्., मज्नुत्.– v माप् (माखना, चुपडना लगाना)
मज़ात , वृ-, –वि v माप (चाटना)
मज़ात्., पो-, –प्र v माप (तेल लगाना)

मज्रोक., पो-, –प्रvमार्ज (झाडना)

मरत्., वि-;–विvमर (घात करना)

मचिवात्., ज़ा-, –vमिह (भिगोना)

मेझ (झि)त्, स्-, –सv मिष (आख मीचना)

मेरेत्.–vमर (मरना)

मेरेत्. वि-, –विvमर् (मर जाना)

मेरित्.–vमा (नापना)

मेतत्.–vमथ (ढकेलना)

मेशिवत्. व्-, –विvमिश्र (मिश्रण करना)

मीलोस्त्–vमिल (मेल करना, कृपा करना)

मितात्.–vमिष (आख मलकाना)

मिगनुत्.–vमिष (आख मलकाना)

मिरत्.,वि-, –विvमर (मर जाना)

म्नुत्.–vमनु (सोचना, मनन करना)

मोकात्. वि-, –विvमुच् (निकल जाना)

मोलोत्.–vमर्द (घिसना, मलना)

मोरित्.–vमर (हत्या करना, भूखा मरना)

मोचित्.–vमेह (भिगोना)

मि(वा) त्.–vमोना (धोना)

नामेकात्.–vनाम (इगित करना)

नशिवात् ज़ा-, –आvनश् (जीर्ण करना)

निज़ात्–vनह (बाधना, सूत पिरोना)

निजि (झि) त्., उ-, –अवv नीच (अपमानित करना)

निमात्., वि-, –विvनय (ले जाना)

नित्., ओब-,वि-; –अभि-विvनय (अपराध लगना)

निच्तोझित्., उ-, –उद्vछिद् (नष्ट करना, बद करना)

नोस्त्ि.–v नेष (ले जाना, ढोना) (तेल्.)

नोसि्त्., ज़ा-, –आvनेष (लिख छोडना)

नोचिवात्.–vनिश् (रात बिताना)

नुदित्, वि-, –विv नुद (बाध्य करना)

नुझ्दात्.,-वि-,–विvनुद (बाध्य करना)

पदत्.–vपत (गिरना)

पदत्, नस्-, –निस्vपत् (गिरना)

पदत्. व्स-, –सvपत (एक समय एक स्थान में होना)

पइवात्. व्स्-, –विvपा य (पिलाना, पोषण करना)

पेइवान् पेरे-, –परिvपाय (मद्यपान मे अति करना)

पेरेनिये—पलायना (भागना)

पास्त् –vपा (पास्तुख् मेषपाल)

पास्त् –vपत (गिरना)

पेकात्., दो-, –आvपच् (पकाना)

पेच्.–vपच् (पकाना, तलना, भूजना)

पिवात्. ज़ा-, –आvपिव् (पीना)

पिवात् वि-, –विvपिव (पीना)

पिलित्.–v पीड (चीरना)

पिलिवात्.–v पीड (चीरना)

पिसात्.–v पिश (लिखना)

पिसिवोत्.–पिश (लिखना)

पित्.–v पिव (पीना)

प्लवात्–v प्लव (तैरना)

प्लवित्, वि-, –विvप्लव (पिघलना)

प्लिवात्., व्-, – विvप्लव (तैरना, नावपर चलना)

पोइत् –vपिव (मद्यप बनना)

पोल्नोत् –vपूर्ण (भरा पूरा होना)

पोल्नोत्., निस्-, –विv पूर्ण (भरना)

पोल्नित्., वि-, –विvपूर्ण (पूरा करना)

पोतेत्, व्-, –विvपोन (पसीने में नहाना विvस्विद्)

पोचितात्.–vपूज (समान करना)

प्रशिवात्., वि-, –विv पृच्छ (पूछना)

प्रियुतित्. (स्या)–v प्रिय (?) (शरण देना व पाना)

प्रोसित–v पृच्छ (पूछना, मागना)

प्रोप्सत्., वो-, –विvपृच्छ (पूछना)

पुखात्., ना-, –निvपुप् (फूल जाना)

पुखात्., प्रि-, –प्रvपुप् (फूल जाना

पिशात्.–v पिश (दहकना)

राद्दोवात् –vलाद (आदादित होना)

रादोवात्. स्या, वेज्-, –विv हलाद

रज्ञात्., ओत्-, –आ v राज

दर्पणमे प्रतिबिंबित होना)
रनत्.–v रण (घायल करना)
रस्ति–v रोह (रोहण करना, बढना, फारसी-रोईदन)
रवेत्.–v रव (शोर करना)
रेज्रत्, रेज़िवात्.–v रिह (काटना, फारसी रेज़ीदन्)
रेजिवात्, प्रि–प्रvरिह (मारना, जोडना)
रेझात् स्या, जा-, आvरेच (तोडना)
रोदित्. स्या–vरोव, रोह (जन्माना)
रोझात्.–vरोव, रोह (जन्माना)
रोझदात् –vरोव, रोह (जन्माना)
रोझित् –vरोह (जन्माना)
रुगात्., वि-, –विvरिग- (रिगाना, फटकारना)
रुगात्. ओव्-, अभिvरिग (रिगाना, फटकारना)
रवात् जा-, –आvरुभ,v लभ (कुल्हाडेसे गढना काटना)
रवात्, परे-, –परिvलभ (काटना, मारना)
रवात् पो, –प्रvसभ (चीर डलना)
रिवात्.-नज्–vरुद (मिनकी भरना)
मदित् —vमीद् (वैठना, मादी=असवार)
मदित्.व्, —विvमीद (भीतर घाव करना)
स्वेतत्.—vश्वेत (प्रकाशित होना)
,, , ओ–, —आvश्वेत (प्रकाशित करना)
स्वेनित् ––vश्वेत (प्रकाशित करना)

सेदेत्. — vश्वेत (बाल सफेद होना)
सिदेत्.— vसीद (वैठना)
स्लवित् .— vश्रव (यश गाना)
स्लुझित्.—vश्रूप (सेवा करना, काम करना)
स्लुशत् —vश्रूप (काम करना)
स्मेनिवात्. ओ–, —आ v स्मय (परिहास करना)
स्मेखात्स्या, ना , — न v स्मय (परिहास करना)
स्मेशित्., पो–, —प्रv स्मय (हसाना)
स्मेयात्. स्या—vस्मय (हसना)
सोसात् — vचूष (चूसना)
सोखनुत् — vशुष (सूखना)
स्वात् पो–, —प्रvस्वप (थोडा सोना)
स्तावित्, पो–, –प्रvस्थाप (रखना, स्थापित करना)
स्तानोवित् —vस्थान (रखना, स्थापित करना)
स्तोइत् —vस्था (आना)
स्तोयात् ,पो–, –प्रvस्था (खडा होना)
सुखनुत्.,–पो–, —प्रv शुष (सूखना, पो–सुखी –स्थल से)
सुशात्., इस्–, –आvशुष (सुखाना)
सुशि (वा) त .— vशुष (सुखाना)
सुशि, परे–, –प्र vशुष (बहुत सूखना)
सिपात्., पो–, –प्रvस्वप (पूरा सोना)
सिखात्., वि–, –विv शुष (अति सूखना)

स्यकात्.— vसेंक (सूख जाना)
सइ (वा) त्. —vताय (छिपाना, त्राण देना)
तल्किवात्. — vतर्क (हिलाना)
तल्किवात्., प्रो–, –प्र vतर्क (ढकेलना)
तेम्नेत् vतम्– (अंधकार करना). –v
तेप्लेत्. vतप (गर्म होना)
तेजत्.—vतर्ज (चीरना, खडन करना)
तेरेत्.स्या, वि–, —वि–vतिर (खतम करना, सुखाना)
तेस्त्.— vतक्ष (काटना)
तेस्नित्.—vतीक्ष्ण (दबाना, गालना)
त्योसिवात्,. वि–, – विv तक्ष (आकार गढना)
तिरात्,. वि–, –वि vतीर (पोछना, सुखाना)
तिरत्, स्या, स, —स तीर (भाग जाना)
तिखात्. स्–, —सvतुप् (शात होना)
तोपित्.—vतप (गर्म करना, पिघलाना)
तोपित्., जा–, –आ vतोप (जहाज डुबाना)
तोप् (तिव) त्. वि–, –विv दव (दाबना, रौंदना)
तोपित्.— vतक्ष (घिसना तेज करना)
त्रशित्., स्–, —सvत्रस (डराना, खतरा मानना)
त्रिगत्, सोस् –, स v तृह (काटना)
त्रुसित्.— vत्रस (भय खाना)
त्र्यसत्.,— वि–, –वि vत्रस (हिलाना)

श्यत्, पो–, –वv त्रस्
(हिलाना)
श्यस्ति— vत्रस (हिलाना, डुलाना)
श्यख (खिवा), त्,., –, –वि v त्रास् (हिला डालना)
श्यख, पो–, –प्रvत्रास्
(हिला डालना)
तुमेनित्.स्या, ज़ा–आvतम
(मध्यम पडना, भोथा होना, मद पडना)
तुपित्., पो-, –प्रvतुप्
(गिरना)
तुपित्, प्रि-, –प्र vतुप्
(गिरना)
तुशित्., -जा–आvतुष्
(बुझना, शनै चला जाना)
तुसित्.पो-, –प्र-vतुष्
(बुझाना, शनै चला जाना
तिकात्.—(टिक,vटिकना, घुसेडना)
त्वुनुत्.–vतनु (खीचना, तानना)
उचित्.–v वच (सीखना, सिखाना)
स्वलित्.–v स्वर् (प्रशसा करना,)
खोदित्.-, –विvसिद्
(चला जाना)
च्नोत्., नेपेरे-, –नि प्रv चित (गिनना, बतलाना)
चिनित्.–v चिन् (मरम्मत करना, पेबद लगाना)
चितात् –vचित (पढना)
चितात्.,पो-, –प्र v चित
(पढना)
चिनिवात्. व्स-, –विसv चित (गिनना)
चिखात्.–v छिक्क (छीकना)
च्मकात्.–v चुम्ब (चूमना)
शेतात्.–v शप (फुसफुसाना)
शिवात्, वून-, –वि v सीव
(सीना)
शित्., व्-, –वि v सीव
(सीना)
श्चुपात्., वि-, –वि v छुप
(छूना) स्पर्श करना,
श्चुपात्., ना-, – नि v छुप्
(छूकर पता लगाना, चिकोटी काटना)
युचित्, वि-, – वि v युज
(लादना)

(५) प्रत्यय-सूची

अत्— ति (बेगत्.)
अवत् — ति (दवात्)
इइ—इन् (बेज़रोगिइ)
इक् —इक (स्तोलिक्)
इकिइ—इक (वेलिइकिइ)
इको—इक (लिचिको)
इज्न—(क्रिविज्न)
इच्क—इक (प्तिच्का)
इत—थ (स्कज़ीते)
इत्—ति (वित्)
इत्सा—ता (वेस्-सोन्नि-त्सा=नि स्वप्नता)
इत्सा—इका (वर्नित्सा-मदिर निर्माणागार)
इत्सा—इक (देवित्सा=देविका)
इत्सा—इक (वोदित्सा)
इना—इनी (ग्लुबीना=गभीरिणी, ज़्वेरिना)
इन्या—इनी (वोगिन्या=भगिनी, भगवती)
इम्—म (वीदिम्, विद्म)
इये—ईय (वेस्स्लावियें)
इवत्—ति (पिलिवत्=पीडयति)
इवोस्त्.—त्व (इग्रिवोस्त्=क्रीडित्व)
इशिइ—ईयस् (निझाइ शिइ=नीचीयस्)
इश्—सि, से (वीदिश्=वीक्षसे)
इश्चा—इका (रुचिश्चा,अगुलिका)
इश्चे—इक (दोमिश्चेद्मिक)
इश्चे—(झिलिश्चे=जीव, वास-गृह)
ईइ—इन् (वेज़्-ग्लाविइ=वि-ग्रीवी)
ईइ—ईय (ज़्वनिइ=ध्वनीय)
ईत्—त (वित्.)
ईन्का—इनिका (प्रोस्तिन्का)
ईलो—(विलो=भइल)
ईवत्.— ति (विवत्.)
ईश्को—इक (पेरिश्को)
उ—मि-(बुदु=भवामि)
उत्—न्ति (इदुत्=यन्ति)
उत् —(नावेर्नुत्.)
उन्—आन (वेगुन्)
उश्का—उका (वेतुश्का=वर्तुका, चकरी)
देवुश्का=देविका, बच्ची)
(देरेवुश्का)
उश्चिइ—इष्य (बुदुश्चिइ=भविष्य)
उश्चिइ—न्त् (झिवश्चिइ,जीवन्
उश्चिइ—वान् (वेतुश्चिइ,=विद्वान्)
ओइ—ईय (ज़ेम्नोइ, मीय
ओक्—क (वेतेरोक्=वातक)
(वोज़ोक्=वाहक, गाडी)
ओक्.—क (गोलोसोक्)
ओचेक्—(ओगोन्योचेक् = अगिया)
ओच्का—का (त्सेपोच्का=टोपिया, देवोच्का, देविका=कुमारी)
ओता—इमा, ता (चेर्नाता=कालिमा)

ओत्न्या—त्नु, (वेगोत्न्या)
ओनोक्—क (वोवृचोनोक्=वृकक)
ओवानिये ना (जिमोवानिये, हिमना)
ओव्—ईय (इवानोव, इवानीय)
ओन्या—नीय (वोल्तोव्न्या)
ओस्त्.—त्व (स्वेझ ोस्त् , ज्नामेनिमोस्त्.=ज्ञातत्व)
किइ—कीय (ब्रात्स्किई=भ्रातीय)
(गोर.किइ्=कटुकीय)
का—का (वोज्का=वाहक, ढोना) (गोदारका—गदका, जोतिस) (ओव्शिव्का—भूल) (ब्ल्यश्का)
को—क (उश्को=कनवा)
गा—या (विस्लुगा=विश्रूया, सेवा)
ग्दा—दा (स्विग्दा=सदा)
चा—य (दाचा=देय)
चिइ—(गोर्याचिइ=गरम)
च्—क (वोगाच्=भगक, धनी)
चिक्—क (झ वृचिक=जीवक, जीव)
चिक्—क (म्लादेन्चिक्.)
चाता—ता (देव्चाता =देवता, तरुणी)
चन् —आलु (वोदाचन्=नयालु)
ज्दि—धा (द्वाझ्दि=द्विधा)
ता—ना (पोल्नोता=पूर्णता)
ति—नि (इद्ति=एति)
तिये—ना (वेन्-मेतिये=विमृत्युना)
निई—नीय (गोल्तिई=गोल्लनीय, वोठस्कड)

तून्— (वोल्तून्— वोलवकड)
तेई—तीय (वोगातेई =भगीतीय धनी)
तेल्—तर् (वेस्सोज्नोतेल् वि=विसज्ञातर्, अज्ञानी)
त्—ति (इकात्=हिक्कति, हिचकी मारता है)
त्लिइ—त्नु (प्रियत्लिइ=प्रियत्नु प्रिय)
त्नोये—त्नु (झिवोत्नोय=जीवत्नु जीव)
त्से—इक (ल्युद्-त्से)
त्सो—व (पिस् मेत्सो) (ओज्रोर्त्सो) (देरेवृत्सो)
निक्—इक् (वोद्निक=उदकिक)
(स्वाद्निक=सादिन्)
(द्वोर्निक=दौवारिक)
(ज़ेम्ल्यानिका=ज्मालिका)
नो—(स्त्याज्नो)
नोइ—(द्वेर्नोइ)
नोस्—(चेस्त नोस्त्.)
न्—न (दान्.=दान, भेंट, (पोल्न=पूर्ण)
न्का—क (ज़ेम्ल्यान्का)
न्या.—(रेजन्या)
वा—(प्लूवा)
(खुदोवा)
मोस्त्.— (द्विझिमोस्त् , =वेजनीय)
(ज्नामेनिमोस्त् =ज्ञातत्व)
यात् —ति (देल्यात् ,=दारयति)
यानि—इन् (द्वोर्यानि,=द्वारिन्, वायू)
यानिये—ईय (दयानिये दानीय)
युत्—न्ति

येचुक्—इका (दोश्च्का=छोटी मेज)
येच्को—इका (कोल्येच्को=कुइया, कूपिका)
ते—थ (स्कजीते=कथयथ)
येत्.—(वेग्लेत्स्)
येत्स्.—(उरोदेत्स्)
येत्सो—(पिस्-मेत्सो)
येद्—(मेद्वेद्=मध्वद)
येनिक्—इक (उचेनिक्=वाचक)
येनिये—(स्लुझ नियेे=श्रूपणा)
यम्—आम
येल्—इल (नावेलो=नाविल)
येश्—सि (देलयेश्)
येत्.—त्व (स्वेझ येस्त्.)
योक्—क (ओगोन्योक् अग्निक)
योझ्—क (ग्रब्योझ्=ग्राभक, लुटेरा)
र्—र (ग्लवार्=ग्रीवार, नेता)
र्—न (दार=दान)
लो—न (नगोलो=नग्न)
ल्या—ना (लोव्ल्या=लोभना), आखेट)
वा—का (क्नावा खनुवा=खाड)
वानिये—ना (ज़िमोवानिये=हिमना)
विइ—वीक (मेदोविइ=माध्वीक, अमृत-जैसा)
वोस्त्.—(लुकावोस्त्.)
शिइ—श (वोल्. शिइ=भूरिश)
शे—श (वोल्शे=भूरिश, बेहतर)
शोइ—श (वोल्शोइ=भूरिश)
शोन—ईय (नगिशोन=नग्नीय, अतिनग्न)
स्त्विये—त्व (देइस्त्विये)
स्त्वो—त्व (वेग्स्त्वो=भगेलुत्व)
स्या—य (आत्मनेपदी, भावार्य)

(६) उच्चारण-परिवर्त्तन

संस्कृत—रूसी उदाहरण
अ अ, (निषेधार्थ)
अ ओ, ओस्. (अक्ष) ओगोन्
आ ज्ञा, ज्ञाशिवात्==आसी-ष्यति
या याववित्. स्या
उ वो, वोदा—उद
ओ ओबे—उभे
(ऋ आल्) शकाल—श्रगाल,
ओल् वोल्क—वृक थर् क
येर् देर्ज्ञात—द्‌हति
येल् झितेल्—जीवित्
योर् म्योर्त्विइ—मृत्यु
र् ग्रबित्—गृभीति
रि क्रित्—कृत्ति
रु रुसिइ—ऋषि, ऋचि
स्त्रुन—तृण
रे रेव्योनोक्—ऋभुक छ्ज्ञ
रो प्रोसित्.—पृच्छति
क को कोग्दा—कदा
कोरिह—कतर
ग क, शकाल—श्रृगाल
इग्रोज़ित्.—कुप्यति
क चेरेप्—कर्प
क्ष स, ओस्.—अक्ष
च, झेच्—धक्ष
क्षु खु, खुदेत्.—क्षुदति
खुदोइ—क्षुद्र
ख क, कुसात्.—खु सति
स, रिसोवात्.—लिखति
ग क, ग्रस्त्.—ग्रसति
ग ग्रिवा—ग्रीवा
ग्लोतात्.—गिलति
नगोइ—नग्न
झ वेझात्—वेग
दोझ्द.—दोग्धि
द् ग्रेद्—प्राग्
घ ग दोल्गिइ—दीर्घ
ज लज़ित्.—लघति
च क प्रेद्की—प्राच् (पूर्वज)

च पोचितात्—पूजति
ज निज़ु—नीचे येठझ
झ निझे—नीचैं
निझात्.—नीचयति
स प्रिपासी—प्रपाच
(भोजन-सामग्री)
सोरोक—चत्वारिंश
छ च कुचा—गुच्छ
झ झेवात्—छीवति
(चबाना)
श प्रशिवात्.—पृच्छति
स प्रोसित्.—पृच्छति
ज गद वेग—वेज
गोरात्.—ज्वलति
ज वेर्योज़ा—भुर्ज
प्रिज्नाक—प्रिज्ञानक
ज़ेम्ल्या—ज्मला
झ झार—ज्वर
पोझार—प्रज्वाल
झेना—जनि
द पोबेदा—प्रविजय
ट झ लेझात्.—लेटति
पोलझित्.—प्र-लेट
ड ल, लेतात्—डयति
पीला—पीडा (आरा)
ढ ल पोलोत्.—(लोढना)
ण न पोल्नो—पूर्ण
त त स्त्राख—त्रास
द पदात्.—पतति
न ग्लेन्—हरति
ज इज़्—अत्
द झ, झेच्—दह
सझात्—सादयति
द द्रोवा—दारु शिझ
दोल्शे—द्राघीय
दोलिना—द्रोणी
ध ज, ज़्वान्—ध्वन
झ मेझदु—मध्य
रोझात्.—रोघति

द व्‌दोवा—विधवा
देयातेल्.- धातर
(नेता)
न न, तोन्किइ——तनुक।
प्रेस बा——प्रश्न
प प, पतात्.——पतति
पास्तुख्——पातृक
पिसात्.——पिंशति
फ प पल्का——फलक
(लकडी)
ब व
भ व बोल्-शोइ——भूरिश
अब्लका——अभ्रक
ब्रात्——भ्रात
ब्रोवि——भ्रू
म म, म्यासो——मास
य य युनोस्त् ——युवन्
र र, ब्रात्——भ्रात
ल लुच्——रोचिष्
पोल्नो——पूर्ण
व व, इवा——इव
ओबोरोत्——अववर्त
वेज़्——वि (विना)
व वोज़——वह
श च, नोच्.——निश्
श ख, खोलोदे——शरद
श शकाल——श्रृगाल
च मेशात्——मिश्रयति
स देस्यत्——दश न् (दस)
सुखात्——शुष्यति
सोवाक——श्वक
स्वेकोर——श्वसुर
ख सिखात्.——शुष्यति
सुखोइ——शुष्क (सूखा)
ज,
झ कोझो——कोष (चर्म)
श स्लुशत्.——श्रूपति
स स सझदात्——सदयति
सेव्या——स्वीय

ह शिवात्–सीव्यति नश्–नम्	ह ग, स्नेग्–स्नेह	झ् देर्झात्–दहति
ह ओ, ओलेन्–हरिण फो	ज जिमा–हिम	झ–हि
ख स्मेखात्–मेहनि	वोज्–वह	द पोरोदो–प्ररोह (ध)

(७) सामाजिक विश्लेषण

संस्कृत रूसी उभयभाषाओं में एक से मिलनेवालेशब्दों के तुलनात्मक विश्लेषण से तत्कालीन सामाजिक विकास पर भी बहुत प्रकाश पड़ता है। "वोल्तात्" (बोलना), "दवृल्यात्" (दाबना)-जैसे शब्द बतलाते हैं, कि कितने ही संस्कृतमें अप्रसिद्ध किंतु प्राकृत, अपभ्रंश तथा आधुनिक भाषाओंमें प्रचलित शब्द अपनी जड़ बहुत दूर आर्य-शक कालमें रखते हैं। इसी तरह छीकना-खासना जैसे अनुकरणात्मक शब्द उसी समयमें पहुंचते हैं। यहा हम इन शब्दोंके आधारपर यह बतलाना चाहते हैं, कि उस कालमें जबकि आर्य और "शक" अपने मूल-निवासमे अलग-अलग हुए, उनका सामाजिक विकास कहा तक हुआ था। इसके लिए हम शब्दोका यहा वर्गीकरण करते हैं।

भूमि वर्ग

जेम्ल्या–उमा (भूमि)
पुत्.–पथ (मार्ग)
गोरा (गरा)–गिरि
दोलिना (दलिना)–द्रोणी (दून)
कामेन्–अश्मन् (पत्थर)

उदक वर्ग

वोदा (वदा)–उद (पानी)
वोद्का–उदक (शराब)
पेना–फेन
स्नेग्–स्नेह (हिम)
ल्योद्–रोधम् (बर्फ, फारसी–रूद नदी)

अग्नि वर्ग

ओगोन्–अग्नि
उगार्–अगार
उगोल्–अगार
झार–ज्वाल (ताप)
झाग–ज्वाल
तेम्नो–तम (अंधेरा)
तुमान्–धूम (धुआ, कुहरा)
दिम्–धूम

वायु-वर्ग

वेतेर्–वात (फ़ारसी, बाद)

नभ-वर्ग

स्वेर्ख–स्वर्ग (ऊपर)
नेवो–नभस् (आकाश)
ओब्लका–अभ्र (बादल)
मोल्त्मे–सूर्य
मोल्निया–मालिनी (बिजली)

काल-वर्ग

देन्–दिन
नोच्–निशा
मेस्यत्स्–मास
लेत्–ऋतु (वर्ष)
वेस्ना–वसंत
जिमा–हिम (हेमंत)

वृक्ष वर्ग

देरेवो–दारु (वृक्ष)
द्रोवा–दारु (ईंधन)
वेर्योज़ा–भुर्ज (भोजपत्र वृक्ष)
त्रवा–तृण

पशु-वर्ग

झिवोत्नोये–जीवन्त्, जंतु (प्राणी)
पेस्.–पशु
रोग्–शृंग
सोवाका–श्वक (कुत्ता)

ओलेन्–हरिण
शकाल–शृगाल
मेद्वेद्–मध्वद (भालू)
मिश्–मूष
ओखोता–आखेट
ओवेन्–ओव्का, अवि (भेड़)
गोव्य–(द्न्या)–गो (अदनीय)
वोल्–बैल
वोल्क–वृक (भेड़िया)

शस्त्र-वर्ग

पाल्का–फलक (डंडा)
ओस्.–अक्ष (धुरा)
इगो–युग (जुआ)

पात्र-वर्ग

कुव्शोक्–कूपक (प्याला)
कुव्शिङ्–कूपिका (लोटा)
चश–चषक (प्याला)
चश्का–चषक (प्याला)

आहार-वर्ग

एदा–अद (भोजन)
एदोक्–अत्ता (भक्षक)
सूप–सूप (मांसरस)
म्यासो–मांस
क्राव्–क्रव्य (रुधिर)
म्योद्–मधु (शहद)

पीवो–(पीवा)—पेय
(हल्की शराब)

वस्त्रवर्ग

कोझा–कोष (चमडा)
नगीइ—नग्न (नगा)
नगोला—नग्नल (नंगा)
शिवात्.—सीवन
शित्.–सीवन
ओदेवात्.स्या—अधिवास
(पहनना)

शरीराग-वर्ग

ग्रिवा–ग्रीवा (गर्दन)
गल–गल
गोलोवा–गाल (शिर)
गोर्लो–गल (कठ)
ग्लवा–गल (शिर)
ग्लोत्का—गल (शिर)
चरेप्–कर्पर (कपाल)
वोलोस्–बाल (केश)
ब्रोवि–भ्रू (भौ)
नोस्–नासा (नाक)
जुब्–जिह्वा (दात)
ओचे–अक्षि (आख)
पा–पाद (चरण)
पाइ–पाद (भाग)
पोद् (व्यक्ता)—पाद-
(-वधक)
बोक्–वक्ष (पार्श्व)
सेर्दत्स–हृद् (हृदय)
क्रोव्.–क्रव्य (रुधिर)
पेरो–पक्ष (फारसी, पर)
रेच्–ऋक् (भाषा)

सबधि वर्ग

मात्–मातृ (मा)
भ्रात्–भ्रातृ (भाई)
सेस्त्रा–स्वसृ (बहिन)
सिन्–सूनु (पुत्र)
दोच्–दुहितृ (बेटी)
देवा–देवी (कुमारी)
देव्का–देवी (कुमारी)
देवोच्का–देविका (बालिका)
देवुश्का–देविका (कुमारी)
ज्यात्–जामात्
स्नोखा–स्नुषा (पुत्र-वधू)
स्वेकोर–श्वशुर (ससुर)
स्वेक्रोवि–श्वश्रु ((सास)
झेना–जनि (स्त्री)
वृदोवा–विधवा
देवेर्–देवर
द्याद्या–दादा (चचा)
देद्–दादा (पितामह)
प्रेदेद्–परदादा
प्रियातेल्–प्रिय (मित्र)

व्यवसाय-वर्ग

ओखोता–आखेट
लोवुश्चा–लुब्धका (जालक)
लोव्चिइ–लुब्धक (शिकारी)
राना–रण (घाव)
पस्तुख–पातुक (मेषपाल)

वर्ण और धातु

ज्लातो–हरित (सोना)
ज़ोलोता–हरित (सोना)
ज़ेल्योनिइ–हिरण्य (हरा)
ज़ेलेन.–हरित (=हार)
ज्योल्तिइ–हरित (पीला,
फारसी-ज़र्द)
स्वेत–श्वेत (प्रकाश)
सेद्रोइ–श्वेत (सफ़ेद बाल)
त्स्वेत्–श्वेत (रग)

धर्म-वर्ग

वोग्–भग (भगवान)
बोगिनिया–भगिनी (भगवती)
पोचितिये–पूजा (पूजना)

सख्या-वर्ग

एझे–एक =एझे (गोद्नि,
एकवार्षिकी)
द्वा–दो
त्रि–त्रीणि (तीन)
चेतिरे–चत्वारि ((चार)
प्येत्.–पच
शेस्–षष् (छ)
सम्–सप्त (सात)
वोसेम्–अष्ट (आठ)
देस्यत्–दश (दस)
सोत्–शत (सौ)
स्तो–शत (सौ)

गृह-वर्ग

दिरा–दरि (छेद, गड्ढा)
दोम् (दम)–दम (गृह)
द्वेर्.–द्वार
द्वोर्–द्वार (आगन)
शाल–शाल
शाला–शाला
शलश्–शाला

उस समय के शब्दकोशमे किसी अनाजका नाम नही आया है, न कृषि-सबधी ही कोई शब्द है–इगो (युग) है, किंतु वह आरभमें जोडे (युगल)के अर्थमें रहा। इससे सूचित होता है, कि अभी लोग कृषिकी अवस्थामें नही पहुचे थे। हिंदी और ईरानी आर्य एक जनके रूपमे रहते समय कृषि से परचिति थे, क्योकि जौ, गोधूम, माष (उडद)–जैसे धान्यवाची शब्द दोनोके शब्दकोशोंमें मौजूद हैं। गाय, भेड (अवि)–जैसे शब्द आर्य-शक शब्दावली के है, किंतु दूधके लिए समान शब्दका अभाव है, हालाकि आर्य-शब्दावलीमें क्षीर (सस्कृत), शीर (फारसी) मौजूद है। इससे जान पडता है, कि यदि वे पशुपालक थे तो भी कम-से-कम क्षीरके उपयोगके लिये पशुओंका पालन आरभ नहीं हुआ था।

धातुओ और वर्णोके वाचक शब्दोकी जिस प्रकारकी अनिश्चितता और व्यवस्था है, उससे जान पडता है, कि अभी धातुओसे उनका परिचय न था।

हथियारोपर विचारनेसे जान पडता है, उनके पास काष्ट और पाषाणके हथियार थे, और ऐसे हथियारोके गढनेके लिये "तक्ष" धातुका प्रयोग होता था। पीछे हम "तक्ष" को सस्कृतमें जहा काठ गढनेके लिये रूढ पाते हैं, वहा रूसी "तेसात्" और "त्योसिवात्" पत्थरके गढनेमें रूढ पाया जाता है।

सब देखनेसे पता लगता है, कि जिस समय आर्य और शक पृथक् जन (कबीले)के रूपमें परिणत हुए, उस समय वह अभी कृषि और धातु से अपरिचित थे। शिकार (आखेट)के अतिरिक्त वह पशु पालन शायद ही जानते थे, जिसमें श्वक(कुत्ता) उनका अवश्य सहायक था। यह युग मध्य पाषाण या आरभिक नवपाषाण- युग रहा होगा। वह अपने निवासस्थानो को दम (दोम) कहते थे, जो प्राय पर्वत की दरि (गुह) हुआ करते थे। द्वार गुहाके द्वार और आगन दोनोके लिये प्रयुक्त होता था। दारु, अश्म और अस्थि के हथियारो वाले इन दरी-निवासियो को अग्निकी सहायता मिल चुकी थी, और इसकी मददसे अपना त्राण और भक्षण प्राप्त करते थे। सरदीसे बचनेके लिये अभी वह सलोम चमडे (कोझा)का व्यवहार करते थे, जिसे हड्डीकी सूइयोसे सी भी लेते थे--ऊनी कपडा अभी उन्हे मालम न था। मास उनका प्रधान भोजन था, जिसका वह पचन करके सूप भी बनाते थे, जिसकाअर्थ है, किसी प्रकारका मिट्टी का बर्तन वह बना सकते थे। जगली मधु उनका प्रिय भोजन था।

रुधिर-सबधियोमें नाता दूरतक चला गया था। मा, भाई-बहिन, बेटा-बेटी, देवर और विधवा ही नही स्नुषा (पुत्रवधू), ससुर और सास से भी परिचित थे, इससे यह भी स्पष्ट है, कि समाज मातसत्ताक नही पितृसत्ताक था। दम केवल घरके लिए ही नही परिवार और जनके लिए भी प्रयुक्त होता था, जिसका अधिपति दमक (दास्का) भी कहा जाता था। यही राजवाची शब्द दामाके नामसे पीछे के शको में राजाके लिये व्यवहृत होने लगा था।

आर्य-शक जनमें देवता (भग)का विचार आ चुका था। यह देवता अधिकतर सूर्य,अग्नि, जैसे प्रत्यक्ष देवता थे।

परिशिष्ट २

स्रोत ग्रंथ (१)

(भाग १ से भाग २ तककी छूट)

भाग १ अध्याय ५

१. जामेउत्तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०)
२ स्वोर्निक मतेरिअलोफ अतनोस्यशिचस्स्या क् इस्तोरिइ ज़ोल्तोइ ओर्दी (लेनिनग्राद १९४१)
३. History of Mangols, 3 Vols : H. H. Howarth (London 1876-88)
४ जुब्दतुत्-तवारीख हाफिज अबरू (१२२६–८३ई०, अनुवादक के० एम० मैत्रा, लाहौर)
५ तारीख जहागुशा अलाउद्दीन अता मेलिक जुवैनी
६. तबकाते-नासिरी अबू-उमर मिनहाजुद्दीन उस्मान जुज़जानी (११९३–१२०० ई०)
७. युआन् चाउ बि शि (१२४० ई०, सपादक ग० अ० कोजिन, लेनिनग्राद १९४१)
८. सल्जूकनामा . नासिरुद्दीन यहिया इब्न वीबी (१२८२–८५ ई०)
९. जफरनामा निजामुद्दीन शामी (१३९२–१४०० ई०)
१० शजरतुल्-अत्राक
११. ज़ोलोतया ओर्दा : अ० यु० याकुबोव्स्की
१२. Geschichte des goldeners Horde in Kiptchak · Hammer-Purgstall (Budapest 1840)

भाग १ अध्याय ३

१. जामेउत-तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०)
२ History of Mangols . H. H. Howarth
३. असह्हत्-तवारीख अनोनेम इस्कदर
४. तवारीख जहागुशा जुवैनी

भाग १ अध्याय ४

क सिय और स्लाव

१. एलिलन्स्त्वो इ इरान्स्त्वो ना युगे रोस्सिइ . म० इ० रोस्तोव्त्सेफ (पेत्रोग्राद १९१८)
२ Les Sycthes F. Bergmann (Halles 1860)
३ ओव्रज़ोवानिये द्रेव्ने रुस्कओ गसुदार्स्त्वा : व० ग० माव्रोदिन (लेनिनग्राद १९४५)
४. स्लाव्याने द्रेव्नोस्ती न० स० दे.रझाविन (मास्को १९४५)
५ On the Origin of the Antae : George Bernadsky (Journal of American Oriental Society Vol 59, PP. 56-64

ख. सिय सरमात

६ प्लेमेना येवरोपेइस्कोइ सरमातिइ · अ० द० उदाल्त्सोफे, सोवियेत्स्कया एत्नाग्राफिया १९४६।२ पृ० ४१–५०

७. मतेरिअली क् व्से सो युज्नोमु अर्खेआलोगिचेस्केम सोवेश्चन्यो (मास्को १९४५)
८ स्लाव्यान्स्कोये यजीकोज्नानिये अ० म० सेलिश्चेफ (लेनिन० १९४१)
९ इस्तोरिया वोल्गाइरिइ न० स० देर्झाविन् (लेनिन० १९४६)
१०. इस्तोरिचेस्कया ग्योग्राफिया · स० म० सेरेदोन (पीतरवुर्ग १९२६)
११. एन्तिसक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिलोलोगिया दू० व० यागिचा (पीतरवुर्ग १९०९)

ग. कियेफ रूस

१२ कियेव्स्कया रूस व० अ० ग्रेकोफ (मास्को १९४४)
१३ प्रोइस्खोझदेनिये रुस्सकओ नरोदा : न० स० देर्झाविन् (मास्को १९४४)
१४ वोर्वा रुसि जा सोज्दानिये वयेवो गमुदारत्वा व० अ० ग्रेकोफ (मास्को १९४५
१५ इस्तोरिया रोरिसइ (चित्रमय)
१६ इस्तोरिया रुस्स्कोइ लितेरातुरी (लेनिनग्राद १९४१)
१७ Histoire de Russie N Brian Chamnor (Paris 1929)
१८ स्लवो ओ पोल्कु इगोरयेवे (व्याख्या) : अ० स० ओर्लोफ (मास्को १९४६)
१९. „ „ (मूल) लेनिनग्राद १९४५)
२० La Lithuanie Michel Pietiewicz (Bruxelles 1832)
२१. History of U S S. R. 3 Vols (Moscow)
२२ Histoire de l' Empire Byzantin . Ch Dihl (Paris 1919)
२३. कियेव्स्कया रूस एम्० सी० गुशेव्स्की
२४. द्रेव्नेइशेये अरव्स्कीये इज्वेस्तिये ओ कियेवे . अ० य० गर्कावी
२५. इज्वेस्तिया ओ खजाराख बुर्तासाख' वोल्गराख, मद्याराख, स्लाव्यानाख इ रुस्साखः अवअली अहमद विन्-उमर इब्न-दस्त

भाग २ अध्याय १

१. जामेउत्-तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७-१३१७ ई०)
२. तवारीख वस्साफ शिहाबुद्दीन, अब्दुल्ला वस्साफ हजरत (१३००-२४ ई०)
३ History of Bokhara Arminus Vambery (London 1873)
४ Heart of Asiea : E D Ross (London 1899)
५ History Mongol H H Howarth
६. ओचेर्क स्तोरिइ सेमिरेच्या व वर्तोल्द (वेर्नी १८९८)
७. तारीख रशीदी मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत, अनुवाद (London 1888)
७ History of U S S R 3 Vols (Mascow)
९. इस्स्कुस्त्वो स्रेद्निइ आजिइ . व० व० वेइमार्नो
१०. " " " व० व० दनिके, १९२७
११ समरकद प्रि० तिमूरे इ तिमूरिदाख अ० यु० याकूबोव्स्की (लेनिनग्राद, १९३३)
१२ Exploration in Turkistan, 2 Vols . R Pumpelly (Washington 1808)
१३. इस्तोरिया कुल्तुर्नोइ झिज्नि तुर्कस्ताना . व० व० वर्तोल्द (लेनिनग्राद, १९२७)
१४. इस्स्कुत्वो सोवेत्स्कओ उज्बेकिस्ताना व० व० चेपेलेफ (लेनिनग्राद १९३५)
१५ Voyages d' ibna. Batoutah

भाग २ अध्याय २

१. जामेउत्-तवारीख रशीदुद्दीन

२. „ इस्तोरिइ ज़ोलोतोइ ओर्दी (लेनिनग्राद, १९४१)
३. तवारीख वस्साफ वस्साफ (–३००–२८–)
४. तारीख-गुजीदा : हम्दुल्ला कजवीनी (१२८१–१३२९–)
५. तारीख जहांगुशा : अलाउद्दीन जुवैनी (१२२६–८३)
६ History of Mangol H. H Howarth
७ History of U S S. R 3 Vols
८. वोस्तोच्नो-इरान्स्किइ वोप्रोस : व० व० बर्तोल्द (इज्वेस्तिया रोस्सिस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी तोम II (पेत्रोग्राद, १९२२)

भाग २ अध्याय ३

१. ज़फरनामा निजामुद्दीन शामी (–१३९२–१४००–)
२. मत्ला सादैन व मज्मा वहैरन अब्दुर्रज्जाक समरकदी (१४१३–८२)
३ History of Bokhara A Vambery
४ Heart of Asia E D Ross
५ History of Mangol . H H Howarth
६. अलीशेर नवाई अ० क० बरोव्कोफ आदि, मास्को, १९४६,
७. Memoire de Baber (बाबरनामा) . बाबर (सपादक A Beveridge)
८. खुलासतुल्. अखबार खोदमीर
९ The Miniature Painting and Painters of Persia, India and Turkey (London, 1912
१० The Persion Miniature Paintings (London 1933)
११. गिरात्स्कोओ इस्कुस्स्त्वो व् एपोखु अलीशेरा नवाई . अ० अ० सेमेनोफ
१२. सफरनामा नासिर खुसरो
१३. मशाग्रेउल्-उश्शाक
१४. नवाई इ निजामी ये० ए० वेर्तेल्स, अलीशेर नवाई पृ ६८–९१
१५. खम्सा अलीशेर नवाई (ताशकद, १९०५)
१६. बाबरनामा—सपादक न० इल्मिन्स्की, कजान, १८५७
१७. Histoire des Mongols et des Tatars (Peterburg, 1871)
१८ The Mobaiel-lughat Mirza Mehdi Khan (Calcbtta, 1910)
१९. Literary History of Persia E Browne (London, 1919)
२० Le Meteriel du miniaturiste de l' enlumineur Iranien (Behzaad Taberzadeh)
२१ Musalmanic Painting XIIth–XVIIIth centbry · E Blochet Tran M Binijon (London, 1929)
२२ Painting in Islam Th Arnold (Oxford, 1924)
२३ Manuel de' Art Musalman G Migeons (Paris, 1907)
२४. मोनेती उलुगबेका, व० व० वर्तोल्द, इज्वे० रो० अकद० इस्त० म० कुल्तुरी तोम II
२५. तारीख रशीदी मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत (लदन १८८८)
२६. रौजतुस्सफा खोदमीर (बबई)
२७. इस्कुस्स्त्वो स्रेद्नेइ आजिइ व० प० वेइमार्न (मास्को १९४०)
२८. तैमूर अभिलेख (वोस्तोकोवेदेनिया १९४०–४५)
२९. इरान्स्कोये इस्कुस्स्त्वो इ ओर्खेआलोगिया (लेनिनग्राद, १९३९)
२९. उलुगबेक इ येओ व्रेम्या . व० व० वर्तोल्द (१९१८)

३०. र्‌युन गोज्देस् दे क्लावियो
३१ सोवोर्नया मेचेत् तिमूरा . वीवी खानम, म० ये० मस्सोन् (ताशकद, १९२६)

भाग २ अध्याय ४

१ शैवानीनामा· मुहम्मद सालेह
२ Heart of Asia : E D Ross
३ History of Mangol : H H Howarfh
४ तारीख रशीदी मिर्जा हैदर
५ History of Bokhara · A Vambery

भाग २अध्याय ५

१ History of Bokhara A Vambery
२ Heart of Asia · E D Ross
३ History of Mongol : H H Howarth
४ ओ‌चेत् ओ कोमन्दिरोव्के व तुर्केस्ताने . व० व० वेर्तोल्द (इज्वेस्तिया रोस्स्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुलतुरी, तोम II)

भग २ अध्याय ६

१ किताबुल्. हिंद अबूरेहा अल्बेरुनी, अनुवादक सैयद असगरअली (अजुमन तरक्की उर्दू, दिल्ली, १९४१)

स्रोत ग्रंथ (२)

अवरू, हाफिज जुब्दुतुत्-तवारीख (अनुवादक के० एम० मैत्र, लाहौर)
अलवसन्दरोफ, व० अ० तुर्कमेनिया इ येये कुरोत् नियें बगास्त्वो (मास्को, १९३०)
अल्बेरुनी, अबूरेहा किताबुल् हिंद (अनुवादक सैयद असगर अली, अजुमन तरक्की उर्दू, दिल्ली १९४१)
इब्नदस्ता, अबअली अहमद बिन्-उमर इज्वेस्तिया ओ खजाराख, बुर्तासाख, बोलगाराख, मद्याराख, स्लाव्यानाख इ रुस्साख
इब्नबीबी, नासिरुद्दीन यहिया सल्जूकनामा (१२८२–८५ ई०)
इस्कन्दर, अनोनेम् अमह्‌-तवारीख
उदाल्त्सोफ, अ० द० प्लेमेना येव्रोपइस्किइ सरमातिइ (सोवियेत्स्कया एत्नाग्राफिया, १९४६/२)
ऐनी, सदरुद्दीन गुलामान (जो दास थे, अनुवादक राहुल सांकृत्यायन, पटना, १९४९)
" " दाखुन्दा " " प्रयाग, १९४९
" " बुखारा (अनुवादक—म. बोरोदिन, (मास्को, १९५२)
ओर्लोफ, अ० म० स्लवा ओ पोल्कु इगोरयेवे-व्याख्या (मास्को, १९४६)
ओल्म्नियालोफ इस्तोरिया स्मात्वर्वोवानिया पेत्रा वेलीकओ,(तोम् ५ पीतर्बुर्ग, १९१५–७१ ई०)

कजवीनी, हम्दुल्ला तारीख गुजीदा (१२८१–१३२९)
कुवेर, अ आजियात्स्कया रोस्सिया (मास्को, १९१०)
क्लाविवो, र्युन् गोन्ज़्देम्
खान, मिर्जा मेहदी मव्निउल्–लुगात (कलकत्ता, १९१०)
खुसरो, नासिर सफरनामा
खोदमीर रौजतुस्सफा (बबई)
गर्कावी, अ० य० द्रेव्नेइशेये अरव्स्कोये इज्वेस्तिये ओ कियेवे।
ग्रुम. ग्र्झिमाइलो, ग. ये म. ये पुतेशेस्त्विये व् जापद्निइ किताइ (पीतरबुर्ग, १९०१)
ग्रुशेव्स्की, म० स० कियेव्स्कया रूस
ग्रेकोफ, व० ,अ० कियेव्स्कया रूस (मास्को १९४४)
" " बोर्बा रूसि जा सोज्दानिये स्वोयेवो गसुदार्स्त्वा (मास्को, १९४५)
जार्उविन्, इ० इ० नमेलेनिये समरस्कन्द्स्कोइ ओब्लास्ति (लेनिनग्राद, १९२६)
जुजजानी, मिन्हाजुद्दीन उस्मान (११९३–१२०० ई०) तबकातेनासिरी
जुवैनी, अलाउद्दीन अता-मैलिक तारीख जहागुशा
टेलर, अर्थर अन्थ्रपोलोजी
त्रेवर, क व कोव्रा इज नोइनुला (लेनिग्राद, १९४७)
देनिके, ब प. इस्कुस्त्वो स्रेद्नेइ आज़िइ (१९२७)
द्मित्रियेफ -कव्काज्स्की पो स्रेद्नेइ आजिइ (पीतरबुर्ग, १८९४)
देर्झाविन, न स इस्तोरिया वोलगारिइ (लेनिनग्राद, १९४६)
" " पोइस्खोझ्देनिये रुस्कओ नरोदा (मास्को, १९४४)
" " स्लाव्याने व् द्रेव्नोस्ती (मास्को, १९४५)
नवई, अलीशेर खम्सा अलीशेर नवाई (ताशकद १९०५)
पोतेम्किन् व प इस्तोरिया दिप्लोमातिइ तोम (लेनिनग्राद, १९४५)
पोलोस्त्स्कया, न क् वप्रोसु ओ खिस्तियान्स्त्वे ना रुसि दो व्लादिमीरा (१९१७)
फेदोरोव्स्की, न म पो गरामि पुस्तिन्याम् स्रेद्नेइ आजिइ (मास्को, १९३७)
बरोव्कोफ, अ क अलीशेर नवाई (मास्को, १९४६)
बर्तोल्द, व प इस्तोरिया कुल्तुर्नोइ झिज्नि तुर्किस्तान (लेनिनग्राद, १९२७)
" " उलुगवेक इ येओ व्रेम्या (१९१८)
" " ओचेर्क इस्तोरिइ नरोदा (१९२८)
" " ओचेर्क इस्तोरिइ सेमिरे च्या (वेर्नी १८९८)
" " ओत्चेत् ओ कोमन्दिरोव्के व् तुर्किस्तान (इज्वेस्तिया रोस्सिइस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरि, तोम् २, द० १–२२)
वर्तोल्द, व. व. मोनेती उलुगवेका (इज्वे रो अ इ ह म कु. तोम् २, पृ०१९०–२)
" " वोस्तोच्नो-इरान्स्किइ वोप्रोस („ १९२२ तोम् २, पृ० ३६१–८८)
बाबर बाबरनामा, Memoire de Babar, (edit A Beveridge)
" सपादक न इल्मिन्स्की (कजान १८५७ ई०)
विल्वस्सोफ इस्तोरिया एकातेरीनि व्तरोय (बर्लिन १९९०० ई०)
Bourgeois, E Manuel historique de politiqe etrangere (Paris, 1927)
Bergmann, F G Les Scythes (Halles 1860)

बेर्तेल्स, ये. ए नवाई इ निजामी अली शेर नवाई, पृ० ६८-९१ (लेनिनग्राद)
Browne, E. Literary History of Persia (London, 1919)
Blochet., E. Musalmanic Painting XII—XVIII century (Tran M Binijon, London, 1929)
मस्सोन, म. ये. रेगिस्तान इ येओ मेद्रेसे (ताशकंद, १९२६)
" " सोबोर्नया मेचेत् तिमूरा बीबी खानिम् (ताशकंद, १९२६)
मान्‌रोदिन, व व ओत्रज्ञोत्रानिये द्रेव्ने रुस्स्कओ गसुदास्त्वा, (लेनिनग्राद, १९४५)
यागिचा, इ व. एन्तिसक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिलोलोगिया (पीतरबुर्ग, १९०९)
याकुबोव्स्की, अ. यु जोलोतया ओर्दा
समरकंद प्रि-तिमूरे इ तिमरिदाख (लेनिनग्राद, १९३३)
रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०) जामेउन् तवारीख
Rouire, A M F La rivalite anglo-russean XIX Siecle en Asie (Paris 1908)
Robzianko, Le regne de Rasputine (Paris, 1928)
Ross , E.D Heart of Asia (London, 1899)
रोस्तोव्त्सेफ, म इ एन्ग्लिन्स्त्वो इ इरान्स्त्वो ना युगे रोस्सिइ (पेत्रोग्राद, १९१८)
रूवदोनिकस, व इ इस्तोरिया सससर ४ तोम्
लेस्नेइ, ल व वोस्तानिये १९१६, गदा व् किर्गिजस्ताने (मास्को, १९३७)
लोगोफेन् , द न ना ग्रानित्साख स्रेद्नेइ आजिइ (पीतरबुग, १९०९)
वस्साफ, शहाबुद्दीन अब्दुल्ला तवारीख वस्साफ (१३००–२८ ई०)
वित्कोविच् व. किर्गिजिया (१९३८)
विलिस्की, स. ग यजीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरि (मास्को, १९१४)
वेइमार्न, व. व इस्स्कुस्त्वो स्रेद्निइ आजिइ
Vernadsky, G on the Origines of the Antae (Am. G. D. S., Vol II L, pp 56-64)
वोल्खोन्स्की, स आ देकात्रिस्ताख पो सेमेइनिम् वोस्पोमिनानियाम्
शामी, निजामुद्दीन जफरनामा (१३९२–१४०० ई०)
समरकन्दी, अब्दुर्रज्जाक (१४१३–८२ ई०) मत्ला-सादैन व मज्मा-बहरैन
सालेह महम्मद शैबानीनामा
सिदिकरेकोफ, तुर्गेलबाइ तैमिर (उपन्यास, अनुवादक व रोझदेस्त्वेन्स्की, लेनिनग्राद, १९४७)
सेमेनाफ, अ अ सिरात्स्कओ इस्कुस्स्त्वो व् एपोख, अलीशेर नवाई
सेरेदोन, म म इस्तोरिचेस्कया ग्योग्राफिया (पीतरबुर्ग, १९२६)
सेव्हिरचेफ, अ. म स्लाव्यान्स्कोये यजीकोज्नानिये (लेनिनग्राद १९४१)
सोलोवियेफ, म इस्तोरिया रोस्सिइ २९ तोम् (१८७९–८५)
Hanson, G F Europe and China (London 1931)
Hammer Purgstall Geschichte des goldenen Horde in Kiptchaka (Budapest, 1840)
Hardlicka Scaleten remains of Early meen (Smithsonian M S: Pub Vol Lxxiii, pp 34,-49)
Howarth H H History of Mongol, 3 Vols (London, 1876-88)
० इरान्स्कोये इस्कुस्स्त्वा इ अर्खेओलोगिया (लेनिनग्राद, १९३९)

० इस्तोरिया रुस्कोइ लितेरातुरी (लेनिनग्राद, १९४१)
० इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
० ओचेर्क पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिबिरि १७ वी-१८ वी शती (मास्को, १९४६)
० किर्गिजिया, त्रुदी पेर्वोइ क.न्फ्रेन्त्सिइ (लेनिनग्राद, १९३४)
० तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग ३ तोम् (१८८०)
० तेमूरी अभिलेख (वोस्तोकोवेदेनिया, १९४०, १९४५)
० त्रुदी ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजी इस्तोरिया यजीक-लितेरातुरा (लेनिनग्राद, १९४०)
० द्वाद्त्सत् लेत् कजाकस्ताना (लेनिनग्राद, १९४०)
० Persian miniature Paintings (London, 1933)
० मतेरिअली क् व्सेसोयुजनोमु अर्खेआलोगिचेस्केमु सोवेश्चन्यो (मास्को, १९४५)
० मशारिउल्‌उश्शाक
० युआन्, चाउ. वि. शि (सपादक ग. अ. कोजिन् लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
० रेवोल्युत्सिया व् स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकद, १९२९)
० वोस्तोकोवेदेनिया (लेनिनग्राद, १९४५)
० "शजरतुल् अतराक"
० सोवियत्स्कया एत्नोग्राफिया (१८३६/६-पृ० ११)
० स्बोर्निक मतेरिअलोफ अत्नोस्यश्चिरख्स्या क् इस्तोरिइ ज़ोल्तोइ ओर्दी (लेनिनग्राद, १९४१ ई०)

Histoir edes Mongolse t lest atares . (Petersburg 1871)
History of Civil War in U S S R
History of U S S R 3 Vols (Moscow)

स्रोत ग्रंथ (३)

१. पमपेली, रा एक्सप्लोरेशन इन तुर्किस्तान, २ जिल्द
२ स्वेन्-चाङ यात्रा २ जिल्द
३ स्क्रिन, एफ० एच०, और रास, ई० डी० हार्ट आफ एसिया (१८९९ ई०)
४. बर्तोल्द, वी तुर्किस्तान डौन टु द मगोल इन्वेजन (१९०० ई०)
५. होवर्थ एच० एस० हिस्ट्री आफ मगोल, ३ जिल्द (लदन, १८८० ई०)
६ पारकर, ई० एच० ए थौजड यर्स आफ दी टारटर्स (शाघाई, १८९५ ई०)
७ लेम्ब, हेराल्ड जिगिज खान (लदन, १९२८ ई०)
८. कार्पिनी, जौन आफ प्लानो ट्रेवल, (हक लइट सोसाइटी लदन १९००)
९ इब्न-बतूता, ट्रेवल, अनुवादक—दफे मेरी और साकी नेती, (पेरिस, १९५३ ई०)
१० मार्को पोलो ट्रेवल, अनुवादक हेनरी यूल (लदन, १९२१ ई०)
११. रूबरिक, विलियम ट्रेवल ट् दी ईस्टर्न पार्टस आफ दी वर्ल्ड (हकलूइट सोसाइटी लदन, १९००)

१२ ईनोस्त्रान्तोफ, क खुन्नी ई गुन्नी (लेनिनग्राद, १९२६ ई०)
१३ वाम्बेरी अर्मिनस, हिस्ट्री आफ बुखारा (लदन, १८६३ ई०)
१४ वारतॉल्द, व. ओचेर्क इस्तोरिइ सेमीरेच्या (लेनिनग्रा, १९२८ ई०)
१५ रियाल गिरार्द दे मेम्वार सुर ला आज्री सात्राल (पेरिस, १८७५ ई०)
१६ हैदर, मिर्जा तारीख रशीदी-ए हिस्ट्री आफ द मोगल आफ सेंट्रल एसिया, अनुवादक एलियस और रास ई दी (लदन, १९९५ ई०')

१७ वरतॉल्द, व. व. ओचेर्क इस्तोरिइ तुर्कमन्स्कओ नरोद (१९२८ ई०)
१८ वेर्गमान, एफ० जी०, ले सित, (हाल्स, १८६० ई०)
१९ ए हिस्ट्री आफ दी यू० एस० एस० आर० ३ जिल्द (मास्को, १९४८ ई०)
२० दमोर्गन ज्रक, ल' मानिते प्री-इस्तारिक (पेरिस, १९२४ ई०)
२१ मापेरो, जी. इस्त्वार आसियान दे प्यूप्ल दे लोरिया (पेरिस, १९०५ ई०)
२२ तार्न, डब्ल्यू, डब्ल्यू, द ग्रीक्स इन वैक्ट्रिया एड इडिया (कैम्ब्रिज, १९३८ ई०)
२३ पीगुलेवस्कया न सिरिइस्किये इस्तोच्निकी प' इस्तोरिइ नरोदोफ एस० एस० एस० एर (मस्क्वा, १९४१ ई०)

२४ त्रेवेर, क. व पाम्यात्निकी ग्रीको–वाख्त्रिइस्कवो इस्कुस्त्वा (मस्क्वा, १९४० ई०)
२५ त्रेवेर कमीला टेराकोटाज फ्राम अफासियाव, (मास्को, १९३४ ई०)
२६ ई. अ ओर्वेली, ई० अ०, और त्रेवेर क. व सासानिद्स्किई मेतल (मस्क्वा, १९३५)
२७ ईरान्स्कये इस्कुस्त्वा इ आर्खेओलोगिआ (मस्क्वा, १९३९ ई०)
२८ सत्यश्रवा, द शकाज इन इडिया (लाहौर १९४७ ई०)
२९ पीगुलेवस्कया न व विजन्तिया इ ईरान (मस्क्वा, १९४६ ई०)
३० रोस्तोवत्सेफ, म० ई० एलिन्स्त्व इ ईरान्स्त्व ना युग रोसिइ (पेत्रोग्राद, १९१८)
३१ ईरान्स्किये यजीकि, (अकदमिइ नावुक मस्क्वा, १९४५ ई०)
३२ चाइल्ड, गोर्डन द ब्रौंज एज (कैम्ब्रिज, १९३० ई०)
३३ चाइल्ड, गोर्डन, प्रोग्रेस एड आर्केआलोजी (लदन, १९४१ ई०)
३४ हैडन, ए० सी०, हिस्ट्री आफ अन्थ्रापोलोजी (लदन, १९४५ ई०)
३५ टेलर, ई० वी०, अन्थ्रापोलोजी, २ जिल्द (लदन, १९४६ ई०)
३६ मार, न. य यजीक इ इस्तोरिया (लेनिनग्राद, १९३६ ई०)
३७. योवान चाउ वी. सी , अनुवादक कोजिन, स. अ. (मस्क्वा, १९४१ ई०)
३८ वेर्ईमार्न व व इस्कुस्त्व स्रेदनेइ आजिइ (मस्क्वा, १९४० ई०)
३९ गिन्जवुर्ग, व. व. गोर्नियं ताजिकी (मस्क्वा १९३७, ई०)
४० इस्तोरिय दिप्लोमातिइ, ३ जिल्द (मस्क्वा, १९४५ ई०)
४१ शुनकोफ, व. ई. ओचेर्क प इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिबिर (मस्क्वा, १९४६ ई०)
४२ सेरेदोनिन, स म. इस्तोरि चस्कया ग्योगराफिया (पेत्रोग्राद, १८१६ ई०)
४३ दुमित्रोयेफ कफकाजस्की ल.ई , प स्रेदनेइ आजिआ जापिस्की खुदोजनिका (पीतरवुर्ग, १८९४ ई०
४४ इस्तोरिआ रुस्कइ लितेरातुरि, अकदमी नाउक (मस्क्वा, १९४१ ई०)
४५. यागिच ई व , एन्सिक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिललोगिया, (सा पेतेरवुर्ग, १९०९) ई०
४६. यजीकोज्न निये इ इस्तोरिया लितेरातुरि (मस्क्वा, १९१४ ई०)
४७ ग्रुम ग्रर्जीमाइलो, पुतेशस्त्वये व् जापद्निइ किताई (पीतरवुर्ग, १९०१ ई०)
४८ प्रजेवाल्स्की, न० म० मगोलिया इ स्त्राना तुगतोफ (मस्क्वा १९४६, ई०)
४९ आर्जीआत्स्कया रोसिया (मस्क्वा, १९१० ई०)

५०, ग्रकोफ, व० द० कियेफ्स्किया रूस (मस्क्वा, १९४४ ई०)
५१, मावरोदिन, व० व०, ओबराजोवानिये द्रेव्न-रुस्कवो गसुदार्स्त्वं (लेनिनग्राद, १९४५ ई०)
५२ देर्झाविन, न० स० इस्तोरिया बोल्गारिइ, (मस्क्वा १९४६ ई०)
५३ देर्झाविन, न० स०, स्लाव्यिाने व् द्रेवनोस्ति (मस्क्वा, १९४५ ई०
५४ स्वं निर्क मार्तेरियालोफ क-इस्तोरिइ जोलोतोइ ओर्दि, जिल्द २ (मस्क्वा, १९४१) ई०
५५ बोरोफकोफ, अ० क०, सपादक अलीशेर नवाई (मस्क्वा, १९४६ ई०)
५६ हिस्ट्री आफ दी सिविल वार इन दी यू. एस. एस० आर. २ जिल्द (मास्को १९४६ ई०)
५७ बोआस, फ्राज और दूसरे, जेनरल अन्थ्रापोलोजी (न्यूयार्क, १९३८ ई०)
५८ वर्किट, एम० सी० आवर अर्ली एन्सेस्टर्स (कैम्ब्रिज, १९२९ ई०)
५९ त्रेवेर कमीला, एक्सकवेशन्स इन नार्दर्न मगोलिया (लेनिनग्राद, १९३२ ई० १)
६० इस्तोरिया रसिइ, चित्रमय (पीतरबुर्ग, १९०४ ई०)
६१ केन-शेन-वेग, रसो चाइनिज डिप्लोमेसी (शाघाई, १९२८ ई०)
६२ चूइमची ए शार्ट हिस्ट्री आफ् चाइनिज सिविलिजेशन (लदन १९४५ ई०)
६३ रिस्कुलोफ, तु. र वोस्तानिये १९१६ ग० व०, किर्गिजिस्ताने
६४ बेर्नस्ताम अ., तुरोक (मस्क्वा १९४६ ई०)
६५ ग्रेकोफ, व० द० बोर्बा रोसी जा सोज्दानिये स्वोयेवो गसुदार्स्त्व (मस्क्वा, १९४५ ई०)
६६ देर्झाविन, न० स० प्रोइस्खोज्दानिये रुस्कवो नरोदा (मस्क्वा, १९४४ ई०)
६७ लोगोफेत द० न० ना ग्रानित्साख स्रेद्नेइ अजीइ (पेतेरबुर्ग, १९०९ ई०)
६८ एफीमेन्को, प० प० पेर्वोवित्नीवे ओव् शेस्त्वा (लेनिनग्राद, १९३८ ई०)
६९ स्त्रूवे, व० व० इस्तोरिया द्रेव्नेओ वोस्तोका (लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
७० शचनित्सर, या० व० इस्तोरिया पिस्मेन (पीतरबुर्ग, १९०३ ई०)
७१ बाचिन्स्की, न० म० आर्खित्रोक्तुर्निय पामेत्निकि तुर्कमेनिइ (मस्क्वा, १९३९ ई०)
७२ अलेक्सन्द्रोफ, ब० अ० तुर्कमनिया इ येवो कूरोर्तनिये बगात्स्त्व (मस्क्वा, १९३० ई०)
७३ वेइमार्न, ब० व० इस्कुस्त्व स्रेद्नेइ आज़िइ (मस्क्वा, १९४० ई०)

सग्रह और अनुसधान-पत्रिकाये

१ सोव्येत्स्कये वोस्तोको-वेदनिये जिल्द I–III
२ सोव्येत्स्कया आर्खओलोगिया
३ सोवेत्स्कया एत्नोग्राफिया
४ वस्तनिक द्रेव्नेइ इस्तोरिइ
५ मतरियलि इ इस्स्लेदोवानिया प आर्खेओलोगिइ एस० एस० एस० एर०
६ क्रत्किये सोओव्श्चनिया
७ ताजिक्स्कया कम्प्लेक्सनया एक्सपेदित्सिया १९३२ ई०
८ ताजिक्स्के-पामिर्स्कया एक्सपेदित्सिया १९३५ ई०
९. कराकल्पकिया
१० इस्तोरिचेस्किये जापिस्की
११ ओजेरो इस्सिक्कुल (मस्क्वा, १९३५ ई०),
१२. किर्गिजिया, अकदमि नाउक (लेनिनग्राद, १९३४ ई०)
१३ इजवेस्तिया रोसिइस्कोइ अकदेमिया (पीतरबर्ग, १९२२ ई०)

१४. नाउच्नये इतोगी ताजिक्स्को–पामिर्स्कोइ एक्सपदित्सि (मस्क्वा, १९३६ ई०)
१५ उज्वेकिस्तान त्रदि इ मातरियलि पर्वोइ कन्फरन्सिइ प इजुचनियू प्रोएजवोदित्नीख सील उज्व-किस्ताना देकाव्र्या १९३२ (लेनिनग्राद, १९३४ ई०)
१६ मातेरियलि क. व्सेसोयुज्नोमु आर्खओलोगिचेस्कोमू सोवश्चेनीयु (मस्क्वा, १९४५ ई०)
१७ नासलनिये समरकदस्कोइ ओवलास्ति (लनिनग्राद, १९२६ ई०)
१८ एपिग्राफिका वोस्तोका

परिशिष्ट ३

नामानुक्रमणी